राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रन्थ-सूची

[चतुर्थ भाग]

(जयपुर के बारह जैन ग्रंथ भंडारों में संग्रहीत दस हजार से अधिक ग्रंथों की सूची, ग्रंथों की प्रशस्तियां तथा ४२ प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों का परिचय सहित)

भूमिका लेखक:-

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल

अध्यक्ष हिन्दी विभाग, काशी विश्व विद्यालय, वाराणसी

●

सम्पादक:—

डा० कस्तूरचंद कासलीवाल

एम. ए. पी-एच. डी., शास्त्री

पं० अनूपचंद न्यायतीर्थ

साहित्यरत्न

प्रकाशक :—

केशरलाल बख्शी

मंत्री :—

प्रबन्धकारिणी कमेटी

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

महावीर भवन, जयपुर

पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

१. मंत्री श्री दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी
महावीर भवन, सवाई मानसिंह हाईवे, जयपुर (राजस्थान)

२. मैनेजर दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी
श्री महावीरजी (राजस्थान)

卐

प्रथम संस्करण
५०० प्रति

महावीर जयन्ति
वि० सं० २०१९
अप्रेल १९६२

卐

मुद्रक :—
भँवरलाल न्यायतीर्थ
श्री वीर प्रेस, जयपुर।

★ विषय-सूची ★

प्रकाशकीय	.	पत्र संख्या १-२
भूमिका	.	३-४
प्रस्तावना	....	५-२३
प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों का परिचय	....	२४-४८
,, ,, विवरण	....	४९-५६
विषय		पत्र संख्या
१ सिद्धान्त एवं चर्चा		१—४७
२ धर्म एवं आचार शास्त्र	.	४८—६८
३ अध्यात्म एवं योगशास्त्र	....	६९-१२८
४ न्याय एवं दर्शन	..	१२९-१४१
५ पुराण साहित्य	....	१४२-१५९
६ काव्य एवं चरित्र	...	१६०-२१२
७ कथा साहित्य	..	२१३-२५६
८ व्याकरण साहित्य		२५७-२७०
९ कोश	...	२७१-२७८
१० ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान	.	२७९-२९५
११ आयुर्वेद	....	२९६-३०७
१२ छन्द एवं अलंकार	..	३०८-३१५
१३ संगीत एवं नाटक	....	३१६-३१८
१४ लोक विज्ञान	...	३१९-३२३
१५ सुभाषित एवं नीति शास्त्र	...	३२४-३४६
१६ मंत्र शास्त्र	.	३४७-३५२
१७ काम शास्त्र	.	३५३
१८ शिल्प शास्त्र		३५४

		पत्र संख्या
१६ लक्षण एवं समीक्षा	...	३५५–३५६
२० फागु रासा एवं वेलि साहित्य		३६०–३६७
२१ गणित शास्त्र		३६८–३६६
२२ इतिहास	...	३७०–३७८
२३ स्तोत्र साहित्य	..	३७६–४५२
२४ पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य	.	४५३–५५६
२५ गुटका संग्रह	...	५५७–७६६
२६ अवशिष्ट साहित्य	..	७६६–८००
७ ग्रंथानुक्रमणिका	.	८०१–८८४
८ ग्रंथ एवं ग्रंथकार	...	८८५–६२८
६ शासकों की नामावलि	.	६२६–६३०
१० ग्राम एवं नगरों की नामावलि	..	६३१–६३६
११ शुद्धाशुद्धि पत्र	...	६४०–६४३

★ प्रकाशकीय ★

ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग को पाठकों के हाथों मे देते हुये मुझे प्रसन्नता होती है। ग्रंथ सूची का यह भाग अब तक प्रकाशित ग्रंथ सूचियों में सबसे बड़ा है और इसमें १० हजार से अधिक ग्रंथों का विवरण दिया हुआ है। इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भंडारों के ग्रंथों की सूची दी गई है। इस प्रकार सूची के चतुर्थ भाग सहित अब तक जयपुर के १७ तथा श्री महावीरजी का एक, इस तरह १८ भंडारों के अनुमानतः २० हजार ग्रंथों का विवरण प्रकाशित किया जा चुका है।

ग्रंथों के संकलन को देखने से पता चलता है कि जयपुर प्रारम्भ से ही जैन साहित्य एवं संस्कृति का केन्द्र रहा है और दिगम्बर शास्त्र भंडारों की दृष्टि से सारे राजस्थान में इसका प्रथम स्थान है। जयपुर बड़े बड़े विद्वानों का जन्म स्थान भी रहा है तथा इस नगर में होने वाले टोडरमल जी, जयचन्द जी, सदासुखजी जैसे महान् विद्वानों ने सारे भारत के जैन समाज का साहित्यिक एवं धार्मिक दृष्टि से पथ-प्रदर्शन किया है। जयपुर के इन भंडारों में विभिन्न विद्वानों के हाथों से लिखी हुई पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई हैं जो राष्ट्र एवं समाज की अमूल्य निधियों मे से हैं। जयपुर के पाटोदी के मन्दिर के शास्त्र भंडार में पं० टोडरमल जी द्वारा लिखे हुये गोम्मटसार जीवकांड की मूल पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई है जिसका एक चित्र हमने इस भाग मे दिया है। इसी तरह ब्रह्म रायमल्ल, जोधराज गोदीका, खुशालचंद आदि अन्य विद्वानों के द्वारा लिखी हुई प्रतियां हैं।

इस ग्रंथ सूची के प्रकाशन से भारतीय साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचेगा इसका सही अनुमान तो विद्वान् ही कर सकेंगे किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इस भाग के प्रकाशन से संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी की सैकडों प्राचीन एवं अज्ञात रचनायें प्रकाश में आयी हैं। हिन्दी की अभी १३ वीं शताब्दी की एक रचना जिनदत्त चौपई जयपुर के पाटोदी के मन्दिर में उपलब्ध हुई है जिसको संभवतः हिन्दी भाषा की सर्वाधिक प्राचीन रचनाओं मे स्थान मिल सकेगा तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास में वह उल्लेखनीय रचना कहलायी जा सकेगी। इसके प्रकाशन की व्यवस्था शीघ्र ही की जा रही है। इससे पूर्व प्रद्युम्न चरित की रचना प्राप्त हुई थी जिसको सभी विद्वानों ने हिन्दी की अपूर्व रचना स्वीकार किया है।

उक्त सूची प्रकाशन के अतिरिक्त क्षेत्र के साहित्य शोध संस्थान की ओर से अब तक ग्रंथ सूची के तीन भाग, प्रशस्ति संग्रह, सर्वार्थसिद्धिसार, तामिल भाषा का जैन साहित्य, Jainism a key to true happiness तथा प्रद्युम्नचरित आठ ग्रंथों का प्रकाशन हो चुका है। सूची प्रकाशन के अतिरिक्त राजस्थान के विभिन्न नगर, कस्बे एवं गांवों मे स्थित ७० से भी अधिक भंडारों की ग्रंथ सूचियां बनायी जा

चुकी है जो हमारे संस्थान में हैं, तथा जिनसे विद्वान एवं साहित्य शोध मे लगे हुये विद्यार्थी लाभ उठाते रहते है। ग्रंथ सूचियों के साथ २ करीब ४०० से भी अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रचीन ग्रंथों की प्रशस्तियां एवं परिचय लिये जा चुके है जिन्हे भी पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पद भी इन भंडारों में प्रचुर संख्या मे मिलते है। ऐसे करीब २००० पदों का हमने संग्रह कर लिया है जिन्हें भी प्रकाशित करने की योजना है तथा संभव है इस वर्ष हम इसका प्रथम भाग प्रकाशित कर सके। इस तरह खोज पूर्ण साहित्य प्रकाशन के जिस उद्देश्य से क्षेत्र ने साहित्य शोध संस्थान की स्थापना की थी हमारा वह उद्देश्य धीरे धीरे पूरा हो रहा है।

भारत के विभिन्न विद्यालयों के भारतीय भाषाओं मुख्यत. प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश हिन्दी एवं राजस्थानी भाषाओं पर खोज करने वाले सभी विद्वानो से निवेदन है कि वे प्राचीन साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य पर खोज करने का प्रयास करें। हम भी उन्हे साहित्य उपलब्ध करने मे यथाशक्ति सहयोग देंगे।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के जिन जिन शास्त्र भंडारों की सूची दी गई है मैं उन भंडारों के सभी व्यवस्थापकों का तथा विशेषतः श्री नाथूलालजी बज, अनूपचंदजी दीवान, प० भंवरलालजी न्यायतीर्थ, श्रीराजमलजी गोधा, समीरमलजी छावडा, कपूरचंदजी रांवका, एवं प्रो सुल्तानसिंहजी जैन का आभारी हूं जिन्होंने हमारे शोध संस्थान के विद्वानों को शास्त्र भंडारों की सूचियां बनाने तथा समय समय पर वहां के ग्रंथों को देखने में पूरा सहयोग दिया है। आशा है भविष्य मे भी उनका साहित्य सेवा के पुनीत कार्य मे सहयोग मिलता रहेगा।

हम श्री डा० वासुदेव शरणजी अग्रवाल, हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के हृदय से आभारी हैं जिन्होंने अस्वस्थ होते हुये भी हमारी प्रार्थना स्वीकार करके ग्रंथ सूची की भूमिका लिखने की कृपा की है। भविष्य मे उनका प्राचीन साहित्य के शोध कार्य मे निर्देशन मिलता रहेगा ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

इस ग्रंथ के विद्वान् सम्पादक श्री डा० कस्तूरचंदजी कासलीवाल एवं उनके सहयोगी श्री पं० अनूपचंदजी न्यायतीर्थ तथा श्री सुगनचंदजी जैन का भी मैं आभारी हू जिन्होंने विभिन्न शास्त्र भंडारों को देखकर लगन एवं परिश्रम से इस ग्रंथ को तैयार किया है। मैं जयपुर के सुयोग्य विद्वान् श्री पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ का भी हृदय से आभारी हू कि जिनका हमको साहित्य शोध संस्थान के कार्यों मे पथ-प्रदर्शन व सहयोग मिलता रहता है।

ता० ३१-८-६१

केशरलाल बख्शी

भूमिका

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी, जयपुर के कार्यकर्त्ताओं ने कुछ ही वर्षों के भीतर अपनी संस्था को भारत के साहित्यिक मानचित्र पर उभरे हुए रूप में टांक दिया है। इस संस्था द्वारा संचालित जैन साहित्य शोध सस्थान का महत्वपूर्ण कार्य सभी विद्वानों का ध्यान हठात् अपनी ओर खींच लेने के लिए पर्याप्त है। इस संस्था को श्री कस्तूरचंद जी कासलीवाल के रूप में एक मौन साहित्य साधक प्राप्त हो गए। उन्होंने अपने संकल्प बल और अद्भुत कार्यशक्ति द्वारा जयपुर एवं राजस्थान के अन्य नगरों मे जो शास्त्र भंडार पुराने समय से चले आते हैं उनकी छान बीन का महत्वपूर्ण कार्य अपने ऊपर उठा लिया। शास्त्र भंडारों की जांच पडताल करके उनमें संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश, राजस्थानी और हिन्दी के जो अनेकानेक ग्रंथ सुरक्षित हैं उनकी क्रमबद्ध वर्गीकृत और परिचयात्मक सूची बनाने का कार्य बिना रुके हुए कितने ही वर्षो तक कासलीवाल जी ने किया है। सौभाग्य से उन्हें अतिशय क्षेत्र के संचालक और प्रबंधकों के रूप में ऐसे सहयोगी मिले जिन्होंने इस कार्य के राष्ट्रीय महत्व को पहचान लिया और सूची पत्रों के विधिवत् प्रकाशन के लिए आर्थिक प्रबंध भी कर दिया। इस प्रकार का मणिकांचन संयोग बहुत ही फलप्रद हुआ। परिचयात्मक सूची ग्रंथों के तीन भाग पहले मुद्रित हो चुके हैं। जिनमें लगभग दस सहस्त्र ग्रंथों का नाम और परिचय आ चुका है। हिन्दी जगत् मे इन ग्रंथों का व्यापक स्वागत हुआ और विश्वविद्यालयों मे शोध करने वाले विद्वानों को इन ग्रंथों के द्वारा बहुत सी अज्ञात नई सामग्री का परिचय प्राप्त हुआ।

उससे प्रोत्साहित होकर इस शोध संस्थान ने अपने कार्य को और अधिक वेगयुक्त करने का निश्चय किया। उसका प्रत्यक्ष फल ग्रंथ सूची के इस चतुर्थ भाग के रूप में हमारे सामने है। इसमें एक साथ ही लगभग १० सहस्त्र नए हस्तलिखित ग्रंथों का परिचय दिया गया है। परिचय यद्यपि संक्षिप्त है किन्तु उसके लिखने में विवेक से काम लिया गया है जिससे महत्वपूर्ण या नई सामग्री की ओर शोध कर्त्ता विद्वानों का ध्यान अवश्य आकृष्ट हो सकेगा। ग्रंथ का नाम, ग्रंथकर्त्ता का नाम, ग्रंथ की भाषा, लेखन की तिथि, ग्रंथ पूर्ण है या अपूर्ण इत्यादि तथ्यों का यथा संभव परिचय देते हुए महत्वपूर्ण सामग्री के उद्धरण या अवतरण भी दिये गये है। प्रस्तुत सूची पत्र में तीन सौ से ऊपर गुटकों का परिचय भी सम्मिलित है। इन गुटकों मे विविध प्रकार की साहित्यिक और जीवनोपयोगी सामग्री का संग्रह किया जाता था। शोध कर्त्ता विद्वान यथावकाश जब इन गुटकों की ब्योरेवार परीक्षा करेंगे तो उनमे से साहित्य की बहुत सी नई सामग्री प्राप्त होने की आशा है। ग्रथ संख्या ५५०६ गुटका संख्या १२५ मे भारतवर्ष के भौगोलिक विस्तार का परिचय देते हुए १२४ देशों के नामों की सूची अत्यन्त उपयोगी है। पृथ्वीचंद चरित्र आदि वर्णक ग्रंथों मे इस प्रकार की और भी भौगोलिक सूचिया मिलती हैं। उनके साथ इस सूची

का तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी होगा। किसी समय इस सूची में ६८ देशों की संख्या रूढ हो गई थी। ज्ञात होता है कालान्तर में यह संख्या १२४ तक पहुँच गई। गुटका संख्या २२ (ग्रंथ संख्या ५४०२) मे नगरों की बसापत का संवत्वार व्यौरा भी उल्लेखनीय है। जैसे संवत १६१२ अकबर पातसाह आगरो बसायो संवत् १७१४ औरंगसाह पातसाह औरंगाबाद बसायो : संवत् १२४५ विमल मंत्री स्वर हुवो विमल वसाई।

विकास की उन पिछली शतियों मे हिन्दी साहित्य के कितने विविध साहित्य रूप थे यह भी अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण विषय है। इस सूची को देखते हुये उनमे से अनेक नाम सामने आते हैं। जैसे स्तोत्र, पाठ, संग्रह, कथा, रासो, रास, पूजा, मंगल, जयमाल, प्रश्नोत्तरी, मंत्र, अष्टक, सार, समुच्चय, वर्णन, सुभाषित, चौपई, शुभमालिका, निशाणी, जकडी, व्याहलो, वधावा, विनती, पत्री, आरती, वोल, चरचा, विचार, वात, गीत, लीला, चरित्र, छंद, छप्पय, भावना, विनोद, कल्प, नाटक, प्रशस्ति, धमाल, चौढालिया, चौमासिया, वारामासा, वटोई, वेलि, हिंडोलणा, चूनडी, सज्झाय, वाराखड़ी, भक्ति, वन्दना, पच्चीसी, वत्तीसी, पचासा, वावनी, सतसई, सामायिक, सहस्रनाम, नामावली, गुरुवावली, स्तवन, संवोधन, मोडलो आदि। इन विविध साहित्य रूपों मे से किसका कव आरम्भ हुआ और किस प्रकार विकास और विस्तार हुआ, यह शोध के लिये रोचक विषय है। उसकी वहुमूल्य सामग्री इन भडारों मे सुरक्षित है।

राजस्थान मे कुल शास्त्र भंडार लगभग दो सौ हैं और उनमें संचित ग्रंथों की संख्या लगभग दो लाख के आंकी जाती है। हर्ष की वात है कि शोध संस्थान के कार्य कर्त्ता इस भारी दायित्व के प्रति-जागरूक हैं। पर स्वभावत यह कार्य दीर्घकालीन साहित्यिक साधना और वहु व्यय की अपेक्षा रखता है। जिस प्रकार अपने देश मे पूना का भंडारकर इन्स्टीट्यूट, तंजोर की सरस्वती महल लाइब्रेरी, मद्रास विश्वविद्यालय की ओरियन्टल मेनस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी या कलकत्ते की वंगाल एशियाटिक सोसाइटी का ग्रंथ भडार हस्तलिखित ग्रंथों को प्रकाश मे लाने का कार्य कर रहे हैं और उनके कार्य के महत्व को मुक्त कंठ से सभी स्वीकार करते हैं, आशा है कि उसी प्रकार महावीर अतिशय क्षेत्र के जैन साहित्य शोध सस्थान के कार्य की ओर भी जनता और शासन दोनों का ध्यान शीघ्र आकृष्ट होगा और यह संस्था जिस सहायता की पात्र है, वह उसे सुलभ की जायगी। संस्था ने अव तक अपने साधनों से वड़ा कार्य किया है, किन्तु जो कार्य शेष हैं वह कहीं अधिक बड़ा है और इसमे संदेह नहीं कि अवश्य करने योग्य है। ११ वीं शती से १६ वीं शती के मध्य तक जो साहित्य रचना होती रही उसकी संचित निधि का कुबेर जैसा समृद्ध कोष ही हमारे सामने आ गया है। आज से केवल १५ वर्ष पूर्व तक इन भंडारों के अस्तित्व का पता बहुत कम लोगों को था और उनके संवंध मे छान वीन का कार्य तो कुछ हुआ ही नहीं था। इस सबको देखते हुये इस सस्था के महत्वपूर्ण कार्य का व्यापक स्वागत किया जाना चाहिये।

काशी विद्यालय
३-१०-१६६१

वासुदेव शरण अग्रवाल

प्रस्तावना

राजस्थान शताब्दियों से साहित्यिक क्षेत्र रहा है। राजस्थान की रियासतें यद्यपि विभिन्न राजाओं के अधीन थी जो आपस में भी लड़ा करती थीं फिर भी इन राज्यों पर देहली का सीधा सम्पर्क नहीं रहने के कारण यहां अधिक राजनीतिक उथल पुथल नहीं हुई और सामान्यतः यहां शान्ति एवं व्यवस्था बनी रही। यहां राजा महाराजा भी अपनी प्रजा के सभी धर्मों का समादर करते रहे इसलिये उनके शासन में सभी धर्मों को स्वतन्त्रता प्राप्त थी।

जैन धर्मानुयायी सदैव शान्तिप्रिय रहे हैं। इनका राजस्थान के सभी राज्यों में तथा विशेषतः जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, बूंदी, कोटा, अलवर, भरतपुर आदि राज्यों मे पूर्ण प्रभुत्व रहा। शताब्दियों तक वहां के शासन पर उनका अधिकार रहा और वे अपनी स्वामिभक्ति, शासनदक्षता एवं सेवा के कारण सदैव ही शासन के सर्वोच्च स्थानों पर कार्य करते रहे।

प्राचीन साहित्य की सुरक्षा एवं नवीन साहित्य के निर्माण के लिये भी राजस्थान का वातावरण जैनों के लिये बहुत ही उपयुक्त सिद्ध हुआ। यहां के शासकों ने एव समाज के सभी वर्गों ने उस ओर बहुत ही रुचि दिखलायी इसलिये सैकड़ों की संख्या मे नये नये ग्रंथ तैयार किये गये तथा हजारों प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपियां तैयार करवा कर उन्हे नष्ट होने से बचाया गया। आज भी हस्तलिखित ग्रंथों का जितना सुन्दर संग्रह नागौर, बीकानेर, जैसलमेर, अजमेर, आमेर, जयपुर, उदयपुर, ऋषभदेव के ग्रंथ भंडारों मे मिलता है उतना महत्वपूर्ण संग्रह भारत के बहुत कम भंडारों में मिलेगा। ताड़पत्र एवं कागज दोनो पर लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रतियां इन्हीं भंडारों मे उपलब्ध होती हैं। यही नहीं अपभ्रंश, हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा का अधिकांश साहित्य इन्हीं भन्डारों मे संग्रहीत किया हुआ है। अपभ्रंश साहित्य के संग्रह की दृष्टि से नागौर एवं जयपुर के भन्डार उल्लेखनीय हैं।

अजमेर, नागौर, आमेर, उदयपुर, डूंगरपुर एवं ऋषभदेव के भंडार भट्टारकों की साहित्यिक गतिविधियों के केन्द्र रहे हैं। ये भट्टारक केवल धार्मिक नेता ही नहीं थे किन्तु इनकी साहित्य रचना एवं उनकी सुरक्षा मे भी पूरा हाथ था। ये स्थान स्थान पर भ्रमण करते थे और वहा से ग्रन्थों को बटोर कर इनको अपने मुख्य मुख्य स्थानों पर संग्रह किया करते थे।

शास्त्र भंडार सभी आकार के हैं कोई छोटा है तो कोई बड़ा। किसी में केवल स्वाध्याय में काम आने वाले ग्रंथ ही संग्रहीत किये हुये होते हैं तो किसी किसी मे सब तरह का साहित्य मिलता है। साधारणतः हम इन ग्रंथ भंडारों को ४ श्रेणियों मे बाट सकते हैं।

१. पांच हजार ग्रंथों के संग्रह वाले शास्त्र भंडार
२. पांच हजार से कम एवं एक हजार से अधिक ग्रंथ वाले शास्त्र भंडार

३. एक हजार से कम एवं पांचसौ से अधिक ग्रंथ वाले शास्त्र भंडार

४ पांचसौ ग्रंथों से कम वाले शास्त्र भंडार

इन शास्त्र भंडारों में केवल धार्मिक सहित्य ही उपलब्ध नहीं होता किन्तु काव्य, पुराण, ज्योतिष, आयुर्वेद, गणित आदि विषयों पर भी ग्रंथ मिलते हैं। प्रत्येक मानव की रुचि के विषय, कथा कहानी एवं नाटक भी इनमें अच्छी संख्या मे उपलब्ध होते हैं। यही नहीं, सामाजिक राजनीतिक एवं अर्थशास्त्र पर भी ग्रंथों का संग्रह मिलता है। कुछ भंडारों मे जैनेतर विद्वानों द्वारा लिखे हुये अलभ्य ग्रंथ भी संग्रहीत किये हुये मिलते हैं। वे शास्त्र भंडार खोज करने वाले विद्यार्थियों के लिये शोध संस्थान हैं लेकिन भंडारों मे साहित्य की इतनी अमूल्य सम्पत्ति होते हुये भी कुछ वर्षो पूर्व तक ये विद्वानो के पहुँच के वाहर रहे। अव कुछ समय वदला है और भंडारों के व्यवस्थापक ग्रंथों के दिखलाने में उतनी आना-कानी नहीं करते हैं। यह परिवर्तन वास्तव मे खोज मे लीन विद्वानों के लिये शुभ है। आज के २० वर्ष पूर्व तक राजस्थान के ६० प्रतिशत भंडारों को न तो किसी जैन विद्वान ने देखा और न किसी जैनेतर विद्वान ने इन भंडारों के महत्व को जानने का प्रयास ही किया। अव गत १०, १५ वर्षो से इधर कुछ विद्वानों का ध्यान आकृष्ट हुआ है और सर्व प्रथम हमने राजस्थान के ७५ के करीव भंडारों को देखा है और शेष भंडारों को देखने की योजना वनाई जा चुकी है।

ये ग्रंथ भंडार प्राचीन युग के पुस्तकालयों का काम भी देते थे। इनमे वैठ कर स्वाध्याय प्रेमी शास्त्रों का अध्ययन किया करते थे। उस समय इन ग्रथों की सूचियां भी उपलब्ध हुआ करती थीं तथा ये ग्रंथ लकड़ी के पुट्ठों के वीच मे रखकर सूत अथवा सिल्क के फीतों से वांधे जाते थे। फिर उन्हें कपड़े के वेष्टनों में वांध दिया जाता था। इस प्रकार ग्रंथों के वैज्ञानिक रीति से रखे जाने के कारण इन भंडारों में ११ वीं शताब्दी तक के लिखे हुये ग्रंथ पाये जाते हैं।

जैसा कि पहिले कहा जा चुका है कि वे ग्रंथ भंडार नगर कस्वे एवं गावों तक मे पाये जाते हैं इसलिये राजस्थान मे उनकी वास्तविक संख्या कितनी है इसका पता लगाना कठिन है। फिर भी यहां अनुमानत छोटे वड़े २०० भंडार होंगे जिनमे १।।, २ लाख से अधिक हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है।

जयपुर प्रारम्भ से ही जैन संस्कृति एवं साहित्य का केन्द्र रहा है। यहां १५० से भी अधिक जिन मंदिर एवं चैत्यालय हैं। इस नगर की स्थापना संवत् १७८४ मे महाराजा सवाई जयसिंहजी द्वारा की गई थी तथा उसी समय आमेर के वजाय जयपुर को राजधानी वनाया गया था। महाराजा ने इसे साहित्य एवं कला का भी केन्द्र वनाया तथा एक राज्यकीय पोथीखाने की स्थापना की जिसमे भारत के विभिन्न स्थानों से लाये गये सैकड़ों महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहीत किये हुये है। यहां के महाराजा प्रतापसिंहजी भी विद्वान् थे। इन्होंने कितने ही ग्रंथ लिखे थे। इनका लिखा हुआ एक ग्रंथ संगीतसार जयपुर के वड़े मन्दिर के शास्त्र भंडार मे संग्रहीत है।

१८ वीं एवं १६ वीं शताब्दी में जयपुर में अनेक उच्च कोटि के विद्वान् हुये जिन्होंने साहित्य की अपार सेवा की। इनमें दौलतराम कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) टोडरमल (१८ वीं शताब्दी) गुमानीराम (१८, १६ वीं शताब्दी) टेकचन्द (१८ वी शताब्दी) दीपचन्द कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) जयचन्द्र छावड़ा (१६ वीं शताब्दी) केशरीसिंह (१६ वीं शताब्दी) नेमिचन्द पाटनी (१६ वीं शताब्दी नन्दलाल छाबड़ा (१६ वीं शताब्दी) स्वरूपचन्द बिलाला (१६ वीं शताब्दी) सदासुख कासलीवाल (१६ वीं शताब्दी) मन्नालाल खिन्दूका (१६ वीं शताब्दी) पारसदास निगोत्या (१६ वीं शताब्दी) जैतराम (१६ वीं शताब्दी) पन्नालाल चौधरी (१६ वी शताब्दी) दुलीचन्द (१६ वीं शताब्दी) आदि विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। इनमें अधिकांश हिन्दी के विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी के प्रचार के लिये सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत ग्रथों पर भाषा टीका लिखी थी। इन विद्वानों ने जयपुर मे ग्रथ भन्डारों की स्थापना की तथा उनमें प्राचीन ग्रथों की लिपियां करके विराजमान की। इन विद्वानों के अतिरिक्त यहां सैकड़ों लिपिकार हुये जिन्होंने श्रावकों के अनुरोध पर सैकड़ों ग्रन्थों की लिपिया की तथा नगर के विभिन्न भन्डारों मे रखी गई।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भंडारों के ग्रथों का विवरण दिया गया है ये सभी शास्त्र भंडार यहां के प्रमुख शास्त्र भंडार है और इनमें दस हजार से भी अधिक ग्रथों का संग्रह है। महत्वपूर्ण ग्रंथों के संग्रह की दृष्टि से अ, ज तथा ञ भन्डार प्रमुख हैं। ग्रथ सूची मे आये हुये इन भंडारों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

१. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर पाटोदी (अ भंडार)

यह भंडार दि० जैन पाटोदी के मंदिर में स्थित है जो जयपुर की चौकड़ी मोदीखाना में है। यह मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध जैन पंचायती मन्दिर है। इसका प्रारम्भ में आदिनाथ चैत्यालय[1] भी नाम था। लेकिन बाद में यह पाटोदी का मन्दिर के नाम से ही कहलाया जाने लगा। इस मन्दिर का निर्माण जोधराज पाटोदी द्वारा कराया गया था। लेकिन मन्दिर के निर्माण की निश्चित तिथि का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी यह अवश्य कहा जा सकता है कि इसका निर्माण जयपुर नगर की स्थापना के साथ साथ हुआ था। मन्दिर निर्माण के पश्चात् यहां शास्त्र भंडार की स्थापना हुई। इसलिये यह शास्त्र भंडार २०० वर्ष से भी अधिक पुराना है।

मन्दिर प्रारम्भ से ही भट्टारकों का केन्द्र बना रहा तथा आमेर के भट्टारक भी यहीं आकर रहने लगे। भट्टारक क्षेमेन्द्रकीर्त्ति सुरेन्द्रकीर्त्ति, सुखेन्द्रकीर्त्ति एवं नरेन्द्रकीर्त्ति का क्रमश संवत् १८१५,

---

१. देखिये ग्रंथ सूची पृष्ठ संख्या १६६, व ४६०

१८२२, १८६३, तथा १८७६ मे यहीं पट्टाभिषेक¹ हुआ था। इस प्रकार उनका इस मन्दिर से करीब १०० वर्ष तक सीधा सम्पर्क रहा।

प्रारम्भ मे यहा का शास्त्र भंडार भट्टारकों की देख रेख में रहा इसलिये शास्त्रों के संग्रह में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती रही। यहां शास्त्रों की लिखने लिखवाने की भी अच्छी व्यवस्था थी इसलिये श्रावकों के अनुरोध पर यहीं ग्रंथों की प्रतिलिपियां भी होती रहती थी। भट्टारकों का जब प्रभाव क्षीण होने लगा तथा जब वे साहित्य की ओर उपेक्षा दिखलाने लगे तो यहां के भंडार की व्यवस्था श्रावकों ने संभाल ली। लेकिन शास्त्र भंडार मे संग्रहीत ग्रंथों को देखने के पश्चात् यह पता चलता है कि श्रावकों ने शास्त्र भंडार के ग्रंथों की संख्या वृद्धि मे विशेष अभिरुचि नहीं दिखलाई और उन्होंने भंडार को उसी अवस्था मे सुरक्षित रखा।

हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या

भंडार मे शास्त्रों की कुल संख्या २२५७ तथा गुटकों की संख्या ३०८ है। लेकिन एक एक गुटके मे बहुत से ग्रंथों का संग्रह होता है इसलिये गुटकों मे १८०० से भी अधिक ग्रंथों का संग्रह है। इस प्रकार इस भंडार मे चार हजार ग्रंथों का संग्रह है। भक्तामर स्तोत्र एवं तत्वार्थसूत्र की एक एक ताडपत्रीय प्रति को छोड कर शेष सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। इसी भंडार मे कपडे पर लिखे हुये कुछ जम्बूद्वीप एवं अढाईद्वीप के चित्र एवं यन्त्र, मंत्र आदि का उल्लेखनीय संग्रह हैं।

भंडार मे महाकवि पुष्पदन्त कृत जसहर चरिउ (यशोधर चरित) की प्रति सबसे प्राचीन है जो संवत १४०७ मे चन्द्रपुर दुर्ग में लिखी गई थी। इसके अतिरिक्त यहां १५ वीं, १६ वी, १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी मे लिखे हुये ग्रंथों की संख्या अधिक है। प्राचीन प्रतियों में गोम्मटसार जीवकांड, तत्त्वार्थ सूत्र (सं० १४५८) द्रव्यसंग्रह वृत्ति (ब्रह्मदेव-सं० १६३५), उपासकाचार दोहा (सं० १५५५), धर्म-संग्रह श्रावकाचार (संवत् १५४२) श्रावकाचार (गुणभूषणाचार्य संवत् १५६२,) समयसार (१५६४), विद्यानन्दि कृत अष्टसहस्री (१७६१) उत्तरपुराण टिप्पण प्रभाचन्द (सं० १५७५) शान्तिनाथ पुराण (अशगकवि सं १५५२) णेमिणाह चरिए (लक्ष्मण देव सं १६३६) नागकुमार चरित्र (मल्लिषेण कवि सं १५६४) वरांग चरित्र (वर्द्धमान देव सं १५६४) नवकार श्रावकाचार (सं० १६१२) आदि सैकड़ों ग्रंथों की उल्लेखनीय प्रतियां हैं। ये प्रतियां सम्पादन कार्य मे बहुत लाभप्रद सिद्ध हो सकती हैं।

विभिन्न विषयों से सम्बन्धित ग्रंथ

शास्त्र भंडार मे प्राय सभी विषयों के ग्रंथों का संग्रह है। फिर भी पुराण, चरित्र, काव्य, कथा, व्याकरण, आयुर्वेद के ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। पूजा एवं स्तोत्र के ग्रंथों की संख्या भी पर्याप्त

जयपुर के प्रसिद्ध साहित्य सेवी

गृहत्यागी दिगम्बर श्रावक दुलीचन्दजी

पूना निवासी

है। गुटकों में स्तोत्रों एवं कथाओं का अच्छा संग्रह है। आयुर्वेद के सैकड़ों नुसखे इन्हीं गुटकों में लिखे हुये हैं जिनका आयुर्वेदिक विद्वानों द्वारा अध्ययन किया जाना आवश्यक है। इसी तरह विभिन्न जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पदों का भी इन गुटकों में एवं स्वतन्त्र रूप से बहुत अच्छा संग्रह मिलता है। हिन्दी के प्राय सभी जैन कवियों ने हिन्दी में पद लिखे हैं जिनका अभी तक हमें कोई परिचय नहीं मिलता है। इसलिये इस दृष्टि से भी गुटकों का संग्रह महत्वपूर्ण है। जैन विद्वानों के पद आध्यात्मिक एवं स्तुति परक दोनों ही हैं और उनकी तुलना हिन्दी के अच्छे से अच्छे कवि के पदों से की जा सकती है। जैन विद्वानों के अतिरिक्त कबीर, सूरदास, मलूकराम, आदि कवियों के पदों का संग्रह भी इस भंडार में मिलता है।

अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ

शास्त्र भंडार में संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा से लिखे हुये सैंकड़ों अज्ञात ग्रंथ प्राप्त हुये हैं जिनमें से कुछ ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय आगे दिया गया है। संस्कृत भाषा के ग्रंथों में व्रतकथा कोष (सकलकीर्त्ति एवं देवेन्द्रकीर्त्ति) आशाधर कृत भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र की संस्कृत टीका एवं रत्नत्रय विधि भट्टारक सकलकीर्त्ति का परमात्मराज स्तोत्र, भट्टारक प्रभाचंद का मुनिसुव्रत छंद, आशाधर के शिष्य विनयचंद की भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र की टीका के नाम उल्लेखनीय हैं। अपभ्रंश भाषा के ग्रंथों में लक्ष्मण देव कृत णेमिणाह चरिउ, नरसेन की जिनरात्रिविधान कथा, मुनिगुणभद्र का रोहिणी विधान एवं दशलक्षण कथा, विमल सेन की सुगंधदशमीकथा अज्ञात रचनायें हैं। हिन्दी भाषा की रचनाओं में रल्ह कविकृत जिनदत्त चौपई (सं. १३५४) मुनिसकलकीर्त्ति की कर्मचूरिवेलि (१७ वीं शताब्दी) ब्रह्म गुलाल का समोशरणवर्णन, (१७ वीं शताब्दी) विश्वभूषण कृत पार्श्वनाथ चरित्र, कृपाराम का ज्योतिष सार, पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणीवेलि की हिन्दी गद्य टीका, बूचराज का भुवनकीर्त्ति गीत, (१७ वीं शताब्दी) बिहारी सतसई पर हरिचरणदास की हिन्दी गद्य टीका, तथा उनका ही कविवल्लभ ग्रंथ, पद्मभगत का कृष्णरुक्मिणीमंगल, हीरकवि का सागरदत्त चरित (१७ वीं शताब्दी) कल्याणकीर्ति का चारुदत्त चरित, हरिवंश पुराण की हिन्दी गद्य टीका आदि ऐसी रचनाएं हैं जिनके सम्बन्ध में हम पहिले अन्धकार में थे। जिनदत्त चौपई १३ वीं शताब्दी की हिन्दी पद्य रचना है और अब तक उपलब्ध सभी रचनाओं से प्राचीन है। इसी प्रकार अन्य सभी रचनायें महत्वपूर्ण हैं। ग्रंथ भंडार की दशा संतोषप्रद है। अधिकांश ग्रंथ वेष्टनों में रखे हुये हैं।

२. बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार (क भंडार)

बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार दि० जैन बड़ा तेरहपंथी मन्दिर में स्थित है। इस मन्दिर में दो शास्त्र भंडार हैं जिनमें एक शास्त्र भंडार की ग्रंथ सूची एवं उनका परिचय ग्रंथसूची द्वितीय भाग में

दे दिया गया है। दूसरा शास्त्र भंडार इसी मन्दिर मे बाबा दुलीचन्द द्वारा स्थापित किया गया था इस लिये इस भंडार को उन्हीं के नाम से पुकारा जाता है। दुलीचन्दजी जयपुर के मूल निवासी नहीं थे किन्तु वे महाराष्ट्र के पूना जिले के फल्टन नामक स्थान के रहने वाले थे। वे जयपुर हस्तलिखित शास्त्रों के साथ यात्रा करते हुये आये और उन्होंने शास्त्रों की सुरक्षा की दृष्टि से जयपुर को उचित स्थान जानकर यहीं पर शास्त्र संग्रहालय स्थापित करने का निश्चय कर लिया।

इस शास्त्र भंडार मे ८५० हस्तलिखित ग्रंथ हैं जो सभी दुलीचन्दजी द्वारा स्थान स्थान की यात्रा करने के पश्चात् संग्रहीत किये गये थे। इनमे से कुछ ग्रंथ स्वयं बाबाजी द्वारा लिखे हुये हैं तथा कुछ श्रावकों द्वारा उन्हें प्रदान किये हुये हैं। वे एक जैन साधु के समान जीवन यापन करते थे। ग्रंथों की सुरक्षा, लेखन आदि ही उनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य था। उन्होंने सारे भारत की तीन बार यात्रा की थी जिसका विस्तृत वर्णन जैन यात्रा दर्पण मे लिखा है। वे संस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा उन्होंने १५ से भी अधिक ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद किया था जो सभी इस भन्डार मे संग्रहीत हैं।

यह शास्त्र भंडार पूर्णत. व्यवस्थित है तथा सभी ग्रंथ अलग अलग वेष्टनों मे रखे हुये हैं। एक एक ग्रंथ तीन तीन एवं कोई कोई तो चार चार वेष्टनों मे बंधा हुआ है। शास्त्रों की ऐसी सुरक्षा जयपुर के किसी भंडार मे नही मिलेगी। शास्त्र भंडार मे मुख्यत संस्कृत एवं हिन्दी के ग्रंथ हैं। हिन्दी के ग्रंथ अधिकांशतः संस्कृत ग्रंथों की भाषा टीकायें हैं। वैसे तो प्राय. सभी विषयों पर यहां ग्रंथों की प्रतियां मिलती हैं लेकिन मुख्यत. पुराण, कथा, चरित, धर्म एवं सिद्धान्त विषय से संबंधित ग्रंथों ही का यहां अधिक संग्रह है।

भंडार मे आप्तमीमांसालंकृति (आ० विद्यानन्दि) की सुन्दर प्रति है। क्रियाकलाप टीका की संवत् १५३४ की लिखी हुई प्रति इस भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो मांडवगढ मे सुल्तान गयासुद्दीन के राज्य मे लिखी गई थी। तत्त्वार्थसूत्र की स्वर्णमयी प्रति दर्शनीय है। इसी तरह यहां गोम्मटसार, त्रिलोकसार आदि कितने ही ग्रंथों की सुन्दर सुन्दर प्रतियां हैं। ऐसी अच्छी प्रतियां कदाचित् ही दूसरे भंडारों में देखने को मिलती हैं। त्रिलोकसार की सचित्र प्रति है तथा इतनी बारीक एवं सुन्दर लिखी हुई है कि वह देखते ही बनती है। पन्नालाल चौधरी के द्वारा लिखी हुई डालूराम कृत द्वादशांग पूजा की प्रति भी (सं० १८७६) दर्शनीय ग्रंथों में से है।

१६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान् पं० पन्नालालजी संघी का अधिकांश साहित्य यहा संग्रहीत है। इसी तरह भंडार के संस्थापक दुलीचन्द की भी यहां सभी रचनायें मिलती हैं। उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों मे अल्हू कवि का प्राकृतछन्दकोष, विनयचन्द की द्विसंधान काव्य टीका, वादिचन्द्र सूरि का पवनदूत काव्य, ज्ञानार्णव पर नयविलास की संस्कृत टीका, गोम्मटसार पर सकलभूषण एवं धर्मचन्द की संस्कृत टीकायें हैं। हिन्दी रचनाओं मे देवीसिंह छावडा कृत

उपदेशरत्नमाला भाषा (सं० १७६६) हरिकिशन का भद्रबाहु चरित (सं० १७८७) छत्रपति जैसवाल की मनमोदन पंचविशति भाषा (सं० १६१६) के नाम उल्लेखनीय है। इस भंडार मे हिन्दी पदोंका भी अच्छा संग्रह है। इन कवियों में माणकचन्द, हीराचंद, दौलतराम, भागचन्द, मंगलचन्द, एवं जयचन्द छावडा के हिन्दी पद उल्लेखनीय हैं।

३. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोबनेर (ख भंडार)

यह शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोबनेर में स्थापित है जो खेजडे का रास्ता, चांदपोल बाजार में स्थित है। यह मन्दिर कब बना था तथा किसने बनवाया था इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है लेकिन एक ग्रंथ प्रशस्ति के अनुसार मन्दिर की मूल नायक प्रतिमा पं० पन्नालाल जी के समय में स्थापित हुई थी। पंडितजी जोबनेर के रहने वाले थे तथा इनके लिखे हुये जलहोमविधान, धर्मचक्र पूजा आदि ग्रंथ भी इस भंडार में मिलते हैं। इनके द्वारा लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रति संवत् १६२२ की है।

शास्त्र भंडार में ग्रंथ संग्रह करने में पहिले पं० पन्नालालजी का तथा फिर उन्हीं के शिष्य पं० बख्तावरलाल जी का विशेष सहयोग रहा था। दोनों ही विद्वान ज्योतिष, अयुर्वेद, मंत्रशास्त्र, पूजा साहित्य के संग्रह में विशेष अभिरुचि रखते थे इसलिये यहां इन विषयों के ग्रंथों का अच्छा संकलन है। भंडार में ३४० ग्रंथ हैं जिनमे २३ गुटके भी हैं। हिन्दी भाषा के ग्रंथों से भी भंडार मे संस्कृत के ग्रंथों की संख्या अधिक है जिससे पता चलता है कि ग्रंथ संग्रह करने वाले विद्वानों का संस्कृत से अधिक प्रेम था।

भंडार में १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी के ग्रंथों की अधिक प्रतियां हैं। सबसे प्राचीन प्रति पद्मनन्दिपंचविंशति की है जिसकी संवत् १५७८ मे प्रतिलिपि की गई थी। भंडार के उल्लेखनीय ग्रंथों मे पं० आशाधर की आराधनासार टीका एवं नागौर के भट्टारक क्षेमेन्द्रकीर्ति कृत गजपंथामंडलपूजन उल्लेखनीय ग्रंथ है। आशाधर ने आराधनासार की यह वृत्ति अपने शिष्य मुनि विनयचंद के लिये की थी। प्रेमी जी ने इस टीका को जैन साहित्य एवं इतिहास मे अप्राप्य लिखा है। रघुवंश काव्य की भंडार मे सं० १६८० की अच्छी प्रति है।

हिन्दी ग्रंथों में शांतिकुशल का अंजनारास एवं पृथ्वीराज का रूक्मिणी विवाहलो उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। यहां बिहारी सतसई की एक ऐसी प्रति है जिसके सभी पद्य वर्ण क्रमानुसार लिखे हुये हैं। मानसिंह का मानविनोद भी आयुर्वेद विषय का अच्छा ग्रंथ है।

४. शास्त्र भंडार दि. जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर (ग भंडार)

यह मन्दिर बौली के कुआ के पास चौकड़ी मोदीखाना मे स्थित है पहिले यह 'नेमिनाथ के मंदिर' के नाम से भी प्रसिद्ध था लेकिन वर्तमान मे यह चौधरियों के चैत्यालय के नाम से प्रसिद्ध है। यहां छोटा

सा शास्त्र भंडार है जिसमे केवल १०८ हस्तलिखित ग्रंथ है। इनमें ७५ हिन्दी के तथा शेष संस्कृत भाषा के ग्रंथ हैं। संग्रह सामान्य है तथा प्रतिदिन स्वाध्याय के उपयोग में आने वाले ग्रंथ हैं। शास्त्र भंडार करीब १४० वर्ष पुराना है। कालूरामजी साह यहां उत्साही सज्जन हो गये हैं जिन्होंने कितने ही ग्रंथ लिखवाकर शास्त्र भंडार मे विराजमान किये थे। इनके द्वारा लिखवाये हुये ग्रंथों मे पं. जयचन्द छाबड़ा कृत ज्ञानार्णव भाषा (सं १८२२) खुशालचन्द कृत त्रिलोकसार भाषा (सं० १८८४) दौलतरामजी कासलीवाल कृत आदि पुराण भाषा सं १८८३ एवं छीतर ठोलिया कृत होलिका चरित (सं. १८८३) के नाम उल्लेखनीय हैं। भंडार व्यवस्थित है।

५. शास्त्र भंडार दि. जैन नया मन्दिर वैराठियों का जयपुर (घ भंडार)

'घ' भंडार जौहरी बाजार मोतीसिंह भोमियों के रास्ते में स्थित नये मन्दिर मे संग्रहीत है। यह मन्दिर वैराठियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। शास्त्र भंडार मे १५० हस्तलिखित ग्रंथ है जिनमे वीरनन्दि कृत चन्द्रप्रभ चरित की प्रति सबसे प्राचीन है। इसे संवत् १५२४ भादवा बुदी ७ के दिन लिखा गया था। शास्त्र संग्रह की दृष्टि से भंडार छोटा ही है किन्तु इसमे कितने ही ग्रंथ उल्लेखनीय हैं। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों मे गुणभद्राचार्य कृत उत्तर पुराण (सं० १६०६,) ब्रह्मजिनदास कृत हरिवंश पुराण (सं० १६४१,) दीपचन्द्र कृत ज्ञानदर्पण एवं लोकसेन कृत दशलक्षणकथा की प्रतियां उल्लेखनीय हैं। श्री राजहंसोपाध्याय की षष्ठ्यधिक शतक की टीका संवत् १५७९ के ही अगहन मास की लिखी हुई है। ब्रह्मजिनदास कृत अठावीस मूलगुणरास एवं दान कथा (हिन्दी) तथा ब्रह्म अजित का हंसतिलकरास उल्लेखनीय प्रतियों मे हैं। भंडार मे ऋषिमंडल स्तोत्र, ऋषिमंडल पूजा, निर्वाणकान्ड, अष्टान्हिका जयमाल की स्वर्णाक्षरी प्रतिया है। इन प्रतियों के बार्डर सुन्दर वेल बूटों से युक्त हैं तथा कला पूर्ण हैं। जो वेल एक बार एक पत्र पर आगई वह फिर आगे किसी पत्र पर नहीं आई है। शास्त्र भंडार सामान्यतः व्यवस्थित है।

६. शास्त्र भंडार दि. जैन मन्दिर संघीजी जयपुर (ङ भंडार)

संघीजी का जैन मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध एवं विशाल मन्दिर है। यह चौकड़ी मोदीखाना मे महावीर पार्क के पास स्थित है। मन्दिर का निर्माण दीवान झूंथारामजी संघी द्वारा कराया गया था। ये महाराज जयसिंहजी के शासन काल मे जयपुर के प्रधान मंत्री थे। मन्दिर की मुख्य चंवरी मे सोने एवं काच का कार्य हो रहा है। वह बहुत ही सुन्दर एवं कला पूर्ण है। काच का ऐसा अच्छा कार्य बहुत ही कम मन्दिरों मे मिलता है।

मन्दिर के शास्त्र भंडार में ६७९ हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है। सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। अधिकाश ग्रंथ १८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी के लिखे हुये हैं। सबसे नवीन ग्रंथ णमोकारकाव्य है जो संवत् १९९५ मे लिखा गया था। इससे पता चलता है कि समाज मे अब भी ग्रंथों की प्रति-

लिपियां करवा कर भंडारों मे विराजमान करने की परम्परा है। इसी तरह आचार्य कुन्दकुन्द कृत पंचास्तिकाय की सबसे प्राचीन प्रति है जो संवत् १४८७ की लिखी हुई है।

ग्रंथ भंडार में प्राचीन प्रतियों मे भ हर्षकीर्ति का अनेकार्थशत संवत् १६६७, धर्मकीर्ति की कौमुदीकथा संवत् १६६३, पद्मनन्दि श्रावकाचार संवत् १६१३, भ. शुभचंद्र कृत पाण्डवपुराण सं. १६१३, बनारसी विलास सं० १७१५, मुनि श्रीचन्द कृत पुराणसार सं० १५४३, के नाम उल्लेखनीय हैं। भंडार में संवत् १५३० की किरातार्जुनीय की भी एक सुन्दर प्रति है। दशरथ निगोत्या ने धर्म परीक्षा की भाषा संवत् १७१८ में पूर्ण की थी। इसके एक वर्ष बाद सं० १७१६ की ही लिखी हुई भंडार में एक प्रति संग्रहीत है। इसी भंडार मे महेश कवि कृत हम्मीररासो की भी एक प्रति है जो हिन्दी की एक सुन्दर रचना है। किशनलाल कृत कृष्णबालविलास की प्रति भी उल्लेखनीय है।

शास्त्र भंडार में ६६ गुटके हैं। जिनमें भी हिन्दी एवं संस्कृत पाठों का अच्छा संग्रह है। इनमें हर्षकवि कृत चंद्रहंसकथा सं० १७०८, हरिदास की ज्ञानोपदेश बत्तीसी (हिन्दी) मुनिभद्र कृत शांतिनाथ स्तोत्र (संस्कृत) आदि महत्वपूर्ण रचनाये हैं।

७. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर (च भंडार)

(श्रीचन्द्रप्रभ दि० जैन सरस्वती भवन)

यह सरस्वती भवन छोटे दीवानजी के मन्दिर में स्थित है जो अमरचंदजी दीवान के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। ये जयपुर के एक लंबे समय तक दीवान रहे थे। इनके पिता शिवजीलालजी भी महाराजा जगतसिंहजी के समय मे दीवान थे। इन्होंने भी जयपुर में ही एक मन्दिर का निर्माण कराया था। इसलिये जो मन्दिर इन्होंने बनाया था वह बड़े दीवानजी का मन्दिर कहलाता है और दीवान अमरचंदजी द्वारा बनाया हुआ है वह छोटे दीवानजी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। दोनों ही विशाल एवं कला पूर्ण मन्दिर हैं तथा दोनों ही गुमान पंथ आम्नाय के मन्दिर हैं।

भंडार में ८३० हस्तलिखित ग्रंथ हैं। सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। यहां संस्कृत ग्रंथों का विशेषत पूजा एवं सिद्धान्त ग्रंथों का अधिक संग्रह है। ग्रंथों को भाषा के अनुसार निम्न प्रकार विभाजित किया जा सकता है।

संस्कृत ४१८, प्राकृत ६८, अपभ्रंश ४, हिन्दी ३४० इसी तरह विषयानुसार जो ग्रंथ हैं वे निम्न प्रकार हैं।

धर्म एवं सिद्धान्त १४७, अध्यात्म ६२, पुराण ३०, कथा ३८, पूजा साहित्य १५२, स्तोत्र ८१ अन्य विषय ३२०।

इन ग्रंथों के संग्रह करने मे स्वयं अमरचंदजी दीवान ने बहुत रूचि ली थी क्योंकि उनके

समयकालीन विद्वानों में से नवलराम, गुमानीराम, जयचन्द छाबडा, डालूराम । मन्नालाल खिन्दूका, स्वरूपचन्द बिलाला के नाम उल्लेखनीय हैं और संभवतः इन्हीं विद्वानो के सहयोग से वे ग्रंथों का इतना संग्रह कर सके होंगे । प्रतिमासातचतुर्दशीव्रतोद्यापन सं १८७७, गोम्मटसार सं १८८६, पंचतन्त्र सं १८८७, क्षत्र चूडामणि सं० १८६१ आदि ग्रंथों की प्रतिलिपियां करवा कर इन्होंने भंडार मे विराजमान की थी ।

भंडार मे अधिकांश संग्रह १६ वीं २० वीं शताब्दी का है किन्तु कुछ ग्रंथ १६ वीं एवं १७ वीं शताब्दी के भी हैं । इनमे निम्न ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय है ।

पूर्णचन्द्राचार्य	उपसर्गहरस्तोत्र	ले. का सं० १५५३	संस्कृत
पं० अभ्रदेव	लब्धिविधानकथा	सं० १६०७	"
अमरकीर्ति	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	सं० १६२२	अपभ्रंश
पूज्यपाद	सर्वार्थसिद्धि	सं० १६२५	संस्कृत
पुष्पदन्त	यशोधर चरित्र	सं० १६३०	अपभ्रंश
ब्रह्मनेमिदत्त	नेमिनाथ पुराण	सं० १६४६	संस्कृत
जोधराज	प्रवचनसार भाषा	सं० १७३०	हिन्दी

अज्ञात कृतियों मे तेजपाल कविकृत संभवजिणणाह चरिए (अपभ्रंश) तथा हरचंद गंगवाल कृत सुकुमाल चरित्र भाषा (र० का० १६१८) के नाम विशेषतः उल्लेखनीय है ।

८. दि० जैन मन्दिर गोधों का जयपुर (छ भंडार)

गोधों का मन्दिर घी वालों का रास्ता, नागोरियों का चौक जौहरी बाजार मे स्थित है । इस मन्दिर का निर्माण १८ वीं शताब्दी के अन्त मे हुआ था और मन्दिर निर्माण के पश्चात ही यहां शास्त्रों का संग्रह किया जाना प्रारम्भ हो गया था । बहुत से ग्रंथ यहां सांगानेर के मन्दिरों में से भी लाये गये थे । वर्तमान में यहां एक सुव्यवस्थित शास्त्र भंडार है जिसमे ६१६ हस्तलिखित ग्रंथ एवं १०२ गुटके हैं । भंडार मे पुराण, चरित, कथा एवं स्तोत्र साहित्य का अच्छा संग्रह है । अधिकाश ग्रंथ १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी तक के लिखे हुये है । शास्त्र भंडार मे व्रतकथाकोश की संवत् १५८६ में लिखी हुई प्रति सबसे प्राचीन है । यहां हिन्दी रचनाओं का भी अच्छा संग्रह है । हिन्दी की निम्न रचनायें महत्वपूर्ण हैं जो अन्य भंडारों मे सहज ही मे नहीं मिलती हैं ।

चिन्तामणिजयमाल	ठक्कुर कवि	हिन्दी	१६ वीं शताब्दी
सीमन्धर स्तवन	"	"	" "
गीत एवं आदिनाथ स्तवन	पल्ह कवि	"	" "

नेमीश्वर चौमासा	मुनि सिंहनन्दि	हिन्दी	१७ वीं शताब्दी
चेतनगीत	,,	,,	,, ,,
नेमीश्वर रास	मुनि रतनकीर्ति	,,	,, ,,
नेमीश्वर हिंडोलना	,,	,,	,, ,,
द्रव्यसंग्रह भाषा	हेमराज	,,	र० का० १७१६
चतुर्दशीकथा	डालूराम	,,	१७६५

उक्त रचनाओं के अतिरिक्त जैन हिन्दी कवियों के पदों का भी अच्छा संग्रह है। इनमें बूचराज, छीहल, कनककीर्ति, प्रभाचन्द, मुनि शुभचन्द्र, मनराम एवं अजयराम के पद विशेषत उल्लेखनीय है। संवत् १६२६ में रचित डूंगरकवि की होलिका चौपई भी ऐसी रचना है जिसका परिचय प्रथम बार मिला है। संवत् १८३० मे रचित हरचंद गंगवाल कृत पंचकल्याणक पाठ भी ऐसी ही सुन्दर रचना है।

संस्कृत ग्रंथों में उमास्वामि विरचित पंचपरमेष्ठी स्तोत्र महत्वपूर्ण है। सूची मे उसका पाठ उद्धृत किया गया है। भंडार मे संग्रहीत प्राचीन प्रतियों मे विमलनाथ पुराण सं० १६६६, गुणभद्राचार्य कृत धन्यकुमार चरित सं० १६५२, विदग्धमुखमंडन सं० १६८३, सारस्वत दीपिका सं० १६५७, नाममाला (धनंजय) सं १६४३, धर्म परीक्षा (अमितगति) सं १६५३, समयसार नाटक (बनारसीदास) सं० १७०४ आदि के नाम उल्लेखनीय है।

९ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर यशोदानन्दजी जयपुर (ज भंडार)

यह मन्दिर जैन यति यशोदानन्दजी द्वारा सं० १८४८ में बनवाया गया था और निर्माण के कुछ समय पश्चात ही यहां शास्त्र भंडार की स्थापना कर दी गई। यशोदानन्दजी स्वय साहित्यक व्यक्ति थे इसलिये उन्होंने थोड़े समय मे ही अपने यहां शास्त्रों का अच्छा संकलन कर लिया। वर्तमान मे शास्त्र भंडार में ३५३ ग्रंथ एवं १३ गुटके हैं। अधिकांश ग्रंथ १८ वीं शताब्दी एवं उसके बाद की शताब्दियों के लिखे हुये हैं। संग्रह सामान्य है। उल्लेखनीय ग्रंथों मे चन्द्रप्रभकाव्य पंजिका सं० १५६४, पं० देवीचन्द कृत हितोपदेश की हिन्दी गद्य टीका, हैं। प्राचीन प्रतियों में आ० कुन्दकुन्द कृत समयसार सं० १६१४, आशाधर कृत सागारधर्मामृत सं० १६२८, केशवमिश्रकृत तर्कभाण सं० १६६६ के नाम उल्लेखनीय हैं। यह मन्दिर चौडा रास्ते में स्थित है।

१० शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर विजयराम पांड्या जयपुर (झ भंडार)

विजयराम पांड्या ने यह मन्दिर कब बनवाया इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन मन्दिर की दशा को देखते हुये यह जयपुर बसने के समय का ही बना हुआ जान पड़ता है। यह मन्दिर

पानों का दरीवा चो० रामचन्द्रजी में स्थित है। यहां का शास्त्र भंडार भी कोई अच्छी दशा में नहीं है। बहुत से ग्रंथ जीर्ण हो चुके हैं तथा बहुत सों के पूरे पत्र भी नहीं हैं। वर्तमान में यहां २७५ ग्रंथ एवं ७६ गुटके हैं। शास्त्र भंडार को देखते हुये यहां गुटकों का अच्छा संग्रह है। इनमें विश्वभूषण की नेमीश्वर की लहरी, पुण्यरत्न की नेमिनाथ पूजा, श्याम कवि की तीन चौबीसी चौपाई (र का १७५६) स्योजीराम सोगाणी की लग्नचन्द्रिका भाषा के नाम उल्लेखनीय हैं। इन छोटी छोटी रचनाओं के अतिरिक्त रूपचन्द्र, दरिगह, मनराम, हर्षकीर्ति, कुमुदचन्द्र आदि कवियों के पद भी संग्रहीत हैं साह लोहट कृत षटलेश्यावेलि एवं जसुराम का राजनीतिशास्त्र भाषा भी हिन्दी की उल्लेखनीय रचनायें हैं।

११ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जयपुर (ञ भंडार)

दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जयपुर का प्रसिद्ध जैन मन्दिर है। यह खवासजी का रास्ता चो० रामचन्द्रजी में स्थित है। मन्दिर का निर्माण संवत् १८०४ में सोनी गोत्र वाले किसी श्रावक ने कराया था इसलिये यह सोनियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। यहां एक शास्त्र भंडार है जिसमें ५४० ग्रंथ एवं १८ गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक संख्या संस्कृत भाषा के ग्रंथों की है। माणिक्य सूरि कृत नलोदय काव्य भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो सं० १४४५ की लिखी हुई है। यद्यपि भंडार में ग्रंथों की संख्या अधिक नहीं है किन्तु अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों तथा प्राचीन प्रतियों का यहां अच्छा संग्रह है।

इन अज्ञात ग्रंथों में अपभ्रंश भाषा का विजयसिंह कृत अजितनाथ पुराण, कवि दामोदर कृत णेमिणाह चरिए, गुणनन्दि कृत वीरनन्दि के चन्द्रप्रभकाव्यकी पंजिका, (संस्कृत) महापंडित जगन्नाथ कृत नेमिनरेन्द्र स्तोत्र (संस्कृत) मुनि पद्मनन्दि कृत वर्द्धमान काव्य, शुभचन्द्र कृत तत्ववर्णन (संस्कृत) चन्द्रमुनि कृत पुराणसार (संस्कृत) इन्द्रजीत कृत मुनिसुव्रत पुराण (हि०) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

यहां ग्रंथों की प्राचीन प्रतियां भी पर्याप्त संख्या में संग्रहीत है। इनमें से कुछ प्रतियों के नाम निम्न प्रकार हैं।

सूची की क्र सं	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार नाम	ले काल	भाषा
१५३५	षट्पाहुड	आ० कुन्दकुन्द	१५१६	प्रा०
२३५०	वर्द्धमानकाव्य	पद्मनन्दि	१५१८	संस्कृत
१८३६	स्याद्वादमंजरी	मल्लिषेण सूरि	१५२१	"
१८३६	अजितनाथपुराण	विजयसिंह	१५८०	अपभ्रंश
२०६८	णेमिणाहचरिए	दामोदर	१५८२	"
२३२३	यशोधरचरित्र टिप्पण	प्रभाचन्द्र	१५८५	संस्कृत
११७६	सागारधर्मामृत	आशाधर	१५६५	"

सूची की क्र सं	ग्रंथ नाम	ग्रंथ कार नाम	ले काल	भाषा
२५४१	कथाकोश	हरिषेणाचार्य	१५६७	संस्कृत
३८७६	जिनशतकटीका	नरसिंह भट्ट	१५६४	"
२२५	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र	१६३३	"
२०७६	क्षत्रचूडामणि	वादीभसिंह	१६०५	"
२११३	धन्यकुमारचरित्र	आ० गुणभद्र	१६०३	"
२११५	नागकुमार चरित्र	धर्मधर	१६१६	"

इस भंडार में कपड़े पर संवत् १५१६ का लिखा हुआ प्रतिष्ठा पाठ है। जयपुर के भंडारों में उपलब्ध कपड़े पर लिखे हुये ग्रंथों में यह ग्रंथ सबसे प्राचीन है। यहां यशोधर चरित की एक सुन्दर एवं कला पूर्ण सचित्र प्रति है। इसके दो चित्र ग्रंथ सूची मे देखे जा सकते हैं। चित्र कला पर मुगल कालीन प्रभाव है। यह प्रति करीब २०० वर्ष पुरानी है।

१२ आमेर शास्त्र भंडार जयपुर (ट भंडार)

आमेर शास्त्र भंडार राजस्थान के प्राचीन ग्रंथ भंडारों में से है। इस भंडार की एक ग्रंथ सूची सन् १९४८ में क्षेत्र के शोध संस्थान की ओर से प्रकाशित की जा चुकी है। उस ग्रंथ सूची में १५०० ग्रंथों का विवरण दिया गया था। गत १३ वर्षों में भंडार में जिन ग्रंथों का और संग्रह हुआ है उनकी सूची इस भाग में दी गई है। इन ग्रंथों में मुख्यतः जयपुर के छाबड़ों के मन्दिर के तथा बाबू ज्ञानचंदजी खिन्दूका द्वारा भेंट किये हुये ग्रंथ हैं। इसके अतिरिक्त भंडार के कुछ ग्रंथ जो पहिले वाली ग्रंथ सूची मे आने से रह गये थे उनका विवरण इस भाग मे दे दिया गया है।

इन ग्रंथों में पुष्पदंत कृत उत्तरपुराण भी है जो संवत् १३९९ का लिखा हुआ है। यह प्रति इस सूची में आये हुये ग्रंथों में सबसे प्राचीन प्रति है। इसके अतिरिक्त १६ वीं १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। भंडार के इन ग्रंथों में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति विरचित छांदसीय कवित्त (हिन्दी), ब्र० जिनदास कृत चौरासी न्यातिमाला (हिन्दी), लाभवर्द्धन कृत पान्डव-चरित (संस्कृत), लाखो कविकृत पार्श्वनाथ चौपाई (हिन्दी) आदि ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं। गुटकों में मनोहर मिश्र कृत मनोहरमंजरी, उदयभानु कृत भोजरासो, अग्रदास के कवित्त, तिपरदास कृत रुकिमणी कृष्णजी का रासो, जनमोहन कृत स्नेहलीला, श्यामिश्र कृत रागमाला, विनयकीर्ति कृत अष्टाह्निका रासो तथा बंसीदास कृत रोहिणीविधिकथा उल्लेखनीय रचनायें हैं। इस प्रकार आमेर शास्त्र भंभार मे प्राचीन ग्रंथों का अच्छा संकलन है।

ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण

ग्रंथ सूची को अधिक उपयोगी बनाने के लिये ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण करके उन्हें २५ विषयों में विभाजित किया गया है। विविध विषयों के ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि जैन आचार्यों ने प्रायः सभी विषयों पर ग्रंथ लिखे हैं। साहित्य का संभवत एक भी ऐसा विषय नहीं होगा जिस पर इन विद्वानों ने अपनी कलम नहीं चलाई हो। एक ओर जहां इन्होंने धार्मिक एवं आगम साहित्य लिख कर भंडारों को भरा है वहां दूसरी ओर काव्य, चरित्र, पुराण, कथा कोश आदि लिख कर अपनी विद्वात्ता की छाप लगाई है। श्रावकों एवं सामान्य जन के हित के लिये इन आचार्यों एवं विद्वानों ने सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सूक्ष्म से सूक्ष्म विषय का विश्लेपण किया है। सिद्धान्त की इतनी गहन एवं सूक्ष्म चर्चा शायद ही अन्य धर्मों में मिल सके। पूजा साहित्य लिखने मे भी ये किसी से पीछे नहीं रहे। इन्होंने प्रत्येक विषय की पूजा लिखकर श्रावकों को इनको जीवन मे उतारने की प्रेरणा भी दी है। पूजाओं की जयमालाओं में कभी कभी इन विद्वानों ने जैन धर्म के सिद्धान्तों का वडी उत्तमता से वर्णन किया है। ग्रंथ सूची के इसही भाग मे १५०० से अधिक पूजा ग्रथों का उल्लेख हुआ है।

धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त लौकिक साहित्य पर भी इन आचार्यों ने खूब लिखा है। तीर्थंकरों एवं शलाकाओं के महापुरुषों के पावन जीवन पर इनके द्वारा लिखे हुये वडे वडे पुराण एवं काव्य ग्रंथ मिलते हैं। ग्रंथ सूची मे प्राय. सभी महत्वपूर्ण पुराण साहित्य के ग्रंथ आगये हैं। जैन सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सिद्धान्तों को कथाओं के रूप में वर्णन करने में जैनाचार्यों ने अपने पाण्डित्य का अच्छा प्रदर्शन किया है। इन भंडारों मे इन विद्वानों द्वारा लिखा हुआ कथा साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलता है। ये कथायें रोचक होने के साथ साथ शिक्षाप्रद भी हैं। इसी प्रकार व्याकरण, ज्योतिष एवं आयुर्वेद पर भी इन भंडारों मे अच्छा साहित्य संग्रहीत है। गुटकों मे आयुर्वेद के नुसखों का अच्छा संग्रह है। सैकडों ही प्रकार के नुसखे दिये हुये हैं जिन पर खोज होने की अत्यधिक आवश्यकता है॥ इस बार हमने फागु, रासो एवं वेलि साहित्य के ग्रंथों का अतिरिक्त वर्णन दिया है। जैन आचार्यों ने हिन्दी में छोटे छोटे सैकड़ों रासो ग्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों संग्रहीत हैं। अकेले ब्रह्म जिनदास के ४० से भी अधिक रासो ग्रंथ मिलते हैं। जैन भंडारों मे १४ वीं शताब्दी के पूर्व से रासो ग्रंथ मिलने लगते हैं। इसके अतिरिक्त अध्ययन करने की दृष्टि से संग्रहीत किये हुये इन भडारों मे जैनेतर विद्वानों के काव्य, नाटक, कथा, ज्योतिष, आयुर्वेद, कोष, नीतिशास्त्र, व्याकरण आदि विषयों के ग्रंथों का भी अच्छा संकलन मिलता है। जैन विद्वानों ने कालिदास, माघ, भारवि आदि प्रसिद्ध कवियों के काव्यों का संकलन ही नहीं किया किन्तु उन पर विस्तृत टीकायें भी लिखी हैं। ग्रंथ सूची के इसी भाग मे ऐसे कितने ही काव्यों का उल्लेख आया है। भंडारों मे ऐतिहासिक रचनायें भी पर्याप्त संख्या मे मिलती हैं। इनमें भट्टारक पट्टावलियां, भट्टारकों के छन्द, गीत, चोमासा वर्णन, वंशोत्पत्ति वर्णन, देहली के बादशाहों एवं अन्य राज्यों के राजाओं के वर्णन एवं नगरों की वसापत का वर्णन मिलता है।

विविध भाषाओं में रचित साहित्य

राजस्थान के शास्त्र भंडारों मे उत्तरी भारत की प्राय सभी भाषाओं के ग्रंथ मिलते हैं। इनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी एवं गुजराती भाषा के ग्रंथ मिलते हैं। संस्कृत भाषा में जैन विद्वानों ने वृहद् साहित्य लिखा है। आ० समन्तभद्र, अकलंक, विद्यानन्दि, जिनसेन, गुणभद्र, वर्द्धमान भट्टारक, सोमदेव, वीरनन्दि, हेमचन्द्र, आशाधर, सकलकीर्ति आदि सैकड़ों आचार्य एवं विद्वान् हुये हैं जिन्होंने संस्कृत भाषा में विविध विषयों पर सैकड़ों ग्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों में मिलते हैं। यही नहीं इन्होंने अजैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये काव्य एवं नाटकों की टीकायें भी लिखी हैं। संस्कृत भाषा में लिखे हुये यशस्तिलक चम्पू, वीरनन्दि का चन्द्रप्रभकाव्य, वर्द्धमानदेव का वरांगचरित्र आदि ऐसे काव्य हैं जिन्हें किसी भी महाकाव्य के समकक्ष बिठाया जा सकता है। इसी तरह संस्कृत भाषा में लिखा हुआ जैनाचार्यों का दर्शन एवं न्याय साहित्य भी उच्च कोटि का है।

प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा के क्षेत्र में तो केवल जैनाचार्यों का ही अधिकांशतः योगदान है। इन भाषाओं के अधिकांश ग्रंथ जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये ही मिलते हैं। ग्रंथ सूची मे अपभ्रंश में एवं प्राकृत भाषा मे लिखे हुये पर्याप्त ग्रंथ आये हैं। महाकवि स्वयंभू, पुष्पदंत, अमरकीर्ति, नयनन्दि जैसे महाकवियों का अपभ्रंश भाषा मे उच्च कोटि का साहित्य मिलता है। अब तक इस भाषा के १०० से[1] भी अधिक ग्रंथ मिल चुके हैं और वे सभी जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हैं।

इसी तरह हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के ग्रंथों के संबंध में भी हमारा यही मत है कि इन भाषाओं की जैन विद्वानों ने खूब सेवा की है। हिन्दी के प्रारंभिक युग मे जब कि इस भाषा मे साहित्य निर्माण करना विद्वत्ता से परे समझा जाता था, जैन विद्वानों ने हिन्दी में साहित्य निर्माण करना प्रारम्भ किया था। जयपुर के इन भंडारों मे हमें १३ वीं शताब्दी तक की रचनाएं मिल चुकी हैं। इनमें जिनदत्त चौपई सबे प्रमुख है जो संवत १३५४ (१२९७ ई) में रची गयी थी। इसी प्रकार भ० सकलकीर्ति, ब्रह्म जिनदास, भट्टारक भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र, छीहल, बूचराज, ठक्कुरसी, पल्ह आदि विद्वानों का बहुतसा प्राचीन साहित्य इन भंडारों में प्राप्त हुआ है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य के अतिरिक्त जैनेतर विद्वानों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों का भी यहां अच्छा संकलन है। पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणी वेलि, बिहारी सतसई, केशवदास की रसिकप्रिया, सूर एवं कबीर आदि कवियों के हिन्दीपद, जयपुर के इन भंडारों मे प्राप्त हुये हैं। जैन विद्वान कभी कभी एक ही रचना में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग भी करते थे। धर्मचन्द्र प्रबन्ध इस दृष्टि से अच्छा उदाहरण कहा जा सकता है।

स्वयं ग्रंथकारों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों की मूल प्रतियां

जैन विद्वान् ग्रंथ रचना के अतिरिक्त स्वयं ग्रंथों की प्रतिलिपियां भी किया करते थे। इन विद्वानों द्वारा लिखे गये ग्रंथों की पाण्डुलिपियां राष्ट्र की धरोहर एवं अमूल्य सम्पत्ति है। ऐसी पाण्डुलिपियों का प्राप्त होना सहज बात नहीं है लेकिन जयपुर के इन भंडारों मे हमें स्वयं विद्वानों द्वारा लिखी हुई निम्न पाण्डुलिपियां प्राप्त हो चुकी हैं।

सूची की क्र सं.	ग्रंथकार	ग्रंथ नाम	लिपि संवत्
८४८	कनककीर्ति के शिष्य सदाराम	पुरुषार्थ सिद्धयुपाय	१७०७
१०४२	रत्नकरन्डश्रावकाचार भाषा	सदासुख कासलीवाल	१६२०
६७	गोम्मटसार जीवकांड भाषा	पं टोडरमल	१८ वीं शताब्दी
२६२५	नाममाला	पं० भारामल्ल	१६४३
३६५२	पचमंगलपाठ	खुशालचन्द काला	१८४४
५४३३	शीलरासा	जोधराज गोदीका	१७५०
५३८२	मिथ्यात्व खंडन	वख्तराम साह	१८३५
५७२८	गुटका	टेकचंद	—
५६५७	परमात्म प्रकाश एवं तत्वसार	डालूराम	—
६०४४	छीयालीस ठाणा	ब्रह्मारायमल्ल	१६१३

गुटकों का महत्व

शास्त्र भंडारों में हस्तलिखित ग्रंथों के अतिरिक्त गुटके भी संग्रह में होते हैं। साहित्यिक रचनाओं के संकलन की दृष्टि से ये गुटके बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इनमें विविध विषयों पर संकलन किये हुए कभी कभी ऐसे पाठ मिलते हैं जो अन्यत्र नहीं मिलते। ग्रंथ सूची मे आये हुये बारह भंडारों में ८५० गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक गुटके अ भंडार मे हैं। अधिकाश गुटकों मे पूजा स्तोत्र एवं कथायें ही मिलती हैं लेकिन प्रत्येक भंडार मे कुछ गुटके ऐसे भी मिल जाते हैं जिनमे प्राचीन एवं अलभ्य पाठों का संग्रह होता है। ऐसे गुटकों का अ, ज, ञ एवं ट भंडार में अच्छा संकलन है। १३ वीं शताब्दी की हिन्दी रचना जिनदत्त चौपई अ भंडार के एक गुटके मे ही प्राप्त हुई है। इसी तरह अपभ्रंश की कितनी ही कथायें, ब्रह्मजिनदास, शुभचन्द, छीहल, ठक्कुरसी, पल्ह, मनराम आदि प्राचीन कवियों की रचनायें भी इन्हीं गुटकों मे मिली हैं। हिन्दी पदों के संकलन के तो ये एकमात्र स्रोत है। अधिकाश हिन्दी विद्वानों का पद साहित्य इनमे संकलित किया हुआ होता है। एक एक गुटके में कभी कभी तो ३००, ४०० पद संग्रह किये हुये मिलते है। इन गुटकों मे ही ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध होती है। पट्टावलिया, छन्द, गीत, वंशावलि, बादशाहों के विवरण, नगरों की बसापत आदि सभी इनमें

ही मिलते हैं। प्रत्येक शास्त्र भंडार के व्यवस्थापकों का कर्त्तव्य है कि वे अपने यहां के गुटकों को बहुत ही सम्हाल कर रखें जिसमे वे नष्ट नहीं होने पावें क्योंकि हमने देखा है कि बहुत से भंडारों के गुटके विना वेष्टनों में बंधे हुये ही रखे रहते हैं और इस तरह धीरे धीरे उन्हें नष्ट होने की मानों आज्ञा देदी जाती है।

शास्त्र भंडारों की सुरक्षा के संबंध में :

राजस्थान के शास्त्र भंडार अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं इसलिये उनकी सुरक्षा के प्रश्न पर सबसे पहिले विचार किया जाना चाहिये। छोटे छोटे गांवों में जहां जैनों के एक-एक दो-दो घर रह गये हैं वहां उनकी सुरक्षा होना अत्यधिक कठिन है। इसके अतिरिक्त कस्बों की भी यही दशा है। वहां भी जैन समाज का शास्त्र भंडारों की ओर कोई ध्यान नहीं है। एक तो आजकल छपे हुये ग्रंथ मिलने के कारण हस्तलिखित ग्रंथों की कोई स्वाध्याय नहीं करते हैं, दूसरे वे लोग इनके महत्व को भी नहीं समझते हैं। इसलिये समाज को हस्तलिखित ग्रंथों की सुरक्षा के लिये ऐसा कोई उपाय ढूंढना चाहिये जिससे उनका उपयोग भी होता रहे तथा वे सुरक्षित भी रह सके। यह तो निश्चित ही है कि छपे हुए ग्रंथ मिलने पर इन्हें कोई पढ़ना नहीं चाहता। इसके अतिरिक्त इस ओर रुचि न होने के कारण आगे आने वाली सन्तति तो इन्हें पढना ही भूल जावेगी। इसलिये यह निश्चित सा है कि भविष्य में ये ग्रंथ केवल विद्वानों के लिये ही उपयोगी रहेंगे और वे ही इन्हें पढना तथा देखना अधिक पसन्द करेंगे।

ग्रंथ भंडारों की सुरक्षा के लिये हमारा यह सुझाव है कि राजस्थान के अभी सभी जिलों के कार्यालयों पर इनका एक एक संग्रहालय स्थापित हो तथा उप प्रान्त के सभी शास्त्र भंडारों के ग्रंथ उन संग्रहालय में संग्रहीत कर लिये जावें, किन्तु यदि किसी किसी उपजिलों एवं कस्बों में भी जैनों की अच्छी बस्ती है तो उन्हीं स्थानों पर भंडारों को रहने दिया जावे। जिलेवार यदि संग्रहालय स्थापित हो जावें तो वहां रिसर्च स्कालर्स आसानी से पहुंच कर उनका उपयोग कर सकते हैं तथा उनकी सुरक्षा का भी पूर्णतः प्रबन्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त राजस्थान में जयपुर, अलवर, भरतपुर, नागौर, कोटा, बूंदी, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, बांसवाडा आदि स्थानों पर इसके बड़े बड़े संग्रहालय खोल दिये जावे तथा अनुसन्धान प्रेमियों को उन्हें देखने एवं पढ़ने की पूरी सुविधाएं दी जावे तो ये हस्तलिखित के ग्रंथ फिर भी सुरक्षित रह सकते हैं अन्यथा उनका सुरक्षित रहना बडा कठिन होगा।

जयपुर के भी कुछ शास्त्र भंडारों को छोड़कर अन्य भंडार कोई विशेष अच्छी स्थिति मे नहीं हैं। जयपुर के अब तक हमने १६ भंडारों की सूची तैयार की है लेकिन किसी भंडार में वेष्टन नहीं हैं तो कहीं विना पुट्ठों के ही शास्त्र रखे हुये हैं। हमारी इस असावधानी के कारण ही सैकड़ों ग्रंथ अपूर्ण हो गये हैं। यदि जयपुर के शास्त्र भंडारों के ग्रंथों का संग्रह एक केन्द्रीय संग्रहालय में कर लिया जावे तो उस

समय हमारा वह संग्रहालय जयपुर के दर्शनीय स्थानों में से गिना जावेगा। प्रति वर्ष सैकड़ों की संख्या में शोध विद्यार्थी आवेंगे और जैन साहित्य के विविध विषयों पर खोज कर सकेंगे। इस संग्रहालय में शास्त्रों की पूर्ण सुरक्षा का ध्यान रखा जावे और इसका पूर्ण प्रबन्ध एक संस्था के अधीन हो। आशा है जयपुर का जैन समाज हमारे इस निवेदन पर ध्यान देगा और शास्त्रों की सुरक्षा एवं उनके उपयोग के लिये कोई निश्चित योजना बना सकेगा।

ग्रंथ सूची के सम्बन्ध में

ग्रंथ सूची के इस भाग को हमने सर्वांग सुन्दर बनाने का पूर्ण प्रयास किया है। प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों की ग्रंथ प्रशस्ति एवं लेखक प्रशस्तियां दी गई हैं जिनसे विद्वानों को उनके कर्त्ता एवं लेखन-काल के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी मिल सके। गुटकों में महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है इसलिये बहुत से गुटकों के पूरे पाठ एवं शेष गुटकों के उल्लेखनीय पाठ दिये हैं। ग्रंथ सूची के अन्त में ग्रंथानुक्रमणिका, ग्रंथ एवं ग्रंथकार, ग्राम नगर एवं उनके शासकों का उल्लेख ये चार परिशिष्ट दिये हैं। ग्रंथानुक्रमणिका को देखकर सूची में आये हुये किसी भी ग्रंथ का परिचय शीघ्र मालूम किया जा सकता है क्योंकि बहुत से ग्रंथों के नाम से उनके विषय के सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती। ग्रंथानुक्रमणिका में ४२०० ग्रंथों का उल्लेख आया है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रंथ सूची में निर्दिष्ट पं सभी ग्रंथ मूल ग्रंथ हैं तथा शेष उन्हीं की प्रतियां हैं। इसी प्रकार ग्रंथ एवं ग्रंथकार परिशिष्ट से एक ही ग्रंथकार के इस सूची में कितने ग्रंथ आये हैं इसकी पूर्ण जानकारी मिल सकती है। ग्राम एवं नगरों के परिशिष्ट में इन भंडारों में किस किस ग्राम एवं नगरों में रचे हुये एवं लिखे हुये ग्रंथ संग्रहीत हैं यह जाना जा सकता है। इसके अतिरिक्त ये नगर कितने प्राचीन थे एवं उनमें साहित्यिक गतिविधियां किस प्रकार चलती थी इसका भी हमें आभास मिल सकता है। शासकों के परिशिष्ट में राजस्थान एवं भारत के विभिन्न राजा, महाराजा एवं बादशाहों के समय एवं उनके राज्य के सम्बन्ध में कुछ २ परिचय प्राप्त हो जाता है। ऐतिहासिक तथ्यों के संकलन में इस प्रकार के उल्लेख बहुत प्रामाणिक एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। प्रस्तावना में ग्रंथ भंडारों के संक्षिप्त परिचय के अतिरिक्त अन्त में ४६ अज्ञात ग्रंथों का परिचय भी दिया गया है जो इन ग्रंथों की जानकारी प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगा। प्रस्तावना के साथ में ही एक अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची भी दी गई है इस प्रकार ग्रंथ सूची के इस भाग में अन्य सूचियों से सभी तरह की अधिक जानकारी देने का पूर्ण प्रयास किया है जिससे पाठक अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। ग्रंथों के नाम, ग्रंथकर्त्ता का नाम, उनके रचनाकाल, भाषा आदि के साथ-साथ उनके आदि अन्त भाग पूर्णतः ठीक २ देने का प्रयास किया गया है फिर भी कमियां रहना स्वाभाविक है। इसलिये विद्वानों से हमारा उदार दृष्टि अपनाने का अनुरोध है तथा यदि कहीं कोई कमी हो तो हमें सूचित करने का कष्ट करें जिससे भविष्य में इन कमियों को दूर किया जा सके।

धन्यवाद समर्पण

हम सर्व प्रथम क्षेत्र की प्रबन्ध कारिणी कमेटी एवं विशेषतः उसके मंत्री महोदय श्री केशरलालजी बख्शी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग को प्रकाशित करवा कर समाज एवं जैन साहित्य की खोज करने वाले विद्यार्थियों का महान् उपकार किया है। क्षेत्र कमेटी द्वारा जो साहित्य शोध संस्थान संचालित हो रहा है वह सम्पूर्ण जैन समाज के लिये अनुकरणीय है एवं उसे नई दिशा की ओर ले जाने वाला है। भविष्य में शोध संस्थान के कार्य का और भी विस्तार किया जावेगा ऐसी हमें आशा है। ग्रंथ सूची में उल्लिखित सभी शास्त्र भंडार के व्यवस्थापक महोदयों को एवं विशेषतः श्री नथमलजी बज, समीरमलजी छावडा, पूनमचंदजी सोगाणी, इन्दरलालजी पापड़ीवाल एवं सोहनलालजी सोगाणी, अनूपचंदजी दीवाण, भंवरलालजी न्यायतीर्थ, राजमलजी गोधा, प्रो० सुल्तानसिंहजी, कपूरचंदजी रांवका, आदि सज्जनों के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने हमें ग्रंथ भंडार की सूचियां बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया एवं अब भी समय समय पर भंडार के ग्रंथ दिखलाने में सहयोग देते रहते हैं। श्रद्धेय पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ के प्रति हम कृतज्ञांजलियां अर्पित करते हैं जिनकी सतत प्रेरणा एवं मार्ग-दर्शन से साहित्योद्धार का यह कार्य किया जा रहा है। हमारे सहयोगी भा० सुगनचंदजी को भी हम धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिनका ग्रंथ सूची को तैयार करने में हमें पूर्ण सहयोग मिला है। जैन साहित्य सदन देहली के व्यवस्थापक पं. परमानन्दजी शास्त्री के भी हम हृदय से आभारी हैं। जिन्होंने सूची के एक भाग को देखकर आवश्यक सुझाव देने का कष्ट किया है।

अन्त में आदरणीय डा. वासुदेवशरणजी सा. अग्रवाल, अध्यक्ष हिन्दी विभाग काशी विश्वविद्यालय, वाराणसी के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची की भूमिका लिखने की कृपा की है। डाक्टर सा का हमें सदैव मार्ग-दर्शन मिलता रहता है जिसके लिये उनके हम पूर्ण कृतज्ञ हैं।

महावीर भवन, जयपुर
दिनाक १०-११-६१

कस्तूरचंद कासलीवाल
अनूपचंद न्यायतीर्थ

प्राचीन एवं अज्ञात रचनाओं का परिचय

१ अमृतधर्मरस काव्य

श्रावक धर्म पर यह एक सुन्दर एवं सरस संस्कृत काव्य है। काव्य मे २४ प्रकरण हैं भट्टारक गुणचन्द्र इसके रचयिता हैं जिन्होंने इसे लोहट के पुत्र सावलदास के पठनार्थ लिखा था। स्वयं ग्रंथकार ने अपनी प्रशस्ति निम्न प्रकार लिखी है—

पट्टे श्रीकुंदकुंदाचार्ये तत्पट्टे श्रीसहस्रकीर्ति तत्पट्टे श्रीत्रिभुवनकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री गुरु रत्नकीर्ति तत्पट्टे श्री ४गुणचन्द्रदेवभट्टविरचितमहाग्रंथ कर्मक्षयार्थं लोहट सुत पंडित श्री सावलदास पठनार्थं ॥ काव्य की एक प्रति अ भंडार मे है। प्रति अशुद्ध है तथा उसमें प्रथम २ पृष्ठ नहीं हैं।

२ आध्यात्मिक गाथा

इस रचना का दूसरा नाम पट् पद छप्पय है। यह भट्टारक लक्ष्मीचन्द्र की रचना है जो संभवत. भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में हुये थे। रचना अपभ्रंश भाषा मे निबद्ध है तथा उच्चकोटि की है। इसमें संसार की नश्वरता का बडा ही सुन्दर वर्णन किया गया है। इसमे २८ पद हैं। एक पद नीचे देखिये—

विरला जाणंति पुणो विरला सेवंति अप्पणो सामि, विरला ससहावरया परदव्व परम्मुहा विरला।
ते विरला जगि अत्थि जिकिवि परदव्वु ण इच्छहिं, ते विरला ससहाव करहिं रुइ णियमणि पिच्छहिं॥
विरला सेवहिं सामि णित्तु णिय देह वसंतउ, विरला जाणहि अप्पु शुद्ध चेयण गुणवंतउ।
मणु पत्तणु दुल्लह लहिवि सरवय कुलु उत्तमु जियउ, जिणु एम पयंपइ णिसुणि वुह गाह भणिण छप्पव कियउ॥

इसकी एक प्रति अ भंडार मे सुरक्षित है। यह प्रति आचार्य नेमिचन्द्र के पढने के लिये लिखी गई थी।

३ आराधनासार प्रबन्ध

आराधनासार प्रबन्ध मे मुनि प्रभाचंद्र विरचित संस्कृत कथाओं का संग्रह है। मुनि प्रभाचन्द्र देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। किन्तु प्रभाचन्द्र के शिष्य थे मुनि पद्मनंदि जिनके द्वारा विरचित 'वर्द्धमान पुराण' का परिचय आगे दिया गया है। प्रभाचन्द ने प्रत्येक कथा के अन्त में अपना परिचय दिया है। एक परिचय देखिये—

श्रीमूलसंघे वरभारतीये गच्छे वलात्कारगणेति रम्ये।
श्रीकुंदकुन्दाख्यमुनीन्द्रवंशे जात प्रभाचन्द्रमहायतीन्द्र' ॥

देवेन्द्रचन्द्रार्कसम्यर्चितेन, तेन प्रभाचन्द्रमुनीश्वरेण।
अनुग्रहार्थं रचितः सुवाक्यैः आराधनासारकथाप्रबन्धः॥
तेन क्रमेणैव मया स्वशक्त्या श्लोकैः प्रसिद्धैश्च निगद्यते च।
मार्गेण किं भानुकरप्रकाशे स्वलीलया गच्छति सर्वलोके॥

आराधनासार बहुत सुन्दर कथा ग्रंथ है। यह अभीतक अप्रकाशित है।

४ कवि वल्लभ

क भंडार में हरिचरणदास कृत दो रचनायें उपलब्ध हुई हैं। एक विहारी सतसई पर हिन्दी गद्य टीका है तथा दूसरी रचना कवि वल्लभ है। हरिचरणदास ने कृष्णोपासक प्राणनाथ के पास विहारी सतसई का अध्ययन किया था। ये श्रीनन्द पुरोहित की जाति के थे तथा 'मोहन' उनके आश्रयदाता थे जो वहुत ही उदार प्रकृति के थे। विहारी सतसई पर टीका इन्होंने संवत् १८३४ में समाप्त की थी। इसके एक वर्ष पश्चात् इन्होंने कविवल्लभ की रचना की। इसमें काव्य के लक्षणों का वर्णन किया गया है। पूरे काव्य में २८४ पद्य हैं। संवत् १८५२ में लिखी हुई एक प्रति क भंडार में सुरक्षित है।

५ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा

देवीसिंह छाबडा १८ वीं शताब्दी के हिन्दी भाषा के विद्वान थे। ये जिनदास के पुत्र थे। संवत् १७६६ में इन्होंने श्रावक माधोदास गोलालारे के आग्रह वश उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला की छन्दोबद्ध रचना की थी। मूल ग्रंथ प्राकृत भाषा का है और वह नेमिचन्द्र भंडारी द्वारा रचित है। कवि नरवर निवासी थे जहां कूर्म वंश के राजा छत्रसिंह का राज्य था।

उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला भाषा हिन्दी का एक सुन्दर ग्रंथ है जो पूर्णतः प्रकाशन योग्य है। पूरे ग्रंथ में १६८ पद्य हैं जो दोहा, चौपई, चौबोला, गीताछंद, नाराच, सोरठा आदि छन्दों मे निबद्ध है। कवि ने ग्रंथ समाप्ति पर जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है—

वातसल गोती सूचरो, संचई सकल बखान।
गोलालारे सुभमती, माधोदास सुजान॥१६०॥

चौपई

महाकठिन प्राकृत की वांनी, जगत मांहि प्रगट सुखदानी।
या विधि चिंता मनि सुभाषी, भाषा छंद मांहि अभिलाषी॥
श्री जिनदास तनुज लघु भाषा, खंडेलवाल सावरा साखा।
देवीस्यंघ नाम सब भाषै, कवित मांहि चिंता मनि राखै॥

गीता छंद

श्री सिद्धान्त उपदेशमाला रतनगुन मंडित करी।
सब सुकवि कंठा करहु, भूषित सुमनसोभित विधिकरी ॥
जिम सूर्य के प्रकास सेती तम वितान विलात है।
इमि पढ़ै परमागम सुवांनी विदत रुचि अवदात है ॥

दोहा

सुखविधान नरवरपती, छत्रस्यंघ अवतंस।
कीरति वंत प्रवीन मति, राजत कूरम वंश ॥१६४॥
जाकै राज सुचैन सौं, विनां ईति अरु भीति।
रच्यो ग्रंथ सिद्धान्त सुभ, यह उपगार सुनीति ॥१६५॥
सत्रहसै अरु छ्यएनवै, संवत् विक्रमराज।
भादव बुदि एकादसी, शनिदिन सुविधि समाज ॥१६६॥
ग्रंथ कियो पूरन सुविधि नरवर नगर मंझार।
जै समझै याको अरथ ते पावै भवपार ॥१६७॥

चौबोला

सावन वदि की तीज आदि सौ आरंभ्यो यह ग्रंथ।
भादव वदि एकादशि तक लौं परमपुन्य को पंथ ॥
एक महिना आठ दिना मैं कियौ समापत आंनि।
पढ़ै गुनै प्रकटै चिंतामनि बोध सदा सुख दांनि ॥१६८॥

इति उपदेशसिद्धांतरत्नमाला भाषा ॥

६ गोम्मटसार टीका

गोम्मटसार की यह संस्कृत टीका आ० सकलभूषण द्वारा विरचित है। टीका के प्रारम्भ में लिपिकार ने टीकाकार के विषय मे लिखा है वह निम्न प्रकार है:—

"अथ गोम्मटसार ग्रंथ गाथा बंध टीका करणाटक भाषा में है उसके अनुसार सकलभूषण नैं संस्कृत टीका बनाई सो लिखिये है।

टीका का नाम मन्दप्रबोधिका है जिसका टीकाकार ने मंगलाचरण में ही उल्लेख किया है:—

मुनिं सिद्धं प्रणम्याहं नेमिचन्द्रजिनेश्वरं।
टीकां गुम्मटसारस्य कुर्वे मंदप्रबोधिकां॥१॥

लेकिन अभयचन्द्राचार्य ने जो गोम्मटसार पर संस्कृत टीका लिखी थी उसका नाम भी मन्दप्रबोधिका ही है। [1]मुख्तार साहब ने उसको गाथा नं० ३८३ तक ही पाया जाना लिखा है, लेकिन जयपुर के 'क' भण्डार में संग्रहीत इस प्रति में आ० सकल भूषण दिया है। इसकी विद्वानों द्वारा विस्तृत खोज होनी चाहिये। टीका के अन्त में जो टीकाकाल लिखा है वह संवत् १५७६ का है।

विक्रमादित्यभूपस्य विख्यातो च मनोहरे।
दशपंचशते वर्षे षड्भिः संयुतसप्ततौ (१५७६)

टीका का आदि भाग निम्न प्रकार है:—

श्रीमदप्रतिहतप्रभावस्याद्वादशासन-गुहाअंतरनिवासि प्रवादिमदांधसिंधुरसिंहायमानसिंहनंदि मुनींद्राभिनंदित गंगवंशललामराज सर्वज्ञाद्यनेकगुणनामधेय-श्रीमद्रामल्लदेव महावल्लभ—महामात्य पदविराजमान रणरंगमल्लसहाय पराक्रमगुणरत्नभूषण सम्यक्त्वरत्ननिलयादिविविधगुणनाम समासादितकीर्तिकांतश्रीमच्चामुंडराय भव्यपुंडरीक द्रव्यानुयोगप्रश्नानुरूपरूपं महाकर्मप्राभृतसिद्धान्त जीवस्थानाख्यप्रथमखंडार्थसंग्रहं गोम्मटसारनामधेयं। पंचसंग्रहशास्त्र आरंभ समस्तसैद्धान्तिकचूडामणि श्रीमन्नेमिचंद्रसैद्धान्तचक्रवर्ति तद् गोमटसारप्रथमावयवभूतं जीवकांडं विरचयस्तत्रादौमलगालनपुण्यावाप्ति शिष्टाचारपरिपालननास्तिकतापरिहारादिफलजननसमर्थं विशिष्टेष्टदेवतानमस्काररूपधर मंगलपूर्वक प्रकृतशास्त्रकथनप्रतिज्ञासूचकं गाथा सूत्रकं कथयति।

अन्तिम भाग

नत्वा श्रीवर्द्धमानांतान् वृषभादि जिनेश्वरान्।
धर्ममार्गोपदेशत्वात सर्व्वकल्याणदायिकान्॥ १॥
श्रीचन्द्रादिप्रभांतं च नत्वा स्याद्वाददेशकं।
श्रीमद्गुम्मटसारस्य कुर्व्वे शस्तां प्रशस्तिकां॥ २॥
श्रीसतः शकराजस्य शाके वर्त्तति सुन्दरे।
चतुर्दशशते चैक-चत्वारिंशत्-समन्विते॥ ३॥
विक्रमादित्यभूपस्य विख्याते च मनोहरे।
दशपंचशते वर्षे षट्भि संयुतसप्तती॥ ४॥

---

१. देखिये पुरातन जैन वाक्य सूची प्रस्तावना पृष्ठ ८८।

सेठ चारुदत्त के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। रचना चौपई एवं दूहा छन्द में है लेकिन राग भिन्न भिन्न है। इसका दूसरा नाम चारुदत्तरास भी है।

कल्याणकीर्ति १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। अब तक इनकी पार्श्वनाथ[1] रासो (सं० १६९७) बावनी[2], जीरावलि पार्श्वनाथ स्तवनः (सं०) नवग्रह स्तवन (सं०) तीर्थंकर विनती[3] (सं० १७२३) आदीश्वर[4] बधावा आदि रचनायें मिल चुकी हैं।

९ चौरासी जातिजयमाल

ब्रह्म जिनदास १५ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान् थे। ये संस्कृत एवं हिन्दी दोनों के ही अगाढ विद्वान थे तथा इन दोनों ही भाषाओं में इनकी ६० से भी अधिक रचनायें उपलब्ध होती हैं। जयपुर के इन भंडारों में भी इनकी अभी कितनी ही रचनायें मिली है जिनमे से चौरासी जातिजयमाल का वर्णन यहां दिया जा रहा है।

चौरासी जातिजयमाल में माला की बोली के उत्सव में सम्मिलित होने वाली ८४ जैन जातियों का नामोल्लेख किया है। माला की बोली बढाने में एक जाति से दूसरी जाति वाले व्यक्तियों मे बड़ी उत्सुकता रहती थी। इस जयमाल मे सबसे पहिले गोलालार अन्त मे चतुर्थ जैन श्रावक जाति का उल्लेख किया गया है। रचना ऐतिहासिक है एवं इसकी भाषा हिन्दी (राजस्थानी) है। इसमे कुल ४३ पद्य हैं। ब्रह्म जिनदास ने जयमाल के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है।

> ते समकित वंतह बहु गुण जुत्तहं, माल सुणो तहमे एकमनि।
> ब्रह्म जिनदास भासे विबुध प्रकासे, पढई गुणे जे धम्म धनि ॥४३॥

इसी चौरासी जाति जयमाला समाप्त।

इति जयमाल के आगे चौरासी जाति की दूसरी जयमाल है जिसमे २६ पद्य हैं और वह संभवत किसी अन्य कवि की है।

१० जिनदत्तचौपई

जिनदत्त चौपई हिन्दी का आदिकालिक काव्य है जिसको रल्ह कवि ने संवत् १३५४ (सन् १२९७) भादवा सुदी पंचमी के दिन समाप्त किया था।

१	राजस्थान जैन शास्त्र भंडारो की ग्रंथ सूची		भाग-२	पृष्ठ ७४
२.	”	”	”	पृष्ठ १०६
३	”	”	भाग ३	पृष्ठ १४१
४.	”	”	”	पृष्ठ १५२
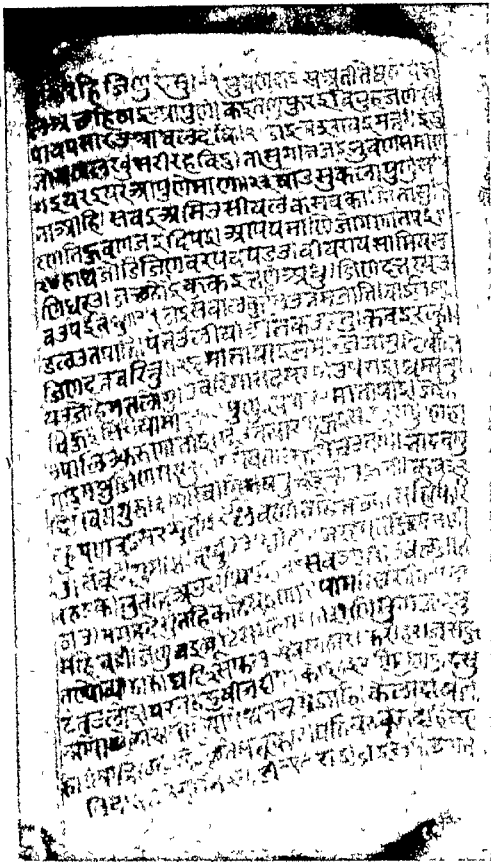
१८ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध साहित्य सेवी महा पंडित टोडरमलजी द्वारा रचित एव लिखित
गोम्मटसार की मूल पाण्डुलिपि का एक चित्र ।
यह ग्रन्थ जयपुर के दि० जैन मंदिरपाटोदी के शास्त्र भण्डार मे संग्रहीत है।
(सूची क्र स ९७ वे सं ४०३)

संवत् तेरहसे चउवरणे, भादव सुदिपंचमगुरु दिएणे।
स्वाति नखत्त चंदु तुलहती, कवइ रल्हुं पणवइ सुरसती ।।२८।।

कवि जैन धर्मावलम्बी थे तथा जाति से जैसवाल थे। उनकी माता का नाम सिरीया तथा पिता का नाम आते था।

जइसवाल कुलि उत्तम जाति, वाईसइ पाडल उतपाति।
पंचऊलीया आतेकउपूतु, कवइ रल्हु जिणदत्तु चरित्तु ।।

जिनदत्त चौपई कथा प्रधान काव्य है इसमें कविने अपनी काव्यत्व शक्ति का अधिक प्रदर्शन न करते हुये कथा का ही सुन्दर रीति से प्रतिपादन किया है। ग्रंथ का आधार पं. लाखू द्वारा विरचित जिणयत्तचरिउ (सं. १२७५) है जिसका उल्लेख स्वयं ग्रंथकार ने किया है।

मइ जोयउ जिनदत्तपुराणु, लाखू विरयउ अइसू पसाण ।।

ग्रंथ निर्माण के समय भारत पर अलाउद्दीन खिलजी का राज्य था। रचना प्रधानत चौपई छन्द में निवद्ध है किन्तु वस्तुबंध, दोहा, नाराच, अर्धनाराच आदि छन्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है। इसमें कुल पद्य ५५४ हैं। रचना की भाषा हिन्दी है जिस पर अपभ्रंश का अधिक प्रभाव है। वैसे भाषा सरल एवं सरस है। अधिकांश शब्दों को उकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है जो उस समय की परम्परा सी मालूम होती है। काव्य कथा प्रधान होने पर भी उसमें रोमांचकता है तथा काव्य में पाठकों की उत्सुकता बनी रहती है।

काव्य में जिनदत्त मगध देशान्तर्गत वसन्तपुर नगर सेठ के पुत्र जीवदेव का पुत्र था। जिनेन्द्र भगवान की पूजा अर्चना करने से प्राप्त होने के कारण उसका नाम जिनदत्त रखा गया था। जिनदत्त व्यापार के लिये सिंघल आदि द्वीपों मे गया था। उसे व्यापार में अतुल लाभ के अतिरिक्त वहां से उसे अनेक अलौकिक विद्यायें एवं राजकुमारियां भी प्राप्त हुई थीं। इस प्रकार पूरी कथा जिनदत्त के जीवन की सुन्दर कहानियों से पूर्ण है।

११ ज्योतिपसार

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है ज्योतिपसार ज्योतिप शास्त्र का ग्रंथ है। इसके रचयिता हैं श्री कृपाराम जिन्होंने ज्योतिप के विभिन्न ग्रंथों के आधार से संवत् १७५२ में इसकी रचना की थी। कवि के पिता का नाम तुलाराम था और वे शाहजहांपुर के रहने वाले थे। पाठकों की जानकारी के लिये ग्रंथ मे से दो उद्धरण दिये जा रहे हैं:—

केंदरियों चौथो भवन, सपतमदसमौ जान। पंचम अरु नोमौ भवन, येह त्रिकोण वखान ।।६।।
तीजो पसटम ग्यारमों, घर दसमों कर लेखि। इसको उपत्रै कहत है, सर्वग्रंथ में देखि ।।७।।

वरष लग्यो जा अंस में, सोह दिन चित धारि। वा दिन उतनी घडी, जु पल वीते लग्नविचारि ॥४०॥
लगन लिखे ते गिरह जो, जा घर बैठो आय। ता घर के मूल सुफल को कीजे मित बनाय ॥४१॥

१२ ज्ञानार्णव टीका

आचार्य शुभचन्द्र विरचित ज्ञानार्णव संस्कृत भाषा का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। स्वाध्याय करने वालों का प्रिय होने के कारण इसकी प्रायः प्रत्येक शास्त्र भंडार मे हस्तलिखित प्रतियां उपलब्ध होती हैं। इसकी एक टीका विद्यानन्दि के शिष्य श्रुतसागर द्वारा लिखी गई थी। ज्ञानार्णव की एक अन्य संस्कृत टीका जयपुर के अ भंडार मे उपलब्ध हुई है। टीकाकार है पं नयविलास। उन्होंने इस टीका को मुगल सम्राट अकबर जलालुद्दीन के राजस्व मंत्री टोडरमल के सुत रिपिदास के श्रवणार्थ एवं पठनार्थ लिखी थी। इसका उल्लेख टीकाकार ने ग्रन्थ के प्रत्येक अध्याय के अंत में निम्न प्रकार किया है:—

इति शुभचन्द्राचार्यविरचिते ज्ञानार्णवमूलसूत्रे योगप्रदीपाधिकारे पं. नयविलासेन साह पासा तत्पुत्र साह टोडर तत्पुत्र साह रिषिदासेन स्वश्रवणार्थे पंडित जिनदासोद्यमेन कारापितेन द्वादशभावना प्रकरण द्वितीयः।

टीका के प्रारम्भ में भी टीकाकार ने निम्न प्रशस्ति लिखी है—

शास्वत्-साहि जलालदीनपुरतः प्राप्त प्रतिष्ठोदयः।
श्रीमान् मुगलवंशशारद-शशि-विश्वोपकारोद्यतः।
नाम्ना कृष्ण इति प्रसिद्धिरभवत् सत्त्रात्रधर्मोन्नतेः।
तन्मंत्रीश्वर टोडरो गुणयुतः सर्वाधिकाराधितः ॥६॥
श्रीमत् टोडरसाह पुत्र निपुण. सद्दानचिंतामणिः।
श्रीमत् श्रीरिपिदास धर्मनिपुण' प्राप्तोन्नतिस्वश्रिया।
तेनाहं समवादि निपुणो न्यायाद्यलीलाह्वयः।
श्रोतुं वृत्तिमता परं सुविषया ज्ञानार्णवस्य स्फुटं ॥७॥

उक्त प्रशस्ति से यह जाना जा सकता है कि सम्राट अकबर के राजस्व मंत्री टोडरमल संभवतः जैन थे। इनके पिता का नाम साह पाशा था। स्वयं मंत्री टोडरमल भी कवि थे और इनका एक भजन "अब तेरो मुख देखूं जिनंदा" जैन भंडारों में कितने ही गुटको में मिलता है।

नयविलास की संस्कृत टीका का उल्लेख पीटर्सन ने भी किया है लेकिन उन्होंने नामोल्लेख के अतिरिक्त और कोई परिचय नहीं दिया है। पं. नयविलास का विशेष परिचय अभी खोज का विषय है।

१३ णेमिणाह चरिए—महाकवि दामोदर

महाकवि दामोदर कृत णेमिणाह चरिए अपभ्रंश भाषा का एक सुन्दर काव्य है। इस काव्य में पांच संधियां हैं जिनमे भगवान नेमिनाथ के जीवन का वर्णन है। महाकवि ने इसे संवत् १२८७ में समाप्त किया था जैसा निम्न दुवई छन्द (एक प्रकार का दोहा) मे दिया हुआ है.—

वारहसयाइं सत्तसियाइं, विक्कमरायहो कालहं। पमारहं पट्ट समुद्धरणु, णरवर देवापालहं ॥१४५॥

दामोदर मुनि सूरसेन के प्रशिष्य एवं महामुनि कमलभद्र के शिष्य थे। इन्होंने इस ग्रंथ की पंडित रामचन्द्र के आदेश से रचना की थी। ग्रंथ की भाषा सुन्दर एवं ललित है। इसमें घत्ता, दुवई, वस्तु छंद का प्रयोग किया गया है। कुल पद्यों की संख्या १४५ है। इस काव्य से अपभ्रंश भाषा का शनैः शनैः हिन्दी भाषा में किस प्रकार परिवर्तन हुआ यह जाना जा सकता है।

इसकी एक प्रति ञ भंडार में उपलब्ध हुई है। प्रति अपूर्ण है तथा प्रथम ७ पत्र नहीं हैं। प्रति सं० १५८२ की लिखी हुई है।

१४ तत्त्ववर्णन

यह मुनि शुभचन्द्र की संस्कृत रचना है जिसमें संक्षिप्त रूप से जीवादि द्रव्यों का लक्षण वर्णित है। रचना छोटी है और उसमें केवल ५१ पद्य हैं। प्रारम्भ में ग्रंथकर्त्ता ने निम्न प्रकार विषय वर्णन करने का उल्लेख किया है:—

तत्त्वातत्वस्वरूपज्ञं सार्व्वं सर्व्वगुणाकरं। वीरं नत्वा प्रवक्ष्येऽहं जीवद्रव्यादिलक्षणं ॥१॥
जीवाजीवमिदं द्रव्यं युग्ममाहु जिनेश्वरा। जीवद्रव्यं द्विधातत्र शुद्धाशुद्धविकल्पतः ॥२॥

रचना की भाषा सरल है। ग्रंथकार ने रचना के अन्त मे अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है:—

श्री कंजकीर्त्तिसद्देवैः शुभेंदुमुनितेरितैः। जिनागमानुसारेण सम्यक्त्वव्यक्ति-हेतवे ॥५०॥

मुनि शुभचन्द्र भट्टारक शुभचन्द्र से भिन्न विद्वान हैं। ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान थे। इनके द्वारा लिखी हुई अभी हिन्दी भाषा की भी रचनायें मिली हैं। यह रचना ञ भंडार में संग्रहीत है। यह आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी।

१५ तत्त्वार्थसूत्र भाषा

प्रसिद्ध जैनाचार्य उमास्वामि के तत्त्वार्थसूत्र का हिन्दी पद्यमें अनुवाद बहुत कम विद्वानों ने किय है। अभी क भंडार मे इस ग्रंथ का हिन्दीपद्यानुवाद मिला है जिसके कर्त्ता हैं श्री छोटेलाल, जो अलीगढ प्रान्त के मेडूगांव के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम मोतीलाल था। ये जैसवाल जैन थे तथा काशी नगर में आकर रहने लगे थे। इन्होंने इस ग्रंथ का पद्यानुवाद संवत् १६३२ में समाप्त किया था।

छोटेलाल हिन्दी के अच्छे विद्वान थे। इनकी अब तक तत्त्वार्थसूत्र भाषा के अतिरिक्त औ रचनाये भी उपलब्ध हुई हैं। ये रचनायें चौवीस तीर्थंकर पूजा, पंचपरमेष्ठी पूजा एवं नित्यनियमपूजा हैं। तत्त्वार्थ सूत्र का आदि भाग निम्न प्रकार है।

मोक्ष की राह बनावत जे। अरु कर्म पहाड करै चकचूरा,
विश्वसुतत्त्व के ज्ञायक है ताही, लब्धि के हेत नमौ परिपूरा।
सम्यग्दर्शन चरित ज्ञान कहे, याहि मारग मोक्ष के सूरा,
तत्व को अर्थ करो सरधान सो सम्यग्दर्शन मजहूरा ॥१॥

कवि ने जिन पद्यों में अपना परिचय दिया है वे निम्न प्रकार हैं:—

जिलो अलीगढ जानियो मेडूगाम सुधाम। मोतीलाल सुपुत्र है छोटेलाल सुनाम ॥१॥
जैसवाल कुल जाति है श्रेणी वीसा जान। वंश इप्याक महान में लयो जन्म भू आन ॥२॥
काशी नगर सुआय कै सैनी संगति पाय। उदयराज भाई लखो सिखरचन्द गुण काय ॥३॥
छंद भेद जानों नहीं और गणागण सोय। केवल भक्ति सुधर्म की वसी सुहृदय मोय ॥४॥
ता प्रभाव या सूत्र की छंद प्रतिज्ञा सिद्धि। भाई सु भवि जन सोधियो होय जगत प्रसिद्ध ॥५॥
मंगल श्री अर्हत है सिद्ध साध चपसार। तिन नुति मनवच काय यह मेटो विघन विकार ॥६॥
छंद बंध श्री सूत्र के किये सु वुधि अनुसार। मूलग्रंथ कूं देखिके श्री जिन हिरदै धारि ॥७॥
क्वारमास की अष्टमी पहलो पक्ष निहार। अठसटि ऊन सहस्र दो संवत रीति विचार ॥८॥

इति छंदवद्धसूत्र संपूर्ण।
संवत् १६५३ चैत्र कृष्णा १२ वुधे।

१६ दर्शनसार भाषा

नथमल नाम के कई विद्वान हो गये हैं। इनमे सवसे प्रसिद्ध १८ वीं शताब्दी के नथमल बिलाला थे जो मूलत आगरे के निवासी थे किन्द वाद में हीरापुर (हिण्डौन) आकर रहने लगे थे। उक्त विद्वान के अतिरिक्त १६ वीं शताब्दी में दूसरे नथमल हुये जिन्होंने कितने ही ग्रंथों की भाषा टीका लिखी। दर्शनसार भाषा भी इन्हीं का लिखा हुआ है जिसे उन्होंने संवत् १६२० मे समाप्त किया था। इसका उल्लेख स्वयं कवि ने निम्न प्रकार किया है।

वीस अधिक उगणीस सै शात, श्रावण प्रथम चोथि शनिवार।
कृष्णपक्ष में दर्शनसार, भाषा नथमल लिखी सुधार ॥५६॥

दर्शनसार मूलत देवसेन का ग्रंथ है जिसे उन्होंने संवत् ६६० मे समाप्त किया था। नथमल ने इसी का पद्यानुवाद किया है।

नथमल द्वारा लिखे हुये अन्य ग्रंथों मे महीपालचरितभाषा (संवत् १६१८), योगसार भाषा (संवत् १६१६), परमात्मप्रकाश भाषा (संवत् १६१६), रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा (संवत् १६२०), षोडश

कारणभावना भाषा (संवत् १६२१) अष्टाह्निकाकथा (संवत् १६२२), रत्नत्रय जयमाल (संवत् १६२४) उल्लेखनीय हैं।

१७ दर्शनसार भाषा

१८ वीं एवं १६ वीं शताब्दी में जयपुर में हिन्दी के बहुत विद्वान् होगये हैं। इन विद्वानों ने हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत के ग्रंथों का हिन्दी गद्य एवं पद्य में अनुवाद किया था। इन्हीं विद्वानों मे से पं० शिवजीलालजी का नाम भी उल्लेखनीय है। ये १८ वीं शताब्दी के विद्वान थे और इन्होंने दर्शनसार की हिन्दी गद्य टीका संवत् १८२३ में समाप्त की थी। गद्य में राजस्थानी शैली का उपयोग किया गया है। इसका एक उदाहरण देखिये—

सांच कहतां जीव फे उपरिलोक दूखो वा तूषो। सांच कहने वाला तो कहै ही कहा जग का भय करि राजदंड छोडि देता है वा जूं वा का भय करि राजमनुष्य कपडा पटकि देय है ? तैसे निंदने वाले निंदा, स्तुति करने वाले स्तुति करो, सांच बोला तो सांच कहै।

१८ धर्मचन्द्र प्रबन्ध

धर्मचन्द्र प्रबन्ध में मुनि धर्मचन्द्र का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। मुनि, भट्टारकों एवं विद्वानों के सम्बन्ध में ऐसे प्रबन्ध बहुत कम उपलब्ध होते हैं इस दृष्टि से यह प्रबन्ध एक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक रचना है। रचना प्राकृत भाषा में है विभिन्न छन्दों की २० गाथायें हैं।

प्रबन्ध से पता चलता है कि मुनि धर्मचन्द्र भ० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे। ये सकल कला में प्रवीण एवं आगम शास्त्र के पारगामी विद्वान थे। भारत के सभी प्रान्तों के श्रावकों में उनका पूर्ण प्रमुत्व था और समय २ पर वे आकर उनकी पूजा किया करते थे।

प्रबन्ध की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ३६६ पर दी हुई है।

१६ धर्मविलास

धर्मविलास ब्रह्म जिनदास की रचना है। कवि ने अपने आपको सिद्धान्तचक्रवर्ति आ० नेमिचन्द्र का शिष्य लिखा है। इसलिये ये भट्टारक सकलकीर्ति के अनुज एवं उनके शिष्य प्रसिद्ध विद्वान ब्र० जिनदास से भिन्न विद्वान हैं। इन्होंने प्रथम मंगलाचरण में भी आ० नेमिचन्द्र को नमस्कार किया है।

भव्वकमलमायंडं सिद्धजिण तिहुपनिंद सदपुज्जं। नेमिशसिं गुरुवीरं पणमीय तियशुद्धभोवमहणं ।।१।।

ग्रंथ का नाम धर्मपंचविंशतिका भी है। यह प्राकृत भापा में निबद्ध है तथा इसमें केवल २६ गाथायें हैं। ग्रंथ की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्यश्रीनेमिचन्द्रस्य प्रियशिष्यब्रह्मजिनदासविरचितं धर्मपंचविंशतिका नाम शास्त्रसमाप्तम् ।

२० निजामणि

यहाँ प्रसिद्ध विद्वान् ब्रह्म जिनदास की कृति है जो जयपुर के 'क' भण्डार में उपलब्ध हुई है। रचना छोटी है और उसमें केवल ५४ पद्य हैं। इसमें चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति एवं अन्य शलाका महापुरुषों का नामोल्लेख किया गया है। रचना स्तुति परक होते हुये भी आध्यात्मिक है। रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है:—

श्री सकल जिनेश्वर देव, हूं तह्म पाय करू सेव।
हवे निजामणि कहु सार, जिम क्षपक तरे संसार ॥ १ ॥
हो क्षपक सुणे जिनवाणि, संसार अथिर तू जाणि।
इहां रह्या नहिं कोई थीर, हवे मन दृढ करो निज धीर ॥ २ ॥
ग्या आदिश्वर जगीसार, ते जुगला धर्म निवार।
ग्या अजित जिनेश्वर चंग, जिने कियो कर्म नो भंग ॥ ३ ॥
ग्या संभव भव हर स्वामी, ते जिनवर मुक्ति हि गामी।
ग्या अभिनंदन आनंद, जिने मोड्यो भव नो कंद ॥ ४ ॥
ग्या सुमति सुमति दातार, जिने रण भुमी जित्यो मार।
ग्या पद्मप्रभ जगिवास, ते मुक्ति तणा निवास ॥ ५ ॥
ग्या सुपार्श्व जिन जगीसार, जसु पास न रहियो भार।
ग्या चंद्रप्रभ जगीचंद्र, जिन त्रिभुवन कियो आनन्द ॥ ६ ॥

× × × ×

ए निजामणि कहि सार, ते सयल सुख भंडार।
जे क्षपक सुणे ए चग, ते सौख्य पाये अभंग ॥ ५३ ॥
श्री सकलकीर्त्ति गुरु ध्याउ, मुनि भुवनकीर्त्ति गुणगाउ।
ब्रह्म जिनदास भणेसार, ए निजामणि भवतार ॥ ५४ ॥

२१ नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

यह स्तोत्र वादिराज जगन्नाथ कृत है। ये भट्टारक नरेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य थे तथा टोडारायसिंह (जयपुर) के रहने वाले थे। अब तक इनकी श्वेताम्बर पराजय (केवलि मुक्ति निराकरण), सुख निधान, चतुर्विंशति संधान स्वोपज्ञ टीका एवं शिव साधन नाम के चार ग्रंथ उपलब्ध हुये थे। नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

उनकी पांचवी कृति है जिसमें टोडारायसिंह के प्रसिद्ध नेमिनाथ मन्दिर की मूलनायक प्रतिमा नेमिनाथ का स्तवन किया गया है। ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। रचना में ४१ छन्द हैं तथा अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है:—

श्रीमन्नेमिनरेन्द्रकीर्त्तिरतुलं चित्तोत्सवं च कृतात्।
पूर्वानेकभवार्जितं च कलुषं भक्तस्य वै जर्हतात्॥
उद्धृत्या पद एव शर्मदपदे, स्तोतृनहो '' ''।
शाश्वत् छीजगदीशनिर्मलहृदि प्रायः सदा वर्त्ततात्॥४१॥

उक्त स्तोत्र की एक प्रति ञ भण्डार में संग्रहीत है जो संवत् १७०४ की लिखी हुई है।

२२ परमात्मराज स्तोत्र

भट्टारक सकलकीर्त्ति द्वारा विरचित यह दूसरी रचना है जो जयपुर के शास्त्र भंडारों में उपलब्ध हुई है। यह सुन्दर एवं भावपूर्ण स्तोत्र है। कवि ने इसे महास्तवन लिखा है। स्तोत्र की भाषा सरल एवं सुन्दर है। इसकी एक प्रति जयपुर के क भंडार में संग्रहीत है। इसमें १६ पद्य हैं। स्तोत्र की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ४०३ पर दे दी गयी है।

२३ पासचरिए

पासचरिए अपभ्रंश भाषा की रचना है जिसे कवि तेजपाल ने सिवदास के पुत्र घूघलि के लिये निबद्ध की थी। इसकी एक अपूर्ण प्रति म भण्डार में संग्रहीत है। इस प्रति में म से ७७ तक पत्र हैं जिन मे आठ संधियों का विवरण है। आठवीं संधि की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इयसिरि पास चरित्तं रइयं कइ तेजपाल साणंदं अणुसंणियसुहदं घूघलि सिवदास पुत्तेण सग्गगवाल छीजा सुपसाएण लब्भए णूणं अरविंद दिक्खा अट्ठमसंधी परिसमत्तो॥

तेजपाल ने ग्रंथ में दुवई, घत्ता एवं कडवक इन तीन छन्दों का उपयोग किया है। पहिले घत्ता फिर दुवई तथा सबके अन्त में कडवक इस क्रम से इन छन्दों का प्रयोग हुआ है। रचना अभी अप्रकाशित है।

तेजपाल १४ वीं शताब्दी के विद्वान थे। इनकी दो रचनाएं संभवनाथ चरित एवं वरांग चरित पहिले प्राप्त हो चुकी हैं।

२४ पार्श्वनाथ चौपई

पार्श्वनाथ चौपई कवि लाखो की रचना है जिसे उन्होंने संवत् १७३४ में समाप्त किया था।

कवि राजस्थानी विद्वान थे तथा वणहटका ग्राम के रहने वाले थे। उस समय मुगल बादशाह औरंगजेब का शासन था। पार्श्वनाथ चौपई में २६८ पद्य हैं जो सभी चौपई मे हैं। रचना सरस भाषा में निबद्ध है।

२५ पिंगल छन्द शास्त्र

छन्द शास्त्र पर माखन कवि द्वारा लिखी हुई यह बहुत सुन्दर रचना है। रचना का दूसरा नाम माखन छंद विलास भी है। माखन कवि के पिता जिनका नाम गोपाल था स्वयं भी कवि थे। रचना में दोहा चौबोला, छप्पय, सोरठा, मदनमोहन, हरिमालिका संखधारी, मालती, डिल्ल, करहंचा समानिका भुजंगप्रयात, मंजुभाषिणी, सारंगिका, तरंगिका, भ्रमरावलि, मालिनी आदि कितने ही छन्दों के लक्षण दिये हुये हैं।

माखन कवि ने इसे संवत् १८६३ मे समाप्त किया था। इसकी एक अपूर्ण प्रति 'अ' भण्डार के संग्रह मे है। इसका आदि भाग सूची के ३१० पृष्ठ पर दिया हुआ है।

२६ पुण्यास्रवकथा कोश

टेकचन्द १८ वीं शताब्दी के प्रमुख हिन्दी कवि हो गये हैं। अबतक इनकी २० से भी अधिक रचनायें प्राप्त हो चुकी हैं। जिन मे से कुछ के नाम निम्न प्रकार है:—

पंचपरमेष्ठी पूजा, कर्मदहन पूजा, तीनलोक पूजा (सं० १८२८) सुदृष्टि तरंगिणी (सं० १८३८) सोलहकारण पूजा, व्यसनराज वर्णन (सं० १८२७) पञ्चकल्याण पूजा, पञ्चमेरु पूजा दशाध्याय सूत्र गद्य टीका, अध्यात्म बारहखडी, आदि। इनके पद भी मिलते हैं जो अध्यात्म रस से ओतप्रोत हैं।

टेकचंद के पितामह का नाम दीपचंद एवं पिता का नाम रामकृष्ण था। दीपचंद स्वयं भी अच्छे विद्वान् थे। कवि खण्डेलवाल जैन थे। ये मूलतः जयपुर निवासी थे लेकिन फिर साहिपुरामे जाकर रहने लगे थे। पुण्यास्रवकथाकोश इनकी एक और रचना है जो अभी जयपुर के 'क' भण्डार मे प्राप्त हुई है। कवि ने इस रचना मे जो अपनापरिचय दिया हैं वह निम्न प्रकार है —

दीपचन्द साधर्मी भए, ते जिनधर्म विषै रत थए।
तिन से पुरस तणुं संगपाय, कर्म जोग्य नहीं धर्म सुहाय॥ ३२॥
दीपचन्द तन तैं तन भयो, ताको नाम हली हरि दीयो।
रामकृष्ण तैं जो तन थाय, हठीचंद ता नाम धराय ॥ ३३॥
सो फिरि कर्म उदै तैं आय, साहिपुरै थिति कीनी जाय।
तहा भी वहुत काल विन ज्ञान, खोयो मोह उदै तैं आनि॥

× × ×

साहिपुरा सुभथान में, भलो सहारो पाय।
धर्म लियो जिन देव को, नरभव सफल कराय ॥
नृप उमेद ता पुर विषै, करै राज बलवान।
तिन अपने भुजबलथकी, अरि शिर कीहनी आनि ॥
ताके राज सुराज में ईतिभीति नहीं जान।
अपलूं पुर मे सुखथकी तिष्ठे हरष जु आनि ॥
करी कथा इस ग्रंथ की, छंद बंध पुर मांहि।
ग्रंथ करन कछू वीचि में, आकुल उपजी नांहि ॥ ५३ ॥
साहि नगर साह्यै भयो, पायो सुभ अवकास।
पूरण ग्रंथ सुख तै कीयौ, पुण्याश्रव पुण्यवास ॥ ५४ ॥

चौपई एवं दोहा छन्दों मे लिखा हुआ एक सुन्दर ग्रंथ है। इसमें ७८ कथाओं का संग्रह है। कवि ने इसे संवत् १८२२ मे समाप्त किया था जिसका रचना के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख है:—

संवत् अष्टादश सत जांनि, उपरि वीस दोय फिरि आंनि।
फागुण सुदि ग्यारसि निसमांहि, कियो समापत उर हुल साहि ॥ ५५ ॥

आरम्भ में कवि ने लिखा है कि पुण्यास्रव कथा कोश पहिले प्राकृत भाषा में निबद्ध था लेकिन जब उसे जन साधारण नहीं समझने लगा तो सकल कीर्त्ति आदि विद्वानों ने संस्कृत में उसकी रचना की। जब संस्कृत समझना भी प्रत्येक के लिए क्लिष्ट होगया तो फिर आगरे मे धनराम ने उसकी वचनिका की। टेकचंद ने संभवत. इसी वचनिका के आधार पर इसकी छन्दोबद्ध रचना की होगी। कविने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

साधर्मी धनराम जु भए, संसकृत परवीन जु थए।
तीं यह ग्रंथ आगरै थान, कीयो वचनिका सरल बखान ॥
जिन धुनि तो विन अक्षर होय, गणधर समझै और न कोय।
तो प्राकृत मैं करै वखांन, तब सब ही सुंनि है गुणखानि ॥ ३ ॥
तब फिरि बुधि हीनता लई, संस्कृत बानी श्रुति ठई।
फेरि अलप बुध ज्ञान की होय, सकल कीर्त्ति आदिक जोय ॥
तिन यह महा सुगम करि लीए, संस्कृत अति सरल जु कीए ॥

२७ बारहभावना

पं० रइधू अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं। इनकी प्राय सभी रचनायें अपभ्रंश

भाषा में ही मिलती हैं जिनकी संख्या २० से भी अधिक है। कवि १५ वीं शताब्दी के विद्वान थे और मध्यप्रदेश–ग्वालियर के रहने वाले थे। बारह भावना कवि की एक मात्र रचना है जो हिन्दी मे लिखी हुई मिली है लेकिन इसकी भाषा पर भी अपभ्रंश का प्रभाव है। रचना में ३६ पद्य है। रचना के अन्त में कवि ने ज्ञान की अगाधता के बारे में बहुत सुन्दर शब्दों मे कहा है —

कथन कहाणी ज्ञान की, कहन सुनन की नांहि। आपन्ही मैं पाइए, जब देखै घट मांहि॥

रचना के कुछ सुन्दर पद्य निम्न प्रकार हैं—

संसार रूप कोई वस्तु नांही, भेदभाव अज्ञान। ज्ञान दृष्टि धरि देखिए, सब ही सिद्ध समान॥

× × × × × ×

धर्म करावौ धरम करि, किरिया धरम न होय। धरम जु जानत वस्तु है, जो पहचानै कोय॥

× × × × × ×

करन करावन ग्यान नहिं, पढि अर्थ बखानत और। ग्यान दिष्टि विन ऊपजै, मोहा तणी हु कोर॥

रचना में रइधू का नाम कहीं नहीं दिया है केवल ग्रंथ समाप्ति पर "इति श्री रइधू कृत बारह भावना संपूर्ण" लिखा हुआ है जिससे इसको रइधू कृत लिखा गया है।

२८ भुवनकीर्ति गीत

भुवनकीर्ति भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य थे और उनकी मृत्यु के पश्चात् ये ही भट्टारक की गद्दी पर बैठे। राजस्थान के शास्त्र भंडारों मे भट्टारकों के सम्बन्ध में कितने ही गीत मिले हैं इनमें बूचराज एवं भ० शुभचन्द द्वारा लिखे हुये गीत प्रमुख हैं। इस गीत मे बूचराज ने भट्टारक भुवनकीर्ति की तपस्या एवं उनकी बहुश्रुतता के सम्बन्ध मे गुणानुवाद किया गया है। गीत ऐतिहासिक है तथा इससे भुवन कीर्ति के व्यक्तित्व के सम्बन्ध मे जानकारी मिलती है। बूचराज १६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान[1] थे इनके द्वारा रची हुई अबतक पांच और रचनाएं मिल चुकी हैं। पूरा गीत अविकल रूप से सूची के पृष्ठ ६६६–६६७ पर दिया हुआ है।

२९ भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्रटीका

महा पं० आशाधर १३ वीं शताब्दी के संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान् थे। इनके द्वारा लिखे गये कितने ही ग्रंथ मिलते हैं जो जैन समाज में बडे ही आदर की दृष्टि से पढ़े जाते हैं। आपकी भूपाल चतुर्विंशतिस्तोत्र की संस्कृत टीका कुछ समय पूर्व तक अप्राप्य थी लेकिन अब इसकी २ प्रतियां जयपुर के अ भंडार मे उपलब्ध हो चुकी हैं। आशाधर ने इसकी टीका अपने प्रिय शिष्य विनयचन्द्र के लिये

[1] विस्तृत परिचय के लिए देखिये डा० कासलीवाल द्वारा लिखित बूचराज एव उनका साहित्य–जैन सन्देश शोधांक–११

की थी। टीका बहुत सुन्दर है। टीकाकार ने विनयचन्द्र का टीका के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख दिया है:—

उपशम इव मूर्त्तिः पूतकीर्त्तिः स तस्माद्। अजनि विनयचन्द्रः सच्चकोरैकचन्द्रः॥
जगदमृतसगर्भाः शास्त्रसन्दर्भगर्भाः। शुचिचरित सहिष्णोर्यस्य धिन्वन्ति वाचः॥

विनयचन्द्र ने कुछ समय पश्चात् आशाधर द्वारा लिखित टीका पर भी टीका लिखी थी जिसकी एक प्रति 'अ' भण्डार में उपलब्ध हुई है। टीका के अन्त में "इति विनयचन्द्रनरेन्द्रविरचितभूपालस्तोत्रसमाप्तम्" लिखा है। इस टीका की भाषा एवं शैली आशाधर के समान है।

३० मनमोदनपंचशती

कवि छत्त अथवा छत्रपति हिन्दी के प्रसिद्ध कवि होगये हैं। इनकी मुख्य रचनाओं में 'कृपणजगावन चरित्र' पहिले ही प्रकाश में आचुका है जिसमे तुलसीदास के समकालीन कवि ब्रह्म गुलाल के जीवन चरित्र का अति सुन्दरता से वर्णन किया गया है। इनके द्वारा विरचित १०० से भी अधिक पद हमारे संग्रह में हैं। ये अवागढ के निवासी थे। पं० वनवारीलालजी के शब्दों में छत्रपति एक आदर्शवादी लेखक थे जिनका धन संचय की ओर कुछ भी ध्यान न था। ये पांच आने से अधिक अपने पास नही रखते थे तथा एक घन्टे से अधिक के लिये वह अपनी दूकान नहीं खोलते थे।

छत्रपति जैसवाल थे। अभी इनकी 'मनमोदनपंचशति' एक और रचना उपलब्ध हुई है। इस पंचशती को कवि ने संवत १६१६ में समाप्त किया था। कवि ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

वीर भये असरीर गई षट सत पन वरसहि। प्रघटो विक्रम दैत तनौ संवत सर सरसहि॥
उनिसइसत षोडशहि पोष प्रतिपदा उजारी। पूर्वाषाढ नक्षत्र अर्क दिन सब सुखकारी॥
वर वृद्धि जोग मिछत इहग्रंथ समापित करिलियो। अनुपम असेष आनंद घन भोगत निवसत थिर थयो॥

इसमें ५१३ पद्य हैं जिसमें सवैया, दोहा आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। कवि के शब्दों में पंचशती में सभी स्फुट कवित्त है जिनमें भिन्न २ रसों का वर्णन है—

सकलसिद्धियम सिद्धि कर पंच परमगुर जेह। तिन पद पंकज कौ सदा प्रनमौं धरि मन नेह॥
नहि अधिकार प्रबंध नहि फुटकर कवित्त समस्त। जुदा जुदा रस वरनऊं स्वादो चतुर प्रशस्त॥

मित्र की प्रशंसा में जो पद्य लिखे हैं उनमें से दो पद्य देखिये।

मित्र होय जो न करें चारि वात कौं। उछेद तन धन धर्म मंत्र अनेक प्रकार के॥
दोष देखि दावै पीठ पीछे होय जस गावै। कारज करत रहै सदा उपकार के॥

साधारन रीति नहीं स्वारथ की प्रीति जाके। जब तब वचन प्रकासत पयार के॥
दिल को उदार निरवाहै जो पै दे करार। मति कौ सुठार गुनवीसरै न यार के॥२१३॥
अंतरंग बाहिज मधुर जैसी किसमिस। धनखरचन कौ कुबेरखांनि धर है॥
गुन के बधाय कूं जैसे चन्द सायर कूं। दुख तम चूरिवे कूं दिन दुपहर है॥
कारज के सारिवे कूं हऊ वहू विधना है। मंत्र के सिखायवे कूं मानों सुरगुर है॥
ऐसे सार मित्र सौं न कीजिये जुदाई कभी। धन मन तन सब वारि देना वर है॥२१४॥

इस तरह मनमोदन पंचशती हिन्दी की बहुत ही सुन्दर रचना है जो शीघ्र ही प्रकाशन योग्य है।

३१ मित्रविलास

मित्रविलास एक संग्रह ग्रंथ है जिसमे कवि घासी द्वारा विरचित विभिन्न रचनाओं का संकलन है। घासी के पिता का नाम बहालसिंह था। कवि ने अपने पिता एवं अपने मित्र भारामल के आग्रह से मित्र विलास की रचना की थी। ये भारामल संभवतः वे ही विद्वान हैं जिन्होने दर्शनकथा, शीलकथा, दानकथा आदि कथायें लिखी हैं। कवि ने इसे संवत् १८८६ में समाप्त किया था जिसका उल्लेख ग्रंथ के अन्त मे निम्न प्रकार हुआ है.—

कर्म रिपु सो तो चारों गति में घसीट फिरयौ, ताही के प्रसाद सेती घासी नाम पायौ है।
भारामल मित्र वो बहालसिंह पिता मेरो, तिनकीसहाय सेती ग्रंथ ये बनायौ है॥
या में भूल चूक जो हो सुधि सो सुधार लीजो, मो पै कृपा दृष्टि कीज्यो भाव ये जनायौ है।
दिगनिध सतजान हरि को चतुर्थ ठान, फागुण सुदि चौथ मान निजगुण गायौ है॥

कवि ने ग्रंथ के प्रारम्भ मे वर्णनीय विषय का निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

मित्र विलास महासुखदैन, वरनुं वस्तु स्वाभाविक ऐन।
प्रगट देखिये लोक मझार, संग प्रसाद अनेक प्रकार॥
शुभ अशुभ मन की आपति होय, संग कुसंग तणो फल सोय।
पुद्‌गल वस्तु की निरणय ठीक, हम कूं करनी है तहकीक॥

मित्र विलास की भाषा एवं शैली दोनों ही सुन्दर है तथा पाठकों के मन को लुभावने वाली है। ग्रंथ प्रकाशन योग्य है।

घासी कवि के पद भी मिलते हैं।

३२ रागमाला—श्याममिश्र

राग रागनियों पर निबद्ध रागमाला श्याम मिश्र की एक सुन्दर कृति है। इसका दूसरा नाम

कासम रसिक विलास भी है। श्याममिश्र आगरे के रहने वाले थे लेकिन उन्होंने कासिमखां के संरक्षणता में जाकर लाहौर में इसकी रचना की थी। कासिमखां उस समय वहां का उदार एवं रसिक शासक था। कवि ने निम्न शब्दों मे उसकी प्रशंसा की है।

कासमखांन सुजान कृपा कवि पर करी।
रागनि की माला करिवे को चित धरी॥

दोहा

सेख खांन के वंश में उपज्यौ कासमखांन।
निस दीपग ज्यौं चन्द्रमा, दिन दीपक ज्यौं भान॥
कवि वरनै छवि खान की, सौ वरनी नहीं जाय।
कासमखांन सुजान की अंग रही छवि छाय॥

रागमाला मे भैरोंराग, मालकोशराग, हिंडोलनाराग, दीपकराग, गुणकरीराग, रामकली, ललितरागिनी विलावलरागिनी, कामोद, नट, केदारो, आसावरी, मल्हार आदि रागरागनियों का वर्णन किया गया है।

श्याममिश्र के पिता का नाम चतुर्भुज मिश्र था। कवि ने रचना के अन्त में निम्न प्रकार वर्णन किया है—

संवत् सौरहसे वरप, उपर वीते दोइ।
फागुन वुदी सनोदसी, सुनौ गुनी जन कोइ॥

सोरठा

पोथी रची लाहौर, स्याम आगरे नगर के।
राजघाट है ठौर, पुत्र चतुरभुज मिश्र के॥

इति रागमाला ग्रंथ स्याममिश्र कृत संपूरण।

२३ रुक्मणिकृष्णजी को रासो

यह तिपरदास की रचना है। रासो के प्रारम्भ में महाराजा भीमक की पुत्री रुक्मिणी के सौन्दय का वर्णन है। इसके पश्चात् रुक्मिणि के विवाह का प्रस्ताव, भीमक के पुत्र रुक्मि द्वारा शिशुपाल के साथ विवाह करने का प्रस्ताव, शिशुपाल को निमंत्रण तथा उनके सदलबल विवाह के लिये प्रस्ताव, रुक्मिणी का कृष्ण को पत्र लिख सन्देश भिजवाना, कृष्णजी द्वारा प्रस्ताव स्वीकृत करना तथा

सदलबल के साथ भीमनगरी की ओर प्रस्थान, पूजा के बहाने रुक्मिणी का मन्दिर की ओर आना, रुक्मिणी का सौन्दर्य वर्णन, श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणी को रथ में बैठाना, कृष्ण शिशुपाल युद्ध वर्णन, रुक्मिणी द्वारा कृष्ण की पूजा एवं उनका द्वारिका नगरी को प्रस्थान आदि का वर्णन किया गया है।

रासो में दूहा, कलश, त्रोटक, नाराच जाति छंद आदि का प्रयोग किया गया है। रासो की भाषा राजस्थानी है।

नाराच जातिछंद

आणंद भरीए सोहती, त्रिभवणरूप मोहती।
रुणं भणंत नेवरी, सुचल चरण घुघरी ॥
भब भबै भबक भाल, श्रवण हंस सोमती।
रतन हीर जडत जाम, खीर ली अनोपती ॥
भलमलै ज चंद सूर, सीस फूल सोहए।
बासिग वेणि रुलै जेम, सिरह मणिज मोहए ॥
सोवन मै रलहार, जडित कंठ में रुलै।
अबंध मोति जडित जोति, नाकिउ जलाहुलै ॥

३४ लग्नचन्द्रिका

यह ज्योतिष का ग्रंथ है जिसकी भाषा स्योजीराम सौगाणी ने की थी। कवि आमेर के निवासी थे। इनके पिता का नाम कंवरपाल तथा गुरु का नाम पं० जैंचन्द्रजी था। अपने गुरु एवं उनके शिष्यों के आग्रह से ही कवि ने इसकी भाषा संवत् १८७४ मे समाप्त की थी। लग्नचन्द्रिका ज्योतिष का संस्कृत में अच्छा ग्रंथ है। भाषा टीका मे ५२२ पद्य हैं। इसकी एक प्रति भ. भंडार मे सुरक्षित है।

इनके लिखे हुये हिन्दी पद एवं कवित्त भी मिलते है.—

३५ लब्धि विधान चौपई

लब्धि विधान चौपई एक कथात्मक कृति है इसमे लब्धिविधान व्रत से सम्बन्धित कथा दी हुई है। यह व्रत चैत्र एवं भादव मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया एवं तृतीया के दिन किया जाता है। इस व्रत के करने से पापों की शान्ति होती है।

चौपई के रचयिता हैं कवि भीषम जिनका नाम प्रथमवार सुना जा रहा है। कवि सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये खण्डेलवाल जैन थे तथा गोधा इनका गोत्र था। सांगानेर मे उस समय स्वाध्याय एवं पूजा का खूब प्रचार था। इन्होंने इसे संवत् १६१७ (सन् १५६०) मे समाप्त किया था।

दोहा और चौपई मिला कर पद्यों की संख्या २०१ है। कवि ने जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है:—

संवत् सोलहसै सतरौ, फागुण मास जबै ऊतरौ।
उजल पाखि तेरसि तिथि जांण, ता दिन कथा गढी परवाणि ॥१६६॥
बरतै निवाली मांहि विख्यात, जैनधर्म तसु गोधा जाति।
यह कथा भीषम कवि कही, जिनपुरांण मांहि जैसी लही ॥१६७॥
सांगानेरी बसै सुभ गांव, मांन नृपति तस चहु खंड नाम।
जहि कै राजि सुखी सब लोग, सकल वस्तु को कीजे भोग ॥१६८॥
जैनधर्म की महिमां बणी, संतिक पूजा होई तिहघणी।
श्रावक लोक बसै सुजांण, सांझ संवारा सुणै पुराण ॥१६६॥
आठ विधि पूजा जिणेश्वर करै, रागदोष नहीं मन मैं धरै।
दान चारि सुपात्रा देय, मनिष जन्म कौ लाहौ लेय ॥२००॥
कडा बंध चौपई जांणि, पूरा हूवा दोइसै प्रमाण।
जिनवाणी का अन्त न जास, भवि जीव जे लहै सुखवास ॥२०१॥

इति श्री लब्धि विधान की चौपई संपूर्ण।

३६ वर्द्धमानपुराण

इसका दूसरा नाम जिनरात्रिव्रत महात्म्य भी है। मुनि पद्मनन्दि इस पुराण के रचयिता हैं। यह ग्रंथ दो परिच्छेदों मे विभक्त है। प्रथम सर्ग मे ३५६ तथा दूसरे परिच्छेद में २०५ पद्य हैं। मुनि पद्मनन्दि प्रभाचन्द्र मुनि के पट्ट के थे। रचना संवत् इसमे नहीं दिया गया है लेकिन लेखन काल के आधार से यह रचना १५ वीं शताब्दी से पूर्व होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त ये प्रभाचन्द्र मुनि संभवतः वेही हैं जिन्होंने आराधनासार प्रबन्ध की रचना की थी और जो भ० देवेन्द्रकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे।

३७ विषहरन विधि

यह एक आयुर्वेदिक रचना है जिसमें विभिन्न प्रकार के विष एवं उनके मुक्ति का उपाय बतलाया गया है। विषहरन विधि संतोष वैद्य की कृति है। ये मुनिहरष के शिष्य थे। इन्होंने इसे कुछ प्राचीन ग्रंथों के आधार पर तथा अपने गुरु (जो स्वयं भी वैद्य थे) के बताये हुए ज्ञान के आधार पर हिन्दी पद्य मे लिखकर इसे संवत् १७४१ में पूर्ण किया था। ये चन्द्रपुरी के रहने वाले थे। ग्रंथ में १२७ दोहा चौपई छन्द है। रचना का प्रारम्भ निम्न प्रकार से हुआ है:—

अथ विषहरन लिख्यते—

दोहरा—श्री गनेस सरस्वती, सुमरि गुरु चरनतु चितलाय।
पैत्रपाल दुखहरन कौ, सुमति सुबुधि बताय॥

चौपई

श्री जिनचंद सुवाच बखानि, रच्यौ सोभाग्य ते यह हरप मुनिजान।
इन सीख दीनी जीव दया आंनि, संतोप वैद्य लइ तिरहमानि॥२॥

२८ व्रतकथाकोश

इसमें व्रत कथाओं का संग्रह है जिनकी संख्या ३७ से भी अधिक हैं। कथाकार पं० दामो दर एवं देवेन्द्रकीर्ति हैं। दोनों ही धर्मचन्द्र सूरि के शिष्य थे। ऐसा मालूम पड़ता है कि देवेन्द्रकीर्ति का पूर्व नाम दामोदर था इसलिये जो कथायें उन्होंने अपनी गृहस्थावस्था मे लिखी थीं उनमें दामोदर का लिख दिया है तथा साधु बनने के पश्चात् जो कथायें लिखी उनमें देवेन्द्रकीर्ति लिख दिया गया। दामोदर का उल्लेख प्रथम, षष्ठ, एकादश, द्वादश, चतुर्दश, एवं एकविंशति कथाओं की समाप्ति पर आया है।

कथा कोश संस्कृत गद्य मे है तथा भाषा, भाव एवं शैली की दृष्टि से सभी कथायें उच्चस्तर की हैं। इसकी एक अपूर्ण प्रति अ भंडार में सुरक्षित है। इसकी दूसरी अपूर्ण प्रति ग्रंथ संख्या २५४२ प देखें। इसमें ४४ कथाओं तक पाठ हैं।

२९ व्रतकथाकोश

भट्टारक सकलकीर्ति १५ वीं शताब्दी के प्रकांड विद्वान थे। इन्होंने संस्कृत भाषा में बहु ग्रंथ लिखे हैं जिनमे आदिपुराण, धन्यकुमार चरित्र, पुराणसार संग्रह, यशोधर चरित्र, वर्द्धमान पुरा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। अपने जबरदस्त प्रभाव के कारण उन्होंने एक नई भट्टारक परम्परा को जन्म दिया जिसमे ब्र० जिनदास, भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र जैसे उच्चकोटि के विद्वान हुये।

व्रतकथा कोश भी उनकी रचनाओं में से एक रचना है। इसमे अधिकांश कथायें उन्हीं द्वारा विरचित हैं। कुछ कथायें अभ्र पंडित तथा रत्नकीर्ति आदि विद्वानों की भी है। कथायें संस्कृत प मे हैं। भ० सकलकीर्ति ने सुगन्धदशमी कथा के अन्त मे अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है—

असमगुण समुद्रान, स्वर्ग मोक्षाय हेतून।
प्रकटित शिवमार्गान्, सद्गुरुन् पचपूज्यान्॥

विस्तृत परिचय देखिये डा० कासलीवाल द्वारा लिखित बूचराज एवं उनका साहित्य—जैन सन्देश शोधा

त्रिभुवनपतिभव्यैस्तीर्थनाथादिमुख्यान् ।
जगति सकलकीर्त्या संस्तुवे तद् गुणाप्त्यै ॥

प्रति में ३ पत्र (१४३ से १४५) बाद में लिखे गये हैं। प्रति प्राचीन तथा संभवतः १७ वीं शताब्दी की लिखी हुई है। कथा कोश में कुल कथाओं की संख्या ५० है।

४० समोसरण

१७ वीं शताब्दी मे ब्रह्म गुलाल हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि हो गये हैं। इनके जीवन पर कवि छत्रपति ने एक सुन्दर काव्य लिखा है। इनके पिता का नाम हल्ल था जो चन्दवार के राजा कीर्ति के आश्रित थे। ब्रह्म गुलाल स्वांग भरना जानते थे और इस कला में पूर्ण प्रवीण थे। एक बार इन्होंने मुनि का स्वांग भरा और ये मुनि भी बन गये। इनके द्वारा विरचित अब तक ८ रचनाएं उपलब्ध हो चुकी हैं। जिसमें त्रेपन क्रिया (संवत् १६६५) गुलाल पच्चीसी, जलगालन क्रिया, विवेक चौपई, कृपण जगावन चरित्र (१६७१), रसविधान चौपई एवं धर्मस्वरूप के नाम उल्लेखनीय हैं।

'समोसरण' एक स्तोत्र के रूप मे रचना है जिसे इन्होंने संवत् १६६८ मे समाप्त किया था। इसमें भगवान महावीर के समवसरण का वर्णन किया गया है जो ६७ पद्यों में पूर्ण होता है। इन्होंने इसमें अपना परिचय देते हुये लिखा है कि वे जयनन्दि के शिष्य थे।

स रहसै अढसठिसमै, माघ दसै सित पक्ष।
गुलाल ब्रह्म भनि गीत गति, जयोनन्दि पद सिक्ष ॥६६॥

४१ सोनागिर पच्चीसी

यह एक ऐतिहासिक रचना है जिसमें सोनागिर सिद्ध क्षेत्र का संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है। दिगम्बर विद्वानों ने इस तरह के क्षेत्रों के वर्णन बहुत कम लिखे हैं इसलिये भी इस रचना का पर्याप्त महत्व है। सोनागिर पहिले दतिया स्टेट में था अब वह मध्यप्रदेश में है। कवि भागीरथ ने इसे संवत् १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४ को पूर्ण किया था। रचना मे क्षेत्र के मुख्य मन्दिर, परिक्रमा एवं अन्य मन्दिरों का भी संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है। रचना का अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है: .

मेला है जहा कौ कातिक सुद पूनौ को,
हाट हू वजार नाना भांति जुरि आए हैं।
भावधर वंदन कौ पूजत जिनेंद्र काज,
पाप मूल निकंदन कौ दूर हू सै धाए है॥
गोठै जैउ नारे पुनि दान देह नाना विधि,
सुर्ग पंथ जाइवे कौ पूरन पद पाए है।

कीजिये सहाइ पाइ आए हैं भागीरथ,
गुरुन के प्रताप सौन गिरी के गुण गाए हैं ॥

दोहा

जेठ सुदी चौदस भली, जा दिन रची वनाइ।
संवत् अष्टादस इकिसठ, संवत् लेउ गिनाइ ॥
पढै सुनै जो भाव धर, औरे देइ सुनाइ।
मनवंछित फल कौ लिये, सो पूरन पद को पाइ ॥

४२ हम्मीररासो

हम्मीररासो एक ऐतिहासिक काव्य है जिसमें महेश कवि ने महिमासाह का बादशाह अला उद्दीन के साथ झगडा, महिमासाह का भागकर रणथम्भौर के महाराजा हम्मीर की शरण में आना, बादशाह अलाउद्दीन का हम्मीर को महिमासाह को छोडने के लिये बार २ समझाना एवं अन्त में अला उद्दीन एवं हम्मीर का भयंकर युद्ध का वर्णन किया गया है। कवि की वर्णन शैली सुन्दर एवं सरल है।

रासो कब और कहा लिखा गया था इसका कवि ने कोई परिचय नहीं दिया है। उसने केवल अपना नामोल्लेख किया है वह निम्न प्रकार है।

मिले रावपति साही षीर ज्यौ नीर समाही।
ज्यों पारिस कौ परसि वजर कंचन होय जाई ॥
अलादीन हमीर से हुआ न हौस्यौ होयसे।
कवि महेस यम उचरै वै सभासहै तसु पुरवसै ॥

———

अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१.	४३८१	अनंतव्रतोद्यापनपूजा	आ० गुणचंद्र	सं०	अ	१६३०
२.	४३६२	अनंतचतुर्दशीपूजा	शांतिदास	सं०	ख	×
३	२८६५	अभिधान रत्नाकर	धर्मचंद्रगणि	सं०	अ	×
४.	४३९१	अभिषेक विधि	लक्ष्मीसेन	सं०	ज	×
५	५९९	अमृतधर्मरसकाव्य	गुणचंद्र	सं०	अ	१६ वी शताब्दी
६	४४०१	अष्टाह्निकापूजाकथा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	सं०	अ	१८५१
७.	२५३५	आराधनासारप्रबन्ध	प्रभाचंद्र	सं०	ट	×
८	६१६	आराधनासारवृत्ति	पं० आशाधर	सं०	ख	१३ वी शताब्दी
९.	४४३५	ऋषिमण्डलपूजा	ज्ञानभूषण	सं०	ख	×
१०.	४४८०	कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा	ललितकीर्त्ति	सं०	अ	×
११.	२५४३	कथाकोश	देवेन्द्रकीर्त्ति	सं०	अ	×
१२.	५४५६	कथासंग्रह	ललितकीर्त्ति	सं०	अ	×
१३.	४४४६	कर्मचूरव्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	सं०	छ	×
१४.	३८२८	कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	देवतिलक	सं०	अ	×
१५.	३८२७	कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	पं० आशाधर	सं०	अ	१३ वी "
१६.	४४६७	कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	प्रभाचंद्र	सं०	अ	१५ वी "
१७.	२७५८	कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचूरि	चारित्रसिंह	सं०	अ	१६ वी "
१८.	४४७३	कुण्डलगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	सं०	अ	×
१९.	२०२३	कुमारसंभवटीका	कनकसागर	सं०	अ	×
२०.	४४८४	गजपंथामण्डलपूजनविधान	भ० क्षेमेन्द्रकीर्त्ति	सं०	ख	×
२१.	२०२८	गजसिंहकुमारचरित्र	विनयचन्द्रसूरि	सं०	ङ	×
२२.	३८३९	गीतवीतराग	अभिनव चारुकीर्त्ति	सं०	अ	×
२३.	११७	गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	कनकनन्दि	सं०	क	×
२४.	११८	गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	ज्ञानभूषण	सं०	क	×
२५.	९१	गोम्मटसारटीका	सकलभूषण	सं०	क	×
२६.	५४३९	चंदनषष्ठीव्रतकथा	छत्रसेन	सं०	अ	×
२७.	२०४८	चंद्रप्रभकाव्यपंजिका	गुणनंदि	सं०	अ	×

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
२८.	४५१२	चारित्रशुद्धिविधान	सुमतिब्रह्म	सं०	च	X
२९.	४६१४	ज्ञानपंचविंशतिकाव्रतोद्यापन	भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति	सं०	च	X
३०.	४६२१	णमोकारपैंतीसीव्रतविधान	कनककीर्त्ति	सं०	ङ	X
३१.	२१३	तत्ववर्णन	शुभचद्र	सं०	ञ	X
३२.	५४४६	त्रेपनक्रियोद्यापन	देवेन्द्रकीर्त्ति	सं०	अ	X
३३.	४७०५	दशलक्षणव्रतपूजा	जिनचन्द्रसूरि	सं०	ङ	X
३४.	४७०६	दशलक्षणव्रतपूजा	मल्लिभूषण	सं०	छ	X
३५.	४७०२	दशलक्षणव्रतपूजा	सुमतिसागर	सं०	ङ	X
३६.	४७२१	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	सं०	अ	१७७२
३७.	४७२४	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	पद्मनंदि	सं०	अ	X
३८.	४७२५	" " "	जगत्कीर्त्ति	सं०	च	X
३९.	७७२	धर्मप्रश्नोत्तर	विमलकीर्त्ति	सं०	ञ	X
४०.	२१५२	नागकुमारचरित्रटीका	प्रभाचन्द्र	सं०	ट	X
४१.	४८१	निजस्मृति	X	सं०	ट	X
४२.	४८१९	नेमिनाथपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	सं०	अ	X
४३.	४८२३	पंचकल्याणकपूजा	"	सं०	क	X
४४.	३९७१	परमात्मराजस्तोत्र	सकलकीर्ति	सं०	अ	X
४५	५४२८	प्रशस्ति	दामोदर	सं०	अ	X
४६.	१९१८	पुराणसार	श्रीचंदमुनि	सं०	अ	१०७[illegible]
४७.	५४४०	भावनाचौतीसी	भ० पद्मनन्दि	सं०	अ	X
४८.	४०५३	भूपालचतुर्विंशतिटीका	आशाधर	सं०	अ	१३ वी
४९.	४०५५	भूपालचतुर्विंशतिटीका	विनयचंद	सं०	अ	१३ वी
५०.	५०५७	मांगीतुंगीगिरिमंडलपूजा	विश्वभूषण	सं०	ख	१७५६
५१.	५३८१	मुनिसुव्रतछंद	प्रभाचंद्र	सं० हि०	अ	X
५२.	९७९	मूलाचारटीका	वसुनंदि	प्रा० सं०	अ	X
५३.	२३२३	यशोधरचरित्रटिप्पण	प्रभाचंद्र	सं०	ञ	X
५४	२६८३	रत्नत्रयविधि	आशाधर	सं०	अ	X
५५.	२६३५	रूपमञ्जरीनाममाला	रूपचंद	सं०	अ	१६४४
५६.	२३५०	वर्द्धमानकाव्य	मुनिपद्मनंदि	सं०	ञ	१३ वी

क्रमांक ग्रं सू. क्र		ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
५७.	३२६५	वाग्भट्टालंकारटीका	वादिराज	सं०	अ	१७२६
५८.	५४४७	वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनंदि	स०	अ	×
५९.	५२२५	शरदुत्सवदीपिका	सिंहनंदि	स०	अ	×
६०.	५८२६	शांतिनाथस्तोत्र	गुणभद्रस्वामी	स०	छ	×
६१.	४१०७	शांतिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	सं०	अ	×
६२.	५१९६	षणवतिक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	सं०	अ	×
६३.	५४६	षष्ठ्यधिकशतकटीका	राजहंसोपाध्याय	सं०	घ	×
६४.	१८२३	सप्तनयावबोध	मुनिनेत्रसिंह	सं०	अ	×
६५.	५४६७	सरस्वतीस्तुति	आशाधर	सं०	अ	१३ वी "
६६.	४९४६	सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचंद्र	सं०	ङ	×
६७	२७३१	सिंहासनद्वात्रिंशिका	क्षेमकरमुनि	सं०	ख	×
६८.	३८१८	कल्याणक	समन्तभद्र	प्रा०	ङ	×
६९.	३९३१	धर्मचन्द्रप्रबन्ध	धर्मचन्द्र	प्रा०	अ	×
७०.	१००५	यत्याचार	आ० वसुनंदि	प्रा०	अ	×
७१.	१८३६	अजितनाथपुराण	विजयसिंह	अप०	ञ	१५०५
७२.	६४५४	कल्याणकविधि	विनयचंद	अप०	अ	×
७३.	५४४	चूनडी	"	"	अ	×
७४.	२६८८	जिनपूजापुरंदरविधानकथा	अमरकीर्ति	अप०	अ	×
७५	५४३९	जिनरात्रिविधानकथा	नरसेन	अप०	अ	१७ वी
७६	२०६७	णेमिणाहचरिउ	लक्ष्मणदेव	अप०	अ	×
७७.	२०६८	णेमिणाहचरिय	दामोदर	अप०	अ	१२८७
७८.	५६०२	त्रिशतजिनचउवीसी	महणसिंह	अप०	अ	×
७९.	५४३९	दशलक्षणकथा	गुणभद्र	अप०	अ	×
८०.	२६८८	दुधारसविधानकथा	विनयचंद	अप०	अ	×
८१.	४९८६	नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्ति	अप०	ञ	×
८२.	२६८८	निर्झरपंचमीविधानकथा	विनयचंद	अप०	अ	×
८३.	२१७९	पासचरिय	तेजपाल	अप०	ट	×
८४.	५४३९	रोहिणीविधान	गुणभद्र	अप०	अ	×
८५.	२६८३	रोहिणीचरित	देवनंदि	अप०	अ	१५ वी

क्रमांक	ग्रं सू क.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
८६	२४३७	सम्भवजिणणाहचरिउ	तेजपाल	अप०	व	X
८७	५४५४	सम्यक्त्वकौमुदी	सहणपाल	अप०	अ	X
८८	२६८८	सुखसंपत्तिविधानकथा	विमलकीर्त्ति	अप०	अ	X
८९	५४३६	सुगन्धदशमीकथा	"	अप०	अ	X
९०	५३६१	अंजनारास	धर्मभूषण	हि० प०	अ	X
९१.	४३४७	अक्षयनिधिपूजा	ज्ञानभूषण	हि० प०	ङ	X
९२.	२५०८	अठारहनातेकीकथा	ऋषिलालचंद	हि० प०	अ	X
९३.	६००३	अनन्तकेछप्पय	धर्मचन्द्र	हि० प०	झ	X
९४.	४३८१	अनन्तव्रतरास	ब्र० जिनदास	हि० प०	अ	१५ वी
९५	४२१५	अर्हनकचौढालियागीत	विमलकीर्त्ति	हि० प०	अ	१६८१
९६.	५७६७	आदित्यवारकथा	रायमल्ल	हि० प०	ङ	X
९७.	५४२५	आदित्यवारकथा	वादिचन्द्र	हि० प०	अ	X
९८.	५३९२	आदीश्वरकासमवसरन	X	हि० प०	अ	१६६७
९९.	५७३०	आदित्यवारकथा	सुरेन्द्रकीर्ति	हि० प०	घ	१७४१
१००.	५९१५	आदिनाथस्तवन	पल्ह	हि० प०	छ	१६ वी
१०१	५४८७	आराधनाप्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्त्ति	हि० प०	अ	X
१०२.	३८६४	आरतीसंग्रह	ब्र० जिनदास	हि० प०	अ	१५ वी शताब्दी
१०३	३४००	उपदेशछत्तीसी	जिनहर्ष	हि० प०	अ	X
१०४.	४४२८	ऋषिमंडलपूजा	आ० गुणनंदि	हि० प०	अ	X
१०५.	२५४०	कठियारकानडरीचौपई	X	हि० प०	अ	१७४७
१०६	६०५२	कवित्त	अगरदास	हि० प०	ट	१८ वी शताब्दी
१०७	६०६५	कवित्त	बनारसीदास	हि० प०	ट	१७ वी शताब्दी
१०८.	५३९७	कर्मचूरव्रतवेलि	मुनिसकलचंद	हि० प०	अ	१७ वी शताब्दी
१०९.	५६०८	कविवल्लभ	हरिचरणदास	हि० प०	अ	X
११०.	३८६४	कृपणछंद	चन्द्रकीर्त्ति	हि० प०	अ	१६ वीं शताब्दी
१११	५४८७	कृष्णरुक्मिणीबेलि	पृथ्वीराज	हि० प०	अ	१६३७
११२.	२५५७	कृष्णरुक्मिणीमंगल	पदमभगत	हि० प०	अ	१८९०
११३	५९१५	गीत	पल्ह	हि० प०	छ	१६ वी शताब्दी
११४.	३८६४	गुरुछंद	शुभचंद	हि० प०	अ	१६ वीं शताब्दी

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
११५	५६३२	चतुर्दशीकथा	डालूराम	हि० प०	छ	१७६५
११६.	५४१७	चतुर्विंशतिछप्पय	गुणकीर्त्ति	हि० प०	अ	१७७७
११७.	४५२६	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	नेमिचंदपाटनी	हि० प०	क	१८८०
११८.	४५३५	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	सुगनचंद	हि० प०	च	१९२६
११९	२५६२	चन्द्रकुमारकीवार्त्ता	प्रतापसिंह	हि० प०	ज	१८४१
१२०.	२५६४	चन्दनमलयागिरीकथा	चत्तर	हि० प०	अ	१७०१
१२१.	२५६३	चन्दनमलयागिरीकथा	भद्रसेन	हि० प०	अ	×
१२२.	१८७९	चन्द्रप्रभपुराण	हीरालाल	हि० प०	क	१९१३
१२३.	१५७	चर्चासागर	चम्पालाल	हि० ग०	अ	×
१२४.	१५४	चर्चासार	प० शिवजीलाल	हि० ग०	क	×
१२५	२०५८	चारुदत्तचरित्र	कल्याणकीर्त्ति	हि० प०	अ	१६९२
१२६.	५६१५	चिंतामणिजयमाल	ठक्कुरसी	हि० प०	छ	१६ वी शताब्दी
१२७.	५६१५	चेतनगीत	मुनिसिंहनंदि	हि० प०	छ	१७ वी शताब्दी
१२८.	५४०१	जिनचौवीसीभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्त्ति	हि० प०	अ	×
१२९.	५५०२	जिनदत्तचौपई	रल्हकवि	हि० प०	अ	१३५४
१३०.	५८१४	ज्योतिपसार	कृपाराम	हि० प०	अ	१७९२
१३१	६०६१	ज्ञानबावनी	मतिशेखर	हि० प०	ट	१५७४
१३२.	५८२९	टंडाणागीत	बूचराज	हि० प०	छ	१६ वी शताब्दी
१३३.	३६९	तत्वार्थसूत्रटीका	कनककीर्त्ति	हि० ग०	ङ	१८ वी ,,
१३४.	३६८	तत्त्वार्थसूत्रटीका	पांडेजयवन्त	हि० ग०	छ	१८ वी ,,
१३५.	३७४	तत्त्वार्थसूत्रटीका	राजमल्ल	हि० ग०	अ	१७ वी ,,
१३६.	३७८	तत्त्वार्थसूत्रभाषा	शिखरचंद	हि० प०	क	१९ वी ,,
१३७.	४६२७	तीनचौवीसीपूजा	नेमीचंदपाटणी	हि० प०	क	१८९४
१३८.	६००६	तीसचौवीसीचौपई	स्याम	हि० प०	झ	१७४९
१३९.	५८८१	तेईसबोलविवरण	×	हि० प०	छ	१६ वी शताब्दी
१४०.	१७३९	दर्शनसारभाषा	नथमल	हि० प०	क	१९२०
१४१.	१७४०	दर्शनसारभाषा	शिवजीलाल	हि० ग०	क	१९२३
१४२.	४२४५	देवकीकीढाल	लूणकरणकासलीवाल	हि० प०	अ	×
१४३.	४६८	द्रव्यसंग्रहभाषा	बाबा दुलीचंद	हि० ग०	क	१९६६

क्रमांक	ग्रं सू क्र	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१४४.	५८८१	द्रव्यसंग्रहभाषा	हेमराज	हि० ग०	छ	१७३१
१४५.	५४०२	नगरों की वसापतका विवरण	X	हि० ग०	अ	X
१४६.	२६०७	नागमंता	X	हि० प०	अ	१८६१
१४७.	४२४६	नागश्रीसज्झाय	विनयचद	हि० प०	अ	X
१४८	८११	निजामरिण	ब्र० जिनदास	हि० प०	क	१५ वी शता०
१४९	५४४६	नेमिजिनंदव्याहलो	खेतसी	हि० प०	अ	१७ वी "
१५०.	२१५८	नेमीजीकाचरित्र	आरणन्द	हि० प०	अ	१८०४
१५१.	५३९२	नेमिजीकोमंगल	विश्वभूषण	हि० प०	अ	१६९८
१५२	३८६४	नेमिनाथछद	शुभचद	हि० प०	अ	१६ वी "
१५३	४२५४	नेमिराजमतिगीत	हीरानद	हि० प०	अ	X
१५४.	२६१४	नेमिराजुलव्याहलो	गोपीकृष्ण	हि० प०	अ	१८६३
१५५	५४२९	नेमिराजुलविवाद	ब्र० ज्ञानसागर	हि० प०	अ	१७ वी "
१५६.	५९१५	नेमीश्वरकाचौमासा	मुनिसिंहनदि	हि० प०	छ	१७ वी "
१५७	५८२९	नेमिश्वरकाहिंडोलना	मुनिरत्नकीर्त्ति	हि० प०	छ	X
१५८.	४८२९	नेमीश्वररास	मुनिरत्नकीर्त्ति	हि० प०	छ	X
१५९.	३९५०	पचकल्याणकपाठ	हरचद	हि० प०	छ	१८३३
१६०	२१७३	पाडवचरित्र	लाभवर्द्धन	हि० प०	ट	१७६८
१६१.	४२५७	पद	ऋषिशिवलाल	हि० प०	अ	X
१६२	१४३९	परमात्मप्रकाशटीका	खानचद	हि०	क	१८३६
१६३.	५८३०	प्रद्युम्नरास	कृष्णराय	हि० प०	छ	X
१६४.	५३९२	पार्श्वनाथचरित्र	विश्वभूषण	हि०	अ	१७ वी "
१६५.	४२९०	पार्श्वनाथचौपई	प० लाखो	हि० प०	ट	१७३४
१६६	३८६४	पार्श्वछन्द	ब्र० लेखराज	हि० प०	अ	१६ वी "
१६७	३२७७	पिंगलछंदशास्त्र	माखनकवि	हि० प०	अ	१८६३
१६८	२६२३	पुण्यास्रवकथाकोश	टेकचद	हि० प०	क	१९२८
१६९	५२५	बधउदयसत्ताचौपई	श्रीलाल	हि० प०	ट	१८८१
१७०	५८५९	बिहारीसतसईटीका	कृष्णराय	हि० प०	छ	X
१७१.	५६०८	बिहारीसतसईटीका	हरचरणदास	हि० प०	अ	१८३४
१७२	५४९७	भुवनकीर्त्तिगीत	बूचराज	हि० प०	अ	१६ वी "

क्रमांक	ग्रं. सू क्र	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१७३.	२२५४	मंगलकलशमहामुनिचतुष्पदी	रंगविनयगणि	हि० प०	श्र	१७१४
१७४.	३४८६	मनमोदनपंचशती	छत्रपति	हि० प०	क	१९१६
१७५.	६०४६	मनोहरमन्जरी	मनोहरमिश्र	हि० प०	ट	×
१७६.	३८६४	महावीरछंद	शुभचद	हि० प०	श्र	१६ वी "
१७७	२६३८	मानतुंगमानवतिचौपई	मोहनविजय	हि० प०	छ	×
१७८.	३१८५	मानविनोद	मानसिंह	हि० प०	ख	×
१७९.	३४९१	मित्रविलास	घासी	हि० प०	क	१७८९
१८०.	१९४८	मुनिसुव्रतपुराण	इन्द्रजीत	हि० प०	श्र	१८८५
१८१	२३१३	यशोधरचरित्र	गारवदास	हि० प०	—	१५८१
१८२	२३१५	यशोधरचरित्र	पन्नालाल	हि० ग०	क	१९३२
१८३.	५११३	रत्नावलिव्रतविधान	ब्र० कृष्णदास	हि० प०	श्र	१६ वी
१८४.	५५०१	रविव्रतकथा	जयकीर्ति	हि० प०	श्र	१७ वी "
१८५.	६०३८	रागमाला	श्याममिश्र	हि० प०	ट	१६०२
१८६	३४९४	राजनीतिशास्त्र	जसुराम	हि० प०	भ	×
१८७.	५३९८	राजसभारंजन	गगादास	हि० प०	श्र	×
१८८.	६०५५	रुक्मणिकृष्णजीकोरास	तिपरदास	हि० प०	ट	×
१८९.	२६८९	रैदव्रतकथा	ब्र० जिनदास	हि० प०	क	१५ वी "
१९०	६०२७	रोहिणीविधिकथा	वंसीदास	हि० प०	ट	१६९५
१९१.	५९९६	लग्नचन्द्रिकाभाषा	स्योजीरामसोगाणी	हि० प०	ज	×
१९२.	६०८६	लब्धिविधानचौपई	भीषमकवि	हि० प०	ट	१६१७
१९३	५९५१	लहुरीनेमीश्वरकी	विश्वभूषण	हि० प०	ट	×
१९४	६१०५	वसंतपूजा	अजयराज	हि० प०	ट	१८ वी "
१९५	५५१९	वाजिदजी के अडिल्ल	वाजिद	हि० प०	श्र	×
१९६	२३५६	विक्रमचरित्र	अभयसोम	हि० प०	ञ	१७२४
१९७	३८६४	विजयकीर्त्तिछंद	शुभचंद	हि० प०	श्र	१६ वी. "
१९८	३२१३	विषहरनविधि	संतोषकवि	हि० प०	छ	१७४१
१९९.	२६७५	वैदरभीविवाह	पेमराज	हि० प०	श्र	×
२००.	३७०४	षटलेश्यावेलि	साहलोहट	हि० प०	भ	१७३०
२०१.	५४०२	शहरसारोठ की पत्री		हि० ग०	श्र	×

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
२०२	५४१७	शीलरास	गुणकीर्त्ति	हि० प०	अ	१७१३
२०३	५६४१	शीलरास	ब्र० रायमलादेवसूरि	हि० प०	भ	१६ वी
२०४	३६६६	शीलरास	विजयदेवसूरि	हि० प०	अ	१६ वी
२०५	२७०१	श्रेणिकचौपई	डूगावैद	हि० प०	अ	१८२६
२०६	२४३२	श्रेणिकचरित्र	विजयकीर्ति	हि० प०	अ	१८२०
२०७	५३६२	समोसरण	ब्र० गुलाल	हि० प०	अ	१६६८
२०८	५५२८	स्यामबत्तीसी	नददास	हि० प०	अ	X
२०९	२४३८	सागरदत्तचरित्र	हीरकवि	हि० प०	अ	१७२४
२१०	१२१६	सामायिकपाठभाषा	तिलोकचद	हि० प०	च	X
२११	३७०६	हम्मीररासो	महेशकवि	हि० प०	ड	X
२१२	१६६४	हरिवंशपुराण	X	हि० ग०	अ	१६७१
२१३	२७४२	होलिका चौपई	डूंगरकवि	हि० प०	छ	१६२६

भट्टारक सकलकीर्ति कृत यशोधर चरित्र की सचित्र प्रति के दो सुन्दर चित्र

यह सचित्र प्रति जयपुर के दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है।
राजा यशोधर दु:स्वप्न की शांति के लिये अन्य जीवों की बलि न
चढा कर स्वयं की बलि देने को तैयार होता है।
रानी हाहाकार करती है।

[दूसरा चित्र अगले पृष्ठ पर देखिये]

चित्र नं० २
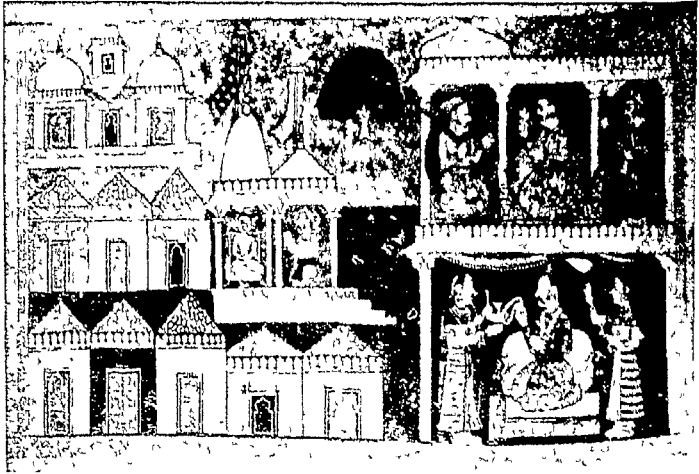
जिन चैत्यालय एवं राजमहल का एक दृश्य
(ग्रंथ सूची क्र सं २२६५ वेष्टन संख्या ११४)

॥ श्री महावीराय नम. ॥

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रन्थसूची

विषय-सिद्धान्त एवं चर्चा

१ अर्थदीपिका—जिनभद्रगणि। पत्र सं० ५७ से ६८ तक। आकार १०×४३ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-जैन सिद्धान्त। रचना काल ×। लेखन काल ×। अपूर्ण। वेष्टन संख्या २। प्राप्ति स्थान घ भण्डार।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

२. अर्थप्रकाशिका—सदासुख कासलीवाल। पत्र स० ३०३। आ० ११३×८ इंच। भा० राजस्थानी (ढूढारी गद्य) विषय-सिद्धान्त। र० काल सं० १९१४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३। प्राप्ति स्थान क भण्डार।

विशेष—उमास्वामी कृत तत्त्वार्थ सूत्र की यह विशद व्याख्या है।

३ प्रति सं० २। पत्र स० ११०। ले० काल ×। वे० सं० ४८। प्राप्ति स्थान भ भण्डार।

४. प्रति स० ३। पत्र स० ४२७। ले० काल स० १९३५ आसोज बुदी ६। वे० स० १८१६। प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

विशेष—प्रति सुन्दर एव आकर्षक है।

५. अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन ⋯। पत्र स० ४९। आ० ९×६ इंच। भा० हिन्दी (गद्य)। विषय-आठ कर्मों का वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। प्राप्ति स्थान ख भण्डार।

विशेष—ज्ञानावरणादि आठ कर्मों का विस्तृत वर्णन है। साथ ही गुणस्थानो का भी अच्छा विवेचन किया गया है। अन्त मे व्रतो एव प्रतिमाओ का भी वर्णन दिया हुआ है।

६. अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन ⋯। पत्र स० ७। आ० ८×५ इंच। भा० हिन्दी। विषय-आठ कर्मों का वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २५८। प्राप्ति स्थान ख भण्डार।

७. अर्हत्प्रवचन ⋯। पत्र स० २। आ० १२×५३ इंच। भा० संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८८२। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

विशेष—सूत्र मात्र है। सूत्र संख्या ८५ है। पाच अध्याय है।

८ अर्हत्प्रवचनव्याख्या　　। पत्र स० ११। आ० १०×४½ इ च। भा० संस्कृत। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १७९१। प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम चतुर्दश सूत्र भी है।

९. आचारागसूत्र　" X। पत्र स० ५३। आ० १०½X५ इ च। भा० प्राकृत। विषय-आगम। र० काल X। ले० काल स० १८२०। अपूर्ण। वे० स० ६०६। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

विशेष—छठा पत्र नही है। हिन्दी मे टब्बा टीका दी हुई है।

१०. आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक　। पत्र स० २। आ० १०×४½ इ च। भा० प्राकृत। विषय-आगम। र० काल X। ले० काल X। वे० स० २८। प्राप्ति स्थान च भण्डार।

११ आश्रवत्रिभगी—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र स० ३१। आ० ११½ X ५½ इ च। भा० प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल X। ले० काल स० १८९२ वैशाख सुदी ८। पूर्ण। वे० स० १८२। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

१२ प्रति स० २। पत्र स० १३। ले० काल X। वे० स० १८४३ प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

१३. प्रति स० ३। पत्र सं० २१। ले० काल X। वे० स० २६५। प्राप्ति स्थान ञ भण्डार।

१४. आश्रवत्रिभंगी　। पत्र स० ६। आ० १२X५½ इ च। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल X। ले० काल X। वे० स० २०१५। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

१५. आश्रववर्णन　"　। पत्र स० १४। आ० ११½X६½ इ च। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० १९०। प्राप्ति स्थान झ भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है।

१६ प्रति स० २। पत्र स० १२। ले० काल X। वे० सं० १९६। प्राप्ति स्थान झ भण्डार।

१७. इक्कीसठाणाचर्चा—सिद्धसेन सूरि। पत्र स० ४। आ० ११X४½ इ च। भा० प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १७६५। प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम एकविंशतिस्थान-प्रकरण भी है।

१८. उत्तराध्ययन　। पत्र स० २५। आ० ९½X५ इ च। भा० प्राकृत। विषय-आगम। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ९८०। प्राप्तिस्थान अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

१६ उत्तराध्ययनभाषाटीका ..... । प० स० ३ । आ० १०×४ इंच । भा० हिन्दी । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२४४ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का प्रारम्भ निम्न प्रकार है ।

परम दयाल दया करू, आसा पूरण काज ।
चउवीसे जिणवर नमुं, चउवीसे गणधार ॥ १ ॥
धरम ग्यान दाता सुगुरु, अहनिस ध्यान धरेस ।
वाणी वर देसी सरस, विघन हार विघनेस ॥ २ ॥
उत्तराध्ययन चउदमउ, मित्र छए अधिकार ।
अलप अकल गुण छइ घणा, कहू बात मति अनुसार ॥ ३ ॥
चतुर चाह कर साभलो, ऐ अधिकार अनुप ।
निश विकथा परिहरी, सुण ज्यौ आलस मूढ ॥ ४ ॥

आगे साकेत नगरी का वर्णन है । कई ढाले दी हुई है ।

२०. उदयसत्तावधप्रकृति वर्णन ..... । पत्र सं० ५ । आ० ११×४½ इच । भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८४० । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

२१ कर्मग्रन्थसत्तरी ...... । पत्र स० २८ । आ० ६×४ इच । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १७८६ माह बुदी १० । पूर्ण । वे० स० १२२ । प्राप्तिस्थान ञ भण्डार ।

विशेष—कर्म सिद्धान्त पर विवेचन किया गया है ।

२२. कर्मप्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० १२ । आ० १०½×४½ इच । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १६८१ मगसिर सुदी १० । पूर्ण । वे० स० २६७ । प्राप्तिस्थान अ भण्डार ।

विशेष—पाडे डालू के पठनार्थ नागपुर मे प्रतिलिपि की गई थी । संस्कृत म सक्षिप्त टीका दी हुई है ।

प्रशस्ति—सवत् १६८१ वरषे मिति मागसिर वदि १० शुभ दिने श्रीमन्नागपुरे पूर्णीकृता पाडे डालु पठनार्थ लिखित गुरजन मुनि सा० धर्मदासेन प्रदत्ता ।

२३ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० सं० ८५ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है ।

२४. प्रति सं० ३ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० १४० । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है ।

२५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १७६८ । अपूर्ण । वे० सं० १६६३ । अ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य वृन्दावन ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

२६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८०२ फाल्गुन बुदी ७ । वे० सं० १०५ । क भण्डार ।

विशेष—इसकी प्रतिलिपि विद्यानन्दि के शिष्य अखैराम मलूकचन्द ने रूडमल के लिये की थी । प्रति के दोनो ओर तथा ऊपर नीचे सस्कृत मे सक्षिप्त टीका है ।

२७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६७१ आषाढ सुदी २ । वे० सं० २६ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । मालपुरा मे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई तथा सं० १६८७ में मुनि नन्दकीर्ति ने प्रति का संशोधन किया ।

२८ प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८२३ ज्येष्ठ बुदी १४ । वे० सं० १०५ ङ । भण्डार ।

२९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८१६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ९१ । घ भण्डार ।

३०. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० ९१ । छ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे सकेत दिये हुये है ।

३१. प्रति सं० १० । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० २८९ । छ भण्डार ।

विशेष—१५९ गाथायें हैं ।

३२. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७६३ वैशाख बुदी ११ । वे० सं० १६२ । ज भण्डार ।

विशेष—अम्बावती में प० रूडा महात्मा ने प० जीवाराम के शिष्य मोहनलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३३ प्रति सं० १२ । पत्र सं० १७ । ले० काल X । वे० सं० १२३ । ञ भण्डार ।

३४. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १७ । ले० का० सं० १६४४ कार्तिक बुदी १० । वे० सं० १२९ । ञ भण्डार ।

३५. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० २१५ । ञ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावन में राव सूर्यसेन के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३६. प्रति सं० १५ । पत्र स० १६ । ले० काल X । वे० स० ४०५ । अ भण्डार ।

३७ प्रति सं० १६ । पत्र स० ३ से १८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २८० । व भण्डार ।

३८ प्रति स० १७ । पत्र स० १७ । ले० काल X । वे० स० ४०५ । व भण्डार ।

३६ प्रति स० १८ । पत्र स० १४ । ले० काल X । वे० स० १३० । अ भण्डार ।

४०. प्रति स० १६ । पत्र स० ५ से १७ । ले० काल स० १७६० । अपूर्ण । वे० स० २००० । ट भडार ।

विशेष—वृन्दावती नगरी मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे श्रीमान् बुधसिंह के विजय राज्य मे आचार्य उदयभूषण के प्रशिष्य प० तुलसीदास के शिष्य त्रिलोकभूषण ने संशोधन करके प्रतिलिपि की। प्रारम्भ के तथा बीच के कुछ पत्र नही है । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

४१ प्रति स० २० । पत्र सं० १३ से ४३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १६८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । गुजराती टीका सहित है ।

४२. कर्मप्रकृतिटीका—टीकाकार सुमतिकीर्त्ति । पत्र स० २ से २२ । आ० १२X५३/४ इच । भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल स० १८२२ । वे० स० १२५२ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार ने यह टीका भ० ज्ञानभूषण के सहाय्य से लिखी थी ।

४३. कर्मप्रकृति ... । पत्र स० १० । आ० ८१/२X४१/२ इच । भा० हिन्दी । र० काल X । पूर्ण । वे० स० ३६४ । अ भण्डार ।

४४. कर्मप्रकृतिविधान—बनारसीदास । पत्र स० १६ । आ० ८३/४X४१/२ इच । भा० हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे स० ३७ । ड भण्डार ।

४५ कर्मविपाकटीका—टीकाकार सकलकीर्त्ति । पत्र स० ८४ । आ० १२X५ इच । भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल सं० १७६८ आषाढ बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० १५६ । अ भण्डार ।

विशेष—कर्मविपाक के मूलकर्ता आ० नेमिचन्द्र है ।

४६. प्रति स० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल X । वे स० १२ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४७. कर्म्मस्तवसूत्र—देवेन्द्रसूरि । पत्र स० १२ । आ० ११X६ इच । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । वे० स० १०५ । छ भण्डार ।

विशेष—गाथाओ पर हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

४८ कल्पसिद्धान्तसंग्रह .... । पत्र स० ७२ । प्रा० १०×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय-आगम । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६६१ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री जिनसागर सूरि की आज्ञा मे प्रतिलिपि हुई थी । गुजराती भाषा मे टीका सहित है ।

अन्तिम भाग—मूल·—तेरा कालेरा तेरा समयरा ·" · सित्ताग पढि बुद्धा ।

अर्थ—तिणइ कालइ गर्भापहार कालइ तिणइ समयइ गर्भापहार थकी पहिली श्रमण भगवंत श्री महावीर त्रिहु ज्ञानेकरी सहित इ जिहुता ते भणी इमजि जाणइ नेहरिगे गाम परियवतायइ । इहा थकी ले त्रिसलानी कू खइ सक्रमाविस्यइ । अनइ जिगि वलासइ सक्रमावइ ने वेला न जाणइ । अपहरण काल अतर्मुहूर्त मजाविवर अनइ उपयोग काल विणि अतर्मुहूर्त्त प्रमाणा । पर छद्मस्थनाउपयोग थिकउ । संहरण काल सूक्ष्म जाणिवउ वली श्री आचाराग माहि कहिउछइ । महरण काल तिणि जाणइ । पर ए पाठ सगनइ नही । ने भणी आवीर्णन ही । तिसलानी कू खि आया पछी जागइ । जिणी रात्रिइ श्रमण भगवत श्री महावीर देवानंदा ब्राह्मणी सुखशय्या सूती । काई सूती, काई जागती । यह वाउदार स्फार जिस्या पूर्वइ वर्णव्या तिस्या चउदह महास्वप्न त्रिशला क्षत्रियाणी पइ माहराह्मा खासी लीधा । इसउ स्वप्न देखि जागी । जे भणी कल्याण कारिया निरुपद्रव । धन धान्य ना करणहार । मगलीक । स श्री कजियइ घरि बाजइ वीपइ घर पहुता । हिवइ त्रिशला क्षत्रियाणी जिणइ पुकारइ सुपिना देखिस्यइ ते प्रसारइ वाचिस्या । य श्री कल्प सिद्धान्तनी वाचना तणइ अधिकारइ । एव भाग्यवत दान द्यइ । शील पालइ । तप तपइ । भावना भावई एवविध धर्म कर्त्तव्य करइ ते श्री देवगुरु तणउ प्रसाद देवनइ अधिकारइ विधि चैत्यालय पूज्यमान श्री पार्श्वनाथ तणइ प्रसादि गुरुनी परपरायइ सुविहित चक्रचूडामणि श्री उद्योतनसूरि श्री वर्द्धमान सूरि श्री । श्री जिनेश्वर सूरि । श्री अभयदेव सूरि युगप्रधान श्री जिनदत्तसूरि श्रीमज्जिन कुशलसूरि श्री इकब्बर पातिसाहि प्रतिबोधक युगप्रधान श्री मज्जिनसूरि तत्पट्टे प्रभाकर श्री मज्जिनसिंह सूरि तत्पट्टे प्रभाकर भट्टारक श्री जिनसागर सूरिनी आज्ञा प्रवर्त्तइ । श्रीरस्तु ।

सस्कृत मे श्लोक तथा प्राकृत मे कई जगह गाथाएँ दी है ।

४८ कल्पसूत्र (भिक्खू अज्झयणं) · ·· । पत्र स० ४१ । प्रा० १०×४½ इच । भा० प्राकृत । विषय-आगम । र० काल X । ले० काल X । वे० स० ६०६ । पूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४६ .कल्पसूत्र—भद्रबाहु । पत्र स० ११६ । प्रा० १०×४ इच । भा० प्राकृत । विषय-आगम । र० काल X । ले० काल स० १८६४ । अपूर्ण । वे० स० ३६ । छ भण्डार ।

विशेष—२ रा तथा ३ रा पत्र नही है । गाथाओ के नीचे हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

५० प्रति स० २ । पत्र स० ५ से ४०२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १६८७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत तथा गुजराती छाया सहित है । कही २ टब्बा टीका भी दी हुई है । बीच के कई पत्र नही है ।

१ कल्पसूत्र—भद्रबाहु। पत्र स० ६। आ० ११×४½ इच। भा० प्राकृत। विषय-आगम। र० का ×। ले० का स० १५६० आसोज सुदी ८। पूर्ण। वे० स० १८४६। ट भण्डार।

५२. प्रति सं० २। पत्र स० ८ से २७४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १८६४। ट भण्डार।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है। गाथाओ के ऊपर अर्थ दिया हुआ है।

५३. कल्पसूत्र टीका—समयसुन्दरोपध्याय। पत्र स० २५। आ० ६×४ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल स० १७२५ कार्तिक। पूर्ण। वे० सं० २८। ख भण्डार।

विशेष—लूणकर्णसर ग्राम मे ग्रथ की रचना हुई थी। टीका का नाम कल्पलता है। सारक ग्राम मे पं० भाग्य विशाल ने प्रतिलिपि की थी।

५४ कल्पसूत्रवृत्ति ……। पत्र स० १२६। आ० ११×४½ इच। भा० प्राकृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १८१८। ट भण्डार।

५५ कल्पसूत्र ……। पत्र सं० १० से ४४। आ० १०½×४½ इच। भाषा-प्राकृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २००२। अ भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे टिप्पण भी दिया हुआ है।

५. क्षपणासारवृत्ति—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव। पत्र सं० ६७। आ० १२×७½ इंच। भा० सस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल शक सं० ११२५ वि० स० १२६०। ले० काल स० १८१६ बैशाख बुदी ११। पूर्ण। वे० स ११७। क भण्डार।

विशेष—ग्रंथ के मूलकर्त्ता नेमिचन्द्राचार्य है।

५७. प्रति सं० २। पत्र स० १४४। ले० काल स० १६५५। वे० सं० १२०। क भण्डार।

५८ प्रति सं० ३। पत्र स० १०२। ले० काल स० १८४७ आषाढ बुदी २। ट भण्डार।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति के पठनार्थ जयपुर मे प्रतिलिपि की गयी थी।

५६. क्षपणासार—टीका ……। पत्र स० ६१। आ० १२½×५½ इच। भा० सस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ११८। क भण्डार।

६०. क्षपणासारभाषा—पं० टोडरमल। पत्र सं० २७३। आ० १३×८ इंच। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल स० १८१८ माघ सुदी ५। ले० काल १६४६। पूर्ण। वे० स० ११६। क भण्डार।

विशेष—क्षपणासार के मूलकर्त्ता आचार्य नेमिचन्द्र है। जैन सिद्धान्त का यह अपूर्व ग्रन्थ है। महा प० टोडरमलजी की गोमट्टसार (जीव-काण्ड और कर्मकाण्ड) लब्धिसार और क्षपणासार की टीका का नाम सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका है। इन तीनो की भाषा टीका एक ग्रन्थ मे भी मिलता है। प्रति उत्तम है।

६१. **गुणस्थानचर्चा** ... । पत्र स० ४५ । आ० १२×५ इ च । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५०३ । ञ भण्डार ।

६२ प्रति स० २ । ले० काल × । वे० स० ५०४ । ञ भण्डार ।

६३ **गुणस्थानक्रमारोहसूत्र—रत्नशेखर** । पत्र स० ५ । आ० १०×४½ इ च । भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३५ । छ भण्डार ।

६४. प्रति स० २ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १७३५ आसोज बुदी १८ । वे० स० ३७६ । छ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित ।

६५ **गुणस्थानचर्चा** ... । पत्र स० ३ । आ० ६×८½ इ च । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । वे० स० १३६० । अपूर्ण । अ भण्डार ।

६६ प्रति स० २ । पत्र स० २ से २८ । वे० स० १३७ । ङ भण्डार ।

६७ प्रति स० ३ । पत्र स० २२ से ५१ । अपूर्ण । ले० काल × । वे० स० १३६ ङ भण्डार ।

६८ प्रति स० ४ । पत्र स० ७ । ले० का० स० १९६३ । वे० स० ५३६ । च भण्डार ।

६९ प्रति स० ५ । पत्र स० १५ । ले० का × । वे० स० २३६ छ भण्डार ।

७०. प्रति स० ६ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० स० ३४६ । झ भण्डार ।

७१ **गुणस्थानचर्चा—चन्द्रकीर्त्ति** । पत्र स० ३६ । आ० ७×७ इ च । भा० हिन्दी । विषय-सि० र० काल × । ले० काल × । वे० स० ११६ ।

७२. **गुणस्थानचर्चा एव चौवीस ठाणा चर्चा** ... । पत्र स० ८ । आ० १२×५½ इ च । भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० का० × । ले० का० × । अपूर्ण । वे० स० २०३१ । ट भण्डार ।

७३. **गुणस्थानप्रकरण** ... । पत्र स० ६ । आ० ११×८ इ च । भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त र० का × । ले० का० × । पूर्ण । वे स १३८ । 'ङ' भण्डार ।

७४ **गुणस्थानभेद** ... । पत्र स० ३ । आ० ११×५ इ च । भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६३ । ञ भण्डार ।

७५ **गुणस्थानमार्गणा** ... । पत्र स० ४ । आ० ८×६½ इ च । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३७ । च भण्डार ।

७६. **गुणस्थानमार्गणारचना** ... । पत्र स० १८ । आ० ११×८½ इ च । भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७७ । च भण्डार ।

७७. गुणस्थानवर्णन ······। पत्र सं० २० आ० १०X५ इच। भा० संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। ० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ७८। च भण्डार।

विशेष—१४ गुणस्थानो का वर्णन है।

७८ गुणस्थानवर्णन । पत्र स० १५ से ३१। आ० १२X५½ इंच। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० म० १३६। ङ भण्डार।

७६ प्रति स० २। पत्र स० ८। ले० काल स० १७६३। वे० स० ४६६। ञ भण्डार।

८० गोम्मटसार (जीवकाण्ड)—आ० नेमिचन्द्र। पत्र स० १३। आ० १३X५ इच। भा०—प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल X। ले० काल स० १५५७ आषाढ सुदी ६। पूर्ण। वे० स० ११८। अ भण्डार।

प्रशस्ति—सवत् १५५७ वर्षे आषाढ शुक्ल नवम्या श्रीमूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुदकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुभचद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचद्रदेवास्त-शिष्य मुनि श्री मडलाचार्य रत्नकीर्त्ति देवास्तत्शिष्य मुनि हेमचंद्र नामा तदाम्नाये सहलवालवसे सा० देल्हा भार्या देल्ही तत्पुत्र सा० भोजा तद्भार्या अणाभास्तत्पुत्रा सा० मावश्री द्वितीय अमरश्री तृतीय जाल्हा एतै शास्त्रमिद लेखयित्वा तस्मै ज्ञानपात्राय मुनि श्री हेमचद्राय भक्त्या प्रदत्त ।

८१ प्रति स० २। पत्र सं० ७। ले० काल X। वे० स० ११६४। अ भण्डार।

८२. प्रति स० ३। पत्र स० १४६। ले० काल स० १७२६। वे० स० १११। अ भण्डार।

८३. प्रति सं० ४। पत्र स० ५ से ४८। ले० काल स० १६२४। चैत्र सुदी २। अपूर्ण। वे० स० १२८। क भण्डार।

विशेष—हरिश्चन्द्र के पुत्र सुनपथी ने प्रतिलिपि की थी।

८४ प्रति स० ५। पत्र स० १२। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० १३६। क भण्डार।

८५. प्रति स० ६। पत्र सं० १८। ले० काल X। वे० स० १३६। ख भण्डार।

८६. प्रति स० ७। पत्र स० ३७५। ले० काल सं० १७३८ श्रावण सुदी ५। वे० सं० १४। घ भण्डार।

विशेष—प्रति टीका सहित है। श्री वीरदास ने अकबराबाद मे प्रतिलिपि की थी।

८७. प्रति सं० ८। पत्र स० ७४। ले० काल स० १८६९ आषाढ सुदी ७। वे० सं० १३८। क भण्डार।

८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ३ । वे० स० ७६ । च भण्डार।

८६ प्रति सं० १० । पत्र स० १७२–२४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८० । च भण्डार।

६०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४ । च भण्डार ।

६१. गोम्मटसारटीका—सकलभूषण । पत्र स० १४३४ । आ० १२½×७ इंच । भा० संस्कृत विषय-सिद्धान्त । र० काल स० १५७६ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल स० १६८५ । पूर्ण । वे० सं० १४० । भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने पन्नालाल चौधरी से प्रतिलिपि कराई । प्रति २ वेष्टनो मे बंधी है ।

६२ प्रति सं० २ । पत्र स० १३१ । ले० काल × । वे० स० १३७ । क भण्डार ।

६३. गोम्मटसारटीका—धर्मचन्द्र । पत्र स० ३३ । आ० १०×५½ इच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६ । क भण्डार ।

विशेष—पत्र १३१ पर आचार्य धर्मचन्द्र कृत टीका की प्रशस्ति का भाग है । नागपुर नगर (नागौर मे महमदखा के शासनकाल मे गालहा आदि चादवाड गोत्र वाले श्रावको ने भट्टारक धर्मचन्द्र को यह प्रति लिख प्रदान की थी ।

६४ गोम्मटसारवृत्ति—केशववर्णी । पत्र स० ४३२ । आ० १०½×४½ इच । भा० संस्कृत र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३८१ । ञ भण्डार ।

विशेष—मूल गाथा सहित जीवकाण्ड एव कर्मकाण्ड की टीका है । प्रति अभयचन्द्र द्वारा संशोधित । 'प० गिरधर की पोथी है' ऐसा लिखा है ।

६५ गोम्मटसारवृत्ति ' । पत्र स० ३ से ६१२ । आ० १०½×४½ इच । भा० संस्कृत विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२३८ । अ भण्डार ।

६६ प्रति सं० २ । पत्र स० २१४ । ले० काल × । वे० स० ८६ । छ भण्डार ।

६७ गोम्मटसार (जीवकाण्ड) भाषा—प० टोडरमल । पत्र स० २२१ से ३६४ । आ० ६½×६ इच । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४०३ । अ भण्डार

विशेष—पडित टोडरमलजी के स्वय के हाथ का लिखा हुआ ग्रंथ है । जगह २ कटा हुआ है । टीका का नाम सम्यक्ज्ञानचन्द्रिका है । प्रदर्शन–योग्य ।

६८ प्रति सं० २ । पत्र स० ६७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७४ । अ भण्डार ।

९९. प्रति सं० २। पत्र सं० ६७६। ले० का० सं० १९४८ भादवा सुदी १५। वे० सं० १४१। क भण्डार।

१००. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२६५। अ भण्डार।

१०१. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५७६। ले० काल सं० १८८५ माघ सुदी १५। वे० सं० १८। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साह तथा मन्नालाल कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी।

१०२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३२८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४६। ङ भण्डार।

विशेष—२७४ से आगे ५४ पत्रो पर गुणस्थान आदि पर यंत्र रचना है।

१०३. प्रति सं० ६। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। वे० सं० १५०। ङ भण्डार।

विशेष—केवल यंत्र रचना ही है।

१०४. **गोम्मटसार-भाषा—पं० टोडरमल**। पत्र सं० २१३। आ० १५×१० इंच। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल सं० १८१८ माघ सुदी ५। ले० काल सं० १९४२ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १५१। ङ भण्डार।

विशेष—लब्धिसार तथा क्षपणासार की टीका है। गणेशलाल सुंदरलाल पाड्या ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवायी।

१०५. प्रति सं० २। पत्र सं० १११०। ले० काल सं० १८५७ सावण सुदी ५। वे० सं० ५३८। च भण्डार।

१०६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६७१ से ७६५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२६। ज भण्डार।

१०७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८१८। ले० काल सं० १८८७ वैशाख सुदी ३। अपूर्ण। वे० सं० २२१९। ट भण्डार।

विशेष—प्रति बड़े आकार एवं सुन्दर लिखाई की है तथा दर्शनीय है। कुछ पत्रो पर बीच मे कलापूर्ण गोलाकार दिये है। बीच के कुछ पत्र नही है।

१०८. **गोम्मटसारपीठिका-भाषा—पं० टोडरमल**। पत्र सं० ६२। आ० १५×७ इंच। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३२। ङ भण्डार।

१०६. गोम्मटसारटीका (जीवकाण्ड) । पत्र स० २६५ । आ० १३×८½ इच। भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । ज भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वप्रदीपिका है ।

११०. प्रति स० २ । पत्र स० १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३१ । ज भण्डार ।

१११. गोम्मटसारसदृष्टि—प० टोडरमल । पत्र स० ८२ । आ० १५×७ इच । भा० हिन्दी विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २० । ग भण्डार ।

११२. प्रति स० २ । पत्र स० ४८ से २०४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५३६ । च भण्डार

११३ गोम्मटसार (कर्मकाण्ड)—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र स० ११६ । आ० ११×५½ इच । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १८८५ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ८१ । च भण्डार

११४ प्रति स० २ । पत्र स० १८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८० । च भण्डार ।

११५ प्रति स० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८३ । च भण्डार ।

११६ प्रति स० ४ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १८४४ चैत्र बुदी १४ । अपूर्ण । वे० स० १८२० ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति के विद्वान छात्र सर्वसुख के अध्ययनार्थ अटोणि नगर में प्रतिलिपि की गई ।

११७. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका—कनकनदि । पत्र स० १० । आ० ११½×५½ इच । भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (तृतीय अधिकार तक) । वे० स० १३५ । भण्डार ।

११८ गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका—भट्टारक ज्ञानभूषण । पत्र स० ५४ । आ० ११½×६½ इच भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १६५७ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १२८ । भण्डार ।

विशेष—सुमतिकीर्त्ति की सहाय्य से टीका लिखी गयी थी ।

११६. प्रति स० २ । पत्र स० ८३ । ले० काल स० १६७३ फागुण सुदी ५ । वे० स० १३६ अ भण्डार ।

१२० प्रति स० ३ । पत्र स० २१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८४७ । अ भण्डार ।

१२१ प्रति सं० ३। पत्र स० ५१। ले० काल X। वे० सं० २५। ख भण्डार।

१२२. प्रति सं० ४। पत्र स० २१। ले० काल स० १७५ " । वे० स० ४६०। ञ भण्डार।

१२३ **गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा—प० टोडरमल**। पत्र स० ६६४। आ० १३X८ इ च। भा० हिन्दी गद्य (ढूंढारी)। विषय-सिद्धान्त। र० काल १६ वी शताब्दी। ले० काल स० १९६९ ज्येष्ठ सुदी ८। पूर्ण। वे० स० १३०। क भण्डार।

विशेष—प्रति उत्तम है।

१२४. प्रति सं० २। पत्र सं० २४०। ले० काल X। वे० स० १४८। ड भण्डार।

विशेष—संदृष्टि सहित है।

१२५. **गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा—हेमराज**। पत्र स० ५२। आ० ६X५ इ च। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल सं० २०१७। ले० काल सं० १७८८ पौष सुदी १०। पूर्ण। वे० स १०५। अ भण्डार।

विशेष—प्रश्न साहु आनन्दरामजी खण्डेलवाल ने पूछया तिस ऊपर हेमराज ने गोम्मटसार को देख के क्षयोपशम माफिक पत्री मे जबाव लिखने रूप चर्चा की वासना लिखी है।

१२६. प्रति स० २। पत्र स० ८५। ले० काल स० १७१७ आसोज बुदी ११। वे स. १२६।

विशेष—स्वपठनार्थ रामपुर मे कल्याण पहाडिया ने प्रतिलिपि करवायी थी। प्रति जीर्ण है। हेमराज १८ वी शताब्दी के प्रथमपाद के हिन्दी गद्य के अच्छे विद्वान हुये हैं। इन्होने १० मे अधिक प्राकृत व सस्कृत रचनाओ का हिन्दी गद्य मे रूपातर किया है।

१२७. **गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका** .....। पत्र सं० १६। आ० ११३/४X५ इंच। भा० सस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ८३। च भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

१२८. प्रति सं० २। पत्र स० ६८। ले० काल स० X। वे० सं० ६६। ड भण्डार।

१२९. प्रति स० ३। पत्र स० ४८। ले० काल X। वे० स० ६१। छ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति प्राय श्रीगुमट्टसारमूलान्टीकाच्च नि.वाम्यक्रमेणएवीवृत्य लिखिता। श्री नेमिचन्द्रसैद्धान्ती विरचितकर्मप्रकृतिग्रंथस्य टीका समाप्ता।

१३० गौतमकुलक—गौतम स्वामी । पत्र स० २ । आ० १०×४½ इ च । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७६६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति गुजराती टीका सहित है २० पद्य है ।

१३१. गौतमकुलक ' ' । पत्र स० १ । आ० १०×४ इ च । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० स० १२४२ । अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है ।

१३२. चतुर्दशसूत्र ' ' ' । पत्र स० १ । आ० १०×४ इ च । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६१ । ख भण्डार ।

१३३ चतुर्दशसूत्र—विनयचन्द्र मुनि । पत्र स० २६ । आ० १०½×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल स० १६८२ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० १८२ । ङ भण्डार ।

१३४. चतुर्दशांगवाह्यविवरण ' ' । पत्र स० ३ । आ० ११×६ इ च । भा० सस्कृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५१४ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रत्येक अग का पद प्रमाण दिया हुआ है ।

१३५. चर्चाशतक—द्यानतराय। पत्र स० १०३ । आ० ११½×८ इ च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सिद्धान्त । र० काल १८ वी शताब्दी । ले० काल स० १६२६ आषाढ बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० १४६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य टीका भी दी है ।

१३६. प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १६३७ फागुण सुदी १२ । वे० स० १५० । क भण्डार ।

१३७. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वे० स० ४६ । अपूर्ण । ख भण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित ।

१३८ प्रति स० ४ । पत्र स० २२ । ले० काल स० १६३१ मगसिर सुदी २ । वे० स० १७१ । ङ भण्डार ।

१३६ प्रति स० ५ । पत्र स० १८ । ले० काल-× । वे० स० १७२ । ङ भण्डार ।

१४० प्रति स० ६ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १६३४ कार्तिक सुदी ८ । वे० स० १७३ । ङ भण्डार ।

विशेष—नीले कागजो पर लिखी हुई है। हिन्दी गद्य मे टीका भी दी हुई हैं।

१४१. प्रति सं० ७। पत्र स० २२। ले० काल सं० १९६८। वे० सं० २८३। झ भण्डार।

विशेष—निम्न रचनाये और है।

१ अक्षर बावनी – द्यानतराय – हिन्दी
२. गुरु विनती – भूधरदास – ,,
३. बारह भावना – नवल – ,,
४ समाधि मरण – ,,

१४२ प्रति सं० ८। पत्र स० ४६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५६३। ट भण्डार।

विशेष—गुटकाकार है।

१४३. चर्चावर्णन—। पत्र स० ८१ से ११४। आ० १०३/४×६ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७०। ङ भण्डार।

१४४. चर्चासंग्रह । पत्र सं० ३६। आ० १०१/४×६ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७६। छ भण्डार।

१४५. चर्चासंग्रह । पत्र सं० ३। आ० १२×५३/४ इञ्च। भाषा सस्कृत-हिन्दी। विषय सिद्धात। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०५१। अ भण्डार।

१४६ प्रति स० २। पत्र स० १३। ले० काल ×। वे० स० ८६। ज भण्डार।

विशेष—विभिन्न आचार्यो की संकलित चर्चाओ का वर्णन है।

१४७. चर्चासमाधान—भूधरदास। पत्र स० १३०। आ० १०×५ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-सिद्धात। र० काल स० १८०६ माघ सुदी ५। ले० काल सं० १८६७। पूर्ण। वे० स० ३८६। अ भण्डार।

१४८. प्रति सं० २। पत्र सं० ११०। ले० काल सं० १९०८ आषाढ बुदी ६। वे० सं० ४४३। अ भण्डार।

१४९ प्रति सं० ३। पत्र सं० ११७। ले० काल स० १८२२। वे० स० २६। अ भण्डार।

१५० प्रति स० ४। पत्र स० ९९। ले० काल स० १९४१ वैशाख सुदी ५। वे० सं० ५०। ख भंडार।

१५१. प्रति स० ५। पत्र स० ८०। ले० काल स० १९६४ चैत सुदी १५। वे० स० १७४। ङ भंडार।

१५२. प्रति सं० ६। पत्र स० ३४ से १९६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५३। छ भण्डार।

१५३. प्रति स० ७ । पत्र स ७४ । ले० काल स० १८८३ पौष सुदी १३ । वे० सं० १६७ । छ भण्डार।

विशेष—जयनगर निवासी महात्मा चदालाल ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपी की थी।

१५४. चर्चासार—पं० शिवजीलाल। पत्र स० १३३ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय सिद्धान्त । र० काल-X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १४८ । क भण्डार ।

१५५. चर्चासार ' । पत्र स० १६२ । आ० ८×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त। काल X । अपूर्ण । वे० स० १४० । छ भण्डार ।

१५६. चर्चासागर'' ' । पत्र स० ३६ । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त। काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७८६ । अ भण्डार ।

१५७. चर्चासागर—चपालाल । पत्र स० ३०४ । आ० १३×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । वि सिद्धान्त । र० काल सं० १६१० । ले० काल स० १६३१ । पूर्ण । वे० स० ४३६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ मे १४ पत्र विषय सूची के अलग दे रखे हैं।

१५८. प्रति स० २ । पत्र स० ४१० । ले० का० स० १६३८ । वे० स० १४७ । क भण्डार ।

१५९. चौदहगुणस्थानचर्चा-अखयराज । पत्र सं० ४१ । आ० ११×५½ इञ्च । भा० हिन्दी गद्य (राजस्थानी) विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३६२ । अ भण्डार ।

१६०. प्रति स० २ । पत्र स० १-४१ । ले० का० X । वे० स० ८६० । अ भण्डार ।

१६१ चौदहमार्गणा '' । प० स० १० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धा र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २०३६ । अ भण्डार ।

१६२ प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल X । वे० स० १८५५ । ट भण्डार ।

१६३. चौबीसठाणाचर्चा-नेमिचन्द्राचार्य । पत्र स० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-प्रा विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल । सं० १८२० बैशाख सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १५७ । क भण्डार ।

१६४. प्रति स० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १५६ । क भण्डार ।

१६५. प्रति स० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल स० १८१७ पौष बुदी १२ । वे० स० १६० । क भण्ड

विशेष-प० ईश्वरदास के शिष्य रूपचन्द के पठनार्थ नरायणा ग्राम मे ग्रन्थ की प्रतिलीपि की ।

१६६. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १६४६ कार्तिक बुदि ५ । वे० स० ५१ । ख भड

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। श्री मदनचन्द्र की शिष्या आर्या बाई शीलश्री ने प्रतिलिपि कराई।

१६७. प्रति स ५। पत्र स० २२। ले० काल स० १७४० ज्येष्ठ बुदी १३। वे० स० ५२। ख भण्डार।

विशेष—श्रेष्ठी मानसिंहजी ने ज्ञानावरणीय कर्म क्षयार्थ प० प्रेम से प्रतिलिपि करवायी।

१६८. प्रति स० ६। पत्र स० १ से ४३। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ५३। ख भण्डार।

विशेष—सस्कृत टब्बा टीका सहित है। १४३वी गाथा से ग्रन्थ प्रारम्भ है। ३७५ गाथा तक है।

१६९. प्रति स० ७। पत्र स० ५६। ले० काल X। वे० स० ५४। ख भण्डार।

विशेष—प्रति सस्कृत टब्बा टीका सहित है। टीका का नाम 'अर्थसार टिप्पण' है। आनन्दराम के पठनार्थ टिप्पण लिखा गया।

१७०. प्रति स० ८। पत्र स० २५। ले० का० स० १९४६ चैत सुदी २। वे० स० १८६। ङ भडार।

१७१. प्रति स० ९। पत्र स० ७। ले० काल X। वे० स० १३५। छ भण्डार।

१७२ प्रति स० १०। पत्र स० ३२। ले० काल X। वे० सं० १३५। छ भण्डार।

१७३ प्रति स० ११। पत्र स० ५३। ले० काल X। वे० स० १४५। छ भण्डार।

विशेष—२ प्रतियो का मिश्रण है।

१७४. प्रति स० १२। पत्र स० ७। ले० काल X। वे० स० २९१। ज भण्डार।

१७५. प्रति स० १३। पत्र स० २ से २५। ले० काल सं० १६९५। कार्तिक बुदी ५। अपूर्ण। वे० स० १८१५। ट भण्डार।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है। अन्तिम प्रशस्ति—सवत् १६९५ वर्षे कार्तिक बुदि ५ बुद्धवासरे श्रीचन्द्रापुरी महास्थाने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये चौवीस ठाणे ग्रन्थ सपूर्ण भवति।

१७६ प्रति सं० १४। पत्र स० ३३। ले० काल सं० १८१४ चैत बुदि ९। वे० सं० १८१६। ट भण्डार।

प्रशस्ति—सवत्सरे वेद समुद्र सिद्धि चन्द्रमिते १८४४ चैत्र कृष्ण नवम्या सोमवासरे ढुढवती देशे अराह्लयपुरे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति तेद विद्वद् छात्र सर्व सुखह्वयाध्यापनर्थं लिपिकृत स्वगयेना चन्द्र तारक स्थीयतामिद पुस्तक।

१७७. प्रति स० १५। पत्र स० ६६। ले० का० स० १८४० माघ सुदी १५। वे० स० १८१७। ट भण्डार।

विशेष—नैणवा नगर मे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति तथा छात्र विद्वान् तेजपाल ने प्रतिलिपि की।

१७८. प्रति सं० १६। पत्र स० १२। ले० काल X। वे० स० १८८९। ट भण्डार।

विशेष–५ पत्र तक चर्चायें है इसमें आगे शिक्षा की बाते तथा फुटकर श्लोक हैं। चौबीस तीर्थङ्कर के चिह्न आदि का वर्णन है।

१७६. चतुर्विंशति स्थानक–नेमिचन्द्राचार्य। पत्र स० ८६। आ० ११×५ इञ्च। भा० प्राकृत विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६५। ङ भण्डार।

विशेष–सस्कृत टीका भी है।

१८०. चतुर्विंशति गुणस्थान पीठिका । पत्र स० १८। आ० १२×५ इञ्च। भाषा संस्कृत विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६२५। ट भण्डार।

१८१. चौबीस ठाणा चर्चा । पत्र स० २ से २४। आ० १२×५½ इञ्च। भा० संस्कृत। विषय सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६६४। अ भण्डार।

१८२. प्रति स० २। पत्र स० ३२ से ५१। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा सस्कृत। ले० काल स० १८ पौष सुदी १०। वे० स० १६६६। अपूर्ण। अ भण्डार।

विशेष–पं० रामबक्सेन धाणानगरमध्ये लिखित।

१८३. प्रति स० ३। पत्र स० ६३। ले० काल ×। वे० स० १६८। अ भण्डार।

१८४. चौबीस ठाणा चर्चा वृत्ति । पत्र स० १२३। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा सस्कृत विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३२८। अ भण्डार।

१८५. प्रति स० २। पत्र स० १५। ले० काल स० १८४१ जेठ सुदी ३। अपूर्ण। वे० स० ७७ अ भण्डार।

१८६. प्रति स० ३। पत्र स० ३१। ले० काल ×। वे० स० १५५। क भण्डार।

१८७. प्रति स० ४। पत्र स० ३७। ले० काल स० १८१० कार्तिक बुदि १०। जीर्ण-शीर्ण। वे० १५६। क भण्डार।

विशेष–प० ईश्वरदास के शिष्य तथा शोभाराम के गुरुभाई रूपचन्द्र के पठनार्थ मिश्र गिरधारी के प्रतिलिपि करवायी गई। प्रति सस्कृत टीका सहित है।

१८८. चौबीस ठाणा चर्चा । पत्र स० ११। आ० ६½×४ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय–सि० र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४३०। अ भण्डार।

विशेष–समाप्ति मे ग्रन्थ का नाम 'इकवीस ठाणा' प्रकरण भी लिखा है।

१८९. प्रति स० २। पत्र स० ६। ले० काल स० १८२६। वे० स० १०४७। अ भण्डार।

१६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०३६ । अ भण्डार ।

१६१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० ३८२ । अ भण्डार ।

१६२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४० । ले० काल X । वे० सं० १५८ । क भण्डार ।

विशेष–हिन्दी मे टीका दी हुई है ।

१६३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल X । वे० सं० १६१ । क भण्डार ।

१६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६२ । क भण्डार ।

१६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १६७६ । वे० सं० २३ । ख भण्डार ।

विशेष–वेनीराम की पुस्तक से प्रतिलीपि की गई ।

१६६ छियालीसठाणाचर्चा ""। पत्र सं० १० । आ० ६३/४X४१/२ इंच । भाषा सस्कृत विषय–सिद्धान्त । र० काल–X । ले० काल सं० १८२२ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २६८ । ख भण्डार ।

१६७. जम्बूद्वीपफल । पत्र सं० ३२ । आ० १२३/४X६ इंच । भाषा सस्कृत । विषय सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल सं० १८२८ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ११५ । अ भण्डार ।

१६८ जीवस्वरूप वर्णन ''''। पत्र सं० १८ । आ० ६X४ इंच । भाषा प्राकृत । र० काल X ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२१ । ञ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ६ पत्रो मे तत्त्व वर्णन भी है । गोम्मटसार मे से लिया गया है ।

१६६. जीवाचारविचार '' । पत्र सं० ५ । आ० ६X४१/२ इंच । भाषा प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । अ भण्डार ।

२००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८१८ मगसिर बुदी १० । वे० सं० २०५ क भण्डार ।

२०१ जीवसमाससटिप्पण '' । पत्र सं० १६ । आ० ११X५ इंच । भाषा प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २३५ । ञ भण्डार ।

२०२. जीवसमासभाषा '' '' । पत्र सं० २ । आ० ११X५ इंच । भाषा प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० १६७१ । ट भण्डार ।

२०३. जीवाजीवविचार '' । पत्र सं० ६२ । आ० १२X५ इंच । भाषा सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । वे० सं० २००८ । ट भण्डार ।

२०४ जैन सदाचार मार्त्तण्ड नामक पत्र का प्रत्युत्तर—बाबा दुलीचन्द। पत्र स० २१। आ० १२X७½ इ च। भाषा हिन्दी। विषय-चर्चा समाधान। र० काल स० १९४६। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २०८। क भण्डार।

२०५. प्रति स० २। पत्र स० २६। ले० काल X। वे० स० २१७। क भण्डार।

२०६. ठाणागसूत्र " । पत्र स० ४। आ० १०¾X४½ इन्च। भाषा सस्कृत। विषय-आगम। र० काल X। ले० काल। अपूर्ण। वे० स० १९२। अ भण्डार।

२०७ तत्त्वकौस्तुभ—प० पन्नालाल सघी। पत्र स० ७२७। आ० १२X७½ इञ्च। भाषा हिन्दी विषय-सिद्धान्त। र० का० X। ले० काल स० १९४४। पूर्ण। वे० स० २७१। क भण्डार।

विशेष—यह ग्रन्थ तत्वार्थराजवार्त्तिक की हिन्दी गद्य टीका है। यह १० अध्यायो मे विभक्त है। इस प्रति मे ४ अध्याय तक है।

२०८ प्रति स० २। पत्र स० ५४६। ले० काल स० १९४५। वे० स० २७२। क भण्डार।

विशेष—५वे अध्याय से १०वें अध्याय तक की हिन्दी टीका है। नवा अध्याय अपूर्ण है।

२०९. प्रति स० ३। पत्र स० ४२८। र० काल स० १९३४। ले० काल X। वे० स० २४०। ङ भण्डार
विशेष—राजवार्त्तिक के प्रथमाध्याय की हिन्दी टीका है।

२१०. प्रति स० ४। पत्र स० ४२८ से ७७६। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० २४१। ङ भण्डार
विशेष—तीसरा तथा चौथा अध्याय है। तीसरे अध्याय के २० पत्र अलग और है। ४७ अलग पत्रों मे सूचीपत्र है।

२११ प्रति स० ५। पत्र स० १०७ से ४०७। ले० काल X। वे० सं० २४२। ङ भण्डार।

विशेष—५, ६, ७, ८, ९, १०वें अध्याय की भाषा टीका है।

२१२ तत्त्वदीपिका—। पत्र स० ३१। आ० ११½X६¾ भाषा हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २०१४। अ भण्डार।

२१३ तत्त्ववर्णन—शुभचन्द्र। पत्र स० ४। आ० १०½X४½ इञ्च। भाषा सस्कृत। विषय-सिद्धान्त र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ७६। ञ भण्डार।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी।

२१४. तत्त्वसार—देवसेन। पत्र स० ६। आ० ११X५½ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय-सिद्धान्त र० काल X। ले० काल स० १७१६ पौष सुदी ८। पूर्ण। वे० स० २२५।

विशेष—पं० बिहारीदास ने प्रतिलिपि करवायी थी।

२१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २६६ । क भण्डार ।

विशेष–हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । अन्तिम पत्र नही है ।

२१६. प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल X । वे० सं० १८१२ । ट भण्डार ।

२१७. तत्त्वसारभाषा–पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ४४ । आ० १२३/४X५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र० काल सं० १६३१ वैशाख बुदी ७ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २६७ । क भण्डार ।

विशेष–देवसेन कृत तत्त्वसार की हिन्दी टीका है ।

२१८. प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल X । वे० स० २६८ । क भण्डार ।

२१९. तत्त्वार्थदर्पण । पत्र सं० ३६ । आ० १३१/२X४१/२ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय–सिद्धात । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १२६ । घ भण्डार ।

विशेष–केवल प्रथम अध्याय तक ही है ।

२२०. तत्त्वार्थबोध— पत्र सं० १८ । आ० १२१/२X५३/४ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । । वे० स० १४७ । ज भण्डार ।

विशेष–पत्र ६ से भी देवसेन कृत आलापपद्धति दी हुई है ।

२२१. तत्त्वार्थबोध—बुधजन । पत्र स० १४५ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–सिद्धात । र० काल स० १८७६ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३६७ । अ भण्डार ।

२२२. तत्त्वार्थबोध । पत्र स० ३६ । आ० १०३/४X५ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५६६ । च भण्डार ।

२२३. तत्त्वार्थदर्पण । पत्र स० १० । आ० १३X५१/२ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३५ । ग भण्डार ।

विशेष–प्रथम अध्याय तक पूर्ण, टीका सहित । ग्रन्थ गोमतीलालजी भौसा का भेट किया हुआ है ।

२२४. तत्त्वार्थबोधिनीटीका— । पत्र स० ४२ । आ० १३X५१/२ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल सं० १६५२ प्रथम वैशाख सुदि ३ । पूर्ण । वे० स० ३६ । ग भण्डार ।

विशेष–यह ग्रन्थ गोमतीलालजी भौसा का है । श्लोक स० २२५ ।

२२५. तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र स० १२६ । आ० १०१/२X८१/२ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल स० १६७३ आसोज बुदी ५ । वे० स० ७२ । ख भण्डार ।

विशेष–प्रभाचन्द्र भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे । ब्र० हरदेव के लिए ग्रथ बनाया था । नगर्हा नगर ने जोशी गगाराम से प्रतिलिपि करवायी थी ।

२२६. प्रति स० २ । पत्र स० ११७ । ले० काल सं० १६३३ आषाढ बुदी १० । वे० स० ५३७ । च भण्डार ।

२२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२ । । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३७ । ञ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है ।

२२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से ६१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १९३६ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका— इति तत्वार्थ रत्नप्रभाकरग्रन्थे मुनि श्री धर्मचन्द्र शिष्य श्री प्रभाचन्द्रदेव वि चिते ब्रह्मजैत साधु हाबादेव देव भावना निमित्ते मोक्ष पदार्थ कथन दशम सूत्र विचार प्रकरण समाप्ता ॥

२२९. तत्त्वार्थराजवार्तिक—भट्टाकलंकदेव । पत्र सं० ३९० । आ० १९X७ इञ्च । भाषा-संस्कृत विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० १०७ । अ भण्डार ।

विशेष—इस प्रति की प्रतिलिपि सं० १७७८ वाली प्रति से जयपुर नगर मे की गई थी ।

२३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२२८ । ले० काल सं० १९४१ भादवा सुदी ६ । वे० सं० २७ क भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ २ वेष्टनो मे है । प्रथम वेष्टन मे १ से ६०० तथा दूसरे मे ६०१ से १२२८ तक पत्र हैं प्रति उत्तम है । मूल के नीचे हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

२३१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल X । वे० सं० ६४ । ग भण्डार ।

विशेष—मूलमात्र ही है ।

२३२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५०० । ले० काल सं० १९७४ पौष सुदी १३ । वे० सं० २४४ ङ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे म्होरीलाल भावसा ने प्रतिलिपि की ।

२३३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ६५६ । ङ भण्डार ।

२३४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७४ से २१० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२७ । च भण्डार

२३५. तत्त्वार्थराजवार्तिकभाषा । पत्र सं० ५८२ । आ० १२X८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २४५ । ङ भण्डार ।

२३६. तत्त्वार्थवृत्ति—पं० योगदेव । पत्र सं० ९७ । आ० ११½X७¼ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय सिद्धान्त । रचनाकाल X । ले० काल सं० १९५८ चैत बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २५२ । क भण्डार ।

विशेष—वृत्ति का नाम सुखबोध वृत्ति है । तत्त्वार्थ सूत्र पर यह उत्तम टीका है । पं० योगदेव कुम्भनगर निवासी थे । यह नगर कनारा जिले मे है ।

२३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४७ । ले० काल X । वे० सं० २५२ । ञ भण्डार ।

२३८. तत्त्वार्थसार—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५० । आ० १३X५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २३८ । क भण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ मे ६१८ श्लोक है जो ९ अध्यायो मे विभक्त है । इनमे ७ तत्त्वो का वर्णन किया गया है ।

२३९. प्रति सं० २ । पत्र स० ४४ । ले० काल X । वे० स० २३९ । क भण्डार ।

२४०. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३९ । ले० काल X । वे० स० २४२ । क भण्डार ।

२४१. प्रति स० ४ । पत्र सं० २७ । ले० काल X । वे० स० ६५ । ख भण्डार ।

२४२. प्रति सं० ५ । पत्र स० ४२ । ले० काल X । वे० स० ९९ । छ भण्डार ।

विशेष—पुस्तक दीवान ज्ञानचन्द की है ।

२४३ प्रति सं० ६ । पत्र स० ४८ । ले० काल X । वे० स० १३२ । ञ भण्डार ।

२४४. तत्त्वार्थसार दीपक—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र स० ९१ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २८४ । अ भण्डार ।

विशेष—भ० सकलकीर्त्ति ने 'तत्त्वार्थसारदीपक' मे जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तो का वर्णन किया है । रचना १२ अध्यायो मे विभक्त है । यह तत्त्वार्थसूत्र की टीका नही है जैसा कि इसके नाम से प्रकट होता है ।

२४५ प्रति स० २ । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १८२८ । वे० स० २४० । क भण्डार ।

२४६ प्रति स० ३ । पत्र स० ८६ । ले० काल स० १८६४ आसोज सुदी २ । वे० स० २४१ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा हीरानन्द ने प्रतिलिपि की ।

२४७ तत्त्वार्थसारदीपकभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० २८९ । आ० १२३X५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र० काल स० १९३७ ज्येष्ठ बुदी ७ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २६६ ।

विशेष—जिन २ ग्रन्थो की पन्नालाल ने भाषा लिखी है सब की सूची दी हुई है ।

२४८. प्रति सं० २ । पत्र स० २८७ । ले० काल X । वे० स० २४३ । क भण्डार ।

२४९. तत्त्वार्थ सूत्र—उमास्वाति । पत्र स० २९ । आ० ७X३½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल स० १४५८ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २१९९ (क) अ भण्डार ।

विशेष—लाल पत्र हैं जिन पर श्वेत (रजत) अक्षर है । प्रति प्रदर्शनी मे रखने योग्य है । तत्त्वार्थ सूत्र समाप्ति पर भक्तामर स्तोत्र प्रारम्भ होता है लेकिन यह अपूर्ण है ।

प्रशस्ति—स० १४५८ श्रावण सुदी ६ ।

२५० प्रति स० २ । पत्र सं० १९ । ले० काल स० १९९९ । वे० सं० २२०० अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरो मे है । पत्रो के किनारो पर सुन्दर बेले है । प्रति दर्शनीय एवं प्रदर्शनी मे रखने योग्य है । नवीन प्रति है । स० १९९९ मे जौंहरीलालजी नदलालजी बी यानो ने व्रतोद्यापन मे प्रति लिखा कर चढाई ।

२५१ प्रति स० ३ । पत्र स० ३७ । ले० काल X । वे० स० २२०२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रीय एवं प्रदर्शनी योग्य है ।

२५२ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० १८५७ । अ भण्डार ।

२५३. प्रति सं० ५ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८८८ । वे० स० २४६ । अ भण्डार ।

२५४ प्रति सं० ६ । पत्र स० ३८ । ले० काल सं० १८८६ । वे० स० ३३० । अ भण्डार ।

२५५ प्रति स० ७ । पत्र स० ६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३४८ । अ भण्डार ।

२५६ प्रति स० ८ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १८३७ । वे० स० ३६२ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

२५७. प्रति सं० ६ । पत्र स० ११ । ले० काल X । वे० स० १०७५ । अ भण्डार ।

२५८. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५५ । ले० काल X । वे० स० १०३० । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । प० अमीचन्द ने अलवर में प्रतिलिपि की ।

२५६. प्रति सं० ११ । पत्र स० १४ । ले० काल X । वे० स० ६५ । अ भण्डार ।

२६० प्रति सं० १२ । पत्र स० २८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ७७५ अ भण्डार ।

विशेष—पत्र १७ से २० तक नही है ।

२६१. प्रति सं० १३ । पत्र स० ६ से ३३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १००८ । अ भण्ड

२६२ प्रति सं० १४ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १८६२ । वे० स० ४७ । अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित ।

२६३ प्रति स० १५ । पत्र स० २० । ले० काल X । वे० स० ४८ । अ भण्डार ।

२६४. प्रति सं० १६ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १८२० चैत्र बुदी ३ । वे० स० ८११ ।

विशेष—सक्षिप्त हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

२६५. प्रति सं० १७ । पत्र स० २४ । ले० काल X । वे० स० २००८ । अ भण्डार ।

२६६. प्रति सं० १८ । पत्र स० ११ से २२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १२३८ । अ भ

२६७. प्रति सं० १६ । पत्र स० १६ ले० काल स० १८६८ । वे स० १२४४ । अ भण्डार ।

२६८. प्रति स० २० । पत्र स० २४ । ले० काल X । वे० स० १२७५ । अ भण्डार ।

२६६ प्रति स० २१ । पत्र स० ८ । ले० काल X । वे० स० १३३१ । अ भण्डार ।

२७०. प्रति सं० २२ । पत्र स० ५ । ले० काल X । वे० स० २१४३ । अ भण्डार ।

२७१. प्रति स० २३ । पत्र स० १२ । ले० काल X । वे० स० २१५६ । अ भण्डार ।

२७२. प्रति स० २४ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १६४६ कार्त्तिक सुदी ५ । वे० सं० २ अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत टिप्पण सहित है । फूलचंद बिंदायक्या ने प्रतिलिपि की ।

२७३. प्रति सं० २५ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १६ .... । वे. स० २००७ । अ भण्डार ।

२७४ प्रति सं० २६ । पत्र स० ६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०४१ । अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत टिप्पण सहित है ।

२७५. प्रति सं० २७ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८०४ ज्येष्ठ सुदी २ । बे० स० २४६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरो मे है । शाहजहानाबाद वाले श्री बूलचन्द बाकलीवाल के पुत्र श्री ऋषभदास दौलतराम ने जैसिंहपुरा मे इसकी प्रतिलिपि कराई थी । प्रति प्रदर्शनी मे रखने योग्य है ।

२७६. प्रति स० २८ । पत्र म० २१ । ले० काल स० १६३६ भादवा सुदी ४ । वे० स० २५८ । क भण्डार ।

२७७. प्रति सं० २६ । पत्र म० १० । ले० काल X । वे० स० २५६ । क भण्डार ।

२७८ प्रति सं० ३० । पत्र स० ४५ । ले० काल स० १६४५ वैशाखसुदी ७ । वे०स० २५० । क भण्डार ।

२७६. प्रति सं० ३१ । पत्र स० २० । ले० काल X । वे० स० २५७ । क भण्डार ।

२८०. प्रति स० ३२ । पत्र स० १० । ले० काल X । वे० स० ३७ । ग भण्डार ।

विशेष—महुवा निवासी प० नानगरामने प्रतिलिपि की थी ।

२८१. प्रति सं० ३३ । पत्र स० १२ । ले० काल X । वे० स० ३८ । ग भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी । पुस्तक चिम्मनलाल बाकलीवाल की है ।

२८२. प्रति स० ३४ पत्र स० ६ । ले० काल X । वे० स० ३६ । ग भण्डार ।

२८३. प्रति स० ३५ । पत्र म० १० । ले० काल स० १८६१ माघ बुदी ४ । वे० म० ४० । ग भण्डार ।

२८४ प्रति स० ३६ । पत्र स० ११ । ले० काल X । वे० स० ३३ । घ भण्डार ।

२८५ प्रति सं० ३७ । पत्र म० ४२ । ले० काल X । वे० स० ३४ घ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

२८६. प्रति सं० ३८ । पत्र म० ७ । ले० काल X । वे० स० ३५ । घ भण्डार ।

२८७ प्रति सं० ३६ । पत्र सं० ५८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २४६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

२८८. प्रति सं० ४० । पत्र स० १३ । ले० काल X । वे स० २४७ । ङ भण्डार ।

२८६. प्रति सं० ४१ । पत्र स० ८ मे २२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २४८ । ङ भण्डार ।

२६०. प्रति स० ४२ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० स० २४६ । ङ भण्डार ।

२६१ प्रति सं० ४३ । पत्र स० २६ । ले० काल X । वे० म० २५० । ङ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भी है ।

२६२. प्रति सं० ४४ । पत्रसं० १५ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० २५१ । ड भण्डार ।

२६३. प्रति सं० ४५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल X । वे० सं० २५२ । ड भण्डार ।

विशेष—सूत्रों के ऊपर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

२६४. प्रति सं० ४६ । पत्र सं० ५० । ले० काल X । वे० सं० २५३ । ड भण्डार ।

२६५. प्रति सं० ४७ । पत्र सं० ३६ । ले० काल X । वे० सं० २५४ । ड भण्डार ।

२६६. प्रति सं० ४८ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६२१ कार्तिक सुदी ४ । वे० सं० २५५ । ड भण्डार

२६७. प्रति सं० ४६ । पत्र सं० ३७ । ले० काल X । वे० सं० २५६ । ड भण्डार ।

२६८. प्रति सं० ५० । पत्र सं० २८ । ले० काल X । वे० सं० २५७ । ड भण्डार ।

२६६. प्रति सं० ५१ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २५८ । ड भण्डार ।

३००. प्रति सं० ५२ । पत्र सं० ६ से १६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २५६ । ड भण्डार ।

३०१. प्रति सं० ५३ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २६० । ड भण्डार ।

३०२. प्रति सं० ५४ । पत्र सं० ३२ । ले० काल X । वे० सं० २६१ । ड भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

३०३. प्रति सं० ५५ । पत्र सं० १६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २६२ । ड भण्डार ।

३०४ प्रति सं० ५६ । पत्र सं० १७ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २६३ । ड भण्डार ।

३०५. प्रति सं० ५७ । पत्र सं० १८ । ले० काल X । वे० सं० २६५ । ड भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम अध्याय ही है । हिन्दी अर्थ सहित है ।

३०६. प्रति सं० ५८ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० १२८ । च भण्डार ।

विशेष—संक्षिप्त हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

३०७. प्रति सं० ५६ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । च भण्डार ।

३०८. प्रति सं० ६० । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८८२ फागुन सुदी १३ । जीर्ण । वे० सं० १३० । च भण्डार ।

विशेष—मुरलीधर अग्रवाल जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की ।

३०६ प्रति सं० ६१ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १६५२ ज्येष्ठ सुदी १ । वे० सं० १३१ । च भण्डार ।

३१०. प्रति सं० ६२ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८७१ जेठ सुदी १२ । वे० सं० १३२ । च भण्डार

३११. प्रति सं० ६३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० १३४ । च भण्डार ।

विशेष—छाजूलाल सेठी ने प्रतिलिपि करवायी ।

३१२. प्रति सं० ६४ । पत्र सं० १६ । ले० काल X । वे० सं० १३३ । च भण्डार ।

३१३. प्रति सं० ६५ । पत्र सं० २१ से २८ । ले० का० X । अपूर्ण । वे० सं० १३५ । च भण्डार ।

३१४ प्रति सं० ६६ । पत्र सं० १४ । ले० काल X । वे० सं० १३६ । च भण्डार ।

३१५. प्रति सं० ६७ । पत्र सं० ४२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १३७ च भण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित । १ ला पत्र नही है ।

३१६. प्रति सं० ६८ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १६६३ । वे० स० १३८ । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१७. प्रति सं० ६६ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १६६३ । वे० स० ५७० । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१८. प्रति स० ७० । पत्र स० १० । ले० काल X । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम ४ पत्रो मे तत्त्वार्थ सूत्र के प्रथम, पंचम तथा दशम अधिकार है । इससे आगे भक्तामर स्तोत्र है ।

३१६. प्रति सं० ७१ । पत्र स० १७ । ले० काल X । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

३२०. प्रति सं० ७२ । पत्र स० १४ । ले० काल X । वे० सं ३८ । ज भण्डार ।

३२१ प्रति स० ७३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६२२ फागुन सुदी १५ । वे० स० ८८ । ज भण्डार ।

३२२ प्रति स० ७४ । पत्र स० ६ । ले० काल X । वे० सं० १४२ । झ भण्डार ।

३२३. प्रति सं० ७५ । पत्र स० ३१ । ले० काल X । वे० सं० ३०५ । झ भण्डार ।

३२४. प्रति सं० ७६ । पत्र स० २६ । ले० काल X । वे० सं० २७१ । ञ भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल के पठनार्थ लिखा गया था ।

३३५. प्रति सं० ७७ । पत्र स० २० । ले० काल सं० १६२६ चैत सुदी १४ । वे० स० २७३ । ञ भंडार

विशेष—मण्डलाचार्य श्री चन्द्रकीर्त्ति के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी ।

३३६. प्रति सं० ७८ । पत्र स० ११ । ले० काल X । वे० सं० ४४८ । ञ भण्डार ।

३३७. प्रति सं० ७६ । पत्र स० ३४ । ले० काल X । वे० स० ३४ ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

३३८. प्रति सं० ८० । पत्र सं० २७ । ले० काल X । वे० स० १६१५ ट भण्डार ।

३३६. प्रति सं० ८१ । पत्र सं० १६ । ले० काल X । वे० स० १६१६ । ट भण्डार ।

३४०. प्रति सं० ८२ । पत्र सं० २० । ले० काल X । वे० स० १६३१ । ट भण्डार ।

विशेष—हीरालाल विदायक्या ने गोरूलाल पाड्या से प्रतिलिपि करवायी । पुस्तक लिखमीचन्द छाबडा सजाची की है ।

३४१ प्रति सं० ८३ । पत्र स० ५३ । ले० काल स० १६३१ । वे० स० १६४२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । ईसरदा वाले ठाकुर प्रतापसिहजी के जयपुर आगमन के समय सवाई रामसिंह जी के शासनकाल मे जीवणलाल काला ने जयपुर मे हजारीलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की ।

३४२ प्रति स० ८४ । पत्र स० ३ से १८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०६६ ।

विशेष—चतुर्थ अध्याय से है। इसके आगे कलिकुण्डपूजा, पार्श्वनाथपूजा, क्षेत्रपालपूजा, क्षेत्रपालस्तोत्र तथा चिन्तामणिपूजा है।

३४३. तत्त्वार्थ सूत्र टीका श्रुतसागर। पत्र सं० ३५१। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १७३३ प्र० श्रावण सुदी ७। वे० सं० १६०। पूर्ण। अ भण्डार।

विशेष—श्री श्रुतसागर सूरि १६ वीं शताब्दी के संस्कृत के अच्छे विद्वान थे। इन्होंने ३८ से भी अधिक ग्रंथों की रचना की जिसमें टीकाएँ तथा छोटी २ कथाएँ भी है। श्री श्रुतसागर के गुरु का नाम विद्यानंदि था जो भट्टारक पद्मनंदि के प्रशिष्य एवं देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य थे।

३४४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१५। ले० काल सं० १७४८ फागुन सुदी १४। अपूर्ण। वे० सं० २५५। क भण्डार।

विशेष—३१५ से आगे के पत्र नहीं हैं।

३४५ प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५३। ले० काल-×। वे० सं० २६६। ङ भण्डार।

३४६ प्रति सं० ४। पत्र सं० ३५३। ले० काल-×। वे० सं० ३३०। ञ भण्डार।

३४७. तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति—सिद्धसेन गणि। पत्र सं० २४८। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल-×। अपूर्ण। वे० सं० २५३। क भण्डार।

विशेष—तीन अध्याय तक ही है। आगे पत्र नहीं हैं। तत्वार्थ सूत्र की विस्तृत टीका है।

३४८. तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति ·· । पत्र सं० ६३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल-×। ले० काल-सं० १६३३ फागुण बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ५८। अ भण्डार।

विशेष—मालपुरा में श्री कनककीर्त्ति ने अपने पठनार्थ मु० जेसा से प्रतिलिपि करवायी।

प्रशस्ति—संवत् १६३३ वर्षे फागुण मासे कृष्ण पक्षे पचमी तिथौ रविवारे श्री मालपुरा नगरे। भ० श्री ५ श्री श्री श्री चंद्रकीर्त्ति विजय राज्ये ब्र० कमलकीर्त्ति लिखापित आत्मार्थे पठनीया तू मु० जेसा केन लिखित।

३४९ प्रति सं० २। पत्र सं० ३२०। ले० काल सं० १९५९ फागुण सुदी १५। तीन अध्याय तक पूर्ण। वे० सं० २५४। क भण्डार।

विशेष—बाला बख्श शर्मा ने प्रतिलिपि की थी। टीका विस्तृत है।

३५० प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५ से ५६३। ले० काल-×। अपूर्ण। वे० सं० २५६। क भण्डार।

विशेष—टीका विस्तृत है।

३५१ प्रति सं० ४। पत्र सं० ६३। ले० काल सं० १७८६। वे० सं० १०४५। अ भण्डार।

३५२ प्रति सं० ५। पत्र सं० २ से २२। ले० काल-×। अपूर्ण। वे० सं० ३२९। 'ञ' भण्डार।

३५३. प्रति सं० ६। पत्र सं० १६। ले० काल-×। अपूर्ण। वे० सं० १७६३। 'ट' भण्डार।

३५४. तत्त्वार्थसूत्र भाषा-पं० सदासुख कासलीवाल। पत्र सं० ३३३। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। र० काल सं० १९१० फागुण बुदि १०। ले० काल-×। पूर्ण। वे० सं० २४३। क भण्डार।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र पर हिन्दी गद्य मे सुन्दर टीका है।

३५५. प्रति सं० २। पत्र स० १५१। ले० काल सं० १९४३ श्रावरण सुदी १५। वे० सं० २४६। क भण्डार।

३५६. प्रति सं० ३। पत्र स० १०२। ले० काल सं० १९४० मगसिर बुदी १३। वे० स० २४७। क भण्डार।

३५७. प्रति सं० ४। पत्र स० ९६। ले० काल सं० १९१५ श्रावरण सुदी ६। वे० सं० ६६। अपूर्ण। ख भण्डार।

३५८ प्रति सं० ५। पत्र सं० १००। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४२।

विशेष—पृष्ठ ९० तक प्रथम अध्याय की टीका है।

३५९. प्रति सं० ६। पत्र स० २८३। ले० काल स० १९३५ माह सुदी ८। वे० सं० ३३। ङ भण्डार

३६० प्रति सं० ७। पत्र स० ९३। ले० काल स० १९९६। वे० स० २७०। ङ भण्डार।

३६१. प्रति सं० ८। पत्र स० १०२। ले० काल ×। वे० सं० २७१। ङ भण्डार।

३६२. प्रति सं० ९। पत्र स० १२८। ले० काल सं० १९४० चैत्र बुदी ८। वे० स० २७२। ङ भण्डार।

विशेष—म्होरीलालजी खिन्दूका ने प्रतिलिपि करवाई।

३६३. प्रति सं० १०। पत्र सं० ९७। ले० काल सं० १९३६। वे० स० ५७३। च भण्डार।

विशेष—मागीलाल श्रीमाल ने यह ग्रन्थ लिखवाया।

३६४. प्रति सं० ११। पत्र सं० ४४। ले० काल सं० १९५५। वे० स० १८५। छ भण्डार।

विशेष—आनन्दचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई।

३६५. प्रति सं० १२। पत्र स० ७१। ले० काल १९१५ आषाढ सुदी ६ वे० सं० ९१। झ भण्डार।

विशेष—मोतीलाल गंगवाल ने पुस्तक चढाई।

३६६. तत्त्वार्थ सूत्र टीका—पं० जयचन्द छाबड़ा। पत्र स० ११८। आ० १३×७ इञ्च। भाषा हिन्दी (गद्य)। र० काल स० १८५९। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २५१। क भण्डार।

३६७. प्रति सं० २। पत्र सं० १६७। ले० काल सं० १८४६। वे सं० ५७२। च भण्डार।

३६८. तत्त्वार्थ सूत्र टीका—पांडे जयवंत। पत्र स० ६६। आ० १३×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १८४६। वे० स० २४१। छ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है —

केइक जीव अघोर तप करि सिद्ध छै केइक जीव उर्द्ध सिद्ध छै इत्यादि।

इति श्री उमास्वामी विरचित सूत्र की बालाबोधि टीका पांडे जयवंत कृत सपूर्ण समाप्ता। श्री सवाई के पहने से वैष्णव रामप्रसाद ने प्रतिलिपि की।

३६६ तत्त्वार्थसूत्र टीका—आ० कनककीर्ति । पत्र स० १८५ । आ० १२½X५½ इञ्च । भाषा हिन्दी (गद्य)। विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २६६ । ङ भण्डार ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र की श्रुतसागरी टीका के आधार पर हिन्दी टीका लिखी गयी है । १४५ से आगे पत्र नही है ।

३७०. प्रति सं० २ । पत्र स० १०२ । ले० काल X । वे० स० १३८ । म भण्डार ।

३७१. प्रति स० ३ । पत्र स० १६१ । ले० काल सं० १७८३ । चैत्र सुदी ६ । वे० स० २७२ । ञ भण्डार ।

विशेष—लालसोट निवासी ईश्वरलाल अजमेरा ने प्रतिलिपि की थी ।

३७२. प्रति स० ४ । पत्र स० १६२ । ले० काल X । वे० स० ४४६ । ञ भण्डार ।

३७३ प्रति सं० ५ । पत्र स० १३८ । ले० काल स० १६११ । वे० स० १६३८ । ट भण्डार ।

विशेष—वैद्य अमीचन्द काला ने ईसरदा मे शिवनारायण जोशी से प्रतिलिपि करवायी ।

३७४. तत्त्वार्थसूत्र टीका—पं० राजमल्ल । पत्र स० ५ से ४८ । आ० १२X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०६१ । । अ भण्डार ।

३७५. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—छोटीलाल जैसवाल । पत्र स० २१ । आ० १३X५½ इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल स० १६३२ आसोज बुदी ८ । ले० काल स० १६५२ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० २४४ । क भण्डार ।

विशेष—मथुराप्रसाद ने प्रतिलिपि की । छोटीलाल के पिता का नाम मोतीलाल था यह अलीगढ जिला के मेडू ग्राम के रहने वाले थे । टीका हिन्दी पद्य मे है जो अत्यन्त सरल है ।

३७६ प्रति सं० २ । पत्र स० २० । ले० काल X । वे० स० २६७ । ङ भण्डार ।

३७७ प्रति सं० ३ । पत्र स० १७ । । ले० काल X । वे० स० २६८ । ङ भण्डार ।

३७८. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—शिखरचन्द । पत्र स० २७ । आ० १०½X७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल स० १८६८ । ले० काल स० १६५३ । पूर्ण । वे० स० २४८ । क भण्डार ।

३७९ तत्त्वार्थसूत्र भाषा । पत्र स० ६४ । आ० १२X७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धांत । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ४३६ ।

३८० प्रति सं० २ । पत्र स० २ से ४६ । ले० काल स० १८५० वैशाख बुदी १३ । अपूर्ण । वे० स० ६७ । ख भण्डार ।

३८१. प्रति स० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल X । वे० स० ६८ । ख भण्डार ।

विशेष—द्वितीय अध्याय तक है ।

३८२ प्रति स० ४ । पत्र स० ३२ । ले० काल स० १६४१ फागुण बुदी १४ । वे० स० ६६ । ख भण्डार

३८३ प्रति स० ५ । पत्र स० ६६ । ले० काल X । वे० स० ४१ । ग भण्डार ।

३८४ प्रति स० ६ । पत्र स० ४६८ से ८१३ । ले० काल स० X । अपूर्ण । वे० स० २६४ । ङ भण्डार ।

३८५ प्रति सं० ७। पत्र सं० ८७। र० काल–X। ले० काल सं० १९१७। वे० स० ५७१। च भण्डार।

विशेष—हिन्दी टिप्पण सहित।

३८६ प्रति सं० ८। पत्र स० ५३। ले० काल X। वे० सं० ५७४। च भण्डार।

विशेष—प० सदासुखजी की वचनिका के अनुसार भाषा की गई है।

३८७. प्रति सं० ९। पत्र स० ३२। ले० काल X। वे० सं० ५७५। च भण्डार।

३८८. प्रति स० १०। पत्र स० २३। ले० काल X। वे० स० १८५। छ भण्डार।

३८९ तत्त्वार्थसूत्र भाषा ''   '।। पत्र स० ३३। आ० १०X६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–सिद्धान्त। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ८८९।

विशेष—१५वा तथा ३३ से आगे पत्र नही है।

३९०. तत्त्वार्थसूत्र भाषा'   '''। पत्र स० ६० से १०८। आ० ११X४½ इञ्च। भाषा–X। हिन्दी। र० काल X। ले० काल सं० १७१९। अपूर्ण। वे० स० २०८१। अ भण्डार।

प्रशस्ति—सवत् १७१९ मिति श्रावण सुदी १३ पातिसाह औरगसाहि राज्य प्रवर्त्तमाने इदं तत्त्वार्थ शास्त्र सुज्ञानात्मेक अन्य जन बोधाय विदुषा जयवता कृत साह जगन'   पठनार्थं बालाबोध वचनिका कृता। किमर्थं सूत्राणा। मूलसूत्र अतीव गभीरतर प्रवर्त्तत तस्य अर्थ केनापि न अवबुध्यते। इद वचनिका दीपमालिका कृता कश्चित भव्य इमा पठति ज्ञानोद्योत भविष्यति। लिखापित साह विहारीदास खाजानची सावडावासी आमेर का कर्मक्षय निमित्त लिखाई साह भोला, गोधा की सहाय से लिखी है राजश्री जैसिहपुरामध्ये लिखी जिहानाबाद।

३९१ प्रति सं० २। पत्र स० २९। ले० काल स० १८६०। वे० स० ७०। ख भण्डार।

विशेष–हिन्दी मे टिप्पण रूप मे अर्थ दिया है।

३९२ प्रति स० ३। पत्र स० ४२। र० काल X। ले० काल स० १९०२ आसोज बुदी १०। वे० स० १६८। झ भण्डार।

विशेष—टब्बा टीका सहित है। हीरालाल कासलीवाल फागी वाले ने विजयरामजी पाड्या के मन्दिर के वास्ते प्रतिलिपि की थी।

३९३. त्रिभगीसार—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र स० ६६। आ० ६¾X४¼ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धात। र० काल X। ले० काल स० १८५० सावन सुदी ११। पूर्ण। वे० स० ७४। ख भण्डार।

विशेष—लालचन्द टोंग्या ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की।

३९४. प्रति स० २। पत्र स० ५८। ले० काल स० १९१९। अपूर्ण। वे० स० १४६। च भण्डार।

विशेष—जौहरीलालजी गोधा ने प्रतिलिपि की।

३९५ प्रति सं० ३। पत्र स० ६९। ले० काल स० १८७६ कार्त्तिक सुदी ४। वे० स० २४। व्य भण्डार।

विशेष—भ० क्षेमकीर्त्ति के शिष्य गोवर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी।

३९६. त्रिभंगीसार टीका—विवेकनन्दि । पत्र स० ४८ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १८२४ । पूर्ण । वे० स० २८० । क भण्डार ।

विशेष—प० महाचन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३९७ प्रति सं० २ । पत्र स० १११ । ले० काल × । वे० सं० २८१ । क भण्डार ।

३९८ प्रति स० ३ । पत्र स० १६ से ६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६३ । छ भण्डार ।

३९९. दशवैकालिकसूत्र" " । पत्र स० १८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२५१ । अ भण्डार ।

४००. दशवैकालिकसूत्र टीका । पत्र स० १ से ४२ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०९ । छ भण्डार ।

४०१ द्रव्यसंग्रह—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र स० ६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । र० काल × । ले० काल स० १६३५ माघ सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १८५ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६३५ वर्षके माघ मासे शुक्लपक्षे १० तिथौ ।

४०२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० स० ९२९ । अ भण्डार ।

४०३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल स० १८४१ आसोज बुदी १३ । वे० स० १३१० । अ

४०४. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६ से ९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०२५ । अ भण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित ।

४०५ प्रति सं० ५ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० सं० २९२ । अ भण्डार ।

४०६. प्रति स० ६ । पत्र स० ११ । ले० काल स० १८२० । वे० स० ३१२ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित ।

४०७. प्रति स० ७ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८१६ भादवा सुदी ३ । वे० स० ३१३ । क भण्डार

४०८ प्रति सं० ८ । पत्र स० ९ । ले० काल स० १८१५ पौष सुदी १० । वे० स० ३१४ । क भण्डार ।

४०९. प्रति सं० ९ । पत्र स० ९ । ले० काल स० १८४४ श्रावण बुदि १ । वे० स० ३१५ । क भण्डार ।

विशेष—सक्षिप्त सस्कृत टीका सहित ।

४१० प्रति स० १० । पत्र स० १३ । ले० काल स० १८१७ ज्येष्ठ बुदी १२ । वे० स० ३१५ । क भण्डार ।

४११. प्रति सं० ११ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ३१९ । क भण्डार ।

४१२. प्रति सं० १२ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ३११ । क भण्डार ।

विशेष—गाथाओ के नीचे सस्कृत मे छाया दी हुई है ।

४१३. प्रति सं० १३ । पत्र स० ११ । ले० काल सं० १७८९ ज्येष्ठ बुदी ८ । वे० स० ८६ । ख भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । टोक मे पार्श्वनाथ चैत्यालय में पं० डूगरसी के शिष्य पैमराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई ।

४१४ प्रति सं० १४ | पत्र स० १२ । ले० काल सं० १८११ । वे० सं० २६५ | ख भण्डार।

४१५ प्रति सं० १५ | पत्र स० ११ । ले० काल X । वे० स० ४० । घ भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं।

४१६. प्रति सं० १६ | पत्र सं० २ से ८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४२ । घ भण्डार।

४१७. प्रति सं० १७ | पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० स० ४३ । घ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

४१८. प्रति स० १८ | पत्र सं० ५ । ले० काल X । वे० सं० ३१२ । ङ भण्डार।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हैं।

४१९. प्रति सं० १९ | पत्र स० ७ । ले० काल X । वे० सं० ३१३ । ङ भण्डार।

४२०. प्रति सं० २० | पत्र सं० ६ । ले० काल X । वे० स० ३१४ । ङ भण्डार।

४२१. प्रति स० २१ | पत्र स० ३५ । ले० काल X । वे० स० ३१६ । ङ भण्डार।

विशेष—सस्कृत और हिन्दी अर्थ सहित है।

४२२ प्रति स० २२ | पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० १६७ । च भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हैं।

४२३. प्रति सं० २३ | पत्र सं० ५। ले० काल X । वे० सं० १६६ । च भण्डार।

४२४. प्रति स० २४ | पत्र स० १५ । ले० काल स० १८६६ द्वि० आषाढ सुदी २ । वे० सं० १२२ । छ भण्डार।

विशेष—हिन्दी मे बालावबोध टीका सहित है। पं० चतुर्भुज ने नागपुर ग्राम मे प्रतिलिपि की थी।

४२५. प्रति स० २५ | पत्र सं० ४ | ले० काल स० १७८२ भादवा बुदी ६ । वे० सं० ११२ । छ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है। ऋषभसेन खतरगच्छ ने प्रतिलिपि की थी।

४२६. प्रति सं० २६ | पत्र सं० १३। ले० काल X । वे० सं० १०६ । ज भण्डार।

विशेष—टब्बा टीका सहित है।

४२७. प्रति सं० २७ | पत्र सं० ४ । ले० काल X | वे० सं० १२७ । ञ भण्डार।

४२८. प्रति सं० २८ | पत्र सं० १२ । ले० काल X । वे० सं० २०६ । ञ भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है।

४२९. प्रति सं० २९ | पत्र सं० १० । ले० काल X । वे० सं० २६४ । ञ भण्डार।

४३०. प्रति सं० ३० | पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० २७५ । ञ भण्डार।

४३१. प्रति सं० ३१ | पत्र सं० २१ । ले० काल X । वे० सं० ३७८ । ञ भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है।

४३२. प्रति सं० ३२ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७८५ पौष सुदी ३ । वे० स० ४६४ । ञ भण्डार।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है। सीलोर नगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे मूलसघ के अबावती पट्ट भट्टारक जगतकीर्त्ति तथा उनके पट्ट मे भ० देवेन्द्रकीर्ति के आम्नाय के शिष्य मनोहर ने प्रतिलिपि की थी।

४३३. प्रति स० ३३। पत्र स० १५। ले० काल X। वे० स० ४६५। व्य भण्डार।

विशेष—३ पत्र तक द्रव्य संग्रह है जिसके प्रथम २ पत्रो मे टीका भी है। इसके बाद 'सज्जनचित्तवल्लभ मल्लिषेणाचार्य कृत दिया हुआ है।

४३४. प्रति स० ३४। पत्र स० ५। ले० काल स० १६२२। वे० स० १६४६। ट भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं।

४३५ प्रति स० ३५। पत्र स० २ से ६। ले० काल स० १७८४। अपूर्ण। वे० सं० १८४२। ट भण्डार।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

४३६ द्रव्यसग्रहवृत्ति—प्रभाचन्द्र। पत्र स० ११। आ० ११३X५३ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र० काल X। ले० काल स० १८२२ मगसिर बुदी ६। पूर्ण। वे० स० १०५३। अ भण्डार।

विशेष—महाचन्द्र ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

४३७ प्रति स० २। पत्र स० २५। ले० काल स० १९५९ पौष सुदी ३। वे० स० ३१७। क भण्डार।

४३८. प्रति स० ३। पत्र स० २ से ३२। ले० काल स० १७३ । अपूर्ण। वे० स० ३१७। ङ भण्डार

विशेष—आचार्य कनककीर्त्ति ने फागपुर मे प्रतिलिपि की थी।

४३९ प्रति स० ४। पत्र स० २५। ले० काल स० १७१४ द्वि० श्रावण बुदी ११। वे० स० १६८। च भण्डार।

विशेष—यह प्रति जोधराज गोदीका के पठनार्थ रूपसी भावसा जोबनेर वालो ने सांगानेर मे लिखी।

४४० द्रव्यसग्रहवृत्ति—ब्रह्मदेव। पत्र स० १०८। आ० ११३X५ इञ्च। भाषा- सस्कृत। विषय- सिद्धान्त। र० काल X। ले० काल सं० १६३५ आसोज बुदी १०। पूर्ण। वे० स० ६०।

विशेष—इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि राजाधिराज भगवतदास विजयराज मानसिंह के शासनकाल मे मालपुरा मे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय म हुई थी।

प्रशस्ति—शुक्लादिपक्षे नवमदिने पुष्यनक्षत्रे सोमवासरे सवत् १६३५ वर्षे आसोज बदि १० शुभ दिने राजाधिराज भगवतदास विजयराज मानसिंघ राज्य प्रवर्तमाने माल्पुर वास्तव्ये श्री चन्द्रप्रभनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्र देवास्तत्सिष्य भ० श्री धर्म्मचन्द्रदेवास्तत्सिष्य भ० श्री ललितकीर्त्तिदेवास्तत्सिष्य भ० श्री चन्द्रकीर्त्ति देवास्तदाम्नाए खडेलवालान्वये गगवालगोत्रे सा नानिग द्वि पदारथ। सा नानिग भार्या नायकदे तत्पुत्र सा कामा तद्भार्या द्वे। प्र पमिसिरि। द्वि० हरमदे तत्पुत्र कमा तद्भार्या करणादे। द्वि० सा पदारथ तद् भार्या सिदिमदे तत्पुत्र सा गोइद तद्भार्या मारादे तत्पुत्राः पन प्र वीका, द्वि नराइण, तृ ऊदा, चतुर्थ चिरम प० दसरथ। प्र विका भार्या विरमदे एतेषा सा कमा इद सास्त्र लिख्याप्य आचार्य श्री सिंघनदए घटापितं।

४४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल X । वे० स० १२४ । अ भण्डार ।

४४२ प्रति सं० ३ । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १८१० कार्तिक बुदी १३ । वे० स ३२३ । क भण्डार ।

४४३ प्रति स० ४ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १८०० । वे० स० ४४ । छ भण्डार ।

४४४. प्रति सं० ५ । पत्र स० १४६ । ले० काल स० १७८४ असाढ बुदी ११ । वे० स० १११ । छ भण्डार ।

४४५ द्रव्यसंग्रहटीका ·· ··· । पत्र स० ५८ । आ० १०X४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । र० काल X । ले० काल सं० १७३१ माघ बुदी ११ । वे० स० ५१० । व्य भण्डार ।

विशेष—टीका के प्रारम्भ मे लिखा है कि आ० नेमिचन्द्र ने मालवदेश की धारा नगरी मे भोजदेव के शासनकाल में श्रीपाल मडलेश्वर के आश्रम नाम नगर मे सोमा नामक श्रावक के लिए द्रव्य-सग्रह की रचना की थी।

४४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ८५८ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम बृहद् द्रव्य सग्रह टीका है ।

४४७ प्रति सं० ३ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १७७८ पौष सुदी ११ । वे० स० २६५ । व्य भण्डार ।

४४८ प्रति स० ४ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १६७० भादवा सुदी ५ । वे० स० ८५ । ख भंडार ।

विशेष—नागपुर निवासी खडेलवाल जातीय सेठी गौत्र वाले सा ऊदा की भार्या ऊदलदे ने पल्य व्रतोद्यापन मे प्रतिलिपि कराकर चढाया ।

४४६. प्रति स० ६६ । ले० का० स० १६०० चैत्र बुदी १३ । वे० स० ४५ । घ भण्डार ।

४५०. द्रव्यसग्रह भाषा । पत्र स० ११ । आ० १०½X४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल स० १७७१ सावण बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे निम्न प्रकार अर्थ दिया हुआ है ।

गाथा—दव्व-सगहमिणं मुणिणाहा दोस-सचयचुदा सुदपुण्णा ।
सोधयतु तणुसुत्तधरेण णेमिचंद मुणिणा भणियं ज ॥

अर्थ— भो मुनि नाथ ! भो पडित कैसे हौ तुम्हे दोष सचय चुति दोषनि के जु संचय कहिये समूह तिनते जु रहित हौ । मया नेमिचद्र मुनिना भणित । यत् द्रव्य सग्रह इम प्रत्यक्षी भूता मे जु हौ नेमिचद मुनि तिन जु कह्यौ यहु द्रव्य सगह शास्त्र । ताहि सोधयतु । सौ धौ हु कि कि सौ हू । तनु सुत्त धरेण तनु कहिये थोरो सौ सूत्र कहिये । सिद्धात ताकौ जु धारक ह्यौ । अल्प शास्त्र करि सयुक्त हौ जु नेमिचद्र मुनि तेन कह्यौ जु द्रव्य सग्रह शास्त्र ताकौं भो पडित सोधो ।

इति श्री नेमिचंद्राचार्य विरचित द्रव्य सग्रह बालबोध सपूर्ण ।

सवत् १७७१ शाके १६३६ प्र० श्रावण मासे कृष्णपक्षे तृयोदश्या १३ बुधवासरे लिप्यकृत विद्याधरेण स्वात्मार्थे ।

४५१. प्रति स० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल X । वे० स० २६३ । अ भण्डार ।

४५२ प्रति स० ३ । पत्र स० २ से १६ । ले० काल स० १८३५ ज्येष्ठ सुदी ८ । वे० स०७७४ । ड भण्डार ।

विशेष—हिन्दी सामान्य है ।

४५३. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १८१४ मगसिर बुदी ६ । वे०स० ३६३ । अ

विशेष—धर्मार्थी रामचन्द्र की टीका के आधार पर भाषा रचना की गई है ।

४५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २३ । ले० काल स० १५५७ आसोज सुदी ८ । वे० सं० ८८ । म ।

४५५. प्रति सं० ६ । पत्र स० २० । ले० काल X । वे० स० ४४ । ग भण्डार ।

४५६. प्रति स० ७ । पत्र स० २७ । ले० काल स० १७४३ श्रावण बुदी १३ । वे० स० १११ । छ भण्डार ।

प्रारम्भ—बालानामुपकाराय रामचन्द्रेण सभाषया । द्रव्यसग्रहशास्त्रस्य व्याख्यालेशो वितन्यते ॥१॥

४५७. द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र स० १६ । आ० १३X५३ इञ्च । भाषा-गुजराती। लिपि हिन्दी । विषय-छह द्रव्यो का वर्णन । र० काल X । ले० काल स० १८०० माघ बुदि १३ । वे० स० २१/२६२ छ भण्डार ।

४५८. द्रव्यसग्रह भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० १६ । आ० ११½X७३ इञ्च । भाषा-हिन्दी। विषय-छह द्रव्यो का वर्णन । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ४२ । घ भण्डार ।

४५६. द्रव्यसग्रह भाषा—जयचन्द छाबडा । पत्र स० ३१ । आ० ११३X५½ इच । भाषा-हिंदी गद्य । विषय-छह द्रव्यो का वर्णन। र० काल स० १८८३ सावन बुदि १४ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १०१२। अ भण्डार ।

४६० प्रति सं० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १८६३ सावण बुदी १४ । वे० स० ३२१ । क भण्डार ।

४६१ प्रति स० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल X । वे० स० ३१८ । क भण्डार ।

४६२. प्रति स० ४ । पत्र स० ४३ । ले० काल स० १८६३ । वे० स० १६५८ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र ४२ के आगे द्रव्यसग्रह पद्य मे है लेकिन वह अपूर्ण है ।

४६२. द्रव्यसग्रह भाषा—जयचन्द छाबडा । पत्र स० ५ । आ० १२X५ इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य) विषय-छह द्रव्यो का वर्णन । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३२२ । क भण्डार ।

४६३ प्रति सं० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १६३६ । वे० स० ३१८ । ङ भण्डार ।

४६४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३० । ले० काल स० १६३३ । वे० स० ३१६ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य मे भी अर्थ दिया हुआ है ।

४६५ प्रति स० ४ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १८७६ कार्तिक बुदी १४ । वे० स० ५६१ । च भण्डार ।

विशेष—प० सदासुख कासलीवाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की है ।

४६६. प्रति स० ५ । पत्र स० ४७ । ले० काल × । वे० स० १६४ । म्न भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य मे भी अर्थ दिया गया है ।

४६७. प्रति स० ६ । पत्र सं० ३७ । ले० काल × । वे० सं० २४० । म्न भण्डार ।

४६८. द्रव्यसंग्रह भाषा—बाबा दुलीचन्द । पत्र स० ३८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-छह द्रव्यो का वर्णन । र० काल स० १९६६ आसोज सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२० । क भण्डार ।

विशेष—जयचन्द छाबडा की हिन्दी टीका के अनुसार बाबा दुलीचन्द ने इसकी दिल्ली मे भाषा लिखी थी ।

४६९. द्रव्यस्वरूप वर्णन । पत्र स० ६ से १६ तक । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–छह द्रव्यो का लक्षण वर्णन । र० काल × । ले० काल स० १६०५ सावन बुदी १२ । अपूर्ण । वे० स० २१३७ । ट भण्डार ।

४७०. धवल "" । पत्र स० २८ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–जैनागम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३५० । क भण्डार ।

४७१. प्रति स० २ । पत्र स० १ से १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३५१ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे सामान्य टीका भी दी हुई है ।

४७२. प्रति सं० ३ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३५२ । क भण्डार ।

४७३. नन्दीसूत्र ""'' । पत्र स० ८ । आ० १२×४½ इच । भाषा–प्राकृत । विषय–आगम । र० काल × । ले० काल स० १५९० । वे० स० १८४८ । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—स० १५९० वर्षे श्री खरतरगच्छे विजयराज्ये श्री जिनचन्द्र सूरि प० नयसमुद्रगणि नामा देश ? तस्मु शिष्यै वी. गुणलाभ गणिभि लिलेखि ।

४७४. नवतत्त्वगाथा "' । पत्र सं० ३ । आ० ११½×६ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–९ तत्त्वों का वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १८१३ मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—प० महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

४७५. प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वे० स० १०५० । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

४७६ प्रति सं० ३ । पत्र स० ३ से ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १७९ । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

४७७. नवतत्त्व प्रकरण—लक्ष्मीवल्लभ । पत्र सं० १४ । आ० ९¾×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–९ तत्त्वो का वर्णन । र० काल सं० १७४७ । ले० काल सं० १८०९ । वे० स० । ट भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का सम्मिश्रण है । राघवचन्द शक्तावत ने शक्तिसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की ।

४७८. नवतत्त्ववर्णन .... । पत्र सं० ५ । आ० ८३/४×४३/४ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-जीव अजीव आदि ६ तत्त्वों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६०१ । च भण्डार ।

विशेष—जीव अजीव, पुण्य पाप, तथा आश्रव तत्त्व का ही वर्णन है ।

४७६. नवतत्त्व वचनिका—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० ५१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-६ तत्त्वों का वर्णन । र० काल स० १६३४ आषाढ सुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६४ । ग भण्डार ।

४८०. नवतत्त्वविचार ... । पत्र स० ६ से २४ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-६ तत्त्वों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५६ । ञ भण्डार ।

४८१. निजस्मृति—जयतिलक । पत्र स० ५ से १३ । आ० १०×४३/४ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३१ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इत्यागमिकाचार्यश्रीजयतिलकरचित निजस्मृत्ये बंध-स्वामित्वाख्य प्रकरणमेतच्चतुर्थः । संपूर्णोऽयं ग्रन्थ । ग्रन्थाग्रन्थ ५६० प्रमाण । केतरातरा श्री तपोगच्छीय पंडित रत्नाकर पंडित श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री सौभाग्यविजयगणि तच्छिष्य मु० सिंघविजयेन । प० धन्नालाल ऋषभचन्द की पुस्तक है ।

४८२. नियमसार—आ० कुन्दकुन्द । पत्र सं० १०० । आ० १०३/४×५३/४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धांत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

४८३. नियमसार टीका—पद्मप्रभमलधारिदेव । पत्र स० २२२ । आ० १२३/४×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १८३८ माघ बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३८० । क भण्डार ।

४८४. प्रति स० २ । पत्र स० ८७ । ले० काल स० १८६६ । वे० स० ३७१ । ञ भण्डार ।

४८५. निरयावलीसूत्र । पत्र सं० १३ से ३६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८६ । घ भण्डार ।

४८६. पञ्चपरावर्तन ... । पत्र स० ३ । आ० ११×५३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८३८ । अ भण्डार ।

विशेष—जीवों के द्रव्य क्षेत्र आदि पञ्चपरिवर्तनों का वर्णन है ।

४८७. प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ४१३ । क भण्डार ।

४८८. पञ्चसंग्रह—आ० नेमिचन्द्र । पत्र स० २६ से २४८ । आ० १२×५३/४ इञ्च । भाषा-प्राकृत सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४०० । ङ भण्डार ।

४८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८१२ कार्त्तिक बुदी ८ । वे० सं० १३८ । ञ भण्डार ।

विशेष—उदयपुर नगर मे रत्नरुचिगरिण ने प्रतिलिपि की थी । कही कही हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

४९०. प्रति स० ३ । पत्र स० २०७ । ले० काल × । वे० स० ५०९ । ञ भण्डार ।

४९१. पञ्चसंग्रहवृत्ति—अभयचन्द । पत्र सं० १२० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सिद्धात । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०८ । अ भण्डार ।

विशेष—नवम अधिकार तक पूर्ण । २४–२५वां पत्र नवीन लिखा हुआ है ।

४९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०६ से २५० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०९ अ भण्डार ।

विशेष—केवल जीव काण्ड है ।

४९३. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४५२ से ९१५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११० । अ भण्डार ।

विशेष–कर्मकाण्ड नवमा अधिकार तक । वृत्ति–रचना पार्श्वनाथ मन्दिर चित्रकूट मे साधु तागा के सहयोग से की थी ।

४९४. प्रति सं० ४ । पत्र स० ५८६ से ७६३ तक । ले० काल सं० १७२३ फागुन सुदी २ । अपूर्ण । वे० स० ७८१ । अ भण्डार ।

विशेष—वृन्द्रावती मे पार्श्वनाथ मन्दिर मे औरंगशाह (औरंगजेब) के शासनकाल मे हाडा वशोत्पन्न राव श्री भावसिंह के राज्यकाल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४९५. प्रति सं० ५ । पत्र स० ४३० । ले० काल स० १८६८ माघ बुदी २ । वे० स० १२७ । क भण्डार

४९६. प्रति सं० ६ । पत्र स० ६२४ । ले० काल सं० १९५० वैशाख सुदी ३ । वे० स० १३१ । क भण्डार

४९७. प्रति स० ७ । पत्र सं० २ से २०८ । ले० काल × । अपूर्ण ।वे० स० १४७ । ङ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र भी नही है ।

४९८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७४ से २१४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८५ । च भण्डार ।

४९९ पंचसंग्रह टीका—अमितगति । पत्र स० ११४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल सं० १०७३ (शक) । ले० काल स० १८०७ । पूर्ण । वे० सं० २१४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ संस्कृत गद्य और पद्य मे लिखा हुआ है । ग्रन्थकार का परिचय निम्न प्रकार है ।

श्रीमाथुराणामनवद्युतीना संघोऽभवद् वृत्त विभूषितानाम् ।
हारो मीणनामिवतापहारी सूत्रानुसारी शशिरश्मि शुभ्र. ॥ १ ॥

माधवसेनगणीगणनीय शुद्धतमोऽजनि तत्र जनीय ।
भूयसि सत्यवतीव शशाक. श्रीमति सिंधुपतावकलंक ॥ २ ॥
शिष्यस्तस्य महात्मनोऽमितगतिर्मोक्षार्थिनामग्रणी ।
रेतच्छास्त्रमशेषकर्म्मसमितिप्रख्यापनापाकृत ॥
वीरस्येव जिनेश्वरस्य गणभृद्भव्योपकारोद्यतो ।
दुर्वारस्मरदंतिदारणहरि श्रीगौतमोऽनुत्तम ॥ ३ ॥
यदत्र सिद्धान्त विरोधिवद्ध ग्राह्य निराकृत्यतदेतदार्यै ।
गृह्णं ति लोका ह्युपकारियत्नाव निराकृत्य फल पवित्र ॥ ४ ॥
अनश्वर केवलमर्चनीय यावस्थिर तिष्ठतिमुक्तपक्तौ ।
तावद्धरायामिदमत्रशास्त्र स्थेयाच्छुभ कर्म्मनिरासकारि ॥
त्रिसप्तत्यधिकेब्दना सहस्रे शक्रविद्विप ।
मसूतिकापुरे जातमिद शास्त्र मनोरम ॥ ५ ॥
इत्यमितगतिकृता नैणसार तपागच्छे ।

५००. प्रति स० २ । पत्र स० २१५ । ले० काल स० १७९६ माघ बुदी १ । वे० स० १८७ । अ भण्डार

५०१ प्रति सं० ३ । पत्र स० १८० । ले० काल स० १७२४ । वे० स० २१९ । अ भण्डार ।

विशेष—जीर्ण प्रति है ।

५०२ पञ्चसग्रह टीका—। पत्र स० २५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३९९ । ङ भण्डार ।

५०३ पचास्तिकाय—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र स० ५३ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १७०३ । पूर्ण । वे० स० १०३ । अ भण्डार ।

५०४ प्रति स० २ । पत्र स० ४३ । ले० काल स० १९४० । वे स० ४०४ । अ भण्डार ।

५०५ प्रति स० ३ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । वे० स० ४०२ । क भण्डार ।

५०६ प्रति सं० ४ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १८६९ । वे० स० ४०३ । क भण्डार ।

५०७ प्रति स० ५ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० स० ३२ । क भण्डार

विशेष—द्वितीय स्कन्ध तक है । गाथाओ पर टीका भी दी है ।

५०८ प्रति सं० ६ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वे० स० १८७ । ज भण्डार ।

५०९. प्रति स० ७ । पत्र स० ११ । ले० काल स० १७२४ आषाढ बुदी ५ । वे० स० १९९ । अ भण्डार

विशेष—अवावती मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५१०. प्रति सं० ८। पत्र सं० २५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स १९६। ड भण्डार।

५११. पंचास्तिकाय टीका—अमृतचन्द्र सूरि। पत्र स० १२४। आ० १२½×७ इञ्च। भाषा संस्कृत विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल स० १९३८ श्रावण बुदी १४। पूर्ण। वे० स० ४०५। क भण्डार।

५१२. प्रति सं० २। पत्र सं० १०५। ले० काल सं० १४८७ वैशाख सुदी १०। वे० सं० ४०२। ड भण्डार।

५१३ प्रति स० ३। पत्र स० ७९। ले० काल ×। वे० सं० २०२। च भण्डार।

५१४. प्रति सं० ४। पत्र स० ६०। ले० काल स० १९५६। वे० स० २०३। च भण्डार।

५१५. प्रति स० ५। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १५४१ कार्त्तिक बुदी १४। वे० स०। ञ भण्डार।

प्रशस्ति—चन्द्रपुरी वास्तव्ये खण्डेलवालान्वये सा फहरौ भार्या धमला तयो पुत्रधानु तस्य भार्या धनमिरि नाम्या पुत्र सा होलु भार्या सुनखत तस्य दामाद सा हंसराज तस्य भ्राता देवपति एवं पुस्तक पचास्तिकायाविध लिखाया कुलभूषणस्य कर्म्मक्षयार्थं दत्तं।

५१६. पञ्चास्तिकाय भाषा—पं० हीरानन्द। पत्र स० ६३। आ० ११×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सिद्धान्त। र० काल स० १७०० ज्येष्ठ सुदी ७। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४०७। क भण्डार।

विशेष—जहानाबाद मे बादशाह जहांगीर के समय मे प्रतिलिपि हुई।

५१७. पञ्चास्तिकाय भाषा—पांडे हेमराज। पत्र स० १७५। आ० १३×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धात। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४०६। क भण्डार।

५१८ प्रति सं० २। पत्र स० १३५। ले० काल स० १९४७। वे० स० ४०८। क भण्डार।

५१९. प्रति स० ३। पत्र सं० १४९। ले० काल ×। वे० स० ४०३। ड भण्डार।

५२०. प्रति सं० ४। पत्र सं० १५०। ले० काल स० १९५४। वे० स० ६२०। च भण्डार।

५२१. प्रति स० ५। पत्र स० १४४। ले० काल स० १९३६ आषाढ सुदी ४। वे० सं० ६२१। च भण्डार

५२२. प्रति सं० ६। पत्र स० १३६। र० काल ×। वे० स० ६२२ च भण्डार।

५२३. पञ्चास्तिकाय भाषा—बुधजन। पत्र सं० ६११। आ० ११×५¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धात। र० काल सं० १८९२। ले० काल ×। वे० सं० ७१। झ भण्डार।

५२४. पुण्यतत्त्वचर्चा—। पत्र स० ६। आ० १०¾×४¾ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल सं० १८८१। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०४१। ट भण्डार।

५२५ बंध उदय सत्ता चौपई—श्रीलाल। पत्र स० ६। आ० १२½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सिद्धान्त। र० काल स० १८८१। ले० काल ×। वे० सं० १९०५। पूर्ण। ट भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ।

विमल जिनेश्वरचरणयुग पाय, मुनिसुव्रत सू नेमि नवाय।

सतगुरु सारद हिरदै धरु, बंध उदय सत्ता उचरु ॥ १ ॥

अन्तिम—बंध उदै सत्ता बखाणीं, ग्रन्थ त्रिभंगीसार तैं जाणि।

सुद्ध असुद्ध सुधा रसु नाए, अल्प बुद्धि मैं कम्म बखाण ॥ १२ ॥

साहिब राम मुझकूं बुध दई, नगर पचेवर माही लही।

मुझ उतपत डगी के माहि, श्रावक कुल गंगवाल कहाहि ॥ १३ ॥

काल पाय कै पंडित भयो, नैणचन्द कै शिष्य म थयो।

नगर पचेवर माहि गयो, आदिनाथ मुझ दर्शण दियो ॥ १४ ॥

पापकर्म तैं विछत भयो, लाव जा कर रहतो भयो।

शीतल जिनकूं करि परिणाम, स्वपर कारण तैं कहै बखाण ॥ १५ ॥

संवत् अठरासै का कह्या, अवर अक्यासी ऊपर लह्या।

पढत सुणत अघ खय होय, पुन्य बंध बुधि बहु होय ॥ १६ ॥

॥ इति श्री उदै बंध सत्ता समाप्त ॥

इससे आगे चौबीस ठाणा की चौपाई है—

प्रारम्भ—देव धर्म गुरु ग्रन्थ पद वंदौं मन वच काय।

गुणठाणनि परि ग्रन्थ की रचना कहूं बणाय ॥

अन्तिम—इह विधि जस गुणस्थान की रचना वरणी सार।

भूल चूक जो होय तो, बुधिजन लेहु सुधार ॥

छठि मगसिर कृष्ण की लावा नगर मझार।

उगणीसै अरु पाच के माल जाय श्रीलाल ॥

॥ इति सम्पूर्ण ॥

५२६. भगवतीसूत्र—पत्र सं० ५०। आ० ११×५३ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—आगम। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२०७। अ भण्डार।

५२७. भावत्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ५१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय-सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५५६। क भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र दुबारा लिखा गया है।

५२८ प्रति सं० २। पत्र स० ५४। ले० काल स० १८११ माघ सुदी ३। वे० स० ५६०। क भण्डार।

विशेष—प० रूपचन्द ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर मे की थी।

५२९. भावदीपिका भाषा—। पत्र सं० २१८। आ० १२×७½। भाषा—हिन्दी। विषय—सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५६७। ङ भण्डार।

५३०. मरणकरडिका ।पत्र सं० ८। आ० ६३×४३ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६८।

विशेष—आचार्य शिवकोटि की आराधना पर अमितिगति का टिप्पण है।

५३१. मार्गणा व गुणस्थान वर्णन—। पत्र स० ३-५५। आ० १४×५ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय-सिद्धात। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १७४२। ट भण्डार।

५३२. मार्गणा समास—। पत्र सं० ३ से १८। आ० ११३⁄४×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० २१४६। ट भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका तथा हिन्दी अर्थ सहित है।

५३३. रायपसेणी सूत्र—। पत्र स० १५३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-आगम। र० काल X। ले० काल सं० १७६७ आसोज सुदी १०। वे० सं० २०३२। ट भण्डार।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टीका सहित है। सेमसागर के शिष्य लालसागर उनके शिष्य सकलसागर ने स्वपठनार्थ टीका की। गाथाओ के ऊपर छाया दी हुई है।

५३४. लब्धिसार—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र स० ५७। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धात। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ३२१। च भण्डार।

विशेष—५७ से आगे पत्र नही है। संस्कृत टीका सहित है।

५३५. प्रति स० २। पत्र स० ३६। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ३२२। च भण्डार।

५३६. प्रति स० ३। पत्र स० ६५। ले० काल स० १८४६। वे० सं० १६००। ट भण्डार।

५३७. लब्धिसार टीका—। पत्र सं० १५७। आ० १३×८ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल X। ले० काल स० १६५६। पूर्ण। वे० स० ६३८। क भण्डार।

५३८ लब्धिसार भाषा—पं० टोडरमल। पत्र सं० १८०। आ० १३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धात। र० काल X। ले० काल १६४६। पूर्ण। वे० सं० ६३६। क भण्डार।

५३६. प्रति सं० २। पत्र सं० १६३। ले० काल X। वे० स० ७५। ग भण्डार।

५४०. लब्धिसार क्षपणासार भाषा—पं० टोडरमल। पत्र स० १००। आ० १५×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ७६। ग भण्डार।

५४१ लब्धिसार क्षपणासार संदृष्टि—पं० टोडरमल। पत्र स० ४६। आ० १४×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल स० १८८६ चैत बुदी ७। वे० स० ७७। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

५४२. विपाकसूत्र—। प० स० ३ से ३५। आ० १२×४¾ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय-आगम। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० २१३१। ट भण्डार।

५४३. विशेषसत्तात्रिभगी—आ० नेमिचन्द्र। पत्र स० ६। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धात। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २४३। अ भण्डार।

५४४ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल X । वे० स० ३४६ । अ भण्डार

५४५. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १८०२ आसोज बुदी १३ । अपूर्ण । वे० स० ८५/ अ भण्डार ।

विशेष—३० से ३४ तक पत्र नही हैं । जयपुर मे प्रतिलिपि हुई ।

५४६. प्रति स० ४ । पत्र स० २० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ८५५ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल आश्रव त्रिभङ्गी ही है ।

५४७. प्रति स० ५ । पत्र स० ७३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ७६० । अ भण्डार ।

विशेष—दो तीन प्रतियो का सम्मिश्रण है ।

५४८ **षट्लेश्या वर्णन** ···· । पत्र स० १ । आ० १०X४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १८६० । अ भण्डार ।

विशेष—षट लेश्याओ पर दोहे हैं ।

५४९. **षष्ठ्याधिक शतक टीका—राजहंसोपाध्याय** । पत्र स० ३१ । आ० १०½X५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सिद्धात । र० काल स० १५७९ भादवा । ले० काल स० १५७९ अगहन बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १३५ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

श्रीमज्जडकढाभिखो गोत्रे गौश्रावतसिके, सुश्रावकशिरोरत्न देल्हाल्यो समभूत्पुरा ।। १ ।।

स्वजन–जलधिचन्द्रस्तत्तनूजो वितन्द्रो, विबुधकुमुदचन्द्र सर्वविद्यासमुद्र ।

जयति प्रकृतिभद्र प्राज्यराज्ये समुद्र, खल हरिणा हरीन्द्रो रायचन्द्रो महीन्द्र ।। २ ।।

तदंगजन्माजिनजैनभक्त परोपकारव्यसनैकशक्त सदा सदाचारविचारविज्ञ सीहराज सुकृतीकृतज्ञ ।। ३ ।।

श्रीमाल–भूपालकुलप्रदीप, समेदिनी मल्लड पावनीय । नद्यादमद्य गुरुमादधान, तत्सूनुरस्यूनगुणप्रधान ।। ४ ।।

भार्याविद्यगुणैरार्या करमाई पतिव्रता, कमलेव हरेस्तस्य यस्यावामाग्रे विराजते ।। ५ ।।

तत्पुत्रोभयचन्द्रोस्ति भव्यश्चन्द्र इवापर निर्भयो निष्कलकश्च नि ष्कुरग कलानिधि ।

तस्याभ्यर्थनया नया विरचिता श्रीराजहसाभिधोपाध्यायै शतषष्ठिकस्य विमलावृत्ति शिशूना हिता ।

वर्षे नद मुनिपुचद्र सहिते सावाच्यमाना बुधै । मासे भाद्रपदे सिकदरपुरे नद्याच्चिर भूतले ।। ७ ।।

स्वच्छे खरतरगच्छे श्रीमार्ज्जनदत्तसूरिसताने । जिनतिलकसूरिसुगुरो शिष्य श्रीहर्षतिलकोऽभूत् ।। ८ ।।

तच्छिष्येन कृतेय पाठकमुख्येन राजहसेन षष्ठ्यधिकशतप्रकरणटीका नद्याच्चिर मह्या ।। ९ ।।

इति षष्ठ्यधिकशतप्रकरणस्य टीका कृता श्री राजहसोपाध्यायै ।। समयहसेन लि० ।।

सवत् १५७९ समये अगहण वदि ६ रविवासरे लेखक श्री भिखारीदासेन लेखि ।

५५०. **श्लोकवार्त्तिक—आ० विद्यानन्दि** । पत्र स० १५८५ । आ० १२X७½ । भा० सस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल १८४६ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ७०७ । क भण्डार ।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र की वृहद् टीका है। पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ तीन वेष्टनो मे बधा हुआ है। हिन्दी अर्थ सहित है।

५५१. प्रति सं० २ । पत्र स० १० । ले० काल X । वे० सं० ७८ । ञ भण्डार ।

तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय की प्रथम सूत्र की टीका है।

५५२. प्रति सं० ३ । पत्र स० ८० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६५ । ञ भण्डार ।

५५३. सग्रहणीसूत्र ''' । पत्र स० ३ से २८ । आ० १०X४ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय-आगम । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०२ । ख भण्डार ।

विशेष—पत्र स० ६, ११, १६ से २०, २३ से २५ नही है। प्रति सचित्र है। चित्र सुन्दर एव दर्शनीय है। ४, २१ और २८वें पत्र को छोडकर सभी पत्रो पर चित्र हैं।

५५४. प्रति सं० २ । पत्र स० १० । ले० काल X । वे० स० २३३ । छ भण्डार । ३११ गाथायें हैं।

५५५. संग्रहणी बालावबोध—शिवनिधानगणि । पत्र स० ७ से ५३ । आ० १०$\frac{1}{2}$X४$\frac{1}{2}$ । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । विषय-आगम । र० काल X । ले० काल X । वे० स० १००१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

५५६. सत्ताद्वार '' । पत्र सं० ३ से ७ तक । आ० ८$\frac{3}{4}$X४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-सिद्धान्त र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३६१ । च भण्डार ।

५५७. सत्तात्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र स० २ से ४० । आ० १२X६ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १८४२ । ट भण्डार ।

५५८. सर्वार्थसिद्धि—पूज्यपाद । पत्र स० ११८ । आ० १३X६ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-सिद्धात र० काल X । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ११२ । अ भण्डार ।

५५९. प्रति सं० २ । पत्र स० ३६८ । ले० काल स० १९४४ । वे० सं० ७६८ । क भण्डार ।

५६०. प्रति सं० ३ । पत्र स० '' । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८०७ । ङ भण्डार ।

५६१. प्रति सं० ४ । पत्र स० १२२ । ले० काल X । वे० स० ३७७ । च भण्डार ।

५६२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७२ । ले० काल X । वे० सं० ३७८ । च भण्डार ।

विशेष—चतुर्थ अध्याय तक ही है।

५६३. प्रति सं० ६ । पत्र स० १-१३३, २००-२९३ । ले० काल स० १६२५ माघ सुदी ५ । वे० स० ३७९ । च भण्डार ।

निम्नकाल और दिये गये हैं—

स० १६६३ माघ शुक्ला ७-६ कालाडेरा मे श्रीनारायण ने प्रतिलिपि की थी। स० १७१७ कार्त्तिक सुदी १३ ब्रह्म नाथू ने भेंट मे दिया था।

५६४. प्रति स० ७ | पत्र सं० १८२ । ले० काल X । वे० स० ३८० । च भण्डार ।

५६५. प्रति सं० ८ | पत्र स० १५८ । ले० काल X । वे० स० ८४ । छ भण्डार ।

५६६. प्रति सं० ६ | पत्र स० १३४ । ले० काल स० १८८३ ज्येष्ठ बुदी २ । वे० स० ८५ । छ भण्डार।

५६७. प्रति स० १० | पत्र स० २७४ । ले० काल स० १७०४ वैशाख बुदी ६ । वे० स० ३१६ । व भण्डार ।

५६८. सर्वार्थसिद्धि भाषा—जयचन्द छाबडा | पत्र स० ६४३ । आ० १३X७½ इञ्च । भाषा हिन्दी विषय-सिद्धान्त । र० काल स० १८६१ चैत सुदी ५ । ले० काल स० १९२६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ७८१ क भण्डार ।

५६६. प्रति स० २ | पत्र स० ३१८ | ले० काल X । वे० स० ८०८ । ङ भण्डार ।

५७० प्रति सं० ३ | पत्र स० ४६७ | ले० काल स० १९१७ | वे० स० ७०५ | च भण्डार ।

५७१ प्रति स० ४ | पत्र स० २७० । ले० काल स० १८८३ कार्तिक बुदी २ । वे० स० १६७ । ज भण्डार ।

५७२ सिद्धान्तअर्थसार—पं० रइधू । पत्र स० ६६ । आ० १३X८ इञ्च । भाषा अपभ्रंश । विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल स० १९५६ । पूर्ण । वे० स० ७९९ । क भण्डार ।

विशेष—यह प्रति स० १५९३ वाली प्रति से लिखी गई है ।

५७३. प्रति स० २ | पत्र स० ६६ । ले० काल स० १८६४ । वे० स० ८०० । च भण्डार ।

विशेष—यह प्रति भी स० १५९३ वाली प्रति से ही लिखी गई है ।

५७४. सिद्धान्तसार भाषा—| पत्र स० ७५ । आ० १४X७ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X | अपूर्ण । वे० स० ७१६ । च भण्डार ।

५७५. सिद्धान्तलेशसंग्रह ·· । पत्र स० ९४ । आ० ९X४½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धांत । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १४४८ । अ भण्डार ।

विशेष—वैदिक साहित्य है । दो प्रतियो का सम्मिश्रण है ।

५७६ सिद्धान्तसार दीपक—सकलकीर्ति । पत्र स० २२२ । आ० १२X५½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त | र० काल X । ले० काल X | पूर्ण | वे० स० १६१ |

५७७. प्रति स० २ | पत्र स० १८४ । ले० काल स० १८२६ पौष बुदी ऽऽ । वे० स० १६८ । अ भण्डार ।

विशेष—प० चोखचन्द के शिष्य प० किशनदास के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

५७८ प्रति सं० ३ | पत्र स० १५५ । ले० काल स० १७६२ । वे० स० १३२ । अ भण्डार ।

५७९. प्रति स० ४ | पत्र स० २३६ । ले० काल स० १८३२ । वे० स० ८०२ । क भण्डार ।

विशेष—सन्तोषराम पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

५८०. प्रति स० ५ | पत्र स० १७८ । ले० काल स० १८१३ । बैशाख सुदी ८ । वे० स० १२६ । घ भण्डार ।

विशेष—शाहजहानाबाद नगर मे लाला शीलापति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी।

५८१. प्रति सं० ६ । पत्र स० १७३ । ले० काल स० १८२७ बैशाख बुदी १२ । वे० स० २६२ । ञ भण्डार ।

विशेष—कही कही कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हैं।

५८२. प्रति सं० ७ । पत्र स० ७८–१२४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २५२ । छ भण्डार ।

५८३. सिद्धान्तसारदीपक ·। पत्र स० ६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२४ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल ज्योतिलोक वर्णन वाला १४वा अधिकार है।

५८४. प्रति स० २ । पत्र स० १८४ । ले० काल × । वे० स० २२५ । ख भण्डार ।

५८५. सिद्धान्तसार भाषा—नथमल विलाला । पत्र स० ८७ । आ० १३½×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल स० १८४५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२४ । घ भण्डार ।

५८६. प्रति सं० २ । पत्र स० २५० । ले० काल × । वे० स० ८५० । ङ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल 'ङ' भण्डार की प्रति मे है।

५८७. सिद्धान्तसारसंग्रह—आ० नरेन्द्रदेव । पत्र स० १४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६५ । अ भण्डार ।

विशेष—तृतीय अधिकार तक पूर्ण तथा चतुर्थ अधिकार अपूर्ण है।

५८८. प्रति सं० २ । पत्र स० १०० । ले० काल स० १८६६ । वे० स० १६४ । अ भण्डार ।

५८९. प्रति सं० ३ । पत्र स० ५५ । ले० काल स० १८३० मगसिर बुदी ४ । वे० स० १५० । ञ भडार

विशेष—पं० रामचन्द्र ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी।

५९० सूत्रकृताग ·। पत्र स० १६ मे ५६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय–आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १५ पत्र नही है। प्रति संस्कृत टीका सहित है। बहुत से पत्र दीमको ने खा लिये हैं। बीच मे मूल गाथाये है तथा ऊपर नीचे टीका है। इति श्री सूत्रकृतागदीपिका पोडपमाध्याय।

विषय-धर्म एवं आचार शास्त्र

५६१ अट्ठाईसमूलगुणवर्णन । पत्र सं० १ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-मुनिधर्म वर्णन । र० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०३० । अ भण्डार ।

५६२ अनगारधर्मामृत—पं० आशाधर । पत्र सं० ३७७ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-मुनिधर्म वर्णन । र० काल सं० १३०० । ले० काल सं० १७७७ माघ सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ६३१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है । बोली नगर मे श्रीमहाराजा कुशलसिंहजी के शासनकाल मे साहजी रामचन्द्रजी ने प्रतिलिपि करवायी थी । सं० १८२६ मे पं० सुखराम के शिष्य पं० केशव ने ग्रन्थका संशोधन किया था । ६२ से १६१ तक नवीन पत्र है ।

५६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२३ । ले० काल × । वे० सं० १८ । ग भण्डार ।

५६४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७७ । ले० काल सं० १६५३ कार्त्तिक सुदी ५ । वे० सं० १६ । ग भण्डार ।

५६५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७ । ले० काल × । वे० सं० ४६७ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । पं० माधव ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ का दूसरा नाम 'धर्मामृतसूक्ति संग्रह' भी है ।

५६६ अनुभवप्रकाश—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र सं० ४४० । आकार १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (राजस्थानी) गद्य । विषय-धर्म । र० काल सं० १७८१ पौष बुदी ५ । ले० काल सं० १८१४ । अपूर्ण । वे० सं० १ । घ भण्डार ।

५६७ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ७४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१ । छ भण्डार ।

५६८ अनुभवानन्द । पत्र सं० ५६ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० १३ । ङ भण्डार ।

अमृतधर्मरसकाव्य—गुणचन्द्रदेव । पत्र सं० ३ से ६६ । आ० १०½×४½ भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६८५ पौष सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० २३४ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के दो पत्र नही हैं । अन्तिम पुष्पिका -इति श्री गुणचन्द्रदेवविरचितअमृतधर्मरसकाव्ये व्यावर्णन श्रावकव्रतनिरूपण चतुर्विंशति प्रकरण संपूर्ण । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

पट्टे श्री कुदकुदाचार्ये तत्पट्टे श्री सहस्रकीर्त्ति तत्पट्टे त्रिभुवनकीर्तिदेवभट्टारक तत्पट्टे श्री पद्मनंदिदेव भट्टारक तत्पट्टे श्री जसकीर्त्तिदेव तत्पट्टे श्री ललितकीर्त्तिदेव तत्पट्टे श्री गुरुरत्नकीर्त्ति तत्पट्टे श्री ५ गुणचन्द्रदेव भट्टारक

विरचित महाग्रन्थ कर्मक्षयार्थं। लोहटनुत पंडितश्री नावलदास पठनार्थं। अन्तिसीस्यसावपट्टप्रकाशन धर्मउपदेशकनार्थं। चन्द्रप्रभ चैत्यालय माघ मासे कृष्णपक्षे पूष्यनक्षत्रे पार्थिवि दिने १ शुक्रवारे स० १६८५ वर्षे वैरागरग्रामे चौधरी चन्द्र-मनिनद्वाये तत्सुत चतुर्भुज जगमनि परमरामु खेमराज भ्राता पंच सहायिका। शुभ भवतु।

६०० आगमविलास—द्यानतराय। पत्र स० ७३। आ० १०½×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य) विषय–धर्म। र० काल स० १७८३। ले० काल स० १९२८। पूर्ण। वे० स० ८२। क भण्डार।

विशेष—रचना संवत् सम्बन्धी पद्य—"गुण वसु शैल मितज"

ग्रन्थ प्रशस्ति के अनुसार द्यानतराय के पुत्र ने उक्त ग्रन्थ की मूल प्रति को आलू को वेचा तथा उसके पास से यह मूल प्रति जगतराय के हाथ मे आयी। ग्रन्थ रचना द्यानतराय ने प्रारम्भ की थी किन्तु बीच ही मे स्वर्गवास हो जाने के कारण जगतराय ने संवत् १७८४ मे मैनपुरी मे ग्रन्थ को पूर्ण किया। आगम विलास मे कवि की विविध रचनाओं का संग्रह है।

६०१. प्रति सं० २। पत्र स० १०१। ले० काल स० १९५४। वे० स० ८३। क भण्डार।

६०२. आचारसार—वीरनंदि। पत्र स० ४९। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १८९४। पूर्ण। वे० स० १२७। अ भण्डार।

६०३. प्रति स० २। पत्र सं० १०१। ले० काल ×। वे० स० ४४। क भण्डार।

६०४. प्रति सं० ३। पत्र स० १०६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४। घ भण्डार।

६०५. प्रति सं० ४। पत्र स० ३२ से ७२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४८५। ञ भण्डार।

६०६. आचारसार भाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र स० २०३। आ० ११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आचारशास्त्र। र० काल स० १९३४ वैशाख बुदी ६। ले० काल ×। वे० स० ८५। क भंडार।

६०७. प्रति सं० २। पत्र स० २६२। ले० काल० ×। वे० स० ८६। क भंडार।

६०८. आराधनासार—देवसेन। पत्र स० २०। आ० ११×८½। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। र० काल १०वीं शताब्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७०। अ भण्डार।

६०९. प्रति सं० २। पत्र स० ६४। ले० काल ×। वे० स० २२०। अ भण्डार।

विशेष–प्रति सस्कृत टीका सहित है

६१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१। ले० काल ×। वे० स० ३३७। अ भण्डार

६११. प्रति स० ४। पत्र स० ८। ले० काल ×। वे० सं० २८८। ख भण्डार।

६१२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० स० २१७१। ट भण्डार।

६१३. आराधनासार भाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र स० १९। आ० १० ×[illegible] इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल स० १९३१ चैत्र बुदी ६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७। क भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति का अंतिम पद्य नहीं है।

६१४. प्रति सं० २। पत्र सं० ४०। ले० काल X। वे० सं० ६८। क भण्डार।

६१५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५२। ले० काल X। वे० सं० ६९। क भण्डार।

६१६ प्रति सं० ४। पत्र सं० २४। ले० काल X। वे० सं० ७५। ड भण्डार।

विशेष—गाथायें भी हैं।

६१७. आराधनासार भाषा ''। पत्र सं० १६। आ० ११X५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २१२१। ट भण्डार।

६१८ आराधनासार वचनिका—बाबा दुलीचन्द। पत्र सं० २२। आ० १२½X८ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-धर्म। र० काल २०वीं शताब्दी। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० १८३। छ भण्डार।

६१९ आराधनासार वृत्ति—पं० आशाधर। पत्र सं० ८। आ० १०X४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। र० काल १३वीं शताब्दी। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० १०। ख भण्डार।

विशेष—मुनि नयचन्द्र के लिए ग्रन्थरचना की थी। टीका का नाम आराधनासार दर्पण है।

६२०. आहार के छियालीस दोष वर्णन—भैया भगवतीदास। पत्र सं० २। आ० ११X७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-आचारशास्त्र। र० काल सं० १७५०। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २०४। भ भण्डार।

६२१ उपदेशरत्नमाला—धर्मदासगणि। पत्र सं० २०। आ० १०X४½। भाषा-प्राकृत। विषय-संग्रह। र० काल X। ले० काल सं० १७५५ कार्तिक बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ८२८। अ भण्डार।

५६२२. प्रति सं० २। पत्र सं० १४। ले० काल X। वे० सं० ३४८। व्य भण्डार।

हिन्दी (राजस्थानी) ग_ न प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है।

१। घ भण्डार।

.रत्नमाला—सकलभूषण। पत्र सं० १२६। आ० ११X४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत।

५६७ प्रति सं० ६२७ श्रावण सुदी ६। ले० काल सं० १७६७ श्रावण सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ११।

५६८ अनुभवान-

र० काल X। ले० काल। पूर्ण। वे० सं० श्री गोपीराम बिलाला ने प्रतिलिपि करवाई थी।

अमृतधर्मरसकाव्य—गुण सं० १३६। ले० काल X। वे० सं० २७। अ भण्डार।

आचार शास्त्र। र० काल X। ले० काल सं० १२६। ले० काल सं० १७२० श्रावण सुदी ४। वे० सं० २८०। अ

विशेष—प्रारम्भ के दो प

अ सं० १६९। ले० काल सं० १६८८ कार्तिक सुदी १२। अपूर्ण। वे० सं० ८५८

व्याख्यान श्रावकव्रतनिरूपण चतुर्विंशति

पट्टे श्री कुंदकुंदा ६० में ६३ तथा १०८ नहीं है। प्रशस्ति में निम्नप्रकार लिखा है—"अंदपुर की समस्त भट्टारक तत्पट्टे श्री जयकीर्तिदेव इस शास्त्र को श्री पार्श्वनाथ निमित्त भण्डार में रखवाया।"

६२७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५ से १२३ । ले० काल × । वे० सं० ११७५ । अ भण्डार ।

६२८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३८ । ले० काल × । वे० स० ७७ । क भण्डार ।

६२९. प्रति सं० ७ । पत्र स० १२८ । ले० काल × । वे० स० ८२ । ङ भण्डार ।

६३०. प्रति स० ८ । पत्र स० ३९ से ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८३ । ङ भण्डार ।

६३१ प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६४ से १४५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०९ । छ भण्डार ।

६३२. प्रति सं० १० । पत्र सं० ७२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४६ । छ भण्डार ।

६३३. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १६७ । ले० काल स० १७२७ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० ३१ । ञ भण्डार

६३४. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १८१ । ले० काल × । वे० सं० २७० । ञ भण्डार ।

६३५. प्रति स० १३ । पत्र स० १६५ । ले० काल स० १७१८ फागुण सुदी १२ । वे० स० ४५२ । ञ भण्डार ।

६३६. उपदेशसिद्धांतरत्नमाला—भंडारी नेमिचन्द । पत्र स० १६ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९४३ आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ७८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे टीका भी दी हुई है ।

६३७ प्रति स० २ । पत्र स० ९ । ले० काल × । वे० स० ७९ । क भण्डार ।

६३८ प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १८३४ । वे० स० १२५ । घ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है ।

६३९ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा—भागचन्द । पत्र स० २८ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल स० १९१२ आषाढ बुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७५९ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ को स० १९६७ मे कालूराम पोल्याका ने खरीदा था । यह ग्रन्थ षट्कर्मोपदेशमाला का हिन्दी अनुवाद है ।

६४०. प्रति सं० २ । पत्र स० १७१ । ले० काल स० १९२९ ज्येष्ठ सुदी १३ । वे० स० ८० । क भण्डार

६४१ प्रति स० ३ । पत्र स० ४६ । ले० काल × । वे० स० ८१ । क भण्डार ।

६४२ प्रति सं० ४ । पत्र स० ७३ । ले० काल स० १९४३ सावण बुदी ३ । वे० स० ८२ । क भडार ।

६४३ प्रति स० ५ । पत्र स० ७९ । ले० काल × । वे० स० ८३ । क भण्डार ।

६४४ प्रति सं० ६ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० ८४ । क भण्डार ।

६४५. प्रति स० ७ । पत्र स० ४५ । ले० काल × । वे० स ८७ । अपूर्ण । क भण्डार ।

६४६ प्रति स० ८ । पत्र स० ५८ । ले० काल × । वे० स० ८४ । ङ भण्डार ।

६४७. प्रति स० ९ । पत्र स० ५९ । ले० काल × । वे० स० ८५ । ङ भण्डार ।

६४८. उपदेशरत्नमालाभाषा—बाबा दुलीचन्द । पत्र स० २० । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल स० १९६४ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ८५ । क भण्डार ।

६४९. उपदेश रत्नमाला भाषा—देवीसिंह छाबडा । पत्र स० ३० । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । र० काल स० १७६६ भादवा बुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६ । क भण्डार ।

विशेष—नरवर नगर मे ग्रन्थ रचना की गई थी ।

६५०. प्रति सं० २ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० ८८ । क भण्डार ।

६५१ प्रति सं० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० ८६ । क भण्डार ।

६५२. उपसर्गार्थ विवरण—वुपाचार्य । पत्र स० १ । आ० १०¾×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६० । ञ भण्डार ।

६५३ उपासकाचार दोहा—आचार्य लक्ष्मीचन्द्र । पत्र स० २७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा अपभ्रंश । विषय-श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १५५५ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० ३३१ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम श्रावकाचार भी है । प० लक्ष्मण के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । लिपि प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

स्वस्ति सवत् १५५५ वर्षे कार्तिक सुदी १५ सोमे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ० विद्यानंद पट्टे भ० मल्लिभूषण तच्छिष्य पडित लक्ष्मण पठनार्थं दूहा श्रावकाचार शास्त्र समाप्त । ग्रन्थ स० २७० । दोहा की सख्या २२४ है ।

६५४. प्रति सं० २ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० २४८ । अ भण्डार ।

६५५. प्रति सं० ३ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० १७ । अ भण्डार ।

६५६ प्रति स० ४ । पत्र स० १५ । ले० काल × । वे० स० २६४ । अ भण्डार ।

६५७ प्रति सं० ५ । पत्र स० ७७ । ले० काल × । वे० स० ६६५ । क भण्डार ।

६५८ उपासकाचार · । पत्र स० ६५ । आ० १३¾×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण (१५ परिच्छेद तक) वे० स० ८२ । च भण्डार ।

६५९ उपासकाध्ययन · । पत्र स० ११४-३४१ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल । अपूर्ण । वे० स० २०६ । अ भण्डार ।

६६०. ऋद्धिशतक—स्वरूपचन्द बिलाला । पत्र सख्या ६ । आ० १०¾×५ । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल स० १६०२ ज्येष्ठ सुदी १ । ले० काल स० १६०६ बैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २० । ख भण्डार ।

विशेष—हीरानन्द की प्रेरणा मे सवाई जयपुर मे इस ग्रन्थ की रचना की गई ।

६६१ कुशीलखंडन—जयलाल । पत्र स० २६ । आ० १२×७½ । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४११ । अ भण्डार ।

६६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल X । वे० स० १२७ । ड भण्डार ।

६६३ प्रति सं० ३ । पत्र स० ३८ । ले० काल X । वे० स० १७९ । छ भण्डार ।

६६४ केवलज्ञान का ब्यौरा ... । पत्र स० १ । आ० १२३/४X५३/४ । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २९७ । ख भण्डार ।

६६५. क्रियाकलाप टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र स० १२२ । आ० ११३/४X५३/४ । भाषा-संस्कृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ४३ । अ भण्डार ।

६६६ प्रति स० २ । पत्र स० ११७ । ले० काल स० १९५६ चैत्र सुदी १ । वे० स० ११५ । क भंडार ।

६६७ प्रति सं० ३ । पत्र स० ७४ । ले० काल स १७९५ भादवा सुदी ४ । वे० स० ७५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति सवाई जयपुर मे महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे लिखी गई थी ।

६६८ प्रति सं० ३ । पत्र स० २०७ । ले० काल स० १५७७ बैशाख बुदी ४ । वे० स० १८८७ । ट भण्डार ।

विशेष—'प्रशस्ति सग्रह' मे ९७ पृष्ठ पर प्रशस्ति छप चुकी है ।

६६९. क्रियाकलाप ... । पत्र स० ७ । आ० ९३/४X४३/४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २७७ । छ भण्डार ।

६७०. क्रियाकलाप टीका... । पत्र स० ९१ । आ० १३X५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल X । ले० काल स० १५३९ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ११६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

राजाधिराज मांडौगढदुर्गे श्री सुलतानगयासुद्दीनराज्ये चन्देरीदेशेमहाशेरखानव्याप्रीयमाने वेसरे ग्रामे वास्तव्य कायस्थ पदमसी तत्पुत्र श्री राघौ लिखित ।

६७१ प्रति सं० २ । पत्र स० ४ से ९३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १०७ । ञ भण्डार ।

६७२ क्रियाकलापवृत्ति ... । पत्र स० ६६ । आ० १०X४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल X । ले० काल सं० १३९९ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १८७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

एवं क्रिया कलाप वृत्ति समाप्ता । छ ।। छ ।। छ ।। सा० पूना पुत्रेण छाजूकेन लिखितं श्लोकानामष्टादश-शतानि ।। पूरी प्रशस्ति 'प्रशस्ति सग्रह' मे पृष्ठ ९७ पर प्रकाशित हो चुकी है ।

६७३ क्रियाकोष भाषा—किशनसिंह । पत्र स० ८१ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल सं० १७८४ भादवा सुदी १५ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ४०२ । अ भण्डार ।

६७४. प्रति सं० २ । पत्र स० १२६ । ले० काल स० १८३३ मगसिर सुदी ६ । वे० स० ४२९ । अ भण्डार ।

६७५. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ७५८ । अ भण्डार ।

६७६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५० । ले० काल स० १८८५ आषाढ बुदी १० । वे० स० ८ । ग भण्डार

विशेष—स्योलालजी साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

६७७. प्रति सं० ५ । पत्र स० १६ से ११५ । ले० काल स० १८८८ । अपूर्ण । वे० स० १३०। भण्डार ।

६७८ प्रति सं० ६ । पत्र स० ९७ । ले० काल X । वे० स० १३१ । ङ भण्डार ।

६७९. प्रति सं० ७ । पत्र स० १०० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५३४ । च भण्डार ।

६८०. प्रति सं० ८ । पत्र स० १४२ । ले० काल स० १८५१ मगसिर बुदी १३ । वे० स० १६। छ भण्डार ।

६८१ प्रति सं० ९ । पत्र स० ९९ । ले० काल स० १९५६ आषाढ सुदी ६ । वे० स० १६६। भण्डार ।

विशेष—प्रति किशनगढ के मन्दिर की है ।

६८२ प्रति स० १० । पत्र स० ४ से ९ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३०४ । ज भण्डार ।

६८३. प्रति सं० ११ । पत्र स० १ से १४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०८७ । ट भण्डार ।

विशेष—१४ से आगे पत्र नही है ।

६८४. **क्रियाकोश** । पत्र स० ५० । आ० १०३⁄४X५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ९०९ । अ भण्डार ।

६८५ **कुगुरुलक्षण** । पत्र स० १ । आ० ६X४१⁄२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १७१९ । अ भण्डार ।

६८६ **क्षमाबत्तीसी—जिनचन्द्रसूरि** । पत्र स० ३ । आ० ९१⁄२X४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २१४१ । अ भण्डार ।

६८७ **क्षेत्र समासप्रकरण** । पत्र स० ६ । आ० १०X४१⁄२ । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल X । ले० काल स० १७०७ । पूर्ण । वे० स० ८२६ । अ भण्डार ।

६८८ प्रति सं० २ । पत्र स० ७ । ले० काल X । वे० स० X । अ भण्डार ।

६८९ **क्षेत्रसमासटीका—टीकाकार हरिभद्रसूरि** । पत्र सं० ७ । आ० ११X४१⁄२ । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ८३० । अ भण्डार ।

६९० **गणसार** । पत्र स० ८ । आ० १११⁄२X५१⁄२ भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५३५ । च भण्डार ।

६९१ **चउसरण प्रकरण** । पत्र स० ४ । आ० ११X४१⁄२ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल X । पूर्ण । वे० स० १८४६ । अ भण्डार ।

विशेष—

प्रारम्भ—सावज्जजोगविरइ उकित्तण गुणवउ अपडिवत्ती ।

खलि अस्सय निंदणावण तिगिच्छ गुण धारणा चेव ॥१॥

चारित्तस्स विसोही कीरई सामाईयण किलइहय ।

सावज्जे अरजोगाण वज्जणा सेवणत्तणाउ ॥२॥

दसणयारविसोही चउवीसा इच्छएण किज्जइय ।

अच्चवपत्त अगुण कित्तण रुवेण जिणवरिंदाणं ॥३॥

अन्तिम—मदणभावावद्धा तिव्वणु भावाउ कुणई तान्वेव ।

असुहाऊ निरणु वधउ कुणई निव्वाउ मदाउ ॥ ६० ॥

ता एव कायव्व बुहेहि निच्चंपि संकिलेसमि ।

होई तिक्काल सम्म असकिले समि सुगइफलं ॥ ६१ ॥

चउरगो जिणधम्मो नकउ चउरगसरण मवि नकम ।

चउरगभवच्छेउ नकउ हादा हारिउ जम्मो ॥ ६२ ॥

इ अजीव पमीयमहारि वीरभद्द तमेव अम्भयण ।

भाए सुत्ति संभम वंभ कारण निव्वुइ सुहाणं ॥ ६३ ॥

इति चउसरण प्रकरण संपूर्ण । लिखित गणिवीर विजयेन मुनिहर्षविजय पठनार्थ ।

६६२. चारभावना...... ...। पत्र सं० ६ । आ० १०½×६½ । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७६ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे अर्थ भी दिया हुआ है ।

६६३ चारित्रसार—श्रीमच्चामुण्डराय । पत्र स० ६६ । आ० १३¾×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय आचार धर्म । र० काल × । ले० काल स० १५४५ बैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० २४२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति सकलागमसयमसम्पन्न श्रीमज्जिनसेनभट्टारक श्रीपादपद्मप्रासादासारित चतुरनुयोगपारावारगधर्मविजयश्रीमच्चामुण्डमहाराजविरचिते भावनासारसग्रहे चरित्रसारे अनागारधर्मसमाप्त ॥ ग्रन्थ सख्या १८५०

सं० १५४५ वर्षे बैशाख बदी ५ भौमवासरे श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्र देवा तत् शिष्य आचार्य श्री मुनिरत्नकीर्ति तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे सह चान्वा भार्या मन्दीवरी तयो. पुत्रा. सावर भार्या लक्ष्मी साह अर्जुन भार्या दामातयो. पुत्र साह पूत (?) साह ऊदा भार्या कर्म्मा तयो पुत्र. साह दामा साजा भार्या होली तयो पुत्रौ रणमल क्षेमराजमा डाकुर भार्या खेत्त तयो पुत्र हरराज । सा जालप साह तेजा भार्या जसिरि पुत्रपौत्रादि प्रभृतीना एतेषा मध्ये सा. अर्जुन इद चारित्रसारं शास्त्र लिखाप्य सत्पात्राय आर्यसारंगाय प्रदत्तमिति ज्योतिगुण ।

६६४ प्रति सं० २ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १६३५ आषाढ सुदी ४ । वे० सं० १५१ । इ भण्डार ।

विशेष—बा० दुलीचन्द ने लिखवाया ।

६६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १५८५ मगसिर बुदी २ । वे० सं० १५७ । इ भण्डार ।

६६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५५ । ले० काल X । वे० सं० ३२ । ञ भण्डार ।

विशेष—कही कही कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

६६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १७८३ कार्तिक सुदी ८ । वे० सं० १३५ । घ भण्डार ।

विशेष—हीरापुरी मे प्रतिलिपि हुई ।

६६८. चारित्रसार भाषा—मन्नालाल । पत्र सं० ३७ । आ० १२X६ । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–धर्म । र० काल सं० १८७१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २७ । ग भण्डार ।

६६९ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १८७७ आसोज सुदी ६ । वे० सं० १८८ । ङ भण्डार ।

७०० प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १९६० कार्तिक बुदी १३ । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

७०१ चारित्रसार ․․ । पत्र सं० २२ से ७६ । आ० ११X५ । भाषा–संस्कृत । विषय–आचारशास्त्र । र० काल X । ले० काल सं० १६४३ ज्येष्ठ बुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० २१६४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १६४३ वर्षे शाके १५०७ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे दशम्या तिथी सोमवासरे पातिसाह श्री अकब्बरराज्येंप्रवर्त्तते पोथी लिखित माधौ तत्पुत्र जोसी गोदा लिखित मालपुरा ।

७०२ चौबीस दण्डकभाषा—दौलतराम । पत्र सं० ६ । आ० ६$\frac{1}{2}$X४$\frac{1}{2}$ । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल १८वी शताब्दि । ले० काल सं० १८४७ । पूर्ण । वे० सं० ४५७ । अ भण्डार ।

विशेष–लहरीराम ने रामपुरा मे प० निहालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

७०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । वे० सं० १८६६ । अ भण्डार ।

७०४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १९३७ फागुण सुदी ४ । वे० सं० १५४ । क भडार

७०५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । वे० सं० १९० । ङ भण्डार ।

७०६ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० १९१ । ङ भण्डार ।

७०७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४ । ले० काल X । वे० सं० १९२ । ङ भण्डार ।

७०८ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० ७३५ । च भण्डार ।

७०६. प्रति स० ८ । पत्र स० ५ । ले० काल X । वे० सं० ७३६ । च भण्डार ।

७१० प्रति सं० ६ । पत्र स० ४ । ले० काल X । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—५७ पद्य हैं ।

७११. चौरासी आसादना ...... । पत्र सं० १ । आ० ६X४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ८४३ । अ भण्डार ।

विशेष—जैन मन्दिरो मे वर्जनीय ८४ क्रियाओ के नाम है ।

७१२ प्रति सं० २ । पत्र स० १ । ले० काल X । वे० स० ४४७ । ञ भण्डार ।

७१३ चौरासी आसादना । पत्र स० १ । आ० १०X४½" । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १२२१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

७१४ चौरासीलाख उत्तर गुण । पत्र स० १ । आ० ११½X४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १२३३ । अ भण्डार ।

विशेष–१८००० शील के भेद भी दिये हुए हैं ।

७१५. चौसठ ऋद्धि वर्णन । पत्र स० ६ । आ० १०X४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २५१ । ञ भण्डार ।

७१६. छहढाला—दौलतराम । पत्र स० ६ । आ० १०X६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल १८वी शताब्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७२२ । अ भण्डार ।

७१७ प्रति स० २ । पत्र स १३ । ले० काल स० १६५७ । वे० स० १३२५ । अ भण्डार ।

७१८ प्रति सं० ३ । पत्र स० २८ । ले० काल सं० १८६१ बैशाख सुदी ३ । वे० सं० १७७ । क भडार

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

७१६ प्रति स० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल X । वे० स० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त २२ परीषह, पचमगलपाठ, महावीरस्तोत्र एव सकटहरणविनती आदि भी दी हुई हैं ।

७२० छहढाला—बुधजन । पत्र स० ११ । आ० १०X७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-धर्म । र० काल स० १८५६ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १६७ । ङ भण्डार ।

७२१ छेदपिण्ड—इन्द्रनदि । पत्र स० ३६ । आ० ८X५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-प्रायश्चित शास्त्र । र० काल X । पूर्ण । वे० स० १८२ । क भण्डार ।

७२२ जैनागारप्रक्रियाभाषा—बा० दुलीचन्द । पत्र सं० २४ । आ० १२X७ इञ्च । भाषा-हिन्दी विषय-श्रावक धर्म वर्णन । र० काल सं० १६३६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०८ । क भण्डार ।

७२३. प्रति सं० २ । पत्र स० ८५ । ले० काल स० १६६६ आसोज सुदी १० । वे० स० २०६ । ड भण्डार ।

७२४ ज्ञानानन्दश्रावकाचार—साधर्मी भाई रायमल्ल । पत्र स० २३१ । आ० १३×८ इं। भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल १८वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३३ । क भण्डार।

७२५ प्रति सं० २ । पत्र स० १५६ । ले० काल × । वे० सं० २६६ । भ्र भण्डार ।

७२६. प्रति सं० २ । पत्र स० ५० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२१ । ङ भण्डार ।

७२७ प्रति सं० ३ । पत्र स० २३२ । ले० काल स० १६३२ श्रावण सुदी १४ । वे० स० २२२ । ङ भण्डार ।

७२८ प्रति सं० ४ । पत्र स० १०२ से २७४ । ले० काल × । वे० सं० ५६७ । च भण्डार ।

७२९ प्रति स० ५ । पत्र स० १०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५६८ । च भण्डार ।

७३० ज्ञानचिंतामणि—मनोहरदास । पत्र स० १० । आ० ६३/४×५१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५५३ । अ भण्डार ।

विशेष—५ से ८ तक पत्र नहीं है ।

७३१ प्रति स० २ । पत्र स० ११ । ले० काल स० १८६४ श्रावण सुदी ६ । वे० स० ३३ । ग भण्डार

७३२ प्रति सं० ३ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० १८७ । च भण्डार ।

विशेष—१२८ छन्द हैं ।

७३३. तत्त्वज्ञानतरंगिणी—भट्टारक ज्ञानभूषण । पत्र सं० २७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत विषय–धर्म । र० काल स० १५६० । ले० काल स० १६३५ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १८६ । अ भण्डार ।

७३४. प्रति सं० २ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १७६६ चैत बुदी ८ । वे० सं० ३३३ । अ भण्डार

७३५. प्रति स० ३ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १६३४ ज्येष्ठ बुदी ११ । वे० स० २६३ । क भण्डार

७३६ प्रति सं० ४ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १८१४ । वे० स० २६४ । क भण्डार ।

७३७ प्रति स० ५ । पत्र स० ७० । ले० काल × । वे० स० २४३ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

७३८ प्रति सं० ६ । पत्र स० २६ । ले० काल सं० १७८० फागुण सुदी १५ । वे० स० ५१३ । अ भण्डार ।

७३९ त्रिवर्णाचार—भ० सोमसेन । पत्र स० १०७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-आचार-धर्म । र० काल सं० १६६७ । ले० काल सं० १८५२ भादवा बुदी १० । पूर्ण । वे० स० २८८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र दूसरी लिपि के है ।

७४०. प्रति स० २ । पत्र सं० ८१ । ले० काल स० १८३८ कार्तिक सुदी १३ । वे० स० ८१ । ई भण्डार ।

विशेष—पंडित वखतराम और उनके शिष्य शम्भूनाथ ने प्रतिलिपि की थी ।

७४१. प्रति सं० ३ । पत्र स० १४३ । ले० काल X । वे० स० २८६ । ञ भण्डार ।

७४२ त्रिवर्णाचार '' । पत्र स० १८ । आ० १०३/४X४३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० ५० ७८ । ख भण्डार ।

७४३ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल X । वे० स० २८५ । अपूर्ण । ङ भण्डार ।

७४४ त्रेपनक्रिया ""। पत्र स० ३ । आ० १०X६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावक की क्रियाओं का वर्णन । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ५८४ । च भण्डार ।

७४५. त्रेपनक्रियाकोश—दौलतराम । पत्र स० ८२ । आ० १२X६३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार । र० काल स० १७६५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ५८५ । च भण्डार ।

७४६. दण्डकपाठ ' । पत्र स० २३ । आ० ८X३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–वैदिक साहित्य (आचार) । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १६६० । अ भण्डार ।

७४७. दर्शनप्रतिमास्वरूप । पत्र स० १६ । आ० ११३/४X५३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३६१ । अ भण्डार ।

विशेष—श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओं मे से प्रथम प्रतिमा का विस्तृत वर्णन है ।

७४८. दशभक्ति' ' । पत्र स० ५६ । आ० १२X४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल X । र० काल स० १६७३ आसोज बुदी ३ । वे० स० १०६ । ञ भण्डार ।

विशेष—दश प्रकार की भक्तियो का वर्णन है । भट्टारक पद्मनंदि के आम्नाय वाले खण्डेलवाल ज्ञातीय सा० ठाकुर वश मे उत्पन्न होने वाले साह भीखा ने चन्द्रकीर्त्ति के लिए मौजमाबाद मे प्रतिलिपि कराई ।

७४९. दशलक्षणधर्मवर्णन—प० सदासुख कासलीवाल । पत्र स० ४१ । आ० १२X५३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । र० काल X । ले० काल स० १९३० । पूर्ण । वे० स० २९५ । ङ भण्डार ।

विशेष—रत्नकरण्ड श्रावकाचार की गद्य टीका मे से है ।

७५०. प्रति स० २ । पत्र स० ३१ । ले० काल X । वे० स० २९६ । ङ भण्डार ।

७५१. प्रति सं० ३ । पत्र स० २५ । ले० काल X । वे० स० २९७ । ङ भण्डार ।

७५२ प्रति स० ४ । पत्र स० ३२ । ले० काल X । वे० स० १८९ । छ भण्डार ।

७५३. प्रति स० ५ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १९९३ कार्त्तिक सुदी ६ । वे० स० १८९ । छ भण्डार ।

विशेष—श्री गोविन्दराम जैन शास्त्र लेखक ने प्रतिलिपि की ।

७५४. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३० । ले० काल स० १९४१ । वे० स० १८९ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ७ पत्र बाद मे लिखे गये है ।

७५५ प्रति सं० ७ । पत्र स० ३४ । ले० काल X । । वे० स० १८६ । छ भण्डार ।

७५६. प्रति स० ८ । पत्र स० ३० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १८६ । छ भण्डार ।

७५७. प्रति सं० ६ । पत्र स० ४२ । ले० काल X । वे० स० १७०६ । ट भण्डार ।

७५८ दशलक्षणधर्मवर्णन । पत्र स० २८ । आ० १२½X७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ५८७ । च भण्डार ।

७५९. प्रति सं० २ । पत्र स० ९ । ले० काल X । वे० स० १६१७ । ट भण्डार ।

विशेष—जवाहरलाल ने प्रतिलिपि की थी।

७६० दानपंचाशत—पद्मनंदि । पत्र स० ८ । आ० ११X४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल X । ले० काल X । वे० स० ३२५ । ञ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री पद्मनंदि मुनिराश्रित मुनि पुग्मदान पचाशत ललितवर्ण त्रयो प्रकरण ॥ इति दान पचाशत समाप्त ॥

७६१. दानकुल"" । पत्र स० ७ । आ० १०X४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल X । ले० काल स० १७५६ । पूर्ण । वे० स० ८३३ । अ भण्डार ।

विशेष—गुजराती भाषा मे अर्थ दिया हुआ है । लिपि नागरी है । प्रारम्भ में ४ पत्र तक चैत्यवदनक भाष्य दिया है ।

७६२ दानशीलतपभावना—धर्मसी । पत्र स० १ । आ० ९½X४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २१५३ । ट भण्डार ।

७६३. दानशीलतपभावना । पत्र स० ६ । आ० १०X४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ९३६ । अ भण्डार ।

विशेष—४ ५ पत्र नही हैं । प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

७६४. दानशीलतपभावना । पत्र स० ९ । आ० ९¾X४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १२६६ । अ भण्डार ।

विशेष—मोती और काकड़े का सवाद भी बहुत सुन्दर रूप मे दिया गया है ।

७६५ दीपमालिकानिर्णय । पत्र स० १२ । आ० १२X६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३०६ । क भण्डार ।

विशेष—लिपिकार बाळूलाल व्यास ।

७६६ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३०५ । क भण्डार ।

७६७ दोहापाहुड—रामसिंह । पत्र स० २० । आ० ११X४ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-आचार शास्त्र । र० काल १०वी शताब्दि । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०८२ । अ भण्डार ।

विशेष—कुल ३३३ दोहे हैं । ६ से १९ तक पत्र नही है ।

७६८ धर्मचाहना · । पत्र सं० ८ । आ० ८½×७ । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२८ । ङ भण्डार ।

७६९. धर्मपंचविंशतिका—ब्रह्मजिनदास । पत्र स० ३ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल १५वी शताब्दी । ले० काल स० १८२७ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ११० । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रस्य शिष्य ब्र० श्री जिनदास विरचित धर्मपचविंशतिका नामशास्त्रं समाप्तम् । श्रीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

७७०. धर्मप्रदीपभाषा—पन्नालाल सघी । पत्र स० ६४ । आ० १२×७½ । भाषा–हिन्दी । र० काल स० १९३५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३६ । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृतमूल तथा उसके नीचे भाषा दी हुई है ।

७७१. प्रति सं० २ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १९६२ आसोज सुदी १४ । वे० स० ३३७ । ङ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम दशावतार नाटक है । प० फतेहलाल ने हिन्दी गद्य मे अर्थ लिखा है ।

७७२. धर्मप्रश्नोत्तर—विमलकीर्त्ति । पत्र सं० ५० । आ० १०½×४½ । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल स० १८१६ फागुन सुदी ५ । ब भण्डार ।

विशेष—१११६ प्रश्नो का उत्तर है । ग्रन्थ मे ६ परिच्छेद हैं । परिच्छेदो मे निम्न विषय के प्रश्नो के उत्तर हैं— १ दशलाक्षणिक धर्म प्रश्नोत्तर । २. श्रावकधर्म प्रश्नोत्तर वर्णन । ३ रत्नत्रय प्रश्नोत्तर । ४ तत्त्व पृच्छा वर्णन । ५ कर्म विपाक पृच्छा । ६ सज्जन चित्त वल्लभ पृच्छा ।

मङ्गलाचरण :— तीर्थेशान् श्रीमतो विश्वान् विश्वनाथान् जगद्गुरून् ।

अनन्तमहिमारूढान् वंदे विश्वहितकारकान् ।। १ ।।

चोखचन्द के शिष्य रायमल ने जयपुर मे शातिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

७७३ धर्मप्रश्नोत्तर · · । पत्र स० २७ । आ० ८½×४ । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल स० १९३० । पूर्ण । वे० स० ४०० । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम हितोपदेश भी दिया है ।

७७४. धर्मप्रश्नोत्तरी · । पत्र स० ४ मे ३४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय– धर्म । र० काल × । ले० काल स० १९३३ । अपूर्ण । वे० स० ५९८ । च भण्डार ।

विशेष—प० खेमराज ने प्रतिलिपि की ।

७७५. धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचारभाषा—चम्पाराम । पत्र स० १७७ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय– श्रावको के आचार का वर्णन है । र० काल स० १८६८ । ले० काल स० १८९० । पूर्ण । वे० सं० ३३८ । ङ भण्डार ।

७७६ धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार ....। पत्र सं० १ से ३५ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत। विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३० । म भण्डार ।

७७७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० स० २६८ । ञ भण्डार ।

७७८ धर्मरत्नाकर—संग्रहकर्ता पं० मंगल । पत्र स० १६१ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म । र० काल स० १६८० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स० १६८० वर्षे काष्ठासंघे नवतट ग्रामे भट्टारक श्रीभूषण शिष्य पंडित मङ्गल कृत शास्त्र रत्नाकर नाम शास्त्र संपूर्ण । संग्रह ग्रन्थ है ।

७७६. धर्मरसायन—पद्मनंदि । पत्र स० २३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४१ । क भण्डार ।

७८०. प्रति स० २ । पत्र स० ११ । ले० काल सं० १७६७ वैशाख बुदी ५ । वे० स० ४३ । ञ भण्डार।

७८१. धर्मरसायन ... । पत्र स० ८ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६५ । अ भण्डार ।

७८२ धर्मलक्षण ... । पत्र स० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५५ । ट भण्डार ।

७८३ धर्मसंग्रहश्रावकाचार—पं० मेधावी । पत्र स० ४८ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० का स० १५४१ । ले० काल स० १५४२ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १६१ । **अ भण्डार ।**

विशेष—प्रति बाद में संशोधित की हुई है । मंगलाचरण को काट कर दूसरा मंगलाचरण लिखा गया है । तथा पुष्पिका में शिष्य के स्थान में अंतेवासिना शब्द जोड़ा गया है । लेखक प्रशस्ति निम्न है—

श्री विक्रमादित्यराज्यात् संवत् १५४२ वर्षे कार्तिक सुदी ५ गुरुदिने श्री वर्द्धमानचैत्यालयविराजमाने श्रीहिसार पेरोजाखत्ते सुलतानश्रीवहलोलसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नद्याम्नाये सारस्वतगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवा । तत्पट्टे कुवलयवनविकासनैकचन्द्र श्री शुभचन्द्रदेवा. । तत्पट्टे षट्तर्कचक्रवर्तिकृतसेवाः भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तत्शिष्ये मंडलाचार्य मुनि श्री रत्नकीर्ति. तस्य शिष्यो दिगम्बर मूर्त्तिर्मुनि श्री विमलकीर्ति पंडितश्रीमीहाख्य तदाम्नाये खंडेलवालान्वये भौंसा गोत्रे परमश्रावकसाधु साधूनामा तस्याद्या भार्या देवगुरुपादारविंद सेवनततरा साध्वी लाच्छिसंज्ञिका तयो श्रावकाचारोत्पन्नौ साधुभोजा–केशोभिधानौ । साधुनाम्नो, द्वितीय भार्या छाहूघी इति नाम्नी । तन्नंदनो निमित्तज्ञानविशारदस्मा(?)सावलाभिधेय अथ साधुभोजापत्नीपातिव्रत्यादिगुणनिलयाभोलसिरि संज्ञा । तयो प्रथमपुत्र' साधुवामीख्य । तद्भार्यादेवगुरुचरणारविंदचंचरीका साध्वी धनश्री. । द्वितीय पुत्र श्री गिरनारगिरौ श्री नेमीश्वर यात्राकारक संघपति रल्हा नामा । तस्य गेहिनी शीलशालिनी जही इति संज्ञिका । तयोर्ज्येष्ठ पुत्रश्चतुर्विधदानवितरणकल्पवृक्ष. शान्तिदास तस्य भामिनी अनेकगुणमालिनी साध्वी हिउसिरि नाम

धेया । द्वितीय पुत्र पचाणुव्रतप्रतिपालको नेमिदास' तस्य भार्या विहितानेकधर्म्मकार्या गुणसिरि इति प्रसिद्धि तत्पुत्रौ चिरंजीविनौ संमार चदराय चदाभिधानौ । अथ साधु केसाकस्य ज्येष्ठा जायाशीलादिगुणरत्नखानि. साध्वी कमलश्री द्वितीयानेकव्रतनियमानुष्ठानकारिका परमश्राविकासाध्वी सूवरीनामा तत्तनूज सम्यक्त्वालङ्कृतद्वादशव्रतपालक' । सघपति डूगराह । तत्कलत्र नानाशीलविनयादिगुणपात्र साधु लाडी नाम धेय । तयो सुतौ देवपूजादिपद्क्रिया कमलिनीविकास-नैकमार्त्तण्डोपमो जिनदास तन्महिलाधर्म्मकर्म्मठ कर्म श्रीरतिनाम । एतेषा मध्येसंघपति रल्हाख्य भार्या जही नाम्ना निजपुत्र शातिदासनेमिदासयो न्योपार्जितवित्तेन इद श्री धर्मसग्रह पुस्तकपचक पडितश्रीमीहाख्यस्योपदेशेन प्रथमतो लोके प्रवर्तनार्थं लिखापित भव्याना पठनाय । निजज्ञानावरणकर्म्मक्षयार्थं आचन्द्रार्क्कादिनदतात् ।

७८४. प्रति सं० २ । पत्र स० ६३ । ले० काल X । वे० स० ३४५ । क भण्डार ।

७८५. प्रति सं० ३ । पत्र स० ७० । ले० काल स० १७८६ । वे० स० ३४२ । ड भण्डार ।

७८६. प्रति स० ४ । पत्र स० ६३ । ले० काल स० १८८६ चैत सुदी १२ । वे० स० १७२ । च भण्डार

७८७. प्रति सं० ५ । पत्र स० ४८ से ५५ । ले० काल स० १६४२ वैशाख सुदी ३ । वे० स० १७३ । च भण्डार ।

७८८ प्रति सं० ६ । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १८५६ माघ सुदी ३ । वे० स० १०८ । छ भडार ।

विशेष—भखतराम के शिष्य संपतिराम हरिवशदास ने प्रतिलिपि करवाई ।

७८६ धर्मसंग्रहश्रावकाचार.... । पत्र स० ६६ । आ० ११३/४X४३/४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–श्रावक धर्म । र० काल X । ले० काल X । वे० सं० २०३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति दीमक ने खा ली है ।

७६०. धर्मसंग्रहश्रावकाचार.... । पत्र सं० २ से २७ । आ० १२X५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावक धर्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३४१ । ङ भण्डार ।

७६१. धर्मशास्त्रप्रदीप .. । पत्र स० २३ । आ० ६X४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–वैदिक साहित्य । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १४६६ । अ भण्डार ।

७६२ धर्मसरोवर—जोधराज गोदीका । पत्र स० ३६ । आ० ११३/४X७३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्मोपदेश । र० काल सं० १७२४ आषाढ सुदी ऽऽ । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । वे० स० ३३४ । क भडार

विशेष—नागबद्ध, धनुषबद्ध तथा चक्रबद्ध कविताओं के चित्र हैं । प्रति स० २ के आधार मे रचना सवत् है

७६३. प्रति सं० २ । ले० काल स० १७२७ कार्तिक सुदी ५ । वे० स० ३४४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि सागानेर मे हुई थी ।

७६४. धर्मसार—प० शिरोमणिदास । पत्र स० ३१ । आ० १३X७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १७३२ वैशाख सुदी ३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १०४० । अ भण्डार ।

७६५. प्रति सं० २ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १८८५ फागुण बुदी ५ । वे० स० ४६ । ग भण्डार ।

विशेष—श्री शिवलालजी साह ने सवाई माधोपुर मे सोनपाल भौसा से प्रतिलिपि करवाई ।

७९६ धर्मामृतसूक्तिसंग्रह—आशाधर। पत्र स० ६५ । आ० ११×४३ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-आचारएव धर्म। र० काल स० १२९६। ले० काल स० १७४७ आसोज सुदी २। पूर्ण। वे० स० २९५।

विशेष—सवत् १७४७ वर्षे आसौज सुदी २ बुधवासरे अथ द्वितीय सागरधर्म स्कध पञ्चात्यग्रपट्शताधिकानि चत्वारिंशतानि ॥४७६॥ छ ॥

अतमहुत्तमक्लेषी रस मुच्छिय सिमापन्ता ॥

इति असस्य जीवानिद्दिग सव्वदरसी ॥ दुग्धा गाथा ॥

सगर कट्ठ मिथीमूगचरणेगमसू कम्माम।

एव सर्व्व विदल वज्जोपव्वापयत्तेण ॥ १ ॥

विदल जी मी पछ्या मुह न पत्त च दोविधो विज्जा।

अहवावि अत्र पत्तो भु जिज्जं गोरसाईय ॥ २ ॥

इति विदल गाथा ॥ श्री ॥

रचना का नाम 'धर्मामृत' है। यह दो भागो मे विभक्त है। एक सागारधर्मामृत तथा दूसरा अनागार धर्मामृत।

७९७ धर्मोपदेशपीयूषश्रावकाचार—सिंहनदि। पत्र स० ३९। आ० १०३×४३ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १७८५ माघ सुदी १३। पूर्ण। वे० स० ४८। घ भण्डार।

७९८ धर्मोपदेशश्रावकाचार—अमोघवर्ष। पत्र स० ३३। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १७८५ माघ सुदी १३। पूर्ण। वे० स० ४८। घ भण्डार।

विशेष—कोटा मे प्रतिलिपि की गई थी।

७९९ धर्मोपदेशश्रावकाचार—ब्रह्म नेमिदत्त। पत्र स० २६। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २४५। छ भण्डार। अन्तिम पत्र नहीं है।

८००. प्रति स० २। पत्र स० १५। ले० काल स० १८६९ ज्येष्ठ सुदी ३। वे० स० ८०। ज भण्डार।

विशेष—भवानीचन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

८०१. प्रति स० ३। पत्र स० १८। ले० काल ×। वे० स० २३। ञ भण्डार।

८०२ धर्मोपदेशश्रावकाचार ...... । पत्र सं० २९। आ० ६३×४३ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

८०३ धर्मोपदेशसंग्रह—सेवाराम साह। पत्र स० २१८। आ० १२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल स० १८५८। ले० काल ×। वे० स० ३४३।

विशेष—ग्रन्थ रचना स० १८५८ मे हुई किन्तु कुछ अश स० १८६१ मे पूर्ण हुआ।

८०४ प्रति सं० २। पत्र स० १६०। ले० काल ×। वे० स० ५९७। च भण्डार।

८०५ प्रति स० ३। पत्र स० २७६। ले० काल ×। वे० स० १८९५। ट भण्डार।

८०६. नरकदुःखवर्णन—भूधरदास । पत्र सं० ३ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-नरक के दुखों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । अ भण्डार ।

विशेष—भूधर कृत पार्श्वपुराण मे से है ।

८०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० स० ६६६ । अ भण्डार ।

८०८. नरकवर्णन ' । पत्र स० ८ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-नरकों का वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० स० ६०० । च भण्डार ।

विशेष—सदासुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की ।

८०६. नवकारश्रावकाचार ..... । पत्र सं० १४ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-श्रावकों का आचार वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १६१२ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ६५ । अ भण्डार

विशेष—श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे खण्डेलवाल गोत्र वाली बाई तील्ह ने श्री आर्यिका विनय श्री को भेंट किया । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६१२ वर्षे वैशाख सुदी ११ दिने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवा. तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्शिष्य मण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तत्शिष्यमण्डलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सोनी गोत्रे बाई तील्ह इदं शास्त्र नवकारे श्रावकाचार ज्ञानावरणी कर्मक्षय निमित्त अर्जिका विनैसिरीए दत्तं ।

८१०. नष्टोद्दिष्ट " । पत्र स० ३ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११३३ । अ भण्डार ।

८११. निजामणि—ब्र० जिनदास । पत्र स० २ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६८ । क भण्डार ।

८१२ नित्यकृत्यवर्णन " । पत्र सं० १२ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५८ । ङ भण्डार ।

८१३. प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ३५६ । ङ भण्डार ।

८१४. निर्माल्यदोषवर्णन—ब्रा० दुलीचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १०३×८३ भाषा-हिन्दी । विषय-श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३८१ । क भण्डार ।

८१५. निर्वाणप्रकरण ' " । पत्र स० ६२ । आ० ६३×८३ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ वैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २३१ । ज भण्डार ।

विशेष—गुटका-साइज मे है । यह जैनेतर ग्रन्थ है तथा इसमें २६ सर्ग है ।

८१६. निर्वाणमोदकनिर्णय—नेमिदास । पत्र स० ११ । आ० ११३×७३ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-महावीर-निर्वाण के समय का निर्णय । र० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० ६७ । ख भण्डार ।

८१७. पंचपरमेष्ठीगुण""""। पत्र सं० ५ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३२० । अ भण्डार ।

८१८. पंचपरमेष्ठीगुणवर्णन—डालूराम । पत्र स० ७३ । आ० ४३×४३ । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं सर्व साधु पच परमेष्ठियो के गुणो का वर्णन । र० काल स० १८६६ फागुण सुदी १० । ले० काल सं० १८६६ आषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १७ । भ्र भण्डार ।

विशेष—६०वें पत्र से द्वादशानुप्रेक्षा भाषा है ।

८१९. पद्मनंदिपंचविंशतिका—पद्मनंदि । पत्र सं० ५ से ८३ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल स० १५८९ चैत सुदी १० । अपूर्ण । वे० स० १९७१ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है किन्तु निम्न प्रकार है—

श्री धर्मचन्द्रास्तदाम्नाये वैद्य गोत्रे खण्डेलवालान्वये रामसरिवास्तव्ये राव श्री जगमाल राज्यप्रवर्त्तमाने साह सोनपाल ' ""।

८२०. प्रति सं० २ । पत्र स० १२९ । ले० काल स० १५७० ज्येष्ठ सुदी प्रतिपदा । वे० स० २५५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है—सवत् १५७० वर्षे ज्येष्ठ सुदी १ रवौ श्री मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कु दकु दाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्तिस्तच्छिष्य भ० भुवनकीर्तिस्तच्छिष्य भ० श्री ज्ञानभूषण तच्छिष्य ब्रह्म तेजसा पठनार्थं । देलुलि ग्रामे वास्तव्ये व्या० शवदासेन लिखिता । शुभं भवतु ।

विषय सूची पर "स० १६८५ वर्षे" लिखा है ।

८२१ प्रति सं० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ५२ । अ भण्डार ।

८२२ प्रति स० ४ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १८७२ । वे० स० ४२२ । क भण्डार ।

८२३ प्रति सं० ५ । पत्र स० १५१ । ले० काल × । वे० स० ४२० । क भण्डार ।

८२४ प्रति स० ६ । पत्र स० ५१ । ले० काल × । वे० सं० ४२१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

८२५. प्रति स० ७ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १७४८ माघ सुदी ४ । वे० स० १०२ । ख भण्डार ।

विशेष—भट्ट वल्लभ ने अवती मे प्रतिलिपि की थी । ब्रह्मचर्याष्टक तक पूर्ण ।

८२६ प्रति स० ८ । पत्र स० १३९ । ले० काल स० १५७८ माघ सुदी २ । वे० स० १०३ । ख भण्डार ।

प्रशस्ति निम्नप्रकार है— सवत् १५७८ माघ सुदी २ बुधे श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्तिदेवास्तद्भ्रातृ आचार्य श्री ज्ञानकीर्तिदेवास्तत्शिष्य आचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवास्तच्छिष्य आचार्य श्री यश कीर्ति उपदेशात् हूबड

ज्ञातीय वागडदेशे सागवाड शुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये हूवड ज्ञातीय गाधी श्री पोपट भार्या धर्मादेस्तयोःसुत गाधी राना भार्या रामादे सुत डूगर भार्या दाडिमदे ताभ्या स्वज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थं लिखाप्य इय पचविशतिका दत्ता।

८२७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २८८ । ले० काल स० १६३८ आषाढ सुदी ६ । वे० स० ५४ । घ भण्डार

विशेष—वैराठ नगर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

८२८. प्रति सं० १० । पत्र स० ४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ४१८ । ङ भण्डार ।

८२९. प्रति सं० ११ । पत्र स० ५१ से १४६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ४१६ । ङ भण्डार ।

८३०. प्रति सं० १२ । पत्र स० ७६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ४२० । ङ भण्डार ।

८३१. प्रति सं० १३ । पत्र स० ८१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ४२१ । ङ भण्डार ।

८३२. प्रति सं० १४ । पत्र स० १३१ । ले० काल स १६८२ पौष बुदी १० । वे० स० २६० । ज भण्डार

विशेष—कहीं कही कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये है ।

८३३. प्रति सं० १५ । पत्र स० १६८ । ले० काल स० १७३२ सावण सुदी ६ । वे० स० ४६ । ञ भण्डार ।

विशेष—पडित मनोहरदास ने प्रतिलिपि कराई ।

८३४. प्रति सं० १६ । पत्र स० १३७ । ले० काल स० १७३५ कार्त्तिक सुदी ११ । वे० स० १०८ । ञ भण्डार ।

८३५. प्रति सं० १७ । पत्र स० ७८ । ले० काल X । वे० स० २६४ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति सामान्य सस्कृत टीका सहित है ।

८३६. प्रति सं० १८ । पत्र स० ५८ । ले० काल स० १५८५ बैशाख सुदी १ । वे० स० २१२० । ट भण्डार ।

विशेष—१५८५ वर्षे बैशाख सुदी १५ सोमवारे श्री काष्ठासघे माथुरान्वे (माथुरान्वे) पुष्करगणे भट्टारक श्री हेमचन्द्रदेव । तत् ...।

८३७. पद्मनंदिपंचविंशतिटीका ...। पत्र स० २०० । आ० १३X५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र० काल X । ले० काल स० १६५० भादवा बुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० ४२३ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ५१ पृष्ठ नही हैं ।

८३८. पद्मनदिपच्चीसीभाषा—जगतराय । पत्र स० १८० । आ० ११½X५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । र० काल स० १७२२ फागुण सुदी १० । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ४१६ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना औरङ्गजेव के शासनकाल मे आगरे मे हुई थी ।

८३९. प्रति सं० २ । पत्र स० १७१ । र० काल स० १७५८ । वे० स० २६२ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

८४०. पद्मनंदिपच्चीसीभाषा—मन्नालाल खिन्दूका । पत्र स० ६४१ । आ० १३×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । र० काल सं० १९१५ मगसिर बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४१६ । क भण्डार

विशेष—इस ग्रन्थ की वचनिका लिखना ज्ञानचन्द्रजी के पुत्र जौहरीलालजी ने प्रारम्भ की थी। '... स्तुति' तक लिखने के पश्चात् ग्रन्थकार की मृत्यु होगई । पुन मन्नालाल ने ग्रन्थ पूर्ण किया । रत्नलाल प्रति स० ... आधार से लिखा गया है।

८४१. प्रति सं० २ । पत्र स० ४१७ । ले० काल × । वे० स० ४१७ । क भण्डार ।

८४२ प्रति सं० ३ । पत्र स० ३५७ । ले० काल स० १९४४ चैत बुदी ३ । वे० स० ४१७ । ... भण्डार ।

८४३. पद्मनंदिपच्चीसीभाषा ..... । पत्र स० ६७ । आ० ११×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४१८ । क भण्डार ।

८४४. पद्मनंदिश्रावकाचार—पद्मनंदि । पत्र स० ४ से ५३ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६१३ । अपूर्ण । वे० स० ४२८ । ङ भण्डार

८४५ प्रति सं० २ । पत्र स० १० से ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७० । ट भण्डार ।

८४६. परीषहवर्णन । पत्र स० ६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४४१ । ङ भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र आदि का संग्रह भी है।

८४७. पुच्छीसेण । पत्र स० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । वे० स० १२७० । पूर्ण । अ भण्डार ।

८४८ पुरूषार्थसिद्ध्युपाय—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र स० १६ । आ० १३½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल स० १७०७ मगसिर सुदी ३ । वे० सं० ५३ । अ भण्डार ।

विशेष—आचार्य कनककीर्त्ति के शिष्य सदाराम ने फागुईपुर मे प्रतिलिपि की थी।

८४९ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । । वे० स० ५५ । छ भण्डार ।

८५०. प्रति स० ३ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १८३२ । वे० स० १७८ । अ भण्डार ।

८५१. प्रति सं० ४ । पत्र स० २८ । ले० काल सं० १९३४ । वे० स० ४७१ । क भण्डार ।

विशेष—श्लोको के ऊपर नीचे सस्कृत टीका भी है।

८५२. प्रति सं० ५ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० ४७२ । ङ भण्डार ।

८५३ प्रति स० ६ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० सं० ६७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । ग्रन्थ का दूसरा नाम जिन प्रवचन रहस्य भी दिया हुआ है।

८५४ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८१७ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ६८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है तथा जयपुर मे लिखी गई थी ।

८५५. प्रति सं० ८ । पत्र स० १० । ले० काल X । वे० स० ३३१ । ज भण्डार ।

८५६. पुरूपार्थसिद्ध्युपायभाषा—पं० टोडरमल । पत्र स० ६७ । आ० ११½X५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल स० १८२७ । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ४०५ । अ भण्डार ।

८५७ प्रति स० २ । पत्र स० १०५ । ले० काल स० १६५२ । वे० स० ४७३ । ङ भण्डार ।

८५८ प्रति सं० ३ । पत्र स० १४८ । ले० काल स० १८२७ मगसिर सुदी २ । वे० स० ११८ । झ भण्डार ।

८५६. पुरूपार्थसिद्ध्युपायभाषा—भूधरदास । पत्र स० ११६ । आ० ११¾X८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १८०१ भादवा सुदी १० । ले० काल स० १६५२ । पूर्ण । वे० स० ४७३ । क

८६०. पुरूपार्थसिद्ध्युपाय वचनिका—भूधर मिश्र । पत्र स० १३६ । आ० १३X७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल स० १८७१ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ४७२ । क भण्डार ।

८६१. पुरूपार्थानुशासन—श्री गोविन्द भट्ट । पत्र स० ३८ से ६७ । आ० १०X६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल X । ले० काल सं० १८५३ भादवा बुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० ४५ । अ भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति विस्तृत दी हुई है । श्योजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।

८६२ प्रति सं० २ । पत्र स० ७६ । ले० काल X । वे० सं० १७६ । अ भण्डार ।

८६३. प्रति स० ३ । पत्र स० ७१ । ले० काल X । वे० स० ४७० । क भण्डार ।

८६४. प्रतिक्रमण ..... । पत्र स० १३ । आ० १२X५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–किये हुये दोषो की आलोचना । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २३१ । च भण्डार ।

८६५. प्रति सं० २ । पत्र स० १३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २३२ । च भण्डार ।

८६६. प्रतिक्रमण पाठ ..... । पत्र स० २६ । आ० ६X६½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय किये हुये दोषो की आलोचना र० काल X । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० ३२ । ज भण्डार ।

८६७ प्रतिक्रमणसूत्र ..... । पत्र सं० ६ । आ० ६X६ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–किये हुये दोषो की आलोचना । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २२६८ । अ भण्डार ।

८६८ प्रतिक्रमण ..... । पत्र स० २ से १८ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–किये हुये दोषो की आलोचना । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । ट भण्डार ।

८६६. प्रतिक्रमणसूत्र—(वृत्ति सहित) ..... । पत्र सं० २२ । आ० १२X४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत संस्कृत । विषय किये हुए दोषो की आलोचना । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६० । घ भण्डार ।

८७०. प्रतिमाउत्थापक कू उपदेश—अगरूप । पत्र स० ४७ । आ० ६×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल स० १८२७ । पूर्ण । वे० स० ११० । ग भण्डार ।

विशेष—औरङ्गाबाद मे रचना की गयी थी ।

८७१ प्रत्याख्यान ..... । पत्र स० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७७१ । ट भण्डार ।

८७२ प्रश्नोत्तरश्रावकाचार । पत्र स० २५ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६१८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी व्याख्या सहित है ।

८७३ प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा—बुलाकीदास । पत्र स० १६८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-आचार शास्त्र । र० काल स० १७४७ वैशाख सुदी २ । ले० काल स० १८८६ मगसिर सुदी ६ । वे० स० ६२ । ग भण्डार ।

विशेष—स्योलालजी के पुत्र छाजूलालजी साह ने प्रतिलिपि करायी । इस ग्रन्थ का ¾ भाग जहानाबाद तथा चौथाई ¼ भाग पानीपत मे लिखा गया था ।

'तीन हिस्से या ग्रन्थ को भये जहानाबाद ।
चौथाई जलपथ विषै वीतराग परसाद ॥'

८७४ प्रति स० २ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १८८५ सावरण सुदी १ । वे० स० ६३ । ग भण्डार ।

विशेष—स्योलालजी साह ने सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि कराकर चौधरियो के मन्दिर ग्रन्थ चढाया ।

८७५ प्रति स० ३ । पत्र स० १५० । ले० काल स० १८६४ चैत्र सुदी ५ । वे० स० ५२१ । ङ भण्डार ।

विशेष—स० १८२६ फागुण सुदी १३ को वखतराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी और उसी प्रति से इस की नकल उतारी गई है । महात्मा सीताराम के पुत्र लालचन्द ने इसकी प्रतिलिपि की ।

८७६ प्रति स० ४ । पत्र स० २१ । ले० काल × । वे० स० ६४८ । अपूर्ण । च भण्डार ।

८७७ प्रति स० ५ । पत्र स० १०५ । ले० काल स० १९६६ माघ सुदी १२ । वे० स० १६१ । छ भण्डार ।

८७८ प्रति स० ६ । पत्र स० १२० । ले० काल स० १८८३ पौष बुदी १४ । वे० स० १६ । झ भण्डार ।

८७९ प्रश्नोत्तरश्रावकाचार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० ३४८ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-आचार शास्त्र । र० काल स० १९३१ पौष बुदी १४ । ले० काल स० १९३८ । पूर्ण । वे० स० ५१८ । क भण्डार ।

८८० प्रति स० २ । पत्र स० ४०० । ले० काल स० १९३६ । वे० स० ५१५ । क भण्डार ।

८८१. प्रति स० ३ । पत्र स० २३१ से ४६० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६४६ । च भण्डार ।

८८२. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार · · । पत्र स० ३३ । आ० ११३X५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल X । ले० काल स० १८३२ । पूर्ण । वे० स० ११६ । ख भण्डार ।

विशेष—आचार्य राजकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

८८३ प्रति स० २ । पत्र स० १३० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६४७ । च भण्डार ।

८८४ प्रति स० ३ । पत्र स० ३०० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५५८ । ड भण्डार ।

८८५. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३०० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५१६ । ड भण्डार ।

८८६. प्रश्नोत्तरोपासकाचार—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र स० १३१ । आ० ११X४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल X । ले० काल स० १६६५ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १४२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ सख्या २६०० ।

प्रशस्ति—सवत् १६६५ वर्षे फागुण सुदी १० सोमे खिराडदेशे पनवाडनगरे श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये श्री काष्ठासघे नदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री राममेनान्वये भ० श्रीलक्ष्मीसेनदेवास्तत्पट्टे भ० श्री भीमसेनदेवास्तत्पट्टे भ० श्री सोमकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री विजयसेनदेवास्तत्पट्टे श्रीमदुदयसेनदेवा भ० श्री त्रिभुवनकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री रत्नभूपणदेवास्तत्पट्टाभरण भ० जयकीर्त्तिस्तच्छिष्योपाध्याय श्री वीरचन्द्र लिखितं ।

८८७ प्रति स० २ । पत्र स० १७१ । ले० काल सं० १६६६ पौष सुदी १ । वे० स० १७४ । अ भण्डार ।

८८८ प्रति स० ३ । पत्र स० ११७ । ले० काल स० १८८१ मगसिर सुदी ११ । वे० स० १६७ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज सवाई जयसिहजी के शासनकाल मे जैतराम साह के पुत्र श्योजीलाल की भार्या ने प्रतिलिपि कराई । ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर मे अबावती (आमेर) बाजार मे स्थित आदिनाथ चैत्यालय के नीचे जती तनसागर के शिष्य मन्नालाल के यहा सवाईराम गोधा ने की थी । यह प्रति जैतरामजी के वडो मे (१२वे दिन पर) श्योजीरामजी ने पाटोदी के मन्दिर मे स० १८९३ मे भेंट की ।

८८९ प्रति स ४ पत्र स० १२४ । ले० काल स० १६०० । वे० स० २१७ । अ भण्डार ।

८९० प्रति स० ५ । पत्र स० २१९ । ले० काल स० १६७६ आसोज बुदी ५ । वे० सं० २११ । अ भण्डार ।

विशेस—नानू गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी ।

प्रशस्ति—सवत् १६७६ वर्षे आसोज वदि शनिवासरे रोहणी नक्षत्रे मोजाबादनगरे राज्यश्रीराजाभावसिंघ राज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्त्तितत्पट्टे भट्टारकश्रीदेवेन्द्रकीर्त्तिस्तदाम्नाये गोधा गोत्रे जाचक-जनसदोहकल्पवृक्ष श्रावकाचारचरण-निरत-चित साह श्री धनराज

तद्भार्या सीलतोय-तरङ्गिणी विनय-वागेश्वरी 'रननिरि तयो पुत्रा त्रय प्रथमपुत्रधर्मधुराधरण धीरसाह श्री स्या तद्भार्या दानसीलगुणभूषणभूषितगात्रानाम्ना सूजरि तयो पुत्र राजसभा शृंगारहारस्वप्रतापदिनकरमुकुलितरिपुमुखकुमुदाकर स्वज' निसाकरआह्लादित कुवलयदानगुणअनीकृतकल्पपादप श्री पचपरमेष्ठिचिनन पवित्रितचित सकलगुणि जनविश्रामस्थान साह श्री नानूतन्मनोरमा पच प्रथमनारंगदे द्वितीया हरखमदे तृतीया सुजानदे चतुर्था सलालदे पंचम भार्या लाडी । हरखमदेजनितपुत्रा. त्रय स्वकुलनामप्रकाशनैकचन्द्रा प्रथम पुत्र साह श्रीमकर्ण तद्भार्या महकारकुंनाधु । दुतीभार्यालाडमदे पुत्र केसवदास भार्या कपूरदे द्वितीय पुत्र चि० लूणकरण भार्या द्वे प्रथमललतादे पुत्र रामकर्ण द्वितीय लाडमदे । तृतीय पुत्र चि० वलिवर्ण भार्या वालमदे । चतुर्थ पुत्र चि० पूर्णमल भार्या पुरवदे । साह धनराज द्वितीय पुत्र साह श्री जोधा तद्भार्या जौणादेतयो पुत्रास्त्रय प्रथमपुत्रधार्मिक साह करमचन्द तद्भार्या सोहागदे तयो पुत्र चि० दयालदास भार्या दाडमदे । द्वितीपुत्र साह धर्मदास तद्भार्याद्वे । प्रथम भार्या धारादे द्वितीय भार्या लाडमदे तयो पुत्र साह डूगरसी तद्भार्या दाडिमदे तत्पुत्री द्वे । प्र० पु० लक्ष्मीदास द्वि० पुत्र चि० तुलसीदास । जोधा तृतीय पुत्र जिणचरणकमलमधुप साह पदारथ तद्भार्या हमीरदे । साह धनराज तृतीय पुत्र दानगुणश्रेयासमकल जनानन्दकारकस्ववचनप्रतिपालनसमर्थसर्वोपकारकसाहश्रीरतनसी तद्भार्या द्वे प्रथम भार्या रत्नादे द्वितीय भार्या नौलादे तयो पुत्राश्चत्वार प्रथम पुत्र क्षुपाल तद्भार्या सुप्यारदे तयो पुत्र चि० भोजराज तद्भार्या भावलदे । श्रीरतनसी द्वितीय पुत्र साह गेगराज तद्भार्या गौरदे तयोपुत्रा त्रय प्रथम पुत्र चि० सार्दूल द्वि० पुत्र चि० सिघा तृतीय पुत्र चि० मलहदी । साह रतनसी तृतीय पुत्र साह भरथा तद्भार्या भावलदे चतुर्थ पुत्र चि० परवत तद्भार्या पाटमदे । एतेषा मध्ये सिघवी श्री नानू भार्या प्रथम नारगदे । भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्त्ति शिष्य आ० श्री शुभचन्द्र इद शास्त्रं व्रतनिमित्त घटापितं कर्मक्षयनिमित्त । ज्ञानवान ज्ञानदाने"

८६१ प्रति स० ६ । पत्र स० ४६ से १६४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १६८३ । अ भण्डार ।

८६२ प्रति स० ७ । पत्र स० १३० । ले० काल स० १८६२ । अपूर्ण । वे० स० १०१६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है । बीच के कुछ पत्र नही हैं । प० केशरीसिंह के शिष्य लालचन्द ने महात्मा शभुराम से सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि करायी ।

८६३ प्रति स० ८ । पत्र स० १६५ । ले० काल स० १६८२ । वे० स० ५१६ । क भण्डार ।

८६४. प्रति स० ६ । पत्र स० ८१ । ले० काल स० १६५८ । वे० स० ५२० । क भण्डार ।

८६५ प्रति स० १० । पत्र स० २२१ । ले० काल स० १६७७ पौष सुदी । वे० स० ५१७ । क भण्डार ।

८६६ प्रति स० ११ । पत्र स० ११० । ले० काल स० १८८ । वे० स० ११५ । ख भण्डार ।

विशेष—प० रूपचन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

८६७ प्रति स० १२ । पत्र स० ११६ । ले० काल X । वे० स० ६४ । ख भण्डार ।

८६८ प्रति सं० १३ । पत्र स० २ से २६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५१७ । ङ भण्डार ।

८६६ प्रति सं० १४ । पत्र स० ६६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५१७ । ङ भण्डार ।

६०० प्रति स० १५ । पत्र स० १२६ । ले० काल X । वे० स० ५२० । ङ भण्डार ।

६०१ प्रति सं० १६ । पत्र स० १४५ । ले० काल X । वे० स० १०६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम पत्र बाद मे लिखा हुआ है ।

६०२. प्रति स० १७ । पत्र स० ७३ । ले० काल सं० १८५६ माघ सुदी ३ । वे० सं० १०८ । छ भण्डार ।

६०० प्रति सं० १८ । पत्र स० १०४ । ले० काल स० १७७४ फागुण बुदी ८ । वे० स० १०६ ।

विशेष—पाचोलास मे चातुर्मास योग के समय प० सोभागविमल ने प्रतिलिपि की थी । स० १८२५ ज्येष्ठ बुदी १४ को महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल मे घासीराम छाबडा ने सागानेर मे गोधो के मन्दिर मे चढाई ।

६०४. प्रति सं० १६ । पत्र स० १६० । ले० काल म० १८२६ मगसिर बुदी १४ । वे० म० ७८ । ञ भण्डार ।

६०५ प्रति स० २० । पत्र स० १३२ । ले० काल X । वे० स० २२३ । ञ भण्डार ।

६०६ प्रति सं० २१ । पत्र स० १३१ । ले० काल स० १७५६ मगसिर बुदी ८ । वे० स० ३०२ ।

विशेष—महात्मा धनराज ने प्रतिलिपि की थी ।

६०७. प्रति स० २२ । पत्र स० १६४ । ले० काल स० १६७४ ज्येष्ठ सुदी २ । वे० म० ३७५ । ञ भण्डार ।

६०८. प्रति सं० २३ । पत्र म० १७१ । ले० काल स० १६८८ पौष सुदी ५ । वे० स० ३४३ । ञ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति तदाम्नाये खडेलवालान्वये पहाड्या साह श्री कान्हा इद पुस्तक लिखापित ।

६०६. प्रति स० २४ । पत्र स० १३१ । ले० काल X । वे० म० १८७३ । ट भण्डार ।

६१० प्रश्नोत्तरोद्धार । पत्र सख्या ५० । आ०—१०½X५½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र० काल—X । ले० काल—स० १६०५ सावन बुदी ५ । अपूर्ण । वे० स० १६६ । छ भण्डार ।

विशेष—चूरू नगर मे स्योजीराम कोठारी ने प्रतिलिपि कराई ।

६११. प्रशस्तिकाशिका—बालकृष्ण । पत्र सख्या १६ । आ० ६½X४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र० काल—X । ले० काल—स० १८४२ कार्तिक बुदी ८ । वे० स० २७८ । छ भण्डार ।

विशेष—वरतराम के शिष्य शम्भु ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—नत्वा गणपति देव सर्व विघ्न विनाशन ।
गुरु च करुणानाथ ब्रह्मानदाभिधानक ॥१॥
प्रशस्तिकाशिका दिव्या बालकृष्णेन रच्यते ।
सर्वेषामुपकाराय लेखनाय त्रिपाठिना ॥ २ ॥
चतुर्णामपि वर्णाना क्रमत कार्यकारिका ।
लिख्यते सर्वविद्यार्थि प्रबोधाय प्रशस्तिका ॥ ३ ॥

यस्या लेखन मात्रेण विद्याकीर्तिपरोपि न।
प्रतिष्ठा लभ्यते शीघ्रमनायामेन धीमता ॥ ४ ॥

६१२. प्रात. क्रिया ···। पत्र स० ८। ग्रा० १२×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-आचार। र० काल-×। ले० काल-×। पूर्ण। वे० स० १६१६। ट भण्डार।

६१३. प्रायश्चित ग्रन्थ ·। पत्र स० ३। ग्रा० ११×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-किये हुए दोषो की आलोचना। र० काल-×। ले० काल-×। अपूर्ण। वे० स० ३५२। अ भण्डार।

६१४ प्रायश्चित विधि—अकलक देव। पत्र स० १०। ग्रा० ६×८ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-किये हुए दोषो की आलोचना। र० काल-×। ले० काल-×। पूर्ण। वे० स० ३५२। अ भण्डार।

६१५ प्रति सं० २। पत्र स० २६। ले० काल-×। वे० स० ३५२। अ भण्डार।

विशेष—१० पत्र से आगे अन्य ग्रन्थो के प्रायश्चित पाठो का सग्रह है।

६१६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५। ले० काल स० १६३४ चैत्र बुदी १। वे० स० ११७। ख भण्डार।

विशेष—प० पन्नालाल ने जोबनेर के मदिर जयपुर प्रतिलिपि की थी।

६१७ प्रति सं० ४। ले० काल-×। वे० स० ५२३। ङ भण्डार।

६१८ प्रति सं० ५। ले० काल-स० १७४४। वे० स० २४४। च भण्डार।

विशेष—आचार्य महेन्द्रकीर्ति ने मू चावती (अबावती) मे प्रतिलिपि की।

६१९. प्रति सं० ५। ले० काल-स० १७६६। वे० स० ८। ञ भण्डार।

विशेष—बगरू नगर मे प० हीरानद के शिष्य प चोखचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

६२० प्रायश्चित विधि ।पत्र स० ५६। ग्रा० ६×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-किये दोषो की आलोचना। र० काल-×। ले० काल स० १८०५। अपूर्ण। वे० स०-१२८०। अ भण्डार।

विशेष—२२ वा तथा २६ वा पत्र नही है।

६२१. प्रायश्चित विधि ·। पत्र स० ६। ग्रा० ८¾×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-किये हुये दोषो का पश्चाताप। र० काल-×। ले० काल-×। पूर्ण। वे० स० १२८१। अ भण्डार।

६२२ प्रायश्चित विधि—भ० एकसंधि। पत्र स० ४। ग्रा० ६×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-किये हुए दोषो की आलोचना। र० काल-×। ले० काल-×। पूर्ण। वे० स० ११०७। अ भण्डार।

६२३ प्रति सं० २। पत्र स० २। ले० काल-×। वे० स० २८५। च भण्डार।

विशेष—प्रतिष्ठासार का दशम अध्याय है।

६२४. प्रति स० ३। ले० काल स० १७६६। वे० स० ३३। ञ भण्डार।

६२५ प्रायश्चित शास्त्र—इन्द्रनन्दि। पत्र स० १४। ग्रा० १०½×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-किये हुए दोषो का पश्चाताप। र० काल-×। ले० काल-×। पूर्ण। वे० स० १६३। अ भण्डार।

६२६. प्रायश्चित शास्त्र ।पत्र स० ६। ग्रा० १०×४½ इञ्च। भाषा-गुजराती (लि

देवनागरी) विषय-किये हुए दोषा की आलोचना र० काल-X। ले० काल-X। अपूर्ण । वे० स० १६६८। ट भण्डार।

६२७ **प्रायश्चित् समुच्चय टीका—नंदिगुरु**। पत्र स० ८। आ० १२X६। भाषा-सस्कृत। विषय-किये हुए दोषो की आलोचना। र० काल-X। ले० काल-स० १६३४ चैत्र बुदी ११। पूर्ण। वे० स० ११८। ख भण्डार।

६२८ **प्रोषध दोष वर्णन** । पत्र स० १। आ० १०X५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-आचार शास्त्र। र० काल-X। ले० काल-X। वे० स० १४७। पूर्ण। छ भण्डार।

६२९. **बाईस अभक्ष्य वर्णन—बाबा दुलीचन्द**। पत्र स० ३२। आ० १०½X६¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-श्रावको के न खाने योग्य पदार्थों का वर्णन। र० काल-स० १६४१ बैशाख सुदी ५। ले० काल-X। पूर्ण। वे० स० ५३२। क भण्डार।

६३० **बाईस अभक्ष्य वर्णन** X। पत्र स० ६। आ० १०X७। भाषा-हिन्दी। विषय-श्रावको के न खाने योग्य पदार्थो का वर्णन। र० काल X। ले० काल। पूर्ण। वे० स० ५३३। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति सशोधित है।

६३१ **बाईस परीषह वर्णन—भूधरदास**। पत्र स० ६। आ० ६X४ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-मुनियो द्वारा सहन किये जाने योग्य परीषहो का वर्णन। र० काल १८ वी शताब्दी। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ६६७। अ भण्डार।

६३२ **बाईस परीषह** X। पत्र स० ६। आ० ६X४। भाषा-हिन्दी। विषय-मुनियो के सहने योग्य परीषहो का वर्णन। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ६६७। ड भण्डार।

६३३ **बालाविबेध (णमोकार पाठ का अर्थ)** X। पत्र स० २। आ० १०X४½। भाषा प्राकृत, हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २८६। छ भण्डार।

विशेष—मुनि माणिक्यचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

६३४. **बुद्धि विलास—बखतराम साह**। पत्र स० ७५। आ० ७X६। भाषा-हिन्दी। विषय-आचार शास्त्र। र० काल स० १८२७ मगसिर सुदी २। ले० काल स० १८३२। पूर्ण। वे० स० १८८१। ट भण्डार।

६३५. **प्रति स० २**। पत्र स० ७४। ले० काल स० १८६३। वे० स० १६५५। ट भण्डार।

विशेष—बखतराम साह के पुत्र जीवणराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

६३६. **ब्रह्मचर्यव्रत वर्णन** X। पत्र स० ४। आ० ८X५। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल X। ले० काल X। वे० पूर्ण। वे० स० २३१। झ भण्डार।

६३७ **बोधसार** X। पत्र स० ३७। आ० १२X५½ भाषा-हिन्दी विषय-धर्म। र० काल X। ले० काल स० १९२८। काती सुदी ५। पूर्ण। वे० स० १२५। ख भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ बीसपंथ की आम्नाय की मान्यतानुसार है।

देवनागरी) विषय-किये हुए दोषा की आलोचना र० काल-X। ले० काल-X। अपूर्ण। वे० स० १६६८। ट भण्डा

६२७ प्रायश्चित् समुच्चय टीका—नदिगुरु। पत्र स० ८। आ० १२X६। भाषा-सस्कृत। विषय किये हुए दोषो की आलोचना। र० काल-X। ले० काल-स० १९३४ चैत्र बुदी ११। पूर्ण। वे० स० ११८।

भण्डार।

६२८ प्रोषध दोष वर्णन । पत्र स० १। आ० १०X५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-आचार शास्त्र र० काल-X। ले० काल-X। वे० स० १४७। पूर्ण। छ भण्डार।

६२९. बाईस अभक्ष्य वर्णन—बाबा दुलीचन्द। पत्र स० ३२। आ० १०½X६¾ इञ्च। भाषा हिन्दी गद्य। विषय-श्रावको के न खाने योग्य पदार्थो का वर्णन। र० काल-स० १९४१ वैशाख सुदी ५। ले० काल-X पूर्ण। वे० स० ५३२। क भण्डार।

६३० बाईस अभक्ष्य वर्णन X। पत्र स० ९। आ० १०X७। भाषा-हिन्दी। विषय-श्रावक के न खाने योग्य पदार्थो का वर्णन। र० काल X। ले० काल। पूर्ण। वे० स० ५३३। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति सशोधित है।

६३१ बाईस परीषह वर्णन—भूधरदास। पत्र स० ६। आ० ९X४ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य) विषय-मुनियो द्वारा सहन किये जाने योग्य परीषहो का वर्णन। र० काल १८ वीं शताब्दी। ले० काल X। पूर्ण वे० स० ९९७। अ भण्डार।

६३२ बाईस परीषह X। पत्र स० ६। आ० ९X४। भाषा-हिन्दी। विषय-मुनियो के सह योग्य परीषहो का वर्णन। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ९९७। ङ भण्डार।

६३३ बालाविबोध (णमोकार पाठ का अर्थ) X। पत्र स० २। आ० १०X४½। भाष प्राकृत, हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २८३। छ भण्डार।

विशेष—मुनि माणिक्यचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

६३४. बुद्धि विलास—बखतराम साह। पत्र स० ७५। आ० ७X६। भाषा-हिन्दी। विषय-आचा शास्त्र। र० काल स० १८२७ मगसिर सुदी २। ले० काल स० १८३२। पूर्ण। वे० स० १८८१। ट भण्डार।

६३५. प्रति स० २। पत्र स० ७४। ले० काल स० १८६३। वे० स० १९५५। ट भण्डार।

विशेष—बखतराम साह के पुत्र जीवणराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

६३६. ब्रह्मचर्यव्रत वर्णन X। पत्र स० ४। आ० ८X५। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल X। ले० काल X। वे० पूर्ण। वे० स० २३१। झ भण्डार।

६३७ बोधसार X। पत्र सं० ३७। आ० १२X५½ भाषा-हिन्दी विषय-धर्म। र० काल X ले० काल स० १९२८ ...

यस्या लेखन मात्रेण विद्याकीर्तिपगोपि च ।

प्रतिष्ठा लभ्यते शीघ्रमनायासेन धीमता ॥ ४ ॥

६१२. प्रात क्रिया ' '' । पत्र स० ४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आचार । ० काल–X । ले० काल–X । पूर्ण । वे० स० १६१६ । ट भण्डार ।

६१३. प्रायश्चित ग्र थ । पत्र स० ३ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–किये हुए पापो की आलोचना । र० काल–X । ले० काल–X । अपूर्ण । वे० स० ३५२ । अ भण्डार ।

६१४ प्रायश्चित विधि—अकलंक देव । पत्र स० १० । आ० ६×८ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–किये हुए दोषो की आलोचना । र० काल–X । ले० काल–X । पूर्ण । वे० स० ३५२ । अ भण्डार ।

६१५ प्रति स० २ । पत्र स० २६ । ले० काल–X । वे० स० ३५२ । अ भण्डार ।

विशेष—१० पत्र से आगे अन्य ग्र थो के प्रयश्चित पाठो का सग्रह है ।

६१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल स० १६३४ चैत्र बुदी १ । वे० स० ११७ । ख भण्डार ।

विशेष—प० पन्नालाल ने जोबनेर के मदिर जयपुर प्रतिलिपि की थी ।

६१७ प्रति स० ४ । ले० काल–X । वे० स० ५२३ । ङ भण्डार ।

६१८. प्रति सं० ५ । ले० काल–स० १७४४ । वे० स० २४४ । च भण्डार ।

विशेष—आचार्य महेन्द्रकीर्ति ने मू बावती (अबावती) मे प्रतिलिपि की ।

६१९. प्रति स० ५ । ले० काल–स० १७६६ । वे० स० ८ । व्य भण्डार ।

विशेष—बगरू नगर मे प० हीरानद के शिष्य प चोखचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६२० प्रायश्चित विधि । पत्र स० ५६ । आ० ६×४ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–किये हुए पापो की आलोचना । र० काल–X । ले० काल स० १८०५ । अपूर्ण । वे० स०–१२८० । अ भण्डार ।

विशेष—२२ वा तथा २६ वा पत्र नही है ।

६२१. प्रायश्चित विधि ' '' । पत्र स० ६ । आ० ८¾×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–किये हुए दोषो का पश्चाताप । र० काल–X । ले० काल–X । पूर्ण । वे० स० १२८१ । अ भण्डार ।

६२२ प्रायश्चित विधि—भ० एकसधि । पत्र स० ४ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–किये हुए दोषो की आलोचना । र० काल–X । ले० काल–X । पूर्ण । वे० स० ११०७ । अ भण्डार ।

६२३. प्रति सं० २ । पत्र स० २ । ले० काल–X । वे० स० २४५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठासार का दशम अध्याय है ।

६२४ प्रति स० ३ । ले० काल सं० १७६६ । वे० स० ३३ । व्य भण्डार ।

६२५ प्रायश्चित शास्त्र—इन्द्रनन्दि । पत्र स० १४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–किये हुए दोषो का पश्चाताप । र० काल–X । ले० काल–X । पूर्ण । वे० स० १६३ । अ भण्डार ।

६२६. प्रायश्चित शास्त्र । पत्र स० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–गुजराती (लिपि

६५१. भावदीपक—जोधराज गोदीका। पत्र सं० १ से २७७। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६५६। च भण्डार।

६५२ प्रति सं० २। पत्र सं० ५६। ले० काल-स० १८५७ पौष सुदी १५। अपूर्ण। वे० सं० ६५६। च भण्डार।

६५३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १७३। र० काल ×। ले० काल-सं० १६०४ कार्त्तिक सुदी १०। वे० स० २५४। ज भण्डार।

६५४. भावनासारसंग्रह—चामुण्डराय। पत्र स० ४१। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। र० काल-×। ले० काल-सं० १५१६ श्रावण बुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १८४। अ भण्डार।

विशेष—संवत् १५१६ वर्षे श्रावण बुदी अष्टमी सोमवासरे लिखितं बाई धानी कर्मक्षयनिमित्त।

६५५. प्रति स० २। पत्र सं० ६४। ले० काल सं० १५३१ फागुण बुदी ऽऽ। वे० स० २११६। ट भण्डार।

६५६. प्रति स० ३। पत्र सं० ७४। ले० काल-×। अपूर्ण। वे० स० २१३६। ट भण्डार।

विशेष—७४ मे आगे के पत्र नही है।

६५७. भावसग्रह—देवसेन। पत्र स० ४६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। र० काल-×। ले० काल-स० १६०७ फागुण बुदी ७। पूर्ण। वे० स० २३। अ भण्डार।

विशेष—ग्रंथ कर्त्ता श्री देवसेन श्री विमलसेन के शिष्य थे। प्रशस्ति निम्नप्रकार है:—

सवत् १६०७ वर्षे फागुण वदि ७ दिने बुधवासरे विशाखानक्षत्रे श्री आदिनाथचैत्यालये तक्षकगढ महादुर्गे महाराज श्री रामचद्रराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कु दकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा ...... ।

६५८. प्रति सं० २। पत्र स० ४५। ले० काल-स० १६०४ भादवा सुदी १५। वे० स० ३२६। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है —

सवत् १६०४ वर्षे भाद्रपद सुदी पूर्णिमातिथौ भौमदिने शतभिषा नाम नक्षत्रे धृतनाम्नियोगे सुरित्राण सलेमसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने सिकदराबादशुभस्थाने श्रीमत्काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीमलयकीर्त्ति देवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीगुणभद्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीभानुकीर्त्ति तस्य शिक्षणी बा० मोमा योग्य भावसग्रहाख्य शास्त्र प्रदत्त।

६५६. प्रति स० ३। पत्र स० २८। ले० काल-×। वे० सं० ३२७। अ भण्डार।

६६०. प्रति सं० ४। पत्र स० ४६। ले० काल-सं० १८६४ पौष सुदी १। वे० स० ५५८। क भण्डार।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

६३८ भगवद्गीता (कृष्णार्जुन संवाद) X । पत्र स० २२ से ४६ । आ० ८$\frac{3}{4}$X५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–वैदिक साहित्य । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण वे० स० १५६७ । ट भण्डार ।

६३६. भगवती आराधना—शिवाचार्य । पत्र स० ३२१ । आ० ११$\frac{1}{2}$X५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–मुनि धर्म वर्णन । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण वे स० ५४६ । क भण्डार ।

६४०. प्रति स० २ । पत्र स० ११२ । ले० काल X । वे० स० ५५० । क भण्डार ।

विशेष—पत्र ६६ तक संस्कृत मे गाथाओ के ऊपर पर्यायवाची शब्द दिये हुए है ।

६४१ प्रति स० ३ । पत्र स० १०३ । ले० काल X । वे० स० २५६ च भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ एव अन्तिम पत्र बाद मे लिखकर लगाये गये है ।

६४२. प्रति स० ४ । २६५ । ले० काल X । वे० स० २६० च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

६४३. प्रति स० ५ । पत्र स० ३१ ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६३ । ज भण्डार ।

विशेष—कही २ संस्कृत मे टीका भी दी है ।

६४४. भगवती आराधना टीका—अपराजितसूरि श्रीनंदिगण । पत्र स० ४३४ । आ० १२X६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–मुनि धर्म वर्णन । र० काल X । ले० काल स० १७६३ माघ बुदी ७ पूर्ण । वे० स० २७६ । अ भण्डार ।

६४५ प्रति सं० २ । पत्र स० ३१५ । ले० काल स० १५६७ वैशाख बुदी ६ । वे० स० ३३१ । अ भण्डार ।

६४६. भगवती आराधना भाषा—प० सदासुख कासलीवाल । पत्र स० ६०७ । आ० १२$\frac{1}{2}$X८$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल स० १६०८ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ५४८ । क भण्डार ।

६४७ प्रति स० २ । पत्र स० ६३० । ले० काल स० १६५५ माह बुदी १३ । वे० स० ५६० । ङ भण्डार ।

६४८ प्रति स० ३ । पत्र स० ७२२ । ले० काल स० १६११ जेष्ठ सुदी ६ । वे स० ६६५ । च भण्डार ।

६४६ प्रति स० ४ । पत्र स० ५७ से ५१६ । ले० काल स० १६२८ वैशाख सुदी १० । अपूर्ण । वे० स० २५३ । ज भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ हीरालालजी बगडा का है । मिती १६४२ माघ सुदी १० को आचार्य जी के कर्मदहन व्रत के उद्यापन में चढाई ।

६५० प्रति स० ५ । पत्र स० ५६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३०५ । ज भण्डार ।

६५१. प्रति स० ६ । पत्र स० ३२५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे स० १६६७ । ट भण्डार ।

६७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७० । ले० काल-X । वे० स० ६७ । ग भण्डार ।

६७५ प्रति स० ३ । पत्र स० ६१ । ले० काल-स० १८२४ । वे० स० ६६४ । च भण्डार ।

६७६. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३७ से १०५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०३९ । ट भण्डार

विशेष—प्रारम्भ के ३७ पत्र नहीं है । पत्र फटे हुये है ।

६७७. मिथ्यात्वखंडन । पत्र स० १७ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म र० काल-X । ले० काल-X । अपूर्ण । वे० स० १४६ । ख भण्डार ।

विशेष—१७ से आगे पत्र नहीं है ।

६७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल-X । अपूर्ण । वे० स० ५६४ । ङ भण्डार ।

६७९ मूलाचार टीका—आचार्य वसुनन्दि । पत्र स० ३६८ । आ० १२X५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत सस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-X । ले० काल-स० १८२९ मगसिर बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० २७५ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६८०. प्रति सं० २ । पत्र स० ३७३ । ले० काल-X । वे० स० ५८० । क भण्डार ।

६८१ प्रति सं० ३ । पत्र स० १५१ । ले० काल-X । अपूर्ण । वे० स० ५६८ । ङ भण्डार ।

विशेष—५१ से आगे पत्र नहीहै ।

६८२. मूलाचारप्रदीप—सकलकीर्ति । पत्र स० १२९ । आ० १२½X६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आचारशास्त्र । र० काल-X । ले० काल-स० १८२८ । पूर्ण । वे० स० १६२ ।

विशेष—प्रतिलिपि जयपुर मे हुई थी ।

६८३. प्रति स० २ । पत्र स० ८५ । ले० काल-X । वे० स० ८४६ । अ भण्डार ।

६८४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ८१ । ले० काल-X । वे० स० २७७ । च भण्डार ।

६८५ प्रति सं० ४ । पत्र स० १५५ । ले० काल-X । वे० स० ६८ । छ भण्डार ।

६८६. प्रति स० ५ । पत्र स० ६३ । ले० काल-स० १८३० पौष सुदी २ । वे० स० ६३ । ञ भण्डार ।

विशेष—प० चोखचद के शिष्य पं० रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६८७. प्रति सं० ६ । पत्र स० १८० । ले० काल-स० १८५६ कार्तिक बुदी ३ । वे० स० १०१ । ञ भण्डार ।

विशेष—महात्मा सर्वसुख ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६८८ प्रति सं० ७ । पत्र स० १३७ । ले० काल-स० १८२९ चैत बुदी १२ । वे० स० ४५५ । ञ भण्डार ।

६८९ मूलाचारभाषा—ऋषभदास । पत्र स० ३० से ६३ । आ० १०X८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-स० १८८८ । ले० काल-स० १८९१ । पूर्ण । वे० स० ६६१ । च भण्डार ।

६६१. प्रति सं० ५ | पत्र स० ७ से ४५ | ले० काल-स० १७६४ फागुण बुदी ४ | अपूर्ण | वे० स० २१६३ | ट भण्डार |

६६२. प्रति सं० ६ | पत्र स० ४० | ले० काल-सं० १५७१ अषाढ बुदी ११ | वे० स० २१६६ | ट भण्डार |

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है.—

सवत् १५७१ वर्षे आषाढ वदि ११ आदित्यवारे पेरोजा माहे | श्री मूलसंघे पंडितजिणदासेन लिखापितं |

६६३. प्रति सं० ७ | पत्र स० ६ | ले० काल-X | अपूर्ण | वे० स० २१७६ | ट भण्डार |

विशेष—६ से आगे पत्र नही है |

६६४ भावसग्रह—श्रुतमुनि | पत्र स० ५८ | आ० १२X५३ इञ्च | भाषा-प्राकृत | विषय-धर्म | र० काल-X | ले० काल-स० १७६२ | अपूर्ण | वे० स० ३१६ | अ भण्डार |

विशेष—बीसवा पत्र नही है |

६६५ प्रति स० २ | पत्र स० १० | ले० काल-X | अपूर्ण | वे० स० १३३ | ख भण्डार |

६६६. प्रति स० ३ | पत्र स० ५६ | ले० काल-स० १७८३ | वे० स० ५६६ | ङ भण्डार |

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है |

६६७. प्रति सं० ४ | पत्र स० १० | ले० काल-X | वे० स० १८४१ | ट भण्डार |

विशेष—कही २ सस्कृत मे अर्थ भी दिये हैं |

६६८. भावसग्रह—पं० वामदेव | पत्र स० २७ | आ० १२X५½ इञ्च | भाषा-सस्कृत | विषय-धर्म | र० काल-X | ले० काल-स० १८२८ | पूर्ण | वे० स० ३१७ | अ भण्डार |

६६९. प्रति स० २ | पत्र स० १८ | ले० काल-X | अपूर्ण | वे० स० १३४ | ख भण्डार |

विशेष—प० वामदेव की पूर्ण प्रशस्ति दी हुई है | २ प्रतियो का मिश्रण है | अन्त के पृष्ठ पानी मे भीगे हुये है | प्रति प्राचीन है |

६७०. भावसंग्रह ·· | पत्र स० १४ | आ० ११X५३ इञ्च | भाषा-सस्कृत | विषय-धर्म | र० काल-X | ले० काल-X | वे० स० १३५ | ख भण्डार |

विशेष—प्रति प्राचीन है | १४ से आगे पत्र नही है |

६७१. मनोरथमाला | पत्र स० १ | आ० ८X४ इञ्च | भाषा-हिन्दी | विषय-धर्म | र० काल-X | ले० काल-X | पूर्ण | वे० स० ५७० | अ भण्डार |

६७२ मरकतविलास—पन्नालाल | पत्र सं० ६१ | आ० १२X६३ इञ्च | भाषा-हिन्दी | विषय-श्रावक धर्म वर्णन | र० काल-X | ले० काल-X | अपूर्ण | वे० स० ६६२ | च भण्डार |

६७३ मिथ्यात्वखडन—बखतराम | पत्र स० ५८ | आ० १४X५३ इञ्च | भाषा-हिन्दी (पद्य) | विषय-धर्म | र० काल-स० १८२१ पौष सुदी ५ | ले० काल-स० १८६२ | पूर्ण | वे० स० ५७७ | क भण्डार |

मुनि धर्म वर्णन । र० काल-X । ले० काल-X । पूर्ण । वे० सं० १२० । अ भण्डार ।

१००६ रत्नकरण्डश्रावकाचार—आचार्य समन्तभद्र । पत्र स० ७ । आ० १०३/४X५१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-X । ले० काल-X । वे० स० २००६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम परिच्छेद तक पूर्ण है । ग्रंथ का नाम उपासकाध्याय तथा उपासकाचार भी है ।

१००७. प्रति सं० २ । पत्र स० १५ । ले० काल-X । वे० स० २६४ । अ भण्डार ।

विशेष—कही कही संस्कृत मे टिप्पणिया दी हुई है । १६३ श्लोक है ।

१००८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल-X । वे० सं० ६१२ । क भण्डार ।

१००९ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल-स० १६३८ माह सुदी १० । वे० स० १५६ । ख भण्डार ।

विशेप—कही २ सस्कृत मे टिप्पण दिया है ।

१०१०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७७ । ले० काल-X । वे० स० ६३० । ड भण्डार ।

१०११. प्रति सं० ६ । पत्र स० १४ । ले० काल-X । अपूर्ण । वे० सं० ६३१ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

१०१२. प्रति सं० ७ । पत्र स० ४८ । ले० काल-X । अपूर्ण । वे० सं० ६३३ । ड भण्डार ।

१०१३. प्रति स० ८ । पत्र स० ३८-५६ । ले० काल-X । अपूर्ण । वे० स० ६३२ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

१०१४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल-X । वे० सं० ६३४ । ड भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी सूरजमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१०१५ प्रति सं० १० । पत्र सं० ४० । ले० काल-X । वे० सं० ६३५ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे पन्नालाल सघी कृत टीका भी है । टीका सं० १६३१ मे की गयी थी ।

१०१६. प्रति स० ११ । पत्र सं० २६ । ले० काल-X । वे० स० ६३७ । ड भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

१०१७ प्रति सं० १२ । पत्र स० ४२ । ले० काल-स० १६५० । वे० सं० ६३८ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

१०१८ प्रति सं० १३ । पत्र स० १७ । ले० काल-X । वे० सं० ६३६ । ड भण्डार ।

१०१६. प्रति सं० १४ । पत्र स० ३८ । ले० काल-X । अपूर्ण । वे० सं० २६१ । च भण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नही है । सस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है ।

१०२०. प्रति स० १५ । पत्र स० २० । ले० काल-X । अपूर्ण । वे० सं० २६२ । च भण्डार ।

१०२१. प्रति सं० १६ । पत्र स० ११ । ले० काल-X । वे० सं० २६३ । च भण्डार ।

१०२२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ६ । ले० काल-X । वे० स० २६४ । च भण्डार ।

९९०. मूलाचार भाषा ...... । पत्र सं० ३० से ६३ । आ० १०½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-× । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ५९७ ।

९९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ से १००, ३४६ से ३६० । आ० १०½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-× । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ५९९ । ङ भण्डार ।

९९२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ से ८१, १०१ से ६०० । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६०० ।

९९३. मोक्षपैडी—बनारसीदास । पत्र सं० १ । आ० ११½×६¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ७६५ । अ भण्डार ।

९९४. प्रति सं० २ । पत्र सं ४ । ले० काल-× । वे० सं० ६०२ । ङ भण्डार ।

९९५. मोक्षमार्गप्रकाशक—पं० टोडरमल । पत्र सं० ३२१ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा-ढूंढारी (राजस्थानी) गद्य । विषय-धर्म । र० काल-× । ले० काल-सं०१९५४ श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ५८३ । क भण्डार ।

विशेष—ढूंढारी शब्दो के स्थान पर शुद्ध हिन्दी के शब्द भी लिखे हुये हैं ।

९९६ प्रति सं० २ । पत्र सं० २८२ । ले० काल-सं० १९५४ । वे० सं० ५८४ । क भण्डार ।

९९७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१२ । ले० काल-सं० १९४० । वे० सं० ५६५ । क भण्डार ।

९९८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१२ । ले० काल-सं० १८८८ वैशाख बुदी ९ । वे० सं ६८ । ग भण्डार ।

विशेष—छाजूलाल साह ने प्रतिलिपि कराई थी ।

९९९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २२८ । ले० काल-× । वे० सं० ६०३ । ङ भण्डार ।

१०००. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २७६ । ले० काल-× । वे० सं० ६५८ । च भण्डार ।

१००१. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०१ से २१६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६५९ । च भण्डार ।

१००२. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १२३ से २२५ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६६० । च भण्डार ।

१००३. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३५१ । ले० काल-× । वे० सं० ११९ । झ भण्डार ।

१००४ यतिदिनचर्या—देवसूरि । पत्र सं० २१ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-× । ले० काल-सं० १६६८ चैत सुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० १९२६ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री सुविहितशिरोमणिश्रीदेवसूरिविरचिता यतिदिनचर्या संपूर्णा ।

प्रशस्ति—संवत् १६६८ वर्षे चैत्रमासे शुक्लपक्षे नवमीभौमवासरे श्रीमत्तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री श्री ५ विजयसेन सूरीश्वराय लिखित ज्योतिसी उधव श्री शुजाउलपुरे ।

१००५. यत्याचार—आ० वसुनंदि । पत्र सं० ९ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-

१०४२. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३४६ । ले० काल-X । वे० स० १८२ । छ भण्डार ।

विशेष—"इस प्रकार मूलग्र थ के प्रसाद तै सदासुखदास डेडाका का अपने हस्त तै लिखि ग थ समाप्त किया ।" अन्तिम पृष्ठ पर ऐसा लिखा है ।

१०४३ प्रति सं० ७ । पत्र स० २२१ । ले० काल-स० १९६३ कार्तिक बुदी ऽऽ । वे० सं० १९८ । छ भण्डार ।

१०४४. प्रति सं० ८ । पत्र स० ५३६ । ले० काल-स० १९५० वैशाख सुदी ६ । वे० स० । झ भण्डार ।

विशेष—इस ग्र ंथ की प्रतिलिपि स्वय सदासुखजी के हाथ से लिखे हुये स० १९१९ के ग्र ंथ से सामोद मे प्रतिलिपि की गई है । महासुख सेठी ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

१०४५. **रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा—नथमल** । पत्र सं० २९ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-स० १९२० माघ सुदी ६ । ले० काल-X । वे० स० ६२२ । पूर्ण । क भण्डार ।

१०४६. प्रति सं० २ । पत्र स० १० । ले० काल-X । वे० स० ६२३ । क भण्डार ।

१०४७ प्रति स० ३ । पत्र स० १५ । ले० काल-X । वे० स० ६२१ । क भण्डार ।

१०४८. **रत्नकरण्डश्रावकाचार—सघी पन्नालाल** । पत्र स० ४४ । आ० १०३/४X७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-सं० १९३१ पौष बुदी ७ । ले० काल-स० १९५३ मगसिर सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ६१४ । क भण्डार ।

१०४९. प्रति स० २ । पत्र स० ४० । ले० काल-X । वे० स ६१४ । क भण्डार ।

१०५०. प्रति स० ३ । पत्र स० २९ । ले० काल-X । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

१०५१. प्रति स० ४ । पत्र स० २७ । ले० काल-X । वे० स० १८६ । छ भण्डार ।

१०५२. **रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा** ‥ । पत्र स० १०१ । आ० १२X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-स० १९५७ । ले० काल-X । पूर्ण । वे० स० ६१७ । क भण्डार ।

१०५३. प्रति सं० २ । पत्र स० ७० । ले० काल-स० १९५३ । वे० स० ६१६ । क भण्डार ।

१०५४ प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल-X । वे० स० ६१३ । क भण्डार ।

१०५५. प्रति स० ४ । पत्र स० २८ से ५५९ । ले० काल-X । अपूर्ण । वे० स० ६४० । ङ भण्डार ।

१०५६. **रत्नमाला—आचार्य शिवकोटि** । पत्र स० ४ । आ० ११३/४X४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-X । ले० काल-X । पूर्ण । वे० स० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

सर्वज्ञं सर्ववागीश वीरं मारमदापह ।

प्रणमामि महामोहशातये मुक्तिप्राप्तये ॥१॥

१०२३. प्रति सं० १८। पत्र स० १३। ले० काल–X। वे० स० २६५। च भण्डार।

१०२४. प्रति स० १६। पत्र स० ११। ले० काल–X। वे० स० ७४०। च भण्डार।

१०२५. प्रति स० २०। पत्र स० १३। ले० काल–X। वे० स० ७४२। च भण्डार।

१०२६ प्रति स० २१। पत्र स० १३। ले० काल–X। वे० स० ७४३। च भण्डार।

१०२७. प्रति स० २२। पत्र स० १०। ले० काल–X। वे० स० ११०। छ भण्डार।

१०२८. प्रति स० २३। पत्र स० १०। ले० काल–X। वे० स० १४४। ज भण्डार।

१०२६ प्रति सं० २४। पत्र सं० १६। ले० काल–X। अपूर्ण। वे० स० ६२। झ भण्डार।

१०३० प्रति सं० २५। पत्र सं० १२। ले० काल–सं० १७२१ ज्येष्ठ सुदी ३। वे० स० १७८। ञ भण्डार।

१०३१. रत्नकरण्डश्रावकाचार टीका—प्रभाचन्द्र। पत्र सं० ४३। आ० १०½X५½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल–X। ले० काल–स० १८६० श्रावण बुदी ७। पूर्ण। वे० स० ३१६। अ भण्डार।

१०३२. प्रति सं० २। पत्र स० २२। ले० काल–X। वे० सं० १०६५। अ भण्डार।

१०३३ प्रति सं० ३। पत्र स० ३१–५३। ले० काल–X। अपूर्ण। वे स० ३८०। अ भण्डार।

१०३४ प्रति स० ४। पत्र स० ३६–६२। ले० काल–X। अपूर्ण। वे० स० ३२६। झ भण्डार।

विशेष—इसका नाम उपासकाध्ययन टीका भी है।

१०३५. प्रति स० ५। पत्र स० १६। ले० काल–X। वे० स० ६३६। ड भण्डार।

१०३६ प्रति स० ६। पत्र स० ४८। ले० काल–स० १७७६ फागुण सुदी ५। वे० स० १७४। ञ भण्डार।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति की आम्नाय मे खडेलवाल ज्ञातीय भौंसा गोत्रोत्पन्न साह छजमलजी के वशज साह चन्द्रभाण की भार्या ल्होडी ने ग्र थ की प्रतिलिपि कराकर आचार्य चन्द्रकीर्ति के शिष्य हर्षकीर्त्ति के लिये कर्मक्षय निमित्त भेंट की।

१०३७. रत्नकरण्डश्रावकाचार—पं० सदासुख कासलीवाल। पत्र सं० १०४२। आ० १२½X८½ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–आचार शास्त्र। र० काल सं० १६२० चैत्र बुदी १४। ले० काल स० १६४१। पूर्ण। वे० स० ६१६। क भण्डार।

विशेष—ग्र थ २ वेष्टनो मे है। १ से ४५५ तथा ४५६ से १०४२ तक है। प्रति सुन्दर है।

१०३८ प्रति सं० २। पत्र स० ५६६। ले० काल–X। अपूर्ण। वे० स० ६२०। क भण्डार।

१०३६ प्रति सं० ३। पत्र स० ६१ से १७६। ले० काल–X। अपूर्ण। वे० स० ६४२। क भण्डार।

१०४० प्रति स० ४। पत्र सं० ४१६। ले० काल–आसोज बुदि ८ स० १६२१। वे० स० ६६६। च भण्डार।

१०४१ प्रति स० ५। पत्र स० ३१। ले० काल–X। अपूर्ण। वे० स० ६७०। च भण्डार।

विशेष—नेमीचद कालख वाले ने लिखा और सदासुखजी डेडाकाने लिखाया—यह अन्त मे लिखा हुआ है।

विशेष—महात्मा शभूराम ने प्रतिलिपि की थी।

१०७०. **वज्रनाभि चक्रवर्त्ति की भावना—भूधरदास**। पत्र स० २। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-धर्म। र० काल-×। ले० काल-× पूर्ण। वे० स० ६६७। अ भण्डार।

विशेष—पार्श्वपुराण मे से है।

१०७१. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ४। ले० काल-स० १८८८ पौष सुदी २। वे० स० ६७२। च भण्डार।

१०७२ **वनस्पतिसत्तरी—मुनिचन्द्र सूरि**। पत्र स० ५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। र० काल-×। ले० काल-×। पूर्ण। वे० स० ८४१। अ भण्डार।

१०७३ **वसुनंदिश्रावकाचार—आ० वसुनदि**। पत्र स० ५६। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-श्रावक धर्म। र० काल-×। ले० काल-सं० १८६२ पौष सुदी ३। पूर्ण। वे० स० २०९। अ भण्डार।

विशेष—ग्रथ का नाम उपासकाध्ययन भी है। जयपुर मे श्री पिरागदास बाकलीवाल ने प्रतिलिपि करायी। सस्कृत मे भाषान्तर दिया हुआ है।

१०७४. **प्रति स० २**। पत्र सं० ५ से २३। ले० काल-सं० १६११ पौष सुदी ९। अपूर्ण। वे० स० ८४८। अ भण्डार।

विशेष—सारगपुर नगर मे पाण्डे दासू ने प्रतिलिपि की थी।

१०७५ **प्रति सं० ३**। पत्र सं० ६३। ले० काल-सं० १८७७ भादवा बुदी ११। वे० स० ६५२। क भण्डार।

विशेष—महात्मा शभूनाथ ने सवाई जयपुरमे प्रतिलिपि की थी। गाथाओं के नीचे सस्कृत टीका भी दी है।

१०७६. **प्रति सं० ४**। पत्र स० ४४। ले० काल-×। वे० सं० ८७। ङ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ३३ पत्र प्राचीन प्रति के हैं तथा शेष फिर लिखे गये हैं।

१०७७. **प्रति सं० ५**। पत्र सं० ५१। ले० काल-×। वे० स० ४५। च भण्डार।

१०७८. **प्रति सं० ६**। पत्र सं० २२। ले० काल-सं० १५९८ भादवा बुदी १२। वे० स० २९९। ञ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति— सवत् १५९८ वर्षे भादवा बुदी १२ गुरु दिने पुष्यनक्षत्रेअमृतसिद्धिनामउपयोगे श्रीपथस्थाने मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तस्य शिष्य मडलाचार्य धर्मकीर्त्ति द्वितीय मडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र एतेषा मध्ये मडलाचार्य श्री धर्मकीर्त्ति तत् शिष्य मुनि वीरनदिने इद शास्त्र लिखापितं। प० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि करके सं० १८६७ मे पार्श्वनाथ (सोनियो) के मदिर मे चढाया।

१०७९ **वसुनंदिश्रावकाचार भाषा—पन्नालाल**। पत्र स० २१८। आ० १२½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-आचार शास्त्र। र० काल-सं० १९३० कार्तिक बुदी ७। ले० काल-सं० १९३८ माह बुदी ७। पूर्ण। वे० स० ६५०। क भण्डार।

सारं यत्सर्वसारेषु वद्य यद्व'दितेष्वपि ।

अनेकांतमय वदे तदर्हत् वचन सदा ॥२॥

अन्तिम—यो नित्य पठति श्रीमान् रत्नमालामिमापरा ।

सशुद्धचरणो नूत शिवकोटित्वमाप्नुयात् ॥

इति श्री समन्तभद्र स्वामी शिष्य शिवकोट्याचार्य विरचिता रत्नमाला समाप्ता ।

१०५७ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल–X । अपूर्ण । वे० स० २११५ । ट भण्डार ।

१०५८. रयणसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० १० । आ० १०½X५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–X । ले० काल–स १८८३ । पूर्ण । वे० स० ६४६ । अ भण्डार ।

१०५६ प्रति स० २ । पत्र सं० १० । ले० काल–X । वे० स० १८१० । ट भण्डार ।

१०६० रात्रि भोजन त्याग वर्णन ' " । पत्र स० १६ । आ० १२X४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–X ले० काल–X । पूर्ण । वे० स० ४८० । व्र भण्डार ।

१०६१. राधा जन्मोत्सव ' । पत्र स० १ । आ० १२X६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल–X । ले० काल–X । पूर्ण । वे० स० ११५१ । अ भण्डार ।

१०६२. रिक्तविभाग प्रकरण " "' । पत्र स० २६ । आ० १३X७ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–X । ले० काल–X । पूर्ण । वे० स० ५७ । ज भण्डार ।

१०६३. लघुसामायिक पाठ " । पत्र स० २ । आ० १२X७ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल–X । ले० काल–स० १८१४ । पूर्ण । वे० स० २०२१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति'—

१८१४ अगहन सुदी १५ सनै बुन्दी नग्रे नेमनाथ चैत्यालै लिखितं श्री देवेन्द्रकीर्त्ति आचारज सीरोज के पट्ट स्वयं हस्ते ।

१०६४. प्रति सं० २ । पत्र स० १ । ले० काल–X । वे० स० १२४३ । अ भण्डार ।

१०६५. प्रति स० ३ । पत्र स० १ । ले० काल–X । वे० स० १२२० । अ भण्डार ।

१०६६. लघुसामायिक '' । पत्र स० ३ । आ० ११¾X५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल–X । ले० काल–X । पूर्ण । वे० सं० ६४० । क भण्डार ।

१०६७. लाटीसहिता—राजमल्ल । पत्र सं० ७ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–स० १६४१ । ले० काल–X । पूर्ण । वे० स० ८८ ।

१०६८ प्रति स० २ । पत्र सं० ७३ । ले० काल–सं० १८६७ वैशाख बुदी रविवार वे० सं० ६६५ । ङ भण्डार ।

१०६९ प्रति सं० ३ । पत्र स० ५६ । ले० काल–स० १८६७ मगसिर बुदी ३ । वे० स० ६६६ । ङ भण्डार ।

१०६३. वृहत्प्रतिक्रमण । पत्र स० ३१ । आ० १०३×४६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २१२२ । ट भण्डार ।

१०६४. व्रतों के नाम…… । पत्र स० ११ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ११६ । ञ भण्डार ।

१०६५ व्रतनामावली……… । पत्र स० १२ । आ० ८३×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र काल स० १६०४ । पूर्ण । वे० स० २६५ । ख भण्डार ।

१०६६. व्रतसंख्या……… । पत्र स० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २०५७ । अ भण्डार ।

विशेष—१५१ व्रतो एवं ४१ मडल विधानो के नाम दिये हुये है ।

१०६७. व्रतसार…… । पत्र स० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र० काल X ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६८१ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल २२ पद्य हैं ।

१०६८. व्रतोद्यापनश्रावकाचार … । पत्र स० ११३ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय आचार शास्त्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६३ । घ भण्डार ।

१०६९. व्रतोपवासवर्णन … । पत्र स० ५७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३३८ । ञ भण्डार ।

विशेष—५७ से आगे के पत्र नही है ।

११००. व्रतोपवासवर्णन । पत्र सं० ४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ४७८ । ञ भण्डार ।

११०१ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ४७९ । ञ भण्डार ।

११०२ षट्आवश्यक (लघुमासायिक)—महाचन्द्र । पत्र स० ३ । विषय-आचार शास्त्र । र० काल X । ले० काल स० १९४० । पूर्ण । वे० स० ३०३ । ख भण्डार ।

११०३ षट्आवश्यकविधान—पन्नालाल । पत्र स० १४ । आ० १४×७३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र० काल स० १९३२ । ले० काल स० १९३४ बैशाख बुदी ९ । पूर्ण । वे० स० ७४४ । ङ भण्डार ।

११०४. प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १९३२ । वे० स० ७४५ । ङ भण्डार ।

११०५ प्रति सं० ३ । पत्र स० २३ । ले० काल X । वे० स० ४७६ । ङ भण्डार ।

विशेष—विद्वज्जन बोधक के तृतीय व पञ्चम उल्लास का हिन्दी अनुवाद है ।

१०८०. प्रति सं० २ । ले० काल स० १९३० । वे० स० ६५१ । क भण्डार ।

१०८१ वार्त्तासंग्रह ..... । पत्र स० २५ से ६७ । आ० ९×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५७ । छ भण्डार ।

१०८२. विद्वज्जनबोधक ..... । पत्र स० २७ । आ० १२½×८½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७६ । ङ भण्डार ।

विशेष— हिन्दी अर्थ सहित है । ४ अध्याय तक है ।

१०८३ प्रति स० २ । पत्र स० ३५२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०४० । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है । पत्र क्रम से नही है और कितने ही बीच के पत्र नही है । दो प्रतियो का मिश्रण है ।

१०८४ विद्वज्जनबोधक भाषा—संघी पन्नालाल । पत्र स० ८६० । आ० १४×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत, हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल स० १९३९ माघ सुदी ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७७ । ङ भण्डार ।

१०८५ प्रति सं० २ । पत्र स० ५४३ । ले० काल स० १९४२ आसोज सुदी ४ । वे० स० ६७७ । च भण्डार ।

विशेष—छाजूलाल साह के पुत्र नन्दलाल ने अपनी माताजी के व्रतोद्यापन के उपलक्ष मे ग्रन्थ मन्दिर दीवान अमरचन्दजी के मे चढाया । यह ग्रन्थ के द्वितीयखण्ड के अन्त मे लिखा है

१०८६. विद्वज्जनबोधकटीका ..... । पत्र स० ४४ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६० । क भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड के पाचवे उल्लास तक है ।

१०८७. विवेकविलास ..... । पत्र स० १८ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल स० १७७० फागुण बुदी । ले० काल स० १८८८ चैत बुदी ३ । वे० स० ८२ । म्क भण्डार ।

१०८८. वृहत्प्रतिक्रमण ..... । पत्र स० १६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४८ । ट भण्डार ।

१०८९. प्रति सं० २ । ले० काल × । वे० स० २१५९ । ट भण्डार ।

१०९० प्रति सं० ३ । ले० काल × । वे० स० २१७९ । ट भण्डार ।

१०९१ वृहत्प्रतिक्रमण ..... । पत्र स० १९ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत, प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०३ । अ भण्डार ।

१०९२ प्रति सं० २ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० १५६ । अ भण्डार ।

११११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल X । वे० सं० ७५५ । ड भण्डार ।

११२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६६ ।

विशेष—३० से आगे पत्र नहीं है ।

११२१ षोडषकारणभावना…… । पत्र सं० १७ । आ० १२३/४X७१/२ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७२१ (क) । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संकेत भी दिये हैं ।

११२२. शीलनववाड़ …… । पत्र सं० १ । आ० १०X४१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना-काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १२२६ । अ भण्डार ।

११२३ श्राद्धपडिकम्मणसूत्र…… । पत्र सं० ६ । आ० १०X४१/२ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १०१ । घ भण्डार ।

विशेष—प० जसवन्त के पौत्र तथा मानसिंह के पुत्र दीनानाथ के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । गुजराती टब्बा टीका सहित है ।

११२४. श्रावकप्रतिक्रमणभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ५० । आ० ११३/४X७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १९३० माघ बुदी २ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६९८ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्दजी की प्रेरणा से भाषा की गयी थी ।

११२५ प्रति सं० २ । पत्र स० ७५ । ले० काल X । वे० सं० ६९७ । क भण्डार ।

११२६. श्रावकधर्मवर्णन…… । पत्र सं० १० । आ० १०१/२X५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-श्रावक धर्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३४६ । च भण्डार ।

११२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३४७ । च भण्डार ।

११२८. श्रावकप्रतिक्रमण…… । पत्र सं० २५ । आ० १०१/२X५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल X । ले० काल स० १८२३ आसोज बुदी ११ । वे० सं० १११ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । हुक्मीजीवण ने अहिपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

११२९. श्रावकप्रतिक्रमण …… । पत्र सं० १५ । आ० १२X६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १८९ । ख भण्डार ।

११३०. श्रावकप्रायश्चित—वीरसेन । पत्र स० ७ । आ० १२X६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल X । ले० काल स० १९३४ । पूर्ण । वे० सं० १९० ।

विशेष—पं० पन्नालाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

११०६. षट्कर्मोपदेशरत्नमाला (छक्कम्मोवएस)—महाकवि अमरकीर्त्ति । पत्र स० ३ से ७१ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–आचार शास्त्र । र० काल स० १२४७ । ले० काल स० १६२२ चैत्र सुदी १३ । वे० स० ३५६ । च भण्डार ।

विशेष—नागपुर नगरमे खण्डेलवालान्वय पाटनीगोत्रवाले श्रीमतीहरपमदे ने ग्रन्थकी प्रतिलिपि करवायी थी ।

११०७ षट्कर्मोपदेशरत्नमालाभाषा — पांडे लालचन्द । पत्र सख्या १२६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल स० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल सं० १८४६ शाके १७०५ भादवा सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ४२६ । अ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी देवकरण ने महात्मा भूरा से जयपुर मे प्रतिलिपि करवायी ।

११०८. प्रति सं० २ । पत्र स० १२८ । ले० काल स० १८६६ माघ सुदी ६ । वे० स० ६७ । घ भण्डार ।

विशेष—पुस्तक प० सदासुख दिल्लीवालो की है ।

११०६. षट्सहननवर्णन—मकरन्द पद्मावति पुरवाल । पत्र स० ८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल स० १७८६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७१५ । क भण्डार ।

१११०. षड्भक्तिवर्णन…… । पत्र स० २२ से २६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६६ । ञ भण्डार ।

११११ षोडशकारणभावनावर्णनवृत्ति—पं० शिवजिदरुण । पत्र स० ४६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत, सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २००४ । ख भण्डार ।

१११२ षोडषकारणभावना—प० सदासुख । पत्र स० ८० । आ० १२×७ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । वे० स० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा में से है ।

१११३ षोडशकारणभावना जयमाल— नथमल । पत्र स० २८ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल स० १६२५ सावन सुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७१६ । क भण्डार ।

१११४. प्रति सं० २ । पत्र स० २४ । ले० काल × । वे० स० ७४६ । ङ भण्डार ।

१११५ प्रति सं० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल × । वे० स० ७४६ । ङ भण्डार ।

१११६. प्रति स० ४ । पत्र स० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७५० । ङ भण्डार ।

१११७ षोडशकारणभावना…… । पत्र स० ६४ । आ० १३½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १६६२ कार्त्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ७५३ । ङ भण्डार ।

विशेष—रामप्रताप व्यास ने प्रतिलिपि की थी ।

१११८. प्रति सं० २ । पत्र स० ६१ । ले० काल × । वे० स० ७५४ । ङ भण्डार ।

११४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । लेo काल सं० १८८४ आषाढ बुदी २ । वे० स० ४३ । च भण्डार

११४२. प्रति सं० ४ । पत्र स० ७ । ले० काल सं० १८०४ । भादवा सुदी ६ । वे० स० १०२ । छ भण्डार ।

११४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० २१५१ । ट भण्डार ।

११४४. प्रति सं० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल X । वे० सं० २१५८ । ट भण्डार ।

११४५. श्रावकाचार—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ६६ । आ० ८३/४X६३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०८८ । अ भण्डार ।

११४६. प्रति सं० २ । पत्र स० १२३ । ले० काल स० १८५५ । वे० स० ६६३ । क भण्डार ।

११४७. श्रावकाचारभाषा—पं० भागचन्द । पत्र स० १८६ । आ० १२X८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं० १९२२ आषाढ सुदी ८ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २८ ।

विशेष—अमितिगति श्रावकाचार की भाषा टीका है । अन्तिम पत्र पर महावीराष्टक है ।

११४८. श्रावकाचार ...। पत्र सख्या १ से २१ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २१८२ । ट भण्डार ।

विशेष—इससे आगे के पत्र नही है ।

११४९. श्रावकाचार ...। पत्र स० ७ । आ० १०३/४X४३/४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–आचारशास्त्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १०८ । छ भण्डार ।

विशेष—६० गाथाये है ।

११५०. श्रावकाचारभाषा ...। पत्र स० ५२ से १३१ । आ० ६३/४X५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०६८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

११५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ६६६ । क भण्डार ।

११५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १११ से १७४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७०६ । ङ भण्डार ।

११५३. प्रति स० ४ । पत्र स० ११६ । ले० काल स० १९९४ भादवा बुदी १ । पूर्ण । वे स० ७१० ङ भण्डार ।

विशेष—गुणभूषण कृत श्रावकाचार की भाषा टीका है । संवत् १५२६ चैत सुदी ५ रविवार को यह ग्रन्थ जिहानावाद जैसिंहपुरा में लिखा गया था । उस प्रति से यह प्रतिलिपि की गयी थी ।

११५४. प्रति सं० ५ । पत्र स० १०८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६८२ । च भण्डार ।

११३१ श्रावकाचार—अमितिगति। पत्र सं० ६७। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६४। क भण्डार।

विशेष—कहीं कहीं संस्कृत में टीका भी है। ग्रन्थ का नाम उपासकाचार भी है।

११३२ प्रति सं० २। पत्र सं० ३६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४४। च भण्डार।

११३३ प्रति सं० ३। पत्र सं० ८३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०८। छ भण्डार।

११३४. श्रावकाचार—उमास्वामी। पत्र सं० २३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८६। अ भण्डार।

११३५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १८२६ आषाढ सुदी २। वे० सं० २६०। अ भण्डार।

११३६. श्रावकाचार—गुणभूषणाचार्य। पत्र सं० २१। आ० १०३/४×४१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १५६२ बैशाख बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० १३८। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति :

संवत् १५६२ वर्षे वैशाख बुदी ४ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सा० गोत्रे सं० परवत तस्य भार्या रोहातत्पुत्र नेता तस्य भार्या नारंगदे। तत्पुत्र मलिदास तस्य भार्या अमरी दुतीय पुत्र उर्वा तस्य भार्या वोरवी तत्पुत्र नेयमल दुतीय खीवा सा० नरसिंह महीदास एतेषामध्ये इदशास्त्र लिखायत कर्मक्षयनिमित्तं श्रावकाचार। अर्जिका पदमसिरिज्योग्य बाई नारिंग घटापितं।

११३७. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १५२९ भादवा बुदी १। वे० सं० ५०१। अ भण्डार।

प्रशस्ति—संवत् १५२९ वर्षे भाद्रपद १ पक्षे श्री मूलसंघे भ० श्री जिनचन्द्र ब्र० नरसिंघ खंडेलवालान्वये स० झालय भार्या जैश्री पुत्र हाम्य लिखावदत्तु।

११३८. श्रावकाचार—पद्मनंदि। पत्र सं० २ से २६। आ० ११३/४×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१०७।

विशेष—३६ से आगे भी पत्र नहीं है।

११३९. श्रावकाचार—पूज्यपाद। पत्र सं० ६। आ० ६३/४×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८५४ बैशाख सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० १०२। घ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम उपासकाचार तथा उपासकाध्ययन भी है।

११४०. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १८८० पौष बुदी १५। वे० सं० ८६। ड भण्डार।

११३१ श्रावकाचार—अमितिगति। पत्र स० ६७। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६६४। क भण्डार।

विशेष—कही कही संस्कृत मे टीका भी है। ग्रन्थ का नाम उपासकाचार भी है।

११३२ प्रति सं० २। पत्र स० ३६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४४। च भण्डार।

११३३ प्रति स० ३। पत्र स० ८३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०८। छ भण्डार।

११३४ श्रावकाचार—उमास्वामी। पत्र स० २३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २८६। अ भण्डार।

११३५. प्रति स० २। पत्र स० ३७। ले० काल स० १६२६ आषाढ सुदी २। वे० स० २६०। अ भण्डार।

११३६. श्रावकाचार—गुणभूषणाचार्य। पत्र स० २१। आ० १०३×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १५६२ वैशाख बुदी ४। पूर्ण। वे० स० १३८। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति

सवत् १५६२ वर्षे वैशाख बुदी ४ श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कु दकु दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये सा० गोत्रे स० परवत तस्य भार्या रोह्लातत्पुत्र नेता तस्य भार्या नारंगदे। तत्पुत्र मलिदास तस्य भार्या भ्रमरी दुतीय पुत्र उर्वा तस्य भार्या वोरवी तत्पुत्र नेथमल दुतीय खीवा सा० नरसिंह महादास एतेषामध्ये इदशास्त्र लिखायत कर्मक्षयनिमित्त श्रावकाचार। अर्जिका पदमसिरिज्योग्य बाई नारिंग घटापितं।

११३७. प्रति सं० २। पत्र स० ११। ले० काल सं० १५२६ भादवा बुदी १। वे० स० ४०१। व भण्डार।

प्रशस्ति—सवत् १५२६ वर्षे भाद्रपद १ पक्षे श्री मूलसघे भ० श्री जिनचन्द्र ब्र० नरसिंघ खडेलवालान्वये स० भालय भार्या जैश्री पुत्र हाम्मा लिखाबदतु।

११३८ श्रावकाचार—पद्मनन्दि। पत्र स० २ से २६। आ० ११३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २१०७।

विशेष—२६ से आगे भी पत्र नही है।

११३९. श्रावकाचार—पूज्यपाद। पत्र सं० ६। आ० ९३×६ इञ्च। भाषा- संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १८५४ वैशाख सुदी ३। पूर्ण। वे० स० १०२। घ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम उपासकाचार तथा उपासकाध्ययन भी है।

११४०. प्रति स० २। पत्र स० ११। ले० काल सं० १८८० पौष बुदी १५। वे० स० ८६। ड भण्डार।

११४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । लें० काल सं० १८८४ आषाढ बुदी २ । वे० सं० ४३ । च भण्डार

११४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८०४ । भादवों सुदी ६ । वे० सं० १०२ । ङ भण्डार ।

११४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २१५१ । ट भण्डार ।

११४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २१५८ । ट भण्डार ।

११४५. श्रावकाचार—सकलकीर्ति । पत्र सं० ६६ । आ० ८½×६¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८८ । अ भण्डार ।

११४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १८५५ । वे० सं० ६६३ । क भण्डार ।

११४७. श्रावकाचारभाषा—पं० भागचन्द । पत्र सं० १८६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं० १९२२ आषाढ सुदी ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८ ।

विशेष—अमितिगति श्रावकाचार की भाषा टीका है । अन्तिम पत्र पर महावीराष्टक है ।

११४८. श्रावकाचार । पत्र संख्या १ से २१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८२ । ट भण्डार ।

विशेष—इससे आगे के पत्र नही है ।

११४९. श्रावकाचार । पत्र सं० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–आचारशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०८ । छ भण्डार ।

विशेष—९० गाथाये है ।

११५०. श्रावकाचारभाषा । पत्र सं० ५२ से १३१ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०९४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

११५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६९६ । क भण्डार ।

११५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १११ से १७४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७०९ । ङ भण्डार ।

११५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १९९४ भादवा बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ७१० । ङ भण्डार ।

विशेष—गुणभूषण कृत श्रावकाचार की भाषा टीका है । संवत् १७२६ चैत सुदी ५ रविवार को यह ग्रन्थ जिहानाबाद जैसिंहपुरा में लिखा गया था । उस प्रति से यह प्रतिलिपि की गयी थी ।

११५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५२ । च भण्डार ।

११५५ श्रुतज्ञानवर्णन । पत्र स० ८ । आ० ११½X७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७०१ । क भण्डार ।

११५६ प्रति सं० २ । पत्र स० ८ । ले० काल X । वे० स० ७०२ । क भण्डार ।

११५७. सप्तश्लोकीगीता । पत्र स० २ । आ० ६X४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १७४० । ट भण्डार ।

११५८ समकितढाल—आसकरण । पत्र सं० १ । आ० ६½X४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल X । ले० काल स० १८३५ । पूर्ण । वे० स० २१२६ । अ भण्डार ।

११५९ समुद्घातभेद । पत्र स० ४ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७८८ । ङ भण्डार ।

११६० सम्मेदशिखर महात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्र स० ८१ । आ० ११X६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । र० काल सं० १६४५ । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० स० २८२ । अ भण्डार ।

११६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४७ । ले० काल X । वे० सं० ७६५ । ङ भण्डार ।

११६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३७५ । च भण्डार ।

११६३. सम्मेदशिखरमहात्म्य—लालचन्द । पत्र स० ६५ । आ० १३X५ । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–धर्म । र० काल स० १८४२ फागुण सुदी ५ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६६० । क भण्डार ।

विशेष—भट्टारक श्री जगतकीर्त्ति के शिष्य लालचन्द ने रेवाडी मे यह ग्रन्थ रचना की थी ।

११६४ सम्मेदशिखरमहात्म्य—मनसुखलाल । पत्र स० १०६ । आ० ११X५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल X । ले० काल स० १६४१ आसोज बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १०५६ । अ भण्डार ।

विशेष—रचना सवत् सम्बन्धी दोहा—

बान वेद शशिगये विक्रमार्क तुम जान ।
अश्वनि सित दशमी सुगुरु ग्रन्थ समापत ठान ॥

लोहाचार्य विरचित ग्रन्थ की भाषा टीका है ।

११६५. प्रति सं० २ । पत्र स० १०२ । ले० काल स० १८८४ चैत सुदी २ । वे० स० ७८ । ग भण्डार ।

११६६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६२ । ले० काल स० १८८७ चैत सुदी १५ । वे० स० ७६६ । ङ भण्डार ।

विशेष—स्योजीरामजी भांवसा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की ।

११६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४२ । ले० काल स० १६११ पौष बुदी १५ । वे० स० २२ । झ भण्डार ।

११६८. सम्मेदशिखरविलास—केशरीसिंह । पत्र स० ३ । आ० ११½X७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल २०वी शताब्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७६७ । ङ भण्डार ।

११६६. सम्मेदशिखर विलास—देवाब्रह्म । पत्र सं० ४ । आ० ११३/४×७१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-धर्म । र० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६१ । ज भण्डार ।

११७०. संसारस्वरूप वर्णन ... । पत्र सं० ५ । आ० ११×४१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२६ । ञ भण्डार ।

११७१. सागारधर्मामृत—प० आशाधर । पत्र स० १४३ । आ० १२१/२×७१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-श्रावकों के आचार धर्म का वर्णन । र० काल सं० १२९६ । ले० काल सं० १७९८ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० २२८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ संस्कृत टीका सहित है । टीका का नाम भव्यकुमुदचन्द्रिका है । महाराजा सवाई जयसिंहजी के शासनकाल में आमेर में महात्मा मानजी ने प्रतिलिपि की थी ।

११७२. प्रति स० २ । पत्र स० २०६ । ले० काल स० १८८१ फागुण सुदी १ । वे० स० ७७५ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण किशनगढ वाले ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की ।

११७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० ७७४ । क भण्डार ।

११७४. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४७ । ले० काल × । वे० स० ११७ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

११७५. प्रति सं० ५ । पत्र स० ५७ । ले० काल × । वे० स० ११८ । घ भण्डार ।

विशेष—४ से ४० तक के पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं बाकी पत्र दुबारा लिखाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है ।

११७६. प्रति सं० ६ । पत्र स० १५६ । ले० काल सं० १८९१ भादवा बुदी ५ । वे० स० ७८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है । सागानेर में नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

११७७. प्रति सं० ७ । पत्र स० ६१ । ले० काल सं० १६२८ फागुण सुदी १० । वे० सं० १४६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है । रचियता एवं लेखक दोनों की प्रशस्ति है ।

११७८. प्रति सं० ८ । पत्र स० १४० । ले० काल × । वे० स० १ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव शुद्ध है ।

११७९. प्रति सं० ९ । पत्र स० ६९ । ले० काल सं० १५९५ फागुण सुदी २ । वे० सं० १८ । ञ भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति—खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे पाटे डीडा तेन इदं धर्मामृतनामोपाध्ययनं आचार्य नेमिचन्द्राय दत्तं । भ० प्रभाचन्द्र देवस्तत् शिष्य मं० धर्मचन्द्राम्नाये ।

११८०. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १८ क । ञ भण्डार ।

११८१. प्रति सं० ११ । पत्र स० १४१ । ले० काल X । वे० स० ४४६ । अ भण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञ टीका सहित है ।

११८२ प्रति सं० १२ । पत्र सं० १६ । ले० काल X । वे० स० ४५० । अ भण्डार ।

विशेष—मूलमात्र प्रति प्राचीन है ।

११८३. प्रति सं० १३ । पत्र स० १६६ । ले० काल स० १५६४ फागुरा सुदी १२ । वे० सं० ५०० । अ भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति—संवत् १५६४ वर्षे फाल्गुन सुदी १२ रविवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्रीमूलसघे नन्दिसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्दि तत्पट्टे श्री शुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवातत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवतत्शिष्यमण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्ततमुख्यशिष्याचार्य श्री नेमिचन्द्रदेवास्तैरियं धर्मामृतनामाशाधरश्रावकाचारटीका भव्यकुमुदचन्द्रिकानाम्नी लिखापितात्मपठनार्थं ज्ञानावरणादिकर्मक्षयार्थं च ।

११८४. प्रति स० १४ । पत्र स० ४० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ५०६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

११८५. प्रति सं० १५ । पत्र स० ४१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १९६७ । ट भण्डार ।

११८६. प्रति स० १६ । पत्र स० २ से ७२ । ले० काल स० १५६४ भादवा सुदी १ । अपूर्ण । वे० सख्या २११० । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है । लेखक प्रशस्ति पूर्ण है ।

११८७. सातव्यसनस्[illegible]— । पत्र स० १ । आ० १०X५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल X । ले० काल सं० १[illegible] शशिगये स० १८७३ । [illegible]

विशेष—रूपमञ्जर[illegible] स्वाध्याय [illegible] र्ण । वे० [illegible] दश [illegible] के आठ पद्य है ।

११८८ साधुदिनचर्या [illegible] जिर्द [illegible] स० ६ । आ० ६३X४३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० [illegible] २७४ ।

विशेष—श्रीमत्तपोगच्छे श्री विजयवामसूरि विजयराज्ये ऋषि रूपा लिखित ।

११८९. साम[illegible] [illegible]—बहुमुनि । पत्र स० १६ । आ० ८X५ इञ्च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २१०१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीबहुमुनिविरचित सामयिकपाठ सपूर्ण ।

११९०. सामायिकपाठ । पत्र स० २५ । आ० ८३X६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०९९ । अ भण्डार ।

११६१. प्रति सं० २। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६३। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत मे टीका भी दी हुई है।

११६२ प्रति सं० ३। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० स० ७७६। क भण्डार।

११६३ सामायिकपाठ । पत्र स० ५०। आ० ११½×७½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल स० १६५६ कार्तिक बुदी २। पूर्ण। वे० स० ७७६। अ भण्डार।

११६४ प्रति सं० २। पत्र स० ६८। ले० काल स० १८६१। वे० स० ७७७। अ भण्डार।

विशेष—उदयचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

११६५. प्रति सं० ३। पत्र स० ५। लि० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०१७। अ भण्डार।

११६६. प्रति सं० ४। पत्र स० २६। ले० काल ×। वे० स० १०११। अ भण्डार।

११६७. प्रति स० ५। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० स० ७७८। क भण्डार।

११६८. प्रति सं० ६। पत्र स० ५४। ले० काल स० १८२० कार्तिक बुदी २। वे० स० ६५। ख भण्डार।

विशेष—आचार्य विजयकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी।

११६६. सामायिक पाठ । पत्र सं० २५। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत, संस्कृत। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल स० १७३३। पूर्ण। वे सं० ८१४। ङ भण्डार।

१२००. प्रति स० २। पत्र सं० ६। ले० काल स० १७६८ ज्येष्ठ सुदी ११। वे० सं० ८१५। ङ भण्डार।

१२०१ प्रति सं० ३। पत्र स० १०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३६०। च भण्डार।

विशेष—पत्रो को चूहो ने खालिया है।

१२०२ प्रति स० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३६१। च भण्डार।

१२०३. प्रति स० ५। पत्र सं० २ से १६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ८१३। ङ भण्डार।

१२०४. सामायिकपाठ (लघु)। पत्र सं० १। आ० १०३/४×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३८८। च भण्डार।

१२०५ प्रति स० २। पत्र स० १। ले० काल ×। वे० स० ३८६। च भण्डार।

१२०६. प्रति स० ३। पत्र स० ३। ले० काल ×। वे० स० ७१३ क। च भण्डार।

१२०७ सामायिकपाठभाषा—बुध महाचन्द। पत्र स० ६। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०८। च भण्डार।

विशेष—जौहरीलाल कृत आलोचना पाठ भी है।

१२०८ प्रति सं० २। पत्र स० ७। ले० काल स० १६५४ सावन बुदी ३। वे० स० १६४१। ट भण्डार।

१२०६. सामायिकपाठभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र स० ८२ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९३७ । पूर्ण । वे० स० ७८० । अ भण्डार ।

१२१० प्रति सं० २ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १९५९ । वे० स० ७८१ । अ भण्डार ।

१२११ प्रति सं० ३ । पत्र स० ४६ । ले० काल × । वे० स० ७८२ । अ भण्डार ।

१२१२. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४६ । ले० काल × । वे० स० ७८३ । अ भण्डार ।

१२१३ प्रति सं० । पत्र स० २९ । ले० काल स० १९७१ । वे० स० ८१७ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री केशरलाल गोधा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१२१४. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३९ । ले० काल स० १८७४ फागुण सुदी ६ । वे० स० १८३ । ज भण्डार ।

१२१५ प्रति स० ७ । पत्र स० ४५ । ले० काल स० १९११ आसोज सुदी ८ । वे० स० ५६ । ञ भण्डार ।

१२१६ सामायिकपाठभाषा—भ० श्री तिलोकचन्द । पत्र स० ६४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १८६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७१० । च भण्डार ।

१२१७ प्रति स० २ । पत्र स० ७५ । ले० काल स० १८९१ सावन बुदी १३ । वे० स० ७१३ । च भण्डार ।

१२१८. सामायिकपाठ भाषा ' । पत्र स० ४५ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल स० १७९८ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वे० स० १२८ । मृ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे महाराजा जयसिहजी के शासनकाल मे जती नैणसागर तपागच्छ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

१२१९ प्रति स० २ । पत्र सं० ५८ । ले० काल स० १७४० बैशाख सुदी ७ । वे० स० ७०९ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा सावलदास बगद वाले ने प्रतिलिपि की थी । सस्कृत अथवा प्राकृत छन्दो का अर्थ दिया हुआ है ।

१२२० सामायिकपाठ भाषा । पत्र स० २ से ३ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८१२ । ङ भण्डार ।

१२२१ प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० सं० ८१६ । च भण्डार ।

१२२२. प्रति स० ३ । पत्र स० १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४८९ । ङ भण्डार ।

१२२३. सामायिकपाठभाषा ''' । पत्र स० ६७ । आ० ९×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी (ढूढारी) विषय–धर्म । रचनाकाल × । ले० काल स० १७९३ मगसिर सुदी ८ । वे० स० ७११ । च भण्डार ।

१२२४. **सारसमुच्चय—कुलभद्र** । पत्र सं० १५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल स० १६०७ पौष बुदी ४ । वे० स० ४५६ । ञ भण्डार ।

विशेष—मडलाचार्य धर्मचन्द के शिष्य ब्रह्मभाऊ वोहरा ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२२५ **सावयधम्म दोहा—मुनि रामसिंह** । पत्र स० ८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । वे० स० १४१ । पूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति अति प्राचीन है ।

१२२६. **सिद्धों का स्वरूप** । पत्र स० ३८ । आ० ४×३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८५४ । ङ भण्डार ।

१२२७. **सुदृष्टि तरंगिणीभाषा—टेकचन्द** । पत्र स० ४०५ । आ० १५×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल स० १८३८ सावण सुदी ११ । ले० काल स० १८६१ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७५७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

१२२८. **प्रति सं० २** । पत्र स० ८० । ले० काल × । वे० स० ६६४ । अ भण्डार ।

१२२९. **प्रति स० ३** । पत्र सं० ६११ । ले० काल स० १९४४ । वे० स० ८११ । क भण्डार ।

१२३०. **प्रति सं० ४** । पत्र स० ३६१ । ले० काल स० १८९३ । वे० सं० ९२ । ग भण्डार ।

विशेष—स्योलाल साह ने प्रतिलिपि की थी ।

१२३१. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १०५ से १२३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२७ । घ भण्डार ।

१२३२. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १९९ । ले० काल × । वे० स० १२८ । घ भण्डार ।

१२३३ **प्रति सं० ७** । पत्र स० ५४५ । ले० काल स० १८९८ आसोज सुदी ६ । वे० स० ८६८ । ङ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियों का मिश्रण है ।

१२३४ **प्रति सं० ८** । पत्र स० ५०० । ले० काल स० १९६० कार्तिक बुदी ५ । वे० स० ८६९ । ङ भण्डार ।

१२३५. **प्रति स० ९** । पत्र स० २०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७२२ । च भण्डार ।

१२३६ **प्रति स० १०** । पत्र स० ४३० । ले० काल स० १९४९ चैत बुदी ८ । वे० स० ११ । ज भण्डार ।

१२३७. **प्रति सं० ११** । पत्र स० ५३५ । ले० काल स० १८३९ फागुण बुदी ४ । वे० स० ८९ । झ भण्डार ।

१२३८. **सुदृष्टितरगिणीभाषा** । पत्र स० ५१ से ५७ । आ० १२¾×७¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८६७ । ङ भण्डार ।

१२३९ सोनगिरपच्चीसी—भागीरथ। पत्र सं० ८। आ० ५३/४×४३/४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल सं० १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४। ले० काल X। वे० स० १४७। छ भण्डार।

१२४०. सोलहकारणभावनावर्णन—पं० सदासुख। पत्र सं० ४६। आ० १२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ७२६। च भण्डार।

१२४१. प्रति सं० २। पत्र स० ५३। ले० काल X। वे० स० १८८। छ भण्डार।

१२४२. प्रति सं० ३। पत्र स० ५७। ले० काल स० १९२७ सावण बुदी ११। वे० स० १८८। छ भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर मे गणेशीलाल पाड्या ने फागी के मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी।

१२४३. प्रति स० ४। पत्र स० ३१ से ६६। ले० काल स० १९५८ माह सुदी २। अपूर्ण। वे० स० १९०। छ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ३० पत्र नही है। सुन्दरलाल पाड्या ने चाटसू मे प्रतिलिपि की थी।

१२४४. सोलहकारणभावना एव दशलक्षण धर्म वर्णन—पं० सदासुख। पत्र स० ११४। साइज ११३/४×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल X। ले० काल स० १९४१ मगसिर सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ९४। ग भण्डार।

१२४५. स्थापनानिर्णय ""। पत्र स० ६। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्म। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ६००। ङ भण्डार।

विशेष—विद्वज्जनबोधक के प्रथम काड का अष्टम उल्लास है। हिन्दी टीका सहित है।

१२४६ स्वाध्यायपाठ ।पत्र स० २०। आ० ९×६१/२ इञ्च। भाषा-प्राकृत, सस्कृत। विषय-धर्म। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ३३। ज भण्डार।

१२४७ स्वाध्यायपाठभाषा । पत्र स० ७। आ० ११३/४×७३/४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ८४२। क भण्डार।

१२४८. सिद्धान्तधर्मोपदेशमाला "। पत्र स० १२। आ० १९×३१/२ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २२१। ख भण्डार।

१२४९ हुण्डावसर्पिणीकालदोष—माणकचन्द। पत्र स० ६। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल X। ले० काल स० १९३७। पूर्ण। वे० स० ८५५। क भण्डार।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि की थी।
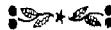
विषय--अध्यात्म एवं योगशास्त्र

१२५०. अध्यात्मतरंगिणी—सोमदेव। पत्र सं० १०। आ० ११×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। लें० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०। क भण्डार।

१२५१. प्रति सं० २। पत्र स० ६। ले० काल स० १६३७ भादवा बुदी ६। वे० स० ४। क भण्डार।

विशेष—ऊपर नीचे तथा पत्र के दोनों ओर संस्कृत मे टीका लिखी हुई है।

१२५२. प्रति सं० ३। पत्र स० ६। ले० काल स० १६३८ आषाढ बुदी १०। वे० स० ८२। ज भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। विबुध फतेलाल ने प्रतिलिपि की थी।

१२५३. अध्यात्मपत्र—जयचन्द छावड़ा। पत्र स० ७। आ० ६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। र० काल १४वी शताब्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १७। क भण्डार।

१२५४. अध्यात्मबत्तीसी—बनारसीदास। पत्र सं० २। आ० ६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल १७वी शताब्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १३६६। अ भण्डार।

१२५५. अध्यात्म बारहखड़ी—कवि सूरत। पत्र स० १५। आ० ५३×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल १७वी शताब्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६। ङ भण्डार।

१२५६. अष्टपाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र स० १० से २७। आ० १०×५ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय—अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १०२३। अ भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण है। १ से ६ तथा २४–२५वा पत्र नही है।

१२५७. प्रति सं० २। पत्र स० ४८। ले० काल सं० १६४३। वे० स० ७। क भण्डार।

१२५८. अष्टपाहुड़भाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र स० ४३०। आ० १२×७३ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल स० १८६७ भादवा सुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १३। क भण्डार।

विशेष—मूल ग्रन्थकार आचार्य कुन्दकुद है।

१२५९. प्रति स० २। पत्र स० १७ से २४६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १४। क भण्डार।

१२६०. प्रति स० ३। पत्र स० १२६। ले० काल ×। वे० स० १५। क भण्डार।

१२६१. प्रति सं० ४। पत्र स० १६७। ले० काल ×। वे० स० १६। क भण्डार।

१२६२. प्रति स० ५। पत्र स० ३३४। ले० काल सं० १६२६। वे० स० १। क भण्डार।

१२६३. प्रति स० ६। पत्र स० ४५१। ले० काल सं० १६४३। वे० स० २। क भण्डार।

१२६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६५ । ले० काल X । वे० सं० ३ । ग भण्डार ।

१२६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १८३ । ले० काल सं० १६३६ आसोज सुदी १५ । वे० सं० ३८ । ङ भण्डार ।

विशेष—८१ पत्र प्राचीन प्रति हैं। ८८ से १०३ पत्र फिर लिखाये गये हैं तथा १०८ से १६३ तक के पत्र किसी अन्य प्रति के है।

१२६६ प्रति सं० ६ । पत्र सं० २८० । ले० काल सं० १६५१ आसोज सुदी १८ । वे० सं० ३६ । ङ भण्डार ।

१२६७ प्रति सं० १० । पत्र सं० १६७ । ले० काल X । वे० सं० ५०८ । च भण्डार ।

१२६८. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४५ । ले० काल सं० १८८० सावन सुदी ? । वे० सं० ३८ । झ भण्डार ।

१२६९ **आत्मध्यान—बनारसीदास** । पत्र सं० १ । आ० ८½X८ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–आत्मचिंतन । र० काल X । ले० काल X । वे० सं० १२७६ । अ भण्डार ।

१२७० **आत्मप्रबोध—कुमारकवि** पत्र सं० १३ । आ० १०½X४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २५८ । अ भण्डार ।

१२७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल X । वे० सं० ३८० (क) क भण्डार ।

१२७२ **आत्मसंबोधनकाव्य** ' । पत्र सं० २७ । आ० १०X४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १८५४ । अ भण्डार ।

१२७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ५२ । ङ भण्डार ।

१२७४ **आत्मसंबोधनकाव्य—ज्ञानभूषण** । पत्र सं० २ से २६ । आ० १०½X८½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६८७ । अ भण्डार ।

१२७५ **आत्मावलोकन—दीपचन्द कासलीवाल** । पत्र सं० ६६ । आ० ११½X५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल सं० १७७८ फागुन सुदी । वे० सं० २१८ । अ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावन में दयाराम लक्ष्मीराम ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

१२७६ **आत्मानुशासन—गुणभद्राचार्य** । पत्र सं० ८२ । आ० १०X५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । वे० सं० २२६२ । पूर्ण । जीर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— · · वर्षे ····· शाके ····

श्रीनेमिनाथचैत्यालये । श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्राम्नाये । लिखित ज्योति (षी) श्री गैया तत्पुत्र महेस लिखित ।

१२७७ प्रति सं० २ । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १५६४ आषाढ बुदी ८ । वे० सं० २९६ । अ भण्डार ।

१२७८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल स० १८९० सावरण सुदी ४ । वे० स० ३१५ । अ भण्डार ।

१२७९ प्रति स० ४ । पत्र स० ३१ । ले० काल X । वे० स० १२६८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एव प्राचीन है ।

१२८०. प्रति सं० ५ । पत्र स० ३५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २७० । अ भण्डार ।

१२८१ प्रति स० ६ । पत्र स० ३८ । ले० काल X । वे० स० ७९२ । अ भण्डार ।

१२८२ प्रति सं० ७ । पत्र स० २५ । ले० काल X । वे० स० ७९३ । अ भण्डार ।

१२८३. प्रति स० ८ । पत्र स० २७ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०८६ । अ भण्डार

१२८४ प्रति स० ९ । पत्र स० १०७ । ले० काल स० १९४० । वे० स० ४७ । क भण्डार ।

१२८५. प्रति स० १० । पत्र स० ४१ । ले० काल सं० १८८८ । वे० स० ४९ । क भण्डार ।

१२८६ प्रति सं० ११ । पत्र स० ३६ । ले० काल X । वे० स० १५ । क भण्डार ।

१२८७ प्रति स० १२ । पत्र स० ५३ । ले० काल सं० १८७२ चैत सुदी ८ । वे० स० ५३ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । पहिले सस्कृत का हिन्दी अर्थ तथा फिर उसका भावार्थ भी दिया हुआ है ।

१२८८ प्रति स० १३ । पत्र स० २३ । ले० काल स० १७३० भादवा सुदी १२ । वे० स० ५४ । ङ भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल बाकलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१२८९ प्रति स० १४ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६७० फागुन सुदी २ । वे० सं० २६ । च भण्डार ।

विशेष—रहितगपुर निवासी चौधरी सोहल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२९० प्रति सं० १५ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १९९५ मगसिर सुदी ५ । वे० स० २२० । व्य भण्डार ।

विशेष—मडलाचार्य धर्मचन्द्र के शासनकाल मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

१२९१ **आत्मानुशासनटीका—प्रभाचन्द्राचार्य** । पत्र स० ५७ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल X । ले० काल स० १८८२ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वे० स० २७ । च भण्डार ।

१२९२. प्रति सं० २ । पत्र स० १०३ । ले० काल स० १९०१ । वे० स० ४८ । क भण्डार ।

१२९३. प्रति स० ३ । पत्र स० ८४ । ले० काल सं० १६८५ मगसिर सुदी १४ । वे० स० ९३ । छ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती नगर मे प्रतिलिपि हुई।

१२६४. प्रति सं० ४। पत्र स० ४२। ले० काल स० १८३२ वैशाख बुदी ६। वे० स० ५०। ञ भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई।

१२६५. प्रति स० ५। पत्र स० ११०। ले० काल स० १६१६ आषाढ सुदी ? । वे० स० ७१।

विशेष—साहू तिहुणा अग्रवाल गर्ग गोत्रीय ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी।

१२६६ **आत्मानुशासनभाषा—पं० टोडरमल।** पत्र स० ८७। आ० १४X७ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य) विषय-अध्यात्म। र० काल X। ले० काल स० १८६०। पूर्ण। वे० स० ३७१। अ भण्डार।

१२६७ प्रति स० २। पत्र स० १८६। ले० काल स० १६०८। वे० स० ३९६। अ भण्डार।

विशेष—प्रति सुन्दर है।

१२६८ प्रति स० ३। पत्र स० १४८। ले० काल X। वे० स० ३६८। अ भण्डार।

१२६९ प्रति स० ४। पत्र स० १२६। ले० काल स० १६६३। वे० स० ४३४। अ भण्डार।

१३०० प्रति सं० ५। पत्र स० २३६। ले० काल स० १६३०। वे० स० ५०। क भण्डार।

विशेष—प्रभाचन्द्राचार्य कृत सस्कृत टीका भी है।

१३०१ प्रति सं० ६। पत्र स० ३०५। ले० काल स० १९८०। वे० स० ५१। क भण्डार।

१३०२ प्रति सं० ७। पत्र स० ११८। ले० काल स० १८९६ कार्तिक सुदी ५। वे० सं० ५। ग भण्डार।

१३०३ प्रति सं० ८। पत्र स० ७। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ५५। ङ भण्डार।

१३०४. प्रति स० ९। पत्र स० ८९ से १०२। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ५६। ङ भण्डार।

१३०५ प्रति सं० १०। पत्र स० १८। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ५७। ङ भण्डार।

१३०६ प्रति सं० ११। पत्र स० १५१। ले० काल स० १६३३ ज्येष्ठ बुदी ८। वे० स० ५८। ङ भण्डार।

विशेष—प्रति सशोधित है।

१३०७. प्रति सं० १२। पत्र स० ६७। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ५९। ङ भण्डार।

१३०८. प्रति सं० १३। पत्र स० ६१ से १६५। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ६०। ङ भण्डार।

१३०९. प्रति सं० १४। पत्र स० ७१ से १८९। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ५१३। च भण्डार।

१३१०. प्रति स० १५। पत्र स० ६६ से १४३। ले० काल स० १६९८ कार्तिक सुदी ३। अपूर्ण। वे० स० ५१८। च भण्डार।

१३११ प्रति स० १६। पत्र स० ८०। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ५१५। च भण्डार।

१३१२ प्रति स० १७। पत्र स० ६५। ले० काल स० १८५४ आषाढ बुदी ५। वे० स० २२२। ज भण्डार।

विशेष—रायचन्द साहवाड ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१३१३ प्रति स० १८ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१२४ । ट भण्डार ।

विशेष—१४ से आगे पत्र नही है ।

१३१४. आध्यात्मिकगाथा—भ० लक्ष्मीचन्द । पत्र स० ६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२४ । ञ भण्डार ।

१३१५. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामी कार्त्तिकेय । पत्र स० २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १६०४ । पूर्ण । वे० स० २६१ । अ भण्डार ।

१३१६ प्रति सं० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० ६२८ । अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये है । १८६ गाथायें है ।

१३१७. प्रति स० ३ । पत्र स० ३३ । ले० काल × । वे० सं० ६१४ । अ भण्डार ।

विशेष—२८३ गाथायें हैं ।

१३१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० स० ८४४ । क भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

१३१९ प्रति स० ५ । पत्र सं० ४८ । ले० काल स० १८८८ । वे० सं० ८४५ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द है ।

१३२० प्रति सं० ६ । पत्र स० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३१ । ख भण्डार ।

१३२१ प्रति सं० ७ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११४ । ङ भण्डार ।

१३२२. प्रति स० ८ । पत्र सं० ३७ । ले० काल स० १६४३ सावण सुदी ४ । वे० स० ११६ । ङ भण्डार ।

१३२३ प्रति सं० ९ । पत्र स० २८ से ७५ । ले० काल स० १८८९ । अपूर्ण । वे० स० ११७ । ङ भण्डार ।

१३२४. प्रति स० १० । पत्र स० ५० । ले० काल सं० १८२५ पौष बुदी १० । वे० स० ११९ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी है । मुनि रूपचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१३२५ प्रति सं० ११ । पत्र स० २८ । ले० काल स० १९३६ । वे० स० ४३७ । च भण्डार ।

१३२६ प्रति स० १२ । पत्र स० २३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३८ । च भण्डार ।

१३२७ प्रति स० १२ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १८६६ सावण सुदी ९ । वे० स० ४३९ । च भण्डार ।

१३२८ प्रति सं० १३ । पत्र स० १९ । ले० काल स० १६२० सावण सुदी ८ । वे० स० ४४० । च भण्डार ।

१३२६. प्रति स० १४ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १६५६ । वे० स० ४८२ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१३३० प्रति सं० १५ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १८८१ भादवा बुदी १० । वे० स० ८० । छ भण्डार ।

१३३१ प्रति स० १६ । पत्र स० ६३ । ले० काल X । वे० स० १०७ । ज भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे टिप्पण दिया हुआ है ।

१३३२ प्रति सं० १७ । पत्र स० १२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६६ । झ भण्डार ।

१३३३ प्रति स० १८ । पत्र स० ६ । ले० काल X । वे० स० ५२५ । ञ भण्डार ।

१३३४. प्रति स० १६ । पत्र स० १०० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०६१ । ट भण्डार ।

विशेष—११ से ७४ तथा १०० से आगे के पत्र नही है ।

१३३५ प्रति सं० २० । पत्र स० ३८ से ६४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

१३३६ कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाटीका । पत्र स० ५४ । आ० १०½X८ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ७३२ । अ भण्डार ।

१३३७ प्रति स० २ । पत्र स० ६१ से ११० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ११८ । ङ भण्डार ।

१३३८. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाटीका—शुभचन्द्र । पत्र स० २१० । आ० ११½X५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल स० १६०० माघ बुदी १० । ले० काल स० १८५४ । पूर्ण । वे० स० ८४३ । क भण्डार ।

१३३६ प्रति सं० २ । पत्र स० ४६ । ले० काल X । वे० स० ११५ । अपूर्ण । ङ भण्डार ।

१३४० प्रति सं० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ४४१ । च भण्डार ।

१४४१ प्रति सं० ४ । पत्र स० ५१ से १७२ । ले० काल स० १८३२ । अपूर्ण । वे० स० ४४३ । च भण्डार ।

१३४२ प्रति स० ५ । पत्र स० २१७ । ले० काल स० १८२२ आसोज सुदी १२ । वे० स० ७६ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे माधोसिंह के शासनकाल मे चन्द्रप्रभु चैत्यालय मे प० चोखचन्द के शिष्य रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१३४३ प्रति स० ६ । पत्र स० २४८ । ले० काल स० १८६६ आषाढ सुदी ८ । वे० स० ५०५ । व्य भण्डार ।

१३४४ कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाभाषा—जयचन्द छाबडा । पत्र स० २३७ । आ० ११X८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र० काल सं० १८६३ सावण बुदी ३ । ले० काल स० १०२६ । पूर्ण । वे० स० ८४६ । क भण्डार ।

१३४५. प्रति सं० २ । पत्र स० २८१ । ले० काल X । वे० स० २४६ । ख भण्डार ।

१३४६ प्रति सं० ३ । पत्र स० १७६ । ले० काल सं० १८८३ । वे० स० ६५ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१३४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १२० । ङ भण्डार ।

१३४८ प्रति सं० ५ । पत्र स० १२६ । ले० काल सं० १८८४ । वे० स० १२१ । ङ भण्डार ।

१३४९ कुशलाणुबंधिअज्झुयणं ....। पत्र स० ८ । आ० १०X४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । वे० सं० १९८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

इति कुशलाणुबधिअज्झुयण समत्त । इति श्री चतुशरण टवार्थ ।

इसके अतिरिक्त राजसुन्दर तथा विजयदान सूरि विरचित ऋषभदेव स्तुतिया और हैं ।

१३५०. चक्रवर्त्तिकीबारहभावना..... । पत्र स० ४ । आ० १०½X५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५४० । च भण्डार ।

१३५१. प्रति सं० २ । पत्र स० ३ । ले० काल X । वे० स० ५४१ । च भण्डार ।

१३५२. चतुर्विधध्यान .... । पत्र सं० २ । आ० १०X४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–योग । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १५१ । झ भण्डार ।

१३५३. चिद्विलास—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र स० ४३ । आ० १२X६ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल स० १७७९ । पूर्ण । वे० स० २१ । घ भण्डार ।

१३५४. जोगीरासो—जिनदास । पत्र स० २ । आ० १०½X४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय-अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ५६१ । च भण्डार ।

१३५५. ज्ञानदर्पण—साह दीपचन्द । पत्र स० ४० । आ० १२½X४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । वे० स० २२६ । क भण्डार ।

१३५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८६४ सावण सुदी ११ । वे० सं० ३० । घ भण्डार ।

विशेष—महात्मा उम्मेद ने प्रतिलिपि की थी । प्रति दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर मे विराजमान की गई ।

१३५७. ज्ञानबावनी—बनारसीदास । पत्र सं० १० । आ० ११X५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५३१ । ङ भण्डार ।

१३५८. ज्ञानसार—मुनि पद्मसिंह । पत्र सं० १२ । आ० १०½X५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र० काल स० १०८६ सावण सुदी ९ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१८ । ङ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल वाली गाथा निम्न प्रकार है—

सिरि विक्कमस्सव्दावे दससयछासी जु यमि वहमाणेह

सावणसिय णवमीए अवयणपरीम्मकय मेयं ॥

१३५६. ज्ञानार्णव—शुभचन्द्राचार्य । पत्र स० १०५ । आ० १२३×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-योग । र० काल X । ले० काल स० १६७६ चैत्र बुदी १४ । पूर्ण । वे० स० २७४ । अ भण्डार ।

विशेष—वैराट नगर मे श्री चतुरदास ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

१३६० प्रति स० २ । पत्र स० १०३ । ले० काल स० १६५६ भादवा सुदी १३ । वे० स० ४२ । अ भण्डार ।

१३६१ प्रति सं० ३ । पत्र स० २०७ । ले० काल स० १९४२ पौष सुदी ६ । वे० स० २२० । क भण्डार ।

१३६२ प्रति स० ४ । पत्र स० २६० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २२१ । क भण्डार ।

१३६३. प्रति सं० ५ । पत्र स० १०८ । ले० काल X । वे० स० २२२ । क भण्डार ।

१३६४. प्रति सं० ६ । पत्र स० २६४ । ले० काल सं० १८३५ आषाढ सुदी ३ । वे० स० २३४ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम अधिकार की टीका नही है ।

१३६५ प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० से ८२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६२ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ६ पत्र नही हैं ।

१३६६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३१ । ले० काल X । वे० स० ३२ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१३६७ प्रति सं० ६ । पत्र स० १७६ से २०१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २२३ । ङ भण्डार ।

१३६८ प्रति स० १० । पत्र सं० २६८ । ले० काल X । वे० स० २२४ । अपूर्ण । ङ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है । हिन्दी टीका सहित है ।

१३६९ प्रति स० ११ । पत्र स० १०६ । ले० काल X । वे० स० २२५ । ङ भण्डार ।

१३७० प्रति सं० १२ । पत्र सं० ४४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २२५ । ङ भण्डार ।

१३७१. प्रतिस० १३ । पत्र स० १३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २२६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्राणायाम अधिकार तक है ।

१३७२ प्रति स० १४ । पत्र सं० १४२ । ले० काल स० १८८६ । वे० स० २२७ । ङ भण्डार ।

१३७३. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १४० । ले० काल स० १९४८ आसोज बुदी ८ । वे० स० १२४ । ङ भण्डार ।

विशेष—लक्ष्मीचन्द्र वैद्य ने प्रतिलिपि की थी ।

१३७४ प्रति स० १६ । पत्र स० १३५ । ले० काल X । वे० स० ६५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत मे संकेत भी दिये हैं।

१३७५. प्रति सं० १७ । पत्र स० १२ । ले० काल सं० १८८८ माघ सुदी ५ । वे० स० २८२ । छ भण्डार ।

विशेष—बारह भावना मात्र है।

१३७६ प्रति सं० १८ । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १५८१ फागुरण सुदी १ । वे० स० २५ । ज भण्डार ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८१ वर्षे फागुरण सुदी १ बुधवार दिने । अथ श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे जितेन्द्रिय भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे सकलविद्यानिधानयमस्वाध्यायध्यानतत्परसकलमुनिजनमध्यलब्धप्रतिष्ठाभट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवा । आवेर गए स्थानत् । कूरमवंशे महाराजाधिराजपृथ्वीराजराज्ये खण्डेलवालान्वये समस्तगोठि पचायत शास्त्र ज्ञानार्णव लिखापित त्रैपनक्रियावर्तनिवतबाइ धनाइयोगु घटापितं कर्मक्षयनिमित ।

१३७७ प्रति स० १६ । पत्र स० ११५ । ले० काल X । । वे० स० ६० । झ भण्डार ।

१३७८. प्रति स० २० । पत्र स० १०४ । ले० काल X । वे० स० १०० । ञ भण्डार ।

१३७९. प्रति सं० २१ । पत्र स० ३ से ७३ । ले० काल स० १५०१ माघ बुदी ३ । अपूर्ण । वे० स० १५३ । ञ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मजिनदास ने श्री अमरकीर्त्ति के लिए प्रतिलिपि की थी।

१३८० प्रति स० २२ । पत्र स० १३४ । ले० काल स० १७८८ । वे० स० ३७० । ञ भण्डार ।

१३८१. प्रति स० २३ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १६४१ । वे० स० १६६२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

१३८२ प्रति स० २४ । पत्र न० ६ । ले० काल स० १६०१ । अपूर्ण । वे० स० १६६३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत गद्य टीका सहित है।

१३८३. ज्ञानार्णवगद्यटीका—श्रुतसागर । पत्र स० १५ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६१६ । अ भण्डार ।

१३८४. प्रति सं० २ । पत्र स० १७ । ले० काल X । वे० स० २२५ । क भण्डार ।

१३८५ प्रति सं० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८२३ माघ सुदी १० । वे० स० २२६ । क भण्डार ।

१३८६ प्रति स० ४ । पत्र स० २ से ६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३१ । घ भण्डार ।

१३८७. प्रति स० ५ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १७४६ । जीर्ण । वे० स० २२८ । ङ भण्डार ।

विशेष—मौजमाबाद मे आचार्य कनककीर्त्ति के शिष्य प० मदाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१३८८. प्रति स० ६ । पत्र स० २ से १२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २२६ । ङ भण्डार ।

१३८९. प्रति स० ७ । पत्र सं० १२ । ले० काल स० १७८५ भादवा । वे० सं० २३० । ङ भण्डार ।

विशेष—प रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१३९० प्रति सं० ८ । पत्र स० ९ । ले० काल X । वे० स० २२१ । ञ भण्डार ।

१३९१ ज्ञानार्णवटीका—पं० नय विलास । पत्र स० २७९ । आ० १३X८ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २२७ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति शुभचन्द्राचार्यविरचितयोगप्रदीपाधिकारे पं० नयविलासेन साहू पाशा तत्पुत्र साहू टोडर तत्कुलकमल–दिवाकरसाहऋषिदासस्य श्रवणार्थं प० जिनदासो धर्मनाकारापिता मोक्षप्रकरण समाप्तं ।

१३९२ प्रति स० २ । पत्र स० ३१६ । ले० काल X । । वे० स० २२८ । क भण्डार ।

१३९३ ज्ञानार्णवटीकाभाषा—लब्धिविमलगणि । पत्र स० १५८ । आ० ११X६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–योग । र० काल स० १७२८ आसोज सुदी १० । ले० काल स० १७३० बैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० १९४ । छ भण्डार ।

१३९४ ज्ञानार्णवभाषा—जयचन्द छाबडा । पत्र स० ६९३ । आ० १३X७ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) विषय–योग । र० काल स० १८६९ माघ सुदी ५ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २२३ । क भण्डार ।

१३९५. प्रति स० २ । पत्र स० ४२० । ले० काल X । वे० स० २२४ । क भण्डार ।

१३९६ प्रति सं० ३ । पत्र स० ४२१ । ले० काल स० १८८३ सावण बुदी ७ । वे० स० ३४ । ग भण्डार ।

विशेष—शाहू जिहानाबाद मे सन्नूलाल की प्रेरणा से भाषा रचना की गई । कालूरामजी साह ने सोनपाल भावसा मे प्रतिलिपि कराके चौधरियों के मन्दिर मे चढाया ।

१३९७ प्रति स० ४ । पत्र सं० ४०८ । ले० काल X । वे० स० ५६५ । च भण्डार ।

१३९८ प्रति स० ५ । पत्र स० १०३ से २१९ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५६६ । च भण्डार ।

१३९९ प्रति सं० ६ । पत्र स० ३६१ । ले० काल स० १९११ आसोज बुदी ८ । अपूर्ण । वे० स० ५६६ । झ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २९० पत्र नही है ।

१४००. तत्त्वबोध । पत्र स० ३ । आ० १०X५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल स० १८८१ । पूर्ण । वे० स० ३१० । ज भण्डार ।

१४०१ त्रयोविंशतिका । पत्र सं० १३ । आ० १०३/४X४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १४० । च भण्डार ।

१४०२ दर्शनपाहुडभाषा ...... । पत्र सं० २६ । आ० १०३/४X८३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १८३ । छ भण्डार ।

विशेष—अष्टपाहुड का एक भाग है ।

१४०३. द्वादशभावना दृष्टान्त ...... । पत्र सं० १ । आ० १०X४३/४ इञ्च । भाषा-गुजराती । विषय-अध्यात्म । र० काल X । ले० काल सं० १७०७ बैशाख बुदी १ । वे० सं० २२१७ । अ भण्डार ।

विशेष—जालोर मे श्री हसकुशल ने प्रतापकुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१४०४. द्वादशभावनाटीका ...... । पत्र सं० ६ । आ० ११X८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६५५ । ट भण्डार ।

विशेष—कुन्दकुन्दाचार्य कृत मूल गाथायें भी दी हैं ।

१४०५ द्वादशानुप्रेक्षा ...... । पत्र सं० २० । आ० १०३/४X४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६८५ । ट भण्डार ।

१४०६ द्वादशानुप्रेक्षा—सकलकीर्ति । पत्र सं० ४ । आ० १०३/४X५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ८४ । अ भण्डार ।

१४०७ द्वादशानुप्रेक्षा ...... । पत्र सं० १ । आ० १०X४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ८४ । अ भण्डार ।

१४०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० १६१ । ञ भण्डार ।

१४०९. द्वादशानुप्रेक्षा—कविछत्र । पत्र सं० ८३ । आ० १२३/४X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-अध्यात्म । र० काल सं० १९०७ भादवा बुदी १३ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३६ । क भण्डार ।

१४१०. द्वादशानुप्रेक्षा—साह आलू । पत्र सं० ४ । आ० ६३/४X४३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १६०४ । ट भण्डार ।

१४११. द्वादशानुप्रेक्षा ...... । पत्र सं० १३ । आ० १०X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५२८ । ङ भण्डार ।

१४१२ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० ६३ । ञ भण्डार ।

१४१३. पञ्चतत्त्वधारणा ...... । पत्र सं० ७ । आ० ६३/४X४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-योग । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २२३२ । अ भण्डार ।

१४१४. पन्द्रहतिथी । पत्र स० ४ । आ० १०३×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३१ । ङ भण्डार ।

विशेष—भूधरदास कृत एकीभावस्तोत्र भाषा भी है ।

१४१५. परमात्मपुराण—दीपचन्द । पत्र स० २४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १८६४ सावन सुदी ११ । पूर्ण । घ भण्डार ।

विशेष—महात्मा उमेद ने प्रतिलिपि की थी ।

१४१६. प्रति स० २ । पत्र स० २ से २२ । ले० काल स० १८४३ आसोज बुदी २ । अपूर्ण । वे० स० ६२६ । च भण्डार ।

१४१७. परमात्मप्रकाश—योगीन्द्रदेव । पत्र स० १३ से १४४ । आ० १०×५३ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-अध्यात्म । र० काल १०वी शताब्दी । ले० काल स० १७६६ आसोज सुदी २ । अपूर्ण । वे० स० २०८३ । अ भण्डार ।

विशेष—खुशालचन्द चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४१८. प्रति स० २ । पत्र सं० ६७ । ले० काल स० १६३५ । वे० स० ४४५ । क भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे टीका भी है ।

१४१९. प्रति सं० ३ । पत्र स० ७६ । ले० काल स० १६०४ श्रावण बुदी १३ । वे० स० ५७ । घ भण्डार । सस्कृत टीका सहित है ।

विशेष—ग्रन्थ स० ४००० श्लोक । अन्तिम ६ पृष्ठो मे बहुत बारीक लिपि है ।

१४२०. प्रति स० ४ । पत्र स० १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३४ । ङ भण्डार ।

१४२१. प्रति सं० ५ । पत्र स० २ से १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३५ । ङ भण्डार ।

१४२२. प्रति सं० ६ । पत्र स० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६ । च भण्डार

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

१४२३. प्रति सं० ७ । पत्र स० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१० । च भण्डार ।

१४२४. प्रति सं० ८ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १८३० वैसाख बुदी ३ । वे० स० ८२ । ञ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे शुभचन्द्रजी के शिष्य चोखचन्द तथा उनके शिष्य प० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की । संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द भी दिये हुए है ।

१४२५. परमात्मप्रकाशटीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र स० ६६ से २४५ । आ० १०३×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३३ । ङ भण्डार ।

१४२६. प्रति स० २ । पत्र स० १३६ । ले० काल × । वे० स० ४५३ । ञ भण्डार ।

१४२७ प्रति सं० ३ । पत्र स० १४८ । ले० काल सं० १७६७ पौष सुदी ५ । वे सं० ४५४ । अ भण्डार ।

विशेष—मायाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४२८ परमात्मप्रकाशटीका—ब्रह्मदेव । पत्र स० १६४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७६ । अ भण्डार ।

१४२९. प्रति सं० २ । पत्र स० ८ से १४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है ४४ चित्र हैं ।

१४३०. परमात्मप्रकाशटीका । पत्र स० १६३ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १६५८ द्वि० श्रावण सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ४४७ । क भण्डार ।

१४३१. परमात्मप्रकाशटीका । पत्र स० ६७ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८६० कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० २०७ । च भण्डार ।

१४३२. प्रति सं० २ । पत्र स० २६ से १०१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०८ । च भण्डार ।

१४३३. परमात्मप्रकाशटीका । पत्र सं० १७० । आ० ११½×५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १६६६ मगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४४६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है । विजयराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४३४ परमात्मप्रकाशभाषा—दौलतराम । पत्र स० ४४४ । आ० ११×६ । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल स० १६३८ । पूर्ण । वे० स० ४४६ । क भण्डार ।

विशेष—मूल तथा ब्रह्मदेव कृत सस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१४३५. प्रति सं० २ । पत्र स० २३० से २४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३६ । ङ भण्डार

१४३६ प्रति सं० ३ । पत्र स० २४७ । ले० काल स० १६५० । वे० स० ४३७ । ङ भण्डार ।

१४३७. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६० से १६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६३८ । च भण्डार ।

१४३८. प्रति सं० ५ । पत्र स० ३२४ । ले० काल × । वे० स० १६२ । छ भण्डार ।

१४३९. परमात्मप्रकाशबालावबोधिनीटीका—खानचन्द । पत्र स० २४१ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र० काल स० १६३६ । पूर्ण । वे० स० ४४८ । क भण्डार ।

विशेष—यह टीका मुल्तान मे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे लिखी गई थी इसका उल्लेख स्वय टीकाकार ने किया है ।

१४४०. परमात्मप्रकाशभाषा—नथमल । पत्र स० २१ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-अध्यात्म । र० काल स० १६१६ चैत्र बुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४४० । क भण्डार ।

१४४१. प्रति स० २ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १६४८ । वे० स० ४४१ । क भण्डार ।

१४४२ प्रति स० २ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । वे० स० ४४२ । क भण्डार ।

१४४३. प्रति स० ४ । पत्र स० २ से १५ । ले० काल स० १६३७ । वे० स० ४४३ । क भण्डार ।

१४४४ परमात्मप्रकाशभाषा—सूरजभान ओसवाल । पत्र स० १५४ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल स० १८४३ आषाढ बुदी ७ । ले० काल स० १६५२ मगसिर बुदी १० । पूर्ण । वे० स० ४४४ । क भण्डार ।

१४४५ परमात्मप्रकाशभाषा ' ' । पत्र स० ६५ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । वे० स० ११६० । अ भण्डार ।

१४४६ परमात्मप्रकाशभाषा '' । पत्र स० ५६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६२७ । च भण्डार ।

१४४७ परमात्मप्रकाशभाषा । पत्र स० ६३ से १०८ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ४३२ । ङ भण्डार ।

१४४८. प्रवचनसार—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र स० ४७ । आ० १२×४¾ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल प्रथम शताब्दी । ले० काल स० १६४० माघ सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ५०८ । क भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है ।

१४४६ प्रति सं० २ । पत्र स० ३८ । ले० काल X । वे० स० ५१० ।

१४५०. प्रति सं० ३ । पत्र स० २० । ले० काल सं० १८६६ भादवा बुदी ५ । वे० स० २३८ । च भण्डार ।

१४५१ प्रति स० ४ । पत्र स० २८ । ले० काल X । अपूर्ण । । वे० स० २३६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

१४५२ प्रति स० ५ । पत्र स० २२ । ले० काल स० १८६७ बैशाख बुदी ६ । वे० स० २४० । च भण्डार ।

विशेष—परागदास मोहा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

१४५३ प्रति स० ६ । पत्र स० १३ । ले० काल X । वे० स० १४८ । ज भण्डार ।

१४५४ प्रवचनसारटीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र स० ६७ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल १०वी शताब्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १०६ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

१४५५ प्रति स० २ । पत्र स० ११८ । ले० काल X । वे० स० ८५२ । अ भण्डार ।

१४ ६ प्रति स० ३ । पत्र स० २ से ६० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७८५ । अ भण्डार ।

१४५७ प्रति स० ४ । पत्र स० १०१ । ले० काल X । वे० स० ८१ । अ भण्डार ।

१४५८ प्रति स० ५ । पत्र स० १०८ । ले० काल स० १८६८ । वे० स० ५०७ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा देवकर्ण ने जयनगर मे प्रतिलिपि की थी ।

१४५९. प्रति सं० ६ । पत्र स० २३६ । ले० काल सं० १९३८ । वे० स० ५०६ । क भण्डार ।

१४६० प्रति सं० ७ । पत्र स० ८७ । ले० काल X । वे० स० २६५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१४६१ प्रति सं० ८ । पत्र स० २०२ । ले० काल स० १७४७ फागुण बुदी ११ । वे० स० ५११ । ङ भण्डार ।

१४६२ प्रति स० ९ । पत्र स० १६२ । ले० काल स० १९४० भादवा बुदी ३ । वे० स० ९१ । ज भण्डार ।

विशेष—प० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६३ प्रवचनसारटीका । पत्र स० ४१ । आ० ११X६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५१० । ङ भण्डार ।

विशेष—प्राकृत मे मूल संस्कृत मे छाया तथा हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

१४६४ प्रवचनसारटीका । पत्र स० १२१ । आ० १२X५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल स० १८५७ आषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ५०९ । क भण्डार ।

१४६५ प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति । पत्र स० ५१ से १३१ । आ० १२X५३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल स० १७९५ । अपूर्ण । वे० स० ७८३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ५० पत्र नही हैं । महाराजा जयसिंह के शासनकाल मे नेवटा मे महात्मा हरिकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६६ प्रवचनसारभाषा—पांडे हेमराज । पत्र स० ८३ से ३०५ । आ० १२X५३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल स० १७०९ माघ सुदी ५ । ले० काल स० १७२५ । अपूर्ण । वे० स० ४३२ । अ भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे ओसवाल गूजरमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६७ प्रति स० २ । पत्र स० २६७ । ले० काल स० १९४३ । वे० सं० ५१३ । क भण्डार ।

१४६८ प्रति स० ३ । पत्र स० १७३ । ले० काल X । वे० सं० ५१२ । क भण्डार ।

१४६९. प्रति सं० ४ । पत्र स० १०१ । ले० काल स० १९२७ फागुण बुदी ११ । वे० सं० ६३ । घ भण्डार ।

विशेष—प० परमानन्द ने दिल्ली मे प्रतिलिपि की थी ।

१४७० प्रति स० ५ । पत्र स० १७६ । ले० काल स० १७४३ पौष सुदी २ । वे० सं० ५१३ । ङ भण्डार ।

१४७१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २४१ । ले० काल स० १८६३ । वे० स० ६४१ । च भण्डार ।

१४७२ प्रति सं० ७। पत्र सं० १८४। ले० काल स० १८८३ कार्त्तिक बुदी २। वे० स० १६३। छ भण्डार।

विशेष—लवाण निवासी अमरचन्द के पुत्र महात्मा गणेश ने प्रतिलिपि की थी।

१४७३ प्रवचनसारभाषा—जोधराज गोदीका। पत्र स० ३८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-अध्यात्म। र० काल स० १७२६। ले० काल स० १७३० आषाढ सुदी १५। पूर्ण। वे० स० ६४४। च भण्डार।

१४७४ प्रवचनसारभाषा—वृन्दावनदास। पत्र स० २१७। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल स० १९३३ ज्येष्ठ बुदी २। पूर्ण। वे० स० ५११। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ के अन्त मे वृन्दावनदास का परिचय दिया है।

१४७५ प्रवचनसारभाषा ...। पत्र स० ८६। आ० ११×६¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ५१२। ङ भण्डार।

१४७६. प्रति स० २। पत्र स० ३०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६४२। च भण्डार।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है।

१४७७. प्रवचनसारभाषा । पत्र स० १२। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १९२२। ट भण्डार।

१४७८. प्रवचनसारभाषा...। पत्र स० १४५ से १८५। आ० ११¾×७¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल स० १८६७। अपूर्ण। वे० स० ६४५। च भण्डार।

१४७९ प्रवचनसारभाषा । पत्र स० २३२। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल स० १९२६। वे० स० ६४३। च भण्डार।

१४८० प्राणायामशास्त्र । पत्र स० ६। आ० ६½×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-योगशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६५६। अ भण्डार।

१४८१ बारह भावना—रइधू। पत्र स० ५। आ० ८½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २४१। छ भण्डार।

विशेष—लिपिकार ने रइधू कृत बारह भावना होना लिखा है।

प्रारम्भ—ध्रुववस्त निश्चल सदा अध्रुभाव परजाय।
स्कदरूप जो देखिये पुद्गल तणो विभाव॥

अन्तिम—...र कहाणी ज्ञान की कहन सुनन की नाहि।
आपनही मे पाइये जब देखे घटमाहि॥
इति श्री रइधू कृत बारह भावना सपूर्ण।

१४८२ बारहभावना ''''' । पत्र सं० १५ । आ० ६३/४×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चिन्तन र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५२६ । ङ भण्डार ।

१४८३ प्रति स० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० स० ६८ । झ भण्डार ।

१४८४ बारहभावना—भूधरदास । पत्र स० १ । आ० ६३/४×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चिंतन र० काल × । ले० काल × । वे० स० १२४७ । ञ भण्डार ।

विशेष—पार्श्वपुराण से उद्धृत है ।

१४८५ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० २५२ । ख भण्डार ।

विशेष—इसका नाम चक्रवर्त्ति की बारह भावना है ।

१४८६ बारहभावना—नवलकवि । पत्र स० २ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चिंतन र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३० । ङ भण्डार ।

१४८७. बोधप्राभृत—आचार्य कुंदकुंद । पत्र स० ७ । आ० ११×४३/४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३५ ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१४८८. भववैराग्यशतक । पत्र स० १५ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म र० काल × । ले० काल स० १८२४ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४५५ । ञ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१४८९. भावनाद्वात्रिंशिका '' । पत्र स० २६ । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५५७ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह और है । यतिभावनाष्टक, पद्मनन्दिपचविंशतिका और तत्त्वार्थसूत्र प्रति स्वर्णाक्षरो मे है ।

१४९०. भावनाद्वात्रिंशिकाटीका'' '' । पत्र स० ४६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × ० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६८ । ङ भण्डार ।

१४९१ भावपाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र स० ९ । आ० १४×५१/२ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३० । ज भण्डार ।

विशेष—प्राकृत गाथाओ पर संस्कृत श्लोक भी है ।

१४९२. मृत्युमहोत्सव । पत्र स० १ । आ० १११/२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४१ । अ भण्डार ।

१४९३ मृत्युमहोत्सवभाषा—सदासुख । पत्र स० २२ । आ० ६३/४×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल स० १९१८ आषाढ सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८० । घ भण्डार ।

१४९४. प्रति सं० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० ६०४ । ङ भण्डार ।

१४६५ प्रति सं० ३ । पत्र स० १० । ले० काल X । वे० स० १८४ । छ भण्डार ।

१४६६. प्रति स० ४ । पत्र स० ११ । ले० काल X । वे० सं० १८४ । छ भण्डार ।

१४६७ प्रति स० ५ । पत्र स० १० । ले० काल X । वे० स० १६५ । भ भण्डार ।

१४६८. योगबिंदुप्रकरण—आ० हरिभद्रसूरि । पत्र स० १८ । आ० १०X४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–योग । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २६२ । अ भण्डार ।

१४६६. योगभक्ति ''' । पत्र स० ६ । आ० १२X५½ इ च । भाषा–प्राकृत । विषय–योग । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६१५ । ङ भण्डार ।

१५०० योगशास्त्र—हेमचन्द्रसूरि । पत्र स० २५ । आ० १०X४½ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–योग । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ८६३ । अ भण्डार ।

१५०१. योगशास्त्र ' ' । पत्र स० ६४ । आ० १०X४½ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय-योग । र० काल X । ले० काल स० १७०५ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वे० स० ८२६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

१५०२ योगसार—योगीन्द्रदेव । पत्र स० १२ । आ० ६X४ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल सं० १८०४ । अपूर्ण । वे० स० ८२ । अ भण्डार ।

विशेष—सुखराम छावडा ने प्रतिलिपि की थी ।

१५०३. प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १९३४ । वे० स० ६०६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत छाया सहित है ।

१५०४ प्रति स० ३ । पत्र स० १५ । ले० काल X । वे० स० ६०७ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१५०५ प्रति सं० ४ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १८१३ । वे० स० ६१६ । ङ भण्डार ।

१५०६. प्रति स० ५ । पत्र स० २६ । ले० काल X । वे० स० ३१० । छ भण्डार ।

१५०७ प्रति स० ६ । पत्र स० ११ । ले० काल स० १८८२ चैत्र सुदी ४ । वे० स० २८२ । च भण्डार ।

१५०८ प्रति स० ७ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८०४ आसोज बुदी ३ । वे० स० ३३६ । ञ भण्डार ।

१५०९ प्रति सं० ८ । पत्र स० ५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५१६ । ञ भण्डार ।

१५१० योगसारभाषा—नन्दराम । पत्र स० ५७ । आ० १२½X४¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल स० १९०४ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६११ । क भण्डार ।

विशेष—आगरे मे ताजगञ्ज मे भाषा टीका लिखी गई थी ।

१५११ योगसारभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० ३३ । आ० १२X७ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल स० १९३२ सावन सुदी ११ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६०९ । क भण्डार ।

१५१२. प्रति सं० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल X । वे० सं० ६१० । क भण्डार ।

१५१३. प्रति स० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल X । वे० सं० ६१७ । ङ भण्डार ।

१५१४. योगसारभाषा—पं० बुधजन । पत्र सं० १० । आ० ११X७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १८९५ सावरण सुदी २ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६०८ । क भण्डार ।

१५१५. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । ले० काल X । वे० सं० ७४१ । च भण्डार ।

१५१६. योगसारभाषा……। पत्र सं० ६ । आ० ११X६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६१८ । ङ भण्डार ।

१५१७. योगसारसंग्रह…… । पत्र स० १८ । आ० १०X४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–योग । र० काल X । ले० काल सं० १७५० कात्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ७१ । ज भण्डार ।

१५१८. रूपस्थध्यानवर्णन……। पत्र सं० २ । आ० १०½X५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६५६ । ङ भण्डार ।

'धर्म्मनाथस्तुवे धर्ममय सद्धर्मसिद्धये ।
धीमता धर्मदातारं धर्मचक्रप्रवर्त्तक ।।

१५१९. लिंगपाहुड़—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० ११ । आ० १२X५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । छ भण्डार ।

विशेष—शील पाहुड तथा गुरावली भी है ।

१५२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६६ । भ भण्डार ।

१५२१. वैराग्यशतक—भर्तृहरि । पत्र स० ७ । आ० १२X५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । च भण्डार ।

१५२२. प्रति सं० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १८८५ सावरण बुदी ६ । वे० सं० ३३७ । च भण्डार ।

विशेष—बीच मे कुछ पत्र कटे हुये हैं ।

१५२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१ । ले० काल X । वे० स० १४३ । ञ भण्डार ।

१५२४. षटपाहुड (प्राभृत)—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० २ से २४ । आ० १०X४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७ । अ भण्डार ।

१२२५. प्रति सं० २ । पत्र स० ५२ । ले० काल स० १८५४ मगसिर सुदी १५ । वे० स० १८८ । अ भण्डार ।

१५२६. प्रति सं० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १८१७ माघ बुदी ६ । वे० सं० ७१४ । क भण्डार ।

विशेष—नरायणा (जयपुर) मे प० रूपचन्दजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१५२७. प्रति सं० ४ | पत्र स० ४२ | ले० काल स० १८१७ कार्त्तिक बुदी ७ | वे० स० १६५ | ख भण्डार |

विशेष—सस्कृत पद्यो मे भी अर्थ दिया है |

१५२८. प्रति सं० ५ | पत्र स० ६ | ले० काल X | वे० स० २८० ख भण्डार |

१५२९. प्रति सं० ६ | पत्र स० ३५ | ले० काल X | वे० स० १६७ | ख भण्डार |

१५३०. प्रति सं० ७ | पत्र स० ३१ से ५५ | ले० काल X | अपूर्ण | वे० स० ७३७ | ङ भण्डार |

१५३१ प्रति सं० ८ | पत्र स० २६ | ले० काल X | अपूर्ण | वे० स० ७३८ | ङ भण्डार |

१५३२ प्रति सं० ९ | पत्र स० २७ से ६५ | ले० काल X | अपूर्ण | वे० स० ७३९ | ङ भण्डार |

१५३३ प्रति सं० १० | पत्र सं० ५४ | ले० काल X | वे० स० ७४० | ङ भण्डार |

१५३४. प्रति सं० ११ | पत्र स० ६३ | ले० काल X | वे० स० ३५७ | च भण्डार |

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है |

१५३५ प्रति स० १२ | पत्र स० २० | ले० काल स० १५१६ चैत्र बुदी १३ | वे० स० ३८० | ञ भण्डार |

१५३६ प्रति सं० १३ | पत्र स० २९ | ले० काल X | वे० स० १८४६ | ट भण्डार |

१५३७ प्रति सं० १४ | पत्र स० ५२ | ले० काल स० १७१५ | वे० स० १८४७ | ट भण्डार |

विशेष—नयनपुर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे ब्र० सुखदेव के पठनार्थ मनोहरदास ने प्रतिलिपि की थी |

१५३८ प्रति स० १५ | पत्र स० १ से ८३ | ले० काल X | अपूर्ण | वे० स० २०८५ | ट भण्डार |

विशेष—निम्न प्राभृत है– दर्शन, सूत्र, चारित्र | चारित्र प्राभृत की ४५ गाथा से आगे नही है | प्रति प्राचीन एव सस्कृत टीका सहित है |

१५३९ षट्पाहुडटीका ' | पत्र स० ५१ | आ० १२X६ इञ्च | भाषा-सस्कृत | विषय-अध्यात्म | र० काल X | ले० काल X | पूर्ण | वे० स० ५६ | अ भण्डार |

१५४०. प्रति सं० २ | पत्र स० ४२ | ले० काल X | वे० स० ७१३ | क भण्डार |

१५४१ प्रति स० ३ | पत्र स० ५१ | ले० काल स० १८८० फागुण सुदी ८ | वे० स० १९६ | ख भण्डार |

विशेष—पं० स्वरूपचन्द के पठनार्थ भावनगर मे प्रतिलिपि हुई |

१५४२ प्रति सं० ४ | पत्र स० ९४ | ले० काल स० १८२५ ज्येष्ठ सुदी १० | वे० स० २५८ | ञ भण्डार |

१५४३. षटपाहुडटीका—श्रुतसागर। पत्र सं० २६५। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७१२। क भण्डार।

१५४४ प्रति सं० २। पत्र स० २६६। ले० काल सं० १८६३ माह बुदी ६। वे० स० ७४१। ङ भण्डार।

१५४५ प्रति सं० ३। पत्र स० १५२। ले० काल सं० १७६५ माह बुदी १०। वे० सं० ६२। छ भण्डार।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी।

१५४६. प्रति स० ४। पत्र स० १११। ले० काल सं० १७३६ द्वि० चैत्र सुदी १५। वे० स० ६। ञ

विशेष—श्रीलालचन्द के पठनार्थ आमेर नगर मे प्रतिलिपि की गई थी।

१५४७. प्रति सं० ५। पत्र स० १७१। ले० काल स० १७६७ श्रावण सुदी ७। वे० स० ६८। ञ भण्डार।

विशेष—विजयराम तोतूका की धर्मपत्नी विजय शुभदे ने प० गोरधनदास के लिए ग्रन्थ की प्रतिलिपि करायी थी।

१५४८ संबोधअक्षरबावनी—द्यानतराय। पत्र सं० ५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६६०। च भण्डार।

१५४६ संबोधपंचासिका—गौतमस्वामी। पत्र स ४। आ० ८×४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल स० १८४० बैशाख सुदी ४। पूर्ण। वे० स० ३६४। च भण्डार।

विशेष—बाणपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१५५० समयसार—कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र स० २३। आ० १०×५ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल स० १५६४ फागुण सुदी १२। पूर्ण। वृत स० २६३ सर्व भवति। वे० सं० १८१। अ भण्डार।

विशेष–प्रशस्ति—सवत् १५६४ वर्षे फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे १२ द्वादशीतिथौ रवौवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्री मूलसघे नदिसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र-देवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्यमडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवास्तत्मुख्यशिष्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रदेवास्तैरिमानि नाटकसमयसारवृतानि लिखापितानि स्वपठनार्थं।

१५५१. प्रति सं० २। पत्र सं० ४०। ले० काल ×। वे० स० १८६। अ भण्डार।

१५५२. प्रति सं० ३। पत्र स० २६। ले० काल ×। वे० स० २७३। अ भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायान्तर दिया हुआ है। दीवान नवनिधिराम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी।

१५५३. प्रति सं० ४। पत्र स० १६। ले० काल स० १६४२। वे० स० ७३४। क भण्डार।

१५५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० स० ७३५ । क भण्डार ।

विशेष—गाथाओं पर ही संस्कृत मे अर्थ है ।

१५५५. प्रति सं० ६ । पत्र स० ७० । ले० काल × । वे० स० १०८ । घ भण्डार ।

१५५६. प्रति सं० ७ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १८७७ वैशाख बुदी ५ । वे० सं० ३६६ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१५५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३६७ । च भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१५५८ प्रति सं० ६ । पत्र स० ५२ । ले० काल × । वे० सं० ३६७ क । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है ।

१५५६. प्रति सं० १० । पत्र स० ३ से १३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३६८ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ८५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३६८ क । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६१. प्रति सं० १२ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ३७० । च भण्डार ।

१५६२ प्रति सं० १३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० स० ३७१ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६३. प्रति सं० १४ । पत्र स० ३३ । ले० काल सं० १५६३ पौष बुदी ६ । वे० सं० २१४० । ट भण्डार ।

१५६४ समयसारकलशा—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० १२२ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १७४३ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १७३ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १७४३ वर्षे आसोज मासे शुक्लपक्षे द्वितिया २ तिथौ गुरुवासरे श्रीमल्कामानगरे श्रीश्वेताम्बरशालाया श्रीमद्विजयगच्छे भट्टारक श्री १०८ श्री कल्याणसागरसूरिजी तत् शिष्य ऋषिराज श्री जयवंतजी तत् शिष्य ऋषि लक्ष्मणेन पठनाय लिपिचक्रे शुभ भवतु ।

१५६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८४ । ले० काल स० १६६७ आषाढ सुदी ७ । वे० स० १३३ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज जयसिंहजी के शासनकाल मे आमेर मे प्रतिलिपि हुई थी । प्रशस्ति निम्न प्रकार है–

संवत् १६६७ वर्षे अषाढ वदि सप्तम्या शुक्रवासरे महाराजाधिराज श्री जैसिंहजी प्रतापे अबावतीमध्ये लिखाइत संघी श्री मोहनदासजी पठनार्थं । लिखित जोशी आलिराज ।

१५६६. प्रति सं० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल X । वे० स० १६२ । अ भण्डार ।

१५६७ प्रति सं० ४ । पत्र स० ४१ । ले० काल X । वे० स० २१५ । अ भण्डार ।

१५६८. प्रति सं० ५ । पत्र स० ७६ । ले० काल स० १६४३ । वे० सं० ७३६ । क भण्डार ।

विशेष—सरल सस्कृत मे टीका दी है तथा नीचे श्लोको की टीका है ।

१५६९. प्रति सं० ६ । पत्र स० १२४ । ले० काल X । वे० स० ७३७ । क भण्डार ।

१५७० प्रति सं० ७ । पत्र स० ६४ । ले० काल सं० १८६७ भादवा सुदी ११ । वे० स० ७३८ । क भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे महात्मा देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

१५७१. प्रति सं० ८ । पत्र स० २३ । ले० काल X । वे० सं० ७३६ । अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१५७२ प्रति सं० ६ । पत्र स० ३५ । ले० काल X । वे० सं० ७४४ । अ भण्डार ।

विशेष—कलशो पर भी सस्कृत मे टिप्पण दिया है ।

१५७३. प्रति स० १० । पत्र सं० २४ । ले० काल X । वे० स० ११० । घ भण्डार ।

१५७४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ७६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३७१ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है परन्तु पत्र ५६ से सस्कृत टीका नही है केवल श्लोक ही हैं ।

१५७५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २ से ४७ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३७२ । च भण्डार ।

१५७६. प्रति स० १३ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १७१६ कार्त्तिक सुदी २ । वे० सं० ६१ । छ भण्डार ।

विशेष—उज्जैन मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१५७७' प्रति सं० १४ । पत्र सं० ५३ । ले० काल X । वे० सं० ८७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

१५७८. प्रति सं० १५ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १६१४ पौष बुदी ८ । वे० सं० २०५ । ज भण्डार ।

विशेष—बीच के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं ।

१५७९. प्रति सं० १६ । पत्र स० ५६ । ले० काल X । वे० सं० १६१४ । ट भण्डार ।

१५८०. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८२२ । वे० स० १६६२ । ट भण्डार ।

विशेष—ब्र० नेतसीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१५८१. समयसारटीका (आत्मख्याति)—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० १३५ । आ० १०३X४३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल X । ले० काल सं० १८३३ माह बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २ । अ भण्डार ।

१५८२ प्रति सं० २ । पत्र स० ११६ । ले० काल स० १७०३ । वे० स० १०४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति-सवत् १७०३ मार्गसिर कृष्णापष्ठ्या तिथौ बुद्धवारे लिखितेयम् ।

१५८३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ । ले० काल X । वे० स० ३ । अ भण्डार ।

१५८४ प्रति सं० ४ । पत्र स० १० से ४९ । ले० काल X । वे० स० २००३ । अ भण्डार ।

१५८५ प्रति स० ५ । पत्र सं० ९९ । ले० काल स० १७०३ वैशाख वुदी १० । वे० स० २२९ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति —स० १७०३ वर्षे वशाख कृष्णादशम्या तिथौ लिखितम् ।

१५८६ प्रति स० ६ । पत्र स० ३१६ । ले० काल स० १९३८ । वे० स० ७४० । क भण्डार ।

१५८७ प्रति सं० ७ । पत्र स० १३८ । ले० काल स० १९५७ । वे० स० ७४१ । क भण्डार ।

१५८८ प्रति सं० ८ । पत्र स० १०२ । ले० काल स० १७०६ । वे० स० ७४२ । क भण्डार ।

विशेष—भगवत दुवे ने सिरोज ग्राम मे प्रतिलिपि की थी ।

१५८९ प्रति सं० ९ । पत्र स० ५३ । ले० काल X । वे० स० ७४३ । क भण्डार ।

१५९० प्रति सं० १० । पत्र स० १६५ । ले० काल X । वे० स० ७४५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१५९१ प्रति स० ११ । पत्र स० १७९ । ले० काल स० १६४८ वैशाख सुदी ५ । वे० स० १०९ । घ भण्डार ।

विशेष—अकबर वादशाह के शासनकाल मे मालपुरा मे लेखक सूरि श्वेताम्वर मुनि जेमा ने प्रतिलिपि की थी । नीचे निम्नलिखित पंक्तिया और लिखी हैं—

'पाडे खेतु सेठ तत्र पुत्र पाडे पारसु पोथी देहुरे ।

घाली स० १६७३ तत्र पुत्र वीसाखानन्द कवहर ।

बीच मे कुछ पत्र लिखवाये हुये हैं ।

१५९२. प्रति सं० १२ । पत्र स० १९८ । ले० काल स० १९१८ माघ सुदी १ । वे० स० ७५ । ज भण्डार ।

विशेष—सगही पन्नालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । ११२ से १७० तक नीले पत्र हैं ।

१५९३ प्रति सं० १३ । पत्र सं० २५ । ले० काल स० १७३० मगसिर सुदी १५ । वे० स० १०९ । व भण्डार ।

१५९४. समयसार वृत्ति । पत्र स० ४ । आ० ८½X५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १०७ । घ भण्डार ।

१५९५. समयसारटीका । पत्र स० ८१ । आ० १०½X५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७६६ । ङ भण्डार ।

१५९६. समयसारनाटक—बनारसीदास। पत्र सं० ९७। आ० ६½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल सं० १६९३ आसोज सुदी १३। ले० काल सं० १८३८। पूर्ण। वे० सं० ४०९। अ भण्डार।

१५९७ प्रति सं० २। पत्र सं० ७२। ले० काल सं० १८९७ फागुण सुदी ६। वे० सं० ४०९। अ भण्डार।

विशेष—आगरे मे प्रतिलिपि हुई थी।

१५९८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०६९। अ भण्डार।

१५९९. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ९८४। अ भण्डार।

१६००. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४ से ११५। ले० काल सं० १७८९ फागुण सुदी ४। वे० सं० ११२८ अ भण्डार।

१६०१ प्रति सं० ६। पत्र सं० १८४। ले० काल सं० १९३० ज्येष्ठ बुदी १५। वे० सं० ७४६। क भण्डार।

विशेष—पद्यो के बीच में सदासुख कासलीवाल कृत हिन्दी गद्य टीका भी दी हुई है। टीका रचना सं० १९१४ कार्तिक सुदी ७ है।

१६०२ प्रति सं० ७। पत्र सं० १११। ले० काल सं० १९५६। वे० सं० ७४७। क भण्डार।

१६०३. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४ से ५९। ले० काल ×। वे० सं० २०८। ख भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नही हैं।

१६०४. प्रति सं० ९। पत्र सं० ८७। ले० काल सं० १८८७ माघ सुदी ८। वे० सं० ८४। ग भण्डार।

१६०५. प्रति सं० १०। पत्र सं० ३९९। ले० काल सं० १९२० बैशाख सुदी १। वे० सं० ८५। ग भण्डार।

विशेष—प्रति गुटके के रूप मे है। लिपि बहुत सुन्दर है। अक्षर मोटे हैं तथा एक पत्र मे ५ लाइन और प्रति लाइन में १८ अक्षर हैं। पद्यो के नीचे हिन्दी अर्थ भी है। विस्तृत सूचीपत्र २१ पत्रो मे है। यह ग्रन्थ तनसुख सोनी का है।

१६०६. प्रति सं० ११। पत्र सं० २८ से १११। ले० काल सं० १७१४। अपूर्ण। वे० सं० ७६७। ङ भण्डार।

विशेष—रामगोपाल कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी।

१६०७. प्रति सं० १२। पत्र सं० १२२। ले० काल सं० १९५१ चैत्र सुदी २। वे० सं० ७६८। ङ भण्डार।

विशेष—म्होरीलाल ने प्रतिलिपि कराई थी।

१६०८ प्रति सं० १३। पत्र सं० १०१। ले० काल सं० १९४३ मगसिर बुदी १३। वे० सं० ७६९। ङ भण्डार।

विशेष—लक्ष्मीनारायण ब्राह्मण ने जयनगर मे प्रतिलिपि की थी।

१६०६. प्रति स० १४। पत्र स० १६०। ले० काल सं० १६७७ प्रथम सावण सुदी १३। वे० सं० ७७०। ङ भण्डार।

विशेष—हिन्दी गद्य मे भी टीका है।

१६१०. प्रति सं० १५। पत्र स० १०। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ७७१। ङ भण्डार।

१६११. प्रति सं० १६। पत्र स० २ से २२। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ३५७। ङ भण्डार।

१६१२. प्रति स० १७। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १७६३ आषाढ सुदी १५। वे० स० ७७२। ङ भण्डार।

१६१३. प्रति सं० १८। पत्र सं० ६०। ले० काल सं० १८३४ मगसिर बुदी ६। वे० सं० ६६२। च भण्डार।

विशेष—पाडे नानगराम ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि कराई

१६१४. प्रति सं० १६। पत्र स० ६०। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ६६५। च भण्डार।

१६१५. प्रति सं० २०। पत्र स० ४१ से १३२। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ६६५ (क)। च भण्डार।

१६१६. प्रति स० २१। पत्र सं० १३। ले० काल X। वे० सं० ६६५ (ख)। च भण्डार।

१६१७. प्रति सं० २२। पत्र सं० २६। ले० काल X। वे० सं० ६६५ (ग)। च भण्डार।

१६१८. प्रति सं० २३। पत्र सं० ४० से ५०। ले० काल स० १७०४ ज्येष्ठ सुदी २। अपूर्ण। वे० स० ६२ (अ)। छ भण्डार।

१६१६. प्रति सं० २४। पत्र स० १८३। ले० काल सं० १७८८ आषाढ़ बुदी २। वे० स० ३। ज भण्डार।

विशेष—भिण्ड निवासी किसी कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी।

१६२०. प्रति सं० २५। पत्र सं० ४ से ८१। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० १५२६। ट भण्डार।

१६२१. प्रति सं० २६। पत्र स० ३६। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० १७०८। ट भण्डार।

१६२२. प्रति सं० २७। पत्र सं० २३७। ले० काल स० १७४६। वे० स० १६०६। ट भण्डार।

विशेष—प्रति राजमल्लकृत गद्य टीका सहित है।

१६२३. प्रति स० २८। पत्र स० ६०। ले० काल X। वे० स० १८६०। ट भण्डार।

१६२४. समयसारभाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र स० ५१३। आ० १३X८ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-अध्यात्म। र० काल स० १८६४ कार्तिक बुदी १०। ले० काल सं० १६४६। पूर्ण। वे० स० ७४८। क भण्डार।

१६२५. प्रति सं० २। पत्र सं० ४६६। ले० काल X। वे० सं० ७४६। क भण्डार।

१६२६. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१६। ले० काल X। वे० सं० ७५०। क भण्डार।

१६२७. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३२५ । ले० काल सं० १८८३ । वे० स० ७५२ । क भण्डार ।

विशेष—सदासुखजी के पुत्र स्योचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२८. प्रति सं० ५ । पत्र स० ३१७ । ले० काल सं० १८७७ आषाढ बुदी १५ । वे० सं० १११ । घ भण्डार ।

विशेष—बेनीराम ने लखनऊ मे नवाब गजुद्दीह बहादुर के राज्य मे प्रतिलिपि की ।

१६२९ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३७५ । ले० काल स० १९५२ । वे० सं० ७७३ । ङ भण्डार ।

१६३०. प्रति सं० ७ । पत्र स० १०१ से ३१२ । ले० काल X । वे० स० ६९३ । च भण्डार ।

१६३१. प्रति सं० ८ । पत्र स० ३०५ । ले० काल X । वे० सं० १४३ । ज भण्डार ।

१६३२ समयसारकलशाटीका ... । पत्र सं० २०० से ३३२ । आ० ११¼X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र० काल X । ले० काल सं० १७१५ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० स० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—बध मोक्ष सर्व विशुद्ध ज्ञान और स्याद्वाद चूलिका ये चार अधिकार पूर्ण हैं । शेष अधिकार नही हैं । पहिले कलशा दिये हैं फिर उनके नीचे हिन्दी मे अर्थ है । समयसार टीका श्लोक स० ५४६५ हैं ।

१६३३. समयसारकलशाभाषा ... । पत्र सं० ६२ । आ० १२X६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६९१ । च भण्डार ।

१६३४. समयसारवचनिका ... । पत्र स० २६ । ले० काल X । वे० सं० ६९४ । च भण्डार ।

१६३५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल X । वे० सं० ६९४ (क) । च भण्डार ।

१६३६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३८ । ले० काल X । वे० सं० ३९६ । च भण्डार ।

१६३७. समाधितन्त्र—पूज्यपाद । पत्र सं० ५१ । आ० १२½X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-योग शास्त्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७५६ । क भण्डार ।

१६३८ प्रति सं० २ । पत्र स० २७ । ले० काल X । वे० सं० ७५८ । क भण्डार ।

१६३९. प्रति सं० ३ । पत्र स० १९ । ले० काल स० १९३० बैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७५९ । क भण्डार ।

१६४०. समाधितन्त्र...... । पत्र सं० १६ । आ० १०X४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-योगशास्त्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३६४ । ञ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१६४१. समाधितन्त्रभाषा..... । पत्र सं० १३८ से १९२ । आ० १०X४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-योगशास्त्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२६० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । बीच के पत्र भी नही हैं ।

१६४२. समाधितन्त्रभाषा—माणकचन्द्र । पत्र सं० २६ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी विषय-योगशास्त्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४२२ । अ भण्डार ।

विशेष—मूल ग्रन्थ पूज्यपाद का है ।

१६४३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १६४२ । वे० सं० ७५५ । क भण्डार ।

१६४४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल X । वे० सं० ७५७ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ ऋषभदास निगोत्या द्वारा शुद्ध किया गया है ।

१६४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल X । वे० सं० ७६ । क भण्डार ।

१६४६ समाधितन्त्रभाषा—नाथूराम दोसी । पत्र सं० ४१५ । आ० १२½X७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–योग । र० काल सं० १६२३ चैत्र सुदी १२ । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वे० सं० ७६१ । क भण्डार ।

१६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१० । ले० काल X । वे० सं० ७६२ । क भण्डार ।

१६४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १६५३ द्वि० ज्येष्ठ बुदी १० । वे० सं० ७८० । ङ भण्डार ।

१६४९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७५ । ले० काल X । वे० सं० ६६७ । च भण्डार ।

१६५०. समाधितन्त्रभाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र सं० १८७ । आ० १२¾X५ इञ्च । भाषा–गुजराती लिपि हिन्दी । विषय–योग । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ११३ । घ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र दुबारा लिखे गये हैं । सारंगपुर निवासी प० उधरण ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १७४१ कार्तिक सुदी ९ । वे० सं० ११४ । घ भण्डार ।

१६५२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७८१ । ङ भण्डार ।

१६५३ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २०१ । ले० काल X । वे० सं० ७८२ । ङ भण्डार ।

१६५४ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७४ । ले० काल सं० १७७१ । वे० सं० ६६८ । च भण्डार ।

विशेष—समीरपुर मे प० नानिगराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १४२ । छ भण्डार ।

१६५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १७३४ पौष सुदी ११ । वे० सं० ४४ । ज भण्डार ।

विशेष—पाण्डे ऊधोलाल काला ने केसरलाल जोशी से वहिन नाथी के पठनार्थ सीलोर मे प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति गुटका साइज है ।

१६५७ प्रति सं० ८ । पत्र सं० २३८ । ले० काल सं० १७८६ आषाढ सुदी १३ । वे० सं० ५६ । झ भण्डार ।

१६५८ समाधिमरण" । पत्र सं० ४ । आ० ७½X६¾ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १३२६ ।

१६५९. समाधिमरणभाषा—द्यानतराय । पत्र सं० ३ । आ० ८½X४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४४२ । अ भण्डार ।

१६६० प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल X । वे० सं० ७७९ । अ भण्डार ।

१६६१ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल X । वे० सं० ७८३ । अ भण्डार ।

१६६२. समाधिमरणभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र स० १०१ । आ० १२×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल स० १६३३। पूर्ण। वे० स० ७६६। क भण्डार।

विशेष—बाबा दुलीचन्द का सामान्य परिचय दिया हुआ है। टीका बाबा दुलीचन्द की प्रेरणा से की गई थी।

१६६३. समाधिमरणभाषा—सूरचद। पत्र स० ७। आ० ७३/४×५१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। वे० स० १४७। छ भण्डार।

१६६४ समाधिमरणभाषा ...। पत्र स० १३। आ० १३१/२×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७८४। ड भण्डार।

१६६५. प्रति स० २। पत्र स० १५। ले० काल स० १८८३। वे० स० १७३७। ट भण्डार।

१६६६. समाधिमरणस्वरूपभाषा ...। पत्र स० २५। आ० १०१/२×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल स० १८७८ मगसिर बुदी ४। पूर्ण। वे० स० ४३१। अ भण्डार।

१६६७. प्रति सं० २। पत्र स० २५। ले० काल स० १८८३ मगसिर बुदी ११। वे० स० ८६। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साह ने यह ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियो के मन्दिर मे चढाया।

१६६८. प्रति सं० ३। पत्र स० २४। ले० काल स० १८२७। वे० स० ६६६। च भण्डार।

१६६९. प्रति सं० ४। पत्र स० १६। ले० काल स० १६३४ भादवा सुदी १। वे० स० ७००। च भण्डार।

१६७० प्रति स० ५। पत्र स० १७। ले० काल स० १८८४ भादवा बुदी ८। वे० स० २३६। छ भण्डार।

१६७१ प्रति स० ६। पत्र स० २०। ले० काल स० १८५३ पौष बुदी ६। वे० स० १७५। ज भण्डार।

विशेष—हरवश लुहाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

१६७२. समाधिशतक—पूज्यपाद। पत्र स० १६। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७६४। अ भण्डार।

१६७३. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० स० ७६। ज भण्डार।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

१६७४ प्रति सं० ३। पत्र स० ७। ले० काल स० १६२४ वैशाख बुदी ६। वे० स० ७७। ज भण्डार।

विशेष—सगही पन्नालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१६७५. समाधिशतकटीका—प्रभाचन्द्राचार्य। पत्र स० ५२। आ० १२१/४×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १६३५ श्रावण सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ७६३। क भण्डार।

१६७६ प्रति सं० २। पत्र स० २०। ले० काल ×। वे० स० ७६५। क भण्डार।

१६७७ प्रति सं० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १६५८ फागुण बुदी १३ । वे० स० ३७३ । च

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है। जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१६७८ प्रति स० ४ । पत्र स० ७ । ले० काल X । वे० स० ३७४ । च भण्डार।

१६७९ प्रति स० ५ । पत्र स० २४ । ले० काल X । वे० स० ७८५ । ङ भण्डार।

१६८० समाधिशतकटीका '' । पत्र स० १५ । आ० १२X५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३३५ । अ भण्डार।

१६८१. संबोधपचासिका—गौतमस्वामी । पत्र सं० १६ । आ० ६½X४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७८६ । ङ भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे टीका भी है।

१६८२. सबोधपंचासिका—रइधू । पत्र स० ५ । आ० ११X६ इञ्च । भाषा-अपभ्र श । र० काल X । ले० काल सं० १७१९ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० २२६ । अ भण्डार।

विशेष—प० बिहारीदासजी ने इसकी प्रतिलिपि करवायी थी। प्रशस्ति—

सवत् १७१९ वर्षे मिती पौस वदि ७ सुभ दिने महाराजाधिराज श्री जैसिहजी विजयराज्ये साह श्री हसराज तत्पुत्र साह श्री गेगराज तत्पुत्र त्रय प्रथम पुत्र साह राइमलजी । द्वितीय पुत्र साह श्री वलिकर्ण तृतीय पुत्र साह देवसी । जाति सावडा साह श्री रायमलजी का पुत्र पवित्र साह श्री विहारीदासजी लिखायते।

दोहडा—पूरव श्रावक कौ कहे, गुण इकवीस निवास।
सो परतखि पेखिये, अगि विहारीदास ॥

लिखत महात्मा डू गरसी पडित पदमसीजी का चेला खरतर गच्छे वासी मौजे मौहाणात् मुकाम दिल्ली मध्ये।

१६८३ सबोधशतक—द्यानतराय । पत्र स० ३४ । आ० ११X७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७८९ । ङ भण्डार।

विशेष—प्रथम २० पत्रो मे चरचा शतक भी है। प्रति दोनो ओर से जली हुई है।

१६८४. संबोधसत्तरी । पत्र स० २ से ७ । आ० ११X४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ८८ । अ भण्डार।

१६८५ स्वरोदय । पत्र स० १६ । आ० १०X४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-योग । र० काल X । ले० काल स० १८१३ मगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० २४१ । ख भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है। देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य उदयराम ने टीका लिखी थी।

१६८६. स्वानुभवदर्पण—नाथूराम । पत्र स० २१ । आ० १३X८½ इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय-अध्यात्म । र० काल सं० १९५६ चैत्र सुदी ११ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १८७ । छ भण्डार।

१६८७. हठयोगदीपिका ' । पत्र स० २१ । आ० ११X५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-योग । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ४४४ । च भण्डार।

विषय-न्याय एवं दर्शन

१६८८. अध्यात्मकमलमार्त्तण्ड—कवि राजमल्ल। पत्र सं० २ से १२। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६७५। अ भण्डार।

१६८९. अष्टशती—अकलंकदेव। पत्र स० १७। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन दर्शन। र० काल ×। ले० काल स० १७९४ मगसिर बुदी ८। पूर्ण। वे० स० २२२। अ भण्डार।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है। प० सुखराम ने प्रतिलिपि की थी।

१६९०. प्रति सं० २। पत्र स० २२। ले० काल स० १८७५ फागुन सुदी ३। वे० सं० १५९। ज भण्डार।

१६९१. अष्टसहस्री—आचार्य विद्यानन्दि। पत्र सं० १९७। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-जैनदर्शन। र० काल ×। ले० काल स० १७९१ मगसिर सुदी ५। पूर्ण। वे० स० २४४। अ भण्डार।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है। लिपि सुन्दर है। अन्तिम पत्र पीछे लिखा गया है। पं० चोखचन्द ने अपने पठनार्थ प्रतिलिपि कराई। प्रशस्ति—

श्री भूरामल संघ मडनमणि., श्री कुन्दकुन्दान्वये श्रीदेशीगणगच्छपुस्तकविधा, श्री देवसंघाग्रणी संवत्सरे चंद्र रंध्र मुनीदुमिते (१७९१) मार्गशीर्षमासे शुक्लपक्षे पंचम्या तिथौ चोखचंदेण विदुषा शुभं पुस्तकमष्टसहस्त्र्यासप्रमाणेन स्वकीयपठनार्थमायत्तीकृतं।

पुस्तकमष्टसहस्त्र्या वं चोखचंद्रेण धीमता।
ग्रहीतं शुद्धभावेन स्वकर्मक्षयहेतवे ॥१॥

१६९२ प्रति सं० २। पत्र स० ३६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४०। ङ भण्डार।

१६९३. आप्तपरीक्षा—विद्यानन्दि। पत्र स० २५७। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन न्याय। र० काल ×। ले० काल स० १९३६ कार्त्तिक सुदी ६। पूर्ण। वे० स० ५८। क भण्डार।

विशेष—लिपिकार पन्नालाल चौधरी। भीगने से पत्र चिपक गये हैं।

१६९४. प्रति स० २। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० स० ५९। क भण्डार।

विशेष—कारिका मात्र है।

१६९५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ३३। अपूर्ण। च भण्डार।

१६६६. आप्तमीमासा—समन्तभद्राचार्य। पत्र सं० ८४। आ० १२३/४X५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन न्याय। र० काल X। ले० काल स० १६३५ आषाढ सुदी ७। पूर्ण। वे० स० ६०। क भण्डार।

विशेष—इस ग्रन्थ का दूसरा नाम 'देवागमस्तोत्र सटीक अष्टशती' दिया हुआ है।

१६६७. प्रति सं० २। पत्र स० १०१। ले० काल X। वे० स० ६१। क भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१६६८ प्रति स० ३। पत्र सं० ३२। ले० काल X। वे० स० ६३। क भण्डार।

१६६९ प्रति सं० ४। पत्र सं० १८। ले० काल X। वे० स० ६२। क भण्डार।

१७०० आप्तमीमासालंकृति—विद्यानन्दि। पत्र स० २२६। आ० १६X७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल X। ले० काल स० १७६६ भादवा सुदी १५। वे० स० १४।

विशेष—इसी का नाम अष्टशती भाष्य तथा अष्टसहस्री भी है। मालपुरा ग्राम मे महाराजाधिराज राजसिंह जी के शासनकाल मे चतुर्भुज ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी। प्रति काफी बडी साइज की है।

१७०१ प्रति सं० २। पत्र स० २२५। ले० काल X। वे० स० ८६६। क भण्डार।

विशेष—प्रति बडी साइज की तथा सुन्दर लिखी हुई है। प्रति प्रदर्शन योग्य है।

१७०२ प्रति सं० ३। पत्र स० १७२। आ० १२X५१/२ इञ्च। ले० काल स० १७८४ श्रावण सुदी १०। पूर्ण। वे० स० ७३। ङ भण्डार।

१७०३. आप्तमीमासाभाषा—जयचन्द छाबडा। पत्र स० ९२। आ० १२X५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-न्याय। र० काल स० १८६६। ले० काल १८९०। पूर्ण। वे० स० ३९५। अ भण्डार।

१७०४. आलापपद्धति—देवसेन। पत्र सं० १०। आ० १०१/२X५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ५०। अ भण्डार।

विशेष—१ पृष्ठ से ४ पृष्ठ तक प्राभृतसार ४ से ६ तक सप्तभंग ग्रन्थ और है।

प्राभृतसार—मोह तिमिर मार्तंड श्रियजनन्दिपच शास्तिकदेवैनेद कथित।

१७०५. प्रति सं० २। पत्र स० ७। ले० काल स० २०१० फागुण बुदी ४। वे० स० २२७०। अ भण्डार।

विशेष—आरम्भ मे प्राभृतसार तथा सप्तभंगी है। जयपुर मे नाथूलाल बज ने प्रतिलिपि की थी।

१७०६. प्रति सं० ३। पत्र स० १६। ले० काल X। वे० सं० ७६। ङ भण्डार।

१७०७ प्रति स० ४। पत्र स० ११। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ३६। च भण्डार।

१७०८ प्रति सं० ५। पत्र स० १२। ले० काल X। वे० स० ३। च भण्डार।

१७०९ प्रति सं० ६। पत्र स० १२। ले० काल X। वे० स० ४। ञ भण्डार।

विशेष—मूलसंघ के आचार्य ने मिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

१७१०. प्रति सं० ७। पत्र सं० ७ से १५। ले० काल सं० १७८६। अपूर्ण। वे० सं० ५१५। ञ भण्डार।

१७११ प्रति सं० ८। पत्र सं० १० ले० काल X। वे० सं० १८२१। ट भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

१७१२. ईश्वरवाद ···। पत्र सं० ३। आ० १०X४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल X। पूर्ण। वे० सं० २। ञ भण्डार।

विशेष—किसी न्याय के ग्रन्थ से उद्धृत है।

१७१३ गर्भषडारचक्र—देवनंदि। पत्र सं० ३। आ० ११X४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २२७। भ्क भण्डार।

१७१४. ज्ञानदीपक ···। पत्र सं० २४। आ० १२X५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-न्याय। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ६१। ख भण्डार।

विशेष-स्वाध्याय करने योग्य ग्रन्थ है।

१७१५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२। ले० काल X। वे० सं० २३। भ्क भण्डार।

१७१६. प्रति सं० ३। पत्र सं० २७ से ६४। ले० काल सं० १८५६ चैत बुदी ७। अपूर्ण। वे० सं० १५६२। ट भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इसो ज्ञान दीपक श्रुत पढो सुणो चितधार।
सब विद्या को मूल ये या विन सकल असार ॥

इति ज्ञानदीपक नामा न्यायश्रुत सपूर्णं।

१७१७. ज्ञानदीपकवृत्ति पत्र सं० ८। आ० ६½X४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २७६। छ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ-

नमामि पूर्णचिद्रूपं नित्योदितमनावृत।
सर्वाकाराभापिभा शक्त्या लिंगितमीश्वर ॥१॥
ज्ञानदीपकमादाय वृत्ति कृत्वासदासरै.।
स्वरस्नेहत्न संयोज्य ज्वालयेदुत्तराधरै ॥२॥

१७१८. तर्कप्रकरण ·। पत्र सं० ४०। आ० १०X४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १३५८। अ भण्डार।

१७१९. तर्कदीपिका। पत्र सं० १५। आ० १४X४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल X। ले० काल सं० १८३२ माह सुदी १३। वे० सं० २२८। ज भण्डार।

१७२० तर्कप्रमाण | पत्र स० ८ से ५० | आ० ९¹×४½ इञ्च | भाषा–संस्कृत | विषय–न्याय | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण एवं जीर्ण | वे० स० १६४५ | अ भण्डार |

१७२१ तर्कभाषा—केशव मिश्र | पत्र स० ४४ | आ० १०×४½ इञ्च | भाषा–संस्कृत | विषय–न्याय | र० काल × | ले० काल × | वे० स० ७१ | ख भण्डार |

१७२२. प्रति सं० २ | पत्र स० २ से २६ | ले० काल स० १७४९ भादवा बुदी १० | वे० स० २७३ | ड भण्डार |

१७२३ प्रति स० ३ | पत्र स० ६ | आ० १०×४½ इञ्च | ले० काल स० १६६९ ज्येष्ठ बुदी २ | वे० स० २२५ | ज भण्डार |

१७२४. तर्कभाषाप्रकाशिका—बालचन्द्र | पत्र स० ३५ | आ० १०×३ इञ्च | भाषा–संस्कृत | विषय–न्याय | र० काल × | ले० काल × | वे० स० ५११ | व्य भण्डार |

१७२५ तर्करहस्यदीपिका—गुणरत्नसूरि | पत्र स० १३५ | आ० १२×५ इञ्च | भाषा–संस्कृत | विषय–न्याय | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० स० २२६४ | अ भण्डार |

विशेष—यह हरिभद्र के षड्दर्शन समुच्चय की टीका है |

१७२६ तर्कसंग्रह—अन्नंभट्ट | पत्र स० ७ | आ० ११½×५½ इञ्च | भाषा–संस्कृत | विषय–न्याय | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० स० ८०२ | अ भण्डार |

१७२७. प्रति सं० २ | पत्र स० ४ | ले० काल स० १८२४ भादवा बुदी ५ | वे० स० ४७ | ज भण्डार |

विशेष—रावल मूलराज के शासन में लच्छीराम ने जैसलपुर मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी |

१७२८. प्रति सं० ३ | पत्र स० ९ | ले० काल सं० १८१२ माह सुदी ११ | वे० स० ४८ | ज भण्डार |

दर्शन | र०

विशेष—पोथी माणकचन्द लुहाड्या की है | 'लेखक विजराम पौष बुदी १३ संवत् १८१३' यह भी लिखा

विशे

प्राभृत सा प्रति स० ४ | पत्र स० ८ | ले० काल स० १७६३ चैत्र सुदी १५ | वे० स० १७९५ | ट

१७०५. प्रति

भण्डार |

थ चैत्यालय में भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य (छात्र) दोदराज ने स्वपठनार्थ

स० १८४१ मगसिर बुदी ४ | वे० स० १७९८ | झ

३९ | वे० सं० १७९९ | ट भण्डार |

५ से प्रतिलिपि की |

नोट—उक्त ६ प्रतियों के अतिरिक्त तर्कसंग्रह की अ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ६१३, १८३६, २०४६) छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७४) च भण्डार में एक प्रति (वे० स० १३६) ज भण्डार में ३ प्रतियां (वे० स० ४६, ४६, ३४०) ट भण्डार मे २ प्रतियां (वे० स० १७६६, १८३२) और हैं।

१७३२. तर्कसंग्रहटीका ·····। पत्र स० ८ । आ० १२½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २४२। ञ भण्डार।

१७३३. तार्किकशिरोमणि—रघुनाथ। पत्र सं० ८। आ० ८×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५८०। अ भण्डार।

१७३४. दर्शनसार—देवसेन। पत्र स० ५। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–दर्शन। र० काल स० ६६० माघ सुदी १०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८४८। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ रचना धारानगर मे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे हुई थी।

१७३५. प्रति सं० २। पत्र स० २। ले० काल स० १८७१ माघ सुदी ५। वे० स० ११६। छ भण्डार।

विशेष—प० वख्तराम के शिष्य हरवंश ने नेमिनाथ चैत्यालय (गोधो के मन्दिर) जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

१७३६. प्रति सं० ३। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० स० २८२। ज भण्डार।

विशेष—प्रति सस्कृत टब्बा टीका सहित है।

१७३७. प्रति सं० ४। पत्र स० ३। ले० काल ×। वे० सं० ३। ञ भण्डार।

१७३८. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३। ले० काल स० १८५० भादवा बुदी ८। वे० स० ५। ञ भण्डार।

विशेष—जयपुर मे पं० सुखरामजी के शिष्य केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

१७३९. दर्शनसारभाषा—नथमल। पत्र सं० ८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–दर्शन। र० काल स० १६२० प्र० श्रावण बुदी ४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६५। क भण्डार।

१७४०. दर्शनसारभाषा—पं० शिवजीलाल। पत्र स० २८१। आ० ११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–दर्शन। र० काल स० १६२३ माघ सुदी १०। ले० काल स० १६३६। पूर्ण। वे० स० २६४। क भण्डार।

१७४१. प्रति सं० २। पत्र सं० १२०। ले० काल ×। वे० सं० २८६। ङ भण्डार।

१७४२. दर्शनसारभाषा ·····। पत्र सं० ७२। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८०। ख भण्डार।

१७४३. द्विजवचनचपेटा। पत्र सं० ६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। वे० स० ३८२। ञ भण्डार।

१७४४. प्रति सं० २ । पत्र स० ४ । ले० काल X । वे० स० १७६८ ॥ ट भण्डार ॥

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१७४५. नयचक्र—देवसेन । पत्र स० ४५ । आ० १०३/४X७ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सात नयों का वर्णन । र० काल X । ले० काल स० १९४३ पौष सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० ३३५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम सुखबोधार्थ माला पद्धति भी है । उक्त प्रति के अतिरिक्त क भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० ३५३, ३५४, ३५६) च छ भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० १७७ व १०१) और हैं ।

१७४६. नयचक्रभाषा—हेमराज । पत्र स० ५१ । आ० १२१/२X४१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-सात नयो का वर्णन । र० काल स० १७२६ फागुण सुदी १० । ले० काल स० १९३८ । पूर्ण । वे० स० ३५७ । क भण्डार ।

१७४७. प्रति स० २ । पत्र स० ९० । ले० काल स० १७२६ । वे० स० ३५८ । क भण्डार ।

विशेष—७७ पत्र से तत्त्वार्थ सूत्र टीका के अनुसार नय वर्णन है ।

नोट—उक्त प्रतियो के अतिरिक्त ङ, छ, ज, झ भण्डारो मे एक एक प्रति (वे० स० ३४५, १८७, ६२३, ८८१) क्रमश और हैं ।

१७४८. नयचक्रभाषा ..... । पत्र स० १०६ । आ० १०१/२X४१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र० काल X । ले० काल स० १९४८ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३५९ । क भण्डार ।

१७४९. नयचक्रभावप्रकाशिनीटीका—निहालचन्द अग्रवाल । पत्र स० १३७ । आ० १२X७१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-न्याय । र० काल स० १८६७ । ले० काल स० १९४४ । पूर्ण । वे० स० ३६० । क भण्डार ।

विशेष—यह टीका कानपुर कैंट मे की गई थी ।

१७५०. प्रति सं० २ । पत्र स० १०४ । ले० काल X । वे० स० ३६१ । क भण्डार ।

१७५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २२४ । ले० काल स० १९३८ फागुण सुदी ६ । वे० स० ३६२ । क भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

१७५२. न्यायकुमुदचन्द्रोदय—भट्ट अकलंकदेव । पत्र स० १५ । आ० १०३/४X४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ५७ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ १ से ९ तक न्यायकुमुदचन्द्रोदय ५ परिच्छेद तथा शेष पृष्ठो मे भट्टाकलकशशाकानुस्मृति प्रवचन प्रवेश है ।

१७५३. प्रति सं० २ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १८६४ पौष सुदी ७ । वे० स० २७० । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई राम ने प्रतिलिपि की थी ।

१७५४. न्यायकुमुदचन्द्रिका—प्रभाचन्द्रदेव। पत्र सं० ५८८। आ० १४½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। य–न्याय। र० काल ×। ले० काल सं० १९३७। पूर्ण। वे० सं० ३९६। क भण्डार।

विशेष—भट्टाकलंक कृत न्यायकुमुदचन्द्रोदय की टीका है।

१७५५. न्यायदीपिका—धर्मभूषणयति। पत्र सं० ३ से ८। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। य–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२०७। अ भण्डार।

—उक्त प्रति के अतिरिक्त क भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ३९७, ३९८) घ एव च भण्डार मे एक २ प्रति (वे० सं० ३४७, १८०, च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १८०, १८१) तथा ज भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५२) और है।

१७५६. न्यायदीपिकाभाषा—सदासुख कासलीवाल। पत्र सं० ७१। आ० १४×७½ इञ्च। भाषा–दी। विषय–दर्शन। र० काल सं० १९३०। ले० काल सं० १९३८ वैशाख सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ३४६। ङ डार।

१७५७ न्यायदीपिकाभाषा—संघी पन्नालाल। पत्र सं० १९०। आ० १२½×७½ इञ्च। भाषा–दी। विषय–न्याय। र० काल सं० १९३५। ले० काल सं० १९४१। पूर्ण। वे० सं० ३९९। क भण्डार।

१७५८ न्यायमाला—परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री भारती तीर्थमुनि। पत्र सं० ८६ से १२७। ० १०½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल सं० १९०० सावण बुदी ५। अपूर्ण। सं० २०९३। अ भण्डार।

१७५९ न्यायशास्त्र । पत्र सं० २ से ५२। आ० १०½×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९७६। अ भण्डार।

१७६०. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९४६। अ भण्डार।

विशेष—किसी न्याय ग्रन्थ से उद्धृत है।

१७६१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५५। ज भण्डार।

१७६२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८६८। ट भण्डार।

१७६३. न्यायसार—माधवदेव (लक्ष्मणदेव का पुत्र) पत्र सं० २८ से ८७। आ० १०½×४½ व। भाषा-संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल सं० १७४९। अपूर्ण। वे० सं० १३४३। अ भण्डार।

१७६४ न्यायसार । पत्र सं० २४। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० ल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६१९। अ भण्डार।

विशेष—आगम परिच्छेद तर्कपूर्ण है।

१७६५ न्यायसिद्धांतमञ्जरी—जानकीनाथ। पत्र सं० १४ से ४६। आ० ९½×३½ इञ्च। भाषा–स्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल सं० १७७४। अपूर्ण। वे० सं० १५७८। अ भण्डार।

१७६६. न्यायसिद्धांतमञ्जरी—भट्टाचार्य चूडामणि। पत्र स० २८ । आ० १३×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५३। ज भण्डार।

विशेष—सटीक प्राचीन प्रति है।

१७६७ न्यायसूत्र ' ' । पत्र स० ४। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १०२६। अ भण्डार।

विशेष—हेम व्याकरण में से न्याय सम्बन्धी सूत्रो का सग्रह किया गया है। आशानन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१७६८ पट्टरीति—विष्णुभट्ट। पत्र सं० २ से ६। आ० १०½×३½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १२६७। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका– इति साधर्म्य वैधर्म्य सग्रहोऽय कियानपि विष्णुभट्टैः पट्टरीत्या बालव्युत्पत्तये कृत। प्रति प्राचीन है।

१७६६. पत्रपरीक्षा—विद्यानंदि। पत्र स० १५। आ० १२½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ७८६। अ भण्डार।

१७७०. प्रति सं० २। पत्र स० ३६। ले० काल स० १६७७ आसोज बुदी ६। वे० स० १६४६। ट भण्डार।

विशेष—शेरपुरा मे श्री जिन चैत्यालय मे लिखमीचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१७७१ पत्रपरीक्षा—पात्र केशरी। पत्र स० ३७। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल ×। ले० काल स० १६३४ आसोज सुदी ११। पूर्ण। वे० स० ४५७। क भण्डार।

१७७२ प्रति स० २। पत्र स० २०। ले० काल ×। वे० स० ४५८। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है।

१७७३ परीक्षामुख—माणिक्यनंदि। पत्र स० ५। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४३६। ङ भण्डार।

१७७४ प्रति सं० २। पत्र स० ६। ले० काल स० १८६६ भादवा सुदी १। वे० स० २१३। च भण्डार।

१७७५ प्रति स० ३। पत्र स० ६७ से १२६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २१४। च भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है।

१७७६. प्रति सं० ४। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० स० २८१। छ भण्डार।

१७७७ प्रति स० ५। पत्र स० १४। ले० काल स० १६०८। वे० स० १४५। ज भण्डार।

लेखन काल अष्टे व्योम क्षिति निधि भूमि ते भाद्रमासगे)

१७७८ प्रति सं० ६। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० स० १७३८। ट भण्डार।

१७७९. परीक्षामुखभाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ३०६। आ० १२×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-न्याय। र० काल सं० १८६३ आषाढ सुदी ४। ले० काल सं० १९४०। पूर्ण। वे० सं० ४५१। क भण्डार।

१७८०. प्रति सं० २। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० सं० ४५०। क भण्डार।

विशेष—प्रति सुन्दर अक्षरों में है। एक पत्र पर हाशिया पर सुन्दर बेलें हैं। अन्य पत्रों पर हाशिया में केवल रेखायें ही दी हुई हैं। लिपिकार ने ग्रन्थ अधूरा छोड़ दिया प्रतीत होता है।

१७८१. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२४। ले० काल सं० १९३० मगसिर सुदी २। वे० सं० ५१। घ भण्डार।

१७८२. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२०। आ० १०½×५½ इञ्च। ले० काल सं० १८७८ श्रावण बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ५०५। क भण्डार।

१७८३. प्रति सं० ५। पत्र सं० २१८। ले० काल ×। वे० सं० ६३९। च भण्डार।

१७८४. प्रति सं० ६। पत्र सं० १९५। ले० काल सं० १९१६ कार्त्तिक बुदी १४। वे० सं० ६४०। च भण्डार।

१७८५. पूर्वमीमांसार्थप्रकरण-संग्रह—लौगाक्षिभास्कर। पत्र सं० ९। आ० १२½×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६। ज भण्डार।

१७८६. प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकारटीका—रत्नप्रभसूरि। पत्र सं० २८८। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४९६। क भण्डार।

विशेष—टीका का नाम 'रत्नाकरावतारिका' है। मूलकर्त्ता वादिदेव सूरि है।

१७८७. प्रमाणनिर्णय ....। पत्र सं० ९४। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४९७। क भण्डार।

१७८८. प्रमाणपरीक्षा—आ० विद्यानंदि। पत्र सं० ९६। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल ×। ले० काल सं० १९३४ आसोज सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ४९८। क भण्डार।

१७८९. प्रति सं० २। पत्र सं० ४८। ले० काल ×। वे० सं० १७९। ज भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। इति प्रमाण परीक्षा समाप्ता। मितिरापाढमासस्यपक्षेश्यामलके तिथौ तृतीयाया प्रमाणाम्या परीक्षा लिखिता खलु ॥१॥

१७९०. प्रमाणपरीक्षाभाषा—भागचन्द। पत्र सं० २०२। आ० १२½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-न्याय। र० काल सं० १९१३। ले० काल सं० १९३८। पूर्ण। वे० सं० ४९९। क भण्डार।

१७९१. प्रति सं० २। पत्र सं० २१९। ले० काल ×। वे० सं० ५००। क भण्डार।

१७९२. प्रमाणप्रमेयकलिका—नरेन्द्रसेन। पत्र सं० ६७। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल ×। ले० काल सं० १९३८। पूर्ण। वे० सं० ५०१। क भण्डार।

१७९३. प्रमाणमीमांसा—विद्यानन्दि । पत्र स० ४० । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

१७९४ प्रमाणमीमांसा ··· । पत्र स० ६२ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल स० १९५७ श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ५०२ । क भण्डार ।

१७९५ प्रमेयकमलमार्त्तण्ड—आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र स० २७९ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३७८ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ १३४ तथा २७९ से आगे नही है ।

१७९६ प्रति स० २ । पत्र सं० ६३८ । ले० काल स० १९४२ ज्येष्ठ बुदी ५ । वे० स० ५०३ । क भण्डार ।

१७९७ प्रति सं० ३ । पत्र स० ९९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५०४ । क भण्डार ।

१७९८. प्रति सं० ४ । पत्र स० ११८ । ले० काल × । वे० स० १९१७ । ट भण्डार ।

विशेष—५ पत्रो तक सस्कृत टीका भी है । सर्वज्ञ सिद्धि से गदेहवादियो के खण्डन तक है ।

१७९९. प्रति स० ५ । पत्र स० ४ से ३४ । आ० १०×८½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१४७ । ट भण्डार ।

१८०० प्रमेयरत्नमाला—अनन्तवीर्य । पत्र स० १५६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १९३४ भादवा सुदी ७ । वे० सं० ४५२ । क भण्डार ।

विशेष—परीक्षामुख की टीका है ।

१८०१. प्रति सं० २ । पत्र स० १२७ । ले० काल स० १८९८ । वे० स० २३७ । घ भण्डार ।

१८०२. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १७९७ माघ बुदी १० । वे० स० १०१ । छ भण्डार ।

विशेष—तक्षकपुर मे रत्नऋषि ने प्रतिलिपि की थी ।

१८०३ बालबोधिनी—शकर भगति । पत्र स० १३ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३९२ । अ भण्डार ।

१८०४ भावदीपिका—कृष्ण शर्मा । पत्र स० ११ । आ० १३×६½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८६५ । ट भण्डार ।

विशेष—सिद्धातमञ्जरी की व्याख्या दी हुई है ।

१८०५. महाविद्याविडम्बन" । पत्र स० १२ से १९ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल स० १५५३ फागुण सुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० १९८९ । अ भण्डार ।

विशेष—सवत् १५५३ वर्षे फागुण सुदी ११ सोमे अद्येह श्रीपत्तनमध्ये एतत् पत्राणि लिखितानि सम्पूर्णानि ।

१८०६. युक्त्यनुशासन—आचार्य समन्तभद्र। पत्र स० ६। आ० १२½×७½ इञ्च। भाषा-संस्कृत विषय-न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०४। क भण्डार।

१८०७. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। ६०५। क भण्डार।

१८०८. युक्त्यनुशासनटीका—विद्यानन्दि। पत्र स० १८८। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल ×। ले० काल स० १६३४ पौष सुदी ३। पूर्ण। वे० स० ६०१। क भण्डार।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि कराई थी।

१८०६. प्रति स० २। पत्र स० ५६। ले० काल ×। वे० स० ६०२। क भण्डार।

१८१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४२। ले० काल स० १६४७। वे० स० ६०३। क भण्डार।

१८११ वीतरागस्तोत्र—आ० हेमचन्द्र। पत्र स० ७। आ० ११½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल स० १५१२ आसोज सुदी १२। पूर्ण। वे० स० २५२। अ भण्डार।

विशेष—चित्रकूट दुर्ग मे प्रतिलिपि की गई थी। सवत् १५१२ वर्षे आसोज सुदी १२ दिने श्री चित्रकूट दुर्गेऽलिखत.।

१८१२. वीरद्वात्रिंशतिका—हेमचन्द्रसूरि। पत्र स० ३३। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३७७। अ भण्डार।

विशेष—३३ से आगे पत्र नही है।

१८१३. षड्दर्शनवार्त्ता ""। पत्र स० २८। आ० ८×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५१। ट भण्डार।

१८१४. षड्दर्शनविचार ""। पत्र सं० १०। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल स० १७२४ माह बुदी १०। पूर्ण। वे० स० ७४२। ङ भण्डार।

विशेष—सागानेर मे जोधराज गोदीका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी। श्लोको का हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है।

१८१५. षड्दर्शनसमुच्चय—हरिभद्रसूरि। पत्र सं० ७। आ० १२½×५ इञ्च। विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०६। क भण्डार।

१८१६ प्रति सं० २। पत्र स० ४। ले० काल ×। वे० स० ६८। घ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन शुद्ध एवं संस्कृत टीका सहित है।

१८१७. प्रति सं० ३। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० सं० ७४३। ङ भण्डार।

१८१८. प्रति सं० ४। पत्र स० ६। ले० काल स० १५७० भादवा सुदी २। वे० सं० ३६६। ञ भण्डार।

१८१६. प्रति स० ५। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १८६४। ट भण्डार।

१८२०. षड्दर्शनसमुच्चयवृत्ति—गुणरत्नसूरि। पत्र सं० १८५। आ० १३×८ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल सं० १६४७ द्वि० भादवा सुदी १३। पूर्ण। वे० स० ७११। क भण्डार।

१८२१. षड्दर्शनसमुच्चयटीका…… | पत्र सं० ६० | आ० १२३/४×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-दर्शन | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ७१० | क भण्डार |

१८२२. संक्षिप्तवेदान्तशास्त्रप्रक्रिया …… | पत्र सं० ४६ | आ० १२×४३/४ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-दर्शन | र० काल × | ले० काल सं० १७२७ | वे० सं० ३६७ | व्य भण्डार |

१८२३. सप्तनयावबोध—मुनि नेत्रसिंह | पत्र सं० ६ | आ० १०×८ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-दर्शन (सप्त नयो का वर्णन है) | र० काल × | ले० काल सं० १७४५ | पूर्ण | वे० सं० ३४६ | अ भण्डार |

प्रारम्भ— विनय-मुनि-नयख्या सर्वभावा भुविस्था |
जिनमतद्युतिगम्या नेतरेषां सुरम्या ||
उरुकृतगुरुशास्त्रसेव्यमाना सदा मे |
विदधतु सुकृपाते ग्रन्थ आरभ्यमाणे ||१||
सादरैव प्रणम्यादौ सप्तनयावबोधक
य श्रुत्वा येन मार्गेण गच्छन्ति सुधियो जना ||१||

इसके पश्चात् टीका प्रारम्भ होती है | नीयते प्राप्यते अर्थोऽनेनेति नय णीञ् प्रापणे इति वचनात् |

अन्तिम— तत्पुण्य मुनि-धर्मकर्मनिधन मोक्षं फल निर्मल |
लब्ध येन जनेन निश्चयनयात् श्री नेत्रसिंघोदित. ||
स्याद्वादमार्गाश्रयिणो जना ये श्रोष्यति शास्त्र सुनयावबोध |
मोक्ष्यति चैकातमतं सुदोष मोक्ष गमिष्यति सुखेन भव्या ||

इति श्री सप्तनयावबोध शास्त्रं मुनिनेत्रसिंहेन विरचितं शुभ चेय ||

१८२४. सप्तपदार्थी ……| पत्र सं० ३६ | आ० ११×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-जैन मतानुसार सात पदार्थों का वर्णन है | ले० काल × | र० काल × | अपूर्ण | वे० सं० १८८ | व्य भण्डार |

१८२५. सप्तपदार्थी—शिवादित्य | पत्र सं० × | आ० १०१/२×४१/२ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-वैशेषिक न्याय के अनुसार सप्त पदार्थों का वर्णन | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० १९६३ | ट भण्डार |

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि की थी |

१८२६. सन्मतितर्क—मूलकर्त्ता सिद्धसेन दिवाकर | पत्र सं० ४८ | आ० १०×४३/४ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-न्याय | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० ६०३ | अ भण्डार |

१८२७. सारसग्रह—वरदराज | पत्र सं० २ से ७३ | आ० १०१/२×४३/४ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-दर्शन | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० ८२१ | ड भण्डार |

१८२८. सिद्धान्तमुक्तावलिटीका—महादेवभट्ट | पत्र सं० ९८ | आ० ११×४३/४ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-न्याय | र० काल × | ले० काल सं० १७५६ | वे० सं० ११७२ | अ भण्डार |

विशेष—जैनेतर ग्रन्थ है |

१८२६. स्याद्वादच्चूलिका ··· । पत्र स० १५ । आ० ११३/४X५ इंच । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-दर्शन । र० काल X । ले० काल स० १६३० कात्तिक बुदी ५ । वे० सं० २१६ । ञ भण्डार ।

विशेष—सागवाडा नगर मे ब्रह्म तेजपाल के पठनार्थ लिखा गया था । समयसार के कुछ पाठो का अश है ।

१८३० स्याद्वादमञ्जरी —मल्लिषेणसूरि । पत्र स० ४ । आ० १२३/४X५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ८३४ । अ भण्डार ।

१८३१. प्रति सं० २ । पत्र स० ५४ से १०६ । ले० काल स० १५२१ माघ सुदी ५ । अपूर्ण । वे० स० ३६६ । ञ भण्डार ।

१८३२. प्रति स० ३ । पत्र स० ३ । आ० १२X५३/४ इच । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ८६१ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल कारिकामात्र है ।

१८३३ प्रति स० ४ । पत्र सं० ३० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १६० । ञ भण्डार ।

विषय- पुराण साहित्य

१८३४. अजितपुराण—पंडिताचार्य अरुणमणि। पत्र सं० २७३। आ० १२×५३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल सं० १७१६। ले० काल सं० १७८९ ज्येष्ठ सुदी ९। पूर्ण। वे० सं० २१८। अ भण्डार।

प्रशस्ति—संवत् १७८९ वर्षे मिती जेष्ट सुदी ९। जहानाबादमध्ये लिखापित आचार्य हर्षकीर्त्तिजी मयाराम स्वपठनार्थं।

१८३५. प्रति सं० २। पत्र सं० ९६। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १७। छ भण्डार।

विशेष—१६वें पर्व के ६४वें श्लोक तक है।

१८३६. अजितनाथपुराण—विजयसिंह। पत्र सं० १२९। आ० ९३×४ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-पुराण। र० काल सं० १५०५ कार्तिक सुदी १५। ले० काल सं० १५८० चैत्र सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० २२८। व्य भण्डार।

विशेष—सं० १५८० मे इब्राहीम लोदी के शासनकाल मे सिकन्दराबाद मे प्रतिलिपि हुई थी।

१८३७ अनन्तनाथपुराण—गुणभद्राचार्य। पत्र सं० ८। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल X। ले० काल सं० १८८५ भादवा सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ७४। व्य भण्डार।

विशेष—उत्तरपुराण से लिया गया है।

१८३८. आगामीत्रेसठशलाकापुरुषवर्णन ˙ । पत्र सं० ८ से २१। आ० १२३×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पुराण। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ३८। अ भण्डार।

विशेष—एकसौ उनहत्तर पुण्य पुरुषो का भी वर्णन है।

१८३९. आदिपुराण—जिनसेनाचार्य। पत्र सं० ५२७। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल X। ले० काल सं० १८६४। पूर्ण। वे० सं० ९२। अ भण्डार।

विशेष—जयपुर मे प० खुशालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

१८४० प्रति सं० २। पत्र सं० ५०६। ले० काल सं० १६६४। वे० सं० १५४। अ भण्डार।

१८४१ प्रति सं० ३। पत्र सं० ४०। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २०४२। अ भण्डार।

१८४२ प्रति सं० ३। पत्र सं० ४८१। ले० काल सं० १९५०। वे० सं० ५६। क भण्डार।

१८४३ प्रति सं० ४। पत्र सं० ४३७। ले० काल X वे० सं० ५७। क भण्डार।

विशेष—देहली मे सन्तलालजी की कोठी पर प्रतिलिपि हुई थी।

१८४४. प्रति सं० ५ । पत्र स० ४७१ । ले० काल स० १६१४ वैशाख सुदी १० । वे० स० ६ । घ भण्डार ।

विशेष—हाथरस नगर मे टीकाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१८४५ प्रति स० ६ । पत्र स० ४६१ । ले० काल स० १८६४ चैत्र सुदी ५ । वे० स० २५० । ज भण्डार ।

विशेष—सेठ चम्पाराम ने ब्राह्मण श्यामलाल गौड़ से अपने पुत्र पौत्रादि के पठनार्थ प्रतिलिपि करायी । प्रशस्ति काफी बडी है । भरतखण्ड का नक्शा भी है जिस पर स० १७८४ जेठ सुदी १० लिखा है । कही कही कठिन शब्दो का सस्कृत मे अर्थ भी दिया है ।

१८४६ प्रति स० ७ । पत्र स० ४१६ । ले० काल X । जीर्ण । वे० सं० १४६ । ञ भण्डार ।

१८४७ प्रति स० ८ । पत्र स० १२६ । ले० काल स० १६०४ मगसिर बुदी ६ । वे० स० २५२ । ञ भण्डार ।

१८४८ प्रति स० ६ । पत्र स० ४१० । ले० काल स० १८०४ पौष बुदी ४ । वे० स० ४५१ । ञ भण्डार ।

विशेष—नैणसागर ने प्रतिलिपि की थी

१८४६ प्रति स० १० । पत्र स० २०६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १८८८ । ट भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियो के अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २०४२) क भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५५) ड भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६६) च भण्डार मे ३ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० ३०, ३१, ३२) ज भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६८६) और है ।

१८५०. आदिपुराण टिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र स० २७ । आ० ११$\frac{1}{2}$X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ८०१ । अ भण्डार ।

१८५१. प्रति स० २ । पत्र स० ७६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ८७० । अ भण्डार ।

१८५२. आदिपुराणटिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र स० ५२ से ६२ । आ० १०$\frac{1}{2}$X४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र०-काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २६ । च भण्डार ।

विशेष—पुष्पदन्त कृत आदिपुराण का टिप्पण है ।

१८५३. आदिपुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र स० ३२५ । आ० १०$\frac{1}{2}$X५ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पुराण । र० काल X । ले० काल स० १६३० भादवा सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ५३ । क भण्डार ।

१८५४. प्रति स० २ । पत्र सं० २६६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २ । छ भण्डार ।

विशेष—बीच मे कई पत्र नही हैं । प्रति प्राचीन है । साह व्यहराज ने पंचमी व्रतोद्यापनार्थ कर्मक्षय निमित्त यह ग्रन्थ लिखाकर महात्मा खेमचन्द्र को भेंट किया ।

१८५५. प्रति सं० ३ । पत्र स० १०३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५४ । क भण्डार ।

१८५६ प्रति सं० ४ । पत्र स० २६५ । ले० काल स० १७१६ । वे० स० २६३ । ञ भण्डार ।

विशेष—कही कही कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१८५७ आदिपुराण—प० दौलतराम । पत्र स० ४०० । आ० १५×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–पुराण । र० काल स० १८२४ । ले० काल स० १८८३ माघ सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ५ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१८५८ प्रति स० २ । पत्र स० ७४६ । ले० काल × । वे० स० १४६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के तीन पत्र नवीन लिखे गये हैं ।

१८५९ प्रति स० ३ । पत्र स० ५०६ । ले० काल स० १८२४ आसोज बुदी ११ । वे० स० १५२ । छ भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियो के अतिरिक्त ग भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६) ङ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ६७, ६८, ६९, ७०) च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ५१८, ५१९) छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १५५) तथा झ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ८६, १४६) और हैं । ये सभी प्रतिया अपूर्ण हैं ।

१८६० उत्तरपुराण—गुणभद्राचार्य । पत्र स० ४२६ । आ० १२×५ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३० । अ भण्डार ।

१८६१ प्रति स० २ । पत्र स० ३८३ । ले० काल स० १६०६ आसोज सुदी १३ । वे० स० ८ । घ भण्डार ।

विशेष—बीच मे २ पृष्ठ नये लिखाकर रखे गये हैं । काष्ठासघी माथुरान्वयी भट्टारक श्री उद्धरसेन की बडी प्रशस्ति दी हुई है । जहागीर बादशाह के शासनकाल मे चौहाणाराज्यान्तर्गत अलाउपुर (अलवर) के तिजारा नामक ग्राम मे श्री आदिनाथ चैत्यालय में श्री गोरा ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६२, प्रति स० ३ । पत्र स० ५४० । ले० काल स० १६३५ माह सुदी ५ । वे० स० ५६० । ङ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे सकेतार्थ दिया है ।

१८६३ प्रति स० ४ । पत्र स० ३०६ । ले० काल स० १८२७ । वे० स० १ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुरमे महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई । सा० हेमराज ने सतोषराम के शिष्य बखतराम को भेंट किया । कठिन शब्दो के सस्कृत मे अर्थ भी दिये हैं ।

१८६४ प्रति स० ५ । पत्र स० ४५३ । ले० काल स० १८८८ सावरण सुदी १३ । वे० स० ६ । छ भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

१८६५. प्रति स० ६ । पत्र सं० ४८४ । ले० काल सं० १६६७ चैत्र बुदी ६ । वे० स० ८३ । ञ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक जयकीर्त्ति के शिष्य ब्रह्मकल्याणसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६६. प्रति सं० ७ । पत्र स० ३६६ । ले० काल स० १७०६ फागुण सुदी १० । वे० सं० ३२४ । ञ भण्डार ।

विशेष—पाडे गोर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी । कही कही कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१८६७ प्रति स० ८ । पत्र स० ३७२ । ले० काल स० १७१८ भादवा सुदी १२ । वे० स० २७२ । ञ भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियो के अतिरिक्त अ, क और ङ भण्डार मे एक-एक प्रति (वे० स० ६२४, ६७३, ७७) और हैं । सभी प्रतिया अपूर्ण हैं ।

१८६८ उत्तरपुराणटिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र स० ५७ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल स० १०८० । ले० काल स० १५७५ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ५४ । अ भण्डार ।

विशेष—पुष्पदन्त कृत उत्तरपुराण का टिप्पण है । लेखक प्रशस्ति—

श्री विक्रमादित्य सवत्सरे वर्षाणामशीत्यधिक सहस्रे महापुराणविषमपदविवरणसागरसेनसैद्धातान् परिज्ञाय मूलटिप्पणकाचावलोक्य कृतमिद समुच्चयटिप्पण । अज्ञपातभीतेन श्रीमद् बलात्कारगणश्रीसघाचार्य सत्कवि शिष्येण श्रीचन्द्रमुनिना निज दोर्दंडाभिभूतरिपुराज्यविजयिन श्रीभोजदेवस्य ।। १०२ ।।

इति उत्तरपुराणटिप्पणक प्रभाचन्द्राचार्यविरचितसमाप्तं ।। अथ सवत्सरेस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्द सवत् १५७५ वर्षे भादवा सुदी ५ बुधदिने कुरुजागलदेशे सुलितान सिकदर पुत्र सुलितानब्राहिमुराज्यप्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीगुणभद्रसूरिदेवा तदाम्नाये जैसवालु चौ० जगसी पुत्रु चौ० टोडरमल्लु इद उत्तरपुराण टीका लिखापित । शुभं भवतु । मागल्य दधति लेखक पाठकयो ।

१८६९. प्रति सं० २ । पत्र स० ६१ । ले० काल × । वे० स० १४५ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री जयसिंहदेवराज्ये श्रीमद्धारानिवासिना परापरमेष्टिप्रणामोपार्जितामलपुण्यनिराकृताखिलमल कलकेन श्रीमत् प्रभाचन्द्र पडितेन महापुराण टिप्पणक सतत्र्यधिक सहस्रत्रय प्रमाण कृतमिति ।

१८७०. प्रति स० ३ । पत्र स० ५६ । ले० काल × । वे० स० १८७६ । ट भण्डार ।

१८७१. उत्तरपुराणभाषा—खुशालचन्द । पत्र सं० ३१० । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । र० काल स० १७८६ मगसिर सुदी १० । ले० काल सं० १६२८ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ७४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति मे खुशालचन्द का ५३ पद्यो मे विस्तृत परिचय दिया हुआ है । बख्तावरलाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१८७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२० ले० काल स० १८८३ बैशाख सुदी ३ । वे० स० ७ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१८७३. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४१५ । ले० काल सं० १८६६ मगसिर सुदी १ । वे० स० ६ । घ भण्डार ।

१८७४ प्रति स० ४ । पत्र सं० ३७४ । ले० काल स० १८५८ कार्त्तिक बुदी १३ । वे० स० १८ । ङ भण्डार ।

१८७५ प्रति सं० ५ । पत्र स० ४०४ । ले० काल स० १८६७ । वे० स० १३७ । ञ भण्डार ।

विशेष—च भण्डार मे तीन अपूर्ण प्रतिया (वे० स० ५२२, ५२३, ५२४) और हैं ।

१८७६. उत्तरपुराणभाषा—सघी पन्नालाल । पत्र स० ७६३ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र० काल स० १९३० आषाढ सुदी ३ । ले० काल स० १९४५ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ७५ । क भण्डार ।

१८७७ प्रति सं० ३ । पत्र स० ५३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८० । ङ भण्डार ।

विशेष—५३४वा पत्र नही है । कितने ही पत्र नवीन लिखे हुये हैं ।

१८७८. प्रति स० ४ । पत्र स० ४९६ । ले० काल × । वे० स० ८१ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १६७ पत्र नीले रग के हैं । यह सशोधित प्रति है । ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७९) च भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० ५२१, ५२५) तथा छ भण्डार मे एक प्रति और है ।

१८७९. चन्द्रप्रभपुराण—हीरालाल । पत्र स० ३१२ आ० १३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । र० काल स० १९१३ भादवा बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७६ । क भण्डार ।

१८८०. जिनेन्द्रपुराण—भट्टारक जिनेन्द्रभूषण । पत्र सं० ६९० । आ० १९×९ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल स० १८४२ फागुण बुदी ७ । वे० स० ६४ । ञ भण्डार ।

विशेष—जिनेन्द्रभूषण के प्रशिष्य ब्रह्महर्षसागर के भाई थे । १९५ अधिकार हैं । पुराण के विभिन्न विषय हैं ।

१८८१. त्रिषष्ठिस्मृति—महापडित आशाधर । पत्र स० २४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल स० १२९२ । ले० काल सं० १८१५ शक स० १६८० । पूर्ण । वे० स० २३१ । अ भण्डार ।

विशेष—नलकच्छपुर में श्री नेमिजिनचैत्यालय मे ग्रन्थ की रचना की गई थी । लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

१८८२. त्रिषष्ठिशलाकापुरुषवर्णन । पत्र स० ३७ । आ० १०¾×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६९५ । ट भण्डार ।

विशेष—३७ से आगे पत्र नही हैं ।

१८८३ नेमिनाथपुराण—भागचन्द । पत्र सं० १६६ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र० काल स० १९०७ सावन बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ९ । छ भण्डार ।

१८८४ नेमिनाथपुराण—ब्र० जिनदास। पत्र सं० २९२। आ० १४×५½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६। छ भण्डार।

१८८५. नेमिपुराण (हरिवंशपुराण)–ब्रह्म नेमिदत्त। पत्र स० १६०। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल स० १६४७ ज्येष्ठ सुदी ११। पूर्ण। जीर्ण। वे स० १४६। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

सवत् १६४७ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ११ बुधवासरे श्री मूलसघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि देवातत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा द्वितीय शिष्य मडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मडलाचार्य श्रीभुवनकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मडलाचार्य श्रीधर्मकीर्त्तिदेवा द्वितीयशिष्य मडलाचार्य श्रीविशालकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मडलाचार्य श्रीलक्ष्मीचन्द्रदेवा तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीसहस्रकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे मडलाचार्य श्री श्री श्री नेमचन्द तदाम्नाये अगरवालान्वये मुगिलगोत्रे साह जीणा तस्य भार्या ठाकुरही तयो पुत्रा पच। प्रथम पुत्र सा खेता तस्य भार्या छानाही। सा. जीणा द्वितीय पुत्र सा. जेता तस्य भार्या वाधाही तयो पुत्रा त्रय प्रथम पुत्र सा देइदास तस्य भार्या साताही तयो पुत्रात्रय प्रथमपुत्र चि० सिरवत द्वितीयपुत्र चि० मागा तृतीयपुत्र चि० चतुरा। द्वितीयपुत्र साह पूना तस्य भार्यागुजरहो तृतायपुत्र सा चीमा तस्य भार्या मानु। सा जीणा तस्य तृतीयपुत्र सा. सातु तस्य भार्या नान्यगही तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सा गोविंदा तस्य भार्या पदर्थही तयो पुत्र चि० धर्मदास द्वि० पुत्र चि० मोहनदास। सा जीणातस्य चतुर्थपुत्र सा मल्लू तस्य भार्या नीवाही तयोपुत्रा त्रय प्रथमपुत्र सा उत्मा तस्य भार्या धनराजही तयोपुत्र चि० दूरगदास द्वितीयपुत्र सा. महीदास तस्यभार्या उदाही तृतीयपुत्र सा टेमा तस्य भार्या मोरवणाही। सा जीणा तस्य पचमपुत्र सा. साधू तस्यभार्या होलाही तयोपुत्र चि० सावलदास तस्यभार्या पूराही एतेषा मध्ये सा. मलूतेनेद शास्त्र हरिवशपुराणाख्य ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्त मडलाचार्य श्री श्री श्री लक्ष्मीचन्दतस्यशिष्या अर्जिका शांति श्री योग्य घटापितं ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्त।

१८८६. प्रति सं० २। पत्र स० १२७। ले० काल सं० १६६३ आसोज सुदी ३। वे० स० ३८७। क भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला पत्र बिलकुल फटा हुआ है।

१८८७ प्रति स० ३। पत्र सं० १५७। ले० काल स० १६४६ माघ बुदी १। वे० स० १८६। च भण्डार।

विशेष—यह प्रति अम्बावती (आमेर) मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे नेमिनाथ चैत्यालय मे लिखी गई थी। प्रशस्ति अपूर्ण है।

१८८८ प्रति सं० ४। पत्र स० १८८। ले० काल स० १८३४ पौष बुदी १२। वे० स० ३१। छ भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २३८) छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २२) तथा ञ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३१३) और है।

१८८६. पद्मपुराण—रविषेणाचार्य । पत्र स० ८७६ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण र० काल × । ले० काल स० १७०८ चैत्र सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० ६३ । ग्र भण्डार ।

विशेष—टोडा ग्राम निवासी साह् खीवसी ने प्रतिलिपि कराकर प० श्री हर्ष कल्याण का भेंट किया ।

१८६०. प्रति स० २ । पत्र स० ५६५ । ले० काल स० १८८२ ग्रासोज बुदी ६ । वे० स० ५२ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह् ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवाई थी ।

१८६१ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४४५ । ले० काल स० १८८५ भादवा बुदी १२ । वे० स० ४२२ । ङ भण्डार ।

१८६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७६८ । ले० काल स० १८३२ सावण सुदी १० । वे० स १८२ । ञ भण्डार ।

विशेष—चौधरियो के चैत्यालय मे प० गोरधनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८१ । ले० काल स० १७१२ ग्रासोज सुदी × । वे० स० १८३ । ञ भण्डार ।

विशेष—ग्रग्रवाल जातीय किसी श्रावक ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके ग्रतिरिक्त क भण्डार में एक प्रति (वे० स० ४२६) तथा ङ भण्डार में दो प्रतिया (वे० स० ४२३, ४२५) ग्रौर हैं ।

१८६४ पद्मपुराण (रामपुराण)—भट्टारक सोमसेन । पत्र स० ५२० । ग्रा० ६३/४×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र० काल शक स० १६५६ श्रावण सुदी १३ । ले० काल स० १८५८ ग्राषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० २४ । ग्र भण्डार ।

१८६५. प्रति स० २ । पत्र सं० ३५३ । ले० काल स० १८२५ ज्येष्ठ बुदी ऽऽ । वे० स० ४२५ । क भण्डार ।

विशेष—योगी महेन्द्रकीर्त्ति के प्रसाद से यह रचना की गई ऐसा स्वय लेखक ने लिखा है । लेखक प्रशस्ति कटी हुई है ।

१८६६ प्रति स० ३ । पत्र स० २०० । ले० काल सं० १८३६ बैशाख सुदी ११ । वे० स० ८ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्राचार्य रत्नकीर्त्ति के शिष्य नेमिनाथ ने सागानेर मे प्रतिलिपि की थी ।

१८६७ प्रति स० ४ । पत्र सं० २५७ । ले० काल स० १७९४ ग्रासोज बुदी १३ । वे० स० ३१२ । ख भण्डार ।

विशेष—सागानेर में गोधो के मन्दिर में प्रतिलिपि हुई ।

१८६८ प्रति सं० ५ । पत्र स० २५७ । ले० काल सं० १७६४ आसोज बुदी १३ । वे० सं० ३१२ । ञ भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे गोधो के मन्दिर मे मद्दूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त ङ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ४२५, ४२६) च भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २०४) तथा छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५६) और हैं ।

१८६६. पद्मपुराण—भ० धर्मकीर्त्ति । पत्र स० २०७ । आ० १३X६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल स० १८३५ कार्त्तिक सुदी १३ । वे० स० ३ । छ भण्डार ।

विशेष—जीवनराम ने रामगढ नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

१६०० पद्मपुराण (उत्तरखण्ड) " " । पत्र स० १७६ । आ० ६X४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १६२३ । ट भण्डार ।

विशेष—वैष्णव पद्मपुराण है । बीचके कुछ पत्र चूहोंने काट दिये हैं । अन्त मे श्रीकृष्ण का वर्णन भी है ।

१६०१. पद्मपुराणभाषा—पं० दौलतराम । पत्र सं० ४६६ । आ० १४X७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । र० काल स० १८२३ माघ सुदी ६ । ले० काल सं० १६१८ । पूर्ण । वे० स० २२०४ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल मे प० शिवदीनजी के समय मे मोतीलाल गोदीका के पुत्र श्री अमरचन्द ने हीरालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराकर पाटौदी के मन्दिर मे चढाया ।

१६०२. प्रति सं० २ । पत्र स० ५४१ । ले० काल स० १८८२ आसोज सुदी ६ । वे० सं० ५४ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवायी थी ।

१६०३ प्रति स० ३ । पत्र स० ४५१ । ले० काल स० १८६७ । वे० सं० ४२७ । ङ भण्डार ।

विशेष—इन प्रतियो के अतिरिक्त अ भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० ४१०, २२०३) क और ग भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० ४२४, ५३) घ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ५५, ५६) च और ज भण्डार मे दो तथा एक प्रति (वे० स० ६२३, ६२४, व २५२) तथा झ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १६, ८८) और हैं ।

१६०४ पद्मपुराणभाषा—खुशालचन्द । पत्र सं० २०६ । आ० १०X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । र० काल स० १७८३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १०८७ । अ भण्डार ।

१६०५ प्रति सं० २ । पत्र सं० २०६ से २६७ । ले० काल सं० १८४५ सावण बुदी ऽऽ । वे० सं० ७८२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल मे हुई थी ।

इसी भण्डार मे (वे० सं० ३४१) पर एक अपूर्ण प्रति और है ।

१६०६. पाण्डवपुराण—भट्टारक शुभचन्द्र। पत्र सं० १७३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल सं० १६०८। ले० काल सं० १७२१ फागुण बुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ६२। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ की रचना श्री शाकवाटपुर में हुई थी। पत्र १३५ तथा १३७ बाद में सं० १८८६ में पुन लिखे गये हैं।

१६०७. प्रति सं० २। पत्र सं० ३००। ले० काल सं० १८२६। वे० सं० ४६५। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ ब्रह्मश्रीपाल की प्रेरणा से लिखा गया था। महानन्द ने इसका संशोधन किया।

१६०८. प्रति सं० ३। पत्र सं० २०२। ले० काल सं० १६१३ चैत्र बुदी १०। वे० सं० ४४५। ङ भण्डार।

विशेष—एक प्रति ट भण्डार में (वे० सं० २०६०) और है।

१६०९. पाण्डवपुराण—भ० श्रीभूषण। पत्र सं० २४६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल सं० १६५०। ले० काल सं० १८०० मंगसिर बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २३७। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है। पत्र बडनगरी हैं।

१६१० पाण्डवपुराण—यश कीर्त्ति। पत्र सं० ३४०। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६६। अ भण्डार।

१६११. पाण्डवपुराणभाषा—बुलाकीदास। पत्र सं० १४६। आ० १३×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–पुराण। र० काल सं० १७५४। ले० काल सं० १८१२। पूर्ण। वे० सं० ४६२। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम ५ पत्रों में बाईस परीषह वर्णन भाषा में है।

अ भण्डार में इसकी एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १११८) और है।

१६१२ प्रति सं० २। पत्र सं० १५२। ले० काल सं० १८८६। वे० सं० ५५। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी।

१६१३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २००। ले० काल ×। वे० सं० ४४६। ङ भण्डार।

१६१४. प्रति सं० ४। पत्र सं० १४६। ले० काल ×। वे० सं० ४४७। ङ भण्डार।

१६१५. प्रति सं० ५। पत्र सं० १५७। ले० काल सं० १८६० मगसिर बुदी १०। वे० सं० ६२६। च भण्डार।

१६१६ पाण्डवपुराण—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० २२२। आ० १३×८½ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–पुराण। र० काल सं० १९२३ बैशाख बुदी २। ले० काल सं० १९३० पौष बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ४६३। क भण्डार।

१६१७ प्रति सं० २। पत्र सं० ३२०। ले० काल सं० १९४९ कार्त्तिक सुदी १५। वे० सं० ६६४। क भण्डार।

विशेष—रामरत्न पाराशर ने प्रतिलिपि की थी।

ङ भण्डार में इसकी एक प्रति (वे० सं० ४४८) और है।

१६१८ पुराणसार—श्रीचन्द्रमुनि । पत्र सं० १०० । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल सं० १०७७ । ले० काल स० १६०६ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २३६ । अ भण्डार ।

विशेष—आमेर (आम्रगढ) के राजा भारामल के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१६१६ प्रति स० २ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १५४३ फाल्गुण बुदी १० । वे० सं० ४७१ । ङ भण्डार ।

१६२०. पुराणसारसग्रह—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १५६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल स० १८५६ मगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । क भण्डार ।

१६२१ बालपद्मपुराण—पं० पन्नालाल बाकलीवाल । पत्र सं० २०३ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १६०६ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० ११३८ । अ भण्डार ।

विशेष—लिपि बहुत सुन्दर है । कलकत्ते मे रामग्रधीन (रामादीन) ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२२ भागवत द्वादशम् स्कंध टीका " " । पत्र सं० ३१ । आ० १४×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७८ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्रो के बीच मे मूल तथा ऊपर नीचे टीका दी हुई है ।

१६२३ भागवतमहापुराण (सप्तमस्कंध) " " । पत्र सं० ६७ । आ० १४½×७ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०८८ । ट भण्डार ।

१६२४ प्रति स० २ (षष्ठम स्कंध) " । पत्र स० ६२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०२६ । ट भण्डार ।

विशेष—बीच के कई पत्र नही है ।

१६२५ प्रति सं० ३ । (पञ्चम स्कंध) " । पत्र सं० ८३ । ले० काल स० १८३० चैत्र सुदी १२ । वे० स० २०६० । ट भण्डार ।

विशेष—चौबे सरूपराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२६. प्रति स० ४ (अष्टम स्कंध) . । पत्र सं० ११ से ४७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०६१ । ट भण्डार ।

१६२७ प्रति सं० ५ (तृतीय स्कंध) " । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०६२ । ट भण्डार ।

विशेष—६७ से आगे पत्र नही हैं ।

वे० सं० २८८ से २०६२ तक ये सभी स्कंध श्रीधर स्वामी कृत संस्कृत टीका सहित है ।

१६२८ भागवतपुराण" । पत्र स० १४ से ६३ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१०६ । ट भण्डार ।

विशेष—६०वा पत्र नही है ।

१६२६. प्रति सं० २ । पत्र स० १६ । ले० काल X । वे० स० २११३ । ट भण्डार ।

विशेष—द्वितीय स्कंध के तृतीय अध्याय तक की टीका पूर्ण है ।

१६३० प्रति सं० ३ । पत्र स० ४० से १०५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २१७२ । ट भण्डार ।

विशेष—तृतीय स्कंध है ।

१६३१. प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २१७३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम स्कंध के द्वितीय अध्याय तक है ।

१६३२ मल्लिनाथपुराण—सकलकीर्त्ति । पत्र स० ४२ । आ० १२X५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल X । ले० काल १८८८ । वे० स० २०८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ८३६) और है ।

१६३३ प्रति सं० २ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १७२० माह सुदी १४ । वे० स० ५७१ । क भण्डार ।

१६३४ प्रति सं० ३ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १६६३ मगसिर बुदी ६ । वे० स० ५७२ ।

विशेष—उदयचन्द लुहाडिया ने प्रतिलिपि करके दीवाण अमरचन्दजी के मन्दिर मे रखी ।

१६३५. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४२ । ले० काल स० १८१० फागुण सुदी ३ । वे० स० १३६ । ख भण्डार ।

१६३६. प्रति सं० ५ । पत्र स० ४५ । ले० काल सं० १८८१ सावण सुदी ८ । वे० स० १३६ । ख भण्डार ।

१६३७ प्रति स० ६ । पत्र स० ४५ । ले० काल स० १८६१ सावण सुदी ८ । वे० स० ५८७ । ङ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे शिवलाल गोधा ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

१६३८ प्रति स० ७ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १८४६ । वे० स० १२ । छ भण्डार ।

१६३६ प्रति स० ८ । पत्र स० ३२ । ले० काल स० १७८६ चैत्र सुदी ३ । वे० स० २१० । झ भण्डार ।

१६४०. प्रति सं० ६ । पत्र स० ४० । ले० काल स० १८६१ भादवा बुदी ४ । वे० स० १५२ । व्य भण्डार ।

विशेष—शिवलाल साहू ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी ।

१६४१ मल्लिनाथपुराणभाषा—सेवाराम पाटनी । पत्र स० ३६ । आ० १२X७३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६८८ । अ भण्डार ।

१६४२ महापुराण (सक्षिप्त) । पत्र स० १७ । आ० ११X४१/२ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पुराण । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५८६ । ङ भण्डार ।

मगलाग्रज स्थविराचार्य श्री केशवसेन तत् शिष्योपाध्याय श्री विश्वकीर्त्ति तत्गुरु भा० ब्र० श्री दीपजी ब्रह्म श्री राजसागर युक्ते लिखित स्वज्ञानावर्ण कर्मक्षयार्थ। भ० श्री ५ विश्वसेन तत् शिष्य मडलाचार्य श्री ५ जयकीर्त्ति पं० दीपचन्द प० मथाचद युक्तै आत्म पठनार्थं।

१६६५. शान्तिननाथपुराण—महाकवि अशग। पत्र स० १४३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल शक सवत् ६१०। ले० काल सं० १५५३ भादवा बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ६६। अ भण्डार।

विशेष–प्रशस्ति—सवत् १५५३ वर्ष भादवा वदि बारीस रवौ अद्येह श्री गधारमध्ये लिखित पुस्तक लेखक पाठकयो चिरंजीयात्। श्री मूलसघे श्री कुदकुन्दाचार्यान्वये सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक जिनचन्द्रदेवाच्छिष्य मंडलाचार्य्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवास्तच्छिष्य ब्र० लाला पठनार्थं हुवड न्यातीय श्रे० हापा भार्य्या सपूरित श्रुत श्रेष्ठि धना स० थावर स० सोमा श्रेष्ठि धना तस्य पुत्र वीरसाल भा० वनादे तयो पुत्र. विद्याधर द्वितीय पुत्र धर्मधर एतै सर्वे शान्तिपुराणं लखाप्य पात्राय दत्त।

ज्ञानवान ज्ञानदानेन निर्भयोऽभयदानतः।
अन्नदानात् सुखी नित्य निर्व्याधी भेषजाद्भवेत ।।१।।

१६६६ प्रति सं० २। पत्र स० १४४। ले० काल स० १८६१। वे० स० ६८७। क भण्डार।

विशेष—इस ग्रन्थ की ङ, ञ और ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ७०४, १६, १६३५) और हैं।

१६६७ शान्तिनाथपुराण—खुशालचन्द। पत्र स० ५१। आ० १२½×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५७। छ भण्डार।

विशेष—उत्तरपुराण मे से है।

ट भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० १८६१) और है।

१६६८. हरिवशपुराण—जिनसेनाचार्य। पत्र स० ३१४। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल शक सं० ७०५। ले० काल सं० १८३० माघ सुदी १। पूर्ण। वे० स० २१६। अ भण्डार।

विशेष—२ प्रतियो का सम्मिश्रण है। जयपुर नगर मे प० डूंगरसी के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी।

इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ८६८) और है।

१६६९. प्रति सं० २। पत्र स० ३२४। ले० काल स० १८३६। वे० सं० ८५२। क भण्डार।

१६७०. प्रति सं० ३। पत्र स० २८७। ले० काल स० १८६० ज्येष्ठ सुदी ५। वे० स० १३२। घ भण्डार।

विशेष—गोपाचल नगर मे ब्रह्मगभीरसागर ने प्रतिलिपि की थी।

१६५५. प्रति स० ६ । पत्र स० १४१ । ले० काल स० १७८५ कार्त्तिक बुदी ४ । वे० स० १५ । ञ भण्डार ।

१६५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११६ । ले० काल X । वे० स० ४६३ । ञ भण्डार ।

विशेष—आ० शुभचन्द्रजी, चोखचन्दजी, रायचन्दजी की पुस्तक है । ऐसा लिखा है ।

१६५७ प्रति स० ८ । पत्र सं० १०७ । ले० काल स० १८३६ । वे० स० १८६१ । ट भण्डार ।

विशेष—सवाई माधोपुर मे भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति ने आदिनाथ चैत्यालय मे लिखवायी थी ।

१६५८ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२३ । ले० काल स० १६६८ भादवा सुदी १२ । वे० स० १८६३ । ट भण्डार ।

विशेष—बागड महादेश के सागपत्तन नगर मे भ० सकलचन्द्र के उपदेश मे हुबडज्ञातीय बजियाणा गोत्र वाले साह भाका भार्या बाई नायके ने प्रतिलिलिपि करवायी थी ।

इस ग्रन्थ की घ और च भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० ८६, ३२६) ञ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३२, ४६) और हैं ।

१६५६. वर्द्धमानपुराण—पं० केशरीसिंह । पत्र स० ११८ । आ० ११X८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र० काल सं० १८७३ फागुण सुदी १२ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६४७ ।

विशेष—बालचन्दजी छावडा दीवान जयपुर के पौत्र ज्ञानचन्द के आग्रह पर इस पुराण की भाषा रचना की गई ।

च भण्डार मे तीन अपूर्ण प्रतिया (वे० स० ६७४, ६७५, ६७६) छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १५६) और है ।

१६६०. प्रति सं० २ । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १७७३ । वे० स० ६७० । ङ भण्डार ।

१६६१ वासुपूज्यपुराण'' । पत्र स० ६ । आ० १२½X८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १५८ । छ भण्डार ।

१६६२ विमलनाथपुराण—ब्रह्मकृष्णदास । पत्र स० ७५ । आ० १२X५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल स० १६७४ । ले० काल स० १८३१ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० १३१ । अ भण्डार ।

१६६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल स० १८६७ चैत्र बुदी ८ । वे० स० ६६ । घ भण्डार ।

१६६४ प्रति सं० ३ । पत्र स० १०७ । ले० काल स० १६६६ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० स० १८ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थकार का नाम ब्र० कृष्णजिष्णु भी दिया है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सबत् १६६६ वर्षे ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे श्री षेमलासा महानगरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्रीमत् काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये एतदनुक्रमेण भ० श्री रत्नभूषण तत्पट्टे भ० श्री जयकीर्त्ति ब्र० श्री

कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० सकलकीर्त्तिदेवा भ० भुवनकीर्त्तिदेवा भ० श्री ज्ञानभूषणेन शिष्यमुनि जयनंदि पठनार्थं। हूब जातीय ' " ।

१६८० प्रति सं० ७। पत्र स० ४१३। ले० काल स० १६३७ माह बुदी १३। वे० सं० ४६१। ड भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति विस्तृत है।

उक्त प्रतियो के अतिरिक्त क, ङ एव ञ भण्डारो मे एक एक प्रति (वे० स० ८५१, ६०६, ६७ और हैं।

१६८१ हरिवंशपुराण—श्री भूषण। पत्र सं० ३४५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४६१। ञ भण्डार।

१६८२. हरिवंशपुराण—भ० सकलकीर्त्ति। पत्र स० २७१। आ० ११३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल स० १६५७ चैत्र सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ८५०। क भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है।

१६८३ हरिवशपुराण—धवल। पत्र स० ५०२ से ५२३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६६६। अ भण्डार।

१६८४. हरिवशपुराण—यश कीर्त्ति। पत्र स० १६६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल स० १५७३। फागुण सुदी ६। पूर्ण। वे० स० ६८।

विशेष—तिजारा ग्राम मे प्रतिलिपि की गई थी।

अथ सवत्सरेऽस्मिन् राज्ये सवत् १५७३ वर्षे फाल्गुणि शुदि ६ रविवासरे श्री तिजारा स्थाने। अलावलखा राज्ये श्री काष्ट ' । अपूर्ण।

१६८५ हरिवशपुराण—महाकवि स्वयभू। पत्र स० २०। आ० ६×४½। भाषा–अपभ्रंश। विषय पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४५०। च भण्डार।

१६८६. हरिवंशपुराणभाषा—दौलतराम। पत्र स० १०० से २००। आ० १०×८ इञ्च। भाषा हिन्दी गद्य। विषय–पुराण। र० काल सं० १८२६ चैत्र सुदी १५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६८। भण्डार।

१६८७ प्रति सं० २। पत्र स० ५६६। ले० काल स० १६२६ भादवा सुदी ७। वे० स० ६०६ (ङ भण्डार।

१६८८ प्रति सं० ३। पत्र स० ४२५। ले० काल स० १६०८। वे० सं० ७२८। च भण्डार।

१६८९. प्रति सं० ४। पत्र स० ७०६। ले० काल स० १६०३ आसोज सुदी ७। वे० स० २३७। भण्डार।

विशेष—उक्त प्रतियो के अतिरिक्त छ भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० सं० १३४, १५१) ङ, तथा भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ६०६, १४४) और हैं।

१६७१. प्रति सं० ४ । पत्र स० २४२ से ५१७ । ले० काल स० १६२५ कार्तिक सुदी २ । अपूर्ण । वे० स० ४४७ । च भण्डार ।

विशेष—श्री पूरणमल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४४६) और है ।

१६७२ प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७४ से ३१३, ३४१ से ३४३ । ले० काल स० १६६३ कार्तिक बुदी १३ । अपूर्ण । वे० स० ७६ । छ भण्डार ।

१६७३ प्रति स० ६ । पत्र स० २४३ । ले० काल स० १६५३ चैत्र बुदी २ । वे० स० २६० । ञ भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज मानसिंह के शासनकाल मे सागानेर मे आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

उक्त प्रतियो के अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० स० ४४६) छ भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० ७६ मे) और हैं ।

१६७४ हरिवंशपुराण—ब्रह्मजिनदास । पत्र स० १२८ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० स० २१३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ जोधराज पाटोदी के बनाये हुये मन्दिर मे प्रतिलिपि करवाकर विराजमान किया गया । प्राचीन अपूर्ण प्रति को पीछे पूर्ण किया गया ।

१६७५. प्रति सं० २ । पत्र स० २५७ । ले० काल स० १६६१ आसोज बुदी ६ । वे० स० १३१ । घ भण्डार ।

विशेष—देवपल्ली शुभस्थाने पार्श्वनाथ चैत्यालये काष्ठासघे नदीतटगच्छे विद्यागणे रामसेनान्वये " आचार्य कल्याणकीर्तिना प्रतिलिपि कृत ।

१६७६. प्रति स० ३ । पत्र स० ३४६ । ले० काल स० १८०४ । वे० स० १३३ । घ भण्डार ।

विशेष—देहली मे प्रतिलिपि की गई थी । लिपिकार ने महम्मदशाह का शासनकाल होना लिखा है ।

१६७७. प्रति स० ४ । पत्र स० २६७ । ले० काल स० १७३० । वे० स० ४४८ । च भण्डार ।

१६७८ प्रति सं० ५ । पत्र स० २५२ । ले० काल स० १७८३ कार्तिक सुदी ५ । वे० स० ०६ । ञ भण्डार ।

विशेष—साह मल्लूकचन्दजी के पठनार्थ बौंली ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी । ब्र० जिनदास भ० सकलकीर्ति के शिष्य थे ।

१६७६ प्रति स० ६ । पत्र स० २६८ । ले० काल स० १५३७ पौष बुदी ३ । वे० सं० ३३३ । ञ भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति—स० १५३७ वर्षे पौष बुदी २ सोमे श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री

कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० सकलकीर्त्तिदेवा भ० भुवनकीर्त्तिदेवा भ० श्री ज्ञानभूषणेन शिष्यमुनि जयनदि पठनार्थं । हूव ज्ञातीय ' '' ।

१६८० प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१३ । ले० काल सं० १६३७ माह बुदी १३ । वे० सं० ४६१ । ह भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति विस्तृत है ।

उक्त प्रतियो के अतिरिक्त क, ङ एव ञ भण्डारो मे एक एक प्रति (वे० स० ८५१, ६०६, ६७ और हैं ।

१६८१ हरिवंशपुराण—श्री भूषण । पत्र सं० ३४५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४६१ । ञ भण्डार ।

१६८२. हरिवंशपुराण—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र स० २७१ । आ० ११३/४×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १६५७ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ८५० । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

१६८३ हरिवशपुराण—धवल । पत्र स० ५०२ से ५२३ । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा–अपभ्र श विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६६ । अ भण्डार ।

१६८४. हरिवशपुराण—यश कीर्त्ति । पत्र म० १६६ । आ० १०१/२×४१/२ इञ्च । भाषा–अपभ्र श विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल स० १५७३ । फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ६८ ।

विशेष—तिजारा ग्राम मे प्रतिलिपि की गई थी ।

अथ सवत्सरेऽतस्मिन् राज्ये सवत् १५७३ वर्षे फाल्गुणि शुदि ६ रविवासरे श्री तिजारा स्थाने । अला लखा राज्ये श्री काष्ट । अपूर्ण ।

१६८५ हरिवशपुराण—महाकवि स्वयभू । पत्र स० २० । आ० ६×४१/२ । भाषा–अपभ्र श । विषय पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४५० । च भण्डार ।

१६८६. हरिवंशपुराणभाषा—दौलतराम । पत्र स० १०० से २०० । आ० १०×८ इञ्च । भाष हिन्दी गद्य । विषय–पुराण । र० काल स० १८२६ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६८ । भण्डार ।

१६८७ प्रति सं० २ । पत्र स० ५६६ । ले० काल स० १६२६ भादवा सुदी ७ । वे० स० ६०६ (ङ भण्डार ।

१६८८ प्रति स० ३ । पत्र स० ४२५ । ले० काल स० १६०८ । वे० स० ७२८ । च भण्डार ।

१६८६. प्रति सं० ४ । पत्र स० ७०६ । ले० काल सं० १६०३ आसोज सुदी ७ । वे० स० २३७ । भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियो के अतिरिक्त छ भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० १३४, १५१) ङ, तथा भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ६०६, १४४) और है ।

१६६०. हरिवंशपुराणभाषा—खुशालचन्द्र । पत्र स० २०७ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । र० काल स० १७८० वैशाख सुदी ३ । ले० काल स० १८६० पूर्ण । वे० स० ३७२ । अ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का सम्मिश्रण है ।

१६६१ प्रति सं० २ । पत्र स० २०२ । ले० काल स० १८०५ पौष बुदी ८ । अपूर्ण । वे० स० १५४ । छ भण्डार ।

विशेष—१ से १७२ तक पत्र नही हैं । जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१६६२. प्रति सं० ३ । पत्र स० २३४ । ले० काल × । वे० स० ४६६ । ञ भण्डार ।

विशेष—आरम्भ के ४ पत्रो मे मनोहरदास कृत नरक दुख वर्णन है पर अपूर्ण है ।

१६६३. हरिवंशपुराणभाषा । पत्र स० १५० । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६०७ । ङ भण्डार ।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति । (वे० स० ६०८) और है ।

१६६४ हरिवशपुराणभाषा · । पत्र स० ३८१ । आ० ८¾×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य (राजस्थानी) । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल स० १६७१ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १०२२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम तथा अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

आदिभाग—अथ कथा सम्बन्ध लीखीयइ छई । तेरा कालेरा तेरा समएरा समरणो भगवत महावीरे रायगेहे समोसरीये तेहीज काल, तेही ज समउ, ते भगवत श्री वीर वर्द्धमान राजग्रही नगरी आवी समोसर्या । ते किसा छइ वीतराग चउतीस अतिसइ करी सहित, पइतीस वचन वाणी करी सोभित, चउदइसह साध, छतीस सहस परवर्या । अनेक भविक जीव प्रतिबोधता श्रीराजग्रही नगरी आवी समोसरया । तिवारइ वनमाली आवी राजा श्री सेणिक कनइ । वधामणी दिधी । सामी आज श्री वर्द्धमान आवी समोसरया छइ । सेणीक ते वात साभली नइ बधामणी आपी । राजा आपरण महाहर्षवत थकउ । वादवानी सामग्री करावरण लागउ । ते कि सामा गलीसा कीधउ । पछि आनद भेरि उछली जय जयकार वद थउ । भवीक लोक सघलाइ आनद परिथया । धन धन कहता लोक सघलाइ वादिवा चाल्या । पछइ राजा श्रेणक सिचाणक हस्ती सिणगारी उपरि छइठउ । माथइ सेत छत्र धराप्उ । उभइ पास चामर ढालइ छइ । वदी जण कइ वार करइ छइ । मगिण जण वहिद बोलइ छइ । पाच शब्द वाजित्र वाजते । चतुरगिनी सेना सजकरी । राय राणा मडलीक मुकुटबधनी सामत चउरासिया · ।

एक अन्य उदाहरण- पत्र १६८

तिणी अजोध्या नउ हेमरथ राजा राज पाले छइ । तेह राजा नइ धारणी राणी छइ । तेह नउ भाव धर्म उपरि घणउ छइ । तेहनी कुषि तें कुमर पणइ उपनो । तेह नउ नाम बुधुकीत जाणिवउ । ते पुणु कुमर जाणे सिस समान छइ । इम करता ते कुमर जोवन भरिया । तिवारइ पिताइ तेह नइ राज भार थाप्पउ । तिवारइ तेग जाना मुष भोगवता काल अतिक्रमइ छइ । वली जिरा नउ धर्म घणु करइ छइ ।

पत्र संख्या ३७१

नागश्री जे नरक गई थी। तेह नी कथा साभलउ। तिणी नरक माहि थी। ते जीवनीकलियउ। पछइ मरी रोइ सर्प्प थयउ। सयंम्भू रमणि द्वीपा माहि। पछइ ते तिहा पाप करिवा लागउ। पछई वली तिहा थको मरण पाम्यो। वीजै नरक गई तिहा तिन सागर आयु भोगवी। छेदन भेदन तापन दुख भोगवी। वली तिहा थकी ते निकलियउ। ते जीव पछइ चपा नगरी माहि चाडाल उइ घरि पुत्री उपनी तेहा निचकुल अवतार पाम्यउ। पछइ ते एक बार वन माहि तिहा उवर वीणीवा लागी।

अन्तिम पाठ—पत्र संख्या ३८०-८१

श्री नेमनाथ तिन त्रिभवण तारणहार तिणी सागी विहार क्रम कीयउं। पछइ देस विदेस नगर पाटणना भवीक लोक प्रवोधीया। वलीत्रिणी सामी समकित ज्ञान चारित्र तप सपनीयउ दान दीयउ। पछइ गिरनार आव्या। तिहा समोसर्या। पछइ घणा लोक सबोध्या। पछइ सहस्र वरस आउषउ भोगवीनइं दस धनुष प्रमाण देह जाणवी। ईणी परइं घणा दीन गया। पछइ एक मासउ गरयउ। पछइ जगनाथ जोग धरी नइ। समो सरण त्याग कीयउं। तिवारइ ते घातिया कर्म षय करी चउदमइ गुणठाणइं रह्या। तिहा थका मोष सिद्धि थया। तिहा आठ गुण सहित जाणवा। वली पाच सइ छत्रीस साध साथइं मूकति गया। तिणी सामी अचल ठाम लाधउ। तेहना सुखनीउपमा दीधी न जाई। ईसा सूखनासवी भागी थया। हिवइ रोक था सुगमार्थ लिखी छइ। जे काई विरुद्ध वात लिखाणी होई ते सोध तिरती कीज्यो। वली सामनी साखि। जे काई मइ आपणी वुध थकी। हरवस कथा माहि अघ कोउ छइ लीखीयउ होइ। ते मिछामि दुकड था ज्यो।

सवत् १६७१ वर्षे आसोज मासे कृष्णपक्षे अष्टमी तिथौ। लिखित मुनि कान्हजी पाडलीपुर मध्ये। चिज शिष्यणी आर्या सहजा पठनार्थं।

काव्य एवं चरित्र

१९९५. अकलङ्कचरित्र—नाथूराम। पत्र सं० १२। आ० १२×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–जैनाचार्य अकलङ्क की जीवन कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७६। अ भण्डार।

१९९६ अकलङ्कचरित्र। पत्र सं० १२। आ० १२½×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २। ड भण्डार।

१९९७ अमरुशतक ...। पत्र सं० ६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२६। ज भण्डार।

१९९८. उद्धवसंदेशाख्यप्रबन्ध। पत्र सं० ८। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल सं० १७७६। पूर्ण। वे० सं० ३१६। ज भण्डार।

१९९९ ऋषभनाथचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति। पत्र सं० ११६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रथम तीर्थङ्कर आदिनाथ का जीवन चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १५६१ पौष बुदी ऽऽ। पूर्ण। वे० सं० २०४०। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम आदिपुराण तथा वृषभनाथ पुराण भी है।

प्रशस्ति— १५६१ वर्षे पौष बुदी ऽऽ रवौ। श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री ६ प्रभाचन्द्रदेवा भ० श्री ६ पद्मनंदिदेवा भ० श्री ६ सकलकीर्त्तिदेवा भ० श्री ६ भुवनकीर्त्तिदेवा भ० श्री ६ प्रभाचन्द्रदेवा भ० श्री ६ विजयकीर्त्तिदेवा भ० श्री ६ शुभचन्द्रदेवा भ० श्री ६ सुमतिकीर्त्तिदेवा स्थविराचार्य श्री ६ चंदकीर्त्तिदेवास्तत्शिष्य श्री ५ श्रीवत ते शिष्य ब्रह्म श्री नाकरस्येद पुस्तक पठनार्थं।

२००० प्रति सं० २। पत्र सं० २०६। ले० काल सं० १८८०। वे० सं० १५०। अ भण्डार।

इस भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १३५) और है।

२००१. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६०। ले० काल शक सं० १६६७। वे० सं० ५२। क भण्डार।

एक प्रति वे० सं० ६६६ की और है।

२००२ प्रति सं० ४। पत्र सं० १६४। ले० काल सं० १७१७ फागुण बुदी १०। वे० सं० ६४। ङ भण्डार।

२००३. प्रति सं० ५। पत्र सं० १८२। ले० काल सं० १७८३ ज्येष्ठ बुदी ६। वे० सं० ६५। ङ भण्डार।

२००४. प्रति सं० ६ । पत्र स० १७१ । ले० काल स० १८५५ प्र० श्रावण सुदी ८ । वे० सं० ३० । छ भण्डार ।

विशेष—चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२००५ प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८१ । ले० काल स० १७७४ । वे० स० २८७ । व्य भण्डार ।

इसके अतिरिक्त ख भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १७६) तथा ट भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २१८३) और हैं ।

२००६. ऋतुसंहार—कालिदास । पत्र स० १३ । आ० १०×३½ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल स० १६२४ आसोज सुदी १० । वे० स० ४७१ । व्य भण्डार ।

विशेष– प्रशस्ति—सवत् १६२४ वर्ष अश्वनि सुदि १० दिने श्री मलधारगच्छे भट्टारक श्री श्री श्री मानदेव सूरि तत्शिष्यभावदेवेन लिखिता स्वहेतवे ।

२००७ करकण्डुचरित्र—मुनि कनकामर । पत्र स० ६१ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १५६५ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० १०२ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नही है ।

२००८. करकण्डुचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ८४ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल स० १६११ । ले० काल सं० १६५६ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २७७ । अ भण्डार ।

विशेष– प्रशस्ति—सवत् १६५६ वर्षे मागसिर सुदि ६ भौमे सोभंत्रा (सोजत) ग्रामे नेमनाथ चैत्यालये श्रीमत्काष्ठासघे भ० श्री विश्वसेन तत्पट्टे भ० श्री विद्याभूषण तत्शिष्य भट्टारक श्री श्रीभूषण विजिरामेस्तत्शिष्य ब्र० नेमसागर स्वहस्तेन लिखित ।

आचार्यावराचार्य श्री श्री चन्द्रकीर्त्तिजी तत्शिष्य आचार्य श्री हर्षकीर्त्तिजी की पुस्तक ।

२००९. प्रति सं० २ । पत्र स० ४६ । ले० काल × । वे० स० २८४ । व्य भण्डार ।

२०१० कविप्रिया—केशवदेव । पत्र स० २१ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–काव्य (शृङ्गार) । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११३ । ड भण्डार ।

२०११ कादम्बरीटीका ⋯ । पत्र सं० १५१ से १८३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १९७७ । अ भण्डार ।

२०१२. काव्यप्रकाशसटीक ⋯ । पत्र सं० ८३ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९७८ । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार का नाम नही दिया है ।

२०१३ किरातार्जुनीय—महाकवि भारवि । पत्र सं० ४६ । आ० १०½×४½ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९०२ । अ भण्डार ।

२०१४ प्रति सं० २ । पत्र स० ३१ से ६३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

२०१५. प्रति सं० ३ । पत्र स० ८७ । ले० काल स० १५३० भादवा बुदी ८ । वे० स० १२२ । ङ भण्डार ।

२०१६ प्रति स० ४ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १८४२ भादवा बुदी । वे० स० १२३ । ङ भण्डार ।

विशेष—साकेतिक टीका भी है ।

२०१७ प्रति सं० ५ । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १८१७ । वे० स० १२४ । ङ भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर मे माधोसिहजी के राज्य में प० गुमानीराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२०१८ प्रति स० ६ । पत्र स० ८६ । ले० काल X । वे० सं० ६६ । च भण्डार ।

२०१९ प्रति स० ७ । पत्र स० १२० । ले० काल X । वे० स० ६४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति मल्लिनाथ कृत सस्कृत टीका सहित है ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० स० ६३८) ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३५) च भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७०) तथा छ भण्डार में तीन प्रतिया (वे० स० ६४, २५१, २५२) और हैं ।

२०२०. कुमारसभव—महाकवि कालिदास । पत्र स० ४१ । आ० १२X५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल X । ले० काल स० १७८३ मगसिर सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ६३६ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ चिपक जाने से अक्षर खराब होगये हैं ।

२०२१ प्रति स० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल स० १७५७ । वे० स० १८४५ । जीर्ण । अ भण्डार ।

२०२२ प्रति स० ३ । पत्र स० २७ । ले० काल X । वे० स० १२५ । ङ भण्डार । अष्टम सर्ग पर्यंत ।

इनके अतिरिक्त अ एव क भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० ११८०, ११३) च भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० ७१, ७२) ञ भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० १३८, ३१०) तथा ट भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० २०५२, ३२३, २१०४) और हैं ।

२०२३ कुमारसभवटीका—कनकसागर । पत्र स० २२ । आ० १०X४३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २०३८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२०२४ क्षत्र-चूडामणि—वादीभसिंह । पत्र सं० ४२ । आ० ११X४३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल स० १६८७ सावण बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १३३ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम जीवंधर चरित्र भी है ।

२०२५ प्रति स० २ । पत्र स० ४१ । ले० काल स० १८६१ भादवा बुदी ६ । वे० स० ७३ । च भण्डार ।

विशेष—दीवान अमरचन्दजी ने मांनूलाल वैद्य के पास प्रतिलिपि की थी ।

च भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७४) और है।

२०२६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४३ । ले० काल सं० १६०५ माघ सुदी ५ । वे० सं० ३३२ । ञ भण्डार ।

२०२७ खण्डप्रशस्तिकाव्य । पत्र स० ३ । आ० ८३/४X५३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल X । ले० काल स० १८७१ प्रथम भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १३१४ । अ भण्डार ।

विशेष—सवाईराम गोधा ने जयपुर मे अबावती बाजार के आदिनाथ चैत्यालय (मन्दिर पाटोदी) मे प्रतिलिपि की थी ।

ग्रन्थ मे कुल २१२ श्लोक हैं जिनमे रघुकुलमणि श्री रामचन्द्रजी की स्तुति की गई है। वैसे प्रारम्भ मे रघुकुल की प्रशसा फिर दशरथ राम व सीता आदि का वर्णन तथा रावण के मारने मे राम के पराक्रम का वर्णन है।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री खडप्रशस्ति काव्यानि सपूर्णा ।

२०२८ गजसिंहकुमारचरित्र—विनयचन्द्र सूरि । पत्र स० २३ । आ० १०१/२X४१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १३५ । ङ भण्डार ।

विशेष—२१ व २२वा पत्र नही है ।

२०२९. गीतगोविन्द—जयदेव । पत्र स० २ । आ० ११३/४X७३/४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२२ । क भण्डार ।

विशेष—झालरापाटन मे गौड ब्राह्मण पडा भैरवलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२०३० प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल स० १८४४ । वे० स० १८२६ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० स० १७४६) और है ।

२०३१. गोतमस्वामीचरित्र—मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र । पत्र स० ५३ । आ० ६३/४X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत विषय-चरित्र । र० काल स० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २१ । अ भण्डार ।

२०३२. प्रति स० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल स० १८३६ कार्त्तिक सुदी १२ । वे० सं० १३२ । क भण्डार ।

२०३३. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १८६४ । वे० स० ५२ । छ भण्डार ।

२०३४ प्रति स० ४ । पत्र स० ५३ । ले० काल स० १६०६ कार्त्तिक सुदी १२ । वे० स० २१ । झ भण्डार ।

२०३५. प्रति स० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल X । वे० स० २५४ । ञ भण्डार ।

२०३६ गौतमस्वामीचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० १०८ । आ० १३X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल सं० १६४० मगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १३३ । क भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थकर्ता आचार्य धर्मचन्द्र हैं । रचना सवत् १४२६ दिया है जो ठीक प्रतीत नही होता ।

२०३७ घटकर्परकाव्य—घटकर्पर । पत्र स० ४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल X । ले० काल स० १८१४ । पूर्ण । वे० स० २३० । अ भण्डार ।

विशेष—चम्पापुर मे आदिनाथ चैत्यालय मे ग्रन्थ लिखा गया था ।

अ और ञ भण्डार मे इसकी एक एक प्रति (वे० सं० १५४८, ७५) और है ।

२०३८. चन्दनाचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ३६ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १६२५ । ले० काल स० १८३३ भादवा बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १८३ । अ भण्डार ।

२०३९ प्रति सं० २ । पत्र स० ३४ । ले० काल स० १८२५ माह बुदी ३ । वे० स० १७२ । क भण्डार ।

२०४०. प्रति स० ३ । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १८६३ द्वि० श्रावण । वे० स० १६७ । ङ भण्डार ।

२०४१ प्रति सं० ४ । पत्र स० ४० । ले० काल सं० १८३७ माह बुदी ७ । वे० स० ५४ । छ भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे प० सवाईराम गोधा के मन्दिर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२०४२ प्रति स० ५ । पत्र स० २७ । ले० काल स० १८६१ भादवा सुदी ८ । वे० स० ५८ । छ भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५७) और है ।

२०४३ प्रति स० ६ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १८३२ मगसिर बुदी १ । वे० स० ५० । व भण्डार ।

२०४४. चन्द्रप्रभचरित्र—वीरनंदि । पत्र स० १३० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल X । ले० काल स० १५८६ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ६१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२०४५. प्रति स० २ । पत्र स० १८६ । ले० काल स० १६४६ मगसिर बुदी १० । वे० स० १७४ । क भण्डार ।

२०४६. प्रति स० ३ । पत्र स० ८७ । ले० काल सं० १५२४ भादवा बुदी १० । वे० स० १६ । घ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री मत्खेडल वशे विवुध मुनि जनानन्दकृदे प्रसिद्धे रूपानामेति साधु सकलकलिमलक्षालनैक प्रवीण मघ-स्यस्तस्यपुत्रे जिनवर वचनाराधको दानत्यास्तेनेद नामकाव्य निजकरलिखितं चन्द्रनाथस्य सार्थं । स० १५२४ वर्षे भादवा वदी ७ ग्रन्थ लिखित कर्मक्षयानिमित्त ।

२०४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७ से ७४ । ले० काल सं० १७८५ । अपूर्ण । वे० सं० २१७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८५ वर्षे फागुण सुदी ७ रविवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री सहसकीर्त्ति देवातत्शिष्य ब्र० सजेयति इद शास्त्रं ज्ञानावरणी कर्मक्षया निमित्तं लिखापितं ठीकुरदासस्थाने " साधु लिखित ।

इन प्रतियो के अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६९९) च भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० ६०, ८८) ज भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० सं० १६१३, १९४८, १९४६) व एवं ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० १६४, २१६०) और है ।

२०४८. चन्द्रप्रभकाव्यपञ्जिका—टीकाकार गुणनन्दि । पत्र सं० ८६ । आ० १०×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११ । ञ भण्डार ।

विशेष—मूलकर्त्ता आचार्य वीरनंदि । संस्कृत में संक्षिप्त टीका दी हुई है । १८ सर्गों मे है ।

२०४९. चन्द्रप्रभचरित्रपञ्जिका । पत्र सं० २१ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५६४ आसोज सुदी १३ । वे० सं० १२५ । ञ भण्डार ।

२०५०. चन्द्रप्रभचरित्र—यशःकीर्त्ति । पत्र सं० ९६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–आठवें तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ का जीवन चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६४१ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ९९ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ संवत् १६४१ वर्षे पोह सुदि एकादशी बुधवासरे काष्ठासंघे मा... (अपूर्ण)

२०५१. चन्द्रप्रभचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं० ९५ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८०१ कार्तिक बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १ । अ भण्डार ।

विशेष—बसवा नगरे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे आचार्यवर श्री मेरुकीर्त्ति के शिष्य पं० परशुरामजी के शिष्य नदराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२०५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८३० कार्तिक सुदी १० । वे० सं० ७३ । क भण्डार ।

२०५३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १८६५ जेठ सुदी ८ । वे० सं० १६९ । छ भण्डार ।

इस प्रति के अतिरिक्त ख एवं ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ४८, २१९९) और है ।

२०५४. चन्द्रप्रभचरित्र—कवि दामोदर (शिष्य धर्मचन्द्र) । पत्र सं० १४९ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १७२७ भादवा सुदी ६ । ले० काल सं० १८८१ सावण बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १६ । अ भण्डार ।

विशेष—आदिभाग–

ॐ नम । श्री परमात्मने नम । श्री सरस्वत्यै नम ।

श्रिय चंद्रप्रभो नित्याचद्र दश्चन्द्र लाछन ।
अघ कुमुदचद्रोवश्चद्रप्रभो जिन' क्रियात् ॥१॥
कुशासिनवचो चूडजगतारणहेतवे ।
तेन स्ववाक्यसूरोत्नैर्द्ध मपोत प्रकाशित' ॥२॥
युगादौ येन तीर्थेशाधर्मतीर्थ प्रवर्त्तित ।
तमह वृषभं वदे वृषद वृषनायक ॥३॥
चक्री तीर्थकर कामो मुक्तिप्रियो महावली ।
शातिनाथ सदा शान्ति करोतु न प्रशाति कृत् ॥४॥

अन्तिम भाग—

भूभुन्नेत्राचल (१७२१) शशवराक प्रमे वर्षेऽतीते
नवमिदिवसेमासि भाद्रे सुयोगे ।
रम्ये ग्रामे विरचितमिद श्रीमहाराष्ट्रनाम्नि
नाभेयश्चप्रवरभवने भूरि शोभानिवासे ॥८५॥
रम्य चतु. सहस्राणि पचदशयुतानि वै
अनुष्टुपे समाख्यात श्लोकैरिद प्रमाणत. ॥८६॥

इति श्री मडलसूरिश्रीभूषण तत्पट्टगच्छेश श्रीधर्मचद्रशिष्य कवि दामोदरविरचिते श्रीचन्द्रप्रभ चरिते निर्वाण गमन वर्णनं नाम सप्तविंशति नाम सर्ग ॥२७॥

इति श्री चन्द्रप्रभचरित समाप्त । सवत् १८४१ श्रावण द्वितीय कृष्णपक्षे नवम्या तिथौ सोमवासरे सवाई जयनगरे जोधराज पाटोदी कृत मंदिरे लिखतं प० चोखचद्रस्य शिष्य सुरणरामजी तस्य शिष्य कल्याणदासस्य तत् शिष्य खुशालचद्रे ण स्वहस्तेनपूर्णीकृत ॥

२०५५. प्रति सं० २ । पत्र स० १६२ । ले० काल सं० १८६२ पौष बुदी १४ । वे० स० १७५ । क भण्डार ।

२०५६. प्रति स० ३ । पत्र स० १०१ । ले० काल स० १८३४ अषाढ सुदी २ । वे० स० २५५ । अ भण्डार ।

विशेष—प० चोखचन्दजी शिष्य प० रामचन्द ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

२०५७. चन्द्रप्रभचरित्रभाषा—जयचन्द छाबडा । पत्र सं० ६६ । आ० १२½×६ । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल १६वी शताब्दी । ले० काल सं० १६४२ ज्येष्ठ सुदी १४ । वे० सं० १६५ । क भण्डार ।

विशेष—केवल दूसरे सर्ग मे आये हुये न्याय प्रकरण के श्लोकों की भाषा है ।

इसी भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० सं० १६६, १६७, १६८) और हैं ।

२०५८. चारुदत्तचरित्र—कल्याणकीर्त्ति। पत्र सं० १६। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सेठ चारुदत्त का चरित्र वर्णन। र० काल स० १६६२। ले० काल स० १७३३ कार्त्तिक बुदी ६। अपूर्ण। वे० स० ८७४। अ भण्डार।

विशेष—१६ से आगे के पत्र नही हैं। अन्तिम पत्र मौजूद है। बहादुरपुर ग्राम मे प० अमीचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

आदिभाग— ॐ नमः सिद्धेभ्य. श्री सारदाई नमः॥

आदि जिनआदिस्तवु अंति श्री महावीर।
श्री गौतम गणधर नमु वलि भारति गुणगभीर॥१॥

श्री मूलसंघमहिमा घणो सरस्वतिगछ शृंगार।
श्री सकलकीर्त्ति गुरु अनुक्रमि नमुश्रीपद्मनदि भवतार॥२॥
तस गुरु भ्राता शुभमति श्री देवकीर्ति मुनिराय।
चारुदत्त श्रेष्ठीतणो प्रबध रचु नमी पाय॥३॥

अन्तिम— ·· ················ · · भट्टारक सुखकार॥

सुखकर सोभागि अंति विचक्षण वदि वारण केशरी।
भट्टारक श्री पद्मनंदिचरणकंज सेवि हरि॥१०॥
एसहु रे गछ नायक प्रणमि करि
देवकीरति रे मुनि निज गुरु मन्य धरी।
धरिचित्त चरणें नमि कल्याणकीरति इम भणौं।
चारुदत्तकुमर प्रबध रचना रचिमि आदर घणि॥११॥
रायदेश मध्यि रे भिलोड वसि
निज रचनायि रे हरिपुर निहसि
हसि अमर कुमारनितिहा धनपति वित्त विलसए।
प्रासाद प्रतिमा जिन प्रति करि सुकृत सचए॥१२॥
सुकृत सचि रे व्रत बहु आचरि
दान महोद्दवरे जिन पूजा करि
करि उद्दव गान गंध्रवे चन्द्र जिन प्रासादए।
बावन सिखर सोहामणा ध्वज कनक कलश विलासए॥१३॥
मंडप मध्यि समवसरण सोहि
श्री जिन बिबरे मनोहर मन मोहि।

मोहि जिनमत अति उन्नत मानस अविशालए ।

तिहा विजयभद्र विख्यात सुन्दर जिनशासन रक्षपालए ॥३४॥

तहा चोमासि रे रचना करि

सोलबत्तीसि पिरे आसो अनुसरि ।

अनुसरि आसो शुक्ल पचमी श्रीगुरु चरणहृदय धरि ।

कल्याणकीरति कहि सज्जन भणो आदर करि ॥३५॥

दोहा—आदर ब्रह्म सघ प्रीति गुण विनय सहित सुखकार ।

ते देखि चारुदत्त नो प्रबध रच्यो मनोहार ॥१॥

भणि सुणि आदर करि याचक दिदिय दान ।

इद्रो तणो पद ते लहि अमर दीपि बहुमान ॥२॥

इति श्री चारुदत्त प्रबध समाप्त ॥

विशेष—सवत् १७३३ वर्षे कार्त्तिक विदि ८ गुरुवारे लिखितं बहादुरपुरग्रामे श्री चितामनी चैत्यालये भट्टारक श्री ५ धर्म्मभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री ५ देविद्रकीर्त्ति तत्शिष्य पडित अमीचद स्वहस्तेन लिखितं ।

॥ श्री रस्तु ॥

२०५९ चारुदत्तचरित्र—भारामल्ल । पत्र स० ५० । आ० १३×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल स० १८१३ सावन बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७८ । अ भण्डार ।

२०६० चारुदत्तचरित्र—उदयलाल । पत्र सं० १६ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल स० १९२४ माघ सुदी ५ । ले० काल × । वे० स० १७६१ । छ भण्डार ।

२०६१ जम्बूस्वामीचरित्र—ब्र० जिनदास । पत्र स० १२७ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६३३ । पूर्ण । वे० स० ७६ । अ भण्डार ।

२०६२ प्रति स० २ । पत्र स० ११६ । ले० काल सं० १६५६ फागुण बुदी ५ । वे० स० २५५ । अ भण्डार ।

२०६३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १८१२ भादवा सुदी १२ । वे० स० १८४ । क भण्डार ।

ख भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५५) और है ।

२०६४ प्रति सं० ४ । पत्र स० १२७ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । प्रथम तथा अन्तिम पत्र नये लिखे हुये हैं ।

२०६५ प्रति सं० ५ । पत्र स० १५५ । ले० काल × । वे० स० १९९ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रथम तथा अन्तिम पत्र नये लिखे हुये हैं ।

२०६६ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १८६४ पौष बुदी १४ । वे० स० २०० । ङ भण्डार ।

२०६७ प्रति स० ७ । पत्र सं० ८७ । ले० काल स० १८६३ चैत्र बुदी ४ । वे० स० १०१ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भूराम ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२०६८. प्रति स० ८ । पत्र स० १०१ । ले० काल स० १८२५ । वे० स० ३५ । छ भण्डार ।

२०६९ प्रति स० ९ । पत्र स० १२३ । ले० काल X । वे० स० ११२ । ञ भण्डार ।

२०७० जम्बूस्वामीचरित्र—प० राजमल्ल । पत्र स० १२६ । आ० १२½X५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल स० १६३२ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १८५ । क भण्डार ।

विशेष—१३ सर्गो मे विभक्त है तथा इसकी रचना 'टोडर' नाम के साधु के लिए की गई थी ।

२०७१ जम्बूस्वामीचरित्र—विजयकीर्त्ति । पत्र स० २० । आ० १३X८ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । र० काल स० १८२७ फागुन बुदी ७ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४० । ज भण्डार ।

२०७२. जम्बूस्वामीचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १८३ । आ० १४½X५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल स० १९३४ फागुण सुदी १४ । ले० काल सं० १९३६ । वे० स० ४२७ । अ भण्डार ।

२०७३ प्रति सं० २ । पत्र स० १६६ । ले० काल X । वे० सं० १८६ । क भण्डार ।

२०७४. जम्बूस्वामीचरित्र—नाथूराम । पत्र सं० २८ । आ० १२½X८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल X । ले० काल X । वे० स० १६६ । छ भण्डार ।

२०७५. जिनचरित्र'' । पत्र स० ६ से २० । आ० १०X४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ११०५ । अ भण्डार ।

२०७६. जिनदत्तचरित्र—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ६५ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल X । ले० काल सं० १५९५ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १४७ । अ भण्डार ।

२०७७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल स० १८१६ माघ सुदी ५ । वे० स० १८९ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

२०७८ प्रति सं० ३ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १८६३ फागुण बुदी १ । वे० सं० २०३ । ङ भण्डार ।

२०७९. प्रति सं० ४ । पत्र स० ५१ । ले० काल सं० १९०४ आसोज सुदी २ । वे० स० १०३ । च भण्डार ।

२०८० प्रति सं० ५ | पत्र सं० ३४ | ले० काल स० १८०७ मंगसिर सुदी १३ | वे० स० १०४ | च भण्डार |

विशेष—यह प्रति प० चोखचन्द एव रामचद की थी ऐसा उल्लेख है |

छ भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ७१) और है |

२०८१ प्रति सं० ६ | पत्र स० ५७ | ले० काल स० १९०४ कार्त्तिक बुदी १२ | वे० स० ३९ | व भण्डार |

विशेष—गोपीराम बसवा वाले ने फागी मे प्रतिलिपि की थी |

२०८२. प्रति सं० ७ | पत्र स० ३८ | ले० काल स० १७८३ मगसिर बुदी ८ | वे० स० २४३ | बं भण्डार |

विशेष—भिलाय मे पं० गोर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी |

२०८३. जिनदत्तचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी | पत्र स० ७६ | आ० १३×५ इञ्च | भाषा-हिन्दी गद्य | विषय-चरित्र | र० काल सं० १९३६ माघ सुदी ११ | ले० काल × | पूर्ण | वे० स० १९० | क भण्डार |

२०८४. प्रति स० २ | पत्र स० ९० | ले० काल × | वे० स० १९१ | क भण्डार |

२०८५. जीवंधरचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र | पत्र स० १२१ | आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च | भाषा-सस्कृत | विषय-चरित्र | र० काल स० १५९६ | ले० काल स० १८४० फागुण सुदी १४ | पूर्ण | वे० स० २२ | अ भण्डार |

इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० ८७३, ८९९) और हैं |

२०८६ प्रति सं० २ | पत्र स० ७२ | ले० काल स० १८३१ भादवा बुदी १३ | वे० स० २०६ | क भण्डार |

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है |

२०८७. प्रति सं० ३ | पत्र स० ९७ | ले० काल स० १८६८ फागुण बुदी ८ | वे० स० ४१ | छ भण्डार |

विशेष—सवाई जयनगर मे महाराजा जगतसिंह के शासनकाल मे नेमिनाथ जिन चैत्यालय (गोधो का मन्दिर) मे वखतराम कृष्णराम ने प्रतिलिपि की थी |

२०८८. प्रति सं० ४ | पत्र स० १०४ | ले० काल स० १८८० ज्येष्ठ बुदी ५ | वे० स० ४२ | छ भण्डार |

२०८९. प्रति सं० ५ | पत्र स० ९१ | ले० काल स० १८३३ वैशाख सुदी २ | वे० स० २७ | ज भण्डार |

२०९०. जीवंधरचरित्र—नथमल विलाला | पत्र स० ११४ | आ० १२$\frac{3}{4}$×६$\frac{3}{4}$ इञ्च | भाषा-हिन्दी | विषय-चरित्र | र० काल सं० १८४० | ले० काल सं० १८५६ | पूर्ण | वे० स० ४१७ | अ भण्डार |

२०६१. प्रति सं० २। पत्र सं० १२३। ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी ६। वे० सं० ५५६। च भण्डार।

२०६२. प्रति सं० ३। पत्र स० १०१ से १५१। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १७४३। ट भण्डार।

२०६३. जीवंधरचरित्र--पन्नलाल चौधरी। पत्र म० १७०। आ० १३X५ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-चरित्र। र० काल म० १६३५। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २०७। क भण्डार।

२०६४ प्रति सं० २। पत्र म० १३५। ले० काल X। वे० सं० २१४। ङ भण्डार।

विशेष—अन्तिम ३५ पत्र चूहों द्वारा खाये हुये हैं।

२०६५. प्रति स० ३। पत्र स० १३२। ले० काल X। वे० स० १६२। छ भण्डार।

२०६६. जीवंधरचरित्र ·····। पत्र स० ४१। आ० ११३/४X८३/४ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-चरित्र। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० २०२६। अ भण्डार।

२०६७. णेमिणाहचरिउ—कविरत्न अबुध के पुत्र लक्ष्मणदेव। पत्र सं० ४४। आ० ११X४३/४ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-चरित्र। र० काल X। ले० काल स० १५३६ शक १४०१। पूर्ण। वे० सं० ६६। अ भण्डार।

२०६८ णेमिणाहचरिय—दामोदर। पत्र स० ४३। आ० १२X५ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-काव्य। र० काल म० १२८७। ले० काल स० १५८२ भादवा सुदी ११। वे० स० १२५। व्य भण्डार।

विशेष—चदेरी मे आचार्य जिनचन्द्र के शिष्य के निमित्त लिखा गया।

२०६९ त्रेसठशलाकापुरुषचरित्र ·····। पत्र स० ३६ से ६१। आ० १०३/४X४३/४ इच। भाषा-प्राकृत। विषय-चरित्र। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० २०६०। अ भण्डार।

३००० दुर्घटकाव्य ·····। पत्र स० ४। आ० १२X५१/२ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। र० काल X। ले० काल X। वे० स० १८५१। ट भण्डार।

३००१ द्वाश्रयकाव्य—हेमचन्द्राचार्य। पत्र स० ६। आ० १०X४१/२ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० १८३२। ट भण्डार। (दो सर्ग है)

३००२. द्विसधानकाव्य—धनञ्जय। पत्र स० ६२। आ० १०१/२X५१/२ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ८५३। अ भण्डार।

विशेष—बीच के पत्र टूट गये है। ६२ से आगे के पत्र नही है। इसका नाम राघव पाण्डवीय काव्य भी है।

३००३ प्रति सं० २। पत्र स० ३२। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ३३१। क भण्डार।

३००४ प्रति स० ३। पत्र सं० ५६। ले० काल सं० १५७७ भादवा बुदी ११। वे० सं० १५८। क भण्डार।

विशेष—गौर गोत्र वाले श्री सेऊ के पुत्र पदारथ ने प्रतिलिपि की थी।

३००५ द्विसंधानकाव्यटीका—विनयचन्द । पत्र स० २२ । आ० १२३/४×५३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (पचम सर्ग तक) वे० स० ३३० । क भण्डार ।

३००६ द्विसधानकाव्यटीका—नेमिचन्द्र । पत्र स० ३६१ । विषय-काव्य । भाषा-सस्कृत । र० काल × । ले० काल स० १६५२ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ३२६ । क भण्डार ।

विशेष—इसका नाम पद कौमुदी भी है ।

३००७. प्रति सं० २ । पत्र स० ३५८ । ले० काल स० १८७५ माघ सुदी ८ । वे० स० १५७ । क भण्डार ।

३००८ प्रति स० ३ । पत्र स० ७० । ले० काल स० १५०६ कार्तिक सुदी २ । वे० स० ११३ । ञ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण हैं । गोपाचल (ग्वालियर) मे महाराजा डूगरेंद्र के शासनकाल मे प्रतिलिपि की गई थी ।

३००९ द्विसधानकाव्यटीका । पत्र स० २६४ । आ० १०३/४×८ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२८ । क भण्डार ।

३०१०. धन्यकुमारचरित्र—आ० गुणभद्र । पत्र स० ५३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३३ । क भण्डार ।

३०११. प्रति स० २ । पत्र स० २ से ४५ । ले० काल स० १५६७ आसोज सुदी १० । अपूर्ण । वे० स० ३२५ । ङ भण्डार ।

विशेष—दूदू गाव के निवासी खण्डेलवाल जातीय ने प्रतिलिपि की थी । उस समय दूदू (जयपुर) पर षडसीराय का राज्य लिखा है ।

३०१२ प्रति स० ३ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १६५२ द्वि० ज्येष्ठ बुदी ११ । वे० स० ४३ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति दी हुई है । आमेर में आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

३०१३ प्रति स० ४ । पत्र स० ३५ । ले० काल स० १६०४ । वे० स० १२८ । ञ भण्डार ।

३०१४. प्रति स० ५ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० स० ३६१ । ञ भण्डार ।

३०१५. प्रति स० ६ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १६०३ भादवा सुदी ३ । वे० स० ४५८ । म भण्डार ।

विशेष—श्राविका खीवायी ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करके मुनि श्री कमलकीर्त्ति को भेंट दिया था ।

३०१६ धन्यकुमारचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र स० १०७ । आ० ११×४३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६३ । अ भण्डार ।

विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है

३०१७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८५० आषाढ बुदी १३ । वे० स० २५७ । अ भण्डार ।

विशेष—२६ से ३६ तक के पत्र बाद मे लिखकर प्रति को पूर्ण किया गया है ।

३०१८. प्रति स० ३ । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १८२५ माघ सुदी १ । वे० स० ३१४ । अ भण्डार ।

३०१९. प्रति स० ४ । पत्र स० २७ । ले० काल स० १७८० श्रावण सुदी ४ । अपूर्ण । वे० स० ११०४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वा पत्र नही है । ब्र० मेघसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२० प्रति स० ५ । पत्र स० ४१ । ले० काल स० १८१३ भादवा बुदी ८ । वे० स० ४४ । छ भण्डार ।

विशेष—देवगिरि (दौसा) मे पं० बख्तावर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई । कठिन शब्दो के हिन्दी मे अर्थ दिये हैं । कुल ७ अधिकार हैं ।

३०२१. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३१ । ले० काल X । वे० सं० १७ । ञ भण्डार ।

३०२२ प्रति सं० ७ । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १६६१ बैशाख सुदी ७ । वे० स० २१८७ । ट भण्डार ।

विशेष—सवत् १६६१ वर्षे बैशाख सुदी ७ पुष्यनक्षत्रे वृधिनाम जोगे गुरुवासरे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे ...... ।

३०२३. धन्यकुमारचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० २४ । आ० ११X४३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३३२ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३०२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल स० १९०१ पौष बुदी ३ । वे० स० ३२७ । ङ भण्डार ।

विशेष—फोजुलाल टोग्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२५. प्रति सं० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल सं० १७९० श्रावण सुदी ५ । वे० स० ८६ । ञ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति ने अपने शिष्य मनोहर के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

३०२६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १९ । ले० काल स० १८१६ फागुण बुदी ७ । वे० सं० ८७ । ञ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३०२७. धन्यकुमारचरित्र—खुशालचंद । पत्र सं० ३० । आ० १४X७ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३७४ । अ भण्डार ।

३०१७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल स० १८५० आषाढ बुदी १३ । वे० स० २५७ । अ भण्डार ।

विशेष—२६ से ३६ तक के पत्र बाद मे लिखकर प्रति को पूर्ण किया गया है ।

३०१८. प्रति स० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल स० १८२५ माघ सुदी १ । वे० स० ३१४ । अ भण्डार ।

३०१९. प्रति स० ४ । पत्र स० २७ । ले० काल स० १७८० श्रावण सुदी ४ । अपूर्ण । वे० स० ११०४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वा पत्र नही है । ब्र० मेघसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४१ । ले० काल स० १८१३ भादवा बुदी ८ । वे० स० ४४ । छ भण्डार ।

विशेष—देवगिरि (दौसा) मे पं० बख्तावर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई । कठिन शब्दो के हिन्दी मे अर्थ दिये हैं । कुल ७ अधिकार हैं ।

३०२१. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३१ । ले० काल X । वे० सं० १७ । व्य भण्डार ।

३०२२ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७८ । ले० काल स० १६९१ बैशाख सुदी ७ । वे० स० २१८७ । ट भण्डार ।

विशेष—सवत् १६९१ वर्षे वैशाख सुदी ७ पुष्यनक्षत्रे वृधिनाम जोगे गुरुवासरे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे ...... ।

३०२३. धन्यकुमारचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० २४ । आ० ११X४½ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३०२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल स० १९७१ पौष बुदी ३ । वे० स० ३२७ । ङ भण्डार ।

विशेष—फोजुलाल टोग्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७९० श्रावण सुदी ५ । वे० स० ८६ । छ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति ने अपने शिष्य मनोहर के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

३०२६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १९ । ले० काल स० १८१६ फागुण बुदी ७ । वे० सं० ८७ । व्य भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३०२७. धन्यकुमारचरित्र—खुशालचंद । पत्र सं० ३० । आ० १४X७ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३७४ । अ भण्डार ।

३०२८. प्रति सं० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल X । वे० स० ४१२ । अ भण्डार ।

३०२९. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६२ । ले० काल X । वे० स० ३३४ । क भण्डार ।

३०३०. प्रति स० ४ । पत्र स० ३६ । ले० काल X । वे० स० ३२६ । ङ भण्डार ।

३०३१ प्रति सं० ५ । पत्र स० ४४ । ले० काल स० १६६४ कार्त्तिक बुदी ६ । वे० स० ५६३ । च भण्डार ।

३०३२ प्रति सं० ६ । पत्र स० ६८ । ले० काल स० १८५२ । वे० स० २४ । झ भण्डार ।

३०३३. प्रति सं० ७ । पत्र स० ६६ । ले० काल X । वे० स० ४६५ । ञ भण्डार ।

विशेष—सतोषराम छाबडा मौजमाबाद वाले ने प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ प्रशस्ति काफी विस्तृत है ।

इनके अतिरिक्त च भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५६४) तथा छ और झ भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० १६८ व १२) और हैं ।

३०३४ धन्यकुमारचरित्र"" ""। पत्र स० १८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३२३ । ङ भण्डार ।

३०३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल X । अपूर्ण। वे० स० ३२४ । ङ भण्डार ।

३०३६ धर्मशर्माभ्युदय—महाकवि हरिचन्द्र । पत्र स० १५३ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६१ । अ भण्डार ।

३०३७ प्रति सं० २ । पत्र स० १८७ । ले० काल स० १६३८ कार्त्तिक सुदी ८ । वे० स० ३४८ । क भण्डार ।

विशेष—नीचे सस्कृत मे सकेत दिये हुए हैं ।

३०३८. प्रति सं० ३ । पत्र स० ८५ । ले० काल X । वे० स० २०३ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ तथा क भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० १४८१, ३४६) और है ।

३०३९. धर्मशर्माभ्युदयटीका—यश.कीर्त्ति । पत्र सं० ४ से ६६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ८५६ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'सदेह ध्वात दीपिका' है ।

३०४०. प्रति सं० २ । पत्र स० ३०४ । ले० काल स० १६५१ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ३४७ । क भण्डार ।

विशेष—क भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३४६) की और है ।

३०४१. नलोदयकाव्य—माणिक्यसूरि । पत्र सं० ३२ से ११७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल । ले० काल सं० १४४५ प्र० फागुन बुदी ८ । अपूर्ण । वे० स० ३४२ । ञ भण्डार ।

पत्र स० १ से ३१ ५५, ५६ तथा ६२ से ७२ नही हैं । दो पत्र बीच के और हैं जिन पर पत्र स० नही है ।

विशेष—इसका नाम 'नलायन महाकाव्य' तथा 'कुबेर पुरान' भी है । इसकी रचना स० १४६४ के पूर्व हुई थी । जिन रत्नकोष मे ग्रन्थकार का नाम माणिक्यसूरि तथा माणिक्यदेव दोनो दिया हुआ है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १४४५ वर्षे प्रथम फाग्गुन वदि ८ शुक्रे लिखितमिदं श्रीमदणहिलपत्तने ।

३०४२. नलोदयकाव्य—कालिदास । पत्र सं० ६ । आ० १२X६३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल X । ले० काल स० १८३६ । पूर्ण । वे० स० ११४३ ।। अ भण्डार ।

३०४३. नवरत्नकाव्य । पत्र स० २ । आ० ११X५३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १०६२ । अ भण्डार ।

विशेष—विक्रमादित्य के नवरत्नो का परिचय दिया हुआ है ।

३०४४. प्रति सं० २ । पत्र स० १ । ले० काल X । वे० सं० ११४६ । अ भण्डार ।

३०४५. नागकुमारचरित्र—मल्लिषेण सूरि । पत्र स० २२ । आ० १०३X६३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल स० १५६४ भादवा सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० २३४ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

सवत् १५६४ वर्षे भादवा सुदी १५ सोमदिने श्री मूलसंघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनदिदेवा त० भ० श्री शुभचन्द्रदेवा त० भ० श्री जिनचन्द्रदेवा त० भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये साह जिणदास तद्भार्या जमणादे त० साह सागा द्वि० सहसा तृ० चुंडा सा० सागा भार्या सूहवदे द्वि० शृ गारदे तृ० सुरताणदे त० सा० आसा, धरणपाल आसा भार्या हकारदे, धरणपाल भार्या धारादे । द्वि० सुहागदे । सहसा भार्या स्वरूपदे त० सा० पासा द्वि० महिपाल । पासा भार्या सुगुणादे द्वि० पाटमदे त० काल्हा महिपाल' महिमादे । चु डा भार्या चादणदे तस्यपुत्र सा० दासा तद्भार्या दाडिमदे तस्यपुत्र नरसिंह एतेषा मध्ये आसा भार्या महकारदे इदंशास्त्र लि०मडलाचार्य श्री धर्म्मचद्राय ।

३०४६. प्रति स० २ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १८२६ पौष सुदी ५ । वे० स० ३६५ । क भण्डार ।

३०४७. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल स० १८०६ चैत्र बुदी ५ । वे० स० ५० । घ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं । १० से १६ तथा ३२वा पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं । अन्त मे निम्न प्रकार लिखा है । पाडे रामचन्द के माथै पधराई पोथी । सवत् १८०६ चैत्र वदी ५ सनिवासरे दिल्ली ।

३०४८ प्रति स० ४ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १५८० । वे० स० ३५३ । ङ भण्डार ।

३०४९. प्रति स० ५ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १६४१ माघ बुदी ७ । वे० स० ४६६ । ञ भण्डार ।

विशेष—तक्षकगढ मे कल्याणराज के समय मे आ० भोपति ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३०५०. प्रति सं० ६ । पत्र स० २१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १८०७ । ट भण्डार ।

२०५१. नागकुमारचरित्र—पं० धर्मधर। पत्र स० ५५। आ० १०३×४ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल स० १५११ श्रावण सुदी १५। ले० काल स० १६१६ वैशाख सुदी १०। पूर्ण। वे० स० २३०। व्य भण्डार।

२०५२ नागकुमारचरित्र | पत्र सं० २२। आ० ११×५ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल स० १८६१ भादवा बुदी ८। पूर्ण। वे० स० ८६। ज भण्डार।

२०५३ नागकुमारचरितटीका—टीकाकार प्रभाचन्द्र। पत्र स० २ से २०। आ० १०×४३ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २१८८। ट भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

श्री जयसिंघदेवराज्ये श्रीमद्धारानिवासिनो परापरमेष्ठिप्रमाणोपार्जितमलपुण्यनिराकृताखिलकलंकेन श्रीमत्प्रभाचन्द्रपंडितेन श्री मत्पचमी टिप्पणक कृतमिति।

२०५४. नागकुमारचरित्र—उदयलाल। पत्र स० ३६। आ० १३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३५४। ङ भण्डार।

२०५५ प्रति सं० २। पत्र स० ३५। ले० काल ×। वे० स० ३५५। ङ भण्डार।

२०५६ नागकुमारचरित्रभाषा | पत्र स० ४५। आ० १३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६७७। अ भण्डार।

२०५७. प्रति सं० २। पत्र स० ४०। ले० काल ×। वे० स० १७३। छ भण्डार।

२०५८. नेमिजी का चरित्र—आणन्द। पत्र स० २ से ५। आ० ९×४३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल स० १८०४ फागुण सुदी ५। ले० काल स० १८५१। अपूर्ण। वे० स० २२५७। अ भण्डार।

विशेष-अन्तिम भाग—

नेम तस तात सघर मध्ये रे रह्या ज रूड भावो।
चरत पाल्ये सात सारे सहस बरसना आव ॥
सहस बरसना आवज पूरा जिणवर करुडी धीरुडी।
आठ कर्म कीधा चकचूरा पाच सछ तास सघात पूरा जी।
संवत १८ चिडोत्तर फागुण मास मझारो।
सुद पचमी सनीसर रे कीधो चरित उदारो ॥
कीधो चरत उदार आणदा इम जाणी छाडो ग्रहफदा।
मन २ समुद गिरानदा ऋष जेम लह नेम जिणंदा ॥५२॥

इति श्री नेमजी को चरित्र समाप्त।

स० १८५१ केसालै श्री श्री भोजराज जी लिखत कल्याणजी राजगढ मध्ये।

आगे नेमिजी के नव भव दिये हुये हैं।

२१५९. नेमिनाथ के दशभव । पत्र स० ७ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १६१८ । वे० सं० ३५४ । क भण्डार ।

२१६०. नेमिदूतकाव्य—महाकवि विक्रम । पत्र स० २२ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६१ । क भण्डार ।

विशेष—कालिदास कृत मेघदूत के श्लोकों के अन्तिम चरण की समस्यापूर्ति है ।

२१६१ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ३७३ । ञ भण्डार ।

२१६२. नेमिनाथचरित्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० २ से ७८ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १५८१ पौष सुदी १ । अपूर्ण । वे० स० २१३२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है ।

२१६३ नेमिनिर्वाण—महाकवि वाग्भट्ट । पत्र सं० १०० । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–नेमिनाथ का जीवन वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६० । क भण्डार ।

२१६४. प्रति सं० २ । पत्र स० ५५ । ले० काल स० १८२३ । वे० स० ३८८ । क भण्डार ।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति क भण्डार मे (वे० स० ३८९) और है ।

२१६५. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३८२ । ङ भण्डार ।

२१६६. नेमिनिर्वाणपंजिका''' । पत्र स० ६२ । आ० ११½×४ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स २६ । ञ भण्डार ।

विशेष—६२ से आगे पत्र नही हैं ।

प्रारम्भ—धत्वा नेमिश्वरं चित्ते लब्धानत चतुष्टय ।
कुर्वेहं नेमिनिर्वाणमहाकाव्यस्य पंजिका ॥

२१६७ नैषधचरित्र—हर्षकवि । पत्र सं० २ से ३० । आ० १०½×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९१ । छ भण्डार ।

विशेष—पंचम सर्ग तक है । प्रति सटीक एव प्राचीन है ।

२१६८. पद्मचरित्रसार । पत्र स० ५ । आ० १०×४½ इच । भाषा–हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—पद्मपुराण का सक्षिप्त भाग है ।

२१६९ पर्यूषणकल्प '' । पत्र स० १०० । आ० ११½×४ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १६९६ । अपूर्ण । वे० स० १०५ । ख भण्डार ।

विशेष—९३ वा तथा ९५ से ९९ तक पत्र नहीं हैं । श्रुतस्कध का ८वा अध्याय है ।

प्रशस्ति—स० १६९६ वर्षे मूलताणमध्ये सुश्रावक सोनू तद् वधू हरमी तत् सुता सुलक्षणी मेलूपु भद्रागृहे वधू मेन एषा प्रति प० श्री राजकीर्त्तिगणिना विहरेऽर्पिता स्वपुन्याय ।

२१७०. परिशिष्टपर्व····· । पत्र स० ५८ से ८० । आ० १०३/४×४१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । लि० काल सं० १६७३ । अपूर्ण । वे० स० १९९० । अ भण्डार ।

विशेष—६१ व ६२वा पत्र नही है । वीरमपुर नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२१७१. पवनदूतकाव्य—वादिचन्द्रसूरि । पत्र स० १३ । आ० १२×५१/२ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । लि० काल स० १९५५ । पूर्ण । वे० स० ४२५ । क भण्डार ।

विशेष—स० १९५५ मे राव के प्रसाद से भाई दुलीचन्द के अवलोकनार्थ ललितपुर नगर मे प्रतिलिपि हुई ।

२१७२ प्रति सं० २ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० ४५६ । क भण्डार ।

२१७३. पाण्डवचरित्र—लालवर्द्धन । पत्र स० ९७ । आ० १०१/२×४१/२ इच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । र० काल स० १७६८ । ले० काल सं० १८१७ । पूर्ण । वे० स० १९२३ । ट भण्डार ।

२१७४ पार्श्वनाथचरित्र—वादिराजसूरि । पत्र स० ९६ । आ० १२×५ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–पार्श्वनाथ का जीवन चरित्र । र० काल शक स० ९४७ । ले० काल स० १५७७ फागुण बुदी ९ । पूर्ण । अत्यन्त जीर्ण । वे० स० २२५८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र फटे हुये तथा गले हुये हैं । ग्रन्थ का दूसरा नाम पार्श्वपुराण भी है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५७७ वर्षे फाल्गुन बुदी ९ श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नद्याम्नाये भट्टारक श्री पद्मनंदि तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये साधु गोत्रे साह काधिल तस्य भार्या कावलदे तयो. पुत्र. चतुर्विधदान कल्पवृक्ष साह वछा तस्य भार्या पदमा तयो पुत्र पचाइण तस्य भार्या वातापदे तयोपुत्र साह दूलह एते नित्यं प्रणमति ।

२१७५. प्रति स० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०७ । ख भण्डार ।

विशेष—२२ से आगे पत्र नही हैं ।

२१७६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०५ । ले० काल स० १५९५ फाल्गुण सुदी २ । वे० स० २१८ । च भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला पत्र नही है ।

२१७७ प्रति स० ४ । पत्र स० ३४ । ले० काल स० १८७१ चैत्र सुदी १४ । वे० स० २१९ । च भण्डार ।

२१७८ प्रति स० ५ । पत्र स० ६५ । ले० काल स० १६८५ आषाढ । वे० स० १६ । छ भण्डार ।

२१७९ प्रति स० ६ । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १७८५ । वे० सं० १०५ । ञ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती में आदिनाथ चैत्यालय मे गोर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी ।

२१८०. पार्श्वनाथचरित्र—भट्टारक सकलकीर्त्ति। पत्र सं० १२०। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन। र० काल १५वीं शताब्दी। ले० काल सं० १८८८ प्रथम वैशाख सुदी ६। पूर्ण। वे० स० १३। अ भण्डार।

२१८१. प्रति सं० २। पत्र स० ११०। ले० काल स० १८२३ कार्त्तिक बुदी १०। वे० स० ४६६। क भण्डार।

२१८२. प्रति सं० ३। पत्र स० १६१। ले० काल स० १७६१। वे० सं० ७०। घ भण्डार।

२१८३. प्रति स० ४। पत्र स० ७५ से १३६। ले० काल स० १८०२ फागुण बुदी ११। अपूर्ण। वे० स० ४५६। ङ भण्डार।

विशेष–प्रशस्ति—

सवत् १८०२ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे एकादशी बुधे लिखित श्रीउदयपुरनगरमध्येसुश्रावक-पुण्यप्रभावक-श्रीदेवगुरुभक्तिकारक श्रीसम्यक्त्वमूलद्वादशव्रतधारक मा० श्री दौलतरामजी पठनार्थं।

२१८४ प्रति स० ५। पत्र स० ५२ मे २२६। ले० काल स० १८५४ मंगसिर सुदी २। अपूर्ण। वे० स० २१६। च भण्डार।

विशेष—प्रति दीवान सगही ज्ञानचन्द की थी।

२१८५. प्रति स० ६। पत्र स० ८६। ले० काल स० १७८५ प्र० वैशाख सुदी ८। वे० स० २१७। च भण्डार।

विशेष—प्रति खेमकर्मा ने स्वपठनार्थ दुर्गादास से लिखवायी थी।

२१८६ प्रति सं० ७। पत्र सं० ६१। ले० काल सं० १८५२ श्रावण सुदी ६। वे० स० १५। छ भण्डार।

विशेष—प० ध्योजीराम ने अपने शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गगाविष्णु मे प्रतिलिपि कराई।

२१८७. प्रति सं० ८। पत्र स० १२३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२१८८ प्रति सं० ६। पत्र स० ६१ मे १४४। ले० काल स० १७८७। अपूर्ण। वे० सं० १६४५। ट भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० १०१३, ११७४, २३६) क तथा घ भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० ४६६, ७०) तथा ङ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ४५६, ४५६, ४५७, ४५८) ञ तथा ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० २०४, २१८४) और है।

२१८९. पार्श्वनाथचरिउ—रइधू। पत्र स० ८ से ७६। आ० १०३/४×५ इ च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१२७। ट भण्डार।

२१९० पार्श्वनाथपुराण—भूधरदास। पत्र स० ६२। आ० १०३/४×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन। र० काल स० १७८६ आषाढ सुदी ५। ले० काल सं० १८३३। पूर्ण। वे० स० ३५६। अ भण्डार।

२१६१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १६२६ । वे० स० ४४७ । अ भण्डार ।

विशेष—तीन प्रतिया और हैं।

२१६२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल स० १८६० माह बुदी ६ । वे० स० ५७ । ग भण्डार ।

२१६३ प्रति सं० ४ । पत्र स० ६३ । ले० काल सं० १८६१ । वे० स० ४५० । ङ भण्डार ।

२१६४ प्रति स० ५ । पत्र स० १३८ । ले० काल स० १८६५ । वे० स० ४५१ । ङ भण्डार ।

२१६५. प्रति सं० ६ । पत्र स० १२३ । ले० काल स० १८८१ पौष सुदी १४ । वे० स० ४५३ । ङ भण्डार ।

२१६६. प्रति स० ७ । पत्र स० ४६ से १३० । ले० काल स० १६२१ सावन बुदी ६ । वे० स० १७५ । छ भण्डार ।

२१६७. प्रति सं० ८ । पत्र स० १०० । ले० काल स० १८२० । वे० सं० १०४ । झ भण्डार ।

२१६८. प्रति सं० ६ । पत्र स० १३० । ले० काल सं० १८५२ फागुण बुदी १४ । वे० स० १० । ञ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी । स० १८५२ मे लूणकरण गोधा ने प्रतिलिपि की ।

२१६६. प्रति स० १० । पत्र स० ४६ से १५४ । ले० काल स० १६०७ । अपूर्ण । वे० स० १८४ । ञ भण्डार ।

२२०० प्रति स० ११ । पत्र स० ६२ । ले० काल स० १८६६ आषाढ बुदी १२ । वे० स० ५८ । ञ भण्डार ।

विशेष—फतेहलाल सघी दीवान ने सोनियो के मन्दिर मे सं० १६४० भादवा सुदी ४ को चढाया ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० ४५५, ४०८, ४४७) ग तथा घ भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० ५६, ७१) ङ भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० ४४६, ४५२, ४५४) च भण्डार में ५ प्रतिया (वे० स० ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४) छ भण्डार मे एक तथा ज भण्डार मे २ (वे० स० १५६, १, २) तथा ट भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० १६१६, २०७४) और हैं।

२२०१. **प्रद्युम्नचरित्र—प० महासेनाचार्य** । पत्र स० ५८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३६ । च भण्डार ।

२२०२. प्रति स० २ । पत्र स० १०१ । ले० काल × । वे० स० ३४५ । ञ भण्डार ।

२२०३. प्रति स० ३ । पत्र स० ११८ । ले० काल स० १५६५ ज्येष्ठ बुदी ४ । वे० स० ३४६ । ञ भण्डार ।

विशेष—सवत् १५६५ वर्षे ज्येष्ठ बुदी चतुर्थीदिने गुरुवासरे सिद्धियोगे मूलनक्षत्रे श्रीमूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचंद्र

देवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये रामसरनगरे श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये खंडेलवालान्वये काटरावालगोत्रे सा० वीरमस्तद्भार्या हरपखू । तत्पुत्र सा० वेला तद्भार्या वील्हा तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह दामा द्वितीय साह पूना । सा० दामा तद्भार्या गोगी तयो: पुत्र सा० वोदिथ तद्भार्या हीरो । सा० पूना तद्भार्या कोइल तयो: पुत्र सा० खरहथ एतेषा मध्ये जिनपूजापुरदरेण सा० वेलाख्येन इदं श्री प्रद्युम्न शास्त्रलिखाप्य ज्ञानावरणीकर्म्म क्षयार्थं निमित्त सत्पात्राय श्री धर्मचन्द्राय प्रदत्त ।

२२०४ प्रद्युम्नचरित्र—आचार्य सोमकीर्त्ति । पत्र सं० १६५ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल स० १५३० । ले० काल स० १७२१ । पूर्ण । वे० सं० १५५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचना संवत् 'ड' प्रति मे से है । संवत् १७२१ वर्षे आसोज वदि ७ शुभ दिने लिखितं आंबर (आमेर) मध्ये लिखापि आचार्य श्री महीचंद्रकीर्तिजी । लिखितं जोसि श्रीधर ।।

२२०५. प्रति स० २ । पत्र सं० २५५ । ले० काल सं० १८८५ मगसिर सुदी ५ । वे० स० ११३ । ख भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

भट्टारक रत्नभूषण की आम्नाय मे कासलीवाल गोत्रीय गोवटीपुरी निवासी श्री राजलालजी ने कर्मोदय से ऐलिचपुर आकर हीरालालजी से प्रतिलिपि कराई ।

२२०६. प्रति सं० ३ । पत्र स० १२६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१ । ग भण्डार ।

२२०७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२४ । ले० काल स० १८०२ । वे० सं० ६१ । घ भण्डार ।

विशेष—हासी (झासी) वाले भैया श्री ढंमल्ल अग्रवाल श्रावक ने ज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थ प्रतिलिपि करवाई थी । प० जयरामदास के शिष्य रामचन्द्र को समर्पण की गई ।

२२०८ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११६ से १६५ । ले० काल सं० १८६६ सावन सुदी १२ । वे० सं० ५०७ । ङ भण्डार ।

विशेष—लिख्यतं पडित संगहीजी का मन्दिर का महाराजा श्री सवाई जगतसिंहजी राजमध्ये लिखी पंडित गोर्द्धनदासेन पठनार्थं ।

२२०९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २२१ । ले० काल सं० १८३३ श्रावण बुदी ३ । वे० स० १६ । छ भण्डार ।

विशेष—पंडित सवाईराम ने सागानेर मे प्रतिलिपि की थी । ये आ० रत्नकीर्त्तिजी के शिष्य थे ।

२२१०. प्रति सं० ७ । पत्र स० २०२ । ले० काल स० १८१९ मार्गशीर्ष सुदी १० । वे० सं० ३१ । झ भण्डार ।

विशेष—बखतराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२२११. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७४ । ले० काल स० १८०४ भादवा बुदी ६ । वे० स० ३७४ । ञ भण्डार ।

विशेष—अगरचन्दजी चादवाड ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० ४१६, ६४८, २०८६ तथा क भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५०८) और है ।

२२१२. प्रद्युम्नचरित्र । पत्र सं० ५० । आ० ११×५ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३५ । च भण्डार ।

२२१३ प्रद्युम्नचरित्र—सिंहकवि । पत्र सं० ४ से ८६ । आ० १०३/४×४१/२ इच । भाषा–अपभ्रंश । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २००४ । अ भण्डार ।

२२१४ प्रद्युम्नचरित्रभाषा—मन्नालाल । पत्र स० २०१ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–चरित्र । र० काल सं० १९१६ ज्येष्ठ बुदी ५ । ले० काल स० १९३७ वैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ४९४ । क भण्डार ।

२२१५ प्रति सं० २ । पत्र स० ३२२ । ले० काल स० १९३३ मगसिर सुदी २ । वे० स० ५०९ । क भण्डार ।

२२१६ प्रति सं० ३ । पत्र स० १७० । ले० काल × । वे० सं० ६३८ । च भण्डार ।

विशेष—रचयिता का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२२१७ प्रद्युम्नचरित्रभाषा " । पत्र सं० २७१ । आ० १११/२×७१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १९१६ । पूर्ण । वे० स० ४२० । अ भण्डार ।

२२१८ प्रीतिंकरचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० २१ । आ० १२×५१/२ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८२७ मगसिर बुदी ८ । पूर्ण वे० स० १२९ । अ भण्डार ।

२२१९. प्रति सं० २ । पत्र स० २३ । ले० काल स० १८६४ । वे० स० ५३० । क भण्डार ।

२२२०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११९ । ख भण्डार ।

विशेष—२२ से ३१ पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है । दो तीन तरह की लिपि है ।

२२२१ प्रति सं० ४ । पत्र स० २० । ले० काल स० १८१० बैशाख । वे० स० १२१ । ख भण्डार ।

२२२२ प्रति स० ५ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६७६ प्र० श्रावण सुदी १० । वे० स० १२२ । ख भण्डार ।

२२२३ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल स० १८३१ श्रावण सुदी ७ । वे० स० ९१ । ञ भण्डार ।

विशेष—पं० चोखचन्द के शिष्य पं० रामचन्दजी ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

इसकी दो प्रतिया ख भण्डार में (वे० सं० १२०, २५९) और हैं ।

२२२४. प्रीतिंकरचरित्र—जोधराज गोदीका। पत्र सं० १० । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । वषय-चरित्र । र० काल स० १७२१ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६८२ । अ भण्डार ।

२२२५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० १५६ । छ भण्डार ।

२२२६. प्रति स० ३ । पत्र स० २ से ६३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २३६ । छ भण्डार ।

२२२७ भद्रबाहुचरित्र—रत्ननन्दि । पत्र सं० २२ । आ० १२×५३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल स० १८२७ । पूर्ण । वे० स० १२८ । अ भण्डार ।

२२२८ प्रति स० २ । पत्र स० ३४ । ले० काल X । वे० स० ५५१ । क भण्डार ।

२२२९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल स० १६७४ पौष सुदी ८ । वे० सं० १३० । ख भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र किसी दूसरी प्रति का है ।

२२३०. प्रति स० ४ । पत्र सं० ३४ । ले० काल स० १७८९ बैशाख बुदी ९ । वे० स० ५५८ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण (कृष्णगढ) किशनगढ वालो ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२२३१. प्रति सं० ५ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १८१९ । वे० स० ३७ । छ भण्डार ।

विशेष—बखतराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२२३२. प्रति सं० ६ । पत्र स० २१ । ले० काल सं० १७९३ आसोज सुदी १० । वे० सं० ५१७ । व्य भण्डार ।

विशेष—क्षेमकीर्त्ति ने बौली ग्राम मे प्रतिलिपि की थी ।

२२३३. प्रति सं० ७ । पत्र स० ३ से १५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २१३३ । ट भण्डार ।

२२३४. भद्रबाहुचरित्र—नवलकवि । पत्र सं० ४८ । आ० १२३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल स० १९४८ । पूर्ण । वे० स० ५५९ । ङ भण्डार ।

२२३५. भद्रबाहुचरित्र—चंपाराम । पत्र सं० ३८ । आ० १२३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० श्रावण सुदी १५ । ले० काल X । वे० सं० १६५ । छ भण्डार ।

२२३६. भद्रबाहुचरित्र ……। पत्र सं० २७ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६८५ । अ भण्डार ।

२२३७ प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १६५ । छ भण्डार ।

२२३८. भरतेशवैभव ……। पत्र सं० ५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

२२३६. भविष्यदत्तचरित्र—पं० श्रीधर। पत्र सं० १०८। मा० १३×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०२। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पत्र फटा हुआ है। संस्कृत मे संक्षिप्त टिप्पण भी दिया हुआ है।

२२४०. प्रति सं० २। पत्र सं० ६४। ले० काल सं० १६१४ माघ बुदी ८। वे० सं० ५५३। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि तक्षकगढ मे हुई थी। लेखक प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नही है।

२२४१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६३। ले० काल सं० १७२४ वैशाख बुदी ६। वे० सं० १३१। ख भण्डार।

विशेष—मेडता निवासी साह श्री ईसर सोगाणी के वंश मे से सा० राइचन्द्र की भार्या रइणादे ने प्रतिलिपि करवाकर मंडलाचार्य श्रीभूषण के शिष्य रूपचन्द को कर्मक्षयार्थ निमित्त दिया।

२२४२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७०। ले० काल सं० १६६३ जेठ सुदी ७। वे० सं० ७५। घ भण्डार।

विशेष—अजमेर गढ मध्ये लिखितं अर्जुनसुत जोसी सूरदास।

दूसरी ओर निम्न प्रशस्ति है।

हरसार मध्ये राजा श्री सांवलदास राज्ये खण्डेलवालान्वय साह देव भार्या देवलदे ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी।

२२४३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३५। ले० काल सं० १८३७ आसोज सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ५६५। ङ भण्डार।

विशेष—लेखक पं० गोवर्द्धनदास।

२२४४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ८६। ले० काल ×। वे० सं० २६३। च भण्डार।

२२४५. प्रति सं० ७। पत्र सं० ५०। ले० काल ×। वे० सं० ५१। अपूर्ण। छ भण्डार।

विशेष—कही कही कठिन शब्दो के अर्थ दिये गये हैं तथा अन्त के २५ पत्र नही लिखे गये हैं।

२२४६. प्रति सं० ८। पत्र सं० ६५। ले० काल सं० १६७७ आषाढ सुदी ३। वे० सं० ७७। भ भण्डार।

विशेष—साधु लक्ष्मण के लिए रचना की गई थी।

२२४७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १६६७ आसोज सुदी ६। वे० सं० १६४४। ट भण्डार।

विशेष—आमेर में महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी। प्रशस्ति का अन्तिम पत्र नही है।

२२४८. भविष्यदत्तचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १३०। आ० ११३×७३ इंच। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-चरित्र। र० काल सं० १६३७। ले० काल सं० १६५०। पूर्ण। वे० सं० ५५४। क भण्डार।

आसु तणइ आग्रह ए चउपई कीधी मन उल्लास ।
अधिकउ उछउ जे इहा भाखियउ मिछा दुक्कड तास ॥१०॥ ए० ॥
शासण नायक वीर प्रसाद थी चउंरी चडीय प्रमाण ।
भणिस्यइ सुणिस्यइ जे नर भावसु धारयइ तासु कल्याण ॥११॥ ए० ॥
ए सवध सरस रस गुण भरयउ भाख्यं मति अनुसारि ।
धरमी जण गुण गावण मन रली रगविनय सुखकार ॥१२ ॥ ए० ॥
एह वा मुनिवर निसि दिन गाईयइ सर्व गाथा दूहा ॥ ५३२ ॥

इति श्री मगलकलसमहामुनिचंउपही सपूर्त्तिमगमत् लिखिता श्री सवत् १७१७ वर्षे श्री आसोज सुदी विजय दसमी वासरे श्री चीतोडा महाग्रामि राजि श्री परतापसिंहजी विजयराज्ये वाचनाचार्य श्री रगविनयगणि शिष्य पण्डित दयामेरु मुनि आत्मश्रेयसे शुभ भवतु । कल्याणमस्तु लेखक पाठकयो ॥

२२५५ महीपालचरित्र—चारित्रभूषण । पत्र स० ४१ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल स० १७३१ श्रावण सुदी १२ (छ) । ले० काल स० १८१८ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १६५ । अ भण्डार ।

विशेष—जौंहरीलाल गोदीका ने प्रतिलिपि करवाई ।

२२५६ प्रति सं० २ । पत्र स० ४६ । ले० काल × । वे० स० ५६१ । ङ भण्डार ।

२२५७ प्रति सं० ३ । पत्र स० ४२ । ले० काल स० १६२८ फाल्गुण सुदी १२ । वे० स० २७१ । च भण्डार ।

विशेष—रोडूराम वैद्य ने प्रतिलिपि की थी ।

२२५८. प्रति सं० ४ । पत्र स० ५५ । ले० काल × । वे० सं० ४६ । छ-भण्डार ।

२२५९ प्रति सं० ५ । पत्र स० ४५ । ले० काल × । वे० स० १७० । छ भण्डार ।

२२६०. महीपालचरित्र—भ० रत्ननन्दि । पत्र सं० ३४ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १८३६ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ५७४ । क भण्डार ।

२२६१. महीपालचरित्रभाषा—नथमल । पत्र सं० ९२ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल सं० १९१८ । ले० काल स० १९३९ श्रावण सुदी ३ । वे० स० ५७५ । क भण्डार ।

विशेष—मूलकर्त्ता चारित्र भूषण ।

२२६२ प्रति सं० २ । पत्र स० ५८ । ले० काल सं० १९३५ । वे० स० ५९२ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १५ नये पत्र लिखे हुये हैं ।

कवि परिचय—नथमल सदासुख कासलीवाल के शिष्य थे । इनके पितामह का नाम दुलीचन्द तथा पिता का नाम शिवचन्द था ।

२२६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १६२६ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । च भण्डार ।

२२६४. मेघदूत—कालिदास । पत्र सं० २१ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०१ । क भण्डार ।

२२६५ प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है । पत्र जीर्ण है ।

२२६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

२२६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८५४ वैशाख सुदी २ । वे० सं० २००५ । ट भण्डार ।

२२६८. मेघदूतटीका—परमहंस परिव्राजकाचार्य । पत्र सं० ४८ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल सं० १५७१ भादवा सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । ञ भण्डार ।

२२६९ यशस्तिलक चम्पू—सोमदेव सूरि । पत्र सं० २५४ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत गद्य पद्य । विषय-राजा यशोधर का जीवन वर्णन । र० काल शक सं० ८८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५१ । अ भण्डार ।

विशेष—कई प्रतियो का मिश्रण है तथा बीच के कुछ पत्र नही हैं ।

२२७० प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १६१७ । वे० सं० १८२ । अ भण्डार ।

२२७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १५४० फागुण सुदी १४ । वे० सं० ३५६ । अ भण्डार ।

विशेष—करमी गोधा ने प्रतिलिपि करवाई थी । जिनदास करमी के पुत्र थे ।

२२७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ५६१ । क भण्डार ।

२२७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५६ । ले० काल सं० १७५२ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० ३५१ । ञ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है । प्रति प्राचीन है । कही कही कठिन शब्दो के अर्थ दिये हुये हैं । अंबावती मे नेमिनाथ चैत्यालय मे भ० जगत्कीर्त्ति के शिष्य पं० दोदराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थीं ।

२२७४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०२ से ११२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०८ । ट भण्डार ।

२२७५. यशस्तिलकचम्पू टीका—श्रुतसागर । पत्र सं० ४०० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १३७ । अ भण्डार ।

विशेष—मूलकर्त्ता सोमदेव सूरि ।

२२७६. यशस्तिलकचम्पूटीका······ । पत्र सं० ६४६ । आ० १२३×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण । वे० सं० ५८८ । क भण्डार ।

२२७७. प्रति सं० २ । पत्र स० ६१० । ले० काल × । वे० स० ५८६ । क भण्डार ।

२२७८. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३८१ । ले० काल × वे० स० ५६० । क भण्डार ।

२२७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४०६ से ४५६ । ले० काल स० १६४८ । अपूर्ण । वे० स० ५८७ । क भण्डार ।

२२८०. यशोधरचरित—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ८२ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १४०७ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २५ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत्सरेस्मिन १४०७ वर्षे अश्विनिमासे शुक्लपक्षे १० बुधवासरे तस्मिन चन्द्रपुरीदुर्गेहोलीपुरविराजमाने महाराजाधिराजसमस्तराजावलीसेव्यमाण खिलजीवंश उद्योत्तक सुरित्राणमहमूदसाहिराज्ये तद्विजयराज्ये श्रीकाष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री देवसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री विमलसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीधर्मसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भावसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सहस्रकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे श्रीगुणकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यश कीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक मलयकीर्त्ति देवास्तच्छिष्य महात्मा श्री हरिषेण देवास्तस्याम्नाये अग्रोतकान्वये मीतलगोत्रे साधु श्रीकरमसी तद्भार्यासुनखा तयो पुत्रास्त्रय जेष्ठ सा मैणपाल द्वितीय सा. पूना तृतीय सा झाझण । साधु मैणपाल, भार्ये द्वे चाऊ भूराही । सा. झाझण पुत्र जगमल मोमा एतेषामध्ये इदपुस्तक ज्ञानावरणीकर्म्म क्षयार्थं वाइ वधो इदं यशोधरचरित्र लिखाप्य महात्मा हरिषेणदेवा, दत्त पठनार्थं । लिखित पं० विजयसिंहेन ।

२२८१ प्रति सं० २ । पत्र स० १४५ । ले० काल सं० १६३६ । वे० स० ५६८ । क भण्डार ।

विशेष—कही कही संस्कृत मे टीका भी दी हुई हैं ।

२२८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० से ६८ । ले० काल स० १६३० भादो····। अपूर्ण । वे० स० २८८ । च भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि आमेर मे राजा भारमल के शासनकाल मे नेमीश्वर चैत्यालय मे की गई थी । प्रशस्ति अपूर्ण हे ।

२२८३. प्रति स० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल स० १८६७ आसोज सुदी २ । वे० स० २८६ । च भण्डार ।

२२८४. प्रति स० ५ । पत्र स० ८६ । ले० काल सं० १६७२ मगसिर सुदी १० । वे० स० २८७ । च भण्डार ।

२२८५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० २१२६ । ट भण्डार ।

२२८६ यशोधरचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ५१ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–राजा यशोधर का जीवन वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३४ । अ भण्डार ।

२२८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल X । वे० सं० ५६६ । क भण्डार ।

२२८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ३७ । ले० काल सं० १७६५ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० २८४ । च भण्डार ।

२२८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६२ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २८५ । च भण्डार ।

विशेष—पं० नोनिधराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२२९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८५५ आसोज सुदी ११ । वे० सं० २२ । छ भण्डार ।

२२९१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६५ फागुण सुदी १२ । वे० सं० २३ । च भण्डार ।

२२९२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल X । वे० सं० २४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२२९३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १७७५ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० २५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति– संवत्सर १७७५ वर्षे मिती चैत्र बुदी ६ मंगलवार । भट्टारक-शिरोरत्न भट्टारक श्री श्री १०८ । श्री देवेन्द्रकीर्त्तिजी तस्य आज्ञाविधायि आचार्य श्री क्षेमकीर्त्ति । पं० चोखचन्द ने बसई ग्राम मे प्रतिलिपि की थी । अन्त मे यह और लिखा है—

संवत् १३५२ येलो भौंसे प्रतिष्ठा कराई लांडणा में तदिस्यौ ल्हौडसाजरा उपजो ।

२२९४ प्रति सं० ८ । पत्र सं० २ से ३८ । ले० काल सं० १७८० आषाढ बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २६ । ज भण्डार ।

२२९५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५५ । ले० काल X । वे० सं० ११४ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । ३७ चित्र हैं, मुगलकालीन प्रभाव है । पं० गोवर्द्धनजी के शिष्य प० टोडरमल के लिए प्रतिलिपि करवाई थी । प्रति दर्शनीय है ।

२२९६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १७६२ जेष्ठ सुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० ४६३ । ञ भण्डार ।

विशेष—आचार्य शुभचन्द्र ने टोंक मे प्रतिलिपि की थी ।

अ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६०४) क भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० ५६६, ५६७) और है ।

२२९७ यशोधरचरित्र—कायस्थ पद्मनाभ । पत्र सं० ७० । आ० ११X४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल X । ले० काल सं० १८३२ पौष सुदी १२ । वे० सं० ५६२ । क भण्डार ।

२२६८. प्रति स० २ । प्रति स० ६८ । ले० काल स० १५६५ सावन सुदी १३ । वे० स० १५२ । ख भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ पीमसिरी से आचार्य भुवनकीर्त्ति की शिष्या आर्यिका मुक्तिश्री के लिए दयासुन्दर से लिखवाया तथा वैशाख सुदी १० स० १७८५ को मडलाचार्य श्री अनन्तकीर्त्तिजी के लिए नाथूरामजी ने समर्पित किया।

२२६६ प्रति स० ३ । पत्र स० ५४ । ले० काल X । वे० स० ८४ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति नवीन है ।

२३००. प्रति सं० ४ । पत्र स० ८५ । ले० काल स० १६६७ । वे० स० ६०६ । ङ भण्डार ।

विशेष—मानसिंह महाराजा के शासनकाल मे आमेर मे प्रतिलिपि हुई ।

२३०१. प्रति सं० ५ । पत्र स० ५३ । ले० काल स० १८३३ पौष सुदी १३ । वे० स० २१ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे पं० वखतराम ने नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

२३०२. प्रति सं० ६ । पत्र स० ७६ । ले० काल स० भादवा बुदी १० । वे० स० ६६ । व्य भण्डार ।

विशेष—टोडरमलजी के पठनार्थ पांडे गोरधनदास ने प्रतिलिपि कराई थी । महामुनि गुणकीर्ति के उपदेश से ग्रन्थकार ने ग्रन्थ की रचना की थी ।

२३०३. यशोधरचरित्र—वादिराजसूरि । पत्र स० २ से १२ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल X । ले० काल स० १८३६ । अपूर्ण । वे० स० ८७२ । अ भण्डार ।

२३०४. प्रति सं० २ । पत्र स० १२ । ले० काल १८२४ । वे० स० ५६५ । क भण्डार ।

२३०५. प्रति स० ३ । पत्र स० २ से १६ । ले० काल स० १५१८ । अपूर्ण । वे० स० ८३ । घ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२३०६. प्रति स० ४ । पत्र स० २२ । ले० काल X । वे० स० २१३८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नवीन लिखा गया है ।

२३०७ यशोधरचरित्र—पूरणदेव । पत्र सं० ३ से २० । आ० १०X४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २८१ । च भण्डार ।

२३०८. यशोधरचरित्र—वासवसेन । पत्र सं० ७१ । आ० १२X४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल स० १५६५ माघ सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति–

सवत् १५६५ वर्षे माघमासे कृष्णपक्षे द्वादशीदिवसे वृहस्पतिवासरे मूलनक्षत्रे राव श्रीमालदे राज्यप्रवर्तमाने रावत श्री खेतसी प्रतापे साखौरण नाम नगरे श्रीशांतिनाथ जिणचैत्यालये श्रीमूलसंघेबलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे

नंद्याम्नाये श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये दोशीगोत्रे सा तिहुणा तद्भार्या तोली तयोपुत्रास्त्रय प्रथम सा. ईसर द्वितीय टोहा तृतीय सा ऊल्हा ईसरभार्या अजपिणी तयो पुत्रा चत्वार प्र० सा० लोहट द्वितीय सा भूणा तृतीय सा ऊधर चतुर्थ मा देवा मा लोहट भार्या ललितादे तयो पुत्रा पच प्रथम धर्मदास द्वितीय सा. धीरा तृतीय लूणा चतुर्थ होला पचम राजा सा भूणा भार्या भूणसिरि तयोपुत्र नगराज साह ऊधर भार्या उधसिरी तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम लाला द्वितीय खरहथ– सा० देवा भार्या धोसिरि तयो पुत्र धनिउ चि० धर्मदास भार्या धर्मश्री चिरजी धीरा भार्या रमायी सा टोहा भार्ये द्वे वृहद्भीला लघ्वी सुहागदे तत्पुत्रदान पुण्य शीलवान सा. नाल्हा तद्भार्या नयणश्री सा० ऊल्हा भार्या वाली तयो पुत्र सा डालू तद्भार्या डलसिरि एतेपामध्ये चतुर्विधदान वितरणशक्तेनत्रिपचाशतश्रावकसत्क्रिया प्रतिपालण सावधानेन जिणपूजापुरदरेण सद्गुरुपदेश निर्वाहकेन सत्रपति साह श्री टोहानामधेयेन इद शास्त्र लिखाप्य उत्तमपात्राय घटापित ज्ञानावर्णी कर्मक्षय निमित्त ।

२३०६. प्रति सं० २ । पत्र स० ४ से ५४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०७३ । अ भण्डार ।

२३१०. प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल सं० १६६० वैशाख बुदी १३ । वे० स० ५६३ । क भण्डार ।

विशेष—मिश्र केशव ने प्रतिलिपि की थी ।

२३११. यशोधरचरित्र ''' । पत्र स० १७ से ४५ । आ० ११X४३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १६६१ । अ भण्डार ।

२३१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल X । वे० सं० ६१३ । ङ भण्डार ।

२३१३. यशोधरचरित्र—गारवदास । पत्र स० ४३ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० १५८१ भादवा सुदी १२ । ले० काल सं० १६३० मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ५६६ ।

विशेष—कवि कफोतपुर का रहने वाला था ऐसा लिखा है ।

२३१४. यशोधरचरित्रभाषा—खुशालचंद । पत्र सं० ३७ । आ० १२X५३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० १७८१ कार्त्तिक सुदी ६ । ले० काल स० १७६६ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० स० १०४६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति–

मिती आसोज मासे शुक्लपक्षे तिथि पडिवा वार सनिवासरे सं० १७६६ छिनवा । श्रे० कुशलोजी तत् शिष्येन लिपिकृतं पं० खुस्यालचंद श्री घृतमिलोलजी के देहुरे पूर्ण कर्त्तव्य ।

दिवालो जिनराज कौ देखत दिवालो जाय ।
निसि दिवालो बलाइये कर्म दिवालो थाय ॥

श्री रस्तु । कल्याणमस्तु । महाराष्ट्रपुर मध्ये परिपूर्णा ।

२३१५. यशोधरचरित्र—पन्नालाल। पत्र सं० ११२। आ० १३×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–चरित्र। र० काल स० १६३२ सावन बुदी ऽऽ। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ६००। क भण्डार।

विशेष—पुष्पदंत कृत यशोधर चरित्र का हिन्दी अनुवाद है।

२३१६. प्रति सं० २। पत्र स० ७४। ले० काल X। वे० सं० ६१२। ङ भण्डार।

२३१७ प्रति स० ३। पत्र स० ८२। ले० काल X। वे० स० १६४। छ भण्डार।

२३१८. यशोधरचरित्र ···। पत्र स० २ से ६३। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ६११। ङ भण्डार।

२३१९. यशोधरचरित्र—श्रुतसागर। पत्र स० ६१। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल X। ले० काल स० १५६४ फागुण सुदी १२। पूर्ण। वे० स० ५६४। क भण्डार।

२३२०. यशोधरचरित्र—भट्टारक ज्ञानकीत्ति। पत्र सं० ६३। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल स० १६५६। ले० काल स० १६६० आसोज बुदी ६। पूर्ण। वे० स० २६५। अ भण्डार।

विशेष—सवत् १६६० वर्षे आसौजमासे कृष्णपक्षे नवम्यातिथौ सोमवासरे आदिनाथचैत्यालये मोजमावाद वास्तव्ये राजाधिराज महाराजाश्रीमामसिघराज्यप्रवर्त्तते श्रीमूलसघेबलात्कारगणे नंद्याम्नायेसरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये तस्तत्पट्टे भट्टारक श्रीपद्मनदिदेवातत्पट्टे भट्टार श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्रीचन्द्रकीत्ति देवास्तदाम्नाये खडेलवालये पान्वाड्यागोत्रे साह हीरा तस्य भार्या हरषमदे। तयो पुत्राचत्त्वार। प्रथम पुत्र साह नानू तस्यभार्या नौलादे पुत्र त्रय प्रथमपुत्र साह नादु तस्य भार्या नायकदे तयोपुत्रा द्वौ प्रथम पुत्र चिरजीव गीरधर। द्वितीयपुत्र साह वोहिथ तस्य भार्या वहूरगदे तस्य पुत्रा त्रय प्रथमपुत्र चिरंजी स्थिरपाल द्वितीय पुत्र जेसा। तृतीयपुत्र टेहू। तृतीय पूरण तस्यभार्या कपूरदे। साह हीरा। द्वितीयपुत्र वोहिथ तस्यभार्या चादणदे। तस्यपुत्रा द्वौ प्रथमपुत्र साह गुजर तस्यभार्या गारवदे। द्वितीयपुत्र चिरजी छाजू। हीरा तृतीयपुत्र साह पचाइण। हीरा चतुर्थपुत्र साह नराइण तस्य भार्या नैणादे तस्यपुत्र साह दुरगा एतेषामध्ये वोहिथ तेनेदंशास्त्र यशोधरचरित्रकर्मक्षयनिमित्तं भट्टारक श्रीचन्द्रकीत्तितत्शिष्य आर्य लालचद योग्य घटापित।

२३२१ प्रति स० २। पत्र स० ४८। ले० काल सं० १५७७। वे० स० ६०६। क भण्डार।

विशेष—ब्रह्म मतिसागर ने प्रतिलिपि की थी।

२३२२. प्रति सं० ३। पत्र स० ४८। ले० काल स० १६५१ मगसिर बुदी २। वे० स० ६१०। क भण्डार।

विशेष—साह छीतरमल के पठनार्थ जोशी जगन्नाथ ने मौजमाबाद मे प्रतिलिपि की थी।

ङ भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ६०७, ६०८) और हैं।

२३२३. यशोधरचरित्रटिप्पण—प्रभाचंद। पत्र स० १२। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल X। ले० काल सं० १५८५ पौष बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ३७६। ञ भण्डार।

विशेष—पुष्पदंत कृत यशोधर चरित्र का संस्कृत टिप्पण है। बादशाह बाबर के शासनकाल मे प्रतिलिपि की गई थी।

२३२४ रघुवंशमहाकाव्य—महाकवि कालिदास। पत्र स० १४४। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६५४। अ भण्डार।

विशेष—पत्र स० ८२ से १०५ तक नही है। पचम सर्ग तक कठिन शब्दो के अर्थ संस्कृत मे दिये हुये हैं।

२३२५. प्रति सं० २। पत्र स० ७०। ले० काल स० १८२४ काती बुदी ३। वे० स० ६४३। अ भण्डार।

विशेष—कडी ग्राम मे पाड्या देवराम के पठनार्थ जैतसी ने प्रतिलिपि की थी।

२३२६. प्रति स० ३। पत्र सं० १२६। ले० काल सं० १८४४। वे० सं० २०६६। अ भण्डार।

२३२७. प्रति स० ४। पत्र सं० १११। ले० काल सं० १६८० भादवा सुदी ८। वे० सं० १५४। ख भण्डार।

२३२८. प्रति सं० ५। पत्र स० १३२। ले० काल सं० १७८६ मगसर सुदी ११। वे० सं० १५५। ख भण्डार।

विशेष—हाशिये पर चारों ओर शब्दार्थ दिये हुए है। प्रति मारोठ मे पं० अनन्तकीर्त्ति के शिष्य उदयराम ने स्वपठनार्थ लिखी थी।

२३२९. प्रति सं० ६। पत्र स० ६६ से १३४। ले० काल सं० १६९६ कात्तिक बुदी ६। अपूर्ण। वे० स० २४२। छ भण्डार।

२३३० प्रति सं० ७। पत्र स० ७५। ले० काल स० १८२८ पौष बुदी ४। वे० सं० २४४। छ भण्डार।

२३३१ प्रति सं० ८। पत्र स० ६ से १७३। ले० काल सं० १७७३ मगसिर सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० १९९५। ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है तथा टीकाकार उदयहर्ष हैं।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० १०२८, १२६४, १२६५, १८७४, २०६५) ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १५५ [क])। ङ भण्डार मे ७ प्रतियां (वे० सं० ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५)। च भण्डार मे दो प्रतियां (वे० सं० २८९, २९०) छ और ट भण्डार मे एक एक प्रतिया (वे० सं० २६३, १९९६) और हैं।

२३३२ रघुवंशटीका—मल्लिनाथसूरि। पत्र स० २३२। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। वे० स० २१२। ञ भण्डार।

२३३३ प्रति सं० २। पत्र सं० १८ से १४१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३६८। ञ भण्डार।

२३३४. रघुवंशटीका—प० सुमति विजयगणि । पत्र सं० ६० से १७६ आ० १२×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६२७ ।

विशेष—टीकाकाल—

निर्विग्रहरस शशि संवत्सरे फाल्गुनसितैकादश्यां तिथौ संपूर्णा श्रीरस्तु मंगल सदा कर्तु. टीकाया. । विक्रमपुर मे टीका की गयी थी ।

२३३५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ से १४७ । ले० काल सं० १८४० चैत्र सुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ६२८ । ड भण्डार ।

विशेष—गुमानीराम के शिष्य प० शम्भूराम ने ज्ञानीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

विशेष—ड भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६२९) और है ।

२३३६. रघुवंशटीका—समयसुन्दर । पत्र सं० ६ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल सं० १६९२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८७५ । अ भण्डार ।

विशेष—समयसुन्दर कृत रघुवंश की टीका द्वयार्थक है । एक अर्थ तो वही है जो काव्य का है तथा दूसरा अर्थ जैनदृष्टिकोण से है ।

२३३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से ३७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७२ । ट भण्डार ।

२३३८ रघुवंशटीका—गुणविनयगणि । पत्र सं० १३७ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ८९ । ञ भण्डार ।

विशेष—खरतरगच्छीय वाचनाचार्य प्रमोदमाणिक्यगणि के शिष्य सख्यवनुल्य श्रीमत् जयसोमगणि के शिष्य गुणविनयगणि ने प्रतिलिपि की थी ।

२३३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८९५ । वे० सं० ६२६ । ङ भण्डार ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १३५०, १०८१) और हैं । केवल ञ भण्डार की प्रति ही गुणविनयगणि की टीका है ।

२३४०. रामकृष्णकाव्य—दैवज्ञ पं० सूर्य । पत्र सं० ३० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९०५ । अ भण्डार ।

२३४१ रामचन्द्रिका—केशवदास । पत्र सं० १७६ । आ० ६×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १७९६ श्रावण बुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ६५५ । क भण्डार ।

२३४२ वरांगचरित्र—भ० वर्द्धमानदेव । पत्र सं० ४६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-राजा वरांग का जीवन चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५९४ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ३२१ । अ भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति—

सं० १५९४ वर्षे शाके १४५९ कार्त्तिगमासे शुक्लपक्षे दशमीदिवसे शनैश्चरवासरे धनिष्ठानक्षत्रे गडयोगे भावा नाम महानगरे राव श्री सूर्यशेणि राज्यप्रवर्त्तमाने कवर श्री पूरणमल्लप्रतापे श्री शान्तिनाथ जिनचैत्यालये श्रीमूल-

संघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिणचंद्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य भ० श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नायेखण्डेलवालान्वये शावडागोत्रे संघाधिपति साह श्री रणमल्ल तद्भार्या रैणादे तयो पुत्रास्त्रय. प्रथम स श्री खीवा तद्भार्ये द्वे प्रथमा स० खेमलदे द्वितीयो सुहागदे तत्पुत्रास्त्रय प्रथम चि० सधारण द्वि० श्रीकरण तृतीय धर्मदास । द्वितीय सं० वेणा तद्भार्ये द्वे प्रथमा विमलादे द्वि० नौलादे । तृतीय स डूंगरसी तद्भार्या दाड्योदे एतेसा मध्ये स विमलादे इदं शास्त्र लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्त ज्ञानावर्णी कर्मक्षय निमित्तम् ।

२३४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६३ भादवा बुदी १४ । वे० स० ६६६ । ङ भण्डार ।

२३४४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ७४ । ले० काल सं० १८६४ मंगसिर सुदी ८ । वे० सं० ३३० । च भण्डार ।

२३४५. प्रति सं० ४ । पत्र स० ५८ । ले० काल स० १८३६ फागुण सुदी १ । वे० स० ४६ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर के नेमिनाथ चैत्यालय मे सतोषराम के शिष्य वख्तराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४६. प्रति सं० ५ । पत्र स० ७९ । ले० काल स० १८४७ वैशाख सुदी १ । वे० स० ४७ । छ भण्डार ।

विशेष—सागावती (सागानेर) मे गोधो के चैत्यालय मे पं० सवाईराम के शिष्य नौनिधराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४७. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३८ । ले० काल सं० १८३१ आषाढ सुदी ३ । वे० स० ४९ । ञ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे चद्रप्रभ चैत्यालय मे पं० रामचद ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३० से ५९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५७ । ट भण्डार ।

विशेष—८वें सर्ग से १३वें सर्ग तक है ।

२३४९. वरांगचरित्र—भर्तृहरि । पत्र स० ३ से १० । आ० १२३/४×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नही हैं ।

२३५०. वर्द्धमानकाव्य—मुनि श्री पद्मनंदि । पत्र स० ५० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल स० १५१८ । पूर्ण । वे० सं० ३६९ । ञ भण्डार ।

इति श्री वर्द्धमान कथावतारे जिनरात्रिव्रतमहात्म्यप्रदर्शके मुनि श्री पद्मनंदि विरचिते मुखनामा दिने श्री वर्द्धमाननिर्वाणगमन नाम द्वितीय परिच्छेद

२३५१. वर्द्धमानकथा—जयमित्रहल। पत्र सं० ७३। आ० ६३×५३ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल स० १६६५ वैशाख सुदी ३। पूर्ण। वे० स० १५३। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति–

स० १६५५ वरषे वैशाख सुदी ३ शुक्रवारे मृगसीरनखित्रे मूलसघे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणभद्र तत्पट्टे भट्टारक श्रीमल्लिभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्रीप्रभाचद तत्पट्टे भट्टारक श्रीचदकीर्त्ति विरचित श्री नेमदत्त आचार्य अवावतीगढ महादुर्गांत श्रीनेमिनाथ चैत्यालये कुछाहावस महाराजाधिराज महाराजा श्री मानस्यघराज्ये अजमेरागोत्रे सा. धीरा तद्भार्याधारादे तत्पुत्र चत्वारि प्रथम पुत्र ... । (अपूर्ण)

२३५२ प्रति सं० २। पत्र स० ५२। ले० काल ×। वे० स० १६५३। ट भण्डार।

२३५३. वर्द्धमानचरित्र ...। पत्र स० १६८ से २१२। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६८६। अ भण्डार।

२३५४. प्रति स० २। पत्र स० ६१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६७४। अ भण्डार।

२३५५. वर्द्धमानचरित्र—केशरीसिंह। पत्र स० १८५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–चरित्र। र० काल स० १८६१ ले० काल स० १८६४ सावन बुदी २। पूर्ण। वे० स० ६४८। क भण्डार।

विशेष—सदासुखजी गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

२३५६ विक्रमचरित्र—वाचनाचार्य अभयसोम। पत्र स० ४ से ५। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–विक्रमादित्य का जीवन। र० काल स० १७२४। ले० काल स० १७८१ श्रावण बुदी ४। अपूर्ण। वे० स० १३६। व भण्डार।

विशेष—उदयपुर नगर में शिष्य रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२३५७. विदग्धमुखमडन—बौद्धाचार्य धर्मदास। पत्र सं० २०। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल स० १८५१। पूर्ण। वे० स० ६२७। अ भण्डार।

२३५८ प्रति सं० २। पत्र स० १८। ले० काल ×। वे० स० १०३३। अ भण्डार।

२३५९. प्रति स० ३। पत्र स० २७। ले० काल स० १८२२। वे० स० ६५७। क भण्डार।

विशेष—जयपुर मे महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२३६० प्रति सं० ४। पत्र स० २४। ले० काल सं० १७२४। वे० स० ६५८। क भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे टीका भी दी है।

२३६१ प्रति स० ५। पत्र स० २६। ले० काल ×। वे० सं० ११३। छ भण्डार।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

प्रथम व अन्तिम पत्र पर गोल मोहर है जिस पर लिखा है 'श्री जिन सेवक साह वादिराज जाति सोगाणी गोमा सुत।

२३६२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं १६१५ चैत्र सुदी ७ । वे० सं० ११५ । छ भण्डार ।

विशेष—गोधो के मन्दिर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२३६३ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३३ । ले० काल स० १८८१ पौष बुदी ३ । वे० सं० २७८ । ज भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२३६४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १७५६ मगसिर बुदी ८ । वे० सं० ३०१ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

२३६५ प्रति स० ६ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १७४३ कात्तिक बुदी २ । वे० स० ५०७ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । टीकाकार जिनकुशलसूरि के शिष्य क्षेमचन्द्र गणि हैं ।

इनके अतिरिक्त छ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ११३, १४६) ञ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५०७) और है ।

२३६६. विदग्धमुखमंडनटीका—विनयरत्न । पत्र स० ३३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । टीकाकाल स० १५३५ । ले० काल सं० १६८३ आसोज सुदी १० । वे० स० ११३ । छ भण्डार ।

२३६७. विहारकाव्य—कालिदास । पत्र स० २ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल स० १८४६ । वे० स० १८५३ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे चण्द्रप्रभ चैत्यालय मे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति के समय मे लिखी गई थी ।

२३६८. शंबुप्रद्युम्नप्रबंध—समयसुन्दरगणि । पत्र सं० २ से २१ । आ० १०½×४½ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रीकृष्ण, शबुकुमार एव प्रद्युम्न का जीवन । र० काल × । ले० काल स० १६५६ । अपूर्ण । वे० स ७०१ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १६५६ वर्षे विजयदशम्या श्रीस्तंभतीर्थे श्रीवृहत्खरतरगच्छाधीश्वर श्री दिल्लीपति पातिसाह जलालदीन अकबरसाहिप्रदत्तयुगप्रधानपदधारक श्री ६ जिनचन्द्रसूरि सूरश्वराणा (सूरीश्वराणा) साहिसमक्षस्वहस्तस्थापिता आचार्यश्रीजिनसिंहसूरिसुरिकराणा (सूरीश्वराणा) शिष्य मुख्य पंडित सकलचन्द्रगणि तच्छिष्य वा० समयसुन्दरगणिना श्रीजैसलमेरु वास्तव्ये नानाविध शास्त्रविचाररसिक लो० सिवराज ममभ्यर्थनया कृत श्री शंबप्रद्युम्नप्रबन्धे प्रथम. खड. ।

२३६६. शान्तिनाथचरित्र—अजितप्रभसूरि । पत्र स० १६६ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०२४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६६ से आगे के पत्र नही हैं ।

२३७०. प्रति सं० २ । पत्र स० ३ से १०५ । ले० काल स० १७१४ पौष बुदी १४ । अपूर्ण । वे० स० १६२० । ट भण्डार ।

२३७१. शान्तिनाथचरित्र—भट्टारक सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १६५ । आ० १३×५३ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १७८६ चैत्र सूदी ५ । अपूर्ण । वे० स० १२६ । अ भण्डार ।

२३७२. प्रति सं० २ । पत्र स० २२८ । ले० काल × । वे० सं० ७०२ । ड भण्डार ।

विशेष—तीन प्रकार की लिपिया हैं ।

२३७३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २२१ । ले० काल सं० १८६३ माह बुदी ६ । वे० स० ७०३ । क भण्डार ।

विशेष—लिखितं गुरजीरामलाल सवाई जयनगरमध्ये वासी नेवटा का हाल संघही मालावता के मन्दिर लिखी । लिखाप्यतं चपारामजी छावड़ा सवाई जयपुर मध्ये ।

२३७४. प्रति सं० ४ । पत्र स० १८७ । ले० काल स० १८६४ फागुण बुदी १२ । वे० सं० ३४१ । घ भण्डार ।

विशेष—यह प्रति स्योजीरामजी दीवान के मन्दिर की है ।

२३७५. प्रति सं० ५ । पत्र स० १५६ । ले० काल सं० १७६६ कार्त्तिक सुदी ११ । वे० स० १४ । छ भण्डार ।

विशेष—सं० १८०३ जेठ बुदी ६ के दिन उदयराम ने इस प्रति का सशोधन किया था ।

२३७६ प्रति सं० ६ । पत्र स० १७ से १२७ । ले० काल सं० १८८८ वैशाख सुदी २ । अपूर्ण । वे० स० ४६४ । व्य भण्डार ।

विशेष—महात्मा पन्नालाल ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त छ, व्य तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० १३, ४८६, १६२६) और हैं ।

२३७७. शालिभद्रचौपई—मतिसागर । पत्र सं० । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल स० १६७८ आसोज बुदी ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१५४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र आधा फटा हुआ है ।

२३७८ प्रति स० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० स० ३६२ । व्य भण्डार ।

२३७९. शालिभद्र चौपई । पत्र सं० ५ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३० ।

विशेष—रचना में ६० पद्य हैं तथा अशुद्ध लिखी हुई है । अन्तिम पाठ नही है ।

प्रारम्भ—

श्री सासरा नायक सुमरिये वर्द्धमान जिनचंद।
अलीइ विघन दुरोहर आपै प्रमानद ॥१॥

२३८०. शिशुपालवध—महाकवि माघ। पत्र सं० ४६। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२६३। अ भण्डार।

२३८१. प्रति सं० २। पत्र सं० ६३। ले० काल ×। वे० सं० ६३४। अ भण्डार।

विशेष—प० लक्ष्मीचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

२३८२. शिशुपालवध टीका—मल्लिनाथसूरि। पत्र सं० १४४। आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६३२। अ भण्डार।

विशेष—९ सर्ग हैं। प्रत्येक सर्ग की पत्र सख्या अलग अलग है।

२३८३. प्रति सं० २। पत्र स० १७। ले० काल ×। वे० सं० २७६। ज भण्डार।

विशेष—केवल प्रथम सर्ग तक है।

२३८४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। वे० सं० ३३७। ज भण्डार।

२३८५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ९ से १४४। ले० काल सं० १७६६। अपूर्ण। वे० सं० १८५। व्य भण्डार।

२३८६. श्रवणभूषण—नरहरिभट्ट। पत्र सं० २५। आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६४२। अ भण्डार।

विशेष—विदग्धमुखमंडन की व्याख्या है।

प्रारम्भ—श्री नमो पार्श्वनाथाय।

हेरवंक्व किमंव किम् तव कारता तस्य चाद्रीकला
कृत्यं किं शरजन्मनोक्त मन पादंतारू रं स्यादिति तात।
कुप्यति गृह्यतामिति विहायाहर्तु मन्या कला—
माकाशे जयति प्रसारित कर स्तंवेरमयामणी ॥१॥
य. साहित्यसुधेंदुर्नरहरि रल्लालनंदन।
कुरुते सैशवरा भूषराव्या विदग्धमुखमंडराव्याख्या ॥२॥
प्रकाराः संतु वहवो विदग्धमुखमडने।
तथापि मत्कृतं भावि मुख्यं भुवरा—भूषरां ॥३॥

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री नरहरभट्टविरचिते श्रवणभूषणे चतुर्थ. परिच्छेद संपूर्णः।

२३८७. श्रीपालचरित्र—ब्र० नेमिदत्त। पत्र सं० ६८ । आ० १०३×५ इंच । भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र । र० काल सं० १५८५ । ले० काल स० १६४३ । पूर्ण । वे० स० २१० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है। प्रशस्ति—

सवत् १६४३ वर्षे आषाढ सुदी ५ शनिवासरे श्रीमूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुद-कुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्र-देवा मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवा तत्शिष्य मं० भुवनकीर्तिदेवा तत्शिष्य म धर्मकीर्तिदेवा द्वितीय शिष्यमडलाचार्य विशालकीर्तिदेवा तत्शिष्य मडलाचार्य लक्ष्मीचददेवा तदन्वये मं० सहसकीर्तिदेवा तदन्वये मडलाचार्य नेमचद तदाम्नाये खडलवालान्वये रैवासा वास्तव्ये दगडा गोत्रे सा० लीला त ...... ।

२३८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८४६ । वे० स० ६९९ । क भण्डार ।

२३८९. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४२ । ले० काल सं० १८४५ ज्येष्ठ सुदी ३ । वे० स० १९२ । ख भण्डार ।

विशेष—मालवदेश के पूर्णासा नगर मे आदिनाथ चैत्यालय मे ग्रन्थ रचना की गई थी। विजयराम ने तक्षकपुर (टोडारायसिंह) मे अपने पुत्र चि० टेकचन्द के स्वाध्यायार्थ इसको तीन दिन मे प्रतिलिपि की थी।

यह प्रति पं० सुखलाल की है। हरिदुर्ग मे यह ग्रन्थ मिला ऐसा उल्लेख है।

२३९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३९ । ले० काल सं० १८९५ आसोज सुदी ४ । वे० स० १९३ । ख भण्डार ।

विशेष—केकडी मे प्रतिलिपि हुई थी।

२३९१. प्रति सं० ५ । पत्र स० ४२ से ७९ । ले० काल स० १७६१ सावन सुदी ४ । वे० स० । ङ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती मे राय बुधसिंह के शासनकाल मे ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी।

२३९२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६० । ले० काल स० १८३१ फागुण बुदी १२ । वे० सं० ३८ । झ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे श्वेताम्बर पडित मुक्तिविजय ने प्रतिलिपि की थी।

२३९३ प्रति सं० ७ । पत्र स० ५३ । ले० काल स० १८२७ चैत्र सुदी १४ । वे० स० ३२७ । ञ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प० ऋषभदास ने कर्मक्षयार्थ प्रतिलिपि की थी।

२३९४ प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४४ । ले० काल स० १८२६ माह सुदी ८ । वे० स० ९ । ञ भण्डार ।

विशेष—प० रामचन्दजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

२३९५ प्रति स० ९ । पत्र स० ५८ । ले० काल स० १६४४ भादवा सुदी ५ । वे० स० २१३६ । ट भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० २३३, २५६) ङ, छ तथा ञ भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ७२१, ३९ तथा ८५) और हैं।

२३९६ श्रीपालचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति। पत्र स० ५९। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल शक स० १६५३। पूर्ण। वे० स० १०१४। अ भण्डार।

विशेष—ब्रह्मचारी माणकचद ने प्रतिलिपि की थी।

२३९७. प्रति सं० २। पत्र स० ३२८। ले० काल सं० १७६५ फागुन बुदी १२। वे० स० ४०। छ भण्डार।

विशेष—तारणपुर मे मडलाचार्य रत्नकीर्ति के प्रशिष्य विष्णुरूप ने प्रतिलिपि की थी।

२३९८. प्रति सं० ३। पत्र स० २८। ले० काल ×। वे० सं० १६२। ज भण्डार।

विशेष—यह ग्रन्थ चिरजीलाल मोढ्या ने सं० १९६३ की भादवा बुदी ८ को चढाया था।

२३९९. प्रति सं० ४। पत्र सं० २९ (६० से ८८) ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ९७। झ भण्डार।

विशेष—प० हरलाल ने वाम मे प्रतिलिपि की थी।

२४००. श्रीपालचरित्र" ·। पत्र स० १२ से ३४। आ० ११½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९९३। अ भण्डार।

२४०१. श्रीपालचरित्र' ··। पत्र स० १७। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १९९६। अ भण्डार।

२४०२. श्रीपालचरित्र—परिमल्ल। पत्र स० १४४। आ० ११×८ इच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-चरित्र। र० काल स० १६५१। आषाढ बुदी ८। ले० काल स० १९३३। पूर्ण। वे० सं० ४०७। अ भण्डार।

२४०३ प्रति सं० २। पत्र स० १६४। ले० काल सं० १८९८। वे० स० ५२१। अ भण्डार।

२४०४. प्रति स० ३। पत्र सं० ५२ से १४४। ले० काल सं० १८५९। वे० स० ४०४। अपूर्ण। अ भण्डार।

विशेष—महात्मा ज्ञानीराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। दीवान शिवचन्दजी ने ग्रन्थ लिखवाया था।

२४०५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ९६। ले० काल सं० १८८९ पौष बुदी १०। वे० स० ७९। ग भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ आगरे मे आलमगज मे लिखा था।

२४०६. प्रति स० ५। पत्र सं० १२४। ले० काल सं० १८६७ वैशाख सुदी ३। वे० सं० ७१७। ङ भण्डार।

विशेष—महात्मा कालूराम ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

२४०७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०१ । ले० काल स० १८५७ आसोज बुदी ७ । वे० स० ७१६ । ङ भण्डार ।

विशेष—अभयराम गोधा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२४०८. प्रति स० ७ । पत्र सं० १०२ । ले० काल स० १८६२ माघ बुदी २ । वे० स० ६८३ । च भण्डार ।

२४०९. प्रति स० ८ । पत्र स० ८५ । ले० काल स० १७९० पौष सुदी २ । वे० स० १७४ । छ भण्डार ।

विशेष—गुटका साइज है । हिरणौद मे प्रतिलिपि हुई थी । अन्तिम ५ पत्रो मे कर्मप्रकृति वर्णन है जिसका लेखनकाल सं० १७९३ आसोज बुदी १३ है । सागानेर मे गुरुजी मदूराम ने कान्हजीदास के पठनार्थ लिखा था ।

२४१०. प्रति सं० ९ । पत्र स० १३१ । ले० काल स० १८८२ सावन बुदी ५ । वे० स० २२८ । झ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १०७७, ४१८) घ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०४) ङ भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० ७१५, ७१८, ७२०) छ, झ और ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० २२५, २२६ और १६१३) और हैं ।

२४११. श्रीपालचरित्र । पत्र सं० २५ । आ० ११३/४×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६१ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । घ भण्डार ।

विशेष—अमीचन्दजी सौगाणी तबेला वालोकी बहूने लिखवाकर विजैरामजी पाड्या के मन्दिर में विराजमान किया ।

२४१२. प्रति सं० २ । पत्र स० ४२ । ले० काल × । वे० स० ७०० । ङ भण्डार ।

२४१३ प्रति सं० ३ । पत्र स० ४२ । ले० काल स० १९२६ पौष सुदी ८ । वे० स० ८० । ग भण्डार ।

२४१४. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६१ । ले० काल स० १९३० फागुण सुदी ६ । वे० स० ८२ । ग भण्डार ।

२४१५ प्रति स० ५ । पत्र स० ४२ । ले० काल स० १९३४ फागुन बुदी ११ । वे० सं० २५६ । ज भण्डार ।

विशेष—मन्नालाल पापडीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४१६. प्रति सं० ६ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वे० स० ६७४ । अ भण्डार ।

२४१७. प्रति सं० ७ । पत्र स० ३३ । ले० काल सं० १९३९ । वे० सं० ४४० । अ भण्डार ।

२४१८ श्रीपालचरित्र ......। पत्र सं० २४। आ० ११३/४×८ इञ्च । भाषा- हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७५ ।

विशेष—२४ से आगे पत्र नही हैं । दो प्रतियो का मिश्रण हैं ।

२४१९. प्रति सं० २ । पत्र स० ३९ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२४२०. प्रति स० ३ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६८४ । च भण्डार ।

२४२१. श्रेणिकचरित्र...... । पत्र स० २७ से ४८ । आ० १०×४३/४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३२ । ङ भण्डार ।

२४२२. श्रेणिकचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र स० ४९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५६ । च भण्डार ।

२४२३. प्रति सं० २ । पत्र स० १०७ । ले० काल सं० १८३७ कार्तिक सुदी । अपूर्ण । वे० स० २७ छ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है।

२४२४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ७० । ले० काल × । वे० सं० २८ । छ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों को मिलाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है ।

२४२५. प्रति स० ४ । पत्र स० ८१ । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० २९ । छ भण्डार ।

२४२६. श्रेणिकचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ८४ । आ० १२×५ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८०१ ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २४६ । अ भण्डार ।

विशेष—टोंक मे प्रतिलिपि हुई थी । इसका दूसरा नाम भविष्यत् पद्मनाभपुराण भी है

२४२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११९ । ले० काल स० १७०८ चैत्र बुदी १४ । वे० सं० १९४ । ङ भण्डार ।

२४२८ प्रति सं० ३ । पत्र स० १४८ । ले० काल सं० १९२९ । वे० सं० १०५ । घ भण्डार ।

२४२९. प्रति स० ४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १८०१ । वे० सं० ७३५ । ङ भण्डार ।

विशेष—महात्मा फकीरदास ने लखणौती मे प्रतिलिपि की थी।

२४३०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४६ ले० काल स० १८६४ आषाढ सुदी १० । वे० सं० ३५२ । च भण्डार ।

२४३१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७५ । ले० काल स० १८६१ श्रावण बुदी १ । वे० सं० ३५३ च भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे उदयचंद लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी।

२४३२ श्रेणिकचरित्र—भट्टारक विजयकीर्त्ति। पत्र सं० १२६। आ० १०×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल स० १८२० फागुण बुदी ७। ले० काल सं० १६०३ पौष सुदी ३। पूर्ण। वे० स० ४३७। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय-

विजयकीर्त्ति भट्टारक जान, इह भाषा कीधी परमाण।
सवत अठारास वीस, फागुण बुदी साते सु जगीस ॥
बुधवार इह पूरण भई, स्वाति नक्षत्र वृद्ध जोग सुथई।
गोत पाटणी है मुनिराय, विजयकीर्त्ति भट्टारक थाय ॥
तसु पटधारी श्री मुनिजानि, बडजात्यातसु गोत पिछाणि।
त्रिलोकेन्द्रकीर्त्तिरिपिराज, नितप्रति साधय आतम काज ॥
विजयमुनि शिपि दुतिय सुजाण श्री बैराड देश तसु आण।
धर्मचन्द्र भट्टारक नाम, ठोल्या गोत वरण्यो अभिराम।
मलयखेड सिंघासण मही, कारंजय पट सोभा लही ॥

२४३३. प्रति स० ३। पत्र स० ७६। ले० काल सं० १८८३ ज्येष्ठ सुदी ५। वे० स० ८३। ग भण्डार।

विशेष—महाराजा श्री जयसिंहजी के शासनकाल में जयपुर मे सवाईराम गोधा ने आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी। मोहनराम चौधरी पाड्या ने ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियो के चैत्यालय मे चढाया।

२४३४. प्रति सं० ३। पत्र स० ८६। ले० काल ×। वे० सं० १६३। छ भण्डार।

२४३५. श्रेणिकचरित्रभाषा। पत्र स० ५५। आ० ११×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ७३३। ङ भण्डार।

२४३६. प्रति स० २। पत्र स० ३३ से ६५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ७३४। ङ भण्डार।

२४३७. संभवजिणणाहचरिउ (संभवनाथ चरित्र) तेजपाल। पत्र स० ६२। आ० १०×५ इंच। भाषा-अपभ्रंश। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। वे० स० ३६५। च भण्डार।

२४३८ सागरदत्तचरित्र—हीरकवि। पत्र सं० १८ से २०। आ० १०×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल सं० १७२४ आसोज सुदी १०। ले० काल स० १७२७ कार्तिक बुदी १। अपूर्ण। वे० स० ८३५। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के १७ पत्र नही हैं।

ढाल पचतालीसमो गुरुवानी—

सवत् वेद युग जाणीय मुनि शशि वर्ष उदार ।। सुगुण नर सांभलो० ।।
मेदपाढ माहे लिख्यो विजइ दशमि दिन सार ।। ५ ।। सुगुण०
गढ जालोरइ युग तस्यु' लिखीउए अधिकार ।
अमृत सिधि योगइ सही त्रयोदसी दिनसार ।। ६ ।। सु०
भाद्रव मास महिमा घणी पूरण करयो विचार ।
भविक नर साभलो पचतालीस ढाले सही गाथा सातसईसार ।। ७ ।। सु०
लूंकइ गच्छ लायक यती वीर सीह जे माल ।
गुरु झाझण श्रुत केवली थिवर गुणे चोसाल ।। ८ ।। सु०
समरथथिवर महा मुनी सुदर रुप उदार ।
तत शिष भाव धरी भणइ सुगुरु तणइ आधार ।। ९ ।। सु०
उछौ अधिक्यो कह्यो कवि चातुरीय किलोल ।
मिथ्या दु क्रुत ते होज्यो जिन साखइ चउसाल ।। १० ।। सु०
सजन जन नर नारि जे संभली लहइ उल्हास ।
नरनारी धर्मातिमा पडित म करो को हास ।। ११ ।। सु०
दुरजन नइ न सुहावई नही आवइ कहे दाय ।
माखी चदन नादरइ असुचितिहा चलि जाय ।। १२ ।। सु०
प्यारो लागइ सतनइ पामर चित संतोष ।
ढाल भली २ संभली चिते थी ढाल रोष ।। १३ ।। सु०
श्री गच्छ नायक तेजसी जब लग प्रतपी भाण ।
हीर मुनि आसीस द्यइ हो ज्यो कोडि कल्याण ।। १४ ।। सु०
सरस ढाल सरसी कथा सरसो सहु अधिकार ।
हीर मुनि गुरु नाम थी आणद हरष उदार ।। १५ ।। सु०

इति श्री ढाल सागरदत्त चरित्र सपूर्णं । सर्व गाथा ७१७ संवत् १७२७ वर्षे कार्त्तिक बुदी १ दिने सोम-वासरे लिखत श्री धन्यजी ऋषि श्री केशवजी तत् शिष्य प्रवर पडित पूज्य ऋषि श्री ५ मामाजातदतेवासी लिपिकृतं मुनिसावल आत्मार्थे । जोधपुरमध्ये । शुभ भवतु ।

२४३६. सिरिपालचरिय—प० नरसेन । पत्र स० ४७ । आ० ९½×४½ इ च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–राजा श्रीपाल का जीवन वर्णन । र० काल × । ले० काल स० १६१५ कार्त्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४१० । ञ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र जीर्ण है । तक्षकगढ नगर के आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२४४०. सीताचरित्र—कवि रामचन्द (बालक) । पत्र सं० १०० । आ० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल सं० १७१३ मगसिर सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०० ।

विशेष—रामचन्द्र कवि बालक के नाम से विख्यात थे ।

२४४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८० । ले० काल × । वे० सं० ६१ । ग भण्डार ।

२४४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६६ । ले० काल सं० १८८४ कार्तिक बुदी ६ । वे० सं० ७१६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति सजिल्द है ।

२४४३. सुकुमालचरिउ—श्रीधर । पत्र सं० ६५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-सुकुमाल मुनि का जीवन वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८८ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४४४. सुकुमालचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ४४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६७० कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ६४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६७० शाके १५२७ प्रवर्तमाने महामांगल्यप्रदकार्त्तिकमासे शुक्लपक्षे अष्टम्यां तिथौ सोमवासरे नागपुरमध्ये श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेव तत्पट्टे भ० श्रीशुभचंद्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचंद्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचंद्रदेवा मंडलाचार्य श्रीभुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे मं० श्रीधर्मकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे मं० श्रीसहस्रकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीनेमचंद्रदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीयशकीर्त्ति तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये भौंसागोत्रे सा सोनू तस्यभार्या सोनश्री तयो पुत्र सा. फलहू तस्यभार्या फूलमदे तयो पुत्रा षट् प्रथम पुत्र सा० नरसिंह तस्यभार्या नरसिंघदे । द्वितीयपुत्र सा. वरसिंह तस्यभार्या बहुरंगदे तयो. पुत्र सा ठाकुर तस्यभार्या ठाकुरदे । तृतीयपुत्र सा. खेता तस्यभार्या खेतलदे तयो पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र सा रणमल तस्यभार्या रयणादे तयो पुत्रौ द्वौ प्र० चि० कंवरा द्वितीय पुत्र चि० धनेउ । द्वितीय पुत्र सा पट्टा तस्यभार्या पाटमदे तयो· पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र चि० नाथू द्वि० पुत्र चि० उदयसिंघ । चतुर्थ पुत्र सा रूपा तस्यभार्या रूपलदे । पंचमपुत्र सा. तेजा तस्यभार्या तेजलदे । तयो पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र चि० वछू द्वितीयपुत्र सुलतान । षष्टमपुत्र सा भीवा तस्यभार्या द्वे प्रथमा भावलदे द्वितीय भीवलदे । तयो पुत्रा श्चत्वार प्रथम पुत्र सा नानिग तस्यभार्या द्वे प्रथमा नानिगदे द्वितीया नौलादे तयो. पुत्र चि० उदयसिंघ । सा भीवा । द्वितीय पुत्र सा हेमा तस्यभार्या हेमलदे । तृतीयपुत्र चि० भूठा चतुर्थ पुत्र चि० पूरण । एतेषामध्ये सा भीवा तस्यभार्या साध्वी भीवलदे तयेद शास्त्र सुकुमालचरित्राख्य ज्ञानावरणी कर्मक्षयनिमित्त लिखाप्य सत्पात्राय प्रदत्त ।

२४४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १७८५ । वे० सं० १२५ । अ भण्डार ।

२४४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८६४ ज्येष्ठ बुदी १४ । वे० सं० ४१२ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

२४४७. प्रति सं० ४ | पत्र सं० २६ | ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० ३२ | छ भण्डार।

विशेष—कही कही सस्कृत मे कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हुए हैं।

२४४८ प्रति स० ५ | पत्र स० ३४ | ले० काल सं० १८४६ ज्येष्ठ बुदी ५ । वे० स० ३४ | छ भण्डार।

विशेष—सागानेर मे सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी।

२४४६ प्रति सं० ६। पत्र सं० ४४। ले० काल सं० १८२६ पौष बुदी ऽऽ। वे० स० ८६। ञ भण्डार।

विशेष—प० रामचन्द्रजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

इनके अतिरिक्त अ, ङ, छ, झ तथा ञ भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० ८६५, ३३, २, ३३४) और हैं।

२४५० सुकुमालचरित्रभाषा—पं० नाथूलाल दोसी। प्रत्र सं० १४३ । आ० १२३⁄४X४३⁄४ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य | विषय-चरित्र। र० काल स० १६१८ सावन सुदी ७ | ले० काल स० १६३७ चैत्र सुदी १४। पूर्ण। वे० स० ८०७। क भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ मे हिन्दी पद्य मे है इसके बाद वचनिका मे हैं।

२४५१. प्रति सं० २ | पत्र स० ८५ | ले० काल सं० १६६०। वे० स० ८६१। ङ भण्डार।

२४५२ प्रति सं० ३ | पत्र सं० ६२। ले० काल X। वे० सं० ८६४। ङ भण्डार।

२४५३. सुकुमालचरित्र—हरचंद गंगवाल | पत्र स० १५३। आ० ११X५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-चरित्र | र० काल स० १६१८। ले० काल सं० १६२६ कार्त्तिक सुदी १५ | पूर्ण | वे० स० ७२० | च भण्डार।

२४५४. प्रति सं० २ | पत्र स० १७४ | ले० काल स० १६३० | वे० स० ७२१ | च भण्डार।

२४५५ सुकुमालचरित्र ··· | पत्र सं० ३६ | आ० ७X५ इञ्च। भाषा-हिन्दी | विषय-चरित्र। र० काल X। ले० काल स० १६३३। पूर्ण। वे० सं० ८६२। ङ भण्डार।

विशेष—फतेहलाल भावसा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। प्रथम २१ पत्रो मे तत्त्वार्थसूत्र है।

२४५६. प्रति सं० २ | पत्र स० ६० से ७६। ले० काल X | अपूर्ण। वे० स० ८६०। ङ भण्डार।

२४५७ सुखनिधान—कवि जगन्नाथ। पत्र सं० ५१। आ० ११३⁄४X५३⁄४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल स० १७०० आसोज सुदी १०। ले० काल सं० १७१४ | पूर्ण। वे० स० १६६। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

सवत् १७१४ फाल्गुन सुदी १० मोजाबाद (मोजमाबाद) मध्ये श्री आदीश्वर चैत्यालये लिखित प० दामोदरेण।

२४५८. प्रति स० २। पत्र स० ३१। ले० काल सं० १८३० कार्त्तिक सुदी १३। वे० स० २३६। ञ भण्डार।

२४५६. सुदर्शनचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति। पत्र स० ६०। आ० ११X४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल X। ले० काल स० १७१५। अपूर्ण। वे० स० ८। अ भण्डार।

विशेष—५६ से ५८ तक पत्र नही हैं।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत १७७५ वर्षे माघ शुक्लैकादश्यासोमे पुष्करज्ञातीयेन मिश्रजयरामेणेद सुदर्शनचरित्र लेखक पाठकयो शुभं भूयात्।

२४६०. प्रति सं० २। पत्र सं० २ से ६४। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ४१५। च भण्डार।

२४६१. प्रति सं० ३। पत्र स० २ से ४१। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ४१६। च भण्डार।

२४६२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५०। ले० काल X। वे० स० ४९। छ भण्डार।

२४६३. सुदर्शनचरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त। पत्र सं० ६६। आ० ११X५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १२। अ भण्डार।

२४६४. प्रति सं० २। पत्र सं ६६। ले० काल X। वे० सं० ४। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है। पत्र ५६ से ५८ तक नवीन लिखे हुए हैं।

२४६५. प्रति सं० ३। पत्र स० ५८। ले० काल स० १६५२ फागुण बुदी ११। वे० सं० २२६। ख भण्डार।

विशेष—साह मनोरथ ने मुकुददास से प्रतिलिपि कराई थी।

नीचे- सं० १६२८ मे अषाढ बुदी ६ को पं० तुलसीदास के पठनार्थ ली गई।

२४६६. प्रति स० ४। पत्र स० ३८। ले० काल स० १८३० चैत्र बुदी ६। वे० स० ६२। ञ भण्डार।

विशेष—रामचन्द्र ने अपने शिष्य सेवकराम के पठनार्थ लिखाई।

२४६७ प्रति सं० ५। पत्र स० ६७। ले० काल X। वे० सं० ३३५। ञ भण्डार।

२४६८ प्रति सं० ६। पत्र सं० ७१। ले० काल सं० १६६० फागुन सुदी २। वे० सं० २१६८। ट भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है।

२४६६. सुदर्शनचरित्र—मुमुक्षु विद्यानंदि। पत्र स० २७ से ३६। आ० १२$\frac{1}{2}$×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ८६३। ङ भण्डार।

२४७०. प्रति सं० २। पत्र स० २१८। ले० काल स० १८१८। वे० सं० ४१३। च भण्डार।

२४७१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४१४। च भण्डार।

२४७२. प्रति सं० ४। पत्र स० ७७। ले० काल स० १६६५ भादवा बुदी ११। वे० स० ४८। छ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है–

अथ संवत्सरेति श्रीपनृति (श्री नृपति) विक्रमादित्यराज्ये गताब्द संवत् १६६५ वर्षे भादौ बुदि ११ गुरुवासरे कृष्णपक्षे अर्गलापुरदुर्ग शुभस्थाने अश्वपतिगजपतिनरपतिराजत्रय मुद्राधिपतिश्रीमत्साहिसलेमराज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमत् काष्ठासंघे मायुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमलयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे श्रीगुणभद्रदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री भानुकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारश्रेणिस्तदाम्नाये इक्ष्वाकवंशे जैसवालान्वये ठाकुराणिगोत्रे पालव सुभस्थाने जिनचैत्यालये आचार्यगुणकीर्तिना पठनार्थं लिखितं।

२४७३. प्रति सं० ५। पत्र स० ७७। ले० काल स० १८९३ बैशाख बुदी ४। वे० स० ३। झ भण्डार।

विशेष—चित्रकूटगढ मे राजाधिराज राणा श्री उदयसिंहजी के शासनकाल मे पार्श्वनाथ चैत्यालय में भ० जिनचन्द्रदेव प्रभाचन्द्रदेव आदि शिष्यो ने प्रतिलिपि की। प्रशस्ति अपूर्ण है।

२४७४. प्रति स० ६। पत्र स० ४५। ले० काल ×। वे० स० २१३६। ट भण्डार।

२४७५. सुदर्शनचरित्र ....। पत्र स० ४ से ५६। आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १९६८। अ भण्डार।

२४७६. प्रति स० २। पत्र सं० ३ से ४०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १९८५। अ भण्डार।

विशेष—पत्र स० १, २, ६ तथा ४० से आगे के पत्र नही हैं।

२४७७. प्रति स० ३। पत्र स० ३१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ८५६। ङ भण्डार।

२४७८. सुदर्शनचरित्र ...। पत्र स० ५४। आ० १३×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६०। छ भण्डार।

२४७९. सुभौमचरित्र—भ० रतनचन्द। पत्र स० ३७। आ० ८$\frac{3}{4}$×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभौम चक्रवर्त्ति का जीवन चरित्र। र० काल स० १६८३ भादवा सुदी ५। ले० काल स० १८५०। पूर्ण। वे० स० ५५। छ भण्डार।

विशेष—विबुध तेजपाल की सहायता से हेमराज पाटनी के लिये ग्रन्थ रचा गया। प० सवाईराम के शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गगाविष्णु ने प्रतिलिपि की थी। हेमराज व भ० रतनचन्द्र का पूर्ण परिचय दिया हुआ है।

२४८०. प्रति सं० २ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १८४० वैशाख सुदी १ । वे० स० १५१ । व भण्डार ।

विशेष—हेमराज पाटनी के लिये टोजराज की सहायता से ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२४८१ हनुमच्चरित्र—ब्र० अजित । पत्र स० १२४ । आ० १०३/४X४३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल सं० १६८२ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वे० म० ३० । अ भण्डार ।

विशेष—भृगुकच्छपुरी मे श्री नेमिजिनालय मे ग्रन्थ रचना हुई ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६८२ वर्षे वैशाखमासे बाहुलपक्षे एकादश्यातिथौ काव्यवारे । लिखापित पडित श्री शावल इद शास्त्र लिखित जोधा लेखक ग्राम वैरागरमध्ये । ग्रन्थाग्रन्थ २००० ।

२४८२ प्रति सं० २ । पत्र स० ८५ । ले० काल स० १६४४ चैत्र बुदी ५ । वे० स० १४६ । अ भण्डार ।

२४८३ प्रति स० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८२६ । वे० स० ८४८ । क भण्डार ।

२४८४. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६२ । ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी ११ । वे० स० ८४६ । क भण्डार ।

२४८५ प्रति स० ५ । पत्र स० ५१ । ले० काल स० १८०७ ज्येष्ठ सुदी ४ । वे० स० २४३ । ख भण्डार ।

विशेष—तुलसीदास मोतीराम गगवाल ने पडित उदयराम के पठनार्थ कालाडेहरा (कृष्णगढ) मे प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४८६ प्रति सं० ६ । पत्र स० ८२ । ले० काल स० १८८२ । वे० स० ६६ । ग भण्डार ।

२४८७ प्रति स० ७ । पत्र स० ११२ । ले० काल स० १५८४ । वे० स० १३० । घ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति नही है ।

२४८८ प्रति स० ८ । पत्र स० ३१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ४४५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४८६ प्रति स० ६ । पत्र स० ८६ । ले० काल X । वे० स० ५० । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४६० प्रति स० १० । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १६३३ कार्तिक सुदी ११ । वे० स० १०८ क । व्य भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति काफी विस्तृत है ।

भट्टारक पद्मनदि की आम्नाय मे खडेलवाल ज्ञातीय साह गोत्रोत्पन्न साधु श्री वोहीथ के वश मे होने वाली वाई सहलालदे ने सोलहकारण व्रतोद्यापन मे प्रतिलिपि कराकर चढाई ।

२४६१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६२६ मंगसिर सुदी ४ । वे० स० ३४७ । ञ भण्डार ।

विशेष—ब्र० डालू लोहशल्या सेठी गोत्र वाले ने प्रतिलिपि कराई ।

२४६२ प्रति सं० १२ । पत्र सं० ६२ । ले० काल स० १६७४ । वे० स० ५१२ । ञ भण्डार ।

२४६३ प्रति सं० १३ । पत्र स० २ से १०५ । ले० काल सं० १६८८ माघ सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० २१४१ । ट भण्डार ।

विशेष— पत्र १, ७३, व १०३ नही हैं लेखक प्रशस्ति बडी है ।

इनके अतिरिक्त झ और ञ भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० १७७ तथा ४७३) और है ।

२४६४. हनुमच्चरित्र—ब्रह्म रायमल्ल । पत्र सं० ३६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल स० १६१६ बैशाख बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०१ । अ भण्डार ।

२४६५. प्रति सं० २ । पत्र स० ५१ । ले० काल सं० १८२४ । वे० स० २४२ । ख भण्डार ।

२४६६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ७५ । ले० काल स० १८८३ सावरण बुदी ६ । वे० स० ६७ । ग भण्डार ।

विशेष—साह कालूराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४६७. प्रति सं० ४ । पत्र स० ५१ । ले० काल सं० १८८३ आसोज सुदी १० । वे० सं० ६०२ । ङ भण्डार ।

विशेष—स० १६५६ मगसिर बुदी १ शनिवार को मुन्नालालजी बंकी वालो के घडो पर संघीजी के मन्दिर मे यह ग्रन्थ भेंट किया गया ।

२४६८. प्रति सं० ५ । पत्र स० ३० । ले० काल स० १७६१ कार्त्तिक सुदी ११ । वे० स० ६०३ । ङ भण्डार ।

विशेष—वनपुर ग्राम में धासीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२४६६. प्रति स० ६ । पत्र स० ४० । ले० काल × । वे० स० १६६ । छ भण्डार ।

२५०० प्रति सं० ७ । पत्र स० ६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४१ । झ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है ।

२५०१. हारावलि—महामहोपाध्याय पुरुषोत्तमदेव । पत्र स० १३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८५३ । क भण्डार ।

२५०२. होलीरेणुकाचरित्र—प० जिनदास । पत्र सं० ५६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल स० १६०८ । ले० काल स० १६०८ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल के समय की ही प्राचीन प्रति है अत. महत्वपूर्ण है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है–

स्वस्ति श्रीमते शातिनाथाय । सवत् १६०८ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे दशमीतिथौ शुक्रवासरे हस्तनक्षत्रे श्री रणस्तंभदुर्गस्य शाखानगरे शेरपुरनाम्नि श्रीशातिनाथजिनचैत्यालये श्री आलमसाह साहिआलम श्रीसल्लेमसाहराज्यप्रवर्त्त-माने श्रीमूलसघे बलात्कारगणे तद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्र-देवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य भ० श्रीधर्मचद्रदेवास्तदाम्नायेखडेलवालान्वये सेठीगोत्रे सा० सोल्हू तद्भार्या फूला तत्पुत्रास्त्रय प्र सा पचायण द्वि. सा डीडा तृतीय सा करमा । सा पचायण भार्या वील्हा तत्पुत्र सा. दामोदर तद्भार्ये द्वे. प्र. खेमी द्वि० नौलादे तत्पुत्रास्त्रय प्रथम सा नेमा द्वितीय सा वोथू तृतीय सा० तेजा। सा. नेमा भार्या चतुरा। सा वोथू भार्या सवीरा सा डीडा भार्या गौरा तत्पुत्र सा. हेमा तद्भार्ये द्वे प्रथम धीरणि द्वितीय सुहागदे तत्पुत्रास्त्रय प्रथम सा भीखु द्वितीय सा. चतुरा तृतीय सा. भोवालु । सा. करमा भार्या टरमी तत्पुत्रौ द्वौ प्र सा धर्मदास द्वि० सा. जसवत। सा. धर्मदास भार्या सिंगारदे जसवत भार्या जसमादे तत्पुत्र चिरजीवी ईसरदास एतेषामध्ये जिनपूजापुरदरेण उत्तमगुणगणालकृतगात्रेण सा. कर्मानामध्ये येनेदशास्त्रलिखाप्य आचार्य श्री ललितकीर्त्तये घटापितं दशलक्षणव्रतोद्यपनार्थं ।

२५०३. प्रति सं० २ । पत्र स० २० । ले० काल X । वे० सं० ३६ । अ भण्डार ।

२५०४ प्रति सं० ३ । पत्र स० ५४ । ले० काल सं० १७२६ माघ सुदी ७ । वे० स० ४५१ । च भण्डार ।

विशेष—यह प्रति प० रायमल्ल के द्वारा वृन्दावती (बून्दी) मे स्वपठनार्थ चन्द्रप्रभु चैत्यालय मे लिखी गई थी । कवि जिनदास रणथभौरगढ के समीप नवलक्षपुर का रहने वाला था । उसने शेरपुर के शान्तिनाथ चैत्यालय मे स० १६०८ मे उक्त ग्रन्थ की रचना की थी ।

२५०५ प्रति स० ४ । पत्र स० ३ से ३५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २१७१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

कथा-साहित्य

२५०६. अकलंकदेवकथा""""। पत्र सं० ४। आ० १०X४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० २०५६। ट भण्डार।

२५०७. अक्षयनिधिमुष्टिकाविधानव्रतकथा""""। पत्र स० ६। आ० ११X६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० १८३४। ट भण्डार।

२५०८. अठारहनाते की कथा—ऋषि लालचन्द। पत्र स० ४२। आ० १०X५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल स० १८०५ माह सुदी ५। ले० काल स० १८८३ कार्तिक बुदी ८। वे० स० ६६८। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम भाग-

सवत अठारह पचडोतर १८०५ जी हो माह सुदी पांचा गुरुवार।
भणय मुहुरत सुभ जोग मैं जी हो कथण कह्यो सुवीचार ॥ धन धन० ॥४६६॥
श्री चीतोड तल्हटी राजियो, जी हो ऋषि जीनेश्वर स्यास।
श्री सीध दोलती दी बणी जी हो सीध की पूरी जे हाम ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७०॥
तलहटी श्री सीगराज तो, जी हो वहुलो छय परीवार।
बेटा वेटी पोतरा जी हो अनधन अधीक अपार ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७१॥
श्री कोठारी काम का धणी, जी हो छाजड सो नगरा मेठ।
पा रावत सुराणा खोखरु दीपता जी हो ओर वाण्या हेठ ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७२॥
श्री पुन्य मग न्रगीडवो महा जी हो श्री विजयराज वाखाण।
पाट पणार भातर जी हो गुण सागर गुण खाण ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७३॥
सोभागी सीर सेहरो जी हो साग सुरी कल्याण।
परवारा पूरो सही जी हो सकल वाता मु वीयाण ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७४॥
श्री वीजयेगर्छे गीडवांघणी जी हो श्री भीम सागर सुरी पाट।
श्री तीलक सुरद वीर जीवज्यो जी हो सहमगुणो का थाट ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७५॥
साध सकल मे सोभतो जी हो ऋषि लालचन्द सुसीस।
अठारा नता चोथी कथी जी हो ढाल भणी इगतीस ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७६॥

ईती श्री धर्मउपदेस अठारा नाना चरीत्र सपूर्ण समाप्ता ॥

लिखतु चेली सुवकुवर जी आरज्या जी श्री १०८ श्री श्री श्री भागाजी तत् सषणी जी श्री श्री डमरुजा श्री रामकुवर जी। श्री सेवकुवर जी श्री चदनणाजी श्री दुल्हडी भणता गुणता सपूर्ण।

सवत् १८८३ वर्षे साके वर्षे मिती आसोज (काती) वदी ८ मे दिन वार सोमरे। ग्राम सग्रामगडमध्ये सपूर्ण, चोमासो तीजो कीधो ठाणा ६॥ की घो छो जदी लखीइ छ जी। श्री श्री १०८ श्री श्री मासत्या जी क प्रसाद लखेइ छ सेवुली ॥ श्री श्री मासत्या जी वाचवाने अरथ। आरभा जी वाचवान अरथ ठाणा ॥ ६ ॥

२५०६ अनन्तचतुर्दशी कथा—ब्रह्म ज्ञानसागर। पत्र स० १२। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४२३। अ भण्डार।

२५१०. अनन्तचतुर्दशीकथा—मुनीन्द्रकीर्त्ति। पत्र स० ५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३। च भण्डार।

२५११. अनन्तचतुर्दशीकथा ' '''। पत्र स० ३। आ० ९×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०५। झ भण्डार।

२५१२ अनन्तव्रतविधानकथा—मदनकीर्त्ति। पत्र स० ६। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०५८। ट भण्डार।

२५१३. अनन्तव्रतकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ७। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६। ख भण्डार।

विशेष—सस्कृत पद्यो के हिन्दी अर्थ भी दिये हुये हैं।

इनके अतिरिक्त ग भण्डार मे १ प्रति (वे० स० २) ङ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ८, ९, १०, ११) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ७४) और हैं।

२५१४ अनन्तव्रतकथा—भ० पद्मनन्दि। पत्र स० ५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १७८२ सावन बुदी १। वे० स० ७४। छ भण्डार।

२५१५. अनन्तव्रतकथा''''''। पत्र स० ४। आ० ७½×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ७। ङ भण्डार।

२५१६ प्रति स० २। पत्र स० २। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २१८०। ट भण्डार।

२५१७. अनन्तव्रतकथा ''''। पत्र स० १०। आ० ६×३ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा (जैनेतर) र० काल ×। ले० काल स० १८३८ भादवा सुदी ७। वे० स० १५७। छ भण्डार।

२५१८ अनन्तव्रतकथा—खुशालचन्द। पत्र स० ५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १८३७ आसोज बुदी ३। पूर्ण। वे० स० ९९९। अ भण्डार।

२५१९. अंजनचोरकथा……। पत्र स० ६ । आ० ८३/४×४३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १९१४ । ट भण्डार ।

२५२०. अषाढएकादशीमहात्म्य……। पत्र सं० २ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११४९ । अ भण्डार ।

विशेष—यह जैनेतर ग्रन्थ है ।

२५२१. अष्टांगसम्यग्दर्शनकथा—सकलकीर्त्ति । पत्र स० २ से ३९ । आ० ७३/४×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६२१ । ट भण्डार ।

विशेप—कुछ बीच के पत्र नही हैं । आठो अङ्गो की अलग २ कथायें हैं ।

२५२२. अष्टांगोपाख्यान—पं० मेधावी । पत्र स० २८ । आ० १२३/४×५३/४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१८ । अ भण्डार ।

२५२३. अष्टाह्निकाकथा—भ० शुभचंद्र । पत्र स० ८ । आ० १०×४३/४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०० । अ भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ४८५, १०७०, १०७२) ग भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ३) ङ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ४१, ४२, ४३, ४४) च भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० सं० १५, १६, १७, १८, १९, २०) तथा छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७४) और हैं ।

२५२४. अष्टाह्निकाकथा—नथमल । पत्र सं० १८ । आ० १०३/४×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–कथा । र० काल स० १९२२ फागुरा सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२५ । अ भण्डार ।

विशेप—पत्रो के चारो ओर बेल बनी हुई है ।

इसके अतिरिक्त क भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० २७, २८, २९, ७९३) ग भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ४) ङ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ४५, ४६, ४७, ४८) च भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ५०९, ५१०, ५११, ५१२) तथा छ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १७९) और हैं ।

इसका दूसरा नाम सिद्धचक्र व्रतकथा भी है।

२५२५. अष्टाह्निकाकौमुदी…… । पत्र सं० ५ । आ० १०×४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७११ । ट भण्डार ।

२५२६. अष्टाह्निकाव्रतकथा…… । पत्र स० ४३ । आ० ९×६३/४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७२ । छ भण्डार ।

विशेप—छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १४५) की और है ।

२५२७. अष्टाह्निकाव्रतकथासंग्रह—गुणचन्द्रसूरि। पत्र सं० १४। आ० ६½×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७२। छ भण्डार।

२५२८. अशोकरोहिणीकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ६। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६४। पूर्ण। वे० सं० ३५। छ भण्डार।

२५२९. अशोकरोहिणीव्रतकथा ...। पत्र सं० १८। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६। छ भण्डार।

२५३०. अशोकरोहिणीव्रतकथा......। पत्र सं० १०। आ० ८½×६ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। र० काल सं० १७८४ पौष बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० २८१। म भण्डार।

२५३१. आकाशपंचमीव्रतकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ६। आ० ११½×६½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०० श्रावण सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ५१। छ भण्डार।

२५३२. आकाशपंचमीकथा ......। पत्र सं० ६ से २१। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५०। छ भण्डार।

२५३३. आराधनाकथाकोष ...। पत्र सं० ११८ से ३१७। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६७३। अ भण्डार।

विशेष—ख भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १७) तथा ट भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० २१७४) और हैं तथा दोनो ही अपूर्ण हैं।

२५३४. आराधनाकथाकोश ...। पत्र सं० १४४। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २८६। अ भण्डार।

विशेष—८४वी कथा तक पूर्ण है। ग्रन्थकर्त्ता का निम्न परिचय दिया है।

श्री मूलसंघे वरभारतीये गच्छे बलात्कारगणेति रम्ये।
श्रीकुदकुदाख्यमुनीद्रवंशे जातं प्रभाचन्द्रमहायतीन्द्र ॥५॥
देवेंद्रचंद्रार्कसमर्चितेन तेन प्रभाचन्द्रमुनीश्वरेण।
अनुग्रहार्थं रचितं सुवाक्यै आराधनासारकथाप्रबन्ध ॥६॥
तेन क्रमेणैव मया स्वशक्त्या श्लोकैः प्रसिद्धैश्चनिगद्यते स।
मार्गेन किं भानुकरप्रकाशे स्वलीलया गच्छति सर्वलोक ॥७॥

प्रत्येक कथा के अन्त मे परिचय दिया गया है।

२५३५. आराधनासारप्रबंध—प्रभाचन्द्र। पत्र सं० १५६। आ० ११×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६५। ट भण्डार।

विशेष—५६ से आगे तथा बीच मे भी कई पत्र नही हैं।

२५३६. आरामशोभाकथा……। पत्र सं० ६। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८३६। अ भण्डार।

विशेष—जिन पूजाफल कथायें हैं।

प्रारम्भ—

अन्यदा श्री महावीरस्वामी राजगृहेपुरे
समवासरदुद्याने भूयो गुण शिलाभिधे ॥१॥

सद्धर्ममूलसम्यक्त्व नैर्मल्यकरणे सदा।
यतध्वमिति तीर्थेशा वक्तिदेवादिपर्षदि ॥२॥

देवपूजादिश्रीराज्यसपद सुरसपदं।
निर्वाणकमलांचापि लभते नियतं जन. ॥३॥

अन्तिम पाठ—

यावद्देवी सुते राज्यं नाम्ना मलयसुदरे।
क्षिपामि सफल तावत्करिष्यामि निजं जनु ॥७५॥

सूरिं नत्वा गृहे गत्वा राज्यं क्षिप्त्वा निजागजे।
आरामशोभयायुक्ते राजाव्रतमुपाददे ॥७६॥

अधीत सर्वसिद्धातं संविग्नगुणसयुत।
एवं संस्थापयामास मुनिराजो निजे पदे ॥७७॥

गीतार्थायै तथारामशोभायै गुणभूमये।
प्रवर्त्तिनीपद प्रादात् गुरुस्तद्गुणरजित. ॥७८॥

सबोध्य भविकान् सूरिः कृत्वा तैरनशन तथा।
विपद्यद्वावपि स्वर्गसपदं प्रापतुर्वरं ॥७९॥

ततश्च्युत्वा क्रमादेतौ नरता सुदता वरान्।
भवान् कतिपयान् प्राप्य शास्वती सिद्धिमेष्यत ॥८०॥

एव भोस्तीर्थकृद्भक्ते फलमाकर्ण्य सुंदर।
कार्यस्तत्करणेयत्नो युष्माभिः प्रमदात्सदा ॥८१॥

॥ इति जिनपूजा विषये आरामशोभाकथा सपूर्णा ॥

संस्कृत पद्य संख्या २८१ है।

२५३७. उपांगललितव्रतकथा……। पत्र स० १४। आ० ८½×४ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-जैनेतर। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१२३। अ भण्डार।

२५३८. **ऋणसंबंधकथा—अभयचन्द्रगणि।** पत्र सं० ४। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६६२ ज्येष्ठ बुदी १। पूर्ण। वे० स० ८४०। अ भण्डार।

विशेष—आणदरायगुरुणा सीसेण अभयचदगणिणाय माहणचन्द्रपुत्राण कहाकिय म्यारघनरसए ॥१२॥

इति रिण सबधे छ ॥१॥

श्री श्री प० श्री श्री आणंदविजय मुनिभिर्लेखि। श्री किहरोरमध्ये संवत् १६६२ वर्षे जेठ वदि १ दिने।

२५३६ **औषधदानकथा—ब्र० नेमिदत्त।** पत्र स० ६। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०८१। ट भण्डार।

विशेष—२ से ५ तक पत्र नहीं हैं।

२५४० **कठियारकानडरीचौपई—मानसागर।** पत्र सं० १४। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल स० १७४७। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १००३। अ भण्डार।

विशेष—आदि भाग।

श्री गुरुभ्योनम ढाल जंबूद्वीप मझार एहनी प्रथम—
मुनिवर आर्यसुहस्तिकिण इक अवसरइ नयइ उजेणी आवियारे।
चरण करण व्रतधार गुणमणि आगर बहु परिवारे परिवस्याए ॥१॥

वन वाडी विश्राम लेइ तिहा रह्या दोइ मुनि नगर पठाविया ए।
थानक मागण काज मुनिवर मान्हता भद्रानइ घरि आविया ए ॥२॥

सेठानी कहे ताम शिष्य तुम्हे केहनास्यै काजै आव्या इहा ए।
आर्यसुहस्तिना सीस अम्हे छा श्राविका उद्याने गुरु छै तिहाए ॥३॥

अन्तिम—

सत्तरै सैताले समै म तिहा कीधौ चौमास ॥ मं० ॥
सदगुरु ना परसाद थी म पूगी मन की आस ॥ म० ॥
मानसागर सुख संपदा म जति सागरगणि सीस ॥ म० ॥
साधुतणा गुणगावता म पूगी मनह जगीस ॥
दिग पट कथा कोस थी म. रचीयो ए अधिकार।
अद्धि को उछो भाषीयो म. मिछा दुकड कार ॥
नवमी ढाल सोहामजी म० गौडी राग सुरग।
मानसागर कहै साभलो दिन दिन वधतो रग ॥ १० ॥

इति श्री सील विषय कठीयार कानडरी चौपई सपूर्ण।

२५४१. कथाकोश—हरिषेणाचार्य । पत्र सं० ४६१ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल सं० ६८६ । ले० काल सं० १५६७ पौष सुदी १४ । वे० सं० ८४ । व्य भण्डार ।

विशेष—सघी पदारथ ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२५४२ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१८ । आ० १०×५½ इंच । ले० काल १८३३ भादवा बुदी ऽऽ । वे० सं० ६७१ । क भण्डार ।

२५४३ कथाकोश—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३६ से १०६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७६७ अषाढ बुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० १६६७ । अ भण्डार ।

विशेष—१ से ३८, ५३ से ७० एवं ८७ से ८६ तक के पत्र नही हैं ।

लेखक प्रशस्ति—

सवत् १७६७ का आसाढमासे कृष्णपक्षे नवम्मा शनिवारे अजमेराख्ये नगरे पातिस्याहाजी अहमदस्याहजी महाराजाधिराज राजराजेश्वरमहाराजा श्री उभैसिहजी राज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमूलसघेसरस्वतीगच्छे वलात्कारगरो नद्याम्नाये कुदकुदाचार्यान्वये मंडलाचार्य श्रीरत्नकीर्त्तिजी तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीविद्यानदिजी तत्पट्टे मडलाचार्य्य श्रीश्रीमहेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टे मडलाचार्य्यजी श्री श्री श्री १०८ श्री अनतकीर्त्तिजी तदाम्नाये ब्रह्मचारीजी किसनदासजी तत् शिष्य पडित मनसारामेण व्रतकथाकोशाख्य शास्त्रलिखापितं धर्म्मोपदेशदानार्थं ज्ञानावरणीकर्म्मक्षयार्थं मगलभूयाच्चतुर्विधसधाना ।

२५४४ कथाकोश (आराधनाकथाकोश)—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० ४६ से १६२ । आ० १२½×६ च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८०२ कार्त्तिक बुदी ६ । अपूर्ण । वे० स० २२६६ । अ भण्डार ।

२५४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०३ । ले० काल सं० १६७५ सावन बुदी ११ । वे० सं० ६८ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है ।

इनके अतिरिक्त ङ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ७४) च भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३४) छ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६४, ६५) और हैं ।

२५४६. कथाकोश ... । पत्र स० २५ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५६ । च भण्डार ।

विशेष— च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ५७, ५८) ट भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० २११७ २११८) और हैं ।

२५४७ कथाकोश...... । पत्र स० २ से ६८ । आ० १२×५½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६६ । ङ भण्डार ।

२५४८. कथारत्नसागर—नारचन्द्र । पत्र सं० ५ । आ० १०३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२५४ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के १७ से २१ पत्र हैं ।

२५४९. कथासग्रह—ब्रह्मज्ञानसागर । पत्र स० २५ । आ० १२×६१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८५४ वैशाख बुदी २ । पूर्ण । वे० स० ३६८ । अ भण्डार ।

नाम कथा	पत्र	पद्य संख्या
[१] त्रैलोक्य तीज कथा	१ से ३	५२
[२] निसल्याष्टमी कथा	४ से ७	६४
[३] जिन रात्रिव्रत कथा	७ से १२	९६
[४] अष्टाह्निका व्रत कथा	१२ से १५	५२
[५] रक्षवधन कथा	१५ से १९	७६
[६] रोहिणी व्रत कथा	१९ से २३	९५
[७] आदित्यवार कथा	२३ से २५	३७

विशेष—१८५४ का वैशाखमासे कृष्णपक्षे तिथौ २ गुरुवासरे । लिख्यतं महात्मा स्यंभुराम सवाई जयपुर मध्ये । लिखायत चिरंजीव साहजी हरचदजी जाति भौंसा पठनार्थं ।

२५५०. कथासग्रह''' । पत्र सं० ३ से ९ । आ० १०×४३/४ इञ्च । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२६३ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

२५५१. कथासंग्रह'''''' । पत्र स० ९४ । आ० १२×७१/२ इच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ९९ । क भण्डार ।

विशेष—व्रत कथायें भी हैं । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १००) और है ।

२५५२. कथासंग्रह'' । पत्र स० ७८ । आ० १०१/२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४४ । अ भण्डार ।

२५५३. प्रति सं० २ । पत्र स० ७६ । ले० काल स० १५७८ । वे० स० २३ । ख भण्डार ।

विशेष—३४ कथाओ का सग्रह है ।

२५५४. प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न कथायें हो हैं ।

१ षोडशकारणकथा—पद्मप्रभदेव ।

२. रत्नत्रयविधानकथा—रत्नकीर्त्ति ।

ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६७) और है।

२५५५ कयवन्नाचौपई—जिनचंद्रसूरि। पत्र स० १५। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इच। भाषा-हिं (राजस्थानी)। विषय-कथा। र० काल स० १७२१। ले० काल सं० १७६६। पूर्ण। वे० सं० २४। ख भण्डार

विशेष—चयनविजय ने कृष्णगढ मे प्रतिलिपि की थी।

२५५६ कर्मविपाक । पत्र स० १८। आ० १०×४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १८१६ मगसिर बुदी १४। वे० स० १०१। छ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्री सूर्यारुणसवादरूपकर्मविपाक संपूर्ण।

२५५७ कवलचन्द्रायणव्रतकथा "। पत्र स० ४। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३०५। अ भण्डार।

विशेष—क भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०६) तथा ञ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४४२) और है।

२५५८ कृष्णरुक्मिणीमंगल—पदमभगत। पत्र सं० ७३। आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इच। भाषा-हिन्दी विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १८६०। वे० स० ११६०। पूर्ण। अ भण्डार।

विशेष—श्री गणेशाय नम । श्री गुरुभ्यो नमः। अथ रुक्मणि मगल लिखते।

यादि कीयो हरि पदमयोजी, दीयो त्रिवाण खिनाय।
कीरतकरि श्रीकृष्ण की जी, लीयो हजुरी बुलाय ॥
पावा लाग्यो पदमयोजी, जहा बढा रूकमणी जादुराय।
कृपा करी हरी भगत पै जी, पीतामर पहराय ॥
आग्यादि हरि भगत नै जी, पुरी दुवारिका माहि।
रुक्मणि मगल सुणै जी, ते अमरापुरि जाहि ॥
नरनारियो मगल सुणै जी, हरिचरण चितलाय।
वै नारी इ द्र की अपछरा जी, वै नर वैकुंठ जाय ॥
व्याह वेल भागीरथि जी गींता सहसर नाव।
गावतो अमरापुरी जी पाव(व)नं होय सब गाव ॥
वोलै राणी रुक्मणि जी, सुणज्यो भगति सुजाण।
या किया रति केशो तणी जी, येसडीर करोजी बखाण ॥
यो मगल परगट करो जी, सत को सवद विचारि।
बीडा दीयो हरी भगत नै जी, कथीयो कृष्ण मुरारि ॥

गुरु गोविंद नै विनवा जी, व अभिनासी जी देव।
तन मन तो आगै धरा जी, कराजी गुरा की जी सेव ।।
गुरु गोविंद बताइया जी, हरी थापै ब्रह्मड ।
गुरु गोविंद कै सरनै आये, होजो कुल की लाज सब पेली।
कृष्ण कृपा तैं काम हमारो, भणता पदम यो तेली ।।

पत्र ४० – राग सिंधु ।

ससिपाल राजा बोलियो जी सुणि जे राज कवार ।
जो जादु जुध आवसी, तो भीत बजाऊ सार ।।
ये कै सार धार करु वैरखा, वाण वहै अपार ।
गोला नालि अनेक छूटै सारया री मार ।।
डाहलतणि फौजै भली पर आप सुणिज्यौं राज्य कै वार ।।
भूप वतलाइयाइ जी ......।

अन्तिम— माता करो नै प्रभुजी री आरितो भोमि दान दत होय।
श्रवण सत गुर साभलो, दोष न लागै कोय ।।
श्रीकृष्ण कौ व्याहलो, सुणैं सकल चितलाय ।
हरि पुरवै सब कामना, भगति मुकति फलदाय ।।
द्वारामति आनन्द हुवा, मुनिजन देत असीस ।
जन पिय सामलिया, सीगासणि जगदीस ।।

रुकमणि जी मगल सपूर्ण ।।

सवत १८७० का साके १७३५ का भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पचम्या चित्राभौमनक्षत्रे द्वितीयचरणे तुलालग्नेय समाप्तोय ।। शुभ ।।

२५५६ कौमुदीकथा—आचार्य धर्मकीर्त्ति । पत्र स० ३ से ३४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६६३ । अपूर्ण । वे० स० १३२ । ङ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्म डू गरसी ने लिखा । बीच के १६ से १८ तक के भी पत्र नही हैं ।

२५६० ख्याल गोपीचदका । पत्र स० १६ । आ० ६×६¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । ऋ भण्डार ।

विशेष—अत मे और भी रागिनियो के पद दिये हुये हैं ।

२५६१. चतुर्दशीविधानकथा " । पत्र स० ११ । आ० ८×७ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८७ । च भण्डार ।

२५६२ चंद्रकुंवर की वार्ता—प्रतापसिंह। पत्र स० ६। आ० ११×४३ इच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८४१ भादवा। पूर्ण। वे० सं० १७१। ज भण्डार।

विशेष—९६ पद्य हैं। पडित मन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

अन्तिम—

प्रतापसिघ घर मन बसी, कविजन सदा सुहाइ।
जुग जुग जीवो चदकुवर, वात कही कविराय ॥ ९६ ।

२५६३ चन्दनमलयागिरीकथा—भद्रसेन। पत्र स० ६। आ० ११×५३ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७४। छ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। आदि अत भाग निम्न प्रकार है।

प्रारम्भ— स्वस्ति श्री विक्रमपुरे, प्रणमौं श्री जगदीस।
तन मन जीवन सुख करण, पूरत जगत जगीस ॥१॥
वरदाइक श्रुत देवता, मति विस्तारण मात।
प्रणमौं मन धरि मोद सौं, हरै विघन संघात ॥२॥
मम उपकारी परमगुरु, गुण अक्षर दातार।
बदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥
कहा चन्दन कहा मलयगिरि, कहा सायर कहा नीर।
कहिये ताकी वारता, सुणो सबै वर वीर ॥४॥

अन्तिम— कुमर पिता पाइन छुवै, भीर लिये पुर सग।
आसुन की धारा छुटी, मानो न्हावण गग ॥ १८६॥
दुख जु मन मे सुख भयो, भागौ विरह विजोग।
आनन्द सौं च्यारौ मिले, भयो अपूरव जोग ॥ १८७॥

गाहा— कच्छवि चदन राया, कच्छव मलयागिरिविते।
कच्छ जोहि पुण्यवल होई, दिढता सजोगो हवइ एव ॥१८८॥

कुल १८८ पद्य है। ६ कलिका हैं।

२५६४. चन्दनमलयागिरिकथा—चत्तर। पत्र स० १० । आ० १०३×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय-कथा। र० काल स० १७०१। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१७२। अ भण्डार।

अन्तिम ढाल—ढाल एहवी साधनुमु।

कठिन माहावरत राख ही व्रत राखीहि सोइ चतर सुजाण ॥
अनुकरमइ सुख पामीयाजी, पाम्यो अमर विमाण ॥ १ ॥ गुणवता साधनमु ॥

गुण दान सील तप भावना, च्यारे धरम प्रधान ॥
सुधइ चित्त जे पालइ जी पासी सुख कल्याण ॥ २ ॥ गुण० ॥

सतियाना गुण गावता जी जावइ पातिग दूर ॥
भली भावना भावइ जी जाइ उपसरग दूर ॥ ३ ॥ गुण० ॥

समत सत्रासइ इकोत्तरइ जी कीधो प्रथम अभास ॥
जे नर नारी साभलो जी तस मन होइ उर्लास ॥ ४ ॥ गुण० ॥

राखी नगर सो पावणो जी वसइ तहा सरावक लोक ॥
देव गुरा नारा गाया जी लाजइ सघला लोक ॥ ५ ॥ गुण० ॥

गुजराति गच्छ जाणीयइ जी श्री पूज्य जी जसराज ॥
आचारइ करी सोभतो जी स वीरज रूपराज ॥ ६ ॥ गुण० ॥

तस गछ माहि सोभता जी सोभा थिवर सुजाण ॥
मोहला जी ना जस घणा जी सीख्या बुद्धि निधान ॥ ७ ॥ गुण० ॥

वीर वचन कहइ वीरज हो तस पाटे धरमदास ॥
भाऊ थिवर वरवाणीयइ जी पडित गुणहि निवास ॥ ८ ॥ गुण० ॥

तस सेवक इम वीनवइ जी चतर कहइ चितलाय ॥
गुणभणता गुणता भावसूजी तस मन वछित थाय ॥ ६ ॥ गुण० ॥

॥ इति श्रीचदनमलयागिरिचरित्रसमापत ॥

२५६५. चन्दनषष्ठिकथा—ब्र० श्रुतसागर। पत्र स० ४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७० । क भण्डार ।

विशेष—ङ भण्डार मे एक प्रति वे० स० १६६ की और है।

२५६६ चन्दनषष्ठिकथा"""" । पत्र स० २४ । आ० ११×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८ । घ भण्डार ।

विशेष—अन्य कथायें भी हैं।

२५६७. चन्दनषष्ठिव्रतकथाभाषा—खुशालचंद काला। पत्र सं० ६ । आ० ११×४½ इ च । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६६ । क भण्डार ।

२५६८ चद्रहसकी कथा—टीकम । पत्र स० ७० । आ० ६×६ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल स० १७०८ । ले० काल स० १७३३ । पूर्ण । वे० स० २० । घ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त सिन्दूरप्रकरण एकीभाव स्तोत्र आदि और हैं।

२५६९. चारमित्रों की कथा—अजयराज। पत्र स० ५। आ० १०½×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल स० १७२१ ज्येष्ठ सुदी १३। ले० काल स० १७३३। पूर्ण। वे० सं० ५५३। च भण्डार।

२५७०. चित्रसेनकथा ""। पत्र स० १८। आ० १२×५½ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १८२१ पौष बुदी २। पूर्ण। वे० स० २२। व्य भण्डार।

विशेष—श्लोक सख्या ४९५।

२५७१ चौआराधनाउद्योतककथा—जोधराज। पत्र स० ६२। आ० १२½×७½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १९४६ मगसिर सुदी ८। पूर्ण। वे० स० २२। घ भण्डार।

विशेष—स० १८०१ की प्रति से लिखी गई है। जमनालाल साह ने प्रतिलिपि की थी।

स० १८०१ चाकसू" इतना और लिखा है। मूल्य- ५) ≡) ॥) इस तरह कुल ५॥≡ लिखा है।

२५७२ जयकुमारसुलोचनाकथा""""। पत्र स० १६। आ० ७×८½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १७९। छ भण्डार।

२५७३. जिनगुणसंपत्तिकथा"। पत्र स० ४। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १७८५ चैत्र बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ३११। अ भण्डार।

विशेष—क भण्डार मे (वे० स० १८८) की एक प्रति और है जिसकी जयपुर मे मागीलाल बज ने प्रतिलिपि की थी।

२५७४. जीवजीतसंहार—जैतराम। पत्र स० ५। आ० १२×८ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७७६। अ भण्डार।

विशेष—इसमें कवि ने मोह और चेतन के सग्राम का कथा के रूप मे वर्णन किया है।

२५७५. ज्येष्ठजिनवरकथा" ""। पत्र स० ४। आ० १३×४ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४८३। व्य भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे (वे० स० ४८४) की एक प्रति और है।

२५७६ ज्येष्ठजिनवरकथा—जसकीर्त्ति। पत्र सं० ११ से १४। आ० १२×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १७३७ आसौज बुदी ४। अपूर्ण। वे० स० २०८०। अ भण्डार।

विशेष—जसकीर्त्ति देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य थे।

२५७७. ढोलामारुवणी चौपई—कुशललाभगणि। पत्र स० २८। आ० ८×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी (राजस्थानी)। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २३८। ड भण्डार।

२५७८. ढोलामारुणीकीवात । पत्र स० २ से ७७ । आ० ६×८½ इंच । भाषा-हिन्दी। विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १६०० आषाढ सुदी ८ । अपूर्ण । वे० स० १५६१ । ट भण्डार ।

विशेष—१, ४, ५ तथा ६ठा पत्र नही है ।

हिन्दी गद्य तथा दोहे हैं । कुल ६८८ दोहे हैं जिनमे ढोलामारू की वात तथा राजा नल की विपत्ति आदि का वर्णन है । अन्तिम भाग इस प्रकार है—

मारूजी पीहरनै कागद लिखि प्रोहित नै सोख दीनी । ई भाति नरवल को राज करै छै । मारूजी की कूख कवर लिछमण स्यघ जी हुवा । मालवण की कूखि कवर वीरभाण जी हुवा । दोय कवर ढोला जी क हुवा । ढोला जी की मारूजी को श्री महादेव जी की किरपा सु अमर जोडी हुई । लिछमण स्यघ जी कवर सु औलाद कुछाहा की चाली । ढोला सू राजा रामस्यघ जी ताई पीढी एक सोदस हुई । राजाधिराज महाराजा श्री सवाई ईसरीसिंहजी तांडी पीढी एक सौ चार हुई ।।

इति श्री ढोलामारूजी वा राजा नल का विथा की वारता सपूरण । मिती साढ सुदी ८ बुधवार स० १६०० का लिछमणराम चादवाड की पोथी सु उतार लिखित " 'रामगज मे " ।

पत्र ७७ पर कुछ शृंगार रस के कवित्त तथा दोहे हैं । बुधराम तथा रामचरण के कवित्त एव गिरधर की कुडलिया भी हैं ।

२५७६ ढोलामारुणी की वात । पत्र स० ६ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६० । ट भण्डार ।

विशेष—५२ पद्य तक गद्य तथा पद्य मिश्रित हैं । बीच बीच मे दोहे भी दिये गये हैं ।

२५८० णमोकारमत्रकथा । पत्र स० ४२ से ७१ । आ० १२½×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३७ । छ भण्डार ।

विशेष—णमोकार मन्त्र के प्रभाव की कथायें हैं ।

२५८१ त्रिकालचौबीसीकथा (रोटतीजकथा)—प० अभ्रदेव । पत्र सं० २ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८२२ । पूर्ण । वे० स० २६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३०८) की और है ।

२५८२ त्रिकालचौबीसी (रोटतीज) कथा—गुणनन्दि । पत्र स० २ । आ० १०½×४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वे० स० ४८२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १३३७) ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २५४ ङ भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० ६६२, ६६३, ६६४) और है।

२५८३. त्रिलोकसारकथा । पत्र स० १२। आ० १०३×५ इच । भाषा–हिन्दी। विषय–कथा र० काल स० १६२७। ले० काल स० १८५० ज्येष्ठ सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ३८७। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

स० १८५० शाके १७१५ मिती ज्येष्ठ शुक्ला ७ रविदिने लिखायित पं० जी श्री भागचन्दजी साल को पधारया ब्रह्मचारीजी शिवसागरजो चेलान लेबा। दक्षण्याकैर उ भाई कै राडि हुई सूबादार तकूजी भाग्यो राजा जी कं फते हुई। लिखित गुरुजी मेघराज नगरमध्ये।

२५८४ दत्तात्रय । पत्र स० ३६। आ० १३३×६३ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–कथा। र० काल X। ले० काल स० १९१५। पूर्ण। वे० स० ३४१। ज भण्डार।

२५८५ दर्शनकथा—भारामल्ल। पत्र सं० २३। आ० १२×७३ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय कथा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ६८१। अ भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ४१४) क भण्डार मे १ प्रति (वे० स २९३) ङ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३९) च भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ५८६) तथा ज भण्डार मे ३ प्रति (वे० स० २६५, २६६, २६७) और हैं।

२५८६. दर्शनकथाकोश। पत्र स० २२ से ६०। आ० १०३×४३ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय कथा। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ६८। छ भण्डार।

२५८७ दशमूर्खोंकी कथा। पत्र स० ३९। आ० १२×५३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा र० काल X। ले० काल स० १७४६। पूर्ण। वे० स० २९०। ङ भण्डार।

२५८८. दशलक्षणकथा—लोकसेन। पत्र स० १२। आ० ६३×४ इ च। भाषा–सस्कृत। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल स० १८९०। पूर्ण। वे० स० ३५०। अ भण्डार।

विशेष–घ भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० ३७, ३८) और हैं।

२५८९. दशलक्षणकथा। पत्र स० ५। आ० ११×४ इ च। भाषा–सस्कृत। विषय–कथा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३१३। अ भण्डार।

विशेष—ङ भण्डार में १ प्रति (वे० स० ३०२) की और है।

२५९०. दशलक्षणव्रतकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ३। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ३०७। अ भण्डार।

२५६१. दानकथा—भारामल्ल। पत्र स० १८। आ० ११$\frac{3}{4}$X८ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ४१६। अ भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ६७६) क भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३०४) ङ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३०४) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १८०) तथा ज भण्डार मे १ प्रति (वे० स० २६८) और है।

२५६२. दानशीलतपभावनाका चोढाल्या—समयसुन्दरगणि। पत्र सं० ३। आ० १०X४$\frac{1}{2}$ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ८३२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २१७६) की और है। जिस पर केवल दान शील तप भावना ही दिया है।

२५६३ देवराजबच्छराज चौपई—सोमदेवसूरि। पत्र सं० २३। आ० ११X५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ३०७। ङ भण्डार।

२५६४. देवलोकनकथा ···। पत्र स० २ से ५। आ० १२X५$\frac{3}{4}$ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल स० १८५३ कार्तिक सुदी ७। अपूर्ण। वे० स० १६६१। अ भण्डार।

२५६५. द्वादशव्रतकथा—प० अभ्रदेव। पत्र स० ७। आ० ६X५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ३२५। क भण्डार।

विशेष—छ भण्डार मे दो प्रतियां (वे० स० ७३ एक ही वेष्टन) और है।

२५६६. द्वादशव्रतकथासग्रह—ब्रह्मचन्द्रसागर। पत्र स० २२। आ० १२X६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी। र० काल X। ले० काल स० १८५४ बैशाख सुदी ४। पूर्ण। वे० स० ३६६। अ भण्डार।

विशेष—निम्न कथायें और हैं।

मौन एकादशीकथा— ब्र० ज्ञानसागर भाषा— हिन्दी।
श्रुतस्कधव्रतकथा— " " "
कोकिलापचमीकथा— ब्र० हर्ष " हिन्दी र० काल स० १७३६
जिनगुणसपत्तिकथा— ब्र० ज्ञानसागर भाषा— हिन्दी।
रात्रिभोजनकथा— — " "

२५६७ द्वादशव्रतकथा···। पत्र स० ७। आ० १२X५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २००। अ भण्डार।

विशेष—प० अभ्रदेव की रचना के आधार पर इसकी रचना की गई है।

ञ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० १७२, ४३६ तथा ४४०) और हैं।

२५६८. धनदत्त सेठ की कथा ...। पत्र सं० १४। आ० १२½×७½ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल स० १७२५। ले० काल ×। वे० सं० ६८३। अ भण्डार।

२५६६. धन्नाकथानक...। पत्र स० ६। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४७। घ भण्डार।

२६००. धन्नासालिभद्रचौपई...। पत्र सं० २४। आ० ८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६७७। ट भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है। मुगलकालीन कला के ३८ सुन्दर चित्र हैं। २४ से आगे के पत्र नही है। प्रति अधिक प्राचीन नही है।

२६०१. धर्मबुद्धिचौपई—लालचन्द। पत्र स० ३७। आ० ११½×४½ इञ्च। विषय-कथा। भाषा-हिन्दी पद्य। र० काल स० १७३६। ले० काल सं० १८३० भादवा सुदी १। पूर्ण। वे० स० ६०। ख भण्डार।

विशेष—खरतरगच्छपति जिनचन्द्रसूरि के शिष्य विजैराजगरिण ने यह ढाल कही है। (पूर्ण परिचय दिया हुआ है।

२६०२. धर्मबुद्धिपापबुद्धिकथा ...। पत्र स० १२। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८५५। पूर्ण। वे० स० ६१। ख भण्डार।

२६०३. धर्मबुद्धिमन्त्रीकथा—वृन्दावन। पत्र सं० २४। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल स० १८०७। ले० काल स० १६२७ सावण बुदी २। पूर्ण। वे० स० ३३६। क भण्डार।

नंदीश्वरकथा—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ८। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३६२।

विशेष—सागानेर मे ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी।

छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७४) सं० १७८२ की लिखी हुई और है।

२६०५ नंदीश्वरविधानकथा—हरिषेण। पत्र स० १३। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६५। क भण्डार।

२६०६. नंदीश्वरविधानकथा...। पत्र सं० ३। आ० १०½×४½ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १७७३। ट भण्डार।

२६०७. नागमता...। पत्र सं० १०। आ० १२×५½ इच। भाषा-हिन्दी (राजस्थानी)। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३६३। अ भण्डार।

विशेष—आदि अंत भाग निम्न प्रकार है।

श्री नागमता लिख्यते—

नगर हीरापुर पाटण भणीयइ, माहि हर केशरदेव।
नमरिण करइ वर नाम लेई नइं, करइ तुम्हारी सेव ॥१॥

करइ तुम्हारी सेवनइं, वसिगराइ तेडावीया।
काल ककोडनइ तित्यगित्तंयर, अवर वेग वोलावीया ॥२॥

नाद वेद आणंद अधिका, करइ तुम्हारी सेव।
नगर हीरापुर पाटण भणीयइ, माहि हर केशरदेव ॥३॥

राउ देहरासर वइठउ, आणे निरमल नीर।
डक गयउ भागीरथी, समुद्रइ पइलइ तीर ॥४॥

नीर लेई डक मोकल्यउ लागी अति घणवार।
आपं सवारथ पडीउ लोभइ, समुद्रइ पइलेपार ॥५॥

सहस्र अठ्यासी जिहा देवता, जाई तिणवनि पइठउ।
गगा तणउ प्रवाह जु आयउ, राउ देहरा सरवइ छउ ॥६॥

राम मोकल्या छे वाडीयें, आणे सुर ही जाइ।
आणे सुरही पातरी, आणे सुरही भाइ ॥७॥

आणे सुरही भाइ नइ, आणे सुगंधी पातरी।
आकतुल छीनइ पाषची, करि कण वीर सुरातडी ॥८॥

जाइ वेउल करणउ, केवडो राइ मच कुद जु सारी।
पुष्फ करडक भरीनइ, आयो राइमो कल्याछइ बाडी ॥९॥

*। तम—

एक कामिणि अवर वाली, विछोही भरतार।
डक तणइ शिर वरसही, ताल्हण अमी सचारि ॥

ताल्हण अमीय संचारि, मुझ प्रिय मरइ अखूटइ।
भाजि लहरि विष धधालिउ, ताल्ह धवल नइं ऊठइ

रुदन करइ मुख धाह हउ सु सनेहा टाली।
विछोही भरतार एक कामिणि अरु बाली ॥३॥

झाकसुंबा कल वाजही, बहु कासी झमकार।

चंद्र रोहिणी जिम मिलिउं, तिम धण मिली भरतार नइ ।।

तित्थ गिराणउ तूठउ बोलइ, अमीयविष गयउ छडी ।

डक तणइ शिर वूठउ, उठिउ नाह हुई मन संती ।।

मूंध मंगलक छाजइ, '.................... ।

बहु कासी भमकार डाक छंडा कल वाजइ ।।

इति श्री नागमता संपूर्णम् । ग्रन्थाग्रन्थ ३००७

पोथी आ० मेरुकीर्त्ति जी की ।। कथा के रूप में है । प्रति अशुद्ध लिखी हुई है ।

२६०८. नागश्रीकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र स० १६ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८२३ चैत्र सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३६७) तथा ज भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १०८) की और है ।

ज भण्डार वाली प्रति की गरूढमलजी गोधा ने मालपुरा मे प्रतिलिपि की थी।

२६०९. नागश्रीकथा—किशनसिंह । पत्र स० २ ७५ । आ० ७½×६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १७७३ सावण सुदी ६ । ले० काल स० १७८५ पौष बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३५६ । छ भण्डार ।

विशेष—जोबनेर मे सोनपाल ने प्रतिलिपि की थी । ३६ पत्र से आगे भद्रबाहु चरित्र हिन्दी मे है किन्तु अपूर्ण है ।

२६१०. नि शल्याष्टमीकथा...... । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० २११७ । अ भण्डार ।

२६११. निशिभोजनकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र सं० ४० से ५५ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८७ । अ भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ९८) की और है जिसकी कि स० १८०१ मे महाराजा ईश्वर सिंहजी के शासनकाल मे जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२६१२. निशिभोजनकथा...... । पत्र स० २१ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । क भण्डार ।

२६१३. नेमिब्याहलो...... । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२५५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

नरसरीपुरी राजियाहु समदविजय राय थारो।
तस नदन श्री नेमजी हु सावल वरण सरीरो ।।
धन धन श्रदे छौ ज्यो तेव राजसदरसण करता।
दालदरनासै जीनमो सो सोरजी हु हुतो ।।
समदवजजी रो नंद श्रतेरो ले श्रावण जी ।
हुतो सावली हु श्री रो नमे कल्याण सु पावणो जी ।।

प्रति श्रशुद्ध एव जीर्ण है।

२६१४. नेमिराजलव्याहलो—गोपीकृष्ण। पत्र स० ६ । श्रा० १०×४½ इश्च । भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल स० १८६३ प्र० सावण बुदी ४। ले० काल ×। श्रपूर्ण। वे० स० २२५०। श्र भण्डार।

प्रारम्भ—

श्री जिरण चरण कमल नमो नमो श्रणगार।
नेमनाथ र ढाल तणे व्याहव थहु सुखदाय ।।
द्वारामती नगरी भली सोरठ देस मझार।
इन्द्रपुरी सी ऊपमा सुदर बहु विस्तार ।।
चौडा नो जोजण तिहा लावा बारा जाण।
साठि कोठि घर माहि रे बाहर थहत्तर प्रमाण ।।२।।

श्रन्तिम—

राजल नेम तणो व्याहलो जी गावसी जो नरनारी।
भण गुण सुणसी भलो जी पावसी सुख श्रपार ।।

कलश— प्रथम सावण चोथ सुकली वार मगलवार ए।
संवत् श्रठारा वरस तरेसठि माग कुल मुझार ए।
श्री नेम राजल क्रसन गोपी तास चरत वखानइ।
सुतार सीखा ताहि ताहि भाखी कही कथा प्रमाण ए ।।

इति श्री नेम राजल विवाहलो सपूर्ण।

इससे श्रागे नव भव की ढाल दी है वह श्रपूर्ण है।

२६१५. पचाख्यान—विष्णु शर्मा। पत्र स० १ । श्रा० १२½×५½ इश्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। श्रपूर्ण। वे० स० २००६। श्र भण्डार।

विशेष—केवल ६३वा पत्र है। ङ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ४०१) श्रपूर्ण श्रौर है।

२६१६ परसरामकथा" । पत्र स० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०१७ । अ भण्डार ।

२६१७ पल्यविधानकथा—खुशालचन्द । पत्र सं० २१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल स० १७८७ फागुन बुदी १० । पूर्ण । वे० स० २० । झ भण्डार ।

२६१८ पल्यविधानव्रतोपाख्यानकथा—श्रुतसागर । पत्र स० ११७ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५४ । क भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०६) तथा ज भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ८३) जिसका ले० काल स० १६१७ शाके है और है ।

२६१९ पात्रदानकथा—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र स० ५ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७८ । अ भण्डार ।

विशेष—आमेर मे प० मनोहरलालजी पाटनी ने लिखी थी ।

२६२० पुण्याश्रवकथाकोश—मुमुक्षु रामचन्द्र । पत्र स० २०० । आ० ११×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४६८ । क भण्डार ।

विशेष—ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४६७) तथा छ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६६, ७०) और हैं किन्तु तीनो ही अपूर्ण हैं ।

२६२१. पुण्याश्रवकथाकोश—दौलतराम । पत्र स० २४८ । आ० ११$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र० काल स० १७७७ भादवा सुदी ५ । ले० काल स० १७८८ मगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ३७० । अ भण्डार ।

विशेष—अहमदाबाद मे श्री अभयसेन ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० ४३३, ४०६, ८६५, ८६६, ८६७) तथा ङ भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० स० ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६८, ४६९) तथा च भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ६३५) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १७७) ज भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १३) झ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० २६८) तथा ट भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १९४६) और है ।

२६२२ पुण्याश्रवकथाकोश' । पत्र स० ९४ । आ० १६×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १८ । पूर्ण । वे० स० ५८ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि खुशालचन्द के पुत्र सोनपाल से कराकर चौधरियो के मदिर मे चढाई ।

इसके अतिरिक्त ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४६२) तथा ज भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २६०) [अपूर्ण] और हैं ।

२६२३ पुण्याश्रवकथाकोश—टेकचन्द । पत्र स० ३४१ । श्रा० ११½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल स० १८२८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४६७ । क भण्डार ।

२६२४ पुण्याश्रवकथाकोश की सूची ...... । पत्र स० ४ । श्रा० ६½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४६ । झ भण्डार ।

२६२५ पुष्पाजलीव्रतकथा—श्रुतकीर्त्ति । पत्र स० ५ । श्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५६ । श्र भण्डार ।

विशेष—ग भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५६) और है ।

२६२६ पुष्पाजलीव्रतकथा—जिनदास । पत्र स० ३१ । श्रा० १०½×८½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १६७७ फागुण बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ४७४ । क भण्डार ।

विशेष—यह प्रति वागड देश स्थित घाटसल नगर मे श्री वासुपूज्य चैत्यालय मे ब्रह्म ठाकरसी के शिष्य गणदास ने लिखी थी ।

२६२७ पुष्पाजलीव्रतविधानकथा । पत्र स० ६ से १० । श्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२१ । च भण्डार ।

२६२८ पुष्पाजलीव्रतकथा—खुशालचन्द । पत्र स० ६ । श्रा० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १६४२ कार्त्तिक बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ३०० । ख भण्डार ।

विशेष—ज भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०६) की और है जिसे महात्मा जोशी पन्नालाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२६२६. वैतालपच्चीसी । पत्र स० ५५ । श्रा० ८¾×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २५० । च भण्डार ।

२६३० भक्तामरस्तोत्रकथा—नथमल । पत्र स० ८६ । श्रा० १०¾×५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १८२६ । ले० काल स० १८५६ फाल्गुण बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २५५ । ङ भण्डार ।

विशेष—च भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७३१) और है ।

२६३१ भक्तामरस्तोत्रकथा—विनोदीलाल । पत्र स० १५७ । श्रा० १२¾×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल स० १७४७ सावन सुदी २ । ले० काल स० १६४६ । अपूर्ण । वे० स० २२०१ । श्र भण्डार ।

विशेष—बीच का केवल एक पत्र कम है ।

इसके अतिरिक्त ङ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ५५३, ५५४) छ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १८१, २२८) तथा झ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १२६) की और हैं ।

२६३२. भक्तामरस्तोत्रकथा—पन्नालाल चौधरी। पत्र स० १२८। आ० १३×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल स० १९३१ फागुण सुदी ४। ले० काल स० १९३८। पूर्ण। वे० सं० ५४०। क भण्डार।

२६३३ भोजप्रबन्ध ··· । पत्र स० १२ से २५। आ० ११३/४×४३/४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १२५६। अ भण्डार।

विशेष—ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५७६) की और है।

२६३४ मधुकैटभवध (महिषासुरवध) · । पत्र सं० २३। आ० ८१/२×४१/२ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १३५३। अ भण्डार।

२६३५. मधुमालतीकथा—चतुर्भुजदास। पत्र स० ४८। आ० ९×६१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १९२८ फागुण बुदी १२। पूर्ण। वे० स० ५८०। ङ भण्डार।

विशेष—पद्य स० ९२८। सरदारमल गोधा ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। अन्त के ५ पत्रो मे स्तुति दी हुई है। इसी भण्डार मे १ प्रति [अपूर्ण] (वे० स० ५८१) तथा १ प्रति (वे० स० ५८२) की [पूर्ण] और है।

२६३६. मृगापुत्रचउढाला । पत्र स० १। आ० ९३/४×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८३७। अ भण्डार।

विशेष—मृगारानी के पुत्र का चौढाला है।

२६३७ माधवानलकथा—आनन्द। पत्र स० २ से १०। आ० ११×४३/४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १८०९। ट भण्डार।

२६३८ मानतुगमानवतिचौपई—मोहनविजय। पत्र स० २६। आ० १०×४३/४ इञ्च। भाषा हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १८५१ कार्त्तिक सुदी ९। पूर्ण। वे० स० ५३। छ भण्डार।

विशेष—आदि अ तभाग निम्न प्रकार है-

आदि—

ऋषभ जिणद पदाबुजै, मधुकर करी लीन।
आगम गुण सोइसवर, अति आरद थी लीन॥१॥

यान पान सम जिनकम, तारण भवनिधि तोय।
आप तर्या तारै अवर, तेहनै प्रणपति होइ॥२॥

भावै प्रणमु भारती, वरदाता सुविलास।
बावन अख्यर की भरयौ, अखय खजानो जास॥३॥

शुक्र करया केई शनि वक्र, एह वीजे इनी शक्ति ।

किम मू काइ तेहना, पद नीको विषे भक्ति ॥४॥

अन्तिम— पूर्ण काय मुनीचद्र मुप वर्ष, बुद्धि मास सुचि पखे है । (आगे पत्र फटा हुआ है) ४७ ढाल है।

२६३६. मुक्तावलिव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र स० ४ । आ० ११X५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल X । ले० काल स० १८७३ पौष बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ७८ । छ भण्डार ।

विशेष—यति दयाचद ने प्रतिलिपि की थी ।

२६४० मुक्तावलिव्रतकथा—सोमप्रभ । पत्र स० ११ । आ० १०३/४X४३/४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल X । ले० काल स० १८५५ सावन सुदी २ । वे० स० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे नेमिनाथ चैत्यालय मे कानूलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२६४१ मुक्तावलिविधानकथा । पत्र स० ६ से ११ । आ० १०X४३/४ इच । भाषा-अपभ्रश । विषय-कथा । र० काल X । ले० काल स० १५४१ फाल्गुन सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० १६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—सवत् १५४१ वर्षे फाल्गुन सुदी ५ श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदाकुदाचार्यान्वये भट्टारिक श्रीपद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारिक श्रीशुभचद्रदेवा तत्सिष्य मुनि जिनचन्द्रदेवा खडेलवालान्वये भावसागोत्रे सघवी खेता भार्या होली तत्पुत्रा सघवी चाहड, आसल, कालू, जालप, लखमण तेषा मध्ये सघवी कालू भार्या कौलसिरी तत्पुत्रा हेमराज रिषभदास तैने रौ साह हेमराज भार्या हिमसिरी एत रिद रोहिणीमुक्तावलीकथानक लिखापत ।

२६४२. मेघमालाव्रतोद्यापनकथा । पत्र स० ११ । आ० १२X६३/४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ८१ । घ भण्डार ।

विशेष—च भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २७६) और है ।

२६४३ मेघमालाव्रतकथा । पत्र स० ५ । आ० ११X५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३०६ । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७४) की और हैं ।

२६४४ मेघमालाव्रतकथा—खुशालचद । पत्र स० ५ । आ० १०१/२X४१/२ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ५८१ । क भण्डार ।

२६४५ मौनिव्रतकथा—गुणभद्र । पत्र स० ५ । आ० १२X५३/४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ४४१ । व्य भण्डार ।

२६४६. मौनिव्रतकथा" । पत्र स० १२ । आ० ११३/४X५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ८२। घ भण्डार।

२६४७. यमपालमातगकीकथा · "। पत्र स० २६। आ० १०X५ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल X; ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १५१। ख भण्डार।

विशेष—इस कथा से पूर्व पत्र १ से ६ तक पद्मरथ राजा दृष्टात कथा तथा पत्र १० से १६ तक पच नमस्कार कथा दी हुई है। कही २ हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है। कथायें कथाकोश मे से ली गई हैं।

२६४८ रक्षाबंधनकथा—नाथूराम। पत्र स० १२। आ० १२३/४X८ इच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ६६१। अ भण्डार।

२६४९. रक्षाबन्धनकथा · "। पत्र स० १। आ० १०३/४X५ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल स १८३५ सावन सुदी २। वे० स० ७३। छ भण्डार।

२६५० रत्नत्रयगुणकथा—प० शिवजीलाल। पत्र सं० १०। आ० ११३/४X५३/४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २७२। अ भण्डार।

विशेष—ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १५७) और है।

२६५१. रत्नत्रयविधानकथा—श्रुतसागर। पत्र स० ४। आ० ११३/४X६ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल स० १६०४ श्रावण बुदी १४। पूर्ण। वे० स० ६५२। ङ भण्डार।

विशेष—छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७३) और है।

२६५२ रत्नावलिव्रतकथा—जोशी रामदास। पत्र स० ४। आ० ११X४१/२ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल स० १६६६। पूर्ण। वे० सं० ६३४। क भण्डार।

२६५३. रविव्रतकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० १८। आ० ६१/२X६ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ३६। ज भण्डार।

२६५४ रविव्रतकथा—देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र स० १८। आ० ६X३ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल स० १७८५ ज्येष्ठ सुदी ६। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २४०। छ भण्डार।

२६५५. रविव्रतकथा—भाऊकवि। पत्र स० १०। आ० ६३/४X६३/४ इच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल X। ले० काल स० १७६५। पूर्ण। वे० स० ६६०। अ भण्डार।

विशेष—छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७४), ज भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४१), झ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ११३) तथा ट भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १७५०) और है।

२६५६. राठौडरतनमहेशदशोत्तरी ···। पत्र स० ३ से ८। आ० ९३×४ इच। भाषा-हिन्दी [राजस्थानी] विषय-कथा। र० काल स० १५१३ वैशाख शुक्ला ९। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ९७७। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

दाहा—

सावित्रीउमया श्रीया आगै साम्ही आई।
सुदर सोचने, इदिर लइ बघाइ ॥१॥

हूया धवलि मगल हरप वधीया नेह नवल।
सूर रतन सतीया सरीस, मिलीया जाइ महल्ल ॥२॥

श्री सुरनर फुरउधरे, वैकुठ कीधावास।
राजा रयणायरतणी, जुग अविचल जस वास ॥३॥

पख वैशाखह तिथि नवमी पनरौतरे वरस्स।
वार शुकल डीयाविहद, हीदू तुरक वहस्स ॥४॥

जोडि भणै खिडीयौ जगै, रासो रतन रसाल।
सूरा पूरा सभलउ, भउ मोटा भूपाल ॥५॥

दिली राउ वाका उजेणी रासा का च्यार तुगर हिसी कपि बात कैसी॥ इति श्री राठौडरतन महेस दासौत्तसरी वचनिका सपूर्ण।

२६५७ रात्रिभोजनकथा—भारामल्ल। पत्र स० ८। आ० ११½×८ इच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४१५। अ भण्डार।

२६५८ प्रति स० २। पत्र स० १२। ले० काल ×। वे० स० ६०९। च भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम निशिभोजन कथा भी है।

२६५९ रात्रिभोजनकथा—किशनसिंह। पत्र स० २४। आ० १३×५ इच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल स० १७७३ श्रावण सुदी ६। ले० काल स० १९२८ भादवा बुदी ५। पूर्ण। वे० स० ६३५। क भण्डार।

विशेष—ग भण्डार मे १ प्रति और है जिसका ले० काल सं० १८८३ है। कालूराम साह ने प्रतिलिपि कराई थी।

२६६० रात्रिभोजनकथा ···। पत्र स० ४। आ० १०½×५ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २९९। ख भण्डार।

विशेष—ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १९१) और है।

२६६१ रात्रिभोजनचौपई······। पत्र सं० २। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८३१। अ भण्डार।

२६६२ रूपसेनचरित्र ·····। पत्र स० १७। आ० १०×४½ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६०। ङ भण्डार।

२६६३ रैदव्रतकथा—देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ६। आ० १०×५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१२। अ भण्डार।

२६६४ प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल सं० १८३५ ज्येष्ठ बुदी ६। वे० स० ७४। छ भण्डार।

विशेष—लश्कर (जयपुर) के मन्दिर मे केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १८५७) तथा ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६६१) की और हैं।

२६६५. रैदव्रतकथा·····। पत्र सं० ४। आ० ११×४½ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६३६। क भण्डार।

विशेष—व्य भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३६५) की है जिसका ले० काल सं० १७८५ आसोज सुदी ४ है।

२६६६ रोहिणीव्रतकथा—आचार्य भानुकीर्त्ति। पत्र स० १। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १८८८ जेष्ठ सुदी ६। वे० सं० ६०८। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५६७) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७४) तथा ज भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १७२) और है।

२६६७. रोहिणीव्रतकथा····। पत्र सं० २। आ० ११×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६६२। अ भण्डार।

विशेष—ङ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ६६७) तथा झ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ६५) जिसका ले० काल सं० १६१७ वैशाख सुदी ३ और हैं।

२६६८. लब्धिविधानकथा—प० अभ्रदेव। पत्र स० ६। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०७ भादवा सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ३१७। च भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति का सक्षिप्त निम्न प्रकार है—

संवत् १६०७ वर्षे भादवा सुदी १४ सोमवासरे श्री आदिनाथचैत्यालये तक्षकगढमहादुर्गे महाराउ

श्रीरामचंदराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकु दाचार्यान्वये ''' 'मंडलाचार्य धर्मचन्द्राम्नाये खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे सा. पद्मा तद्भार्या केलमदे'''' ''' सा. कालू इद कथा मडलाचार्य धर्मचन्द्राय दत्त ।

२६६६. रोहिणीविधानकथा ''' | पत्र स० ८ | आ० १०X४३ इञ्च | भाषा–सस्कृत । विषय–कथा। र० काल X । ले० काल X | पूर्ण | वे० स० ३०६ । च भण्डार ।

२६७०. लोकप्रत्याख्यानधमिलकथा | पत्र स० ७ । आ० १०X५ इ च | भाषा–सस्कृत | विषय-कथा । ले० काल X । र० काल X | पूर्ण । वे० स० १८५० | अ भण्डार ।

विशेष—श्लोक स० २४३ हैं। प्रति प्राचीन है।

२६७१. वारिषेणमुनिकथा—जोधराजगोदीका । पत्र स० ५ । आ० ६X५ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा । र० काल X । ले० काल स० १७६६ । पूर्ण | वे० स० ६७४ | ङ भण्डार ।

विशेष—चूहामल विलाला ने प्रतिलिपि की गयी थी ।

२६७२ विक्रमचौबोलीचौपई—अभयचन्दसूरि । पत्र सं० १३ | आ० ६X४३ इ च | भाषा-हिन्दी | विषय–कथा | र० काल स० १७२४ आषाढ वुदी १० | ले० काल X । पूर्ण। वे० स० १६२१ । ट भण्डार ।

विशेष—मतिसुन्दर के लिए ग्रन्थ की रचना की थी ।

२६७३ विष्णुकुमारमुनिकथा—श्रुतसागर । पत्र स० ५ । आ० ११X५ इंच। भाषा–सस्कृत। विषय–कथा । र० काल X | ले० काल X | पूर्ण । वे० स० ३१० | अ भण्डार ।

२६७४ विष्णुकुमारमुनिकथा | पत्र स० ५ | आ० १०X४३ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय-कथा । र० काल X | ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १७५ । ख भण्डार |

२६७५ वैदरभीविवाह—पेमराज । पत्र स० ६ । आ० १०X४३ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा | र० काल X । ले० काल X | पूर्ण । वे० स० २२५४ । अ भण्डार |

विशेष—आदि अन्तभाग निम्न प्रकार है—

दोहा—

जिण धरम माही दीपता करो धरम सुरग ।
सो राधा राजा राणेइ ढाल भवहु रग ॥१॥
रग चिणरत्य न भावसी किंवता करो विचार ।
पढता सवि सुख सपजे हुरस भान हानइ भाव ॥
सुख माभणे हो रग महल ने निस भार पोढी सेजजी ।
'दोष भनता उफण्या जाणेनदार विछोराछ मेहजी ॥

अन्तिम— कवनाथ सुजाण छै वैदरभी वेस्नार ।
सुख अनंता भोगिया बेले हुवा अणगार ।।
दान देई चारित लीयौ होवा तो जय जयकार ।
पेमराज गुरु इम भणी, मुकत गया तत्काल ।।
मणै गुणै जे साभली वैदरभी तणो विवाह ।
भएगा तास वे सुख सपजे पहुत्या मुकत मभार ।
इति वैदरभी विवाह सपूर्ण ।।

ग्रन्थ जीर्ण है । इसमे काफी ढालें लिखी हुई हैं ।

२६७६ व्रतकथाकोश—श्रुतसागर । पत्र सं० ७९ । आ० १२×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७८ । अ भण्डार ।

२६७७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ९० । ले० काल सं० १६४७ कार्त्तिक सुदी ३ । वे० स० ६७ । छ भण्डार ।

प्रशस्ति—सवत् १६४७ वर्षे कार्त्तिक सुदि ३ बुधवारे इद पुस्तक लिखायतं श्रीमद्काष्ठासघे नदीतरगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमे भट्टारक श्रीसोमकीर्त्ति तत्पट्टे भ० यश कीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्रीउदयसेन तत्पट्टोधारणधीर भ० श्रीत्रिभुवनकीर्त्ति तत्शिष्य ब्रह्मचारि श्री नरवत इद पुस्तिका लिखापितं खडेलवालज्ञातीय कासलीवाल गोत्रे साह केशव भार्या लाडी तत्पुत्र ६ वृहद पुत्र जीनो भार्या जमनादे । द्वि० पुत्र खेमसी तस्य भार्या खेमलदे तृ० पुत्र डसर तस्य भार्या अहकारदे, चतुर्थ पुत्र नानू तस्य भार्या नायकदे, पंचम पुत्र साह वाला तस्य भार्या वालमदे, षष्ठ पुत्र लाला तस्य भार्या ललतादे, तेषामध्ये साह वालेन इद पुस्तक कथाकोशनामधेयं ब्रह्म श्री नर्वदावै ज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थ लिखाप्य प्रदत्त । लेखक लषमन श्वेताबर ।

सवत् १७४१ वर्षे माह्य सुदि ५ सोमवासरे भट्टारक श्री ५ विश्वसेन तस्य शिष्य मंडलाचार्य श्री ३ जयकीर्त्ति प० दीपचद प० मयाचंद युक्तै । ,

२६७८ प्रति सं० ३ । पत्र स० ७३ से १२९ । ले० काल १५८६ कार्त्तिक सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

२६७९. प्रति स० ४ । पत्र स० ८० । ले० काल सं० १७९५ फागुण बुदी ९ । वे० सं० ६३ । छ भण्डार ।

इनके अतिरिक्त क भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६७५, ६७६) ड भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ६८८) तथा ट भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २० ७३, २१००) और हैं ।

२६८०. व्रतकथाकोश—पं० दामोदर । पत्र सं० ९ । आ० १२×६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७३ । क भण्डार ।

२६८१. व्रतकथाकोश—सकलकीर्त्ति। पत्र स० १६४। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ८७६। अ भण्डार।

विशेष—छ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ७२) की और है जिसका ले० काल स० १८६६ सावन बुदी ५ है। श्वेताम्बर पृथ्वीराज ने उदयपुर मे जिसकी प्रतिलिपि की थी।

२६८२ व्रतकथाकोश—देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ८६। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ८७७। अ भण्डार।

विशेष—बीच के अनेक पत्र नही हैं। कुछ कथायें पं० दामोदर की भी हैं। क भण्डार मे १ अपूर्ण प्रति (वे० स० ६७४) और है।

२६८३ व्रतकथाकोश ···। पत्र सं० ३ से १०० । आ० ११×५३ इ च। भाषा-सस्कृत अपभ्रंश। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १६०६ फागुण बुदी ११। अपूर्ण। वे० स० ८७६। अ भण्डार।

विशेष—बीच के २२ से २५ तथा ६५ से ६६ तक के भी पत्र नही हैं। निम्न कथाओ का सग्रह है—

१ पुष्पाजलिविधान कथा। सस्कृत पत्र ३ से ५
२. श्रवणद्वादशीकथा—चन्द्रभूषण के शिष्य पं० अभ्रदेव ,, ,, ५ से ८

अन्तिम—चद्रभूषणशिष्येण कथेय पापहारिणी।
सस्कृता पडिताभ्रेण कृता प्राकृत सूत्रत ॥

३ रत्नत्रयविधानकथा—पं० रत्नकीर्त्ति ···· सस्कृत गद्य पत्र ८ से ११
४. षोडशकारणकथा—पं० अभ्रदेव · ,, पद्य ,, ११ से १४
५. जिनरात्रिविधानकथा। ··· ,, ,, १४ से २६
२६३ पद्य हैं।
६ मेघमालाव्रतकथा। · ,, गद्य ,, २६ से ३१
७ दशलाक्षणिककथा—लोकसेन। ··· ,, ,, ,, ३१ से ३५
८ सुगधदशमीव्रतकथा। ··· ,, ,, ,, ३५ से ४०
६ त्रिकालचउवीसीकथा—अभ्रदेव। ,, पद्य ,, ४० से ४३
१० रत्नत्रयविधि—आशाधर · ,, गद्य ,, ४३ से ५१

प्रारम्भ— श्रीवर्द्ध मानमानम्य गौतमादींश्चसद्गुरून्।
रत्नत्रयविधि वक्ष्ये यथाम्नायविशुद्धये ॥१॥

अन्तिम प्रशस्ति— साधो मडितवागवशसुगणे सज्जैनचूडामणे।
मालाख्यस्यसुत प्रतीतमहिमा श्रीनागदेवोऽभवत् ॥१॥

य शुक्लादिपदेषु मालवपते आत्रातियुक्तं शिवं ।
श्रीसल्लक्षणयास्वमाश्रितवस का प्रापयन्न श्रिय ।।२।।

श्रीमत्केशवसेनार्यवर्यवाक्यादुपेयुषा ।
पाक्षिकश्रावकीभाव तेन मालवमडले ।।

सल्लक्षणपुरे तिष्ठन् गृहस्थाचार्यकुजर ।
पंडिताशाधरो भक्त्या विज्ञप्त' सम्यगेकदा ।।३।।

प्रायेण राजकार्येऽवरुद्धर्म्माश्रितस्य मे ।
भाद्र' किंचिदनुष्टेय व्रतमादिश्यतामिति ।।४।।

ततस्तेन समीक्षो वै परमागमविस्तर ।
उपविष्टसतामिष्टस्तस्याय विधिसत्तम ।।५।।

तेनान्यैश्च यथाशक्तिर्भवभीतैरनुष्ठित ।
ग्र थो बुधाशाधारेण सद्धर्म्मार्थमथो कृत: ।।६।।

विक्रमार्कव्यशीत्यग्रद्वादशाब्दशतात्यये (८३ १२) ।
दशम्यापश्चिमे कृष्णे प्रथता कथा ।।७।।

पत्नी श्रीनागदेवस्य नद्याद्धर्म्मेण नायिका ।
यासीद्रत्नत्रयविधि चरतीना पुरस्मरी ।।८।।

इत्याशाधरविरचिता रत्नत्रयविधि समाप्त ।।

११	पुरदरविधानकथा''''।	सस्कृत पद्य	५१ से ५४
१२	रत्नात्रिधानकथा''''' '।	गद्य	५४ से ५६
१३.	दशलक्षणजयमाल—रइधू।	अपभ्र श	५६ से ५८
१४	पल्यविधानकथा ' ''।	संस्कृत पद्य	५८ से ६३
१५	अनथमीव्रतकथा—पं० हरिचंद्र।	अपभ्र श	६३ से ६६

अगरवाल वरवसि उप्पण्णइ हरियदेण ।
भत्तिए जिणुयणपणवेवि पयडिउ पद्धडियाछदेण ।।१६।।

१६.	चदनषष्ठीकथा—	"	"	६६ से ७१
१७.	मुखावलोकनकथा	—	सस्कृत	७१ से ७५
१८	रोहिणीचरित्र—	देवनंदि	अपभ्र श	७६ से ८१
१९.	रोहिणीविधानकथा—	"	"	८१ से ८५

२०.	अक्षयनिधिविधानकथा —	सस्कृत	८५ से ८८	
२१.	मुकुटसप्तमीकथा—पं० अभ्रदेव	„	८८ से ८६	
२२.	मौनव्रतविधान—रत्नकीर्त्ति	सस्कृत गद्य	६० से ६४	
२३	रुक्मणिविधानकथा—छत्रसेन	सस्कृत पद्य	१००	[अपूर्ण]

सवत् १६०६ वर्षे फाल्गुण वदि १ सोमवासरे श्रीमूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये ' ।

२६८४. व्रतकथाकोश ' ' । पत्र स० १५२ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२ । छ भण्डार ।

२६८५ व्रतकथाकोश—खुशालचद । पत्र स० ८६ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १७८७ फागुन वुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६७ । अ भण्डार ।

विशेष—१८ कथायें हैं ।

इसके अतिरिक्त घ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६१) ङ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ६८६) तथा छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १७८) और हैं ।

२६८६ व्रतकथाकोश'''' । पत्र स० ५० । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८३५ । ट भण्डार ।

विशेष—निम्न कथाओ का सग्रह है—

नाम	कर्त्ता	विशेष
ज्येष्ठजिनवरव्रतकथा—	खुशालचद	र० काल स० १७८२
आदित्यवारकथा—	भाऊ कवि	×
लघुरविव्रतकथा—	ब्र० ज्ञानसागर	—
सप्तपरमस्थानव्रतकथा—	खुशालचन्द	—
मुकुटसप्तमीकथा—	„	र० काल स० १७८३
अक्षयनिधिव्रतकथा—	„	—
षोडशकारणव्रतकथा—	„	—
मेघमालाव्रतकथा—	„	—
चन्दनषष्ठीव्रतकथा—	„	—
लब्धिविधानकथा—	„	—
जिनपूजापुरदरकथा—	„	—
दश''' क्षणकथा—	„	—

नाम	कर्त्ता	विशेष
पुष्पांजलिव्रतकथा—	खुशालचन्द	—
आकाशपंचमीकथा—	"	र० काल सं० १७८५
मुक्तावलीव्रतकथा—	"	—

पृष्ठ ३६ से ५० तक दीमक लगी हुई है।

२६८७. व्रतकथासग्रह...... । पत्र सं० ६ से ६० । आ० ११३/४×५१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३९ । ट भण्डार ।

विशेष—६० से आगे भी पत्र नहीं हैं।

२६८८. व्रतकथासग्रह ... । पत्र स० १२३ । आ० १२×४३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत अपभ्रंश । विषय–ा । र० काल × । ले० काल स० १५१६ सावण बुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ११० । व्य भण्डार ।

विशेष—निम्न कथाओ का सग्रह है।

नाम	कर्त्ता	भाषा	विशेष
सुगन्धदशमीव्रतकथा	।	अपभ्रंश	—
अनन्तव्रतकथा	..।	"	—
रोहिणीव्रतकथा—	×	"	—
निर्दोषसप्तमीकथा—	×	"	—
दुधारसविधानकथा—	मुनिविनयचंद ।	"	—
सुखसपत्तिविधानकथा—	विमलकीर्त्ति ।	"	—
निर्झरपञ्चमीविधानकथा—	विनयचंद्र ।	"	—
पुष्पांजलिविधानकथा—	पं० हरिश्चन्द्र ।	"	—
श्रवणद्वादशीकथा—	पं० अभ्रदेव ।	"	—
षोडशकारणविधानकथा—	"	"	—
श्रुतस्कधविधानकथा—	"	"	—
रुक्मिणीविधानकथा—	छत्रसेन ।	"	—

प्रारम्भ— जिनं प्रणम्य नेमीशं संसारार्णवतारकं ।
रुक्मिणिचरितं वक्ष्ये भव्याना बोधकारणं ॥

अन्तिम पुष्पिका— इति छत्रसेन विरचिता नरदेव कारापिता रुक्मिणि विधानकथा समाप्तं ।

पल्यविधानकथा—	×	—	संस्कृत	—
दशलक्षणविधानकथा—	लोकसेन	—	"	—
चन्दनषष्ठीविधानकथा—	×	—	अपभ्रंश	—
जिनरात्रिविधानकथा—	×	—	"	—
जिनपूजापुरंदरविधानकथा—	अमरकीर्त्ति	—	"	—
त्रिचतुर्विंशतिविधान—	×	—	संस्कृत	—
जिनमुखावलोकनकथा—	×	—	"	—
शीलविधानकथा—	×	—	"	—
अक्षयविधानकथा—	×	—	"	—
सुखसंपत्तिविधानकथा—	×	—	"	—

लेखक प्रशस्ति—संवत् १५१६ वर्षे श्रावण बुदी १५ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ० श्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा। भट्टारक श्रीपद्मनंदि शिष्य मुनि मदनकीर्त्ति शिष्य ब्र० नरसिंह निमित्तं। खंडेलवालान्वये दोसीगोत्रे संघी राजा भार्या देउ सुपुत्र छीछा भार्या गणीपुत्र कातुं पदमा धर्मा ज्ञाना कर्मक्षयार्थं इदं शास्त्रं लिखाप्य ज्ञान पात्रायदत्तं।

२६८६. व्रतकथासंग्रह""""। पत्र सं० ८८। आ० १२×७३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०१। क भण्डार।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है।

द्वादशव्रतकथा—	प० अभ्रदेव।	संस्कृत	—
कवलचन्द्रायणव्रतकथा—		"	—
चन्दनषष्ठीव्रतकथा—	खुशालचन्द।	हिन्दी	—
नंदीश्वरव्रतकथा—		संस्कृत	—
जिनगुणसंपत्तिकथा—		"	—
होली की कथा—	छीतर ठोलिया	हिन्दी	—
रैदव्रतकथा—	ब्र० जिनदास	"	—
रत्नावलिव्रतकथा—	गुणनंदि	"	—

२६९०. व्रतकथासंग्रह—ब्र० महतिसागर। पत्र सं० २७। आ० १०×४३। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७७। क भण्डार।

२६६१ व्रतकथासंग्रह ...। पत्र सं० ४। आ० ८×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०
ल ×। पूर्ण। वे० स० ६७२। क भण्डार।

विशेष—रविव्रत कथा, अष्टाह्निकाव्रतकथा, षोडशकारणव्रतकथा, दशलक्षणव्रतकथा इनका संग्रह है षोडश-
ारणव्रतकथा गुजराती मे है।

२६६२. व्रतकथासग्रह ...। पत्र स० २२ से १०४। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-
था। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६७८। क भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नही है।

२६६३. षोडशकारणविधानकथा—प० अभ्रदेव। पत्र स० २६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-
स्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १६६० भादवा सुदी ५। वे० स० ७३२। क भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त आकाश पचमी, रुक्मिणीकथा एव अनतव्रतकथा के कर्त्ता का नाम प० मदनकीर्त्ति
। ट भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २०२६) और है।

२६६४ शिवरात्रिउद्यापनविधिकथा—शकरभट्ट। पत्र स० २२। आ० ६×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत।
षय-कथा (जैनेतर)। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १४७२। अ भण्डार।

विशेष—३२ से आगे पत्र नही हैं। स्कधपुराण मे से है।

२६६५ शीलकथा—भारामल्ल। पत्र स० ३०। आ० १२×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। र०
ाल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४१३। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ६६६, ११९६), क भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६६२)
 भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १००), ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७०८), छ भण्डार मे एक प्रति (वे०
० १८०), ज भण्डार मे एक प्रति (ले ० स० १६६७) और है।

२६६६ शीलोपदेशमाला—मेरुसुन्दरगणि। पत्र सं० १३१। आ० ६×४ इ च। भाषा-गुजराती
लिपि हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६७। छ भण्डार।

विशेष—४३वी कथा (धनश्री तक प्रति पूर्ण है)।

२६६७ शुकसप्तति ...। पत्र स० ६४। आ० ६½×४½ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र०
काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४५। च भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२६६८ श्रावणद्वादशीउपाख्यान ...। पत्र स० ३। आ० १०½×५½ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-
था (जैनेतर)। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८८०। अ भण्डार।

२६९९. श्रावणद्वादशीकथा ..... । पत्र स० ६८ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत गद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७११ । ड भण्डार ।

२७००. श्रीपालकथा .... । पत्र स० २७ । आ० ११×७३ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल स० १९२६ वैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ७१३ । ड भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७१४) और है ।

२७०१ श्रेणिकचौपई—डू गा वैद । पत्र स० १४ । आ० ६३×४३ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल स० १८२६ । पूर्ण । वे० स० ७९४ । अ भण्डार ।

विशेष—कवि मालपुरा के रहने वाले थे ।

अथ श्रेणिक चौपई लीखते—

आदिनाथ वदौ जगदीस । जाहि चरित थे होई जगीस ॥
दूजा वंदौ गुर निरगथ । भूला भव्य दीखावण पथ ॥१॥

तीजा साधु सबै का पाइ । चौथा सरस्वती करौ सहाय ।
जहि सेया थे सब बुधि होय । करौ चौपई मन सुधि जोई ॥२॥

माता हमनै करो सहाई । अख्यर हीण सवारो आई ।
श्रेणिक चरित बात मै लही । जैसी जाणी चौपई कही ॥३॥

राणी सही चेलना जाणि । धर्म जैनि सेवै मनि आणि ।
राजा धर्म चलावै बोध । जैन धर्म को काटै खोध ॥४॥

पत्र ७ पर–दोहा—

जो झूठी मुख थे कहै, अणदोस्या दे दोस ।
जे नर जासी नरक मैं, मत कोइ आणौ रोस ॥१५१॥

चौपई— कहै जती इक साह सुजाण । वामण एक पढ्यो अति आणि ।
जइ कौ पुत्र नही को आय । तवै न्यौल इक पाल्यो जाय ॥५२॥

वेटो करि राख्यो निरताइ । दुवैउ पाव एक पै आइ ।
वाभणी सही जाइयो पूत । पली थावै जाणि अउत ॥५३॥

एक दिवस वाभण विचारि । पाणी नैवा चाली नारि ।
पालणा वालक मेल्ही तहा । न्यौल वचन ए भाखै जहा ॥५४॥

अन्तिम—

भेद भलो जाणो इक सार। जे सुणिसी ते उतरै पार।
हीन पद अक्षर जो होय। जको सवारो गुणियर लोय ॥२८६॥
मैं म्हारी बुधि सारू कही। गुणियर लोग सवारो सही।
जे ता तणो कहे निरताय। सुणता सगला पातिग जाइ ॥२६०॥
लिखिवा चाल्यौ सुख नित लहौ, जे साधा का गुण यौ कहौ।
यामै भोलो कोइ नही, डूंगे वैद चौपइ कही ॥६१॥

वास भलो मालपुरो जाणि। टोंक मही सो कियो वखाण।
जठै बसै माहाजन लोग। पान फूल का कीजे भोग ॥६२॥
पौणि छतीसौं लीला करै। दुख थे पेट न कोइ भरै।
राइस्यघ जो राजा बखाणि। चौर चवाहन राखै आणि ॥६३॥
जीव दया को अधिक सुभाव। सबै भलाई साधै डाव।
पतिसाहा बदि दीन्ही छोडि। बुरी कही भवि सुणौ बहोडि ॥६४॥
धनि हिंदवाणो राज बखाणि। जह मैं सीसोद्यो सो जाणि।
जीव दया को सदा वीचार। रैति तणौ राखै आधार ॥६५॥
कीरति कहौ कहा लगि जाणि। जीव दया सहु पालै आणि।
इह विधि सगला करै जगीस। राजा जीज्यौ सौ अरु बीस ॥६६॥

एता वरस मै भोलो नही। बेटा पोता फल ज्यो सही।
दुखिया का दुख टालै आय। परमेस्वर जी करै सहाय ॥६७॥
इ पुन्य तणौ कोइ नही पार। वैदि खलास करै ते सार।
वाकी बुरी कहै नर कोइ। जन्म आपणौ चालै खोइ ॥६८॥
सवत् सौलह सै प्रमाण। उपर सही इतासौ जाण।
निन्याणवै कह्या निरदोष। जीव सवै पावै पोष ॥६६॥
भाद्रव सुदी तेरस सनिवार। कडा तीन सै षट अधिकाय।
इ सुणता सुख पासी देह। आप समाही करै सनेह ॥३००॥

इति श्री श्रेणिक चौपइ संपूरण मीती कार्त्तिक सुदि १३ सनीसरवार कर्के स० १८२६ काडी ग्रामे लीखतं वखतसागर वाचै जहनै निम्सकार नमोस्त वाच ज्यो जी।

२७०२. सप्तपरमस्थानकथा—आचार्य चन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ११। आ० ६३×४ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १६८६ आसोज बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ३५०। न भण्डार।

२७०३. सप्तव्यसनकथा—आचार्य सोमकीर्त्ति। पत्र सं० ४१। आ० १०३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल सं० १५२६ माघ सुदी १। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६। अ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२७०४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६४। ले० काल सं० १७७२ श्रावण बुदी १३। वे० सं० १००२। अ भण्डार।

प्रशस्ति—सं० १७७२ वर्षे श्रावणमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्या तिथौ अर्कवासरे विजैरामेण लिपिकृतं अकब्बरपुर समीपेषु केरवाग्रामे।

२७०५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ९५। ले० काल सं० १८६४ भादवा सुदी ६। वे० सं० ३६३। च भण्डार।

विशेष—नेवटा निवासी महात्मा हीरा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी। दीवाण सगही अमरचदजी खिन्दूका ने प्रतिलिपि दीवाण स्योजीराम के मंदिर के लिए करवाई।

२७०६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६४। ले० काल सं० १७७६ माघ सुदी १। वे० सं० ९९। भ भण्डार।

विशेष—पं० नरसिंह ने श्रावक गोविन्ददास के पठनार्थ हिण्डौन में प्रतिलिपि की थी।

२७०७ प्रति सं० ५। पत्र सं० ६५। ले० काल सं० १६४७ आसोज सुदी ९। वे० सं० १११। ब भण्डार।

२७०८. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७७। ले० काल सं० १७५६ कार्त्तिक बुदी ९। वे० सं० १३६। ब भण्डार।

विशेष—पं० कपूरचंद के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

इनके अतिरिक्त घ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०६) छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७५) और हैं।

२७०९. सप्तव्यसनकथा—भारामल्ल। पत्र सं० ८६। आ० ११३×५ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल सं० १८१४ आश्विन सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ६८८। च भण्डार।

विशेष—पत्र चिपके हुये हैं। अंत मे कवि का परिचय भी दिया हुआ है।

२७१०. सप्तव्यसनकथाभाषा…। पत्र सं० १०९। आ० १२×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६३। ङ भण्डार।

विशेष—सोमकीर्त्ति कृत सप्तव्यसनकथा का हिन्दी अनुवाद है।

च भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६८९) और है।

२७११. सम्मेदशिखरमहात्म्य—लालचन्द। पत्र सं० २६। आ० १२×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल स० १८४२। ले० काल सं० १८८७ आषाढ बुदी....। वे० सं० ८८। ग भण्डार।

विशेष—लालचन्द भट्टारक जगतकीर्त्ति के शिष्य थे। रेवाडी (पञ्जाब) के रहने वाले थे और वही लेखक ने इसे पूर्ण किया।

२७१२. सम्यक्त्वकौमुदीकथा—गुणाकरसूरि। पत्र सं० ४८। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल सं० १५०४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३७६। च भण्डार।

२७१३. सम्यक्त्वकौमुदीकथा—खेता। पत्र सं० ७६। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १८३३ माघ सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० १३६। अ भण्डार।

विशेष—भ्र भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६१) तथा ञ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३०) और हैं।

२७१४. सम्यक्त्वकौमुदीकथा.......। पत्र सं० १३ से ३३। आ० १२×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६२५ माघ सुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० १६१०। ट भण्डार।

प्रशस्ति—सवत् १६२५ वर्षे शाके १४६० प्रवर्त्तमाने दक्षिणायने मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे षष्ठम्या शनौ .... श्रीकुंभलमेरुदुर्गे रा० श्री उदयसिंहराज्ये श्री खरतरगच्छे श्री गुणलाल महोपाध्यायै स्ववाचनार्थं लिखापिता सौवाच्यमाना चिर नदनात्।

२७१५. सम्यक्त्वकौमुदीकथा........। पत्र स० ८६। आ० १०½×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १६०० चैत सुदी १२। पूर्ण। वे० स० ४१। ञ भण्डार।

विशेष—सवत् १६०० मे खेटक स्थान मे शाह आलम के राज्य मे प्रतिलिपि हुई। ब्र० धर्मदास अग्रवाल गोयल गोत्रीय मडलाणपुर निवासी के वंश मे उत्पन्न होने वाले साधु श्रीदास के पुत्र आदि ने प्रतिलिपि कराई। लेखक प्रशस्ति ७ पृष्ठ लम्बी है।

२७१६. प्रति सं० २। पत्र स० १२ से ६०। ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० ६४। अ भण्डार।

श्री डूगर ने इस ग्रंथ को ब्र० रायमल को भेंट किया था।

अथ सवत्सरेस्मिन श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६२८ वर्षे पोषमासे कृष्णपक्षपचमीदिने भट्टारक श्रीभानुकीर्त्तितदाम्नाये अगरवालान्वये मित्तलगोत्रे साह दासू तस्य भार्या भोली तयोपुत्र सा. गोपी सा. दीपा। सा गोपी तस्य भार्या वीचो तयो पुत्र सा. भावन साह उवा सा. भावन भार्या बूरदा शही तस्य पुत्र तिपरदाश। साह उवा तस्य भार्या मेघनही तस्यपुत्र डूंगरसी साम्ग्र सम्यक्त कौमदी ग्रंथ ब्रह्मचार रायमल्लदद्यात् पठनार्थं ज्ञानावर्णी कर्मक्षयहेतु। शुभ भवतु। लिखितं जीवात्मज गोपालदाश। श्रीचन्द्रप्रभु चैत्यालये अहिपुरमध्ये।

२७१७. प्रति स० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १७१६ पौष बुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ७६६ । ङ भण्डार ।

२७१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८४ । ले० काल स० १८३१ माघ सुदी ५ । वे० स० ७५४ । क भण्डार ।

विशेष—झाभूराम साह ने जयपुर नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० २०६६, ८६४) घ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ११२), ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ८००), छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ८७), झ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६१), ञ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३०), तथा ट भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० २१२६, २१३०) [दोनो अपूर्ण] और हैं ।

२७१६. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—विनोदीलाल । पत्र सं० १६० । आ० ११×५ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल सं० १७४६ । ले० काल सं० १८६० सावन बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ८७ । ग भण्डार ।

२७२०. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—जगतराय । पत्र सं० १५१ । आ० ११×५½ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल स० १७७२ माघ सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७५३ । क भण्डार ।

२७२१. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—जोधराज गोदीका । पत्र स० ४७ । आ० १०½×७½ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल स० १७२४ फागुण बुदी १३ । ले० काल स० १८२५ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ४३५ । अ भण्डार ।

विशेष—नैनसागर ने श्री गुलावचंदजी गोदीका के वाचनार्थ सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । स० १८६८ मे पोथी की निछरावलि दिवाई पं० खुश्यालजी, पुं० ईसरदासजी गोदीका सू हस्ते महात्मा फत्ताह्नै भाई रु० १) दिया ।

२७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८६३ माघ बुदी २ । वे० स० २११ । ख भण्डार ।

२७२३ प्रति सं० ३ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १८८४ । वे० स० ७६८ । ङ भण्डार ।

२७२४. प्रति स० ४ । पत्र सं० ६७ । ले० काल स० १८६४ । वे० स० ७०३ । च भण्डार ।

२७२५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १८३५ चैत्र बुदी १३ । वे० स० १० । झ भण्डार ।

इनके अतिरिक्त च भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७०४) ट भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १५४३) और हैं ।

२७२६. सम्यक्त्वकौमुदीभाषा...... | पत्र सं० १७४ | आ० १०½×७½ इंच | भाषा-हिन्दी | विषन-कथा | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ७०२ | च भण्डार |

२७२७. संयोगपंचमीकथा—धर्मचन्द्र | पत्र स० ३ | आ० ११½×५½ इच | भाषा-सस्कृत | विषय-कथा | र० काल × | ले० काल सं० १८४० | पूर्ण | वे० सं० ३०६ | अ भण्डार |

विशेष—ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ८०१) और है |

२७२८. शालिभद्रधन्नानीचौपई—जिनसिंहसूरि | पत्र स० ४६ | आ० ६×४ इंच | भाषा-हिन्दी | विषय-कथा | र० काल सं० १६७८ आसोज बुदी ६ | ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी १४ | अपूर्ण | वे० सं० ८४२ | ङ भण्डार |

विशेष—किशनगढ में प्रतिलिपि की गई थी |

२७२९. सिद्धचक्रकथा ....| पत्र स० २ से ११ | आ० १०×४½ इंच | भाषा-हिन्दी | विषय-कथा | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० ८४३ | ङ भण्डार |

२७३०. सिंहासनबत्तीसी"....| पत्र स० ११ से ६१ | आ० ७×४¾ इच | भाषा-हिन्दी | विषय-कथा | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० स० १५९७ | ट भण्डार |

विशेष—५वें मध्याय से १२वें अध्याय तक है |

२७३१. सिंहासनद्वात्रिंशिका—क्षेमंकरमुनि | पत्र सं० २७ | आ० १०×४½ इच | भाषा-संस्कृत | विषय-राजा विक्रमादित्य की कथा | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० २२७ | ख भण्डार |

विशेष—प्रति प्राचीन है | अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है |

श्रीविक्रमादित्यनरेश्वरस्य चरित्रमेतत् कविभिर्निबद्ध |
पुरा महाराष्ट्रपरिष्ट्रभाषा मय महाश्चर्यकरनराणा ||
क्षेमकरेण मुनिना वरपद्यगद्यबधेनमुक्तिकृतसस्कृतबधुरेण |
विश्वोपकार विलसत् गुणकीर्तिनाथचक्रे चिरादमरपडितहर्षहेतु ||

२७३२. सिंहासनद्वात्रिंशिका" ..| पत्र स० ६३ | आ० ९×४ इच | भाषा-सस्कृत | विषय-कथा | र० काल × | ले० काल सं० १७९८ पौष सुदी ५ | पूर्ण | वे० स० ४११ | च भण्डार |

विशेष—लिपि विकृत है |

२७३३. सुकुमालमुनिकथा .. | पत्र स० २७ | आ० ११½×७½ इंच | भाषा-हिन्दी गद्य | विषय-कथा | र० काल × | ले० काल स० १८७१ माह बुदी ६ | पूर्ण | वे० स० १०५२ | अ भण्डार |

विशेष—जयपुर मे सदासुखजी गोधा के पुत्र सवाईराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी |

२७३४. सुगन्धदशमीकथा ' । पत्र स० ६ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०६ । क भण्डार ।

विशेष—उक्त कथा के अतिरिक्त एक और कथा है जो अपूर्ण है ।

२७३५ सुगन्धदशमीव्रतकथा—हेमराज । पत्र स० ५ । आ० ८½×७ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६८५ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६६५ । अ भण्डार ।

विशेष—भिण्ड नगर मे रामसहाय ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—अथ सुगन्धदशमी व्रतकथा लिख्यते—

चौपई—

वर्द्धमान वदौ सुखदाई, गुर गौतम वदौ चितलाय ।
सुगन्धदशमीव्रत सुनि कथा, वर्द्धमान परकाशी यथा ।।१।।
पूर्वदेस राजग्रह गाव, श्रेनिक राज करै अभिराम ।
नाम चेलना ग्रहपटरानी, चद्ररोहिणी रूप समान ।
नृप सिंहासन बैठो कदा, वनमाली फल ल्यायौ तदा ।।२।।

अन्तिम—

सहर गहे लोउ तिम वास, जैनधर्म को करैप्रकास ।।
सब श्रावक व्रत संयम धरै, दान पूजा सौ पातिक हरै ।
हेमराज कवियन यो कही, विस्वभूषन परकासी सही ।
सो नर स्वर्ग अमरपति होय, मन वच काय सुनै जो कोय ।।३८।।

इति कथा सपूरणम्

दोहा—

श्रावण शुक्ला पंचमी, चद्रवार शुभ जान ।
श्रीजिन भुवन सहावनो, तिहा लिखा धरि ध्यान ।।
सवत् विक्रम भूप को, इक नव आठ सुजान ।
ताके ऊपर पाच लखि, लीजे चतुर सुजान ।।
देश भदावर के विषै, भिड नगर शुभ ठाम ।
ताही मैं हम रहत हैं, रामसाय है नाम ।।

२७३६ सुदर्शनवच्छसावलिंगाकी चौपई—मुनि केशव । पत्र स० २७ । आ० ६×४½ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय–कथा । र० काल स० १६६७ । ले० काल स० १८३७ । वे० स० १६४१ । ट भण्डार ।

विशेष—कटक मे लिखा गया ।

२७३७ सुदर्शनसेठकीढाल (कथा) ' । पत्र स० ६ । आ० ६½×४½ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८६१ । अ भण्डार ।

२७३८. सोमशर्मावारिषेणकथा"" " | पत्र सं० ७ | आ० १०×३३ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–कथा | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ५२३ | ञ भण्डार |

२७३९. सौभाग्यपंचमीकथा—सुन्दरविजयगणि | पत्र सं० ९ | आ० १०×४ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–कथा | र० काल सं० १६६६ | ले० काल स० १८११ | पूर्ण | वे० सं० २६६ | अ भण्डार |

विशेष—हिन्दी मे अर्थ भी दिया हुआ है।

२७४०. हरिवंशवर्णन" ""| पत्र सं० २० | आ० १०३×४३ इंच | भाषा–हिन्दी | विषय–कथा | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० ८३६ | अ भण्डार |

२७४१ होलिकाकथा · ""| पत्र सं० २ | आ० १०३×५ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–कथा | र० काल × | ले० काल स० १६२१ | पूर्ण | वे० स० २६३ | अ भण्डार |

२७४२. होलिकाचौपई—डूंगरकवि | पत्र सं० ४ | आ० ६×४ इंच | भाषा–हिन्दी पद्य | विषय–कथा | र० काल स० १६२९ चैत्र बुदी २ | ले० काल स० १७१८ | अपूर्ण | वे० सं० १५७ | छ भण्डार |

विशेष—केवल अन्तिम पत्र है वह भी एक ओर से फटा हुआ है | अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

सोलहसइ गुणतीसइ सार चैत्रहि वदि दुतिया बुधिवार |
नयर सिकदराबाद"""गुणकरि आगाध, वाचक मंडण श्री खेमा साध ।।८४।।
तासु सीस डूगर मति रली, भण्यु चरित्र गुण साभली |
जे नर नारी सुणस्यइ सदा तिह घरि वहुली हुई सपदा ।।८५।।

इति श्री होलिका चउपई | मुनि हरचद लिखितं | संवत् १७१८ वर्षे"""""आगरामध्ये लिपिकृतं ।। रचना मे कुल ८५ पद्य हैं। चौथे पत्र मे केवल ८ पद्य हैं वे भी पूरे नही हैं।

२७४३ होलीकीकथा—छीतर ठोलिया | पत्र सं० २ | आ० ११३×५३ इंच | भाषा–हिन्दी | विषय–कथा | र० काल स० १६६० फागुण सुदी १५ | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ४५८ | अ भण्डार |

२७४४. प्रति म० २ | पत्र स० ४ | ले० काल सं० १७५० | वे० सं० ८५६ | क भण्डार |

विशेष—लेखक मौजमाबाद [जयपुर] का निवासी था इसी गाव मे उसने ग्रंथ रचना की थी।

२७४५. प्रति सं० ३ | पत्र सं० ८ | ले० काल सं० १८८३ | वे० सं० ६६ | ग भण्डार |

विशेष—कालूराम साह ने ग्रंथ लिखवाकर चौधरियो के मन्दिर मे चढाया |

२७४६. प्रति सं० ४ | पत्र स० ४ | ले० काल सं० १८३० फागुण बुदी १२ | वे० सं० १६४२ | ट भण्डार |

विशेष—पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२७४७ होलीकथा—जिनसुन्दरसूरि। पत्र सं० १४। आ० १०३/४×४३/४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा ×। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७४। छ् भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे इसके अतिरिक्त ३ प्रतिया वे० स० ७४ मे ही और हैं।

२७४८. होलीपर्वकथा ''''''। पत्र स० ३। आ० १०×४३/४ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४४६। अ भण्डार।

२७४९. प्रति स० २। पत्र स० २। ले० काल स० १८०४ माघ सुदी ३। वे० स० २८२। ब भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त ङ भण्डार में २ प्रतिया (वे० सं० ६१०, ६११) और हैं।

व्याकरण-साहित्य

२७५०. अनिटकारिका ……। पत्र स० १ । आ० १०३/४×५१/२ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३५ । अ भण्डार ।

२७५१. प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० २१४६ । ट भण्डार ।

२७५२ अनिटकारिकावचूरि ……। पत्र सं० ३ । आ० १३×४ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५० । ञ भण्डार ।

२७५३ अव्ययप्रकरण …… । पत्र स० ६ । आ० ११३/४×५१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०१८ । अ भण्डार ।

२७५४. अव्ययार्थ …… । पत्र स० ८ । आ० ८×५१/२ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८४८ । पूर्ण । वे० स० १२२ । झ भण्डार ।

२७५५. प्रति सं० २ । पत्र स० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०२१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति दीमक ने खा रखी है ।

२७५६. उणादिसूत्रसग्रह—सग्रहकर्त्ता-उज्ज्वलदत्त । पत्र सं० ३८ । आ० १०×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०२७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

२७५७. उपाधिव्याकरण…… । पत्र सं० ७ । आ० १०×४ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८७२ । अ भण्डार ।

२७५८. कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचूरि—चारित्रसिंह । पत्र सं० १३ । आ० १०३/४×४१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १६६६ कार्त्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २४७ । अ भण्डार ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

> नत्वा जिनेंद्रं स्वगुरु च भक्त्या तत्सत्प्रसादाससुसिद्धिशक्त्या ।
> सत्सप्रदायादवचूर्णिमेता लिखामि सारस्वतसूत्रयुक्त्या ।।१।।

प्राय प्रयोगादुर्ज्ञेया किलकातत्र विभ्रमो ।
येषु मो मुह्यते श्रेष्ठ शाब्दिकोऽपि यथा जड ॥२॥

कातन्त्रसूत्रविसर खलु साप्रत ।
यन्नाति प्रसिद्ध इह चाति खरोगरीयान् ॥

स्वस्येतरस्ये च सुबोधबिवर्द्धनार्थी ।
ऽस्त्वित्थ मुमात्र सफलो लिखन प्रयास ॥

अन्तिम पाठ—

वाणाश्रिषडिदुमिते सम्वति धवलक्कपुरवरे समहे ।
श्रीखरतरगणपुष्करसुदिवापुष्टप्रकाराणा ॥१॥

श्रीजिनमाणिक्याभिधसूरीणा सकलसार्वभौमाना ।
पट्टे करे विजयिषु श्रीमज्जिनचद्रसूरिराजेषु ॥२॥

गीति वाचकमतिभद्रगणे शिष्यस्तदुपास्त्यवाप्तपरमार्थ ।
चारित्रसिंहसाधुर्व्यदधदवचूर्णिमिह सुगमा ॥३॥

यल्लिखितं मतिमाद्यादनृतं प्रश्नोत्तरेत्र किंचिदपि ।
तत्सम्यक् प्राज्ञवरै, शोध्य स्वपरोपकाय ॥४॥

इति कातन्त्रविभ्रमावचूरि सपूर्णा लिखनत ।

''चार्य श्रीरत्नभूपणस्तच्छिष्य पडित केशव तेनेय लिपि कृता आत्मपठनार्थं । शुभ भवतु । सवत् १६६६
''णो ।

''न्त्रटीका'' '' '। पत्र स० ३ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण ।
अपूर्ण । वे० स० १६०१ । ट भण्डार ।

टीका सहित है ।

''नाटीका—दौर्गसिंह । पत्र स० ३६४ । आ० १२½×४½ इच । भाषा-
''ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वे० सं० १११ । क भण्डार ।

''करण भी है ।

' ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११२ । क भण्डार ।

' काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७ । च भण्डार ।

' १४ से ८६ । आ० ६×४ इच । भाषा—सस्कृत ।
'' सुदी ५ । अपूर्ण । वे० स० २१४४ । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५२४ वर्षे कार्तिक सुदी ५ दिने श्री टोकपत्तने सुरत्राणअलावदीनराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्शिष्य ब्रह्मतीकम निमित्त । खडेलवालान्वये पाटणीगोत्रे स० धन्ना भार्या धनश्री पुत्र स. दिवराजा, दोदा, मूलाप्रभृतय एतेषामध्ये सा दोदा इद पुस्तक ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्त लिखाप्य ज्ञानपात्राय दत्तं ।

२७६४ कातन्त्रव्याकरण—शिववर्मा । पत्र सं० ३५ । आ० १०×४३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । च भण्डार ।

२७६५ कारकप्रक्रिया । पत्र स० ३ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५५ । अ भण्डार ।

२७६६ कारकविवेचन । पत्र स० ८ । आ० ११×५३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०७ । ज भण्डार ।

२७६७ कारकसमासप्रकरण । पत्र सं० ५ । आ० ११×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३३ । अ भण्डार ।

२७६८. कृदन्तपाठ । पत्र स० ६ । आ० ६३×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२६६ । अ भण्डार ।

विशेष—तृतीय पत्र नही है । सारस्वत प्रक्रिया मे से है ।

२७६९ गणपाठ—वादिराज जगन्नाथ । पत्र स० ३४ । आ० १०३×४३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७८० । ट भण्डार ।

२७७० चन्द्रोन्मीलन । पत्र स० ३० । आ० १२×५३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १८३५ फागुन बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ६१ । ज भण्डार ।

विशेष—सेवाराम ब्राह्मण ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२७७१. जैनेन्द्रव्याकरण—देवनन्दि । पत्र स० १२६ । आ० १२×५३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १७१० फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३१ ।

विशेष—ग्रथ का नाम पचाध्यायी भी है । देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है । पचवस्तु तक । सीलपुर नगर मे श्री भगवान जोशी ने प० श्री हर्ष तथा श्रीकल्याण के लिये प्रतिलिपि की थी ।

संवत् १७२० आसोज सुदी १० को पुन श्रीकल्याण व हर्ष को साह श्री लूणा बघेरवाल द्वारा भेंट की गयी थी ।

२७६३. प्राकृतरूपमाला—श्रीरामभट्ट सुत वरदराज। पत्र स० ४७। आ० ६३×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल स० १७२४ आषाढ बुदी ६। पूर्ण। वे० स० ५२२। क भण्डार।

विशेष—आचार्य कनककीर्त्ति न द्रव्यपुर (मालपुरा) मे प्रतिलिपि की थी।

२७६४ प्राकृतरूपमाला | पत्र स० ३१ रे ४६। भाषा-प्राकृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २४६। च भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हैं।

२७६५ प्राकृतव्याकरण—चडकवि। पत्र स० ६। आ० ११३×५३ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६४। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्राकृत प्रकाश भी है। सस्कृत, प्राकृत, अपभ्र श, पैशाचिकी, मागधी तथा सौरसेनी आदि भाषाओ पर प्रकाश डाला गया है।

२७६६ प्रति स० २। पत्र स० ७। ले० काल स० १८६६। वे० स० ५२३। क भण्डार।

२७६७ प्रति स० ३। पत्र स० १६। ले० काल स० १८२३। वे० स० ५२४। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५२२) और है।

२७६८ प्रति स० ४। पत्र स० ४०। ले० काल स० १८४४ मगसिर सुदी १५। वे० स० १०८। छ भण्डार।

विशेष—जयपुर के गोधो के मन्दिर नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

२७६६ प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका—सौभाग्यगणि। पत्र स० २२४। आ० १२३×५३ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल स० १८६६ आसोज सुदी २। पूर्ण। वे० स० ५२७। क भण्डार।

२८०० भाष्यप्रदीप—कैय्यट। पत्र स० ३१। आ० १२३×६ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १५१। ज भण्डार।

२८०१ रूपमाला। पत्र स० ४ से ५०। आ० ८३×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३०६। च भण्डार।

विशेष—धातुओ के रूप दिये हैं।

२८०३ लघुरूपसर्गवृत्ति ....। पत्र सं० ४। आ० १०½X५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १६४८। ट भण्डार।

२८०४. लघुशब्देन्दुशेखर । पत्र स० २१५। आ० ११½X५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २११। ज भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के १० पत्र सटीक है।

२८०५ लघुसारस्वत—अनुभूति स्वरूपाचार्य। पत्र सं० २३। आ० ११X५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ६२६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ३११. ३१२, ३१३, ३१४) और हैं।

२८०६. प्रति स० २। ....। पत्र स० २०। आ० ११½X५½ इञ्च। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३११। च भण्डार।

२८०७ प्रति सं० ३। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८६२ भाद्रपद शुक्ला ८। वे० सं० ३१३। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० ३१३, ३१४) और हैं।

२८०८ लघुसिद्धान्तकौमुदी—वरदराज। पत्र सं० १०४। आ० १०X४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १६७। ख भण्डार।

२८०९ प्रति सं० २। पत्र स० ३१। ले० काल स० १७८६ ज्येष्ठ बुदी ५। वे० सं० १७३। ज भण्डार।

विशेष—आठ अध्याय तक है।

च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ३१५, ३१६) और हैं।

२८१०. लघुसिद्धान्तकौस्तुभ.......। पत्र स० ५१। आ० १२X५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० २०१२। ट भण्डार।

विशेष—पाणिनी व्याकरण की टीका है।

२८११. वैय्याकरणभूषण—कौण्डभट्ट। पत्र स० ३३। आ० १०X४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल X। ले० काल स० १७७४ कार्त्तिक सुदी २। पूर्ण। वे० स० ६८३। ङ भण्डार।

२८१२ प्रति स० २। पत्र स० १०४। ले० काल सं० १९०५ कार्त्तिक बुदी २। वे० स० २८१। ङ भण्डार।

२८१३. वैय्याकरणभूषण.......। पत्र सं० ७। आ० १०½X५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल X। ले० काल सं० १८६६ पौष सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ६८२। ङ भण्डार।

२७७२ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १९६३ फागुन सुदी ९ । वे० स० २१२ । क भण्डार ।

२७७३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ९४ से २१४ । ले० काल स० १९६४ माह बुदी २ । अपूर्ण । वे० स० २१३ । क भण्डार ।

२७७४ प्रति सं० ४ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १८६६ कार्तिक सुदी ३ । वे० स० २१० । क भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे सक्षिप्त सकेतार्थ दिये हुये हैं । पन्नालाल भौंसा ने प्रतिलिपि की थी ।

२७७५. प्रति स० ५ । पत्र स० ३० । ले० काल स० १९०८ । वे० स० ३२८ । ज भण्डार ।

२७७६. प्रति सं० ६ । पत्र स० १२५ । ले० काल स० १८८० वशाख सुदी १४ । वे० स० २०० । व भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त च भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १२१) व्य भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० ३२३, २८८) और हैं । (वे० स० ३२३) वाले ग्रन्थ मे सोमदेवसूरि कृत शब्दार्णव चन्द्रिका नाम की टीका भी है ।

२७७७ जैनेन्द्रमहावृत्ति—अभयनदि । पत्र स० १०४ से २३२ । आ० १२३/४×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०४२ । अ भण्डार ।

२७७८ प्रति सं० २ । पत्र स० ६९० । ले० काल स० १९४६ भादवा वुदी १० । वे० स० २११ । क भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

२७७९. तद्धितप्रक्रिया । पत्र स० १६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८७० । अ भण्डार ।

२७८० धातुपाठ—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० १३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १७९७ श्रावरण सुदी ५ । वे० स० २९२ । छ भण्डार ।

२७८१. धातुपाठ" । पत्र स० ५१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ९६० । अ भण्डार ।

विशेष—धातुओ के पाठ हैं ।

२७८२ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १५९४ फागुण सुदी १२ । वे० सं० ९२ । ख भण्डार ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १३०३) तथा ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स०

२७८३. धातुरूपावलि……। पत्र सं० २२ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६ । ञ भण्डार ।

विशेष—शब्द एव धातुओ के रूप हैं ।

२७८४ धातुप्रत्यय……। पत्र स० ३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०२८ । ट भण्डार ।

विशेष—हेमशब्दानुशासन की शब्द साधनिका दी है ।

२७८५. पचसंधि……। पत्र स० २ से ७ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १७३२ । अपूर्ण । वे० स० १२६२ । अ भण्डार ।

२७८६. पचिकरणवार्त्तिक—सुरेश्वराचार्य । पत्र स० २ से ४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४४ । ट भण्डार ।

२७८७. परिभाषासूत्र……। पत्र स० ५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १५३० । पूर्ण । वे० स० १६५४ । ट भण्डार ।

विशेष—अतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति परिभाषा सूत्र सम्पूर्ण ।।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स० १५३० वर्षे श्रीखरतरगच्छेश्रीजयसागरमहोपाध्यायशिष्यश्रीरत्नचन्द्रोपाध्यायशिष्यभक्तिलाभगणिना लिखिता वाचिता च ।

२७८८. परिभाषेन्दुशेखर—नागोजीभट्ट । पत्र स० ६७ । आ० ६×३½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५८ । ज भण्डार ।

२७८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० स० १०० । ज भण्डार ।

२७९०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११२ । ले० काल × । वे० स० १०२ । ज भण्डार ।

विशेष—दो लिपिकर्त्ताओ ने प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है । टीका का नाम भैरवी टीका है ।

२७९१. प्रक्रियाकौमुदी……। पत्र स० १४३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५० । अ भण्डार ।

विशेष—१४३ से आगे पत्र नही हैं ।

२७९२. पाणिनीयव्याकरण—पाणिनि । पत्र सं० ३६ । आ० ८½×३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तया पत्र के एक ओर ही लिखा गया है ।

२८१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल स० १८६६ चैत्र बुदी ४ । वे० स० ३३५ । च भण्डार ।

विशेष—माणिक्यचन्द्र के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२८१५. व्याकरण...... । पत्र सं० ४६ । आ० १०३/४X५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

२८१६ व्याकरणटीका...... । पत्र स० ७ । आ० १०X४१/२ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १३८ । छ भण्डार ।

२८१७. व्याकरणभाषाटीका...... । पत्र स० १८ । आ० १०X५ इञ्च । भाषा–सस्कृत हिन्दी । विषय-व्याकरण । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २६८ । छ भण्डार ।

२८१८ शब्दशोभा—कवि नीलकठ । पत्र स० ४३ । आ० १०३/४X५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल स० १६६३ । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ७०० । ङ भण्डार ।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२८१९ शब्दरूपावली...... । पत्र स० ८६ । आ० ६X४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १३६ । झ भण्डार ।

२८२० शब्दरूपिणी—आचार्य वररुचि । पत्र स० २७ । आ० १०१/२X३१/२ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ८१२ । अ भण्डार ।

२८२१ शब्दानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० ३१ । आ० १०X४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ४८८ । व्य भण्डार ।

२८२२ प्रति सं० २ । । पत्र सं० १० । आ० १०१/२X४१/२ इञ्च । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । अ भण्डार ।

विशेष—क भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० स० ६८१, ६८२, ६८३, ६८३, (क) ६८४, ५२६) तथा अ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १६८६) और हैं ।

२८२३ शब्दानुशासनवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ७६ । आ० १२X४१/२ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० । २२६३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्राकृत व्याकरण भी है ।

२८२४ प्रति स० २ । पत्र स० २० । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ३ । वे० स० ५२५ । क भण्डार ।

विशेष—आमेर निवासी पिरागदास महुआ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

२८२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी १ । वे० सं० २४३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३३६) और है ।

२८२६ प्रति स० ४ । पत्र स० ८ । ले० काल सं० १५२७ चैत्र बुदी ८ । वे० सं० १६५० । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—सवत् १५२७ वर्षे चैत्र वदि ८ भौमे गोपाचलदुर्गे महाराजाधिराजश्रीकीर्त्तिसिंहदेवराज-प्रवर्त्तमानसमये श्री कालिदास पुत्र श्री हरि ब्रह्मे ''''''।

२८२७. शाकटायन व्याकरण—शाकटायन । २ से २० । आ० १५×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४० । च भण्डार ।

२८२८. शिशुबोध—काशीनाथ । पत्र स० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १७३६ माघ सुदी २ । वे० स० २८७ । छ भण्डार ।

प्रारम्भ—भूदेवदेवगोपालं, नत्वागोपालमीश्वरं ।
क्रियते काशीनाथेन, शिशुबोधविशेषत ॥

२८२९. संज्ञाप्रक्रिया '''''' । पत्र सं० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८५ । छ भण्डार ।

२८३० सम्बन्धविवक्षा'''''' । पत्र स० २४ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २२७ । ज भण्डार ।

२८३१. संस्कृतमञ्जरी '''''' । पत्र स० ४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १८२२ । पूर्ण । वे० स० ११६७ । अ भण्डार ।

२८३२ सारस्वतीधातुपाठ '''''' । पत्र स० ५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

२८३३. सारस्वतपचसधि '''' । पत्र सं० १३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १८५५ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

२८३४. सारस्वतप्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्र सं० १२१ से १४५ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८४६ । अपूर्ण । वे० स० १३६५ । अ भण्डार ।

२८३५. प्रति स० २ । पत्र सं० ६७ । ले० काल स० १७८१ । वे० स० ६०१ । अ भण्डार ।

२८३६ प्रति सं० ३ । पत्र स० १८१ । ले० काल स० १८६६ । वे० सं० ६२१ । अ भण्डार।

२८३७ प्रति सं० ४ । पत्र स० ६३ । ले० काल सं० १८३१ । वे० स० ६५१ । अ भण्डार।

विशेष—चोखचद के शिष्य कृष्णदास् ने प्रतिलिपि की थी ।

२८३८ प्रति स० ५ । पत्र स० ६० से १२४ । ले० काल स० १८३८ । अपूर्ण । वे० स० ६८५ । अ भण्डार।

बशई (बस्सी) नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२८३९ प्रति सं० ६ । पत्र स० ४३ । ले० काल सं० १७५९ । वे० स० १२४६ । अ भण्डार।

विशेष—चन्द्रसागरगणि ने प्रतिलिपि की थी ।

२८४०. प्रति स० ७ । पत्र सं० ४७ । ले० काल स० १७०१ । वे० स० ९७० । अ भण्डार।

२८४१. प्रति स० ८ । पत्र स० ३२ से ७२ । ले० काल स० १८५२ । अपूर्ण । वे० स० ९३७ । अ भण्डार ।

२८४२ प्रति स० ९ । पत्र स० २३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १०५५ । अ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्त्ति कृत सस्कृत टीका सहित है ।

२८४३. प्रति सं० १० । पत्र स० १६४ । ले० काल सं० १८२१ । वे० स० ७९० । क भण्डार।

विशेष—चिमनराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२८४४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४६ । ले० काल स० १८२७ । वे० स० ७९१ । क भण्डार।

२८४५ प्रति स० १२ । पत्र स० ९ । ले० काल स० १८४६ माघ सुदी १४ । वे० स० २६८ । ख भण्डार ।

विशेष—प० जगरूपदास ने दुलोचन्द के पठनार्थ नगर हरिदुर्ग मे प्रतिलिपि की थी । केवल विसर्ग संधि तक है।

२८४६. प्रति सं० १३ । पत्र स० ६५ । ले० काल स० १८६४ श्रावण सुदी ५ । वे० स० २६९ । ख भण्डार ।

२८४७. प्रति सं० १४ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १७ । वे० स० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—दुर्गाराम शर्मा के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२८४८. प्रति सं० १५ । पत्र स० ९७ । ले० काल स० १९१७ । वे० स० ४८ । झ भण्डार ।

विशेष—गणेशलाल पाड्या के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । दो प्रतियो का सम्मिश्रण है ।

२८४९ प्रति स० १६ । पत्र सं० १०१ । ले० काल स० १८७६ । वे० स० १२५ । झ भण्डार।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे १७ प्रतिया (वे० सं० ६०७, ६५२, ८०९, ९०३, १००६,

१०३४, १३१३, ६५३, १२८६, १२७२, १३३२, १६५०, १२५०, १८८०, १२६१, १२६८, १२८४, १३०१, १३०२) ख भण्डार मे ७ प्रतिया (वे सं० २१५, २१५ [अ], २१६, २१७, २१८, २१६, २६८) घ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ११६, १२०, १२१) ङ भण्डार मे १५ प्रतिया (वे० सं० ८२१, ८२२, ८२३, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२६, ८३१, से ८३८, ८३६) च भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ३६६, ४००, ४०१, ४०२, ४०३) छ भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० सं० १३६, १३७, १४०, २४७, २५४, ६७) झ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे सं० १२१, १४०, २२२) ञ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० २०) तथा ट भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० १६८८, १६६०, २१००, २०७२, २१०५) और हैं।

उक्त प्रतियो मे बहुत सी अपूर्ण प्रतिया भी हैं।

२८५०. सारस्वतप्रक्रियाटीका—महीभट्टी। पत्र सं० ६७ । आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १८७६। पूर्ण। वे० सं० ८२४। ङ भण्डार।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

२८५१· सज्ञाप्रक्रिया······। पत्र सं० ६। आ० १०३/४×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३००। ञ भण्डार।

२८५२ सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति—जिनप्रभसूरि। पत्र सं० ३। आ० ११×४१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल। ले० काल सं० १७२४ ज्येष्ठ सुदी १०। पूर्ण। वे० स० । ज भण्डार।

विशेष—संवत् १४६४ की प्रति से प्रतिलिपि की गई थी।

२८५३ सिद्धान्तकौमुदी—भट्टोजी दीक्षित। पत्र सं० ८। आ० ११×५३/४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६४। ज भण्डार।

२८५४. प्रति स० २। पत्र स० २४०। ले० काल ×। वे० स० ६६। ज भण्डार।

विशेष—पूर्वार्द्ध है।

२८५५. प्रति सं० ३। पत्र सं० १७६। ले० काल ×। वे० सं० १०१। ज भण्डार।

विशेष—उत्तरार्द्ध पूर्ण है।

इसके अतिरिक्त ज भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ६५, ६६) तथा ट भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १६३४, १६६६) और हैं।

२८५६. सिद्धान्तकौमुदी······। पत्र सं० ४३। आ० १२३/४×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८४७। ङ भण्डार।

विशेष—अतिरिक्त ङ, च तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० ८४८, ४०७, २७२) और है।

२८५७. सिद्धान्तकौमुदीटीका ...... । पत्र स० ६५ । आ० ११३/४×६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५ । ज भण्डार ।

विशेष-पत्रो के कुछ अंश पानी से गल गये हैं।

२८५८ सिद्धान्तचन्द्रिका—रामचंद्राश्रम । पत्र सं० ४४ । आ० ६३/४×५३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६५१ । अ भण्डार ।

२८५६ प्रति सं० २ । पत्र स० २६ । ले० काल सं० १८४७ । वे० स० १६५२ । अ भण्डार ।

विशेष—कृष्णगढ मे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

२८६० प्रति सं० ३ । पत्र स० १०१ । ले० काल स० १८४७ । वे० सं० १६५३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १० प्रतिया (वे० स० १६३१, १६५४, १६५५, १६५६, १६५७, १६५८, ६०८, ६१७, ६१८, २०२३) और है ।

२८६१ प्रति स० ४ । पत्र स ६४ । आ० ११३/४×५३/४ इंच । ले० काल स० १७८४ असाढ बुदी १४ । वे० स० ७८२ । क भण्डार ।

२८६२ प्रति स० ५ । पत्र सं० ५७ । ले० काल स० १६०२ । वे० सं० २२३ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० २२२ तथा ४०८) और हैं ।

२८६३. प्रति स० ६ । पत्र सं० २६ । ले० काल स० १७५२ चैत्र बुदी ६ । वे० स० ६० । छ भण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन मे एक प्रति और है ।

२८६४ प्रति स० ७ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १८६४ श्रावण बुदी ६ । वे० स० ३५२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथम वृत्ति तक है । संस्कृत मे कही शब्दार्थ भी हैं । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३५३) और है ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ६ प्रतिया (वे० सं० १२८५, १६५४, १६५५, १६५६, १६५७, ६०८, ६१७, ६१८) ख भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २२२, ४०८) छ तथा ज भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० ६०, ३५३ और है । अ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ११७७, १२६६, १२६७) अपूर्ण । च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ४०६, ४१०) छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ११६) तथा ज भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ३४५, ३४८, ३४६) और हैं ।

ये सभी प्रतिया अपूर्ण है ।

२८६५. सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका—लोकेशकर । पत्र सं० ६७ । आ० ११३/४X४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ८०१ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

२८६६ प्रति स० २ । पत्र स० ८ से ११ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३४७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२८६७ सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति—सदानन्दगणि । पत्र सं० १७३ । आ० ११X४३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल X । ले० काल X । वे० स० ८६ । छ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम सुबोधिनीवृत्ति भी है ।

२८६८ प्रति सं० २ । पत्र सं० १७८ । ले० काल सं० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ७ । वे० सं० ३५१ । ज भण्डार ।

विशेष—प० महाचन्द्र ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

२८६९. सारस्वतदीपिका—चन्द्रकीर्त्तिसूरि । पत्र सं० १६० । आ० १०X४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल स० १६५६ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७६५ । अ भण्डार ।

२८७० प्रति सं० २ । पत्र स० ६ से ११६ । ले० काल स० १६५७ । वे० स० २६४ । छ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्त्ति के शिष्य हर्षकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२ । ले० काल स० १८२८ । वे० सं० २८३ । छ भण्डार ।

विशेष—मुनि चन्द्रभाण खेतसी ने प्रतिलिपि की थी । पत्र जीर्ण हैं ।

२८७२ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १६६१ । वे० स० १९४३ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ च और ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० १०५५, ३९८ तथा २०६४) और है ।

२८७३. सारस्वतदशाध्यायी ..... । पत्र सं० १० । आ० १०१/२X४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल X । ले० काल सं० १७९८ वैशाख बुदी ११ । वे० स० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७४ सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका ..... । पत्र स० १६ । आ० १०X४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८४९ । ङ भण्डार ।

२८६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८०२ ज्येष्ठ सुदी १० । वे० स० ३७ । क भण्डार।

विशेष—स्वोपज्ञवृत्ति है।

२८६२ प्रति सं० ४ । पत्र स० ७ से १३४ । ले० काल सं० १७८० आसोज सुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० ५ । घ भण्डार।

२८६३ प्रति सं० ५ । पत्र स० ११२ । ले० काल स० १६२६ आषाढ बुदी २ । वे० स० ८५ । ज भण्डार।

२८६४ प्रति सं० ६ । पत्र सं ५८ । ले० काल स० १८१३ बैशाख सुदी १३ । वे० स० १११ । ज भण्डार।

विशेष—पं० भीमराज ने प्रतिलिपि की थी।

२८६५. अभिधानरत्नाकर—धर्मचन्द्रगणि । पत्र सं० २६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत। विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८२७ । अ भण्डार।

२८६६ अभिधानसार—पं० शिवजीलाल । पत्र स० २३ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत। विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८ । ख भण्डार।

विशेष—देवकाण्ड तक है।

२८६७ अमरकोश—अमरसिंह । पत्र स० २६ । आ० १२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश। र० काल × । ले० काल स० १८०० ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २०७५ । अ भण्डार।

विशेष—इसका नाम लिंगानुशासन भी है।

२८६८. प्रति स० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८३५ । वे० स० १६११ । अ भण्डार।

२८६९. प्रति स० ३ । पत्र स० ५४ । ले० काल स० १८११ । वे० स० ६२२ । अ भण्डार।

२९००. प्रति स० ४ । पत्र स० १८ से ६१ । ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० ६२१ । अ भण्डार।

२९०१. प्रति सं० ५ । पत्र स० ६६ । ले० काल सं० १८९४ । वे० सं० २४ । क भण्डार।

०६ । पत्र स० १३ से ६१ । ले० काल स० १८२४ । वे० स० १२ । अपूर्ण । ख

२६०३. प्रति सं० ७ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८६८ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २४ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रथमकाण्ड तक है । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

२६०४ प्रति सं० ८ । पत्र स० ७७ । ले० काल स० १८८३ आसोज सुदी ३ । वे० स० २७ । ङ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे दीवाण अमरचन्दजी के मन्दिर मे मालीराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२६०५. प्रति सं० ६ । पत्र स० ८४ । ले० काल सं० १८१८ कार्त्तिक बुदी ८ । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—ऋषि हेमराज के पठनार्थ ऋषि भारमल्ल ने जयदुर्ग मे प्रतिलिपि की थी । सं० १८२२ आषाढ सुदी २ मे ३) रु० देकर प० रेवतीसिंह के शिष्य रूपचन्द ने श्वेताम्बर जती से ली ।

२६०६. प्रति स० १० । पत्र स० ६१ से १३१ । ले० काल सं० १८३० आषाढ बुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० २६५ । छ भण्डार ।

विशेष—मोतीराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२६०७ प्रति स० ११ । पत्र स० ८४ । ले० काल स० १८८१ बैशाख सुदी १५ । वे० स० ३४४ । ज भण्डार ।

विशेष—कही २ टीका भी दी हुई है ।

२६०८ प्रति स० १२ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १७६६ मंगसिर सुदी ५ । वे० स० ७ । ञ भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे २१ प्रतिया (वे० स० ६३८, ८०४, ७६१, ६२३, ११६६, ११६२, ८०६, ६१७, १२८६, १२८७, १२८८, १२६०, १६५६, १६६०, १३४२, १८३६, १५५८, १५५६, १५६० १८५१, २१०५) क भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० २१, २२, २३, २५, २६) ख भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स ६, १०, ११, २६६ २६६) ङ भण्डार मे ११ प्रतियां (वे० सं० १६, १७, १८, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६) च भण्डार मे ७ प्रतिया (वे० स० ८, ६, १०, ११, १२, १३, १४) छ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० १३६ १३६, १४१, २४ [क]) ज भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ५६, ३५०, ३५२, ६२) झ भण्डार १ प्रति (वे० स० ६५), तथा ट भण्डार मे ४ प्रतियां (वे० स० १८००, १८८५, २१०१ तथा २०७६) और हैं ।

२८७५. सिद्धान्तबिन्दु—श्रीमधुसूदन सरस्वती। पत्र सं० २८। आ० १०½X६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल X। ले० काल सं० १७४२ आसोज बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ८१७। अ भण्डार।

विशेष—इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीविश्वेश्वर सरस्वती भगवत्पाद शिष्य श्रीमधुसूदन सरस्वती विरचित. सिद्धान्तबिंदुस्समाप्तः॥ संवत् १७४२ वर्षे आश्विनमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां बुधवासरे बगरूनाम्निनगरे मिश्र श्री श्यामलस्य पुत्रेण भगवन्नाम्ना सिद्धान्तबिंदुर्लेखि। शुभमस्तु॥

२८७६ सिद्धान्तमंजूषिका—नागेशभट्ट। पत्र सं० ९३। आ० १२½X५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ३३४। ज भण्डार।

२८७७. सिद्धान्तमुक्तावली—पंचानन भट्टाचार्य। पत्र सं० ७०। आ० १२X५¾ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल X। ले० काल सं० १८३३ भादवा बुदी ३। वे० सं० ३०८। ज भण्डार।

२८७८ सिद्धान्तमुक्तावली ···। पत्र सं० ७०। आ० १२X५¾ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल X। ले० काल सं० १७०५ चैत सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० २८६। ज भण्डार।

२८७९. हैमनीबृहद्वृत्ति ···। पत्र सं० ५४। आ० १०X५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १४९। म भण्डार।

२८८०. हैमव्याकरणवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं० २४। आ० १२X६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० १८४४। ट भण्डार।

२८८१. हैमीव्याकरण—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं० ८३। आ० १०X४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ३५८।

विशेष—बीच में अधिकांश पत्र नहीं हैं। प्रति प्राचीन है।

कोश

२८८२. अनेकार्थध्वनिमंजरी—महीक्षपण कवि। पत्र स० ११। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १४। ङ भण्डार।

२८८३. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी……। पत्र स० १४। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १९१५। ट भण्डार।

विशेष— तृतीय अधिकार तक पूर्ण है।

२८८४. अनेकार्थमञ्जरी—नन्ददास। पत्र स० २१। आ० ८½×४½ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २१८। झ भण्डार।

२८८५. अनेकार्थशत—भट्टारक हर्षकीर्त्ति। पत्र सं० २३। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। लें० काल सं० १६९७ वैशाख बुदी ५। पूर्ण। वे० स० १५। ङ भण्डार।

२८८६. अनेकार्थसंग्रह—हेमचन्द्राचार्य। पत्र स० ४। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल सं० १६९६ असाढ बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ३८। क भण्डार।

२८८७. अनेकार्थसग्रह……। पत्र स० ४१। आ० १०×४½ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४। च भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम महीपकोश भी है।

२८८८. अभिधानकोष—पुरुषोत्तमदेव। पत्र सं० ३४। आ० ११½×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११७१। अ भण्डार।

२८८९. अभिधानचिंतामणिनाममाला—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं० ६। आ० ११×५ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०५। अ भण्डार।

विशेष—केवल प्रथमकाण्ड है।

२८९०. प्रति सं० २। पत्र सं० २३५। ले० काल स० १७३० आषाढ सुदी १०। वे० सं० ३६। क भण्डार।

विशेष—स्वोपज्ञ संस्कृत टीका सहित है। महाराणा राजसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

२८९१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८०२ ज्येष्ठ सुदी १० । वे० स० ३७ । ङ भण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञवृत्ति है ।

२८९२ प्रति सं० ४ । पत्र स० ७ से १३४ । ले० काल स० १७८० आसोज सुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० ५ । च भण्डार ।

२८९३ प्रति सं० ५ । पत्र स० ११२ । ले० काल स० १९२६ आषाढ बुदी २ । वे० स० ८५ । ज भण्डार ।

२८९४ प्रति सं० ६ । पत्र स ५८ । ले० काल स० १८१३ बैशाख सुदी १३ । वे० स० १११ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० भीमराज ने प्रतिलिपि की थी ।

२८९५. अभिधानरत्नाकर—धर्मचन्द्रगणि । पत्र स० २६ । आ० १०×४३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८२७ । अ भण्डार ।

२८९६ अभिधानसार—पं० शिवजीलाल । पत्र स० २३ । आ० १२×५३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८ । ख भण्डार ।

विशेष—देवकाण्ड तक है ।

२८९७. अमरकोश—अमरसिंह । पत्र स० २९ । आ० १२×६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल स० १८०० ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० २०७५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम लिंगानुशासन भी है ।

२८९८. प्रति स० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल स० १८३५ । वे० स० १९११ । अ भण्डार ।

२८९९ प्रति स० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० काल स० १८११ । वे० स० ९२२ । अ भण्डार ।

२९००. प्रति स० ४ । पत्र सं० १८ से ६१ । ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० ९२१ । अ भण्डार ।

२९०१. प्रति सं० ५ । पत्र स० ९६ । ले० काल सं० १८९४ । वे० स० २४ । क भण्डार ।

२९०२. प्रति स० ६ । पत्र स० १३ से ६१ । ले० काल सं० १८२४ । वे० स० १२ । अपूर्ण । ख भण्डार ।

२६०३. प्रति सं० ७ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८६८ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २४ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रथमकाण्ड तक है । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

२६०४ प्रति सं० ८ । पत्र स० ७७ । ले० काल स० १८८३ आसोज सुदी ३ । वे० सं० २७ । ङ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे दीवाण अमरचन्दजी के मन्दिर मे मालीराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२६०५ प्रति सं० ६ । पत्र स० ८४ । ले० काल सं० १८१८ कार्तिक बुदी ८ । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—ऋषि हेमराज के पठनार्थ ऋषि भारमल्ल ने जयदुर्ग मे प्रतिलिपि की थी । सं० १८२२ आषाढ सुदी २ मे ३) रु० देकर प० रेवतीसिंह के शिष्य रूपचन्द ने श्वेताम्बर जती से ली ।

२६०६. प्रति स० १० । पत्र सं० ६१ से १३१ । ले० काल स० १८३० आषाढ बुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० २६५ । छ भण्डार ।

विशेष—मोतीराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२६०७ प्रति स० ११ । पत्र स० ८४ । ले० काल स० १८८१ वैशाख सुदी १५ । वे० स० ३४४ । ज भण्डार ।

विशेष—कही २ टीका भी दी हुई है ।

२६०८ प्रति स० १२ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १७६६ मगसिर सुदी ५ । वे० स० ७ । व्न भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे २१ प्रतिया (वे० स० ६३८, ८०४, ७६१, ६२३, ११६६, ११६२, ८०६, ६१७, १२८६, १२८७ १२८८, १२६०, १६५६, १६६०, १३४२, १८३६, १५५८, १५५६, १५६० १८५१, २१०५) क भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० २१, २२, २३, २५, २६) ख भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स ६, १०, ११, २६६ २६६) ङ भण्डार मे ११ प्रतिया (वे० सं० १६, १७, १८, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६) च भण्डार मे ७ प्रतिया (वे० स० ८, ६, १०, ११, १२, १३, १४) छ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० १३६ १३६, १४१, २४ [क]) ज भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ५६, ३५०, ३५२, ६२) झ भण्डार १ प्रति (वे० स० ६५), तथा ट भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० १८००, १८८५, २१०१ तथा २०७६) और हैं ।

२६०६ अमरकोषटीका—भानुजीदीक्षित । पत्र स० ११४ आ० १०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत। विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६ । च भण्डार ।

विशेष—बघेल वशोद्भव श्री महीधर श्री कीर्त्तिसिंहदेव की आज्ञा से टीका लिखी गई।

२६१०. प्रति स० २ । पत्र स० २४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७ । च भण्डार ।

२६११. प्रति स० ३ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० स० १८८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड तक है ।

२६१२. एकाक्षरकोश—क्षपणक । पत्र स० ४ । आ० ११×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ९२ । क भण्डार ।

२६१३. प्रति स० २ । पत्र स० २ । ले० काल स० १८८६ कार्त्तिक सुदी ५ । वे० स० ५१ । च भण्डार ।

२६१४. प्रति सं० ३ । पत्र स० २ । ले० काल स० १६०३ चैत बुदी ६ । वे० स० १५५ । ज भण्डार ।

विशेष—प० सदासुखजी ने अपने शिष्य के प्रतिबोधार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२६१५. एकाक्षरीकोश—वररुचि । पत्र स० २ । आ० ११३×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०७१ । अ भण्डार ।

२६१६ एकाक्षरीकोश · । पत्र स० १० । आ० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३०० । अ भण्डार ।

र० काल × । ल० १० एकाक्षरनाममाला । पत्र स० ४ । आ० १२३×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश ।

विशेष—इसका नाम ०३ चैत्र बुदी ९ । पूर्ण । वे० स० ११५ । ज भण्डार ।

२८९८. प्रति स० २ । मे महाराजा रामसिंह के शासनकाल मे भ० देवेन्द्रकीत्ति के समय मे प० सदासुखजी

२८९९ प्रति स० ३ । प।

२९००. प्रति स० ४ । पत्रची (अमरकोश)—अमरसिंह । पत्र स० ३४ । आ० ११३×५३ इ च ।

सं० ९२१ । अ भण्डार । × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४१ । ञ भण्डार ।

२९०१. प्रति सं० ५ । पत्र स । मे आने वाले शब्दो की श्लोक सख्या दी हुई है । प्रत्येक श्लोक का प्रारम्भ

२९०२ प्रति सं० ६ । पत्र स०

३ प्रतिया (वे० सं० १४२, १४३, १४५) और हैं ।

भण्डार ।

२६१६. त्रिकाण्डशेषाभिधान—श्री पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० ४३ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८० । ङ भण्डार ।

२६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । च भण्डार ।

२६२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १६०३ आसौज बुदी ६ । वे० सं० १८६ ।

विशेष—जयपुर के महाराजा रामसिंह के शासनकाल मे पं० सदासुखजी के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२६२२ नाममाला—धनंजय । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४७ । अ भण्डार ।

२६२३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८३७ फागुण सुदी १ । वे० सं० २८२ । अ भण्डार ।

विशेष—पाटोदी के मन्दिर मे खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० १४, १०७३, १०८६) और हैं ।

२६२४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १३०६ कार्त्तिक बुदी ८ । वे० सं० ६३ । ङ भण्डार ।

विशेष—ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३२२) और है ।

२६२५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४३ ज्येष्ठ सुदी ११ । वे० सं० २४६ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० भारामल्ल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २६६) तथा ज भण्डार मे (वे० सं० २७६) की एक प्रति और है ।

२६२६ प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० १८५ । ञ भण्डार ।

२६२७ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८०१ फागुण सुदी ६ । वे० सं० ५२२ । ञ भण्डार ।

२६२८ प्रति सं० ७ । पत्र सं० १७ से ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०८ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० १०७३, १४, १०८६) ङ, छ तथा ज भण्डार मे १-१ प्रति (वे० सं० ३२२, २६६, २७६) और हैं ।

२८६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८०२ ज्येष्ठ सुदी १० । वे० स० ३७ । क
ण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञवृत्ति है ।

२८६२ प्रति सं० ४ । पत्र स० ७ से १३४ । ले० काल स० १७८० आसोज सुदी ११ । अपूर्ण । वे०
० ५ । घ भण्डार ।

२८६३ प्रति सं० ५ । पत्र स० ११२ । ले० काल स० १६२६ आषाढ बुदी २ । वे० स० ८५ । ज
डार ।

२८६४ प्रति सं० ६ । पत्र सं ५८ । ले० काल स० १८१३ बैशाख सुदी १३ । वे० स० १११ । ज
डार ।

विशेष—पं० भीमराज ने प्रतिलिपि की थी ।

२८६५. अभिधानरत्नाकर—धर्मचन्द्रगणि । पत्र स० २६ । आ० १०X४½ इ च । भाषा-सस्कृत ।
य-कोश । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ८२७ । अ भण्डार ।

२८६६. अभिधानसार—पं० शिवजीलाल । पत्र स० २३ । आ० १२X५½ इच । भाषा-सस्कृत ।
य-कोश । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ८ । ख भण्डार ।

विशेष—देवकाण्ड तक है ।

२८६७. अमरकोश—अमरसिंह । पत्र स० २६ । आ० १२X६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश ।
काल X । ले० काल स० १८०० ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० २०७५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम लिंगानुशासन भी है ।

२८६८. प्रति स० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८३५ । वे० स० १६११ । अ भण्डार ।

२८६९ प्रति स० ३ । पत्र स० ५४ । ले० काल स० १८११ । वे० स० ६२२ । अ भण्डार ।

२६००. प्रति स० ४ । पत्र स० १८ से ६१ । ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी १ । अपूर्ण । वे०
६२१ । अ भण्डार ।

२६०१. प्रति सं० ५ । पत्र स० ६६ । ले० काल सं० १८६४ । वे० स० २४ । क भण्डार ।

२६०२. प्रति सं० ६ । पत्र स० १३ से ६१ । ले० काल सं० १८२४ । वे० स० १२ । अपूर्ण । ख
र ।

२६४०. लिंगानुशासन—हेमचन्द्र। पत्र सं० १०। आ० १०X४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ६०। ज भण्डार।

विशेष—कही २ शब्दार्थ तथा टीका भी संस्कृत मे दी हुई है।

२६४१ विश्वप्रकाश—वैद्यराज महेश्वर। पत्र सं० १०१। आ० ११X४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय-कोश। र० काल X। ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ६६३। क भण्डार।

२६४२. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल X। वे० सं० ३३२। क भण्डार।

२६४३. विश्वलोचन—धरसेन। पत्र सं० १८। आ० १०३X४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल X। ले० काल स० १५६६। पूर्ण। वे० सं० २७५। च भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम मुक्तावली भी है।

२६४४. विश्वलोचनकोशकीशब्दानुक्रमणिका……। पत्र सं० २६। आ० १०X४३ इंच। भाषा–सस्कृत। विषय–कोश। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ८८७। अ भण्डार।

२६४५. शतक……। पत्र सं० ६। आ० ११X४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय–कोश। र० काल X ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ६६८। ङ भण्डार।

२६४६. शब्दप्रभेद व धातुप्रभेद—सकल वैद्य चूडामणि श्री महेश्वर। पत्र सं० १६। आ० १०X५३ इच। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २७७। ख भण्डार।

२६४७ शब्दरत्न……। पत्र सं० १६६। आ० ११X५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ३४६। ज भण्डार।

२६४८ शारदीनाममाला……। पत्र सं० २४ से ४७। आ० १०३X४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ६८३। अ भण्डार।

२६४६. शिलोञ्छकोश—कवि सारस्वत। पत्र सं० १७। आ० १०३X५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय-कोश। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। (तृतीयखंड तक) वे० स० ३४३। च भण्डार।

विशेष—रचना अमरकोश के आधार पर की गई है जैसा कि कवि के निम्न पद्यो से प्रकट है।

कवेरमर्हासिहस्य कृतिरेषाति निर्मला।
श्रीचन्द्रतारकं भूयान्नामलिंगानुशासनम्।

पद्यानिबोधयत्यर्क्क. शास्त्राणि कुरुते कविः
तत्सौरभनभस्वंत. संतस्तन्वन्तितद्‌गुणा.॥.

लूनेष्वमरसिंहेन, नामलिंगेषु शालिषु।
एष वाङ्मयवप्रेषु शिलोञ्छ क्रियते मया ॥

२६५०. सर्वार्थसाधनी—भट्टवररुचि। पत्र सं० २ से २४। आ० १२X५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल X। ले० काल सं० १५६७ मंगसिर बुदी ७। अपूर्ण। वे० सं० २१२। ख भण्डार।

विशेष—हिसार पिरोज्यकोट में रुद्रपल्लीयगच्छ के देवसुंदर के पट्ट मे श्रीजिनदेवसूरि ने प्रतिलिपि की थी।

ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान

२६५१. अरिहंत केवली पाशा ' ......। पत्र सं० १४ । आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। वषय-ज्योतिष। र० काल सं० १७०७ सावन सुदी ५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ रचना सहिजानन्दपुर मे हुई थी।

२६५२ अरिष्ट कर्ता ...... । पत्र सं० ३ । आ० ११×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५६ । ख भण्डार ।

विशेष—६० श्लोक हैं।

२६५३. अरिष्टाध्याय ...... । पत्र सं० ११ । आ० ८×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १८६६ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १३ । ख भण्डार ।

विशेष—प० जीवणराम ने शिष्य पन्नालाल के लिये प्रतिलिपि की। ६ पत्र से आगे भारतीस्तोत्र दिया हुआ है।

२६५४. अबजद केवली .. । पत्र सं० १० । आ० ८×४ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-शकुन शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५६। ञ भण्डार।

२६५५. उच्चग्रह फल ..... । पत्र सं० १ । आ० १०½×७½ इंच । भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

२६५६. करण कौतूहल........ । पत्र सं० ११ । आ० १०½×४¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१५ । ज भण्डार ।

२६५७. करलक्खण ..... । पत्र सं० ११ । आ० १०½×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-ज्योतिष। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं। माणिक्यचन्द्र ने वृन्दावन मे प्रतिलिपि की।

२६५८. कर्पूरचक्र—। पत्र सं० १। आ० १४½×११ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल × । ले० काल स० १८६३ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २१६४ । अ भण्डार ।

विशेष—चक्र अवन्ती नगरी से प्रारम्भ होता है, इसके चारो ओर देश चक्र है तथा उनका फल है। प० खुशाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

२८६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८०२ ज्येष्ठ सुदी १० । वे० स० ३७ । क भण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञवृत्ति है ।

२८६२ प्रति सं० ४ । पत्र स० ७ से १३४ । ले० काल स० १७८० आसोज सुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० ५ । च भण्डार ।

२८६३ प्रति सं० ५ । पत्र स० ११२ । ले० काल स० १६२६ आषाढ बुदी २ । वे० स० ८५ । ज भण्डार ।

२८६४ प्रति सं० ६ । पत्र सं ५८ । ले० काल स० १८१३ बैशाख सुदी १३ । वे० स० १११ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० भीमराज ने प्रतिलिपि की थी ।

२८६५. अभिधानरत्नाकर—धर्मचन्द्रगणि । पत्र स० २६ । आ० १०X४½ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ८२७ । अ भण्डार ।

२८६६ अभिधानसार—पं० शिवजीलाल । पत्र स० २३ । आ० १२X५½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ८ । ख भण्डार ।

विशेष—देवकाण्ड तक है ।

२८६७. अमरकोश—अमरसिंह । पत्र स० २९ । आ० १२X६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल X । ले० काल स० १८०० ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० २०७५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम लिंगानुशासन भी है ।

२८६८. प्रति स० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८३५ । वे० स० १६११ । अ भण्डार ।

२८६९. प्रति स० ३ । पत्र स० ५४ । ले० काल स० १८११ । वे० स० ६२२ । अ भण्डार ।

२९००. प्रति स० ४ । पत्र स० १८ से ६१ । ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० ६२१ । अ भण्डार ।

२९०१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ९६ । ले० काल सं० १८९४ । वे० स० २५ । क भण्डार ।

२९०२. प्रति स० ६ । पत्र स० १३ से ६१ । ले० काल सं० १८२४ । वे० स० १२ । अपूर्ण । भण्डार ।

२९७८. चन्द्रनाडीसूर्यनाडीकवच……। पत्र सं० ५-२३। आ० १०×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६८। ड भण्डार।

विशेष—इसके आगे पचव्रत प्रमाण लक्षण भी हैं।

२९७९. चमत्कारचिंतामणि……। पत्र सं० २-९। आ० १०×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० ×। १८१८ फागुण बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ६३२। अ भण्डार।

२९८०. चमत्कारचिन्तामणि……। पत्र स० २६। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७३०। ट भण्डार।

२९८१. छायापुरुषलक्षण……। पत्र सं० २। आ० ११×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सामुद्रिक शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १४४। छ भण्डार।

विशेष—नौनिधराम ने प्रतिलिपि की थी।

२९८२. जन्मपत्रीग्रहविचार……। पत्र स० १। आ० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २२१३। अ भण्डार।

२९८३. जन्मपत्रीविचार……। पत्र स० ३। आ० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६१०। अ भण्डार।

२९८४. जन्मप्रदीप—रोमकाचार्य। पत्र स० २-२०। आ० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८३१। अपूर्ण। वे० स० १०४८। अ भण्डार।

विशेष—शकरभट्ट ने प्रतिलिपि की थी।

२९८५. जन्मफल……। पत्र स० १। आ० ११३×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०२४। अ भण्डार।

२९८६ जातककर्मपद्धति……श्रीपति। पत्र स० १४। आ० ११×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १६३८ वैशाख सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ६००। अ भण्डार।

२९८७ जातकपद्धति—केशव। पत्र सं० १०। आ० ११×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१७। ज भण्डार।

२९८८ जातकपद्धति……। पत्र स० २६। आ० ८×६३। भाषा-संस्कृत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४६। ट भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

२९८९. जातकाभरण—दैवज्ञढुंढिराज । पत्र स० ४३ । आ० १०३X४३ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल X । ले० काल स० १७३६ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ८९७ । अ भण्डार ।

विशेष—नागपुर मे प० सुखकुशलगरिण ने प्रतिलिपि की थी ।

२९९०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०० । ले० काल स० १८४० कार्तिक सुदी ६ । वे० स० १५७ । ज भण्डार ।

विशेष—भट्ट गगाधर ने नागपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२९९१. जातकालंकार ...... । पत्र सं० १ से ११ । आ० १२X५ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १७४५ । ट भण्डार ।

२९९२. ज्योतिषरत्नमाला ...... । पत्र स० ९ से २४ । आ० १०३X४३ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १९८३ । अ भण्डार ।

२९९३. प्रति सं० २ । पत्र स० ३५ । ले० काल X । वे० स० १५४ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२९९४. ज्योतिषमणिमाला ...... केशव । पत्र स० ५ से २७ । आ० ९३X४३ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २२०५ । अ भण्डार ।

२९९५ ज्योतिषफलग्रंथ ...... । पत्र स० ९ । आ० १०३X४३ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१४ । ज भण्डार ।

२९९६. ज्योतिषसारभाषा—कृपाराम । पत्र सं० ३ से १३ । आ० ९३X६ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–ज्योतिष । र० काल X । ले० काल स० १८४१ कार्तिक बुदी १२ । अपूर्ण । वे० स० १५१३ । भण्डार ।

विशेष—फतेराम वैद्य ने नोनिधराम वज की पुस्तक से लिखा ।

आदि भाग—(पत्र ३ पर)

अथ केंदरिया त्रिकोण घर को भेद—

केंदरियो चोथो भवन सपतम दसमो जान ।
पचम अरु नोमो भवन येह त्रिकोण बखान ॥६॥
तीजो षसटम ग्यारमो अर दसमो वर सेखि ।
इन को उपचे कहत है सबै ग्रंथ में देखि ॥७॥

अन्तिम—

वरष लग्यो जा अंस मे सोई दिन चित धारि।
वा दिन उतनी घडी ज़ु पल बीते लग्न विचारि ॥४०॥

लगन लिखे तै गिरह जो जा घर बैठो आय।
ता घर के फल सुफल को कीजे मित बनाय ॥४१॥

इति श्री कवि कृपाराम कृत भाषा ज्योतिषसार सपूर्ण।

२९९७ ज्योतिषसारलग्नचन्द्रिका—काशीनाथ। पत्र स० ६३। आ० ६½×४ इंच। भाषा–सस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १८६३ पौष सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६३। ख भण्डार।

२९९८. ज्योतिषसारसूत्रटिप्पण—नारचन्द्र। पत्र स० १६। आ० १०×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० म० २८२। व्य भण्डार।

विशेष—मूलग्रन्थकर्त्ता सागरचन्द्र हैं।

२९९९. ज्योतिषशास्त्र ....। पत्र सं० ११। आ० ५×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०१। ङ भण्डार।

३००० प्रति सं० २। पत्र सं० ३३। ले० काल ×। वे० सं० ५२१। व्य भण्डार।

३००१. ज्योतिषशास्त्र......। पत्र स० ५। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १९८४। ट भण्डार।

३००२. ज्योतिषशास्त्र......। पत्र सं० ५८। आ० ६×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–ज्योतिष र० काल ×। ले० काल स० १७९८ ज्येष्ठ सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० ११९५। अ भण्डार।

विशेष—ज्योतिष विषय का संग्रह ग्रन्थ है।

प्रारम्भ मे कुछ व्यक्तियो के जन्म टिप्पण दिये गये हैं इनकी सख्या २२ है। इनमे मुख्यरूप से निम्न ना तथा उनके जन्म समय उल्लेखनीय हैं—

महाराजा बिशनसिह के पुत्र महाराजा जयसिह	जन्म सं० १७४५ मंगसिर
महाराजा विशनसिह के द्वितीय पुत्र विजयसिह	जन्म सं० १७४७ चैत्र सुदी ६
महाराजा सवाई जयसिह की राणी गौंडि के पुत्र	सं० १७६६
रामचन्द्र (जन्म नाम भाभूराम)	सं० १७१५ फागुण सुदी २
दौलतरामजी (जन्म नाम बेगराज)	सं० १७४९ आषाढ बुदी १४

३००३. ताजिकसमुच्चय…… । पत्र सं० १५ । आ० ११×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वे० सं० २५५ । ख भण्डार

विशेष—बडा नरायने मे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे जीवणराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३००४ तात्कालिकचन्द्रशुभाशुभफल ……। पत्र सं० ३ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

३००५ त्रिपुरबंधमुहूर्त । पत्र सं० १ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११८८ । अ भण्डार ।

३००६. त्रैलोक्यप्रकाश ……। पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१२ । अ भण्डार ।

विशेष—१ से ६ तक दूसरी प्रति के पत्र हैं । २ से १४ तक वाली प्रति प्राचीन है । दो प्रतियो का सम्मिश्रण है ।

३००७ दशोठनमुहूर्त्त । पत्र सं० ३ । आ० ७३×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७२१ । अ भण्डार ।

३००८. नक्षत्रविचार । पत्र सं० ११ । आ० ८×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८६८ । पूर्ण । वे० सं० २७६ । झ भण्डार ।

विशेष—छींक आदि विचार भी दिये हुये हैं ।

निम्नलिखित रचनायें और हैं—

सज्जनप्रकाश दोहा—	कवि ठाकुर	हिन्दी [१० कवित्त]
मित्रविषय के दोहे—		हिन्दी [४४ दोहे हैं]
रक्तगुञ्जाकल्प—		हिन्दी [ले० काल सं० १९१७]

विशेष—लाल चिरमी का सेवन बताया गया है कि के साथ लेने से क्या असर होता है इसका वर्णन ३६ दोहो मे किया गया है ।

३००९. नक्षत्रवेधपीडाज्ञान ……। पत्र सं० ६ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । पूर्ण । वे० ८६४ । अ भण्डार ।

३०१०. नक्षत्रसत्र" ……। पत्र सं० ३ से २४ । आ० ६×३३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८०१ मंगसिर सुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० १७३६ । अ भण्डार

३०११ नरपतिजयचर्या—नरपति। पत्र सं० १४८। आ० १२३/४×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल सं० १५२३ चैत्र सुदी १५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६४६। अ भण्डार।

विशेष—४ से १२ तक पत्र नही हैं।

३०१२ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र—नारचन्द्र। पत्र सं० २६। आ० १०×४३/४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८१० मगसिर बुदी १४। पूर्ण। वे० सं० १७२। अ भण्डार।

३०१३ प्रति सं० २। पत्र सं० १७। ले० काल ×। वे० सं० ३४५। अ भण्डार।

३०१४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १८६५ फागुण सुदी २। वे० सं० ६५। ख भण्डार।

विशेष—प्रत्येक पंक्ति के नीचे अर्थ लिखा हुआ है।

३०१५. निमित्तज्ञान (भद्रबाहु संहिता)—भद्रबाहु। पत्र सं० ७७। आ० १०३/४×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७७। अ भण्डार।

३०१६ निषेकाध्यायवृत्ति ···। पत्र सं० १८। आ० ८×६३/४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४८। ट भण्डार।

विशेष—१८ से आगे पत्र नही है।

३०१७. नीलकण्ठताजिक—नीलकण्ठ। पत्र सं० १४। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०५८। अ भण्डार।

३०१८ पञ्चांगप्रबोध ·····। पत्र सं० १०। आ० ८×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७३५। ट भण्डार।

३०१९. पंचांग—चण्डू। छ भण्डार।

विशेष—निम्न वर्षो के पंचांग हैं।

संवत् १८२६, ५२, ५४, ५५, ५६, ५८, ६१, ६२, ६५, ७१, ७२, ७३, ७४, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ९०, ९१, ९३, ९७, ९८।

३०२०. पंचांग·····। पत्र सं० १३। आ० ७३/४×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १९२७। पूर्ण। वे० सं० २४७। ख भण्डार।

३०२१. पंचांगसाधन—गणेश (केशवपुत्र)। पत्र सं० ५२। आ० ९×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८८२। वे० सं० १७३१। ट भण्डार।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० १०७१, १०८८, ७६८) ख भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १०८) छ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ११६, ११४, ११४) ट भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १८२४) और हैं।

३०३५ पाशाकेवली······। पत्र सं० ५। आ० ११३/४×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी विषय–निमित्तशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८४१। पूर्ण। वे० स० ३६५। अ भण्डार।

विशेष—प० रतनचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

३०३६ प्रति सं० २। पत्र स० ५। ले० काल ×। वे० स० २५७। ज भण्डार।

३०३७. प्रति सं० ३। पत्र स० २६। ले० काल ×। वे० स० ११६। ञ भण्डार।

३०३८. पाशाकेवली······। पत्र सं० १। आ० ६×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–निमित्त शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८५६। अ भण्डार।

३०३९ पाशाकेवली······। पत्र सं० १३। आ० ८१/२×५१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–निमित्त शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८५०। अपूर्ण। वे० स० ११८। छ भण्डार।

विशेष—विशनलाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। प्रथम पत्र नही हैं।

३०४०. पुरश्चरणविधि······। पत्र सं० ४। आ० १०×४१/२ इच। भाषा–सस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६३४। अ भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण है। पत्र भीग गये हैं जिससे कई जगह पढा नही जा सकता।

३०४१. प्रश्नचूडामणि······। पत्र स० १३। आ० ६×४१/२ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १३६६। अ भण्डार।

३०४२ प्रति स० २। पत्र स० १६। ले० काल स० १८०८ आसोज सुदी १२। अपूर्ण। वे० स० १४५। छ भण्डार।

विशेष—तीसरा पत्र नही है विजैराम अजमेरा चोटसू वाले ने प्रतिलिपि की थी।

३०४३ प्रश्नविद्या······। पत्र स० २ से ५। आ० १०×४ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १३३। छ भण्डार।

३०४४. प्रश्नविनोद ······। पत्र स० १६। आ० १०×४१/२ इच। भाषा–सस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८४। छ भण्डार।

३०४५. प्रश्नमनोरमा—गर्ग। पत्र स० ३। आ० १३×४ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १६२८ भादवा सुदी ७। वे० सं० १७४१। ट भण्डार।

३०४६. प्रश्नमाला..... ...। पत्र सं० १० । आ० ९X५३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०६५ । अ भण्डार ।

३०४७ प्रश्नसुगनावलिरमल । पत्र स० ४ । आ० ६३X५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ४६ । झ भण्डार ।

३०४८ प्रश्नावलि .. । पत्र स० ७ । आ० ६X३३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय ज्योतिष । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १८१७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नही हैं ।

३०४९ प्रश्नसार . । पत्र सं० १९ । आ० १२३X६ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल X । ले० काल स० १९२९ फागुण बुदी १४ । वे० सं० ३३६ । ज भण्डार ।

३०५० प्रश्नसार—हयग्रीव । पत्र स० १२ । आ० ११X५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल X । लें० काल स० १९२९ । वे० स० ३३३ । ज भण्डार ।

विशेष—पत्रो पर कोष्ठक बने हैं जिन पर अक्षर लिखे हुये हैं उनके अनुसार शुभाशुभ फल निकलता है

३०५१ प्रश्नोत्तरमाणिक्यमाला—सग्रहकर्त्ता ब्र० ज्ञानसागर । पत्र सं० २७ । आ० १२X५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल X । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वे० स० २६१ । ख भण्डार ।

३०५२. प्रति सं० २ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १८६१ चैत्र बुदी १० । अपूर्ण । वे० स० ११० ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति प्रश्नोत्तर माणिक्यमाला महाग्रन्थे भट्टारक श्री चरणारविंद मधुकरोपमा ब्र० ज्ञानसागर सग्रहीते श्री जिनमाश्रित प्रथमोधिकार ॥ प्रथम पत्र नही है ।

३०५३. प्रश्नोत्तरमाला । पत्र स० २ से २२ । आ० ७३X४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल X । ले० काल सं० १८९४ । अपूर्ण । वे० स० २०९८ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री बलदेव वालाहेडी वाले ने बाबा बालमुकुन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३०५४. प्रति स० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल स० १८१७ आसोज सुदी ५ । वे० स० ११४ । ख भण्डार ।

३०५५. भवानीवाक्य ....। पत्र सं० ५ । आ० ९X५३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १२८२ । अ भण्डार ।

विशेष—सं० १९०५ से १९९९ तक के प्रतिवर्ष का भविष्य फल दिया हुआ है ।

३०५६ भडली · · । पत्र सं० ११ । आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४० । छ भण्डार ।

विशेष—मेघ गर्जना, बरसना तथा बिजली आदि चमकने से वर्ष फल देखने सम्बन्धी विचार दिये हुये हैं ।

३०५७ भास्वती—पद्मनाभ । पत्र सं० ६ । आ० ११×३½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६४ । च भण्डार ।

३०५८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २६५ । च भण्डार ।

३०५६. भुवनदीपिका··· । पत्र स० २२ । आ० ७½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १६१५ । पूर्ण । वे० स० २४१ । ज भण्डार ।

३०६०. भुवनदीपक—पद्मप्रभसूरि । पत्र स० ५८ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८६५ । अ भण्डार ।

विशेष -प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३०६१ प्रति सं० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १८५६ फागुण सुदी १० । वे० सं० ६१२ । अ भण्डार ।

विशेष—खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६२. प्रति स० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० २६६ । च भण्डार ।

विशेष—पत्र १७ से आगे कोई अन्य ग्रन्थ है जो अपूर्ण है ।

३०६३. भृगुसंहिता · · । पत्र स० २० । आ० ११×७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६४ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३०६४ मुहूर्त्तचिन्तामणि ·· । पत्र स० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १८८६ । अपूर्ण । वे० सं० १४७ । ख भण्डार ।

३०६५. मुहूर्त्तमुक्तावली · । पत्र स० ६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १८१६ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १३६४ । अ भण्डार ।

३०६६ मुहूर्त्तमुक्तावली—परमहंस परिव्राजकाचार्य । पत्र स० ६ । आ० ६½×६½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०१२ । अ भण्डार ।

विशेष—सब कार्यो के मुहूर्त्त का विवरण है ।

३०६७. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८७१ वैसाख बुदी १ । वे० सं० १४८ । ख भण्डार ।

३०८१. रमलज्ञान ....। पत्र सं० ५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा- हिन्दी गद्य। विषय-निमित्तशास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १८६६। वे० सं० ११८। छ भण्डार।

विशेष—आदिनाथ चैत्यालय मे आचार्य रतनकीर्त्ति के प्रशिष्य सवाईराम के शिष्य नौनदराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०८२ प्रति स० २। पत्र सं० २ से ४४। ले० काल स० १८७८ आषाढ बुदी ३। अपूर्ण। वे० स० १५६४। ट भण्डार।

३०८३. राजादिफल ...। पत्र स० ४। आ० ६३/४×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८२१। पूर्ण। वे० स० १६२। ख भण्डार।

३०८४. राहुफल ... ...। पत्र स० ८। आ० ६३/४×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १८०३ ज्येष्ठ सुदी ८। पूर्ण। वे० स० ६६६। च भण्डार।

३०८५. रुद्रज्ञान ...। पत्र सं० १। आ० ६३/४×४ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-शकुन शास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १७५७ चैत्र। पूर्ण। वे० सं० २११६। अ भण्डार।

विशेष—देधरणाग्राम मे लालसागर ने प्रतिलिपि की थी।

३०८६. लग्नचन्द्रिकाभाषा ....। पत्र सं० ८। आ० ८×५ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३४८। झ भण्डार।

३०८७. लग्नशास्त्र—वर्द्धमानसूरि। पत्र स० ३। आ० १०×४१/२ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६। ज भण्डार।

३०८८ लघुजातक—भट्टोत्पल। पत्र स० १७। आ० ११×५ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। वे० स० १६३। व भण्डार।

३०८६. वर्षबोध ..। पत्र स० ५०। आ० १०१/२×५ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ८६३। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है। वर्षफल निकालने की विधि दी हुई है।

३०६०. विवाहशोधन .। पत्र स० २। आ० ११×१ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१६२। अ भण्डार।

३०६१ बृहज्जातक—भट्टोत्पल। पत्र स० ४। आ० १०३/४×४१/२ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८०२। ट भण्डार।

विशेष—भट्टारक महेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य भारमल्ल ने प्रतिलिपि की थी।

३०६२ षट्पंचाशिका—वराहमिहर। पत्र सं० ६। आ० ११×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १७९६। पूर्ण। वे० सं० ७३६। ड भण्डार।

३०९३ षट्पचासिकावृत्ति—भट्टोत्पल। पत्र स० २२। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १७८८। अपूर्ण। वे० स० ६४४। अ भण्डार

विशेष—हेमराज मिश्र ने तथा साह पूरणमल ने प्रतिलिपि की थी। इसमे १, २, ८, ११ पत्र नही है।

३०६४ शकुनविचार । पत्र स० ५। आ० ६३×४३ इंच। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–शकुन शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १४८। छ भण्डार।

३०६५. शकुनावली । पत्र स० २। आ० ११×५ इच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ९५८। अ भण्डार।

विशेष—५२ अक्षरो का यत्र दिया हुआ है।

३०६६ प्रति स० २। पत्र स० ४। ले० काल स० १८६६। वे० स० १०२०। अ भण्डार।

विशेष—प० सदासुखराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०६७. शकुनावली—गर्ग। पत्र स० २ से ५। आ० १२×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०५४। अ भण्डार।

विशेष—इसका नाम पाशाकेवली भी है।

३०६८. प्रति स० २। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० स० ११६। अ भण्डार

विशेष—अमरचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

३०९९ प्रति सं० ३। पत्र स० १०। ले० काल स० १८१३ मगसिर सुदी ११। अपूर्ण। वे० स० २७९। अ भण्डार

३१०० प्रति स० ४। पत्र स० ३ से ७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०६८। ट भण्डार।

३१०१ शकुनावली—अबजद। पत्र स० ७। आ० ११×५६ इच। भाषा-हिन्दी। विषय–शकुन शास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १८६२ सावन सुदी ७। पूर्ण। वे० स० २५८। ज भण्डार

३१०२ शकुनावली । पत्र स० १३। आ० ८३×४ इच। भाषा–पुरानी हिन्दी। विषय–शकुन शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ११४। छ भण्डार

३१०३. प्रति स० २। पत्र स० १६। ले० काल स० १७८१ सावन बुदी १४। वे० स० ११४। छ भण्डार।

विशेष—रामचन्द्र ने उदयपुर में राणा सग्रामसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की थी। २० कमलाकार चक्र हैं जिनमे २० नाम दिये हुये है। पत्र ५ से आगे प्रश्नो का फल दिया हुआ है।

३१०४. प्रति सं० ३। पत्र स० १४। ले० काल ×। वे० स० ३४०। झ भण्डार

३१०५ शकुनावली ·। पत्र स० ५ से ८। आ० ११×५ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १८९०। अपूर्ण। वे० स० १२५८। अ भण्डार।

३१०६. शकुनावली······। पत्र स० २। आ० १२×५ इ च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-शकुनशास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १८०८ आसोज बुदी ८। पूर्ण। वे० स० १६६६। अ भण्डार।

विशेष—पातिशाह के नाम पर रमलशास्त्र है।

३१०७ शनश्चिरदृष्टिविचार · । पत्र स० १। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८४९। अ भण्डार

विशेष—द्वादश राशिचक्र मे से शनिश्चर दृष्टि विचार है।

३१०८ शीघ्रबोध—काशीनाथ। पत्र स० ११ से ३७। आ० ८३/४×४१/२ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६४३। अ भण्डार।

३१०९. प्रति स० २। पत्र स० ३१। ले० काल स० १८३०। वे० स० १८६। ख भण्डार।

विशेष—प० माणिकचन्द्र ने छोढीग्राम मे प्रतिलिपि की थी।

३११० प्रति स० ३। पत्र स० ३८। ले० काल स० १८४८ आसोज सुदी ६। वे० स० १३८। छ भण्डार।

विशेष—सपतिराम खिन्दूका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३१११. प्रति स० ४। पत्र स० ७१। ले० काल स० १८६८ आषाढ बुदी १४। वे० स० २५५। छ भण्डार।

विशेष—आ० रत्नकीर्त्ति के शिष्य प० सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ९०४, १०५६, १५५१, २२००) ख भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १८७) छ, झ तथा ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० १३८, १९२ तथा २११६) और है।

३११२. शुभाशुभयोग · । पत्र स० ७। आ० ९३/४×४ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १८७५ पौष सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० १८८। ख भण्डार।

विशेष—प० हीरालाल ने जोबनेर मे प्रतिलिपि की थी।

३११३. संक्रातिफल · ·। पत्र स० १। आ० १०×४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०१। ख भण्डार।

३०६२ षट्पंचाशिका—वराहमिहर। पत्र स० ६ । आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १७६६ । पूर्ण । वे० स० ७३६ । ड भण्डार ।

३०६३ षट्पचासिकावृत्ति—भट्टोत्पल । पत्र स० २२ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १७८८ । अपूर्ण । वे० स० ६४४ । अ भण्डार

विशेष—हेमराज मिश्र ने तथा साह पूरणमल ने प्रतिलिपि की थी। इसमे १, २, ८, ११ पत्र नही हैं ।

३०६४ शकुनविचार । पत्र स० ५ । आ० ६½×४¾ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४८ । छ भण्डार ।

३०६५. शकुनावली । पत्र स० २ । आ० ११×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५८ । अ भण्डार ।

विशेष—५२ अक्षरो का यत्र दिया हुआ है ।

३०६६ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १८६१ । वे० स० १०२० । अ भण्डार ।

विशेष—प० सदासुखराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६७. शकुनावली—गर्ग । पत्र स० २ से ५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०५४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम पाशाकेवली भी है ।

३०६८. प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० सं० ११६ । अ भण्डार

विशेष—अमरचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६६ प्रति सं० ३ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८१३ मगसिर सुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० २७६ । अ भण्डार

३१०० प्रति स० ४ । पत्र स० ३ से ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०६८ । ट भण्डार ।

३१०१ शकुनावली—अबजद । पत्र स० ७ । आ० ११×५¼ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १८६२ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २५८ । ज भण्डार

३१०२ शकुनावली । पत्र स० १३ । आ० ८½×४ इच । भाषा-पुरानी हिन्दी । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११४ । छ भण्डार

३१०३. प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १७८१ सावन बुदी १४ । वे० स० ११४ । छ भण्डार ।

विशेष—रामचन्द्र ने उदयपुर मे राणा सग्रामसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की थी। २० कमलाकार चक्र हैं जिनमे २० नाम दिये हुये है। पत्र ५ से आगे प्रश्नो का फल दिया हुआ है।

३१०४. प्रति स० ३। पत्र स० १४। ले० काल X। वे० स० ३४०। झ भण्डार

३१०५. शकुनावली ' । पत्र स० ५ मे ८। आ० ११X५ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। र० काल X। ले० काल स० १८६०। अपूर्ण। वे० स० १२५८। अ भण्डार।

३१०६. शकुनावली"" "। पत्र स० २। आ० १२X५ इ च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-शकुनशास्त्र। र० काल X। ले० काल स० १८०८ आसोज बुदी ८। पूर्ण। वे० स० १६६६। अ भण्डार।

विशेष—पातिशाह के नाम पर रमलशास्त्र है।

३१०७. शनश्चिरदृष्टिविचार"' । पत्र स० १। आ० १२X५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १८४६। अ भण्डार

विशेष—द्वादश राशिचक्र मे से शनिश्चर दृष्टि विचार है।

३१०८ शीघ्रबोध—काशीनाथ। पत्र स० ११ से ३७। आ० ८३/४X४१/२ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० १६४३। अ भण्डार।

३१०६ प्रति स० २। पत्र स० ३१। ले० काल स० १८३०। वे० स० १८६। ख भण्डार।

विशेष—प० माणिकचन्द्र ने चोढीग्राम मे प्रतिलिपि की थी।

३११० प्रति स० ३। पत्र स० ३८। ले० काल स० १८४८ आसोज सुदी ६। वे० स० १३८। छ भण्डार।

विशेष—सपतिराम खिन्दूका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३१११. प्रति स० ४। पत्र स० ७१। ले० काल स० १८६८ आषाढ बुदी १४। वे० स० २५५। छ भण्डार।

विशेष—आ० रत्नकीर्त्ति के शिष्य प० सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ६०४, १०५६, १५५१, २२००) ख भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १८७) छ, झ तथा ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० १३८, १६२ तथा २११६) और हैं।

३११२. शुभाशुभयोग · । पत्र स० ७। आ० ६३/४X४ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल X। ले० काल स० १८७५ पौष सुदी १०। पूर्ण। वे० स० १८८। ख भण्डार।

विशेष—प० हीरालाल ने जोबनेर मे प्रतिलिपि की थी।

३११३. संक्रातिफल ' " । पत्र स० १। आ० १०X४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २०१। ख भण्डार।

३११४. सक्रांतिफल ''' । पत्र सं० १६ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । लि० काल स० १६०१ भादवा बुदी ११ । वे० स० २१३ । ज भण्डार

३११५. संक्रांतिवर्णन''''' । पत्र स० २ । आ० ६×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । लि० काल × । पूर्ण । वे० स० १६४६ । अ भण्डार

३११६ समरसार—रामवाजपेय । पत्र स० १८ । आ० १३×४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । लि० काल स० १७१३ । पूर्ण । वे० स० १७३२ । ट भण्डार

विशेष—योगिनीपुर (दिल्ली) मे प्रतिलिपि हुई । स्वर शास्त्र से लिया हुआ है ।

३११७. सवत्सरी विचार ''''' । पत्र सं० ८ । आ० ६×६½ इच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-ज्योतिष । र० काल × । लि० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८६ । झ भण्डार

विशेष—स० १६५० से स० २००० तक का वर्षफल है ।

३११८. सामुद्रिकलक्षण'''' । पत्र स० १८ । आ० ६×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । स्त्री पुरुषो के अगो के शुभाशुभ लक्षण आदि दिये हैं । र० काल × । लि० काल सं० १५६४ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० २८१ । व्र भण्डार

३११६ सामुद्रिकविचार' '' । पत्र स० १४ । आ० ८½×४½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । लि० काल सं० १७६१ पौष बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ६८ । ज भण्डार ।

३१२०. सामुद्रिकशास्त्र—श्रीनिधिसमुद्र । पत्र स० ११ । आ० १२×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त । र० काल × । लि० काल × । पूर्ण । वे० स० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—अत मे हिन्दी मे १३ शृङ्गार रस के दोहे हैं तथा स्त्री पुरुषो के अगो के लक्षण दिये हैं ।

३१२१. सामुद्रिकशास्त्र ' । पत्र स० ६ । आ० १४×४ इच । भाषा-प्राकृत । विषय-निमित्त । र० काल × । लि० काल × । पूर्ण । वे० स० ७८४ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ ८ तक सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

३१२२. सामुद्रिकशास्त्र । पत्र स० ४१ । आ० ८½×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त । र० काल × । लि० काल स० १८२७ ज्येष्ठ सुदी १० । अपूर्ण । वे० स० ११०६ । अ भण्डार ।

विशेष—स्वामी चेतनदास ने गुमानीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । २, ३, ४ पत्र नही हैं ।

३१२३ प्रति सं० २ । पत्र स० २३ । लि० काल स० १७६० फागुण बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं ।

३१२४. सामुद्रिकशास्त्र ··· । पत्र सं० ८ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्त । र० काल × । ले० काल स० १८८० । पूर्ण । वे० सं० ८६२ । अ भण्डार ।

३१२५. प्रति सं० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११४७ । अ भण्डार ।

३१२६. सामुद्रिकशास्त्र । पत्र स० १४ । आ० ८×६ इ च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–निमित्त । र० काल × । ले० काल स० १६०८ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० २७७ । म भण्डार ।

३१२७ सारणी ·· । पत्र स० ४ से १३४ । आ० १२×४½ इ च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १७१६ भादवा बुदी ८ । अपूर्ण । वे० स० ३६३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० ३६४, ३६५, ३६६, ३६७) और है ।

३१२८ सारावली ···· । पत्र सं० १ । आ० ११×३½ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०२५ । अ भण्डार ।

३१२६ सूर्यगमनविधि · । पत्र स० ५ । आ० ११½×४½ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०५६ । अ भण्डार ।

विशेष—जैन ग्रन्थानुसार सूर्यचन्द्रगमन विधि दी हुई है । केवल गणित भाग दिया है ।

३१३० सोमउत्पत्ति ·· । पत्र स० २ । आ० ८½×४ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १८०३ । पूर्ण । वे० स० १३८६ । अ भण्डार ।

३१३१. स्वप्नविचार · । पत्र स० १ । आ० १२×५½ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–निमित्तशास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १८१० । पूर्ण । वे० स० ६०६ । अ भण्डार ।

३१३२ स्वप्नाध्याय । पत्र सं० ४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१४७ । अ भण्डार ।

३१३३. स्वप्नावली—देवनन्दि । पत्र स० ३ । आ० १२×७½ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६५८ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ८३६ । क भण्डार ।

३१३४ प्रति सं० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ८३७ । क भण्डार ।

३१३५. स्वप्नावलि ·· · । पत्र स० २ । आ० १०×७ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्तशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८३५ । क भण्डार ।

३१३६ होराज्ञान । पत्र स० १३ । आ० १०×५ इ च । भाषा–संस्कृत । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०४५ । अ भण्डार ।

विषय-आयुर्वेद

३१३७. अजीर्णरसमञ्जरी । पत्र स० ५ । आ० ११½×५½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल स० १७८८ । पूर्ण । वे० म० १०५१ । अ भण्डार ।

३१३८. प्रति सं० २ । पत्र स० ७ । ले० काल X । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३१३९. अजीर्णमञ्जरी—काशीराज । पत्र स० ५ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २८६ । ख भण्डार ।

३१४०. अद्भुतसागर । पत्र स० ४० । आ० ११½×४½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १३४० । अ भण्डार ।

३१४१ अमृतसागर—महाराजा सवाई प्रतापसिंह । पत्र स० ११७ से १६४ । आ० १२½×६½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २९ । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत ग्रन्थ के आधार पर है ।

३१४२. प्रति स० २ । पत्र स० ५३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३२ । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मूल भी दिया है ।

ङ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३०, ३१) अपूर्ण और हैं ।

३१४३ प्रति स० ३ । पत्र स० १४ से १५० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०३६ । ट भण्डार ।

३१४४ अर्थप्रकाश—लंकानाथ । पत्र स० ४७ । आ० १०½×८ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल स० १९८४ सावण बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ८८ । ञ भण्डार ।

विशेष—आयुर्वेद विषयक ग्रन्थ है । प्रत्येक विषय को शतक मे विभक्त किया गया है ।

३१४५. आत्रेयवैद्यक—आत्रेयऋषि । पत्र स० ४२ । आ० १०×४½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल स० १८०७ भादवा बुदी १४ । वे० स० २३० । छ भण्डार ।

३१४६ आयुर्वेदिक नुसखों का संग्रह । पत्र स० १६ । आ० १०×४½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २३० । छ भण्डार ।

३१४७. प्रति सं० २ । पत्र स० ४ । ले० काल X । वे० स० ६३ । ज भण्डार ।

३१४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ से ६२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २१८१ । ट भण्डार ।

विशेष—६२ से आगे के भी पत्र नही हैं।

३१४६. आयुर्वेदिक नुस्खे'' । पत्र सं० ४ से २० । आ० ८X५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ६५ । क भण्डार ।

विशेष—आयुर्वेद सम्बन्धी कई नुस्खे दिये हैं।

३१५०. प्रति सं० २ । पत्र स० ४१ । ले० काल X । वे० स० २५६ । ख भण्डार ।

विशेष—एक पत्र मे एक ही नुस्खा है।

इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० २६०, २६६, २६६) और हैं।

३१५१. आयुर्वेदिकग्रंथ ''''''। पत्र स० १६ । आ० १०३/४X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०७६ । ट भण्डार ।

३१५२. प्रति स० २ । पत्र सं० १८ से ३० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । ट भण्डार ।

३१५३. अयुर्वेदमहोदधि—सुखदेव । पत्र सं० २४ । आ० ६३/४X४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३५५ । ञ भण्डार ।

३१५४ कक्षपुट—सिद्धनागार्जुन । पत्र स० ४२ । आ० १४X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद एवं मन्त्रशास्त्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १३ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का कुछ भाग फटा हुआ है।

३१५५. कल्पस्थान (कल्पव्याख्या)''' । पत्र सं० २१ । आ० ११३/४X५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल स० १७०२ । पूर्ण । वे० स० १८६७ । ट भण्डार ।

विशेष—सुश्रुतसहिता का एक भाग है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति सुश्रुतीयाया संहिताया कल्पस्थानं समाप्तं ॥

३१५६. कालज्ञान'''''। पत्र स० ३ से १६ । आ० १०X४३/४ इच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०७८ । अ भण्डार ।

३१५७. प्रति स० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । वे० स० ३२ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल अष्टम समुद्देश है।

३१५८. प्रति सं० ३ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १८४१ मंगसिर सुदी ७ । वे० सं० ३३ । ख भण्डार ।

विशेष—भिरुद् ग्राम मे खेमचन्द के लिए प्रतिलिपि की गई थी। कुछ पत्रो की टीका भी दी हुई है।

३१५६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

३१६०. प्रति सं० ५ । पत्र स० १० । ले० काल X । वे० सं० १६७४ । ट भण्डार ।

३१६१. चिकित्साजनम्—उपाध्यायविद्यापति । पत्र स० २० । आ० ६X८ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल सं० १६१५ । पूर्ण । वे० स० ३५२ । ञ भण्डार ।

३१६२ चिकित्सासार" " । पत्र स० ११ । आ० १३X६३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १८० । क भण्डार ।

३१६३ प्रति स० २ । पत्र स० ५–३१ । । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०७६ । ट भण्डार ।

३१६४. चूर्णाधिकार" "" । पत्र सं० १२ । आ० १३X६३ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १८१६ । ट भण्डार ।

३१६५. ज्वरलक्षण"" ""। पत्र सं० ४ । आ० ११X४½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय–आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १८६२ । ट भण्डार ।

३१६६. ज्वरचिकित्सा" " । पत्र स० ५ । आ० १०½X४½ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १२३७ । अ भण्डार ।

३१६७ प्रति सं० २ । पत्र स० ११ से ३१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०६४ । ट भण्डार ।

३१६८. ज्वरतिमिरभास्कर—चामुंडराय । पत्र स० ६४ । आ० १०X६३ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल स० १८०६ माह सुदी १३ । वे० सं० १३०७ । अ भण्डार ।

विशेष—माधोपुर मे किशनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३१६६ त्रिशती—शार्ङ्गधर । पत्र स० ३२ । आ० १०३X५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । वे० स० ६३१ । अ भण्डार ।

३१७०. प्रति सं० २ । पत्र स० ६२ । ले० काल स० १६१६ । वे० सं० २५३ । ञ भण्डार ।

विशेष—पद्य स० ३३३ है ।

३१७१ नहनसीपाराविधि " । पत्र स० ३ । आ० ११X५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय–आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १३०६ । अ भण्डार ।

३१७२ नाडीपरीक्षा"" " । पत्र स० ६ । आ० ११X५ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २३० । छ भण्डार ।

३१७३ निघंटु ...... | पत्र स० २ से ८८ | पत्र सं० ११×५ | भाषा-संस्कृत | विषय-आयुर्वेद | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० २०७७ | अ भण्डार |

३१७४. प्रति सं० २ | पत्र सं० २१ से ८६ | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० २०८४ | अ भण्डार |

३१७५ पंचप्ररूपणा ...... | पत्र सं० ११ | आ० १०×४½ इञ्च | भाषा-संस्कृत | विषय-आयुर्वेद | र० काल × | ले० काल स० १५५७ | अपूर्ण | वे० स० २०८० ट भण्डार |

विशेष—केवल ११वा पत्र ही है | ग्रन्थ मे कुल १५८ श्लोक हैं |

प्रशस्ति—सं० १५५७ वर्षे ज्येष्ठ बुदी ८ | देवगिरिनगरे राजा सूर्यमल्ल प्रवर्त्तमाने ब्र० आढू लिखितं कर्मक्षयनिमित्तं | ब्र० जालप जोग्रु पठनार्थं दत्तं |

३१७६. पथ्यापथ्यविचार ...... | पत्र सं० ३ से ४४ | आ० १२×५½ इञ्च | भाषा-संस्कृत | विषय-आयुर्वेद | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० स० १६७६ | ट भण्डार |

विशेष—श्लोको के ऊपर हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है | विषरोग पथ्यापथ्य अधिकार तक है | १६ से आगे के पत्रो मे दीमक लग गई है |

३१७७. पाराविधि ...... | पत्र स० १ | आ० ६¾×४½ इंच | भाषा-हिन्दी | विषय-आयुर्वेद | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० २६६ | ख भण्डार |

३१७८. भावप्रकाश—मानमिश्र | पत्र सं० २७५ | आ० १०¾×४¾ इञ्च | भाषा-सस्कृत | विषय-आयुर्वेद | र० काल × | लि० काल सं० १८८१ वैशाख सुदी ६ | पूर्ण | वे० सं० ७३ | ज भण्डार |

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है |

इति श्रीमानमिश्रलटकनतनयश्रीमानमिश्रभावविरचितो भावप्रकाश सपूर्ण |

प्रशस्ति—सवत् १८८१ मिती वैशाख शुक्ला ६ शुक्रे लिखितमृषिणा फतेचन्द्रेण सवाई जयनगरमध्ये |

३१७९. भावप्रकाश ...... | पत्र स० १६ | आ० १०¾×४¾ इञ्च | भाषा-सस्कृत | विषय-आयुर्वेद | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० स० २०२२ | अ भण्डार |

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री जगु पडित तनयदास पंडितकृते त्रिसतिकाया रसायन वा जारण समाप्त |

३१८०. भावसंग्रह ...... | पत्र सं० १० | आ० १०½×६½ इञ्च | भाषा-संस्कृत | विषय-आयुर्वेद | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० स० २०५६ | ट भण्डार |

३१८१ मदनविनोद—मदनपाल। पत्र सं० १५ से ६२। आ० ८३/४×३३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १७६५ ज्येष्ठ सुदी १२। अपूर्ण। वे० सं० १७६८। जीर्ण। अ भण्डार।

विशेष—पत्र १५ पर निम्न पुष्पिका है–

इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे-अपादिवर्ग ।

पत्र १८ पर— यो राज्ञा मुर्खातलक' कटारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेन ग्रन्थेऽस्मिन् मदनविनोदे वटादि पचमवर्गः।

लेखक प्रशस्ति—

ज्येष्ठ शुक्ला १२ गुरौ तद्दिने लि" " शामजी विश्वकेन परोपकारार्थं। सवत् १७६५ विश्वेश्वर सन्निधौ ' मदनपालविरचिते मदनविनोदे निघटे प्रशस्ति वर्गश्चतुर्दश: ।।

३१८२ मंत्र व औषधि का नुस्खा"""। पत्र सं० १। आ० १०×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २९८। ख भण्डार।

विशेष—तिल्ली काटने का मन्त्र भी है।

३१८३. माधवनिदान—माधव। पत्र सं० १२४। आ० ६×४ इच। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२६५। अ भण्डार।

३१८४. प्रति सं० २। पत्र सं० १५४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २००१। ट भण्डार।

विशेष—पं० ज्ञानमेरु कृत हिन्दी टीका सहित है।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री प० ज्ञानमेरु विनिर्मितो बालबोधसमासोक्षरार्थो मधुकोष परमार्थ ।

प० धन्नालाल ऋषभचन्द रामचन्द की पुस्तक है।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ८०८, १३४५, १३४७) ख भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० १४१, १६५) तथा ज भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७४) और है।

३१८५ मानविनोद—मानसिंह। पत्र सं० ६७। आ० ११३/४×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४४। ख भण्डार।

प्रति हिन्दी टीका सहित है। ६७ से आगे पत्र नही हैं

३१८६. मुष्टिज्ञान—ज्योतिषाचार्य देवचन्द। पत्र सं० २। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आयुर्वेद ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८६१। अ भण्डार।

३१८७. योगचिन्तामणि—मनूसिंह। पत्र स० १२ से ४८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१०२। ट भण्डार।

विशेष—पत्र १ से ११ तथा ४८ से आगे नही हैं।

द्वितीय अधिकार की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री वा. रत्नराजगणि अंतेवासि मनूसिंहकृते योगचिंतामणि बालावबोधे चूर्णाधिकारो द्वितीयः।

३१८८. योगचिन्तामणि ……। पत्र स० ४। आ० १३×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १८०३। ट भण्डार।

३१८९. योगचिन्तामणि……। पत्र सं० १२ से १०५। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १८५४ ज्येष्ठ बुदी ७। अपूर्ण। वे० स० २०८३। ट भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण है। जयनगर मे फतेहचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

३१९०. योगचिन्तामणि ……। पत्र सं० २००। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३४६। अ भण्डार।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है।

३१९१. योगचिन्तामणिबीजक……। पत्र सं० ५। आ० ९½×४½ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३५६। ञ भण्डार।

३१९२. योगचिन्तामणि—उपाध्याय हर्षकीर्त्ति। पत्र सं० १५८। आ० १०½×५½ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०४। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी मे सक्षिप्त अर्थ दिया हुआ है।

३१९३. प्रति सं० २। पत्र स० १२८। ले० काल ×। वे० स० २२०६। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है।

३१९४. प्रति सं० ३। पत्र स० १४१। ले० काल सं० १७८१। वे० सं० १६७८। अ भण्डार।

३१९५. प्रति सं० ४। पत्र स० १५६। ले० काल सं० १८३४ आषाढ बुदी २। वे० सं० ८८। छ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है। सागानेर मे गोधो के चैत्यालय मे पं० ईश्वरदास के चेले की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी।

३१९६. प्रति सं० ५। पत्र सं० १२४। ले० काल सं० १७७९ बैशाख सुदी २। वे० सं० ६६। ज भण्डार।

विशेष—मालपुरा मे जीवराज वैद्य ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३१६७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १७६६ ज्येष्ठ बुदी ४ । अपूर्ण । वे० स० ६६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति सटीक है । प्रथम दो पत्र नही हैं ।

३१६८ योगशत—वररुचि । पत्र सं० २२ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १६१० श्रावण सुदी १० । पूर्ण । वे० स० २००२ । ट भण्डार ।

विशेष—आयुर्वेद का संग्रह ग्रंथ है तथा उसकी टीका है । चपावती (चाटसू) मे प० शिवचन्द ने व्यास चुन्नीलाल से लिखवाया था ।

३१६६ योगशतटीका······ । पत्र स० २१ । आ० ११½×३¾ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७६ । अ भण्डार ।

३२००. योगशतक······ । पत्र सं० ७ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १६०६ । पूर्ण । वे० स० ७२ । ज भण्डार ।

विशेष—प० विनय समुद्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । प्रति टीका सहित है ।

३२०१. योगशतक······ । पत्र सं० ७८ । आ० ११½×४½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५३ । ख भण्डार ।

३२०२. रसमञ्जरी—शालिनाथ । पत्र सं० २२ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८५६ । ट भण्डार ।

३२०३. रसमञ्जरी—शार्ङ्गधर । पत्र स० २६ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १६४१ सावन बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० स० १६१ । ख भण्डार ।

विशेष—प० पन्नालाल जोबनेर निवासी ने जयपुर मे चिन्तामणिजी के मन्दिर मे शिष्य जयचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३२०४ रसप्रकरण ····· । पत्र स० ४ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०३५ । जीर्ण । ट भण्डार ।

३२०५ रसप्रकरण····· । पत्र स० १२ । आ० ६×४½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३६६ । अ भण्डार ।

३२०६. रामविनोद—रामचन्द्र । पत्र स० २१६ । आ० १०½×४½ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-आयुर्वेद । र० काल स० १६२० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३४४ । अ भण्डार ।

विशेष—शार्ङ्गधर कृत वैद्यकसार ग्रन्थ का हिन्दी पद्यानुवाद है ।

३२०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६२ । ले० काल सं० १८५१ वैशाख सुदी ११ । वे० स० १६३ । ख भण्डार ।

विशेष—जीवणलालजी के पठनार्थ भैसलाना ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३२०८ प्रति सं० ३ । पत्र स० ८३ । ले० काल × । वे० स० २३० । छ भण्डार ।

३२०९. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८२ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतियां अपूर्ण (वे० सं० १६६६, २०१८, २०६२) और हैं ।

३२१० रासायिनिकशास्त्र ...। पत्र स० ५२ । आ० ५½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । च भण्डार ।

३२११. लक्ष्मणोत्सव—अमरसिंहात्मज श्री लक्ष्मण । पत्र सं० २ से ८९ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०८४ । अ भण्डार ।

३२१२. लङ्घनपथ्यनिर्णय...। पत्र सं० १२ । आ० १०¾×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८२२ पौष सुदी २ । पूर्ण । वे० स० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—प० जीवणलालजी पन्नालालजी के पठनार्थ लिखा गया था ।

३२१३ विषहरनविधि—संतोष कवि । पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल स० १७४१ । ले० काल स० १८६६ माघ सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १४४ । छ भण्डार ।

सिस रिप वैद अर खंडले जेष्ठ सुकल रूदाम ।
चंद्रापुरी सवत् गिनो चंद्रापुरी मुकाम ॥२७॥
सवत यह सतोष कृत तादिन कविता कीन ।
सशि मनि गिर बिंव विजय तादिन हम लिख लीन ॥२८॥

३२१४. वैद्यकसार... । पत्र स० ५ से ५४ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३४ । च भण्डार ।

३२१५. वैद्यजीवन—लोलिम्बराज । पत्र सं० २१ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१५७ । अ भण्डार ।

विशेष—५वा विलास तक है ।

३२१६. प्रति स० २ । पत्र स० २१ से ३२ । ले० काल सं० १८३८ । वे० सं० १५७१ । अ भण्डार ।

३२१७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८७२ फागुण । वे० सं० १७६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० १८०, १८१) और है।

३२१८. प्रति स० ४ । पत्र स० ६१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६८१ । ङ भण्डार ।

३२१९ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५३ । ले० काल X । वे० स० २३० । छ भण्डार ।

३२२०. वैद्यजीवनग्रन्थ... । पत्र स० ३ से १८ । आ० १०$\frac{1}{2}$X४ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३३३ । च भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र भी नही है।

३२२१. वैद्यजीवनटीका—रुद्रभट्ट । पत्र सं० २५ । आ० १०X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ११६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतिया (वे० स० २०१६, २०१७) और हैं।

३२२२ वैद्यमनोत्सव—नयनसुख । पत्र स० ३२ । आ० ११X५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–सस्कृत हिन्दी । विषय–आयुर्वेद । र० काल स० १६४९ आषाढ सुदी २ । ले० काल सं० १८५३ ज्येष्ठ सुदी १ । पूर्ण । वे० स० १८७६ । अ भण्डार ।

३२२३. प्रति सं० २ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८०९ । वे० स० २०७९ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ११६५) और है।

३२२४ प्रति सं० ३ । पत्र स० २ से ११ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६८० । ङ भण्डार ।

३२२५ प्रति स० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल स० १८६३ । वे० स० १५७ । छ भण्डार ।

३२२६. प्रति सं० ५ । पत्र स० १९ । ले० काल सं० १८६९ सावण बुदी १४ । वे० स० २००४ । ट भण्डार ।

विशेष—पाटण मे मुनिसुव्रत चैत्यालय मे भट्टारक सुखेन्द्रकीर्ति के शिष्य पं० चम्पाराम ने स्वय प्रतिलिपि की थी।

३२२७. वैद्यवल्लभ । पत्र स० १६ । आ० १०$\frac{1}{2}$X५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल सं० १९०१ । पूर्ण । वे० सं० १८७१ ।

विशेष—सेवाराम ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

३२२८. प्रति सं० २ । पत्र स० ९ । ले० काल X । वे० सं० २९७ । ख भण्डार ।

३२२६. वैद्यकसारोद्धार—संग्रहकर्त्ता श्री हर्षकीर्त्तिसूरि। पत्र सं० १६७। आ० १०X४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल X। ले० काल सं० १७४६ आसोज बुदी ८। पूर्ण। वे० स० १८२। ख भण्डार।

विशेष—भानुमती नगर मे श्रीगजकुशलगणि के शिष्य गणिसुन्दरकुशल ने प्रतिलिपि की थी। प्रति हिन्दी अनुवाद सहित है।

३२३० प्रति सं० २। पत्र स० ४६। ले० काल सं० १७७३ माघ। वे० सं० १४६। ज भण्डार।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार हुआ है।

३२३१. वैद्यामृत—माणिक्य भट्ट। पत्र सं० २०। आ० ६X८ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल X। ले० काल स० १६१६। पूर्ण। वे० सं० ३५४। व्य भण्डार।

विशेष—माणिक्यभट्ट अहमदाबाद के रहने वाले थे।

३२३२ वैद्यविनोद ......। पत्र स० १८३। आ० १०१/२X८१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १३०६। अ भण्डार।

३२३३. वैद्यविनोद—भट्टशंकर। पत्र स० २०७। आ० ८१/२X४१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० २७२। ख भण्डार।

विशेष—पत्र १४० तक हिन्दी सकेत भी दिये हुये हैं।

३२३४. प्रति सं० २। पत्र स० ३५। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २३१। छ भण्डार।

३२३५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११२। ले० काल सं० १८७७। वे० स० १७३३। ट भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति-

सवत् १७५६ वैशाख सुदी ५। वार चंद्रवासरे वर्षे शाके १६२३ पातिसाहजी नौरगजीवजी महाराजाजी श्री जयसिंहराज्य हाकिम फौजदार खानअब्दुल्लाखाजी के नायबरूल्लमखा स्याहीजी श्री म्याहआलमजी की तरफ मिया साहबजी अब्दुलफतेजी का राज्य श्रीमस्तु कल्याणक। सं० १८७७ शाके १७४२ प्रवर्त्तमाने कार्त्तिक १२ गुरुवारलिखितं मिश्रलालजी कस्य पुत्र रामनारायणे पठनार्थं।

३२३६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २२ से ४८। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० २०७०। ट भण्डार।

३२३७. शार्ङ्गधरसंहिता—शार्ङ्गधर। पत्र सं० ५८। आ० ११X५ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १०८५। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ८०३, ११४२, १५७७) और हैं।

३२१७ प्रति सं० ३। पत्र स० ३१। ले० काल सं० १८७२ फागुण । वे०
भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे दो प्रतियां (वे० स० १८०, १८१) और है।

३२१८. प्रति स० ४। पत्र स० ९१। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ६८१। ङ भ

३२१९. प्रति सं० ५। पत्र स० ५३। ले० काल X। वे० स० २३०। छ भण्डार।

३२२०. वैद्यजीवनग्रन्थ... । पत्र स० ३ से १८। आ० १०½X४ इ च। भाषा–स
आयुर्वेद। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ३३३। च भण्डार।

विशेप—अन्तिम पत्र भी नही है।

३२२१. वैद्यजीवनटीका—रुद्रभट्ट। पत्र सं० २५। आ० १०X५ इञ्च। भाषा-संस्
आयुर्वेद। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ११६६। अ भण्डार।

विशेप—इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० २०१६, २०१७) और हैं।

३२२२ वैद्यमनोत्सव—नयनसुख। पत्र स० ३२। आ० ११X५½ इञ्च। भाषा–स
विषय-आयुर्वेद। र० काल स० १६४९ आषाढ सुदी २। ले० काल सं० १८५३ ज्येष्ठ सुदी १। पूर्ण
१८७६। अ भण्डार।

३२२३. प्रति सं० २। पत्र स० १६। ले० काल स० १८०९। वे० स० २०७९। अ भण्

विशेप—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ११६५) और है।

३२४७ सन्निपातकलिका…… । पत्र सं० ५ । आ० ११३/४X५३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल सं० १८७३ । पूर्ण । वे० सं० २८३ । ख भण्डार ।

विशेष—यौवनपुर मे पं० जीवणदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३२४८. मन्नविधि……। पत्र सं० ७ । आ० ८३/४X४३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १४१७ । अ भण्डार ।

३२४६. सर्वज्वरसमुच्चयदर्पण……। पत्र सं० ४२ । आ० ६X३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल स० १८८१ । पूर्ण । वे० सं० २२६ । ञ भण्डार ।

३२५० सारसंग्रह……। पत्र सं० २७ से २५७ । आ० १२X५३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल स० १७४७ कार्त्तिक । अपूर्ण । वे० स० ११५६ । अ भण्डार ।

विशेष—हरिगोविंद ने प्रतिलिपि की थी ।

३२५१. सालोत्तररास……। पत्र सं० ७३ । आ० ६X४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद र० काल X । ले० काल स० १८४३ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७१४ । अ भण्डार ।

३२५२ सिद्धियोग……। पत्र स० ७ से ४३ । आ० १०X४३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १३५७ । अ भण्डार ।

३२५३. हरडैकल्प ……। पत्र स० ४ । आ० ५३/४X४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १८१६ । अ भण्डार ।

विशेष—मालकागडी प्रयोग भी है । (अपूर्ण)

३२३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७० । ले० काल X । वे० सं० १८५ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २७०, २७१) और हैं ।

३२३६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४-४० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०८२ । ट भण्डार ।

३२४०. शार्ङ्गधरसंहिताटीका—नाढमल्ल । पत्र स० ४१३ । आ० ११X४½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल स० १८१२ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० १३१५ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम शार्ङ्गधरदीपिका है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

वास्तव्यान्वयप्रकाश वैद्य श्रीभावसिंहात्मजेनाढमल्लेन विरचितायाम शार्ङ्गधरदीपिकामुत्तरखण्डे नेत्रप्रसादन कर्मविधि द्वात्रिंशोऽध्याय । प्रति सुन्दर है ।

३२४१. प्रति सं० २ । पत्र स० १०५ । ले० काल X । वे० सं० ७० । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड तक है जिसके ७ अध्याय हैं ।

३२४२. शालिहोत्र (अश्वचिकित्सा)—नकुल पडित । पत्र सं० ६ । आ० १०X४½ इंच । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल स० १७५६ । पूर्ण । वे० स० १२३६ । अ भण्डार ।

विशेष—कालाडहरा मे महात्मा कुशलसिंह के आत्मज हरिकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

३२४३ शालिहोत्र (अश्वचिकित्सा) ⋯ । पत्र स० १८ । आ० ७¾X४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल स० १७१८ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० स० १२८३ । अ भण्डार ।

३२४४. सन्तानविधि⋯ । पत्र स० ३० । आ० ११X४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६०७ । ट भण्डार ।

विशेष—सन्तान उत्पन्न होने के सम्बन्ध मे कई नुस्खे हैं ।

३२४५. सन्निपातनिदान । पत्र स० ८ । आ० १०X४½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २३० । छ भण्डार ।

३२४६. सन्निपातनिदानचिकित्सा—वाहडदास । पत्र स० १४ । आ० १२X५½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वद । र० काल X । ले० काल स० १८३६ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० २३० । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

३२४७ सन्निपातकलिका……। पत्र सं० ५। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १८७३। पूर्ण। वे० सं० २८३। ख भण्डार।

विशेष—यौवनपुर मे पं० जीवणदास ने प्रतिलिपि की थी।

३२४८ सप्तविधि……। पत्र सं० ७। आ० ८½×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १४१७। अ भण्डार।

३२४९. सर्वज्वरसमुच्चयदर्पण……। पत्र सं० ४२। आ० ६×३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल स० १८८१। पूर्ण। वे० सं० २२६। ञ भण्डार।

३२५०. सारसंग्रह……। पत्र सं० २७ से २५७। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल स० १७४७ कार्तिक। अपूर्ण। वे० सं० ११५६। अ भण्डार।

विशेष—हरिगोविंद ने प्रतिलिपि की थी।

३२५१. सालोत्तरराास……। पत्र सं० ७३। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १८४३ आसोज बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ७१४। अ भण्डार।

३२५२ सिद्धियोग……। पत्र स० ७ से ४३। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३५७। अ भण्डार।

३२५३. हरडैकल्प……। पत्र स० ४। आ० ५½×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८१६। अ भण्डार।

विशेष—मालकागडी प्रयोग भी है। (अपूर्ण)

विषय-छंद एवं अलङ्कार

३२५४. अमरचन्द्रिका'' ' । पत्र स० ७५ । आ० ११×४३/४ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । वषय-छंद अलङ्कार । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १३ । ज भण्डार ।

विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है ।

३२५५. अलंकाररत्नाकर—दलिपतराय वशीधर । पत्र स० ५१ । आ० ८३/४×५१/२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-अलङ्कार । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३४ । ह भण्डार ।

३२५६. अलङ्कारवृत्ति—जिनवर्द्धन सूरि । पत्र स० २७ । आ० १२×८ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-रस अलङ्कार । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३४ । क भण्डार ।

३२५७ अलङ्कारटीका'''''' । पत्र स० १४ । आ० ११×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १६८१ । ट भण्डार ।

३२५८. अलङ्कारशास्त्र '' । पत्र स० ७ से ११२ । आ० ११३/४×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २००१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है । बीच के पत्र भी नहीं हैं ।

३२५९. कविकर्पटी '' । पत्र स० ६ । आ० १२×६ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-रस अलङ्कार । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १८५० । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

३२६० कुवलयानन्द'' ' । पत्र स० २० । आ० ११×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १७८१ । ट भण्डार ।

३२६१. प्रति स० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । वे० स० १७८२ । ट भण्डार ।

३२६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०२५ । ट भण्डार ।

३२६३ कुवलयानन्द—अप्पय दीक्षित । पत्र सं० ६० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल X । ले० काल स० १७४३ । पूर्ण । वे० स० ६५३ । अ भण्डार ।

विशेष—स० १८०३ माह बुदी ५ को नैणसागर ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

३२६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६२ । वे० स० १२६ । ङ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे महात्मा पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६५. प्रति स० ३ । पत्र सं० ८० । ले० काल सं० १६०४ वैशाख सुदी १० । वे० स० ३१४ । ज भण्डार ।

विशेष—प० सदासुख के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६६ प्रति सं० ४ । पत्र स० ६२ । ले० काल स० १८०६ । वे० सं० ३०६ । ज भण्डार ।

३२६७. कुवलयानन्दकारिका । पत्र स० ६ । ग्रा० १०×४½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल × । ले० काल स० १८१६ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २८६ । छ भण्डार ।

विशेष—प० कृष्णदास ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । १७२ कारिकायें है ।

३२६८ प्रति सं० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० ३०६ । ज भण्डार ।

विशेष—हरदास भट्ट की किताब है रामनारायन मिश्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६६. चन्द्रायलोक ...... । पत्र स० ११ । ग्रा० ११×५½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-अलङ्कार र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६२४ । अ भण्डार ।

३२७० प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ग्रा० १०¾×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-अलङ्कारशास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६०६ कार्त्तिक बुदी ६ । वे० सं० ६१ । च भण्डार ।

विशेष—रूपचन्द साह ने प्रतिलिपि की थी ।

३२७१ प्रति स० ३ । पत्र स० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६२ । च भण्डार ।

३२७२ छन्दानुशासनवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० ८ । ग्रा० १२×४½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२६ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इत्याचार्य श्रीहेमचन्द्रविरचिते व्यावर्णनोनाम अष्टमोऽध्याय समास । समाप्तोयग्रन्थः । श्री ' ' भुवनकीर्ति शिष्य प्रमुख श्री ज्ञानभूषण योग्यस्य ग्रन्थः लिख्यत । मु० विनयमेरुणा ।

३२७३ छदोशतक—हर्षकीर्त्ति (चद्रकीर्त्ति के शिष्य) । पत्र स० ७ । ग्रा० १०¾×४½ इच । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८८१ । अ भण्डार ।

३२७४ छदकोश—रत्नशेखर सूरि । पत्र स० ३१ । ग्रा० १०×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६५ । ङ भण्डार ।

दोहा—

हे कवि जन सरवज्ञ हो मति दोषन कछु वेहु ।
भूल्यौ भ्रम तै हौ वहा जहा सोधि किन लेहु ।।८।।
सवत वसु रस लोक पर नखतहु सा तिथि मास ।
सित वाण श्रुति दिन रच्यौ माखन छद विलास ।।९।।

पिंगल छद मे दोहा, चौबोला, छप्पय, भ्रमर दोहा, सोरठा आदि कितने ही प्रकार के छदो का प्रयोग किया गया है । जिस छद का लक्षण लिखा गया है उसको उसी छद मे वर्णन किया गया है । अन्तिम पत्र भी नही है ।

३२७८. **पिंगलशास्त्र—नागराज** । पत्र सं० १० । आ० १०×४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२७ । ज भण्डार ।

३२७९. **पिंगलशास्त्र**······ । पत्र स० ३ से २० । आ० १२×५ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—छद शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५९ । अ भण्डार ।

३२८०. **पिंगलशास्त्र** ······ । पत्र स० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९६२ । अ भण्डार ।

३२८१. **पिंगलछंदशास्त्र (छन्द रत्नावली)—हरिरामदास** । पत्र स० ७ । आ० १३×६ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—छन्द शास्त्र । र० काल स० १७९५ । ले० काल स० १८२९ । पूर्ण । वे० स० १८६९ । ट भण्डार ।

विशेष—

सवतसर नव मुनि शशिनभ नवमी गुरु मानि ।
डिडवाना दृढ कूप तहि ग्रन्थ जन्म-थल ज्यानि ।।

इति श्री हरिरामदास निरञ्जनी कृत छद रत्नावली सपूर्ण ।

३२८२ **पिंगलप्रदीप—भट्ट लक्ष्मीनाथ** । पत्र स० ९८ । आ० ९×४ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—रस अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८१३ । अ भण्डार ।

३२८३. **प्राकृतछदकोष—रत्नशेखर** । पत्र सं० ५ । आ० १३×५½ इच । भाषा—प्राकृत । विषय—छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११९ । अ भण्डार ।

३२८४ **प्राकृतछंदकोष—अल्हू** । पत्र स० १३ । आ० ८×५ इच । भाषा—प्राकृत । विषय—छद शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६३· पौष बुदी ९ । पूर्ण । वे० स० ५२१ । क भण्डार ।

३२८५ **प्राकृतछदकोश** ······ । पत्र स० ३ । आ० १०×५ इच । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १७९२ श्रावण सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १८६२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एव फटी हुई है ।

३२८६. प्राकृतपिंगलशास्त्र ..... । पत्र सं० २ । आ० ११×४½ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४८ । अ भण्डार ।

३२८७. भाषाभूषण—जसवंतसिंह राठौड । पत्र सं० १६ । आ० ६×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० ५७१ । ड भण्डार ।

३२८८ रघुनाथ विलास—रघुनाथ । पत्र सं० ३१ । आ० १०×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–रसालङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६५ । च भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम रसतरङ्गिणी भी है ।

३२८९ रत्नमंजूषा । पत्र सं० ६ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१६ । अ भण्डार ।

३२९०. रत्नमजूषिका । पत्र सं० २७ । आ० १०½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४ । ञ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति रत्नमजूषिकाया छंदो विचित्याभाष्यतोऽष्टमोध्याय ।

मङ्गलाचरण—ॐ पचपरमेष्ठिभ्यो नमो नम ।

३२९१. वाग्भट्टालङ्कार—वाग्भट्ट । पत्र सं० १६ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–अलङ्कार । र० काल × । ले० काल सं० १६४६ कार्त्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति- सं० १६४६ वर्षे कार्त्तिकमासे शुक्लपक्षे तृतीया तिथौ शुक्रवासरे लिखत पांडे लूणा माहरोठमध्ये स्वात्ययो पठनार्थं ।

३२९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६६४ फागुण सुदी ७ । वे० सं० ६५३ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है । कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

३२९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६५६ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० १७२ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है जो कि चारों ओर हासिये पर लिखी हुई है ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ११६), ड भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६७२), छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १३८), ज भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० ६०, १४३), झ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २१७), ञ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १४६) और है ।

३२६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल स० १७०० कार्तिक बुदी ३ । वे० स० ४५ । ज भण्डार ।

विशेष—ऋषि हंसा ने सादडी मे प्रतिलिपि कराई थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १४६) और है ।

३२६५. वाग्भट्टालङ्कारटीका—वादिराज । पत्र स० ४० । आ० ६३/४×५३/४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल स० १७२६ कार्तिक बुदी ऽऽ (दीपावली) । ले० काल स० १८११ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण वे० स० १५२ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम कविचन्द्रिका है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत्सरे निधिदृगश्वशशाक्युक्ते (१७२६) दीपोत्सवाख्यदिवसे सगुरौ सचित्रे ।
लग्नेऽलि नाम्नि च समीपगिरः प्रसादात् सद्वादिराजरचिताकविचन्द्रकेयं ॥
श्रीराजसिंहनृपतिजर्यसिंह एव श्रीटोडाक्षकाख्यनगरी अणहिल्य तुल्या ।
श्रीवादिराजविबुधोऽपर वाग्भटोयं श्रीसूत्रवृत्तिरिह नंदतु चार्क्कचन्द्रः ॥

श्रीमद्भीमनृपात्मजस्य बलिनः श्रीराजसिंहस्य मे सेवायामवकाशमाप्य विहिता टीका शिशूना हिता ।
हीनाधिकवचोयदत्र लिखित तद्वै बुधैः क्षम्यता गार्हस्थ्यवनिनाथ सेवनाधियासक स्वप्नुतामाभूयात् ॥

इति श्री वाग्भट्टालङ्कारटीकाया पोमराजश्रेष्ठिसुतवादिराजविरचिताया कविचद्रिकाया पचम. परिच्छेद' समाप्त । स० १८११ श्रावण सुदी ६ गुरवासरे लिखत महात्मौल्चनगरका हेमराज सवाई जयपुरमध्ये । सुभ भूयात् ॥

३२६६ प्रति सं० २ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १८११ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० २५६ । अ भण्डार ।

३२६७ प्रति स० ३ । पत्र स० ११६ । ले० काल स० १६६० । वे० स० ६५४ । क भण्डार ।

३२६८. प्रति स० ४ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १७३१ । वे० सं० ६५५ । क भण्डार ।

विशेष—तक्षकगढ मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे · खण्डेलवालान्वये सौगाणी गौत्र वाले सम्राट गयासुद्दीन से सम्मानित साह महिराा · · साह पोमा सुत वादिराज की भार्या लौहडी ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

३२६६. प्रति सं० ५ । पत्र स० २० । ले० काल स० १८६२ । वे० स० ६५६ । क भण्डार ।

३३०० प्रति स० ६ । पत्र स० ५३ । ले० काल × । वे० स० ६७३ । ङ भण्डार ।

३३०१ वाग्भट्टालङ्कार टीका······ । पत्र स० १३ । आ० १०×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण (पंचम परिच्छेद तक) वे० स० २० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३३०२ वृत्तरत्नाकर—भट्ट केदार। पत्र स० ११। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंद शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८५२। अ भण्डार।

३३०३. प्रति सं० २। पत्र स० १३। ले० काल सं० १६८४। वे० सं० ६८४। क भण्डार।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६५०) ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २७५) व्य भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० १७७, ३०६) और हैं।

३३०४. वृत्तरत्नाकर—कालिदास। पत्र स० ६। आ० १०×५ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–छंद शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २७६। ख भण्डार।

३३०५ वृत्तरत्नाकर "। पत्र स० ७। आ० १२×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २८५। ज भण्डार।

३३०६. वृत्तरत्नाकरटीका—सुल्हण कवि। पत्र स० ४०। आ० ११×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६६८। क भण्डार।

विशेष—सुकवि हृदय नामक टीका है।

३३०७. वृत्तरत्नाकरछंदटीका—समयसुन्दरगणि। पत्र स० १। आ० १०½×५½ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २२१६। अ भण्डार।

३३०८ श्रुतबोध—कालिदास। पत्र सं० ६। आ० ८×४ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १५६१। अ भण्डार।

विशेष—अष्टगण विचार तक है।

३३०९. प्रति स० २। पत्र स० ४। ले० काल स० १८४६ फागुण सुदी ६। वे० स० ६२०। अ भण्डार।

विशेष—प० डालूराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

३३१० प्रति स० ३। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० सं० ६२६। अ भण्डार।

विशेष—जीवराज कृत टिप्पण सहित है।

३३११ प्रति स० ४। पत्र स० ७। ले० काल स० १८६५ श्रावण बुदी ६। वे० स० ७२५। क भण्डार।

३३१२. प्रति स० ५। पत्र स० ५। ले० काल स० १८०४ ज्येष्ठ सुदी ५। वे० स० ७२७। भण्डार।

विशेष—प० रामचद ने भिलती नगर मे प्रतिलिपि की थी।

विषय—संगीत एवं नाटक

३३२१. अकलङ्कनाटक—श्री मक्खनलाल। पत्र सं० २३। आ० १२×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १। ङ भण्डार।

३३२२. प्रति सं० २। पत्र स० २४। ले० काल सं० १९९३ कार्तिक सुदी ६। वे० स० १७२। छ भण्डार।

३३२३. अभिज्ञान शाकुन्तल—कालिदास। पत्र स० ७। आ० १०½×४¾ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११७०। अ भण्डार।

३३२४. कर्पूरमञ्जरी—राजशेखर। पत्र स० १२। आ० १२½×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८१३। ट भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। मुनि ज्ञानकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ के दोनो ओर ८ पत्र तक संस्कृत मे व्याख्या दी हुई है।

३३२५. ज्ञानसूर्योदयनाटक—वादिचन्द्रसूरि। पत्र स० ६३। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—नाटक। र० काल स० १६४८ माघ सुदी ८। ले० काल स० १६९८। पूर्ण। वे० स० १८। अ भण्डार।

विशेष—आमेर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३३२६. प्रति सं० २। पत्र स० ६५। ले० काल स० १८८७ माह सुदी ५। वे० स० २३१। क भण्डार।

३३२७. प्रति स० ३। पत्र स० ३७। ले० काल सं० १८६४ आसोज बुदी ६। वे० सं० २३२। क भण्डार।

विशेष—कृष्णगढ निवासी महात्मा राधाकृष्ण ने जयनगर मे प्रतिलिपि की थी तथा इसे सघी अमरचन्द दीवान के मन्दिर मे विराजमान की।

३६२८. प्रति स० ४। पत्र स० [illegible] ले० काल स० १९३५ सावण बुदी ५। वे० स० २३०। क भण्डार।

३३२९. [illegible] स [illegible] स० १७६०। वे० स० १३४। व्य भण्डार।

विशेष— [illegible] करके पं० दोदराज को भेंट स्वरूप दी

इसके [illegible]) और है।

३३१३. प्रति सं० ६ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १७८१ चैत्र सुदी १ । वे० स० १७८ । ञ भण्डार ।

विशेष—प० सुखानन्द के शिष्य नैनसुख ने प्रतिलिपि की थी । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

३३१४ प्रति सं० ७ । पत्र स० ४ । ले० काल X । वे० स १८११ । ट भण्डार ।

विशेष—आचार्य विमलकीर्त्ति ने प्रतिलिपि कराई थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ६४८, ९०७, ११६१) क, ङ, च और ज भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० ७०४, ७२६, ३४८, २८७) ञ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १५६, १८७) और हैं ।

३३१५ श्रुतबोध—वररुचि । पत्र स० ४ । आ० ११½X५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–छदशास्त्र । र० काल X । ले० काल स० १८५९ । वे० सं० २८३ । छ भण्डार ।

३३१६ श्रुतबोधटीका—मनोहरश्याम । पत्र स० ८ । आ० ११¾X५¾ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–छदशास्त्र । र० काल X । ले० काल सं० १८९१ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ६४७ । क भण्डार ।

३३१७ श्रुतबोधटीका" ""। पत्र सं० ३ । आ० ११½X५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–छदशास्त्र । र० काल X । ले० काल सं० १८२८ मंगसर बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ६४५ । अ भण्डार ।

३३१८. प्रति सं० २ । पत्र स० ८ । ले० काल X । वे० सं० ७०३ । क भण्डार ।

३३१९ श्रुतबोधवृत्ति—हर्षकीर्त्ति । पत्र स० ७ । आ० १०½X४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–छदशास्त्र । र० काल X । ले० काल स० १७१६ कार्त्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० १९१ । ख भण्डार ।

विशेष—श्री ५ सुन्दरदास के प्रसाद से मुनिसुख ने प्रतिलिपि की थी ।

३३२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १९ । ले० काल सं० १९०१ माघ सुदी ६ । अपूर्ण । वे० स० २३३ । छ भण्डार ।

विषय-संगीत एवं नाटक

३३२१. अकलङ्कनाटक—श्री मक्खनलाल। पत्र स० २३। ग्रा० १२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १। छ भण्डार।

३३२२. प्रति सं० २। पत्र स० २४। ले० काल स० १९९३ कार्तिक सुदी ६। वे० स० १७२। ञ भण्डार।

३३२३. अभिज्ञान शाकुन्तल—कालिदास। पत्र सं० ७। ग्रा० १०½×४¾ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ११७०। अ भण्डार।

३३२४. कर्पूरमञ्जरी—राजशेखर। पत्र सं० १२। ग्रा० १२¾×४½ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८१३। ट भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। मुनि ज्ञानकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ के दोनो ओर ८ पत्र तक सस्कृत मे व्याख्या दी हुई है।

३३२५. ज्ञानसूर्योदयनाटक—वादिचन्द्रसूरि। पत्र स० ६३। ग्रा० १०¾×४¾ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-नाटक। र० काल स० १६४८ माघ सुदी ८। ले० काल स० १६६८। पूर्ण। वे० स० १८। अ भण्डार।

विशेष—ग्रामेर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३३२६ प्रति सं० २। पत्र स० ६५। ले० काल स० १८८७ माह सुदी ५। वे० स० २३१। क भण्डार।

३३२७ प्रति स० ३। पत्र सं० ३७। ले० काल स० १८६४ ग्रासोज बुदी ६। वे० सं० २३२। क भण्डार।

विशेष—कृष्णगढ निवासी महात्मा राधाकृष्ण ने जयनगर मे प्रतिलिपि की थी तथा इसे सघी ग्रमरचन्द दीवान के मन्दिर मे विराजमान की।

३६२८. प्रति स० ४। पत्र स० ६६। ले० काल स० १९३५ सावण बुदी ५। वे० स० २३०। क भण्डार।

३३२९. प्रति सं० ५। पत्र स० ४३। ले० काल स० १७६०। वे० स० १३४। ञ भण्डार।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्त्ति के शिष्य श्री ज्ञानकीर्त्ति ने प्रतिलिपि करके पं० दोदराज को भेंट स्वरूप दी थी। इसके अतिरिक्त इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १४७, ३३७) और है।

विषय- लोक-विज्ञान

३३५३ अढाईद्वीप वर्णन ''""। पत्र सं० १०। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक ज्ञान-जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड, पुष्करार्द्ध द्वीप का वर्णन है। र० काल ×। ले० काल सं० १८१५। पूर्ण। वे० सं० । ख भण्डार।

३३५४ ग्रहोंकी ऊंचाई एवं आयुवर्णन" ""। पत्र स० १। आ० ८३/४×६३/४ इञ्च। भाषा-हिन्दी । विषय-नक्षत्रों का वर्णन है। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २११०। अ भण्डार।

३३५५. चद्रप्रज्ञप्ति ' '"। पत्र स० ६२। आ० १०१/२×४१/२ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-चन्द्रमा सम्बन्धी वर्णन है। र० काल ×। ले० काल सं० १६६४ भादवा बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० १६७३।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका-

इति श्री चन्द्रपण्णत्तसी (चन्द्रप्रज्ञप्ति) संपूर्णा। लिखत परिष करमचद।

३३५६. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ६०। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-जम्बूद्वीप सम्बन्धी वर्णन। र० काल ×। ले० काल स० १८९६ फाल्गुन सुदी २। पूर्ण। वे० सं० १००। च भण्डार।

विशेष—मधुपुरी नगरी मे प्रतिलिपि की गयी थी।

३३५७. तीनलोककथन " ""। पत्र स० ६६। आ० १०१/२×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान-तीनलोक वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३५०। ञ भण्डार।

३३५८ तीनलोकवर्णन ""। पत्र सं० १५८। आ० ६३/४×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-लोक विज्ञान-तीन लोक का वर्णन है। र० काल ×। ले० काल सं० १८६१ सावण सुदी २। पूर्ण। वे० स० १०। त भण्डार।

विशेष—गोपाल व्यास उग्रियावास वाले ने प्रतिलिपि की थी। प्रारम्भ मे नेमिनाथ के दश भव का वर्णन है। प्रारम्भ मे लिखा है— ढूंढार देश मे सवाई जयपुर नगर स्थित आचार्य शिरोमणि श्री यशोदानन्द स्वामी के शिष्य पं० सदासुख के शिष्य श्री प० स्नेहलाल की यह पुस्तक है। भादवा सुदी १० सं० १६११।

३३५९. तीनलोकचार्ट"""। पत्र सं० १। आ० ५×६३/४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय- लोकविज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३५। छ भण्डार।

विशेष—पत्र सं० २ से ७, २७, २८ नही हैं तथा ३६ से आगे के पत्र भी नही हैं।

३३४२. प्रति स० २ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८२६ । वे० स० ५६७ । क भण्डार ।

३३४३ प्रति स० ३ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० स० ५७८ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र नवीन लिखे गये हैं।

३३४४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० १०० । छ भण्डार ।

३३४५ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६१६ । वे० सं० ६४ । झ भण्डार ।

३३४६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८३६ माह सुदी ६ । वे० स० ४८ । ञ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयनगर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे पं० चोखचन्द के सेवक प० रामचन्द ने सवाईराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३३४७ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० स० २०१ ।

विशेष—अग्रवाल ज्ञातीय मित्तल गोत्र वाले मे प्रतिलिपि कराई थी।

३३४८. मदनपराजय…… । पत्र स० ३ से २५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-नाटक । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९९५ । अ भण्डार ।

३३४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १९९५ । अ भण्डार ।

३३५०. मदनपराजय—पं० स्वरूपचन्द । पत्र सं० ९२ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-नाटक । र० काल स० १९१८ मंगसिर सुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५७९ । ङ भण्डार ।

३३५१. रागमाला…… । पत्र स० ६ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सङ्गीत । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३७९ । अ भण्डार ।

३३५२ राग रागनियों के नाम …… । पत्र स० ८ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सङ्गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०७ । झ भण्डार ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २६२, २६३,) च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १४७, १४८) तथा ज भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ४) और है।

३३६९. त्रिलोकसारदर्पणकथा—खड्गसेन। पत्र सं० ३२ से २२८। आ० ११×४३ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-लोक विज्ञान। र० काल सं० १७१३ चैत सुदी ५। ले० काल स० १७५३ ज्येष्ठ सुदी ११। अपूर्ण। वे० स० ३६०। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है। प्रारम्भ के ३१ पत्र नही है।

३३७०. प्रति सं० २। पत्र सं० १३६। ले० काल सं० १७३६ द्वि० चैत्र बुदी ४। वे० स० १८२। भ भण्डार।

विशेष—साह लोहट ने आत्म पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी थी।

३३७१. त्रिलोकसारभाषा—पं० टोडरमल। पत्र सं० २८६। आ० १४×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-लोक विज्ञान। र० काल सं० १८४१। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३७६। अ भण्डार।

३३७२ प्रति स० २। पत्र सं० ४४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३७३। अ भण्डार।

३३७३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१८। ले० काल सं० १८८४। वे० सं० ४३। ग भण्डार।

विशेष—जैतराम साह के पुत्र कालूराम साह ने सोनपाल भौंसा से प्रतिलिपि कराकर चौधरियो के मन्दिर मे चढाया।

३३७४. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२५। ले० काल ×। वे० सं० ३६। घ भण्डार।

३३७५. प्रति स० ५। पत्र स० ३६४। ले० काल स० १६६६। वे० सं० २८४। ङ भण्डार।

विशेष—सेठ जवाहरलाल सुगनचन्द सोनी अजमेर वालो ने प्रतिलिपि करवायी थी।

३३७६. त्रिलोकसारभाषा"""। पत्र स० ४५२। आ० १२३×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल सं० १६४७। पूर्ण। वे० सं० २६२। क भण्डार।

३३७७. त्रिलोकसारभाषा"""। पत्र सं० १०८। आ० ११३×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६१। क भण्डार।

विशेष—भवनलोक वर्णन तक पूर्ण है।

३३७८ त्रिलोकसारभाषा"""। पत्र सं० १५०। आ० १२×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५८३। च भण्डार।

३३७९. त्रिलोकसारभाषा (वचनिका)"""। पत्र सं० ३१०। आ० १०३×७३ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल सं० १८६५। वे० स० ८५। भ भण्डार।

विशेष—त्रिलोकसार के आधार पर बनाया गया है। तीनलोक की जानकारी के लिए बड़ा उपयोगी है।

३३६०. **त्रिलोकचित्र**.......। आ० २०×३० इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-लोकविज्ञान। र० काल ×। ले० काल स० १५७५। पूर्ण। वे० सं० ५३६। ऋ भण्डार।

विशेष—कपडे पर तीनलोक का चित्र है।

३३६१ **त्रिलोकदीपक—वामदेव**। पत्र स० ७२। आ० १६×७½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोकविज्ञान। र० काल ×। ले० काल सं० १८५२ आषाढ सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ५। ज भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ सचित्र है। जम्बूद्वीप तथा विदेह क्षेत्र का चित्र सुन्दर है तथा उस पर बेल बूटे भी हैं।

३३६२ **त्रिलोकसार—नेमिचंद्राचार्य**। पत्र सं० ८१। आ० १३×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-लोकविज्ञान। र० काल ×। ले० काल सं० १८१६ मगसिर बुदी ११। पूर्ण। वे० स० ४१। अ भण्डार।

विशेष—पहिले पत्र पर ६ चित्र हैं। पहिले नेमिनाथ की मूर्त्ति का चित्र है जिसके बाईं ओर बलभद्र तथा दाईं ओर श्रीकृष्ण हाथ जोड़े खड़े हैं। तीसरा चित्र नेमिचन्द्राचार्य का है वे लकड़ी के सिंहासन पर बैठे हैं सामने लकडी के स्टैंड पर ग्रन्थ है आगे पिच्छी और कमण्डलु हैं। उनके आगे दो चित्र और हैं जिसमे एक चामुण्डराय का तथा दूसरा और किसी श्रोता का चित्र है। दोनों हाथ जोडे गोडी गाले बैठे हैं। चित्र बहुत सुन्दर हैं। इसके अतिरिक्त और भी लोक-विज्ञान सम्बन्धी चित्र हैं।

३३६३. प्रति सं० २। पत्र स० ४५। ले० काल सं० १८६६ प्र० वैशाख सुदी ११। वे० स० २८८। क भण्डार।

३३६४ प्रति स० ३। पत्र स० ९२। ले० काल स० १८२९ श्रावण बुदी ५। वे० स० २८३। क भण्डार।

३३६५ प्रति सं० ४। पत्र सं० ७२। ले० काल ×। वे० स० २८९। क भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है।

३३६६ प्रति स० ५। पत्र स० ६८। ले० काल ×। वे० स० २९०। क भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है। कई पृष्ठो पर हाशिया मे सुन्दर चित्राम हैं।

३३६७ प्रति स० ६। पत्र स० ९९। ले० काल सं० १७३३ माह सुदी ५। वे० स० २८३। ङ भण्डार।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल मे वसवा मे रामचन्द काला ने प्रतिलिपि करवायी थी।

३३६८ प्रति सं० ७। पत्र स० ६६। ले० काल सं० १५५३। वे० स० १९४४। ट भण्डार।

विशेष—कालज्ञान एवं ऋषिमडल पूजा भी है।

३३६०. त्रिलोकवर्णन · । एक ही लम्बे पत्र पर । ले० काल X । वे० स० ७५ । ख भण्डार ।

विशेष—सिद्धशिला मे स्वर्ग के विमल पटल तक ६३ पटलो का सचित्र वर्णन है । चित्र १४ फुट ८ इंच लम्बे तथा ४½ इंच चौडे पत्र पर दिये हैं । कही कही पीछे कपडा भी चिपका हुआ है । मध्यलोक का चित्र १X१ फुट है । चित्र सभी विन्दुओ से बने है । नरक वर्णन नही है ।

३३६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ५२७ । व्य भण्डार ।

३३६२. त्रिलोकवर्णन...... । पत्र सं० ५ । आ० १७X११½ इंच । भाषा-प्राकृत, सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६ । ज भण्डार ।

३३६३. त्रैलोक्यसारटीका—सहस्रकीर्त्ति । पत्र सं० ७६ । आ० १२X५½ इंच । भाषा-प्राकृत, सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २८६ । ङ भण्डार ।

३३६४. प्रति सं० २ । पत्र स० ५४ । ले० काल X । वे० सं० २८७ । ङ भण्डार ।

३३६५. भूगोलनिर्माण .... । पत्र स० ३ । आ० १०X४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल स० १५७१ । पूर्ण । वे० सं० ८६८ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० हर्षागम गणि वाचनार्थं लिखितं कोरटा नगरे सं० १५७१ वर्षे । जैनेतर भूगोल है जिसमे सतयुग, द्वापर एव त्रेता मे होने वाले अवतारो का तथा जम्बूद्वीप का वर्णन है ।

३३६६. सघपणटपत्र........ । पत्र सं० ६ से ४१ । आ० ६¾X४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०३ । ख भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे टब्बा टीका दी हुई है । १ से ५, १४, १५ । २० से २२, २६ । २८ से ३०, ३२, ३५, ३६ तथा ४१ से आगे पत्र नही है ।

३३६७. सिद्धात त्रिलोकदीपक—वामदेव । पत्र स० ६४ । आ० १३X५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३११ । व्य भण्डार ।

३३८०. त्रिलोकसारवृत्ति—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव। पत्र स० २४०। आ० १३×८ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल स० १९४५। पूर्ण। वे० स० २८२। क भण्डार।

३३८१ प्रति स० २। पत्र स० १४२। ले० काल ×। वे० स० ९६। छ भण्डार।

३३८२ त्रिलोकसारवृत्ति ·। पत्र सं० १०। आ० १०×११½ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८। ज भण्डार।

३३८३. त्रिलोकसारवृत्ति ··। पत्र स० ३७। आ० १२½×५½ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७। ज भण्डार।

३३८४. त्रिलोकसारवृत्ति··· ···। पत्र सं० २५। आ० १०×५½ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०३३। ट भण्डार।

३३८५. त्रिलोकसारवृत्ति · ····। पत्र स० ९३। आ० १३×९ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २९७। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३३८६ त्रिलोकसारसदृष्टि—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र स० ६३। आ० १३¾×८ इ च। भाषा-प्राकृत। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८४। क भण्डार।

३३८७. त्रिलोकस्वरूपव्याख्या—उदयलाल गगवालाल। पत्र स० ५०। आ० १३×७½ इ च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-लोक विज्ञान। र० काल स० १९४४। ले० काल स० १९०४। पूर्ण। वे० स० ६। ज भण्डार।

विशेष—मु० धन्नालाल भौरीलाल एव चिमनलालजी की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना हुई थी।

३३८८ त्रिलोकवर्णन · ·। पत्र स० ३६। आ० १२×६ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोकविज्ञान र० काल ×। ले० काल स० १८१० कार्तिक सुदी ३। पूर्ण। वे० स० ७७। ख भण्डार।

विशेष—गाथायें नही हैं केवल वर्णनमात्र है। लोक के चित्र भी हैं। जम्बूद्वीप वर्णन तक पूर्ण है भगवानदास के पठनार्थ जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३३८९ त्रिलोकवर्णन ··। पत्र सं० १५ से ३७। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल × अपूर्ण। वे० स० ७६। ख भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है। १ से १४, १८, २१ २३ से २६, २८ से ३४ तक पत्र नही है। पत्र स० १५ ३६, तथा ३७ पर चित्र नही हैं। इसके अतिरिक्त तीन पत्र सचित्र और हैं जिनमे से एक मे नरक का, दूसरे मे चद्र, सूर्यचक्र कुण्डलद्वीप और तीसरे मे भौंरा, मछली, कनखजूरा के चित्र हैं। चित्र सुन्दर एवं दर्शनीय हैं।

३३६०. त्रिलोकवर्णन ·· । एक ही लम्बे पत्र पर । ले० काल X । वे० सं० ७५ । ख भण्डार ।

विशेष—सिद्धशिला से स्वर्ग के विमल पटल तक ६३ पटलो का सचित्र वर्णन है । चित्र १४ फुट ८ इंच लम्बे तथा ४½ इंच चौडे पत्र पर दिये हैं । कही कही पीछे कपडा भी चिपका हुआ है । मध्यलोक का चित्र १X१ फुट है । चित्र सभी बिन्दुओ से बने है । नरक वर्णन नही है ।

३३६१ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ५२७ । व्य भण्डार ।

३३६२. त्रिलोकवर्णन ··· । पत्र स० ५ । आ० १७X११½ इंच । भाषा-प्राकृत, सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६ । ज भण्डार ।

३३६३. त्रैलोक्यसारटीका—सहस्रकीर्त्ति । पत्र सं० ७६ । आ० १२X५½ इंच । भाषा-प्राकृत, सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २८६ । ङ भण्डार ।

३३६४ प्रति स० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल X । वे० स० २८७ । ङ भण्डार ।

३३६५ भूगोलनिर्माण ···· । पत्र स० ३ । आ० १०X४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल स० १५७१ । पूर्ण । वे० सं० ८६८ । अ भण्डार ।

विशेष—प० हर्षागम गणि वाचनार्थं लिखितं कोरटा नगरे सं० १५७१ वर्षे । जैनेतर भूगोल है जिसमे सतयुग, द्वापर एव त्रेता मे होने वाले अवतारो का तथा जम्बूद्वीप का वर्णन है ।

३३६६ सघपणटपत्र ······ । पत्र सं० ६ से ४१ । आ० ६¾X४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०३ । ख भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे टब्बा टीका दी हुई है । १ से ५, १४, १५ । २० से २२, २६ । २८ से ३०, ३२, ३५, ३६ तथा ४१ से आगे पत्र नही हैं ।

३३६७. सिद्धांत त्रिलोकदीपक—वामदेव । पत्र स० ६४ । आ० १३X५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३११ । व्य भण्डार ।

विषय- सुभाषित एवं नीतिशास्त्र

३३६८. अक्लमन्दवार्ता ''''' । पत्र स० २० । आ० १२×८½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११ । क भण्डार ।

३३६६. प्रति स० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० १२ । क भण्डार ।

३४००. उपदेशछत्तीसी—जिनहर्ष । पत्र सं० ५ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८३१ । पूर्ण । वे० सं० ४२८ । अ भण्डार ।

विशेष—

प्रारम्भ—श्री सर्वज्ञेभ्यो नम. । अथ श्री जिनहर्षेण वीर चितायामुपदेश छत्रीसी कामहमेव लख्यते स्यात् ।

जिनस्तुति—

सकल रूप यामे प्रभुता अनूप भूप,
धूप छाया माहे है न जगदीश जु ।
पुण्य हि न पाप हे नसित हे न ताप हे,
जाप के प्रताप कटे करम अतिसयु ॥
ज्ञान को अगज पुंज सूक्ष्म वृक्ष के निकुज,
अतिसय चौतिस फुति वचन ये तिसयु ।
अैसे जिनराज जिनहर्ष प्रणमि उपदेश,
की छतिसी कहो सवइ एसतीसयु ॥१॥

अथिरत्व कथन—

अरे जिउ काचिनीउ ताहु परी अमार तीते,
तो अतीगति करी जो रसी उठानि है ।
तु तो नही चेतता हे जाणे हे रहेगी वृद्ध,
मेरी २ कर रह्यो उयमि रति मानी हे ॥
ज्ञान की नीजीर खोल देख न कवहे,
तेरी मोह दारू मे भयो वकाणो अज्ञानी हे ।
कहे जीनहर्ष ढरु तन लगैगी वार,
कागद की गुढी कौलू रहे जी हा पाणी ॥२॥

अन्तिम— धर्म परीक्षा कथन सवैया—

धरम धरम कहै मरम न कोउ लहै,
भरम मैं भूलि रहै कुल रूढ कीजीयै।
कुल रूढ छोरि कै भरम फंद तोरि कै,
सुमति गति फोरि कै सुज्ञान दृष्टि दीजीयै ।।
दया रूप सोइ धर्म धर्म तैं कटै है मर्म,
भेद जिन धरम पीयूष रस पीजीयै।
करि कै परीक्ष्या जिनहरष धरम कीजीयै,
कसि कै कसोटी जैसे कचरण क लीजीयै ।।३५।।

अथ ग्रंथ समाप्त कथन सवैया इकतीसा -

भई उपदेस की छतीसी परिपूर्ण चतुर नर
है जे याकी भव्य रस पीजीयै।
मेरी है अलपमति तो भी मैं कीए कवित,
कविताइ सौ हौ जिन ग्रन्थ मान लीजीयै ।।
सरस है है वखाण जौऊ अवसर जाण,
दोइ तीन याके भैया सवैया कहीजीयौ।
कहै जिनहरष संवत्त गुण सिसि भक्ष कीनी,
जु सुण कै सावास मोकु दीजीयौ ।।३६।।

इति श्री उपदेश छतीसी सपूर्ण।

सवत् १८३६

गवडि पुछेरे गवडि आ, कवरण भले रौ देश।
संपत हुए तौ घर भलो, नहीतर भलो विदेश ।।
सूरवलि तो सुहामणी, कर मोहि गंग प्रवाह।
माडल तणे प्रगणे पाणी अथग अथाह ।।२।।

३४०१. उपदेश शतक—द्यानतराय। पत्र सं० १४। आ० १२३×७३ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२६। च भण्डार।

३४०२. कर्पूरप्रकरण.......। पत्र सं० २४। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८६३।

विशेष—१७६ पद्य हैं। अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

श्री वज्रसेनस्य गुरोस्त्रिषष्टि
सार प्रबंधस्फुट सद्‌गुणस्य।
शिष्येण चक्रे हरिणेय मिष्टा
सूक्तावली नेमिचरित्र कर्त्ता ॥१७६॥

इति कर्पूराभिध सुभाषित कोश समाप्ता ॥

३४०३. प्रति सं० २। पत्र स० २०। ले० काल स० १६४७ ज्येष्ठ सुदी ५। वे० स० १०३। क भण्डार।

३४०४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १७७६ श्रावण ४। वे० स० २७६। ज भण्डार।

विशेष—भूधरदास ने प्रतिलिपि की थी।

३४०५ कामन्दकीय नीतिसार भाषा ···। पत्र सं० २ से १७। आ० १२×८ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-नीति। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २८०। झ भण्डार।

३४०६ प्रति सं० २। पत्र सं० ३ से ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६०८। अ भण्डार।

३४०७. प्रति स० ३। पत्र सं० ३ से ६८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६८। अ भण्डार।

३४०८ चाणक्यनीति—चाणक्य। पत्र सं० ११। आ० १०×४½ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-नीतिशास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १८६६ मंगसिर बुदी १४। पूर्ण। वे० स० ८११। अ भण्डार।

इसी भण्डार में ५ प्रतिया (वे० स० ६३०, ६६१, ११००, १६५४, १६४५) और है।

३४०६ प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८४६ पौष सुदी ६। वे० स० ७०। ग भण्डार।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ७१) और है।

३४१०. प्रति सं० ३। पत्र स० ३४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७५। ङ भण्डार।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ३७, ६५७) और हैं।

३४११. प्रति सं० ४। पत्र स० ६ से १३। ले० काल सं० १८८५ मगसिर बुदी ऽऽ। अपूर्ण। वे० स० ६३। च भण्डार।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ६४) और है।

३४१२. प्रति स० ५। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १८७४ ज्येष्ठ बुदी ११। वे० स० २४६। ञ भण्डार।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १३८, २४८, २५०) और हैं।

३४१३ चाणक्यनीतिसार—मूलकर्त्ता-चाणक्य। संग्रहकर्त्ता-मथुरेश भट्टाचार्य। पत्र सं० ७। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-नीतिशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८१०। अ भण्डार।

३४१४. चाणक्यनीतिभाषा ……। पत्र सं० २०। आ० १०×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-नीतिशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५१६। ट भण्डार।

विशेष—६ अध्याय तक पूर्ण है। ७वें अध्याय के २ पद्य हैं। दोहा और कुण्डलियों का अधिक प्रयोग हुआ है।

३४१५ छुद्दशतक—वृन्दावनदास। पत्र सं० २६। आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सुभाषित। र० काल सं० १८९८ माघ सुदी २। ले० काल सं० १९४० मंगसिर सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १७८। व भण्डार।

३४१६. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १९३७ फागुण सुदी ६। वे० सं० १८१। व भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १७९, १८०) और हैं।

३४१७. जैनशतक—भूधरदास। पत्र सं० १७। आ० ९×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित र० काल सं० १७८१ पौष सुदी १२। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १००५। अ भण्डार।

३४१८. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १९७७ फागुन सुदी ५। वे० सं० २१८। क भण्डार।

३४१९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० २१७। ङ भण्डार।

विशेष—प्रति नीले कागजों पर है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१६) और है।

३४२०. प्रति सं० ४। पत्र सं० २२। ले० काल ×। वे० सं० ५६०। च भण्डार।

३४२१. प्रति सं० ५। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १८८६। वे० सं० १५८। झ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २८४) और है जिसमें कर्म छत्तीसी पाठ भी है।

३४२२. प्रति सं० ६। पत्र सं० २३। ले० काल सं० १८८१। वे० सं० १६४०। ट भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६२१) और है।

३४२३. ज्ञानसार ……। पत्र सं० ८। आ० १२×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० [illegible]। पूर्ण। वे० सं० २३५। क भण्डार।

३४२४. तत्त्वधर्मामृत'''''' । पत्र स० ३३ । आ० ११X५ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल X । ले० काल स० १६३६ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४६ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति–

सवत् १६३६ वर्षे ज्येष्टमासे शुक्लपक्षे दशम्यातिथौ बुधवासरे चित्रानक्षत्रे परिघयोगे अत्रा दिवसे । आदीश्वर चैत्यालये । चंपावतिनामनगरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टा० पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्ततपट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवास्ततपट्टे भ० श्री प्रभाचन्ददेवास्तत्पट्टे मडलाचार्य श्री धर्म्म (च) द्र देवास्तत्पट्टे मडलाचार्य श्री ललितकीर्ति देवास्ततपट्टे मंडलाचार्य श्री चन्दकीर्त्ति देवास्तदाम्नाये खडेलवालान्वये भसावड्या गोत्र साह हरजाज भार्या पुत्र द्विय प्रथम समतु द्वितिक पुत्र मेघराज । साह समतु भार्या समतादे तत्र पुत्र लक्षिमीदास । साह मेघराज तस्य भार्या द्विय प्रथम भार्या लाडमदेइ द्वितीक '। अपूर्ण ।

३४२५. प्रति स० २ । पत्र स० ३० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २१४५ । ट भण्डार ।

विशेष—३० से आगे पत्र नही हैं ।

प्रारम्भ—

शुद्धात्मरूपमापन्नं प्रणिपत्य गुरो गुस ।
तत्वधर्म्मामृतं नाम वक्ष्ये सक्षेपत ।।
धर्मे श्रुते पापमुपैति नाश धर्मे श्रुते पुण्य मुपैति वृद्धि ।
स्वर्गापवर्ग प्रवरोरु सौख्य, धर्मे श्रुते रेव न चात्यतास्ति ।।२।।

३४२६. दशबोल । पत्र सं० २ । आ० १०X६½ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १९४७ । ट भण्डार ।

३४२७. दृष्टातशतक'''''' । पत्र सं० १७ । आ० ६½X४½ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ८५९ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ दिया है । पत्र १५ से आगे ६३ फुटकर श्लोको का सग्रह और है ।

३४२८ द्यानतविलास—द्यानतराय । पत्र सं० २ से १३ । आ० ९X४ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३४४ । ड भण्डार ।

३४२९. धर्मविलास—द्यानतराय । पत्र स० २३४ । आ० ११½X७½ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल X । ले० काल स० १९५८ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ३४२ । क भण्डार ।

३४३०. प्रति सं० २ । पत्र स० १३६ । ले० काल स० १८८१ आसोज बुदी २ । वे० स० ४५ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतरामजी साह के पुत्र शिवलालजी ने नेमिनाथ चैत्यालय (चौधरियो का मन्दिर) के लिए चिम्मनलाल तेरापंथी से दौसा मे प्रतिलिपि करवायी थी ।

३४३१. प्रति सं० ३ । पत्र स० २६१ । ले० काल सं० १६१६ । वे० सं० ३३६ । ङ भण्डार ।

विशेष—तीन प्रकार की लिपि है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३४०) और है ।

३४३२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६४ । ले० काल X । वे० सं० ५१ । झ भण्डार ।

३४३३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० १५६३ । ट भण्डार ।

३४३४. नवरत्न (कवित्त)...... । पत्र सं० २ । आ० ८X४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सुभाषित र० काल X । ले० काल x । पूर्ण । वे० स० १३८८ । अ भण्डार ।

३४३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल X । वे० स० १७८ । च भण्डार ।

३४३६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १९३४ । वे० सं० १७६ । च भण्डार ।

विशेष—पचरत्न और है । श्री विरधीचद पाटोदी ने प्रतिलिपि की थी ।

३४३७. नीतिसार....... । पत्र स० ६ । आ० १०३/४X५ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–नीतिशास्त्र र० काल X । ले० काल X । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

३४३८. नीतिसार—इन्द्रनन्दि । पत्र स० ६ । आ० ११X५ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–नीति शास्त्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ से भद्रबाहु कृत क्रियासार दिया हुआ है । अन्तिम ९वें पत्र पर दर्शनसार है किन्तु अपूर्ण है ।

३४३९. प्रति सं० २ । पत्र स० १० । ले० काल स० १९३७ भादवा बुदी ४ । वे० स० ३८६ । ङ भण्डार ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ३८६, ४००) और हैं ।

३४४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ८ । ले० काल स० १८२२ भादवा सुदी ५ । अपूर्ण । वे० स० ३८१ । ङ भण्डार ।

३४४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । वे० सं० ३२६ । ज भण्डार ।

३४४२. प्रति सं० ५ । पत्र स० ५ । ले० काल सं० १७८४ । वे० सं० १७६ । ञ भण्डार ।

विशेष—मलायनगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे गोर्द्धनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३४४३. नीतिशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० ९ । आ० १०३/४X५३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय सुभाषित । र० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३७९ । ङ भण्डार ।

३४४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १९ । ले० काल X । वे० सं० १४२ । ञ भण्डार ।

३४४५. नीतिवाक्यामृत—सोमदेव सूरि। पत्र सं० ५५। आ० ११X५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-नीतिशास्त्र। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३८४। क भण्डार।

३४४६. नीतिविनोद……। पत्र स० ४। आ० ६X४३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-नीतिशास्त्र। र० काल X। ले० काल स० १६१८। वे० सं० ३३५। झ भण्डार।

विशेष—मन्नालाल पाड्या ने संग्रह करवाया था।

३४४७. नीलसूक्त। पत्र सं० ११। आ० ६३X४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २२८। ज भण्डार।

३४४८. नौशेरवा बादशाह की दस ताज। पत्र सं० ५। आ० ४३X६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-उपदेश। र० काल X। ले० काल स० १६४६ वैशाख सुदी १४। पूर्ण। वे० स० ४०। झ भण्डार।

विशेष—गणेशलाल पाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

३४४६. पञ्चतन्त्र—प० विष्णु शर्मा। पत्र सं० ६४। आ० १२X५३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-नीति। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ८१८। अ भण्डार।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६३७) और है।

३४५०. प्रति सं० २। पत्र सं० ८६। ले० काल X। वे० स० १०१। ख भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३४५१. प्रति स० ३। पत्र स० ५४ से १६८। ले० काल स० १८३२ चैत्र सुदी २। अपूर्ण। वे० स० १६४। च भण्डार।

विशेष—पूर्णचन्द्र सूरि द्वारा सशोधित, पुरोहित भागीरथ पल्लीवाल ब्राह्मण ने सवाई जयनगर (जयपुर) मे पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल मे प्रतिलिपि की थी। इस प्रति का जीर्णोद्धार स० १८५५ फागुण बुदी ३ मे हुआ था।

३४५२. प्रति स० ४। पत्र स० २८७। ले० काल सं० १८८७ पौष बुदी ४। वे० स० ६११। च भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है। प्रारम्भ मे सगही दीवान अमरचदजी के आग्रह से नयनसुख व्यास के शिष्य माणिक्यचन्द्र ने पञ्चतन्त्र की हिन्दी टीका लिखी।

३४५३. पञ्चतन्त्रभाषा……। पत्र स० २२ से १४३। आ० ६X७३ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-नीति। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० १५७८। ट भण्डार।

विशेष—विष्णु शर्मा के संस्कृत पञ्चतन्त्र का हिन्दी अनुवाद है।

३४५४. पाचबोल……। पत्र सं० ६। आ० १०X४ इंच। भाषा-गुजराती। विषय-उपदेश। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० १६६६। ट भण्डार।

३४५५. पैंसठबोल ··· । पत्र स० १ आ० १०X४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-उपदेश। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २१७६। अ भण्डार।

विशेष—ग्रथ बोल ६५

[१] अरथ लोभी [२] निरदई मनख होसी [३] विसवासघाती मंत्री [४] पुत्र सुत्रा अरना लोभा [५] नीचा पेषा भाई बधव [६] असतोष प्रजा [७] विद्यावत दलद्री [८] पाखण्डी शास्त्र बाच [९] जती क्रोधी होइ [१०] प्रजाहीण नगग्रही [११] वेद रोगी होसी [१२] हीण जाति कला होसी [१३] सुधारक छल छद्र होसी [१४] सुभट कायर होसी [१५] खिसा काया कलेस घणु करसी दुष्ट वलवंत सुत्र सो [१६] जोवनवंतजरा [१७] अकाल मृत्यु होसी [१८] पुद्रा जीव घणा [१९] अगहीण मनुष होसी [२०] अलप मेघ [२१] उल्ल सात बोली ही ? [२२] वचन चूक मनुष होसी [२३] विसवासघाती छत्री होसी [२४] सथा ········ [२५] ··· [२६] ······ [२७]··········· [२८] ····· [२९] अणकीधा न कीधो कहसी [३०] आपको कीधो दोष पैला का लगावसी [३१] मसुद्ध साष भणसी [३२] कुटल दया पालसी [३३] भेष धारावैरागी होसी [३४] अहंकार द्वेष मुरख घणा [३५] मुरजादा लोप गऊ ब्राह्मण [३६] माता पिता गुरुदेव मान नही [३७] दुरजन सु सनेह होसी [३८] सजन उपरा विरोध होसी [३९] पैला की निंद्या घणी करेसी [४०] कुलवता नार लहोसी [४१] वेसा भगतण लज्या करसी [४२] अफल वर्षा होसी [४३] वाण्या की जात कुटिल होसी [४४] कवारी चपल होसी [४५] उत्तम घरकी स्त्री नीच सु होसी [४६] नीच घरका रूपवंत होसी [४७] मुहमाग्या मेघ नही होसी [४८] धरती मे मेह थोडो होसी [४९] मनख्या मे नेह थोडो होसी [५०] विना देख्या चुगली करसी [५१] जाको सरणो लेसी तासूं ही द्वेष करी खोटी करसी [५२] गज हीणा राजा होसासी [५३] न्याय कहा हान क लेसी [५४] मवर्वसा राजा हो [५५] रोग सोग घणा होसी [५६] रतवा प्रात होसी [५७] नीच जात श्रद्धान होसी [५८] राडजोग घणा होसी [५९] अस्त्री कलेस गराघण [६०] अस्त्री सील हीण घणी होसी [६१] सीलवती विरली होसी [६२] विष विकार वनो रगत होसी [६३] ससार चलावाता ते दुगी जाण जोसी।

॥ इति श्री पचावस बोल सपूरण ॥

३४५६. प्रबोधसार—यशःकीर्त्ति। पत्र सं० २३। आ० ११X४½ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० १७५। अ भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे मूल अपभ्रंश का उल्था है।

३४५७. प्रति स० २। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १८५७। वे० सं० ४९५। क भण्डार।

३४५८. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—तुलसीदास। पत्र सं० २। आ० ६३/४×३१/२ इंच। भाषा-गुजराती। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६७०। ट भण्डार।

३४५६. प्रश्नोत्तररत्नमालिका—अमोघवर्ष। पत्र स० २। आ० ११×४१/२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०७। अ भण्डार।

३४६०. प्रति सं० २। पत्र स० २। ले० काल सं० १६७१ मगसिर सुदी ५। वे० स० ५१६। क भण्डार।

३४६१. प्रति सं० ३। पत्र स० २। ले० काल ×। वे० स० १०१। छ भण्डार।

३४६२. प्रति सं० ४। पत्र स० ३। ले० काल ×। वे० सं० १७६२। ट भण्डार।

३४६३. प्रस्ताविक श्लोक....। पत्र स० ३६। आ० ११×६१/२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५१४। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है। विभिन्न ग्रन्थो मे से उत्तम पद्यो का सग्रह है।

३४६४. बारहखड़ी...... सूरत। पत्र स० ७। आ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५६। झ भण्डार।

३४६५. बारहखड़ी। पत्र स० २०। आ० ५×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २५६। झ भण्डार।

३४६६. बारहखड़ी—पार्श्वदास। पत्र सं० ५। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल सं० १८६६ पौष बुदी ६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४०।

३४६७. बुधजनविलास—बुधजन। पत्र स० ६४। आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। र० काल स० १८६१ कार्त्तिक सुदी २। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८७। झ भण्डार।

३४६८ बुधजन सतसई—बुधजन। पत्र स० ४८। आ० ८×५१/२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल स० १८७९ ज्येष्ठ बुदी ८। ले० काल स० १९८० माघ बुदी २। पूर्ण। वे० स० ४४४। अ भण्डार।

विशेष—७०० दोहो का सग्रह है।

३४६९. प्रति स० २। पत्र स० २५। ले० काल ×। वे० सं० ७६४। अ भण्डार।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६५४, ६८४) और हैं।

३४७० प्रति स० ३। पत्र सं० ८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ५३४। क भण्डार।

३४७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ७२६ । च भण्डार ।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७४६) और है ।

३४७२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १९५४ आषाढ सुदी १० । वे० स० १६४० । ट भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १६३२) और है ।

३४७३. बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र सं० ३०३ । ले० काल × । वे० सं० ५३५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ५३६) और है । हिन्दी अर्थ सहित है ।

३४७४. ब्रह्मविलास—भैया भगवतीदास । पत्र सं० २१३ । आ० १३×५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल सं० १७५५ बैशाख सुदी ३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । क भण्डार ।

विशेष—कवि की ६७ रचनाओ का संग्रह है ।

३४७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३२ । ले० काल × । वे० सं० ५३६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है । चौकोर लाइनें सुनहरी रग की हैं । प्रति गुटके के रूप मे है तथा प्रदर्शनी मे रखने योग्य है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५३८) और है ।

३४७६. प्रति सं० ३ । पत्र स० १२० । ले० काल × । वे० सं० ५३८ । क भण्डार ।

३४७७. प्रति सं० ४ । पत्र स० १३७ । ले० काल स० १८५७ । वे० सं० १२७ । ख भण्डार ।

विशेष—माधोराजपुरा मे महात्मा जयदेव जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी । मिती माह सुदी ९ सं० १८८९ मे गोबिन्दराम साहबडा (छाबडा) की मार्फत पचार के मन्दिर के वास्ते दिलाया । कुछ पत्र चूहे काट गये हैं ।

३४७८. प्रति स० ५ । पत्र सं० १११ । ले० काल स० १८८३ चैत्र सुदी ९ । वे० सं० ६५१ । च भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ हुकमचन्दजी वज ने दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर मे चढाया था ।

३४७९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २०३ । ले० काल × । वे० सं० ७३ । व्य भण्डार ।

३४८०. ब्रह्मचर्याष्टक……। पत्र सं० ५६ । आ० ९३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७४८ । पूर्ण । वे० सं० १२६ । ख भण्डार ।

३४८१. भर्तृहरिशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० २० । आ० ८३/४×५३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम शतकत्रय अथवा त्रिशतक भी है ।

इसी भण्डार मे ८ प्रतिया (वे० स० ६५५, ३८१, ६२८, ६४६, ७६३, १०७४, ११३६, ११७३) और हैं।

३४८२ प्रति स० २ । पत्र सं० १२ से १६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ५६१ । ङ भण्डार ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ५६२, ५६३) अपूर्ण और हैं।

३४८३. प्रति स० ३ । पत्र स० ११ । ले० काल X । वे० स० २६३ । च भण्डार ।

३४८४. प्रति स० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल स० १८७५ चैत सुदी ७ । वे० सं० १३८ । ञ भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २८८) और है।

३४८५. प्रति स० ५ । पत्र स० ५२ । ले० काल स० १६२८ । वे० स० २८४ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। सुखचन्द ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

३४८६. प्रति सं० ६ । पत्र स० ४५ । ले० काल X । वे० स० १६२ । ञ भण्डार ।

३४८७. प्रति सं० ७ । पत्र स० ८ से २६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ११७५ । ट भण्डार ।

३४८८. भावशतक—श्री नागराज । पत्र स० १४ । आ० ६X४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल X । ले० काल सं० १८३८ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ५७० । ङ भण्डार ।

३४८६ मनमोदनपंचशतीभाषा—छत्रपति जैसवाल । पत्र स० ८६ । आ० ११X५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र० काल स० १६१६ । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । क भण्डार ।

विशेष—सभी सामान्य विषयो पर छदो का सग्रह है।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५६६) और है।

३४६०. मान बावनी—मानकवि । पत्र स० २ । आ० ६½X३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५१६ । ञ भण्डार ।

३४६१. मित्रविलास—घासी । पत्र सं० ३४ । आ० ११X५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र० काल सं० १७६६ फागुण सुदी ४ । ले० काल सं० १६५२ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५७६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक ने यह ग्रन्थ अपने मित्र भारामल तथा पिता वहालसिंह की सहायता से लिखा था।

३४६२. रत्नकोष...... । पत्र स० ८ । आ० १०X४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल X । ले० काल सं० १७२२ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १०३८ । अ भण्डार ।

विशेष—विश्वसेन के शिष्य बलभद्र ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०२१) तथा ञ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३४५ क) और है।

३४६३. रत्नकोष ······। पत्र सं० १४। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६२४। क भण्डार।

विशेष—१०० प्रकार की विविध बातो का विवरण है जैसे ४ पुरुषार्थ, ६३ राजवंश, ७ अंगराज्य, राजाओं के गुण, ४ प्रकार की राज्य विद्या, ६३ राज्यपाल, ६३ प्रकार के राजविनोद तथा ७२ प्रकार की कला आदि।

३४६४. राजनीतिशास्त्रभाषा—जसुराम। पत्र स० १८। आ० ५½×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–राजनीति। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८। झ भण्डार।

विशेष—श्री गणेशायनम. अथ राजनीत जसुराम कृत लीखत।

दोहा— अछर अगम अपार गति कितहु पार न पाय।
सो मोकु दीजे सकती जै जै जै जगराय॥

छप्पय— बरनी उज्ज्वल बरन सरन जग असरन सरनी।
कर करूना करन तरन सब तारन तरनी॥
शिर पर धरनी छत्र भरन सुख संपत भरनी।
भरनी अमृत भरन हरन दुख दारिद हरनी॥
धरनी त्रिसुल खपर धरन भव भय हरनी।
सकल भय जग वध आदि वरनी जसु जे जग धरनी॥ मात जे०।

दोहा— जे जग धरनी मात जे दीजे बुधि अपार।
करी प्रनाम प्रसन्न कर राजनीत वीसतार॥३॥

अन्तिम— लोक सीरकार राजी ओर सब राजी रहै।
चाकरी के कीये विन लालच न चाइयै॥
किन हु की भली बुरी कहिये न काहु आगै।
सटका दे लछन कछु न आप साई है॥
राय के उजीर नमु राख राख लेत रंग।
येक टेक हु की बात उमरनीवाहिये॥
रीझ खीझ सिरकु चढाय लीजे जसुराम।
येक परापत कु येते गुन चाहीये॥४॥

३४९५. राजनीति शास्त्र—देवीदास। पत्र सं० १७। आ० ८३/४×६ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-राजनीत। र० काल ×। ले० काल स० १९७३। पूर्ण। वे० स० ३४३। झ भण्डार।

३४९६. लघुचाणिक्य राजनीति—चाणिक्य। पत्र सं० ६। आ० १२×५१/२ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-राजनीति। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३३९। ज भण्डार।

३४९७. वृन्दसतसई—कवि वृन्द। पत्र सं० ४। आ० १३१/२×६१/२ इ च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सुभाषित। र० काल सं० १७६१। ले० काल स० १८३४। पूर्ण। वे० सं० ७७९। अ भण्डार।

३४९८. प्रति सं० २। पत्र स० ४१। ले० काल ×। वे० स० ६८५। ङ भण्डार।

३४९९ प्रति सं० ३। पत्र स० ६४। ले० काल सं० १८६७। वे० स० १९९। छ भण्डार।

३५००. वृहद् चाणिक्यनीतिशास्त्र भाषा—मिश्ररामराय। पत्र सं० ३८। आ० ८३/४×६ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-नीतिशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५५१। च भण्डार।

विशेष—माणिक्यचद ने प्रतिलिपि की थी।

३५०१. प्रति सं० २। पत्र सं० ४८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५५२। च भण्डार।

३५०२ षष्ठिशतक टिप्पण—भक्तिलाल। पत्र सं० ५। आ० १०×४ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल स० १५७२। पूर्ण। वे० सं० ३५८। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इति षष्ठिशतक समाप्त। श्री भक्तिलाभोपाध्याय शिष्य प० चारू चन्द्रे णलिखि।

इसमे कुल १६१ गाथायें हैं। अत की गाथा में ग्रन्थकर्त्ता का नाम दिया है। १६०वी गाथा की संस्कृत टीका निम्न प्रकार है—

एव सुगमा। श्री नेमिचन्द्र भाडारिक पूर्वं गुरु विरहे धर्मस्य ज्ञातानाभूत। श्री जिनवल्लभसूरि गुणानश्रुत्वा तत्कृते पिंड विशुद्धयादि परिचयेन धर्मतत्वज्ञो ततस्तेन सर्वधर्म मूल सम्यक्त्व शुद्धि दृढताहेतुभूता ॥ १६० ॥ सख्या गाथा विरचया चक्रे इति सम्बन्ध।

व्याख्यान्वय पूर्वाऽवचूर्णि रेषातुभक्तिलाभकृता।
सूत्रार्थ ज्ञान फला विज्ञेया षष्ठि शतकस्य ॥१॥

प्रशस्ति— सं० १५७२ वर्षे श्री विक्रमनगरे श्री जय सागरोपाध्याय शिष्य श्री रत्नचन्द्रोपाध्याय शिष्य श्री भक्तिलाभो पाध्याय कृता स्वशिष्या वा चारित्रसार पं० चारु चंद्रादिभिर्वाच्यमाना चिर नदतात्। श्री कल्याण भवतु श्री श्रमण संघस्य।

३५०३. शुभसीख·······। पत्र सं० २। आ० ८३/४×४ इ च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४७। छ भण्डार।

३५०४ प्रति स० २। पत्र सं० ४। ले० काल X। वे० सं० १४६। छ भण्डार।

विशेष—१३९ सीखो का वर्णन है।

३५०५ सज्जनचित्तवल्लभ—मल्लिषेण। पत्र सं० ३। ग्रा० ११½X५½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–सुभाषित। र० काल X। ले० काल स० १८२२। पूर्ण। वे० स० १०५७। अ भण्डार।

३५०६ प्रति स० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १८१८। वे० स० ७३१। क भण्डार।

३५०७ प्रति सं० ३। पत्र स० ४। ले० काल सं० १९५४ पौष बुदी ३। वे० सं० ७२८। क भण्डार।

३५०८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५। ले० काल X। वे० सं० २९३। छ भण्डार।

३५०९ प्रति सं० ५। पत्र स० ३। ले० काल स० १७४९ आसोज सुदी ६। वे० सं० ३०४। ञ भण्डार।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्त्ति के शिष्य दोदराज ने प्रतिलिपि की थी।

३५१०. सज्जनचित्तवल्लभ—शुभचन्द्। पत्र सं० ४। ग्रा० ११X८ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १९९। ञ भण्डार।

३५११ सज्जनचित्तवल्लभ ......। पत्र सं० ४। ग्रा० १०½X४½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–सुभाषित। र० काल X। ले० काल सं० १७५९। पूर्ण। वे० सं० २०४। ख भण्डार।

३५१२. प्रति स० २। पत्र सं० ३। ले० काल X। वे० सं० १५३। ज भण्डार।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

३५१३. सज्जनचित्तवल्लभ—हर्गूलाल। पत्र सं० ९६। ग्रा० १२½X५ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल सं० १९०६। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ७२७। क भण्डार।

विशेष—हर्गूलाल खतौली के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम प्रीतमदास था। बाद मे सहारनपुर चले गये थे वहा मित्रो की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना की थी।

इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० ७२९, ७३०) और हैं।

३५१४. सज्जनचित्तवल्लभ—मिहरचन्द्र। पत्र स० ३१। ग्रा० ११X७ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल सं० १९२१ कार्तिक सुदी १३। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ७२६। क भण्डार।

३५१५. प्रति सं० २। पत्र सं० २६। ले० काल X। वे० सं० ७२५। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी पद्य मे भी अनुवाद दिया है।

३५१६ सद्भाषितावलि—सकलकीर्त्ति। पत्र सं० ३४। आ० १०३/४×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८५७। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १८६८) और है।

३५१७. प्रति सं० २। पत्र सं० २५। ले० काल स० १८१० मगसिर सुदी ७। वे० सं० ४७२। व भण्डार।

विशेष—घासीराम यति ने मन्दिर मे यह ग्रन्थ चढाया था।

३५१८. प्रति सं० ३। पत्र सं० २६। ले० काल ×। वे० सं० १६४६। ट भण्डार।

३५१९. सद्भाषितावलीभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १३६। आ० ११×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १९४९ ज्येष्ठ बुदी १३। पूर्ण। वे० स० ७३२। क भण्डार।

विशेष—पुट्ठो पर पत्रो की सूची लिखी हुई है।

३५२०. प्रति सं० २। पत्र सं० ११७। ले० काल सं० १९४०। वे० सं० ७३३। क भण्डार।

३५२१ सद्भाषितावलीभाषा……। पत्र सं० २५। आ० १२×५१/२ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सुभाषित। र० काल सं० १९११ सावन सुदी ५। पूर्ण। वे० स० ५६। व भण्डार।

३५२२ सन्देहसमुच्चय—धर्मकलशसूरि। पत्र सं० १८। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २७१। छ भण्डार।

३५२३ सभासार नाटक—रघुराम। पत्र स० १५ से ४३। आ० ५१/२×८१/२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल स० १८८१। अपूर्ण। वे० स० २०७। ख भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ मे पचमेरु एवं नन्दीश्वरद्वीप पूजा है।

३५२४. सभातरग । पत्र स० ३८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १८७४ ज्येष्ठ बुदी ५। पूर्ण। वे० स० १००। छ भण्डार।

विशेष—गोधो के नेमिनाथ चैत्यालय सागानेर मे हरिवंशदास के शिष्य कृष्णचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

३५२५ सभाशृङ्गार । पत्र स० ४६। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल स० १७३१ कार्त्तिक सुदी १। पूर्ण। वे० सं० १८७७।

विशेष—प्रारम्भ-

सकलगणि गजेंद्र श्री श्री श्री साधु विजयगणिगुरुभ्योनमः। अथा सभाशृङ्गार ग्रन्थ लिख्यते। श्री ऋषभ देवाय नम। श्री रस्तु॥

नाभि नदनु सकलमहीमडनु पचशत धनुष मानु तो"" तोर्ण सुवर्ण समानु हर गवल श्यामल कुंतलावली विभूषित स्कधु केवलज्ञान लक्ष्मी सनाथु भव्य लोकान्हिमुत्ति[क्ति]मार्गनी देखाउई। साध ससार शधकूप (अधकूप) प्राणिवर्ग पडता दइ हाथ। युगला धर्म धर्म निवार वा समर्थ। भगवत श्री आदिनाथ श्री सघतणो मनोरथ पुरो ॥१॥ वीतराग वाणी ससार समुत्तारिणी। महामोह विध्वसनी। दिनकरानुकारिणी। क्रोधाग्नि दावानलोपशामिनीमुक्तिमार्ग प्रकाशिनी। सर्व जन चित्त सम्मोहकारिणी। आगमोदगारिणी वीतराग वाणी ॥२॥

विशेष अतीसय निधान सकलगुणप्रधान मोहाधकारविछेदन भानु त्रिभुवन सकलसंदेह छेदकं। अछेद्य अभेद्य प्राणिगण हृदय भेदक अनतानत विज्ञान इसिउ अपनु' केवलज्ञान ॥३॥

अन्तिम पाठ—

अथस्त्री गुणा— १ कुलीना २. शीलवती ३. विवेकी ४. दानसीला ५. कीर्त्तवती ६. विज्ञानवती ७. गुणग्राहणी ८. उपकारिणी ६ कृतज्ञा १०. धर्मवती ११ सोत्साहा १२. सभवमत्रा १३. क्लेससही १४. अनुपतापीनी १५. सूपात्र सधीर १६. जितेन्द्रिया १७ समून्हा १८. अल्पाहारा १६ अलडोला २०, अल्पनिद्रा २१. मितभाषिणी २२ चितज्ञा २३. जीतरोषा २४ अलोभा २५ विनयवती २६. सल्ला २७ सौभाग्यवती २८. सुचिवेषा २६. शुषाशूषा ३०. प्रसन्नमुखी ३१ सुप्रमाणशरीर ३२. सूलपणवती ३३ स्नेहवती। इतियोद्गुणा।

इति सभाशृङ्गार सपूर्ण ॥

ग्रन्थाग्रन्थ सख्या १००० सवत् १७३१ वर्षमास कार्तिक सुदी १४ वार सोमवारे लिखत रूपविजयेन ॥

स्त्री पुरुषो के विभिन्न लक्षण, कलाओ के लक्षण एव सुभाषित के रूप में विविध बाते दी हुई है।

३५२६ सभाशृङ्गार""" । पत्र सं० २८ । आ० १०×४३ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय -सुभाषित । र० काल × । ले० काल स० १७३२ । पूर्ण । वे० सं० ७६४ । ङ भण्डार ।

३५२७ सबोधसत्ताणु—वीरचद । पत्र स० ११ । आ० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७५६ । अ भण्डार ।

प्रारम्भ—

परम पुरुष पद मन धरी, समरी सार नोकार।
परमारथ परिण पत्रणब्धु , सबोधसत्ताणु बीसार ॥१॥
आदि अनादि ते आत्मा, अडवड्यु ऐहअनिवार।
धर्म्म विहुणो जीवणों, वापडु पड्यो ये ससार ॥२॥

अन्तिम—

सूरी श्री विद्यानदी जयो श्रीमल्लिभूषण मुनिचद।
तसपरि माहि मानिलो, गुरु श्री लक्ष्मीचन्द ॥ ६६ ॥

तेह कुले कमल दीवसपती जयन्ती जती वीरचद ।

सुणता भणता ए भावना पीमीये परमानन्द ॥६७॥

इति श्री वीरचद विरचिते सबोधसत्ताणुद्मा सपूर्ण ।

३५२८ सिन्दूरप्रकरण—सोमप्रभाचार्य । पत्र स० ६ । आ० ६¾×४ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० स० २१७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । क्षेमसागर के शिष्य कीर्त्तिसागर ने खवा मे प्रतिलिपि की थी ।

३५२६. प्रति सं० २ । पत्र स० ५ से २७ । ले० काल स० १६०३ । अपूर्ण । वे० स० २००६ । ट भण्डार ।

विशेष—हर्षकीर्त्ति सूरि कृत सस्कृत व्याख्या सहित है ।

अन्तिम— इति सिन्दूर प्रकरणाख्यस्य व्याख्याणा हर्षकीर्त्तिभि सूरिभिर्विहितायात ।

३५३० प्रति सं० ३ । पत्र स० ५ से ३४ । ले० काल सं० १८७० श्रावण सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० २०१६ । ट भण्डार ।

विशेष—हर्षकीर्त्ति सूरि कृत सस्कृत व्याख्या सहित है ।

३५३१. सिन्दूरप्रकरणभाषा—वनारसीदास । पत्र स० २६ । आ० १०½×४½ । भाषा हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १६६१ । ले० काल स० १८५२ । पूर्ण । वे० स० ८५६ ।

विशेष—सदासुख भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।

३५३२. प्रति सं० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० ७१८ । च भण्डार ।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७१७) और है ।

३५३३ सिन्दूरप्रकरणभाषा—सुन्दरदास । पत्र सं० २०७ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल स० १६२६ । ले० काल स० १६३६ । पूर्ण । वे० स० ७६७ । क भण्डार ।

३५३४. प्रति स० २ । पत्र स० २ से ३० । ले० काल स० १६३७ सावन बुदी ६ । वे० स० ८२३ । क भण्डार ।

विशेष—भाषाकार वधावर के रहने वाले थे । बाद मे ये मालवदेश के इ वावतिपुर मे रहने लगे थे ।

इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ७६८, ८२४, ८५७) और हैं ।

३५३५ सुगुरुशतक—जिनदास गोधा । पत्र स० ४ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–सुभाषित । र० काल स० १८५२ चैत्र बुदी ८ । ले० काल स० १६३७ कार्त्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ८१० । क भण्डार ।

३५३६. सुभाषितमुक्तावली । पत्र सं० २९ । आ० ६X४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २२६७ । अ भण्डार ।

३५३७ सुभाषितरत्नसन्दोह—आ० अमितिगति । पत्र सं० ५४ । आ० १०X३½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल स० १०५० । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १८६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २६) और है ।

३५३८. प्रति स० २ । पत्र स० ५४ । ले० काल स० १८२६ भादवा सुदी १ । वे० सं० ८२१ । क भण्डार ।

विशेष—सग्रामपुर मे महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३५३९ प्रति स० ३ । पत्र स० ८ से ४९ । ले० काल सं० १८९२ आसोज बुदी १४ । अपूर्ण । वे० स० ८७९ । ङ भण्डार ।

३५४०. प्रति सं० ४ । पत्र स० ७८ । ले० काल सं० १९१० कार्तिक बुदी १३ । वे० सं० ४२० । च भण्डार ।

विशेष—हाथीराम खिन्दूका के पुत्र मोतीलाल ने स्वपठनार्थ पाड्या नाथूलाल से पार्श्वनाथ मदिर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

३५४१. सुभाषितरत्नसन्दोहभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० १८८ । आ० १२½X७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सुभाषित । र० काल स० १९३३ । ले० काल X । वे० सं० ८१८ । क भण्डार ।

विशेष—पहले भोलीलाल ने १८ अधिकार की रचना की फिर पन्नालाल ने भाषा की ।

इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ८१९, ८२०, ८१६, ८१६) और हैं ।

३५४२ सुभाषितार्णव—शुभचन्द्र । पत्र स० ३८ । आ० १२X५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल X । ले० काल स० १७८७ माह सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २१ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र फटा हुआ है । क्षेमकीर्त्ति के शिष्य मोहन ने प्रतिलिपि की थी ।

अ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १९७९) और है ।

३५४३. प्रति स० २ । पत्र स० १४ । ले० काल X । वे० स० २३१ । ख भण्डार ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २३०, २९८) और है ।

३५४४. सुभाषितसग्रह । पत्र स० ३१ । आ० ८X५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल X । ले० काल स० १८४३ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २१०२ । अ भण्डार ।

विशेष—नैणवा नगर मे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य विद्वान रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे १ प्रति पूर्ण (वे० सं० २२५६) तथा २ प्रतिया अपूर्ण (वे० स० १६६६, १६८०) और हैं।

३५४५. प्रति सं० २ । पत्र स० ३ । ले० काल X । वे० स० ८८२ । ङ भण्डार ।

३५४६ प्रति सं० ३ । पत्र स० २० । ले० काल X । वे० स० १४४ । छ भण्डार ।

३५४७. प्रति सं० ४ । पत्र स० १७ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १६३ । ञ भण्डार ।

३५४८ सुभाषितसंग्रह । पत्र स० ४ । आ० १०X४½ इच । भाषा—संस्कृत प्राकृत । विषय—सुभाषित । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ८६२ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे टब्बा टीका दी हुई है । यति कर्मचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३५४६ सुभाषितसग्रह । पत्र स० ११ । आ० ७X५ इच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २११४ । अ भण्डार ।

३५५०. सुभाषितावली—सकलकीर्त्ति । पत्र स० ५२ । आ० १२X५½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल X । ले० काल स० १७४८ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १८५ । अ भण्डार ।

विशेष—लिखितमिद चौबे रूपसी खीवसी आत्मज ज्ञाति सनावद वराहटा मध्ये । लिखापित पहाड्या मयाचद । स० १७४८ वर्षे मार्गशीर्ष शुक्ला ६ रविवासरे ।

३५५१. प्रति सं० २ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १८०२ पौष सुदी १ । वे० स० २२४ । अ भण्डार ।

विशेष—मालपुरा ग्राम मे प० नोनिध ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३५५२ प्रति स० ३ । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १६०२ पौष सुदी १ । वे० स० २२७ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६०२ समये पौष वुदी २ शुक्रवासरे श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तदाम्नाये मडलाचार्य श्री सिंहनदिदेवा तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीधर्मकीत्तिदेवा तत्शिष्यणी पंचाणुव्रतधारिणी बीईस्योसिरि तत्शिष्यनि बाई उदइ सिरि पठनार्थं अग्रोतकान्वये मित्तलगोत्रे साधु श्रीधाने भार्या रयवा तयो पुत्रा. त्रया प्रथमपुत्र साधु श्री रइमल भार्या पदारथ । द्वितीय पुत्र चोट्टमल भार्या अजैसिरि तयो पुत्र परात । तृतीयपुत्र तपवपु क्रियाप्रतिपालकान् ऐकादश प्रतिमा धारकान जिनशासन समुद्धरणधीरान् साधु श्री कोडना भार्या साध्वी परिमल तयो इद ग्रन्थ लिखापित कर्मक्षय निमित्त । लिखितंकायस्थगौडान्वयश्रीकेशव तत्पुत्र गनेस ।।

३५५३ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २९ । ले० काल सं० १६४७ माघ सुदी । वे० स० २३५ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

भट्टारक श्रीसकलकीर्त्तिविरचिते सुभाषितरत्नावलीग्रन्थसमाप्त । श्रीमच्छ्रीपद्मसागरसूरिविजयराज्ये सवत् १६४७ वर्ष माघमासे शुक्लपक्षे गुरुवासरे लीपीकृतं श्रीमुनि शुभमस्तु । लेखक पाठकयो ।

सवत्सरे पृथ्वीमुनीयतीन्द्रमिते (१७७७) माघाशितदशम्या मालपुरेमध्ये श्रीआदिनाथचैत्यालये शुद्धीकृतोऽय सुभाषितरत्नावलीग्रन्थ पाडेश्रीतुलसीदासस्य शिष्येण त्रिलोकचद्रेण ।

अ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० २८१, ७८७, ७८८, १८६४) और है।

३५५४. प्रति स० ५ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १६३६ । वे० सं० ८१३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ८१४) और है।

३५५५. प्रति स० ६ । पत्र ० २६ । ले० काल स० १८४६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० स० २३३ । ख भण्डार

विशेष—प० माणकचन्द की प्रेरणा से पं० स्वरूपचन्द ने पं० कपूरचन्द से जवनपुर (जोबनेर) मे प्रतिलिपि कराई ।

३५५६ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४६ । ले० काल स० १६०१ चैत्र सुदी १३ । वे० सं० ८७४ । ङ भण्डार ।

विशेष—श्री पाल्हा बाकलीवाल ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० ८७३, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८) और हैं।

३५५७. प्रति स० ८ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १७६५ आसोज सुदी ८ । वे० स० २६५ । छ भण्डार ।

३५५८. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३० । ले० काल स० १६०४ माघ बुदी ४ । वे० स० ११४ । ज भण्डार ।

३५५६ प्रति सं० १० । पत्र सं० ३ से ३० । ले० काल सं० १६३५ बैशाख सुदी १५ । अपूर्ण । वे० स० २१३४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम २ पत्र नही हैं। लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

३५६०. सुभाषितावली…… । पत्र स० २१ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८१८ । पूर्ण । वे० सं० ४१७ । च भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ दीवान सगही ज्ञानचन्दजी का है।

च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ४१८, ४१६) अ भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० ६३५, १२०१) तथा ट भण्डार १ (वे० स० १०८१) अपूर्ण प्रति और है।

३५६१. सुभाषितावलीभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १०६। आ० १२३/४×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८१२। क भण्डार।

३५६२. सुभाषितावलीभाषा—दूलीचन्द। पत्र स० १३१। आ० १२३/४×५ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल सं० १६३१ ज्येष्ठ सुदी १। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८८०। क भण्डार।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ८८१) और हैं।

३५६३ सुभाषितावलीभाषा...... । पत्र स० ४५ । आ० ११×४१/२ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल स० १८६३ प्र० आषाढ सुदी २। पूर्ण। वे० स० ११ । झ भण्डार।

विशेष—५०५ दोहे हैं।

३५६४ सूक्तिमुक्तावली—सोमप्रभाचार्य। पत्र सं० १७। आ० १२×५१/२ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६६। अ भण्डार।

विशेष—इसका नाम सुभाषितावली भी है।

३५६५. प्रति सं० २। पत्र स० १७। ले० काल सं० १६८४। वे० सं० ११७। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवत् १६८४ वर्षे श्रीकाष्ठासघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भ० श्रीरामसेनान्वये तत्पट्टे भ० श्री विश्वभूषण तत्पट्टे भ० श्री यश कीर्त्ति ब्रह्म श्रीमेघराज तत्शिष्यब्रह्म श्री करमसी स्वयमेव हस्तेन लिखित पठनार्थं।

अ भण्डार मे ११ प्रतिया (वे० स० १६५, ३३४, ३४८, ६३०, ७६१, ३७६, २०१०, २०४७, १३४८ २०३३, ११६३) और हैं।

३५६६. प्रति स० ३। पत्र स० २५। ले० काल स० १६३८ सावन सुदी ८। वे० सं० ८२२। क भण्डार।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ८२४) और है।

३५६७ प्रति स० ४। पत्र सं० १०। ले० काल स० १७७१ आसोज सुदी २। वे० स० २३४। ख

विशेष—ब्रह्मचारी खेतसी पठनार्थ मालपुरा मे प्रतिलिपि हुई थी।

३५६८. प्रति सं० ५। पत्र स० २४। ले० काल ×। वे० सं० २२६। ख भण्डार।

विशेष—दीवान आरतराम खिदूका के पुत्र कुंवर वखतराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी। अक्षर मोटे एव सुन्दर हैं।

इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० सं० २३२, २६८) और हैं।

३५६९ प्रति सं० ६। पत्र स० २ से २२। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० १२६। घ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

ङ भण्डार मे ३ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० ८८३, ८८४, ८८५) और है।

३५७०. प्रति सं० ७। पत्र स० १५। ले० काल स० १६०१ प्र० श्रावण बुदी ऽऽ। वे० सं० ४२१। ड भण्डार।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ४२२, ४२३) और है।

३५७१. प्रति स० ८। पत्र स० १४। ले० काल सं० १७४६ भादवा बुदी ६। वे० स० १०३। छ भण्डार।

विशेष—रैनवाल मे ऋषभनाथ चैत्यालय मे आचार्य ज्ञानकीर्ति के शिष्य सेवल ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे (वे० स० १०३) मे ही ४ प्रतिया और है।

३५७२. प्रति सं० ९। पत्र स० १४। ले० काल स० १८६२ पौष सुदी २। वे० सं० १८३। ज भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३६) और है।

३५७३ प्रति स० १०। पत्र स० १०। ले० काल स० १७९७ आसोज सुदी ८। वे० स० ८०। ञ भण्डार।

विशेष—आचार्य क्षेमकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० १६५, २८६ ३७७) तथा ट भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० सं० १६९४, १८३१) और है।

३५७४ सूक्तावली"' "। पत्र स० ६। आ० १०X४½ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल X। ले० काल स० १८९४। पूर्ण। वे० स० ३४७। अ भण्डार।

३५७५ स्फुटश्लोकसग्रह । पत्र स० १० से २०। आ० ६X४ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल X। ले० काल स० १८८३। अपूर्ण। वे० स० २५७। ख भण्डार।

३५७६. स्वरोदय—रनजीतदास (चरनदास)। पत्र स० २। आ० १३३/४X६३/४ इन्च। भाषा-हिन्दी। सुभाषित। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ८१५। अ भण्डार।

३५७७. हितोपदेश—विष्णुशर्मा। पत्र सं० ३६। आ० १२३/४X५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-नीति। र० काल X। ले० काल स० १८७३ सावन सुदी १२। पूर्ण। वे० स० ८५४। क भण्डार।

विशेष—माणिक्यचन्द ने कुमार ज्ञानचद्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३५७८. प्रति सं० २। पत्र स० २। ले० काल ×। वे० स० २४६। ञ भण्डार।

३५७९. हितोपदेशभाषा । पत्र स० २६। आ० ८×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१११। अ भण्डार।

३५८०. प्रति स० २। पत्र स० ८६। ले० काल ×। वे० स० १८६२। ट भण्डार।

विषय- मन्त्र-शास्त्र

३५८१ इन्द्रजाल ..... । पत्र स० २ से ४२ । आ० ८३/४×४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-तन्त्र । र० काल × । ले० काल स० १७७८ बैशाख सुदी ६ । अपूर्ण । वे० स० २०१० । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १६ पर पुष्पिका—

इति श्री राजाधिराज गोख साव वंश केसरीसिंह समाहितेन मनि मडन मिश्र विरचिते पुरदरमाया नाम ग्रन्थ वह्नित स्वामिका का माया ।

पत्र ४२ पर—इति इन्द्रजाल समाप्त ।

कई नुसखे तथा वशीकरण आदि भी हैं । कई कौतूहल की सी बातें हैं । मत्र संस्कृत मे है अजमेर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३५८२ कर्मदहनव्रतमन्त्र .... । पत्र सं० १० । आ० १०१/२×५१/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-मत्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १९३४ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १०४ । ङ भण्डार ।

३५८३ क्षेत्रपालस्तोत्र .... । पत्र स० ४ । आ० ८३/४×६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १९०६ मगसिर सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ११३७ । अ भण्डार ।

विशेष—सरस्वती तथा चौसठ योगिनीस्तोत्र भी दिया हुआ है ।

३५८४ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० सं० ३८ । ग भण्डार ।

३५८५ प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १९६६ । वे० स० २८२ । झ भण्डार ।

विशेष—चक्रेश्वरी स्तोत्र भी है ।

३५८६. घटाकर्णकल्प .... । पत्र स० ५ । आ० १२१/२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १९२२ । अपूर्ण । वे० स० ४५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र पर पुरुषाकार खड्गासन चित्र है । ५ यत्र तथा एक घटा चित्र भी है । जिसमे तीन घण्टे दिये हुये हैं ।

३५८७. घटाकर्णमन्त्र .... । पत्र सं० ५ । आ० १२१/२×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १९२५ । पूर्ण । वे० स० ३०३ । ख भण्डार ।

३५७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल X । वे० स० २४६ । ञ भण्डार ।

३५७६. हितोपदेशभाषा   । पत्र स० २६ । आ० ८X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २१११ । अ भण्डार ।

३५८०. प्रति सं० २ । पत्र स० ८६ । ले० काल X । वे० स० १८६२ । ट भण्डार ।

३६०२. नमस्कारमन्त्र कल्पविधिसहित—सिंहनन्दि । पत्र सं० ४५ । आ० ११३/४×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६२१ । पूर्ण । वे० स० १६० । अ भण्डार ।

३६०३. नवकारकल्प ' । पत्र स० ६ । आ० ६×४३/४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—अक्षरो की स्याही मिट जाने से पढने मे नही आता है ।

३६०४ पचदश (१५) यन्त्र की विधि । पत्र स० २ । आ० ११×५३/४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६७६ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २४ । ज भण्डार ।

३६०५. पद्मावतीकल्प '। पत्र स० २ से १० । आ० ८×४१/२ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय- मंत्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६८२ । अपूर्ण । वे० स० १३३६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति- सवत् १६८२ आसाढेर्गलपुरे श्री मूलसघसूरि देवेन्द्रकीर्त्तिस्तदंतेवासिभिराचार्य श्री हर्षकीर्त्तिभिरिदमलेखि । चिरं नदतु पुस्तकम् ।

३६०६. बाजकोश'''' । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३५ । अ भण्डार ।

विशेष—सग्रह ग्रन्थ है । दूसरा नाम मातृका निर्घट भी है ।

३६०७. भुवनेश्वरीस्तोत्र (सिद्ध महामन्त्र)—पृथ्वीधराचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ६३/४×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६७ । च भण्डार ।

३६०८. भूवल ' । पत्र सं० ८ । आ० ११३/४×५३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६८ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्रथम पद्य से 'अथातः सप्रवक्ष्यामि भूवलानि समासतः' आये हुये भूवल के आधार पर ही लिखा गया है ।

३६०९ भैरवपद्मावतीकल्प—मल्लिषेण सूरि' । पत्र स० २४ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५० । अ भण्डार ।

विशेष—३७ यत्र एव विधि सहित हैं ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३२२, १२७६) और है ।

३६१०. प्रति स० २ । पत्र स० १४६ । ले० काल स० १७६३ बैशाख सुदी १३ । वे० स० ५६५ । क भण्डार ।

३५८८. घंटाकर्णवृद्धिकल्प'' ''''''। पत्र स० ६। आ० १०३/४X५ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल X। ले० काल स० १६१३ वैशाख सुदी ६। पूर्ण। वे० स० १७। घ भण्डार।

३५८९. चतुर्विंशतियज्ञविधान''' । पत्र स० ३। आ० ११३/४X५३/४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १०६६। अ भण्डार।

३५९०. चिन्तामणिस्तोत्र''''''। पत्र स० २। आ० ८३/४X६ इच। भाषा-सस्कृत। विषय मन्त्र शास्त्र। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २८७। झ भण्डार।

विशेष—चक्रेश्वरी स्तोत्र भी दिया हुआ है।

३५९१. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल X। वे० स० २४५। ञ भण्डार।

३५९२ चिन्तामणियन्त्र'' ''''। पत्र स० ३। आ० १०X५ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-यन्त्र। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० २९७। ख भण्डार।

३५९३. चौसठयोगिनीस्तोत्र''''''। पत्र स० १। आ० ११X५३/४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ६२२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ११८७, ११६६, २०६४) और है।

३५९४. प्रति सं० २। पत्र सं० १। ले० काल स० १८८३। वे० स० ३९७। ञ भण्डार।

३५९५ जैनगायत्रीमन्त्रविधान । पत्र सं० २। आ० ११X५३/४ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्र। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ६०। ख भण्डार।

३५९६. णमोकारकल्प'' '' पत्र स० ४। आ० ८३/४X६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल X। ले० काल सं० १९४९। पूर्ण। वे० स० २८८। झ भण्डार।

३५९७. णमोकारकल्प ''। पत्र स० ६। आ० ११३/४X५ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल X। ले० काल स० १९०८। पूर्ण। वे० स० ३५५। अ भण्डार।

३५९८. प्रति सं० २। पत्र स० २०। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० २७४। ख भण्डार।

३५९९. प्रति सं० ३। पत्र स० ६। ले० काल स० १९९५। वे० स० २३२। ड भण्डार।

विशेष—हिन्दी मे मन्त्रसाधन की विधि एव फल दिया हुआ है।

३६०० णमोकारपैंतीसी । पत्र स० ४। आ० १२X५३/४ इच। भाषा-प्राकृत व पुरानी हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २३५। ड भण्डार।

३६०१. प्रति स० २। पत्र स० ३। ले० काल X। वे० स० १२५। च भण्डार।

३६०२. नमस्कारमन्त्र कल्पविधिसहित—सिंहनन्दि। पत्र सं० ४५। आ० ११३/४×५ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १६२१। पूर्ण। वे० स० १६०। अ भण्डार।

३६०३. नवकारकल्प ' । पत्र स० ६। आ० ६×४३/४ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १३४। छ भण्डार।

विशेष—अक्षरो की स्याही मिट जाने से पढने मे नही आता है।

३६०४. पचदश (१५) यन्त्र की विधि । पत्र स० २। आ० ११×५३/४ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १९७६ फागुण बुदी १। पूर्ण। वे० स० २४। ज भण्डार।

३६०५. पद्मावतीकल्प '। पत्र स० २ से १०। आ० ८×४३/४ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय- मंत्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १६८२। अपूर्ण। वे० स० १३३६। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति- सवत् १६८२ आसाढेर्गलपुरे श्री मूलसघसूरि देवेन्द्रकीर्त्तिस्तदंतेवासिभिराचार्य श्री हर्पकीर्त्तिभिरिदमलेखि। चिरं नदतु पुस्तकम्।

३६०६. बाजकोश ' ' । पत्र सं० ६। आ० १२×५। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६३५। अ भण्डार।

विशेष—सगह ग्रन्थ है। दूसरा नाम मातृका निर्घट भी है।

३६०७. भुवनेश्वरीस्तोत्र (सिद्ध महामन्त्र)—पृथ्वीधराचार्य। पत्र स० ६। आ० ६३/४×४ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २६७। च भण्डार।

३६०८. भूवल ' । पत्र सं० ८। आ० ११३/४×५३/४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६८। च भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्रथम पद्य मे 'अयातः सप्रवक्ष्यामि भूवलानि समासतः' आये हुये भूवल के आधार पर ही लिखा गया है।

३६०९ भैरवपद्मावतीकल्प—मल्लिषेण सूरि'। पत्र स० २४। आ० १२×५ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५०। अ भण्डार।

विशेष—३७ यन्त्र एव विधि सहित हैं।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३२२, १२७६) और है।

३६१०. प्रति स० २। पत्र स० १४६। ले० काल स० १७६३ बैशाख सुदी १३। वे० स० ५६५। क भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है।

इसी भण्डार मे १ अपूर्ण सचित्र प्रति (वे० स० ५६३) और है।

३६११. प्रति स० ३। पत्र स० ३५। ले० काल X। वे० स० ५७५। ङ भण्डार।

३६१२. प्रति स० ४। पत्र स० २८। ले० काल स० १८६८ चैत बुदी ...। वे० स० २६९। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति सस्कृत टीका सहित (वे० स० २७०) और है।

३६१३ प्रति स० ५। पत्र स० १३। ले० काल X। वे० स० १६३६। ट भण्डार।

विशेष—बीजाक्षरो मे ३९ यत्रो के चित्र है। यत्रविधि तथा मत्रो सहित है। सस्कृत टीका भी है। पत्र ७ पर बीजाक्षरो मे दोनो ओर दो त्रिकोण यन्त्र तथा विधि दी हुई है। एक त्रिकोण मे आभूषण पहिने खडे हुये नग्न स्त्री का चित्र है जिसमे जगह २ अक्षर लिखे हैं। दूसरी ओर भी ऐसा ही नग्न चित्र है। यन्त्रविधि है। ३ से ६ व ९ से ४६ तक पत्र नही हैं। १—२ पत्र पर यत्र मत्र सूची दी है।

३६१४ प्रति स० ६। पत्र स० ४७ से ५७। ले० काल स० १८१७ ज्येष्ठ सुदी ५। अपूर्ण। वे० स० १६३७। ट भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर मे प० चोखचन्द के शिष्य सुखराम ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे एक प्रति अपूर्ण (वे० स० १६३९) और है।

३६१५ भैरवपद्मावतीकल्प । पत्र स० ४०। आ० ९X४ इच। भाषा सस्कृत। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ५७४। ङ भण्डार।

३६१६ मन्त्रशास्त्र । पत्र स० ८। आ० ८X५ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ५३१। ञ भण्डार।

विशेष—निम्न मन्त्रो का सग्रह है।

१ चौकी नाहरसिंह की २. कामण विधि ३ यत्र ४ हनुमान मत्र ५ टिड्डी का मन्त्र ६ पलीता भूत व चुडेल का ७ यत्र देवदत्त का ८ हनुमान का यन्त्र ९ सर्पाकार यन्त्र तथा मन्त्र १० सर्वकाम सिद्धि यन्त्र (चारो कोनो पर औरङ्गजेब का नाम दिया हुआ है) ११. भूत डाकिनी का यन्त्र।

३६१७ मन्त्रशास्त्र । पत्र सं० १७ से २७। आ० ९३/४X५३/४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ५८४। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० ५८५, ५८६) और हैं।

३६१८. मन्त्रमहोदधि—प० महीधर। पत्र सं० १२० । आ० ११३/४×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १८३८ माघ सुदी २। पूर्ण। वे० स० ६१६। अ भण्डार।

३६१९. प्रति सं० २। पत्र स० ५। ले० काल ×। वे० सं० ५८३। ङ भण्डार।

विशेष—अन्नपूर्णा नाम का मन्त्र है।

३६२० मन्त्रसंग्रह ·· । पत्र स० फुटकर। आ० । भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५६८। क भण्डार।

विशेष—करीब ११५ यन्त्रो के चित्र हैं। प्रतिष्ठा आदि विधानो मे काम आने वाले चित्र हैं।

३६२१. महाविद्या (मन्त्रों का संग्रह)·······। पत्र स० २० । आ० ११३/४×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ७९। घ भण्डार।

विशेष—रचना जैन कवि कृत है।

३६२२. यक्षिणीकल्प·· । पत्र स० १। आ० १२×५३/४ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६०५। ङ भण्डार।

३६२३ यत्र मंत्रविधिफल·· ··। पत्र स० १५। आ० ६३/४×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६६६। ट भण्डार।

विशेष—६२ यंत्र मन्त्र सहित दिये हुये है। कुछ यन्त्रो के खाली चित्र दिये हुये हैं। मन्त्र बीजाक्षरो मे हैं।

३६२४. वर्द्धमानविद्याकल्प—सिंहतिलक। पत्र स० ६ से २६। आ० १०३/४×४ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १४९५। अपूर्ण। वे० सं० १९९७। ट भण्डार।

विशेष—१ से ५, ७, १०, १५, १६, १९ से २१ पत्र नही है। प्रति प्राचीन एंव जीर्ण है।

८वें पृष्ठ पर— श्री विबुधचन्द्रगणभृच्छिष्य श्रीसिंहतिलकसूरि रिमासाह्लाददेवतोज्वलविशदमना लिखित वान्कल्प ॥९६॥ इति श्रीसिंहतिलक सूरिकृते वर्द्धमानविद्याकल्पः ॥

हिन्दी गद्य उदाहरण— पत्र ८ पक्ति ५—

जाइ पुष्प सहस्र १२ जाप । गूगल गउ बीस सहस्र ॥१२॥ होम कीजइ विद्यालाभ हुई।

पत्र ८ पक्ति ९— ओ कुरु कुरु कामाख्यादेवी कामइ आवीज २। जग मन मोहनी सूती वइठी उठी जणमण हाथ जोडिकरि साम्ही आवइ। माहरी भक्ति गुरु की शक्ति बाथदेवी कामाख्या माहरी शक्ति आकर्पि।

पृष्ठ २४— अन्तिम पुष्पिका— इति वर्द्धमानविद्याकल्पस्तृतीयाधिकार ॥ ग्रन्थाग्रन्थ १७५ अक्षर १६ सं० १४९५ वर्षे सगरकूपशालाया अणिहल्लपाटकपरपर्याये श्री पत्तनमहानगरेऽलेखि।

पत्र २५— गुटिकाओ के चमत्कार हैं। दो स्तोत्र हैं। पत्र २६ पर नालिकेर कल्प दिया है।

३६२५ विजययन्त्रविधान ''' । पत्र स० ७ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ५६८, ५६६) तया च भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३३१) और है।

३६२६. विद्यानुशासन '''' । पत्र स० ३७० । आ० ११×५३ इच । भाषा-सस्कृत । र० काल × । ले० काल स० १६०६ प्र० भादवा बुदी २ । पूर्ण । वे० स० ६५६ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ सम्बन्धित यन्त्र भी है। यह ग्रन्थ छोटीलालजी ठोलिया के पठनार्थ प० मोतीलालजी के द्वारा हीरालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराई। पारिश्रमिक २४।-) लगा।

३६२७. प्रति स० २ । पत्र स० २८५ । ले० काल स० १६३३ मगसिर बुदी ५ । वे० स० ६५ । घ भण्डार ।

विशेष—गङ्गाबक्स ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

३६२८ यन्त्रसंग्रह ' । पत्र स० ७ । आ० १३३×६३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५४५ । अ भण्डार ।

विशेष—लगभग ३५ यन्त्रो का सग्रह है।

३६२६. षटकर्मकथन '' '' । पत्र स० ३ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१०३ । ट भण्डार ।

विशेष—मन्त्रशास्त्र का ग्रन्थ है।

३६३०. सरस्वतीकल्प ''''। पत्र सं० २ । आ० ११३×६ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७७० । क भण्डार ।

विषय-कामशास्त्र

३६३१ कोकशास्त्र ...। पत्र स० ६। आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोक। र० काल ×। ले० काल स० १८०३। पूर्ण। वे० स० १६५६। ट भण्डार।

विशेष—निम्न विषयो का वर्णन है।

द्रावणविधि, स्तम्भनविधि, बाजीकरण, स्थूलीकरण, गर्भाधान, गर्भस्तम्भन, सुखप्रसव, पुष्पाधिनिवारण, योनिसस्कारविधि आदि।

३६३२ कोकसार ...। पत्र सं० ७। आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कामशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२६। छ भण्डार।

३६३३. कोकसार—आनन्द। पत्र सं० ५। आ० १३$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कामशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८१६। अ भण्डार।

३६३४ प्रति स० २। पत्र सं० १७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६। ख भण्डार।

३६३५ प्रति स० ३। पत्र स० ३०। ले० काल ×। वे० सं० २६४। झ भण्डार।

३६३६ प्रति सं० ४। पत्र स० १६। ले० काल सं० १७३६ प्र० चैत्र सुदी ५। वे० सं० १५५२। ट भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण है। जट्टू व्यास ने नरायणा मे प्रतिलिपि की थी।

३६३७. कामसूत्र—कविहाल। पत्र सं० ३२। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-कामशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५। ख भण्डार।

विशेष—इसमे कामसूत्र की गाथायें दी हुई हैं। इसका दूसरा नाम सत्तसग्रसमत्त भी है।

विषय- शिल्प-शास्त्र

३६३८. बिम्बनिर्माणविधि ……। पत्र सं० ६ । आ० ११३×७३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–शिल्प शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३३ । क भण्डार ।

३६३९. बिम्बनिर्माणविधि ……। पत्र सं० ६ । आ० ११×७३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–शिल्प शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३४ । क भण्डार ।

३६४०. बिम्बनिर्माणविधि …… । पत्र सं० ३६ । आ० ८३×६३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–शिल्पकला [प्रतिष्ठा] र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४७ । च भण्डार ।

विशेष—कापी साइज है । प० कस्तूरचन्दजी साह द्वारा लिखित हिन्दी अर्थ सहित है । प्रारम्भ में ३ पेज की भूमिका है । पत्र १ से २५ तक प्रतिष्ठा पाठ के श्लोको का हिन्दी अनुवाद किया गया है । श्लोक ६१ हैं । पत्र २६ से ३६ तक बिम्ब निर्माणविधि भाषा दी गई है । इसी के साथ ३ प्रतिमाओ के चित्र भी दिये गये हैं । (वे० स० २४६) च भण्डार । कलशारोपण विधि भी है । (वे० सं० २४८) च भण्डार ।

३६४१. वास्तुविन्यास…… । पत्र स० ३ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–शिल्पकला । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

विषय- लक्षण एवं समीक्षा

३६४२. आगमपरीक्षा । पत्र स० ३ । आ० ७X३½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-समीक्षा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १६४५ । ट भण्डार ।

३६४३. छंदशिरोमणि—शोभनाथ । पत्र स० ३१ । आ० ६X६ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-लक्षण । र० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी ···· । ले० काल स० १८२६ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १६३६ । ट भण्डार ।

३६४४ छंदकीय कवित्त—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० ६ । आ० १२×६½ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-लक्षण ग्रन्थ । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १८१४ । ट भण्डार ।

अन्तिम पुष्पिका— इति श्री छंदकीयकवित्ते कामधेन्वाख्ये भट्टारकश्रीसुरेन्द्रकीर्त्तिविरचिते समवृतप्रकरण समाप्त । प्रारम्भ मे कमलबध कवित्त मे चित्र दिये है ।

३६४५. धर्मपरीक्षाभाषा—दशरथ निगोत्या । पत्र सं० १६१ । आ० १२X५½ इ च । भाषा-सस्कृत हिन्दी गद्य । विषय-समीक्षा । र० काल स० १७१८ । ले० काल स० १७५७ । पूर्ण । वे० स० ३६१ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे मूल के साथ हिन्दी गद्य टीका है । टीकाकार का परिचय—

साहु श्री हेमराज सुत मात हमीरदे जाणि ।
कुल निगोत श्रावक धर्म दशरथ तज्ञ बखाणि ।।
संवत सतरासै सही अष्टादश अधिकाय ।
फागुण तम एकादशी पूरण भई सुभाय ।।
धर्म परीक्षा वचनिका सुदरदास सहाय ।
साधर्मी जन समझि नै दशरथ कृति चितलाय ।।

टीका— विषया कै वसि पड्या कृपण जीव पाप ।
करै छै सह्यौ नै जाई ती थै दुखी होइ मरे ।।

लेखक प्रशस्ति— संवत् १७५७ वर्षे पौष शुक्ला १२ भृगौवारे दिवसा नगर्या (दौसा) जिन चैत्यालये लि० भट्टारक-श्रीनरेन्द्रकीर्त्ति तत्शिष्य प० (गिरधर) कृटा हुआ ।

३६४६. प्रति स० २ । पत्र स० ४०५ । ले० काल सं० १७१६ मंगसिर सुदी ६ । वे० स० ३३० । ङ भण्डार ।

विशेष—इति श्री अमितिगतिकृता धर्मपरीक्षा मूल तिहकी बालबोधनामटीका तज्ञ धर्म्मार्थी दशरथेन कृता. समाप्ता ।

३६४७ प्रति स० ३ । पत्र स० १३५ । ले० काल स० १८९६ भादवा सुदी ११ । वे० स० ३३१ । ङ भण्डार ।

३६४८. धर्मपरीक्षा—अमितिगति । पत्र स० ८५ । आ० १२×४½ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-समीक्षा । र० काल स० १०७० । ले० काल सं० १८८४ । पूर्ण । वे० स० २१२ । अ भण्डार ।

३६४९. प्रति सं० २ । पत्र स० ७५ । ले० काल स० १८८६ चैत्र सुदी १५ । वे० स० ३३२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ७८४, ६४५) और हैं ।

३६५०. प्रति स० ३ । पत्र स० १३१ । ले० काल स० १९३९ भादवा सुदी ७ । वे० स० ३३५ । क भण्डार ।

३६५१. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १७८७ माघ बुदी १० । वे० स० ३२६ । ङ भण्डार ।

३६५२ प्रति स० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० स० १७१ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३६५३. प्रति स० ६ । पत्र स० १३३ । ले० काल स० १६५३ वैशाख सुदी २ । वे० सं० ५६ । छ भण्डार ।

विशेष—अलाउद्दीन के शासनकाल मे लिखा गया है । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६०, ६१) और हैं ।

३६५४ प्रति स० ७ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ११५ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३४४, ४७४) और हैं ।

३६५५ प्रति स० ८ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १५९३ भादवा बुदी १३ । वे० स० २१५७ । ट भण्डार ।

विशेष—रामपुर में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे जमू से लिखवाकर ब्र० श्री धर्मदास को दिया । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

मुझ देउमाता श्रीगणधर स्वामी नमसकरूंश्री सकलकीर्त्ति भवतार,

मुनि भवनकीर्त्ति पाय प्रणमनि कहिसू रासहू सार ॥१॥

दूहा— धरम परीक्षा करूं निरूमली भवीयण सुणु तह्म सार।

ब्रह्म जिणदास कहि निरमलु जिम जाणु विचार ॥२॥

कनक रतन माणिक आदि परीक्षा करी लीजिसार।

तिम धरम परीषीइ सत्य लीजि भवतार ॥३॥

अन्तिम प्रशस्ति—

दूहा— श्री सकलकीरतिगुरुप्रणमीनि मुनिभवनकीरतिभवतार।

ब्रह्म जिणदास भणिरू मडु रासकीउ सविचार ॥६०॥

धरमपरीक्षारासनिरमलु धरमतणु निधान।

पढि गुणि जे साभलि तेहनि उपजि मति ज्ञान ॥६१॥

इति धर्मपरीक्षा रास समाप्त.

सवत् १६०२ वर्षे फागुण सुदी ११ दिने सूरतस्थाने श्री शीतलनाथ चैत्यालये आचार्य श्री विनयकीर्तिः ९ण्डित मेघराजकेन लिखितं स्वयमिदं।

३६६६. धर्मपरीक्षाभाषा""""। पत्र सं० ६ से ५०। आ० ११×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-समीक्षा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३३२। ड भण्डार।

३६६७. मूर्खके लक्षण । पत्र सं० २। आ० ११×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षणग्रन्थ। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७१। क भण्डार।

३६६८. रत्नपरीक्षा—रामकवि। पत्र सं० १७। आ० ११×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-लक्षण ग्रन्थ। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११८। ञ भण्डार।

विशेष—इन्द्रपुरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

प्रारम्भ— गुरु गणपति सरस्वति समरि यातै वध है बुद्धि।

सरसबुद्धि छवह रचो रतन परीक्षा सुधि ॥१॥

रतन दीपिका ग्रन्थ मे रतन परिछ्या जान।

सगुरु देव परताप तै भाषा वरनो आनि ॥२॥

अन्तिम— रत्न परीछ्या रगसु कीन्ही राम कविंद।

इन्द्रपुरी मे आनि कै लिखी जु भामाणद ॥६१॥

३६६६. रसमञ्जरीटीका—टीकाकार गोपालभट्ट। पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षणग्रन्थ। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २०५३। ट भण्डार।

विशेष—१२ से आगे पत्र नही है।

३६७०. रसमञ्जरी—भानुदत्तमिश्र। पत्र सं० १७। आ० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षणग्रन्थ। र० काल X। ले० काल स० १८२७ पौष सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ६४१। अ भण्डार।

३६७१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १६३५ आसोज सुदी १३। वे० स० २३६। ज भण्डार।

३६७२. वक्ताश्रोतालक्षण"" "। पत्र सं० ६। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लक्षण ग्रन्थ। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ६४२। क भण्डार।

३६७३ प्रति सं० २। पत्र स० ५। ले० काल X। वे० स० ६४३। क भण्डार।

३६७४. वक्ताश्रोतालक्षण ' "। पत्र स० ४। आ० १२×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-लक्षण ग्रन्थ। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ६४४। क भण्डार।

३६७५. प्रति स० २। पत्र स० ४। ले० काल X। वे० स० ६४५। क भण्डार।

३६७६. शृङ्गारतिलक—रुद्रभट्ट। पत्र स० २४। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षण ग्रन्थ। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ६३६। अ भण्डार।

३६७७. शृङ्गारतिलक—कालिदास। पत्र सं० २। आ० १३×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-लक्षणग्रन्थ। र० काल X। ले० काल सं० १८३७। पूर्ण। वे० सं० ११४१। अ भण्डार।

इति श्री कालिदास कृतौ शृङ्गारतिलक सपूर्णम्

प्रशस्ति— सवत्सरे सप्तत्रिकवस्वेदु मिते असाढसुदी १३ त्रयोदश्यां पंडितजी श्री हीरानन्दजी तच्छिष्य पंडितजी श्री चोखचन्दजी तच्छिष्य पडित विनयवताजिनदासेन लिपीकृतं। भूरामलजी या आका॥

३६७८. स्त्रीलक्षण' '""। पत्र स० ४। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-लक्षणग्रन्थ। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ११८१। अ भण्डार।

३६८५ जलगालणरास—ज्ञानभूषण। पत्र स० २। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-हिन्दी गुजराती। विषय-रासा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६७। ट भण्डार।

विशेष—जल छानने की विधि का वर्णन रास के रूप में किया गया है।

३६८६. धन्नाशालिभद्ररास—जिनराजसूरि। पत्र स० २६। आ० ७¾×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-रासा। र० काल स० १६७२ आसोज बुदी ६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६४८। अ भण्डार।

विशेष—मुनि इन्द्रविजयगणि ने गिरपोर नगर में प्रतिलिपि की थी।

३६८७. धर्मरासा…… । पत्र सं० २ से २०। आ० ११×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६४८। ट भण्डार।

विशेष—पहिला, छठा तथा २० से आगे के पत्र नहीं है।

३६८८. नवकाररास…… । पत्र स० २। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-णमोकार मन्त्र महात्म्य वर्णन है। र० काल ×। ले० काल स० १८३१ फागुण सुदी १२। पूर्ण। वे० स० ११०२। अ भण्डार।

३६८९ नेमिनाथरास—विजयदेवसूरि। पत्र स० ४। आ० १०×४¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-रासा (भगवान नेमिनाथ का वर्णन है)। र० काल ×। ले० काल सं० १८२६ पौष सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १०२६। अ भण्डार।

विशेष—जयपुर में साहिबराम ने प्रतिलिपि की थी।

३६९०. नेमिनाथरास—ऋषि रामचन्द। पत्र सं० ३। आ० ९½×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-रासा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४०। अ भण्डार।

विशेष—आदिभाग-

अरिहंत सिध ने आपरीया उपजाया अणवार।
पाचेपद तेहुनमूं, अठोत्तर सो वार ॥१॥
…गेखगामी दोनु हुवा, राजमती रहनेम।
…कतर लीया मणो, साभल जे धर प्रेम ॥२॥
…र मुनिराया ……।
सोरठ देस राज कीसन रेस मन मोहोलाल।
दीपती नगरी दुवारकाए ॥१॥
… तिहाभूप सेवा देजी राणी रूरेरू।
महाराणी मानी जतीए ॥२॥

जाण जन(म)मीया अरिहन्त देव इह चोसट सारे।
ज्यारी तेव मे बाल ब्रह्मचारी बावा समोए ॥३॥

अन्तिम— सिल ऊपर पच ढालियो दीठो दोय सुत्रा मे निचोडरे।
तिण अनुसार माफक है, रिषि रामचं.जी कीनी जोड रे ॥१३॥

इति लिखतु श्री श्री उमाजीरी तत् सीपणी छोटाजीरी चेलीह् सतु लीखतु पाली मदे। पाली मे प्रतिलिपि हुई थी।

३६६१. नेमीश्वरफाग—ब्रह्मरायमल्ल। पत्र स० ८ से ७०। आ० ६×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–फागु। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३८३। ङ भण्डार।

३६६२. पचेन्द्रियरास……। पत्र स० ३। आ० ६×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा (पाचो इन्द्रियो के विषय का वर्णन है)। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १३५६। अ भण्डार।

३६६३. पल्यविधानरास—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ५। आ० ८½×४½ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४४३। ङ भण्डार।

विशेष—पल्यविधानव्रत का वर्णन है।

३६६४. वंकचूलरास—जयकीर्त्ति। पत्र सं० ४ से १७। आ० ६×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा (कथा)। र० काल स० १६८५। ले० काल स० १६६३ फागुण बुदी १३। अपूर्ण। वे० स० २०६१। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नही है। ग्रन्थ प्रशस्ति—

कथा सुणी वकचूलनी श्रेणिक धरी उल्लास।
वीरनि वादी भावसु पुहुत राजग्रह वास ॥१॥
सवत सोल पच्यासीइ गूर्ज्जर देस मभार।
कल्पवल्लीपुर सोभती इन्द्रपुरी अवतार ॥२॥
नरसिघपुरा वाणिक वसि दया धर्म सुखकद।
चैत्यालि श्री वृषभवि भावि भवीयण वृ द ॥३॥
काष्ठासघ विद्यागणे श्री सोमकीत्ति मही सोम।
विजयसेन विजयाकर यशकीत्ति यशस्तोम ॥४॥
उदयसेन महीमोदय त्रिभुवनकीत्ति विख्यात।
रत्नभूषण गछपती हवा भुवनरयण जेहजात ॥५॥

तस पट्टि सूरीवरभलु जयकीर्त्ति जयकार ।
जे भवियण भवि साभलो ते पामी भवपार ॥६॥
रूपकुमर रलीया मणु वकचूल बीजु नाम ।
तेह रास रच्यु रूवडु जयकीर्त्ति सुखधाम ॥७॥
नीम भाव निर्मल हुई गुरुवचने निर्द्धार ।
साभलता मपद् मलि ये भणि नरतिनार ॥८॥
याद्र सायर नन्न महीचद सूर जिनभास ।
जयकीर्त्ति कहिता रहु वंकचूलनु रास ॥९॥
इति वकचूलरास समाप्त ।

सवत् १६६३ वर्षे फागुण बुदी १३ पिपलाइ ग्रामे लक्षत भट्टारक श्री जयकीर्त्ति उपाध्याय श्री वीरचद ह्म श्री जसवंत वाइ कपूरा या वीच रास ब्रह्म श्री जसवत लक्षत ।

३६६५ भविष्यदत्तरास—ब्रह्मरायमल्ल । पत्र स० ३६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-रास-भविष्यदत्त की कथा है । र० काल स० १६३३ कार्तिक सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं ९८६ । अ भण्डार ।

३६६६. प्रति स० २ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १७८४ । वे० स० १६३० । ट भण्डार ।

विशेष—आमेर मे श्री मल्लिनाथ चैत्यालय मे श्री भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य दयाराम सोनी ने प्रतिलिपि की थी ।

३६६७ प्रति स० ३ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १८१८ । वे० स० ५६६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प० छाजूराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त ख भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १३२) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १६१) तथा झ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १३५) और है ।

३६६८ रुकमिणीविवाहवेलि (कृष्णरुकमिणीवेलि)—पृथ्वीराज राठौड । पत्र स० ५१ से १२१ । आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-वेलि । र० काल स० १६३८ । ले० काल स० १७१६ चैत्र बुदी ५ । अपूर्ण । वे० स० १६४ । ख भण्डार ।

विशेष—देवगिरी मे महात्मा जगन्नाथ ने प्रतिलिपि की थी । ६३० पद्य हैं । हिन्दी गद्य मे टीका भी दी हुई है । ... से ... पत्य पाठ हैं ।

३६६६ शीलरासा—विजयदेव सूरि। पत्र सं० ४ से ७। आ० १०३/४×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा। र० काल ×। ले० काल सं० १६३७ फागुण सुदी १३। वे० सं० १६६६। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६३७ वर्षे फागुण सुदी १३ गुरुवारे श्रीखरतरगच्छे आचार्य श्री राजरत्नसूरि शिष्य प० नंदिरंग लिखित। उसवसेसघ वालेचा गोत्रे सा हीरा पुत्री रतन सु श्राविका नाली पठनार्थं लिखित दारमध्ये।

अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

श्रीपूज्यपासचंद तणाइ सुपसाय,
सीस धरी निज निरमल भाइ।
नयर जालउरहि जागतु,
नेमि नमउ नित बेकर जोडि॥
वीनता एहु जि वीनवउ,
इक खिण अम्ह मन वीन विछोडि।
सील सघासइ जी प्रीतडी,
उत्तराध्ययन बाबीसमु जोइ॥

वली अने राय वर्की अरथ आज्ञा विना जे कहसु होइ।
विफल हो यो मुझ पातक सोइ, जिम जिन भाष्यउ ते सही॥
दुरित नइ दुख सहूरइ दूरि, वेगि मनोरथ माहरा पूरि।
आणमुमयम आगियां, इम वीनवइ श्री विजयदेव सूरि॥

॥ इति शील रासउ समाप्त॥

३७०० प्रति सं० २। पत्र सं० २ से ८। ले० काल सं० १७०५ आसोज सुदी १८। वे० सं० २०६१। अ भण्डार।

विशेष—आमेर में प्रतिलिपि हुई थी।

३७०१. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० २५७। ञ भण्डार।

३७०२. श्रीपालरास—जिनहर्षगणि। पत्र सं० १०। आ० १०×४३/४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा (श्रीपाल राजा की कथा है)। र० काल सं० १७४२ चैत्र सुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८३०। अ भण्डार।

विशेष—आदि एवं अन्त भाग निम्न प्रकार है—

श्रीजिनाय नमः ।। ढाल सिंघनी ।।

चउवीसे प्रणमु जिणराय, जास पसायइ नवनिधि थाय।
सुयदेवा धरि रिदय मझारि, कहिस्यु नवपदनउ अधिकार ।।
मत्र जत्र छइ अवर अनेक, पिणि नवकार समउ नहीं एक।
सिद्धचक्र नवपद सुपसायइ, सुख पाम्या श्रीपाल नररायइ ।।
आंबिल तप नव पद सजोग गलित सरीर थयो नीरोग।
तास चरित्र कहु हित आणी, सुणिज्यो नरनारी मुझ वाणी ।।

न्तिम—

श्रीपाल चरित्र निहालनइ, सिद्धचक्र नवपद धारि।
ध्याईयइ तउ सुख पाईयई, जगमा जस विस्तार ।।८५।।
श्री गछखरतर पति प्रगट श्री जिनचन्द्र सरीस।
गणि शाति हरप वाचक तणो, कहइ जिनहरप सुसीस ।।८६।।
सतरै बयालीसे समै, वदि चैत्र तेरसि जाण।
ए रास पाटण मा रच्यो, सुणता सदा कल्याण ।।८७।।

इति श्रीपाल रास सपूर्ण। पद्य स० २८७ हैं।

३७०३ प्रति स० २। पत्र स० १७। ले० काल स० १७७२ भादवा बुदी १३। वे० स० ७२२। ङ भण्डार।

३७०४ षट्लेश्यावेलि—साह लोहट। पत्र स० २२। आ० ८½×४¾ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–सिद्धात। र० काल स० १७३० आसोज सुदी ६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८०। झ भण्डार।

३७०५ सुकुमालस्वामीरास—ब्रह्म जिनदास। पत्र स० ३४। आ० १०¾×४¾ इंच। भाषा–हिन्दी गुजराती। विषय–रासा (सुकुमाल मुनि का वर्णन)। ले० काल स० १६३५। पूर्ण। वे० स ३३६। अ भण्डार।

३७०६ सुदर्शनरास—ब्रह्म रायमल्ल। पत्र स० १३। आ० १२×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा (सेठ सुदर्शन का वर्णन है)। र० काल सं० १६२६। ले० काल स० १७५६। पूर्ण। वे० स० १०४६। अ भण्डार।

विशेष—साह लालचन्द कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

३७०७ प्रति स० २। पत्र स० ३१। ले० काल स० १७६२ सावण सुदी १०। वे० स० १०६। पूर्ण झ भण्डार।

३७०८. सुभौमचक्रवर्त्तिरास—ब्रह्मजिनदास। पत्र सं० १३। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६२। ञ भण्डार।

३७०६. हमीररासो—महेश कवि। पत्र सं० ८८। आ० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-रास। (ऐतिहासिक)। र० काल ×। ले० काल स० १८८३ आसोज सुदी ३। अपूर्ण। वे० स० ६०४। ङ भण्डार।

विषय- गणित-शास्त्र

३७१० गणितनाममाला—हरदत्त। पत्र स० १४। आ० ६३/४X४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-गणितशास्त्र। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ४०। ख भण्डार।

३७११ गणितशास्त्र । पत्र स० ६१। आ० ६X३३/४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-गणित। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ७६। च भण्डार।

३७१२ गणितसार—हेमराज। पत्र स० ५। आ० १२X८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-गणित। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० २२२१। अ भण्डार।

विशेष—हाशिये पर सुन्दर वेलवूटे हैं। पत्र जीर्ण हैं तथा बीच मे एक पत्र नही है।

३७१३ पट्टी पहाड़ों की पुस्तक ·· । पत्र स० ४७। आ० ६X६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-गणित। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० १६२८। ट भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के पत्रो मे खेतो की डोरी आदि डालकर नापने की विधि दी है। पुन पत्र १ से ३ तक 'सीधो वर्ण समाम्नाय । आदि की पाचो सधियो (पाटियो) का वर्णन है। पत्र ४ मे १० तक चारिणक्य नीति के श्लोक हैं। पत्र १० से ३१ तक पहाडे हैं। किसी २ जगह पहाडो पर सुभाषित पद्य हैं। ३१ मे ३६ तक तोल नाप के गुर दिये हुये है। निम्न पाठ और हैं।

१ हरिनाममाला—शङ्कराचार्य। सस्कृत पत्र ३७ तक।

२. गोकुलगावकी लीला— हिन्दी पत्र ४५ तक।

विशेष—कृष्ण ऊधव का वर्णन है।

३ सप्तश्लोकीगीता— पत्र ४६ तक।

४ स्नेहलीला— पत्र ४७ (अपूर्ण)

३७१४ राजूप्रमाण । पत्र स० २। आ० ८३/४X४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय गणितशास्त्र। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १४२७। अ भण्डार।

३७१५. लीलावतीभाषा—मोहनमिश्र। पत्र स० ८। आ० ११X६ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-गणितशास्त्र। र० काल स० १७१४। ले० काल स० १८३८ फागुण बुदी ६। पूर्ण। वे० स० ६४०। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति पूर्ण है

३७१६. लीलावतीभाषा—व्यास मथुरादास । पत्र स० ३ । आ० ६X४½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-गणितशास्त्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ६४१ । क भण्डार ।

३७१७. प्रति स० २ । पत्र स० ५५ । ले० काल X । वे० स० १४४ । ञ भण्डार ।

३७१८ लीलावतीभाषा ' । पत्र स० १३ । आ० १३X८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-गणित । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६७१ । च भण्डार ।

३७१९. प्रति स० २ । पत्र स० २७ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १६४२ । ट भण्डार ।

३७२०. लीलावती—भास्कराचार्य । पत्र स० १७६ । आ० ११½X५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-गणित । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १३६७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित सुन्दर एव नवीन है ।

३७२१. प्रति स० २ । पत्र स० ४१ । ले० काल स० १८६२ भादवा बुदी २ । वे० स० १७० । ख भण्डार ।

विशेष—महाराजा जगतसिंह के शासनकाल मे माणकचन्द के पुत्र मनोरथराम सेठी ने हिण्डौन मे प्रतिलिपि की थी ।

३७२२. प्रति स० ३ । पत्र स० १५४ । ले० काल X । वे० सं० ३२३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ३२४ से ३२७ तक) और हैं ।

३७२३. प्रति स० ४ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १७६५ । वे० सं० २१६ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० २२०, २२१) और हैं ।

३७२४. प्रति सं० ५ । पत्र स० ४१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १६६३ । ट भण्डार ।

विषय- इतिहास

३७२५. आचार्यों का व्यौरा । पत्र स० ६ । आ० १२३×५३ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल स० १७१६ । पूर्ण । वे० स० २६७ । ख भण्डार ।

विशेष—सुखानन्द सौगाणी ने प्रतिलिपि की थी । इसी वेष्टन मे १ प्रति और है ।

३७२६. खडेलवालोत्पत्तिवर्णन ''' । पत्र स० ८ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५ । क भण्डार ।

विशेष—८४ गोत्रो के नाम भी दिये हुये है ।

३७२७ गुर्वावलीवर्णन ''' । पत्र स० ५ । आ० ६×४ इच । भाषा-हिन्दी , विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३० । व भण्डार ।

३७२८ चौरासीज्ञातिछद '' । पत्र स० १ । आ० १०×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६०३ । ट भण्डार ।

३७२६ चौरासीजाति की जयमाल—विनोदीलाल । पत्र स० २ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल स० १८७३ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २४१ । छ भण्डार ।

३७३० छठा आरा का विस्तार '' । पत्र स० २ । आ० १०३×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१८६ । अ भण्डार ।

३७३१ जयपुर का प्राचीन ऐतिहासिक वर्णन । पत्र स० १२७ । आ० ६×६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६८६ । ट भण्डार ।

विशेष—रामगढ सवाईमाधोपुर आदि बसाने का पूर्ण विवरण है ।

३७३२ जैनबद्री मूडबद्री की यात्रा—भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० ४ । आ० १०३×५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०० । ख भण्डार ।

३७३३ तीर्थङ्करपरिचय '' । पत्र स० ४ । आ० १२×५३ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६४० । अ भण्डार ।

३७३४. तीर्थङ्करों का अन्तराल'' '' । पत्र स० १ । आ० ११×४३ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल सं० १७२८ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० २१४२ । अ भण्डार ।

३७३५. दादूपद्यावली ....। पत्र सं० १ । आ० १०×३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६४ । अ भण्डार ।

दादूजी दयाल पाट गरीब मसकीन ठाट ।
जुगलबाई निराट निराणै बिराज ही ॥

बखनौंस कर पाक जसौ चावौ प्राग टाक ।
बडो हू गोपाल ताक गुरुद्वारे राजही ॥

सागानेर रजबसु देवल दयाल दास ।
घडसी कडाला बसै धरम कीया जही ॥

ईड वैडू जनदास तेजानन्द जोधपुर ।
मोहन सु भजनीक आसोपनि वाज ही ॥

गूलर मे माधोदास विदाध मे हरिसिंह ।
चतरदास सिंध्यावट कीयो तनकाज ही ॥

विहाणी पिरागदास डोडवानै है प्रसिद्ध ।
सुन्दरदास जू सरसू फतेहपुर छाजही ॥

बाबो बनवारी हरदास दोऊ रतीय मैं ।
साधु एक माडोडी मैं नीकै नित्य छाजही ॥

सुदर प्रहलाद दास घाटडैसु छीड़ माहि ।
पूरब चतरभुज रामपुर छाजही ॥ १ ॥

निराणदास माडाल्यौ सडाग माहि ।
इकलौद रणतभवर डाढ चरणदास जानियौ ॥

हाडौती गेगाइ जामैं माखूजी मगन भये ।
जगोजी भडौच मध्य प्रचाधारी मानियौ ॥

लालदास नायक सौ पीरान पटणदास ।
फोफली मेवाड मांहि टीलोजी प्रमानियौ ॥

साधु परमानद इदोखली मे रहे जाय ।
जैमल चुहाण भलो खालड हरगानियौ ॥

जैमल जोगी कुछाहो वनमाली चोकल्यौस ।
साभर भजन सो विलास तानियौ

मोहन दफतरीसु मारोठ चिताई भलै ।
रुघनाथ मेडतैसु भावकर आनियौ ॥
कालैडहरै चत्रदास टीकोदास नागल मैं ।
झोटवाडै झाझूमाझू लघु गोपाल धानियौ ॥
आवावती जगनाथ राहोरी जनगोपाल ।
वाराहदरी संतदास चावड्यलु भानियौ ॥
आधी मे गरीबदास भानगढ माधव कै ।
मोहन मेवाडा जोग साधन सौं रहे है ॥
टहटडै मैं नागर निजाम हू भजन कियो ।
दास जग जीवन द्यौसा हर लहे हैं ॥
मोहन दरियायीसो सम नागरचाल मध्य ।
वोकडास सत ज्नुहि गोलगिर भये है ॥
चैनराम काणौता मे गोंदेर कपलमुनि ।
स्यामदास झालाणौंसू चोड कै मे ठये हैं ॥
सौंक्या लाखा नरहर अलूदै भजन कर ।
महाजन खडेलवाल दादू गुर गहे है ॥
पूरणदास ताराचन्द म्हाजन सुम्हेर वाली ।
आंधी मे भजन कर काम क्रोध दहे हैं ॥
रामदास राणीबाई क्राजल्या प्रगट भई ।
म्हाजन डिगाइचसू जाति बोल सहे हैं ॥
वावन ही थाभा अरु वावन ही म्हत ग्राम ।
दादूपथी चत्रदास सुने जैसे कहे हैं ॥ ३ ॥

सोरठ— जै नमो गुर दादू परमातम आदू सब सतन के हितकारी ।
मैं आयो सरनि तुम्हारी ॥ टेक ॥
जै निरालब निरवाना हम सत तै जाना ।
सतनि को सरना दीजै, अब मोहि अपनू कर लीजै ॥१॥
सबके अतरयामी, अब करो कृपा मोरे स्वामी
अवगति अवनासी देवा, दे चरन कवल की सेवा ॥२॥
जै दादू दीन दयाला काढो जग जजाला ।
सतचित आनद मे बासा, गावै वखतावरदासा ॥३॥

राग रामगरी—

ऐसे पीव क्यूं पाइये, मन चंचल भाई।
आख मीच मूनी भया, मंछी गढ काई ।।टेक।।

छापा तिलक बनाय करि नाचै अरु गावै।
आपण तो समझै नही, औरा समझावै ।।१।।

भगति करै पाखड की, करणी का काचा।
कहै कबीर हरि क्यूं मिलै, हिरदै नही साचा ।।२।।

।। इति ।।

३७३६ देहली के बादशाहों का ब्यौरा…… । पत्र स० १६ । आ० ५३/४×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६ । झ भण्डार

३७३७ पट्टाधिकार … । पत्र स० ५ । आ० ११×४३/४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६८७ । ट भण्डार ।

विशेष—जिनसेन कृत धवल टीका तक का प्रारम्भ से आचार्यों का ऐतिहासिक वर्णन है।

३७३८. पट्टावली…… । पत्र सं० १२ । आ० ८×६३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३० । झ भण्डार ।

विशेष—दिगम्बर पट्टावलि का नाम दिया हुआ है । १८७६ के सवत् की पट्टावलि है । अन्त मे खडेलवाल वशोत्पत्ति भी दी हुई है।

३७३९. पट्टावलि…… । पत्र सं० ४ । आ० १०३/४×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।

विशेष—स० ८४० तक होने वाले भट्टारकों का नामोल्लेख है।

३७४०. पट्टावलि…… । पत्र सं० २ । आ० ११३/४×५३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम चौरासी जातियो के नाम हैं । पीछे सवत् १७६६ मे नागौर के गच्छ से अजमेर का गच्छ निकला उसके भट्टारको के नाम दिये हुये हैं । सं० १५७२ मे नागौर से अजमेर का गच्छ निकला । उसके सं० १८५२ तक होने वाले भट्टारको के नाम दिये हुये हैं।

३७४१. प्रतिष्ठाकुकुंमपत्रिका …। पत्र सं० १ । आ० २५×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

विशेष—स० १६२७ फागुन मास का कुकुमपत्र पिपलोन की प्रतिष्ठा का है। पत्र कार्तिक बुदी १३ का लिखा है। इसके साथ स० १६३६ की कुकुमपत्रिका छपी हुई शिखर सम्मेद की और है।

३७४२. प्रतिष्ठानामावलि""""| पत्र स० २०। आ० ६×७ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १४३। छ भण्डार।

३७४३ प्रति स० २। पत्र स० १८। ले० काल ×। वे० स० १४३। छ भण्डार।

३७४४. बलात्कारगणगुर्वावलि"" ' । पत्र स० ३। आ० ११३×४३ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०६। अ भण्डार।

३७४८. भट्टारक पट्टावलि। पत्र स० १। आ० ११×५३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८३७। अ भण्डार।

विशेष—सं० १७७० तक की भट्टारक पट्टावलि दी हुई है।

३७४६. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० स० ११८। ज भण्डार।

विशेष—सवत् १८८० तक होने वाले भट्टारकों के नाम दिये है।

३७५०. यात्रावर्णन ""| पत्र स० २ से २६ ' आ० ६×५३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६१४। ङ भण्डार।

३७५१ रथयात्राप्रभाव—अमोलकचद। पत्र स० ३। आ० १०३×५ इच। भाषा–सस्कृत। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १३०८। अ भण्डार।

विशेष—जयपुर की रथयात्रा का वर्णन है।

११३ पद्य हैं– अन्तिम—

एकोनविंशतिशतेवश सहावर्षे मासस्यपञ्चमी दिनेसिस फाल्गुनस्य श्रीमज्जिमेन्द्र वर सूर्यरथस्ययात्रा मेलापक जयपुर प्रकटे बभूव ॥११२॥

रथयात्राप्रभावोऽय कथितो दृष्टपूर्वकः

नाम्ना मौलिक्यचन्द्रेण साहागोत्रे या समुदा ॥११३॥

॥ इति रथयात्रा प्रभाव समाप्ता ॥ शुभ भूयात् ॥

३७५२ राजप्रशस्ति' "' । पत्र सं० ५। आ० ६×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८६५। अ भण्डार।

विशेष—दो प्रशस्ति (अपूर्ण) हैं अर्जिका श्रावक वनिता के विशेषण दिये हुए हैं।

३७५३ विज्ञप्तिपत्र—हंसराज। पत्र स० १। आ० ८×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल स० १८०७ फागुन सुदी १३। पूर्ण। वे० स० ५३। भ्क भण्डार।

विशेष—भोपाल निवासी हसराज ने जयपुर के जैन पंचों के नाम अपना विज्ञप्तिपत्र व प्रतिज्ञा-पत्र लिखा है। प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री सवाई जयपुर का सकल पच साधर्मी बडी पंचायत तथा छोटी पंचायत का तथा दीवानजी साहिब का मन्दिर सम्बन्धी पचायत का पत्र आदि समस्त साधर्मी भाइयन को भोपाल का वासी हंसराज की या विज्ञप्ति है सो नीका अवधारन कीज्यो। इसमे जयपुर के जैनो का अच्छा वर्णन है। अमरचन्दजी दीवान का भी नामोल्लेख है। इसमे प्रतिज्ञा पत्र (आखडी पत्र) भी है जिसमे हसराज के त्यागमय जीवन पर प्रकाश पडता है। यह एक जन्म-पत्र की तरह गोल सिमटा हुआ लम्बा पत्र है। स० १८०० फागुन सुदी १३ गुरुवार को प्रतिज्ञा ली गई उसी का पत्र है।

३७५४. शिलालेखसग्रह ...। पत्र सं० ८। आ० ११×७ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६६१। अ भण्डार।

विशेष—निम्न लेखो का सग्रह है।

१. चालुक्य वशोत्पन्न पुलकेशी का शिलालेख।
२ भद्रवाहु प्रशस्ति
३. मल्लिषेरण प्रशस्ति

३७५५. श्रावक उत्पत्तिवर्णन ...। पत्र सं० १। आ० ११×२८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६०८। ट भण्डार।

विशेष—चौरासी गौत्र, वश तथा कुलदेवियो का वर्णन है।

३७५६. श्रावकों की चौरासी जातिया ...। पत्र सं० १। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७३१। अ भण्डार।

३७५७. श्रावकों की ७२ जातिया ...। पत्र स० २। आ० १२×५½ इंच। भाषा–सस्कृत हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०२६। अ भण्डार।

विशेष—जातियो के नाम निम्न प्रकार है।

१ गोलाराडे २ गोलसिंघाडे ३ गोलापूर्व ४. लवेचु ५ जैसवाल ६ खडेलवाल ७ वघेलवाल ८. अगरवाल, ६ सहलवाल, १० असरवापोरवाड, ११ वोसखापोरवाड, १२ दुसरवापोरवाड, १३. जागडापोरवाड, १४. परवार, १५. वरहीया, १६. भैसरपोरवाड, १७. सोरठीपोरवाड, १८. पद्मावतीपोरंभा, १६ खंयड, २०. घुसर

२१. वाहरसेन, २२ गहोइ, २३ श्रणगम क्षत्री २४. सद्वाण, २५. ग्रजोध्यापुरी, २६. गोरवाड, २७ विट्ठलस्वा, २८. कठनेरा, २६ नाग, ३० गुजरगल्लीवाल, ३१. चीकडा, ३२ गागरवाडा, ३३. बोरवाउ, ३४ खंडेरवाल, ३५ हर सुला, ३६ नेगडा, ३७ सहरीया, ३८. मेवाडा, ३६ नागडा, ४०. नीतोडा, ४१ नरसगपुरा, ४२ नागदा, ४३. बाघ, ४४. हूमड, ४५ रायकवाडा, ४६. वदनोरा, ४७ दमणश्रावक, ४८. पनमश्रावक, ४६ हलधरश्रावक, ५०. सादरश्रावक, ५१. हूमर, ५२ लश्रर, ५३ ववल, ५४. वलगारो, ५५ कर्मश्रावक, ५६ वरिकर्मश्रावक ५७. वेसर ५८. सुदेवज, ५६. वलशीगुल, ६०. कोमडी, ६१ गगरका, ६२. गुनपुर, ६३. तुलाश्रावक, ६४ कचगश्रावक, ६५. हेवगाश्रावक, ६६ भोगाश्रावक ६७. सोमनश्रावक, ६८ दाउदाश्रावक, ६६ नगवलीश्रावक, ७०. पर्णीसगा, ७१ वगोरिया, ७२. काकलीवाल,

नोट—हूमड जाति को दो बार गिनाने से १ सख्या बढ गई है।

३७५८ श्रुतस्कध—ग्र० हेमचन्द्र। पत्र स० ७। ग्रा० ११½×४½ इच। भाषा-प्राकृत। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५१। ग्र भण्डार।

३७५६. प्रति स० २। पत्र स० १०। ले० काल ×। वे० स० ७२६। ग्र भण्डार।

३७६० प्रति स० ३। पत्र स० ११। ले० काल ×। वे० स० २१६१। ट भण्डार।

विशेष—पत्र ७ से ग्रागे श्रुतावतार श्रीधर कृत भी है, पर पत्रो पर ग्रक्षर मिट गये है।

३७६१ श्रुतावतार—पं० श्रीधर। पत्र स० "। ग्रा० १०×४½ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३६। ग्र भण्डार।

३७६२. प्रति स० २। पत्र स० १०। ले० काल स० १८६१ पौष सुदा १। वे० स० २०१। ग्र भण्डार।

विशेष—चम्पालाल टोग्या ने प्रतिलिपि की थी।

३७६३ प्रति स० ३। पत्र स० ५। ले० काल ×। वे० स० ७०२। ङ भण्डार।

३७६४. प्रति स० ४। पत्र स० १। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० स० ३५१। च भण्डार।

३७६५ सघपच्चीसी-द्यानतराय। पत्र स० ६। ग्रा० ८×५ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल स० १८८८। पूर्ण। वे० स० २१३। ज भण्डार।

विशेष—निर्वाणकाण्ड भाषा भैया भगवतीदास कृत भी है।

३७६६. सवत्सरवर्णन '। पत्र स० १ से ३७। ग्रा० १०½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० स० ७६५। ङ भण्डार।

३७६७. स्थूलभद्र का चौमासा वर्णन"""। पत्र सं० २ । आ० १०X४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २११८। अ भण्डार।

ईडर आबा आवली रे ए देसी

सावरण मास सुहावणो रे लाल जो पीउ होवे पास।
अरज करू घरे आवजो रे लाल हू छूं ताहरी दास।
चतुर नर आवो हम चर छा रे सुगण नर तू छ प्राण आधार ॥१॥
भादवडे पीउ वेगलो रे लाल हू कीम करू सणगारे।
अरज करूं घर आवजो रे लाल मोरा छंछत सार ॥२॥
आसोजा मासनी चादणी रे लाल फुलतणी वीछाइ सेज।
रंग रा मत कीजिय रे लाल आणी हीयडे तेज ॥३॥
कातीक महीने कामीनि रे लाल जो पीउ होवे पास।
सदेसा सयण भण रे लाल अलगायो केम ॥४॥
नजर निहालो वाल हो रे लाल आवो मीगसर मास।
लोक कहावत कहा करो जी पीउडा परम निवास ॥५॥
पोस वालम बेगलो रे लाल अवडो मुज दोस।
परीत पनोतर पालीये रे लाल आणी मन मे रोस ॥६॥
सीयाले अती घणो दोहलो रे लाल ते माहे बल माह।
पोताने घर आवज्यो रे लाल ढीलन कीजे नाह। ७॥
लाल गुलाल अबीरसु रे लाल खेलण लागा लोग।
तुज विण मुज नेइहा एकली रे लाल फागुण जाये फोक ॥८॥
सुदर पान सुहामणो रे लाल कुल तणो मही मास।
चीतारया घरे आवज्यो रे लाल तो करसु गेह गाट ॥९॥
वीसारयो न वीसरे रे लाला जे तुम वोल्या बोल।
वेसाखे तुम नेम लु रे लाल तो बजउ ढोल ॥१०॥
केहता दीसे कामो रे लाल काइ करावो वेठ।
ढीठ वणी हवे काहा करो लाल आछी लागो जेठ ॥११॥

अलाढी धरधुमढोरे लाल बीज बीज जगुं बीजली रे लाल ।
तुज वीना मुज नेहारे लाल वरस आसे गीज ॥१२॥
रे रे सखी उतावली रे लाल सजी सोला सणगार ।
घेर वली पवी गुदरर्दे लाल पे छोडी नार ॥१३॥
चार घडी नी मव छडी रे लाल आवो मास अरसाड ।
कामण गालो कत जी रे लाल सगी न आव्यो मास ॥१४॥
ते उठी उलट धरी रे लाल वालम जोने आस ।
थूलभद्र गुरु आदेस थी रे लाल ऐह् वठ्यो चोमास ॥१५॥

३७६८. हमीर चौपई · · । पत्र सं० १३ से ३७ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । लै० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१६ । ट भण्डार ।

विशेष—रचना मे नामोल्लेख नही नही है। हमीर व अलाउद्दीन के युद्ध का रोचक वर्णन दिया हुआ है।

विषय— स्तोत्र साहित्य

३७६६ अकलंकाष्टक ...... । पत्र स० ५ । आ० ११३/४×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५० । ज भण्डार ।

३७७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २५ । ञ भण्डार ।

३७७१. अकलंकाष्टकभाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० २२ । आ० ११३/४×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल सं० १६१५ श्रावण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ६) और हैं ।

३७७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ३ । ङ भण्डार ।

३७७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल स० १६१५ श्रावण सुदी २ । वे० सं० १८७ । च भण्डार ।

३७७४. अजितशांतिस्तवन...... । पत्र सं० ७ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १६६१ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० स० ३५७ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ मे भक्तामर स्तोत्र भी है ।

३७७५ अजितशांतिस्तवन—नन्दिषेण । पत्र सं० १५ । आ० ८३/४×४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४२ । अ भण्डार ।

३७७६. अनाथीऋषिस्वाध्याय...... । पत्र सं० १ । आ० ६३/४×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी गुजराती । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६०८ । ट भण्डार ।

३७७७. अनादिनिधनस्तोत्र । पत्र सं० २ । आ० १०×४१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । ञ भण्डार ।

३७७८. अरहन्तस्तवन...... । पत्र सं० ६ से २४ । आ० १०×४१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १६५२ कार्त्तिक सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० १६८४ । अ भण्डार ।

३७७६ अवंतिपार्श्वजिनस्तवन—हर्षसूरि । पत्र सं० २ । आ० १०×४१/२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । ञ भण्डार ।

विशेष—७८ पद्य हैं ।

३७८०. आत्मनिंदास्तवन—रत्नाकर। पत्र स० २ । आ० ९३×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १७। छ भण्डार।

विशेष—२५ श्लोक हैं। ग्रन्थ आरम्भ करने से पूर्व प० विजयहंस गणि को नमस्कार किया गया है। प० जय विजयगणि ने प्रतिलिपि की थी।

३७८१ आराधना` । पत्र स० २ । आ० ८×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६। क भण्डार।

३७८२ इष्टोपदेश—पूज्यपाद। पत्र स० ५। आ० ११३×४३ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५। अ भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे सक्षिप्त टीका भी हुई है।

३७८३ प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ७१। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७२) और है।

३७८४. प्रति सं० ३। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० स० ७। घ भण्डार।

विशेष—देवीदास की हिन्दी टव्वा टीका सहित है।

३७८५ प्रति स० ४। पत्र सं० १३। ले० काल स० १९४०। वे० स० ९०। ङ भण्डार।

विशेष—सघी पन्नालाल दूनीवाले कृत हिन्दी अर्थ सहित है। स० १९३५ मे भाषा की थी।

३७८६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४। ले० काल स० १६७३ पौष बुदी ७। वे० स० ४०८। ञ भण्डार।

विशेष—वेणीदास ने जगरू मे प्रतिलिपि की थी।

३७८७ इष्टोपदेशटीका—आशाधर। पत्र स० ३९। आ० १२३×५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७०। क भण्डार।

३७८८. प्रति स० २। पत्र स० २४। ले० काल ×। वे० स० ९१। ङ भण्डार।

३७८९. इष्टोपदेशभाषा` ` `। पत्र स० २५। आ० १२×७३ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ९२। ङ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ को लिखाने व कागज मे ४॥=)॥ व्यय हुये हैं।

३७९०. उपदेशसज्झाय—ऋषि रामचन्द। पत्र स० १। आ० १०×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८९०। अ भण्डार।

३७६१ उपदेशसज्झाय—रंगविजय। पत्र स० ४। आ० १०×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१८३। अ भण्डार।

विशेष—रंगविजय श्री रत्नहर्ष के शिष्य थे।

३७६२. प्रति सं० २। पत्र स० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१६१। अ भण्डार।

विशेष—३रा पत्र नही है।

३७६३. उपदेशसज्झाय—देवादिल। पत्र सं० १। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१६२। अ भण्डार।

३७६४ उपसर्गहरस्तोत्र—पूर्णचन्द्राचार्य। पत्र स० १४। आ० ३¾×४¾ इञ्च। भाषा-सस्कृत प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १५५३ आसोज सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ४१। च भण्डार।

विशेष—श्री वृहद्गच्छीय भट्टारक गुणदेवसूरि के शिष्य गुणनिधान ने इसकी प्रतिलिपि की थी। प्रति यन्त्र सहित है। निम्नलिखित स्तोत्र हैं।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	पत्र	विशेष
१. अजितशांतिस्तवन—	×	प्राकृत सस्कृत	१ से ६	३६ गाथा

विशेष—आचार्य गोविन्दकृत सस्कृत वृत्ति सहित है।

२. भयहरस्तोत्र—	×	सस्कृत	६ से १०	

विशेष—स्तोत्र अक्षरार्थ मन्त्र गर्भित सहित है। इस स्तोत्र की प्रतिलिपि सं० १५५३ आसोज सुदी १२ को मेदपाट देश मे राणा रायमल्ल के शासनकाल मे कोठारिया नगर मे श्री गुणदेवसूरि के उपदेश से उनके शिष्य ने की थी।

३. भयहरस्तोत्र—	×	"	११ से १४	

विशेष—इसमे पार्श्वयक्ष मन्त्र गर्भित अष्टादश प्रकार के यन्त्र की कल्पना मानतुगाचार्य कृत दी हुई है।

३७६५. ऋषभदेवस्तुति—जिनसेन। पत्र सं० ७। आ० १०¾×५ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४६। छ भण्डार।

३७६६. ऋषभदेवस्तुति—पद्मनन्दि। पत्र स० ११। आ० १२×६½ इच। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५४६। अ भण्डार।

विशेष—८वें पृष्ठ से दर्शनस्तोत्र दिया हुआ है। दोनो ही स्तोत्रो के सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है।

३७९७. ऋषभस्तुति...... । पत्र स० ५ । आ० १०½×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९५१ । अ भण्डार ।

३७९८. ऋषिमंडलस्तोत्र—गौतमस्वामी । पत्र सं० ३ । आ० ९½×४ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४ । अ भण्डार ।

३७९९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८५६ । वे० स० १३२७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ३३८, १४२६, १९००) और हैं ।

३८००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० स० ९१ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ तथा मन्त्र साधन विधि भी दी हुई है ।

३८०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० स० २१ ।

विशेष—कृष्णलाल के पठनार्थ प्रति लिखी गई थी । ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २९१) और है ।

३८०२. प्रति सं० ५ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २९०) और है ।

३८०३. प्रति सं० ६ । पत्र स० २ । ले० काल स० १७९८ । वे० स० १४ । व्र भण्डार ।

३८०४. प्रति स० ७ । पत्र सं० ७६ से १०१ । ले० काल × । वे० स० १८३६ । ट भण्डार ।

३८०५. ऋषिमडलस्तोत्र ...। पत्र सं० ५ । आ० ६½×४½ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०४ । ञ भण्डार ।

३८०६ एकाक्षरीस्तोत्र—(तकाराक्षर)... । पत्र स० १ । आ० ११×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८९१ ज्येष्ठ सुदी । पूर्ण । वे० स० ३३९ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । प्रदर्शन योग्य है ।

३८०७. एकीभावस्तोत्र—वादिराज । पत्र स० ११ । आ० १०×४ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८८३ माघ कृष्णा ९ । पूर्ण । वे० स० २५४ । अ भण्डार ।

विशेष—अमोलकचन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १३८) और है ।

३८०८ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६६ । ख भण्डार ।

३८०९. प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ९३ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६४) और है।

३८१०. प्रति स० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल X । वे० सं० ५३ । च भण्डार ।

विशेष—महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी । प्रति सस्कृत टीका सहित है।

इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ५२) और है।

३८११. प्रति सं० ५ । पत्र स० २ । ले० काल X । वे० स० १२ । ञ भण्डार ।

३८१२. एकीभावस्तोत्रभाषा—भूधरदास । पत्र सं० ३ । आ० १०½X४½ इंच । भाषा-हिन्दी विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २०३६ । अ भण्डार ।

विशेष—बारह भावना तथा शान्तिनाथ स्तोत्र और है।

३८१३. एकीभावस्तोत्रभाषा—पन्नालाल । पत्र स० २२ । आ० १२¾X५ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । -स्तोत्र । र० काल स० १९३० । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ९३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ९४) और है।

३८१४ एकीभावस्तोत्रभाषा ... । पत्र स० १० । आ० ७X४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । ाल X । ले० काल सं० १९१८ । पूर्ण । वे० स० ३५३ । म भण्डार ।

३८१५. ओंकारवचनिका ... । पत्र स० ३ । आ० १२¾X५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । ाल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ९५ । क भण्डार ।

३८१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १९३६ आसोज बुदी ५ । वे० स० ९६ । क र ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ९७) और है।

३८१७ कल्पसूत्रमहिमा ... । पत्र सं० ४ । आ० ९¾X४½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-महात्म्य । ाल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

३८१८. कल्याणक—समन्तभद्र । पत्र स० ५ । आ० १०½X४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय- । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १०९ । ङ भण्डार ।

विशेष—

पणविवि चउवीसवि तित्थयर,
सुरणर विसहर थुव चलणा ।
पुणु भणमि पच कल्याण दिणा,
भवियहु णिसुणह इक्कमणा ॥

अन्तिम— करि कल्लाणपुञ्ज जिणणाहहो,

अणु दितु चित्त अविचल ।

कहिय समुच्च एण ते कविणा

लिज्जइ इमणुव भव फल ॥

इति श्री समन्तभद्र कृत कल्याणक समाप्ता ॥

३८१६ कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्राचार्य । पत्र स० ५ । आ० १०X४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पार्श्वनाथ स्तवन । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३५१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ३८४, १२३६, १२६२) और हैं ।

३८८० प्रति सं० २ । पत्र स० १३ । ले० काल X । वे० स० २६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया और हैं (वे० स० ३०, २६४, २८१) ।

३८२१. प्रति स० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८१७ माघ सुदी १ । वे० स० ६२ । च भण्डार ।

३८२२. प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६४६ माह सुदी १५ । अपूर्ण । वे० स० २५६ । छ भण्डार ।

विशेष—५वा पत्र नही है । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १३४) और है ।

३८२३ प्रति स० ५ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १७१४ माह बुदी ३ । वे० स ७ । झ भण्डार ।

विशेष—साह जोधराज गोदीकाने आनदराम से सागानेर मे प्रतिलिपि करवायी थी । यह पुस्तक जोधराज गोदीका की है ।

३८२४. प्रति स० ६ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १७६६ । वे० स० ७० । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति हर्षकीर्त्ति कृत सस्कृत टीका सहित है । हर्षकीर्त्ति नागपुरीय तपागच्छ प्रधान चन्द्रकीर्त्ति के शिष्य थे ।

३८२५ प्रति स० ७ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १७४६ । वे० स० १६६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति कल्याणमञ्जरी नाम विनयसागर कृत सस्कृत टीका सहित है । अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति सकलकुमतकुमदखडचडवडरश्मिश्रीकुमुदचन्द्रसूरिविरचित श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रस्य कल्याणमञ्जरी टीका सपूर्ण । दयाराम ऋषि ने स्वात्मज्ञान हेतु प्रतिलिपि की थी ।

३८२६ प्रति स० ८ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १८६६ । वे० स० २०६५ । ट भण्डार ।

विशेष—छोटेलाल ठोलिया मारोठ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३८२७. कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका—पं० आशाधर। पत्र सं० ४। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५३१। अ भण्डार।

३८२८. कल्याणमंदिरस्तोत्रवृत्ति—देवतिलक। पत्र स० १५। आ० ९¾×४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १०। अ भण्डार।

विशेष—टीकाकार परिचय—

श्रीउकेशगणाब्धिचन्द्रसदृशा विद्वज्जनाह्लादयन्,

प्रवीण्याधनसारपाठकवरा राजन्ति भास्वान्तर।

तच्छिष्यः कुमुदापिदेवतिलक' सद्बुद्धिवृद्धिप्रदा,

श्रेयोमन्दिरसस्तवस्य मुदितो वृत्ति व्यधाददभुत ॥१॥

कल्याणमदिरस्तोत्रवृत्ति सौभाग्यमञ्जरी।

वाच्यमानाज्जनैनंदाच्चद्रार्क्कं मुदा ॥२॥

इति श्रेयोमदिरस्तोत्रस्य वृत्तिसमाप्ता ॥

३८२९. कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका ·। पत्र सं० ४ से ११। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ११०। ङ भण्डार।

३८३०. प्रति सं० २। पत्र सं० २ से १२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३३। व्र भण्डार।

विशेष—रूपचन्द चौधरी कनेसु सुन्दरदास अजमेरी मोल लीनी। ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है।

३८३१. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—पन्नालाल। पत्र स० ४७। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल सं० १९३०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १०७। क भण्डार।

३८३२. प्रति स० २। पत्र स० ३२। ले० काल ×। वे० स० १०८। क भण्डार।

३८३३. कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा—ऋषि रामचन्द्र। पत्र स० ५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८७१। ट भण्डार।

३८३४. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—बनारसीदास। पत्र सं० ८। आ० ६×३½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २२४०। अ भण्डार।

३८३५ प्रति स० २। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० स० १११। ङ भण्डार।

३८३६. केवलज्ञानीसज्झाय—विनयचन्द्र। पत्र स० २। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१८८। अ भण्डार।

३८३७. चैत्रपालनामावली…… | पत्र सं० ३ | आ० १०X४ इ च | भाषा–सस्कृत | विषय-स्तोत्र | र० काल X | ले० काल X | पूर्ण | वे० स० २४४ | ञ भण्डार |

३८३८ गीतप्रबन्ध ……| पत्र सं० २ | आ० १०३X४३ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–स्तोत्र | र० काल X | ले० काल X | पूर्ण | वे० स० १२४ | क भण्डार |

विशेष—हिन्दी मे वसन्तराग मे एक भजन है |

३८३९ गीत वीतराग—पडिताचार्य अभिनवचारुकीर्ति | पत्र स० २६ | आ० १०३X५ इञ्च | भाषा-सस्कृत | विषय-स्तोत्र | र० काल X | ले० काल स० १८८६ ज्येष्ठ बुदी ऽऽ | पूर्ण | वे० स० २०२ | अ भण्डार |

विशेष—जयपुर नगर मे श्री चुन्नीलाल ने प्रतिलिपि की थी |

गीत वीतराग सस्कृत भाषा की रचना है जिसमे २४ प्रबधो मे भिन्न भिन्न राग रागनियो मे भगवान आदिनाथ का पौराणिक आख्यान वर्णित है | ग्रन्थकार की पडिताचार्य उपाधि से ऐसा प्रकट होता है कि वे अपने समय के विशिष्ट विद्वान् थे | ग्रन्थ का निर्माण कब हुआ यह रचना से ज्ञात नही होता किन्तु वह समय निश्चय ही सवत् १८८६ से पूर्व है क्योकि ज्येष्ठ बुदी अमावस्या स० १८८६ को जयपुरस्थ लश्कर के मन्दिर के पास रहने वाले श्री चुन्नीलालजी साह ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की है प्रति सुंदर अक्षरो मे लिखी हुई है तथा शुद्ध है | ग्रन्थकार ने ग्रथ को निम्न रागो तथा तालो मे सस्कृत गीतो मे गू था है—

राग रागनी— मालव, गुर्ज्जरी, वसत, रामकली, काल्हरा कर्णाटक, देशासिराग, देशवैराडी, गुणकरी, मालवगौड, गुर्जराग, भैरवी, विराडी, विभास, कानरो |

ताल— रूपक, एकताल, प्रतिमण्ठ, परिमण्ठ, तितालो, अठताल |

गीतो मे स्थायी, अन्तरा, सचारी तथा आभोग ये चारो ही चरण हैं इस सबसे ज्ञात होता है कि ग्रन्थकार संस्कृत भाषा के विद्वान होने के साथ ही साथ अच्छे सगीतज्ञ भी थे |

३८४० प्रति सं० २ | पत्र स० ३२ | ले० काल स० १६३४ ज्येष्ठ सुदी ८ | वे० स० १२५ | क भण्डार |

विशेष—संघपति अमरचन्द्र के सेवक माणिक्यचन्द्र ने सुरगपत्तन की यात्रा के अवसर पर आनन्ददास के वचनानुसार सं० १८८४ वाली प्रति से प्रतिलिपि की थी |

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १२६) और है |

३८४१. प्रति सं० ३ | पत्र सं० १४ | ले० काल X | वे० स० ४२ | ख भण्डार |

३८४२. गुणस्तवन""""। पत्र स० १५। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८५८। ट भण्डार।

३८४३. गुरुसहस्रनाम""""। पत्र स० ११। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १७४६ वैशाख बुदी ६। पूर्ण। वे० स० २६८। ख भण्डार।

३८४४. गोम्मटसारस्तोत्र""। पत्र स० १। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १७३। ञ भण्डार।

३८४५. घघ्घरनिसाणी—जिनहर्ष। पत्र सं० २। आ० १०×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १०१। छ भण्डार।

विशेष—पार्श्वनाथ की स्तुति है।

आदि—

सुख सपति सुर नायक परतषि पास जिणदा है।
जाकी छवि काति अनोपम उपमा दीपत जात दिणंदा है।

अन्तिम—

सिद्धा दावा सातहार हासा दे सेवक विलवदा है।
घग्घर नीसाणी पास वखाणी गुणी जिनहरष कहृदा है।
इति श्री घगघर निसाणी संपूर्ण ॥

३८४६. चक्रेश्वरीस्तोत्र""। पत्र स० १। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २९१। ख भण्डार।

३८४७. चतुर्विंशतिजिनस्तुति—जिनलाभसूरि। पत्र सं० ६। आ० ८×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८५। ख भण्डार।

३८४८. चतुर्विंशतितीर्थङ्कर जयमाल"""। पत्र स० १। आ० १०½×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४८। अ भण्डार।

३८४९. चतुर्विंशतिस्तवन""""। पत्र स० ५। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २२९। ञ भण्डार।

विशेष—प्रथम ४ पत्रो मे वसुधारा स्तोत्र है। पं० विजयगणि ने पट्टनमध्ये स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३८५०. चतुर्विंशतिस्तवन"""। पत्र सं० ४। आ० ६½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५७। छ भण्डार।

विशेष—१२वें तीर्थङ्कर तक की स्तुति है। प्रत्येक तीर्थङ्कर के स्तवन मे ४ पद्य हैं।

प्रथम पद्य निम्न प्रकार है—

भव्याभोजविबोधनैकतरणे विस्तारिकर्म्मावली

रम्भासामजनभिनदनमहानष्टा पदाभासुरे ।

भक्त्या वदितपादपद्मविदुषा सपादयाभोज्झिना ।

रंभासाम जनभिनदनमहानष्टा पदाभासुरे ॥१॥

३८५१. चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तोत्र—कमलविजयगणि । पत्र स० १५ । आ० १२३/४×५ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

३८५२. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति—माघनन्दि । पत्र स० ३ । आ० १२×५३/४ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५१८ । ञ भण्डार ।

३८५३ चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तुति…… । पत्र स० । आ० १०३/४×४३/४ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६१ । ञ भण्डार ।

३८५४. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति…… । पत्र स० ३ । आ० १२×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वे० स० २३७ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

३८५५. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र … । पत्र स० ६ । आ० ११×४३/४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६८२ । ट भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र कट्टर बीसपन्थी आम्नाय का है । सभी देवी देवताओं का वर्णन स्तोत्र मे है ।

३८५६ चतुष्पदीस्तोत्र … । पत्र स० ११ । आ० ८३/४×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५७५ । अ भण्डार ।

३८५७ चामुण्डस्तोत्र—पृथ्वीधराचार्य । पत्र स० २ । आ० ८×४३/४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३८१ । अ भण्डार ।

३८५८. चिन्तामणिपार्श्वनाथ जयमालस्तवन । पत्र स० ४ । आ० ८×३ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल × । पूर्ण । वे० स० ११३४ । अ भण्डार ।

३८५९ चिन्तामणिपार्श्वनाथ स्तोत्रमंत्रसहित । पत्र स० १० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६० । अ भण्डार ।

३८६० प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८३० आसोज सुदी २ । वे० स० १८१ । ङ भण्डार ।

३८६१. चित्रबंधस्तोत्र ....। पत्र स० ३ । आ० १२×३½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८८ । ञ भण्डार ।

विशेष—पत्र चिपके हुये हैं ।

३८६२. चैत्यवंदना । पत्र स० ३ । आ० १२×३½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१०३ । अ भण्डार ।

३८६३ चौबीसस्तवन । पत्र स० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल स० १९७७ फागुन बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २१२२ । अ भण्डार ।

विशेष—बख्शीराम ने भरतपुर मे रणधीरसिंह के राज्य मे प्रतिलिपि की थी ।

३८६४. छंदसग्रह ....। पत्र स० ६ । आ० ११½×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०५२ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न छद हैं—

नाम छद	नाम कर्त्ता	पत्र	विशेष
महावीर छद	शुभचन्द	१ पर	×
विजयकीर्त्ति छद	"	२ "	×
गुरु छद	"	३ "	×
पार्श्व छद	ब्र० लेखराज	३ "	×
गुरु नामावलि छद	×	४ "	×
आरती सग्रह	ब्र० जिनदास	४ "	×
चन्द्रकीर्त्ति छद	—	४ "	×
कृपण छद	चन्द्रकीर्त्ति	५ "	×
नेमिनाथ छंद	शुभचन्द्र	६ "	×

३८६५. जगन्नाथाष्टक—शङ्कराचार्य । पत्र स० २ । आ० ७×३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । (जैनेतर साहित्य) । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३३ । छ भण्डार ।

३८६६. जिनवरस्तोत्र……। पत्र सं० ३ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वे० स० १०२ । च भण्डार ।

विशेष—भोगीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

३८६७. जिनगुणमाला … । पत्र स० १६ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४१ । झ भण्डार ।

३७६८. जिनचैत्यवन्दना…… । पत्र स० २ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०३५ । अ भण्डार ।

३८६६ जिनदर्शनाष्टक … । पत्र स० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२६ । ट भण्डार ।

३८७० जिनपंजरस्तोत्र…… । पत्र स० २ । आ० ६½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१५४ । ट भण्डार ।

३८७१ जिनपंजरस्तोत्र—कमलप्रभाचार्य । पत्र स० ३ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६ । ख भण्डार ।

विशेष—प० मन्नालाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

३८७२ प्रति स० २ । पत्र स० २ । ले० काल × । वे० स० ३० । ग भण्डार ।

३८७३ प्रति स० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० स० २०५ । ङ भण्डार ।

३८७४. प्रति स० ४ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० २६५ । झ भण्डार ।

३८७५. जिनवरदर्शन—पद्मनंदि । पत्र स० २ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । वे० स० २०८ । ङ भण्डार ।

३८७६ जिनवाणीस्तवन—जगतराम । पत्र स० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७३३ । च भण्डार ।

३८७७ जिनशतकटीका—शंबुसाधु । पत्र स० २६ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६१ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम- इति शंबु साधुविरचित जिनशतक पंजिकायां वाग्वर्णन नाम चतुर्थपरिच्छेद समाप्त ।

३८७८ प्रति स० २ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । वे० स० ४६८ । व्य भण्डार ।

३८७९. जिनशतकटीका—नरसिंहभट्ट । पत्र स० ३३ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १५६४ चैत्र सुदी १४ । वे० स० २६ । ञ भण्डार ।

विशेष—ठाकुर ब्रह्मदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३८८०. प्रति स० २ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६५६ पौष बुदी १० । वे० सं० २०० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० २०१, २०२, २०३, २०४) और हैं ।

३८८१ प्रति स० ३ । पत्र स० ५३ । ले० काल स० १६१५ भादवा बुदी १३ । वे० सं० १०० । छ भण्डार ।

३८८२. जिनशतकालङ्कार—समंतभद्र । पत्र स० १४ । आ० १३×७½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३० । ज भण्डार ।

३८८३ जिनस्तवनद्वात्रिंशिका । पत्र स० ६ । आ० ६½×४½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६६ । ट भण्डार ।

विशेष—गुजराती भाषा सहित है ।

३८८४. जिनस्तुति—शोभनमुनि । पत्र स० ६ । आ० १०½×४½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वे० स० १८७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव संस्कृत टीका सहित है ।

३८८५. जिनसहस्रनामस्तोत्र—आशाधर । पत्र सं० १७ । आ० ६×५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ५२१, ११२६, १०७६) और है ।

३८८६ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० ५७ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५७) और है ।

३८८७. प्रति सं० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८३३ कार्तिक बुदी ४ । वे० स० ११४ । च भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ से आगे हिन्दी मे तीर्थङ्करो की स्तुति और है ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ११६, ११७) और है ।

३८८८. प्रति स० ४ । पत्र स० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २३३) और है ।

३८८९. प्रति सं० ५ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १८६३ आसोज बुदी ४ । वे० स० २८ । ज भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त लघु सामयिक, लघु स्वयभूस्तोत्र, लघुसहस्रनाम एव चैत्यवदना भी है। अकुरारोपण मडल का चित्र भी है।

३८९० प्रति स० ६ । पत्र स० ४९ । ले० काल स० १६५३ । वे० स० ४७ । ञ भण्डार ।

विशेष—सवत् सोल १६५३ त्रेपनावर्षे श्रीमूलसघे भ० श्री विद्यानन्दि तत्पट्टे भ० श्री मल्लिभूषणतत्पट्टे भ० श्री लक्ष्मीचद तत्पट्टे भ० श्रीवीरचंद तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्र तत्पट्टे भ० वादिचद्र तेषामध्ये श्री प्रभाचन्द्र चेली बाइ तेजमती उपदेशनार्थं बाइ अजीतमती नारायणाग्रामे इद सहस्रनाम स्तोत्र निजकर्म क्षयार्थं लिखित ।

इसी भण्डार से एक प्रति (वे० स० १८९) और है।

३८९१ जिनसहस्रनामस्तोत्र—जिनसेनाचार्य । पत्र स० २८ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ५३२, ५४३, १०९४, १०९८) और हैं।

३८९२ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० ३१ । ग भण्डार ।

३८९३ प्रति स० ३ । पत्र स० ६२ । ले० काल × । वे० स० ११७ क । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ११६, ११८) और हैं।

३८९४. प्रति स० ४ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १९०३ आसोज सुदी १३ । वे० स० १९५ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १२५) और है।

३८९५ प्रति सं० ५ । पत्र स० ३३ । ले० काल × । वे० स० २६६ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २६७) और है।

३८९६ प्रति स० ६ । पत्र स० ३० । ले० काल स० १८८४ । वे० स ३२० । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३१६) और है।

३८९७ जिनसहस्रनामस्तोत्र—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र स० ४ । आ० १२३×७ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८ । घ भण्डार ।

३८९८ प्रति सं० २ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १७२६ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वे० स० ८ । झ भण्डार ।

विशेष—पहले गद्य हैं तथा अन्त मे ५२ श्लोक दिये हैं।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीसिद्धसेनदिवाकरमहाकवीश्वरविरचित श्रीसहस्रनामस्तोत्रसंपूर्ण। दुबे ज्ञानचन्द से जोधराज गोदीका ने आत्मपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी।

३८६६. **जिनसहस्रनामस्तोत्र** ···। पत्र स० २६। आ० ११½×५ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८११। ङ भण्डार।

३६०० **जिनसहस्रनामस्तोत्र** ···। पत्र स० ४। आ० १२×५½ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १३६। घ भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त निम्नपाठ और हैं- घटाकरण मत्र, जिनपंजरस्तोत्र पत्रो के दोनो किनारो पर सुन्दर बेलबूटे हैं। प्रति दर्शनीय है।

३६०१ **जिनसहस्रनामटीका** ···। पत्र स० १२१। आ० १२×५½ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६३। क भण्डार।

विशेष—यह पुस्तक ईश्वरदास ठोलिया की थी।

३६०२. **जिनसहस्रनामटीका—श्रुतसागर**। पत्र स० १८०। आ० १२×७ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १६५८ आषाढ सुदी १४। पूर्ण। वे० स० १६२। क भण्डार।

३६०३. **प्रति स० २**। पत्र स० ४ से १६४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८१०। ङ भण्डार।

३६०४. **जिनसहस्रनामटीका—अमरकीर्त्ति**। पत्र स० ८१। आ० ११×५ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८८४ पौष सुदी ११। पूर्ण। वे० स० १६१। अ भण्डार।

३६०५. **प्रति सं० २**। पत्र स० ४७। ले० काल स० १७२५। वे० सं० २६। घ भण्डार।

विशेष—बघ गोपालपुरा मे प्रतिलिपि हुई थी।

३६०६ **प्रति स० ३**। पत्र स० १८। ले० काल ×। वे० स० २०६। ङ भण्डार।

३६०७ **जिनसहस्रनामटीका** ···। पत्र सं० ७। आ० १२×५ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र र० काल ×। ले० काल सं० १८२२ श्रावण। पूर्ण। वे० स० ३०६। ञ भण्डार।

३६०८. **जिनसहस्रनामस्तोत्रभाषा—नाथूराम**। पत्र स० १६। आ० ७×६ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल स० १६५६। ले० काल स० १६८४ चैत्र सुदी १०। पूर्ण। वे० स० २१०। ङ भण्डार।

३६०६ **जिनोपकारस्मरण** ···। पत्र स० १३। आ० १२½×५ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८७। क भण्डार।

३६१०. प्रति सं० २ । पत्र स० १७ । ले० काल X । वे० सं० २१२ । ङ भण्डार ।

३६११. प्रति सं० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल X । वे० स० १०६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ७ प्रतियां (वे० स० १०७ से ११३ तक) और हैं ।

३६१२ णमोकारादिपाठ ' । पत्र स० ३०८ । आ० १२X७½ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल स० १८८२ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २३३ । ङ भण्डार ।

विशेष—११८८ बार णमोकार मन्त्र लिखा हुआ है । अन्त मे द्यानतराय कृत समाधि मरण पाठ तथा २१८ बार श्रीमद्वृषभादि वर्द्धमानान्तेभ्योनमः । यह पाठ लिखा हुआ है ।

३६१३. प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल X । वे० स० २३४ । ङ भण्डार ।

३६१४ णमोकारस्तवन ' । पत्र स० १ । आ० ६¾X४½ इ च । भाषा हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २१६३ । अ भण्डार ।

३६१५ तकाराक्षरीस्तोत्र ' । पत्र सं० २ । आ० १२½X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १०३ । ज भण्डार ।

विशेस—स्तोत्र की सस्कृत मे व्याख्या भी दी हुई है । ताता ताती ततेता ततति ततता ताति तातीत तता इत्यादि ।

३६१६ तीसचौबीसीस्तवन '' । पत्र स० ११ । आ० १२X५ इ च । । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल स० १७५८ । पूर्ण । जीर्ण । वे० स० २७६ । ङ भण्डार ।

३६१७ दलालीनी सज्झाय ' । पत्र स० १ । आ० ६X४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । जीर्ण । वे० स० २१३७ । अ भण्डार ।

३६१८ देवतास्तुति—पद्मनदि । पत्र स० ३ । आ० १०X४½ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २१६७ । अ भण्डार ।

३६१९. देवागमस्तोत्र—आचार्य समन्तभद्र । पत्र स० ४ । आ० १२X५½ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल स० १७९५ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३०८) और है ।

३६२०. प्रति सं० २ । X । पत्र स० २७ । ले० काल स० १८६६ बैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० १६६ । च भण्डार ।

विशेष—अभयचद साह ने सवाई जयपुर मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० स० १६४, १६५) और हैं ।

३६२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८७१ ज्येष्ठ सुदी १३ । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

३६२२. प्रति सं० ४ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १६२३ बैशाख बुदी ३ । वे० सं० ७६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २७७) और है ।

३६२३. प्रति स० ५ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १७२५ फागुन बुदी १० । वे० स० ६ । भ्र भण्डार ।

विशेष—पाडे दीनाजी ने सागानेर मे प्रतिलिपि की थी । साह जोधराज गोदीका के नाम पर स्याही पोत दी गई है ।

३६२४. प्रति स० ६ । पत्र स० ७ । ले० काल X । वे० सं० १८१ । ञ भण्डार ।

३६२५. देवागमस्तोत्रटीका—आचार्य वसुनंदि । पत्र सं० २५ । आ० १३X५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र (दर्शन) । र० काल X । ले० काल सं० १५५६ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० १२३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५५६ भाद्रपद सुदी २ श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचद्रदेवास्तत्शिष्य मुनि श्रीरत्नकीर्त्ति-देवास्तत्शिष्य मुनि हेमचद्र देवास्तदाम्नाये श्रीपथावास्तव्ये खण्डेलवालान्वये बोजुन्नागोत्रे सा मदन भार्या हरिसिरणी पुत्र सा परिसराम भार्या भषी एतैसास्त्रमिद लेखयित्वा ज्ञानपात्राय मुनि हेमचन्द्राय भक्त्याविधिना प्रदत्तं ।

३६२६. प्रति स० २ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १६४४ भादवा बुदी १२ । वे० स० १६० । ज भण्डार ।

विशेष—कुछ पत्र पानी मे थोडे गल गये है । यह पुस्तक प० फतेहलालजी की है ऐसा लिखा हुआ है ।

३६२७ देवागमस्तोत्रभाषा—जयचद छाबड़ा । पत्र स० १३४ । आ० १२X७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–न्याय । र० काल स० १८६६ चैत्र बुदी १४ । ले० काल स० १६३८ माह सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३१०) और है ।

३६२८ प्रति स० २ । पत्र सं० ५ से ८ । ले० काल स० १८६८ । वे० सं० ३०६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३०८) और है ।

३६२६ देवागमस्तोत्रभाषा ···। पत्र स० ४। आ० ११×७½ इ च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। (द्वितीय परिच्छेद तक) वे० स० ३०७। क भण्डार।

विशेष—न्याय प्रकरण दिया हुआ है।

३६३० देवाप्रभस्तोत्रवृत्ति—विजयसेनसूरि के शिष्य अणुभा। पत्र स० ६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १८६४ ज्येष्ठ सुदी ८। पूर्ण। वे० स० १६६। क भण्डार।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

३६३१ धर्मचन्द्रप्रबन्ध—धर्मचन्द्र। पत्र स० १। आ० ११×८½ इ च। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०७२। अ भण्डार।

विशेष—पूरी प्रति निम्न प्रकार है—

वीतरागायनम.। साटा छद—

सव्वगो सदद तिआल दिसऊ सव्वत्थ वत्थूगदो।
विस्सचक्खुवरो स आ अविसऊ जो ईस भाऊ समो।
सम्मदसणणाणसच्चरिअदोईसो मुणीणा गमो पत्ताणा
त चउट्ठुउ सविमलो सिद्धो बस कुज्जओ ॥१॥

विज्जुमाला छद—

देवाणं सेवा कामोण वाणीए अवाडाऊण।
गुरुणादो साराहीत्ताण विज्जुमाला सोहीआण ॥२॥

भुजगप्रयात छद—

वरे मूलसघे बलात्कारगण्णे सरस्सत्तिगछे पभदोपयण्णे।
वरो तस्स सिस्सो धम्मेदु जीओ बुहो चारूचारित्त भूअगजीओ ॥३॥

आर्याछद—

सअल कलापव्वीणो लीणो परमागमस्स सत्यम्मि।
भव्वि अजण उद्धारो धम्मचदो जओ मुणिदो ॥४॥

कामावतारछद—

मिछाक अक्खेण आईसरेण आइट्टिसुण्णाण पव्वज्जभिगाण। ॥१॥
सिस्साण माणेण सत्थाण दाणेण धम्मोपएसेण वूहाणरजेण ॥२॥
मिछ ' तप्पस्ससूरेण दूम्मत फेडेण सुअव्वपूरेण ॥३॥
भव्वाण भव्वेण लोआण लोएण भाणग्गि मूहेस कम्मेह हुएण ॥४॥
जित्तोइ मादेण कामावआरेण इदीकदूरेण मोक्खक्करत्तेण ॥५॥

जसाचदेजाए भव्वाज्जणोभाए भत्ताजईश्राए कत्तासुहुभरुए ॥६॥

धम्मदुकदेए सद्धम्मचदेए एम्मोत्थुकारेए भत्तिव्वभारेए ॥

त्थुउ अरिट्ठे ए रोमीवि तित्थेए दासेए बूहेए सकुज्जभत्तेए ॥८॥

द्वात्रिंशत्पत्र कमलबंधः ॥

आर्याछंद—

कोहो लोहोचत्तो भत्तो अजईए सासरो लीणो ।

मा अमोहवि खीणो भारत्थी कंकरो छेसी ॥९॥

भुजगप्रयातछंद—

सुचित्तो वितित्तो विभामो जईसो सुसीलो सुलीलो सुसोहो विईसो।

सुधम्मो सुरम्मो सुकम्मो सुसीसो विराओ विमाओ विचिट्ठो विमोसो ॥१०॥

आर्याछंद—

सम्मद्दंसणणाण सच्चारित्त तहे बसु णाणो ।

चरइ चरावइ धम्मो चंदो अविपुण्ण विक्खाओ ॥११॥

मौत्तिकदामछंद—

तिलग हिमाचल मालव अग वरव्वर केरल कण्णड वंग ।

तिलात्त कलिंग कुरगडहाल कराडम गुज्जर डड्ड तमाल ॥१२॥

सुपोट अवंति किरात अकीर सुलुक्क तुरुक्क बराड सुवीर ।

मरुत्थल दक्खण पूरबदेस सुणागवचाल सुकुभ लसेस ॥१३॥

चऊड गऊड सुककणलाट, सुबेट सुभोट सुदव्विड राट ।

सुदेस विदेसह आवइ राम, विवेक विचक्खण पूजइ पाअ ॥१४॥

सुचक्कल पीणपओहरि णारि, रणज्झण णेउर पाइ विधारि ।

सुविब्भम अति अहाउ विभाउ, सुगावइ गीउ मणोहरसाउ ॥१५॥

सुउज्जल मुत्ति अहीर पवाल, सुपूरउ णिम्मल रंगिहि बाल ।

चउक्क विउप्परि धम्मविचद बधाअउ अक्खहि वारु सुभद ॥१६॥

आर्याछंद—

जइ जणदिसिवर सहिओ, सम्मदिट्ठि सावं आइ परि आरिउ ।

जिणधम्मभवणखंभो विस अंख अंकरो जओ जअइ ॥१७॥

स्रग्विणीछंद—

जत्त पत्तिट्ठ विवाइ उद्धारक सिस्स सत्थाण दाणाभरो माणक ।

धम्मणी राणधारा ण भव्वाणकं चारुसस्स णउ द्वारणिप्पादक ॥१८॥

छद्दहा अग्गली भावणाभावए, दस्सधम्मा वरा सम्पदा पालए ।

चारु चारित्तहिं भूसिम्रो विग्गहो, धम्मचंदो जम्रो जित्त इदिग्गहो ॥१९॥

पद्यछंद—

सुरणर खगचरखचर चारु चच्चि ग्रकम जिणवर ।

चरण कमलहि ग्रधरण सरण गोयम जइ जइवर ।

पोसि ग्रवित्तर धम्म सोसि ग्रक्कमपवलतर ।

उद्धारी कयसमि वग्गभव्व चातक जलधर ।

वम्मह सप्प दप्प हरणवर समत्थ तारण तरण ।

जय धम्मधुरंधर धम्मचंद सयलसंघ मगलकरण ॥२०॥

इति धर्मचन्द्रप्रबंध समाप्त: ॥

३६३२ नित्यपाठसग्रह'''' ''''। पत्र सं० ७ । ग्रा० ८३⁄४×४३⁄४ इश्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ८२० । श्र भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

बडा दर्शन—	संस्कृत	—	
छोटा दर्शन—	हिन्दी	बुधजन	
भूतकाल चौबीसी—	,,	×	
पंचमंगलपाठ—	,,	रूपचद	(२ मगल हैं)
ग्रभिषेक विधि—	सस्कृत	×	

३६३३. निर्वाणकाण्डगाथा'''''' । पत्र सं० ५ । ग्रा० ११×५ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६५ । श्र भण्डार ।

विशेष—महावीर निर्वाण कल्याणक पूजा भी है ।

३६३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० स० ३७२ । ङ भण्डार ।

३६३५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल स० १८८४ । वे० स० १८७ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १८८) और है ।

३६३६. प्रति सं० ४ । पत्र स० २ । ले० काल X । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार ३ प्रतिया (वे० स० १३६, २५६ २५६/२) और हैं ।

३६३७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० ४०३ । ञ भण्डार ।

३६३८ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० स० १८६३ । ट भण्डार ।

३६३६. निर्वाणकाण्डटीका······ । पत्र स० २४ । आ० १०X५ इञ्च । भाषा–प्राकृत संस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६६ । ख भण्डार ।

३६४०. निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ३ । आ० ६X६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल सं० १७४१ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३७५ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० सं० ३७३, ३७४) और हैं ।

३६४१. निर्वाणभक्ति······ । पत्र स० २४ । आ० ११X७½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३८२ । क भण्डार ।

३६४२. निर्वाणभक्ति······ । पत्र स० ६ । आ० ६½X५½ इच । भाषा संस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०७५ । ट भण्डार ।

विशेष—१६ पद्य तक है ।

३६४३. निर्वाणसप्तशतीस्तोत्र······ । पत्र स० ६ । आ० ८X४½ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल X । ले० काल स० १६२३ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० । ज भण्डार ।

३६४४. निर्वाणस्तोत्र······ । पत्र स० ३ से ५ । आ० १०X४ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २१७५ । ट भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका दी हुई है ।

३६४५. नेमिनरेन्द्रस्तोत्र—जगन्नाथ । पत्र स० ८ । आ० ६½X५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल स० १७०४ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वे० स० २३२ । ञ भण्डार ।

विशेष—पं० दामोदर ने शेरपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

३६४६. नेमिनाथस्तोत्र—पं० शाली । पत्र स० १ । आ० ११X५½ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वे० सं० ३४० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । द्वयक्षरी स्तोत्र है । प्रदर्शन योग्य है ।

३६४७. प्रति सं० २ । पत्र स० १ । ले० काल X । वे० स० १८३० । ट भण्डार ।

३६४८ नेमिस्तवन—ऋषि शिव। पत्र सं० २। आ० १०३/४×४३/४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल। पूर्ण। वे० सं० १२०८। अ भण्डार।

विशेष— बीस तीर्थङ्कर स्तवन भी है।

३६४६. नेमिस्तवन—जितसागरगणी। पत्र सं० १। आ० १०×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२१५। अ भण्डार।

विशेष—दूसरा नेमिस्तवन और है।

३६५० पञ्चकल्याणकपाठ—हरचंद। पत्र सं० १। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल सं० १८३३ ज्येष्ठ सुदी ७। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३८। छ भण्डार।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न है—

प्रारम्भ— कल्यान नायक नमौ, कल्प कुरुह कुलकंद।
कल्मष दुर कल्यान कर, बुधि कुल कमल दिनंद ॥१॥
मंगल नायक बंदिकै, मंगल पंच प्रकार।
वर मंगल मुझ दीजिये, मंगल वरनन सार ॥२॥

अन्तिम-घत्त छंद— यह मंगल माला सब जनविधि है,
सिव साला गल मे धरनी।
बाला अध तरुन सब जग कौ,
सुख समूह की है भरनी॥
मन वच तन श्रधान करै गुन,
तिनके चहुगति दुख हरनी ॥
तातै भविजन पढि कढि जगते,
पंचम गति वामा वरनी ॥११६॥

दोहा— व्योम अंगुल न नापिये, गनिये मघवा धार।
उडगन मित भू पैड्न्यौ, त्यो गुन वरने सार ॥११७॥
तीनि तीनि वसु चंद्र, संवतसर के अंक।
जेष्ठ शुक्ल सप्तम दिवस, पूरन पढौ निसंक ॥११८॥

॥ इति पंचकल्याणक संपूर्ण ॥

३९५१. पञ्चनमस्कारस्तोत्र—आचार्य विद्यानंदि। पत्र स० ४। मा० १०$\frac{3}{8}$×४$\frac{3}{4}$ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १७९९ फागुण। पूर्ण। वे० स० ३५। अ भण्डार।

३९५२. पञ्चमगलपाठ—रूपचंद। पत्र म० ६। मा० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८४४ कार्तिक सुदी २। पूर्ण। वे० स० ५०२।

विशेष—अन्त मे तीस चौबीसी के नाम भी दिये हुये हैं। प० खुस्यालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ६५७, ७७१, ९९०) और हैं।

३९५३. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १९३७। वे० स० ४१४। क भण्डार।

३९५४. प्रति सं० ३। पत्र स० २३। ले० काल ×। वे० स० ३९४। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति और है।

३९५५. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०। ले० काल स० १८८९ आसोज सुदी १५। वे० स० ६१८। च भण्डार।

विशेष—पत्र ४ चौथा नही है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २३९) और है।

३९५६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० स० १४५। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २३९) और है।

३९५७ पचस्तोत्रसंग्रह ......। पत्र सं० ५३। मा० १२×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ९१८। अ भण्डार।

विशेष—पाचो ही स्तोत्र टीका सहित हैं।

स्तोत्र	टीकाकार	भाषा
१ एकीभाव	नागचन्द्र सूरि	सस्कृत
२. कल्याणमन्दिर	हर्षकीर्ति	"
३. विषापहार	नागचन्द्रसूरि	"
४ भूपालचतुर्विंशति	आशाधर	"
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र	—	"

३९५८. पचस्तोत्रसग्रह... । पत्र स० २४। मा० ६×४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १४००। अ भण्डार।

३९५९. पचस्तोत्रटीका ......। पत्र स० ५०। मा० १२×८ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २००३। ट भण्डार।

विशेष—भक्तामर, विषापहार, एकीभाव, कल्याणमंदिर, भूपालचतुर्विंशति इन पांच स्तोत्रों की टीका है।

३६६० पद्मावत्यष्टकवृत्ति—पार्श्वदेव। पत्र सं० १५। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८६७। पूर्ण। वे० सं० १४४। ङ भण्डार।

विशेष—अन्तिम- अस्याया पार्श्वदेवविरचिताया पद्मावत्यष्टकवृत्तौ यत् किमप्यवधयति तत्सर्व सर्वाभि क्षतव्य देवनाभिरपि। वर्णाणां द्वादशभि शतैर्गतेस्तुत्तरैरिय वृत्ति वैशाखे सूर्यदिने समाप्ता शुक्लपंचम्या अस्याक्षरगणनात पंचशतानि जातानिद्वाविंशदक्षराणि वासदनुष्टुप्छंदसा प्राय ।

इति पद्मावत्यष्टकवृत्तिसमाप्ता।

३६६१ पद्मावतीस्तोत्र । पत्र सं० १५। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३२। ज भण्डार।

विशेष—पद्मावती पूजा तथा शान्तिनाथस्तोत्र, एकीभावस्तोत्र और विषापहारस्तोत्र भी हैं।

३६६२ पद्मावती की ढाल ''। पत्र सं० २। आ० ६½×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८०। अ भण्डार।

३६६३ पद्मावतीदण्डक । पत्र सं० १। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५१। अ भण्डार।

३६६४ पद्मावतीसहस्रनाम '''। पत्र सं० १२। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९०२। पूर्ण। वे० सं० ९९५। अ भण्डार।

विशेष—शान्तिनाथाष्टक एवं पद्मावती कवच (मंत्र) भी दिये हुये हैं।

३६६५ पद्मावतीस्तोत्र । पत्र सं० ६। आ० ६¾×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१५३। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १०३२, १८६८) और हैं।

३६६६ प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १९३३। वे० सं० २९४। ख भण्डार।

३६६७ प्रति सं० ३। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० सं० २०६। च भण्डार।

३६६८ प्रति सं० ४। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० ४२९। ङ भण्डार।

३६६९ परमज्योतिस्तोत्र—बनारसीदास। पत्र सं० १। आ० १२½×६½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२११। अ भण्डार।

३६७० परमात्मराजस्तवन—पद्मनंदि। पत्र सं० २। आ० ९×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२३। ञ भण्डार।

३६७१. परमात्मराजस्तोत्र—भ० सकलकीर्त्ति। पत्र स० ३। आ० १०×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६५। अ भण्डार।

अथ परमात्मराज स्तोत्र लिख्यते

यन्नामसंस्तवफलात् महता महत्यष्टौ, विशुद्धय इहाशु भवति पूर्णा. ।
सर्वार्थसिद्धजनकाः स्वचिदेकमूर्त्ति, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥१॥
यद्ध्यानवज्रहननान्महता प्रयाति, कर्म्माद्रियोत्ति विषमा शतचूर्णता च ।
अंतानिगावरगुणा प्रकटाभवेयुर्भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥२॥
यस्गावबोधकलनात्त्रिजगत्प्रदीपं, श्रीकेवलोदयमनतसुखाब्धिमाशु ।
सत श्रयन्ति परमं भुवनार्च्य वद्य, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥३॥
यद्दर्शनेनमुनयो मलयोगलीना, ध्याने निजात्मन इह त्रिजगत्पदार्थान् ।
पश्यन्ति केवलदृशा स्वकराश्रितान्वा, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥४॥
यद्भावनादिकरणाद्भवनाशनाच्च, प्रणश्यति कर्म्मरिपवोभवकोटि जाता. ।
अभ्यन्तरेऽत्रविविधा सकलार्द्धय. स्युर्भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥५॥
यन्नाममात्रजपनात् स्मरणाच्च यस्य, दु'कर्म्मदुर्मलचयाद्विमला भवति ।
दक्षा जिनेन्द्रगणभृत्सुपदं लभंते, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराज ॥६॥
यं स्वान्तरेतु विमल विमलाविवुद्धय, शुक्लेन तत्त्वमसमं परमार्थरूप ।
अर्हत्पद त्रिजगता शरण श्रयन्ते, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥७॥
यद्ध्यानशुक्लपविनाखिलकर्म्मशैलान्, हत्वा समाप्यशिवदा स्तववदनार्चा' ।
सिद्धासदष्टगुणभूषणभाजना स्युर्भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥८॥
यस्याप्तये सुगणिनो विधिनाचरति, ह्याचारयन्ति यमिनो वरपञ्चभेदान् ।
आचारसारजनितान् परमार्थबुद्धया, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥९॥
य ज्ञातुमात्मसुविदो यतिपाठकाश्च, सर्वांगपूर्वजलधेर्लघु याति पार ।
अन्यान्नयतिशिवद' परतत्वबीज, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥१०॥
ये साधयत्ति वरयोगबलेन नित्यमध्यात्ममार्गनिरतावनपर्वतादौ ।
श्रीसाधव शिवगते करम तिरस्थ, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराजं ॥११॥
रागदोषमलिनोऽपि निर्मलो, देहवानपि च देह वर्ज्जित' ।
कर्म्मवानपि कुकर्म्मदूरगो, निश्चयेन भुवि य: स नन्दतु ॥१२॥

जन्ममृत्युकलितो भवातक, एक रूप इह योप्यनेकधा।

व्यक्त एव यमिना न रागिणा, यश्चिदात्मक इहास्तुनिर्मल ॥१३॥

यत्तत्व ध्यानगम्य परपदकर तीर्थनाथादिसेव्य ।

कर्म्मघ्न ज्ञानदेह भवभयमथन ज्येष्ठमानदमूल ॥

अतातीत गुणाप्त रहितविधिगण सिद्धसादृश्यरूप ।

तद्व दे स्वात्मतत्व शिवसुखगतये स्तौमि युक्त्याभजेह ॥१४॥

पठति नित्य परमात्मराजमहास्तव ये विबुधा किल मे ।

तेषा चिदात्माविरतोगढरो ध्यानी गुणी स्यात्परमात्मरूप ॥१५॥

इत्थ यो वारवार गुणगणरचनैर्वंदित सस्तुतोऽस्मिन्

सारे ग्रन्थे चिदात्मा समगुणजलधि सोंस्तुमे व्यक्तरूप ।

ज्येष्ठ स्वध्यानदाताखिलविधिवपुषा हानये चित्तशुद्ध्यै

सन्मत्यैवोधकर्ता प्रकटनिजगुणो धैर्य्यशाली च शुद्ध. ॥१६॥

इति श्री सकलकीर्त्तिभट्टारकविरचित परमात्मराजस्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

३६७२. परमानदपचविंशति · । पत्र स० १ । आ० ६×४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३३ । ञ भण्डार ।

३६६३ परमानदस्तोत्र · । पत्र स० ३ । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११३० । अ भण्डार ।

३६७४. प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० २६८ । अ भण्डार ।

३६७५. प्रति स० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० स० २१२ । च भण्डार ।

विशेष—फूलचन्द विन्दायका ने प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २११) और है।

३६७६. परमानदस्तोत्र · ··· । पत्र स० ३ । आ० ११×७½ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १६६७ फागुण बुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ४३८ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है।

३६७७ परमार्थस्तोत्र । पत्र स० ४ । आ० ११½×५½ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०४ । ख भण्डार ।

विशेष—सूर्य की स्तुति की गयी है। प्रथम पत्र मे कुछ लिखने मे रह गया है।

३६७८ पाठसग्रह । पत्र स० ३६ । आ० ४½×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६२८ । अ भण्डार ।

निम्न पाठ हैं— जैन गायत्री उर्फ वज्रपञ्जर, शान्तिस्तोत्र, एकीभावस्तोत्र, णमोकारकल्प, न्हावण

३६७६ पाठसग्रह । पत्र स० १० । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०६८ । अ भण्डार ।

३६८० पाठसंग्रह—सग्रहकर्त्ता-जैतराम बाफना । पत्र स० ७० । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४६१ । क भण्डार ।

३६८१ पात्रकेशरीस्तोत्र । पत्र स० १७ । आ० १०×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—५० श्लोक हैं । प्रति प्राचीन एव सस्कृत टीका सहित है ।

३६८२ पार्थिवेश्वरचिन्तामणि । पत्र सं० ७ । आ० ८½×४½ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८६० भादवा सुदी ८ । वे० सं० २३४ । ज भण्डार ।

विशेष—वृन्दावन ने प्रतिलिपि की थी ।

३६८३. पार्थिवेश्वर ‥ । पत्र स० ३ । आ० ७½×४½ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र० काल × । ले० काल × । वे० स० १५४४ । पूर्ण । अ भण्डार ।

३६८४. पार्श्वनाथ पद्मावतीस्तोत्र ‥ । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

३६८५ पार्श्वनाथ लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्र सं० १ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६४ । ख भण्डार ।

३६८६. प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० ६२ । झ भण्डार ।

३६८७. पार्श्वनाथ एव वर्द्धमानस्तवन ‥ । पत्र स० १ । आ० १०×४½ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४८ । छ भण्डार ।

३६८८ पार्श्वनाथस्तोत्र । पत्र स० ३ । आ० १०½×१½ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४३ । अ भण्डार ।

विशेष—लघु सामायिक भी है ।

३६८६ पार्श्वनाथस्तोत्र ...... । पत्र स० १२ । आ० १०×४३/४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २५३ । अ भण्डार ।

विशेष—मन्त्र सहित स्तोत्र है । अक्षर सुन्दर एव मोटे हैं ।

३६६० पार्श्वनाथस्तोत्र । पत्र स० १ । आ० १२३/४×७१/२ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६६ । अ भण्डार ।

३६६१ पार्श्वनाथस्तोत्र । पत्र सं० १ । आ० १०३/४×८ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६३ । अ भण्डार ।

३६६२. पार्श्वनाथस्तोत्रटीका । पत्र स० २ । आ० ११×५१/२ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४२ । अ भण्डार ।

३६६३ पार्श्वनाथस्तोत्रटीका । पत्र स० २ । आ० १०×५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६८७ । अ भण्डार ।

३६६४. पार्श्वनाथस्तोत्रभाषा—द्यानतराय । पत्र स० १ । आ० १०×७३/४ इच । भाषा हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०५५ । अ भण्डार ।

३६६५ पार्श्वनाथाष्टक । पत्र स० ४ । आ० १२×५ इच । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति मन्त्र सहित है ।

३६६६ पार्श्वमहिम्नस्तोत्र—महामुनि राजसिंह । पत्र स० ४ । आ० १११/२×६ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १६८७ । पूर्ण । वे० स० ७७० । अ भण्डार ।

३६६७ प्रश्नोत्तरस्तोत्र । पत्र स० ७ । आ० ८×६ इच । भाषा-संस्कृत । विषय स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६ । व्य भण्डार ।

३६६८ प्रात स्मरणमंत्र ...... । पत्र स० १ । आ० ८१/२×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४८६ । अ भण्डार ।

३६६६. भक्तामरपञ्जिका । पत्र स० ८ । आ० १३×८ इच । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १७८१ । पूर्ण । वे० स० ३२८ । व्य भण्डार ।

विशेष—श्री हीरानन्द ने द्रव्यपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

४०००. भक्तामरस्तोत्र—मानतुंगाचार्य। पत्र सं० ८। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १२०३। अ भण्डार।

४००१. प्रति सं० २। पत्र स० १०। ले० काल स० १७२०। वे० स० २६। अ भण्डार।

४००२. प्रति स० ३। पत्र स० २४। ले० काल स० १७५५। वे० स० १०१५। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है।

४००३. प्रति सं० ४। पत्र स० १०। ले० काल ×। वे० स० २२०१। अ भण्डार।

विशेष—प्रति ताडपत्रीय है। आ० ५×२ इंच है। इसके अतिरिक्त २ पत्र पुट्ठो की जगह हैं। २×१३ इंच चौडे पत्र पर णमोकार मन्त्र भी है। प्रति प्रदर्शन योग्य है।

४००४. प्रति सं० ५। पत्र स० २४। ले० काल स० १७५५। वे० स० १०१५। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० स० ४४१, ६५६, ६७३, ८६०, ६२०, ६५६, ११३५, ११८६, १३६६) और हैं

४००५. प्रति स० ६। पत्र स० ६। ले० काल स० १८६७ पौष सुदी ८। वे० स० २५१। ख भण्डार।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये है। मूल प्रति मथुरादास ने निमखपुर मे लिखी तथा उदैराम ने टिप्पण किया। इसी भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० १२८, २८८, १८५६) और हैं।

४००६. प्रति स० ७। पत्र स० २५। ले० काल ×। वे० स० ७४। घ भण्डार।

४००७. प्रति स० ८। पत्र स० ६ से ११। ले० काल स० १८७८ ज्येष्ठ बुदी ७। अपूर्ण। वे० स० ५४६। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे १२ प्रतिया (वे० सं० ५३६ से ५४५ तथा ५४७ से ५५०, ५५२) और है।

४००८. प्रति स० ९। पत्र स० २५। ले० काल ×। वे० स० ७३८। च भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है। इसी भण्डार मे ७ प्रतिया (वे० स० २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, ७३८, ७३६) और है।

४००९. प्रति स० १०। पत्र स० ६। ले० काल स० १८२२ चैत्र बुदी ६। वे० स० १३४। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० स० १३४ (४) १३६, २२६) और है।

४०१०. प्रति सं० ११। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० स० १७०। झ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति (वे० स० २१५) और है।

४०११. प्रति सं० १२ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० १७५ । ज भण्डार ।

४०१२ प्रति सं० १३ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १८७७ पौष सुदी १ । वे० सं० २६१ । ड

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० २६६ ३३६, ५९५) और हैं ।

४०१३. प्रति स० १४ । पत्र सं० ३ मे ३६ । ले० काल स० १६३२ । अपूर्ण । वे० स० २०१३ । ट भण्डार ।

विशेष—इस प्रति मे ५२ श्लोक हैं । पत्र १, २, ४, ६, ७ ६, १६ यह पत्र नहीं है । प्रति हिन्दी व्याख्या सहित है । इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वें० स० १६३४, १७०४, १६६६, २०१४) और हैं ।

४०१४ भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—ब्र० रायमल । पत्र स० ३० । आ० ११३×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल स० १६६६ । ले० काल स० १७६१ । पूर्ण । वे० स० १०७६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की टीका ग्रीवापुर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे की गयी । प्रति कथा सहित है ।

४०१५ प्रति स० २ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १७२४ आसोज बुदी ६ । वे० स० २८७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १४३) और है ।

४०१६ प्रति सं० ३ । पत्र स० ४० । ले० काल स० १६११ । वे० स० ५४४ । क भण्डार ।

४०१७ प्रति स० ४ । पत्र स० १४६ । ले० काल × । वे० स० ६५ । ग भण्डार ।

विशेष—फतेचन्द गगवाल ने मन्नालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराई ।

४०१८ प्रति स० ५ । पत्र स० ५५ । ले० काल स० १७५४ पौष बुदी ८ । वें० स० ५५३ । ङ भण्डार ।

४०१६ प्रति स० ६ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १८३२ पौष सुदी २ । वे० स० ६६ । छ भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे प० सवाईराम ने नेमिनाथ चैत्यालय मे ईसरदास की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

४०२० प्रति स० ७ । पत्र स० ४१ । ले० काल स० १८७३ चैत्र बुदी ११ । वे० स० १५ । ज भण्डार ।

विशेष—हरिनारायण ब्राह्मण ने प० कालूराम के पठनार्थ आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

४०२१ प्रति स० ८ । पत्र सं० ४८ । ले० काल स० १६८८ फागुन बुदी ८ । वे० स० २८ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति- संवत् १६८८ वर्षे फागुण बुदी ८ शुक्रवार नक्षित्र अनुराध व्यतिपात नाम जोगे महाराजाधिराज श्री महाराजाराव छत्रसालजी बू दीराज्ये इदपुस्तक लिखाइत। साह श्री स्योपा तत्पुत्र सहलाल तत् पुत्र साह श्री धणराज भाई मंनराज गोत्रे पटनोड जाती बघेरवाल इद पुस्तक पुनिख्य दीयते। लिखतं जोसो नराइण।

४०२२. प्रति स० ६। पत्र स० ३६। लें० काल स० १७६१ फागुण। वे० सं० ३०३। ञ भण्डार।

४०२३. भक्तामरस्तोत्रटीका—हर्षकीर्त्तिसूरि। पत्र स० १०। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। लें० काल ×। पूर्ण। वे० स० २७६। अ भण्डार।

४०२४ प्रति स० २। पत्र स० २६। लें० काल स० १६४०। वे० स० १६२५। ट भण्डार।

विशेष—इस टीका का नाम भक्तामर प्रदीपिका दिया हुआ है।

४०२५. भक्तामरस्तोत्रटीका…… । पत्र स० १२। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। लें० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६६१। ट भण्डार।

४०२६. प्रति स० २। पत्र स० १६। लें० काल ×। वे० स० १८४४। अ भण्डार।

विशेष—पत्र चिपके हुये हैं।

४०२७. प्रति स० ३। पत्र सं० १६। लें० काल स० १८७२ पौष बुदी १। वे० सं० २१०६। अ भण्डार।

विशेष—पन्नालाल ने शीतलनाथ के चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ११६८) और है।

४०२८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४८। लें० काल ×। वे० सं० ५६६। क भण्डार।

४०२९ प्रति सं० ५। पत्र स० ७। लें० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १४६।

विशेष—३६वे काव्य तक है।

४०३० भक्तामरस्तोत्रटीका…… । पत्र स० ११। आ० १२¾×८ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। लें० काल स० १६१८ चैत सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १६१२। ट भण्डार।

विशेष—अक्षर मोटे है। सस्कृत तथा हिन्दी मे टीका दी हुई है। सगही पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

अ भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० २०८२) और है।

४०३१. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र सहित…… । पत्र स० २७। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। लें० काल स० १८४३ वैशाख बुदी ११। पूर्ण। वे० स० २८५। अ भण्डार।

विशेष—श्री नयनसागर ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। अन्तिम २ पृष्ठ पर उपसर्ग हर स्तोत्र दिया हुआ है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १५१) और है।

४०३२. प्रति स० २ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १८१३ वैशाख सुदी ७ । वे० स० १२६ । ख भण्डार ।

विशेष—गोविंदगढ मे पुरुषोत्तमसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

४०३३ प्रति स० ३ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वे० सं० ६७ । ञ भण्डार ।

विशेष—मन्त्रो के चित्र भी हैं ।

४०३४ प्रति स० ४ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १८२१ वैशाख सुदी ११ । वे० स० ८१ । ञ भण्डार ।

विशेष—प० सदाराम के शिष्य गुलाब ने प्रतिलिपि की थी ।

४०३५ भक्तामरस्तोत्रभाषा—जयचन्द छाबडा । पत्र स० ६४ । आ० १२३×५ इच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल स० १८७० कार्तिक सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ५४१ ।

विशेष—क भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ५४२, ५४३) और हैं ।

४०३६. प्रति स० २ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १९६० । वे० स० ५५६ । क भण्डार ।

४०३७ प्रति सं० ३ । पत्र स० ५५ । ले० काल स० १९३० । वे० स० ६५४ । च भण्डार ।

४०३८ प्रति स० ४ । पत्र स० २२ । ले० काल स० १९०८ वैशाख सुदी ११ । वे० स० १७६ । छ भण्डार ।

४०३९ प्रति स० ५ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० स० २७३ । झ भण्डार ।

४०४०. भक्तामरस्तोत्रभाषा—हेमराज । पत्र स० ८ । आ० ८३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११२५ । अ भण्डार ।

४०४१ प्रति सं० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १८८४ माघ सुदी २ । वे० स० ६४ । ग भण्डार ।

विशेष—दीवान अमरचन्द के मन्दिर मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

४०४२ प्रति सं० ३ । पत्र स० ६ से १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५५१ । ङ भण्डार ।

४०४३. भक्तामरस्तोत्रभाषा—गगाराम । पत्र स० २ से २७ । आ० १२३×५३ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८६७ । अपूर्ण । वे० स० २००७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है। पहिले मूल फिर गंगाराम कृत सवैया, हेमचन्द्र कृत पद्य, कही २ भाषा तथा इसमे आगे ऋद्धि मन्त्र सहित है।

अन्त मे लिखा है— साहजी ज्ञानजी रामजी उनके २ पुत्र शोलालजी, लघु भ्राता चैनसुखजी ने ऋषि भागचन्दजी जती को यह पुस्तक पुण्यार्थ दिया स० १८७२ का साल मे ककोड मे रहे छै।

४०४४ भक्तामरस्तोत्रभाषा । पत्र स० ६ से १० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १७८७ । अपूर्ण । वे० स० १२६४ । अ भण्डार ।

४०४५ प्रति स० २ । पत्र स० ३३ । ले० काल सं० १८२८ मगसिर बुदी ६ । वे० स० २३६ । छ भण्डार ।

विशेष—भूधरदास के पुत्र के लिये सभूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४०४६ प्रति सं० ३ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० स० ६५३ । च भण्डार ।

४०४७ प्रति स० ४ । पत्र स० २१ । ले० काल सं० १८६२ । वे० स० १५७ । झ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४०४८. प्रति स० ५ । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १८०१ चैत्र बुदी १३ । वे० स० २६० । ञ भण्डार ।

४०४६ भक्तामरस्तोत्रभाषा । पत्र स० ३ । आ० १०½×७½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५२ । च भण्डार ।

४०५० भूपालचतुर्विंशतिकास्तोत्र—भूपाल कवि । पत्र सं० ८ । आ० ६½×४½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८४३ । पूर्ण । वे० स० ४१ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है। अ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३२३) और है।

४०५१ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० २६८ । ख भण्डार ।

४०५२ प्रति स० ३ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५७२ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५७३) है।

४०५३ भूपालचतुर्विंशतिटीका—आशाधर । पत्र सं० १४ । आ० ६½×४½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७७८ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ६ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री विनयचन्द्र के पठनार्थ प० आशाधर ने टीका लिखी थी। पं० हीराचन्द के शिष्य चोखचन्द्र के पठनार्थ मोजमाबाद मे प्रतिलिपि कराई गई।

स्त निम्न प्रकार है— संवत्सरे वसुमुनिसप्तेन्दु (१७७८) मिते भाद्रपद कृष्णा द्वादशी तिथौ मौजमाबादनगरे लसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारकोत्तम श्री श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्तिजी कस्य नकारी बुधजी श्रीहीरानन्दजीकस्य शिष्येन विनयवता चोखचन्द्रे णस्वशयेन स्वपठनार्थं लिखितेय भूपाल चतुर्विशतिका । विनयचन्द्रस्यार्थमित्याशाधरविरचिताभूपालचतुर्विशते जिनेन्द्रस्तुतेष्टीका परिसमाप्ता ।

अ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४०) और है।

४०५४. प्रति स० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल स० १५३२ मगसिर सुदी १० । वे० स० २३१ । ञ ार ।

विशेष— प्रशस्ति—सं० १५३२ वर्षे मार्ग सुदी १० गुरुवासरे श्रीघाटमपुरशुभस्थाने श्रीचन्द्रप्रभुचैत्यालय ते श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये ।

४०५५. भूपालचतुर्विंशतिकास्तोत्रटीका—विनयचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-त । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२० ।

विशेष—श्री विनयचन्द्र नरेन्द्र द्वारा भूपाल चतुर्विशति स्तोत्र रचा गया था ऐसा टीका की पुष्पिका मे । हुआ है। इसका उल्लेख २७वें पद्य मे निम्न प्रकार है।

य विनयचन्द्रनामायतीवरो जनि समभूत । ललितचद्रात् । उपशमदर्पापक्षेपतेयमुपशमः साक्षान्मूर्तिमान् स. त सच्चकोरचन्द्र. सत. पण्डिता. एव चकोरा. तेषां प्रमोदवे द्वितीयश्चन्द्र यस्यशुचि चरित चरिष्णो. शुचि च तच्चरित वरण शीलं शुचि चरित चरिष्णु. तस्य वाचो वाण्य जगल्लोकाधिन्वन्ति कथमूतावाच. अमृतगर्भा अमृतगर्भे तास्तथोक्ता शास्त्रसदर्भगर्भा शास्त्राणा सदर्भाः विस्तारा. शास्त्रसदर्भास्तेगर्भे यासा तास्तासा ॥२७॥ इति यचन्द्रनरेन्द्र विरचित भूपाल स्तोत्र समाप्त ।

प्रारम्भ मे टीकाकार का मगलाचरण नही है। मूल स्तोत्र की टीका प्रारम्भ करदी गई है।

४०५६ भूपालचौबीसीभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० २४ । आ० १२½×५ इच । भाषा- । विषय-स्तोत्र । र० काल सं० १६३० चैत्र सुदी ४ । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वे० स० ५६१ । क ार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५६२) और है।

४०५७ मृत्युमहोत्सव · । पत्र सं० १ । आ० ११×५ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६३ । झ भण्डार ।

४०५८. महर्षिस्तवन ·····। पत्र सं० ३१ से ७४ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-स्तोत्र । काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५८८ । ङ भण्डार ।

४०५९. महर्षिस्तवन .... । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६३ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्त मे पूजा भी दी हुई है ।

४०६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८३१ चैत्र बुदी १४ । वे० सं० ६११ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे टीका भी दी हुई है ।

४०६१. महामहिम्नस्तोत्र....... । पत्र सं० ४ । आ० ८×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १९०६ फागुन बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ३११ । ज भण्डार ।

४०६२. प्रति सं० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० सं० ३१५ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४०६३. महामहर्षिस्तवनटीका .... । पत्र सं० २ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४८ । छ भण्डार ।

४०६४. महालक्ष्मीस्तोत्र .... । पत्र स० १० । आ० ८½×६½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २९५ । ख भण्डार ।

४०६५. महालक्ष्मीस्तोत्र .... । पत्र सं० ६ से ९ । आ० ९×३½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १७८२ ।

४०६६. महावीराष्टक—भागचन्द । पत्र सं० ४ । आ० ११½×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी प्रति मे जिनोपदेशोपकारस्मर स्तोत्र एवं आदिनाथ स्तोत्र भी हैं ।

४०६७. महिम्नस्तोत्र .... । पत्र स० ७ । आ० ९×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६ । भ्र भण्डार ।

४०६८. यमकाष्टकस्तोत्र—भ० अमरकीर्त्ति । पत्र सं० १ । आ० १२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ पौष बुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० ५८६ । क भण्डार ।

४०६९. युगादिदेवमहिम्नस्तोत्र .... । पत्र सं० २ से १४ । आ० ११×७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम तीन पत्रो मे पार्श्वनाथ स्तोत्र रघुनाथदास कृत अपूर्ण हैं । इससे आगे महिम्नस्तोत्र है ।

४०७०. राधिकानाममाला……। पत्र स० १ । आ० १०३/४×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६६ । ट भण्डार ।

४०७१. रामचन्द्रस्तवन……। पत्र स० ११ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम— श्रीसनत्कुमारसंहितायां नारदोक्त श्रीरामचन्द्रस्तवराज संपूरणम् ॥ १०० पद्य है ।

४०७२ रामबतीसी—जगनकवि । पत्र सं० ६ । आ० ६३/४×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७३५ प्रथम चैत्र बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० १५१० । ट भण्डार ।

विशेष—कवि पौहकरना (पुष्करना) जाति के थे । नरायणा मे जट्टू व्यास ने प्रतिलिपि की थी ।

४०७३. रामस्तवन……। पत्र सं० ११ । आ० १०१/२×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २११२ । ट भण्डार ।

विशेष—११ से आगे पत्र नही हैं । पत्र नीचे की ओर से फटे हुए है ।

४०७४. रामस्तोत्र……। पत्र स० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७२५ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ६५८ । अ भण्डार ।

विशेष—जोधराज गोदीका ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

४०७५. लघुशान्तिस्तोत्र । पत्र स० १ । आ० १०×४३/४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४६ । अ भण्डार ।

४०७६. लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्र स० २ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०३६) और है ।

४०७७. प्रति स० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० स० १४८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १४४) और है ।

४०७८. प्रति स० ३ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० स० १८२८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है ।

४०७९. लक्ष्मीस्तोत्र ….। पत्र स० ४ । आ० ६×३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४२१ । अ भण्डार ।

विशेष—ट भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०६७) और है ।

४०८०. लघुस्तोत्र ··· । पत्र सं० २ । आ० १२×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३९६ । ञ भण्डार ।

४०८१. वज्रपंजरस्तोत्र ··· । पत्र स० १ । आ० ८३/४×६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६६८ । ड भण्डार ।

४०८२. प्रति सं० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० १६१ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र मे होम का मन्त्र है ।

४०८३ वर्द्धमानद्वात्रिंशिका—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र स० १२ । आ० १२×५१/२ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८६७ । ट भण्डार ।

४०८४. वर्द्धमानस्तोत्र—आचार्य गुणभद्र । पत्र स० १२ । आ० ४३/४×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १९३३ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १४ । ज भण्डार ।

विशेष—गुणभद्राचार्य कृत उत्तरपुराण को राजा श्रेणिक की स्तुति है तथा ३३ श्लोक है । संग्रहकर्ता श्री फतेहलाल शर्मा है ।

४०८५. वर्द्धमानस्तोत्र ··· । पत्र सं० ५ । आ० ७३/४×६१/२ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ३ मे आगे निर्वाणकाण्ड गाथा भी है ।

४०८६. वसुधारापाठ ··· । पत्र स० १६ । आ० ८×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९० । छ भण्डार ।

४०८७ वसुधारास्तोत्र ··· । पत्र स० १६ । आ० ११×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७९ । ख भण्डार ।

४०८८ प्रति सं० २ । पत्र स० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७१ । ङ भण्डार ।

४०८९ विद्यमानवीसतीर्थंकरस्तवन—मुनि दीप । पत्र स० १ । आ० ११×४१/२ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १९३३ ।

४०९०. विषापहारस्तोत्र—धनंजय । पत्र स० ८ । आ० १२३/४×६ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८१२ फागुण बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० ६६६ ।

विशेष—सस्कृत टीका भी दी हुई है । इसकी प्रतिलिपि पं० मोहनदासजी ने अपने शिष्य गुमानीरामजी के पठनार्थ खेमकरणजी की पुस्तक से बसई (बस्सी) नगर मे शान्तिनाथ चैत्यालय में की थी ।

४०६१. प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल X । वे० स० ६७६ । ड भण्डार ।

४०६२. प्रति सं० ३ । पत्र स० १५ । ले० काल X । वे० स० १५२ । ज भण्डार ।

विशेष—सिद्धिप्रियस्तोत्र भी है ।

४०६३. प्रति स० ४ । पत्र स० १५ । ले० काल X । वे० स० १६११ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

४०६४. विषापहारस्तोत्रटीका—नागचन्द्रसूरि । पत्र स० १४ । आ० १०X४½ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ५ । अ भण्डार ।

४०६५ प्रति स० २ । पत्र स० ८ से १६ । ले० काल स० १७७८ भादवा बुदी ६ । वे० स० ८८६ । अ भण्डार । ।

विशेष—मौजमाबाद नगर मे प० चोखचन्द ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

४०६६ विषापहारस्तोत्रभाषा—पन्नालाल । पत्र स० ३१ । आ० १२¾X५ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल स० १९३० फागुण सुदी १३ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६६४ । क भण्डार ।

विशेष— सी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६६५) और है ।

४०६७ विषापहारस्तोत्रभाषा—अचलकीर्त्ति । पत्र स० ६ । आ० ६¾X५¾ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १५८५ । ट भण्डार ।

४०६८ वीतरागस्तोत्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० ९ । आ० ६¾X४ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २५७ । छ भण्डार ।

४०६९. वीरछत्तीसी" " । पत्र स० २ । आ० १०X४¾ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २१५० । अ भण्डार ।

४१००. वीरस्तवन । पत्र स० १ । आ० ९¾X४¾ इच । भाषा–प्राकृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० स० १२४८ । अ भण्डार ।

४१०१ वैराग्यगीत—सहमत । पत्र स० १ । आ० ८X३¾ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१२६ । अ भण्डार ।

विशेष—'भूल्यो भमरा रे काई भमै' ११ अंतरे है ।

४१०२. षट्पाठ—बुधजन । पत्र स० १ । आ० ६X९ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल X । ले० काल स० १८५० । पूर्ण । वे० स० ५३५ । च भण्डार ।

४१०३. षट्पाठ ....। पत्र स० ६ । ग्रा० ४X६ इंच। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X। ले० काल X। पूर्ण । वे० स० ४७ । म भण्डार ।

४१०४ शान्तिघोषणास्तुति ....। पत्र सं० २। ग्रा० १०X४½ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल X। ले० काल सं० १५६६। पूर्ण। वे० सं० ८३४। अ भण्डार।

४१०५ शान्तिनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द। पत्र सं० १। ग्रा० १०X४ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल स० १८५६। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० १२३५। अ भण्डार।

विशेष—शातिनाथ का एक स्तवन और है।

४१०६. शान्तिनाथस्तवन .....। पत्र स० १। ग्रा० १०½X४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १६५६। ट भण्डार।

विशेष—शान्तिनाथ तीर्थङ्कर के पूर्वभव की कथा भी है।

अन्तिमपद्य—

कुन्दकुन्दाचार्य विनती, शान्तिनाथ गुण हिय मे धरै।
रोग सोग सताप दूरे जाय, दर्शन दीठा नवनिधि ठाया॥

इति शान्तिनाथस्तोत्रं सपूर्णं।

४१०७. शान्तिनाथस्तोत्र—मुनिभद्र। पत्र सं० १। ग्रा० ६½X४¾ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २०७०। अ भण्डार।

विशेष—अथ शान्तिनाथस्तोत्र लिख्यते—

काव्य—

नाना विचित्र भवदु खराशि, नाना प्रकारं मोहाग्निपाशं।
पापानि दोषानि हरन्ति देवा, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥१॥
ससारमध्ये मिथ्यात्वचिन्ता, मिथ्यात्वमध्ये कर्माणिबंध।
ते बध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥२॥
कामं च क्रोध मायाविलोभं, चतु कषायं इह जीव बध।
ते बध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥३॥
नोद्रावयहीने कठिनस्यचित्ते, परजीवनिंदा मनसा च वाचा।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥४॥
चारित्रहीने नरजन्ममध्ये, सम्यक्त्वरत्न परिपालनीयं।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथ ॥५॥

जातस्य तरण युक्तस्य वचनं, हो शान्तिजीव बहुजन्मदु ख ।

ते बंध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरण तव शान्तिनाथ ॥६॥

परद्रव्यचोरी परदारसेवा, शकादिक्षा अजनृत्यवंध ।

ते बंध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरण तव शान्तिनाथ ॥७॥

पुत्राणि मित्राणि कलित्रवदं, इहवदमध्ये बहुजीववधा ।

ते वध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरण तव शान्तिनाथ ॥८॥

जयति पठति नित्य श्री शान्तिनाथादिशाति

स्तवनमधुरवाणी पापतापोपहारी ।

कृतमुनिभद्र सर्वकार्येषु नित्य

.... ॥६॥

इतिश्रीशान्तिनाथस्तोत्र सपूर्ण ।। शुभम् ॥

४१०८ शान्तिनाथस्तोत्र ··· । पत्र सं० २ । आ० ६×४३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । लें० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७१६ । अ भण्डार ।

४१०६. शान्तिपाठ····· ·· । पत्र सं० ३ । आ० ११×५३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । लें० काल × । पूर्ण । वे० स० ११६ । छ भण्डार ।

४११०. शान्तिविधान · । पत्र सं० ७ । आ० ११३×४३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । लें० काल × । पूर्ण । वे० स० २०३१ । अ भण्डार ।

४१११. श्रीपतिस्तोत्र—चैनसुखजी । पत्र स० ६ । आ० ८×६३ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । लें० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१२ । क भण्डार ।

४११२. श्रीस्तोत्र · । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । लें० काल स० १६०४ चैत बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० १८०४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

४११३ सप्तनयविचारस्तवन ·· · । पत्र स० ८ । आ० १२×५३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । लें० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३५ ।

विशेष—३७ पद्य हैं ।

४११४ समवशरणस्तोत्र "" । पत्र सं० ८ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १७६८ फागुन सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २६६ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

प्रारम्भ— वृषभाद्यानभिवंद्यान् वंदित्वा वीरपश्चिमजिनेंद्रान् ।

भक्त्या नतोत्तमाग. स्तोष्ये तत्समवशरणाणि ॥२॥

४११५ समवशरणस्तोत्र—विष्णुसेन मुनि । पत्र सं० २ से ६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७ । अ भण्डार ।

४११६ प्रति सं० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० ७७८ । अ भण्डार ।

४११७. प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १७८५ माघ बुदी ५ । वे० स० ३०५ । च भण्डार ।

विशेष—प० देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य प० मनोहर ने प्रतिलिपि की थी ।

४११८. संभवजिनस्तोत्र—मुनि गुणनंदि । पत्र स० २ । आ० ८३×४३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६० । क भण्डार ।

४११६. समुदायस्तोत्र "" । पत्र स० ५३ । आ० १३×८३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । वे० स० ११५ । घ भण्डार ।

विशेष—स्तोत्रो का सग्रह है ।

४१२०. समवशरणस्तोत्र—विश्वसेन । पत्र सं० ११ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत श्लोको पर हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

४१२१ सर्वतोभद्रमंत्र " । पत्र स० २ । आ० ६×३३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८६७ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० १४२२ । अ भण्डार ।

४१२२ सरस्वतीस्तवन—लघुकवि । पत्र स० ३ से ५ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२५७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नही है ।

अन्तिमपुष्पिका— इति भारत्यालघुकवि कृत लघुस्तवन सम्पूर्णतामागतम् ।

४१२३ प्रति सं० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ११५५ । अ भण्डार ।

४१२४ सरस्वतीस्तोत्र—बृहस्पति। पत्र सं० १। आ० ८३/४×४३/४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र (जैनेतर)। र० काल ×। ले० काल सं० १८५१। पूर्ण। वे० सं० १५५०। अ भण्डार।

४१२५ सरस्वतीस्तोत्र—श्रुतसागर। पत्र सं० २६। आ० १०३/४×४१/२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७७४। ट भण्डार।

विशेष—बीच के पत्र नही हैं।

४१२६. सरस्वतीस्तोत्र ...। पत्र सं० ३। आ० ८×४१/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८०६। ड भण्डार।

४१२७ प्रति सं० २। पत्र सं० १। ले० काल सं० १८६२। वे० सं० ४३६। व भण्डार।

विशेष—रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी। भारतीस्तोत्र भी नाम है।

४१२८. सरस्वतीस्तोत्रमाला (शारदा-स्तवन)...। पत्र सं० २। आ० ६×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२६। व भण्डार।

४१२६ सहस्रनाम (लघु)—आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं० ४। आ० ११३/४×८ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७१४ आश्विन बुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ६। झ भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त भद्रबाहु विरचित ज्ञानाकुश पाठ भी है। ४३ श्लोक है। आनन्दराम ने स्वय जोधराज गोदीका के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। 'पोथी जोधराज गोदीका की पढिबा की छै' पत्र ४ मु० सागानेर।

४१३०. सारचतुर्विंशति ...। पत्र सं० ११२। आ० १२×५१/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८६० पौष सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० २८८। ज भण्डार।

विशेष—प्रथम ६५ पृष्ठो मे सकलकीर्त्ति कृत श्रावकाचार है।

४१३१. सायसन्ध्यापाठ ...। पत्र सं० ७। आ० १०×४१/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८२४। पूर्ण। वे० सं० २७८। ख भण्डार।

४१३२. सिद्धवदना ...। पत्र सं० ८। आ० ११×५३/४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८८६ फाल्गुन सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ६०। ग भण्डार।

विशेष—श्रीमाणिक्यचंद ने प्रतिलिपि की थी।

४१३३. सिद्धस्तवन ...। पत्र सं० ८। आ० ८३/४×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६५२। ट भण्डार।

४१३४ सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनंदि। पत्र स० ८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल स० १८८६ भाद्रपद बुदी ६। पूर्ण। वे० स० २००८। अ भण्डार।

४१३५. प्रति स० २। पत्र स० १६। ले० काल ×। वे० स० ८०६। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी टीका भी दी हुई है।

४१३६. प्रति स० ३। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० स० २६२। ख भण्डार।

विशेष—हासिये मे कठिन शब्दो के अर्थ दिये हैं। प्रति सुन्दर तथा प्राचीन है। अक्षर काफी मोटे हैं। मुनि विशालकीर्त्ति ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २६३, २६८) और हैं।

४१३७ प्रति सं० ४। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० स० ८५३। ङ भण्डार।

४१३८ प्रति स० ५। पत्र स० ५। ले० काल स० १८६२ आसोज बुदी २। अपूर्ण। वे० स० ४०६। च भण्डार।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है। जयपुर मे अभयचन्द साह ने प्रतिलिपि की थी।

४१३९ प्रति सं० ६। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० सं० १०२। छ भण्डार।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३८, १०३) और है।

४१४० प्रति सं० ७। पत्र स० ५। ले० काल स० १८६८। वे० स० १०६। ज भण्डार।

४१४१. प्रति स० ८। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० स० १६८। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। अमरसी ने प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २४७) और है।

४१४२ प्रति स० ६। पत्र स० ३। ले० काल ×। वे० स० १८२५। ट भण्डार।

४१४३ सिद्धिप्रियस्तोत्रटीका ....। पत्र स० ५। आ० १३×५ इच। भाषा–सस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १७५६ आसोज बुदी २। पूर्ण। वे० स० ३६। ञ भण्डार।

विशेष—त्रिलोकदास ने अपने हाथ से स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

४१४४ सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र स० ३६। आ० १२½×५ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल स० १९३०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८०५। क भण्डार।

४१४५ सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—नथमल। पत्र स० ८। आ० ११×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८४७। क भण्डार।

४१४६ प्रति सं० २ । पत्र स० ३ । ले० काल X । वे० स० ८५१ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ८५२) और है ।

४१४७. सिद्धिप्रियस्तोत्र '। पत्र स० १३ । आ० ११३/४X५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ८०४ । क भण्डार ।

४१४८ सुगुरुस्तोत्र······ । पत्र स० १ । आ० १०१/२X६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २०५८ । अ भण्डार ।

४१४६ वसुधारास्तोत्र ·· । पत्र स० १० । आ० ६३/४X४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २४६ । ज भण्डार ।

विशेष—अन्त मे लिखा है– अथ घटाकर्णकल्प लिख्यते ।

४१५० सौदर्यलहरीस्तोत्र—भट्टारक जगद्भूषण । पत्र स० १० । आ० १२X५१/२ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल स० १८४४ । पूर्ण । वे० स० १८२७ । ट भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती कर्वट मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति आमेर वालो ने सर्वसुख के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

४१५१ सौदर्यलहरीस्तोत्र···· । पत्र स० ७४ । आ० ६३/४X५३/४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल सं० १८३७ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वे० स० २७४ । ज भण्डार ।

४१५२ स्तुति । पत्र स० १ । आ० १२X५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १८६७ । अ भण्डार ।

विशेष—भगवान महावीर की स्तुति है । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

प्रारम्भ— त्राता त्राता महात्राता भर्त्ता भर्त्ता जगत्प्रभु
वीरो वीरो महावीरोस्त्व देवासि नमोस्तुति ॥१॥

४१५३ स्तुतिसग्रह ' । पत्र स० २ । आ० १०X४१/२ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १२४० । अ भण्डार ।

४१५४ स्तुतिसग्रह । पत्र स० २ से १७ । आ० ११X४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २१०६ । ट भण्डार ।

विशेष—पञ्चपरमेष्टीस्तवन, बीसतीर्थङ्करस्तवन आदि हैं ।

४. एकीभावस्तोत्र, ५ ज्वालामालिनी, ६ जिनपञ्जरस्तोत्र, ७. लक्ष्मीस्तोत्र,

८ पार्श्वनाथस्तोत्र

९ वीतरागस्तोत्र— पद्मनंदि संस्कृत

१० वर्द्धमानस्तोत्र × " अपूर्ण

११ चौसठयोगिनीस्तोत्र, १२ शनिस्तोत्र, १३. शारदाष्टक, १४. त्रिकालचौबीसीनाम

१५ पद, १६. विनती (ब्रह्मजिनदास), १७ माता के सोलहस्वप्न, १८ परमानन्दस्तवन।

सुखानन्द के शिष्य नैनसुख ने प्रतिलिपि की थी।

४१५९ स्तोत्रसग्रह । पत्र स० २९ । आ० ८×७ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र है।

१. जिनदर्शनस्तुति, २ ऋषिमडलस्तोत्र (गौतम गणधर), ३ लघुशातिकमन्त्र,

४ उपसर्गहरस्तोत्र, ५ निरञ्जनस्तोत्र।

४१६० स्तोत्रपाठसग्रह । पत्र स० २२१ । आ० ११३/४×५ इच । भाषा–सस्कृत, प्राकृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २४० । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र स० १७, १८, १९ नही हैं। नित्य नैमित्तिक स्तोत्र पाठो का सग्रह है।

४१६१ स्तोत्रसग्रह । पत्र स० २७९ । आ० १०×४३/४ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ९७ । अ भण्डार ।

विशेष—२४८, २४९वा पत्र नही है। साधारण पूजापाठ तथा स्तुति सग्रह है।

४१६२ स्तोत्रसग्रह । पत्र स० १५३ । आ० ११×५ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०९७ । अ भण्डार ।

४१६३. स्तोत्रसग्रह । पत्र स० १८ । आ० ७१/२×४१/२ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५३ । अ भण्डार ।

४१६४ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० ३५४ । अ भण्डार ।

४१६५ स्तोत्रसग्रह । पत्र स० ११ । आ० ८३/४×४ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न सग्रह हैं—

४. एकीभावस्तोत्र, ५. ज्वालामालिनी, ६ जिनपञ्जरस्तोत्र, ७.

८ पार्श्वनाथस्तोत्र

९ वीतरागस्तोत्र— पद्मनंदि संस्कृ

१० वर्द्धमानस्तोत्र × ,,

११ चौसठयोगिनीस्तोत्र, १२ शनिस्तोत्र, १३. शारदाष्टक, १४ त्रि

१५ पद, १६. विनती (ब्रह्मजिनदास), १७ माता के सोलहस्वप्न, १

सुखानन्द के शिष्य नैनसुख ने प्रतिलिपि की थी।

४१५९. स्तोत्रसग्रह । पत्र स० २९ । आ० ८×७ इ च । भाषा–संस्कृत । वि

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं।

१. जिनदर्शनस्तुति, २ ऋषिमडलस्तोत्र (गौतम गणधर), ३ लघुशांतिक

४ उपसर्गहरस्तोत्र, ५ निरञ्जनस्तोत्र।

४१६० स्तोत्रपाठसग्रह । पत्र स० २२१ । आ० ११३/४×५ इ च । भाषा–संस्कृत, प्र.

स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २४० । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र स० १७, १८, १९ नहीं हैं। नित्य नैमित्तिक स्तोत्र पाठो का संग्रह है।

४१६१ स्तोत्रसग्रह । पत्र स० २७९ । आ० १०×४१/२ इ च । भाषा–संस्कृत । विष

र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ९७ । अ भण्डार ।

विशेष—२४८, २४९वा पत्र नहीं है। साधारण पूजापाठ तथा स्तुति सग्रह है।

४१६२ स्तोत्रसग्रह । पत्र स० १५३ । आ० ११×५ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०९७ । अ भण्डार ।

४१६३. स्तोत्रसग्रह । पत्र स० १८ । आ० ७१/२×४१/२ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र ।

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५३ । अ भण्डार ।

४१६४ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० ३५४ । अ भण्डार ।

४१६५ स्तोत्रसग्रह । पत्र स० ११ । आ० ८३/४×४ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न सग्रह हैं—

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
तत्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत
स्वयभूस्तोत्र	समन्तभद्र	"

४१७३. स्तोत्रसग्रह ' । पत्र स० १० । आ० ११½×७¼ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८३० । क भण्डार ।

विशेष—निम्न सग्रह है ।

नेमिनाथस्तोत्र सटीक	×	संस्कृत
द्वयक्षरस्तवन	×	"
स्वयंभूस्तोत्र	×	"
चन्द्रप्रभस्तोत्र	×	"

४१७४. स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० ८ । आ० १२½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३६ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र है ।

कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	सस्कृत
विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	"

४१७५. स्तोत्रसग्रह... । पत्र सं० २२ । आ० १२½×५½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३८ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

एकीभाव	वादिराज	सस्कृत
सरस्वतीस्तोत्र मन्त्र सहित	×	"
ऋषिमण्डलस्तोत्र	×	"
भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र सहित	×	"
हनुमानस्तोत्र	×	"
ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	"
चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	"

४१७६. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र स० १४। आ० ७X४½ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल X। ले० काल स० १८४४ माह सुदी ६। पूर्ण। वे० स० २३७। ख भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्रो का सग्रह है।

ज्वालामालिनी, मुनीश्वरो की जयमाल, ऋषिमडलस्तोत्र एव नमस्कारस्तोत्र।

४१७७ स्तोत्रसंग्रह ……। पत्र स० २४। आ० ६X४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २३६। ख भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्रो का सग्रह है।

पद्मावतीस्तोत्र	X	सस्कृत	१ से १० पत्र
चक्रेश्वरीस्तोत्र	X	"	११ से २० पत्र
स्वर्णाकर्षणविधान	महीधर	"	२४

४१७८. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र स० ८१। आ० ७½X४ इंच। भाषा हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल X। पूर्ण। वे० सं० ८६६। ङ भण्डार।

४१७९. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र स० २७। आ० १०½X४½ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ८६८। ङ भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं।

भक्तामर, एकीभाव, विषापहार, एव भूपालचतुर्विंशतिका।

४१८० स्तोत्रसंग्रह……। पत्र स० ३ से ५६। आ० ६X६ इच। भाषा-हिन्दी, सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ८६७। ङ भण्डार।

४१८१. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २३ से १४१। आ० ८X५ इंच। भाषा-सस्कृत, हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ८६६ ङ भण्डार।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
पचमंगल	रूपचंद	हिन्दी	अपूर्ण
कलशविधि	X	संस्कृत	
देवसिद्धपूजा	X	"	
शान्तिपाठ	X	"	
जिनेन्द्रभक्तिस्तोत्र	X	हिन्दी	

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी
जैनशतक	भूधरदास	"
निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"
तेरहकाठिया	बनारसीदास	"
चैत्यवदना	X	"
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	"
पचकल्याणपूजा	X	"

४१८७. स्तोत्रसंग्रह'''' ''। पत्र स० ५१ । आ० ११X७३ इच। भाषा–सस्कृत-हिन्दी । विषय–तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ८९५ । ङ भण्डार ।

विशेष—निम्न प्रकार सग्रह है।

निर्वाणकाण्डभाषा	भैया भगवतीदास	हिन्दी	अपूर्ण
सामायिकपाठ	पं० महाचन्द्र	"	पूर्ण
सामायिकपाठ	X	"	अपूर्ण
पंचपरमेष्ठीगुण	X	"	पूर्ण
लघुसामायिक	X	सस्कृत	"
बारहभावना	नवलकवि	हिन्दी	"
द्रव्यसग्रहभाषा	X	"	अपूर्ण
निर्वाणकाण्डगाथा	X	प्राकृत	पूर्ण
चतुर्विशतिस्तोत्रभाषा	भूधरदास	हिन्दी	"
चौबीसदडक	दौलतराम	"	"
परमानन्दस्तोत्र	X	"	अपूर्ण
भक्तामरस्तोत्र	मानतु ग	सस्कृत	पूर्ण
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	"
स्वयभूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	"	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"	अपूर्ण
आलोचनापाठ	X	"	"
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनदि	सस्कृत	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
विषापहारस्तोत्रभाषा	×	हिन्दी	पूर्ण
सबोधपचासिका	×	"	"

४१८३. स्तोत्रसग्रह……। पत्र स० ५१ । आ० १०½×७ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० स० ८६४ । ङ भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्रो का संग्रह है ।

नवग्रहस्तोत्र, योगिनीस्तोत्र, पद्मावतीस्तोत्र, तीर्थङ्करस्तोत्र, सामायिकपाठ आदि ह ।

४१८४ स्तोत्रसग्रह……। पत्र स० २५ । आ० १०½×४½ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८६३ । ङ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर आदि स्तोत्रों का सग्रह है ।

४१८५ स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २६ । आ० ८½×६ इच । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८६२ । ङ भण्डार ।

४१८६ स्तोत्र—आचार्य जसवंत । पत्र सं० १ । आ० ६½×५ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८६१ । ङ भण्डार ।

४१८७ स्तोत्रपूजासंग्रह……। पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८६० । ङ भण्डार ।

४१८८ स्तोत्रसग्रह……। पत्र सं० १३ । आ० १२×८ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८८६ । ङ भण्डार ।

४१८९ स्तोत्रसग्रह……। पत्र सं० ७ से ४७ । आ० ६×४½ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८८८ । ङ भण्डार ।

४१९०. स्तोत्रसग्रह…… । पत्र सं० ६ से १६ । आ० ११½×५¾ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४२६ । च भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

एकीभावस्तोत्र	वादिराज	सस्कृत
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"

प्रति प्राचीन है । सस्कृत टीका सहित है ।

४१६१. स्तोत्रसंग्रह...... । पत्र सं० २ से ४८ । आ० ८×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३० । च भण्डार ।

४१६२. स्तोत्रसंग्रह........ । पत्र सं० १४ । आ० ८¾×५¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८५७ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४३१ । च भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

१	सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत
२.	कल्याणमन्दिर	कुमुदचन्द्राचार्य	"
३	भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	"

४१६३. स्तोत्रसंग्रह...... । पत्र सं० ७ से १७ । आ० ११×८½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३२ । च भण्डार ।

४१६४. स्तोत्रसंग्रह...... । पत्र सं० २४ । आ० १२×७½ इंच । भाषा-हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६३ । ट भण्डार ।

४१६५. स्तोत्रसंग्रह ... । पत्र सं० ५ से ३५ । आ० ६×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८७५ । अपूर्ण । वे० सं० १८७२ । ट भण्डार ।

४१६६. स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० १५ से ३४ । आ० १२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३३ । च भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

सामायिक बडा	×	संस्कृत	अपूर्ण
सामायिक लघु	×	"	पूर्ण
सहस्रनाम लघु	×	"	"
सहस्रनाम बडा	×	"	"
ऋषिमंडलस्तोत्र	×	"	"
निर्वाणकाण्डगाथा	×	"	"
नवकारमन्त्र	×	"	"
बृहद्नवकार	×	अपभ्रंश	"
वीतरागस्तोत्र	पद्मनंदि	संस्कृत	"
जिनपंजरस्तोत्र	×	"	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
पद्मावतीचक्रेश्वरीस्तोत्र	X	"	"
वज्रपंजरस्तोत्र	X	"	"
हनुमानस्तोत्र	X	हिन्दी	"
बड़ादर्शन	X	संस्कृत	"
आराधना	X	प्राकृत	"

४१६७. स्तोत्रसंग्रह…… । पत्र सं० ४ । आ० ११×६½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ भण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं ।

एकीभाव, भूपालचौबीसी, विषापहार, नेमिगीत भूधरकृत हिन्दी में है ।

४१६८. स्तोत्रसंग्रह ……। पत्र सं० ७ । आ० ४½×३½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

निम्नलिखित स्तोत्र हैं ।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
पार्श्वनाथस्तोत्र	X	संस्कृत
तीर्थावलीस्तोत्र	X	"

विशेष—ज्योतिषी देवों में स्थित जिनचैत्यों की स्तुति है ।

चक्रेश्वरीस्तोत्र	X	संस्कृत	
जिनपञ्जरस्तोत्र	कमलप्रभ	"	अपूर्ण

श्री रुद्रपल्लीयवरेण्य गच्छे, देवप्रभाचार्यपदाब्जहंस ।
वादीन्द्रचूडामणिरेष जैनो जियादसौ कमलप्रभाख्य ॥

४१६९. स्तोत्रसंग्रह…… । पत्र सं० १४ । आ० ४½×३½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत
नेमिस्तोत्र	X	"
पद्मावतीस्तोत्र	X	"

४२००. स्तोत्रसंग्रह ....। पत्र सं० १३ । आ० १३×७३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१ । ज भण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं ।

एकीभाव, सिद्धिप्रिय, कल्याणमन्दिर, भक्तामर तथा परमानन्दस्तोत्र ।

४२०१. स्तोत्रपूजासंग्रह........। पत्र सं० १५२ । आ० ६३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४१ । ज भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओ का संग्रह है । प्रति गुटका साइज एवं सुन्दर है ।

४२०२. स्तोत्रसंग्रह .... । पत्र सं० ३२ । आ० ४३×६३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १६०२ । पूर्ण । वे० सं० २६४ । झ भण्डार ।

विशेष—पद्मावती, ज्वालामालिनी, जिनपञ्जर आदि स्तोत्रो का संग्रह है ।

४२०३. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० ११ से २२७ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत, प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७१ । झ भण्डार ।

विशेष—गुटका के रूप मे है तथा प्राचीन है ।

४२०४. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० १४ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७७ । ञ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर स्तोत्र आदि हैं ।

४२०५. स्तोत्रत्रय........। पत्र सं० २१ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२४ । ञ भण्डार ।

विशेष—कल्याणमन्दिर, भक्तामर एवं एकीभाव स्तोत्र हैं ।

४२०६. स्वयंभूस्तोत्र—समन्तभद्राचार्य । पत्र सं० ५१ । आ० १२३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । इसका दूसरा नाम जिनचतुर्विंशति स्तोत्र भी है ।

४२०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७५६ ज्येष्ठ बुदी १३ । वे० सं० ४३५ । च भण्डार ।

विशेष—कामराज ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० ४३४, ४३६) और हैं ।

४२०८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल X । वे० स० २६ । ज भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

४२०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १५४ । ञ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे सकेतार्थ दिये गये हैं ।

४२१०. स्वयंभूस्तोत्रटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र स० ४३ । आ० ११X६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल सं० १८६१ मंगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ८४१ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम क्रियाकलाप टीका भी दिया हुआ है ।

इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० ८३२, ८३६) और हैं ।

४२११. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १६१५ पौष सुदी १३ । वे० स० ८४ । ज भण्डार ।

विशेष—तनुसुखलाल पाड्या चौधरी चाटसू के मार्फत श्रीलाल पाटनी से प्रतिलिपि कराई ।

४२१२. स्वयंभूस्तोत्रटीका ...... । पत्र सं० ३२ । आ० १०X४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८८४ । अ भण्डार ।

पद भजन गीत आदि

४२१३. अनाथानोचोढाल्या—खेम। पत्र सं २। आ० १०X४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–गीत। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २१२१। अ भण्डार।

विशेष—राजा श्रेणिक ने भगवान महावीर स्वामी से अपने आपको अनाथ कहा था उसी पर चार ढालो मे प्रार्थना की गयी है।

४२१४. अनाथीमुनि सज्झाय··· । पत्र स० ५। आ० १०X४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी । विषय–गीत। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २१७३। अ भण्डार।

४२१५ अर्हनकचौढालियागीत—विमल विनय (विनयरंग) ····। पत्र सं० ३। आ० १०X४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–गीत। र० काल X। ले० काल १६८१ आसोज सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ८४५। अ भण्डार।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न है—

प्रारम्भ—

वर्द्धमान चउवीसमउ जिनवदी जगदीस।
मरहनक मुनिवर चरीय भरिण सुधरीय जगीस ॥१॥

चौपई—

सु जगीसधरी मनमाहे, कहिसि सबंध उछाहे।
मरहनकि जिमव्रत लीधउ, जिम ते तारी वसि कीधउ ॥२॥
निज मात ·· रणइ उपदेसइ, वलिव्रत आदरीय विसेसइ।
पहुतउ ते देव विमानि, सुणिज्यो भवियण तिम कानि ॥३॥

दोहा—

नगरा नगरी जाणीयइ, अलकापुरि अवतार।
वसइ तिहां विवहारीयउ सुदत नाम सुविचार ॥४॥

चौपई—

सुविचार सुभद्रा घरणी ·············· ·· ··· ····।
तसु नंदन रूप निधान, अरहंनक नाम प्रधान ॥५॥

अन्तिम—

च्यार सरण चित चीतवइ जी, परिहरि च्यारि कषाय।
दोष तजइ व्रत उचरइ जी, सल्य रहित निरमाय ॥५५॥

असनपाल खादम बली जी सादिम सेवे निहार।
इंण भाव ए सवि परिहरी जी, मन समरइ नवकार ॥५६॥

सिला संथारउ आदरया जी, सूर किरण तनि ताप।
सहइ परीसह साहसी जी, छेदइ भवना पाप ॥५७॥

समतारस माहि भीलतउ जी, मनेधरतउ सुभ ध्यान।
काल करी तिणी पामीयउ जी, सुदर देव विमान ॥५८॥

सुरग तणा सुख भोगवी जी, परमाणंद उलास।
तिहा थी चवि वलि पामेस्यइ जी, अनुक्रमि सिवपुर वास ॥५९॥

अरहनक जिमते धरइ जी, अंत समय सुभभाण।
जनम सफल करि ते सही जी, पामइ परम कल्याण ॥६०॥

श्री खरतर गच्छ दीपता जी, श्री जिनचद मुणिद।
जयवंता जग जाणीयइ जी, दरसण परमाणद ॥६१॥

श्री गुण सेखर गुण निलउ जी, वाचक श्री नयरंग।
तासु सीस भावइ भणइ जी, विमलविनय मतिरंग ॥६२॥

ए सबंध सुहायउ जी, जे गावइ नर नारि।
ते पामइ सुख संपदा जी, दिन दिन जय जयकार ॥६३॥

इति अरहंनक चउढालियागीतम् समाप्तम् ॥

सवत् १६८१ वर्षे आसु सुदी १४ दिने बुधवारे पडित श्री हर्षसिंहगणिशिष्यहर्षकीर्त्तिगणिशिष्ये पद्मरंगमुनिना लेखि। श्री गुरुवचनगरे।

४२१६. आदिजिनवरस्तुति—कमलकीर्त्ति। पत्र सं० ५। आ० १०३/४×५ इच। भाषा-गुजराती विषय-गीत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८७४। ट भण्डार।

विशेष—दो गीत हैं दोनो ही के कर्त्ता कमलकीर्त्ति हैं।

४२१७. आदिनाथगीत—मुनिहेमसिद्ध। पत्र स० १। आ० ६१/२×४१/२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय गीत। र० काल सं० १६३६। ले० काल ×। वे० स० २३३। छ भण्डार।

विशेष—भाषा पर गुजराती का प्रभाव है।

४२१८. आदिनाथ सज्झाय""""। पत्र स० १। आ० ६१/२×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-गीत र० काल ×। ले० काल। पूर्ण। वे० सं० ११६८। छ भण्डार।

४२१६. आदीश्वरविज्ञप्ति ...... । पत्र सं० १ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-गीत । र० काल स० १५६२ । ले० काल सं० १७४१ वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पद्य नही हैं । कुल ४५ पद्य रचना में हैं ।

अन्तिम पद्य—

पनरवासठि जिननूर अविचल पद पायो ।

वीनतडी कुलट पूरणीया आसुमस वदि दशम दिहाडै मनि वैरागे इम भणीया ॥४५॥

४२२०. कृष्णबालविलास—श्री किशनलाल । पत्र सं० १५ । आ० ८×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२८ । ङ भण्डार ।

४२२१. गुरुस्तवन—भूधरदास । पत्र सं० ३ । आ० ८३×६३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४५ । ङ भण्डार ।

४२२२. चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तवन—हेमविमलसूरि शिष्य आणंद । पत्र स० २ । आ० ८३×४३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल स० १५६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४२२३ चम्पाशतक—चम्पाबाई । पत्र सं० २४ । आ० १२×८३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३ । छ भण्डार ।

विशेष—एक प्रति और है । चंपाबाई ने ६६ वर्ष की उम्र मे रुग्णावस्था मे रचना की थी जिसके प्रभाव मे रोग दूर होगया था । यह प्यारेलाल अलीगढ (उ० प्र०) की छोटी वहिन थी ।

४२२४ चेलना सज्झाय—समयसुन्दर । पत्र सं० १ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल सं० १८६२ माह सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २१७५ । अ भण्डार ।

४२२५. चैत्यपरिपाटी ...... । पत्र सं० १ । आ० ११३×४३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२५५ । अ भण्डार ।

४२२६ चैत्यवंदना ...... । पत्र सं० ३ । आ० ६×८३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८५ । क भण्डार ।

४२२७. चौवीसी जिनस्तुति—खेमचंद । पत्र सं० ६ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल × । ले० काल स० १७६४ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १८४ । ङ भण्डार ।

४२२८ चौवीसतीर्थङ्करतीर्थपरिचय ...... । पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२० । अ भण्डार ।

४२२६. चौबीसतीर्थङ्करस्तुति—ब्रह्मदेव। पत्र सं० १७। आ० ११३×५३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६४१। अ भण्डार।

विशेष—रतनचन्द पाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

४२३०. चौबीसीस्तुति" "। पत्र सं० १५। आ० ८×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल स० १६००। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३६। छ भण्डार।

४२३१. चौबीसतीर्थङ्करवर्णन' । पत्र सं० ११। आ० ६३×४३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १५८३। ट भण्डार।

४२३२ चौबीसतीर्थङ्करस्तवन—लूणकरण कासलीवाल। पत्र स० ८। आ० ६×४३ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५५७। च भण्डार।

४२३३ जखड़ी—रामकृष्ण। पत्र स० ५। आ० १०३×६३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६८। ङ भण्डार।

४२३४ जम्बूकुमार सज्झाय '। पत्र स० १। आ० ६३×४३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१३६। अ भण्डार।

४२३५ जयपुर के मंदिरों की वदना—स्वरूपचद। पत्र स० १०। आ० ६×४३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल स० १६१०। ले० काल स० १६८७। पूर्ण। वे० स० २७८। झ भण्डार।

४२३६. जिणभक्ति—हर्षकीर्त्ति। पत्र स० १। आ० १२×५३ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८४३। अ भण्डार।

४२३७. जिनपच्चीसी व अन्य संग्रह' '। पत्र सं० ४। आ० ८३×६ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०४। छ भण्डार।

४२३८ ज्ञानपञ्चमीस्तवन—समयसुन्दर। पत्र स० १। आ० १०×४३ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल स० १७८५ श्रावण सुदी २। पूर्ण। वे० स० १८८५। अ भण्डार।

४२३६. झखड़ी श्रीमन्दिरजीकी '। पत्र स० ४। आ० ७३×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३१। ङ भण्डार।

४२४० झाझरियानुचोढाल्या' ' । पत्र स० २। आ० १०×४ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-गीत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२५६। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ- सीता ता मनि संकर ढाल—

रमती चरणे सीस नमावी, प्रणमी सतगुरु पाया रे ।

भाभरिया ऋषि ना गुण गाता, उलटे आज सवाया रे ॥

भवियण वदो मुनि भाभरिया, ससार समुद्र जे तरियो रे ।

सबल साह्या परिसा मन सुधे, सील रयण करि भारियो रे ॥२॥

पइठतपुर मकरधुज राजा, मदनसेन तस राणी रे ।

तस सुत मदन भरम वालुडो, किरत जास कहाणी रे ॥

नौजी ढाल अपूर्ण है । भाभरिया मुनि का वर्णन है ।

४२४१ णमोकारपच्चीसी—ऋषि ठाकुरसी । पत्र स० १ । आ० १०X४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल सं० १८२८ आषाढ सुदी ५ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१७८ । अ भण्डार ।

४२४२. तमाखू की जयमाल—आणंदमुनि । पत्र सं० १ । आ० १०३/४X४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २१७० । अ भण्डार ।

४२४३ दर्शनपाठ—बुधजन । पत्र सं० ७ । आ० १०X४१/२ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २८८ । ङ भण्डार ।

४२४४. दर्शनपाटस्तुति ... । पत्र सं० ८ । आ० ८X६१/२ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६२७ । ट भण्डार ।

४२४५. देवकी की ढाल—लूणकरण कासलीवाल । पत्र सं० ४ । आ० १०१/२X४१/२ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल X । ले० काल स० १८८५ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२४६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ दोहा—

रढ नेमा नामे हुवा लखण सरव सजोग ।

आठ सहस लखण धरो गोमकार गछ जोग ॥१॥

सहत अठारा साध जी अजाया चालीस हजार ।

मोटार मुनिवर विचरज्या रा लार ॥२॥

.. ..।

वसुदेव राजा डाकरा देवाकीण अंगजात ॥३॥

नन्दन छ देव का तणा सा राखा कै उणहार ।

वाणी सुण श्री नेम का लाघज संजसार ॥४॥

माधणां सुध आदरो देस मछतनी नाम ।
वेलिरथावण स्वामी जी करावो जीव जीव ॥५॥

मध्यभाग— देव छी तणाइ नदण वादवारे उभी श्री नेम जिणेसवार ।
नन्यणा साधा न देख नर कारवालागा इम अरदीतार ॥

साध्या साम्हो देवकी देखी नर उभा रहा छ नजर नीहाल रे ।
कसतो ' टाछ काव वाताणीर छुटी छे हुद तणीए धार रे ॥२॥

तनमन वाग सोहावडो उलस्यो र फल मे फुली छे जेहना कायरे ।
बलाया माहा तो माव रही रे देख तो लोचन तीरपत न थायरे ॥३॥

दीवकी तो साधान छ दिणा करी र पाछा आइ छ माहीलो माहारे ।
सोच फिकर देवकीरे ज्योर मोहतणी ए बातरे ॥४॥

सासो तो भाज्यो श्री नेमजीरे एतो छहु थारा वालरे ।
आख्या माहो आसु पडेरे जाणै मो त्यारे टुटा मालरे ॥५॥

अन्तिम— मरजी ताव छोडो सगला नगर मझारो,
मुहमागा दीजे वणारे मणि माणक भडार ।
मणि माणक वहु दीधा देवकी मनरा इछा काइ न राखी ॥
लूणकरण ए ढाल ज भाषा तीज चोथ इसही ए साखी ए ॥६॥

इति श्री देवकी की ढाल स० ॥०॥ रूपमजी ॥

दसकत चूनीलाल छावडा चैतराम ठाकरका वेटा छोटाका छै वाच पढै ज्यासू जथा जोग वाचज्यो । मिती वैशाख वुदी १४ सं० १८८५ ।

देवकी की ढाल— रतनचन्दकृत और है । प्रति गल गई है । कई अश नष्ट होगये हैं । पढने मे नही आता है ।

अन्तिम— गुण गाया जी मारवाड मझार कर जोडि रतनचंद भणें ॥१०॥

४२४६. **द्वीपायनढाल—गुणसागरसूरि** । पत्र स० १ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा–हिन्दी गुजराती । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१६४ । क भण्डार ।

४२४७. **नेमिनाथ के नवमङ्गल—विनोदीलाल** । पत्र स० १ । आ० १६३×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तुति । र० काल स० १७७४ । ले० काल स० १८५२ मगसिर सुदी २ । वे० सं० ५४ । झ भण्डार ।

विशेष—चौमू मे प्रतिलिपि हुई थी । जन्मपत्री की तरह गोल सिमटा हुआ है ।

४२४८ प्रति स० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल X । वे० सं० २१४३ । ट भण्डार ।

विशेष—लिख्या मंगल फौजी दौलतरामजी की मुकाम पुन्या के मध्ये तोपखाना ।

१० पत्र से आगे नेमिराजुलपच्चीसी विनोदीलाल कृत भी है ।

४२४९. नागश्री सज्झाय—विनयचंद । पत्र सं० १ । आ० १०X४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २२४८ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल ३रा पत्र है ।

अन्तिम—

आपण वाधो आप भोगवे कोण गुरु कुण चेला ।
सजम लेइ गई स्वर्ग पाचमे अजुही नादी न वेरारे ॥१५॥ भा०॥

महा विदेह मुकते जासी मोटी गर्भ वसेरा रे ।
विनयचद जिनधर्म अराधो सब दुख जान परेरारे ॥१६॥
इति नागश्री सज्झाय कुचामणे लिखिते ।

४२५०. निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ८ । आ० ८X४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । र० काल स० १७४१ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३७ । झ भण्डार ।

४२५१. नेमिगीत—पासचन्द । पत्र सं० १ । आ० १२½X४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १८४७ । अ भण्डार ।

४२५२. नेमिराजमतीकी घोड़ी…… । पत्र सं० १ । आ० ९X४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २१७७ । अ भण्डार ।

४२५३. नेमिराजमती गीत—छीतरमल । पत्र सं० १ । आ० ९½X४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१३५ । अ भण्डार ।

४२५४ नेमिराजमतीगीत—हीरानन्द । पत्र सं० १ । आ० ८½X४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१७४ । अ भण्डार ।

सुरतर ना पीर दोहिलोरे, पाम्यो नर भवसार ।
आलइ जन्म महारिड भोरे, काइ करचारे मन माहि विचार ॥१॥
मति राचो रे रमणी ने रंग क सेवोरे जीण वाणी ।
तुम रमड्यो रे सजम न संगक चेतो रे चित प्राणी ॥२॥
अरिहंत देव अराधाइचोजी, रे गुर गरुया श्री साध ।
धर्म केवलानो भाखीउ, ए समकित वे रतन जिम लाद्धक ॥३॥

पहिलो समकित सेवीय रे, जे छे धर्मनो मूल ।
सजम सकित बाहिरो, जिण भाख्यो रे तुस खडण तुलिक ॥४॥

तहत करीन सरदहो रे, जै भाखो जलनाथ ।
पाचेइ आस्रव परिहरो, जिम मिलीइ रे सिवपुरनो साथक ॥५॥

जीव सहूजी जीवेवा वाछिरे, मरण न वाछे कोइ ।
अपस राखा लेखवा, तस थावर रे हण जो मत कोइ ॥६॥

चोरी लीजे पर तणी रे, तिण तो लागै पाप ।
धन कचण किम चोरीय, जिण बाधइ रे भव भवना सताप क ॥७॥

अजस अकीरत ए भव रे, पेरे भव दुख अनेक ।
कुड कहता पामीइ, काइ आणी रे मन माहि विवेक ॥८॥

महिला सग धुंइ हर, नव लख सम जुत ।
कुण सुख कारण ए तला, किम काजे रे हिस्या मतिवत ॥९॥

पुत्र कलत्र घर हाट भरि, ममता काजे फोक ।
जु परिगह डाग माहि छै ते छाडरै गया बहुला लोक ॥१०॥

मात पिता बधव सुतरे, पुत्र कलत्र परवार ।
सवार्थया सहू को सगा, कोइ पर भव रे नही राखणहार ॥११॥

अंजुल जल नीपरै रे, खिण रे तुटइ आउ ।
जाइ ते बेला नही रे वाहुडि जरा घालरे योवन ने धाड ॥१२॥

व्याधि जरा जब लग नही रे, तव लग धर्म समाल ।
धारा हर घण वरसते, कोइ समरथि रे बाधैगोपाल क ॥१३॥

अलप वीवस को पाहुणा रे, सहू कोइण ससार ।
एक दिन उठी जाइवउ, कवण जाणइ रे किण हो अवतारक ॥१५॥

क्रोध मान माया तजो रे, लोभ मेधरख्यो लीगारे ।
समतारस भवपुरीय वली दौहिलो रे नर अवतारक ॥१६॥

आरंभ छाडा अन्तमा रे पीउ संजम रसपुरि ।
सिद्ध बधू से सहु को वरो, इम बोलै सखज देवसुरक ॥१७॥

॥ इति वीर ॥

चाल वृमचारही जिण वाइससमी ॥

समदविजइजी रा नद हो, वैरागी माहरो मन लागो हो नेम जिणंद

जादव कुल केरा चद हो ॥ वाल० ॥१॥

देव घणा छइ हो पुभ जीदोवता (देवता)

तेतो न चढइ चेत हो, कैइक रे चेत म्हामत हो ॥ वाल० ॥२॥

कैइक दोम करइ नर नारनइ मामइ तेलसिंदूर हर हो ।

चाके इक वंन वासैं बासैं वास, कक वनवासो करइ ।

(कष्ट) कसट सहइ भरपुर हो ॥३॥

तु नर मोह्यो रे नर माया तणौ, तु जग दीनदयाल हो ।

नोजोवनवती ए सुंदरी तजीउ राजुल नार हो ॥४॥

राजल के नारिपणे उद्दरी पहुतीउ मुकति मझार ।

हीरानद संवेग साहिवा, जी वी नव म्हारी बीनतडा अवधारि हो ॥५॥

॥ इति नेमि गीत ॥

४२५५ नेमिराजुलसज्भाय·······। पत्र सं० १ । आ० ९X४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल स० १८५१ चैत्र " । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१८४ । अ भण्डार ।

४२५६ पञ्चपरमेष्ठीस्तवन—जिनवल्लभ सूरि । पत्र स० २ । आ० ११X५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल X । ले० काल सं० १८३६ । पूर्ण । वे० स० ३८८ । अ भण्डार ।

४२५७. पद—ऋषि शिवलाल । पत्र स० १ । आ० १०X४३ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पूरा पद निम्न है—

या जग म का तेरा अंबे ॥या०॥

जैसे पछी वीरछ वसेरा, वीछरे होय सवेरा ॥१॥

कोडी २ कर धन जोड्या, ले धरती मे गाडा ।

अंत समै चलण की वेला, ज्यों गाडा राहो छाडारे ॥२॥

ऊंचा २ महल वणाये, जीव कहे रहा रेणा ।

चल गया हस पडी रही कामा, लेय कलेवर दणा ॥३॥

मात पिता सु पतनी रे भारी, नीरण धन जोवन जाया ।

उड गया हंस काया का मडण, काढो प्रेत पराया ॥४॥

करी कमाइ इण भौ आया, उलटी पूजी खोइ ।
मेरी २ करकै जनम गमाया, चलता सक न होइ ॥५॥

पाप की पोट घणी सिर लीनी, हे मूरख भोरा ।
हलकी पोट करी तु चाहे, तो होय कुटुम्बसु न्यारा ॥६॥

मात पिता सुत साजन मेरा, मेरा धन परिवारो ।
मेरा २ पडा पुकारे चलता, नही कछु लारो ॥७॥

जो तेरा तेरे सग न चलता, भेद न जाका पाया ।
मोह वस पदारथ वीराणी, हीरा जनम गमाया ॥८॥

आख्या देखत केते चल गए जगमें, आखरु आपुही चलणा ।
औसर वीता बहु पछतावे, मास्रो जु हाथ मसलणा ॥६॥

आज करु धरम काल करु, याही व नीयत धारे ।
काल अचाणे घाटी पकडी, जव क्या कारज सारे ॥१०॥

ए औसवाइ पाइ दुहेली, फेर न वारू वारो ।
होमत होय तो ढील न कीजे, कूद पडो निरधारो ॥११॥

सीह मुखे जीम मीरगलो आयो, फेर नइ छूटण हारो ।
इण दीसदते मरण मुखे जीव, पाप करी निरधारो ॥१२॥

सुगर सुदेव धरम कु सेवो, लेवो जीन का सरना ।
दीप सोवलाल कहे भो प्राणी, आतम कारज करणा ॥१३॥

॥इति॥

४२५८. पदसग्रह "। पत्र सं० ५६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-भजन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२७ । क भण्डार ।

४२५९. पदसग्रह"" ""। पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १२७३ । अ भण्डार ।

विशेष—त्रिभुवन साहब सावला"" " ।

इसी भण्डार मे २ पदसंग्रह (वे० सं० १११७, २१३०) और हैं ।

४२६०. पदसग्रह "' । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० सं० ४०५ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ११ पदसग्रह (वे० सं० ४०४, ४०६ से ४१५) तक और हैं ।

४२६१. पद   त्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ६२५ । च भण्डार ।

४२६२ पदसंग्रह ······। पत्र सं० १२ । ले० काल X । वे० सं० ३३ । भ्र भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २७ पदसंग्रह (वे० सं० ३४, ३५, १४८, २३७, ३०६, ३१०, २९९, ३००, ३०१ से ६ तक, ३११ से ३२४) और हैं ।

नोट—वे० स० ३१८वें मे जयपुर की राजवंशावलि भी है ।

४२६३ पदसंग्रह ' " । पत्र स० १४ । ले० काल X । वे० स० १७५६ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ पदसग्रह (वे० स० १७५२, १७५३, १७५८) और है ।

नोट—द्यानतराय, हीराचन्द, भूधरदास, दौलतराम आदि कवियो के पद हैं ।

४२६४. पदसंग्रह ''' ' । पत्र स० ३ । आ० १०X४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—केवल ४ पद हैं—

१ मोहि तारौ सामि भव सिंधु तैं ।

२. राजुल कहै तुमे वेग सिधावे ।

३. सिद्धचक्र वदो रे जयकारी ।

४ चरम जिरोसर जिहो साहिबा
चरम धरम उपगार वाल्हेसर ॥

४२६५. पदसंग्रह ······ । पत्र स० १२ से २५ । आ० १२X७ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २००८ । ट भण्डार ।

विशेष—भागचन्द, नयनसुख, द्यानत, जगतराम, जादूराम, जोधा, बुधजन, साहिबराम, जगराम, लाल बखतराम, भूाभूराम, खेमराज, नवल, भूधर, चैनविजय, जीवरणदास, विश्वभूषण, मनोहर आदि कवियो के पद हैं ।

४२६६. पदसग्रह—उत्तमचन्द । पत्र स० १८ । आ० ६X६३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १५२८ । ट भण्डार ।

विशेष—उत्तम के छोटे २ पदोका सगह है । पदो के प्रारम्भ मे रागरागनियो के नाम भी दिये हैं ।

४२६७. पदसंग्रह—ब्र० कपूरचन्द । पत्र सं० १ । आ० ११३X५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २०४३ । अ भण्डार ।

४२६८. पद—केशरगुलाब । पत्र सं० १ । आ० ७X४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २२४१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

श्रीधर नन्दन नयनानन्दन साचादेव हमारो जी।

दिलजानी जिनवर प्यारा वो

दिल दे बीच बसत है निसदिन, कबहू न होवत न्यारा वो ॥

४२६९ पदसंग्रह—चैनसुख। पत्र स० २। आ० २४×३½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। र० काल ×। लें० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७५७। ट भण्डार।

४२७० पदसग्रह—जयचन्द छाबड़ा। पत्र स० ५२। आ० ११×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। र० काल स० १८७४ आषाढ सुदी १०। लें० काल सं० १८७४ आषाढ सुदी १०। पूर्ण। वे० स० ४३७। क भण्डार।

विशेष—अन्तिम २ पत्रो मे विषय सूची दे रखी है। लगभग २०० पदो का सग्रह है।

४२७१ प्रति सं० २। पत्र स० ६०। लें० काल स० १८७८। वे० स० ४३८। क भण्डार।

४२७२. प्रति स० ३। पत्र सं० १ से ४०। लें० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६६०। ट भण्डार।

४२७३ पदसग्रह—देवाब्रह्म। पत्र स० ४४। आ० ६×६½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पद भजन। र० काल ×। लें० काल स० १८६३। पूर्ण। वे० सं० १७५१। ट भण्डार।

विशेष—प्रति गुटकाकार है। विभिन्न राग रागनियो मे पद दिये हुये हैं। प्रथम पत्र पर लिखा है- श्री देवसागरजी स० १८६३ का बैशाख सुदी १२। मुकाम बसवै नैणचद।

४२७४. पदसंग्रह—दौलतराम। पत्र सं० २०। आ० ११×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। र० काल ×। लें० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४२६। क भण्डार।

४२७५ पदसंग्रह—बुधजन। पत्र स० २६ से ६२। आ० ११½×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पद भजन। र० काल ×। लें० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ७६७। अ भण्डार।

४२७६. पदसग्रह—भागचन्द। पत्र सं० २५। आ० ११×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पद व भजन। र० काल ×। लें० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४३१। क भण्डार।

४२७७ प्रति सं० २। पत्र सं० ६। लें० काल ×। वे० स० ४३२। क भण्डार।

विशेष—थोडे पदो का सग्रह है।

४२७८ पद—मलूकचद। पत्र सं० १। आ० ६×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। र० काल ×। लें० काल ×। पूर्ण। वे० स० २२४२। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ—

पच सखी मिल मोहियो जीवा,

काहा पावैगो तु धाम हो जीवा।

समझो स्यु त राज ॥

४२७९. पदसंग्रह—मंगलचद। पत्र स० १०। आ० १०३/४×४३/४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पद व भजन। र० काल ×। लें० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४३४। क भण्डार।

४२८०. पदसग्रह—माणिकचद। पत्र स० ५४। आ० ११×७ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पद व भजन। र० काल ×। लें० काल स० १६५५ मगसिर बुदी १३। पूर्ण। वे० स० ४३०। क भण्डार।

४२८१ प्रति स० २। पत्र स० ६०। लें० काल ×। वे० सं० ४३८। क भण्डार।

४२८२. प्रति स० ३। पत्र स० ६। लें० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७५४। ट भण्डार।

४२८३ पदसग्रह—सेवक। पत्र सं० १। आ० ८३/४×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। र० काल ×। लें० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१५०। ट भण्डार।

विशेष—केवल २ पद हैं।

४२८४ पदसग्रह—हीराचन्द। पत्र सं० १०। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पद व भजन। र० काल ×। लें० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४३३। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ४३५, ४३६) और है।

४२८५ प्रति सं० २। पत्र स० ६१। लें० काल ×। वे० स० ४१६। क भण्डार।

४२८६ पद व स्तोत्रसंग्रह ....। पत्र स० ८८। आ० १२३/४×५ इ च। भाषा–हिन्दी। विषय–संग्रह। र० काल ×। लें० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४३६। क भण्डार।

विशेष—निम्न रचनाओं का सग्रह है।

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	हिन्दी	८
सुगुरुशतक	जिनदास	"	१०
जिनयशमङ्गल	सेवगराम	"	४
जिनगुणपचीसी	"	"	–
गुरुओ की स्तुति	भूधरदास	"	–

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
एकीभावस्तोत्र	भूदरदास	हिन्दी	१४
वज्रनाभि चक्रवर्त्ति की भावना	"	"	–
पदसग्रह	माणिकचन्द	"	८
तेरहपथपच्चीसी	"	"	११
हुडावसर्पिणीकालदोष	"	"	"
चौवीस दडक	दौलतराम	"	१२
दशवोलपच्चीसी	द्यानतराय	"	१७

४२८७. पार्श्वजिनगीत—छाजू (समयसुन्दर के शिष्य)। पत्र सं० १ । आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५८ । अ भण्डार ।

४२८८. पार्श्वनाथ की निशानी—जिनहर्ष । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२४७ । अ भण्डार ।

विशेष—२रे पत्र से–

प्रारम्भ— सुख संपति दायक सुरनर नायक परतिख पास जिणदा है ।
जाकी छवि काति अनोपम ओपम दिपति जाण दिणंदा है ॥

अन्तिम— तिहा सिधादावास तिहा रे वासा दे सेवक विलवदा है ।
घघर निसाणी पास वखाणी गुण जिनहर्ष गावदा है ॥

प्रारम्भ के पत्र पर क्रोध, मान, माया, लोभ की सज्झाय दी है ।

४२८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८२२ । वे० स० २१३३ । अ भण्डार ।

४२९०. पार्श्वनाथचौपई—पं० लाखो । पत्र स० १७ । आ० १२½×५½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल स० १७३४ कार्तिक सुदी । ले० काल स० १७९३ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्ण । वे० स० १९१८ । ट भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति–

संवत् सतरासै चौतीस, कार्तिक शुक्ल पक्ष शुभ दीस ।
नौरंग तप दिल्ली सुलितान, सवै नृपति वहै षिरि आण ॥२६६॥

नागर चाल देश शुभ ठाम, नगर वणहटो उत्तम धाम ।
सब श्रावक पूजा जिनधर्म, करै भक्ति पावै बहु शर्म ॥२६७॥

कर्मक्षय कारण शुभहेत, पार्श्वनाथ चौपई सचेत।
पडित लाखो लाख सभाव, मेवो धर्म लखो सुभथान ॥२६८॥

आचार्य श्री महेन्द्रकीर्ति पार्श्वनाथ चौपई सपूर्ण ।

भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य पाडे दयाराम सोनीने भट्टारक महेन्द्रकीर्त्ति के शासन मे दिल्ली के जयसिंहपुरा के देऊर मे प्रतिलिपि की थी।

४२६१ पार्श्वनाथ जीरोछन्दसत्तरी ""। पत्र सं० २। आ० ६X४ इ च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-स्तवन। र० काल X। ले० काल स० १७८१ वैशाख बुदी ६। पूर्ण। जीर्ण। वे० स० १८६५। अ भण्डार।

४२६२ पार्श्वनाथस्तवन"""। पत्र सं० १। आ० १०X४३ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १४८। छ भण्डार।

विशेष—इसी वेष्टन मे एक पार्श्वनाथ स्तवन और है।

४२६३ पार्श्वनाथस्तोत्र""। पत्र सं० २। आ० ८३X७ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ७६६। अ भण्डार।

४२६४. वन्दनाजखड़ी—विहारीदास। पत्र सं० ४। आ० ८X७ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल X। पूर्ण। वे० स० ६१३। च भण्डार।

४२६५. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल X। वे० सं० ६२। ञ भण्डार।

४२६६ वन्दनाजखड़ी—बुधजन। पत्र सं० ४। आ० १०X४ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २६७। ज भण्डार।

४२६७. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल X। वे० सं० ५२४। ङ भण्डार।

४२६८. बारहखड़ी एवं पद"""। पत्र सं० २२। आ० ५३X४ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्फुट। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ४५। झ भण्डार।

४२६६ बाहुबली सज्झाय—विमलकीर्त्ति। पत्र सं० १। आ० ६३X४ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल X। ले० काल X। वे० स० १२४५।

विशेष—श्यामसुन्दर कृत पाटनपुर सज्झाय और है।

४३००. भक्तिपाठ—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १७६। आ० १२X५ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तुति। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ५४५। क भण्डार।

विशेष—निम्न भक्तिया हैं।

स्वाध्यायपाठ, सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, चारित्रभक्ति, आचार्यभक्ति, योगभक्ति, वीरभक्ति, निर्वाणभक्ति और नंदीश्वरभक्ति।

४३०१ प्रति सं० २। पत्र स० १०८। ले० काल ×। वे० स० ५४७। क भण्डार।

४३०२. भक्तिपाठ ......। पत्र स० ६०। आ० ११¾×७½ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५४६। क भण्डार।

४३०३ भजनसंग्रह—नयन कवि। पत्र स० ४१। आ० ६×४½ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। जीर्ण। वे० स० २४०। छ भण्डार।

४३०४ मरुदेवी की सज्झाय—ऋषि लालचन्द। पत्र स० १। आ० ८¾×४ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल स० १८०० कार्तिक बुदी ४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१८७। अ भण्डार।

४३०५. महावीरजी का चौढाल्या—ऋषि लालचन्द। पत्र स० ४। आ० ६½×४½ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१८७। अ भण्डार।

४३०६ मुनिसुव्रतविनती—देवाब्रह्म। पत्र स० १। आ० १०¾×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८६७। अ भण्डार।

४३०७ राजारानी सज्झाय ......। पत्र स० १। आ० ६¼×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१६६। अ भण्डार।

४३०८ राडपुरास्तवन ।पत्र स० १। आ० ६×५½ इ च। भाषा हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८६३। अ भण्डार।

विशेष—राडपुरा ग्राम मे रचित आदिनाथ की स्तुति है।

४३०९. विजयकुमार सज्झाय—ऋषि लालचन्द। पत्र स० ६। आ० १०×४½ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल स० १८६१। ले० काल स० १८७२। पूर्ण। वे० स० २१६१। अ भण्डार।

विशेष—कोटा के रामपुरा मे ग्रन्थ रचना हुई। पत्र ४ से आगे स्थूलभद्र सज्झाय हिन्दी मे और है। जिसका र० काल स० १८६४ कार्तिक सुदी १५ है।

४३१०. प्रति स० २। पत्र स० ४। ले० काल ×। वे० स० २१८६। अ भण्डार।

४३११ विनतीसग्रह......। पत्र स० २। आ० १२×५½ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल स० १८५१। पूर्ण। वे० स० २०१३। अ भण्डार।

विशेष—महात्मा शम्भुराम ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

४३१२. विनतीसंग्रह—ब्रह्मदेव। पत्र सं० ३८। आ० ७३×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ११३१। अ भण्डार।

विशेष—सासू बहू का झगडा भी है।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६६३, १०४३) और हैं।

४३१३ प्रति स० २। पत्र स० २२। ले० काल ×। वे० स० १७३। ख भण्डार।

४३१४. प्रति सं० ३। पत्र स० १६। ले० काल ×। वे० सं० ६७८। ङ भण्डार।

४३१५. प्रति सं० ४। पत्र स० १३। ले० काल सं० १८४८। वे० सं० १६३२। ट भण्डार।

४३१६. वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति · । पत्र सं० ६। आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६६७। क भण्डार।

४३१७. शीतलनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द। पत्र स० १। आ० ६×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१३४। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम—

पूज्य श्री श्री दौलतराय जी बहुगुण अगवाणी।
रिषलाल जी करि जोडि वीनवै कर सिर चरणाणी॥
सहर माधोपुर सवत् पचावन कातीग सुदी जाणी।
श्री सीतल जिन गुण गाया अति उलास आणी॥ सीतल०॥१२॥
॥ इति सीतलनाथ स्तवन सपूर्ण॥

४३१८. श्रेयासस्तवन—विजयमानसूरि। पत्र स० १। आ० ११३×५३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८४१। अ भण्डार।

४३१९. सतियोंकी सज्झाय—ऋषि खजमलजी। पत्र सं० २। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा-हिन्दी गुजराती। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। जीर्ण। वे० स० २२४५। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम भाग निम्न है—

इत्तीदक सतियारा गुण कह्या थे सुण सांभलो।
उत्तम पराणी खजमल जी कहइ ········॥३४॥

चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन भी दिया है।

४३२०. सज्झाय (चौदह बोल)—ऋषि रायचन्द। पत्र स० १। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८१। अ भण्डार।

४३२१. सर्वार्थसिद्धिसज्झाय ।पत्र सं० १ । आ० १०×४३/४ इञ्च। भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४७ । छ भण्डार।

विशेष—पर्यूषण स्तुति भी है।

४३२२ सरस्वतीअष्टक''' । पत्र स० ३ । आ० ६×७३/४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । क भण्डार ।

४३२३ साधुवदना—माणिकचन्द । पत्र स० १ । आ० १०३/४×४१/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०५४ । ट भण्डार ।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नाय की साधुवदना है । कुल २७ पद्य हैं।

४३२४ साधुवदना—पुण्यसागर । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-पुरानी हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८३८ । अ भण्डार ।

४३२५. सारचौबीसीभाषा—पारसदास निगोत्या । पत्र सं० ४७० । आ० १२३/४×७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । र० काल सं० १९१८ कार्त्तिक सुदी २ । ले० काल स० १९३६ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ७८५ । क भण्डार ।

४३२६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५०५ । ले० काल स० १९४८ वैशाख सुदी २ । वे० स० ७८६ । क भण्डार ।

४३२७. प्रति स० ३ । पत्र स० ५७१ । ले० काल × । वे० स० ८११ । ङ भण्डार ।

४३२८ सीताढाल ' ' । पत्र स० १ । आ० ६३/४×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१६७ । अ भण्डार ।

विशेष—फतेहमल कृत चेतन ढाल भी है।

४३२९ सोलहसतीसज्झाय । पत्र स० १ । आ० १०×४३/४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२१८ । अ भण्डार ।

४३३० स्थूलभद्रसज्झाय'" । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१८२ । अ भण्डार ।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य

४३३१. अकुरोपणविधि—इन्द्रनंदि। पत्र सं० १५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठादि का विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७०। अ भण्डार।

विशेष—पत्र १४-१५ पर यत्र है।

४३३२ अंकुरोपणविधि—प० आशाधर। पत्र सं० ३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठादि का विधान। र० काल १३वी शताब्दि। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २२१७। अ भण्डार।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ मे से लिया गया है।

४३३३. प्रति सं० २। पत्र स० ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। २रा पत्र नही है। संस्कृत मे कठिन शब्दो का अर्थ दिया हुआ है।

४३३४. प्रति सं० ३। पत्र स० ४। ले० काल ×। वे० स० ३१६। ज भण्डार।

४३३५. अंकुरोपणविधि ..."। पत्र स० २ से २७। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठादि का विधान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १। ख भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र नही है।

४३३६. अकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल ......। पत्र स० २६। आ० १२×७¾ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल। पूर्ण। वे० सं० १। च भण्डार।

४३३७. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—जिनदास। पत्र स० २६। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १७६४। पूर्ण। वे० सं० १८५६। ट भण्डार।

४३३८. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—लालजीत। पत्र स० २१४। आ० १४×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स० १८७०। ले० काल सं० १८७२। पूर्ण। वे० स० ५०१। च भण्डार।

विशेष—गोपाचलदुर्ग (ग्वालियर) मे प्रतिलिपि हुई थी।

४३३९. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—चैनसुख। पत्र स० ४८। आ० १३×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १९३० फाल्गुन सुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०५। अ भण्डार।

४३४०. प्रति सं० २। पत्र सं० ७४। ले० काल ×। वे० सं० ४१। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६) और है।

४३४१. प्रति सं० ३ । पत्र स० ७७ । ले० काल स० १६३३ । वे० स० ५०३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५०२) और है ।

४३४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६ । ले० काल X । वे० सं० २०८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० २०८ मे ही) और है ।

४३४३ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८ । ले० काल X । वे० स० १६६ । झ भण्डार ।

विशेष—आषाढ सुदी ५ स० १६६७ को यह ग्रन्थ रघुनाथ चादवाड ने चढाया ।

४३४४ अकृत्रिमचैत्यालयपूजा—मनरङ्गलाल । पत्र स० ३० । आ० ११X८ इच । भाषा–हिन्दी विषय–पूजा । र० काल स० १६३० माघ सुदी १३ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७०४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय–

नाम 'मनरंग' धर्मरुचि सौं मो प्रति राखै प्रीति ।
चोईसौं महाराज को पाठ रच्यौं जिन रीति ।।
प्रेरकता अतिलास की रच्यो पाठ सुमनीत ।
ग्राम नग्र एकोहमा नाम भगवती सत ।।

रचना सवत् संवधीपद्य—

विंशति इक शत शतक पै त्रिंशतसमत जानि ।
माघ शुक्ल त्रयोदशी पूर्ण पाठ महान ।।

४३४५. अक्षयनिधिपूजा……। पत्र सं० ३ । आ० १२X५३ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-पूजा र० काल X । ले० काल X पूर्ण । वे० सं० ४० । क भण्डार ।

४३४६ अक्षयनिधिपूजा… । पत्र स० १ । आ० ११X५ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३८३ । व भण्डार ।

विशेष जयमाल हिन्दी मे हैं ।

४३४७ अक्षयनिधिपूजा—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ५ । आ० ११३X५ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल स० १७८३ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ४ । ङ भण्डार ।

विशेष—श्री देव श्वेताम्बर जैन ने प्रतिलिपि की थी ।

४३४८ अक्षयनिधिविधान…… । पत्र स० ४ । आ० १२X५ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६४३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १६७२) और है ।

४३४६. अढाई (सार्द्ध द्वय) द्वीपपूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्र स० ६१। ग्रा० ११×५३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ५५०। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०४४) और है।

४३५०. प्रति सं० २। पत्र सं० १५१। ले० काल स० १८२४ ज्येष्ठ बुदी १२। वे० सं० ७८७। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७८८) और है।

४३५१ प्रति सं० ३। पत्र स० ८५। ले० काल सं० १८६२ माघ बुदी ३। वे० स० ८४०। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० सं० ५, ४१) और हैं।

४३५२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६०। ले० काल स० १८८४ भादवा सुदी १। वे० सं० १३१। छ भण्डार।

४३५३ प्रति सं० ५। पत्र स० १२४। ले० काल स० १८६०। वे० स० ४२। ज भण्डार।

४३५४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ८३। ले० काल ×। वे० स० १२६। झ भण्डार।

विशेष—विजयराम पाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

४३५५. अढाईद्वीपपूजा—विश्वभूषण। पत्र स० ११३। ग्रा० १०३×७३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०२ वैशाख सुदी १। पूर्ण। वे० स० २। च भण्डार।

४३५६ अढाईद्वीपपूजा ...। पत्र स० १२३। ग्रा० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८६२ पौष सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ५०५। अ भण्डार।

विशेष—अंबावती निवासी पिरागदास बाकलीवाल महुआ वाले ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५३४) और है।

४३५७. प्रति सं० २। पत्र सं० १२१। ले० काल स० १८८०। वे० स० २१४। ख भण्डार।

विशेष—महात्मा जोशी जीवण ने जोबनेर मे प्रतिलिपि की थी।

४३५८ प्रति स० ३। पत्र स० ६७। ले० काल स० १८७० कार्त्तिक सुदी ४। वे० सं० १२३। घ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति [वे० स० १२२] और है।

४३५६ अढाईद्वीपपूजा—डालूराम। पत्र स० १६३। ग्रा० १२३×५ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल सं० चैत सुदी ६। ले० काल सं० १६३६ वैशाख सुदी ४। पूर्ण। वे० स० ८। क भण्डार।

विशेष—अमरचन्द दीवान के कहने से डालूराम अग्रवाल ने माधोराजपुरा मे पूजा रचना की।

४३६०. प्रति सं० २ । पत्र स० ६८ । ले० काल स० १६५७ । वे० सं० ५०६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया [वे० सं० ५०४, ५०५] और है ।

४३६१. प्रति सं० ३ । पत्र स० १४४ । ले० काल x । वे० स० २०१ । छ भण्डार ।

४३६२. अनन्तचतुर्दशीपूजा—शांतिदास । पत्र स० ११ । आ० ८३/४x७ इ च । भाषा संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४ । ख भण्डार ।

विशेष—व्रतोद्यापन विधि सहित है । यह पुस्तक गणेशजी गगवाल ने वेगस्यो के मन्दिर मे चढाई थी ।

४३६३. प्रति सं० २ । पत्र स० १४ । ले० काल X । वे० स० ३८६ । व्य भण्डार ।

विशेष—पूजा विधि एवं जयमाल हिन्दी गद्य मे है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति स० १८२० की [वे० स० ३६०] और है ।

४३६४. अनन्तचतुर्दशीव्रतपूजा · । पत्र स० १३ । आ० १२X५१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ५८८ । अ भण्डार ।

विशेष—आदिनाथ से अनन्तनाथ तक पूजा है ।

४३६५. अनन्तचतुर्दशीपूजा—श्री भूषण । पत्र स० १८ । आ० १०३/४X७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३४ । ज भण्डार ।

४३६६. प्रति स०२ । पत्र स० ८६ । ले० काल स० १८२७ । वे० स० ४२१ । व्य भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

४३६७. अनन्तचतुर्दशीपूजा ··· । पत्र स० २० । आ० १०१/२X५ इञ्च । भाषा–सस्कृत, हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ५ । ख भण्डार ।

४३६८. अनन्तजिनपूजा—सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० १ । आ० १०१/२X५३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल X । वे० स० २०४२ । ट भण्डार ।

४३६९. अनन्तनाथपूजा—श्री भूषण । पत्र सं० २ । आ० ७X४३/४ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २१५५ । अ भण्डार ।

४३७०. अनन्तनाथपूजा · ·· । पत्र स० १ । आ० ८३/४X४१/२ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ८२१ । अ भण्डार ।

४३७१. अनन्तनाथपूजा—सेवग । पत्र स० ३ । आ० ८३/४X६१/२ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३०३ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नीचे से फटा हुआ है।

४३७२. अनन्तनाथपूजा ''''। पत्र स० ३। आ० ११×५ इ च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६४। झ भण्डार।

४३७३. अनन्तव्रतपूजा ''''। पत्र स० २। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५६४। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० स० ५२०, ६६५) और हैं।

४३७४ प्रति सं० २। पत्र स० ११। ले० काल ×। वे० स० ११७। छ भण्डार।

४३७५ प्रति सं० ३। पत्र स० २६। ले० काल ×। वे० सं० २३०। ज भण्डार।

४३७६ अनन्तव्रतपूजा । पत्र स० २। आ० १०×५ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १३५२। अ भण्डार।

विशेष—जैनेतर पूजा ग्रन्थ है।

४३७७. अनन्तव्रतपूजा—भ० विजयकीर्त्ति। पत्र सं० २। आ० १२×५३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २४१। छ भण्डार।

४३७८. अनन्तव्रतपूजा—साह सेवाराम। पत्र स० ३। आ० ८×४ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५६६। अ भण्डार।

४३७६. अनन्तव्रतपूजाविधि ''''। पत्र स० १८। आ० १०३×४३ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८५८ भादवा सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १। ग भण्डार।

४३८०. अनन्तपूजाव्रतमहात्म्य ''''। पत्र स० ६। आ० १०×४३ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८४१। पूर्ण। वे० स० १३६३। अ भण्डार।

४३८१ अनन्तव्रतोद्यापनपूजा—आ० गुणचन्द्र। पत्र स० १८। आ० १२×५३ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल स० १६३०। ले० काल स० १८४५ आसोज सुदी ४। पूर्ण। वे० स० ४६७। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

इत्याचार्यश्रीगुणचन्द्रविरचिता श्रीअनन्तनाथव्रतपूजा परिपूर्णा समाप्ता ॥

सवत् १८४५ का- अश्विनीमासे शुक्लपक्षे तिथौ च चौथि लिखितं पिरागदास मोहा का जाति वाकलीवाल प्रतापसिंहराज्ये सुरेन्द्रकीर्त्ति भट्टारक विराजमाने सति पं० कल्याणदासतत्सेवक आज्ञाकारी पडित खुस्यालचन्द्रेण इदं अनन्तव्रतोद्यापनलिखापित ॥१॥

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५३६) और है।

४३८२. प्रति सं० २ । पत्र स० १६ । ले० काल सं० १६२८ आसोज बुदी १५ । वे० स० ७ । ख भण्डार।

४३८३ प्रति स० ३ । पत्र स० ३० । ले० काल X । वे० स० १२ । ङ भण्डार।

४३८४ प्रति स० ४ । पत्र सं० २५ । ले० काल X । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

४३८५. प्रति सं० ५ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १८६४ । वे० स० २०७ । ञ भण्डार।

४३८६. प्रति स० ६ । पत्र स० २१ । ले० काल X । वे० स० ४३२ । ञ भण्डार।

विशेष—२ चित्र मण्डल के हैं। श्री शाकमडगपुर वृहद्वश के हर्ष नामक दुर्गा वणिक ने ग्रन्थ रचना कराई थी।

४३८७ अभिषेकपाठ ' ''' । पत्र स० ४ । आ० १२X५३ इ च । भाषा-सस्कृत। विषय-भगवान के अभिषेक के समय का पाठ । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । अ भण्डार।

४३८८. प्रति सं० २ । पत्र स० २ से ५७ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३५२ । ङ भण्डार।

विशेष—विधि विधान सहित है।

४३८६ प्रति सं० ३ । पत्र स० २ । ले० काल X । वे० सं० ७३२ । च भण्डार।

४३६०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल X । वे० स० १६२२ । ट भण्डार।

४३६१ अभिषेकविधि—लक्ष्मीसेन । पत्र स० १५ । आ० ११X५३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-भगवान के अभिषेक के समय का पाठ एव विधि । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३५ । ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ३१) और हैं जिसे झाजूराम साह ने जीवनराम सेठी के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र सोमसेन कृत भी है।

४३६२. अभिषेकविधि '' । पत्र स० ८ । आ० ११X४३ इञ्च। भाषा-सस्कृत । विषय-भगवान के अभिषेक की विधि एव पाठ । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७८ । अ भण्डार।

४३६३. प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल X । वे० स० ११६ । ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २७०) और है।

४३६४. प्रति स० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २११४ । ट भण्डार।

४३६५. अभिषेकविधि । पत्र स० १ । आ० ८३X६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-भगवान के अभिषेक की विधि । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १३३२ । अ भण्डार।

४३६६ अरिष्टाध्याय ""। पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-सल्लेखना विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । अ भण्डार ।

विशेष—२०३ कुल गाथायें हैं- ग्रन्थका नाम रिट्ठाइ है। जिसका संस्कृत रूपान्तर अरिष्टाध्याय है। आदि अन्त की गाथायें निम्न प्रकार हैं—

पणमंत सुरासुरमउलिरयणवरकिरणकतविछुरिय ।
वीरजिणपायजुयल णमिऊण भणेमि रिट्ठाइ ॥१॥

ससारम्मि भमतो जीवो वहुभेय भिण्ण जोणिसु ।
पुरकेण कहवि पावइ सुहमणु अत्त ण सदेहो ॥२॥

अन्त— पुणु विज्जवेज्जहणूणं वारउ एव वीस सामिय्यं ।
सुगीव सुमतेण रइय भणिय मुणि ठीरे वरि देहि ॥२०१॥

सूई भूमीले फलए समरे हाहि विराम परिहाणो ।
कहिजइ भूमीए समवरे हातयं वच्छा ॥२०२॥

अट्ठाट्ठारह छिणे जे लद्धीह लच्छरेहाउं ।
पढमोहिरे अंक गविजए याहि णं तच्छ ॥२०३॥

इति अरिष्टाध्यायशास्त्र समाप्तम । ब्रह्मवस्ता लेखित्त ॥श्री॥ छ ॥

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २४१) और है।

४३६७ अष्टाह्निकाजयमाल ""। पत्र सं० ४ । आ० ६३/४×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अष्टा-पर्व की पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०३१ ।

विशेष—जयमाला प्राकृत मे है।

४३६८ अष्टाह्निकाजयमाल "। पत्र स० ४ । आ० १३×४३/४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-अष्टाह्निका पर्व की पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३१) और हैं।

४३६६. अष्टाह्निकापूजा ""। पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अष्टाह्निका पर्व की पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६६०) और है।

४४००. अष्टाह्निकापूजा ""। पत्र स० ३१ । आ० १०१/२×४३/४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-अष्टाह्निका पर्व की पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १५३३ । पूर्ण । वे० स० ३३ । क भण्डार ।

विशेष—संवत् १५३३ में इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई जाकर भट्टारक श्री रत्नकीर्ति को भेंट की गई थी। जयमाला प्राकृत में है।

४४०१. अष्टाह्निकापूजा कथा—सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० ६। म्रा० १०३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-अष्टाह्निका पर्व की पूजा तथा कथा। र० काल सं० १८५१। ले० काल सं० १८५८ आषाढ सुदी १०। वे० सं० ५६६। अ भण्डार।

विशेष—पं० सुखालचन्द ने जोधराज पाटोदी के बनाये हुए मन्दिर में अपने हाथ से प्रतिलिपि की थी।

भट्टारकाज्जगत्कीर्तेः श्रीमूलसंघे बलात्कारगणः।

गच्छेऽहि तत्पट्टसुराद्रिराज देवेन्द्रकीर्ति समभूत्सुधर्म ॥१३७॥

तत्पट्टपूर्वाद्रि जिनानुरक्तः श्रीमद्गुरुश्चन्द्रसमप्रभः।

महेन्द्रकीर्ति प्रवरस्तत्पट्टे क्षेमेन्द्रकीर्ति गुरुरत्नमेकूल ॥१३८॥

पट्टाम्बुजे क्षेमेन्द्रकीर्ति मुनि षट्कुर्मरक्षाद प्ररितपारो।

श्रीमद्भट्टारकेन्द्रो जिनमदद्पनान्नन्दवधे प्रवृत्तः।

तस्य श्रीकारविद्यापमजलनिधिसू श्रीसुरेन्द्रकीर्ति।

रेसा पुण्यावतार प्रलपुनीतिपिदा बोधदायार्थकर्त्रे. ॥१३६॥

मिति आषाढमासे शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ संवत् १८७८ रा सवाई जयपुर के श्रीऋषभदेवचैत्यालये निवास पं० कल्याणदासस्य शिष्य सुख्यालचन्द्रेण स्वहस्तेन लिपीकृत जोधराज पाटोदी कृत चैत्यालये ॥ शुभं भूयात् ॥

इसके अतिरिक्त यह भी लिखा है—

मिति माहसुदी ३ सं० १८८८ मुनिराज दोय माण। बडा वृषभसेनजी लघु बाहुबलि मालपुरासु प्रथमने आया। सागानेर सुं भट्टारकजी की नसिया मे दिन घड़ा च्यार चढ्या जयपुर मे दिन सभा पहर पाछे मंदिरा दर्शन सगही का पाटोदी उगहर (वगैरह) मंदिर १० कीया पाछे गोटमवाडो नदलालजी की कीर्तिस्तंभ की नसिया सगही विरधीचंदजी आपकी हवेली मे रात्रि १ रह्या भोजनकरि साहीवाड रात्रिवास कीयो समेदगिरि जात्रापधारया पराकृत बोले श्री ऋषभदेवजी सहाय।

इसी भण्डार मे एक प्रति सं० १८८८ की (वे० सं० ५४२) और है।

४४०२. अष्टाह्निकापूजा—द्यानतराय। पत्र सं० ३। म्रा० ८×६३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०३। अ भण्डार।

विशेष—पत्रों का कुछ भाग जल गया है।

४४०३. प्रति स० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १९३१। वे० सं० ३२। क भण्डार।

४४०४. अष्टाह्निकापूजा...... ...। पत्र स० ४४। आ० ११×५३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-अष्टाह्निका पर्व की पूजा। र० काल स० १८७९ कार्त्तिक बुदी ९। ले० काल स० १९३०। पूर्ण। वे० स० १०। क भण्डार।

४४०५. अष्टाह्निकाव्रतोद्यापनपूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्र स० ३। आ० ११×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-अष्टाह्निका व्रत विधान एव पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४२३। व्य भण्डार।

४४०६. अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन...... ...। पत्र सं० २२। आ० ११×५३ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-अष्टाह्निका व्रत एवं पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८६। क भण्डार।

४४०७ आचार्य शान्तिसागरपूजा—भगवानदास। पत्र सं० ४। आ० ११३×६३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स० १९८४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२२। छ भण्डार।

४४०८ आठकोडिमुनिपूजा—विश्वभूषण। पत्र सं० ४। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। पय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११९। छ भण्डार।

४४०९. आदित्यव्रतपूजा—केशवसेन। पत्र सं० ८। आ० १२×५३ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-रविव्रतपूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५००। अ भण्डार।

४४१०. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १७८३ श्रावण सुदी ९। वे० स० ६२। छ भण्डार।

४४११. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १९०५ आसोज सुदी २। वे० स० १८०। झ भण्डार।

४४१२. आदित्यव्रतपूजा.......। पत्र सं० ३५ से ४७। आ० १३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-रविव्रत पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १७९१। अपूर्ण। वे० सं० २०६८। ट भण्डार।

४४१३. आदित्यवारपूजा.......। पत्र सं० १४। आ० १०×४३ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-रवि व्रतपूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५२०। च भण्डार।

४४१४ आदित्यवारव्रतपूजा.......। पत्र सं० ९। आ० ११×५ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-रवि व्रतपूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ११७। छ भण्डार।

४४१५. आदिनाथपूजा—रामचन्द्र। पत्र सं० ४। आ० १०३×५ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५४८। अ भण्डार।

४४१६. प्रति सं० २। पत्र स० ४। ले० काल ×। वे० सं० ५१६। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५१७) और है।

४४१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । वे० सं० २३२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ मे तीन चौबीसी के नाम तथा लघु दर्शन पाठ भी है।

४४१८ आदिनाथपूजा ''''''। पत्र सं० ४ । आ० १२३×५३ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१४५ । अ भण्डार ।

४४१९. आदिनाथपूजाष्टक '' । पत्र सं० १ । आ० १०३×७३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल X । ले० काल X । वे० सं० १२२३ । अ भण्डार ।

विशेष—नेमिनाथ पूजाष्टक भी है।

४४२० आदीश्वरपूजाष्टक''''''। पत्र स० २ । आ० १०३×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-आदिनाथ तीर्थङ्कर की पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १२२१ । अ भण्डार ।

विशेष—महावीर पूजाष्टक भी है जो संस्कृत मे है।

४४२१. आराधनाविधान'' '' । पत्र स० १७ । आ० १०×४३ इच । भाषा–संस्कृत । विषय-विषय–विधान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४१५ । ञ भण्डार ।

विशेष—त्रिकाल चौबीसी, षोडशकारण आदि विधान दिये हुये हैं।

४४२२. इन्द्रध्वजपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र सं० ९८ । आ० १२×५३ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल स० १८५९ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ४९१ । अ भण्डार ।

विशेष—'विशालकीर्त्यात्मज भ० विश्वभूषण विरचिताया' ऐसा लिखा है।

४४२३. प्रति स० २ । पत्र सं० ९२ । ले० काल स० १८५० द्वि० वैशाख सुदी ३ । वे० सं० ४८७ । अ भण्डार ।

विशेष—कुछ पत्र चिपके हुये हैं। ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर मे महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल मे हुई थी।

४४२४ प्रति सं० ३ । पत्र स० ९९ । ले० काल X । वे० स० ८८ । ङ भण्डार ।

४४२५. प्रति सं० ४ । पत्र स० १०६ । ले० काल X । वे० सं० १३० । छ भण्डार ।

विशेष—ञ भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० ३५, ४३०) और हैं।

४४२६. इन्द्रध्वजमण्डलपूजा'''''' । पत्र स० ९७ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-मेलो एव उत्सवो आदि के विधान मे की जाने वाली पूजा । र० काल X । ले० काल स० १९३६ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १९ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालाल जोबनेर वाले ने स्योजीलालजी के मन्दिर मे प्रतिलिपि की । मण्डल की सूची भी दी हुई है।

४४२७. उपवासग्रहणविधि……। पत्र सं० १ । आ० १०×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-उपवास विधि । र० काल × । ले० काल × । वे० स० १२२५ । पूर्ण । अ भण्डार ।

४४२८. ऋषिमंडलपूजा—आचार्य गुणनन्दि । पत्र स० ११ से ३० । आ० १०¾×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विभिन्न प्रकार के मुनियो की पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६१५ वैशाख बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र १ से १० तक अन्य पूजायें हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत् १६१५ वर्षे वैशाख बदि ५ गुरुवासरे श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे गुणनंदि-मुनीन्द्रेण रचिताभक्तिभावतः । शतमाधिकाशीतिश्लोकाना ग्रन्थ सख्यख्या ।।ग्रन्थाग्रन्थ ३८०।।

इसी भण्डार भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५७२) और है ।

४४२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—अष्टाह्निका जयमाल एवं निर्वाणकाण्ड और हैं । ग्रन्थ के दोनो ओर सुन्दर बेल बूंटे हैं । श्री आदिनाथ व महावीर स्वामी के चित्र उनके वर्णानुसार है ।

४४३०. प्रति सं० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० सं० १३७ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ के दोनो ओर स्वर्ण के बेल बूटे हैं । प्रति दर्शनीय है ।

४४३१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल स० १७७५ । वे० स० १३७ (क) घ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों मे है प्रति सुन्दर एवं दर्शनीय है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १३८) और है ।

४४३२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५ । ले० काल स० १८६२ । वे० स० ९५ । ङ भण्डार ।

४४३३ प्रति सं० ६ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० सं० ७६ । झ भण्डार ।

४४३४ प्रति सं० ७ । पत्र स० १९ । ले० काल × । वे० सं० २१० । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४३३) और है जो कि मूलसंघ के आचार्य नेमिचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

४४३५. ऋषिमडलपूजा—मुनि ज्ञानभूषण । पत्र सं० १७ । आ० १०¾×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९२ । ख भण्डार ।

४४३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । छ भण्डार ।

४४३७. प्रति स० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० स० २५९ ।

विशेष—प्रथम पत्र पर सकलीकरण विधान दिया हुआ है।

४४३८ ऋषिमंडलपूजा ·····। पत्र स० १८ । आ० ११३/४×५३/४ इंच । भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल × । ले० काल १७९८ चैत्र बुदी १२। पूर्ण । वे० स० ४८ । च भण्डार।

विशेष—महात्मा मानजी ने आमेर मे प्रतिलिपि की थी।

४४३९ ऋषिमडलपूजा·····। पत्र स० ८ । आ० ६३/४×५३/४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा। र० काल × । ले० काल स० १८०० कार्तिक बुदी १० । पूर्ण । वे० स० ४९ । च भण्डार।

विशेष—प्रति मत्र एवं जाप्य सहित है।

४४४०. ऋषिमडलपूजा—दौलत आसेरी । पत्र स० ९ । आ० ६३/४×६३/४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९३७ । पूर्ण । वे० स० २९० । झ भण्डार।

४४४१ कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा ·····। पत्र स० ७ । आ० ११×५३/४ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा एव विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५ । च भण्डार।

विशेष—काजीबारस का व्रत भादवापुरी १२ को किया जाता है।

४४४२ कंजिकाव्रतोद्यापन····· । पत्र सं० ६ । आ० ११३/४×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४ । च भण्डार।

विशेष—जयमाल अपभ्रंश मे है।

४४४३ कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा····· । पत्र सं० १२ । आ० १०३/४×५ इंच । भाषा–सस्कृत हिन्दी। विषय–पूजा एव विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७ । झ भण्डार।

विशेष—पूजा संस्कृत मे है तथा विधि हिन्दी मे है।

४४४४. कर्मचूरव्रतोद्यापन····· । पत्र सं० ८ । आ० ११×५३/४ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा। र० काल × । ले० काल स० १९०४ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० स० ५९ । च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६०) और है।

४४४५. प्रति स० २ । पत्र स० ६ । आ० १२×५३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०४ । क भण्डार।

४४४६ कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा—लक्ष्मीसेन । पत्र स० १० । आ० १०×४३/४ इंच । भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११७ । छ भण्डार।

४४४७ प्रति स० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ४१३ । व्य भण्डार।

४४४८. कर्मदहनपूजा—भ० शुभचद्र। पत्र स० ३०। ग्रा० १०३/४×४३/४ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-कर्मों के नष्ट करने के लिए पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १७९४ कात्तिक बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १९। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ३०) और है।

४४४९. प्रति सं० २। पत्र स० ८। ले० काल स० १६७२ आसोज। वे० स० २१३। ञ भण्डार।

४४५०. प्रति स० ३। पत्र सं० २४। ले० काल स० १६३५ मगसिर बुदी १०। वे० स० २२५। ञ भण्डार।

विशेष—ग्रा० नेमिचन्द के पठनार्थ लिखा गया था।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २६७) और है।

४४५१ कर्मदहनपूजा...... । पत्र स० ११। ग्रा० ११३/४×५ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-कर्मों के नष्ट करने की पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८३६ मगसिर बुदी १३। पूर्ण। वे० स० ५२५। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति (वे० स० ५१३) और है जिसका ले० काल सं० १८२४ भादवा सुदी १३ है।

४४५२ प्रति सं० २। पत्र स० १५। ले० काल सं० १८८८ माघ शुक्ला ८। वे० सं० १०। घ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है।

४४५३. प्रति स० ३। पत्र सं० १८। ले० काल स० १७०८ श्रावरण सुदी २। वे० स० १०१। ङ भण्डार।

विशेष—माइदास ने प्रतिलिपि करवायी थी।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० १००, १०१) और हैं।

४४५४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४३। ले० काल ×। वे० सं० ६३। च भण्डार।

४४५५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० स० १२५। छ भण्डार।

विशेष—निर्वाणकाण्ड भाषा भी दिया हुआ है। इसी भण्डार मे और इसी वेष्टन मे १ प्रति और है।

४४५६. कर्मदहनपूजा—टेकचन्द। पत्र सं० २२। ग्रा० ११×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कर्मों को नष्ट करने के लिये पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स ७०६। अ भण्डार।

४४५७. प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल ×। वे० सं० ११। घ भण्डार।

४४५८. प्रति स० ३। पत्र सं० १९। ले० काल सं० १८९८ फागुण बुदी ३। वे० सं० ५३२। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ५३१, ५३३) और है।

४४५६. प्रति स० ४ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८६१ । वे० स० १०३ । ङ भण्डार ।

४४६० प्रति स० ५ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १६५८ । वे० स० २२१ । छ भण्डार ।

विशेष—अजमेर वालो के चौबारे जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २३६) और है ।

४४६१ कलशविधान—मोहन । पत्र स० ६ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-कल एवं अभिषेक आदि की विधि । र० काल स० १६१७ । ले० काल स० १६२२ । पूर्ण । वे० स० २७ । भण्डार ।

विशेष—भैरवसिंह के शासनकाल मे शिवकर (सीकर) नगर मे मटव नामक जिन मन्दिर के स्थापि करने के लिए यह विधान रचा गया ।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

लिखित प० पन्नालाल अजमेर नगर मे भट्टारकजी महाराज श्री १०८ श्री रत्नभूषणजी के पाट भट्टार जी महाराज श्री १०८ श्री ललितकीर्त्तिजी महाराज पाट विराज्या बैशाख सुदी ३ नै त्याकी दिक्षा मे आया जोबनेर प० हीरालालजी पन्नालाल जयचद उतरचा दोलतरामजी लोढा ओसवाल की होली मे पडितराज नोगात्रा का उतर एक जायगा ११ ताई रह्या ।

४४६२ कलशविधान""" । पत्र स० ६ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कल एव अभिषेक आदि की विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६ । अ भण्डार ।

४४६३ कलशविधि—विश्वभूषण । पत्र स० १० । आ० ६३×४३ इच । भाषा–हिन्दी । विषय विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४४८ । अ भण्डार ।

४४६४ कलशारोपणविधि—आशाधर । पत्र स० ५ । आ० १२×८ इच । भाषा–संस्कृत । विषय मन्दर के शिखर पर कलश चढाने का विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०७ । ड भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ का अग है ।

४४६५. कलशारोपणविधि """ । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–मन्दिर के शिखर पर कलश चढाने का विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १२२) और है ।

४४६६. कलशाभिषेक—आशाधर। पत्र सं० ६। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अभिषेक विधि। र० काल ×। ले० काल सं० १८३८ भादवा बुदी १०। पूर्ण। वे० स० १०६। ङ भण्डार।

विशेष—पं० शम्भूराम ने विमलनाथ स्वामी के चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

४४६७. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा—भ० प्रभाचन्द्र। पत्र स० ३४। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स १६२६ चैत्र सुदी १३। पूर्ण। वे० स० ५८१। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६२६ वर्षे चैत्र सुदी १३ बुधे श्रीमूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तच्छिष्य श्रीमडलाचार्यधर्मचन्द्रदेवा तच्छिष्य मडलाचार्यश्रीललितकीर्त्तिदेवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये मडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्र तत्-शिष्यणि वाई लाली इद शास्त्रं लिखापि मुनि हेमचन्द्रायदत्त।

४४६८. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा……। पत्र स० ७। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१९। अ भण्डार।

४४६९. कलिकुण्डपूजा……। पत्र सं० ३। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ११८३। अ भण्डार।

४४७०. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० स० १०८। ङ भण्डार।

४४७१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४७। ले० काल ×। वे० स० २५६। ज भण्डार। और भी पूजायें हैं।

४४७२. प्रति सं० ४। पत्र स० ४। ले० काल ×। वे० स० २२४। झ भण्डार।

४४७३. कुण्डलगिरिपूजा—भ० विश्वभूषण। पत्र स० ९। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कुण्डलगिरि क्षेत्र की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५०३। अ भण्डार।

विशेष—रुचिकरगिरि, मानुषोत्तरगिरि तथा पुष्करार्द्ध की पूजाये और है।

४४७४ क्षेत्रपालपूजा—श्री विश्वसेन। पत्र सं० २ से २८। आ० १०½×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८७४ भादवा बुदी ९। अपूर्ण। वे० स० १३३। (क) ङ भण्डार।

४४७५ प्रति स० २। पत्र स० २०। ले० काल स० १९३० ज्येष्ठ सुदी ४। वे० स० १२४। छ भण्डार।

विशेष—गणेशलाल पांड्या चौधरी चाटसू वाले के लिए पं० मनसुखजी ने गोधो के मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी।

४४७६. प्रति स० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६१६ वैशाख सुदी १३ । वे० स० ११८ । ज भण्डार ।

४४७७. क्षेत्रपालपूजा .... । पत्र स० ६ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-जैन मान्यतानुसार भैरव की पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८६० फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ७६ । अ भण्डार ।

विशेष—कवरजी श्री चपालालजी टोग्या खंडेलवाल ने प० स्यामलाल ब्राह्मण से प्रतिलिपि करवाई थी ।

४४७८ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १८६१ चैत्र सुदी ६ । वे० स० ८८६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ८२२, १२२८) और है ।

४४७६. प्रति स० ३ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० १२८ । ङ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतिया और है ।

४४८० कजिकाव्रतोद्यापनपूजा—मुनि ललितकीर्त्ति । पत्र सं० ५ । आ० १२×५½ इच । भाषा-स स्कृत विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५११ । अ भण्डार ।

४४८१. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ११० । क भण्डार ।

४४८२ प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६२८ । वे० स० ३०२ । ख भण्डार ।

४४८३ कजिकाव्रतोद्यापन ...... । पत्र स० १७ से २१ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६८ । ङ भण्डार ।

४४८४ गजपथामडलपूजा—भ० क्षेमेन्द्रकीर्त्ति (नागौर पट्ट) । पत्र स० ८ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६८० । पूर्ण । वे० स० ३६ । ख भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति—

मूलसंघे बलात्कारे गच्छे सारस्वते भवत् ।
कुन्दकुन्दान्वये जात श्रुतसागरपारग ॥१६॥

नागौरिपट्टेपि मनतकीर्त्ति तत्पट्टधारी शुभ हर्षकीर्त्ति ।
तत्पट्टविद्यादिसुभूषणाख्य तत्पट्टहेमादिसुकीर्त्तिमाख्य ॥२०॥

हेमकीर्त्तिमुने पट्टे क्षेमेन्द्रादियशा प्रभु ।
तस्याज्ञया विरचित गजपंथसुपूजन ॥२१॥

विदुषा शिवजिद्रक्त नामधेयेन मोहन ।
प्रेम्णा यात्राप्रसिद्धयर्थं चैकाह्निरचित चिर ॥२२॥

जीयादिद पूजन च विश्वभूषणवध्रुवं ।

तस्यानुसारतो ज्ञेय न च बुद्धिकृत त्विद ॥२३॥

इति नागौरपट्टविराजमान श्रीभट्टारकक्षेमेन्द्रकीर्त्तिविरचित गजपथमडलपूजनविधानं समाप्तम् ॥

४४८५ गणधरचरणारविन्दपूजा ...। पत्र स० ३। आ० १०३/४×४१/२ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२१। क भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन एव संस्कृत टीका सहित है।

४४८६. गणधरजयमाला । पत्र स० १। आ० ८×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१००। अ भण्डार।

४४८७ गणधरवलयपूजा... । पत्र स० ७। आ० १०३/४×४३/४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४२। क भण्डार।

४४८८. प्रति सं० २। पत्र सं० २ से ७। ले० काल ×। वे० स० १३४। ङ भण्डार।

४४८६. प्रति सं० ३। पत्र स० १३। ले० काल ×। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ११६, १२२) और हैं।

४४६०. गणधरवलयपूजा... । पत्र स० २२। आ० ११×४ इच। भाषा-विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४२१। व्य भण्डार।

४४६१. गिरिनारक्षेत्रपूजा—भ० विश्वभूषण। पत्र सं० ११। आ० ११×५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं० १७५६। ले० काल सं० १६०४ माघ बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ६१२। अ भण्डार।

४४६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ११६। छ भण्डार।

विशेष—एक प्रति और है।

४४६३. गिरनारक्षेत्रपूजा...। पत्र सं० ४। आ० ८×६१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १९६०। पूर्ण। वे० सं० १४०। ङ भण्डार।

४४६४ चतुर्दशीव्रतपूजा...। पत्र स० १३। आ० ११३/४×५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५३। ङ भण्डार।

४४६५. चतुर्विंशतिजयमाल—यति माघनदि। पत्र स० २। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६८। ख भण्डार।

४४९६. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा ' " । पत्र स० ५१ । आ० ११X५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १३८ । ज भण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नही है ।

४४९७ प्रति स० २ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १९०२ वैशाख बुदी १० । वे० स० १३९ । ज भण्डार ।

४४९८ चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा " । पत्र सं० ४६ । आ० ११X५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १ । झ भण्डार ।

विशेष—दलजी बज मुशरफ ने चढाई थी ।

४४९९ प्रति स० २ । पत्र स० ४१ । ले० काल स० १९०६ । वे० सं० ३३१ । ञ भण्डार ।

४५००. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा ' " । पत्र स० ४४ । आ० १०३X५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ५९७ । अ भण्डार ।

विशेष—कही २ जयमाला हिन्दी मे भी है ।

४५०१ प्रति स० २ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १९०१ । वे० स० १५६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० १५५) और है ।

४५०२. प्रति स० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल X । वे० स० ८६ । च भण्डार ।

४५०३. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सेवाराम साह । पत्र स० ४३ । आ० १२X७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १८२४ मगसिर बुदी ६ । ले० काल स० १८५४ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० ७१५ । अ भण्डार ।

विशेष—झाभूराम ने प्रतिलिपि की थी । कवि ने अपने पिता बखतराम के बनाये हुए मिथ्यात्वखडन और बुद्धिविलास का उल्लेख किया है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७१४) और है ।

४५०४. प्रति स० २ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १९०२ आषाढ सुदी ८ । वे० स० ७१४ । अ भण्डार ।

४५०५ प्रति स० ३ । पत्र स० ५२ । ले० काल स० १९४० फागुण बुदी १३ । वे० स० ४६ । ख भण्डार ।

४५०६ प्रति स० ४ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १८८३ । वे० स० २३ । ग भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २१, २२) और हैं ।

४५०७. चतुर्विंशतिपूजा……। पत्र सं० २०। आ० १२×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १२०। छ भण्डार।

४५०८. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—वृन्दावन। पत्र सं० ६६। आ० ११×५¾ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८१६ कार्त्तिक बुदी ३। ले० काल सं० १६१५ आषाढ बुदी ५। पूर्ण। वे० स० ७१६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ७२०, ६२७) और हैं।

४५०९. प्रति सं० २। पत्र स० ४६। ले० काल ×। वे० सं० १४५। क भण्डार।

४५१०. प्रति सं० ३। पत्र स० ६५। ले० काल ×। वे० सं० ४७। ख भण्डार।

४५११. प्रति सं० ४। पत्र स० ४६। ले० काल सं० १६५६ कार्त्तिक सुदी १०। वे० स० २६। ग भण्डार।

४५१२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५। घ भण्डार।

विशेष—बीच के कुछ पत्र नही हैं।

४५१३. प्रति सं० ६। पत्र स० ७०। ले० काल स० १६२७ सावन सुदी ३। वे० स० १६०। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० १६१, १६२, १६३, १६४) और है।

४५१४. प्रति स० ७। पत्र स० १०५। ले० काल ×। वे० स० ५४४। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ५४२, ५४३, ५४५) और हैं।

४५१५. प्रति स० ८। पत्र स० ४७। ले० काल ×। वे० स० २०२। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० २०४ मे ३ प्रतिया, २०५) और हैं।

४५१६. प्रति स० ६। पत्र स० ६७। ले० काल स० १६४२ चैत्र सुदी १५। वे० स० २६१। ज भण्डार।

४५१७. प्रति स० १०। पत्र स० ८१। ले० काल ×। वे० स० १८६। झ भण्डार।

विशेष—सर्वसुखजी गोधा ने स० १६०० भादवा सुदी ५ को चढाया था।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १४५) और है।

४५१८. प्रति सं० ११। पत्र स० ११५। ले० काल सं० १६४६ सावण सुदी २। वे० स० ४४५। ञ भण्डार।

४५१९. प्रति सं० १२। पत्र स० १४७। ले० काल सं० १६३७। वे० स० १७०६। ट भण्डार।

विशेष—छोटेलाल भावसा ने स्वपठनार्थ श्रीलाल से प्रतिलिपि कराई थी।

४५२०. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—रामचन्द्र। पत्र स० ६०। आ० ११×५½ इच। भाषा हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल स० १८५४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५४६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २१५८, २०८५) और हैं।

४५२१ प्रति सं० २। पत्र स० ५०। ले० काल स० १८७१ आसोज सुदी ६। वे० स० २४। ग भण्डार।

विशेष—सदासुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २५) और है।

४५२२. प्रति स० ३। पत्र स० ५१। ले० काल सं० १६६६। वे० स० १७। घ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० १६, २४) और हैं।

४५२३. प्रति स० ४। पत्र स० ५७। ले० काल ×। वे० स० १५७। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० १५८, १५६, ७८७) और हैं।

४५२४. प्रति स० ५। पत्र स० ५६। ले० काल स० १६२६। वे० स० ५४६। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ५४६, ५४७, ५४८) और है।

४५२५. प्रति स० ६। पत्र स० ५४। ले० काल सं० १८६१। वे० स० २१६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० २१७, २१८, २२०/३) और हैं।

४५२६ प्रति सं० ७। पत्र स० ६६। ले० काल ×। वे० स० २०७। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २०८) और हैं।

४५२७ प्रति स० ८। पत्र सं० १०१। ले० काल स० १८६१ श्रावण बुदी ४। वे० स० १८। झ भण्डार।

विशेष—जैतराम रावका ने प्रतिलिपि कराई एव नाथूराम रावका ने विजैराम पाड्या के मन्दिर मे चढाई थी। इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ५८, १८१) और हैं।

४५२८. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७३। ले० काल स० १८५२ आषाढ सुदी १५। वे० स० ६४। ञ भण्डार।

विशेष—महात्मा जयदेव ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३१५, ३२१) और है।

४५२६. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—नेमीचन्द पाटनी। पत्र सं० ६०। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स० १८८० भादवा सुदी १०। ले० काल स० १६१८ आसोज बुदी १२। वे० स० १४४। क भण्डार।

विशेष—अन्त मे कवि का सक्षिप्त परिचय दिया हुआ है तथा बतलाया गया है कि कवि दीवान अमरचद जी के मन्दिर मे कुछ समय तक ठहरकर नागपुर चले गये तथा वहा से अमरावती गये।

४५३०. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—मनरंगलाल। पत्र सं० ५१। आ० ११×८ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७२१। अ भण्डार।

४५३१. प्रति स० २। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। वे० स० १४३। क भण्डार।

विशेष—पूजा के अन्त मे कवि का परिचय भी है।

४५३२. प्रति स० ३। पत्र स० ६०। ले० काल ×। वे० सं० २०३। छ भण्डार।

४५३३. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—बख्तावरलाल। पत्र स० ५४। आ० ११३/४×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल स० १८५४ मगसिर बुदी ६। ले० काल सं० १६०१ कार्त्तिक सुदी १०। पूर्ण। वे० स० ५५०। च भण्डार।

विशेष—तनसुखराय ने प्रतिलिपि की थी।

४५३४. प्रति सं० २। पत्र स० ५ से ६६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०५। छ भण्डार।

४५३५. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सुगनचन्द। पत्र सं० ६७। आ० ११३/४×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६२६ चैत्र बुदी १। पूर्ण। वे० स० ५५५। च भण्डार।

४५३६. प्रति स० २। पत्र सं० ८४। ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी ५। वे० स० ५५६। च भण्डार।

४५३७. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा ....। पत्र स० ७७। आ० ११×५१/२ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६१६ चैत्र सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ६२६। अ भण्डार।

४५३८ प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५४। ङ भण्डार।

४५३९. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्र स० १०। आ० ६×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६८। म्ह भण्डार।

४५४०. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—चोखचन्द। पत्र स० ८। आ० १०×४१/२ इच। भाषा–संस्कृत। विषय- चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४१६। ञ भण्डार।

विशेष—'चतुर्थ पूजा की जयमाल' यह नाम दिया हुआ है। जयमाल हिन्दी मे है।

४५४१. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ६। आ० ८१/२×४१/२ इच। भाषा–संस्कृत। विषय–चन्द्रप्रभ की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७१। क भण्डार।

४५४२. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा……। पत्र स० २१ । आ० १२×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ की पूजा । र० का काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८०५ । ट भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें और हैं- पञ्चमी व्रतोद्यापन, नवग्रहपूजाविधान ।

४५४३ चन्दनषष्ठीव्रतपूजा……। पत्र स० ३ । आ० १२×५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१६२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २१९३) और है ।

४५४४. प्रति स० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०९३ । ट भण्डार ।

४५४५. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा……। पत्र स० ६ । आ० ११३×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६५७ । अ भण्डार ।

विशेष—३रा पत्र नही है ।

४५४६. चन्द्रप्रभजिनपूजा—रामचन्द्र । पत्र स० ७ । आ० १०३×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८७९ आसोज बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ४२७ । व भण्डार ।

विशेष—सवासुख वाकलीवाल महुआ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४५४७ चन्द्रप्रभजिनपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १७९२ । पूर्ण । वे० स० ५७६ । अ भण्डार ।

४५४८ प्रति सं० २ । पत्र स० ५ । ले० काल सं० १८९३ । वे० स० ४३० । व भण्डार ।

विशेष—आमेरमे स० १८७२ मे रामचन्द्र की लिखी हुई प्रति से प्रतिलिपि की गई थी ।

४५४९ चमत्कारअतिशयक्षेत्रपूजा…… । पत्र स० ५ । आ० ७×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९२७ वैशाख बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ६०२ । अ भण्डार ।

४५५०. चारित्रशुद्धिविधान—श्री भूषण । पत्र स० १७० । आ० १२३×६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एव पूजायें । र० काल × । ले० काल स० १८८८ पौष सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० ४४५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम बारहसौ चौतीसाव्रत पूजा विधान भी है ।

४५५१. प्रति स० २ । पत्र स० ८९ । ले० काल × । वे० स० १५२ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है ।

४५५२. चारित्रशुद्धिविधान—सुमतिब्रह्म। पत्र सं० ८४। आ० ११३×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एव पूजायें। र० काल ×। ले० काल स० १९३७ वैशाख सुदी १५। पूर्ण। वे० स० १२३। ख भण्डार।

४५५३ चारित्रशुद्धिविधान—शुभचन्द्र। पत्र सं० ६६। आ० ११३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एव पूजायें। र० काल ×। ले० काल स० १७१४ फाल्गुण सुदी ४। पूर्ण। वे० स० २०४। ज भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

संवत् १७१४ वर्षे फागुणमासे शुक्लपक्षे चउथ तिथौ शुक्रवासरे। षडसोलास्थाने मुंडलदेशे श्रीधर्म्मनाथ चैत्यालये श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्रा तत्पट्टे भ० हर्षचन्द्राः तदाम्नाये ब्रह्म श्री ठाकरसी तत्शिष्य ब्रह्म श्री गणदास तत्शिष्य ब्रह्म श्री महीदासेन स्वज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थ उद्यापन बारमे चौत्रीसु स्वहस्तेन लिखितं।

४५५४ चिंतामणिपूजा (बृहत्)—विद्याभूषण सूरि। पत्र सं० ११। आ० ६३×४३ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ५५१। अ भण्डार।

विशेष—पत्र ३, ८, १० नही है।

४५५५. चिंतामणिपार्श्वनाथपूजा (बृहद्)—शुभचन्द्र। पत्र सं० १०। आ० ११३×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५७४। अ भण्डार।

४५५६. प्रति सं० २। पत्र स० ८२। ले० काल स० १६६१ पौष बुदी ११। वे० सं० ४१७। ञ भण्डार।

४५५७. चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा ···। पत्र स० ३। आ० १०३×५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० स० ११८४। अ भण्डार।

४५५८. प्रति स० २। पत्र स० ८। ले० काल ×। वे० स० २८। ग भण्डार।

विशेष—निम्न पूजायें और हैं। चिन्तामणिस्तोत्र, कलि.कुण्डस्तोत्र, कलिकुण्डपूजा एवं पद्मावतीपूजा।

४५५९. प्रति स० ३। पत्र स० १५। ले० काल ×। वे० स० ६६। च भण्डार।

४५६०. चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा ···। पत्र सं० ११। आ० ११×४३ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५८३। च भण्डार।

४५६१. चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा""""। पत्र सं० ५। आ० ११३/४×४३/४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२१४। अ भण्डार।

विशेष—यन्त्रविधि एवं स्तोत्र भी दिया है।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १८४०) और है।

४५६२ चौदहपूजा' ""। पत्र सं० १६। आ० १०×७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६६। ज भण्डार।

विशेष—ऋषभनाथ से लेकर अनन्तनाथ तक पूजायें हैं।

४५६३. चौसठऋद्धिपूजा—स्वरूपचन्द। पत्र सं० ३५। आ० ११३/४×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-६४ प्रकार की ऋद्धि धारण करने वाले मुनियोंकी पूजा। र० काल सं० १९१० सावन सुदी ७। ले० काल सं० १९५१। पूर्ण। वे० सं० ६६४। अ भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम वृहद्गुर्वावलि पूजा भी है।

इसी भण्डार मे ४ प्रतियां (वे० सं० ७१६, ७१७, ७१८, ७३७) और हैं।

४५६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १९१०। वे० सं० ६७०। क भण्डार।

४५६५ प्रति सं० ३। पत्र सं० ३२। ले० काल सं० १९५२। वे० सं० २६। ग भण्डार।

४५६६ प्रति सं० ४। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १९२६ फागुण सुदी १२। वे० सं० ७६। घ भण्डार।

४५६७ प्रति सं० ५। पत्र सं० २५। ले० काल ×। वे० सं० १६३। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १९४) और है।

४५६८ प्रति सं० ६। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० ७३४। च भण्डार।

४५६९ प्रति सं० ७। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १९२२। वे० सं० २१६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतियां (वे० सं० १४३, २१६/३) और हैं।

४५७० प्रति सं० ८। पत्र सं० ४५। ले० काल ×। वे० सं० २०६। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० २६२/२ २६५) और हैं।

४५७१ प्रति सं० ९। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० ५३४। ञ भण्डार।

४५७२. प्रति सं० १०। पत्र सं० ४३। ले० काल ×। वे० सं० १९१३। ट भण्डार।

४५७३. छीतिनिवारणविधि """"""। पत्र सं० ३। आ० ११×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८७८। अ भण्डार।

४५७४. जम्बूद्वीपपूजा—पांडे जिनदास। पत्र स० १६। आ० १०$\frac{3}{4}$×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल १७वी शताब्दी। ले० काल स० १८२२ मंगसिर बुदी १२। पूर्ण। वे० स० १८३। क भण्डार।

विशेष—प्रति अकृत्रिम जिनालय तथा भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान जिनपूजा सहित है। प० चोखचन्द ने माहचन्द से प्रतिलिपि करवाई थी।

४५७५. प्रति सं० २। पत्र सं० २८। ले० काल सं० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १४। वे० सं० ६८। ख भण्डार।

विशेष—भवानीचन्द भावासा भिलाय वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४५७६. जम्बूस्वामीपूजा ……। पत्र सं० १०। आ० ८×५$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-अन्तिम केवली जम्बूस्वामी की पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १९४८। पूर्ण। वे० स० ६०१। अ भण्डार।

४५७७. जयमाल—रायचन्द। पत्र स० १। आ० ८$\frac{1}{2}$×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८५५ फागुण सुदी १। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१३२। अ भण्डार।

विशेष—भोजराज जी ने किशनगढ मे प्रतिलिपि की थी।

४५७८. जलहरतेलाविधान ……। पत्र सं० ४। आ० ११$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ३२३। ज भण्डार।

विशेष—जलहर तेले (व्रत) की विधि है। इसका दूसरा नाम झरतेला व्रत भी है।

४५७९. प्रति सं० २। पत्र स० ३। ले० काल स० १९२८। वे० स० ३०२। ख भण्डार।

४५८०. जलयात्रापूजाविधान……। पत्र सं० २। आ० ११×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २९३। ज भण्डार।

विशेष—भगवान के अभिषेक के लिए जल लाने का विधान।

४५८१. जलयात्राविधान—महा पं० आशाधर। पत्र स० ४। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-जन्माभिषेक के लिए जल लाने का विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०९६। अ भण्डार।

४५८२. जलयात्रा (तीर्थोदकादानविधान) ……। पत्र सं० २। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १२२। छ भण्डार।

विशेष—जलयात्रा के यन्त्र भी दिये हैं।

४५८३. जिनगुणसंपत्तिपूजा—भ० रत्नचन्द्र। पत्र सं० ६। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०२। ङ भण्डार।

४५८४ प्रति स० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल स० १६८३ । वे० स० १७१ । ञ भण्डार ।

विशेष—श्रीपति जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।

४५८५. जिनगुणसपत्तिपूजा '' । पत्र स० ११ । आ० १२×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१६७ । अ भण्डार ।

विशेष—५वा पत्र नही है ।

४५८६. प्रति सं० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६२१ । वे सं० २६३ । ख भण्डार ।

४५८७ जिनगुणसपत्तिपूजा ' । पत्र स० ५ । आ० ७½×६½ इ च । भाषा-सस्कृत प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५१५ । अ भण्डार ।

४५८८ जिनपुरन्दरव्रतपूजा । पत्र स० १४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०६ । ङ भण्डार ।

४५८९. जिनपूजाफलप्राप्तिकथा । पत्र स० ५ । आ० १०½×४½ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४८३ । अ भण्डार ।

विशेष—पूजा के साथ २ कथा भी है ।

४५९० जिनयज्ञकल्प (प्रतिष्ठासार)—महा प० आशाधर । पत्र स० १०२ । आ० १०½×४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय मूर्त्ति, वेदी प्रतिष्ठादि विधानो की विधि । र० काल स० १२८५ आसोज बुदी ८ । ले० काल स० १४९५ माघ बुदी ८ (शक स० १३६०) पूर्ण । वे० स० २८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १४९५ शाके १३६० वर्षे माघ वदि ८ गुरुवासरे''' ''' ''' ' '' (अपूर्ण)

४५९१ प्रति स० २ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६३३ । वे० स० ४५६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति- संवत् १६३३ वर्षे '' ''''।

४५९२ प्रति स० ३ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १८८५ भादवा बुदी १३ । वे० स० २७ । घ भण्डार ।

विशेष—मथुरा मे औरङ्गजेब के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई ।

लेखक प्रशस्ति—

श्रीमूलसघेषु सरस्वतीयो गच्छे बलात्कारणे प्रसिद्धे ।
सिंहासनी श्रीमलयस्य खेटे सुदक्षिणाशा विषये विलीने ।

श्रीकुंदकुंदाखिलयोगनाथ पट्टानुगानेकमुनीन्द्रवर्गा. ।
दुर्वादिवागुन्मथनैकसज्ज. विद्यामुनदीश्वरसूरिमुख्य ॥
तदन्वये योऽमरकीर्त्तिनाम्ना भट्टारको वादिगजेभशत्रु. ।
तस्यानुशिष्यशुभचन्द्रसूरि श्रीमालके नर्मदयोपगाया ॥
पुर्यां शुभाया पटुपशत्रुवत्या सुवर्णकाणाप्रत नीचकार ॥

४५६३. प्रति स० ४ । पत्र स० १२४ । ले० काल स० १६५६ भादवा सुदी १२ । वे० स० २२३ । भ्ह भण्डार ।

विशेष—बंगाल मे अकबरा नगर मे राजा सवाई मानसिंह के शासनकाल मे आचार्य कुन्दकुन्द के बलात्कारगण सरस्वतीगच्छ मे भट्टारक पद्मनदि के शिष्य भ० शुभचन्द्र भ० जिनचन्द्र भ० चन्द्रकीर्त्ति की आम्नाय मे खडेलवाल वशोत्पन्न पाटनीगोत्र वाले साह श्री पट्टिराज वलू, फरना, कपूरा, नाथू आदि मे से कपूरा ने षोडशकारण व्रतोद्यापन मे प० श्री जयवंत को यह प्रति भेंट की थी।

४५६४. प्रति सं० ५ । पत्र स० ११६ । ले० काल X । वे० सं० ४२ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

नद्यात् खडिल्लवशोत्थ. केल्हणोन्यासवित्तर ।
लेखितोयेन पाठार्थमस्य प्रणमं पुस्तक ॥२०॥

४५६५ प्रति स० ६ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १६६२ भादवा बुदी २ । वे० स० ४२५ । ञ भण्डार ।

विशेष—सवत् १६६२ वर्षे भाद्रपद वदि २ भौमे अद्येह राजपुरनगरवास्तव्यं आभ्यासरनागरज्ञातीय पचोली त्यातराभाट्टसुत नरसिंहेन लिखित ।

ङ भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० २०७) च भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० १२०, १०५) तथा भ्ह भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०७) और है।

४५६६ जिनयज्ञविधान ·" । पत्र सं० १ । आ० १०X४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १७८३ । ट भण्डार ।

४५६७ जिनस्नपन (अभिषेक पाठ) ·" ""। पत्र सं० १४ । आ० ६३X४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १८११ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० १७७८ । ट भण्डार ।

४५६८. जिनसंहिता ·"" । पत्र सं० ४६ । आ० १३X८३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७७ । छ भण्डार ।

४५९९. जिनसंहिता—भद्रबाहु । पत्र स० १३० । आ० ११X५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा प्रतिष्ठादि एव आचार सम्बन्धी विधान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १९६ । क भण्डार ।

४६००. जिनसंहिता—भ० एकसंधि । पत्र सं० ८४ । आ० १३X५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा प्रतिष्ठादि एव आचार सम्बन्धी विधान । र० काल X । ले० काल स० १९३७ चैत्र बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १९७ । क भण्डार ।

विशेष— ५७, ५८, ८१, ८२ तथा ८३ पत्र खाली हैं ।

४६०१. प्रति सं० २ । पत्र स० ८५ । ले० काल स० १८५३ । वे० सं० १९८ । क भण्डार ।

४६०२. प्रति सं० ३ । पत्र स० १११ । ले० काल X । वे० स० ५९ । ख भण्डार ।

४६०३ जिनसंहिता ... । पत्र सं० १०९ । आ० १२X६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा प्रतिष्ठादि एव आचार सम्बन्धी विधान । र० काल X । ले० काल सं० १८५६ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १९५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम 'पूजासार भी है । यह एक सग्रह ग्रन्थ है जिसका विषय वीरसेन, जिनसेन पूज्यपाद तथा गुणभद्रादि आचार्यों के ग्रन्थो से सग्रह किया गया है । ९९ पृष्ठो के अतिरिक्त १० पत्रो मे ग्रन्थ से सम्बन्धित ४३ यन्त्र दे रखे हैं ।

४६०४. जिनसहस्रनामपूजा—धर्मभूषण । पत्र स० १२६ । आ० १०X४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १९०६ बैशाख बुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० ४३८ । अ भण्डार ।

विशेष—लिछमणलाल से प० सुखलालजी के पठनार्थ हीरालालजी रैणवाल तथा पचेवर वालो ने किला खण्डार मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

अन्तिम प्रशस्ति— या पुस्तक लिखाई किला खण्डारि के कोटडिराज्ये श्रीमानसिंहजी तत् कवर फतेसिंहजी बुलाया रैणवाललू बैदगी निमित्त श्रीसहस्रनाम को मडलजी मडायो उत्सव करायो । श्री ऋषभदेवजी का मन्दिर मे माल लियो दरोगा चत्रभुजजी वासी वगरू का गोत पाटणी रु० १५) साहजी गणेशलालजी साह ज्याकी सहाय सू हुवो ।

४६०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८७ । ले० काल X । वे० स० १९४ । क भण्डार ।

४६०६. जिनसहस्रनामपूजा—स्वरूपचन्द्र विलाला । पत्र सं० ९५ । आ० ११X५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १९१६ आसोज सुदी २ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ८७१३ । क भण्डार ।

४६०७ जिनसहस्रनामपूजा—चैनसुख लुहाडिया । पत्र स० २६ । आ० १२X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १९३६ माह सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ७७२ । क भण्डार ।

४६०८. जिनसहस्रनामपूजा ....। पत्र सं० १८ । आ० १३×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२४ । अ भण्डार ।

४६०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ७२४ । च भण्डार ।

४६१०. जिनाभिषेकनिर्णय ....। पत्र सं० १० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अभिषेक विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । छ भण्डार ।

विशेष—विद्वज्जनबोधक के प्रथमकाण्ड मे सातवें उल्लास की हिन्दी भाषा है।

४६११. जैनप्रतिष्ठापाठ ....। पत्र सं० २ से ३५ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६ । च भण्डार ।

४६१२. जैनविवाहपद्धति ....। पत्र सं० ३४ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विवाह विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५ । क भण्डार ।

विशेष—आचार्य जिनसेन स्वामी के मतानुसार सग्रह किया गया है। प्रति हिन्दी टीका सहित है।

४६१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० १७ । ज भण्डार ।

४६१४. ज्ञानपंचविंशतिकाव्रतोद्यापन—भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० १६ । आ० १०¾×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १८४७ चैत्र बुदी ६ । ले० काल सं० १८९३ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १२२ । च भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे चन्द्रप्रभु चैत्यालय मे रचना की गई थी। सोनजी पाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

४६१५. ज्येष्ठजिनवरपूजा ....। पत्र सं० ७ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०४ । अ भण्डार ।

विशेष— इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७२३) और है।

४६१६. ज्येष्ठजिनवरपूजा....। पत्र सं० १२ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१९ । क भण्डार ।

४६१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १९२१ । वे० सं० २९३ । ख भण्डार ।

४६१८. ज्येष्ठजिनवरव्रतपूजा....। पत्र सं० १ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६० आषाढ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २२१२ । अ भण्डार ।

विशेष—विद्वान खुशाल ने जोधराज के बनवाये हुए पाटोदी के मन्दिर मे प्रतिलिपि की। खरडो सुरेन्द्रकीर्त्तिजी को रच्यो।

४६१९. णमोकारपैंतीसपूजा—अक्षयराम। पत्र सं० ३। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-णमोकार मन्त्र पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४९९। अ भण्डार।

विशेष—महाराजा जयसिंह के शासनकाल मे ग्रन्थ रचना की गई थी।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५७८) और है।

४६२०. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल सं० १७९५ प्र० आसोज बुदी १। वे० सं० ३९४। व भण्डार।

४६२१. णमोकारपैंतीसीव्रतविधान—आ० श्री कनककीर्त्ति। पत्र सं० ५। आ० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा एवं विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १८२५। पूर्ण। वे० सं० २३६। ङ भण्डार।

विशेष—डूंगरसी कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

४६२२. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४। व भण्डार।

४६२३. तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा—दयाचन्द्र। पत्र सं० १। आ० ११×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६०। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति वे० सं० २६१। और है।

४६२४. तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा"" । पत्र सं० २। आ० ११½×५। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६२। क भण्डार।

विशेष—केवल १०वें अध्याय की पूजा है।

४६२५. तीनचौबीसीपूजा"" । पत्र सं० ३८। आ० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-भूत, भविष्यत् तथा वर्त्तमान काल के चौबीसो तीर्थङ्करो की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७८। क भण्डार।

४६२६. तीनचौबीसीसमुच्चयपूजा ""। पत्र सं० ५। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८०६। ट भण्डार।

४६२७. तीनचौबीसीपूजा—नेमीचन्द पाटनी। पत्र सं० ९७। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८९४ कार्तिक बुदी १४। ले० काल सं० १९२८ भाद्रपद सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २७५। क भण्डार।

४६२८. तीनचौबीसीपूजा ""। पत्र सं० ५७। आ० ११×५ इंच भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८८२। ले० काल सं० १८८२। पूर्ण। वे० सं० २७३। क भण्डार।

४६२६. तीनचौबीसीसमुच्चयपूजा ……। पत्र सं० २०। आ० ११½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १२५। छ भण्डार।

४६३०. तीनलोकपूजा—टेकचन्द। पत्र सं० ४१०। आ० १२×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८२८। ले० काल स० १९७३। पूर्ण। वे० स० २७७। ङ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ लिखाने मे ३७॥–) लगे थे।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ५७६, ५७७) और है।

४६३१. प्रति स० २। पत्र स० ३५०। ले० काल ×। वे० स० २४१। छ भण्डार।

४६३२. तीनलोकपूजा—नेमीचन्द। पत्र सं० ८५१। आ० १३×८½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १९९३ ज्येष्ठ सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० २२०३। अ भण्डार।

विशेष—इसका नाम त्रिलोकसार पूजा एवं त्रिलोकपूजा भी है।

४६३३. प्रति सं० २। पत्र सं० १०८८। ले० काल ×। वे० सं० २७०। क भण्डार।

४६३४ प्रति सं० ३। पत्र सं० ९८७। ले० काल सं० १९९३ ज्येष्ठ सुदी ५। वे० सं० २२९। छ भण्डार।

विशेष—दो वेष्टनो मे है।

४६३५ तीसचौबीसीनाम………। पत्र सं० ६। आ० १०×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ५७८। च भण्डार।

४६३६. तीसचौबीसीपूजा—वृन्दावन। पत्र सं० ११६। आ० १०½×७½ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५८०। च भण्डार।

विशेष—प्रतिलिपि बनारस मे गङ्गातट पर हुई थी।

४६३७. प्रति सं० २। पत्र सं० १२२। ले० काल स० १९०१ आषाढ सुदी २। वे० सं० ५७। झ भण्डार।

४६३८ तीसचौबीसीसमुच्चयपूजा……। पत्र सं० ६। आ० ८×६½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स० १८०८। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २७८। ङ भण्डार।

विशेष—अढाईद्वीप अन्तर्गत ५ भरत ५ ऐरावत १० क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी पूजा है।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५७९) और है।

४६३९. तेरहद्वीपपूजा—शुभचन्द्र। पत्र स० १५४। आ० १०½×५ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९२१ सावन सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० ७३। ख भण्डार।

४६४०. तेरहद्वीपपूजा—भ० विश्वभूषण। पत्र सं० १०२। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन मान्यतानुसार १३ द्वीपो की पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८७ भादवा सुदी २। वे० सं० १२७। ग्र भण्डार।

विशेष—विजैरामजी पाड्या ने बलदेव ब्राह्मण से लिखवाई थी।

४६४१. तेरहद्वीपपूजा ''। पत्र सं० २८। आ० ११½×६½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन मान्यतानुसार १३ द्वीपो की पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६१। पूर्ण। वे० सं० ४३। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ५०) और है।

४६४२. तेरहद्वीपपूजा''''''। पत्र सं० २०८। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६२४। पूर्ण। वे० सं० ५३५। अ भण्डार।

४६४३. तेरहद्वीपपूजा—लालजीत। पत्र सं० २३२। आ० १२½×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८७७ कार्तिक सुदी १२। ले० काल सं० १६६२ भादवा सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० २७७। क भण्डार।

विशेष—गोविन्दराम ने प्रतिलिपि की थी।

४६४४. तेरहद्वीपपूजा''''''। पत्र सं० १७६। आ० ११×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ५८१। च भण्डार।

४६४५. तेरहद्वीपपूजा । पत्र सं० २६४। आ० ११×७¾ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६४६ कार्तिक सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ३८३। ज भण्डार।

४६४६. तेरहद्वीपपूजाविधान । पत्र सं० ८६। आ० ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०६१। अ भण्डार।

४६४७. त्रिकालचौबीसीपूजा—त्रिभुवनचन्द्र। पत्र सं० १३। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-तीनो काल मे होने वाले तीर्थङ्करो की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४७५। अ भण्डार।

विशेष—शिवलाल ने नेवटा मे प्रतिलिपि की थी।

४६४८. त्रिकालचौबीसीपूजा' । पत्र सं० ६। आ० १०×६¾ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० का। ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७८। क भण्डार।

४६४९. प्रति सं० २। पत्र सं० १७। ले० काल सं० १७०४ पौष बुदी ६। वे० सं० २७६। क भण्डार।

विशेष—बसवा मे आचार्य पूर्णचन्द्र ने अपने चार शिष्यो के साथ मे प्रतिलिपि की थी।

४६५०. प्रति सं० ३ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १९९१ भादवा सुदी ३ । वे० स० २२२ । छ भण्डार ।

विशेष—श्रीमती चतुरमती अर्जिका की पुस्तक है ।

४६५१. प्रति स० ४ । पत्र स० १३ । ले० काल सं० १७४७ फाल्गुन बुदी १३ । वे० सं० ४११ । व्य भण्डार ।

विशेष—विद्याविनोद ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १७५) और है ।

४६५२ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ९ । ले० काल X । वे० सं० २१६२ । ट भण्डार ।

४६५३. त्रिकालपूजा……। पत्र स० १९ । आ० ११X४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५३० । अ भण्डार ।

विशेष—भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान के त्रैसठ शलाका पुरुषो की पूजा है ।

४६५४. त्रिलोकक्षेत्रपूजा…… । पत्र सं० ५१ । आ० ११X५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १८४२ । ले० काल स० १८८९ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ५८२ । च भण्डार ।

४६५५. त्रिलोकस्थजिनालयपूजा… । पत्र सं० ९ । आ० ११X७¾ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १२८ । ज भण्डार ।

४६५६. त्रिलोकसारपूजा—अभयनन्दि । पत्र सं० ३९ । आ० १३½X७ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० ५४४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वें पत्र से नवीन पत्र जोड़े गये हैं ।

४६५७. त्रिलोकसारपूजा ……। पत्र स० २६० । आ० ११X५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १९३० भादवा सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ४८६ । अ भण्डार ।

४६५८. त्रेपनक्रियापूजा……। पत्र सं० ६ । आ० १२X५½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल स० १८२३ । पूर्ण । वे० सं० ५१६ । अ भण्डार ।

४६५९. त्रेपनक्रियाव्रतपूजा…… ……। पत्र सं० ५ । आ० ११½X५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल स० १६०४ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २८७ । क भण्डार ।

विशेष—आचार्य पूर्णचन्द्र ने सागानेर मे प्रतिलिपि की थी ।

४६६०. त्रैलोक्यसारपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० १७२ । आ० ११½X५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १८२९ भादवा बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३२ । छ भण्डार ।

४६६१. त्रैलोक्यसारमहापूजा ……। पत्र सं० १४५। आ० १०×५ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६१६। पूर्ण। वे० स० ७६। ख भण्डार।

४६६२. दशलक्षणजयमाल—प० रइधू। आ० १०×५ इ च। भाषा-अपभ्र श। विषय-धर्म के दश भेदो की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २६८। अ भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायान्तर दिया हुआ है।

४६६३ प्रति स० २। पत्र स० ६। ले० काल स० १७६५। वे० स० ३०१। अ भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३०२) और है।

४६६४ प्रति स० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० स० २६७। क भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुए है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २६६) और है।

४६६५. प्रति स० ४। पत्र सं० ७। ले० काल स० १८०१। वे० सं० ८३। ख भण्डार।

विशेष—जोशी खुशालीराम ने टोक मे प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ८२, ८३/१) और है।

४६६६ प्रति सं० ५। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० स० २६४। ङ भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे सकेत दिये हुये है। इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० २६२) और है।

४६६७ प्रति सं० ६। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० १२६। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १५०) और है।

४६६८ प्रति सं० ७। पत्र स० ६। ले० काल स० १७८२ फागुण सुदी १२। वे० स० १२६। छ भण्डार।

४६६६. प्रति स० ८। पत्र स० ६। ले० काल स० १८६८। वे० स० ७३। झ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ११८, २०२) और है।

४६७०. प्रति स० ६। पत्र स० ४। ले० काल स० १७४६। वे० स० १७०। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है। इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २६८, २८५) और है।

४६७१. प्रति स० १०। पत्र स० १०। ले० काल ×। वे० स० १७८६। ट भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० १७८७, १७८८, १७६४) और है।

४६७२. दशलक्षणजयमाल—प० भाव शर्मा। पत्र स० ८। आ० १२×५३ इ च। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८११ भादवा सुदी ११। अपूर्ण। वे० स० २६८। अ भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे टीका दी हुई है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४८१) और है।

४६७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७३४ पौष सुदी १२ । वे० सं० ३०२ । क भण्डार ।

विशेष—अमरावती जिले मे समरपुर नामक नगर मे आचार्य पूर्णचन्द्र के शिष्य गिरधर के पुत्र लक्ष्मण ने स्वयं के पढने के लिए प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३०१) और है ।

४६७४. प्रति सं० ३ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १९१२ । वे० सं० १८१ । ख भण्डार ।

विशेष—जयपुर के जोवनेर के मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी ।

४६७५. प्रति स० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८६२ भादवा सुदी ८ । वे० सं० १५१ । च भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।

४६७६. प्रति स० ५ । पत्र स० ११ । ले० काल X । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

४६७७. प्रति सं० ६ । पत्र स० ५ । ले० काल X । वे० स० २०५ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ४८१) और है ।

४६७८. प्रति सं० ७ । पत्र स० १८ । ले० काल X । वे० स० १७८४ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० १७८६, १७९०, १७९२, १७९४) और है ।

४६७९. दशलक्षणजयमाल ' ' । पत्र सं० ८ । आ० १०X५ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल स० १७८८ फागुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० २९३ । ङ भण्डार ।

४६८०. प्रति सं० २ । पत्र स० ८ । ले० काल X । वे० स० २०६ । झ भण्डार ।

४६८१. प्रति स० ३ । पत्र स० १५ । ले० काल X । वे० स० ७२६ । अ भण्डार ।

४६८२. प्रति स० ४ । पत्र स० ४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २९० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० २९७, २९८) और है ।

४६८३. प्रति सं० ५ । पत्र स० ९ । ले० काल स० १८६६ भादवा सुदी ३ । वे० स० १५३ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा चौथमल नेवटा वाले ने प्रतिलिपि की थी । सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १५२, १५४) और है ।

४६८४. दशलक्षणजयमाल " ' । पत्र स० ५ । आ० ११३/४X५३/४ इंच । भाषा–प्राकृत, संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २११८ । अ भण्डार ।

४६८५ दशलक्षणजयमाल""""। पत्र सं० ६। आ० १०३×४३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १७३६ आसोज बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ८४। ख भण्डार।

विशेष—नागौर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४६८६. दशलक्षणजयमाल"""। पत्र सं० ७। आ० ११×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७८५। च भण्डार।

४६८७. दशलक्षणपूजा—अभ्रदेव। पत्र सं० ६। आ० १३×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०८२। अ भण्डार।

४६८८. दशलक्षणपूजा—अभयनन्दि। पत्र स० १५। आ० १२×६ इंच। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २९९। ङ भण्डार।

४६८९ दशलक्षणपूजा"""। पत्र सं० २। आ० ११×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६७। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १२०४) और हैं।

४६९०. प्रति स० २। पत्र स० १८। ले० काल सं० १७४७ फागुण बुदी ४। वे० स० ३०३। ङ भण्डार।

विशेष—सागानेर मे विद्याविनोद ने प० गिरधर के वाचनार्थ प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २९८) और है।

४६९१ प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० स० १७८५। ट भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १७९१) और हैं।

४६९२. दशलक्षणपूजा"""। पत्र स० ३७। आ० ११×४३ इंच। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८९३। पूर्ण। वे० स० १५५। च भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४६९३. दशलक्षणपूजा—द्यानतराय। पत्र सं० १०। आ० ८३×६३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७२५। अ भण्डार।

विशेष—पत्र स० ७ तक रत्नत्रयपूजा दी हुई है।

४६९४. प्रति स० २। पत्र स० ४। ले० काल सं० १९३७ चैत्र बुदी २। वे० स० ३००। ङ भण्डार।

४६९५. प्रति सं० ३। पत्र स० ५। ले० काल ×। वे० स० ३००। ज भण्डार।

४६९६. दशलक्षणपूजा ...... । पत्र स० ३५ । आ० १२३×७३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९५४ । पूर्ण । वे० स० ५८८ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५८९) और है ।

४६९७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल स० १९३७ । वे० सं० ३१७ । च भण्डार ।

४६९८ दशलक्षणपूजा ...... । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२० । ट भण्डार ।

विशेष—स्थापना द्यानतराय कृत पूजा की है अष्टक तथा जयमाला किसी अन्य कवि की है ।

४६९९. दशलक्षणमंडलपूजा ...... । पत्र सं० ६३ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १८८० चैत्र सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । क भण्डार ।

४७०० प्रति सं० २ । पत्र स० ५२ । ले० काल × । वे० सं० ३०१ । ङ भण्डार ।

४७०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १९३७ भादवा बुदी १० । वे० स० ३०० । ङ भण्डार ।

४७०२. दशलक्षणव्रतपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० २२ । आ० १०३×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७९६ । अ भण्डार ।

४७०३. प्रति सं० २ । पत्र स० १४ । ले० काल सं० १८२९ । वे० स० ४९८ । अ भण्डार ।

४७०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८७९ आसोज सुदी ५ । वे० सं० १४९ । च भण्डार ।

विशेष—सदासुख वाकलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४७०५ दशलक्षणव्रतोद्यापन—जिनचन्द्र सूरि । पत्र स० १९ - २५ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९१ । ङ भण्डार ।

४७०६ दशलक्षणव्रतोद्यापन—मल्लिभूषण । पत्र स० १४ । आ० १२३×६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२६ । छ भण्डार ।

४७०७ प्रति सं० २ । पत्र स० १९ । ले० काल × । वे० स० ७५ । झ भण्डार ।

४७०८. दशलक्षणव्रतोद्यापन ...... । पत्र सं० ४३ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० स० ७० । झ भण्डार ।

विशेष—मण्डलविधि भी दी हुई है ।

४७०६ दशलक्षणविधानपूजा ……। पत्र सं० ३० । आ० १२½×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां इसी वेष्टन मे और है ।

४७१०. देवपूजा—इन्द्रनन्दि योगीन्द्र । पत्र सं० ५ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६० । च भण्डार ।

४७११. देवपूजा …। पत्र स० ११ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५३ । अ भण्डार ।

४७१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ से १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४६ । घ भण्डार ।

४७१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० स० ३०५ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३०६) और है ।

४७१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १६२, १६३) और है ।

४७१५. प्रति स० ५ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८८३ पौष बुदी ८ । वे० स० १३३ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० १६६, १७८) और हैं ।

४७१६. प्रति स० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल स० १६५० आषाढ बुदी १२ । वे० स० २१४२ । ट भण्डार ।

विशेष—छीतरमल ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

४७१७ देवपूजाटीका… । पत्र स० ८ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वे० स० ११६ । छ भण्डार ।

४७१८. देवपूजाभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र स० १७ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८४३ कार्त्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० ५१६ । अ भण्डार ।

४७१६. देवसिद्धपूजा…… । पत्र स० १५ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन मे एक प्रति और है ।

४७२०. द्वादशव्रतपूजा—प० अभ्रदेव । पत्र स० ७ । आ० ११×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५८४ । अ भण्डार ।

४७२१. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० १६। आ० ११×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं० १७७२ माघ सुदी १। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३३। अ भण्डार।

४७२२ प्रति स० २। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० स० ३२०। ङ भण्डार।

४७२३ प्रति सं० ३। पत्र सं० १५। ले० काल ×। वे० सं० ११७। छ भण्डार।

४७२४. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—पद्मनन्दि। पत्र सं० ६। आ० ७३×४ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५६३। अ भण्डार।

४७२५. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—भ० जगतकीर्त्ति। पत्र स० ६। आ० १०३×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १५६। च भण्डार।

४७२६. द्वादशव्रतोद्यापन…… । पत्र सं० ५। आ० ११३×५३ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८०४। पूर्ण। वे० स० १३५। ज भण्डार।

विशेष—गोर्धनदास ने प्रतिलिपि की थी।

४७२७. द्वादशांगपूजा—डालूराम। पत्र स० १६। आ० ११×५३ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८७६ ज्येष्ठ सुदी ६। ले० काल सं० १९३० आषाढ बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ३२४। क भण्डार।

विशेष—पन्नालाल चौधरी ने प्रतिलिपि की थी।

४७२८. द्वादशागपूजा " । पत्र स० ८। आ० ११३×५३ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८६ माघ सुदी १५। पूर्ण। वे० स० ५६२।

विशेष—इसी वेष्टन मे २ प्रतिया और हैं।

४७२६. द्वादशागपूजा " । पत्र स० ६। आ० १२×७३ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३२६। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३२७) और है।

४७३०. प्रति सं० २। पत्र स० ३। ले० काल ×। वे० स० ४४४। ञ भण्डार।

४७३१ धर्मचक्रपूजा—यशोनन्दि। पत्र स० १६। आ० १२×५३ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५१८। अ भण्डार।

४७३२. प्रति सं० २। पत्र स० १६। ले० काल स० १९४२ फागुण सुदी १०। वे० सं० ८६। ख भण्डार।

विशेष—पन्नालाल जोवनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४७३३. धर्मचक्रपूजा—साधु रणमल्ल । पत्र स० ८ । आ० ११×५१/२ इ च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८८१ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ५२८ । अ भण्डार ।

विशेष—प० खुशालचन्द ने जोधराज पाटोदी के मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी ।

४७३४. धर्मचक्रपूजा…… । पत्र स० १० । आ० १२×५१/२ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५०६ । अ भण्डार ।

४७३५. ध्वजारोपण…… । पत्र सं० ११ । आ० ११×५१/२ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजाविधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२२ । छ भण्डार ।

४७३६. ध्वजारोपणमत्र……… । पत्र स० ४ । आ० १११/२×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२३ । अ भण्डार ।

४७३७ ध्वजारोपणविधि—प० आशाधर । पत्र स० २७ । आ० १०×४१/२ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्दिर मे ध्वजा लगाने का विधान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । च भण्डार ।

४७३८. ध्वजारोपणविधि …… । पत्र स० १३ । आ० १०१/२×५१/२ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-विषय-मन्दिर मे ध्वजा लगाने का विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ४३४, ४८८) और हैं ।

४७३६. प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १६१६ । वे० स० ३१८ । ज भण्डार ।

४७४० ध्वजारोहणविधि …… । पत्र स० ८ । आ० १०१/२×७१/२ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल स० १६२७ । पूर्ण । वे० स० २७३ । ख भण्डार ।

४७४१ प्रति स० २ । पत्र सं० २ – ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८२२ । ट भण्डार ।

४७४२ नन्दीश्वरजयमाल…… । पत्र सं० २ । आ० ६१/२×४ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७७६ । ट भण्डार ।

४७४३. नन्दीश्वरजयमाल…… । पत्र स० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८७० । ट भण्डार ।

४७४४ नन्दीश्वरद्वीपपूजा—रत्ननन्दि । पत्र स० १० । आ० ११३/४×५१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६० । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४७४५. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल स० १८६१ आषाढ बुदी ३। वे० स० १६१। च भण्डार।

विशेष—पत्र चूहो ने खा रखे हैं।

४७४६. नन्दीश्वरद्वीपपूजा……। पत्र सं० ४। आ० ८×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६००। अ भण्डार।

विशेष—जयमाल प्राकृत मे है। इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ७६७) और है।

४७४७ नन्दीश्वरद्वीपपूजा—मङ्गल। पत्र सं० ३१। आ० १२×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८०७ पौष बुदी ११। पूर्ण। वे० स० ५६६। च भण्डार।

४७४८ नन्दीश्वरपंक्तिपूजा ……। पत्र सं० ६। आ० ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १७४६ भादवा बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ५२६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५५७) और है।

४७४९. प्रति सं० २। पत्र स० १६। ले० काल ×। वे० स० ३६३। क भण्डार।

४७५०. नन्दीश्वरपंक्तिपूजा ……। पत्र स० ३। आ० १०½×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १८८३। अ भण्डार।

४७५१. नन्दीश्वरपूजा……। पत्र स० ६। आ० ११×४ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४००। व्य भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ४०६, २१२, २७४ ले० काल स० १८२४) और है।

४७५२. नन्दीश्वरपूजा……। पत्र स० ४। आ० ८½×६ इच। भाषा प्राकृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ११५२। अ भण्डार।

४७५३. प्रति सं० २। पत्र स० ५। ले० काल ×। वे० सं० ३४८। ड भण्डार।

४७५४ नन्दीश्वरपूजा ……। पत्र स० ४। आ० ६×७ इच। भाषा-अपभ्रंश। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११६। छ भण्डार।

विशेष—लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि की थी। सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है।

४७५५. नन्दीश्वरपूजा……। पत्र स० ३१। आ० ६½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत, प्राकृत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११६। ज भण्डार।

४७५६. नन्दीश्वरपूजा……। पत्र स० ३०। आ० १२×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६६१। पूर्ण। वे० स० ३४६। ड भण्डार।

४७५७ नन्दीश्वरभक्तिभाषा—पन्नालाल। पत्र स० २६। आ० ११½×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १६२१। ले० काल स० १६४६। पूर्ण। वे० स० ३६४। क भण्डार।

४७५८. नन्दीश्वरविधान—जिनेश्वरदास। पत्र स० १११। आ० १३×८½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १६६०। ले० काल स० १६६२। पूर्ण। वे० सं० ३५०। ङ भण्डार।

विशेष—लिखाई एवं कागज मे केवल १५) रु० खर्च हुये थे।

४७५६ नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा—नन्दिषेण। पत्र स० २०। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६२। च भण्डार।

४७६०. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा—अनन्तकीर्त्ति। पत्र सं० १३। आ० ८½×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८५७ आषाढ बुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० २०१७। ट भण्डार।

विशेष—दूसरा पत्र नही है। तक्षकपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४७६१ नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा ....। पत्र स० ५। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ११७। छ भण्डार।

४७६२ नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा.... । पत्र स० ३०। आ० ८×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८८६ भादवा सुदी ८। पूर्ण। वे० स० ३५१। ङ भण्डार।

विशेष—स्योजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी।

४७६३ नन्दीश्वरपूजाविधान—टेकचन्द। पत्र स० ४६। आ० ८½×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८५ सावन सुदी १०। पूर्ण। वे० स० १७८। झ भण्डार।

विशेष—फतेहलाल पापडीवाल ने जयपुर वाले रामलाल पहाडिया से प्रतिलिपि कराई थी।

४७६४ नन्दसप्तमीव्रतोद्यापनपूजा ....। पत्र स० १० आ० ८×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६४७। पूर्ण। वे० स० ५६२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३०३) और है।

४७६५ नवग्रहपूजाविधान—भद्रबाहु। पत्र स० ८ आ० १०¾×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २२। ज भण्डार।

४७६६ प्रति सं० २। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० स० २३। ज भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र पर नवग्रहका चित्र है तथा किस ग्रह की शाति के लिए किस तीर्थङ्कर की पूजा करनी चाहिए, यह लिखा है।

४७६७. नवग्रहपूजा ……। पत्र सं० ७। आ० ११३×६३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७०६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० ४७५, ४६०, ५७३, १२७१, २११२) और हैं।

४७६८. प्रति सं० २। पत्र स० ६। ले० काल स० १६२८ ज्येष्ठ बुदी ३। वे० सं० १२७। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० १२७) और है।

४७६६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२। ले० काल स० १६८८ कार्तिक बुदी ७। वे० सं०। २०३ ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० १८५, १६३, २८०) और हैं।

४७७०. प्रति सं० ४। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० सं० २०१५। ट भण्डार।

४७७१ नवग्रहपूजा …… । पत्र स० २६। आ० ६×६३ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १११६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७१३) और है।

४७७२. प्रति सं० २। पत्र सं० १७। ले० काल ×। वे० स० २२१। छ भण्डार।

४७७३. नित्यकृत्यवर्णन ……। पत्र सं० १०। आ० १०३×५ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-नित्य करने योग्य पूजा पाठ है। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ११६६। अ भण्डार।

विशेष—३रा पृष्ठ नही है।

४७७४. नित्यक्रिया …… ……। पत्र स० ६८। आ० ८३×६ इ च। भाषा सस्कृत। विषय-नित्य करने योग्य पूजा पाठ। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३६६। क भण्डार।

विशेष—प्रति सक्षिप्त हिन्दी अर्थ सहित है। ५४, ६७, तथा ६८ से आगे के पत्र नही हैं।

४७७५. नित्यनियमपूजा …… । पत्र स० २६। आ० ६×५ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३७५। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३७०, ३७१) और है।

४७७६ प्रति स० २। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० स० ३६७। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ३६० से ३६३) और है।

४७७७ प्रति सं० ३। पत्र स० १०। ले० काल सं० १८६३। वे० सं० ५२६। च भण्डार।

४७७८. नित्यनियमपूजा ""। पत्र स० १५ । आ० १०×७ इच। भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७१२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ७०८, ११११) और हैं।

४७७९. प्रति स० २ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १९४० कार्तिक बुदी १२ । वे० स० ३६८ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ३६६) और हैं।

४७८०. प्रति सं० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १९५४ । वे० स० २२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० १२१/२, २२२/२) और हैं।

४७८१. नित्यनियमपूजा—प० सदासुख कासलीवाल । पत्र स० ४६ । आ० ६३×६३ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पूजा । र० काल सं० १९२१ माघ सुदी २ । ले० काल सं० १९२३ । पूर्ण । वे० स० ४०१ । अ भण्डार ।

४७८२. प्रति सं० २ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १९२८ सावन सुदी १० । वे० स० ३७७ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३७६) और है।

४७८३ प्रति स० ३ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १९२१ माघ सुदी २ । वे० स० ३७१ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३७०) और है।

४७८४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३५ । ले० काल स० १९५५ ज्येष्ठ सुदी ७ । वे० स० २१४ । छ भण्डार ।

विशेष—पत्र फटे हुये एव जीर्ण हैं।

४७८५ प्रति सं० ५ । पत्र स० ४४ । ले० काल × । वे० स० १३० । झ भण्डार ।

विशेष—इसका पुट्ठा बहुत सुन्दर एव प्रदर्शनी मे रखने योग्य है।

४७८६. प्रति स० ६ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १९३३ । वे० सं० १८९९ । ट भण्डार ।

४७८७. नित्यनियमपूजाभाषा " । पत्र स० १६ । आ० ८३×७ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९९५ भादवा सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ७०७ । अ भण्डार ।

विशेष—ईश्वरलाल चादवाड ने प्रतिलिपि की थी।

४७८८. प्रति स० २ । पत्र स० २८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७ । ग भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे शुक्रवार की सहेली (संगीत सहेली) स० १९५६ में स्थापित हुई थी। उसकी स्थापना के समय का बनाया हुआ भजन है।

४७८६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १९९६ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ४८ । ग भण्डार ।

४७९०. प्रति सं० ४ । पत्र स० १७ । ले० काल सं० १९६७ । वे० सं० २९२ । झ भण्डार ।

४७९१. प्रति सं० ५ । पत्र स० १३ । ले० काल सं० १९५९ । वे० सं० १२१ । ज भण्डार ।

विशेष— पं० मोतीलालजी सेठी ने यति यशोदानन्दजी के मन्दिर मे चढाई ।

४७९२. नित्यनैमित्तिकपूजापाठसग्रह······ ·· । पत्र स० ५८ । आ० ११×५ इंच । भाषा–सस्कृत, हिन्दी । विषय–पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२१ । छ भण्डार ।

४७९३. नित्यपूजासंग्रह ······ । पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत, अपभ्रंश । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७७ । ट भण्डार ।

४७९४. नित्यपूजासंग्रह ···· । पत्र सं० ५ । आ० ९¾×५¾ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५ । च भण्डार ।

४७९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १९१६ वैशाख बुदी ११ । वे० स० ११७ । ज भण्डार ।

४७९६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । वे० सं० १८९८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति श्रुतसागरी टीका सहित है । इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १९६५, २०९३) और हैं ।

४७९७. नित्यपूजासंग्रह···· । पत्र सं० २–३० । आ० ७¾×२¼ इंच । भाषा–सस्कृत, प्राकृत । वषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९५९ चैत्र सुदी १ । अपूर्ण । वे० स० १८२ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १८३, १८४) और है ।

४७९८. नित्यपूजासंग्रह ···· । पत्र स० ३६ । आ० १०¾×७ इच । भाषा–सस्कृत, हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९५७ । अपूर्ण । वे० स० ७११ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र स० २७, २८ तथा ३५ नही है कुछ पत्र भीग गये हैं । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १३२२) और हैं ।

४७९९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० स० ६०२ । च भण्डार ।

४८००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १७४ । ज भण्डार ।

४८०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २–३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२९ । ट भण्डार ।

विशेष—नित्य व नैमित्तिक पाठो का भी संग्रह है ।

४८०२. नित्यपूजा…… …। पत्र सं० १५ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३७८ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ३७२, ३७३, ३७४, ३७६) और हैं।

४८०३ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल X । वे० स० ३६६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३६४, ३६५) और हैं।

४८०४. प्रति स० ३ । पत्र स० १७ । ले० काल X । वे० स० ६०३ । च भण्डार ।

४८०५ प्रति स० ४ । पत्र स० २ से १८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १६५८ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमज्जिनवचन प्रकाशक ' … ' सग्रहीतविद्वज्जनबोधके तृतीयकाण्डे पूजनवर्णनो नाम अध्यायः समाप्त ।

४८०६. निर्वाणकल्याणकपूजा ' ' … । पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ४२८ । ञ भण्डार ।

४८०७ निर्वाणकाडपूजा … । पत्र स० ५ । आ० ८३×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत, प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल स० १९९८ सावण सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ११११ । अ भण्डार ।

विशेष—इसकी प्रतिलिपि कोकलचन्द पसारी ने ईश्वरलाल चादवाड से कराई थी ।

४८०८. निर्वाणक्षेत्रमंडलपूजा—स्वरूपचन्द । पत्र स० १६ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १९१६ कार्त्तिक बुदी १३ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ४६ । ग भण्डार ।

४८०९ प्रति स० २ । पत्र स० ३५ । ले० काल स० १९२७ । वे० स० ३७६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० ३७७, ३७८) और है ।

४८१०. प्रति स० ३ । पत्र स० ७८ । ले० काल सं० १९३५ पौष सुदी ३ । वे० सं० ६०४ । भण्डार ।

विशेष—जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी । इन्द्रराज बोहरा ने पुस्तक लिखाकर मेघराज कुडिया के मन्दिर मे चढायी । इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६०५, ६०७) और हैं ।

४८११ प्रति स० ४ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १९४३ । वे० स० २११ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे शुक्रवार की स० चौधरी चाकसू वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

… बनाया हुआ भजन है ।

… त्र सं० ३५ । ले० काल X । वे० स० २५५ । ज भण्डार ।

४८१३. निर्वाणक्षेत्रपूजा……। पत्र स० ११ । आ० ११×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स० १८७१। ले० काल सं० १६६६। पूर्ण। वे० सं० १३०५। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ७१०, ८२३, ८२४, १०६८, १०६६) और हैं।

४८१४. प्रति स० २। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८७१ भादवा बुदी ७। वे० सं० २६६। ज भण्डार। [गुटका साइज]

४८१५ प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८८४ मंगसिर बुदी २। वे० सं० १८७। भ्ह भण्डार।

४८१६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६०६। च भण्डार।

विशेष—दूसरा पत्र नही है।

४८१७. निर्वाणपूजा……। पत्र स० १। आ० १२×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७१८। अ भण्डार।

४८१८ निर्वाणपूजापाठ—मनरंगलाल। पत्र सं० ३३। आ० १०३/४×४१/२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८४२ भादवा बुदी २। ले० काल स० १८८८ चैत्र बुदी ३। वे० सं० ८२। भ्ह भण्डार।

४८१९. नेमिनाथपूजा—सुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ५। आ० ६×३१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५६५। अ भण्डार।

४८२०. नेमिनाथपूजा ……। पत्र स० १। आ० ७×५१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १३१४। अ भण्डार।

४८२१. नेमिनाथपूजाष्टक—शंभूराम। पत्र स० १। आ० ११३/४×५१/२ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८४२। अ भण्डार।

४८२२. नेमिनाथपूजाष्टक ……। पत्र सं० १। आ० ६१/२×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १२२४। अ भण्डार।

४८२३. पञ्चकल्याणकपूजा—सुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र स० १६। आ० ११३/४×५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७६। क भण्डार।

४८२४. प्रति स० २। पत्र सं० २७। ले० काल सं० १८७६। वे० स० १०३७। अ भण्डार।

४८२५. पञ्चकल्याणकपूजा—शिवजीलाल। पत्र स० १२६। आ० ८×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५५६। अ भण्डार।

४८२६. पञ्चकल्याणकपूजा—अरुणमणि । पत्र स० ३६ । आ० १२×८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल स० १६२३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५० । ख भण्डार ।

४८२७ पञ्चकल्याणकपूजा—गुणकीर्त्ति । पत्र स० २२ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल १६११ । पूर्ण । वे० सं० ५४ । ञ भण्डार ।

४८२८ पञ्चकल्याणकपूजा—वादीभसिंह । पत्र सं० १८ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५८६ । अ भण्डार ।

४८२९. पञ्चकल्याणकपूजा—सुयशकीर्त्ति । पत्र सं० ७-२६ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५८५ । अ भण्डार ।

४८३०. पञ्चकल्याणकपूजा—सुधासागर । पत्र स० १६ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४०६ । क भण्डार ।

४८३१. पञ्चकल्याणकपूजा…… । पत्र सं० १६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६०८ भादवा सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १००७ । अ भण्डार ।

४८३२. प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८१८ । वे० सं० ३०१ । ख भण्डार ।

४८३३ प्रति सं० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ३८४ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३८५) और है ।

४८३४ प्रति स० ४ । पत्र स० २२ । ले० काल स० १६३६ आसोज सुदी ६ । अपूर्ण । वे० स० १२५ ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १३७, १८०) और हैं ।

४८३५ प्रति स० ५ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १८६२ । वे० सं० १६३ । च भण्डार ।

४८३६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १५ । ले० काल स० १८२१ । वे० स० २३६ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १५५) और हैं ।

४८३७. पञ्चकल्याणकपूजा—छोटेलाल मित्तल । पत्र स० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १६१० भादवा सुदी १३ । ले० काल स० १६५२ । पूर्ण । वे० स० ७३० । अ भण्डार ।

विशेष—छोटेलाल बनारस के रहने वाले थे । इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६७१, ६७२) और हैं ।

४८३८. पञ्चकल्याणकपूजा—रूपचन्द । पत्र सं० १०४ । आ० १२×५ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८६२ । पूर्ण । वे० स० ५३७ । ञ भण्डार ।

४८३९. पञ्चकल्याणकपूजा—टेकचन्द। पत्र सं० २२। आ० १०३/४X५३/४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८८७। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ६६२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० १०८०, ११२०) और हैं।

४८४०. प्रति सं० २। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १९५४ चैत्र सुदी १। वे० सं० ५०। ग भण्डार।

४८४१. प्रति सं० ३। पत्र सं० २६। ले० काल स० १९५४ माह बुदी ११। वे० सं० ६७। घ भण्डार।

विशेष—किशनलाल पापडीवाल ने प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६७) और है।

४८४२. प्रति सं० ४। पत्र सं० २३। ले० काल स० १९६१ ज्येष्ठ सुदी १। वे० सं० ६१२। च भण्डार।

४८४३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३२। ले० काल X। वे० स० २१५। छ भण्डार।

विशेष—इसी वेष्टन मे एक प्रति और है।

४८४४. प्रति स० ६। पत्र सं० १९। ले० काल X। वे० सं० २९८। ज भण्डार।

४८४५. प्रति स० ७। पत्र सं० २५। ले० काल X। वे० सं० १२०। क भण्डार।

४८४६. प्रति सं० ८। पत्र सं० २७। ले० काल सं० १९२८। वे० सं० ५३९। ञ भण्डार।

४८४७. पञ्चकल्याणकपूजा—पन्नालाल। पत्र सं० ७। आ० १२X८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १९२२। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३८८। ङ भण्डार।

विशेष—नीले कागजो पर है।

४८४८. प्रति स० २। पत्र सं० ४१। ले० काल X वे० सं० २१५। छ भण्डार।

विशेष—सघीजी के मन्दिर की पुस्तक है।

४८४९. पञ्चकल्याणकपूजा—भैरवदास। पत्र सं० ३१। आ० ११३/४X८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स० १९१० भादवा सुदी १३। ले० काल स० १९१९। पूर्ण। वे० सं० ६१५। च भण्डार।

४८५०. पञ्चकल्याणकपूजा……। पत्र सं० २५। आ० ९X६ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ९९। ख भण्डार।

४८५१. प्रति सं० २। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १९३९। वे० सं० १००। ख भण्डार।

४८५२. प्रति सं० ३। पत्र सं० २०। ले० काल X। वे० सं० ३८६। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३८७) और हैं।

४८५३ प्रति सं० ४ । पत्र स० १२ । ले० काल X । वे० स० ६१३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६१४) और हैं ।

४८५४. पञ्चकुमारपूजा……। पत्र स० ७ । आ० ८३/४X७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७२ । झ भण्डार ।

४८५५. पञ्चक्षेत्रपालपूजा—गङ्गादास । पत्र स० १४ । आ० १०X५३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६९४ । अ भण्डार ।

४८५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल स० १९२१ । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

४८५७. पञ्चगुरुकल्याणपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० २५ । आ० ११X५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १६३५ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ४२० । ज भण्डार ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र के शिष्य पांडे डूंगर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

४८५८. पञ्चपरमेष्ठीउद्यापन……। पत्र सं० ६१ । आ० १२X५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १८९२ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४१० । क भण्डार ।

४८५९. पञ्चपरमेष्ठीसमुच्चयपूजा……। पत्र सं० ४ । आ० ८३/४X६३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १६५३ । ट भण्डार ।

४८६० पञ्चपरमेष्ठीपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० २४ । आ० ११X५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४७७ । अ भण्डार ।

४८६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० १९६ । च भण्डार ।

४८६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल X । वे० स० १४० । च भण्डार ।

४८६३ पञ्चपरमेष्ठीपूजा—यशोनन्दि । पत्र सं० ३२ । आ० १२X५३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X ले० काल स० १७९१ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ५३८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि शाहजहानाबाद मे जयसिंहपुरा मे प० मनोहरदास के पठनार्थ हुई थी ।

४८६४. प्रति सं० २ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १८५९ । वे० स० ४११ । क भण्डार ।

विशेष—चूरू ग्राम मे जानकीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४८६५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० काल स० १८७३ मगसिर बुदी १ । वे० सं० ६९ । घ

४८६६. प्रति स० ४ । पत्र सं० ४१ । ले० काल स० १८३१ । वे० स० १९७ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १९५) और है ।

४८६७ प्रति सं० ५ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० सं० १६३ । ज भण्डार ।

४८६८ पञ्चपरमेष्ठीपूजा ..... । पत्र सं० १५ । आ० १२×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१२ । क भण्डार ।

४८६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८६२ आषाढ बुदी ८ । वे० सं० ३६२ । ङ भण्डार ।

४८७०. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० सं० १७६७ । ट भण्डार ।

४८७१. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० १५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२० । छ भण्डार ।

४८७२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—डालूराम । पत्र स० ३५ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १८६२ मगसिर बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०८६) और है ।

४८७३. प्रति स० २ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १८६२ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ५१ । ग भण्डार ।

४८७४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १९८७ । वे० स० ३८९ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३९०) और है ।

४८७५. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४५ । ले० काल × । वे० स० ६१६ । च भण्डार ।

४८७६. प्रति सं० ५ । पत्र स० ५६ । ले० काल सं० १९२६ । वे० स० ५१ । व्य भण्डार ।

विशेष—धन्नालाल सोनी ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

४८७७. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३५ । ले० काल स० १९१३ । वे० सं० १८७९ । ट भण्डार ।

विशेष—ईसरदा में प्रतिलिपि हुई थी ।

४८७८. पञ्चपरमेष्ठीपूजा..... । पत्र सं० ३६ । आ० १३×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३९१ । ङ भण्डार ।

४८७९. प्रति सं० २ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वे० सं० ६१७ । च भण्डार ।

४८८०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ३२१ । ज भण्डार ।

४८८१. प्रति सं० ४ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० सं० ३१९ । व्य भण्डार ।

४८८२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १९८१ । वे० सं० १७१० । ट भण्डार ।

विशेष—द्यानतराय कृत रत्नत्रय पूजा भी है ।

४८८३ पञ्चबालयतिपूजा ' - । पत्र सं० ६ । आ० ६X७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २२२ । छ भण्डार ।

४८८४ पञ्चमङ्गलपूजा" " " । पत्र स० २५ । आ० ८X४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २२४ । ख भण्डार ।

४८८५ पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० ४ । आ० ११X५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल स० १८२८ भादवा सुदी ६ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७४ । अ भण्डार ।

४८८६ प्रति सं० २ । पत्र स० ४ । ले० काल X । वे० स० ३६७ । ङ भण्डार ।

४८८७ प्रति स० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १८८३ श्रावण सुदी ७ । वे० स० १६८ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भुनाथ ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १६६) और है ।

४८८८. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३ । ले० काल X । वे० स० ११७ । छ भण्डार ।

४८८९. प्रति सं० ५ । पत्र स० ५ । ले० काल सं० १८६२ श्रावण बुदी ५ । वे० स० १७० । ज भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर मे श्री विमलनाथ चैत्यालय मे गुरु हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४८९० पञ्चमीव्रतपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० ५ । आ० १२X५½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ५१० । अ भण्डार ।

४८९१. पञ्चमीव्रतोद्यापन—श्री हर्षकीर्त्ति । पत्र स० ७ । आ० ११X५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १८८८ आसोज सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३९८ । ङ भण्डार ।

विशेष—शम्भूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४८९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १९१५ आसोज बुदी ५ । वे० स० २०० । च भण्डार ।

४८९३ प्रति स० ३ । पत्र स० ७ । आ० १०½X५½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १९१२ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४८९४. पञ्चमीव्रतोद्यापनपूजा '' । पत्र स० १० । आ० ८½X४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २५३ । ख भण्डार ।

विशेष—गाजी नारायन शर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

४८६५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १९०५ आसोज बुदी १२ । वे० स० ६४ । म भण्डार ।

४८९६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । वे० सं० ३८८ । भण्डार ।

४८९७. पञ्चमेरुपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० ३३ । आ० १२X८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७३२ । अ भण्डार ।

४८९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ६१९ । च भण्डार ।

४८९९. प्रति स० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १९७६ । वे० सं० २१३ । छ भण्डार ।

विशेष—अजमेर वालो के चौबारे जयपुर मे लिखा गया । कीमत ४ ।।।)

४९००. पञ्चमेरुपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० ६ । आ० १२X५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल स० १९६१ कार्त्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ५४७ । अ भण्डार ।

४९०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० ३९५ । ङ भण्डार ।

४९०२. पञ्चमेरुपूजा—भूधरदास । पत्र सं० ८ । आ० ८३X४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १६५६ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्त मे सस्कृत पूजा भी है जो अपूर्ण है । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५९८) और है ।

४९०३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल X । वे० स० १४६ । छ भण्डार ।

विशेष—बीस विरहमान जयमाल तथा स्नपन विधि भी दी हुई है ।

४९०४. पञ्चमेरुपूजा—डालूराम । पत्र सं० ४४ । आ० ११X५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल स० १९३० । पूर्ण । वे० सं० ४१५ । क भण्डार ।

४९०५. पञ्चमेरुपूजा—सुखानन्द । पत्र सं० २२ । आ० ११X५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३९६ । ङ भण्डार ।

४९०६. पञ्चमेरुपूजा ...। पत्र सं० २ । आ० ११X५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय- पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६६६ । अ भण्डार ।

४९०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४८७ । व्य भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ४७६) और है ।

४९०८. पञ्चमेरुउद्यापनपूजा—भ० रत्नचन्द । पत्र सं० ९ । आ० १०३X५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १८६३ प्र० सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २०१ । च भण्डार ।

४९०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० ७४ । च भण्डार ।

४६१०. पद्मावतीपूजा……। पत्र सं० ५। आ० १०३/४×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६६। पूर्ण। वे० स० ११८५। अ भण्डार।

विशेष—पद्मावती स्तोत्र भी है।

४६११. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० १२७। च भण्डार।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र, पद्मावतीकवच, पद्मावतीपटल, एवं पद्मावतीसहस्रनाम भी है। अन्त मे २ यन्त्र भी दिये हुये हैं। अष्टगध लिखने की विधि भी दी हुई है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २०५) और है।

४६१२. प्रति स० ३। पत्र स० १। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १८०। ञ भण्डार।

४६१३ प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १४४। छ भण्डार।

४६१४. प्रति सं० ५। पत्र स० ५। ले० काल ×। वे० सं० २००। ज भण्डार।

४६१५. पद्मावतीमंडलपूजा ……। पत्र स० ३। आ० ११×५ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११७६। अ भण्डार।

विशेष—शातिमडल पूजा भी है।

४६१६. पद्मावतिशान्तिक……। पत्र स० १७। आ० १०३/४×५ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २६३। ख भण्डार।

विशेष—प्रति मण्डल सहित है।

४६१७. पद्मावतीसहस्रनाम व पूजा……। पत्र सं० १४। आ० १०×७ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४३०। ङ भण्डार।

४६१८ पल्यविधानपूजा—ललितकीर्त्ति। पत्र स० ७। आ० ११×५१/२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २११। ञ भण्डार।

विशेष—खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

४६१६. पल्यविधानपूजा—रत्ननन्दि। पत्र स० १४। आ० ११×५ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १०६५। अ भण्डार।

विशेष—नरसिंहदास ने प्रतिलिपि की थी।

४६२०. प्रति स० २। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० सं० २१५। च भण्डार।

४६२१. प्रति सं० ३। पत्र स० ६। ले० काल स० १७६० वैशाख बुदी ६। वे० स० ३६२। अ भण्डार।

विशेष—वासी नगर (बू दी प्रान्त) मे आचार्य श्री ज्ञानकीर्त्ति के उपदेश से प्रतिलिपि हुई थी।

४६२२. पल्यविधानपूजा—अनन्तकीर्त्ति। पत्र सं० ६। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४५३। क भण्डार।

४६२३. पल्यविधानपूजा…। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७५। अ भण्डार।

४६२४. प्रति सं० २। पत्र सं० २ से ६। ले० काल सं० १८२१। अपूर्ण। वे० स० १०५४। अ भण्डार।

विशेष—पं० नैनसागर ने प्रतिलिपि की थी।

४६२५. पल्यव्रतोद्यापन—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ६। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५५५। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ५८२, ६०७) और हैं।

४६२६. पल्योपमोपवासविधि……। पत्र स० ४। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा एव उपवास विधि। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४८४। अ भण्डार।

४६२७. पार्श्वजिनपूजा—साह लोहट। पत्र स० २। आ० १०½×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५६०। अ भण्डार।

४६२८. पार्श्वनाथपूजा ……। पत्र स० ४। आ० ७×४½ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ११३२। अ भण्डार।

४६२६. प्रति सं० २। पत्र स० ५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४६१। ङ भण्डार।

४६३०. पुण्याहवाचन …। पत्र स० ५। आ० ११×५ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-शान्ति विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४७६। अ भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ५५६, १३६१, १८०३) और हैं।

४६३१. प्रति सं० २। पत्र स० ४। ले० काल ×। वे० स० १२२। छ भण्डार।

४६३२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४। ले० काल स० १६०६ ज्येष्ठ बुदी ६। वे० सं० २७। ज भण्डार।

विशेष—प० देवीलालजी ने स्वपठनार्थ किशन से प्रतिलिपि कराई थी।

४६३३. प्रति सं० ४। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १६६४ चैत्र सुदी १०। वे० सं० २००६। ट भण्डार।

४६३४. पुरंदरव्रतोद्यापन'''''। पत्र स० ६। आ० ११×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १९११ आषाढ सुदी ६। पूर्ण। वे० स० ७२। अ भण्डार।

४६३५ पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा—भ० रतनचन्द्र। पत्र स० ५। आ० १०½×७½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल स० १६८१। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २२३। च भण्डार।

विशेष—यह रचना सागवाडपुर मे श्रावकों की प्रेरणा से भट्टारक रतनचन्द ने स० १६८१ मे लिखी थी।

४६३६ प्रति सं० २। पत्र स० १५। ले० काल स० १९२४ आसोज सुदी १०। वे० स० ११७। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति इसी वेष्टन में और है।

४६३७. प्रति सं० ३। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० स० ३८७। ञ भण्डार।

४६३८. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्र स० ६। आ० १०×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५५३। अ भण्डार।

४६३९. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा'''''। पत्र स० ८। आ० १०×४¾ इंच। भाषा–संस्कृत प्राकृत। र० काल ×। ले० काल स० १८६३ द्वि० श्रावण सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० २२२। च भण्डार।

४६४०. पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन—प० गंगादास। पत्र स० ८। आ० ८×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८६६। पूर्ण। वे० स० ४८०। अ भण्डार।

विशेष—गगादास भट्टारक धर्मचन्द के शिष्य थे। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३३६) और हैं।

४६४१ प्रति स० २। पत्र स० ६। ले० काल स० १८८२ आसोज बुदी १४। वे० स० ७८। झ भण्डार।

४६४२. पूजाक्रिया'''''। पत्र स० २। आ० ११½×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा करने की विधि का विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १२३। छ भण्डार।

४६४३. पूजापाठसंग्रह'''''। पत्र स० २ से ४०। आ० ११×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०५५। ट भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० २०७८) और है।

४६४४ पूजापाठसंग्रह'''''। पत्र स० ३८। आ० ७×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १३१९। अ भण्डार।

विशेष—पूजा पाठ के ग्रन्थ प्राय एक से है। अधिकाश ग्रन्थो मे वे ही पूजायें मिलती हैं, फिर भी जिनका विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक है उन्हें यहा दिया जारहा है।

४६४५. प्रति स० २ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १९३७ । वे० सं० ५६० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का सग्रह है।

१. पुष्पदन्त जिनपूजा	—	सस्कृत	
२. चतुर्विंशतिसमुच्चयपूजा		”	
३. चन्द्रप्रभपूजा		”	
४. शान्तिनाथपूजा		”	
५. मुनिसुव्रतनाथपूजा		”	
६. दर्शनस्तोत्र–पद्मनन्दि		प्राकृत	ले० काल सं० १९३७
७. ऋषभदेवस्तोत्र	”	”	

४६४६. प्रति स० ३ । पत्र स० ३० । ले० काल सं० १८९९ द्वि० चैत्र बुदी ५ । वे० सं० ४५३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतियां (वे० सं० ७२९, ७३३, १३७०, २०९७) और हैं।

४६४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२० । ले० काल सं० १८२७ चैत्र सुदी ४ । वे० सं० ४८१ । क भण्डार ।

विशेष—पूजाओ एवं स्तोत्रो का संग्रह है।

४६४८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८५ । ले० काल X । वे० सं० ४८० । क भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें हैं।

पल्यविधानव्रतोद्यापनपूजा	रत्ननन्दि	संस्कृत
वृहद्‌षोडशकारणपूजा	—	”
जेष्ठजिनवरउद्यापनपूजा	—	”
त्रिकालचौबीसीपूजा	—	प्राकृत
चन्दनषष्ठिव्रतपूजा	विजयकीर्त्ति	संस्कृत
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	”
जम्बूद्वीपपूजा	पं० जिनदास	”
अक्षयनिधिपूजा	—	”
कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा	—	”

४६४६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १ से ११६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४६७ । ङ भण्डार ।

विशेष—मुख्य पूजायें निम्न प्रकार हैं—

जिनसहस्रनाम	—	संस्कृत
षोडशकारणपूजा	श्रुतसागर	"
जिनगुणसंपत्तिपूजा	भ० रत्नचंद्र	"
गणधरवलयत्रिंशतिकापूजा	—	"
सारस्वतयंत्रपूजा	—	"
धर्मचक्रपूजा	—	"
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द्र	"

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ४७६, ४७६) और हैं।

४६५०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २७ से ५७ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २२६ । च भण्डार ।

विशेष—सामान्य पूजा एवं पाठो का सग्रह है।

४६५१ प्रति सं० ८ । पत्र स० १०४ । ले० काल X । वे० स० १०४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १३६) और है।

४६५२. प्रति सं० ६ । पत्र स० १२३ । ले० काल सं० १८८४ आसोज सुदी ४ । वे० सं० ४३६ । ञ भण्डार ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है।

४६५३. पूजापाठसंग्रह…… । पत्र सं० २२ । आ० १२×८ इच । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–पूजा पाठ । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७२८ । अ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर, तत्त्वार्थसूत्र आदि पाठो का सग्रह है। सामान्य पूजा पाठोकी इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ८८२, ६६४, १०००) और हैं।

४६५४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल स० १६५३ आषाढ सुदी १४ । वे० सं० ४६८ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० स० ४७४, ४७५, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४६१, ४६२) और हैं।

४६५५ प्रति स० ३ । पत्र स० ४५ से ६१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १६५४ । ट भण्डार ।

४६५६. पूजापाठसंग्रह……….। पत्र सं० ४० । आ० १२×८ इंच। भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३५ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है।

आदिनाथपूजा	मनहरदेव	हिन्दी
सम्मेदशिखरपूजा	—	"
विद्यमानबीसतीर्थङ्करों की पूजा	—	र० काल सं० १६४५
अनुभव विलास		ले० " १६४६
[पदसंग्रह]		हिन्दी

४६५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ७५६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ४७७, ४७८, ४६६, ७६१/२) और है।

४६५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २४१ । छ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजा पाठ है—

चौबीसदण्डक	—	दौलतराम
विनती गुरुओं की	—	भूधरदास
बीस तीर्थङ्कर जयमाल	—	—
सोलहकारणपूजा	—	द्यानतराय

४६५९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १८६० फागुण सुदी २ । वे० सं० २२० । ज भण्डार ।

४६६०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ से २२२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७० । झ भण्डार ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है।

४६६१. पूजापाठसंग्रह—स्वरूपचंद । पत्र सं० । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४६ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

जयपुर नगर सम्बन्धी चैत्यालयों की वंदना	स्वरूपचन्द	हिन्दी
ऋद्धि सिद्धि शतक	"	"
महावीरस्तोत्र	"	"
जिनपञ्जरस्तोत्र	"	"
त्रिलोकसार चौपई	"	"
चमत्कारजिनेश्वरपूजा	"	"
सुगंधीदशमीपूजा	"	"

४६६२. पूजाप्रकरण—उमास्वामी। पत्र सं० २। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १२२। छ भण्डार।

विशेष—पूजक आदि के लक्षण दिये हुये हैं। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमदुमास्वामीविरचितं प्रकरणं ॥

४६६३ पूजामहात्म्यविधि ....। पत्र सं० ३। आ० ११½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा विधि। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २२४। च भण्डार।

४६६४. पूजावरणविधि ....। पत्र सं० ६। आ० ८½×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजाविधि। र० काल ×। ले० काल स० १८२३। पूर्ण। वे० स० १४८७। अ भण्डार।

४६६५ पूजापाठ ....। पत्र सं० १४। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८३६ वैशाख सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० १०६। ग भण्डार।

विशेष—माणकचन्द ने प्रतिलिपि की थी। अन्तिम पत्र बाद का लिखा हुआ है।

४६६६ पूजाविधि ....। पत्र स० १। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७८६। अ भण्डार।

४६६७ पूजाविधि ....। पत्र स० ४। आ० १०×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ११७। ञ भण्डार।

४६६८ पूजाष्टक—आशानन्द। पत्र सं० १। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १२११। अ भण्डार।

४६६९ पूजाष्टक—लोहट। पत्र स० १। आ० १०½×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १२०६। अ भण्डार।

४६७०. पूजाष्टक—अभयचन्द्र। पत्र सं० १। आ० १०½×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १२१०। अ भण्डार।

४६७१. पूजाष्टक....। पत्र सं० १। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १२१३। अ भण्डार।

४६७२. पूजाष्टक ....। पत्र सं० ११। आ० ८¾×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८७८। ट भण्डार।

नाम	कर्त्ता	भाषा
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	संस्कृत
पञ्चकल्याणकपूजा	—	"
चौसठ शिवकुमारका काजी की पूजा	ललितकीर्त्ति	"
गणधरवलयपूजा	—	"
सुगन्धदशमीकथा	श्रुतसागर	"
चन्दनषष्ठीकथा	"	"
षोडशकारणविधानकथा	मदनकीर्त्ति	"
नन्दीश्वरविधानकथा	हरिषेण	"
मेघमालाव्रतकथा	श्रुतसागर	"

४६७६ प्रति सं० ३ । पत्र स० ८० । ले० काल स० १९५६ । वे० स० ४८३ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
सुखसंपत्तिव्रतोद्यापनपूजा	×	संस्कृत
नन्दीश्वरपंक्तिपूजा	×	"
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द्र	"
प्रतिमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा	×	"

विशेष—ताराचन्द [जयसिंह के मन्त्री] ने प्रतिलिपि की थी।

लघुकल्याण	×	संस्कृत
सकलीकरणविधान	×	"

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० स० ४७७, ४७८) और हैं जिनमे सामान्य पूजायें है।

४६७७ प्रति सं० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० १११ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का सग्रह है— सिद्धचक्रपूजा, कलिकुण्डमन्त्रपूजा, आनन्द स्तवन एवं गणधरवलय जयमाल । प्रति प्राचीन तथा मन्त्र विधि सहित है।

४६७८ प्रति स० ५ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० ४६४ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० स० ४६०, ४६४) और है।

४६७६. प्रति सं० ६ । पत्र स० १२ । ले० काल X । वे० सं० २२५ । च भण्डार ।

विशेष—मानुषोत्तर पूजा एवं इक्ष्वाकार पूजा का संग्रह है।

४६८०. प्रति स० ७ । पत्र स० ५५ से ७३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १२३ । छ भण्डार ।

४६८१. प्रति सं० ८ । पत्र स० ३८ से ३१५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २५३ । झ भण्डार ।

४६८२. प्रति सं० ६ । पत्र स० ४५ । ले० काल सं० १८०० आषाढ सुदी १ । वे० स० ६६ । ञ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
धर्मचक्रपूजा	यशोनन्दि	संस्कृत	१–१६
नन्दीश्वरपूजा	—	"	१६–२४
सकलीकरणविधि	—	"	२४–२५
लघुस्वयंभूपाठ	समन्तभद्र	"	२५–२६
अनन्तव्रतपूजा	श्रीभूषण	"	२६–३३
भक्तामरस्तोत्रपूजा	केशवसेन	"	३३–३६

आचार्य विश्वकीर्त्ति की सहायता से रचना की गई थी।

पञ्चमीव्रतपूजा	केशवसेन	"	३६–४५

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ४६६, ४७०) और हैं जिनमे नैमित्तिक पूजायें है।

४६८३. प्रति सं० १० । पत्र स० ८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १८३८ । ट भण्डार ।

४६८४. पूजासंग्रह ....। पत्र स० ३४ । आ० १०३/४X५ इञ्च । संस्कृत, प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २२१५ । अ भण्डार ।

विशेष—देवपूजा, अकृत्रिमचैत्यालयपूजा, सिद्धपूजा, गुर्वावलीपूजा, बीसतीर्थङ्करपूजा, क्षेत्रपालपूजा, षोडश कारणपूजा, क्षीरव्रतनिधिपूजा, सरस्वतीपूजा (ज्ञानभूषण) एवं शान्तिपाठ आदि है।

४६८५. पूजासंग्रह ....। पत्र स० २ से ४५ । आ० ७३/४X५१/२ इच । भाषा-प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २२७ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २२८) और है।

४६८६. पूजासंग्रह ....। पत्र स० ४६७ । आ० १२X५ इञ्च । भाषा-संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी । विषय-संग्रह । र० काल X । ले० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वे० स० ५४० । ञ भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

नाम	कर्त्ता	भाषा	र० काल	ले० काल	पत्र
१ भक्तामरपूजा	—	संस्कृत			
२. सिद्धकूटपूजा	विश्वभूषण	"		सं० १८८६ ज्येष्ठ सुदी ११	
३ बीसतीर्थङ्करपूजा	—	"		×	अपूर्ण
४ नित्यनियमपूजा	—	संस्कृत हिन्दी			
५. अनन्तपूजा	—	संस्कृत			
६. घणावतिक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	"	×	सं० १८८६	पूर्ण
७. ज्येष्ठजिनवरपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	"			
८. नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्त्ति	अपभ्रंश			
९ पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	गङ्गादास	संस्कृत	[मडल चित्र सहित]		
१०. रत्नत्रयपूजा	—	"			
११. प्रतिमासान्त चतुर्दशीपूजा	अखयराम	"	र० काल १८००	ले० काल १८२७	
१२ रत्नत्रयजयमाल	ऋषभदास बुधदास	"		" " १८२६	
१३ बारहव्रतों का ब्योरा	—	हिन्दी			
१४. पचमेरुपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	संस्कृत		ले० काल १८२०	
१५. पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	"			
१६ पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	गङ्गादास	"		ले० काल १८६२	
१७. पचाधिकार	—	"			
१८ पुरन्दरपूजा	—				
१९ अष्टाह्निकाव्रतपूजा	—	"			
२०. परमसप्तस्थानकपूजा	सुधासागर	"			
२१ पल्यविधानपूजा	रत्ननन्दि	"			
२२ रोहिणीव्रतपूजा मडल चित्र सहित	केशवसेन	"			
२३ जिनगुणसपत्तिपूजा	—	"			
२४. सौख्यवाख्यव्रतोद्यापन	अखयराम	"			

२५ कर्मचूरव्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	संस्कृत	
२६. सोलहकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	"	
२७. द्विपंचकल्याणकपूजा	—	"	ले० काल सं० १८३१
२८. गन्धकुटीपूजा	—	"	
२९. कर्मदहनपूजा	—	"	ले० काल सं० १८२८
३०. कर्मदहनपूजा	—	"	
३१. दशलक्षणपूजा	—	"	
३२ षोडशकारणजयमाल	रइधू	अपभ्रंश	अपूर्ण
३३. दशलक्षणजयमाल	भावशर्मा	प्राकृत	
३४. त्रिकालचौबीसीपूजा	—	संस्कृत	ले० काल १८५०
३५ लब्धिविधानपूजा	अभ्रदेव	"	
३६. अकुरारोपणविधि	आशाधर	"	
३७. णमोकारपैंतीसी	कनककीर्त्ति	"	
३८. मौनव्रतोद्यापन	—	"	
३९. शान्तिचक्रपूजा	—	"	
४०. सप्तपरमस्थानकपूजा	—	"	
४१. सुखसंपत्तिपूजा	—	"	
४२. क्षेत्रपालपूजा	—	"	
४३. षोडशकारणपूजा	सुमतिसागर	"	ले० काल १८३०
४४. चन्दनषष्ठीव्रतकथा	श्रुतसागर	"	
४५ णमोकारपैंतीसीपूजा	अक्षयराम	"	ले० काल १८२७
४६. पञ्चमीउद्यापन	—	संस्कृत हिन्दी	
४७ त्रिपञ्चाशतक्रिया	—	"	
४८. कञ्जिकाव्रतोद्यापन	—	"	
४९. मेघमालाव्रतोद्यापन	—	"	
५०. पञ्चमीव्रतपूजा	—	"	ले० काल १८२७

५१. नवग्रहपूजा	—	संस्कृत हिन्दी	
५२. स्नपनपूजा	—	,,	ले० काल १८१७
५३. दशलक्षणजयमाल	रइधू	अपभ्रंश	

टब्बा टीका सहित है।

४९८७. पूजासंग्रह ......। पत्र सं० १११ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ११० । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

अनन्तव्रतपूजा	X	हिन्दी	र० काल सं० १८९८
सम्मेदशिखरपूजा	X	,,	
निर्वाणक्षेत्रपूजा	X	,,	र० काल सं० १८१७
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	X	,,	र० काल सं० १८६७
गिरनारक्षेत्रपूजा	X	,,	
वास्तुपूजाविधि	X	संस्कृत	
नांदीमंगलपूजा	X	,,	
शुद्धिविधान	देवेन्द्रकीर्त्ति	,,	

४९८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल X । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

४९८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८५ । ले० काल X । वे० सं० ३९ । झ भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है—

पञ्चकल्याणकमंगल	रूपचन्द	हिन्दी	पत्र १-३
पञ्चकल्याणकपूजा	X	संस्कृत	,, ४-१२
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	टेकचन्द	हिन्दी	,, १३-२१
पञ्चपरमेष्ठीपूजाविधि	यशोनन्दि	संस्कृत	,, २२-४६
[illegible]पूजा	टेकचन्द	हिन्दी	,, १-११
[illegible]विधान	,,	,,	,, १२-२२

४९९०. प्रति सं० ४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १८६० । ट भण्डार ।

४९९१ पूजा एवं कथा संग्रह—खुशालचन्द । पत्र सं० ५० । आ० ८X४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल स० १८७३ पौष बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ५६१ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं तथा कथाओं का संग्रह है ।

चन्दनषष्ठीपूजा, दशलक्षणपूजा, षोडशकारणपूजा, रत्नत्रयपूजा, अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा व पूजा । तप लक्षणकथा, मेरुपक्ति तप की कथा, सुगन्धदशमीव्रतकथा ।

४९९२. पूजासंग्रह—हीराचन्द । पत्र स० ५१ । आ० ६¾X५¾ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ४८२ । क भण्डार ।

४९९३. पूजासंग्रह । पत्र सं० ६ । आ० ८¾X७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७२७ । अ भण्डार ।

विशेष—पंचमेरु पूजा एवं रत्नत्रय पूजा का संग्रह है ।

इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ७३४, ९७१, १३१६, १३७७) और है जिनमे सामान्य पूजाये हैं ।

४९९४ प्रति स० २ । पत्र स० १९ । ले० काल X । वे० सं० ६० । ग भण्डार ।

४९९५. प्रति स० ३ । पत्र सं० ४३ । ले० काल X । वे० स० ४७६ । क भण्डार ।

४९९६ प्रति सं० ४ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १९५५ मंगसिर बुदी २ । वे० स० ७३ । घ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

देवपूजा, सिद्धपूजा एवं शान्तिपाठ, पंचमेरु, नन्दीश्वर, सोलहकारण एवं दशलक्षण पूजा द्यानतराय कृत । अनन्तव्रतपूजा, रत्नत्रयपूजा, सिद्धपूजा एवं शास्त्रपूजा ।

४९९७. प्रति सं० ५ । पत्र स० ७५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ४८६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० ४८७, ४८८, ४८९, ४८५, ४९३) और हैं जो सभी अपूर्ण है ।

४९९८ प्रति स० ६ । पत्र स० ८५ । ले० काल X । वे० स० ६३७ । च भण्डार ।

४९९९ प्रति सं० ७ । पत्र स० ३२ । ले० काल X । वे० स० २२२ । छ भण्डार ।

५००० प्रति स० ८ । पत्र स० १३८ ले० काल X । वे० स० १२२ । ज भण्डार ।

विशेष—पंचकल्याणकपूजा, पंचपरमेष्ठीपूजा एवं नित्य पूजायें है ।

५००१ प्रति स० ९ । पत्र स० ३८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १६३५ । ट भण्डार ।

५००२. पूजासंग्रह—रामचन्द्र। पत्र स० २०। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४६५। क भण्डार।

विशेष—आदिनाथ से चन्द्रप्रभ तक की पूजायें हैं।

५००३. पूजासार ……। पत्र सं० ८६। आ० १०×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा एव विधि विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४५४। अ भण्डार।

५००४. प्रति स० २। पत्र स० ४७। ले० काल ×। वे० सं० २२६। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २३०) और है।

५००५. प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—अक्षयराम। पत्र स० १४। आ० १०×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०० भादवा सुदी १४। पूर्ण। वे० स० ५८७। अ भण्डार।

विशेष—दीवान ताराचन्द ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

५००६. प्रति स० २। पत्र सं० १४। ले० काल स० १८०० भादवा बुदी १०। वे० स० ४८४। क भण्डार।

५००७ प्रति स० ३। पत्र स० १०। ले० काल स० १८०० चैत्र सुदी ५। वे० स० २६५। ञ भण्डार।

५००८. प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—रामचन्द्र। पत्र स० १२। आ० १२½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८०० चैत्र सुदी १४। पूर्ण। वे० स० ३८६। ञ भण्डार।

विशेष—श्री जयसिंह महाराज के दीवान ताराचन्द श्रावक ने रचना कराई थी।

५००९. प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा ……। पत्र स० १३। आ० १०×७½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८००। पूर्ण। वे० स० ५००। क भण्डार।

५०१०. प्रति स० २। पत्र स० २७। ले० काल सं० १८७६ आसोज बुदी ६। वे० स० २३३। च भण्डार।

विशेष—सदासुख बाकलीवाल मोहा का ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। दीवान अमरचन्दजी सगही ने प्रतिलिपि करवाई थी।

५०११. प्रतिष्ठादर्श—भ० श्री राजकीर्त्ति। पत्र स० २१। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा (विधान)। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५०१ क भण्डार।

५०१२. प्रतिष्ठादीपक—पंडिताचार्य नरेन्द्रसेन। पत्र सं० १४। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १८६१ चैत्र बुदी १५। पूर्ण। वे० सं० ५०२। ड भण्डार।

विशेष—भट्टारक राजकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी।

५०१३. प्रतिष्ठापाठ—आ० वसुनन्दि (अपर नाम जयसेन)। पत्र सं० १३६। आ० ११½×८½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १९४६ कार्त्तिक सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ४८५। क भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम प्रतिष्ठासार भी हैं।

५०१४. प्रति सं० २। पत्र सं० ११७। ले० काल सं० १९४९। वे० सं० ४८७। क भण्डार।

विशेष—३९ पत्रो पर प्रतिष्ठा सम्बन्धी चित्र दिये हुये हैं।

५०१५. प्रति सं० ३। पत्र सं० १५५। ले० काल सं० १९४६। वे० सं० ४८६। क भण्डार।

विशेष—वालावक्स व्यास ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। अन्त में एक अतिरिक्त पत्र पर अङ्कस्थापनार्थ मूर्त्ति का रेखाचित्र दिया हुआ है। उसमे अङ्क लिखे हुये हैं।

५०१६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७१। ज भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमत्कुंदकुदाचार्य पट्टोदयभूधरदिवामरिण श्रीवसुविन्द्वाचार्येण जयसेनापरनामकेन विरचितः। प्रतिष्ठासार पूर्णमगमतः।

५०१७. प्रतिष्ठापाठ—आशाधर। पत्र सं० ११९। आ० ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र० काल सं० १२८५ आसोज सुदी १५। ले० काल सं० १८८४ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १२। ज भण्डार।

५०१८. प्रतिष्ठापाठ""""। पत्र सं० १। आ० ३½ गज लंबा १० इंच चौडा। भाषा-सस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १५१६ ज्येष्ठ बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ४०। ञ भण्डार।

विशेष—यह पाठ कपडे पर लिखा हुआ है। कपडे पर लिखी हुई ऐसी प्राचीन चीजें कम ही मिलती हैं। यह कपडे की १० इंच चौडी पट्टी पर सिमटता हुआ है। लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

॥६०॥ सद्धिः ॥ श्री नमो वीतरागाय॥ सवतु १५१६ वर्षे ज्येष्ठ बुदी १३ तेरसि सोमवासरे अश्विनि नक्षत्रे श्रीदृष्टकापथे श्रीसर्वज्ञचैत्यालये श्रीमूलसंघे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्रीरत्नकीर्त्ति देवा. तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवा. तत्पट्टे श्रीपद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे श्रीशुभचन्द्रदेवा॥ तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः॥

५०१६. प्रति स० २ । पत्र स० ३५ । ले० काल स० १८६१ चैत्र बुदी ४ । अपूर्ण । वे० स० ५०४ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे प्रथम ६ पद्य मे प्रतिष्ठा मे काम आने वाली सामग्री का विवरण दिया हुआ है ।

५०२० प्रतिष्ठापाठभाषा—बाबा दुलीचंद । पत्र स० २६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८६ । क भण्डार ।

विशेष—मूलकर्त्ता आचार्य वसुविन्दु हैं । इनका दूसरा नाम जयसेन भी दिया हुआ है । दक्षिण में कुकुण नामके देश सह्द्याचल के समीप रत्नगिरि पर लालाह नामक राजाका बनवाया हुआ विशाल चैत्यालय है । उसकी प्रतिष्ठा होने के निमित्त ग्रन्थ रचा गया ऐसा लिखा है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४६०) और है ।

५०२१. प्रतिष्ठाविधि ...... । पत्र स० १७६ से १६६ । आ० ११×४½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५०३ । ङ भण्डार ।

५०२२ प्रतिष्ठासार—प० शिवजीलाल । पत्र स० ६६ । आ० १२×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १६५१ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ४६१ । क भण्डार ।

५०२३. प्रतिष्ठासार...... । पत्र स० ८५ । आ० १२½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १६३७ आषाढ सुदी १० । वे० स० २८६ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी । पत्रो के नीचे के भाग पानी से गले हुये हैं ।

५०२४ प्रतिष्ठासारसंग्रह—आ० वसुनन्दि । पत्र स० २१ । आ० १३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२१ । अ भण्डार ।

५०२५ प्रति स० २ । पत्र स० ३४ । ले० काल स० १६६० । वे० स० ४५६ । अ भण्डार ।

५०२६ प्रति सं० ३ । पत्र स० २७ । ले० काल सं० १६७७ । वे० स० ४६२ । क भण्डार ।

५०२७. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १७३६ बैशाख बुदी १३ । अपूर्ण । वे० स० ६८ । छ भण्डार ।

विशेष—तीसरे परिच्छेद से है ।

५०२८. प्रतिष्ठासारोद्धार ...... । पत्र स० ७६ । आ० १०¾×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३४ । च भण्डार ।

५०२६ प्रतिष्ठासूक्तिसंग्रह ...... । पत्र स० २१ । आ० १३×८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल सं० १६५१ । पूर्ण । वे० स० ४६३ । क भण्डार ।

५०३०. प्राणप्रतिष्ठा…… । पत्र सं० ३ । आ० ९३/४×६३/४ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-विधान र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७ । ज भण्डार ।

५०३१. बाल्यकालवर्णन ……। पत्र स० ४ से २३ । आ० ६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय विधि विधान । र० काल × । ले० काल × अपूर्ण । वे० स० २६७ । ख भण्डार ।

विशेष—बालक के गर्भमे आने के प्रथम मास से लेकर दशवें वर्ष तक के हर प्रकार के सास्कृतिक विधा का वर्णन है ।

५०३२. बीसतीर्थङ्करपूजा—थानजी अजमेरा । पत्र सं० ५८ । आ० १२३/४×८ इंच । भाषा-हिन्दी विषय-विदेह क्षेत्र के विद्यमान बीस तीर्थङ्करो की पूजा । र० काल स० १९३४ आसोज सुदी ९ । ले० काल × । पू वे० स० २०६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे इसी वेष्टन मे एक प्रति और है ।

५०३३. बीसतीर्थङ्करपूजा…… । पत्र स० ५३ । आ० १३×७३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा र० काल × । ले० काल स० १९४५ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३२२ । ज भण्डार ।

५०३४ प्रति सं० २ । पत्र स० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७१ । झ भण्डार ।

५०३५ भक्तामरपूजा—श्री ज्ञानभूषण । पत्र स० १० । आ० ११×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विष पूजा । र० काल × ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३६ । ङ भण्डार ।

५०३६ भक्तामरपूजाउद्यापन—श्री भूषण । पत्र स० १३ । आ० ११×५ इंच । भाषा-सस्कृत विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २५२ । च भण्डार ।

विशेष— १०, ११, १२वा पत्र नही है ।

५०३७. प्रति सं० २ । पत्र स० ८ । ले० काल सं० १८५८ प्र० ज्येष्ठ सुदी ३ । वे० सं० १२२ । भण्डार ।

विशेष—नेमिनाथ चैत्यालय मे हरवशलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५०३८ प्रति स० ३ । पत्र स० १३ । ले० काल सं० १८९३ श्रावण सुदी ५ । वे० स० १२० । भण्डार ।

५०३९. प्रति सं० ४ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १९११ आसोज बुदी १२ । वे० स० ५० झ भण्डार ।

विशेष—जयमाला हिन्दी मे है ।

५०४०. भक्तामरव्रतोद्यापनपूजा—विश्वकीर्त्ति । पत्र स० ७ । आ० १०३/४×५ इंच । भाषा-संस्कृत विषय-पूजा । र० काल स० १६६९ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । ङ भण्डार ।

विशेष— निधि निधि रस चन्द्रोसख्य सवत्सरेहि
विशदनभसिमासे सप्तमी मदवारे।
नलवरवरदुर्गे चन्द्रनाथस्य चैत्ये
विरचितमिति भक्त्या केशवामतसेन ॥

५०४१. प्रति सं० २। पत्र स० ८। ले० काल X। वे० सं० ५३८। ङ भण्डार।

५०४२. भक्तामरस्तोत्रपूजा……। पत्र स० ८। आ० ११X५ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय पूजा। काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ५३७। अ भण्डार।

५०४३. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल X। वे० स० २५१। च भण्डार।

५०४४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल X। वे० स० ४४४। ञ भण्डार।

५०४५. भाद्रपदपूजासंग्रह—द्यानतराय। पत्र स० २६ से ३६। आ० १२½X७½ इ च। भाषा-ी। विषय-पूजा। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २२२। छ भण्डार।

५०४६. भाद्रपदपूजासंग्रह…… ……। पत्र सं० २४ से ३६। आ० १२½X७½ इ च। भाषा-हिन्दी। य-पूजा। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २२२। छ भण्डार।

५०४७. भावजिनपूजा……। पत्र सं० १। आ० ११½X५½ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २००७। ट भण्डार।

५०४८. भावनापच्चीसीव्रतोद्यापन…… ……। पत्र स० ३। आ० १२½X६ इच। भाषा-सस्कृत। ाय-पूजा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३०२। ख भण्डार।

५०४९. मंडलों के चित्र…… …… ……। पत्र स० १४। आ० ११X५ इ च। भाषा हिन्दी। विषय-पूजा न्धी मण्डलो का चित्र। ले० काल X। वे० स० १३८। ख भण्डार।

विशेष—चित्र सं० ५२ है। निम्नलिखित मण्डलो के चित्र हैं—

१. श्रुतस्कध	(कोष्ठ २)	७ ऋषिमडल	(" ५६)
२. श्रेपनक्रिया	(कोष्ठ ५३)	८. सप्तऋषिमडल	(" ७)
३. बृहद्सिद्धचक्र	(" ९६)	९. सोलहकारण	(" २५६)
४. जिनगुणसंपत्ति	(" १०९)	१०. चौबीसीमहाराज	(" १२०)
५. सिद्धकूट	(" १०९)	११ शांतिचक्र	(" २४)
६ चिंतामणिपार्श्वनाथ	(" ५६)	१२. भक्तामरस्तोत्र	(" ४८)

१३ बारहमासकी चौदस (कोष्ठ १६६) ४
१४. पाचमाह की चौदस („ २५)
१५ अरणतका मंडल („ १६६)
१६. मेघमालाव्रत („ १५०)
१७. रोहिणीव्रत (कोष्ठ ६१)
१८ लब्धिविधान („ ८१)
१९. रत्नत्रय („ २९)
२०. पञ्चकल्याणक („ १२०)
२१. पञ्चपरमेष्ठी („ १६३)
२२. रविवारव्रत („ ८१)
२३. मुक्तावली („ ८१)
२४. कर्मदहन („ १४८)
२५. काजीवारस („ ६४)
२६. कर्मचूर („ ६४)
२७ ज्येष्ठजिनवर („ ४६)
२८. बारहमाहकी पञ्चमी („ ६५)
२९. चारमाह की पञ्चमी („ २५)
३०. फलफादल [पञ्चमेरु] („ २५)
३१. पाचवासो का मडल („ २५)
३२. अंकुरारोपण (कोष्ठ)
३३. गणधरवलय („ ४८)
३४. नवग्रह („ ९)
३५. सुगन्धदशमी („ ६०)
३६. सारसुतयन्त्रमडल („ २८)
३७. शास्त्रजी का मडल („ १२)
३८. अक्षयनिधिमडल („ १५०)
३९. अठाई का मडल („ ५२)
४०, अंकुरारोपण („ —)
४१. कलिकुंडपार्श्वनाथ („ ८)
४२. विमानशुद्धिशातिक („ १०८)
४३. वासठकुमार („ ५२)
४४. धर्मचक्र („ १५७)
४५. लघुशान्तिक („ —)
४६ विमानशुद्धिशान्तिक („ ८१)
४७. छिनवे क्षेत्रपाल व चौवीस तीर्थङ्कर („ २४)
४८. श्रुतज्ञान („ १५८)
४९. दशलक्षण („ १००)

५०५०. प्रति सं० २ । पत्र स० १४ । ले० काल X । वे० स० १३८ क । ख भण्डार ।

५०५१. मडपविधि .... । पत्र स० ४ । आ० ६X४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल X । ले० काल स० १८७८ । पूर्ण । वे० स० १२४० । अ भण्डार ।

५०५२ मडपविधि........... । पत्र सं० १ । आ० ११½X५½ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–विधि विधान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १८८ । मू भण्डार ।

५०५३. मध्यलोकपूजा .... । पत्र स० ५६ । आ० ११½X४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२५ । छ भण्डार ।

५०५४. महावीरनिर्वाणपूजा"...... । पत्र सं० ३ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८२१ । पूर्ण । वे० सं० ६१० । अ भण्डार ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड गाथा प्राकृत मे और है ।

५०५५ महावीरनिर्वाणकल्याणपूजा......... । पत्र सं० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२०० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १२१६) और है ।

५०५६ महावीरपूजा—वृन्दावन । पत्र सं० ६ । आ० ८×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५०५७. मांगीतुङ्गीगिरिमंडलपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० १३ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १७५६ । ले० काल सं० १६४० वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १४२ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १८ पद्यो मे विश्वभूषण कृत शतनाम स्तोत्र है ।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्रीमूलसंघे दिनकृद्विभाति श्रीकुन्दकुन्दाख्यमुनीद्रचन्द्र. ।
महद्‌बलात्कारगणादिगच्छे लब्धप्रतिष्ठा किलपद्मनाम ।।१।।

जातोऽसौ किलधर्म्मकीर्तिरमल वादीभ सार्दूलवत्त
साहित्यागमतर्क्कपाठनपटुश्चारित्रभारोद्वह ।
तत्पट्टे मुनिशीलभूषणगणि शीलाबरवेष्टित.
तत्पट्टे मुनि ज्ञानभूषणमहान सौख्यत्कला केवली

श्रीमज्जगद्‌भूषनत्रैदभूषनैयायिकाचारविचारदक्ष: ।
कवीन्द्रचन्द्रोरिव कालिदास पट्टे तदीये रभवत्प्रतापी ।।३।।

तत्पट्टे प्रकटो जात विश्वभूषण योगिन. ।
तेनेद रचितो यत्र भव्यारमासुख हेतवे ।।४।।

षट्वह्नि रिषिश्चन्द्रवासरे माघमासके
एकादश्यामगमत्पूर्णमेवात्मलिकपुरे ।।५।।

५०५८ प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० १६७६ । ठ भण्डार

विशेष—मागी तु गी की कमलाकार मण्डल रचना भी है । पत्रो का कुछ हिस्सा चूहोने काट रखा

५०५९. मुकुटसप्तमीव्रतोद्यापन ...। पत्र सं० २। आ० १२½×६ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९२८। पूर्ण। वे० स० ३०२। ख भण्डार।

५०६०. मुक्तावलीव्रतपूजा ....। पत्र सं० २। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २७४। च भण्डार।

५०६१. मुक्तावलीव्रतोद्यापनपूजा...... ....। पत्र सं० १६। आ० ११½×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८९९। पूर्ण। वे० सं० २७६। च भण्डार।

विशेष—महात्मा जोशी पन्नालाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

५०६२ मुक्तावलीव्रतविधान ... ...। पत्र सं० २४। आ० ८½×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा एव विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १९२५। पूर्ण। वे० स० २४८। ख भण्डार।

५०६३. मुक्तावलीपूजा—वर्णी सुखसागर। पत्र सं० ३। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५९५। ङ भण्डार।

५०६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ५९६। ङ भण्डार।

५०६५. मेघमालाविधि ... ...। पत्र स० ६। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्रत विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८९९। अ भण्डार।

५०६६. मेघमालाव्रतोद्यापनपूजा ... ...। पत्र सं० ३। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्रत पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८६२। पूर्ण। वे० सं० ५८०। अ भण्डार।

५०६७. रत्नत्रयउद्यापनपूजा ...। पत्र स० २६। आ० ११⅞×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १९२९। पूर्ण। वे० सं० ११६। छ भण्डार।

विशेष—१ अपूर्ण प्रति और है।

५०६८. प्रति स० २। पत्र स० ३०। ले० काल ×। वे० स० ६९। झ भण्डार।

५०६९. रत्नत्रयजयमाल ...। पत्र स० ४। आ० १०½×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २६७। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २७१) और है।

५०७०. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल स० १९१२ भादवा सुदी १। पूर्ण। वे० सं० १५८। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १५९) और है।

५०७१. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल X । वे० स० ६४३ । क भण्डार ।

५०७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल स० १८६२ भादवा सुदी १२ । वे० स० २६७ । च भण्डार ।

५०७३ प्रति सं० ५ । पत्र स० ५ । ले० काल X । वे० स० २०० । म्ह भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २०१) और है ।

५०७४. रत्नत्रयजयमाल ····· । पत्र सं० ६ । आ० १०X७ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल स० १८३३ । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । पत्र ५ से अनन्तव्रतकथा श्रुतसागर कृत तथा अनन्त नाथ पूजा दी हुई हैं ।

५०७५. प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल सं० १८१६ सावन सुदी १३ । वे० स० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया इसी वेष्टन मे और हैं ।

५०७६. रत्नत्रयजयमाल ····· । पत्र सं० ६ । आ० १०½X४½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १८२७ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ६८२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७४१) और हैं ।

५०७७. प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल X । वे० स० ७४४ । च भण्डार ।

५०७८. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३ । ले० काल X । वे० स० २०३ । म्ह भण्डार ।

५०७६ रत्नत्रयजयमालाभाषा—नथमल । पत्र स० ५ । आ० १२X७½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १६२२ फागुन सुदी ८ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६६३ । अ भण्डार ।

५०८०. प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १६३७ । वे० स० ६३१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० ६२६, ६३०, ६२७, ६२८, ६२५) और है ।

५०८१. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल X । वे० स० ८५ । घ भण्डार ।

५०८२ प्रति सं० ४ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६२८ कात्तिक बुदी १० । वे० स० ६४४ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६४४, ६४६) और हैं ।

५०८३ प्रति स० ५ । पत्र स० ७ । ले० काल X । वे० सं० १६० । छ भण्डार ।

५०८४. रत्नत्रयजयमाल ....। पत्र सं० ३। आ० ११३/४X४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल X। ले० काल X। वे० स० ६३६। क भण्डार।

५०८५. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल X। वे० स० ६६७। च भण्डार।

५०८६. प्रति सं० ३। पत्र स० ५। ले० काल सं० १६०७ द्वि० आसोज बुदी १। वे० सं० १८५। झ भण्डार।

५०८७. रत्नत्रयपूजा—पं० आशाधर। पत्र सं० ४। आ० ८१/२X४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ११११०। अ भण्डार।

५०८८ रत्नत्रयपूजा—केशवसेन। पत्र स० १२। आ० ११X५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २६६। च भण्डार।

५०८६. प्रति स० २। पत्र सं० ८। ले० काल X। वे० सं० ४७६। ञ भण्डार।

५०६०. रत्नत्रयपूजा—पद्मनन्दि। पत्र सं० १३। आ० १०१/२X५१/२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३००। च भण्डार।

५०६१. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १८६३ मंगसिर बुदी ६। वे० सं० ३०५। च भण्डार।

५०६२. रत्नत्रयपूजा ....। पत्र सं० १५। आ० ११X५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल X। ले० काल X पूर्ण। वे० स० ४७८। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ५८३, ६६६, १२०५, २१५६) और हैं।

५०६३. प्रति स० २। पत्र स० ४। ले० काल स० १६८१। वे० सं० ३०१। ख भण्डार।

५०६४. प्रति सं० ३। पत्र स० १४। ले० काल X। वे० सं० ८६। घ भण्डार।

५०६५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १६१६। सं० वे० ६४७। ङ भण्डार।

विशेष—छोटूलाल अजमेरा ने विजयलाल कासलीवाल से प्रतिलिपि करवायी थी।

५०६६. प्रति सं० ५। पत्र स० १८। ले० काल सं० १८५८ पौष सुदी ३। वे० स० ३०१। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ३०२, ३०३, ३०४) और हैं।

५०६७. प्रति स० ६। पत्र सं० ८। ले० काल X। वे० सं० ६०। ञ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४८२, ५२६) और है।

५०६८. प्रति सं० ७। पत्र सं० ७। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १६७५। ट भण्डार।

५०६६. रत्नत्रयपूजा—द्यानतराय। पत्र सं० २ से ५। आ० १०३/४X५१/२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल X। ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी ३। अपूर्ण। वे० स० ६३३। क भण्डार।

५१०० प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । वे० स० ३०१ । ज भण्डार ।

५१०१ रत्नत्रयपूजा—ऋषभदास । पत्र सं० १७ । आ० १२X५½ इंच । भाषा-हिन्दी (पुरानी) विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १८४६ पौष बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ४६६ । अ भण्डार ।

५१०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । आ० १२½X५½ इंच । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३८५ । ञ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत प्राकृत तथा अपभ्रंश तीनो ही भाषा के शब्द हैं ।

अन्तिम— सिहि रित्तिकित्ति मुहसीसे,
रिसह दास बुहवास भणीसे ।
इय तेरह पयार चारित्तउ,
संखेवे भानिय उपवित्तउ ॥

५१०३. रत्नत्रयपूजा.......... । पत्र सं० ५ । आ० १२X८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७४२ । अ भण्डार ।

५१०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४३ । ले० काल X । वे० सं० ६२२ । क भण्डार ।

५१०५. प्रति स० ३ । पत्र स० ३३ । ले० काल सं० १९९४ पौष बुदी २ । वे० स० ६४२ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६४८) और है ।

५१०६. प्रति स० ४ । पत्र स० ९ । ले० काल X । वे० स० १०६ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०६) और है ।

५१०७. प्रति स० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १९७८ । वे० स० २१० । छ भण्डार ।

५१०८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३ । ले० काल X । वे० स० ३१८ । ञ भण्डार ।

५१०९ रत्नत्रयमंडलविधान........। पत्र सं० ३५ । आ० १०X६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । वे० सं० ५७ । अ भण्डार ।

५११० रत्नत्रयविधानपूजा—पं० रत्नकीर्त्ति । पत्र स० ८ । आ० १०X४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं विधि विधान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६५१ । ङ भण्डार ।

५१११ रत्नत्रयविधान...... । पत्र स० १२ । आ० १०¾X४¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एव विधि विधान । र० काल X । ले० काल सं० १८८२ फागुन सुदी ३ । वे० स० १९९ । ज भण्डार ।

५११२. रत्नत्रयविधानपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० ३६ । आ० १३×७½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६७७ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । ग भण्डार ।

५११३ प्रति स० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० १६७ । म भण्डार ।

५११४ रत्नत्रयव्रतोद्यापन " ...... । पत्र सं० ६ । आ० ७×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० कालं × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६५० । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६५३) और है ।

५११५ रत्नावलीव्रतविधान—ब्र० कृष्णदास । पत्र सं० ७ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-विधि विधान एव पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६८५ चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । अ भण्डार ।

विशेष-प्रारम्भ— श्री वृषभदेवसत्यः श्रीसरस्वत्यै नमः ॥

जय जय नाभि नरेन्द्रसुत सुरगण सेवित पाद ।
तत्व सिंधु सागर ललित योजन एक निनाद ॥

सारद गुरु चरणे नमी नमु निरञ्जन हंस ।
रत्नावलि तप विधि कहु तिम वाधि सुख वश ॥२॥

चुपई— जंबूद्वीप भरत उदार, वडू ंवड़ी धरणीधर सार ।
तेह मध्य एक आर्य सुखंड, पञ्चम्लेक्षधर्मांति अखंड ॥

चद्रपुरी नयरी उद्दाम, स्वर्गलोक सम दीसिधाम ।
उच्चैस्तर जिनवर प्रासाद, झल्लर ढोल पटहशत नाद ॥

अन्तिम— अनुक्रमि सुतमि देईराज, दिक्षा लेई करि आतम काज ।
मुक्ति काम नृप हुउ प्रमाण, ए ब्रह्म पूरमल्लह वाण ॥१८॥

दूहा— रत्नावलि विधि आदरु, भावि सू ं नरनारि ।
तिम मन वछित फल लहु, भाषु भव विस्तारि ॥१६॥

मनह मनोरथ सपजि होई, नारी वेद विछेद ।
पाप पङ्क सवि कुभाभि, रत्नावलि बहु भेद ।

जे कसिमुणसि सुविधि, त्रिभुवन होइ तस दास ।
हर्ष सुत नकुल कमल रवि, कहि ब्रह्म कृष्ण उल्लास ॥

इति श्री रत्नावली व्रत विधान निरुपण श्री पास भवातर सम्बन्ध समाप्त ॥

स० १६८५ वर्षे चैत्र सुदी २ सोमे ब्र० कृष्णदास पूरनमल्लजी-तत्शिष्य ब्र० वर्द्धमान लिखित ॥

५११६. रविव्रतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० ६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५०१ । अ भण्डार ।

५११७. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८०८ । वे० स० १०६० । अ भण्डार ।

५११८. रेवानदीपूजा—विश्वभूषण । पत्र स० ६ । आ० १२½×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल स० १७३६ । ले० काल स० १९४० । पूर्ण । वे० स० ३०३ । ख भण्डार ।

विशेष—अन्तिम—   सरत्समेषेटत्रितत्वचन्द्रे फाल्गुन्यमासे किल कृष्णपक्षे ।
                                नवरगग्रामे परिपूर्णतास्यु. भव्या जनाना प्रददातु सिद्धि ॥

इति श्री रेवानदी पूजा समाप्ता ।

इसका दूसरा नाम आहूठ कोटि पूजा भी है ।

५११९. रैदव्रत—गंगाराम । पत्र स० ४ । आ० १३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० स० ४३६ । व्य भण्डार ।

५१२०. रोहिणीव्रतमंडलविधान—केशवसेन । पत्र स० १४ । आ० ६¾×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा विधान । र० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० ७३८ । अ भण्डार ।

विशेष—जयमाला हिन्दी में है । इसी भण्डार में २ प्रतियां वे० स० ७३६, १०६४) और हैं ।

५१२१. प्रति सं० २ । पत्र स० ११ । ले० काल स० १८६२ पौष सुदी १३ । वे० स० १३४ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २०२, २९२) और हैं ।

५१२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल स० १९७९ । वे० स० ६१ । व्य भण्डार ।

५१२३. रोहिणीव्रतोद्यापन " । पत्र स० ५ । आ० ११×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५५८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ७४०) और है ।

५१२४. प्रति सं० २ । पत्र स० १० । ले० काल स० १९२२ । वे० स० २९२ । ख भण्डार ।

५१२५. प्रति स० ३ । पत्र स० ९ । ले० काल × । वे० स० ६६६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६६५) और है ।

५१२६. प्रति स० ४ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ३२४ । ज भण्डार ।

५१२७. लघुअभिषेकविधान ...... । पत्र सं० ३ । आ० १२½×५½ इंच । भाषा संस्कृत । विषय- भगवान के अभिषेक की पूजा व विधान । र० काल × । ले० काल स० १९६६ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० १७७ । ज भण्डार ।

५१२८. लघुकल्याण ...... । पत्र सं० ८ । आ० १२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अभिषेक विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३७ । क भण्डार ।

५१२९. प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० सं० १८२९ । ट भण्डार ।

५१३०. लघुअनन्तव्रतपूजा ...... । पत्र सं० ३ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय- पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८३९ आसोज बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १८५७ । ट भण्डार ।

५१३१. लघुशातिकपूजाविधान ...... । पत्र सं० १५ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९०६ माघ बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० ७३ । अ भण्डार ।

५१३२. प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १८९० । अपूर्ण । वे० स० ८८३ । अ भण्डार ।

५१३३. प्रति स० ३ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १९७१ । वे० स० ६९० । ढ भण्डार ।

विशेष—राजूलाल भौंसा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

५१३४. प्रति स० ४ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८८६ । वे० स० ११९ । छ भण्डार ।

५१३५. प्रति स० ५ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० १४२ । ज भण्डार ।

५१३६. लघुश्रेयविधि—अभयनन्दि । पत्र स० ९ । आ० १०½×७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय- विधि विधान । र० काल × । ले० काल स० १९०६ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० स० १५८ । ज भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम श्रेयोविधान भी है ।

५१३७. लघुस्नपनटीका—पं० भावशर्मा । पत्र स० २२ । आ० १२×१५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अभिषेक विधि । र० काल स० १५६० । ले० काल स० १८१५ कार्त्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० २३२ । अ भण्डार ।

५१३८. लघुस्नपन ...... । पत्र सं० ५ । आ० ८×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अभिषेक विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७३ । ग भण्डार ।

५१३९. लब्धिविधानपूजा—हर्षकीर्त्ति । पत्र स० २ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२०९ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १९४९) और है ।

५१४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० ६६४ । ङ भण्डार ।

५१४१ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल । वे० स० ७७ । म्ह भण्डार ।

५१४२ लब्धिविधानपूजा" । पत्र सं० ६ । आ० ११X५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ४७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४६४, २०२०) और हैं ।

५१४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० स० १६८ । ख भण्डार ।

५१४४. प्रति सं० ३ । पत्र स० १० । ले० काल X । वे० स० ८७ । घ भण्डार ।

५१४५ प्रति स० ४ । पत्र स० १० । ले० काल स० १६२० । वे० स० ६६३ । ङ भण्डार ।

५१४६. प्रति सं० ५ । पत्र स० ६ । ले० काल X । वे० स० ३१८ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३१६, ३२०) और हैं ।

५१४७. प्रति स० ६ । पत्र स० ७ । ले० काल X । वे० स० ११७ । छ भण्डार ।

५१४८ प्रति सं० ७ । पत्र स० २ से ८ । ले० काल स० १६०० भादवा सुदी १ । अपूर्ण । वे० स० ३१७ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १६७) और है ।

५१४६ प्रति स० ८ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १६१२ । वे० स० २१४ । म्ह भण्डार ।

५१५०. प्रति सं० ६ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १८८७ माह सुदी १ । वे० सं० ५३ । ञ भण्डार ।

विशेष—मडल का चित्र भी दिया हुआ है ।

५१५१. लब्धिविधानव्रतोद्यापनपूजा" " ""। पत्र सं० ६ । आ० ११X५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल स० भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ७४ । ग भण्डार ।

विशेष—मन्नालाल कासलीवाल ने प्रतिलिपि करके चौधरियो के मन्दिर मे चढाई ।

५१५२. प्रति स० २ । पत्र सं० १० । ले० काल X । वे० सं० १७६ । म्ह भण्डार ।

५१५३ लब्धिविधानपूजा—ज्ञानचन्द । पत्र स० २१ । आ० ११X८ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १६५३ । ले० काल स० १६६२ । पूर्ण । वे० स० ७४४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ७४३, ७४४/१) और हैं ।

५१५४ लब्धिविधानपूजा । पत्र स० ३५ । आ० १२X५½ इ च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६७० । च भण्डार ।

५१५५. लब्धिविधानउद्यापनपूजा .... । पत्र स० ८ । आ० ११३/४×५३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९१७ । पूर्ण । वे० स० ६६२ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ६६१) और है।

५१५६. प्रति सं० २ । पत्र स० २४ । ले० काल सं० १९२९ । वे० स० २२७ । ज भण्डार ।

५१५७. वास्तुपूजा .... । पत्र सं० ५ । आ० ११३/४×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-गृह प्रवेश पूजा एव विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२४ । अ भण्डार ।

५१५८ प्रति सं० २ । पत्र स० ११ । ले० काल स० १९३१ वैशाख सुदी ८ । वे० सं० ११९ । छ भण्डार ।

विशेष—उद्धवलाल पाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

५१५९. प्रति स० ३ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १९१९ वैशाख सुदी ८ । वे० सं० २० । ज भण्डार ।

५१६० विद्यमानबीसतीर्थङ्करपूजा—नरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० २ । आ० १०×४३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८१० । पूर्ण । वे० सं० ९७२ । अ भण्डार ।

५१६१ विद्यमानबीसतीर्थङ्करपूजा—जौंहरीलाल बिलाला । पत्र स० ४२ । आ० १२×७३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १९४९ सावन सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३६ । अ भण्डार ।

५१६२. प्रति स० २ । पत्र स० ६३ । ले० काल × । वे० स० ६७५ । ङ भण्डार ।

५१६३. प्रति स० ३ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १९५३ द्वि० ज्येष्ठ बुदी २ । वे० स० ६७८ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६७९) और है।

५१६४. प्रति स० ४ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० स० २०६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे इसी वेष्टन मे एक प्रति और है।

५१६५. विमानशुद्धि—चन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० ९ । आ० ११३/४×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान एव पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७७ । अ भण्डार ।

विशेष—कुछ पृष्ठ पानी मे भीग गये हैं।

५१६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—गोधो के मन्दिर मे लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

५१६७ विमानशुद्धिपूजा" " ' । पत्र स० १२ । आ० १२३/४×७ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६२० । पूर्ण । वे० स० ७४६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०६२) और है।

५१६८ प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० स० १६८ । ज भण्डार ।

विशेष—शान्तिपाठ भी दिया है।

५१६६. विवाहपद्धति—सोमसेन । पत्र स० २५ । आ० १२×७ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय जैन विवाह विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६२ । क भण्डार ।

५१७०. विवाहविधि ' ' ' ' । पत्र स० ८ । आ० ९×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-जैन विवाह विधि । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११३६ । अ भण्डार ।

५१७१. प्रति सं० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० १७४ । ख भण्डार ।

५१७२ प्रति सं० ३ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० १४४ । छ भण्डार ।

५१७३. प्रति स० ४ । पत्र सं० ६ ले० काल स० १७६८ ज्येष्ठ बुदी १२ । वे० प०१२२ । छ भण्डार ।

५१७४ प्रति स० ५ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० ३४६ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २४६) और है।

५१७५. विष्णुकुमार मुनिपूजा—बाबूलाल । पत्र स० ८ । आ० ११×७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७४५ । अ भण्डार ।

५१७६ विहार प्रकरण । पत्र स० ७ । आ० ८×३३/४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७७३ । अ भण्डार ।

५१७७ व्रतनिर्णय—मोहन । पत्र स० ३४ । आ० १३×६, इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल स० १६३२ । ले० काल स० १६४३ । पूर्ण । वे० स० १८३ । ख भण्डार ।

विशेष—अजयदुर्ग में रहने वाले विद्वान् ने इस ग्रन्थ की रचना की थी। अजमेर मे प्रतिलिपि हुई।

५१७८ व्रतनाम । पत्र स० १० । आ० १३×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-व्रतो के नाम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८३७ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त २ पत्रो पर ध्वजा, माला तथा छत्र आदि के चित्र हैं। कुल ६ चित्र हैं।

५१७९ व्रतपूजासग्रह"' " । पत्र स० ३६८ । आ० १२३/४×५३/४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२८ । छ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है।

नाम पूजा	कर्त्ता	भाषा	विशेष
बारहसौ चौतीसव्रतपूजा	श्रीभूषण	संस्कृत	ले० काल सं० १८०० पौष बुदी ४
विशेष—देवगिरि मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे लिखी गई।			
जम्बूद्वीपपूजा	जिनदास	"	ले० काल १८०० पौष बुदी ६
रत्नत्रयपूजा	—	"	" " " पौष बुदी ६
वीसतीर्थङ्करपूजा	—	हिन्दी	
श्रुतपूजा	ज्ञानभूषण	संस्कृत	
गुरुपूजा	जिनदास	"	
सिद्धपूजा	पद्मनन्दि	"	
षोडशकारण	—	"	
दशलक्षणपूजाजयमाल	रइधू	अपभ्रंश	
लघुस्वयंभूस्तोत्र	—	संस्कृत	
नन्दीश्वर उद्यापन	—	"	ले० काल सं० १८००
समवशरणपूजा	रत्नशेखर	"	
ऋषिमंडलपूजाविधान	गुणनन्दि	"	
तत्वार्थसूत्र	उमास्वाति	"	
तीसचौबीसीपूजा	शुभचन्द	सस्कृत	
धर्मचक्रपूजा	—	"	
जिनगुणसपत्तिपूजा	केशवसेन	"	र० काल १६६५
रत्नत्रयपूजा जयमाल	ऋषभदास	अपभ्रंश	
नवकार पैंतीसीपूजा	—	सस्कृत	
कर्मदहनपूजा	शुभचन्द	"	
रविवारपूजा	—	"	
पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	"	

५१८० व्रतविधान…… … । पत्र स० ४ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ९७९ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ४२४, ९६२, २०३७) और हैं ।

५१८१ प्रति स० २ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वे० स० ६८० । क भण्डार ।

५१८२. प्रति सं० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० ६७९ । क भण्डार ।

५१८३. प्रति सं० ४ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० १७८ । छ भण्डार ।

विशेष—चौबीस तीर्थङ्करो के पचकल्याणक की तिथिया भी दी हुई हैं ।

५१८४. व्रतविधानरासो—दौलतरामसंघी । पत्र स० ३२ । आ० ११×४¾ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र० काल स० १७६७ आसोज सुदी १० । ले० काल स० १८३२ प्र० भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १९९ । छ भण्डार ।

५१८५ व्रतविवरण " ""। पत्र स० ४ । आ० १०½×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-व्रत विधि । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८८१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १२४६) और है ।

५१८६ प्रति स० २ । पत्र स० ६ से १२ । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० १८२३ । ट भण्डार ।

५१८७ व्रतविवरण । पत्र स० ११ । आ० १०×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्रत विधि । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८३९ । ट भण्डार ।

५१८८ व्रतसार—आ० शिवकोटि । पत्र स० ६ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्रत विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७६४ । ट भण्डार ।

५१८९ व्रतोद्यापनसग्रह ''' । पत्र स० ४५९ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्रतपूजा । र० काल × । ले० काल स० १८९७ । अपूर्ण । वे० स० ४५२ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
पल्यमडलविधान	शुभचन्द्र	सस्कृत
अक्षयदशमीविधान	—	"
मौनिव्रतोद्यापन	—	"
मौनिव्रतोद्यापन	—	"

पंचमेरुजयमाला	भूधरदास	हिन्दी
ऋषिमंडलपूजा	गुणनन्दि	संस्कृत
पद्मावतीस्तोत्रपूजा	—	"
पञ्चमेरुपूजा	—	"
अनन्तव्रतपूजा	—	"
मुक्तावलिपूजा	—	"
शास्त्रपूजा	—	"
षोडशकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	"
मेघमालाव्रतोद्यापन	—	"
चतुर्विंशतिव्रतोद्यापन	—	"
दशलक्षणपूजा	—	"
पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा [वृहद]	—	"
पञ्चमीव्रतोद्यापन	कवि हर्षकल्याण	"
रत्नत्रयव्रतोद्यापन [वृहद्]	केशवसेन	"
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	"
अनन्तव्रतोद्यापन	गुणचन्द्रसूरि	"
द्वादशमासातचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
अष्टाह्लिकाव्रतोद्यापन	—	"
अक्षयनिधिपूजा	—	"
सौख्यव्रतोद्यापन	—	"
ज्ञानपञ्चविंशतिव्रतोद्यापन	—	"
णमोकारपैंतीसीपूजा	—	"
रत्नावलिव्रतोद्यापन	—	"
जिनगुणसंपत्तिपूजा	—	"
सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन	—	"

क्षेपनक्रियाव्रतोद्यापन	—	संस्कृत
आदित्यव्रतोद्यापन	—	"
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	"
कर्मचूरव्रतोद्यापन	—	"
भक्तामरस्तोत्रपूजा	श्री भूषण	"
जिनसहस्रनामस्तवन	आशाधर	"
द्वादशव्रतमंडलोद्यापन	—	"
लब्धिविधानपूजा	—	"

५१६०. प्रति स० २। पत्र सं० २३६। ले० काल ×। वे० सं० १८४। ख भण्डार।

निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
लब्धिविधानोद्यापन	—	संस्कृत
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	हिन्दी
भक्तामरव्रतोद्यापन	केशवसेन	संस्कृत
दशलक्षणव्रतोद्यापन	सुमतिसागर	"
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	"
अनन्तव्रतोद्यापन	गुणचंदसूरि	"
पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन	—	"
शुक्लपञ्चमीव्रतपूजा	—	"
पञ्चमासचतुर्दशीपूजा	भ० सुरेन्द्रकीर्ति	"
प्रतिमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
कर्मदहनपूजा	—	"
आदित्यवारव्रतोद्यापन	—	"

५१६१. वृहस्पतिविधान" । पत्र सं० १। आ० ६×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। ० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८८७। अ भण्डार।

५१९२ बृहद्गुरावलीशांतिमंडलपूजा (चौसठ ऋद्धिपूजा)—स्वरूपचंद । पत्र सं० ५९ । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १९१० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७० । क भण्डार ।

५१९३ प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० ९४ । घ भण्डार ।

५१९४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ६८० । च भण्डार ।

५१९५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८६ । छ भण्डार ।

५१९६. षण्णवतिक्षेत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र सं० १७ । आ० १०३/४×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं ।

श्रीमच्छ्रीकाष्ठासघे यतिपतितिलके रामसेनस्यवंशे ।
गच्छे नदीतटाख्ये प्रगदितिह मुखे तु षट्कर्मामुनीन्द्र ।।
ख्यातोसौविश्वसेनोविमलतरमतिर्येनयज्ञ चकार्षीत् ।
सोमसुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपालाना शिवाय ।।

चौबीस तीर्थङ्करो के चौबीस क्षेत्रपालो की पूजा है ।

५१९७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९२ । ख भण्डार ।

५१९८ षोडशकारणजयमाल " । पत्र सं० १८ । आ० ११३/४×५१/२ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८९४ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ३२९ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ६९७, २६६, ३०४, १०९३, २०४४) और हैं ।

५१९९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १७९० आसोज सुदी १४ । वे० सं० ३०३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ७२० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७२१) और है ।

५२०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १९८ । ख भण्डार ।

५२०२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १९०२ मंगसिर सुदी १० । वे० सं० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३५९) और है ।

५२०३. प्रति स० ६ । पत्र स० १२ । ले० काल X । वे० स० २०८ । ञ भण्डार ।

५२०४ प्रति सं० ७ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८०२ मगसिर बुदी ११ । वे० सं० २०८ । ञ भण्डार ।

५२०५ षोडशकारणजयमाल—रइधू । पत्र स० २१ । आ० ११X५ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७४७ । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ८८६) और है ।

५२०६. षोडशकारणजयमाल" "" । पत्र सं० १३ । आ० १३X५ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १६६ । ख भण्डार ।

५२०७ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल X । वे० स० १२९ । छ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे टिप्पण दिया हुआ है । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १२६) और है ।

५२०८. षोडशकारणउद्यापन " " । पत्र स० १५ । आ० १२X५३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल स० १७९३ आषाढ बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २४१ । ञ भण्डार ।

विशेष—गोधो के मन्दिर मे प० सदाराम के वाचनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

५२०९. षोडशकारणजयमाल ' ' । पत्र स० १० । आ० ११½X५३ इंच । भाषा-प्राकृत, सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ६४२ । अ भण्डार ।

५२१०. प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल X । वे० स० ७१७ । क भण्डार ।

५२११ षोडशकारणजयमाल ''' । पत्र स० ५२ । आ० १२X८ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल स० १९६५ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६६६ । अ भण्डार ।

५२१२ षोडशकारणतथा दशलक्षण जयमाल—रइधू । पत्र स० ३३ । आ० १०X७ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ११९ । छ भण्डार ।

५२१३. षोडशकारणपूजा—केशवसेन । पत्र स० १३ । आ० १२X५३ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल स० १६९४ माघ बुदी ७ । ले० काल स० १८२३ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५१२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५०८) और है ।

५२१४. प्रति स० ३ । पत्र सं० २१ । ले० काल X । वे० स० ३०० । ख भण्डार ।

५२१५ षोडशकारणपूजा ""' । पत्र स० २ । आ० ११X५३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६२५) और है ।

५२१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७५१ । ङ भण्डार ।

५२१७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ से २२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४२४ । च भण्डार ।

विशेष—आचार्य पूर्णचन्द्र ने मौजमाबाद मे प्रतिलिपि की थी । प्रति प्राचीन है ।

५२१८. प्रति सं० ४ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १८६३ सावण बुदी ११ । वे० स० ४२५ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ४२६) और है ।

५२१९. प्रति सं० ५ । पत्र स० १३ । ले० काल X । वे० सं० ७२ । म्ह भण्डार ।

५२२०. षोडशकारणपूजा (वृहद्) .... । पत्र स० २६ । आ० ११½X५½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७१८ । क भण्डार ।

५२२१ प्रति स० २ । पत्र स० २ से २२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ४२६ । ञ भण्डार ।

५२२२. षोडशकारण व्रतोद्यापनपूजा—राजकीर्त्ति । पत्र सं० ३७ । आ० १२X५½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल स० १७६६ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ५०७ । अ भण्डार ।

५२२३. षोडशकारणव्रतोद्यापनपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं २१ । आ० १२X५½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वै० स० ५१४ । अ भण्डार ।

५२२४ शत्रुञ्जयगिरिपूजा—भट्टारक विश्वभूषण । पत्र सं० ६ । आ० ११½X५½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १०६७ । अ भण्डार ।

५२२५ शरदुत्सवदीपिका (मडल विधान पूजा)—सिंहनन्दि । पत्र स० ७ आ० ६X४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ५६४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ— श्रीवीर शिरसा नत्वा वीरनदिमहागुरु ।
सिंहनदिरहं वक्ष्ये शरदुत्सवदीपिका ॥१॥

अथात्र भारते क्षेत्रे जंबूद्वीपमनोहरे ।
रम्यदेशेस्ति विख्याता मिथिलानामत. पुरी ॥२॥

अन्तिमपाठ— एवं महत्प्रभावं च दृष्ट्वा लग्नास्तथा जनाः ।
कर्त्तुं प्रभावनाग च ततोऽत्रैव प्रवर्त्तते ॥२३॥

तदाप्रभृत्योरम्येद प्रसिद्ध जगतीतले ।
दृष्ट्वा दृष्ट्वा गृहीत च वैष्णवादिकशैवकैः ॥२४॥

ज्ञातो नागपुरे मुनिर्वरतरः श्रीमूलसघोवरः ।
सूर्यः श्रीवरपूज्यपाद अमल श्रीवीरनथाह्वय ॥
तच्छिष्यो वर सिंघनदिमुनियस्तेनेयमाविष्कृता ।
लोकोद्बोधनहेतवे मुनिवर कुर्वंतु भो सज्जना ॥२५॥
इति श्री शरदुत्सवकथा समाप्ता ॥१॥

इसके पश्चात् पूजा दी हुई है ।

५२२६ प्रति स० २ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १६२२ । वे० स० ३०१ । ख भण्डार ।

५२२७ शातिकविधान (प्रतिष्ठापाठ का एक भाग) ··· । पत्र स० ३२ । आ० १२३/४X५३/४ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल X । ले० काल स० १६३२ फागुन सुदी १० । वे० स० ५३७ । अ भण्डार ।

विशेष— प्रतिष्ठा मे काम आने वाली सामग्री का वर्णन दिया हुआ है । प्रतिष्ठा के लिये गुटका महत्व-पूर्ण है ।

मण्डलाचार्य श्रीचंद्रकीर्त्ति के उपदेश से इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी । १४वें पत्र से यन्त्र दिये हुये हैं जिनकी सख्या ६८ है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

ॐ नमो वीतरागायनम । परिमेष्ठिने नम. । श्री गुरुवेनम ॥ स० १६३२ वर्षे फागुण सुदी १० गुरौ श्री मूलसघे भ० श्रीपद्मनदिदेवास्तत्पट्टे, भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचद्रदेवा तत्पट्टे मडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवा तत् मडलाचार्य ललितकीर्त्तिदेवा तच्छिष्यमडलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्त्ति उपदेशात् ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ५६२, ५५४) और हैं ।

५२२८. शातिकविधान (बृहद्) · । पत्र स० ७४ । आ० १२X५३/४ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल X । ले० काल स० १६२६ भादवा बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० स० १७७ । ख भण्डार ।

विशेष—प० पन्नालालजी ने शिष्य जयचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

५२२९ प्रति सं० २ । पत्र स० १६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३३८ । च भण्डार ।

५२३०. शातिकविधि—अर्हद्देव । पत्र स० ५१ । आ० ११३/४X५३/४ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–सस्कृत । विषय विधि विधान । र० काल X । ले० काल स० १८९८ माघ बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ६८६ । क भण्डार ।

५२३१. शान्तिविधि··· । पत्र सं० ५ । आ० १०X४ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६८५ । क भण्डार ।

५२३२. शान्तिपाठ (वृहद्)…………। पत्र सं० ४० । आ० १०×५ । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १९३७ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १६५ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५२३३. शान्तिचक्रपूजा……… । पत्र सं० ४ । आ० १०३/४×५१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७९७ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १७६) और है ।

५२३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १२२) और है ।

५२३५. शान्तिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०५ । ङ भण्डार ।

५२३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६८२ । च भण्डार ।

५२३७. शांतिमंडलपूजा ……। पत्र सं० ३८ । आ० १०१/२×५१/२ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । ङ भण्डार ।

५२३८. शांतिपाठ……। पत्र सं० १ । आ० १०३/४×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा के अन्त मे पढा जाने वाला पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० १२३८, १३१८, १३२४) और हैं ।

५२३९. शांतिरत्नसूची……। पत्र सं० ३ । आ० ८१/२×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९६४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ से उद्धृत है ।

५२४०. शान्तिहोमविधान—आशाधर । पत्र सं० ५ । आ० ११२/३×६१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ मे से संग्रहीत है ।

५२४१. शास्त्रगुरुजयमाल……। पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० ३४२ । च भण्डार ।

५२४२. शास्त्रजयमाल—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ३ । आ० १२३/४×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६८८ । क भण्डार ।

५२४३ शास्त्रप्रवचन प्रारम्भ करने की विधि ""। पत्र सं० १। आ० १०३×४३ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८८४। अ भण्डार।

५२४४ शासनदेवतार्चनविधान ""। पत्र स० २१ से २५। आ० ११×५३ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा विधि विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७०७। ङ भण्डार।

५२४५ शिखरविलासपूजा ""। पत्र स० ७३। आ० ११×५३ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६८६। क भण्डार।

५२४६. शीतलनाथपूजा—धर्मभूषण। पत्र स० ६। आ० १०३×५ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६२१। पूर्ण। वे० स० २६३। ख भण्डार।

५२४७. प्रति सं० २। पत्र स० १०। ले० काल सं० १६३१ प्र० आषाढ बुदी १४। वे० स० १२५। छ भण्डार।

५२४८. शुक्लपञ्चमीव्रतपूजा ""। पत्र स० ७। आ० १२×५३ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं० १८ .। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३८४। च भण्डार।

विशेष—रचना सं० निम्न प्रकार है— अब्दे रंध्र यमल वसु चन्द्र।

५२४९. शुक्लपञ्चमीव्रतोद्यापनपूजा ""। पत्र स० ५। आ० ११×५ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५१७। अ भण्डार।

५२५० श्रुतज्ञानपूजा । पत्र स० ५। आ० ११×५ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८६१ आषाढ सुदी १२। पूर्ण। वे० स० ७२३। ङ भण्डार।

५२५१ प्रति स० २। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० स० ६८७। च भण्डार।

५२५२. प्रति सं० ३। पत्र स० १३। ले० काल ×। वे० स० ११७। छ भण्डार।

५२५३. श्रुतज्ञानव्रतपूजा ""। पत्र स० १०। आ० ११×८३ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६६। ज भण्डार।

५२५४. श्रुतज्ञानव्रतोद्यापनपूजा ""। पत्र सं० ११। आ० ११×५३ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७२४। ङ भण्डार।

५२५५ श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन ""। पत्र स० ८। आ० १०३×५ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६२२। पूर्ण। वे० स० ३००। ख भण्डार।

५२५६ श्रुतपूजा ""। पत्र स० ४। आ० १०३×६ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० ज्येष्ठ सुदी ३। पूर्ण। वे० स० १०७८। अ भण्डार।

५२५७. श्रुतस्कधपूजा—श्रुतसागर। पत्र सं० २ से १३। आ० ११½X५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ७०५। क भण्डार।

५२५८. प्रति स० २। पत्र स० ५। ले० काल X। वे० स० ३८६। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३५०) और है।

५२५९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल X। वे० स० १८४। ज भण्डार।

५२६०. श्रुतस्कंधपूजा (ज्ञानपञ्चविंशतिपूजा)—सुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र स० ५। आ० १२X५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं० १८४७। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ५२२। अ भण्डार।

विशेष—इस रचना को श्री सुरेन्द्रकीर्त्तिजी ने ५३ वर्ष की अवस्था मे किया था।

५२६१. श्रुतस्कधपूजा ·······। पत्र सं० ५। आ० ८½X७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ७०२। अ भण्डार।

५२६२. प्रति सं० २। पत्र स० ५। ले० काल X। वे० सं० २६२। ख भण्डार।

५२६३. प्रति सं० ३। पत्र स० ७। ले० काल X। वे० स० १८८। ज भण्डार।

५२६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल X। वे० स० ४६०। व्य भण्डार।

५२६५. श्रुतस्कधपूजाकथा ·····। पत्र स० २८। आ० १२½X७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा तथा कथा। र० काल X। ले० काल वीर सं० २४३४। पूर्ण। वे० स० ७२८। ङ भण्डार।

विशेष—चावली (आगरा) निवासी श्री लालाराम ने लिखा फिर वीर स० २४५७ को पन्नालालजी गोधा ने तुकीगञ्ज इन्दौर मे लिखवाया। जौहरीलाल फिरोजपुर जि० गुडगावा।

बनारसीदास कृत सरस्वती स्तोत्र भी है।

५२६६. सकलीकरणविधि ·····। पत्र स० ३। आ० ११X५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधि विधान। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ७५। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ८०, ५७१, ६११) और हैं।

५२६७. प्रति सं० २। पत्र स० २। ले० काल X। वे० स० ७२३। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२४) और है।

५२६८. प्रति स० ३। पत्र स० ४। ले० काल X। वे० स० ३६८। व्य भण्डार।

विशेष—आचार्य हर्षकीर्त्ति के वाचको के लिए प्रतिलिपि हुई थी।

५२६९. सकलीकरण ''' ''' | पत्र सं० २१ | आ० ११×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-विधि विधान | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० स० ५७१ | अ भण्डार |

५२७०. प्रति सं० २ | पत्र स० ३ | ले० काल × | वे० सं० ७५७ | ङ भण्डार |

५२७१. प्रति सं० ३ | पत्र स० ३ | ले० काल × | वे० सं० १२२ | छ भण्डार |

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६) और है।

५२७२ प्रति स० ४ | पत्र स० ७ | ले० काल × | वे० सं० १६४ | ज भण्डार |

५२७३ प्रति सं० ५ | पत्र स० ३ | ले० काल × | वे० स० ४२४ | व्य भण्डार |

विशेष—हासिया पर संस्कृत टिप्पण दिया हुआ है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५५३) और है।

५२७४. सथाराविधि ''' ''' | पत्र स० १ | आ० १०×४½ इंच | भाषा-प्राकृत, संस्कृत | विषय विधान | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० स० १२१६ | अ भण्डार |

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १२५१) और है।

५२७५. सप्तपदी ''' ''' | पत्र स० २ से १६ | आ० ७½×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-विधान | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० स० १६६६ | अ भण्डार |

५२७६. सप्तपरमस्थानपूजा ''' ''' | पत्र स० ३ | आ० १०½×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-पूजा | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० स० ६६६ | अ भण्डार |

५२७७. प्रति स० २ | पत्र स० १२ | ले० काल × | वे० स० ७६२ | ङ भण्डार |

५२७८ सप्तर्षिपूजा—जिणदास | पत्र स० ७ | आ० ८×४½ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-पूजा | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० स० २२२ | छ भण्डार |

५२७९. सप्तर्षिपूजा—लक्ष्मीसेन | पत्र सं० ६ | आ० ११×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-पूजा | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० स० १२७ | छ भण्डार |

५२८०. प्रति स० २ | पत्र स० ८ | ले० काल स० १८२० कार्तिक सुदी २ | वे० स० ४०१ | व्य भण्डार |

५२८१ प्रति स० ३ | पत्र सं० ७ | ले० काल × | वे० स० २११० | ट भण्डार |

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति द्वारा रचित चादनपुर के महावीर की संस्कृत पूजा भी है।

५२८२. सप्तर्षिपूजा—विश्वभूषण | पत्र स० १६ | आ० १०½×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-पूजा | र० काल × | ले० काल सं० १६१७ | पूर्ण | वे० स० ३०१ | ख भण्डार |

५२८३. प्रति स० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६३० ज्येष्ठ सुदी ८ । वे० स० १२७ । छ

५२८४. सप्तर्षिपूजा……। पत्र सं० १३ । आ० ११×५३ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६१ । अ भण्डार ।

५२८५. समवशरणपूजा—ललितकीर्त्ति । पत्र सं० ४७ । आ० १०३×५ इंच । भाषा–सस्कृत । र० काल × । ले० काल सं० १८७७ मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ४५१ । अ भण्डार ।

विशेष—चुन्यालजी ने जयपुर नगर में महात्मा शभुराम से प्रतिलिपि करवायी थी ।

५२८६. समवशरणपूजा (बृहद्)—रूपचन्द । पत्र स० ६४ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । र० काल स० १५६२ । ले० काल स० १८७६ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४५५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल निम्न प्रकार है— अतीतेद्दगनन्दभद्रासकृत परिमिते कृष्णपक्षेच मासे ॥

५२८७ प्रति स० २ । पत्र स० ६२ । ले० काल स० १६३७ चैत्र बुदी १५ । वे० सं० २०६ । ख

विशेष—प० पन्नालालजी जोबनेर वालो ने प्रतिलिपि की थी ।

५२८८. प्रति स० ३ । पत्र सं० १५१ । ले० काल सं० १६४० । वे० स० १३३ । छ भण्डार ।

५२८९. समवशरणपूजा—सोमकीर्त्ति । पत्र सं० २८ । आ० १२×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । र० काल × । ले० काल स० १८०७ वैशाख सुदी १ । वे० सं० ३८४ । ञ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम श्लोक–

व्याजस्तुत्यार्चा गुणवीतराग. ज्ञानार्कसाम्राज्यविकासमान. ।
श्रीसोमकीर्त्तिविकासमान रत्नेपरत्नाकरचार्ककीर्ति. ॥

जयपुर में सदानन्द सौगाणी के पठनार्थ छाजूराम पाटनी की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ४०५) और है ।

५२९०. समवशरणपूजा……। पत्र स० ७ । आ० ११×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७७४ । ङ भण्डार ।

५२९१. सम्मेदशिखरपूजा—गङ्गादास । पत्र सं० १० । आ० ११३×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–र० काल × । ले० काल स० १८८६ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २०११ । अ भण्डार ।

विशेष—गगादास धर्मचन्द्र भट्टारक के शिष्य थे । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५०६) और है ।

५२९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६२१ मगसिर सुदी ११ । वे० सं० २१० । ख

५२९३ प्रति सं० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल सं० १८९३ वैशाख सुदी ३ । वे० स० ४३६ । ञ भण्डार ।

५२९४. सम्मेदशिखरपूजा—प० जवाहरलाल । पत्र स० १२ । आ० १२X८ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७४८ । अ भण्डार ।

५२९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । र० काल स० १८९१ । ले० काल स० १९१२ । वे० स० ११६ । घ भण्डार ।

५२९६. प्रति सं० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १९५२ आसोज बुदी १० । वे० स० २८० । छ भण्डार ।

५२९७. सम्मेदशिखरपूजा—रामचन्द्र । पत्र स० ८ । आ० ११३/४X५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १९५५ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३६३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ११२३) और है ।

५२९८. प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १९५८ माघ सुदी १४ । वे० स० ७०१ । च भण्डार ।

५२९९ प्रति सं० ३ । पत्र स० १३ । ले० काल X । वे० स० ७९३ । ड भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७९४) और है ।

५३००. प्रति सं० ४ । पत्र स० ७ । ले० काल X । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५३०१. सम्मेदशिखरपूजा—भागचन्द । पत्र सं० १० । आ० १३१/२X४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १९२९ । ले० काल स० १९३० । पूर्ण । वे० स० ७६७ । क भण्डार ।

विशेष—पूजा के पश्चात् पद भी दिये हुये हैं ।

५३०२ प्रति सं० २ । पत्र स० ८ । ले० काल X । वे० स० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—सिद्धक्षेत्रो की स्तुति भी है ।

५३०३. सम्मेदशिखरपूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० २१ । आ० ११X५ इच । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल स० १९१२ । पूर्ण । वे० स० ५९१ । अ भण्डार ।

विशेष—१०वें पत्र से आगे पञ्चमेरु पूजा दी हुई है ।

५३०४ सम्मेदशिखरपूजा ... । पत्र स० ३ । आ० ११X४३/४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १२३१ । अ भण्डार ।

५३०५ प्रति सं० २ । पत्र स० २ । आ० १०X५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७९१ । ड भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७९२) और हैं ।

५३०६. प्रति स० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल X । वे० सं० २९१ । भ्र भण्डार ।

५३०७. सर्वतोभद्रपूजा .... । पत्र स० ५ । आ० ९X३½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १३९३ । अ भण्डार ।

५३०८. सरस्वतीपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० १ । आ० ९X६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १३३४ । अ भण्डार ।

५३०९. सरस्वतीपूजा—ज्ञानभूषण । पत्र स० ६ । आ० ८X४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल १९३० । पूर्ण । वे० स० १३९७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतियां (वे० सं० ९८९, १३११, ११०८, १०१०) और हैं ।

५३१०. सरस्वतीपूजा........ । पत्र सं० ३ । आ० ११X५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ८०३ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ८०२) और है ।

५३११. सरस्वतीपूजा—संघी पन्नालाल । पत्र स० १७ । आ० १२X८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १९२१ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २२१ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे इसी वेष्टन मे १ प्रति और है ।

५३१२. सरस्वतीपूजा—नेमीचन्द बख्शी । पत्र स० ८ से १७ । आ० ११X५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १९२५ ज्येष्ठ सुदी ५ । ले० काल स० १९३७ । पूर्ण । वे० स० ७७१ । क भण्डार ।

५३१३. प्रति स० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल X । वे० सं० ८०४ । ङ भण्डार ।

५३१४. सरस्वतीपूजा—प० बुधजनजी । पत्र स० ५ । आ० ९X४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १००६ । अ भण्डार ।

५३१५. सरस्वतीपूजा .... । पत्र सं० २१ । आ० ११X५ इंच । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । च भण्डार ।

विशेष—महाराजा माधोसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

५३१६. सहस्रकूटजिनालयपूजा ...... । पत्र स० १११ । आ० ११½X४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल स० १९२९ । पूर्ण । वे० स० २१३ । ख भण्डार ।

विशेष—प० पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५३१७. सहस्रगुणितपूजा—भ० धर्मकीर्त्ति। पत्र सं० ६६। आ० १२३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १७६६ आषाढ सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ५३६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५५२) और है।

५३१८. प्रति सं० २। पत्र सं० ८२। ले० काल सं० १८२२। वे० सं० २४६। ख भण्डार।

५३१९. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२२। ले० काल सं० १६६०। वे० सं० ८०६। ङ भण्डार।

५३२०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। वे० सं० ६३। म भण्डार।

५३२१. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६४। ले० काल ×। वे० सं० ६६। ञ भण्डार।

विशेष—आचार्य हर्षकीर्ति ने जिहानावाद मे प्रतिलिपि कराई थी।

५३२२. सहस्रगुणितपूजा……। पत्र सं० १३। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११७। छ भण्डार।

५३२३. प्रति सं० २। पत्र सं० ८८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४। ञ भण्डार।

५३२४. सहस्रनामपूजा—धर्मभूषण। पत्र सं० ६६। आ० १०३×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३८३। च भण्डार।

५३२५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६ से ६६। ले० काल सं० १८८४ ज्येष्ठ सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० ३८५। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० सं० ३८४, ३८६) और हैं।

५३२६. सहस्रनामपूजा……। पत्र सं० १३६ से १५८। आ० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३८२। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३८७) और है।

५३२७. सहस्रनामपूजा—चैनसुख। पत्र सं० २२। आ० १२३×८३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२१। छ भण्डार।

५३२८. सहस्रनामपूजा……। पत्र सं० १८। आ० ११×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०७। च भण्डार।

५३२९. सारस्वतयन्त्रपूजा……। पत्र सं० ४। आ० १०३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७७। अ भण्डार।

५३३०. प्रति सं० २। पत्र सं० १। ले० काल ×। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

५३३१. सिद्धक्षेत्रपूजा—द्यानतराय। पत्र सं० २। आ० ६३/४×५१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६१०। ट भण्डार।

५३३२ सिद्धक्षेत्रपूजा (वृहद् —स्वरूपचन्द। पत्र स० ५३। आ० ११३/४×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स० १६१६ कार्तिक बुदी १३। ले० काल सं० १६४१ फागुण सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ८६। ग भण्डार।

विशेष—अन्त मे मण्डल विधि भी दी हुई है। रामलालजी बज ने प्रतिलिपि की थी। इसे सुगनचन्द गगवाल ने चौधरियो के मन्दिर मे चढाया।

५३३३ सिद्धक्षेत्रपूजा....। पत्र स० १३। आ० १३×८१/२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६४४। पूर्ण। वे० स० २०४। छ भण्डार।

५३३४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१। ले० काल ×। वे० सं० २६४। ज भण्डार।

५३३५ सिद्धक्षेत्रमहात्म्यपूजा.....। पत्र स० १२६। आ० ११३/४×५१/२ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६४० माघ सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० २२०। ख भण्डार।

विशेष—अतिशयक्षेत्र पूजा भी है।

५३३६ सिद्धचक्रपूजा (वृहद्)—भ० भानुकीर्त्ति। पत्र सं० १४३। आ० १०३/४×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६२२। वे० स० १७८। ख भण्डार।

५३३७. सिद्धचक्रपूजा 'वृहद्)—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ४१। आ० १२×८ इंच। भाषा-सस्कृत विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६७२। पूर्ण। वे० सं० ७५०। ग भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७५१) और है।

५३३८. प्रति स० २। पत्र स० ३५। ले० काल ×। वे० सं० ८४५। ङ भण्डार।

५३३६ प्रति स० ३। पत्र स० ४४। ले० काल ×। वे० स० १२६। छ भण्डार।

विशेष—स० १६६६ फागुण सुदी २ को पुष्पचन्द अजमेरा ने सशोधित की। ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २१२) और।

५३४० सिद्धचक्रपूजा—श्रुतसागर। पत्र स० ३० से ६०। आ० १२×६ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ८४४। ङ भण्डार।

५३४१. सिद्धचक्रपूजा—प्रभाचन्द। पत्र सं० ६। आ० १२×५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६२। क भण्डार।

५३४२ सिद्धचक्रपूजा (वृहद्) ………। पत्र सं० ३८ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६८७ । ङ भण्डार ।

५३४३. सिद्धचक्रपूजा………। पत्र सं० ३ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२६ । अ भण्डार ।

५३४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४०५ । च भण्डार ।

५३४५. प्रति सं० ३ । पत्र स० १७ । ले० काल सं० १८६० श्रावण बुदी १४ । वे० स० २१ । ज भण्डार ।

५३४६. सिद्धचक्रपूजा (वृहद्)—सतलाल । पत्र सं० १०८ । आ० १२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६८१ । पूर्ण । वे० स० ७४६ । अ भण्डार ।

विशेष—ईश्वरलाल चादवाड ने प्रतिलिपि की थी ।

५३४७ सिद्धचक्रपूजा ………। पत्र सं० ११३ । आ० १२×७½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४६ । ङ भण्डार ।

५३४८. सिद्धपूजा—रत्नभूषण । पत्र सं० २ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७६० । पूर्ण । वे० स० २०६० । अ भण्डार ।

विशेष—औरङ्गजेब के शासनकाल मे सग्रामपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५३४६. प्रति स० २ । पत्र स० ३ । आ० ८¾×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । क भण्डार ।

५३५०. सिद्धपूजा—महा पं० आशाधर । पत्र स० २ । आ० ११½×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० स० ७६८ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७६५) और है ।

५३५१. प्रति सं० २ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १८२३ मगसिर सुदी ८ । वे० स० २३३ । ञ भण्डार ।

विशेष—पूजा के प्रारम्भ मे स्थापना नही है किन्तु प्रारम्भ मे ही जल चढाने का मन्त्र है ।

५३५२. सिद्धपूजा ………। पत्र स० ४ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६३० । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १६२४) और है ।

५३५३ सिद्धपूजा .... । पत्र सं० ४४ । आ० ६×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६५६ । पूर्ण । वे० स० ७१५ । च भण्डार ।

५३५४. सीमंधरस्वामीपूजा .... । पत्र स० ७ । आ० ८×६३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८५८ । ङ भण्डार ।

५३५५. सुखसंपत्तिव्रतोद्यापन—सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ७ । आ० ८×६३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल स० १८६६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०४१ । अ भण्डार ।

५३५६. सुखसपत्तिव्रतपूजा—अखयराम । पत्र सं० ६ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १८०० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०८ । क भण्डार ।

५३५७. सुगन्धदशमीव्रतोद्यापन ...... । पत्र सं० १३ । आ० ८×६३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १११२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ७ प्रतिया (वे० सं० १११३, ११२४, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६) और हैं।

५३५८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल स० १६२८ । वे० स० ३०२ । ख भण्डार ।

५३५९. प्रति सं० ३ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० सं० ८६६ । ङ भण्डार ।

५३६०. प्रति स० ४ । पत्र स० १३ । ले० काल सं० १६५६ आसोज बुदी ७ । वे० स० २०३४ । ट भण्डार ।

५३६१. सुपार्श्वनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र स० ५ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७२३ । च भण्डार ।

५३६२. सूतकनिर्णय .... । पत्र स० २१ । आ० ८×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५ । झ भण्डार ।

विशेष—सूतक के अतिरिक्त जाप्य, इष्ट अनिष्ट विचार, माला फेरने की विधि आदि भी है।

५३६३ प्रति सं० २ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० स० २०६ । झ भण्डार ।

५३६४ सूतकवर्णन ...... । पत्र स० १ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५४० । अ भण्डार ।

५३६५. प्रति स० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १८४५ । वे० स० १२१४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २०३२) और है।

५३६६. सोनागिरपूजा—आशा । पत्र सं० ८ । आ० ५३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६३८ फागुन बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३५६ । छ भण्डार ।

विशेष—प० गगाधर सोनागिरि वासी ने प्रतिलिपि की थी।

५३६७ सोनागिरपूजा………। पत्र सं० ८ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८५ । ङ भण्डार ।

५३६८. सोलहकारणपूजा—द्यानतराय । पत्र स० २ । आ० ८×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३२६ । अ भण्डार ।

५३६९ प्रति स० २ । पत्र स० २ । ले० काल सं० १९३७ । वे० स० २५ । क भण्डार ।

५३७०. प्रति सं० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० ६३ । ग भण्डार ।

५३७१. प्रति स० ४ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३०२ । ज भण्डार ।

विषय—इसके अतिरिक्त पञ्चमेरु भाषा तथा सोलहकारण संस्कृत पूजायें और हैं ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १६४) और है ।

५३७२. सोलहकारणपूजा……। पत्र स० १४ । आ० ८×५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७५२ । ङ भण्डार ।

५३७३. सोलहकारणमडलविधान—टेकचन्द । पत्र स० ४८ । आ० १२×८ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८८७ । ङ भण्डार ।

५३७४ प्रति स० २ । पत्र स० ६६ । ले० काल × । वे० स० ७२४ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७२५) और है ।

५३७५ प्रति स० ३ । पत्र स० ४५ । ले० काल × । वे० स० २०६ । छ भण्डार ।

५३७६ प्रति सं० ४ । पत्र स० ४५ । ले० काल × । वे० स० २६४ । ज भण्डार ।

५३७७ सौख्यव्रतोद्यापनपूजा—अक्षयराम । पत्र स० १२ । आ० ११×४३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल स० १८२० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५८६ । अ भण्डार ।

५३७८ प्रति सं० २ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १८६५ चैत्र बुदी ६ । वे० स० ४२७ । च भण्डार ।

५३७९. स्नपनविधान ……। पत्र स० ८ । आ० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४२२ । ञ भण्डार ।

५३८० स्नपनविधि (बृहद्)……। पत्र स० २२ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० स० ५७० । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम २ पृष्ठो मे त्रिलोकसार पूजा है जो कि अपूर्ण है ।

आर्या—

त्रिभुवनजनहितकर्ता भर्ता सुपवित्रमुक्तिवरलक्ष्म्या ।
कन्दर्पदर्पहर्ता सुव्रतदेवो जयति गुणधर्ता ॥१॥
यो वज्रमौलिसगतमुकुटमहारत्नरक्तनखनिकर ।
प्रतिपालितवरचरणं केवलबोधे मंडितसुभगं ॥२॥
तं मुनिसुव्रतनाथं नत्वा कथयामि तस्य छन्दोहं ।
श्रृण्वन्तु सकलभव्या जिनधर्मपरा' मौनसयुक्ताः ॥३॥

अडिल्लछद—

प्रथम कल्याण कहु मनमोहन, मगध सुदेश वसे अति सोहन ।
राजगेह नयरि वर सुन्दर, सुमित्र भूप तिहां जिसो पुरदर ॥१॥
चन्द्रमुखीमृगनयनी बाला, तस राणी सोमा सुविशाला ।
पश्चिमरयणी अलिकुलबाला, स्वप्न सोल देखें गुणमाला ॥२॥
इन्द्रादे सें अति सु विचक्षण, छप्पन कुमारि सेवें शुभलक्षण ।
रत्नवृष्टि करें धनव मनोहर, एम छमास गया शुभ सुखकर ॥३॥
हरिवर्म्मा भूपति भुवि मंगल, प्राणत स्वर्ग हवो आखण्डल ।
श्रावणवदि वीजें गुणधारी, जननी गर्भ रह्यो सुखकारी ॥४॥

भुजङ्गप्रपात—

धरति अनगे पर गर्भभार न रेखात्रय भगमापन्नसार ।
तदा आगता इन्द्रचन्द्रानरेन्द्रासुरावाणवाया न युक्ता सुभद्रा ॥१॥
पुर त्रि परित्याखिलदेवसघा गृह प्राप्त सोमित्र कते गता या ।
स्थित गर्भवासे जिन निष्कलक प्रणम्यादराते गताहिस्वनाक ॥२॥
कुमार्यो हि सेवां प्रकुर्वन्ति गाढ कियत्योज्ज्वलद्दीपसुहवृत्यवाढ ।
वर पत्रपूगं दवानासुचूर्णं प्रकीर्णं सितछत्रक कुभ सुपूर्णं ॥३॥
सुरर्द्धैश्वमासैर्भवसत्पवित्र लसद्रत्नवृष्टि शुभ पुण्यपात्र ।
जिन गर्भवासा विनिर्मुक्तदेह पर स्तौमि सौमात्मज सौख्यगेह ॥४॥

अडिल्लछन्द—

श्रीजिनवर अवतरयो महि त्रिभुवन चिह्न हवा सुणता महि ।
घटा सिंह सख परहारव, सुरपति सहसा करें जय जयरव ॥१॥
वैशाख वदी दशमी जिन जायो, सुरनरवृ द वेगें तत्र आयो ।
ऐरावण आरूढ पुरदर, सचीसहित सोहे गुणमदिर ॥२॥

मोतीरणुछन्द—

तब ऐरावण सजकरी, चढ्यो शतमुख आणंद भरी ।
जस कोटी सतावीस छे अमरी, करें गीत नृत्य वलीदें भमरी ॥३॥
गज कानें सोहे सोवर्ण चमरी, घण्टा टङ्कार वदि सहू भरी ।
आखण्डलअकुशवेसंधरी, उछवमंगल गया जिन नयरी ॥
राजगणें मलया इन्द्रसहू, बाजें वाजित्र सुरंग बहु ।
शकें कह्यु जिनवर लावें सही, इन्द्राणी तब धर मझे गई ॥
जिन बालक दीठो निज नयणें, इन्द्राणी बोले वर वयणें ।
माया मेसि सुतहि एक कीयो, जिनवर युगतें जइ इन्द्र दीयो ॥

इसी प्रकार तप, ज्ञान और मोक्ष कल्याण का वर्णन है। सबसे अधिक जन्म कल्याण का वर्णन है जिसका रचना के आधे से अधिक भाग मे वर्णन किया गया है इसमे उक्त छन्दो के अतिरिक्त लीलावती छन्द, हनुमतछन्द, दूहा, बंभाण छन्दो का और प्रयोग हुआ है। अन्त का पाठ इस प्रकार है—

कलस—

बीस धनुष जस देह जहे जिन कछप लाछन ।
त्रीस सहस्र वर वर्ष आयु सज्जन मन रञ्जन ॥
हरवशी गुणवीमल, भक्त दारिद्र विहंडन ।
मनवाछितदातार, नयरवालोडसु मडन ॥
श्री मूलसघ सघद तिलक, ज्ञानभूषण भट्टाभरण ।
श्रीप्रभाचन्द्र सुरिवर कहे, मुनिसुव्रतमगलकरण ॥

इति मुनिसुव्रत छद सम्पूर्णोऽय ॥

पत्र १२० पर निम्न प्रशस्ति दी हुई है—

सवत् १८१८ वर्षे शाके १६८४ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठ सुदी ६ सोमवासरे श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कार-गणे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि तत्पट्टे भ० श्रीदेवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानन्दि तत्पट्टे भट्टारक श्री मल्लिभूषण तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्र भ० तत्पट्टे श्रीवीरचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीवादीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमहीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमेरुचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीजैनचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानन्द तच्छिष्य ब्रह्मनेमसागर पठनार्थं । पुण्यार्थं पुस्तक लिखापित श्रीसूर्यपुरे श्रीआदिनाथ चैत्यालये ।

विषय	कर्त्ता	भाषा	विशेष
९ मातापद्मावतीछन्द	महीचन्द्र भट्टारक	संस्कृत हिन्दी	१२५–२८
१० पार्श्वनाथपूजा	×	संस्कृत	
११ कर्मदहनपूजा	वादिचन्द्र	"	
१२ अनन्तव्रतरास	ब्रह्मजिनदास	हिन्दी	
१३. अष्टक [पूजा]	नेमिदत्त	संस्कृत	प० राघव की प्रेरणा से
१३. अष्टक	×	हिन्दी	भक्ति पूर्वक दी गई
१५. अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ अष्टक	×	संस्कृत	
नित्यपूजा	×	"	

विशेष—पत्र न० १६८ पर निम्न लेख लिखा हुवा है—

भट्टारक श्री १०८ श्री विद्यानन्दजी स० १८२१ ता वर्षे साके १६६६ प्रवर्त्तमाने कार्त्तिकमासे कृष्णपक्षे प्रतिपदादिवसे रात्रि पहर पाछलीइ देवलोक थया छेजी

५३८२ गुटका स० २। पत्र स० ६३। आ० ८३×५३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल स० १८२०। ले० काल स० १८३५। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—इस गुटके में बख्तराम साह कृत मिथ्यात्व खण्डन नाटक है। यह प्रति स्वय लेखक द्वारा लिखी हुई है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री मिथ्यातखण्डन नाटक सम्पूर्णं। लिखत वखतराम साह। स० १८३५।

५३८३ गुटका स० ३। पत्र स० ७५। आ० ४×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय-×। ले० काल स० १९०४। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—फतेहराम गोदीका ने लखा था।

१ रसायनविधि	×	हिन्दी	१–३
२. परमज्योति	बनारसीदास	"	५–१२
३. रत्नत्रयपाठविधि	×	संस्कृत	१३–४३
४ अन्तरायवर्णन	×	हिन्दी	४३–४४
५. मंगलाष्टक	×	संस्कृत	४५–४९
६ पूजा	पद्मनन्दि	"	५०–५४

७. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	”	५५-५९
८. पूजा व जयमाल	×	”	५९-७५

५३८४. गुटका स० ४। पत्र सं० २५। आ० ३×२ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—इस गुटके मे ज्वालामालिनीस्तोत्र, अष्टादशसहस्रशीलभेद, षट्लेश्यावर्णन, जैनरक्षामंत्र आदि पाठो का सग्रह है।

५३८५. गुटका सं० ५। पत्र स० २३। आ० ८×६ इंच। भाषा-संस्कृत। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—भर्तृहरिशतक (नीतिशतक) हिन्दी अर्थ सहित है।

५३८६. गुटका सं० ६। पत्र सं० २८। आ० ८×६। भाषा-हिन्दी। पूर्ण।

विशेष—पूजा एव शातिपाठ का सग्रह है।

५३८७. गुटका सं० ७। पत्र सं० ११६। आ० ९×७ इंच। ले० काल १८५८ आसोज बुदी ४ शनिवार। पूर्ण।

१. नाटकसमयसार	बनारसीदास	हिन्दी	१-९७
२. पद—होजी म्हारो कंथ चतुर दिलजानी हो	विश्वभूषण	”	९७
३. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	”	९८-११६

५३८८. गुटका सं० ८। पत्र सं० २१२। आ० ९×६ इञ्च। ले० काल सं० १७९८। दशा-सामान्य।

विशेष—पं० धनराज ने लिखवाया था।

५३८९ गुटका सं० ९। पत्र सं० ३५। आ० ९×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी।

विशेष—जिनदास, नवल आदि के पदो का संग्रह है।

५३९० गुटका सं० १०। पत्र सं० १५३। आ० ९×५ इञ्च। ले० काल सं० १९५४ श्रावण सुदी १३। पूर्ण। दशा-सामान्य।

१. पद—जिनवाणीमाता दर्शन की बलिहारी	×	हिन्दी	१
२. बारहभावना	दौलतराम	”	
३. आलोचनापाठ	जौहरीलाल	”	
४. दशलक्षणपूजा	भूधरदास	”	

५. पञ्चमेरु एव नंदीश्वरपूजा	द्यानतराय	हिन्दी	२-३५
६. तीन चौबीसी के नाम व दर्शनपाठ	×	संस्कृत हिन्दी	
७. परमानन्दस्तोत्र	बनारसीदास	"	१
८. लक्ष्मीस्तोत्र	द्यानतराय	"	६
९. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	५-६
१०. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	
११. देवशास्त्रगुरुपूजा	×	हिन्दी	
१२. चौबीस तीर्थङ्करो की पूजा	×	"	१५३ तक

५३६१. गुटका स० ११ । पत्र सं० २२२ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल स० १७४६ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

१. रामायण महाभारत कथा [४६ प्रश्नो का उत्तर है]	×	हिन्दी गद्य	३-१४
२. कर्मचूरव्रतवेलि	मुनि सकलकीर्त्ति	"	१५-१८

अथ वेलि लिख्यते—

दोहा—
कर्मचूर व्रत जे कर, जीनवाणी ततसार ।
नरनारि भव भजन धरे, उतर चौरासी सु पार ।।

कीधौ कुणै कुण आरम्यो सकलकीर्त्ति नाम,
कर्म सेइय कीधो गुणी कोसवी वसि गाम ।।
नमणी गुरु निरगथ नै, सारद दसगुण पुरै ।
कहो बरत बेलि उदयु करमसेण कर्मचुरै ।।
ज्ञानावर्णी दर्स्न साता वेदनी मोह मदराई ।
अन्हें जीतनै चेति होसी, कहालु कर वखण सुहाई ।।
नाम कर्म पाचमोग कुछुगे आयु भेदो ।
गोत्र नीच गति पोहो चाहै, अन्तराई भय भेदो ।।
चितामणि सुचित अविलागौ, कर्मसेण गुणगाई ।।१।।

दोहा— एक कर्म को वेदना, भु जै है सब लोइ।
नरनारी करि उधरै, चरण गुणसस्थान संजोई ॥१॥

अन्तिमपाठ- कवित्त—

सकलकीर्त्ति मुनि आप सुनत मिटैं संताप चौरासी मरि जाईं फिर अजर अमर पद पाइये ॥
जूनी पोथी भई अक्षर दीसै नही फेरु उतारी बंध छंद कवित्त बेली वनाई क गाईयै ॥
चंप नेरी चाटसू केते भट्टारक भये साधा पार अडसठि जेहि कर्मचूर बरत कह्यो है वणाई ध्याइयै ॥
सवत् १७४६ सौमवार ७ करकौवु कर्मचूर व्रत बैठगौ अमर पद चुरी सीर सीधातम जाइयै ॥

नोट—पाठ एक दम अशुद्ध है। लीपि भी विकृत है।

३. ऋषिमण्डलमन्त्र	×	सस्कृत	ले० काल १७३६ १७-१६
४. चिंतामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	×	”	अपूर्ण २०
५. अंजना को रास	धर्मभूषण	हिन्दी	२१-३४

प्रारम्भ— पहैली रे अर्हंत पाय नमैं।
हरै भव दुख भजन त्व भगवत कर्म कायातना का पसौ।
पाप ना प्रभव असि सौ अंत तौ रास भणौ इति अजना
तै तौ सयम साधि न गई स्वर लौक तौ सती न सरोमणि वदीये ॥१॥
वसं विधाधर उपनी माय, नामै तीन वनधि सपजे।
भाव करता हौ भवदुख जाय, सतो न सरोमणि वंदये ॥२॥
ब्राह्मी नै सु दरी वदये, राजा हौ रसभ तणै घर द्वैय।
बाल पणौ तप बन गई काम ना भौगन वछीय जे हतौं ॥ सती म ''' ३ ॥
मेघ सेनापति नै घरनारि अजना सो मदालसा।
त्यारे न कोनै सीयाल लगार तो '॥ सती न ''' ४ ॥
पचसै किसन कुमारिका, ईनि वाल कुवारी लागी रे पावै।
जादव जग जानी करि, द्वारिका दहन सुनि तप जाय।
हरी तनी अजना वदीय जिनै राग छोडी मन मैं धरयौ वैराग तो ॥ सती न ५॥

अन्तिमपाठ—

वस विद्याधरे उपनि मात, नामे नवनिधि पावसो ।

भाव करता हो भव दुख जायतो, सातो न सरोमणि वदीये ।। ५८ ।।

इम गावै धर्मभूपण रास, रत्नमाल सु यो रचि रास ।

सर्व पंचमिलि मगल थयो, कहै ता रास ऊपजै रस विलास ।।

ढाल भवन केरी इम भणे, कठ विना राग किम होई ।

बुधि विना ज्ञान नविसोई, गुरु विना मारग कोम पाती सो ।

दीपक विना मदर अधकार, देवभक्ति भाव विना सव द्वार तो ।।५६।।

रस बिना स्वाद न ऊपजै, तिम तिम मति वधै देव गुरु पसाव ।

खिमा विन सील करै कुल हाणि, निर्मल भाव राखो सदा ।

केतन कलक आनि कुल जाय, कुमति विनास निर्मल भावसूं ।

ते समझो सबही नरनारि, अर्हंत विना दुर्लभ सरावक अवतार ।

बुहि समता भावसू स्योपुरवास, एह कथी सव मगल करो।।

इति श्री अजनारास सती सुदरी हनुमत प्रसादात् सपूरण ।।

स्वस्ति श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्रीकुंदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीजगत्कीर्त्ति तत्पट्टे भ० न्द्रकीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्रीमहेन्द्रकीर्त्ति तस्य भ० श्रीक्षेमेन्द्रकीर्त्ति तस्योपदेश गुणकीर्त्तिना इत्यादि तन्मध्ये पडित ले लिखामि वोराव नगरे सुथाने श्रीमहावीरचैत्यालये अमुक श्रावके सर्व वघेरवाल ज्ञात बुधिति समपात रहा भनाथ यात्रा निमित्त गवत्त उपदेश मासोत्तममासे शुभे शुक्लपक्षे आसोज बदी ३ दीतवार संवत् १८२० शालिवाहने शुभमस्तु ।

न्हवणविधि	×	संस्कृत	ले० काल १८२० आसोज वदी ३
छियालीसगुण	×	हिन्दी	
	×	” पृष्ठ ३६वें पर चौवीसवें तीर्थङ्करोके चित्र	
चौवीस तीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी	३६-५०

विशेष—पत्र ४०वें पर भी एक चित्र है सं० १८२० में प० खुशालचन्द ने वैराठ मे प्रतिलिपि की थी ।

भविष्यदत्तपञ्चमीकथा	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	४१-८१

रचनाकाल सं० १६३३ पृष्ठ ५०-पर रेखाचित्र ले० काल सं० १८२१ वोराव (वौराज) मे खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी। पत्र ८२ पर तीर्थङ्करो के ३ चित्र हैं।

११. हनुमंतकथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	८३-१०६
१२. बीस विरहमानपूजा	हर्षकीर्ति	"	११०
१३. निर्वाणकाण्डगाथा	भगवतीदास	"	१११
१४. सरस्वतीजयमाल	ज्ञानभूषण	संस्कृत	११२
१५ अभिषेकपाठ	×	"	११२
१६. रविव्रतकथा	भाऊ	हिन्दी	११४-१२१
१७. चिन्तामणिस्तम्भ	×	संस्कृत ले० काल १८२१	१२२
१८. प्रद्युम्नकुमाररासो	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	१२३-१५१
		र० काल १६२८ ले० काल १८११	
१९. श्रुतपूजा	×	संस्कृत	१५२
२०. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१५३-१५६
२१. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	१५७-१६६
२२ पूजासंग्रह	×	"	१६७-१७२
२३ कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	१८३
२४. पाशाकेवली	×	हिन्दी	१८४-२१७
२५. पञ्चकल्याणकपाठ	रूपचन्द	"	२१७-२२२

विशेष—कई जगह पत्रों के दोनों ओर सुन्दर बेल हैं।

५२६२. गुटका सं० १२। पत्र सं० १०६। आ० १०३×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

१. यज्ञ की सामग्री का ब्यौरा	×	हिन्दी	१

विशेष—(अथ जागी की मौजे सिमरिया म प्र० देवाराम ने ताकी सामा भाई संवत् १७६७ माह बुदी पूर्णिमा पुरानी पोथी में से उतारी। पोथी जीरण होगई तब उतरी। सब चीजों का निरख भी दिया हुआ है।

२ यज्ञमहिमा	×	हिन्दी	२

विशेष—मौजे सिमरिया में माह सुदी १५ सं० १७६७ में यज्ञ किया उसका परिचय है। सिमरिया में चौहान वंश के राजा श्रीराव थे। मायाराम दीवान के पुत्र देवाराम थे। यज्ञाचार्य मोरेना के पं० टेकचन्द थे। यह यज्ञ सात दिन तक चला था।

३ कर्मविपाक	×	संस्कृत	३-११

विशेष—ब्रह्मा नारद संवाद में से लिया गया है। तीन अध्याय हैं।

४ आदीश्वर का समवशरण	×	हिन्दी १६६७ कार्तिक सुदी	१२-१४

आदीश्वर को समोशरण-आदिभाग—

गुर गनपति मन ध्याऊं, चित चरन सरन ल्याउ।
मति मागि लेउ ग्रैसी, मुनि मानि लैहि जैसी ॥१॥
आदीश्वर गुण गाऊ, वर साथ सगु (र) पाउं।
चारित्र जिनेस लीया, भरथ को राजु दीया ॥२॥
तजि राज होइ भिखारी, जिन मौन वरत धारी।
तब आपनी कमाई, भई उदय अतराई ॥३॥
मुनि भीख काज जावइ, नहि भातु हाथ आवइ।
तेइ कन्या सरूपा, कोई रतन अति अनूपा ॥४॥

अन्तिमभाग—

रिषि सहस गुन गावइ, फल बोधि बीजु पावइ।
कर जोडिइ मुख भासइ, प्रभु चरन सरन राखइ ॥७१॥
समोसरण जिनरायी कौ, गावहि जे नरनारि।
मनवछित फल भोगवई, तिरि पहुचहि भवपार ॥७२॥
सोलसह सडसठि वरष, कातिक सुदी वलिराज।
सालकोट सुभ थानवर, जयउ सिध जिनराज ॥७३॥

इति श्री आदीश्वरजी को समोसरण समाप्त ॥

५ द्वितीय समोसरण	ब्रह्मगुलाल	हिन्दी	१४-१६

आदिभाग—

प्रथम सुमिरि जिनराज अनत, सुख निधान मगल सिव संत
जिनवाणी सुमिरत सनु बढै, ज्यौ गुनठान छिपक छिनु चढै ॥१॥
गुरुपद सेवहु ब्रह्म गुलाल, देवसास्त्र गुर मगल माल।
इनहि सुमरि वरन्यौ सुखसार, समवसरन जैसे विसतार ॥२॥
दीठ बुधि मन भायो करै, मूरिख पद ग्रान पायो डरै।
सुनहु भव्य मेरे परवान, समोसरन कौ करौं बखान ॥३॥

सुभ आसन दिढ जोग ध्यान, वर्द्धमान भयो केवल ज्ञान ।
समोसरण रचना अति बनी, परम धरम महिमा अति तणी ।।४।।

अन्तिमभाग— चल्यौ नगर फिरि अपने राइ, चरण·सरण जिन अति सुख पाइ ।
समोसरणय पूरण भयौ, सुनत पढित पातिग गलि गयौ ।।६५।।

दोहरा— सौरह सैं अठसठि समै, माघ दसै सित पक्ष ।
गुलालब्रह्म भनि गीत गति, जसोनदि पद सिक्ष ।।६६।।
सूरदेस हथि कंतपुर, राजा वक्रम साहि ।
गुलालब्रह्म जिन धर्म्मु जय, उपमा दीजै काहि ।।६७।।

इति समोसरन ब्रह्मगुलाल कृत संपूर्ण ।।

६. नेमिजी को मंगल	जगतभूषण के शिष्य विश्वभूषण	हिन्दी	१६-१७
		रचना स० १६६८ श्रावण सुदी ८	

आदिभाग— प्रथम जपौ परमेष्ठि तौ गुर हीयौ धरौ ।
सरस्वती करहु प्रणाम कवित्त जिन उच्चरौ ।।
सोरठि देस प्रसिद्ध द्वारिका अति वनी ।
रची इन्द्र नै आइ सुरनि मनि बहुकनी ।।
बहु कनीय मदिर चैत्य खीयौ, देखि सुरनर हरषीयौ ।
समुद विजै वर भूप राजा, सक्र सोभा निरखीयौ ।।
प्रिया जा सिव देवि जानौ, रूप अमरो ऊढसा ।
राति सुदरि सैन सूती, देखि सुपनै षोडशा ।।१।।

अन्तिम भाग— संवत् सोलह से अठानूवा जाणीयौ ।
सावन मास प्रसिद्ध अष्टमी मानियौ ।।
गाऊ सिकदराबाद पार्श्वजिन देहुरे ।
श्रावग कीया सुजान धर्म्म सौ नेहरे ।।
धरे धर्म्म सौ नेहु अति ही देही सवकौ दान जू ।
स्यादवाद वानी ताहि मानै करै पडित मान जू ।।

जगतभूषण भट्टारक जै विश्वभूषण मुनिवर ।

नर नारी मंगलचार गावैं पढत पातिग निस्तरैं ॥

इति नेमिनाथ जू को मंगल समाप्त ॥

७ पार्श्वनाथचरित्र विश्वभूषण हिन्दी १७-१६

आदिभाग रागनट— पारस जिनदेव को सुनहु चरित्रु मनु लाई ॥ टेक ॥

मनउ सारदा माइ, भजो गनधर चितुलाई ।

पारस कथा संबंध, कहो भाषा सुखदाई ॥

जंबू दखिन भरथ मै, नगर पोदना मांझ ।

राजा श्री अरविंद जू, भुगतै सुख अवांझ ॥ पारस जिन० ॥

विप्र तहा एकु वसै, पुत्र द्वौ राज सुचारा ।

कमठु वडो विपरीत, विसन सेवै जु अपारा ॥

लघु भैया मरभूति सौ, वसुधरि दई ता नाम ।

रति क्रीडा सेज्या रच्यौ, हो कमठ भाव के धाम ॥ पारस जिन० ॥

कोपु कीयो मरभूति, कहो मत्री सो राच्यो ।

सीख दई नही गह्यो काम रस अंतर साच्यो ॥

कमठ विषै रस कारनै, अमर भूति वाधो जाई ।

सो मरि वन हाथी भयो, हथिनि भई त्रिय आइ ॥ पारस जिन० ॥

अन्तिमपाठ— अवधि हेत करि वात सही देवनि तब जानी ।

पदमावति धरणेन्द्र छत्र मस्तिग पर तानी ॥

सब उपसर्ग निवारिकै, पार्श्वनाथ जिनंद ।

सकल करम पर जारिकै, भये मुक्ति त्रियचंद ॥ पारस जिन० ॥

मूलसंघ पट्ट विश्वभूषण मुनि राई ।

उत्तर देखि पुराण रचि, या वई सुभाई ॥

वसै महाजन लोग जु, दान चतुर्विधि का देत ।

पार्श्वकथा निहचै सुनौ, हो मोछि प्राप्ति फल लेत ॥

पारस जिनदेव को, सुनहु चरितु मन लाइ ॥२५॥

इति श्री पार्श्वनाथजी को चरित्रु संपूर्ण ॥

८ वीरजिणंदगीत	भगौतीदास	हिन्दी	१९-२०
९. सम्यग्ज्ञानी धमाल	"	"	२०-२१
१० स्थूलभद्रशीलरासो	×	"	२१-२२
११. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	२२-२३
१२ "	द्यानतराय	"	२३
१३ "	×	संस्कृत	२३
१४. पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	"	२४
१५ "	पद्मनन्दि	"	२४
१६. हनुमतकथा	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी र० काल १६१६	२५-७५
		ले० काल १८३४ ज्येष्ठ सुदी ३	
१७. सीताचरित्र	×	हिन्दी अपूर्ण	७७-१०६

५३६३ गुटका स० १३। पत्र सं० ३७। आ० ७३/४×१० इञ्च। ले० काल स० १८९२ आसोज बुदी ७। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—निम्न पूजा पाठो का सग्रह है—

१. कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	पूर्ण
२ लक्ष्मीस्तोत्र (पार्श्वनाथस्तोत्र)	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	"
३. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	"
४ भक्तामरस्तोत्र	आ० मानतुंग	"	"
५. देवपूजा	×	हिन्दी संस्कृत	"
६. सिद्धपूजा	×	"	"
७ दशलक्षणपूजा जयमाल	×	संस्कृत	"
८. षोडशकारणपूजा	×	"	"
९. पार्श्वनाथपूजा	×	हिन्दी	"
१०. शांतिपाठ	×	संस्कृत	"
११. सहस्रनामस्तोत्र	प० आशाधर	"	"
१२. पञ्चमेरुपूजा	भूधरदास	हिन्दी	"

१३. अष्टाह्निकापूजा	×	संस्कृत	"
१४. अभिषेकविधि	×	"	"
१५ निर्वाणकाडभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	"
१६ पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	"	"
१७. अनन्तपूजा	×	संस्कृत	"

विशेष—यह पुस्तक सुखलालजी वज के पुत्र मनसुख के पढने के लिए लिखी गई थी ।

५३६४ गुटका नं० १४ । पत्र स० १३ । आ० ४×४३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—शारदाष्टक (हिन्दी) तथा ८४ आसादनो के नाम हैं ।

५३६५ गुटका नं० १५ । पत्र स० ४३ । आ० ५×३१/२ इच । भाषा–हिन्दी । ले० काल १८६० । पूर्ण

विशेष—पाठ अशुद्ध हैं—

१. कहज्योजी नेमजीसू जाय म्हेतो थाही सग वाला	×	हिन्दी	१
२. हो मुनिवर कब मिलि है उपगारी	भागचन्द	"	१–२
३ ध्यावाला हो प्रभु भावसोजी	×	"	२–८
४ प्रभु थाकीजी मूरत मनडो मोहियो	ब्रह्मकपूर	"	८–६
५ गरज गरज गहै नवरसै देखो भाई	×	"	६
६ मान लीज्यो म्हारी अरज रिषभ जिनजी	×	"	१०
७ तुम सी रमा विचारी तजि	×	"	११
८ कहज्योजी नेमिजीसूं जाय म्हे तो	×	"	१२
६. मुझे तारोजी भाई साइया	×	"	१३
१०. सबोधपंचासिकाभाषा	बुधजन	"	१३–२०
११ कहज्योजी नेमिजीसूं जाय म्हेतो थाकही सगवाला	राजचन्द	"	२१–२३
१२. मान लीज्यो म्हारो आज रिषभ जिनजी	×	"	२३
१३ तजिकै गये पीया हमकै तुमसी रमा विचारी	×	"	२३–२४
१४ म्हे ध्यावाला हो प्रभु भावसूं	×	"	२४
१५ साधु दिगवर नगन उर पद सवर भूषणधारी	×	"	२५

१६. म्हे निशिदिन ध्यावाला	बुधजन	"	२६
१७. दर्शनपाठ	×	"	२६-२७
१८. कवित्त	×	"	२८-२६
१६. बारहभावना	नवल	"	३३-३५
२०. विनती	×	"	३६-३७
२१. बारहभावना	दलजी	"	३८-३६

५३६६. गुटका स० १६ । पत्र स० २२६ । ग्रा० ५½×५ इञ्च । ले० काल १७५१ कात्तिक सुदी १ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—दो गुटकाओ को मिला दिया गया है ।

विषयसूची—

१. वृहद्कल्याण	×	हिन्दी	३-१२
२. मुक्तावलिव्रत की तिथिया	×	"	१२
३. झाडा देने का मन्त्र	×	"	१२-१६
४ राजा प्रजाको वशमे करनेका मन्त्र	×	"	१७-१८
५. मुनीश्वरों की जयमाल	ब्रह्म जिनदास	"	२३-२४
६. दश प्रकार के ब्राह्मण	×	सस्कृत	२५-२६
७ सूतकवर्णन (यशस्तिलक से)	सोमदेव	"	३०-३१
८ गृहप्रवेशविचार	×	"	३२
६. भक्तिनामवर्णन	×	हिन्दी सस्कृत	३३-३५
१०. दोपावतारमन्त्र	×	"	३६
११. काले विच्छुके डङ्क उतारने का मत्र	×	हिन्दी	३८

नोज—यहा से फिर सख्या प्रारम्भ होती है ।

१२. स्वाध्याय	×	सस्कृत	१-३
१३. तत्वार्थसूत्र	उमास्वाति	"	१ ३
१४ प्रतिक्रमणपाठ	×	"	१६-३७
१५ भक्तिपाठ (सात)	×	"	३७-७२

३० स्वयम्भूस्तोत्र	आ० समन्तभद्र	संस्कृत	१०८-११८
३१ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	११८
३२ दर्शनस्तोत्र	सकलचन्द्र	"	११९
३३ सुप्रभातस्तवन	×	"	११९-१२१
३४ दर्शनस्तोत्र	×	प्राकृत	१२१
३५ बलात्कार गुरावली	×	संस्कृत	१२२-२४
३६. परमानन्दस्तोत्र	पूज्यपाद	"	१२४-२५
३७ नाममाला	धनञ्जय	"	१२५-१३७
३८. वीतरागस्तोत्र	पद्मनन्दि	"	१३८
३९ करुणाष्टकस्तोत्र	"	"	१३९
४० सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१३९-१४१
४१ समयसारगाथा	आ० कुन्दकुन्द	"	१४१
४२. अर्हद्भक्तिविधान	×	"	१४१-१४३
४३. स्वस्त्ययनविधान	×	"	१४४-१५६
४४ रत्नत्रयपूजा	×	"	१५६-१६२
४५. जिनस्नपन	×	"	१६२-१६८
४६ कलिकुण्डपूजा	×	"	१६८-१७१
४७ षोडशकारणपूजा	×	"	१७२-१७३
४८ दशलक्षणपूजा	×	"	१७३-१७५
४९ सिद्धस्तुति	×	"	१७५-१७६
५० सिद्धपूजा	×	"	१७६-१८०
५१ शुभमालिका	श्रीधर	"	१८२-१९२
५२ सारसमुच्चय	कुलभद्र	"	१९२-२०६
५३ जातिवर्णन	×	" ५८ पद्य ७७ जाति	२०७-२०८
५४ फुटकरवर्णन	×	"	२०९
५५ षोडशकारणपूजा	×	"	२१०

५६. औषधियों के नुसखे	X	हिन्दी	२११
५७. संग्रहसूक्ति	X	संस्कृत	२१२
५८. दीक्षापटल	X	"	२१३
५९. पार्श्वनाथपूजा (मन्त्र सहित)	X	"	२१४
६०. दीक्षा पटल	X	"	२१८
६१ सरस्वतीस्तोत्र	X	"	२२३
६२. क्षेत्रपालस्तोत्र	X	"	२२३-२२४
६३ सुभाषितसंग्रह	X	"	२२५-२२८
६४ तत्वसार	देवसेन	प्राकृत	२३१-२३५
६५. योगसार	योगचन्द	संस्कृत	२३१-२३५
६६. द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत	२३६-२३७
६७ श्रावकप्रतिक्रमण	X	संस्कृत	२३७-२४५
६८. भावनापद्धति	पद्मनन्दि	"	२४६-२४७
६९. रत्नत्रयपूजा	"	"	२४८-२५९
७०. कल्याणमाला	पं० आशाधर	"	२५९-२६०
७१ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	२६०-२६३
७२ समयसारवृत्ति	अमृतचन्द्र सूरि	"	२६४-२८५
७३ परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	२८६-३०३
७४ कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	३०४-३०६
७५ परमेष्ठियों के गुण व अतिशय	X	प्राकृत	३०७
७६. स्तोत्र	पद्मनन्दि	संस्कृत	३०८-३०९
७७. प्रमाणप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसूरि	"	३१०-३२१
७८ देवागमस्तोत्र	आ० समन्तभद्र	"	३२२-३२७
७९. [illegible]	भट्टारक[illegible]	"	३२८-३२९
८०. सुभाषित	X	"	३३०-३३१
८१ जिनगुणस्तवन	X	"	३३१-३३२

८२. क्रियाकलाप	X	"	३३२-३३४
८३ संभवनाथपद्धडी	X	अपभ्रंश	३३४-३३७
८४ स्तोत्र	लक्ष्मीचन्द्रदेव	प्राकृत	३३५-३३६
८५. स्त्रीशृङ्गारवर्णन	X	संस्कृत	३३६-३४१
८६. चतुर्विंशतिस्तोत्र	माघनन्दि	"	३४२-३४३
८७ पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामि	"	३४४
८८ मृत्युमहोत्सव	X	"	३४५
८६ अनन्तगठीवर्णन (मन्त्र सहित)	X	"	३४६-३४८
६० आयुर्वेद के नुसखे	X	"	३४६
६१. पाठसंग्रह	X	"	३५०-३५४
६२ आयुर्वेद नुसखा संग्रह एवं मंत्रादि संग्रह	X	संस्कृत हिन्दी योगशत वैद्यक से संगृहीत	३५७-३८
६३ अन्य पाठ	X	"	३८८-४०७

इनके अतिरिक्त निम्नपाठ इस गुटके में और है।

१ कल्याण वडा　२. मुनिश्वरोंकी जयमाल (ब्रह्म जिनदास)　३ दशप्रकार विप्र (मत्स्यपुराणेषु कथिते)
४ सूतकविधि (यशस्तिलक चम्पू से)　५ गृहबिंबलक्षण　६. दीपावतारमन्त्र

५३६८. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ५५ । आ० ७X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८०४ श्रावण बुदी १२ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ जिनराज महिमास्तोत्र	X	हिन्दी	१-३
२. सतसई	विहारीलाल	" ले० काल १७७४ फागुण बुदी १	१-४८
३. रसकौतुक रास सभा रञ्जन	गङ्गादास	" " १८०४ सावण बुदी १२	४६-५५

दोहा—　　अथ रस कौतुक लिख्यते—

गंगाधर सेवहु सदा, गाहक रसिक प्रवीन ।
राज सभा रंजन कहत, मन हुलास रस लीन ॥१॥
दंपति रति नैरोग तन, विधा सुधन सुगेह ।
जो दिन जाय अनद सौ, जीतव को फल ऐह ॥२॥

सुदर पिय मन भावती, भाग भरी सकुमारि ।
सोइ नारि सतेवरी, जाकी कोठि ज्वारि ॥३॥
हित सौ राज सुता, विलसि तन न निहारि ।
ज्या हाथा रै वरह ए, पात्या मैड कारन भारि ॥४॥
तरसै हू परसै नही, नौढा रहत उदास ।
जे सर सूकै भादवै, की सी उन्हालै ग्रास ॥५॥

अन्तिमभाग—

समये रति पोसति नहो, नाहुरि मिलै बिनु नेह ।
औसरि चुक्यो मेहरा, काई वरसि करेह ॥९८॥
मुदरी लै छलस्यों कह्यो, औ हौं फिर ना पैद ।
काम सरै दुख वीसरै, वैरी हुवो वैद ॥९९॥
मानवती निस दिन हरै, वोलत खरीवदास ।
नदी किनारै रूखडौ, जव तव होइ विनास ॥१००॥
सिव सुखदायक प्रानपति, जरो ग्रान कौ भोग ।
नासै देसी रूखडी, ना परदेसी लोग ॥१०१॥
गंता प्रेम समुद्र है, गाहक चतुर सुजान ।
राज सभा इहै, मन हित प्रीति निदान ॥१०२॥

इति श्री गगाराम कृत रस कौतुक राजसभा रञ्जन समस्या प्रवध प्रभाव । श्री मिती सावरण वदि १२ वुधवार सवत् १८०४ सवाई जयपुरमध्ये लिखी दीवान ताराचन्दजी को पोथी लिखत माणिकचन्द वज वाचै जोहेने जिसा माफिक वच्या ।

५३९९. गुटका सं० १९ । पत्र स० ३९ । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९३० आषाढ सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—रसालकुंवर की चौपई-नवरू कवि कृत है ।

५४००. गुटका सं० २० । पत्र सं० ६८ । आ० ६×३ इञ्च । ले० काल सं० १९६५ ज्येष्ठ सुदी १२ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—महीधर विरचित मन्त्र महोदधि है ।

५४ १. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ३१६ । आ० ६X५ इञ्च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. सामायिकपाठ	X	संस्कृत प्राकृत	१-२४
२ सिद्ध भक्ति आदि संग्रह	X	प्राकृत	२५-७०
३ समन्तभद्रस्तुति	समन्तभद्र	संस्कृत	७२
४ सामायिकपाठ	X	प्राकृत	७३-८१
५ सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत	८२-८६
६ पार्श्वनाथ का स्तोत्र	X	"	६७-१००
७ चतुर्विंशतिजिनाष्टक	शुभचन्द्र	"	१०१-१४६
८ पञ्चस्तोत्र	X	"	१४७-१७०
९, जिनवरस्तोत्र	X	"	१७०-२००
१० मुनीश्वरों की जयमाल	X	"	२०१-२५०
११ सकलीकरणविधान	X	"	२५१-३००
१२ जिनचौवीसभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्त्ति	हिन्दी पद्य　पद्य सं० ४८	३०१-८

आदिभाग—

जिनवर चुवीसइ जणि भानु पाय नमी कहु भवह विचार ।

माविइ सुणत ये सत ।।१।।

यशक्षय राजा पणि भणीइ, माग भूमि आइ पणि सुणीइ ।

श्रीधर ईशानि देव ।।२।।

सुविराज सातयइ भवि जाणु, अच्युतेन्द्र सोलम वखाणु ।

वज्रनाभि चन्द्रेश ।।३।।

तप करि सर्वारथ सिद्धि पासी, भव अग्यारम वृषभह स्वामी ।

मुगितइ ग्या जगनाह ।।४।।

विमलवाहना राजा धरि जायु, पचामुत्तरि अहमिन्द्र सुभाणु ।

इश भवजिन परमपद पास्यू ।।५।।

विमल वाहन राजा धरि जायु, पंचामुत्तरि अहमिन्द्र वखाणु ।

अजित अमर पद पास्यू ।।६।।

विमल वाहन राजा धरि मुणीइ, प्रथमग्रीवि अहमिंद्र सुभणीइ ।

शंभव जिन अवतार ।।७।।

अन्तिमभाग— आदिनाथ अग्यान भवान्तर, चन्द्रप्रभ भव सात सोहेकर ।

शान्तिनाथ भवपार ।।४५।।

नमिनाथ भवदशा तम्हे जाणु , पार्श्वनाथ भव दसइ बखाणुं ।

महावीर भव तेत्रीसइ ।।४६।।

अजितनाथ जिन आदि कही जइ, अठार जिनेश्वर हिइ धरीजई ।

त्रिणि त्रिणि भव सही जाणु ।।४७।।

जिन चुवीस भवातर सारो, भणता सुणता पुण्य अपारो ।

श्री विमलेन्द्रकीर्त्ति इम बोलइ ।।४८।।

इति जिन चुवीस भवान्तर रास समाप्ता ।।

१३	मालीरासो	जिनदास	हिन्दी पद्य	३०८–३१०
१४	नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि	×	संस्कृत	३११–१३
१५	पद–जीवारे जिणवर नाम भजै	×	हिन्दी	३१४–१५
१६	पद-जीया प्रभु न सुमरचो रे	×	"	३१६

५४०२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १५४ । आ० ६×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–भजन । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

१	नेमि गुण गाऊ वाछित पाऊ	महीचन्द सूरि	हिन्दी	१
	वाय नगर मे सं० १८८२ मे प० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।			
२	पार्श्वनाथजी की निशाणी	हर्ष	हिन्दी	१–६
३.	रे जीव जिनधर्म	समय सुन्दर	"	६
४	सुख कारण सुमरो	×	"	७
५	कर जोर रे जीवा जिनजी	पं० फतेहचन्द	"	८
६	चरण शरण अब आइयो	"	"	८
७	रुलत फिरचो अनादिडो रे जीवा	"	"	९

८. जादम जात वणाय	फतेहचन्द	हिन्दी	र० काल स० १८४०	६
६. दर्शन दुहेलो जी	"	"		१०
१०. उग्रसेन घर बारणौ जी	"	"		११
११. वारीजी जिनदजी वारो	"	"		१२
१२ जामन मरण का	"	"		१३
१३. तुम जाय मनावो	"	"		१३
१४ अब ल्यूं नेमि जिनंदा	"	"		१४
१५ राज ऋषभ चरण नित वदिये	"	"		१५
१६. कर्म भरमायै	"	"		१६
१७ प्रभुजी थाके सरणे आया	"	"		१७
१८. पार उतारो जिनजी	"	"		१७
१६. थाकी सावरी मूरति छवि प्यारी	"	"		१८
२०. तुम जाय मनावो	"	"	अपूर्ण	१८
२१. जिन चरणा चितलाओ	"	"		१६
२२. म्हारो मन लाग्योजी	"	"		१६
२३ चञ्चल जीव जरे	नेमीचन्द	"		२०
२४ मो मनरा प्यारा	सुखदेव	"		२१
२५ आठ भवारो वाहलो	खेमचन्द	"		२२
२६ समदविजयजीरो जादुराय	"	"		२३
२७. नाभिजी के नन्दन	मनसाराम	"		२३
२८ त्रिभुवन गुरु स्वामी	भूधरदास	"		२४
२६. नाभिराय मोरा देवी	विजयकीर्ति	"		२६
३०. वारि २ हो वोमाजी	जीवणराम	"		२६
३१. श्री ऋषभेसुर प्रणमूं पाय	सदासागर	"		२७
३२ परम महा उत्कृष्ट आदि सुरि	अजैराम	"		२७
३३. वै गुरु मेरे उर वसो	भूधरदास	"		२६
३४. करो निज सुखदाई जिनधर्म	त्रिलोककीर्ति	"		३०

३५ श्रीजिनराय की प्रतिमा वदी जाय	त्रिलोककीर्त्ति	हिन्दी		३१
३६. होजी थाकी सावली सूरत	प० फतेहचन्द	"		३२
३७. कबही मिलसी हो मुनिवर	×	"		३३
३८. नेमीसुर गुरु सरस्वती	सूरजमल	"	र० काल स० १७८४	३३
३९. श्री जिन तुमसे वीनऊं	अजयराज	"		३५
४०. समदविजयजीरो नंदको	मुनि हीराचन्द	"		३५
४१ शभुजारो वासी प्यारो	नयविमल	"		३६
४२. मन्दिर आखाला	×	"		३६
४३. ध्यान धरयाजी मुनिवर	जिनदास	"		३७
४४ ज्यारे सोभे राजि	निर्मल	"		३८
४५ केसर हे केसर भीनो म्हारा राज	×	"		३९
४६. समकित थारी सहूलडीजी	पुरुषोत्तम	"		४०
४७. अवगति मुक्ति नही छै रे	रामचन्द्र	"		४१
४८. वधावा	"	"		४२
४९. श्रीमदरजी सुणज्यो मोरी वीनती	गुणचन्द्र	"		४३
५०. करकसारो वीनती	भगोसाह	"		४४-४५
		सूरा नगर मे स० १८२६ मे रचना हुई थी।		
५१. उपदेशबावनी	×	हिन्दी		४५-६१
५२. जैनबद्री देशकी पत्री	मजलसराय	"	स० १८२१	६२-६६
५३ ८५ प्रकार के मूर्खो के भेद	×	"		६७-६९
५४. रागमाला	×	"	३६ रागनियों के नाम हैं	७०
५५. प्रात भयो सुमरदेव	जगतरामगोदीका	"	राग भैरुं	७०
५६. चलि २ हो भवि दर्शन कार्जे	"	"		७१
५७. देवो जिनराज देव सेव	"	"		७२
५८. महावीर जिन मुक्ति पधारे	"	"		७२
५९. हमरेतो प्रभु सुरति	"	"		७३

६० श्रीरिपभजो को ध्यान धरो	जगतराम गोदीका	हिन्दी		७३
६१ प्रात प्रथम ही जपो	"	"		७४
६२ जागे श्री नेमिकुमार	"	"	राग रामकली	७४
६३ प्रभु के दर्शन को मैं आयो	"	"		७५
६४ गुरुही भ्रम रोग मिटावे	"	"		७५
६५. फूल कवरी नेमि पहावै	"	"		७५
६६. निंदा तू जागत क्यो नहिं रे	"	"		७६
६७ उतो मेरे प्राणको पियारो	"	"		७६
६८. राखोजी जिनराज सरन	"	"		७६
६९ जिनजी से मेरी लगन लगी	"	"		७६
७०. सुनि हो अरज तेरे पाय परौं	"	"		७७
७१ मेरी कौन गति होसी	"	"		७७
७२ देखोरी नेम कैसी रिद्धि पाई	"	"		७८
७३ आजि बधाई राजा नाभि के	"	"		७८
७४ वीतराग नाम सुमरि	मुनि विजयकीर्त्ति	"		७९
७५. या चेतन सब बुद्धि गई	बनारसीदास	"		७९
७६ इस नगरी मे किस बिध रहना	बनारसीदास	"		७९
७७ मैं पाये तुम त्रिभुवन राय	हरीसिंह	"		८०
७८ ऋषभअजित सभव हरणा	भ० विजयकीर्त्ति	"		८०
७९ उठो तेरो मुख देखू	ब्रह्मटोडर	"		८०
८० देखोरी आदीश्वरस्वामी कैसा ध्यान लगाया है	खुशालचद			८१
८१ जै जै जै जै जिनराज	लालचन्द	"		८१
८२ प्रभुजी तिहारी कृपा	हरीसिंह	"		८१
८३ धमकि २ घुम लागड दि दा ना	रामभगत	"		८२
८४ विषय त्याग शुभ कारज लागो	नवल	"		८२
८५ छवि जिन देखी देवकी	फतेहचन्द	"		८२

८६ देखि प्रभु दरस कौरण	फतेहचन्द	हिन्दी	८३
८७. प्रभु नेमका भजन करि	बखतराम	"	८३
८८ आजि उदै घर सपदा	खेमचन्द	"	८४
८९. भज श्री ऋषभ जिनद	शोभाचन्द	"	८४
९० मेरे तो योही चाव है	×	"	८४
९१. मुनिसुव्रत जिनराज को	भानुकीर्त्ति	"	८४
९२. मोरे प्रभु सूं प्रीति लगी	दीपचन्द	"	८४
९३. शीतल गगादिक जल	विजयकीर्त्ति	"	८५
९४. तुम आतम गुण जानि	बनारसीदास	"	८५
९५. सब स्वारथ के मीत है	×	"	८५
९६. तुम जिन अटके रे मन	श्रीभूषण	"	८५
९७. कहा रे अज्ञानी जीवकू	×	"	८६
९८. जिन नाम सुमर मन बावरे	द्यानतराय	"	८६
९९. सहस राम रस पीजिये	रामदास	"	८६
१००. सुनि मेरी मनसा मालणी	×	"	८६
१०१. यो साधु ससार मे	×	"	८७
१०२. जिनमुद्रा जिन सारसी	×	"	८७
१०३. इणविधि देव अदेव की मुद्रा लखि लीजै	×	"	८७
१०४ विद्यमान जिनसारसी प्रतिमा जिनवरकी	लालचद	"	८८
१०५ काया वाडी काठको सीचत सूके आप	मुनिपद्मतिलक	"	८८
१०६. ऐसे क्यो प्रभु पाइये	×	"	८९
१०७ ऐसे यो प्रभु पाइये	×	"	८९
१०८. ऐसे यो प्रभु पाइये सुनि पडित प्राणी	×	"	९०
१०९. मेटो विथा हमारी	नयनसुख	"	९०
११० प्रभुजी जो तुम तारक नाम धरायो	हरखचन्द	"	९०
१११. रे मन विषया भूलियो	भानुकीर्त्ति	"	९१

११२. सुमरन ही मे त्यारें	द्यानतराय	हिन्दी	९१
११३. अब लै जैनधर्म को सरणो	×	"	९१
११४ बैठे वज्रदन्त भूपाल	द्यानतराय	"	९१
११५ इह सुंदर मूरत पार्श्व की	×	"	९२
११६ उठि सवारें कीजिये दरसण	×	"	९२
११७. कौन कुवाण परी रे मना तेरी	×	"	९२
११८ राम भरथ सौं कहे सुभाय	द्यानतराय	"	९३
११९ कहे भरतजी सुणि हो राम	"	"	९३
१२० मूरति कैसे राजै	जगतराम	"	९३
१२१. देखो सखि कौन है नेम कुमार	विजयकीर्त्ति	"	९३
१२२. जिनवरजीसू प्रीति करी री	"	"	९४
१२३. भोर ही आये प्रभु दर्शन को	हरखचन्द	"	९४
१२४. जिनेसुरदेव आये करण तुम सेव	जगतराम	"	९४
१२५. ज्यौं बने त्यौं तारि मोकू	गुलावकृष्ण	"	९४
१२६. हमारी वारि श्री नेमिकुमार	×	"	९४
१२७. आछे रङ्ग राचे भली भई	×	"	९५
१२८. एरी चलो प्रभुको दर्श करा	जगतराम	"	९५
१२९. नैना मेरे दर्शन है लुभाय	×	"	९५
१३०. लागी साभी प्रीति तू साझे	×	"	९५
१३१. तैं तो मेरी सुधि हू न लई	×	"	९५
१३२ मानो मैं तो शिव सिधि लाई	×	"	९६
१३३ जानीये तो जानी तेरे मनकी कहानी	विजयकीर्त्ति	"	९६
१३४. नयन लगे मेरे नयन लगे	×	"	९६
१३५ मुझपै महरि करो महाराज	विजयकीर्त्ति	"	९६
१३६ चेतन चेत निज घट माहि	"	"	९७
१३७. पिव विन पल छिन वरस विहात	"	"	९७

१३८. अजित जिन सरण तुम्हारी	भानुकीर्त्ति	हिन्दी	९७
१३९ तेरी मूरति रूप बनी	रूपचन्द	"	९७
१४०. अथिर नरभव जागिरे	विजयकीर्त्ति	"	९८
१४१. हम हैं श्रीमहावीर	"	"	९८
१४२. भलैभल आसकली मुझ आज	"	"	९८
१४३. कहा लो दास तेरी पूज करे	"	"	९८
१४४. आज ऋषभ घरि जावै	"	"	९९
१४५. प्रात भयो बलि जाऊं	"	"	९९
१४६. जागो जागोजी जागो	"	"	९९
१४७. प्रात समै उठि जिन नाम लीजै	हर्षचन्द	"	९९
१४८. ऐसे जिनवर मे मेरे मन विललायो	अनन्तकीर्त्ति	"	१००
१४९. आयो सरण तुम्हारी	×	"	"
१५०. सरण तिहारी आयो प्रभु मैं	अखयराम	"	"
१५१. बीस तीर्थङ्कर प्रात सभारो	विजयकीर्त्ति	"	१०१
१५२. कहिये दीनदयाल प्रभु तुम	द्यानतराय	"	"
१५३. म्हारे प्रकटे देव निरञ्जन	बनारसीदास	"	"
१५४. हू सरणगत तोरी रे	×	"	"
१५५. प्रभु मेरे देखत आनन्द भये	जगतराम	"	१०२
१५६. जीवडा तू जागिनै प्यारा समकित महलमे	हरीसिंह	"	"
१५७ घोर घटाकरि आयोरी जलधर	जयकीर्त्ति	"	"
१५८. कौन दिशासू' आयो रे वनचर	×	"	"
१५९. सुमति जिनद गुणमाला	गुणचन्द	"	१०३
१६०. जिन बादल चढि आयो हो जगमे	"	"	"
१६१. प्रभु हम चरणन सरन करी	ऋषभहरी	"	"
१६२. दिन २ देही होत पुरानी	जनमल	"	"
१६३. सुगुरु मेरे वरसत ज्ञान झरी	हरखचन्द	"	१०४

१६४ क्या सोचत अति भारी रे मन	द्यानतराय	हिन्दी	१०४
१६५ समकित उत्तम भाई जगतमे	"	"	"
१६६ रे मेरे घटज्ञान घनागम छायो	"	"	१०५
१६७ ज्ञान सरोवर सोइ हो भविजन	"	"	"
१६८ हो परमगुरु बरसत ज्ञानझरी	"	"	"
१६९ उ [illegible] री जिन दर्शन को नेम	देवसेन	"	"
१७० मेरे अब गुह है प्रभु तें वकसो	हर्षकीर्त्ति	"	१०६
१७१ बलिहारी खुदा के वन्दे	जानि मोहमद	"	"
१७२ मैं तो तेरी आज महिमा जानी	भूधरदास	"	"
१७३ देखोरी आज नेमीसुर मुनि	×	"	"
१७४ कहारी कहु कछु कहत न आवै	द्यानतराय	"	१०७
१७५ रे मन करि सदा संतोष	बनारसीदास	"	"
१७६ मेरी २ करता जनम गयो रे	रूपचन्द	"	"
१७७ देह बुढानी रे मै जानी	विजयकीर्त्ति	"	"
१७८ साधो लें ज्यों सुमति अकेली	बनारसीदास	"	१०८
१७९ तनिक जिया जाग	विजयकीर्त्ति	"	"
१८० तन धन जोवन मान जगत मे	×	"	"
१८१ देख्यो बन मे ठाडो वीर	भूधरदास	"	१०९
१८२ चेतन नेकु न तोहि सभार	बनारसीदास	"	"
१८३ लगि रह्योरे अरे	बखतराम	"	"
१८४ लागि रह्यो जीव परभाव मे	×	"	"
१८५ हम लागे आतमराम सो	द्यानतराय	"	११०
१८६ निरन्तर ध्याऊ नेमि जिनद	विजयकीर्त्ति	"	"
१८७ कित गयोरे पंथी बोल तो	भूधरदास	"	"
१८८ हम बैठे अपनी मौन से	बनारसीदास	"	"
१८९ दुविधा कब जैहैगी	×	"	१११

२१५ नेमिजिनद वर्नन कौं	सकलकीर्ति	हिन्दी	१
२१६ अब छाड्यो दाव बन्यो है भजले श्रीभगवान	×	"	
२१७ रे मन जायगो कित ठौर	×	"	
२१८. निश्चय होणहार सो होय	×	"	
२१९. समझ नर जीवन थोरो	रूपचन्द	"	
२२० लग गई लगन हमारी	जगतराम	"	११
२२१. अरे तो को कैसे २ बहु समझावे	चैन विजय	"	
२२२ माधुरी जैनवाणी	जगतराम	"	१
२२३. हम आये हैं जिनराज तोरे वन्दन कौं	द्यानतराय	"	१
२२४. मन अटक्यो रे अटक्यो	धर्मपाल	"	१
२२५. जैन धर्म नही कीना वैरन देही पायो	ब्रह्मजिनदास	"	१२
२२६. इन नैनो दा यही सुभाव	"	"	"
२२७ नैना सफल भयो जिन दरसन पायो	रामदास	"	"
२२८ सब परि करम है परधान	रूपचन्द	"	"
२२९. सब परि बल चेत ज्ञान	हर्षकीर्ति	"	"
२३०. रे मन जायगो कित ठौर	जगतराम	"	१२१
२३१ सुनि मन नेमजी के वैन	द्यानतराय	"	"
२३२ तनक ताहि है री ताहि आपनो दरस	जगतराम	"	"
२३३. चलत प्राण क्यो रोयेरी काया	×	"	"
२३४ बाजत रंग मृदंग रसाला	जयकीर्ति	"	"
२३५ अब तुम जागो चेतनराया	गुणचन्द	"	१२२
२३६ कैसा ध्यान धरया है	जगतराम	"	"
२३७ करि रे आतम हित करि लै	द्यानतराय	"	"
२३८ साहिब खेलत है चौगान	नरपाल	"	"
२३९ देव मोरा हो ऋषभजी	समयसुन्दर	"	१२३
२४० बदी चेरी हो पिया मैं	द्यानतराय	"	"

२६७. मैया री गिरि जानेदे मोहि नेमजीसू काम है, श्रीराम		”	१२६
२६८. नेम व्याहनकू आया नेम सेहरा बधाया	गिनोदीलाल	”	१३०
२६९ धन्य तुम धन्य तुम पतित पावन	X	”	१३१
२७०. चेतन नाडी भूलिये	नवल	”	”
२७१ त्यारो श्री महावीर मोकू दीन जानिके	सवाईराम	”	”
२७२ मेरो मन वस कीन्हा महावीर (चादनपुरके)	हर्षकीर्ति	”	”
२७३ राघो सीता चलहु गेह	द्यानतराय	”	”
२७४. कहे सीताजी सुनि रामचन्द्र	”	”	१३२
२७५. नहि छाटा हो जिनराज नाम	हर्षकीर्त्ति	”	”
२७६ देवगुरु पहिचान वद	X	”	”
२७७ नमि जिनद गिरनेरया	जीवराम	”	१३३
२७८ क्या परदेसी को पतियारो	हर्षकीर्त्ति	हिन्दी	१३३
२७९ चेतन मान लो साढी तिया	द्यानतराय	”	”
२८० सावरी सूरत मेरे मन वसी है भाई	नवल	”	”
२८१ माया रे बुढापा बैरी	भूधरदास	”	”
२८२ साहिबो थो जीवनडो म्हारो	जिनहर्ष	”	१३४
२८३ पच महाव्रतधारा	किशनसिंह	”	”
२८४ तेरी बलिहारी हो जिनराज	X	”	”
२८५ देख्या दुनिया बिच वे काई अजब तमाशा,	भूधरदास	”	१३५
२८६ अटके नैना नही बहेदा	नवल	”	”
२८७ चला जिनवदिये एरी सखी	द्यानतराय	”	”
२८८ जगतनन्दन जग नायक जादों-पति	X	”	”
२८९ आछिन गदिम मानु नेमजी प्यारी अखिया	राजाराम	”	१३६
२९० हाजो इक ध्यान सतजी का धरना	हेमराज	”	”
२९१ भला हो माडे साइ हो	X	”	”
२९२ तू ब्रह्म भूलो, तू ब्रह्म भूलो अज्ञानी रे प्राणी	बनारसीदास	”	”

२६३	होजी हां सुधातम एह निज पद भूलि रह्या	X	हिन्दी		१३६
२६४	मुनि कनक कीर्ति की जकडी	मोतीराम	"		१३७

रचना काल स० १८५३ लेखन काल संवत् १८५६ नागौर मे पं० रामचन्द्र ने लिपि की।

२६५	छीक विचार	X	हिन्दी	ले० काल १८५७	१३७
२६६	सावरिया अरज सुनो मुझ दीन की हो	प० खेमचद	हिन्दी		१३८
२६७	चादखेडी मे प्रभुजी राजिया	"	"		"
२६८	ज्यो जानत प्रभु जोग धरचो है	चन्द्रभान	"		"
२६९	आदिनाथ की विनती	मुनि कनक कीर्ति	"	र० काल १८५६	१३९-४०
३००	पार्श्वनाथ की आरती	"	"		१४०
३०१	नगरो की वसापत का सवत्वार विवरण	"	"		१४१

सवत् ११११ नागौर मडाणो आखा तीज रै दिन।

" ६०९ दिली वसाई अनगपाल तु वर वैसाख सुदी १२ भौम।

" १६१२ अकबर पातशाह आगरो वसायो।

" ७३१ राजा भोज उजणो बसाई।

" १४०७ अहमदाबाद अहमद पातसाह वसाई।

" १५१५ राजा जोधै जोधपुर वसायो जेठ सुदी ११।

" १५४५ बीकानेर राव बीकै वसाई।

" १५०० उदयपुर राणै उदयसिंह वसाई।

" १४४५ राव हमीर न रावल फलोधी वसाई।

" १०७७ राजा भोज रै वेटै वीर नारायण सेवाणो वसायो।

" १५६६ रावल वीदै महेवो वसायो।

" १२१२ भाटी जेसे जैसलमेर वसायो सा (वन) बुदी १२ रवौ।

" ११०० पवार नाहरराव मंडोवर वसायो।

" १६११ राव मालदे माल कोट करायो।

" १५१८ राव जोधावत मेडतो वसायो।

" १७८३ राजा जैसिह जैपुर वसायो कछावै।

संवत् १३०० जालौर सोनगारे बसाई।

„ १७१४ औरंगसाह पातसाह औरंगाबाद बसायो।

„ १३३७ पातसाह अलावद्दीन लोदी वीरमदे काम आयो।

„ ६०२ अणहल गुवाल पाटण बसाई वैसाख सुदी ३।

„ २०२ (१२०२)? राव अजेपाल पवार अजमेर बसाई।

„ ११४८ सिधराव जैसिंह देहो पाटण में।

„ १४५२ देवड़ो सिरोही बसाई।

„ १६१६ पातसाह अकबर मुलतान लीयो।

„ १५६६ रावजी तैंतवो नगर बसायो।

„ ११८१ फलोधी पारसनाथजी।

„ १६२६ पातसाह अकबर अहमदाबाद लोधी।

„ १५६६ राव मालदे बीकानेर लोधी मास २ रही राव जैतसी ग्राम आयो।

„ १६६६ राव किसनसिंह किशनगढ बसायो।

„ १६१६ मालपुरो बसायो।

„ १४५५ रैंणपुरो देहूरो थापना।

„ ६०२ चीतोड चित्रगद मोडीये बसाई।

„ १२४५ विमल मथीस्वर हूवो विमल बसाई।

„ १६०६ पातसिंह अकबर चीतोड लोधी जे० सुदी १२।

„ १६३६ पातसाह अकबर राजा उदैसिंहजी नु म्हाराजा रो खिताव दीयो।

„ १६३४ पातसाह अक्कबर कछोविदा लीधो।

३०२. श्वेताम्बर मत के चौरासी बोल		हिन्दी	१४३-४६
३०३. जैन मत का सकल्प	×	सस्कृत	अपूर्ण
३०४. शहर मारोठ की पत्री	×	हिन्दी पद्य	१५१

स० १८५८ असाढ वदी १४

सर्वज्ञजिन प्रणमामि हित, सुभथान पलाडा थी लिखित।

सुमुनी महीचन्दजि को विदय, नवनंद हुकम लुणा सदयं ॥१॥

किरपा फुणि मोहन जीवणयं, अपरंपुर मारोठ थानकयं ।
सरवोपम लायक थान छजै, गुरु देख सु आगम भक्ति यजै ॥२॥
तीर्थङ्कर ईस भक्ति धरै, जिन पूज पुरंदर जेम करै ।
चतुसंघ सुभार धुरधरयं, जिन चैति चैत्यालय कारकयं ॥३॥
व्रत द्वादस पालस सुद्ध खरा, सतरै पुनि नेम धरै सुथरा ।
बहु दान चतुर्विध देय सदा, गुरु शास्त्र सुदेव पुजै सुखदा ॥४॥
धर्म प्रश्न जु श्रेणिक भूप जिसा, सम्श्रेयास दानपति जु तिसा ।
निज वस जु व्योम दिवाकरय, गुण सौख्य कलानिधि बोधमय ॥५॥
सु इत्यादिक वोयम योगि बहु, लिखियो जु कहा लग वोय सहू ।
दयुडा गोठि जु श्रावग पच लसै, शुद्धि वृद्धि समृद्धि आनन्द वसै । ६॥
तिह योगि लिखै ध्रम वृद्धि सदा, लहियो सुख सपति भोग मुदा ।
....　　. . .... .　　.　　.. .　　. ॥७॥
इह थानक आनन्द देव जपै, उत चाहृत खेम जिनेन्द्र कृपै ।
अपरंच जु कागद आइ इतै, समाचार वाच्या परसंन तितै ॥८॥
सहु वात जु लाय ध्रमकरं, ध्रम देव गुरु पसि भक्ति भरं ।
मर्याद सुधारक लायक हो, कल्पद्रुम काम सुदायक हो ॥६॥
यशवत विनैवत दातृ गहो, गुणशील दयाध्रम पालक हो ।
इत है व्यवहार सदा तुम को, उपराति तुमै नहि औरन को ॥१०॥
लिखियो लघु को विधमान यहु, सुख पत्र जु वाहुडता लिखि हू ।
वसू[८] वाण[५] वसू[८] पुनि चन्द्र[१] किय, वदि मास असाढ चतुर्दिशिय ॥११॥
इह त्रोटक छद सुचाल मही, लिखवी पतरी हित रीति वही ।
....　　....... ....　.　　....... ॥१२॥
तुम भेजि हू येक संकर नै, समचार कह्या मुख तै सुइनै ।
इनके समाचार इतै मुख तै, करज्यो परवान सवै सुखतै ॥१३॥

॥ इति पत्रिक सहर म्हारोठ की पचायती नुं ॥

३०५. शृङ्गार रस के फुटकर छन्द　　×　　हिन्दी　　१५२-१५४

३. मुगल पाठ	×	संस्कृत	८-६
४. नामावली	×	"	६-११
५. तीन चौबीसी नाम	×	हिन्दी	१२-१३
६. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	१३-१४
७. भैरवनामस्तोत्र	×	"	१४-१५
८. पञ्चमेरूपूजा	भूधरदास	हिन्दी	१५-२०
९. अष्टाह्निकापूजा	×	संस्कृत	२१-२५
१०. षोडशकारणपूजा	×	"	२५-२७
११. दशलक्षणपूजा	×	"	२७-२६
१२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	"	२६-३०
१३. अनन्तव्रतपूजा	×	हिन्दी	३१-३३
१४. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	३४-४६
१५. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	४७-५३
१६. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	५२-५५
१७. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	५६-६०
१८. पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	६१-७१
१९. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	७२-८७
२०. सम्मेद शिखर निर्वाण काण्ड	×	हिन्दी	८८-६१
२१. ऋषिमण्डलस्तोत्र	×	संस्कृत	६२-६७
२२. तत्वार्थसूत्र (१-५ अध्याय)	उमास्वामि	"	६६-१००
२३. भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	हिन्दी	१००-१६
२४. कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा	बनारसीदास	"	१०७-१११
२५. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	११२-१३
२६. स्वरोदयविचार	×	"	११४-११०
२७. बाईसपरिषह	×	"	१२०-१२५
२८. सामायिकपाठ लघु	×	"	१२५-२६

२६. श्रावक की करणी	हर्षकीति	हिन्दी	१२६-२८
३०. क्षेत्रपालपूजा	×	"	१२८-३२
३१. चिंतामणीपार्श्वनाथपूजा स्तोत्र	×	संस्कृत	१३२-३६
३२. कलिकुण्डपार्श्वनाथ पूजा	×	हिन्दी	१३६-३६
३३. पद्मावतीपूजा	×	संस्कृत	१४०-४२
३४. सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१४३-४६
३५ ज्योतिष चर्चा	×	"	१४७-१५७

५४०८. गुटका सं० २८ । पत्र स० २० । आ० ८३/४×७ इञ्च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठो का संग्रह है ।

५४०९ गुटका सं० २९ । पत्र स० २१ । आ० ६३/४×४ इञ्च । ले० काल स० १८४६ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—सामान्य शुद्ध । इसमे संस्कृत का सामायिक पाठ है ।

५४१०. गुटका सं० ३० । पत्र स० ८ । आ० ७×४ इञ्च । पूर्ण ।

विशेष—इसमे भक्तामर स्तोत्र है ।

५४११ गुटका स० ३१ । पत्र स० १३ । आ० ६३/४×४३/४ इच । भाषा-हिन्दी, संस्कृत ।

विशेष—इसमे नित्य नियम पूजा है ।

५४१२. गुटका सं० ३२ । पत्र स० १०२ । आ० ६३/४×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८९६ फागुण बुदी ३ । पूर्ण एवं शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—इसमे प० जयचन्दजी कृत सामायिक पाठ (भाषा) है । तनसुख सोनी ने अलवर मे साह दुलीचन्द की कचहरी मे प्रतिलिपि की थी । अन्तिम तीन पत्रो मे लघु सामायिक पाठ भी है ।

५४१३. गुटका स० ३३ । पत्र स० २८० । आ० ५×६३/४ इञ्च । विषय-भजन संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—जैन कवियों के भजनो का संग्रह है ।

५४१४ गुटका स० ३४ । पत्र सं० ४१ । आ० ६३/४×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल स० १९०८ पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

१. ज्योतिषसार कृपाराम हिन्दी १-३

र० काल सं० १७६२ कार्त्तिक सुदी

आदिभाग- दोहा—

सकल जगत सुर असुर नर, परसत गणपति पाय।
सो गणपति बुधि दीजिये, जन अपनो चितलाय॥
अरु परसो चरनन कमल, युगल राधिका स्याम।
धरत ध्यान जिन चरन को, सुर न (र) मुनि आठो जाम॥
हरि राधा राधा हरि, जुगल एकता प्रान।
जगत आरसी मैं नमो, दूजो प्रतिविम्ब जान॥
सोभति ओढै मत्त पर, एकहि जुगल किसोर।
मनो लस घन माझ ससि, दामिनी चारु ओर॥
परसे अति जय चित्त कै, चरन राधिका स्याम।
नमस्कार कर जोरि कै, भाषत किरपाराम॥

साहिजहापुर सहर मे, कायथ राजाराम।
तुलाराम तिहि वस मे, ता सुत किरपाराम॥६॥

लघु जातक को ग्रन्थ यह, सुनो पडितन पास।
ताके सर्व श्लोक कैं, दोहा करे प्रकास॥७॥

औ ग्रंथहु जे सुनौं, लयो जु अरथ निकारि।
ताको बहुविधि हेतु सौं, कह्यो ग्रन्थ विस्तार॥८॥

संवत् सत्तरहं सैं बरस, औरं बाणवें जानि।
कातिक सुदी दशमी गुरु, रच्यौ ग्रन्थ पहचानि॥६॥

सब ज्योतिष को सार यह, लियो जु अरथ निकारि।
नाम धरयो या ग्रन्थ को, तातें ज्योतिष सार॥१०॥

ज्योतिष सार जु ग्रन्थ कौं, कलप ब्रछ मनु लेखि।
ताको नव साखा लसत, जुदो जुदो फल देखि॥११॥

'अन्तिम :-

अथ वरस फल लिखते—

सवत् महै हीन करि, जनम वर (ष) लौ मित्त ।
रहै सेष सो गत वरष, आवरदा मैं वित्त ॥६०॥
भये वरष गत अङ्क अरु, लिख घर वाहू ईस ।
प्रथम येक मन्दर है, ईह् वहौ इकतीस ॥६१॥
अरतीस पहलै धूरवा, अक को दिन अपनै मन जानि ।
दूजे घर फल तीसरो, चौथे अ अखिर ज ठान ॥६२॥
भये वरष गत अक को, गुन धरवावो चित्त ।
गुणाकार के अक मैं, भाग सात हरि मित ॥६३॥
भाग हरे तै सात को, लबध अक सो जानि ।
जो मिलै य पल मैं बहुरि, फल तैं घटी वखानि ॥६४॥
घटिका मै तै दिवस मै, मिलि जै है जो अक ।
तामे भाग जु सत्त को, हरि ये मित न सं ॥६५॥
भाग रहै जो सेप सो, बचै अक पहिचानि ।
तिन मैं फल घटीका दसा, जन्म मिलावो आनि ॥६६॥
जन्मकाल के अत रवि, जितने बीते जानि ।
उतनै वाते अस रवि, वरस लिख्यौ पहचानि ॥६७॥
वरस लग्यौ जा अत मैं, सोइ देत चित धारि ।
वादिन इतनी घडी जु, पल बीते लगुन वीचारि ॥६८॥
लगन लिखै तै गोरह जो, जा घर बैठो जाइ ।
ता घर के फल सुफल को, दीजे मित बनाइ ॥६९॥

इति श्री किरपाराम कृत ज्योतिषसार सपूर्णम्

१ पाशाकेवली	×	हिन्दी	३१-३६
२ शुभमुहूर्त्त	×	"	३६-४१

५४१५. गुटका सं० ३५। पत्र स० १८। आ० ६३×५३ इञ्च। भाषा-×। विषय-संग्रह। ले० काल स० १८८६ भादवा बुदी ५। पूर्ण। शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

१. नेमिनाथजी के दश भव	×	हिन्दी पद्य	१-५
२ निर्वाण काण्ड भाषा	भगवतीदास	„ र० काल १७४१,	५-७
३ दर्शन पाठ	×	सस्कृत	८
४. पार्श्वनाथ पूजा	×	हिन्दी	९-१०
५. दर्शन पाठ	×	„	११
६. राजुलपच्चीसी	लालचन्द विनोदीलाल	„	१२-१८

५४१६. गुटका सं० ३६। पत्र स० १०९। आ० ८॥×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल १७८२ माह बुदी ८। पूर्ण। अशुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष—गुटका जीर्ण है। लिपि विकृत एवं बिलकुल अशुद्ध है।

१ ढोला मारूणी की बात	×	हिन्दी प्राचीन पद्य स० ४१५,	१-२४
२ बदरीनाथजी के छन्द	×	„	२८-३०
		ले० काल १७८२ माह बुदी ८	
३. दान लीला	×	हिन्दी	३०-३१
४. प्रह्लाद चरित्र	×	„	३१-३४
५ मोहम्मद राजा की कथा	×	„	३५-४२
		११५ पद्य। पौराणिक कथा के आधार पर।	
६. भगतवत्सावलि	×	हिन्दी	४२-४८
		स० १७८२ माह बुदी १३।	
७ भ्रमर गीत	×	„ १३१ पद्य,	४८-५३
८. धुलीला	×	„	५३-५५
९ गज मोक्ष कथा	×	„	५५-५६
१०. धुलीला	×	„ पद्य स० २४	५६-६०

११. बारहखडी	X	हिन्दी		६०–६२
१२. विरहमञ्जरी	X	"		६२–६८
१३. हरि बोला चित्रावली	X	"	पद्य स० २६	६८–७०
१४. जगन्नाथ नारायण स्तवन	X	"		७०–७४
१५. रामस्तोत्र कवच	X	संस्कृत		७५–७७
१६. हरिरस	X	हिन्दी		७८–८५

विशेष—गुटका साजहानावाद जयसिंहपुरा मे लिखा गया था। लेखक रामजी मीणा था।

५४१७ गुटका स० ३७। पत्र स० २४०। आ० ७½×५½ इञ्च।

१. नमस्कार मत्र सटीक	X	हिन्दी		३
२ मानबावनी	मानकवि	"	५३ पद्य हैं	४–२८
३. चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति	X	"		३२
४ आयुर्वेद के नुसखे	X	"		३५
५. स्तुति	कनककीर्ति	"		३७
			लिपि स० १७६६ ज्येष्ठ सुदी २ रविवार	
६. नन्दीश्वरद्वीप पूजा	X	संस्कृत		४१

कुशला सौगाणी ने स० १७७० मे सा० फतेहचन्द गोदीका के ओल्ये से लिखी।

७. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६ अध्याय तक	६१
८ नेमीश्वररास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	र० स० १६१५	१७२
९. जोगीरासो	जिनदास	"	लिपि स० १७१०	१७६
१०. पद	X	"		"
११. आदित्यवार कथा	भाऊ कवि	"		२०४
१२. दानशीलतपभावना	X	"		२०५–२३६
१३. चतुर्विशति छप्पय	गुणकीर्ति	"	र० स० १७७७ असाढ वदी १४	

आदि भाग—

आदि अंत जिन देव, सेव सुर नर तुझ करता।

जय जय ज्ञान पवित्र, नामु लेतहि अघ हरता॥

सरसुति तनइ पसाइ, ज्ञान मनवाछित पूरइ।
सारद लागो पाइ, जेमि दुख दालिद्र भरइ॥
गुरु निरग्रन्थ प्रणम्य कर, जिन चउवीसो मन धरउ।
गुनकीर्ति इम उचरइ, सुभ वसाइ रु देला तरउ॥१॥

नाभिराय कुलचन्द, नद मरुदेवि जानउ।
काइ धनुष शत पञ्च, वृषभ लाछन जु वखानउ॥
हेम वर्ण कहि कायु, आयु लक्ष्य जु चोरासी।
पूरव गनती एहु, जन्म अयोध्या वासी॥
भरथहि राजु नु सौपि कर, अस्टापद सीधउ तदा।
गुनकीर्ति इम उचरइ, सुभवित लोक वन्दहु सदा॥२॥

अन्तिम भाग—

श्रीमूलसघ विख्यातगछ सरसुतिय वखानउ।
तिहि महि जिन चउवीस, ऐहु सिक्षा मन जानउ॥
पराय छइ प्रसादु, उत्तम मूलचन्द्र प्रभुजानौ।
साहिजिहा पतिसाहि, राजु दिलीपति आनौ॥
सतरहसइरु सतोत्तरा, वदि असाढ चउदसि करना।
गुनकीर्ति इम उचरइ, सु सकल सघ जिनवर सरना॥

॥ इति श्री चतुर्विसततीर्थंकर छपैया सम्पूर्ण ॥

१३	सीलरास	गुणकीर्ति	हिन्दी	रचना स० १७१३	२४०

५४१८ गुटका सं० ३८—पत्रसख्या—२२९। —आ० १०×७॥ दशा—जीर्ण।

विशेष—३४ पृष्ठ तक आयुर्वेद के अच्छे नुसखे है।

१	प्रभावती कल्प	×	हिन्दी	कई रोगो का एक नुसखा है।
२	नाड़ी परीक्षा	×	संस्कृत	

करीब ७२ रोगों की चिकित्सा का विस्तृत वर्णन है।

३ शील सुदर्शन रासो	×	हिन्दी	३७-४२

४. पृष्ठ सख्या ५२ तक निम्न अवतारो के सामान्य रगीन चित्र है जा प्रदर्शनी के योग्य हैं।

(१) रामावतार (२) कृष्णावतार (३) परशुरामावतार (४) मच्छावतार (५) कच्छावतार (६), वराहावतार (७) नृसिंहावतार (८) कल्किअवतार (९) बुद्धावतार (१०) हयग्रीवावतार तथा (११) पार्श्वनाथ चैत्यालय (पार्श्वनाथ की मूर्ति सहित)

५ शकुनावली	×	सस्कृत	५६
६ पाशाकेवली (दोष परीक्षा)	×	हिन्दी	६६
जन्म कुण्डली विचार			

७. पृष्ठ ६८ पर भगे हुए व्यक्ति के वापिस आने का यत्र है।

८. भक्तामरस्तोत्र	मानतु ग	सस्कृत	७३
९. वैद्यमनोत्सव (भाषा)	नयन सुख	हिन्दी	७४-८१
१०. राम विनोद (आयुर्वेद)	×	"	८२-९८
११. सामुद्रिक शास्त्र (भाषा)	×	"	९९-११२
			लिपी कर्ता—सुखराम ब्राह्मण पचोली
१२ शीघ्रबोध	काशीनाथ	सस्कृत	
१३. पूजा सग्रह	×	"	१९४
१४. योगीरासो	जिनदास	हिन्दी	१९७
१५. तत्वार्थसूत्र	उमा स्वामि	सस्कृत	२०७
१६ कल्याणमदिर (भाषा)	बनारसीदास	हिन्दी	२१०
१७. रविवारव्रत कथा	×	"	२२१
१८ व्रतो का ब्योरा	×	"	"

अन्त मे ६४ योगिनी आदि के यत्र है।

५४१९. गुटका स० ३९—पत्र स० ९४। आ० ९×६ इञ्च। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है।

५४२० गुटका स० ४०—पत्र स० १०३ । आ० ८॥×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० स० १८८० पूर्ण । सामान्य शुद्ध ।

विशेष—पूजाओं का सग्रह तथा पृष्ठ ८० से नरक स्वर्ग एव पृथ्वी आदि का परिचय दिया हुआ है ।

५४२१ गुटका स० ४१—पत्र सख्या—२५७ । आ०—८×६॥ इञ्च । लेखन काल—सवत् १८७५ माह बुदी ७ । पूर्ण । दशा उत्तम ।

१. समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी	र० स० १६९३ आसो नु १३	१-५१
२. माणिक्यमाला	सग्रह कर्ता	हिन्दी	सस्कृत प्राकृत सुभाषित	५२-१११
अ प्रश्नोत्तरी	ब्रह्म ज्ञानसागर			
३. देवागमस्तोत्र	आचार्य समन्तभद्र	सस्कृत	लिपि सवत् १८६६	

कृपारामसौगाणी ने करौली राजा के पठनार्थ हाडौती गाव मे प्रति लिपि की । पृष्ठ-१११से ११५ ।

४ अनादिनिधनस्तोत्र	×	„	लिपि स० १८६६	११५-११६
५. परमानंदस्तोत्र	×	सस्कृत		११६-११७
६. सामायिकपाठ	अमितगति	„		११७-११८
७. पडितमरण	×	„		११९
८. चौवीसतीर्थङ्करभक्ति	×	„		११९-२०
			लेखन स० १९७० वैसाख सुदी ३	
९. तेरह काठिया	बनारसीदास	हिन्दी		१२०
१०. दर्शनपाठ	×	सस्कृत		१२३
११ पंचमगल	रूपचद	हिन्दी		१२३-१२८
१२ कल्याणमदिर भाषा	बनारसीदास	„		१२८-३०
१३ विषापहारस्तोत्र भाषा	अचलकीर्ति	„		१२०-३२
			रचना काल १७१५ ।	
१४ भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	हिन्दी		१३२-३५
१५. वज्रनाभि चक्रवर्तिकी भावना	भूधरदास	„		१३५-३६

१६. निर्वाण काण्ड भाषा	भगवती दास	"	१३–३७
१७ श्रीपाल स्तुति	×	हिन्दी	१३७–३८
१८. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	संस्कृत	१३८–४५
१९. सामायिक बडा	×	"	१४५–५२
२०. लघु सामायिक	×	"	१५२–५३
२१. एकीभावस्तोत्र भाषा	जगजीवन	हिन्दी	१५३–५४
२२. बाईस परिषह	भूधरदास	"	१५४–५७
२३. जिनदर्शन	"	"	१५७ ५८
२४. सबोधपंचासिका	द्यानतराय	"	१५८ -६०
२५. बीसतीर्थंकर की जकडी	×	"	१६०–६१
२६. नेमिनाथ मगल	लाल	हिन्दी	१६१ -१६७
		र० सं० १७४४ सावण सु० ६	
२७. दान बावनी	द्यानतराय	"	१६७–७१
२८. चेतनकर्म चरित्र	भैय्या भगवतीदास	"	१७१–१८३
		र० १७३६ जेठ वदी ७	
२९. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	१८४–८९
३०. भक्तामरस्तोत्र	मानतु ग	"	१८९–९२
३१. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द	सस्कृत	१९२–९४
३२. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१९४–९६
३३ सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१९६–९८
३४. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१९८–२००
३५. भूपालचौबीसी	भूपाल कवि	"	२००–२०२
३६. देवपूजा	×	"	२०२–२०५
३७. विरहमान पूजा	×	"	२०५–२०६
३८. सिद्ध पूजा	×	"	२०६–२०७

३६ सोलहकारणपूजा	X	,,	२०७-२०८
४०. दशलक्षणपूजा	X	,,	२०८-२०६
४१. रत्नत्रयपूजा	X	,,	२०६-१४
४२. कलिकुण्डलपूजा	X	,,	२१४-२२५
४३. चिंतामणि पार्श्वनाथपूजा	X	,,	२२५-२६
४४. शातिनाथस्तोत्र	X	,,	२२६
४५. पार्श्वनाथपूजा	X	,, अपूर्ण	२२६-२७
४६. चौवीस तीर्थङ्कर स्तवन	देवनन्दि	,,	२२८-३७
४७. नवग्रहगर्भित पार्श्वनाथ स्तवन	X	,,	२३७-४०
४८ कलिकुण्डपार्श्वनाथस्तोत्र	X	,,	२४०-४१
		लेखन काल १८६३ माघ सुदी ५	
४६. परमानन्दस्तोत्र	X	,,	२४१-४३
५० लघुजिनसहस्रनाम	X	,,	२४३-४६
		लेखन काल १८७० वैशाख सुदी ५	
५१ सूक्तिमुक्तावलिस्तोत्र	X	,,	२४६-५१
५२. जिनेन्द्रस्तोत्र	X	,,	२५२-५४
५३. बहत्तरकला पुरुष	X	हिन्दी गद्य	२५७
५४ चौसठ कला स्त्री	X	,,	,,

५४२२. गुटका स० ४२। पत्र स० ३२१। आ० ७X४ इञ्च। पूर्ण।

विशेष—इसमें भूधरदासजी का चर्चा समाधान है।

५४२३. गुटका स० ४३—पत्र स० ५८। आ० ६३/४X५१/२ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले० काल १७८७ कार्तिक शुक्ला १३। पूर्ण एव शुद्ध।

विशेष—व घेरवालान्वये साह श्री जगरूप के पठनार्थ भट्टारक श्री देवचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी। प्रति सस्कृत टीका सहित है। सामायिक पाठ आदि का सग्रह है।

५४२४. गुटका स० ४४। पत्र स० ८३। आ० १०X५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। पूर्ण। दशा जीर्ण।

विशेष—चर्चाओं का सग्रह है।

५४२५ गुटका सं० ४५। पत्र सं० १४०। आ० ६¾×५ इञ्च। पूर्ण।

१. देवशास्त्रगुरु पूजा	×	संस्कृत	१-७
२. कमलाष्टक	×	"	६-१०
३. गुरूस्तुति	×	"	१०-११
४. सिद्धपूजा	×	"	१२-१५
५. कलिकुण्डस्तवन पूजा	×	"	१६-१६
६. षोडशकारणपूजा	×	"	१६-२२
७. दशलक्षणपूजा	×	"	२२-३२
८. नन्दीश्वरपूजा	×	"	३२-३६
६. पंचमेरुपूजा	भट्टारक महीचन्द्र	"	३६-४५
१० अनन्तचतुर्दशीपूजा	" मेरुचन्द्र	"	४५-५७
११ ऋषिमण्डलपूजा	गौतमस्वामी	"	५७-६५
१२. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	६६-७४
१३. महाभिषेक पाठ	×	"	७४-६६
१४ रत्नत्रयपूजाविधान	×	"	६७-१२१
१५ ज्येष्ठजिनवरपूजा	×	हिन्दी	१२२-२५
१६. क्षेत्रपाल की आरती	×	"	१२६-२७
१७. गणधरवलयमंत्र	×	संस्कृत	१२८
१८ आदित्यवारकथा	वादीचन्द्र	हिन्दी	१२६-३१
१६. गीत	विद्याभूषण	"	१३१-३३
२०. लघु सामायिक	×	संस्कृत	१३४
२१. पद्मावतीछंद	भ० महीचन्द्र	"	१३४-१४०

५४२६ गुटका सं० ४६—पत्र सं० ४६। आ० ७¾×५¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी। पूर्ण एवं अशुद्ध।

विशेष—वसंतराज कृत शकुन शास्त्र है।

४४२७. गुटका स० ४७ । पत्र स० ३४० । आ० ८X४ इञ्च पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. सूर्य के दस नाम	X	सस्कृत	१
२. बन्दो मोक्ष स्तोत्र	X	"	१-२
३. निर्वाणविधि	X	"	२-३
४. मार्कण्डेयपुराण	X	"	४-५६
५. कालीसहस्रनाम	X	"	५८-१३२
६. नृसिंहपूजा	X	"	१३३-३५
७. देवीसूक्त	X	"	१३६-६५
८. मंत्र-सहिता	X	सस्कृत	१६६-२३३
९. ज्वालामालिनी स्तोत्र	X	"	२३३-३६
१०. हरगौरी सवाद	X	"	२३६-७३
११ नारायण कवच एवं अष्टक	X	"	२७३-७९
१२. चामुण्डोपनिषद्	X	"	२७९-२८१
१३. पीठ पूजा	X	"	२८२-८७
१४. योगिनी कवच	X	"	२८८-३१०
१५. आनदलहरी स्तोत्र	शकराचार्य	"	३११-२४

४४२८ गुटका सं०४८ । पत्र स०—२२२ । आ०—६॥X५॥ इञ्च पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. जिनयज्ञकल्प	प० आशाधर	सस्कृत	१-१४१
२ प्रशस्ति	ब्रह्म दामोदर	"	१४१-४५

दोहा— ॐ नम सरस्वत्यै । अथ प्रशस्ति ।

श्रीमत सन्मतिदेव, नि कर्माणम् जगद्गुरुम् ।
भक्त्या प्रणम्य वक्ष्येऽह् प्रशस्ति ता गुणोत्तम ॥ १ ॥

स्याद्वादिनी ब्राह्मी ब्रह्मतत्व-प्रकाशिनी ।
सत्गिराराधिता चापि वरदा सत्वशकरी ॥ २ ॥

गणिनो गौतमादीश्च ससारार्णवतारकान् ।
जिन-प्रणीत-सच्छास्त्रकैरवामलचद्रकान् ॥ ३ ॥

मूलसंघे बलात्कारगणे सारस्वते सति ।
गच्छे विश्वपदख्याते वद्यें वृंदारकादिति ॥ ४ ॥
नंदिसंघोभवत्तत्र नंदितामरनायकः ।
कुंदकुंदार्यसंज्ञोऽसौ वृत्तरत्नाकरो महान् ॥ ५ ॥
तत्पट्टक्रमतो जात सर्वसिद्धान्तपारग ।
हमीर-भूपसेव्योय धर्मचंद्रो यतीश्वर ॥ ६ ॥
तत्पट्टे विश्वतत्वज्ञो नानाग्रंथविशारद ।
रत्नत्रयकृताभ्यासो रत्नकीर्तिरभून्मुनि ॥ ७ ॥
शकस्वामिसभामध्ये प्राप्तमानशतोत्सव ।
प्रभाचंद्रो जगद्वंद्यो परवादिभयंकरः ॥ ८ ॥
कवित्वे वापि वक्तृत्वे मेधावी शान्तमुद्रक ।
पद्मनंदी जिताक्षोभूत्तत्पट्टे यतिनायक. ॥ ६ ॥
तच्छिष्योजनिभव्यौघपूजितांह्रिविशुद्धधी ।
श्रुतचंद्रो महासाधु. साधुलोककृतार्थक ॥ १० ।
प्रामाणिक प्रमाणेऽभूदरगमाध्यात्मविश्वधी ।
लक्षणे लक्षणार्थज्ञो भूपालवृंदसेवित ॥ ११ ॥
अर्हत्प्रणीततत्वार्थजाद पति निशापति ।
हतपचेपुरम्तारिर्जिनचंद्रो विचक्षण. ॥ १२ ॥
जम्बूद्रुमांकिते जम्बूद्वीपे द्वीपप्रधानको ।
तत्रास्ति भारत क्षेत्रं सर्वभोगफलप्रद ॥ १३ ॥
मध्यदेशो भवत्तत्र सर्वदेशोत्तमोत्तम. ।
धनधान्यसमाकीर्णग्रामैर्देवहितिसमै. ॥ १४ ॥
नानावृक्षकुलैर्भाति सर्वसत्वसुखकर. ।
मनोगतमहाभोग. दाता दातृसमन्वित ॥ १५ ॥
तोडाख्योभूत्महादुर्गो दुर्गमुख्य. श्रियापर. ।
तच्छाखानगरं योपि विश्वभूतिविधायवत् ॥ १६ ॥

स्वच्छपानीयसपूर्णै वापिकूपादिभिर्महत् ।
श्रीमद्वनहट्टानामहट्टव्यापारभूषितं ॥ १७ ॥
अर्हत्चैत्यालये रेजे जगदानंदकारकै ।
विचित्रमठमंदोहे वणिज्जनसुमंदिरो ॥ १८ ॥
अजल्याधिपतिस्तस्य प्रजापालो लसद्गुण· ।
कान्त्याचंद्रो विभात्येप तेजसापश्चबाधव ॥ १९ ॥
शिष्यस्य पालको जातो दुष्टनिग्रहकारक ।
पचागमत्रविच्छूरो विद्याशास्त्रविशारद ॥ २० ॥
शौर्योदार्यगुणोपेतो राजनीतिविदावर· ।
रामसिंहो विभुर्धीमान् भूत्पनेन्द्रो महायशी ॥ २१ ॥
आसीद्वणिकवरस्तत्र जैनधर्मपरायण ।
पात्रदानादर श्रेष्ठी हरिचन्द्रोगुणाग्रणी ॥२२॥
श्रावकाचारसपन्ना दत्ताहारादिदानका. ।
शीलभूमिरभूत्तस्य गूजरिप्रियवादिनी ॥२३॥
पुत्रस्तयोरभूत्साधुव्यक्तार्हत्सुभक्तिक ।
परोपकरणाम्वातो जिनार्चनक्रियोद्यत ॥२४॥
श्रावकाचारतत्त्वज्ञो गुकारुण्यवारिधि ।
देल्हा साधु व्रताचारी राजदत्तप्रतिष्ठक ॥२५॥
तस्य भार्या महासाध्वी शीलनीरतरंगिणी ।
प्रियवदा हितावारावाली सौजन्यधारिणी ॥२६॥
तयो क्रमेण सजातौ पुत्री लावण्यसन्दुरौ ।
अगण्यपुण्यसस्थानौ रामलक्ष्मणकाविद ॥२७॥
विनयज्ञोरमवानन्दकारिणौ व्रतधारिणौ ।
अर्हत्तीर्थमहायात्रासपर्कप्रविधायिनौ ॥२८॥
रामसिंहमहाभूपप्रधानपुरुषौ शुभौ ।
समुद्धृतजिनागारौ धर्मनाथमहोत्तमौ ॥२९॥

तस्यादरोभवद्वीरो नायके खचन्द्रमा ।

लोकप्रशस्यसत्कीर्ति धर्मसिंहो हि धर्मभृत् ॥ ३० ॥

तत्कामिनी महच्छीलधारिणी शिवकारिणी ।

चन्द्रस्य वसती ज्योत्स्ना पापध्वान्तापहारिणी ॥३१॥

कुलद्वयविशुद्धासीत् सघभक्तिसुरुषणा ।

धर्मानन्दितचेतस्का धर्मश्रीर्भर्तृ भक्तिका ॥३२॥

पुत्रावाम्नान्तयोः स्वीयरूपनिर्जितमन्मथौ ।

लक्षणाक्षूणसद्गात्रौ योषिन्मानसवल्लभौ ॥३३॥

अर्हद्देवसुसिद्धान्तगुरुभक्तिसमुद्यतौ ।

विद्वज्जनप्रियौ सौम्यौ मोल्हाद्वयपदार्थकौ ॥३४॥

तुषारडिण्डीरसमानकीर्ति कुटुम्बनिर्वाहकरो यशस्वी ।

प्रतापवान्धर्मधरो हि धीमान् खण्डेलवालान्वयकजभानु ॥३५॥

भूपेन्द्रकार्यार्थकरो दयाढ्यो पूढ्यो पूर्णेन्दुसकासमुखोवरिष्ठ ।

श्रेष्ठी विवेकाहितमानसोऽसौ सुधीर्नन्दतुभूतलेऽस्मिन् ॥३६॥

हस्तद्वये यस्य जिनार्चनं वैजैनं वरावाग्मुखपकजे च ।

हृद्यक्षरं वार्हत्मक्षय वा करोतु राज्यं पुरुषोत्तमोय ॥३७॥

तत्प्राणवल्लभाजाता जैनव्रतविधायिनी ।

सती मतल्लिका श्रेष्ठी दानोत्कण्ठा यशस्विनी ॥३८॥

चतुर्विधस्य सघस्य भक्त्युल्लासि मनोरथा ।

नैनश्री सुधावात्कव्योकोशाभोजसन्मुखी ॥३९॥

हर्षमदे सहर्षात् द्वितीया तस्य वल्लभा ।

दानमानोत्सवानन्दवर्द्धिताशेषचेतस ॥४०॥

श्रीरामसिंहेन नृपेण मान्यश्चतुर्विधश्रीवरसघभक्त ।

प्रद्योतिताशेषपुराणलोको नाथू विवेकी चिरमेवजीयात् ॥४१॥

आहारशास्त्रौषधजीवरक्षा दानेषु सर्वार्थकरेषु साधु. ।

कल्पद्रुमोयाचककामधेनुर्नाथुसुसाधुर्जयतात्चरित्या ॥४२॥

सर्वेषु शास्त्रेषु परप्रशस्य श्रीशास्त्रदानंहतशाव्यभाव ।

स्वर्गापवर्गकविभूतिपात्र समस्तशास्त्रार्थविधानदक्ष ॥४३॥

दानेषु सार शुचिशास्त्रदान यथा त्रिलोक्या जिनपुंगवोऽय ।

धृदीति धृत्वा परमंगलार्थं व्यलीलिखान्साधूत्तमा प्रतिष्ठा ॥४४॥

लेखत्वा शुभाधान प्रतिष्ठासारमुत्तम ।

ब्रह्मदामोदरायापि दत्तवान् ज्ञानहेतवे ॥४५॥

अग्न्याश्रवाणसूपाके राज्येतीतेति सुन्दरे ।

विक्रमादित्यभूपस्य भूमिपालशिरोमणे ॥४६॥

ज्यष्ठे मासे सिते पक्षे सोमवारे हि सौम्यके ।

प्रतिष्ठासार एवासौ समाप्तिमगमत्परा ॥४७॥

अर्हत्क्रमाम्भोजनक्षावरागी सद्‌भूपणाकुक्कुटसर्पगाव ।

पद्मावती शासनदेवता सा नाथू सुसाधु चिरमेव पातात् ॥४८॥

व्युद्योतिता पर येन प्रमाणपुरुषापरो ।

श्रीमत्सडिल्लवशोत्य नाथू साधु सनन्दतु ॥४६॥

॥ इति प्रशस्त्यावली ॥

३. कर्णपिशाचिनीमंत्र	×	संस्कृत	१४५
४. गढारशांतिकविधि	×	"	१४६
५. नवग्रहस्थापनाविधि	×	"	"
६ पूजाकी सामग्री की सूची	×	हिन्दी	१५२-५५
७. समाधिमरण	×	संस्कृत	१६०-६४
८ कलशविधि	×	"	१७३-६५
९. भैरवाष्टक	×	"	१६६
१०. भक्तामरस्तोत्र मंत्रसहित	×	"	१६८-२१४
११ णमोकारपचासिका पूजा	×	"	२१८

५४२६ गुटका स० ४६—पत्र स०-५८ । आ०-५×४ इञ्च । लेखन काल स०—१८२४ पूर्ण। दशा—सामान्य ।

१. संयोगबत्तीसी	मानकवि	हिन्दी	१–२५
२. फुटकर रचनाएं	×	”	२६–५८

५४३० गुटका सं० ५० । पत्र स० ७४ । आ० ८×५ इञ्च । ले० काल १८६४ मंगसर सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—गंगाराम वैद्य ने सिरोज मे ब्रह्मजी संतसागर के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१. राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल लालचद	हिन्दी	१–५
२. चेतनचरित्र	भैयाभगवतीदास	”	६–२६
३. नेमीश्वरराजुलविवाद	ब्रह्मज्ञानसागर	”	२७–३१

नेमीश्वर राजुल को झगडो लिख्यते ।

आदि भाग—राजुल उवाच—

भोग अनोपम छोडी करी तुम योग लियो सो कहा मन ठाणो ।
सेज विचित्र तु लाई अनोपम सु दर नारि को संग न जानू ।।
सूक्ष्म तनु सुख छोडि प्रतक्ष काहा दुख देखत हो अनजानू ।
राजुल पूछत नेमि कु वर कू योग विचार काहा मन आनू ।। १ ।।

नेमीश्वर उवाच

सुन रि मत्ति मुठ न जान जानत हो भव भोग तन जोर घटें हैं ।
पाप बढे खटकर्म घके परमारथ को सब पेट फटे हैं ।।
इंद्रिय को सुख किंचित्काल ही आखिर दुख ही दुख रटे हैं ।
नेमि कुंवर कहे सुनि राजुल योग बिना नहि कर्म्म कटे हैं ।। २ ।।

मध्य भाग—राजुलोवाच—

करि निरधार तजि घरवार भये व्रतधार त्रिलोक गोसाई ।
धूप अनूप घनाघन धार तुषार सहो काई के तोई ।।
भूख पियास अनेक परिसह पावन हो कछु सिद्धन आई ।
राजुल नार कहे सुविचार जु नेमि कुंवार सुनु मन लाई ।। १७ ।।

नेमीश्वरोवाच

काहे को वहूत करो तुम स्यापनप येक सुनो उपदेस हमारो ।
भोगहि भोग किये भव डूवत काज न येक सरे जु तुम्हारो ।।

मानव जन्म वडो जगमान के काज विना मतु कूप मे डारो।
नेमी कहे सुन राजुल तू सब मोह तजि ने काज सवारो॥ १८॥

अन्तिम भाग—राजुलोवाच—

श्रावक धर्म्म क्रिया सुभ ग्रेपन साघ कि संगत वेग सुनाइ।
भोग तजि मन सुध करि जिन नेम तणी जव संगत पाइ॥
भेद अनेक करी दृढता जिन माण की सव वात सुनाई।
लोच करी मन भाव धरी करी राजुल नार भई तव बाई॥ ३१॥

कलश—

आदि रचन्हा विवेक सवल युक्ती समझायो।
नेमिनाथ दृढ चित्त ववहु राजुल कु समाभायो॥
राजमति प्रबोध के सुध भाव सयम लीयो।
ब्रह्म ज्ञानसागर कहे वाद नेमि राजुल कीयो॥ ३२॥

॥ इति नेमीश्वर राजुल विवाद संपूर्णम्॥

४ अष्टाह्निकाव्रत कथा	विनयकीर्ति	हिन्दी	३२-३३
५ पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	सस्कृत	३५
६ शातिनाथस्तोत्र	मुनिगुणभद्र	"	"
७. वर्धमानस्तोत्र	×	"	३६
८ चिंतामणिपार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	३७
९. निर्वाणकाण्ड भाषा	भगवतीदास	हिन्दी	३८
१० भावनास्तोत्र	द्यानतराय	"	३९
११ गुरुविनती	भूधरदास	"	४०
१२ ज्ञानपच्चीसी	बनारसीदास	"	४१-४२
१३. प्रभाती अजरूपभवर अवै	×	"	४२
१४. मो गरीव कू साहव तारोजी	गुलावकिशन	"	"
१५ अव तेरो मुख देखू	टोडर	"	४४
१६. प्रात हुवो सुमर देव	भूधरदास	"	४३

१७. ऋषभजिनन्दजुहार केशरियो	भानुकीर्ति	हिन्दी	४५
१८. करू' अराधना तेरी	नवल	"	"
१६. भूल भ्रमारा केई भसै	×	"	४६
२०. श्रीपालदर्शन	×	"	४७
२१. भक्तामर भाषा	×	"	४८-५२
२२. सावरिया तेरे वार वार वारि जाऊ	जगतराम	"	५२
२३. तेरे दरवार स्वामी इन्द्र दो खडे है	×	"	५३
२४. जिनजी थाकी सूरत मनडो मोह्यो	ब्रह्मकपूर	"	"
२५ पार्श्वनाथ तोत्र	द्यानतराय	"	५५
२६. त्रिभुवन गुरु स्वामी	जिनदास	"	र० स० १७५५, ५४
२७. अहो जगत्गुरु देव	भूधरदास	"	५६
२८ चितामणि स्वामी साचा साहब मेरा	वनारसीदास	"	५६-५७
२६. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुद्र	"	५७-६०
३० कलियुग की विनती	ब्रह्मदेव	"	६१-६३
३१ शीलव्रत के भेद	×	"	६३-६४
३२ पदसंग्रह	गगाराम वैद्य	"	६५-६८

५४५१. गुटका सं० ५१। पत्र सं० १०६। आ० ८×६ इंच। विषय-सग्रह। ले० काल १७६६ फागण सुदी ४ मंगलवार। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—सवाई जयपुर मे लिपि की गई थी।

१ भावनासारसग्रह	चामुण्डराय	सस्कृत	१-६०
२ भक्तामरस्तोत्र हिन्दी टीका सहित	×	" स० १८००	६१-१०६

५४३२. गुटका स० ५१ क। पत्र सं० १४२। आ० ८×६ इंच। ले० काल १७६३ माव सुदी २। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—किशनसिंह कृत क्रियाकोश भाषा है।

५४३३ गुटका सं० ५२। पत्र स० १६४+६८+६६। आ० ८×७ इञ्च।

विशेष—तीन अपूर्ण गुटकों का मिश्रण है।

१. पडिकम्मणसूल	×	प्राकृत
२ पञ्चख्याण	×	"
३. वन्दे तू सूत्र	×	"
४. थंभणपार्श्वनास्तवन (वृहत्)	मुनिअभयदेव	पुरानी हिन्दी
५. अजितशांतिस्तवन	×	"
६. "	×	"
७. भयहरस्तोत्र	×	"
८. सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	जिनदत्तसूरि	"
९. गुरुपारतंत्र एवं सप्तस्मरण	"	"
१०. भक्तामरस्तोत्र	आचार्यमानतुंग	संस्कृत
११ कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"
१२ शांतिस्तवन	देवसूरि	"
१३. सप्तर्षिजिनस्तवन	×	प्राकृत

लिपि संवत् १७५० आसोज सुदी ४ को सौभाग्य हर्ष ने प्रतिलिपि की थी।

१४. जीवविचार	श्रीमानदेवसूरि	प्राकृत	
१५, नवतत्त्वविचार	×	"	
१६ अजितशांतिस्तवन	मेरूनन्दन	पुरानी हिन्दी	
१७. सीमंधरस्वामीस्तवन	×	"	
१८ शीतलनाथस्तवन	समयसुन्दर गणि	राजस्थानी	
१९. थंभणपार्श्वनाथस्तवन लघु	×	"	
२० "	×	"	
२१ आदिनाथस्तवन	समयसुन्दर	"	
२२ चतुर्विंशति जिनस्तवन	जयसागर	हिन्दी	
२३ चौबीसजिन मात पिता नामस्तवन	आनन्दसूरि	"	रचना० सं० १५६२
२४ फलवधी पार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	राजस्थानी	

२५. पार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	राजस्थानी
२६. ”	”	”
२७. गौडीपार्श्वनाथस्तवन	”	”
२८. ”	जोधराज	”
२९. चिंतामणिपार्श्वनाथस्तवन	लालचंद	”
३०. तीर्थमालास्तवन	तेजराम	हिन्दी
३१. ”	समयसुन्दर	”
३२. वीसविरहमानजकडी	”	”
३३. नेमिराजमतीरास	रत्नमुक्ति	”
३४. गौतमस्वामीरास	×	”
३५. बुद्धिरास	शालिभद्र द्वारा सकलित	”
३६. शीलरास	विजयदेवसूरि	”
	जोधराज ने खींवसी की भार्या के पठनार्थ लिखा।	
३७. साधुवदना	आनंद सूरि	”
३८. दानतपशीलसवाद	समयसुन्दर	राजस्थानी
३९. आषाढभूतिचौढालिया	कनकसोम	हिन्दी
	र० काल १६३८। लिपि काल सं० १७५० कार्तिक बुदी ५।	
४०. आर्द्रकुमार धमाल	”	”
	रचना सवत् १६४४। अमरसर मे रचना हुई थी।	
४१. मेघकुमार चौढ़ालिया	”	हिन्दी
४२. क्षमाछत्तीसी	समयसुन्दर	”
	लिपि संवत् १७५० कार्तिक सुदी १३। अवरगाबाद।	
४३. कर्मबत्तीसी	राजसमुद	हिन्दी
४४. बारहभावना	जयसोमगणि	”
४५. पद्मावतीरानीआराधना	समयसुन्दर	”
४६. शत्रुञ्जयरास	”	”

१८. मौनएकादशी स्तवन	समयसुन्दर	हिन्दी

रचना सं० १६८१। जैसलमेर में रची गई। लिपि सं० १७५५।

५४३४. गुटका सं० ५३। पत्र सं० २६६। आ० ८½×४½ इंच। ले० काल १७३५। पूर्ण। दशा-सामान्य।

१. राजाचन्द्रगुप्त की चौपई	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी
२. निर्वाणकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	"
पद—		
३. प्रभुजी जो तुम तारक नाम धरायो	हर्षचन्द	"
४. प्रात नाभि के द्वार भोर	हरिसिंह	"
५. तुम सेवाने जाय सा ही सफल घरी	बनारसी	"
६. गरज रमत उठि प्रात देख मैं	"	"
७. सोहै सत शिरोमणि जिनवर गुण गावें	"	"
८. मगन भारती कीजे भार	"	"
९. आरती कीजे श्री नेमकुंवरकी	"	"
१०. वंदौ दिगम्बर गुरु चरन जग तरन तारन जान	भूधरदास	"
११. त्रिभुवन स्वामीजी करुणा निधि नामीजी	"	"
१२. बाजा बजिया गहरा जहां जन्म्या हो ऋषभ कुमार	"	"
१३. नेम कंवरजी थे सजि माया	साईदास	"
१४. भट्टारक महेन्द्रकीर्तिजी की जकडी	महेन्द्रकीर्ति	"
१५. अहो जगतगुरु जगपति परमानंद निधान	भूधरदास	"
१६. देख्या दुनिया के बीच वे कोई अजब तमाशा	"	"
१७. विनती—वंदौ श्री अरहंतदेव सारद [illegible]	"	"

७२. चेलना री सज्झाय	×	हिन्दी	
७३. जीवकाया ,,	भुवनकीर्ति	,,	
७४. ,, ,,	राजसमुद्र	,,	
७५. आतमशिक्षा ,,	,,	,,	
७६. ,, ,,	पद्मकुमार	,,	
७७. ,, ,,	सालम	,,	
७८. ,, ,,	प्रसन्नचन्द्र	,,	
७९. स्वार्थवीसी	मुनिश्रीसार	,,	
८०. शत्रुंजयभास	राजसमुद्र	,,	
८१ सोलह सतियो के नाम	,,	,,	
८२. बलदेव महामुनि सज्झाय	समयसुन्दर	,,	
८३. श्रेणिकराजासज्झाय	,,	हिन्दी	
८४ बाहुबलि ,,	,,	,,	
८५. शालिभद्र महामुनि ,,	×	,,	
८६. वंभणवाडी स्तवन	कमलकलश	,,	
८७. शत्रुंजयस्तवन	राजसमुद	,,	
८८. राणपुर का स्तवन	समयसन्दर	,,	
८९. गौतमपृच्छा	,,	,,	
९०. नेमिराजमति का चौमासिया	×	,,	
९१. स्थूलिभद्र सज्झाय	×	,,	
९२. कर्मछत्तीसी	समयसुन्दर	,,	
९३. पुण्यछत्तीसी	,,	,,	
९४. गौडीपार्श्वनाथस्तवन	,,	,,	र० सं० १७२२
९५. पञ्चयतिस्तवन	समयसुन्दर	,,	
९६. नन्दषेणमहामुनिसज्झाय	×	,,	
९७. शीलबत्तीसी	×	,,	

४७. नेमिजिनस्तवन	जोधराज मुनि	हिन्दी	
४८ मक्षीपार्श्वनाथस्तवन	"	"	
४९ पञ्चकल्याणकस्तुति	×	प्राकृत	
५० पंचमीस्तुति	×	संस्कृत	
५१ संगीतबन्धपार्श्वजिनस्तुति	×	हिन्दी	
५२ जिनस्तुति	×	"	लिपि स० १७५०
५३. नवकारमहिमास्तवन	जिनवल्लभसूरि	"	
५४ नवकारसज्झाय	पद्मराजगणि	"	
५५ "	गुणप्रभसूरि	"	
५६ गौतमस्वामिसज्झाय	समयसुन्दर	"	
५७ "	×	"	
५८ जिनदत्तसूरिगीत	सुन्दरगणि	"	
५९ जिनकुशलसूरि चौपाई	जयसागर उपाध्याय	"	र० संवत् १४८१
६०. जिनकुशलसूरिस्तवन	×	"	
६१ नेमिराजुलबारहमासा	आनन्दसूरि	"	र० स० १६८६
६२. नेमिराजुल गीत	भुवनकीर्ति	"	
६३. "	जिनहर्षसूरि	"	
६४ "	×	"	
६५ थूलिभद्र गीत	×	"	
६६ नमिराजर्षि सज्झाय	समयसुन्दर	"	
६७. सज्झाय	"	"	
६८ अरहन्नासज्झाय	"	"	
६९ मेघकुमारसज्झाय	"	"	
७० अनाथीमुनिसज्झाय	"	"	
७१ [illegible] सज्झाय	×	हिन्दी	

`राजमती बीनवै नेमजी अजी तुम क्यों चढा गिरनारि (विनती)	विश्वभूषण	हिन्दी	
१९. नेमीश्वररास	ब्रह्म रायमल्ल	"	र० काल सं० १६१५ लिपिकार दयाराम सोनी
२०. चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्नो का फल	×	"	
२१. निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत	
२२. चौबीस तीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी	
२३. पाच परवीव्रत की कथा	वेणीदास	"	लेखन संवत् १७७५
२४. पद	बनारसीदास	"	
२५. मुनिश्वरो की जयमाल	×	"	
२६. आरती	द्यानतराय	"	
२७. नेमिश्वर का गीत	नेमिचन्द	"	
२८. विनति-(वदनु श्री जिनराय मनवच काय करोजी)	कनककीर्ति	"	
२९. जिन भक्ति पद	हर्षकीर्ति	"	
३०. प्राणी रो गीत (प्राणीडा रेतू काई सोवै रैन चित्त)	×	"	
३१. जकडी (रिषभ जिनेश्वर वदस्यो)	देवेन्द्रकीर्ति	"	
३२. जीव संबोधन गीत (होजीव नव मास रह्यो गर्भ वासा)	×	"	
३३. लुहरि (नेमि नगीना नाथ था परि वारी म्हारालाल)	×	"	
३४. मोरडो (म्हारो रे मन मोरडा तूतो उडि गिरनारि जाइ रे)	×	"	
३५. बटोइ (तू तोजिन भजि विलम न लाय बटोई मारग भूलो रे)	×	हिन्दी	
३६. पचन गति नी वेलि	हर्षकीर्ति	"	र० सं० १६८३

३७. करम हिण्डोलणा	×	हिन्दी
३८. पद-(ज्ञान सरोवर माहि भूलै रे हंसा)	सुरेन्द्रकीर्त्ति	"
३९. पद-(चौबीसो तीर्थंकर करो भुवि वदन)	नेमिचद	"
४० करमा की गति न्यारी हो	ब्रह्मनाथू	"
४१. आरती (करौं नाभि कुवरजी की आरती)	लालचद	"
४२. आरती	द्यानतराय	"
४३. पद-(जीवडा पूजो श्री पारस जिनेन्द्र रे)	"	"
४४ गीत (डोरी थे लगावो हो नेमजी का नाम स्यो)	पाडे नाथूराम	"
४५. लुहरि-(यो ससार अनादि को सोही बाग बण्यो री लो)	नेमिचन्द	"
४६. लुहरि-(नेमि कुवर व्याहन चढयो राजुल करै द सिंगार)	"	"
४७. जोगीरासो	पाडे जिनदास	"
४८. कलियुग की कथा	केशव	" ४४ पद्य
४९. राजुलपच्चीसी	लालचन्द विनोदीलाल	"
५० अष्टान्हिका व्रत कथा	"	हिन्दी
५१. मुनिश्वरो की जयमाल	ब्रह्मजिनदास	"
५२. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"
५३. तीर्थङ्कर जकडी	हर्षकीर्ति	"
५४. जगत मे सो देवन को देव	बनारसीदास	"
५५. हम बैठे अपने मौन से	"	"
५६. कहा अज्ञानी जीवको गुरु ज्ञान बतावे	"	"

५७. रंग बनाने की विधि	×	हिन्दी	
५८. स्फुट दोहे	"	"	
५९. गुणवेलि (चन्दन वाला गीत)	"	"	
६०. श्रीपालस्तवन	"	"	
६१. तीन मियां की जकडी	धनराज	"	
६२. सुखघडी	"	"	
६३. कक्का बीनती (बारहखडी)	"	"	
६४. अठारह नाते कीकथा	लोहट	"	
६५. अठारह नाता का ब्यौरा	×	"	
६६. आदित्यवार कथा	×	"	१५४ पद्य
६७. धर्मरासो	×	"	
६८. पद-देखो भाई आजि रिषभ घरि आवे	×	"	
६९. क्षेत्रपालगीत	शुभचन्द्र	"	
७०. गुरुवो की स्तुति	—	संस्कृत	
७१. सुभाषित पद्य	×	हिन्दी	
७२. पार्श्वनाथपूजा	×	"	
७३. पद-उठो तेरो मुख देखूं नाभिजी के नन्द	टोडर	"	
७४. जगत मे सो देवन को देव	बनारसीदास	"	
७५. दुविधा कब जइ या मन की	×	"	
७६ इह चेतन की सब सुधि गई	बनारसीदास	"	
७७. नेमीसुरजी को जनम हुयो	×	"	
७८. चौबीस तीर्थङ्करों के चिह्न	×	"	
७९. दोहासंग्रह	नानिगनाल	"	
८०. धार्मिक चर्चा	×	"	
८१. बुरि गयो जग चेतो	घनश्यान	"	
८२. देखो माइ आज रिषभ घर आवे	×	"	

८३. चरणकमल को ध्यान मेरे	X	हिन्दी
८४. जिनजी थांकीजी मूरत मनडो मोहियो	X	”
८५. नारी मुकति पथ वट मारी नारी	”	”
८६. समझि नर जीवन थोरो	रूपचन्द	”
८७. नेमजी थे काई हठ मार्यो महाराज	हर्षकीर्ति	”
८८ देखरी कहू नेमि कुमार	”	”
८९. प्रभु तेरी मूरत रूप बनी	रूपचन्द	”
९०. चिंतामणी स्वामी साचा साहब मेरा	”	”
९१. सुखघडी कब आवेगी	हर्षकीर्ति	”
९२ चेतन तू तिहू काल अकेला	”	”
९३. पच मगल	रूपचन्द	”
९४. प्रभुजी थाका दरसण सूं सुख पावा	ब्रह्म कपूरचन्द	”
९५ लघु मगल	रूपचन्द	”
९६ सम्मेद शिखर चली रे जीवडा	X	”
९७. हम आये हैं जिनराज तुम्हारे बन्दन को	द्यानतराय	”
९८ ज्ञानपच्चीसी	बनारसीदास	”
९९. तू भ्रम भूलि न रे प्राणी सज्ञानी	X	”
१०० हुजिये दयाल प्रभु हूजिये दयाल	X	”
१०१. मेरा मन की बात कासु कहिये	सबलसिंह	”
१०२. मूरत तेरी सुन्दर सोहो	X	”
१०३. प्यारे हो लाल प्रभु का दरस की बलिहारी	X	”
१०४ प्रभुजी त्यारिया प्रभु आप जाणिले त्यारिया	X	”
१०५. ज्यों जाणों ज्यों त्यारोजी दयानिधि	खुशालचन्द	”
१०६. मोहि लगता श्री जिन प्यारा	हठमलदास	”
१०७. सुमरन ही मे त्यारे प्रभुजी तुम सुमरन ही मे त्यारे	द्यानतराय	”

१०८ पार्श्वनाथ के दर्शन वृन्दावन हिन्दी र० स० १७९८

१०९ प्रभुजी मैं तुम चरणशरण गह्यो बालचन्द "

५४३५. गुटका स० ५४ । पत्र सं० ८८ । आ० ८×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—इस गुटके मे पृष्ठ ६४ तक पण्डिताचार्य धर्मदेव विरचित महाशातिक पूजा विधान है । ६५ से ८१ तक अन्य प्रतिष्ठा सम्बन्धी पूजाएं एवं विधान हैं । पत्र ८२ पर अपभ्र श मे चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति है । पत्र ८५ पर राजस्थानी भाषा मे 'रे मन रमि रहु चरणजिनन्द' नामक एक बडा ही सुन्दर पद है जो नीचे उद्धृत किया जाता है ।

रे मन रमिरहु चरण जिनन्द । रे मन रमिरहु चरणजिनन्द ।।ढाल।।
जह पठावहि तिहुवण इद ।। रे मन० ।।
यहु ससार असार मुणे घिणु करु जिय धम्मु दयालं ।
परगय तच्चु मुणहि परमेट्ठिहि सुमरीह अप्पु गुणाल ।। रे मन० ।। १ ।।
जीउ अजीउ दुविहु पुणु आसव बन्धु मुणहि चउभेय ।
सवरु निजरु मोखु वियाणहि पुण्णपाप सुविणेय ।। रे मन० ।। १ ।।
जीउ दुभेउ मुक्त ससारी मुक्त सिद्ध सुवियाणे ।
वसु गुण जुत्त कलङ्क विवजिद भासिये केवलणाणे ।। रे मन० ।। ३ ।।
जे ससारि भमहि जिय सबुल लख जोणि चउरासी ।
थावर वियलिदिय सयलिदिय, ते पुग्गल सहवासी ।। रे मन० ।। ४ ।।
पच अजीव पढयमु तहि पुग्गलु, धम्मु अधम्मु आगास ।
कालु अकाउ पच कायासौ, ऐच्छह दव्व पयास ।। रे मन० ।। ५ ।।
आसउ दुविहु दव्वभावहु, पुणु पच पयार जिणुत्त ।
मिच्छा विरय पमाय कसायह जोगह जीव प्रमुत्त ।। रे मन० ।। ६ ।।
चारि पयार बन्धु पयडिय हिदि तह अणुभाव पयूसं ।
जोगा पयडि पयूसठिदायणु भाव कसाय विसेसं ।। रे मन० ।। ७ ।।
सुह परिणामे होइ सुहासउ, असुहि असुह वियाणे ।
सुह परिणामु करहु हो भवियहु, जिम सुहु होय नियाणे ।। रे मन० ।। ८ ।।

संवरु करहि जीव जग सुन्दर आसव दार निरोह ।
असह सिंध समु यापु वियाराह्नु, सोह सोह सोह ॥ रे मन० ॥ ६ ॥
णिजर जरह विणासहु कारगु, जिम जिणवयण संभाले ।
वारह विह तव दसविह संजमु, पंच महाव्वय पाले ॥ रे मन० ॥ १० ॥
अठविहि कम्मविमुक्कु परमपउ, परमप्पयकुत्थि वासो ।
णिचलु मुखुत्थि रक्खतु तहिपुरि, ईच्छियु ईन्धइ वासो ॥ रे मन० ॥ ११ ॥
जाणि असरण वहु क्या करणा, पडिंयु मनह विचारइ ।
जिणवर सासणु तत्तु पयासणु, सो हिय बुह थिर धारइ ॥ रे मन० ॥ १२ ॥

५४२६. गुटका सं० ५५ । पत्र स० २४० । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल स० १६८८ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

५४२७. गुटका स० ५६ । पत्र स० १५० । आ० ६½×४½ इञ्च । पूर्ण एवं जीर्ण । अधिकांश पाठ अशुद्ध हैं । लिपि विकृत है ।

विशेष—इसमे निम्न पाठो का संग्रह है ।

१	कर्मनोकर्म वर्णन	×	प्राकृत	३—५
२	ग्यारह अंग एवं चौदह पूर्वो का विवरण	×	हिन्दी	६—१२
३.	श्वेताम्बरो के ८४ वाद	×	”	१२—१३
४	संहनन नाम	×	”	१३
५	मृघोत्पत्ति कथन	×	”	१४

ॐ नमः श्री पार्श्वनाथ काले बुद्धकीर्तिना एकान्त मिथ्यात्व बौद्ध स्थापित ॥ १ ॥
संवत् १३६ वर्षे भद्रबाहुशिष्येण जिनचन्द्रेण सशंयमिथ्यात्व श्वेतपटमत स्थापितं ॥ २ ॥
श्री शीतलतीर्थङ्करकाले क्षीरकदम्बाचार्यपुत्रेण पर्वतेन विपरीतमत मिथ्यात्व स्थापितं ॥ ३ ॥
सर्वतीर्थङ्कराणा काले विनयमिथ्यात्व ॥ ४ ॥
श्रीपार्श्वनाथगणि शिष्येण मस्करिपूर्णेनाज्ञानमिथ्यात्व, श्री महावीर काले स्थापितं ॥ ५ ॥
संवत् ५२६ वर्षे श्री पूज्यपादशिष्येण प्राभृतकवेदिना वज्रनंदिना पंक्तिगणकमसकेण द्राविडसंघ स्थापित ।
संवत् २०५ वर्षे श्वेतपदात् श्रीकुलशात् आसन्नाक संघोत्पत्तिर्जाता । ७ ॥

चतुः सघोत्पत्ति कथ्यते । श्रीभद्रबाहुशिष्येण श्रीमूलसंघमण्डितेन अर्हद्वलिगुप्तिगुप्ताचार्यविशाखाचार्येति नामत्रय धारकेण श्रीगुप्ताचार्येण नन्दिसघ., सिंहसघ , सेनसघ., देवसघ. इति चत्वार सघा स्थापिता. । तेभ्यो यथाक्रमं बलात्कारगणादयो गणा सरस्वत्यादयो गच्छाश्च जातानि तेषा प्राव्रज्यादिषु कर्म्मसु कोपि भेदोस्ति ॥ ८ ॥

सवत् २५३ वर्षे विनयसेनस्य शिष्येण सन्यासभगयुक्तेन कुमारसेनेन दारुसघ स्थापित ॥ ९ ॥

सवत् ९५३ वर्षे सम्यक्तप्रकृत्यदयेन रामसेनेन नि पिच्छत्व स्थापित ॥ १० ॥

सवत् १८०० वर्षे अतीते वीरचन्द्रमुने सकाशात् भिल्लसघोत्पत्ति भविष्यति ॥

एभ्योनान्येषामुत्पत्ति पचमकालावसाने सर्वेषामेषा ॥

गृहस्थाना शिष्याणा विनाशो भविष्यत्येक जिनमत कियत्काल स्थास्यतीतिज्ञेयमिति दर्शनसारे उक्तं ॥

६ गुणस्थान चर्चा	×	प्राकृत	१५–२०
७. जिनान्तर	वीरचंद्र	हिन्दी	२१–२३
८. सामुद्रिक शास्त्र भाषा	×	"	२४–२७
९ स्वर्गनरक वर्णन	×	"	३२–३७
१०. यति आहार का ४६ दोष	×	"	३७
११ लोक वर्णन	×	"	३८–५३
१२ चउवीस ठाणा चर्चा	×	"	५४–८९
१३. अन्यस्फुट पाठ सग्रह	×	"	९०–१५०

५४३८ गुटका स० ५७—पत्र स० ४–१२१ । आ० ६×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा–जीर्ण ।

१. त्रिकालदेववदना	×	सस्कृत	५–१२
२. सिद्धभक्ति	×	"	१२–१४
३ नदीश्वरादिभक्ति	×	प्राकृत	१४–१६
४ चौतीस अतिशय भक्ति	×	सस्कृत	१६–१९
५ श्रुतज्ञान भक्ति	×	"	१९–२१
६ दर्शन भक्ति	×	"	२१–२२
७. ज्ञान भक्ति	×	"	२२
८ चरित्र भक्ति	×	सस्कृत	२२–२४
९. अनागार भक्ति	×	"	२४–२६

१०.	योग भक्ति	×	"	२६—२८
११.	निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत	२८—३०
१२.	बृहत्स्वयंभू स्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	संस्कृत	३०—४१
१३	गुरावली (लघु आचार्य भक्ति)	×	"	४१—४४
१४	चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति	×	"	४४—४६
१५.	स्तोत्र संग्रह	×	"	४६—५०
१६.	भावना बत्तीसी	×	"	५१—५२
१७.	आराधनासार	देवसेन	प्राकृत	५३—६०
१८.	सबोधपंचासिका	×	"	६१—६८
१९	द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्र	"	६८—७१
२०.	भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	७१—७५
२१.	द्वादसी गाथा	×	"	७५—८३
२२.	परमानंद स्तोत्र	×	"	८३—८४
२३	अणत्थमिदि संधि	हरिश्चन्द्र	प्राकृत	८५—८९
२४	चूनडीरास	विनयचन्द्र	"	९०—९४
२५.	समाधिमरण	×	अपभ्रंश	९४—९९
२६.	निर्झरपंचमी विधान	मतिविनयचन्द्र	"	९९—१०५
२७	सुप्पयदोहा	×	"	१०५—११०
२८.	द्वादशानुप्रेक्षा	×	"	११०—११२
२९	"	अल्हण	"	११२—११४
३०	योगि चर्चा	महात्मा ज्ञानचन्द	"	११४—११९

५४३६. गुटका सं० ५८। पत्र सं० १३—५१। आ० ६×६। अपूर्ण।

विशेष—गुटका प्राचीन है।

१	जिनरात्रिविधानकथा	नरसेन	अपभ्रंश	अपूर्ण	१३-२०

अन्तिम भाग —

कत्तिय किण्ह चउद्दसि रत्तिहि, गउ सम्मइ जिणु पंचम छत्तिहि।
इय सम्बन्धु कहिउ सयलामलो, जिनरत्ति हि फलु भवियह मंगलो।

अवरुवि जोणरत्ति करेसइ, सो मरद्धयरुउ लहेसइ।

सारउ सुउ महियलि भुंजेसइ, रइ समाण कुल उत्तिरमेसइ ॥

पुणु सोहम्म सग्गी जाएसइ, सहु कीलेसइ णिरु सुकुमालिहि।

मणुवसुक्खु भुंजिवि जाएसइ, सिवपुरि वासु सोवि पावेसइ।

इय जिणरत्ति विहाणु पयोसिउ, जहजिणसासणि गणहरि भासिउ।

जे हीणाहिउ काइमि वुत्तउ, त बुहारण मठु खमहु णिरुत्तउ।

एहु सत्थु जो लिहइ लिहावइ, पढइ पढावइ कहइ कहावइ।

जो नर नारि एहमणि भावइ, पुण्णइ अहिउ पुण्ण फलु पावइ।

धत्ता—

सिरि णरसेणह सामिउ, सिवपुरि गामिउ, वड्ढमाण तित्थकरु।

जइ मागिउ देइ करण करेइ देउ सुवोहि लाहु परमेसरु ॥ २७ ॥

इय सिरि वड्ढमाणकहापुराणे सिधादिभवभावावण्णणे जिणराइविहाणफलसपत्ती ॥

सिरि णरसेण विरइए सुभव्वासण्णणाणिमित्ते पढम परिछेह सम्मत्तो।

॥ इति जिणरात्रि विधान कथा समाप्ता ॥

२ रोहिणिविधान मुणिगुणभद्र अपभ्रंश

प्रारम्भिक भाग—

वासवनुमपायहो हरिपविसायहो निज्जिय कायहो पयजुलु।

सिवमग्गसहायहो केवलकायहो रिसहहो पणविवि कयकमलु

परमेट्ठि पच पणविवि महत, भवजलहि पोय विहडिय कयत।

सारभ सारस ससि जोह्न जेम, णिम्मल वणिज्ज केणकेम।

जिहि गोयमए विणिब वरस्स, सेणिय रायस्स जसोहरस्स।

तिह रोहिणी वय कह कहमि भव्व, जह सत्तिणि वारिय पावणव्व।

इय जवूदीव हो भरइ खेत्ति, कुरु जगल ए सिवि गए जणेत्ति।

हथिणाउरु पुरजण पवररिद्धु, जणु वसइ जित्थु सह सय समिद्धु।

तहि वीयसोउ गयसोउ भूउ, विज्जु पहरइ रइ हियय भूउ।

तहा णदणु कुलणन्दण असोउ, जमिल्लवि गउ अइ पूरि सोउ।

तह श्रग विसइ जरा कुरुह विसए चपाउरि पयउ गुणाइ विसए ।
मट्टइ सामिणी उराइवलु, सिरिमइ वियलंकिउ रिउ कयन्तु ।
सुय अट्ठ तासु अरि जणिय तासु, रोहिणी कण्णाण कामपासु ।
कत्तिय अट्ठाहिव सोपवास, गयपुर वहि जिण वसु पुज्जवास ।
जिणु अचिवि मुणि वंदिवि असेस, सिरि वासुपुज्ज पयलविसेस ।
मह मज्झिणि सण्णहो णिवह देइ गोहिणी जातणया अकलइ ।
अवलोइवि सुव जुव्वण समेय, परिणयण चित हयमणि अमेय ।
णियमति मतु गिण्हिवि अभेउ, णिय बुद्धि वियारिवि विहियसेउ ।

घत्ता—

ता पुरवउ वहिरि कि परिउ साहि, रिवद्ध मच चउ पासहिं ।
कणयमयमु खचिय रयण करचिय, मडिय मडव पासहिं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

निसुणइ जिणवणि सावहणणु वियलइण करनलु आवमालु ।
वग्गा घाय.ो जइ सरणुणत्थि, मय सावहो जीवहो सहणसत्थि ।
अणु हवइ सुहासुह एक्कुजीउ, तणु भिण्णु लेइ मरणाउ भीउ ।
ससार सहुक्खु पुरकर समुद्दु, अमुजि धाउ विहलु कुमुद्दु ।
अ.सवइ कम्मु जो एहि विच्च, तहो विलय सवर होइ कच्च ।
सम भावि सहियइ कम्मुआउ, परिभमिउ लोहु जीविउ सपाउ ।
दुल्लहु जिण धम्मु समुत्ति मग्गु, णवि सगहियउ कम्मेण लगाउ ।
इउ सुणिवि सरिवि जिण सिक्ख दिक्ख, हुउ गणहरु राउ असोउ भिक्ख ।
स.गहिय उपाध्यायउ असमलणाणु, केवलु गउ मोक्खहु सुह विहाणु ।
रहि तणउ चरिवि पवण्णसग्गि अच्चु, एच्छि दिवि थी लिंगु भग्गी ।
घीयउ विसग्गि सपत्त अज्ज, वउधरी दिक्खिय सुवहु सज्ज ।
हुव केवमोक्खि गयहणि विकम्म, अणु हवहि णिरतर मुत्ति सम्म ।
वउधरिय लक्खणसी धरि सुलच्छि, णं पणसिरि नाम इन्दो वलच्छि ।
रो.हिवउ विहिउ ताइएउ, रोहिणि कहविरइय तासु हेउ ।

घत्ता—

सिरि गुणभद्दमुणीसरेण विहिय कहा बुधी भरेण ।

सिरि मलयकित्ति पयल जुयलणाविवि, सावयलग्रो यह मणुछविवि ।

णादउ सिरि जिणसख, णादउ तहभूमि वालुणि विग्घं ।

णादउ लक्खणु लक्खं, दितु सया कप्पतरु वजइ भिक्खं ।

॥ इति श्री रोहिणी विधान समाप्त ॥

३. जिनरात्रिविधान कथा	×	अपभ्रंश	२६-२६
४ दशलक्षणकथा	मुनि गुणभद्र	,,	३०-३३
५ चदनषष्ठीव्रतकथा	आचार्य छत्रसेन	सस्कृत	३३-३६

नरदेव के उपदेश से आचार्य छत्रसेन ने कथा की रचना की थी ।

आरम्भ—

जिन प्रणम्य चद्राभ कर्मौघध्वान्तभास्करं ।
विधान चदनषष्ठ्यत्र भव्याना कथमिहा ॥ १ ॥
द्वीपे जम्बूद्रुम केस्मिनु क्षेत्रे भरतनामनि ।
काशी देशोस्ति विख्यातो वर्ज्जितो वहुधावुधै ॥ २ ॥

अन्तिम—

आचार्यछत्रसेनेन नरदेवोपदेशत ।
कृत्वा चदनषष्ठीय कृत्वा मोक्षफलप्रदा ॥ ७७ ॥
यो भव्य कुरुते विधानममल स्वर्गापवर्गप्रदा ।
योन्य कार्यते करोति भविन व्याख्याय सबोधन ॥
भूत्वासौ नरदेवयोर्व्वरसुख सच्छत्रसेनाव्रता ।
यास्यतो जिननायकेन महते प्राप्तेति जैन श्रीया ॥ ७८ ॥

॥ इति चदनषष्ठी समाप्त ॥

६ मुक्तावली कथा	×	सस्कृत	३६-३८

आरम्भ— आदि देव प्रणम्योक्त मुक्तात्मान विमुक्तिद ।
अथ सक्षेपतो वक्ष्ये कथा मुक्तावलिविधि ॥ १ ॥

७. सुगधदशमी कथा — रामकीर्ति के शिष्य विमल कीर्ति — अपभ्रंश

आदि भाग

पणवेप्पिणु सम्मइ जिणेसरहो जा पुव्वसूरि आगम भणिया ।
णिसुणिज्जहु भवियहु इक्कमना, कहकहमि सुगधदसमी हितशणिया ।।

अन्तिम पाठ

दसमिहि सुअध विहाणुकरेविणु तइय कप्प उप्पण्ण मरेविणु ।
चउदह आहरणेहि पसाहिय सागी सुहइ भु जइ अविरोहिय ।।
पुहवी मण्डणु पुरु सुरु दुल्लहु, राउ पयाउ दयाजण वल्लहु ।
मानस सु दरि गत्ति उपण्णी मयणावलि नामि सपुण्णी ।।
दिणि दिणि कुमरि वियावड्ड भत्ती भव्वलोय मायास मोहती ।
सामवण्ण मण्णवि सुरहि तणु जिणवर सामिउ पज्जइ अणु दिणु ।।
दाणु चउविह दिति ण त्थक्कइ तह व छुन्न का वण्ण ण सकइ ।
धम्मवत पेखि णरणहिं पोमाइयइ धम्म असगहि ।
राय सावरिणाविय जामहि, पुत्त कलत्तहि वट्टियतामहि ।।
रामकित्ति गुरुविणउ करेविणु विणु विमल कीत्ति महिपलि पढेविणु ।
पढइ पुणु तव परणु करेविणु सइ अणुक्कमेण सोमक्खुलहेसइ ।।

घत्ता

जो करइ करावइ एहविहि वक्खाणिय विभवियहु दावेइ ।
सो जिणणाह भासियहु सग्गु मोक्खु फव पावइ ।। ८ ।।

इति सुगधदशमीकथा समाप्ता

×

८. पुष्पाञ्जलि कथा — अपभ्रंश — ४१—

आरम्भ

जज जय अरुह जिणेसर हयवम्मीसर मुत्तिसिरीवरगणधरण ।
अयसय गणभासुर सहयमहीसर थुति गिराधर समकरण ।। ६ ।।

अन्तिम घत्ता

वलवत्तरिगणि रयणकित्ति मुणि सिस्स बुहिव दिज्जइ ।
भावकित्ति जुव अनतकित्तिगुरु पुष्फु जलि विहि किज्जइ ।। ११ ।।

पुष्पाजलि कथा समाप्ता

६. अनंतविधान कथा	×	अपभ्रंश	४६–५१

५४४० गुटका सं० ५६—पत्र संख्या—१८३ | आ०–७॥×६ | दशा सामान्यजीर्ण |

१. नित्यवंदना सामायिक	×	सस्कृत प्राकृत	१–१२
२. नैमित्तिकप्रयोग	×	संस्कृत	१५
३. श्रुतभक्ति	×	”	१५
४. चारित्रभक्ति	×	”	१९
५. आचार्यभक्ति	×	”	२१
६. निर्वाणभक्ति	×	”	२३
७ योगभक्ति	×	”	”
८. नदीश्वरभक्ति	×	”	२६
६. स्वयभूस्तोत्र	आचार्य समन्तभद्र	”	४३
१०. गुर्वावलि	×	”	४५
११. स्वाध्यायपाठ	×	प्राकृत सस्कृ	५७
१२. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६७
१३ सुप्रभाताष्टक	यतिनेमिचद	”	पद्य स० ८
१४. सुप्रभातिकस्तुति	भुवनभूषण	”	” २५
१५. स्वप्नावलि	मुनि देवनदि	”	” २१
१६. सिद्धिप्रिय स्तोत्र	”	”	” २५
१७. भूपालस्तवन	भूपाल कवि	”	” २५
१८. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	”	” २६
१६. विषापहार स्तोत्र	धनञ्जय	”	” ४०
२०. पार्श्वनाथस्तवन	देवचद्र सूरि	”	” ४४
२१. कल्याण मदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्रसूरि	सस्कृत	
२२. भावना बत्तीसी	×	”	
२३. करुणाष्टक	पद्मनदी	”	
२४. वीतराग गाथा	×	प्राकृत	

२५ मगलाष्टक — × — संस्कृत

२६ भावना चौतीसी — भ० पद्मनंदि — ,, — ६

आरम्भ

शुद्धप्रकाशमहिमाहतसमस्तमोह, निद्रातिरेकमसमावगमस्वभाष ।
आनदकदमुदयास्तदशानभिज्ञं स्वायभुव भवतु धाम सता शिवाय ।। १ ।।
श्रीगौतमप्रमुतयोपि विभोर्महिम्न प्राय क्षमानयनय स्तवन विधातु ।
ग्रय विचार्य जडतस्तदमुत्रलोके सौख्याप्तये जिन भविष्यति मे किमन्यत् ।। २ ।।

अन्तिम

श्रीमत्प्रभेन्दुप्रभुवाक्यरश्मि विकाशिचेत. कुमद प्रमोदात् ।
श्रीभावनापद्धति मात्मशुद्धयै श्रीपद्मनदी स्वयं चकार ।। ३४ ।।
इति श्री भट्टारक पद्मनंदिदेव विरचित चतुस्त्रिंशद् भावना समाप्तमिति ।

२७ भक्तामरस्तोत्र — आचार्य मानतु ग — संस्कृत

२८. वीतरागस्तोत्र — भ० पद्मनंदि — ,,

आरम्भ

स्वात्मावबोधविशद परम पवित्र ज्ञानैकमूर्तिमगणवद्यगुणैकपात्र ।
आस्वादिताक्षयसुखाब्जलसत्पराग, पश्यति पुण्यसहिता भुवि वीतरागं ।। १ ।।
उधत्तपस्तपराशोजितपापपक चैतन्यविन्दमचल विमल विशक ।
देवेन्द्रवृन्दसहित कदणालताग पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतराग ।। २ ।।
जाग्रद्विशुद्धिमहिमावधिमस्तशोक धर्मोपदेशविधिबोधितभव्यलोक ।
आचारबन्धुरमति जनतासुराग, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतराग ।। ३ ।।
कदर्प्प सर्प्प मदनाशनवैनतेय, या पाप हारिजगदुत्तमनामधेय ।
ससारसिंधु परिमथन मदराग, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतराग ।। ४ ।।
शिवाङ्गनामुकमलारसिक विदभ, वर्द्धिष्णु सद्व्रतचर्यामृतपूर्णकुभ ।
बलाद्विमोहतरुखण्डनचण्डनाग, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतराग ।। ५ ।।
आणदकद सररीकृतधर्मपथ, व्याशिदग्धनिखिलोद्धतकर्मकथ ।
न्यस्ताश्रवाजि गणघात विधाय जोग, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतराग ।। ६ ।।

स्वच्छोच्छलद्धरणिविरणिर्ज्जितमेघन दं, स्याद्वादवादितमयाकृतसद्विपादं ।

नि सीमसजमसुधारसतत्तडाग पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतराग ।। ७ ।।

सम्यक्प्रमाणकुमुदाकरपूर्णचन्द्रं मागल्यकारणमनंतगुणं वितन्द्र ।

इष्टप्रदाणविधिपोषितभूमिभाग, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ।। ८ ।।

श्रीपद्मनन्दिरचित किलवीतरागस्तोत्र,

पवित्रमणवद्यमनादिनादौ ।

य कोमलेन वचसा विनयाविधीते,

स्वर्गापवर्गकमलातमल वृणीत ।। ९ ।।

।। इति भट्टारक श्रीपद्मनन्दिविरचिते वीतरागस्तोत्र समाप्तेति ।।

२९. आराधनासार	देवसेन	अपभ्रंश	र० स० १०८६
३०. हनुमतानुप्रेक्षा	महाकवि स्वयभू	,, स्वयभू रामयण का एक अंश	११९
३१. कालावलीपद्धडी	×	,,	११६
३२. ज्ञानपिण्ड की विंशति पद्धडिका	×	,,	१३१
३३. ज्ञानाकुश	×	सस्कृत	१३२
३४, इष्टोपदेश	पूज्यपाद	,,	१३६
३५. सूक्तिमुक्तावलि	आचार्य सोमदेव	,,	१४६
३६. श्रावकाचार	महापंडित आशाधर	,, ७ वें अध्याय से आगे अपूर्ण।	१८३

५४४१. गुटका स० ६० । पत्र स० ५६ । आ० ८×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. रत्नत्रयपूजा	×	प्राकृत	२२–२७
२. पचमेरु की पूजा	×	,,	२७–३१
३. लघुसामायिक	×	सस्कृत	३२–३३
४ आरती	×	,,	३४–३५
५ निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत	३६–३७

५४४२. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ५६ । आ० ८½×६ इञ्च । अपूर्ण ।

विशेष—देवा ब्रह्मकृत हिन्दी पद सग्रह है ।

५४४३ गुटका स० ६२ । पत्र सं० १२८ । आ० ६X६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८२८ अपूर्ण ।

विशेष—प्रति जीर्णशीर्ण अवस्था मे है । मधुमालती की कथा है ।

५४४४ गुटका स० ६३ । पत्र स० १२५ । आ० ६X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य

१. तीर्थोदकविधान	X	सस्कृत	१-११
२ जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	१२-२२
३. देवशास्त्रगुरुपूजा	"	"	२२-३६
४. जिनयज्ञकल्प	"	"	३७-१२५

५४४५. गुटका स० ६४ । पत्र स० ४० । आ० ७X७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—विभिन्न कवियो के पदो का सग्रह है ।

५४४६ गुटका स० ६५—पत्र सख्या-८६-४११ । आ०-८X६॥ । लेखनकाल—१६६१ । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१ सहस्रनाम	पं० आशाधर	सस्कृत	अपूर्ण ।	८६-८७
२ रत्नत्रयपूजा	पद्मनदि	अपभ्र श	"	८७-६३
३. नदीश्वरपक्तिपूजा	"	सस्कृत	"	६३-६७
४. वडीसिद्धपूजा (कर्मदहन पूजा)	सोमदत्त	"		६८-१०६
५ सारस्वतयंत्र पूजा	X	"		१०७
६. वृहत्कलिकुण्डपूजा	X	"		१०७-१११
७. गणधरवलयपूजा	X	"		१११-११५
८. नंदीश्वरजयमाल	X	प्राकृत		११६
६ वृहत्षोडशकारणपूजा	X	सस्कृत		११६-१२८
१०. ऋषिमडलपूजा	ज्ञान भूषण	"		१२८-३६
११ शांतिचक्रपूजा	X	"		१३७-३८
१२. पञ्चमेरुपूजा (पुष्पाञ्जलि)	X	अपभ्र श		१३६-४१
१३. पराकरहा जयमाल	X	"		१४२
१४. बारह अनुप्रेक्षा	X	"		१४३-४७

१५. मुनीश्वरो की जयमाल	×	अपभ्रंश	१४७
१६. णमोकार पाथडी जयमाल	×	"	१४९
१७ चौवीस जिनद जयमाल	×	"	१५०-१५२
१८. दशलक्षण जयमाल	रइघू	"	१५३-१५५
१९. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	सस्कृत	१५५-१५७
२०. कल्याणमदिरस्तोत्र	कुमुदच द्र	"	१५७-१५८
२१ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१५८-१६०
२२ अकलकाष्टक	स्वामी अकलंक	"	१६०
२३ भूपालचतुर्विशति	भूपाल	"	१६१-६२
२४. स्वयभूस्तोत्र (इष्टोपदेश)	पूज्यपाद	"	१६२-६४
२५. लक्ष्मीमहास्तोत्र	पद्मनदि	"	१६४
२६. लघुसहस्रनाम	×	"	१६५
२७. सामायिकपाठ	×	प्राकृत सस्कृत लें० सं० १६७५,	१६५-७०
२८. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनदि	सस्कृत	१७१
२९. भावनाद्वात्रिंशिका	×	"	१७१-७२
३०. विपापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१७२-७४
३१. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१७४-७८
३२. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्र	अपभ्रंश	१७९-८८
		लें० स० १६६१ वैशाख सुदी ५ ।	
३३. सुप्पयदोहा	×	×	१८८-९०
३४. परमानंदस्तोत्र	×	संस्कृत	१९१
३५. यतिभावनाष्टक	×	"	"
३६. करुणाष्टक	पद्मनदि	"	१९२
३७. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत	१९४
३८. दुर्लभानुप्रेक्षा	×	"	"
३९. वैराग्यगीत (उदरगीत)	छीहल	हिन्दी	१९५
४०. मुनिसुव्रतनाथस्तुति	×	अपभ्रंश	अपूर्ण १९५

४१ सिद्धचक्रपूजा	×	संस्कृत		१६६-६७
४२. जिनशासनभक्ति	×	प्राकृत	अपूर्ण	१६६-२००
४३. धर्मदुहेला जैनी का (त्रेपनक्रिया)	×	हिन्दी		२०२-३७

विशेष—लिपि संवत् १६६६। आ० शुभचन्द्र ने गुटके की प्रतिलिपि करायी तथा श्री माधवसिंहजी के शासनकाल मे गढकोटा ग्राममे हरजी जोशी ने प्रतिलिपि की।

४४ नेमिजिनंद व्याहलो	खेतसी	हिन्दी		२३७-४२
४५ गणधरवलययंत्रमण्डल (कोठे)	×	"		२४२
४६. कर्मदहन का मण्डल	×	"		२४३
४७. दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	सुमतिसागर	हिन्दी		२४३-६४
४८. पंचमीव्रतोद्यापनपूजा	केशवसेन	"		२६४-७४
४९. रोहिणीव्रत पूजा	×	"		२७५
५०. त्रेपनक्रियोद्यापन	देवेन्द्रकीर्त्ति	संस्कृत		२७५-८६
५१. जिनगुणउद्यापन	×	हिन्दी	अपूर्ण	२८६-९४
५२ पंचेन्द्रियवेलि	छीहल	हिन्दी	अपूर्ण	३०७
५३ नेमीसुर कवित्त (नेमीसुर राजमतीवेलि)	कवि ठक्कुरसी (कविदेल्ह का पुत्र)	"		३०७-०९
५४. विज्जुच्चर की जयमाल	×	"		३०९-११
५५. हणवंतकुमार जयमाल	×	अपभ्रंश		३११-१४
५६ निर्वाणकाण्डगाथा	×	प्राकृत		३१४
५७ कृपणछन्द	ठक्कुरसी	हिन्दी		३१४-१७
५८ मानलघुबावनी	मनासाह	"		३१८-२१
५९ मान की बडी बावनी	"	"		३२२-२८
६० नेमीश्वर को रास	भाउकवि	"		३२९-३३
६१ "	ब्रह्मरायमल्ल	"	र० सं० १६१५,	३३३-४१
६२. नेमिनाथरास	रत्नकीर्ति	"		३४१-३४३
६३ श्रीपालरास	ब्रह्मरायमल्ल	"	र. सं. १६३०	३४३-५५

६४. सुदर्शनरासो — ब्रह्म रायमल्ल — हिन्दी र स, १६२६ ३५६-६६

सवत् १६६१ मे महाराजाधिराज माधोसिंहजी के शासन काल मे मालपुरा मे श्रीलाला भावसा ने आत्म पठनार्थ लिखवाया।

६५. जोगीरासा	जिनदास	हिन्दी	३६७-६८
६६. सोलहकारणरास	भ० सकलकीति	"	३६८-६६
६७. प्रद्युम्नकुमाररास	ब्रह्मरायमल्ल	"	३६६-८३

रचना संवत् १६२८। गढ हरसौर मे रचना की गई थी।

६८. सकलीकरणविधि	X	सस्कृत	३८३-६५
६६. वीसविरहमाणपूजा	X	"	३६५-६७
७०. पंकल्याणकपूजा	X	"	अपूर्ण ३६८-४११

५४४७ गुटका स० ६६। पत्र स० ३७। आ० ७X५ इञ्च। अपूर्ण। दशा-सामान्य।

१. भक्तामरस्तोत्र मंत्र सहित	मानतु गाचार्य	संस्कृत	१-२६
२. पद्मावतीसहस्रनाम	X	"	२६-२७

५४४८. गुटका स० ६७। पत्र स० ७०। आ० ८३/४X६ इञ्च। अपूर्ण। दशा-जीर्ण।

१ नवकारमंत्र आदि	X	प्राकृत	१
२. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	८-२१

हिन्दी अर्थ सहित। अपूर्ण

३. जम्बूस्वामी चरित्र	X	हिन्दी	अपूर्ण
४. चन्द्रहसकथा	टीकमचन्द	"	र सं. १७०८। अपूर्ण
५. श्रीपालजी की स्तुति	"	"	पूर्ण
६ स्तुति	"	"	अपूर्ण

५४४६. गुटका स० ६८। पत्र स० ८८-११२। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण। ले० काल सं० १७८० चैत्र वदी १३।

विशेष—प्रारम्भ मे वैद्य मनोत्सव एवं बाद मे आयुर्वेदिक नुसखे है।

५४५०. गुटका स० ६६। पत्र स० ११८। आ० ९X६ इंच। हिन्दी। पूर्ण।

विशेष—बनारसीदास त समयसार नाटक है।

५४५१. गुटका सं० ७० । पत्र स० १४ । आ० ८३/४×६ इच । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-सिद्धान्त अपूर्ण एवं अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष—इस गुटके मे उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र की (हिन्दी) टीका दी हुई है । टीका सुन्दर एवं विस्तृत है तथा पाण्डे रूपचन्दजी कृत है ।

५४५२ गुटका सं० ७१ । पत्र स० ३५-२२२ । आ० ८३/४×६ इच । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ स्वरोदय	×	हिन्दी	३५-४१
२. सूर्यकवच	×	सस्कृत	४२
३. राजनीतिशास्त्र	चाणक्य	"	४३-५७
४. देवसिद्धपूजा	×	"	५८-६३
५. दशलक्षणपूजा	×	"	६४-६५
६. रत्नत्रयपूजा	×	"	६५-७३
७. सोलहकारणपूजा	×	"	७३-७५
८. पार्श्वनाथपूजा	×	"	७५-७६
९. कलिकुण्डपूजा	×	"	७६-७८
१०. क्षेत्रपालपूजा	×	"	७८-८२
११. न्हवनविधि	×	"	८२-८५
१२. लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	८५
१३. तत्त्वार्थसूत्र तीन अध्याय तक	उमास्वामि	"	८५-८७
१४. शांतिपाठ	×	"	८८
१५. रामविनोद भाषा	रामविनोद	हिन्दी	८९-२२२

५४५३ गुटका स० ७२ । पत्र सं० २०४ । आ० ९३/४×६३/४ इच । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ नाटक समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	१-१११
		रचना संवत् १६९३ लिपि स० १७७९ ।	
२ बनारसीविलास	"	हिन्दी	अपूर्ण
३. स्त्रीमुक्तिखण्डन	×	" अपूर्ण पत्र स०	३९-७०

५४५४. गुटका स० ७३। पत्र सं० १५२। आ० ७×६ इंच। अपूर्ण। दशा-जीर्ण शीर्ण।

१ रास आसावरी रूपचन्द अपभ्रंश १

प्रारम्भ—

विसउणामेण कुरुजंगले तहि यरु वाउ जीउ राजे।

धणकणणायर पूरियउ कणयप्पहु धणउ जीउ राजे ॥ १ ॥

विशेष—गीत अपूर्ण है तथा अस्पष्ट है।

२. पद्धडी (कौमुदीमध्यात्) सहणपाल अपभ्रंश २-७

प्रारम्भ—

हाहउ धम्मभुउ हिंडिउ ससारि असारइ।

कोइपए सुणउ, गुणदिठ्ठु संख विणु वारइ ॥ छ ॥

अन्तिम घत्ता—

पुणुमति कहइ सिवाय सुणि, साहणमेयहु किज्जइ।

परिहरि विगेहु सिरि सतियत सधि सुमइ साहिज्जइ ॥ ६ ॥

॥ इति सहणपालकृते कौमुदीमध्यात् पद्धडी छन्द लिखितं ॥

३ कल्याणकविधि मुनि विनयचन्द अपभ्रंश ७-१३

प्रारम्भ—

सिद्धि सुहंकरसिद्धियहु

पणविवि तिजइ पयासण केवलसिद्धिहिं कारणधुणमिहउ।

सयलवि जिण कल्लाण निहयमल सिद्धि सुहंकरसिद्धियहु ॥ १ ॥

अन्तिम—

एयभत्तु एक्कु जि कल्लाणउ विहिणिव्वियडि अहवइ गणणउ।

अहवासय लहखवणविहि, विणयचदि सुणि कहिउ समत्यह ॥

सिद्धि सुहंकर सिद्धियहु ॥ २५ ॥

॥ इति विनयचन्द कृत कल्याणकविधि समाप्ता ॥

४. चूनडी (विणयं वदिवि पच गुरु) यति विनयचन्द अपभ्रंश १३-१७

५ अणथमिति संधि	हरिश्चन्द्र अग्रवाल	अपभ्रंश	१७--
६. सम्माधि	×	”	२४--
७ मणुवसंधि	×	”	२७-३
८. णाणपिंड	×	”	३१-४

विशेष—२० कडवक हैं।

९. श्रावकाचार दोहा	रामसेन	”	४५-५
१०. दशलाक्षणीकरास	×	”	५६-६
११. श्रुतपञ्चमीकथा	स्वयंभू	”	६१-६७

(हरिवंश मध्यात् विदुर वैराग्य कथानके)

१२. पद्धडी	यश.कीर्त्ति	”	६७-७०

(यश.कीर्त्ति विरचित चंद्रप्रभचरित्रमध्यात्)

१३ रिट्ठणेमिचरिउ (९७-९८ संधि)	स्वयंभू	” (धवलाश्रित)	७७-८६
१४. वीरचरित्र (अनुप्रेक्षा भाग)	रइधू	”	८६-८९
१५. चतुर्गति की पद्धडी	×	”	८९-९१
१६. सम्यक्त्वकौमुदी (भाग १)	सहणपाल	”	९१-९४
१७. भावना उणतीसी	×	”	९४-९९
१८ गौतमपृच्छा	×	प्राकृत	१००-०२
१९ आदिपुराण (कुछ भाग)	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	१०२-३१
२० यशोधरचरित्र (कुछ भाग)	”	”	१३२-४६

५४५५ गुटका सं० ७९। पत्र सं० २३ से १२३। आ० ६×६ इञ्च। अपूर्ण।

१ फुटकर पद्य	×	हिन्दी	२३-३१
२ पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	”	३२-४३
३ करुणाष्टक	×	”	४४
४ पार्श्वनाथजयमाल	लोहट	”	४५
५ विनती	भूधरदास	”	४७
६ ते गुरु मेरे उर बसो	”	” ले० काल सं० १७९६	४९

७ जकडी	द्यानतराय	हिन्दी	५१
८. मगन रहो रे तू प्रभु के भजन में	वृन्दावन	"	५२
९. हम आये हैं जिनराज तोरे वदन को	द्यानतराय	" लें० काल सं० १७९६	"
१०. राजुलपच्चीसी	विनोदीलाल लालचन्द	"	५३-६०

विशेष—ले० काल स० १७९६ । दयाचन्द लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी । पं० फकीरचन्द कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

११ निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	६१-६३
१२. श्रीपालजी की स्तुति	"	"	६३-६४
१३. मना रे प्रभु चरण ल बुलाय	हरीसिंह	"	६४
१४. हमारी करुणा ल्यो जिनराज	पद्मनन्दि	"	६४
१५. पानीका पतासा जैसा तनका तमाशा है [कवित्त]	केशवदास	"	६६-६८
१६ कवित्त	जयकिशन सुदरदास आदि	"	६९-७२
१७. गुणवेलि	×	हिन्दी	७५
१८ पद-थारा देश मे हो लाल गढ बडो गिरनार	×	"	७७
१९. कक्का	गुलाबचन्द	"	७८-८२
		र० काल सं० १७९० ले० काल सं० १८००	
२०. पंचबधावा	×	हिन्दी	८४
२१. मोक्षपैडी	×	"	८६
२२. भजन सग्रह	×	"	९२
२३. दानकीवीनती	जतीदास	संस्कृत	९३
		निहालचन्द अजमेरा ने प्रतिलिपि की सवत् १८१४ ।	
२४. शकुनावली	×	हिन्दी लिपिकाल १७९७	९९-१०५
२५. फुटकर पद एव कवित्त	×	"	१२३

५४५६ गुटका स० ७५—पत्र सख्या—११६ । आ०-४३/४×४३/४ इ च । ले० काल स० १८४८ । दशा सामान्य । अपूर्ण ।

१. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी
२ कल्याणमदिरभाषा	बनारसीदास	"

३. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	
४. श्रीपालजी की स्तुति	×	हिन्दी	
५. साधुवंदना	बनारसीदास	"	
६. वीसतीर्थङ्करों की जकडी	हर्षकीर्ति	"	
७ बारहभावना	×	"	
८. दर्शनाष्टक	×	हिन्दी	सब दर्शनों का वर्णन है।
९. पद-चरण केवल को ध्यान	हरीसिंह	"	"
१०. भक्तामरस्तोत्रभाषा	×	"	"

५४५७ गुटका स० ७६। पत्र सख्या—१८०। आ०—५॥×४॥ लेखन स० १७८३। जीर्ण।

१. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	
२. नित्यपूजा व भाद्रपद पूजा	×	"	
३. नदीश्वरपूजा	×	"	
			पंडित नगराज ने हिरणौदा मे प्रतिलिपि की।
४. श्रीसीमंधरजी की जकडी	×	हिन्दी	प्रतिलिपि गुढ़ा मे की गई।
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत	
६. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	
७. जिनजपिजिन जपि जीवरा	×	हिन्दी	
८ चितामणिजी की जयमाल	मनरथ	"	जोवनेरमे नगराजने प्रतिलिपि की थी।
९. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	संस्कृत	
१० भक्तामरस्तोत्र	आचार्यमानतु ग	"	

५४५८ गुटका स० ७७। पत्र स० १२५। आ० ६×४ इ च। भाषा—संस्कृत। ले० सं० काल १८१८ माह सुदी १२।

१. देवसिद्धपूजा	×	संस्कृत	१-३५
२. नंदीश्वरपूजा	×	"	३३-४४
३. सोलहकारण पूजा	×	"	४४-५०
४. दशलक्षणपूजा	×	"	५०-५५

५. रत्नत्रयपूजा	X	हिन्दी	५६-६१
६ पार्श्वनाथपूजा	X	,,	६२-६७
७. शातिपाठ	X	,,	६७-६९
८ तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	,,	७०-११४

५४५६. गुटका स० ७८। पत्र सख्या १९०। आ० ६X४ इच। अपूर्ण। दशा-जीर्ण।

विशेष—दो गुटको का सम्मिश्रण है।

१. ऋषिमण्डल स्तवन	X	सस्कृत	२०-२७
२. चतुर्विंशति तीर्थङ्कर पूजा	X	,,	२८-३१
३ चिंतामणिस्तोत्र	X	,,	३६
४. लक्ष्मीस्तोत्र	X	,,	३७-३८
५. पार्श्वनाथस्तवन	X	हिन्दी	३९-४०
६. कर्मदहन पूजा	भ० शुभचन्द्र	सस्कृत	१-४३
७. चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन	X	,,	४३-४८
८. पार्श्वनाथस्तोत्र	X	,,	४८-५३
९. पद्मावतीस्तोत्र	X	,,	५४-६१
१०. चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजा	भ० शुभचन्द्र	,,	६१-८९
११. गणधरवलय पूजा	X	,,	८९-११४
१२. अष्टाह्निका कथा	यश कीर्त्ति	,,	१०४-११२
१३. अनन्तव्रत कथा	ललितकीर्त्ति	,,	११२-११८
१४. सुगन्धदशमी कथा	,,	,,	११८-१२७
१५. षोडषकारण कथा	,,	,,	१२७-१३६
१६. रत्नत्रय कथा	,,	,,	१३६-१४१
१७. जिनचरित्र कथा	,,	,,	१४१-१४७
१८. आकाशपचमी कथा	,,	,,	१४७-१५३
१९. रोहिणीव्रत कथा	,,	,,	अपूर्ण १५४-१५७

२०, ज्वालामालिनीस्तोत्र	X	सस्कृत	१५८-१६१
२१ क्षेत्रपालस्तोत्र	X	”	१६२-६३
२२. शातिक होम विधि	X	”	१७४-७६
२३. चौवीसी विनती	भ० रत्नचन्द्र	हिन्दी	१८६-८६

५४६०. गुटका स० ७६ । पत्र ! ० ३३ । आ० ७X४३ इंच । अपूर्ण ।

१ राजनीतिशास्त्र	चाणक्य	सस्कृत	१-२८
२. एकीश्लोक रामायण	X	”	२६
३. एकीश्लोक भागवत	X	”	”
४. गणेशद्वादशनाम	X	”	३०-३१
५ नवग्रहस्तोत्र	वेदव्यास	”	३२-३३

५४६१ गुटका सं० ८० । पत्र स० १८-४४ । आ० ६३X४३ इच । भाषा-सस्कृत तथा हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष— पञ्चमगल, बाईस परिषह, देवापूजा एव तत्वार्थसूत्र का सग्रह है ।

५४६२ गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २-२६ । आ० ५½X४ इच । भाषा-सस्कृत । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—नित्य पूजा एव पाठो का सग्रह है ।

५४६३ गुटका स० ८३ । पत्र स० ३० । आ० ६X४ इंच । भाषा सस्कृत । ले० काल स० १८८३ ।

विशेष—पद्मावती स्तोत्र एव जिनसहस्रनाम (प० प्राशाधर)का सग्रह है ।

५४६४ गुटका स० ८४ । पत्र स० १८-५१ । आ० ७X४३ इच ।

१. स्वस्त्ययनविधि	X	सस्कृत	१८-२०
२ सिद्धपूजा	X	”	२१-२३
३ षोडशकारणपूजा	X	”	२४-२५
४ दशलक्षणपूजा	X	”	२६-२७
५ रत्नत्रयपूजा	X	”	२८-३७
६ गुरुपूजाष्टक	X	”	३८-३६

७. चितामरिणपूजा	X	संस्कृत	३१-४१
८ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	४२-५१

५४६५. गुटका स० ८५ । पत्र स० २२ । आ० ६X४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण । दशा-सामान्य।

विशेष—पत्र ३-४ नही हैं । जिनसेनाचार्य कृत जिन सहस्रनाम स्तोत्र है ।

५४६६. गुटका स० ८६ । पत्र स० ५ से २५ । आ० ६X५ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—१८ से ८७ सवैयो का सग्रह है किन्तु किस ग्र थ के है यह अज्ञात है ।

५४६७. गुटका स० ८७ । पत्र स० ३३ । आ० ८X४ इंच । भाषा-सस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. जैनरक्षास्तोत्र	X	सस्कृत	१-३
२. जिनपिंजरस्तोत्र	X	"	४-५
३. पार्श्वनाथस्तोत्र	X	"	६
४ चक्रेश्वरीस्तोत्र	X	"	७
५ पद्मावतीस्तोत्र	X	"	७-१५
६. ज्वालामालिनीस्तोत्र	X	"	१५-१८
७. ऋषि मडलस्तोत्र	गौतम गणधर	"	१८-२४
८. सरस्वतीस्तुति	आशाधर	"	२४-२६
९. शीतलाष्टक	X	"	२७-३२
१०. क्षेत्रपालस्तोत्र	X	"	३२-३३

५४६८ गुटका स० ८८ । पत्र स० २१ । आ० ७X५ इञ्च । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—गर्गाचार्य विरचित पाशा कैवली है ।

५४६९. गुटका स० ८९ । पत्र स० ११४ । आ० ६X५½ इ च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारभ मे पूजाओ का सग्रह है तथा अन्त मे अचलकीर्ति कृत मत्र नवकाररास है ।

५४७० गुटका स० ९० । पत्र स० ५० से १२० । आ० ८X४½ इच । भाषा-सस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—भक्ति पाठ तथा चतुर्विशति तीर्थङ्कर स्तुति (आचार्य समन्तभद्रकृत) है ।

५४७१ गुटका सं० ९१ । पत्र स० ७ से २२ । आ० ६X६ इ च । विषय-स्तोत्र । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. सबोध पचासिकाभाषा	द्यानतराम	हिन्दी		७–८
२. भक्तामरभाषा	हेमराज	,,		९–१४
३. कल्याण मदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	,,		१५–२२

५४७२. गुटका स० ६२ । पत्र स० १३०–२०३ । आ० ८×८ इ च । भाषा–सस्कृत हिन्दी । ले० काल १८३३ । अपूर्ण । दशा सामान्य ।

१. भविष्यदत्तरास	रायमल्ल	हिन्दी		१३०–८५
२ जिनपञ्जरस्तोत्र	×	सस्कृत		१८५ ८७
३. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	,,		१८८
४. स्तवन (अरिहन्त सत का)	×	हिन्दी		१८६–६३
५ चेतनचरित्र	×	,,		१९३–२०३

५४७३. गुटका स० ६३ । पत्र स० २५–१०८ । आ० ५×३ इ च । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ के २४ पत्र नही है ।

१ पार्श्वनाथपूजा	×	हिन्दी		२५
२ भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत		५४
३ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	,,		६२
४. सासु बहू का झगडा	ब्रह्मदेव	हिन्दी		६५
५. पिया चले गिरवर कू	×	,,		६७
६ नाभि नरेन्द्र के नदन कू जग वदन	×	,,		६८
७. सीताजी की विनती	×	,,		७१
८ तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	सस्कृत		७२–९४
९. पद– अरज करा छा जिनराजजी राग सारग	×	हिन्दी	अपूर्ण	९६
१०. ,, की परि करोजी गुमान थे कै दिनका महमान, बुधजन		,,		९७
११ ,, लगनि मोरी लगी ऐसी	×	,,		९९
१२. ,, शुभ गति पावन याही चित धारोजी	नवल	,,		९९
१३. ,, जाऊगी सगि नेम कवार	×	,,		१००
१४. ,, टुक नजर महर की करना	भूधरदास	,,		१०२

१५. खेलत है होरी मिलि भाजन की टोरी (राग काफी)	हरिश्चन्द्र	हिन्दी	१०२
१६. देखो करमा सूं फुन्द रहो अजरी	किशनदास	"	१०३
१७. सखी नेमीजीसू मोहे मिलावोरी (रागहोरी)	द्यानतराय	"	"
१८. दुरमति दूरि खडी रहो री	देवीदास	"	१०५
१९. अरज सुनो म्हारी अन्तरजामी	खेमचन्द	"	१०६
२०. जिनजी की छवि सुन्दर या मेरे मन भाई	X	"	अपूर्ण १०८

५४७४. गुटका सं० ६४ । पत्र स० ३-४७ । आ० ५X५ इंच । ले० काल सं० १८२१ । अपूर्ण ।

विशेष—पत्र सख्या २६ तक केशवदास कृत वैद्य मनोत्सव है । आयुर्वेद के नुसखे हैं । तेजरी, इकातरा आदि के मंत्र हैं । स० १८२१ मे श्री हरलाल ने पावटा मे प्रतिलिपि की थी ।

५४७५. गुटका स० ६५ । पत्र सं० १८७ । आ० ४X३ इञ्च । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. आदिपुराण	जिनसेनाचार्य	सस्कृत	१-११८
२. चर्चासमाधान	भूधरदास	हिन्दी	११९-१३७
३. सूर्यस्तोत्र	X	सस्कृत	१३८
४. सामायिकपाठ	X	"	१३८-१४४
५. मुनीश्वरो की जयमाल	X	"	१४५-१४६
६. शातिनाथस्तोत्र	X	"	१४७-१४८
७. जिनपजरस्तोत्र	कमलमलसूरि	"	१४९-१५१
८. भैरवाष्टक	X	"	१५१-१५६
९. अकलकाष्टक	अकलंक	"	१५६-१५९
१०. पूजापाठ	X	"	१६०-१६७

५४७६. गुटका स ६६ । पत्र स० १६० । आ० ३X३ इञ्च । ले० काल सं० १८५७ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. विषापहार स्तोत्र	धनञ्जय	सस्कृत	१-५
२. ज्वालामालिनीस्तोत्र	X	"	

३. चिंतामणिपार्श्वनाथस्तोत्र	×	संस्कृत	
४ लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	
५. चैत्यवंदना	×	"	
६. ज्ञानपच्चीसी	बनारसीदास	हिन्दी	२०-२४
७. श्रीपालस्तुति	×	"	२५-२८
८. विषापहारस्तोत्रभाषा	अचलकीर्ति	"	२९-३१
९ चौबीसतीर्थङ्करस्तवन	×	"	३३-३७
१०. पचमंगल	रूपचंद	"	३८-४७
११. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	४८-५९
१२. पद-मेरी रे लगावी जिनजी का नावसू	×	हिन्दी	६०
१३. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"	६१-७०
१४. नेमीश्वर की स्तुति	भूधरदास	हिन्दी	७१-७२
१५. जकडी	रूपचंद	"	७३-७५
१६. "	भूधरदास	"	७६-८३
१७ पद- लीयो जाय तो लीजे रे मानी जिनजी को नाम सब भलां	×	"	८४-८५
१८. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	८५-८९
१९ घण्टाकर्णमंत्र	×	"	९०-९६
२० तीर्थङ्करादि परिचय	×	"	९७-१६२
२१. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	१६३-६५
२२ पारसनाथजी की निशाणी	×	हिन्दी	१६६-७७
२३ स्तुति	कनककीर्ति	"	१८०-८२
२४ पद-(प्रभु श्रीजिनराय मनरच जाय करावो)	×	"	

५५७७. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ७७ । प्रा० ३×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा सामान्य ।

विशेष-गुटका जीर्ण शीर्ण हो चुका है । अक्षर मिट चुके हैं ।

१ तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत

२. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	"	
३. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	
४. कल्याणमदिरस्तोत्र	कुमुदचद्र	"	
५. पार्श्वनाथस्तोत्र	X	"	
६ वर्धमानस्तोत्र	X	"	
७. स्तोत्र संग्रह	X	"	५६-७५

५४७८. गुटका सं० ९८ पत्र सं० १३-११५। आ० २½X२½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। अपूर्ण। दशा सामान्य।

विशेष-नित्य पूजा एव षोडशकारणादि भाद्रपद पूजाओ का संग्रह है।

५४७९. गुटका स० ९९। पत्र स० ४-१०५। आ० ५X३ इञ्च।

१. कक्कावतीसी	X	हिन्दी		४-१३
२. त्रिकालचौवीसी	X	"		१४-१७
३. भक्तिपाठ	कनककीर्ति	"		१७-२०
४. तीसचौवीसी	X	"		२१-२३
५. पहेलियां	माल्ह	"		२४-६३
६. तीनचौवीसीरास	X	"		६४-६६
७. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"		६७-७३
८ श्रीपाल वीनती	X	"		७४-७८
९. भजन	X	"		७९-८०
१०. नवकार बडी वीनती	ब्रह्मदेव	"	सं० १८४५	८१-८२
११. राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल	"		८३-१०१
१२. नेमीश्वर का व्याहला	लालचन्द	"	अपूर्ण	१०१-१०५

५४८०. गुटका स० १००। पत्र स० २-८०। आ० १०X६ इञ्च। अपूर्ण। दशा सामान्य।

१. जिनपच्चीसी	नवलराम	हिन्दी	२
२. आदिनाथपूजा	रामचंद्र	"	२-३
३. सिद्धपूजा	X	संस्कृत	४-५

४. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	संस्कृत	५-६
५. जिनपूजाविधान (देवपूजा)	X	हिन्दी	७-१५
६. छहढाला	द्यानतराय	"	१६-१८
७. भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	१३-१५
८. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१५-२१
९. सोलहकारणपूजा	X	"	२२ २४
१०. दशलक्षणपूजा	X	"	२५-३२
११. रत्नत्रयपूजा	X	"	३३-३६
१२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा	X	हिन्दी	३७
१३. नदीश्वरद्वीपपूजा	X	संस्कृत	३७-३९
१४. शास्त्रपूजा	X	"	४०
१५. सरस्वतीपूजा	X	हिन्दी	४१
१६. तीर्थङ्करपरिचय	X	"	४२
१७. नरक-स्वर्ग के यत्र पृथ्वी आदि का वर्णन	X	"	४३-५०
१८. जैनशतक	भूधरदास	"	५१-५९
१९. एकीभावस्तोत्रभाषा	"	"	६०-६१
२०. द्वादशानुप्रेक्षा	X	"	६१-६३
२१. दर्शनस्तुति	X	"	६३-६४
२२. साधुवदना	बनारसीदास	"	६४-६५
२३. पंचमङ्गल	रूपचन्द	हिन्दी	६५-६९
२४ जोगीरासो	जिनदास	"	६९-७०
२५ चर्चायें	X	"	७०-८०

५४८१. गुटका स० १०१। पत्र स० २-२१। आ० ८३X८३ इ च। भाषा-प्राकृत। विषय-चर्चा। अपूर्ण। दशा-सामान्य। चौबीस ठाणा का पाठ है।

५४८२ गुटका स० १०२। पत्र स० २-२३। आ० ५X४ इ च। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण। दशा-सामान्य। निम्न कवियो के पदो का सग्रह है।

२७. ई' विध खेलिये हो चतुर नर	नवलराम	हिन्दी	१२
२८. प्रभु गुन गावो भविक जन	"	"	१२
२९. यो मन म्हारो जिनजी सूं लाग्यो	"	"	१३
३०. प्रभु चूक तकसीर मेरी माफ करो वे	"	"	१३
३१. दरसन करत अघ सब नसे	"	"	१३
३२. रे मन लोभिया रे	"	"	१४
३३ भरत नृप वैरागे चित भीनो	"	"	१५
३४. देव दीन को दयाल जानि चरण शरण आयो	"	"	"
३५ गावो हे श्री जिन विकलप छारि	"	"	"
३६. प्रभुजी म्हारो अरज सुनो चितलाय	"	"	१६
३७ ये शिक्षा चित लाई	"	"	१६-१७
३८ मैं पूजा फल वात सुनौ	"	"	१८
३९. जिन सुमरन की वार	"	"	"
४०. सामायिक स्तुति वदन करि के	"	"	१९
४१ जिनन्दजी की रुख रुख नैन लाय	सतदास	"	"
४२. चेतो क्यो न ज्ञानी जिया	"	"	२०
४३ एक अरज सुनो साहब मोरी	द्यानतराय	"	"
४४ मो से अपना कर दयार रिखभ दीन तेरा	बुधजन	"	२०
४५ अपना रग में रग दयोजी साहब	×	"	"
४६. मेरा मन मधुकर अटक्यो	×	"	२१
४७ भैया तुम चोरी त्यागोजी	पारसदास	"	"
४८ घड़ी २ पल २ छिन २	दौलतराम	"	"
४९ घट घट नटवर	×	"	२२
५०. मारग अपनो जोय सुज्ञानी डोरे	×	"	"
५१. सुनि जीया रे चिरकाल रै सोयो	×	"	"
५२. जग डसिया रे भाई	भूधरदास	"	"

५३ आई सोही सुगुरु बखानि रे	नवलराम	हिन्दी	२३
५४. हो मन जिनजी न क्यो नही रटै	"	"	"
५५, की परि इतनी मगरूरी करी	"	"	अपूर्ण

५४८३. गुटका स० १०३ । पत्र स० ३-२० । आ० ६×५ इञ्च । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है ।

५४८४. गुटका स० १०४ । पत्र सं० ३०-१४४ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल स० १७२८ कार्तिक सुदी १५ । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१. रत्नत्रयपूजा	×	प्राकृत	३०-३२
२. नन्दीश्वरद्वीप पूजा	×	"	३३-४७
३ स्नपनविधि	×	संस्कृत	४८-६०
४ क्षेत्रपालपूजा	×	"	६०-६४
५. क्षेत्रपालाष्टक	×	"	६४-६५
६. वन्देतान की जयमाला	×	"	६५-६९
७. पार्श्वनाथ पूजा	×	"	७०
८. पार्श्वनाथ जयमाल	×	"	७०-७३
९ पूजा धमाल	×	संस्कृत	७४
१०. चितामणि की जयमाल	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	७५
११. कलिकुण्डस्तवन	×	प्राकृत	७६-७८
१२. विद्यमान बीस तीर्थङ्कर पूजा	नरेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	८२
१३ पद्मावतीपूजा	"	"	८५
१४. रत्नावली व्रतो की तिथियो के नाम	"	हिन्दी	८५-८७
१५. ढाल मगल की	"	"	८८-८९
१६. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	८९-१०२
१७. जिनयज्ञादिविधान	×	"	१०२-१२१
१८. व्रतो की तिथियो का ब्यौरा	×	हिन्दी	१२१-१३६

५४८५. गुटका स० १०५ । पत्र स० ११७ । आ० ६×६ इंच ।

१ षट्ऋतुवर्णन बारह मासा	जनराज	हिन्दी	अपूर्ण	२४–४३
२. कवित्त सग्रह	X	"		४३–६१

विभिन्न कवियों के नायक नायिका संबन्धी कवित्त हैं।

३ उपदेश पचीसी	X	हिन्दी	अपूर्ण	६२–६३
४ कवित्त	सुखलाल	"		६६–६७

५४८६ गुटका स० १०६ । पत्र स० २४ । आ० ६X६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्वार्थसूत्र है।

५४८७ गुटका स० १०७ । पत्र स० २०–६४ । आ० ६X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १७४८ वैशाख सुदी १४ । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. कृष्णरुक्मणिवेलि हिन्दी गद्य टीका सहित	पृथ्वीराज	हिन्दी	२०–५४

लेखन काल स० १७४८ वैशाख सुदी १४ । र० काल स० १६३७ । अपूर्ण ।

अन्तिम पाठ—

रमता जगदीश्वरतरणौ रहसी रस मिथ्यावचन न ता सम है।
सरसति रुक्मिणी तणि सहचरि कहि या मुर्वेतिय्ज कहे ।। १० ।।

टीका—रहसि एकान्तइ रुकमणी साथइ श्रीकृष्णजी तइ रमता क्रीडाता जे रस ते दृष्टि दीवा सरीख कह्यौ। पर ते वचन माही कूडउ नेमत मानउ साच मानिज्यौ । रुकमणी सरस्वतीनी सहचरी । सरस्वती तिणइ गुस-बात कही मुझनइ आपणउ जाणी ।। जाणी सर्वबात कही तेहना मुख थकी सुणी तिमही ज कही ।। १० ।।

रूप लक्षण गुण तणास रुकमीणि जहिवा समरथीक कुण ।
जाणिया जिका सातिसामै जपिया गोविंद राणि तणा गुण ।। ११ ।।

टीका—रुकमणि नउ रूप लक्षण गुण कहिवा भणि समर्थ कुण समर्थ तर छइ अपितु को नहि परमइ । माहरि मतिइ अनुसार जिसा ज्याण्या तिस्या ग्रन्थ माहि गूंथ्या कह्या तिण कारण हू ताहरउ बालक छू मौ परि कृपा करिज्यौ ।। ११ ।।

वसु शिव नयन रस शशि वत्पर विजयदसमि रवि रिष वरणोत ।
किसन रुकमणी वेलि कल्पतरु कोधी कमध ज कल्याण उत ।। १२ ।।

टीका—अचल पर्वत सत्व रजु तम गुण ३ अग ६ शशिचन्द्रमा १ सवत् १६३७ वर अचल गुण रवि ससि सचि तात वीयउ जस ।। करि श्री भरतार श्रवणे दिन रात कठ करि श्रीफल भगति अपार विषइ श्री लक्ष्मी नउ भत्तरि रुकमणी कृष्णनउ श्री रुकमणी जस करी भावना कीधी ए वेली महो भगतो श्रवणे साभलिउ रात दिन गलइ करउ श्री लक्ष्मी रूप फल पामइ ।

वेद वीज जल वयण सुकवि जउ मडीस धर ।
पत्र दूहा गुण पुहपवास भोगी लिखमी वर ।।
पसरी दीप प्रदीप अधिक गहरी या डवर ।
मनसुजेणाति अब फल पामिइ अबर ।।
विसतार कोध शुचि जुगी विमल धणी किसन कहणहार धन ।
अमृत वेलि पीथल अतइ रोपी कलियाण तनुज ।। ३१३ ।।

अर्थ—मूल वेद पाठ तीको बीज जल पाणी तिको कवियण तिये वयणे करि जडमाडीस दृढ परिणइ ।। दूहा ते पत्र दूहा गुण ते फूल सुगन्ध वास भोगी भमर श्रीकृष्णजी वेलिइं माकहइ करो विस्तरी जगत्र नइ विषै दीप प्रदीप। व दीवा थी अधिक अत्यन्त विस्तरी जिके मन सुधी एह नउ की जाणइ तीको इसा फल पामइ। अवर कहिता स्वर्ग ना सुख पामे। विस्तार करी जगत्र नइ विषइ विमल कहीता निर्मल श्रीकिसनजी वेलि मा धणी नइ कहण हार धन्य तिको पिण अमृत रूपणो वेलि पृथ्वी नइ लिखइ अविचल पृथ्वी नई व विराज श्री कल्याण तम वेटा पृथ्वीराजइ कह्या।

इति पृथ्वीराज कृत कृषण रुकमणी वेलि सपूर्ण। मुणि जग विमल वाचणार्थं। सवत् १७४८ वर्षे वैशाख मासे कीष्ण पक्षे तिथि १४ भृगुवासरे लिखतं उणियरा नग्रे ।। श्री ।। रस्तु ।। इति मगल ।।

२. कोकमजरी	×	हिन्दी		५४
३. विरहमंजरी	नददास	"		५५–६१
४ बावनी	हेमराज	"	४६ पद्य हैं	६१–६७
५. नेमिराजमति बारहमासा	×	"		६७
६. पृच्छावलि	×	"		६६–८७
७. नाटक समयसार	बनारसीदास	"		८८–११४

५४८८ गुटका सं० १०७ क। पत्र स० २३५। आ० ५×४ इञ्च। विषय-पूजा एव स्तोत्र।

१. देवपूजाष्टक	×	संस्कृत	१–४
२. सरस्वती स्तुति	ज्ञानभूषण	"	४–६
३. श्रुताष्टक	×	"	६–७
४. गुरुस्तवन	शातिदास	"	८
५. गुर्वाष्टक	वादिराज	"	६

६. सरस्वती जयमाल	ब्रह्मजिनदास	हिन्दी	१०-१२
७. गुरुजयमाला	"	"	१३-१५
८. लघुस्नपनविधि	X	सस्कृत	१६-२३
९ सिद्धचक्रपूजा	X	"	२४-३०
१० कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	यशोविजय	"	३१-३५
११. षोडशकारणपूजा	X	"	३५-३९
१२. दशलक्षणपूजा	X	"	३९-४२
१३ नन्दीश्वरपूजा	X	"	४३-४५
१४ जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	४६-५९
१५ अर्हद्भक्तिविधान	X	"	५९-६२
१६. सम्यक्दर्शनपूजा	X	"	६२-६४
१७ सरस्वतीस्तुति	आशाधर	सस्कृत	६४-६६
१८ ज्ञानपूजा	X	"	६७-७१
१९ महर्षिस्तवन	X	"	७१-७३
२०. स्वस्त्ययनविधान	X	"	७३-७९
२१ चारित्रपूजा	X	"	७९-८१
२२ रत्नत्रयजयमाल तथा विधि	X	प्राकृत सस्कृत	८१-९१
२३ वृहद्स्नपन विधि	X	सस्कृत	९१-११९
२४ ऋषिमण्डल स्तवनपूजा	X	"	११९-२९
२५ अष्टाह्निकापूजा	X	"	१२९-५१
२६ विरदावली	X	"	१५२-६०
२७ दर्शनस्तुति	X	"	१६१-६२
२८ आराधना प्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	१६३-६९

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्य ॥

श्री जिणवरवाणि णवेवि गुरु निर्ग्रन्थ प्रणमेवी ।

कहु आराधना सुविचार सक्षेपे सारो धीर ॥ १ ॥

हो क्षपक वयण अवधारि, हवि चाल्यो तुम भवपारि।
हो सुभट कहुं तुझ भेउ, धरी समकित पालन एहु ॥ २ ॥
हवि जिनवरदेव आराहि, तू सिध समरि मन माहि।
सुणि जीव दया धुरि धर्म्म, हवि छाडि अनुए कर्म्म ॥ ३ ॥
मिथ्यात कु सका टालो, गणगुरु वचनि पालो।
हवि ध्यान धरे मन धीर, ल्यो सजम दोहोलो वीर ॥ ४ ॥
उपप्राचित करि व्रत सुधि, मन वचन काय निरोधि।
तू क्रोध मान माया छाडि, आपुण सू सिलि माडि ॥ ५ ॥
हवि क्षमो क्षमावो सार, जिम पामो सुख भण्डार।
तु मन्त्र समरे नवकार, धोए तन करे भवनार ॥ ६ ॥
हवि सवे परिसह जिधि, अभतर ध्याने दीपि ।
वैराग्य धरे मन माहि, मन माकड गाढु साहि ॥ ७ ॥
सुणि देह भोग सार, भवलधो वयण मा हार।
हवि भोजन पाणि छाडि, मन लेई मुगति माडि ॥ ८ ॥
हवि छुणक्षण पुटि आयु, मनासि छाडो काय।
इन्द्रीय वस करि धीर, कुटब मोह मेल्हे वीर ॥ ९ ॥
हवि मन गन गाढु बाधे, तू मरण समाधि साधि।
बे साधो मरण सुनेह, जेया स्वर्ग मुगतिय भणेय ॥ १० ॥

× × × ×

अन्तिम भाग

हवि हइडि जाणि विचार, घणु कहिइ किहिं सु अपार।
लिभ्रा भणसण दीख्या जाण, सन्यास छाडो प्राण ॥ ५३ ॥
सन्यास तणा फल जोइ, स्वर्ग सुद्धि फलि सुखु होइ।
वलि श्रावक कोल तू पामीइ, लही निर्वाण मुगती गामीइ ॥ ५४ ॥
जे भणि सुणिन नरनारी, ते जाइ भवबि पारि।
श्री विमलेन्द्रकीर्ति कह्यो विचार, आराधना प्रतिबोधसार ॥ ५५ ॥

इति श्री आराधना प्रतिबोध समाप्त

	देवेन्द्रकीर्ति	संस्कृत		१७०-१८०
३०. अनन्तपूजा	ब्रह्मशांतिदास	हिन्दी		१८०-६६
३१. गणधरवलयपूजा	शुभचन्द्र	संस्कृत		१६६-२११
३२. पञ्चकल्याणकोद्यापन पूजा	भ. ज्ञानभूषण	"	अपूर्ण	२११-३४

५४८८६. गुटका सं० १०८ । पत्र सं० १२० । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१ जिनसहस्रनामभाषा	बनारसीदास	हिन्दी		१-२१
२. लघुसहस्रनाम	×	संस्कृत		२२-२७
३ स्तवन	×	अपभ्रंश	अपूर्ण	२८
४. पद	मनराम	हिन्दी		२६

ले० काल १७३५ आसोज बुदी ६

चेतन इह घर नाही तेरो ।
घटपटादि नैनन गोचर जो, नाटक पुद्गल केरो ॥ टेक ॥
तात मात कामनि सुत बंधु, करम बंध को घेरो ।
करि है गौन आनगति को जब, कोई नहीं आवत नेरो ॥ १ ॥
भ्रमत भ्रमत ससार गहन वन, कीयो आनि बसेरो ।
मिथ्या मोह उदे तें समझो, इह सदन है मेरो ॥ २ ॥
सदगुरु वचन जोइ घट दीपक, मिटै अनादि अंधेरो ।
असख्यात परदेस ग्यान मय, ज्यो जानऊ निज डेरो ॥ ३ ॥
नाना विकलप त्यागि आपको, आप आप महि हेरो ।
जो मनराम अचेतन परसौ, सहजैं होइ निवेरो ।

५. पद-मो पिय चिदानंद परवीन	मनराम	हिन्दी		३०
६. चेतन समझि देखि घरमाहि	"	"	अपूर्ण	३१
७. कै परमेश्वरी की अरचा विधि	"	"		३२
८ जयति आदिनाथ जिनदेव ध्यान गाऊ	×	"		३३
९. सम्यक्त्व पणविवि सिरिपास हो	"	"		३४-३५

१०. पंचमगति वेलि	हर्षकीर्ति	हिन्दी	सं० १६८३ श्रावण अपूर्ण
११. पंच सधावा	×	"	"
१२. मेघकुमारगीत	पूनो	हिन्दी	४०–४५
१३. भक्तामरस्तोत्र	हेमराज	"	४६
१४ पद–अब मोहे कछून उपाय	रूपचद	"	४७
१५. पंचपरमेष्ठीस्तवन	×	प्राकृत	४७–४६
१६. शातिपाठ	×	सस्कृत	५०–५२
१७ स्तवन	आशाधर	"	५२
१८ बारह भावना	कविआलु	हिन्दी	
१६. पचमगल	रूपचद	"	
२०. जकडी	"	"	
२१ "	"	"	
२२. "	"	"	
२३. "	दरिगह	"	

सुनि सुनि जियरा रे तू त्रिभुवन का राउ रे।
तू तजि परपरवारे चेतसि सहज सुभाव रे॥
चेतसि सहज सुभाव रे जियरा परस्यौं मिलि क्या राच रहे।
अप्पा पर जाण्या पर अप्पाणा चउगइ दुख्य अणाइ सहे॥
अवसो गुण कीजै कर्म हं छीज्जै सुणहु न एक उपाव रे।
दसण णाण चरणमय रे जिउ तू त्रिभुवन का राउ रे॥ १॥
करमनि वसि पडिया रे प्रणया मूढ़ विभाव रे।
मिथ्या मद नडिया रे मोह्या मोहि अणाइ रे॥
मोह्या मोह अणाइ रे जिय रे मिथ्यामद नित माचि रह्या।
पट पडिहार खडग मदिरावत ज्ञानावरणी आदि कह्या॥
हडि चित्त कुलाल भडयारोण अष्टाउद्दीम्रे चताई रे।
रे जीवडे करमनि वसि पडिया प्रणया मूढ विभाव रे॥ २॥

तू मति सोवहि न चीता रे वैरिन मैं काहा वास रे ।

भवभव दुखदाय करैं तिनका करैं विसास रैं ॥

तिनका करहि विसास रे जिवडे तू मूढा नहि निमषु डरे ।

जम्मण मरण जरा दुखदायक तिनस्यौं तू नित नेह करें ॥

आपे ग्याता आपे द्रिष्टा कहि समझाऊं कास रे ।

रे जीउ तू मति सोवहि न चीता वैरिन मे काहावास रे ॥

ते जगमाहि जागे रे रहे अन्तरल्यवलाइ रे ।

केवल विगत भयारे, प्रगटी जोति सुभाइ रे ॥

प्रगटी जोति सुभाइ रे जीवडे मिथ्या रैणि विहाणी ।

स्वपरभेद कारण जिन्ह मिलिया ते जग हूवा वाणी ॥

सुगुरु सुधर्म पञ्च परमेष्ठी तिनके लागौ पाय रे ।

कहे दरिगह जिम त्रिभुवन सेवै रहे अतर ल्यवलाइ रे ॥ ४ ॥

२४ कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	ले० काल १७३५ आसोज बुदी ६
२५ निर्वाणकाण्ड गाथा	X	प्राकृत	
२६ पूजा सग्रह	X	हिन्दी	

५४६०. गुटका सं० १०६ । पत्र स० १५२ । आ० ६X४ इञ्च । ले० काल १८३६ सावण सुदी ६ । अपूर्ण । दशा-जीर्णशीर्ण ।

विशेष-लिपि विकृत एव अशुद्ध है ।

१ शनिश्चरदेव की कथा	X	हिन्दी		११४
२. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"		१५-२४
३ नेमिनाथ का बारहमासा	X	"	अपूर्ण	२५-२६
४ जकडी	नेमिचन्द	"		२७
५ सवैया (सुख होत शरीरको दालिद भागि जाइ)	X	"		२८
६ कवित्त (श्री जिनराज के ध्यान को उछाह मोहे लागे		"		२९
७. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"		३०-३३

३५. थु जाणे ज्यो तारोजी	×	हिन्दी	८६
३६. तुम्हारे दर्श देखत ही	जोधराज	"	९०
३७. सुनि २ रे जीव मेरा	मनसाराम	"	९०-९१
३८. भरमत २ संसार चतुर्गति दुख सहा	×	"	९१-९३
३९. श्रीनेमकुवार हमको क्यो न उतारो पार	×	"	९५
४०. आरती	×	"	९६-९७
४१. पद—विनती कराछा प्रभु मानो जी	किशनगुलाब	"	९८
४२. ये जी प्रभू तुम ही उतारोगे पार	"	"	९९
४३. प्रभूजी मोह्या छै तन मन मारा	×	"	९९
४४. वदू श्रीजिनराज	कनककीर्ति	"	१००-१०१
४५. बाजा वजय्या प्यारा २	×	,	१०२
४६. सफल घडी हो प्रभुजी	खुशालचन्द	"	१०३
४७. पद	देवसिंह	"	१०४-१०५
४८. चरखा चलता नाही रे	भूधरदास	"	१०६
४९. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत	१०७-१७
५०. चौबीस तीर्थंकर स्तुति	"	हिन्दी	११६-२१
५१. मेघकुमारवार्ता	"	"	१२१-२४
५२ शनिश्चर की कथा	"	"	१२५-४१
५३. कर्मयुद्ध की विनती	"	"	१४२-४३
५४ पद—अरज करू छू वीतराग	"	"	१४६-४७
५५ स्फुट पाठ	"	"	१४८-५३

५४६१ गुटका स० ११० । पत्र सं० १४३ । आ० ६×४ इ च । भाषा–हिन्दी संस्कृत ।

१. नित्यपूजा	×	संस्कृत	१-२९
२. मोक्षशास्त्र	उमास्वामि	"	२९-४९
३. भक्तामरस्तोत्र	आ० मानतु ग	"	५०-५८
४. पंचमंगल	रूपचन्द	"	५८-६८

५. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	६८-७५
६. पूजासंग्रह	×	"	७५-१०२
७. विनतीसंग्रह	देवाब्रह्म	"	१०२-१४३

५४६२. गुटका स० १११। पत्र स० २८। आ० ६½×४½ इंच। भाषा-सस्कृत। पूर्ण। दशा-सामान्य

१. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	१-६
२. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	११
३. चरचा	×	प्राकृतहिन्दी	११-२६

विशेष—"पुस्तक भक्तामरजी की पं० लिखमीचन्द रैनवाल हाला की छै। मिती चैत सुदी ६ संवत् १६५४ का मे मिनी मार्फत राज श्री राठोडजी का सूं पंचासू।" यह पुस्तक के ऊपर उल्लेख है।

५४६३. गुटका सं० ११२। पत्र सं० १५। आ० ६×६ इंच। भाषा-सस्कृत। अपूर्ण।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है।

५४६४. गुटका सं० ११३। पत्र स० १६-२२। आ० ६½×५ इंच। अपूर्ण। दशा-सामान्य।

अथ डोकरी अर राजा भोज की वार्ता लिख्यते। पत्र सं० १८-२०।

डोकरी ने राजा भोज कही डोकरी हे राम राम। वीरा राम राम। डोकरी यो मारग कठा जाय छै। वीरा ईं मारग परथी आई अर परथी गई॥ १॥ डोकरी मेहे बटाउ हे बटाउ। ना बीरा थे बटाऊ नाही। बटाऊ तो संसार माही दोय और ही छै॥ एक तो चाद अर एक सूरज॥ २॥ डोकरी मेहे राजा हे राजा॥ ना वीरा थे तो राजा नाही। राजा तो ससार मे दोय और ही। एक तो अन्न अर एक पाणी॥ ३॥ डोकरी मेहे चोर हे चोर। ना वीरा थे चोर ना। चोर तो ससार मे दोय ओर ही छै। एक नेत्र चोर और एक मन चोर छै॥ ४॥ डोकरी मेहे तो हलवा हे हलवा। ना वीरा थे तो हलवा नाही॥ हलवा तो ससार मे दोय और ही छै। कोई पराये घर बसत मागिवा जाइ उका घर मे छै पणि नट जाय सो हलवो॥ ५॥ डोकरी तू माहा के माता हे माता। ना वीरा माता तो दोय और ही छै। एक तो उदर माही सूं काढे सो माता। दूसरी धाय माता॥ ६॥ डोकरी मेहे तें हारया हे हरया। ना वीरा थे क्या ने हारयो। हारयो तो ससार मे तीन और ही छै। एक तो मारग चालतो हारयो। दूसरो वेटी जाई सो हारयो तीसरी जैकी भोडी अस्त्री होइ सो हारयो॥ ७॥ डोकरी मेहे वापडा हे वापडा। ना वीरा थे वापडा नाही। वापडा तो च्यारा और छै। एक तो गऊ को जायो वापडो। दूसरो छयाली को जायो वापडो। तीसरो जै की माता जनमता ही मर गई सो वापडो। चौथा बामण वाण्या की बेटी विधवा हो जाय सो वापडी॥ ८॥ डोकरी आप। मिला हे

मिला। बीरा मिलवा वाला तो ससार मे च्यारि और ही छै। जैको बाप विरधा होसी सो वा मिलसी। अर जे को वेटो परदेश सू आयो होसी सो वा मिलसी। दूसरो सावरण भादवा को मेह वरस सी सो समन्दर सू। तीसरो भारगेज को भात पैरावा जासी सो वो मिलसी। चौथा स्त्री पुरुष मिलसी। डोकरी जाण्या हे जाण्या। भरिया कहे न उजलेउ भलसी आधा। पुरुषा आई पारपा वोलार लाधा ॥ १० ॥

॥ इति डोकरी राजा भोज की वार्ता सम्पूर्ण ॥

४४६५ गुटका स० ११४। पत्र स० ६-७२। आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च।

विशेष—स्तोत्र एव पूजा सग्रह है।

४४६६ गुटका स० ११५। पत्र स० १६८। आ० ६×५ इ च। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण। दशा-सामान्य

विशेष—पूजा सग्रह, जिनयज्ञकल्प (आशाधर) एव स्वयम्भूस्तोत्र का सग्रह है।

४४६७. गुटका स० ११६। पत्र स० १६६। आ० ६×५ इ च। भाषा-सस्कृत। पूर्ण। दशा-जीर्ण।

विशेष—गुटके मे निम्न पाठ उल्लेखनीय है।

४ भुवनकीर्ति गीत	बूचराज	हिन्दी	१२-१४

आजि वधाउ सुणहु सहेली यहु मनु विघसइ जि महलीए।

गोहि अनन्त नित कोटिहि सारिहि सुहु गुरु सुहु गुरु वेदहि मुकरि रलीए॥

करि रली वन्दह सखी सुहु गुरु लवधि गोइम सम सरै।

जसु देखि दरसणु टलहि भवदुख होइ नित नवनिधि घरे॥

कपूर चन्दन अगर केसरि आणि भावन भाव ए।

श्रीभुवनकीर्ति चरण प्रणमोहू सखी आज वधाव हो॥ १॥

तेरह विधि चारित प्रतिपालइ दिनकर दिनकर जिम तपि सोहइ ए।

सर्वाङ्गि भासिउ धर्म सुणावै वाणी हो वाणी भवु मन मोहइ ए।

मोहन्ति वाणी सदा भवि सुनु ग्रन्थ आगम भाखए।

षट् द्रव्य अरु पञ्चास्तिकाया सप्ततत्व पयासए॥

बावीस परिग्रह सहइ अगिहू गरुव मति नित गुणनिधो।

श्रीभुवनकीर्ति चरण पणमि सु चारितु तनु तेरह विधे॥ २॥

मूल गुणह अठाइसइ धारइए मोहए मोहु महाभदु ताडियो ए।

रतिपति तिणु दंतिहु महिइउ पुणु कोवडुए कोवडुकरि तिहि रालीयो ए॥

रालियो जिमि क वँई करिहि वनउ करि इम बोलइ ।

गुरु सियाल मेरह जिउग्र जंगमु पवरा भइ किम डोलए ।

जो पच विषय विरतु चित्तिहि कियउ खिउ कम्मह तणु ।

श्री भुवनकीर्ति चरण प्रणमइ धरइ अठाइस मूलगुणा ।। ३ ।।

दस लाक्षण धर्म निजु धारि कु सजमु संजमु भसणु वनिए ।

सत्रु मित्रु जो सम किरि देखई गुरनिरगथु महा मुनीए ।।

निरगंथु गुरु मद अट्ठ परिहरि सवय जिय प्रतिपालए ।

मिथ्यात तम निर्द्धण दिन म जैणधर्म उजालए ।।

तेरअव्रतह अखल चित्रह कियउ सकयो जम ।

श्री भुवनकीर्ति चरण पणमउ धरइ दशलक्षिण धर्म्मु ।। ४ ।।

सुर तरु संघ कलिउ चितामणि दुहिए दुहि ।

महो घरि घरि ए पंच सवद वाजहि उछरगि हिए ।।

गावहि ए कामणि मधुर सरे अति मधुर सरि गावति कामुणि ।

जिणहं मन्दिर अवही अष्ट प्रकार हि करहि पूजा कुसममाल चढ़ावहि ।।

बूचराज भणि श्री रत्नकीर्ति पाटिउ दयोसह गुरो ।

श्री भुवनकीर्ति आसीरवादहि सघु कलियो सुरतरो ।।

।। इति आचार्य श्री भुवनकीर्ति गीत ।।

५. नाडी परीक्षा	×	सस्कृत	१५–१८
६. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१६–१०६
७. पार्श्वनाथस्तवन	समयराज	"	१०७

सुन्दर सोहण गुण निलउ, जग जीवण जिण चन्दोजी ।

मन मोहन महिमा निलउ, सदा २ चिरनंदो जी ।। १ ।।

जेसलमेरू जुहारिए पाम्यउ परमानन्दोजी ।

पास जिणेसुर जग धणी फलियो सुरतरु कन्दोजी ।। २ ।। जे० ।।

मणि माणिक मोती जड्यउ कचणरूप रसालो जी ।

सिखर सेहर सोहतउ पूनिम ससिदल भालोजी ।। ३ ।। जे० ।।

निरमल तिलक सोहमणउ जिन मुख कमल रिसालोजी।
कानो कुण्डल दीपता भिक भिग भाक भमालीजी ॥ ४ ॥ जे० ॥
कठि मनोहर कठिलउ उरि वारि नव सिर हारोजी।
बहिर खवहि भला करता भव भय कारोजी ॥ ५ ॥ जे० ॥
मरकत मणि तनु दीपती मोहन सूरति सारोजी।
सुख सोहग संपद मिलइ जिणवर नाम प्रधारोजी ॥ ६ ॥ जे० ॥
इन परि पास जिणेसर भेटयउ कुल सिणगारोजी।
जिणचन्द्र सूरि पसाउ लइ समयराज सुखकारोजी ॥ ७ ॥ जे० ॥
॥ इति श्री पार्श्वनाथस्तवन समाप्तम् ॥

५४६८ गुटका स० ११७। पत्र स० ३५०। आ० ६½×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत हिन्दी। अपूर्ण। दशा सामान्य।

विशेष— विविध पाठो का सग्रह है। चर्चाए पूजाए एव प्रतिष्ठादि विषयो से सबधित पाठहै।

५४६९. गुटका स० ११८। पत्र स० १२६। आ० ६×४ इञ्च।

१ शिक्षा चतुष्क	नवलराम	हिन्दी	५
२ श्री जिनवर पद वन्दि कै जी	वखतराम	"	५–७
३. अरहत चरनचित लाऊ	रामकिशन	"	६–१०
४ चेतन हो तेरे परम निधान	जिनदास	"	११–१२
५ चैत्यवदना	सकलचन्द्र	सस्कृत	१२-१३
६. करुणाष्टक	पद्मनदि	"	२१
७ पद—आजि दिवसि धनि लेखे लेखवा	रामचन्द्र	हिन्दी	३७
८ पद–प्रातभयो सुमरि देव	जगराम	"	५३
९ पद–सुफलघडोजी प्रभु	खुशालचन्द्र	"	७५
१०. निर्वाणभूमि मगल	विश्वभूषण	"	८६–९०
		सवत् १७२९ मे मुसावर मे प० केसरीसिंह ने लिखा।	
११. पञ्चमगतिवेलि	हर्षकीर्ति	हिन्दी	११५–१८
		रचना स० १६८३ प्रति लिपि सं० १८३०	

५५००. गुटका सं० ११६ । पत्र स० २५१ । आ० ६½×६ इञ्च । ले० काल स० १८३० असाढ बुदी ८ । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—पुराने घाट जयपुर मे ऋषभ देव चैत्यालय मे रतना पुजारी ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । इसमे कवि वालक कृत सीता चरित्र हैं जिसमे २५२ पद्य हैं । इस गुटके का प्रथम तथा मध्य के अन्य कई पत्र नही हैं ।

५५०१. गुटका सं० १२० । पत्र स० १३३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय सग्रह । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. रविव्रतकथा जयकीर्ति हिन्दी २-३ ले० काल सं० १७६३ पौष सु० ८

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर मन धरी सरसति चित ध्याऊं ।
सद्गुरु चरण कमल नमि रविव्रत गुण गाऊ ।। १ ।।
व.णारसी पुरी सोभती मतिसागर तह साह ।
सात पुत्र सुहामणा दीठे टाले दाह ।। २ ।।
मुनिवादि सेठे लीयो रविनोव्रत सार ।
साभालि कहूं बहासा कीया व्रत नद्यो अपार ।। ३ ।।
नेह थी धन कण सहूगयो दुरजीयो थयो सेठ ।
सात पुत्र चाल्या परदेश अजोध्या पुरसेठ ।। ४ ।।

अन्तिम—

जे नरनारी भाव सहित रविनो व्रत कर सी ।
त्रिभुवन ना फल ने लही शिव रमनी वरसी ।। २० ।।
नदी तट गच्छ विद्यागणी सूरी रायरत्न सुभूषन ।
जयकीर्ति कही पाय नमी काष्ठासघ गति दूषण ।। २१ ।।

इति रविव्रत कथा सपूर्ण । इन्दोर मध्ये लिपि कृतं ।
ले० काल सं० १७६३ पौप सुदी ८ पं० दयाराम ने लिपी की थी ।

२ धर्मसार चौपई पं० शिरोमणि हिन्दी ३-७३

र० काल १७३२ । ले० काल १७६४ अवन्तिका पुरी में श्रीदयाराम ने प्रतिलिपि की ।

३ विषापहार स्तोत्रभाषा	अचलकीर्ति	हिन्दी	८५-८८
४ दससूत्र अष्टक	X	संस्कृत	८६-६०

दयाराम ने सूरत मे प्रतिलिपि की थी। सं० १७६४। पूजा है।

५ त्रिषष्ठिशलाकाछन्द	श्रीपाल	संस्कृत	६१-६३
६ पद—थेई थेई थेई नृत्यति अमरी	कुमुदचन्द्र	हिन्दी	६७
७ पद—प्रात समै सुमरो जिनदेव	श्रीपाल	"	६७
८ पार्श्वविनती	ब्रह्मनाथू	"	६८-६६
६ कवित्त	ब्रह्मगुलाल	"	१२५

गिरनार की यात्रा के समय सूरत मे लिपि किया गया।

५५०२ गुटका सं० १२१। पत्र स० ३३। आ० ६३/४X४१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी।

विशेष-विभिन्न कवियो के पदो का सग्रह है।

५५०३ गुटका स० १२२। पत्र स० १३०। आ० ५३/४X४१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत।

विशेष-तीन चोवीसी नाम, दर्शनस्तोत्र (संस्कृत) कल्याणमदिरस्तोत्र भाषा (वनारसीदास) भक्तामर स्तोत्र (मानतु गाचार्य) लक्ष्मीस्तोत्र (सस्कृत) निर्वाणकाण्ड, पचमगल, देवपूजा, सिद्धपूजा, सोलहकारण पूजा, पच्चीसो (नवल), पार्श्वनाथस्तोत्र, सूरत की वारहखडी, वाईस परीषह, जैनशतक (भूधरदास) सामायिक टीका (हिन्दी) आदि पाठों का सग्रह है।

५५०४ गुटका स० १२३। पत्र स० २६। आ० ६X६ इञ्च भाषा-सस्कृत हिन्दी। दशा-जीर्णशीर्ण।

१ भक्तामरस्तोत्र ऋद्धि मत्र सहित	X	सस्कृत	२-१८
२ पल्यविधि	X	"	१८-२२
३ जैनपच्चीसी	नवलराम	हिन्दी	२२-२६

५५०५ गुटका स० १२४। पत्र स० ६६। आ० ७X६ इञ्च।

विशेष-पूजाओ एव स्तोत्रो का सग्रह है।

५५०६ गुटका स० १२५। पत्र स० ५६। आ० १२X४ इञ्च। पूर्ण। सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

१ कर्म प्रकृति चर्चा	X	हिन्दी
२ चौबीसठाणा चर्चा	X	"

३. चतुर्दशमार्गणा चर्चा	×	हिन्दी
४ द्वीप समुद्रो के नाम	×	"
५ देशों (भारत) के नाम	×	हिन्दी

१. अगदेश। २ वगदेश । ३ कलिगदेश। ४ तिलगदेश । ५. राट्टदेश। ६. लाट्टदेश। ७. कर्णाटदेश। ८ मेदपाटदेश। ९ वैराटदेश। १०. गौरुदेश। ११ चौरुदेश। १२ द्राविरुदेश। १३. महाराष्ट्र-देश। १४ सौराष्ट्रदेश। १५ कासमोरदेश। १६ कीरदेश। १७ महाकोरदेश। १८. मगधदेश। १९ सूरसेनुदेश। २०. कावेरदेश। २१. कम्बोजदेश । २२ कमलदेश। २३. उत्करदेश । २४ करहाटदेश । २५ कुरुदेश। २६. क्षाणदेश। २७ कच्छदेश। २८ कीसिकदेश। २९ सकदेश। ३० भयानकदेश। ३१ कौसिकदेश। ३२."* ""। ३३. कारुतदेश। ३४. कापूतदेश। ३५ कच्छदेश। ३६. महाकच्छदेश। ३७. भोटदेश। ३८. महाभोटदेश। ३९. कीटिकदेश। ४०. केकिदेश। ४१ वोल्लगिरिदेश। ४२ कामरूपदेश। ४३ कुण्कुणदेश। ४४ कुंतलदेश। ४५ कलकूटदेश। ४६. करकटदेश। ४७. केरलदेश। ४८ खशदेश। ४९ खर्प्परदेश। ५० खेटदेश। ५१ विल्लर-देश। ५२. वेदिदेश। ५३ जालधरदेश। ५४. टकरण टक्क। ५५. मोडियाणदेश। ५६. नहालदेश। ५७. तुरुक्कदेश। ५८. लायकदेश। ५९. कौसलदेश। ६० दशार्णदेश। ६१ दण्डकदेश। ६२ देशसभदेश। ६३ नेपालदेश। ६४. नर्तक-देश। ६५. पञ्चालदेश। ६६ पल्लकदेश। ६७ पू डदेश। ६८. पाण्ड्यदेश। ६९ प्रत्यग्रदेश। ७० अबुर्ददेश। ७१. वसु-देश। ७२. गभीरदेश। ७३ महिष्मकदेश। ७४ महोदयदेश। ७५ मुरण्डदेश। ७६ मुरलदेश। ७७ मरुस्थलदेश। ७८. मुद्गरदेश। ७९. मगनदेश। ८०. मल्लवर्तदेश। ८१. पवनदेश। ८२ आरामदेश। ८३. राढकदेश। ८४. ब्रह्मोत्तरदेश। ८५. ब्रह्मावर्तदेश। ८६ ब्रह्मणदेश। ८७ वाहकदेश। विदेहदेश। ८९ वनवासदेश। ९०. वनायुक-देश। ९१. वाल्हाकदेश। ९२ वल्लवदेश। ९३ अवन्तिदेश। ९४ वन्हिदेश। ९५. सिंहलदेश। ९६ सुह्मदेश। ९७. सूपरदेश। ९८ सुहुडदेश। ९९. अस्मकदेश। १०० हूणदेश। १०१ हूर्म्मकदेश। १०२ हूर्म्मजदेश। १०३ हसदेश। १०४. हहकदेश। १०५ हेरकदेश। १०६ वीणदेश। १०७. महावीणदेश। १०८. भट्टीयदेश। १०९. गोप्यदेश । ११० गाडाकदेश । १११ गुजरातदेश। ११२ पारसकुलदेश । ११३. शवालक्षदेश। ११४. कोलवदेश। ११५ शाकभरिदेश। ११६. कनउजदेश। ११७ आदतदेश। ११८. उचीविसदेश। ११९ नीला-वरदेश। १२०. गगापारदेश। १२१ सजाणदेश। १२२. कनकगिरिदेश। १२३ नवसारिदेश। १२४. भाभिरिदेश।

६ क्रियावादियो के ३६३ भेद	×	हिन्दी

---

*नोट— यह नाम गुटके मे खाली छोडा हुआ है।

७ स्फुट कवित्त एवं पद्य सग्रह	X	हिन्दी सस्कृत	
८ द्वादशानुप्रेक्षा	X	सस्कृत	
९ सूक्तावलि	X	,, ले० काल १८३६ श्रावण शुक्ला	
१० स्फुट पद्य एवं मत्र आदि	X	हिन्दी	

५५०७. गुटका स० १२६। पत्र स० ४५। आ० १०¼×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी सस्कृत। विषय-च

विशेष—चर्चाओ का सग्रह है।

५५०८, गुटका स० १२७। पत्र स० ३३। आ० ७×५ इञ्च।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

५५०९ गुटका स० १२७ क। पत्र स० ५५। आ० ७½×६ इञ्च।

१ शीघ्रबोध	X	सस्कृत	१-१६
२. लघुवाचणी	X	,,	१७-३९
		विशेष—वैष्णवधर्म। ले० काल सं० १८०७	
३ ज्योतिष्यटलमाला	श्रीपति	सस्कृत	४०-५१
४ सारणी	X	हिन्दी	५१-५५
		ग्रहो को देखकर वर्षा होने का योग	

५५१० गुटका स० १२८। पत्र स० ३-६०। आ० ७½×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है।

५५११ गुटका स० १२९। पत्र स० ८-२४। आ० ७×५ इ च। भाषा-सस्कृत।

विशेष—क्षेत्रपालस्तोत्र, लक्ष्मीस्तोत्र (म०) एव पञ्चमङ्गलपाठ हैं।

५५१२. गुटका स० १३०। पत्र स० ६८। आ० ६×४ इ च। ले० काल १७५२ आषाढ बुदी १०।

१. चतुर्दशतीर्थङ्करपूजा	X	सस्कृत	१-५४
२ चौबीसदण्डक	दौलतराम	हिन्दी	५५-६७
३ पीठप्रक्षालन	X	सस्कृत	६८

५५१३ गुटका स० १३१। पत्र स० १४। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत हिन्दी।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह।

५५१४ गुटका स० १३२। पत्र स० १४-४१। आ० ६×४ इ च। भाषा-हिन्दी।

१. पञ्चासिका	त्रिभुवनचन्द	हिन्दी	ले० काल १८२६	१५-२२
२. स्तुति	×	"		२३-२३
३. दोहाशतक	रूपचन्द	"		२५-३८
४. स्फुटदोहे	×	"		३४-४१

५५१५. गुटका सं० १३३। पत्र सं० १२१। आ० ५३/४×४ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी।

विशेष—छहढाला (द्यानतराय), पचमङ्गल (रूपचन्द), पूजायें एवं तत्वार्थसूत्र, भक्तामरस्तोत्र आदि का सग्रह है।

५५१६. गुटका सं० १३४। पत्र स० ४१। आ० ५३/४×४ इंच। भाषा-संस्कृत।

विशेष—शातिनाथस्तोत्र, स्कन्दपुराण, भगवद्गीता के कुछ स्थल। ले० काल सं० १८६१ माघ सुदी ११।

५५१७. गुटका स० १३५। पत्र सं० १३-१३४। आ० ३३/४×४ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण

विशेष—पंचमङ्गल, तत्वार्थसूत्र, आदि सामान्य पाठो का सग्रह है।

५५१८ गुटका स० १३६। पत्र सं० ४-१०८। आ० ८३/४×२ इञ्च। भाषा-संस्कृत।

विशेष-भक्तामरस्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, अष्टक आदि हैं।

५५१९ गुटका सं० १३७। पत्र स० १६। आ० ६×४३/४। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण।

१ मोरपिच्छधारी (कृष्ण) के कवित्त	धर्मदास, कपोत, विचित्र देव	हिन्दी	३ कवित्त हैं।
२ वाजिदजी के अडिल्ल	वाजिद	"	

वाजिद के कवित्तो के ६ अंग हैं। जिनमे ६० पद्य हैं। इनमें से विरह के अग के ३ छन्द नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं।

वाजीद विपति वेहद क्हो कहा तुझ सो। सर कमान की प्रीत करी पीव मुझ सौं।
पहले अपनी ओर तीर को तान ही, परि हा पीछे डारत दूरि जगत सब जानई।।२।।
बिन बालम वेहाल रह्यौ क्यो जीव रे। जरद हरद सी भई बिना तोहि पीवरे।
रुधिर मास के सास है क चाम है। परि हा जब जीव लागा पीव और क्यो देखना।।२५।।
कहिये सुनिये राम और न चित रे। हरि ठाकुर को ध्यान स धरिये नित रे।
जीव विलम्ब्या पीव दुहाई राम की। परि हा सुख सपति वाजिद कहो क्यो काम की। २६।।

५५२०. गुटका सं० १३९। पत्र सं० ६। आ० ७×४३/४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। पूर्ण एव शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष—मुक्तावली व्रतकथा भाषा।

५५२१. गुटका स० १४० । पत्र स० ८ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल स० १९३५ आषाढ सुदी १५ । पूर्ण एवं शुद्ध दशा-सामान्य ।

विशेष—सोनागिरि पूजा है ।

५५२२. गुटका सं० १४१ । पत्र स० ३७ । आ० ३×३ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

विशेष—विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र है ।

५५२३ गुटका स० १४२ । पत्र स० २० । आ० ५×४ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १९१८ असाढ बुदी १४ ।

विशेष—गुटके मे निम्न २ पाठ उल्लेखनीय हैं ।

१ छहढाला	द्यानतराय	हिन्दी	१-६
२ छहढाला	किशन	"	१०-१२

५५२४. गुटका सं० १४३ । पत्र स० १७४ । आ० ५½×४ इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल १८६७ । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५५२५ गुटका स० १४४ । पत्र स० ६१ । आ० ८×६ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५२६ गुटका स० १४५ । पत्र स० ११ । आ० ६×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पक्षीशास्त्र । ले० काल १८७४ ज्येष्ठ सुदी १४ ।

प्रारम्भ के पद्य—

नमस्कृत्यमहादेव गुरु शास्त्रविशारदं ।
भविष्यदर्थवोधाय वक्षते पंचपक्षिण ॥१॥
अनेन शास्त्रसारेण लोके कालत्रय मति ।
फलाफल नियुज्यन्ते सर्वकार्येषु निश्चित ॥२॥

५५२७ गुटका स० १४६ । पत्र स० २५ । आ० ७×५ इंच । भाषा-हिन्दी । सपूर्ण । दशा-सामान्य

विशेष—आदिनाथ पूजा (सेवकराम) भजन एवं नेमिनाथ की भावना (सेवकराम) का संग्रह है । पट्टी पहाडे भी लिखे गये हैं । अधिकांश पत्र खाली है ।

५५२८. गुटका स० १४७ । पत्र स० ३-५७ । आ० ६X५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । दशा-जीर्ण शीर्ण ।

विशेष—शीघ्रबोध है ।

५५२६. गुटका सं० १४८ । पत्र स० ५५ । आ० ७X५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय स्तोत्र संग्रह है

५५३०. गुटका सं० १४६ । पत्र स० ८६ । आ० ६X६३ इ च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८४६ कातिक सुदी ६ । पूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१ बिहारीसतसई	बिहारीलाल	हिन्दी	१-३५
२ वृन्द सतसई	वृन्दकवि	"	३६-८०
	७०८ पद्य हैं । ले० काल स० १८४६ चैत सुदी १० ।		
३ कवित्त	देवीदास	हिन्दी	३६-८०

५५३१. गुटका स० १५० । पत्र स० १३५ । आ० ६१X४ इ च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १८४५ । दशा-जीर्ण शीर्ण ।

विशेष—लिपि विकृत है । कक्का बत्तीसी, राग चीतण का दूहा, फूल भीतणी का दूहा, आदि पाठ है। अधिकांश पत्र खाली हैं ।

५५३२. गुटका स० १५१ पत्र स० १८ । आ० ६X४ इ च । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—पदो तथा विनतियो का सग्रह है तथा जैन पचीसी (नवलराम) बारह भावना (दौलतराम) निर्वाणकाण्ड है ।

५५३३. गुटका सं० १५ । पत्र स० १०७ । आ० १२X५ इ च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । दशा-जीर्ण शीर्ण ।

विशेष—विभिन्न ग्रन्थो मे से छोटे २ पाठो का सग्रह है । पत्र १०७ पर भट्टारक पट्टावलि उल्लेखनीय है ।

५५३४. गुटका स० १५३ । पत्र स० ६० । आ० ८X५३ इ च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-सग्रह अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, पूजाए एव पञ्चमगल पाठ है ।

५५३५ गुटका स० १५४ । पत्र स० ८६ । आ० ६X४ इ च । ले० काल १८७६ ।

१. भागवत	X	संस्कृत	१-८
२ मत्र आदि सग्रह	X	"	६-१२

धर्म्म दुहेलो जैनको, छह दरसन जे हौ परधान ।
श्रावग जन सुणिजे दे कान, भव्यजीव चित सभलो ।।
पढत वित्त सुख होई निधान, धर्म्म दुहेलो जैन को ।। २ ।।

दूजा वदौं सारद माई, भूलो प्राखर प्राणो हाइ ।।
कुमति कलेस न उपजे, महा सुमति वदो अधिकाइ ।।
जिणधर्म्म रासो वर्णउ, तिहि पढत मन होइ उछाह ।।
धर्म दुहेलो जैन को || ४ ।।

ग्रन्तिम— ऊभौ जीमण जीवै सही, आगम बात जिणेसुर कही ।
कर पात्रा आहार लै, ये अट्ठाईस मूलगुण जाणि ।।
धन जती जे पालही, ते अनुक्रम पहुचे निरवाणि ।
धर्म्म दुहेलो जैन को ।।१५२।।

मूढ देव गुरुशास्त्र वखाणि, अङ्ग पट् अनायतन जाणि ।
आठ दोप शङ्का आदि दे, आठ मद सो तजे पचीस ।।
ते निश्चै सम्यक्त फलै, ऐसी विधि भासै जगदीश ।
धर्म्म दुहेलो जैन को ।।१५३।।

इति श्री धर्म्मरासौ समाप्ता ।।१।। स० १७६० श्रावण सुदी २ सागानायर मध्ये ।

५५५२ गुटका स० १८० । पत्र स० ५ । आ० ६X६ इ च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा ।

विशेष—सिद्धपूजा है ।

५५५३ गुटका स० १८१ । पत्र स० ६ । आ० ६X७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

विशेष—सम्मेदशिखर पूजा है ।

५५५४ गुटका स० १८२ । पत्र स० १५-६० । आ० ३X३ इ च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १७६८ । सावण सुदी १० ।

विशेष—पूजा, पद एव विनतियो का सग्रह है ।

५५५५ गुटका स० १८३ । पत्र स० १८५ । आ० ६X४ इ च । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष —आयुर्वेद के नुसखे, मन्त्र, तन्त्रादि सामग्री है । कोई उल्लेखनीय रचना नही है ।

४४४६. गुटका स० १७४। पत्र स० ४-६३। आ० ६X४३ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-शृङ्गार। ले० काल स० १७४७ जेठ बुदी १।

विशेष—इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया का संग्रह है।

४४४७ गुटका सं० १७५। पत्र सं० २४। आ० ६X४ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा।

विशेष—पूजा संग्रह है।

४४४८. गुटका स० १७६। पत्र स० ८। आ० ५X३ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। ले० ल स० १८०२। पूर्ण।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र (ज्वालामालिनी) है।

४४४६ गुटका स० १७७। पत्र सं० २१। आ० ५'X३३ इ च। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—पद एवं विनती संग्रह है।

४४६०. गुटका सं० १७८। पत्र स० १७। आ० ६X४ इ च। भाषा-हिन्दी।

विशेष—प्रारम्भ मे बादशाह जहांगीर के तख्त पर बैठने का समय लिखा है। स० १६८४ मंगसिर सुदी २। तारातम्बोल की जो यात्रा की गई थी वह उसीके आदेश के अनुसार धरतीकी खबर मगाने के लिए की गई थी।

४४६१. गुटका स० १७६। पत्र स० १४। आ० ६X४ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पद सग्रह। पूर्ण।

विशेष—हिन्दी पद सग्रह है।

४४६२ गुटका स० १८०। पत्र स० २१। आ० ६X४ इ च। भाषा-हिन्दी।

विशेष—निर्दोषसप्तमीकथा (ब्रह्मरायमल्ल), आदित्यवारकथा के पाठ का मुख्यत सग्रह है।

४४६३ गुटका सं० १८१। पत्र स० २१-४६।

१ चन्द्रवरदाई की वार्ता	X	हिन्दी	२३-२६
		पद्य स० ११६। ले० काल सं० १७१६	
२ सुगुरुसीख	X	हिन्दी	२८-३०
३. कक्कावत्तीसी	ब्रह्मगुलाल	,, र० काल सं० १७६५	३०-३४
४ अन्यपाठ	X	,,	३४-४६

विशेष—अधिकाश पत्र खाली हैं।

४४६४. गुटका सं० १८२। पत्र स० १६। आ० ६X६ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। अपूर्ण।

विशेष—नित्य नियम पूजा हैं।

५५६५. गुटका सं० १८३। पत्र स० २० । आ० १०×६ इ च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण। दशा-जीर्ण शीर्ण।

विशेष—प्रथम ५ पत्रों पर पृच्छायें हैं। तथा पत्र १०-२० तक शकुनशास्त्र है। हिन्दी गद्य मे है।

५५६६. गुटका सं० १८४। पत्र स० २४। आ० ६½×६ इ च। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—वृन्द विनोद सतसई के प्रथम पद्य से २५० पद्य तक है।

५५६७. गुटका सं० १८५। पत्र स० ७-८८। आ० १०×५½ इ च। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १८२३ वैशाख सुदी ८।

विशेष—बीकानेर मे प्रतिलिपि की गई थी।

१. समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी		७-७६
२. अनाथीसाध चौढालिया	विमल विनयगणि	"	७३ पद्य है	७६-७८
३. अध्ययन गीत	×	हिन्दी		७८-८३
	दस अध्याय मे अलग अलग गीत हैं। अन्त मे चूलिका गीत है।			
४. स्फुट पद	×	हिन्दी		८४-८८

५५६८. गुटका स० १८६। पत्र स० ५२। आ० ६×५ इंच भाषा-हिन्दी। विषय पद सग्रह।

विशेष—१४२ पदो का सग्रह है मुख्यत द्यानतराय के पद हैं।

५५६९. गुटका स० १८७। पत्र स० ७७। पूर्ण।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१ चौरासी गोत	×	हिन्दी	१-२
२ कछवाहा वश के राजाओ के नाम	×	"	२-४
३. देहली राजाओं की वंशावली	×	"	५-१६
४. देहली के बादशाहो के परगनो के नाम	×	"	१७-१८
५ सीख सत्तरी	×	"	१९-२०
६ ३६ कारखानो के नाम	×	"	२१
७ चौबीस ठाणा चर्चा	×	"	२२-४५

५५७० गुटका सं० १८८। पत्र स० ११-७३। आ० ६×४½ इ च। भाषा-हिन्दी सस्कृत।

विशेष—गुटके मे भक्तामरस्तोत्र कल्याणमन्दिरस्तोत्र है।

१ पार्श्वनाथस्तवन एवं अन्य स्तवन यतिसागर के शिष्य जगरूप हिन्दी र० सं० १८००

आगे पत्र जुड़े हुए हैं एवं विकृत लिपि में लिखे हुये हैं।

५५७१. गुटका सं० १८६। पत्र सं० ६-७८। आ० ५३/४×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-इतिहास।

विशेष—अकबर बादशाह एवं बीरबल आदि की वार्ताएं हैं। बीच बीच के एवं आदि अन्त भाग नहीं हैं।

५५७२. गुटका सं० १६०। पत्र सं० १७। आ० ४×३ इञ्च। भाषा-हिन्दी।

विशेष—रूपचन्द कृत पञ्चमंगल पाठ है।

५५७३. गुटका सं० १६१। पत्र सं० २८। आ० ८३/४×६ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—सुन्दरदास कृत सवैये एवं अन्य पद्य है। अपूर्ण है।

५५७४. गुटका सं० १६२। पत्र सं० ४५। आ० ८३/४×६ इंच। भाषा-प्राकृत, संस्कृत। ले० काल १८००।

१. कवित्त	×	हिन्दी	१-४
२. भयहरस्तोत्र	×	प्राकृत	५-६
		हिन्दी गद्य टीका सहित है।	
३. शांतिकरस्तोत्र	विद्यासिद्धि	"	७-६
४. नमिऊणस्तोत्र	×	"	६-१२
५. अजितशांतिस्तवन	नन्दिषेण	"	१३-२२
६. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	२३-३०
७. कल्याणमंदिरस्तोत्र	×	संस्कृत	३१-३६ हिन्दीगद्य टीकासहित है।
८ शांतिपाठ	×	प्राकृत	४०-४५ "

५५७५. गुटका सं० १६३। पत्र सं० १७-३२। आ० ८३/४×५३/४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले० काल १८६७।

विशेष-तत्त्वार्थसूत्र एवं भक्तामरस्तोत्र है।

५५७६. गुटका सं० १६४। पत्र सं० १३। आ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कामशास्त्र। अपूर्ण। दशा-सामान्य। कोकसार है।

५५७७. गुटका सं० १६५। पत्र सं० ७। आ० ६×६ इंच। भाषा-संस्कृत।

विशेष-भट्टारक महीचन्द्रकृत त्रिलोकस्तोत्र है। ४६ पद्य हैं।

५५७८. गुटका सं० १६६ । पत्र स० २२ ग्रा० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष –नाटकसमयसार है ।

५५७६. गुटका स० १६७ । पत्र स० ३० । ग्रा० ८×६ इ च । भाषा–हिन्दी । ले० काल १८६४ श्रावण बुदी १४ । बुधजन के पदो का सग्रह है।

५५८०. गुटका स०१६८ । पत्र सं० ३६ । ग्रा० ८½×५½ इ च । ग्रपूर्ण । पूजा पाठ सग्रह है।

५५८१ गुटका सं० १६६। पत्र सं० २-५६ । ग्रा० ८×५ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी ग्रपूर्ण । दशा–जीर्ण ।

विशेष–पूजा पाठ संग्रह है ।

५५८२. गुटका सं० २०० । पत्र स० ३४ । ग्रा० ६½×८ इ च । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

१. जिनदत्त चौपई	रल्हकवि	प्राचीन हिन्दी	

रचना सवत् १३५४ भादवा सुदी ५ । ले० काल सवत् १७५२ । पालव निवासी महानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२. ग्रादीश्वर रेखता	सहस्रकीर्ति	प्राचीन हिन्दी	ग्रपूर्ण

र० काल सं० १६६७ । रचना स्थान-सालकोट । ले० काल-स० १७४३ मगसिर बुदी ७ । महानद ने प्रतिलिपि की थी । १२ पत्र से ४५ वे तक ६१ तक के पत्र हैं ।

३ पंचवधावो	×	राजस्थानी शेरगढ की	"
४ कवित्त	वृ दावनदास	हिन्दी	
५ पद–रेमन रेमन जिनविन कछु न विचार	लक्ष्मीसागर	"	रागमल्हार
६ तूही तू ही मेरे साहिब	"	"	रागकाफी
७. तूती तूही २ तूती बोल	"	"	×
८. कवित्त	ब्रह्म गुलाल एव वृ दावन	"	पत्र १६

ले० काल स० १७५० फागण बुदी १४ । फकीरचन्द जैसवाल ने प्रतिलिपि की थी । कैलास का वासी भोल तेला ।

६ जेष्ठ पूरिणमा कथा	×	हिन्दी	पूर्ण
१०. कवित्त	ब्रह्म गुलाल	"	
११. "	×	"	

१२. समुय विजय सुत सावरे रंग भीने हो	X	..	"

लें० काल १७७२ मोतीहटका देहुरा दिल्ली मे प्रतिलिपि की थी।

१३. पञ्चकल्याणकपूजा अष्टक	X	सस्कृत लें० काल स० १७५२ ज्येष्ठ कु० १०।
१४ षट्रस कथा	X	संस्कृत लें० काल सं० १७५२।

५५८३. गुटका स० २०१। पत्र स० ३६। आ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। पूर्ण।

विशेष—आदित्यवारकथा (भाऊ) खुशालचंद कृत शनिश्चरदेव कथा एव लालचन्द कृत राजुल पच्चीसी के पाठ और हैं।

५५८४. गुटका स० २०२। पत्र स० २८। आ० ६×५½ इच। भाषा-सस्कृत। लें० काल सं० १७५०।

विशेष पूजा पाठ सग्रह के अतिरिक्त शिवचन्द मुनि कृत हिण्डोलना, ब्रह्मचन्द कृत दशारास पाठ भी है।

५५८५. गुटका सं० २०३। पत्र सं० २०-३६, १८५ से २०३। आ० ६×५½ इच। भाषा संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण। दशा-सामान्य। मुख्यत. निम्न पाठ है।

१ जिनसहस्रनाम	आशाधर	सस्कृत	२०-२६
२. ऋषिमण्डलस्तवन	X	"	३०-३६
३. जलयात्राविधि	ब्रह्मजिनदास	"	१६२-१६६
४. गुरुओ की जयमाल	"	हिन्दी	१६६-१६७
५. णमोकार छन्द	ब्रह्मलाल सागर	"	१६७-२२०

५५८६. गुटका स० २०४। पत्र स० १४०। आ० ६×४ इंच। भाषा-सस्कृत हिन्दी। लें० काल सं० १७६१ चैत्र सुदी ६। अपूर्ण। जीर्ण।

विशेष—उज्जैन मे प्रतिलिपि हुई थी। मुख्यत. समयसार नाटक (बनारसीदास) पार्श्वनाथस्तवन (ब्रह्मनाथू) का संग्रह है।

५५८७ गुटका स० २०५। नित्य नियम पूजा सग्रह। पत्र स० ६७। आ० ८½×५½। पूर्ण एव शुद्ध। दशा-सामान्य।

५५८८ गुटका स० २०६। पत्र स० ४७। आ० ८½×७। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण। दशा सामान्य। पत्र स० २ नही है।

१ सुदर श्रृंगार	महाकविराम	हिन्दी	पद्य स० ८३१

महाराजा पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल मे आमेर निवासी मालीराम काला ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

२. श्यामबत्तीसी नन्ददास "

बीकानेर निवासी महात्मा फकीरा ने प्रतिलिपि की। मालीराम कालाने सं० १८३२ में प्रतिलिपि कराई थी।

अन्तिम भाग—

दोहा—कृष्ण ध्यान चरासु मठ भवनहि सुत प्रवान।

कहत स्याम कलमल कछू रहत न रच समान ॥ ३६ ॥

छन्द मत्तगयन्द—

स्यो सनकादिक नारदसेद ब्रह्म सेस महेस जु पार न पायो।

सो सुख व्यास विरंचि बखानत निगम कुं सोचि अगम बतायो ॥

सैंक भाक नहि भाग जसोमति नन्दलला व्रज आनि कहायो।

सो कवि या कवि कहाव्य करी जु कल्यान जु स्याम भलै गुनगायो ॥३७॥

इति श्री नन्ददास कृत स्याम बत्तीसी संपूर्ण ॥ लिखतं महात्मा फकीरा वासी बीकानेर का। लिखावतु मालीराम काला संवत् १८३२ मिती भादवा सुदी १४।

५५८६. गुटका सं० २०७। पत्र सं० २००। आ० ७×५ इंच। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १६८६।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ, पद एवं भजनों का संग्रह है।

५५६०. गुटका सं० २०८। पत्र सं० १७। आ० ९३ ६३ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—चाणक्य नीतिसार तथा नाथूराम कृत जातकसार है।

५५६१. गुटका सं० २०९। पत्र सं० १६-२४। आ० ९×५ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—सूरदास, परमानन्द आदि कवियों के पदो का संग्रह है। विषय-कृष्ण भक्ति है।

५५६२. गुटका सं० २१०। पत्र सं० २८। आ० ९३×५३ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—चतुर्दश गुणस्थान चर्चा है।

५५६३. गुटका सं० २११। पत्र सं० ४९-८७। आ० ९×६ इंच। भाषा-हिन्दी। ले० काल १८१०।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत श्रीपालरास का संग्रह है।

५५६४. गुटका सं० २१२। पत्र सं० ६-१३०। आ० ९×६ इंच।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एवं पद संग्रह है।

५५६५. गुटका सं० २१३। पत्र सं० ११७। आ० ६×५ इंच। भाषा—हिन्दी। ले० काल १८४७।

विशेष—बीच के २० पत्र नहीं है। सम्बोधपचासिका (द्यानतराय) वृजलाल की बारह भावना, वैराग्य पच्चीसी (भगवतीदास) आलोचनापाठ, पद्मावतीस्तोत्र (समयसुन्दर) राजुल पच्चीसी (विनोदीलाल) आदित्यवार कथा (भाऊ) भक्तामरस्तोत्र आदि पाठो का सग्रह है।

५५६६ गुटका सं० २१४। पत्र सं० ८४। आ० ९×६ इंच।

विशेष—सुन्दर शृंगार का संग्रह है।

५५६७. गुटका सं० २१५। पत्र सं० १३२। आ० ९×६ इंच। भाषा—हिन्दी।

१ कलियुग की विनती	देवाब्रह्म	हिन्दी		५–७
२ सीताजी की विनती	×	"		७–८
३ हंस की ढाल तथा विनती ढाल	×	"		९–१२
४. जिनवरजी की विनती	देवापाण्डे	"		१२
५. होली कथा	छीतरठोलिया	"	र० सं० १६६०	३–१८
६ विनतिया, ज्ञानपचीसी, बारह भावना राजुल पचीसी आदि	×	"		१९–४०
७ पाच परवी कथा	ब्रह्मवेणु (भ जयकीर्ति के शिष्य)	"	७६ पद्य हैं	४१–४०
८ चतुर्विंशति विनती	चन्द्रकवि	"		४५–६७
९. बधावा एव विनती	×	"		६७–६९
१०. नव मगल	विनोदीलाल	"		६९–७७
११. ककका बतीसी	×	"		७७–८१
१२ बडा कक्का	गुलाबराय	"		८०–८१
१३ विनतिया	×	"		८१–१३२

५५६८ गुटका सं० २१६। पत्र सं० १६४। आ० ११×९ इंच। भाषा—हिन्दी संस्कृत।

विशेष—गुटके के उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार है।

१. जिनवरव्रत जयमाला	ब्रह्मलाल	हिन्दी	१–२
		भट्टारक पट्टावली दी गई है।	
२ आराधाना प्रतिबोधसार	सकलकीर्ति	हिन्दी	१३–१५

३ मुक्तावलि गीत	सकलकीर्त्ति	हिन्दी	१५
४ चौवीस गणधरस्तवन	गुणकीर्ति	"	२०
५. अष्टाह्निकागीत	भ० शुभचन्द्र	"	२१
६ मिच्छा दुक्कड	ब्रह्मजिनदास	"	२२
७ क्षेत्रपालपूजा	मणिभद्र	संस्कृत	३७-३८
८. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	१०९-११६
९ भट्टारक विजयकीर्ति अष्टक	×	"	१५०

५५९९. गुटका सं० २१७ । पत्र सं० १७१ । आ० ८३⁄४×६३⁄४ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठो का संग्रह है ।

५६००. गुटका सं० २१८ । पत्र सं० १६६ । आ० ९×५१⁄२ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—१४ पूजाओं का संग्रह है ।

५६०१ गुटका सं० २१९ । पत्र सं० १८४ । आ० ९×८ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—खड्गसेन कृत त्रिलोकदर्पणकथा है । ले० काल १७५३ ज्येष्ठ बुदी ७ बुधवार ।

५६०२. गुटका सं० २२० । पत्र सं० ८० । आ० ७१⁄२×५ इंच । भाषा-अपभ्रंश संस्कृत ।

१ त्रिशतजिणचऊवीसी	महणसिंह	अपभ्रंश	१-७०
२ नाममाला	धनञ्जय	संस्कृत	७०-८०

विशेष—गुटके के अधिकांश पत्र जीर्ण तथा फटे हुए हैं एवं गुटका अपूर्ण है ।

५६०३. गुटका सं० २२१ । पत्र सं० ५१-१९० । आ० ८३⁄४×६ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—जोधराज गोदीका की सम्यक्त्व कौमुदी (अपूर्ण), प्रीत्यंकरचरित्र, एवं नयचक्र की हिन्दी गद्य टीका अपूर्ण है ।

५६०४. गुटका सं० २२२ । पत्र सं० ११६ । आ० ५×६ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५६०५ गुटका सं० २२३ । पत्र सं० ५२ । आ० ७×४ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—मन्त्र, पृच्छाएं एवं उनके उत्तर दिये हुए हैं ।

५६०६. गुटका सं० २२४ । पत्र सं० १४० । आ० ७×५३⁄४ इंच । भाषा-संस्कृत प्राकृत । दशा-जीर्ण शीर्ण एवं अपूर्ण ।

विशेष—गुरावली (अपूर्ण), भक्तिपाठ, स्वयम्भूस्तोत्र, तत्वार्थसूत्र एवं सामायिक पाठ आदि है ।

५६०८. गुटका स० २०५। पत्र सं० ११-१७७। आ० १०X४½ इच। भाषा-हिन्दी।

१. विहारी सतसई सटीक—टीकाकार हरिचरणदास। टीकाकाल स० १८३४। पत्र स० १
१३१। ले० काल स० १८५२ माघ कृष्णा ७ रविवार।

विशेष—पुस्तक मे ७१४ पद्य हैं एवं ८ पद्य टीकाकार के परिचय के हैं।

अन्तिम भाग— पुरुषोत्तमदास के दोहे हैं—

जद्यपि है सोभा सहज मुक्त न तऊ सुदेश।
पोये ठौर कुठौर के लरमे होत विशेष ॥७१॥

इस पर ७१५ सख्या है। वे सातसौ से अधिक जो दोहे हैं वे दिये गये हैं। टीका सभी की दी हुई केवल ७१४ की जो कि पुरुषोत्तमदास का है, टीका नही है। ७१४ दोहो के आगे निम्न प्रशस्ति दी है।

दोहा—

सालग्रामी सरजु जह मिली गगसो आय।
अन्तराल मे देस सो हरि कवि को सरसाय ॥१॥
लिखे दूहा भूपन बहुत अनवर के अनुसार।
कहु औरे कहु और हू निकलेंगे लङ्कार ॥२॥
सेवी जुगल किसोर के प्राननाथ जी नाव।
समसती तिनसो पढी वसि सिगार बट ठाव ॥३॥
जमुना तट शृङ्गार वट तुलसी विपिन सुदेस।
सेवत सत महत जहि देखत हरत कलेस ॥४॥
पुरोहित श्रीनन्द के मुनि सडिल्य महान।
हम हैं ताके गौत मे मोहन मो जजमान ॥५॥
मोहन महा उदार तजि और जाचिये काहि।
सम्पत्ति सुदामा को दई इन्द्र लही नही जाहि ॥६॥
गहि अक सुमनु तात तैं विधि को वस लखाय।
राधा नाम कहैं सुनैं आनन कान वढाय ॥७॥
सवत् अठारहसौ विते ता परि तीसरु चारि।
जन्माठै पूरो कियो कृष्ण चरन मन धारि ॥८॥

इति हरचरणदास कृता विहारी रचित सतसती टीका हरिप्रकाशाख्या सम्पूर्णा। सवत् १८५२ माघ कृष्णा ७ रविवासरे शुभमस्तु।

२ कविवल्लभ—ग्रन्थकार हरिचरणदास। पत्र स० १३१-१७७। भापा-हिन्दी पद्य,

विशेष—३९७ तक पद्य हैं। आगे के पत्र नही हैं।

प्रारम्भ— मोहन चरन पयोज मे, हैं तुलसी को वास।
ताहि सुमरि हरि भक्त सब, करत विघ्न को नास॥१॥

कवित्त— आनन्द को कन्द वृपभान जाको मुखचन्द,
लीला ही ते मोहन के मानस को चोर है।
दूजो तैसो रचिवै को चाहत विरचि निति,
ससि को वनावै अजो मन कौन मोरै है।
फेरत है सान आसमान पै चढाय फेरि,
पानि पै चढाय वे को वारिधि में वोरै है।
राधिका के आनन के जोट न विलोके विधि,
टूक टूक तोरै पुनि टूक टूक जोरै है॥

अथ दोष लक्षण दोहा—
रस आनन्द सरूप कौं दूषैं ते हैं दोष।
आत्मा कौं ज्यो अधता और वधिरता रोप॥३॥

अन्तिम भाग—
दोहा— साका सतरह सौ पुजी सवत् पैंतीस जान।
अठारह सो जेठ वुदि ने ससि रवि दिन प्रात॥२८४॥

इति श्री हरिचरणजी, विरचित कविवल्लभो ग्रन्थ सम्पूर्ण। स० १८५२ माघ कृष्णा १४ रविवासरे।

५६०९ गुटका स० २२६। पत्र स० १००। आ० ६½×६ इच। भाषा-हिन्दी। ले० काल १८२५ जेठ वुदा १५। पूर्ण।

१ सप्तभगीवाणी	भगवतीदास	हिन्दी	१
२ समयसारनाटक	वनारसीदास	"	१-१००

५६१० गुटका सं० २२७। पत्र स० २६। आ० ६×५½। भापा-हिन्दी। विपय-आयुर्वेद। ले० काल स० १८४७ अपाढ वुदी ६।

विशेष—रससागर नाम का आयुर्वेदिक ग्रंथ है। हिन्दी पद्य में है। पोथी लिखी पंडित डूंगरसी की सो देखि लिखी–द्वि० असाढ बुदी ६ वार सोमवार स० १८४७ लिखी सवाईराम गोधा।

५६११. गुटका सं० २२८ । पत्र सं० ४६ से ६२ । आ० ६X७ इ० । भाषा–प्राकृत हिन्दी । ले० काल १६५४ । द्रव्य सग्रह की भाषा टीका है।

५६१२. गुटका सं० २२६ । पत्र सं० १८ । आ० ६X७ इ० । भाषा हिन्दी ।

१. पचपाल पैंतीसी	X	हिन्दी	१–६
२. अकपनाचार्यपूजा	X	"	७–१२
३ विष्णुकुमारपूजा	X	"	१३–१८

५६१३ गुटका स० २३० । पत्र सं० ४२ । आ० ७X६ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत ।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है।

५६१४. गुटका स० २३१ । पत्र सं० २५–४७ । आ० ६X६ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–आयुर्वेद ।

विशेष—नयनसुखदास कृत वैद्यमनोत्सव है।

५६१५. गुटका सं० २३२ । पत्र सं० १४–१५७ । आ० ७X५ इ० । भाषा–हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—भैया भगवतीदास कृत अनित्य पच्चीसी, बारह भावना, शत अष्टोत्तरी, जैनशतक, (भूधरदास) दान बावनी (द्यानतराय) चेतनकर्मचरित्र (भगवतीदास) कर्म्मछत्तीसी, ज्ञानपच्चीसी, भक्तामरस्तोत्र, कल्याण मदिर भाषा, दानवर्णन, परिषह वर्णन का संग्रह है।

५६१६. गुटका स० २३३ । पत्र संख्या ४२ । आ० १०X४½ भाषा–हिन्दी संस्कृत ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है।

५६१७. गुटका सं० २३४ । पत्र सं० २०३ । आ० १०X७½ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । पूजा पाठ, बनारसी विलास, चौबीस ठाणा चर्चा एवं समयसार नाटक है।

५६१८. गुटका सं० २३५ । पत्र स० १६८ । आ० १०X६½ इ० । भाषा–हिन्दी ।

१. तत्वार्थसूत्र (हिन्दी टीका सहित)		हिन्दी संस्कृत	३–६०
		६३ पत्र तक दीमक ने खा रखा है।	
२ चौबीसठाणाचर्चा	X	हिन्दी	६१–१६८

५६१६. गुटका सं० २३६ । पत्र स० १४० । आ० ६X७ इ० । भाषा हिन्दी ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र आदि सामान्य पाठो का संग्रह है।

५६२०. गुटका सं० २३८ । पत्र सं० २५० । आ० ६×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । । ले० काल स० १७४८ आसोज बुदी १३ ।

१. कुण्डलिया	अगरदास एवं अन्य कविगण	हिन्दी	लिपिकार विजयराम	१-३३
२. पद	मुकन्ददास	"		३३-३४
		ले० काल १७७५ श्रावण सुदी ५		
३. त्रिलोकदर्पणकथा	खड्गसेन	हिन्दी		३४-२५०

५६२१. गुटका सं० २३६ । पत्र स० १६८ । आ० १३३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

१. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१-१४
२. कथाकोष	×	"	१४-८४
३. त्रिलोक वर्णन	×	"	८४-१६८

५६२२. गुटका सं० २४० । पत्र स० ४८ । आ० १२३×८ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

विशेष—पहिले भक्तामर स्तोत्र टीका सहित तथा बाद मे यन्त्र मन्त्र सहित दिया हुवा है ।

५६२३. गुटका सं० २४१ । पत्र सं० ५-१७७ । आ० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८५७ वैशाख बुदी अमावस्या ।

विशेष—लिखितं महात्मा शम्भूराम । ज्ञानदीपक नामक न्याय का ग्रन्थ है ।

५६२४. गुटका सं० २४२ । पत्र सं० १-२००, ४०० ५६५, ६०५ से ७६४ । आ० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी गद्य ।

विशेष—भावदीपक नामक ग्रन्थ है ।

५६२५. गुटका स० २४३ । पत्र स० २४० । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

५६२६. गुटका सं० २४४ । पत्र स० २२ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत ।

१. त्रैलोक्य मोहन कवच	रायमल	संस्कृत	ले० काल १७६१	४
२. दक्षणामूर्तिस्तोत्र	शंकराचार्य	"		५-७
३. दशश्लोकीशंभूस्तोत्र	×	"		७-८
४. हरिहरस्वामावलिस्तोत्र	×	"		८-१०
५. द्वादशराशि फल	×	"		१० १२

६. वृहस्पति विचार	×	"	ले० काल १७६२	१२-१४
७. अन्यस्तोत्र	×	"		१५-२२

५६२७. गुटका सं० २४५ । पत्र स० २-४६ । आ० ७×५ इ० ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है।

५६२८. गुटका सं० २४६ । पत्र सं० ११३ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—नन्दराम कृत मानमञ्जरी है। प्रति नवीन है।

५६२९. गुटका सं० २४७ । पत्र सं० ६-७७ । आ० ७×४ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—पूजापाठ संग्रह है।

५६३०. गुटका स० २४८ । पत्र स० १२ । आ० ८$\frac{1}{2}$×७ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—तीर्थङ्करो के पंचकल्याण आदि का वर्णन है।

५६३१. गुटका सं० २४९ । पत्र स० ८ । आ० ८$\frac{1}{2}$×७ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—पद संग्रह है।

५६३२. गुटका स० २५० । पत्र स० १५ । आ० ८$\frac{1}{2}$×७ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—वृहत्स्वयभूस्तोत्र है।

५६३३ गुटका स० २५१ । पत्र सं० २० । आ० ७×५ इ० भाषा-संस्कृत ।

विशेष—समन्तभद्र कृत रत्नकरण्ड श्रावकाचार है।

५६३४ गुटका स० २५२ । पत्र स० ३ । आ० ८$\frac{1}{2}$×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल १९३३ ।

विशेष—अकलङ्काष्टक स्तोत्र है।

५६३५. गुटका सं० २५३ पत्र सं० ८ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत ले० काल स० १९३३

विशेष— भक्तामर स्तोत्र है।

५६३६. गुटका स० २५४ । पत्र स० १० । आ० ८×५ इ० । भाषा हिन्दी ।

विशेष—बिम्ब निर्माण विधि है।

५६३७ गुटका सं० २५५ । पत्र स० १९ । आ० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—बुधजन कृत इष्ट छत्तीसी पचमगल एवं पूजा आदि हैं।

५६३८. गुटका सं० २५६ । पत्र स० ६ । आ० ८$\frac{1}{2}$×७ इ० । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—वधीचन्द कृत रामचन्द्र चरित्र है।

५६३६. गुटका स० २५७ । पत्र सं० ८ । आ० ८X५ इ० । भाषा-हिन्दी । दशा-जीर्णशीर्ण ।

विशेष—सन्तराम कृत कवित्त सग्रह है ।

५६४०. गुटका स० २५८ । पत्र स० ६ । आ० ५X४ इ० । भाषा-सस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—ऋषिमण्डलस्तोत्र है ।

५६४१. गुटका स० २५६ । पत्र स० ६ । आ० ६X४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८३० ।

विशेष—हिन्दी पद एव नाथू कृत लहुरी है ।

५६४२. गुटका स० २६० । पत्र सं० ४ । आ० ६X४ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—नवल कृत दोहा स्तुति एवं दर्शन पाठ हैं ।

५६४३. गुटका सं० २६१ । पत्र सं० ६ । आ० ७X५ इ० । भाषा-हिन्दी । र० काल १८६१ ।

विशेष—सोनागिरि पच्चीसी है ।

५६४४ गुटका सं० २६२ । पत्र सं० १० । आ० ६X५½ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—ज्ञानोपदेश के पद्य हैं ।

५६४५. गुटका स० २६३ । पत्र सं० १६ । आ० ६½X४ इ० । भाषा-सस्कृत ।

विशेष—शकराचार्य विरचित अपराधसूदनस्तोत्र है ।

५६४६ गुटका सं० २६४ । पत्र स० ६ । आ० ६X४ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—सप्तश्लोकी गीता है ।

५६४७. गुटका स० २६५ । पत्र स० ४ । आ० ५½X४ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—वराहपुराण मे से सूर्यस्तोत्र है ।

५६४८. गुटका सं० २६६ । पत्र स० १० । आ० ६X४ इ० । भाषा सस्कृत । ले० काल १८८७

६ ।

विशेष— पत्र १-७ तक महागणपति कवच है ।

५६४६. गुटका सं० २६७ । पत्र सं० ७ । आ० ६X४½ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—भूधरदास कृत एकीभाव स्तोत्र भाषा है ।

५६५०. गुटका स० २६८ । पत्र स० ३५ । आ० ५½X४ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल १८

। सुदी २ ।

विशेष—महात्मा सतराम ने प्रतिलिपि की थी । पद्मावती पूजा, चतुषष्ठी स्तोत्र एवं जिनसहस्रन

गाशाधर) है ।

५६५१. गुटका स० २६६। पत्र सं० २७। आ० ७३×५३ इ०। भाषा–संस्कृत। पूर्ण।

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह है।

५६५२. गुटका सं० २७०। पत्र सं० ८। आ० ६३×४ इ०। भाषा–संस्कृत। ले० काल सं० १६३२। पूर्ण।

विशेष—तीन चौबीसी व दर्शन पाठ है।

५६५३ गुटका स० २७१। पत्र सं० ३१। आ० ६×५ इ०। भाषा–संस्कृत। विषय–सग्रह। पूर्ण।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, ऋद्धिमूलमन्त्र सहित, जिनपञ्जरस्तोत्र हैं।

५६५४. गुटका सं० २७२। पत्र सं० ६। आ० ६×४३ इ०। भाषा–संस्कृत। विषय–सग्रह। पूर्ण।

विशेष—अनन्तव्रतपूजा है।

५६५५. गुटका सं० २७३। पत्र सं० ४। आ० ७×५३ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा।

विशेष—स्वरूपचन्द कृत चमत्कारजी की पूजा है। चमत्कार क्षेत्र संवत् १८८६ मे भादवा सुदी २ को प्रकट हुवा था। सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

५६५६. गुटका सं० २७४। पत्र सं० १६। आ० १०×६३ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। पूर्ण।

विशेष—इसमे रामचन्द्र कृत शिखर विलास है। पत्र ८ से आगे खाली पडा है।

५६५७. गुटका स० २७५। पत्र स० ६३। आ० ५३×५ इ०। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है तीन चौवीसो नाम, जिनपच्चीसी (नवल), दर्शनपाठ, नित्यपूजा भक्तामरस्तोत्र, पञ्चमङ्गल, कल्याणमन्दिर, नित्यपाठ, संबोधपञ्चासिका (द्यानतराय)।

५६५८. गुटका सं० २७६। पत्र सं० १०। आ० ६३×६ इ०। भाषा–संस्कृत। ले० काल सं० १८४३। अपूर्ण।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, बड़ा कक्का (हिन्दी) आदि पाठ हैं।

५६५९. गुटका सं० २७७। पत्र सं० २–२३। आ० ५३×४३ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। अपूर्ण।

विशेष—हरखचन्द के पदो का सग्रह है।

५६६०. गुटका स० २७८। पत्र सं० १–८०। आ० ६×४ इ०। अपूर्ण।

विशेष—बीच के कई पत्र नही हैं। योगीन्द्रदेव कृत परमात्मप्रकाश है।

५६६१. गुटका सं० २७९। पत्र सं० ६–३४। आ० ६×४ इ०। अपूर्ण।

विशेष—नित्यपूजा सग्रह है।

५६६२. गुटका सं० २८० । पत्र सं० २-४१ । आ० ५३/४×४ इ० । भाषा-हिन्दी गद्य । अपूर्ण ।

विशेष—कथाओं का वर्णन है ।

५६६३. गुटका सं० २८१ । पत्र सं० ६२ । आ० ६×६ इ० । भाषा-× । पूर्ण ।

विशेष—बारहखडी, पूजासंग्रह, दशलक्षण, सोलहकारण, पञ्चमेरुपूजा, रत्नत्रयपूजा, तत्वार्थसूत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

५६६४. गुटका सं० २८२ । पत्र सं० १६-८८ । आ० ६३/४×४१/२ इ० ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है— जैनपच्चीसी, पद (भूधरदास) भक्तामरभाषा, परमज्योतिभाषा विषापहारभाषा (अचलकीर्त्ति), निर्वाणकाण्ड, एकीभाव, अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल (भगवतीदास), सहस्रनाम, साधुवंदना, विनती (भूधरदास), नित्यपूजा ।

५६६५. गुटका सं० २८३ । पत्र सं० ३३ । आ० ७१/२×५ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-अध्यात्म । अपूर्ण ।

विशेष—३३ से आगे के पत्र खाली हैं । बनारसीदास कृत समयसार है ।

५६६६. गुटका सं० २८४ । पत्र सं० २-३५ । आ० ८×६१/२ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—चर्चाशतक (द्यानतराय), श्रुतबोध (कालिदास) ये दो रचनायें हैं ।

५६६७. गुटका सं० २८५ । पत्र सं० ३-४६ । आ० ८×६१/२ इ० । भाषा-संस्कृत प्राकृत । अपूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा, स्वाध्यायपाठ, चौबीसठाणाचर्चा ये रचनायें हैं ।

५६६८. गुटका सं० २८६ । पत्र सं० ३१ । आ० ८×६ इ० । पूर्ण ।

विशेष—द्रव्यसंग्रह संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित ।

५६६९. गुटका सं० २८७ । पत्र सं० ३२ । आ० ७१/२×५१/२ इ० । भाषा-संस्कृत । पूर्ण ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र, नित्यपूजा है ।

५६७०. गुटका सं० २८८ । पत्र सं० २-४२ । आ० ६×४ इ० । विषय-संग्रह । अपूर्ण ।

विशेष—ग्रह फल आदि दिया हुवा है ।

५६७१. गुटका सं० २८९ । पत्र सं० २० । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-शृङ्गार । पूर्ण

विशेष—रसिकराय कृत स्नेहलीला में से उद्धव गोपी संवाद दिया है ।

आरम्भ—   एक समय व्रजवास की सुरति भई हरिराइ ।

                        निज जन अपनो जानि के ऊधो लियो बुलाइ ॥

श्रीकिरसन वचन ऐस कहे ऊधव तुम सुनि ले ।
नन्द जसोदा आदि दे व्रज जाइ सुख दे ॥ २ ॥

व्रज वासी बल्लभ सदा मेरे जीउनि प्रान ।
तातै नीमष न बीसरूं मोहे नन्दराय की आन ॥

अन्तिम— यह लीला व्रजवास की गोपी किरसन सनेह ।
जन मोहन जो गाव ही ते नर पाउ देह ॥ १२२ ॥

जो गाव सीष सुर गमन तुम वचन सहेत ।
रसिक राय पूरन कीया मन वाछित फल देत ॥ १२३ ॥

नोट—आगे नाग लीला का पाठ भी दिया हुवा है ।

५६७२. गुटका सं० २६० । पत्र स० ५२ । आ० ६×५ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठो का सग्रह हैं ।

१. सोलहकारणकथा	रत्नपाल	संस्कृत		८-१३
२. दशलक्षणीकथा	मुनि ललितकीर्ति	”		१३-१७
३. रत्नत्रयव्रतकथा	”	”		१७-१६
४. पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	”	”		१६-२३
५. अक्षयदशमीकथा	”	”		२३-२६
६. अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	”	”		२७
७. वैद्यमनोत्सव	नयनसुख	हिन्दी पद्य	पूर्ण	३१-५२

विशेष—लाखेरी ग्राम मे दीवान श्री बुधसिंहजी के राज्य मे मुमि मेघविमल ने प्रतिलिपि की थी। गुटका काफी जीर्ण है । पत्र चूहो के खाये हुए है । लेखनकाल स्पष्ट नही है ।

५६७३. गुटका स० २६१ । पत्र सं० ११७ । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-सग्रह ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र सग्रह है । सस्कृत मे समयसार कलाद्रुमपूजा भी है ।

५६७४. गुटका सं० २६२ । पत्र स० ४८ ।

१. ज्योतिषशास्त्र	×	सस्कृत		१६-३६
२. फुटकर दोहे	×	हिन्दी	३१ दोहा है	३६-३७

३. पद्मकोष गोवर्धन संस्कृत ३७-४८

लें० काल सं० १७६३ संत हरिवशदास ने लवाण मे प्रतिलिपि की थी।

५६७५. गुटका स० २६३। संग्रह कर्ता पाण्डे टोडरमलजी। पत्र स० ७६। आ० ५X६ इञ्च। ले० काल सं० १७३३। अपूर्ण। दशा-जीर्ण।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे एवं मत्रों का संग्रह है।

५६७६. गुटका सं० २६४। पत्र स० ७७। आ० ६X४ इञ्च। ले० काल १७८८ पौष सुदी ६। पूर्ण। सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष—पं० गोवर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी। पूजा एवं स्तोत्र सग्रह है।

५६७७. गुटका स० २६५। पत्र स० ३१-६२। आ० ४X५। इञ्च भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल शक स० १६२५ सावन बुदी ५।

विशेष—पुण्याहवाचन एवं भक्तामरस्तोत्र भाषा है।

५६७८ गुटका सं० २६६। पत्र स० ३-४१। आ० ३X३½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। अपूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र एवं तत्वार्थ सूत्र है।

५६७६ गुटका सं० २६७। पत्र सं० २५। आ० ६X४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे हैं।

५६८०. गुटका सं० २६८। पत्र स० ६२। आ० ६½X५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। पूर्ण।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पत्र खाली हैं। ३१ से आगे फिर पत्र १ २ से प्रारम्भ है। पत्र १० तक शृङ्गार के कवित्त हैं।

१ बारह मासा—पत्र १०-२१ तक। चूहड़ कवि का है। १२ पद हैं। वर्णन सुन्दर है। कविता में पत्र लिखकर बताया गया है। १७ पद्य है।

२. बारह मासा—गोविन्द का-पत्र २६-३१ तक।

५६८१. गुटका सं० २६६। पत्र सं० ४१। आ० ७X४½ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-शृङ्गार।

विशेष—कोकसार है।

५६८२. गुटका स० ३००। पत्र स० १२। आ० ६X५¾ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र।

विशेष—मन्त्रशास्त्र, आयुर्वेद के नुसखे। पत्र ७ से आगे खाली है।

५६८३ गुटका स० ३०१ । पत्र सं० १८ । आ० ४¾×३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल १६१८ । पूर्ण ।

विशेष—लावरणी मागीतु'गी की- हर्षकीर्त्ति ने स० १६०० ज्येष्ठ सुदी ५ को यात्रा की थी ।

५६८४. गुटका सं० ३०२ । पत्र स० ४२ । आ० ४×३½ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-संग्रह । पूर्ण

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६८५. गुटका स० ३०३ । पत्र स० १०५ । आ० ४½×४½ इ० । पूर्ण ।

विशेष—३० यन्त्र दिये हुये हैं । कई हिन्दी तथा उर्दू मे लिखे हैं । आगे मन्त्र तथा मन्त्रविधि दी हुई है । उनका फल दिया हुआ है । जन्मपत्री स० १८१७ की जगतराम के पौत्र माणकचन्द के पुत्र की आयुर्वेद के नुसखे दिये हुये हैं ।

५६८६ गुटका स० ३०३ क । पत्र स० १५ । आ० ८×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ मे विश्वामित्र विरचित रामकवच है । पत्र ३ से तुलसीदास कृत कवित्तबध रामचरित्र है । इसमे छप्पय छन्दो का प्रयोग हुवा है । १-२० पद्य तक सख्या ठीक हैं । इसमें आगे ३५६ सख्या से प्रारम्भ कर ३८२ तक संख्या चली है । इसके आगे २ पत्र खाली हैं ।

५६८७. गुटका सं० ३०४ । पत्र स० १६ । आ० ७½×५ इ० । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—४ से ६ तक पत्र नही है । अजयराज, रामदास, बनारसीदास, जगतराम एव विजयकीर्त्ति के पदो का संग्रह है ।

५६८८. गुटका सं० ३०५ । पत्र सं० १० । आ० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । पूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा है ।

५६८९. गुटका सं० ३०६ । पत्र सं० ६ । आ० ६½×४½ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । पूर्ण । विशेष—शातिपाठ है ।

५६९० गुटका स० ३०७ । पत्र सं० १४ । आ० ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—नन्ददास की नाममञ्जरी है ।

५६९१. गुटका सं० ३०८ । पत्र सं० १० । आ० ५×४½ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । पूर्ण

विशेष—भक्तामरऋद्धिमन्त्र सहित है ।

क भण्डार [शास्त्रभण्डार बाबा दुलीचन्द जयपुर]

५६६२ गुटका सं० १ । पत्र सं० २७१ । आ० ६३/४×७३/४ इञ्च । वे० सं० ८५७ । पूर्ण ।

१. भाषाभूषण	धीरजसिंह राठौड	हिन्दी	१–८
२. अठोत्तरा सनाथ विधि	×	" ले० काल सं० १७५६	१३

औरंगजेब के समय मे प० अभयसुन्दर ने ब्रह्मपुरी मे प्रतिलिपि की थी।

३. जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी	१४
४. समयसार नाटक	बनारसीदास	"	११७

बादशाह शाहजहा के शासन काल मे स० १७०८ मे लाहौर मे प्रतिलिपि हुई थी।

५. बनारसी विलास	×	"	१२६

विशेष—बादशाह शाहजहां के शासनकाल स० १७११ मे जिहानाबाद मे प्रतिलिपि हुई थी।

५६६३ गुटका स० २ । पत्र स० २२५ । आ० ८×५३/४ इञ्च । अपूर्ण । वे० सं० ८५८ ।

विशेष—स्तोत्र एव पूजा पाठ सग्रह है।

५६६४ गुटका स० ३ । पत्र स० २४ । आ० १०३/४×५३/४ इ० । भाषा–हिन्दी । पूर्ण । वे० स० ८५६ ।

१. शातिकनाम	×	हिन्दी	१
२ महाभिषेक सामग्री	×	"	१–८
३ प्रतिष्ठा मे काम आने वाले ६६ यत्रो के चित्र	×	"	६–२४

५६६५ गुटका स० ४ । पत्र स० ६३ । आ० ५३/४×८३/४ इ० । पूर्ण । वे० स० ८६० ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है।

५६६६. गुटका स० ५ । पत्र स० ४६ । आ० ६×४ इ० । भाषा–सस्कृत हिन्दी । अपूर्ण । वे० स० ८६१ ।

विशेष—सुभाषित पाठो का सग्रह है।

५६६७ गुटका स० ६ । पत्र स० ३३४ । आ० ६×४ इ० । भाषा–सस्कृत । पूर्ण । जीर्ण । वे० स० ८६२ ।

विशेष—विभिन्न स्तोत्रो का सग्रह है।

५७६८. गुटका सं० ७ । पत्र स० ४१६ । आ० ६३/४×५ इ० । ले० काल स० १८०५ अषाढ सुदी ५ पूर्ण । वे० स० ८६३ ।

१ पूजा पाठ सग्रह	×	सस्कृत हिन्दी
२. प्रतिष्ठा पाठ	×	"
३. चौबीस तीर्थङ्कर पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी ले० काल १८७५ भादवा सुदी १०

५६६६. गुटका स० ८। पत्र सं० ३१७। आ० ६×५ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७६२ आसोज सुदी १४। पूर्ण। वे० स० ८६४।

विशेष—पूजा एव प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठो का संग्रह है। पृष्ठ २०७ पत्र भक्तामरस्तोत्र की पूजा विशेषत उल्लेखनीय है।

५७००. गुटका स० ६। पत्र स० १४। आ० ४×४ इ०। भाषा–हिन्दी। पूर्ण। वे० सं० ८६५।

विशेष—जगतराम, गुमानीराम, हरीसिंह, जोधराज, लाल, रामचन्द्र आदि कवियो के भजन एवं पदो का संग्रह है।

ख भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर जोबनेर जयपुर]

५७०१ गुटका स० १। पत्र सं० २१२। आ० ६×४½ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण।

१ होडाचक्र	×	सस्कृत	अपूर्ण	८
२. नाममाला	धनञ्जय	"	"	६–३२
३. श्रुतपूजा	×	"		३३–३६
४. पञ्चकल्याणकपूजा	×	"	ले० काल १७८३	३६–६५
५. मुक्तावलीपूजा	×	"		६५–६६
६ द्वादशव्रतोद्यापन	×	"		६६–८६
७. त्रिकालचतुर्दशीपूजा	×	"	ले० काल सं० १७८३	८६–१०२
८. नवकारपैंतीसी	×	"		
६ आदित्यवारकथा	×	"		
१०. प्रोषधोपवास व्रतोद्यापन	×	"		१०३–२१२
११ नन्दीश्वरपूजा	×	"		
१२ पञ्चकल्याणकपाठ	×	"		
१३ पञ्चमेरुपूजा	×	"		

५७०२. गुटका सं० २ । पत्र सं० १६६ । आ० ६×६३ इ० । ले० काल × । दशा–जीर्ण जीर्ण ।

१. त्रिलोकवर्णन	×	संस्कृत हिन्दी	१–१०
२. कालचक्रवर्णन	×	हिन्दी	११–१४
३ विचारगाथा	×	प्राकृत	१५–१६
४ चौबीसतीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी	१६–३१
५. चउबीसठाणाचर्चा	×	"	३२–७८
६. आस्रव त्रिभङ्गी	×	प्राकृत	७९–११२
७. भावसंग्रह (भावत्रिभङ्गी)	×	"	११३–१३३
८. त्रेपनक्रिया श्रावकाचार टिप्पण	×	संस्कृत	१३४–१५४
९. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१५४–१६८

५७०३ गुटका सं० ३ । पत्र सं० २१५ । आ० ६×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजापाठ तथा मन्त्रसंग्रह है । इसके अतिरिक्त निम्नपाठ संग्रह है ।

१. शत्रुञ्जयतीर्थरास	समयसुन्दर	हिन्दी		३३
२. बारहभावना	जितचन्द्रसूरि	"	र० काल १६११	३३–४०
३. दशवैकालिकगीत	जैतसिंह	"		४१–४९
४ शालिभद्र चौपई	जितसिंहसूरि	"	र० काल १६०८	४९–९४
५. चतुर्विंशति जिनराजस्तुति	"	"		९४–१०६
६. बीसतीर्थङ्करजिनस्तुति	"	"		१०६–११७
७ महावीरस्तवन	जितचन्द्र	"		११७–११९
८. आदीश्वरस्तवन	"	"		१२०
९. पार्श्वजिनस्तवन	"	"		१२०–१२१
१०. विनती, पाठ व स्तुति	"	"		१२२–१४१

५७०४ गुटका सं० ४ । पत्र सं० ७१ । आ० ५३×३ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १९०४ । पूर्ण ।

विशेष—नित्यपाठ व पूजाओं का संग्रह है । लश्कर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५७०५. **गुटका सं० ५** । पत्र स० ४८ । आ० ५×४ इ० । ले० काल स० १६०१ । पूर्ण ।

विशेष—कर्मप्रकृति वर्णन (हिन्दी), कल्याणमन्दिरस्तोत्र, सिद्धिप्रियस्तोत्र (संस्कृत) एव विभिन्न कवियो के पदो का सग्रह है।

५७०६ **गुटका सं० ६** । पत्र सं० ८० । आ० ८¾×६½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गुटके मे निम्न मुख्य पाठो का संग्रह है।

१. चौरासीबोल	कौरपाल	हिन्दी	अपूर्ण	४-१६
२ आदिपुराणविनती	गङ्गादास	"		१७-४३

विशेष—सूरत मे नरसीपुरा (नरसिंघपुरा) जाति वाले वणिक पर्वत के पुत्र गङ्गादास ने विनती रचना की थी।

३ पद– जिण जपि जिण जपि जिवडा	हर्षकीर्त्ति	हिन्दी		४४-४५
४ अष्टकपूजा	विश्वभूषण	"	पूर्ण	५१
५ समकितविणवोधर्म	ब्र० जिनदास	"	"	५८

५७०७ **गुटका स० ७** । पत्र स० ५० । आ० ५¾×४½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—४८ यन्त्रो का मन्त्र सहित सग्रह है। अन्त मे कुछ आयुर्वेदिक नुसखे भी दिये हैं।

५७०८ **गुटका स० ८** । पत्र स० × । आ० ५×२¾ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्फुट कवित्त, उपवासो का व्यौरा, सुभाषित (हिन्दी व संस्कृत) स्वर्ग नरक आदि का वर्णन है

५७०६. **गुटका स० ६** । पत्र स० ५१ । आ० ७×५ इ० । भाषा–संस्कृत । विषय–सग्रह । ले० काल स० १७८३ । पूर्ण ।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे, पाशा केवली, नाम माला आदि हैं।

५७१० **गुटका स० १०** । पत्र स० ८५ । आ० ६×३¾ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–पद सग्रह ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—लिपि स्पष्ट नही है तथा अशुद्ध भी है।

५७११. **गुटका स० ११** । पत्र सं० १२-६२ । आ० ६×५ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल × अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी पाठो का संग्रह है।

५७१२. गुटका सं० १२। पत्र सं० २२३। आ० ९×४ इ०। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले० काल सं० १९०५ वैशाख बुदी १४। पूर्ण।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है।

५७१३. गुटका सं० १३। पत्र सं० १९३। आ० ५×५३ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—सामान्य स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है।

५७१४. गुटका सं० १४। पत्र सं० ४२। आ० ८३×५३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण।

१. त्रिलोकवर्णन	×	हिन्दी	पूर्ण	१-१८
२. गजेशा की चरचा	×	"	"	१९-२६
३. त्रेसठ शलाका पुरुषवर्णन	×	"	"	२६-४२

५७१५. गुटका सं० १५। पत्र सं० ७६। आ० ६×५ इ०। ले० काल० ×। पूर्ण।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

५७१६. गुटका सं० १६। पत्र सं० १२०। आ० ८×५३ इ०। ले० काल सं० १७९३ वैशाख बुदी ३। पूर्ण।

१. समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी	१०-१०९
२. पार्श्वनाथजीकी निसाणी	×	"	११०-११४
३. शांतिनाथस्तवन	गुणसागर	"	११५-११६
४. गुरुदेवकीविनती	×	"	११७-१२०

५७१७. गुटका सं० १७। पत्र सं० ११५। आ० ८×५ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है।

५७१८. गुटका सं० १८। पत्र सं० १९४। आ० ५३×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है।

५७१९. गुटका सं० १९। पत्र सं० २१३। आ० ४×३३ इ०। ले० काल × पूर्ण।

विशेष—नित्य पाठ व मंत्र आदि का संग्रह है तथा आयुर्वेद के नुसखे भी दिये हुये हैं।

५७२०. गुटका सं० २०। पत्र सं० १३२। आ० ७×६ इ०। ले० काल सं० १८२२। अपूर्ण।

विशेष—नित्यपूजापाठ, पार्श्वनाथ स्तोत्र (पद्मप्रभदेव) जिनस्तुति (रूपचन्द, हिन्दी) पद (गुन [illegible]) [illegible] तथा सामुद्रिक शास्त्र आदि पाठों का संग्रह है।

५७२१. गुटका स० २१। पत्र सं० ५-६२। आ० ५३/४×५१/२ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण। जीर्ण।

विशेष—समयसार गाथा, सामायिकपाठ वृत्ति सहित, तत्त्वार्थसूत्र एव भक्तामरस्तोत्र के पाठ है।

५७२२. गुटका सं० २२। पत्र स० २१६। आ० ६×६ इ०। ले० काल स० १८६७ चैत्र सुदी १४। पूर्ण।

विशेष—५० मत्रो एव स्तोत्रो का सग्रह है।

५७२३. गुटका स० २३। पत्र स० ६७-२०६। आ० ६×५ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण।

१. पद- (वह पानी मुलतान गये)	×	हिन्दी	पूर्ण	६७
२. (पद-कौन खतामेरीमै न जानी तजि के चले गिरनारि)	×	"	"	"
३. पद-(प्रभू तेरे दरसन की वलिहारी)	×	"	"	"
४ आदित्यवारकथा	×	"	"	६६-१२५
५. पद-(चलो पिय पूजन श्री वीर जिनद)	×	"	"	१७८-१७६
६ जोगीरासो	जिनदास	"	"	१६०-१६२
७ पञ्चेन्द्रिय बेलि	ठक्कुरसी	"	"	१६२-१६५
८. जैनविद्रीदेश की पत्रिका	मजलसराय	"	"	१६५-१६७

ग भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर]

५७२४' गुटका स० १। आ० ८×५ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १००।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

१ पद- सावरिया पारसनाथ मोहे तो चाकर राखो	खुशालचन्द	हिन्दी
२. " मुझे है चाव दरसन का दिखा दोगे तो क्या होगा	×	"
३. दर्शनपाठ	×	संस्कृत
४. तीन चौबीसीनाम	×	हिन्दी
५ कल्याणमन्दिरभाषा	बनारसीदास	"
६. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत
७. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"

८ देवपूजा	X	हिन्दी संस्कृत
९. अकृत्रिम जिन चैत्यालय जयमाल	X	हिन्दी
१०. सिद्ध पूजा	X	संस्कृत
११. सोलहकारणपूजा	X	"
१२. दशलक्षणपूजा	X	"
१३. शान्तिपाठ	X	"
१४. पार्श्वनाथपूजा	X	"
१५. पंचमेरुपूजा	भूधरदास	हिन्दी
१६. नन्दीश्वरपूजा	X	संस्कृत
१७. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	अपूर्ण "
१८. रत्नत्रयपूजा	X	"
१९ अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल	X	हिन्दी
२०. निर्वाणकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	"
२१. गुरुग्रों की विनती	X	"
२२. जिनपच्चीसी	नवलराम	"
२३. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	पूर्ण संस्कृत
२४. पञ्चकल्याणमंगल	रूपचन्द	हिन्दी
२५ पद- जिन देख्या बिन रह्यो न जाय	किशनसिंह	"
२६. " लागो हो नैयन सों प्यार	द्यानतराय	"
२७. " प्रभू यह परज सुणो मेरी	नन्द कवि	"
२८. " भयो सुख चरन देखत ही	"	"
२९. " प्रभू मेरी सुनो विनती	"	"
३०. " परयो संसार की धारा जिसकी वार नहीं पारा	"	"
३१. " रना दीदार प्रभू तेरा भया मर्गन नगुर डेरा	"	"
३२. स्तुति	बुधजन	"
३३. नेमिनाथ के दश भव	X	"
३४. पद- जैन मत परखो रे भाई	X	"

५७२५. गुटका स० २। पत्र सं० ८३-४०३। आ० ४३/४×३ इ०। अपूर्ण। वे० सं० १०१।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

१. कल्याणमन्दिर भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण	८३-९३
२. देवसिद्धपूजा	×	"		९३-११५
३. सोलहकारणपूजा	×	अपभ्रंश		११५-१२२
४. दशलक्षणपूजा	×	अपभ्रंश सस्कृत		१२३-१२९
५ रत्नत्रयपूजा	×	सस्कृत		१२८-१६७
६. नन्दीश्वरपूजा	×	प्राकृत		१६८-१८१
७ शान्तिपाठ	×	सस्कृत		१८१-१८६
८ पञ्चमगल	रूपचन्द	हिन्दी		१८७-२१२
९. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	सस्कृत	अपूर्ण	२१३-२२४
१०. सहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	"		२२५-२६८
११. भक्तामरस्तोत्र मत्र एव हिन्दी पद्यार्थ सहित	मानतुङ्गाचार्य	सस्कृत हिन्दी		२६९-४०३

५७२६. गुटका स० ३। पत्र स० ८९। आ० १०×९ इ०। विषय-सग्रह। ले० काल सं० १८७९ श्रावण सुदी १५। पूर्ण। वे० स० १०५।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है।

१. चौबीसतीर्थंकरपूजा	द्यानतराय	हिन्दी
२. अष्टाह्निकापूजा	"	"
३. षोडशकारणपूजा	"	"
४. दशलक्षणपूजा	"	"
५. रत्नत्रयपूजा	"	"
६. पंचमेरुपूजा	"	"
७. सिद्धक्षेत्रपूजापाठ	"	"
८. दर्शनपाठ	×	"
९. पद- अरज हमारी सुन	×	"

१०. भक्तामरस्तोत्रोत्पत्तिकथा	X	"	
११. भक्तामरस्तोत्रऋद्धिमंत्रसहित	X	संस्कृत हिन्दी	

नथमल कृत हिन्दी अर्थ सहित।

५७२७. गुटका सं० ४। पत्र सं० ५५। आ० ८×५ इं०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १९५४। पूर्ण। वे० सं० १०३।

विशेष—जैन कवियों के हिन्दी पदों का संग्रह है। इनमें दौलतराम, द्यानतराय, जोधराज, नवल, बुधजन भैया भागचंदीदास के नाम उल्लेखनीय हैं।

घ भण्डार [दि० जैन नया मन्दिर वैराठियों का जयपुर]

५७२८. गुटका सं० १। पत्र सं० ३००। आ० ६३×६ इं०। ले० काल X। पूर्ण। वे. सं० १४०।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

१. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत		१-६
२. घण्टाकरणमन्त्र	X	"		६
३. बनारसीविलास	बनारसीदास	हिन्दी		७-१६६
४. कवित्त	"	"		१६७
५. परमार्थदोहा	रूपचन्द	"		१६८-१७४
६. नाममालाभाषा	बनारसीदास	"		१७५-१९०
७. अनेकार्थनाममाला	नन्ददास	"		१९०-१९७
८. [illegible]	X	"		१९७-२०६
९. जिनशतक	X	"	अपूर्ण	२०७-२११
१०. [illegible]	रूपदीप	"		२११-२२१
११. [illegible]	X	"		२२२-२६२
१२. जैनशतक	भूधरदास	"		२६२-२८३
१३. [illegible]	X	"		२८४-३००

[illegible]

५७२६. गुटका स० २ । पत्र स० २३३ । आ० ६×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४१

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्र श	१–१०६
विशेष—संस्कृत गद्य मे टीका दी हुई है ।			
२. धर्माधर्मस्वरूप	×	हिन्दी	११०–१७०
३. ढाढसीगाथा	ढाढसीमुनि	प्राकृत	१७१–१६२
४ पंचलब्धिविचार	×	"	१६३–१६४
५. अठावीस मूलगुणरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी	१६४–१६६
६. दानकथा	"	"	१६७–२१५
७. वारह अनुप्रेक्षा	×	"	२१५–२१७
८ हंसतिलकरास	ब्र० अजित	हिन्दी	२१७–२१६
६ चिद्रूपभास	×	"	२२०–२१७
१० आदिनाथकल्याणककथा	ब्रह्म ज्ञानसागर	"	२२८–२३३

५७३०. गुटका स० ३ । पत्र स० ६८ । आ० ५३⁄४×४ इ० । ले० काल सं० १६२१ पूर्ण । वे० सं० १४२

१. जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	सस्कृत	१–३५
२ आदित्यवार कथा भाषा टीका सहित	मू० क० सकलकीर्ति	हिन्दी	३६–६०
	भाषाकार–सुरेन्द्रकीर्ति र० काल १७४१		
३ पञ्चपरमेष्ठिगुणस्तवन	×	"	६१–६८

५७३१. गुटका सं० ४ । पत्र स० ७० । आ० ७३⁄४×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७४३

१ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	सस्कृत	५–२५
२ भक्तामरभाषा	हेमराज	हिन्दी	२६–३२
३. जिनस्तवन	दौलतराम	"	३२–३३
४ छहढाला	"	"	३४–५६
५ भक्तामरस्तोत्र	मानतुगाचार्य	सस्कृत	६०–६७
६. रविवारकथा	देवेन्द्रभूषण	हिन्दी	६८–७०

५७३२. गुटका स० ५। पत्र स० ३६। आ० ८३/४X७ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १४४।

विशेष—पूजाओ का संग्रह है।

५७३३. गुटका स० ६। पत्र सं० ६-३६। आ० ६३/४X५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० १४७।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है।

५७३४. गुटका स० ७। पत्र स० २-३३। आ० ६१/२X४१/२ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। विषय-पूजा। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० १४८।

५७३५. गुटका स० ८। पत्र स० १७-४८। आ० ६१/२X५ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० १४६।

विशेष—बनारसीविलास तथा कुछ पदो का सग्रह है।

५७३६ गुटका स० ६। पत्र स० ३२। आ० ६X४१/२ इ०। ले० काल० स० १८०१ फागुण। पूर्ण। वे० सं० १४५।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है।

५७३७. गुटका स० १०। पत्र स० ४०। आ० ६X४१/२ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा पाठ सग्रह। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १५०।

५७३८ गुटका स० ११। पत्र स० २५। आ० ७X५ इ०। भाषा हिन्दी। विषय-पूजा पाठ सग्रह ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० १५१।

५७३६ गुटका स० १२। पत्र स० ३४-८६। आ० ८१/२X६१/२ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय-पूजा पाठ सग्रह। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० १४६।

विशेष—स्फुट पाठो का सग्रह है।

५७४० गुटका स० १३। पत्र स० ४८। आ० ८X६ इ०। भाषा हिन्दी। विषय-पूजा पाठ सग्रह। ले० काल X अपूर्ण। वे० स० १५२।

ङ भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर संघीजी]

५७४१ गुटका स० १। पत्र स० १०७। आ० ८३/४X५३/४ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल X। अपूर्ण।

विशेष—पूजा व स्तोत्रो का संग्रह है।

५७४२ गुटका सं० २। पत्र स० ८६ । आ० ६X५ इ० । भाषा- सस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १८७६ वैशाख शुक्ला १०। अपूर्ण।

विशेष—चि० रामसुखजी डूंगरसीजी के पुत्र के पठनार्थ पुजारी राधाकृष्ण ने मढा नगर मे प्रतिलिपि की थी। पूजाओ का सग्रह है।

५७४३. गुटका स० ३। पत्र स० ६६। आ० ६½X६ इ०। भाषा–प्राकृत सस्कृत। ले० काल X। अपूर्ण।

विशेष—भक्तिपाठ, सबोधपञ्चासिका तथा सुभाषितावली आदि उल्लेखनीय पाठ है।

५७४४. गुटका स० ४। पत्र स० ४-९६। आ० ७X८ इ०। भाषा–सस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १८६८। अपूर्ण।

विशेष—पूजा व स्तोत्रो का सग्रह है।

५७४५. गुटका स० ५। पत्र स० २८। आ० ८X६½ इ०। भाषा–सस्कृत। ले० काल स० १६०७। पूर्ण।

विशेष—पूजाओ का संग्रह है।

५७४६. गुटका स० ६। पत्र स० २७६। आ० ६X४½ इ० । ले० काल सं० १६६ माह बुदी ११। अपूर्ण।

विशेष—भट्टारक चन्द्रकीर्ति के शिष्य आचार्य लालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। पूजा स्तोत्रो के अतिरिक्त निम्न पाठ उल्लेखनीय है :—

१. आराधनासार	देवसेन	प्राकृत
२ सबोधपचासिका	X	,,
३. श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द्र	सस्कृत

५७४७. गुटका सं० ७। पत्र स० १०४। आ० ६½X४½ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल X। पूर्ण।

विशेष—आदित्यवार कथा के साथ अन्य कथायें भी हैं।

५७४८. गुटका स० ८। पत्र स० ३४। आ० ४½X४ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल X। अपूर्ण।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है।

५७४९. गुटका सं० ९। पत्र सं० ७८। आ० ७½X४ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा एव स्तोत्र सग्रह। ले० काल X। पूर्ण। जीर्ण।

५७५०. गुटका स० १० | पत्र सं० १० | आ० ७½×६ इ० | ले० काल × | अपूर्ण |

विशेष—आनन्दघन एवं सुन्दरदास के पदो का सग्रह है।

५७५१. गुटका सं० ११ | पत्र सं० २० | आ० ६½×४¾ इ० | भाषा-हिन्दी | ले० काल × | अपूर्ण |

विशेष—भूधरदास आदि कवियो की स्तुतियों का सग्रह है।

५७५२. गुटका सं० १२ | पत्र स० ५० | आ० ६×४½ इ० | भाषा-हिन्दी | ले० काल × | अपूर्ण

विशेष—पञ्चमङ्गल रूपचन्द कृत, बधावा एव विनतियो का सग्रह है।

५७५३ गुटका स० १३ | पत्र स० ६० | आ० ८×६ इ० | भाषा-हिन्दी | ले० काल × | पूर्ण |

१ धर्मविलास	द्यानतराय	हिन्दी
२ जैनशतक	भूधरदास	"

५७५४. गुटका स० १४ | पत्र स० १५ से १३४ | आ० ६×६½ इ० | भाषा-हिन्दी | ले० काल × | पूर्ण | विशेष—चर्चा संग्रह है।

५७५५. गुटका स० १५ | पत्र सं० ४० | आ० ७½×५½ इ० | भाषा-हिन्दी | ले० काल × | अपूर्ण

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है।

५७५६. गुटका स० १६ | पत्र स० ११४ | आ० ६×४½ इ० | भाषा-हिन्दी सस्कृत | ले० काल × | अपूर्ण |

विशेष—पूजापाठ एव स्तोत्रो का सग्रह है।

५७५७ गुटका स० १७ | पत्र स० ८६ | आ० ६×४ इ० | भाषा-हिन्दी | ले० काल × | अपूर्ण |

विशेष—गङ्ग, विहारी आदि कवियो के पद्यो का सग्रह है।

५७५८ गुटका स० १८ | पत्र स० ५२ | आ० ६×६ इ० | भाषा-संस्कृत | ले० काल × | अपूर्ण | जीर्ण | विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एव पूजायें हैं।

५७५९ गुटका स० १९ | पत्र स० १७३ | आ० ६×७½ इ० | भाषा-हिन्दी | ले० काल × | अपूर्ण

१ सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी,	अपूर्ण
२ जम्बूस्वामी चौपई	ब्र० रायमल्ल	"	पूर्ण
३ धर्मपरीक्षाभाषा	×	"	अपूर्ण
४ समाधिमरणभाषा	×	"	"

५७६०. गुटका स० २० । पत्र सं० ५३ । आ० ८½×६½ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गुमानीरामजी ने प्रतिलिपि की थी।

१. वसतराजशकुनावली	×	संस्कृत हिन्दी	र० काल सं० १८२५ सावन सुदी ५ ।
२. नाममाला	धनञ्जय	सस्कृत	×

५७६१. गुटका स० २१ । पत्र सं० ८-७४ । आ० ८×५½ इ० । ले० काल सं० १८२० अषाढ सुदी ६ । अपूर्ण ।

१. ढोलामारुणी की वार्ता	×	हिन्दी
२. शनिश्चरकथा	×	"
३. चन्दकु वर की वार्ता	×	"

५७६२ गुटका सं० २२ । पत्र स० १२७ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एव पूजाओ का संग्रह हैं ।

५७६३. गुटका स० २३ । पत्र स० ३६ । आ० ६½×५½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रो का संग्रह है।

५७६४. गुटका स० २४ । पत्र सं० १२८ । आ० ७×५½ इ० । ले० काल स० १७७४ । अपूर्ण । जीर्ण

१. यशोधरकथा	खुशालचन्द काला	हिन्दी	र० काल १७७५
२. पद व स्तुति	×	"	"

विशेष—खुशालचन्दजी ने स्वयं प्रतिलिपि की थी।

५७६५. गुटका सं० २५ । पत्र स० ७७ । आ० ६×४½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है।

५७६६. गुटका स० २६ । पत्र स० ३६ । आ० ६½×५½ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण

१ पद्मावतीसहस्रनाम	×	सस्कृत
२ द्रव्यसग्रह	×	प्राकृत

५७६७. गुटका स० २७ । पत्र स० ३३८ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. पूजासंग्रह	×	संस्कृत

२. प्रद्युम्नरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी
३. सुदर्शनरास	"	"
४ श्रीपालरास	"	"
५. आदित्यवारकथा	"	"

५७६८. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २७६ । आ० ७×४½ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—गुटके मे निम्न पाठ उल्लेखनीय है ।

१. नाममाला	धनजय	सस्कृत
२. अकलकाष्टक	अकलंकदेव	"
३. त्रिलोकतिलकस्तोत्र	भट्टारक महीचन्द	"
४. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"
५. योगीरासो	जिनदास	हिन्दी

५७६९. गुटका सं० २९ । पत्र स० २५० । आ० ७×४½ इ० । ले० काल सं० १८७४ वैशाख कृष्णा ६ । पूर्ण ।

१. नित्यनियमपूजासग्रह	×	हिन्दी	
२. चौबीस तीर्थंकर पूजा	रामचन्द्र	"	
३. कर्मदहनपूजा	टेकचन्द	"	
४. पंचपरमेष्ठिपूजा	×	"	र० काल सं० १८६२ ले० का० स० १८७१ स्यौजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।
५. पंचकल्याणकपूजा	×	हिन्दी	
६ द्रव्यसग्रह भाषा	द्यानतराय	"	

५७७०. गुटका स० ३० । पत्र स० १०० । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. पूजापाठसग्रह	×	सस्कृत
२ सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी
३ लघुचाणक्यराजनीति	चाणक्य	"
४. वृद्ध " "	"	"

५ नाममाला	धनञ्जय	संस्कृत

५७७१. गुटका स० ३१। पत्र सं० ६०-११०। आ० ७X५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल X। अपूर्ण।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

५७७२ गुटका सं० ३२। पत्र सं० ६२। आ० ५३/४X५१/२ इ०। ले० काल X। पूर्ण।

१. कक्कावत्तीसी	X	हिन्दी
२. पूजापाठ	X	संस्कृत हिन्दी
३. विक्रमादित्य राजा की कथा	X	"
४. शनिश्चरदेव की कथा	X	"

५७७३. गुटका स० ३३। पत्र सं० ८४। आ० ६X४३/४ इ०। ले० काल X। पूर्ण।

१. पाशाकेवली (अबजद)	X	हिन्दी
२ ज्ञानोपदेशवत्तीसी	हरिदास	"
३. स्यामबत्तीसी	X	"
४. पाशाकेवली	X	"

५७७४. गुटका स० ३४। आ० ५X५ इ०। पत्र सं० ८४। ले० काल X। अपूर्ण।

विशेष—पूजा व स्तोत्रो का सग्रह है।

५७७५ गुटका स० ३५। पत्र सं० ६६। आ० ६X४१/२ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १६४०। पूर्ण।

विशेष—पूजाओ का संग्रह है। बचूलाल छाबडा ने प्रतिलिपि की थी।

५७७६ गुटका स० ३६। पत्र सं० १५ से ७६। आ० ७X५ इ०। ले० काल X। अपूर्ण।

विशेष—पूजाओ एवं पद सग्रह है।

५७७७. गुटका सं० ३७। पत्र सं० ७३। आ० ६X५ इ०। ले० काल X। अपूर्ण।

१. जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी
२. संबोधपंचासिका	द्यानतराय	"
३. पद-संग्रह	"	"

५७७८. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० २६० । आ० ५३×३३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण ।

विशेष—पूजाओं तथा स्तोत्रों का संग्रह है।

५७७९. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० ११८ । आ० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८६१ । पूर्ण ।

विशेष—नाथू गोधा ने गाजी के थाना में प्रतिलिपि की थी ।

१. गुलालपच्चीसी	ब्रह्मगुलाल	हिन्दी	
२. चन्द्रहंसकथा	हर्षकवि	„	र का स. १७०८ ले का. स. १८११
३. मोहविवेकयुद्ध	बनारसीदास	„	
४ आत्मसंबोधन	द्यानतराय	„	
५. पूजासंग्रह	X	„	
६ भक्तामरस्तोत्र (मंत्र सहित)	X	संस्कृत	ले० का० सं० १८११
७ आदित्यवार कथा	X	हिन्दी	ले० का० सं० १८६१

५७८०. गुटका सं ० ४० । पत्र सं० ८२ । आ० ५३×४ इ० । ले० काल X । पूर्ण ।

१. नखशिखवर्णन	X	हिन्दी
२. आयुर्वेदिकनुसखे	X	„

५७८१. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० २०० । आ० ७३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण ।

विशेष—ज्योतिष संबन्धी साहित्य है ।

५७८२ गुटका सं० ४२ । पत्र सं० १५८ । आ० ८×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । ले० काल X । अपूर्ण ।

विशेष—मनोहरलाल कृत ज्ञानचिंतामणि है ।

५७८३ गुटका सं० ४३ । पत्र सं० ८० । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा व पद । ले० काल X । अपूर्ण ।

विशेष—शनिश्चर एवं आदित्यवार कथायें तथा पदो का संग्रह है ।

५७८४ गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ६० । आ० ६×५ इ० । ले० काल सं० १९५६ फागुन बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रसंग्रह है ।

५७८५. गुटका सं० ४५। पत्र स० ६०। आ० ८×५३ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।

१. नित्यपूजा	×	हिन्दी संस्कृत
२. पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	"
३. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत

५७८६. गुटका स० ४६। पत्र सं० २८५। आ० ४×३ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—पूजाओ तथा स्तोत्रो का संग्रह है।

५७८७ गुटका सं० ४७। पत्र स० १७१। आ० ६×४ इ०। ले० काल स० १८३१ भादवा बुदा ७। पूर्ण।

१. भर्तृहरिशतक	भर्तृहरि	संस्कृत
२. वैद्यजीवन	लोलिम्मराज	"
३ सप्तशती	गोवर्द्धनाचार्य ले० काल स० १७३१	"

विशेष—जयपुर मे गुमानसागर ने प्रतिलिपि की थी।

५७८८. गुटका स० ४८। पत्र सं० १७२। आ० ६×४ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।

१. बारहखडी	सूरत	हिन्दी
२ ककाबत्तीसी	×	"
३ बारहखडी	रामचन्द्र	"
४. पद व विनती	×	"

विशेष—अधिकतर त्रिभुवनचन्द्र के पद है।

५७८९. गुटका सं० ४९। पत्र स० २८। आ० ८३×६ इ०। भाषा हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १९५१। पूर्ण।

विशेष—स्तोत्रो का संग्रह है।

५७९०. गुटका स० ५०। पत्र स० १५५। आ० १०३×७ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१. शान्तिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	संस्कृत
२. स्वयम्भूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	"

३. एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	हिन्दी
४ सबोधपञ्चासिकाभाषा	द्यानतराय	"
५ निर्वाणकाण्डगाथा	×	प्राकृत
६ जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी
७ सिद्धपूजा	आशाधर	संस्कृत
८. लघुसामायिक भाषा	महाचन्द्र	"
९. सरस्वतीपूजा	मुनिपद्मनन्दि	"

५७६१ गुटका स० ५१ । पत्र सं० १४ । आ० ६३/४×४३/४ इ० । ले० काल सं० १९१७ चैत्र सुदी १० अपूर्ण ।

विशेष—चिमनलाल भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।

१. विषापहारस्तोत्रभाषा	×	हिन्दी
२. रथयात्रावर्णन	×	"
३. सावलाजी के मन्दिर की रथयात्रा का वर्णन	×	"

विशेष—यह रथयात्रा स० १९२० फागुण बुदी ८ मंगलवार को हुई थी ।

५७६२. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० १३२ आ० ६×५३/४ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१८ । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा स्तोत्र व पद संग्रह है ।

५७६३. गुटका स० ५३ । पत्र स० ७० । आ० १०×७ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५७६४ गुटका सं० ५४ । पत्र स० ५० । आ० ८×५३/४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७४४ आसोज सुदी १० । अपूर्ण । जीर्ण शीर्ण ।

विशेष—नेमिनाथ रासो (ब्रह्मरायमल्ल) एव अन्य सामान्य पाठ हैं ।

५७६५ गुटका स० ५५ । पत्र स० ७-१२८ । आ० ६×५३/४ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गुटके मे मुख्यत समयसार नाटक (बनारसीदास) तथा धर्मपरीक्षा भाषा (मनोहरलाल) कृत है ।

५७९६. गुटका स० ५६ । पत्र सं० ७६ । आ० ६X४३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१५ वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—कवर वख्तराम के पठनार्थ प० आशाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१. नीतिशास्त्र	चाणक्य	संस्कृत
२. नवरत्नकवित्त	X	हिन्दी
३. कवित्त	X	"

५७९७. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० २१७ । आ० ६३X५३ इ० । ले० काल X । अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५७९८. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ११२ । आ० ६३X६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५७९९. गुटका सं० ५९ । पत्र स० ६० । आ० ५X८ इ० । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण ।

विशेष—लघु प्रतिक्रमण तथा पूजाओ का संग्रह है ।

५८०० गुटका सं० ६० । पत्र स० ३४४ । आ० ९X६३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत श्रीपालरास एव हनुमतरास तथा अन्य पाठ भी है ।

५८०१. गुटका स० ६१ । पत्र स० ७२ । आ० ६X४३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदो का संग्रह है । पुट्ठो के दोनो ओर गणेशजी एवं हनुमानजी के कलापूर्ण चित्र हैं ।

५८०२. गुटका सं० ६२ । पत्र स० १२१ । आ० ६X४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।

५८०३. गुटका सं० ६३ । पत्र स० ७-४१ । आ० ६३X६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।

५८०४. गुटका स० ६४ । पत्र सं० २० । आ० ७X५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।

५८०५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ९० । आ० ३३X३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।

विशेष—पदो का संग्रह है ।

५८०६. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ८ । आ० ८X४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।

विशेष—प्रवचनसार भाषा है ।

च भण्डार [दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर]

५८०७. गुटका सं० १। पत्र सं० १६२। आ० ६½×४½ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १७५२ पौष। पूर्ण। वे० सं० ७४७।

विशेष—प्रारम्भ मे आयुर्वेद के नुसखे है तथा फिर सामान्य पूजा पाठ सग्रह है।

५८०८. गुटका सं० २। संग्रहकर्त्ता पं० फतेहचन्द नागौर। पत्र स० २४८। आ० ४×३ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७४८।

विशेष—ताराचन्दजी के पुत्र सेवारामजी पाटणी के पठनार्थ लिखा गया था—

१. नित्यनियम के दोहे	×	हिन्दी	ले० काल स० १८५७
२. पूजन व नित्य पाठ संग्रह	×	„ सस्कृत	ले० काल स० १८५६
३. शुभशीख	×	हिन्दी	१०८ शिक्षायें हैं।
४. ज्ञानपदवी	मनोहरदास	„	
५. चैत्यवदना	×	संस्कृत	
६. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	×	हिन्दी	
७ आदित्यवार की कथा	×	„	
८ नवकार मत्र चर्चा	×	„	
९ कर्म प्रकृति का ब्यौरा	×	„	
१० लघुसामायिक	×	„	
११. पाशाकेवली	×	„	ले० काल० स १८६६
१२. जैन बद्रीदेश की पत्री	×	„	„

५८०९. गुटका सं० ३। पत्र सं० ५७। आ० ६×४½ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा स्तोत्र। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७४९।

५८१०. गुटका स० ४। पत्र सं० २०६। आ० ५×५½ इ०। भाषा हिन्दी। विषय-पद भजन। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७५०।

५८११. गुटका स ५। पत्र स १२५। आ० ६½×५½ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७५१।

विशेष- सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

५८१२. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १५१ । आ० ६३/४×५३/४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५२ ।

विशेष-प्रारम्भ मे आयुर्वेदिक नुसखे भी हैं ।

५८१३. गुटका सं० ७ । आ० ६×६३/४ इ० भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजापाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७५३ ।

५८१४. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १३७ । आ० ७३/४×५३/४ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५४ ।

५८१५. गुटका सं० ६ । पत्र स० ७२ । आ० ७३/४×५३/४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण वे० स० ७५५ ।

५८१६. गुटका सं० १० । पत्र स ३५७ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७५६ ।

५८१७. गुटका स० ११ । पत्र स० १२८ । आ० ६३/४×५१/४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण वे० स० ७५७ ।

५८१८ गुटका सं० १२ । पत्र स० १४६-७१२ । आ० ६×४ इ० । भाषा संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७५८ ।

विशेष-निम्नपाठो का संग्रह है—

१. दर्शनपच्चीसी	×	हिन्दी
२. पञ्चास्तिकायभाषा	×	”
३. मोक्षपैडी	बनारसीदास	”
४. पचमेरुजयमाल	×	”
५. साधुवदना	बनारसीदास	”
६. जखडी	भूधरदास	”
७. गुणमञ्जरी	×	”
८. लघुमंगल	रूपचन्द	”
९. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	”

१० अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	भैया भगवतीदास	"	र० स० १७४५
११ बाईस परिषह	भूधरदास	"	
१२. निर्वाणकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	"	र० स० १७३६
१३. बारह भावना	"	"	
१४ एकीभावस्तोत्र	भूधरदास	"	
१५. मगल	विनोदीलाल	"	र० सं० १७४४
१६. पञ्चमगल	रूपचन्द	"	
१७ भक्तामरस्तोत्र भाषा	नथमल	"	
१८. स्वर्गसुख वर्णन	X	"	
१९. कुदेवस्वरूप वर्णन	X	"	
२०. समयसारनाटक भाषा	बनारसीदास	"	ले० सं० १८६१
२१. दशलक्षणपूजा	X	"	
२२ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	संस्कृत	
२३. स्वयभूस्तोत्र	समतभद्राचार्य	"	
२४. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	
२५. देवागमस्तोत्र	समतभद्राचार्य	"	
२६ चतुर्विंशतितीर्थङ्कर स्तुति	चन्द	हिन्दी	
२७. चौबीसठाणा	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत	
२८. कर्मप्रकृति भाषा	X	हिन्दी	

५८१९. गुटका सं० १३ । पत्र स० ५३ । आ० ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X पूर्ण । वे० स० ७५९ ।

विशेष—पूजा पाठ के अतिरिक्त लघु चाणक्य राजनीति भी है ।

५८२० गुटका स० १४ । पत्र स० X । आ० १०×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण वे० स० ७६० ।

विशेष—पञ्चास्तिकाय भाषा टीका सहित है ।

५८२१ गुटका स० १५ । पत्र स० ३-१८४ । आ० ६½×५½ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ७६१ ।

५८२२. गुटका स० १६ । पत्र सं० १२७ । आ० ६३/४×४ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६२ ।

५८२३. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ७-२३० । आ० ८३/४×७१/२ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १७६३ आसोज बुदी २ । अपूर्ण । वे० स० ७६३ ।

विशेष—यह गुटका बसवा निवासी पं० दौलतरामजी ने स्वय के पढने के लिए पारसराम ब्राह्मण से लिखवाया था ।

१. नाटकसमयसार	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण १-८१
२. बनारसीविलास	"	"	८२-१०३
४. तीर्थङ्करों के ६२ स्थान	×	"	१६४-२२०
४. खण्डेलवालो की उत्पत्ति और उनके ८४ गोत्र ×		"	२२५-२३०

५८२४ गुटका सं० १८ । पत्र स० ५-३१५ । आ० ६३/४×६ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६४ ।

५८२५. गुटका स० १६ । पत्र सं० ४७ । आ० ८३/४×६१/२ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-स्तोत्र ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६५ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्रो का संग्रह है ।

५८२६. गुटका सं० २० । पत्र सं० १६५ । आ० ८×५१/२ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६६ ।

५८२७. गुटका स० २१ । पत्र स० १२८ । आ० ६×३३/४ इ० । भाषा- × । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६७ ।

विशेष—गुटका पानी मे भीगा हुआ है ।

५८२८. गुटका सं० २२ । पत्र स० ४६ । आ० ७×५१/२ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद सग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६८ ।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है ।

छ भण्डार [दि० जैन मन्दिर गोधों का जयपुर]

५८२६. गुटका सं० १। पत्र सं० १७० । आ० ५×५ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३२ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । बीच के अधिकांश पत्र गले एवं फटे हुए हैं । मुख्य पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है ।

१ नेमीश्वररास	मुनिरतनकीर्ति	हिन्दी	६५ पद्य है ।
२ नेमीश्वर की वेलि	ठक्कुरसी	,,	८८-९५
३ पचेन्द्रियवेलि	,,	,,	९६-१०१
४. चौवीसतीर्थंकररास	×	,,	१०१-१०३
५. विवेकजकडी	जिनदास	,,	१२९-१३३
६ मेघकुमारगीत	पूनो	,,	१४८-१५१
७. टडाणागीत	कविबूचा	,,	१५१-१५३
८ वारहअनुप्रेक्षा	अवधू	,,	१५३-१६०
		ले० काल सं० १६६२ जेठ बुदी १२	
९. शान्तिनाथस्तोत्र	गुणभद्रस्वामी	संस्कृत	१६०-१६३
१०. नेमीश्वर का हिंडोलना	मुनिरतनकीर्ति	हिन्दी	१६३-१६४

५८३०. गुटका सं० २ । पत्र सं० २२ । आ० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३२ ।

१ नेमिनाथमगल	लालचन्द	हिन्दी र० काल १७४४	१-११
२ राजुलपच्चीसी	×	,,	१२-२२

५८३१ गुटका सं० ३ । पत्र सं० ४-५४ । आ० ८×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३३ ।

१ प्रद्युम्नरास	कृष्णराय	हिन्दी	४-२७
२ आदिनाथविनती	कनककीर्ति	,,	३२
३. वीस तीर्थंकरो की जयमाल	हर्षकीर्ति	,,	३२-३९

४. चन्द्रगुप्त के सोहलस्वप्न	×	हिन्दी		५२-५४

इनके अतिरिक्त विनती संग्रह है किन्तु पूर्णत अशुद्ध है।

५८३२. गुटका स० ४। पत्र स० ७४। आ० ६½×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३४।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखो का सग्रह है।

५८३३ गुटका स० ५। पत्र स० ३०-७५। आ० ७×६ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल स० १७६१ माह सुदी ५। अपूर्ण। वे० स० २३४।

१. आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	अपूर्ण	३०-३२
२ सप्तव्यसनकवित्त	×	"		
३. पार्श्वनाथस्तुति	बनारसीदास	"		
४ अठारहनाते का चौढाला	लोहट	"		

५८३४. गुटका सं० ६। पत्र स० २-४२। आ० ६½×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २३४।

विशेष—शनिश्चरजी की कथा है।

५८३५. गुटका स० ७। पत्र सं० १२-६५। आ० १०½×५½ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २३५।

१. चाणक्यनीति	चाणक्य	संस्कृत	अपूर्ण	१२
२. साखी	कबीर	हिन्दी		१३-१६
३. ऋद्धिमन्त्र	×	संस्कृत		१६-२१
४. प्रतिष्ठाविधान की सामग्री एव व्रतो का चित्र सहित वर्णन		हिन्दी		६५

५८३६. गुटका स० ८। पत्र स० २-२६। आ० ६×५ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६७।

१. बलभद्रगीत	×	हिन्दी	अपूर्ण	२-६
२. जोगीरासा	पांडे जिनदास	"		७-११
३. कक्काबत्तीसी	×	"		११-१४
४. "	मनराम	"		१४-१८
५. पद- साधो छोडो कुमति अकेली	विनोदीलाल	"		१८
६. " रे जीव जगत सुपनो जान	छीहल	"		२०

७. „ भरत भूप घरही मे बरागी	कनककीर्त्ति	„	२०–२१
८. लुहरी– हो सुन जीव अरज हमारी या	सभाचन्द	„	२१–२२
९. परमार्थी लुहरी	X	„	२२–२३
१०. पद– भवि जीववदि से चन्द्रस्वामी	रूपचन्द	„	२७
११. „ जीव सिव देशड ले पधारो	सुन्दर	„	२८
१२. „ जीव मेरे जिणवर नाम भजो	X	„	२९
१३ „ योगी या तु भावणे इण देश	X	„	२९
१४. „ अरहत गुण गायो भावो मन भावो	अजयराज	„	२९–३१
१५. „ गिर देखत दालिद्र भाज्या	X	„	३१
१६. परमानन्दस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	३२–३५
१७. पद– घट पटादि नैननि गोचर जो नाटिक पुद्गल केरो	मनराम	हिन्दी	३६
१८. „ जिय तैं नरभव योही खोयो	मनराम	„	३२
१९. „ अखिया आज पवित्र भई	„		
२०. „ वर्नो वन्यो है आजि हेली नेमीसुर जिन देखीयो	जगतराम		४०
२१. „ नमो नमो जै श्री अरिहंत	„	„	४१
२२. „ माधुरी जिनवानी सुन हे माधुरी	„	„	४२–४४
२३ सिव देवी माता को आठवो	मुनि शुभचन्द्र	„	४४–४६
२४. पद–	„	„	४६–४८
२५. „	„	„	४८–४९
२६. „ हलदी चहोडी तेल चहोड्यौ छपन कुमारि का	„	„	४९–५१
२७. „ जे जदि साहणि ल्यायौ नीली घोडीया		„	५१–५३
२८. अन्य पद		„	५३–५९

५८३७. गुटका सं० ६। पत्र स० ६–१२६। आ० ६X४३ इ०। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २९८।

५८३८. गुटका सं० १० । पत्र सं० ४ । आ० ८३/४×६ इ० । विषय संग्रह । ले० काल × । वे० स० २९९ ।

१. जिनपच्चीसी	नवल	हिन्दी	१–२
२. सबोधपचासिका	द्यानतराय	”	२–४

५८३९. गुटका स० ११ । पत्र स० १०–६० । आ० ५३/४×४३/४ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । वे० स० ३०० ।

विशेष—पूजाओ का संग्रह है ।

५८४० गुटका स० ११ । पत्र स० ११५ । आ० ६३/४×६ इ० । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । वे० सं० ३०१ ।

५८४१. गुटका स० १२ । पत्र स० १३० । आ० ६३/४×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३०२ ।

५८४२. गुटका स० १३ । पत्र स० ६–१७ । आ० ६३/४×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० स० × । अपूर्ण । वे० स० ३०३ ।

५८४३. गुटका स० १४ । पत्र स० २०१ । आ० ११×५ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०४

विशेष—पूजा स्तोत्र सग्रह है ।

५८४४. गुटका सं० १५ । पत्र स० ७७ । आ० १०×९ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले० काल स० १९०३ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वें० सं० ३०५ ।

विशेष—इखलाक मह सनीन पुस्तक को हिन्दी भाषा मे लिखा गया है । मूल पुस्तक फारसी भाषा मे है । छोटी २ कहानिया हैं ।

५८४५ गुटका सं० १६ । पत्र स० १२६ । आ० ६×४ इ० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३०६

विशेष—रामचन्द (कवि बालक) कृत सीता चरित्र है ।

५८४६. गुटका सं० १७ । पत्र स० ३–२६ । आ० ४×२ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४०७ ।

१. देवपूजा	सस्कृत	अपूर्ण
२. थूलभद्रजी का रासो	हिन्दी	१०–२१
३. नेमिनाथ राजुल का बारहमासा	”	२१–६६

५८४७ गुटका स० १८ । पत्र स० १६० । आ० ८३X६ इ० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स ३०८

विशेष —पत्र स० १ से ३८ तक सामान्य पाठो का सग्रह है ।

१. सुन्दर शृङ्गार	कविराजसुन्दर	हिन्दी	३७४ पद्य है	३६–८०
२ विहारीसतसई टीका सहित	X	"	अपूर्ण	८१–८५
			७४ पद्यो की ही टीका है ।	
३ वखत विलास	X	"		६६–१०३
४. वृहत्घटाकर्णकल्प	कवि भोगीलाल	"		१०४–६६०

विशेष—प्रारम्भ के ८ पत्र नही हैं आगे के पत्र भी नही हैं ।

इति श्री कछवाह कुलभवननरुकासी राउराजा वख्तावरसिंह आनन्द कृते कवि भोगीलाल विरचिते वखत विलासे विभाव वर्णनो नाम तृतीय विलास ।

पत्र ८–५६ नायक नायिका वर्णन ।

इति श्री कछवाहा कुलभूषननरुकासी, राउराजा वख्तावर सिंह आनन्द कृते भोगीलाल कवि विरचिते वखतविलासनायकवर्णन नामाष्टको विलासः ।

५८४८ गुटका स० १६ । पत्र स० ५४ । आ० ८X६ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३०६ ।

विशेष—खुशालचन्द कृत धन्यकुमार चरित है पत्र जीर्ण है किन्तु नवीन है ।

५८४६. गुटका स० २० । पत्र स० २१ । आ० ६X६ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३१० ।

१ ऋषिमडलपूजा	सदासुख	हिन्दी	१–१०
२ अकम्पनाचार्यादि मुनियो की पूजा	X	"	१६
३ प्रतिष्ठानामावलि	X	"	२१

५८५०. गुटका स० २० (क) । पत्र स० १०२ । आ० ६X६ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३११ ।

५८५१ गुटका स० २१ । पत्र सं० २८ । आ० ८३X६३ इ० । ले० काल स० १६३७ श्रावण बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ३१३ ।

विशेष—मडलाचार्य केशवसेन कृष्णसेन विरचित रोहिणी व्रत पूजा है ।

५८५२. गुटका स० २२। पत्र स० १६। आ० ११×३ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१४।

वज्रदन्तचक्रवर्ति का बारहमासा	×	हिन्दी	६
२. सीताजी का बारहमासा	×	"	६-१२
३. मुनिराज का बारहमासा	×	"	१३-१६

५८५३. गुटका स० २३। पत्र स० २३। आ० ८½×६ इ०। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३१५।

विशेष—गुटके मे अष्टाह्निकाव्रतकथा दी हुई है।

५८५४. गुटका सं० २४। पत्र स० १५। आ० ८½×६ इ०। भाषा-हिन्दी विषय-पूजा। ले० काल स० १९८३ पौष बुदी १। पूर्ण। वे० स० ३१६।

विशेष—गुटके मे ऋषिमडलपूजा, अनन्तव्रतपूजा, चौबीसतीर्थंकर पूजादि पाठो का सग्रह है।

५८५५. गुटका सं० २५। पत्र स० ३५। आ० ८×६ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३१७।

विशेष—अनन्तव्रतपूजा तथा श्रुतज्ञानपूजा है।

५८५६. गुटका स० २६। पत्र स० ५६। आ० ७×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। ले० काल सं० १९२१ माघ बुदी १२। पूर्ण। वे० स० ३१८।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा है।

५८५७. गुटका स० २७। पत्र स० ५३। आ० ६×५ इ०। ले० काल स० १९५४। पूर्ण। वे० स० ३१६।

विशेष— गुटके मे निम्न रचनायें उल्लेखनीय है।

१. धर्मचाह	×	हिन्दी	२
२. वदनाजखडी	विहारीदास	"	३-४
३. सम्मेदशिखरपूजा	गगादास	सस्कृत	५-२०

५८५८ गुटका स० २८। पत्र स० १६। आ० ८×६ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२०।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र उमास्वामि कृत है।

५८५६. गुटका स० २६। पत्र स० १७६। आ० ६×६ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२१।

विशेष—विहारीदास कृत सतसई है। दोहा सं० ७०७ है। हिन्दी गद्य पद्य दोनो मे ही अर्थ है टीका-काल सं० १७८५। टीकाकार कवि कृष्णदास हैं। आदि अन्तभाग निम्न है।—

प्रारम्भ —   अथ विहारी सतसई टीका कवित्त बध लिख्यते.—

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरी सोइ।

जातन की झाई परै, स्याम हरित दुति होइ ॥

टीका—यह मगलाचरन है तहा श्री राधा जू की स्तुति ग्रंथ कर्त्ता कवि करतु है। तहा राधा और छटे याते जा तन की झाई परै स्याम हरित दुति होइ या पद तें श्री वृषभान सुता को प्रतीति हुई—

कवित्त—

जाकीप्रभा अवलोकत ही तिहु लोक की सुन्दरता गहि वारि।

कृष्ण कहै सरसी रुहे नैंननि कौ नामु यहा सुद मगल कारी ॥

जातन की झलकै झलकै हरित द्युति स्याम की होत निहारी।

श्री वृषभान कुमारि कृपा कैं सुराधा हरो भव वाधा हमारी ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—   माथुर विप्र ककोर कुल लह्यौ कृष्ण कवि नाउ।

सेवकु हौं सब कवितु कौ वसतु मधुपुरी गाउ ॥ २४ ॥

राजा मल्ल कवि कृष्ण पर ढरयौ कृपा के ढार।

भाति भांति विपदा हरौ दीनी दरवि अपार ॥ २५ ॥

एक दिना कवि सौ नृपति कही कही को जात।

दोहा दोहा प्रति करौ कवित बुद्धि अवदात ॥ २६ ॥

पहले हूं मेरे यह हिय मैं हुतौ विचारु।

करौ नाइका भेद कौ ग्रंथ बुद्धि अनुसार ॥ २७ ॥

जे कीनै पूरव कवितु सरस ग्रंथ सुखदाइ।

तिनहिं छाडि मेरे कवित को पढि है मनुलाइ ॥ २८ ॥

जानिय हैं अपनै हियें कियो न ग्रंथ प्रकास।

नृप को आइस पाइकै हिय मे भये हुलास ॥ २९ ॥

करे सात सै दोहरा सु कवि विहारीदास।

सब कोऊ तिनको पढै गुनै सुने सविलास ॥ ३० ॥

बडौ भरोसो जानि मै गह्यौ आसरो आइ।

यातें इन दोहानु सग दीनै कवित लगाइ ॥ ३१ ॥

उक्ति जुक्ति दोहानु की अक्षर जोरि नवीन।

करै सातसौ कवित मे सीखै सकल प्रवीन ।। ३२ ।।

मै अत ही दोढ्यौ करौ कवि कुल सरल सुभाइ।

भूल चूक कछु होइ सो लीजौ समझि वनाइ ।। ३३ ।।

सत्रह सतसै आगरे असी वरस रविवार।

कातिक वदि चोथि भये कवित सकल रससार ।। ३४ ।।

इति श्री विहारीसतसई के दोहा टीका सहित संपूर्ण।

सतसै ग्रथ लिख्यौ श्री राजा श्री राजा साहिवजी श्रीराजामल्लजी कौं। लेखक खेमराज श्री वास्तव वासी मौजे अजनगीई के अगनै पछोर के। मिती माह सुदी ७ बुद्धवार सवत् १७६० मुकाम प्रवेस जयपुर।

५८६०. गुटका स० ३० । पत्र सं० १६८ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० ३५२ ।

१. तत्वार्थसूत्रभाषा	कनककीर्त्ति	हिन्दी ग०	अपूर्ण
२. शालिभद्रचोपई	जिनसिंह सूरि के शिष्य मतिसागर	" प० र० काल १६७८	"

ले० काल सं० १७४३ भादवा सुदी ४। अजमेर प्रतिलिपि हुई थी।

३. स्फुट पाठ	×	"	

५८६१. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ६० । आ० ७×५ इ० । भाषा—सस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३२३ ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है।

५८६२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १७४ । आ० ८×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२४ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है। तथा ८८ हिन्दी पद नैन (सुखनयनानन्द) के हैं।

५८६३ गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ७५ । आ० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२५ ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चतुर्विंशतिजिनपूजा है।

५८६४. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×६ इ० । विषय-पूजा । ले० काल सं० १८६१ श्रावण सुदी ११ । वे० स० ३२६ ।

विशेष—चौवीस तीर्थंकर पूजा (रामचन्द्र) एवं स्तोत्र सग्रह है। हिण्डौन के जती रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

५८६५. गुटका स० ३५ । पत्र स० १७ । आ० ६X७ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३२७ ।

विशेष—पावागिरि सोनागिर पूजा है ।

५८६६. गुटका सं० ३६ । पत्र स० ७ । आ० ८X५३ इ० । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा पाठ एव ज्योतिषपाठ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३२८ ।

१. वृहत्षोडशकारण पूजा	X	सस्कृत	
२. चाणक्यनीति शास्त्र	चाणक्य	"	
३ शालिहोत्र	X	सस्कृत	अपूर्ण

५८६७ गुटका स० ३७ । पत्र स० ३० । आ० ७X६ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३२९ ।

५८६८. गुटका सं० ३८ । पत्र स० २४ । आ० ५X४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३३० ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है । इसी मे प्रकाशित पुस्तकें भी बन्धी हुई हैं ।

५८६९. गुटका सं० ३९ । पत्र स० ४४ । आ० ६X४ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३३१ ।

विशेष—देवसिद्धपूजा आदि दी हुई हैं ।

५८७० गुटका स० ४० । पत्र स० ८० । आ० ४X६३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय आयुर्वेद । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३३२ ।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे दिये हुये हैं पदार्थों के गुणो का वर्णन भी है ।

५८७१. गुटका स० ४१ । पत्र स० ७१ । आ० ७X५३ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३३३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८७२. गुटका सं० ४२ । पत्र स० ८६ । आ० ७X५३ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल स० १८४६ । अपूर्ण । वे० स० ३३४ ।

विशेष—विदेह क्षेत्र के वीस तीर्थंकरो की पूजा एव अढाई द्वीप पूजा का सग्रह है । दोनो ही अपूर्ण हैं । जौहरी काला ने प्रतिलिपि की थी ।

५८७३ गुटका सं० ४३। पत्र स० २८। आ० ८३/४×७ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३३५।

५८७४ गुटका सं० ४४। पत्र स० ५८। आ० ६×५ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३३६।

विशेष—हिन्दी पद एवं पूजा सग्रह है।

५८७५ गुटका स० ४५। पत्र स० १०८। आ० ८३/४×३३/४ इ०। भाषा–सस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा पाठ। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३३७।

विशेष—देवपूजा, सिद्धपूजा, तत्वार्थसूत्र, कल्याणमन्दिरस्तोत्र, स्वयभूस्तोत्र, दशलक्षण, सोलहकारण आदि का सग्रह है।

५८७६. गुटका स० ४६। पत्र स० ५५। आ० ८×५ इ०। भाषा–हिन्दी सस्कृत। विषय-पूजा पाठ ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३३८।

विशेष—तत्वार्थसूत्र, हवनविधि, सिद्धपूजा, पार्श्वपूजा, सोलहकारण दशलक्षण पूजाए हैं।

५८७७. गुटका स० ४७। पत्र स० ६६। आ० ७×५ इ०। भाषा हिन्दी। विषय–कथा। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३३६।

१. जेष्ठजिनवरकथा	खुशालचन्द	हिन्दी	१–६
		र० काल सं० १७८२ जेठ सुदी ९	
२ आदित्यव्रतकथा	"	हिन्दी	६१–१६
३ सप्तपरमस्थान	"	"	१९–२६
४ मुकुटसप्तमीव्रतकथा	"	"	२६–३०
५ दशलक्षणव्रतकथा	"	"	३०–३४
६ पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	"	"	३४–४०
७ रक्षाविधानकथा	"	सस्कृत	४१–४५
८ उमेश्वरस्तोत्र	"	"	४६–६६

५८७८ गुटका स० ४८। पत्र स० १२८। आ० ६×५ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल स० १६९३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३४०।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है।

५८७६. गुटका सं० ४६ । पत्र स० ४६ । ग्रा० ५×५ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० ३४१ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१ जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी	१-१३
२. ऋषिमण्डलस्तोत्र	गौतमस्वामी	सस्कृत	१४-२०
३ ककावत्तीसी	नन्दराम	„ ले० काल १८८८	३४-४२

५८८०. गुटका सं० ५० । पत्र स० २५४ । ग्रा० ५×५ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा पाठ ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४२

५८८१. गुटका स० ५१ । पत्र स० १६३ । ग्रा० ७३/४×४३/४ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल सं० १८८२ । पूर्ण । वे० स० ३४३ ।

विशेष—गुटके के निम्न पाठ मुख्यत. उल्लेखनीय हैं ।

१. नवग्रहगर्भितपार्श्वस्तोत्र	×	प्राकृत	१-२
२ जीवविचार	ग्रा० नेमिचन्द्र	„	३-८
३. नवतत्त्वप्रकरण	×	„	६-१४
४. चौवीसदण्डकविचार	×	हिन्दी	१५-६८
५. तेईस बोल विवरण	×	„	६६-६५

विशेष— दाता की कसौटी दुरभिक्ष परे जान जाइ ।
सूर की कसौटी दोई ग्रनी जुरे रन में ।।
मित्र की कसौटी मामलो प्रगट होय ।
हीरा की कसौटी है जौहरी के घन में ।।
कुल को कसौटी ग्रादर सनमान जानि ।
सोने की कसौटी सराफन के जतन मे ।।
कहै जिननाम जैसी वस्त तैसी कीमति सौं ।
साघु की कसौटी है दुष्टन के बीच मे ।।

१. विनती	समयसुन्दर	हिन्दी	१०३-१०३

२. द्रव्यसग्रहभाषा	हेमराज	"	११७-१४१

र० काल स० १७३१ माघ सुदी १० । ले० काल सं० १८७६ फाल्गुन सुदी ६ ।

३. गोविंदाष्टक	शङ्कराचार्य	हिन्दी	१४४-१४५
४. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	" ले० काल १८८१	१४६-१४७
५. कृपणपच्चीसी	विनोदीलाल	" " " १८८२	१४७-१५४
६ तेरापन्थ बीसपन्थ भेद—	×	"	१५५-१६३

५८८२. गुटका स० ५२ । पत्र स० ३५ । आ० ७३/४×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८५ कार्तिक बुदी १३ । वे० स० ३४४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । प० सदासुखजी ने प्रतिलिपि की थी ।

५८८३. गुटका स० ५३ । पत्र सं० ८० । आ० ६३/४×५३/४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४५ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५८८४. गुटका सं० ५४ । पत्र स० ४४ । आ० ६३/४×६ इ० । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । वे० सं० ३४६

विशेष—भूधरदास कृत चर्चा समाधान तथा चन्द्रसागर पूजा एव शान्तिपाठ है ।

५८८५ गुटका स० ५५ । पत्र स० २० । आ० ६३/४×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा पाठ ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४७ ।

५८८६ गुटका स० ५६ । पत्र स० ६८ । आ० ६३/४×५३/४ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स ३४८ ।

५८८७. गुटका सं० ५७ । पत्र स० १७ । आ० ६३/४×५३/४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४६ ।

विशेष—रत्नत्रय व्रतविधि एव कथा दी हुई हैं ।

५८८८. गुटका सं० ५८ । पत्र स० १०४ । आ० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५० ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

५८८६. गुटका स० ५६ । पत्र स० १२६ । आ० ६३/४×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३५१ ।

विशेष—रत्नविनिश्चय नामक ग्रंथ है ।

५८६० गुटका स० ६० । पत्र स० ११३ । आ० ४×३ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० ३५२ ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र एव बनारसी विलास के कुछ पद एव पाठ हैं ।

५८६१. गुटका सं० ६१ । पत्र स० २२३ । आ० ४×३ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८६२ गुटका सं० ६२ । पत्र स० २०८ । आ० ६×४½ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५४ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्र एव पूजा पाठो का संग्रह है —

५८६३ गुटका सं० ६२ । पत्र सं० २६३ । आ० ६½×६ इ० । भाषा–हिन्दी ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५५ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

१. हनुमतरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	२४-६७
		ले० काल स० १८६० फागुण बुदी ७ ।	
२. शालिभद्रसज्झाय	×	हिन्दी	६८–६६
३. जलालगाहाणी की वार्ता	×	”	१०१–१४७
		ले० काल १८५६ माह बुदी ३	

विशेष—कोठ्यारी प्रतापसिंह पठनार्थ लिखी हलसूरिमध्ये ।

४ तत्रसार	×	”	पद्य स० ४८	१४८–१५२
५ चन्दकुंवर की वार्ता	×	”		१५२–१६४
६ घघरनिसाणी	जिनहर्ष	”		१६५–१६६
७. सुदयवच्छसालिगा री वार्ता	×	”	अपूर्ण	१७०–२६३

५८६४ गुटका सं० ६४ । पत्र स० ६७ । आ० ६½×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । पूर्ण । ले० काल × । वे० सं० ३५६ ।

विशेष—नवमङ्गल विनोदीलाल कृत एव पद स्तुति एव पूजा संग्रह है ।

५८६५ गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ६३ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५७ ।

विशेष—सिद्धचक्रपूजा एवं पद्मावती स्तोत्र है ।

५८६६. गुटका स० ६६ । पत्र स० ४५ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५८ ।

५८६७. गुटका स० ६७ । पत्र स० ४६ । आ० ५½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५६ ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, पचमगल, देवपूजा आदि का संग्रह है ।

५८६८. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ६४ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-स्तोत्र सग्रह ले० काल × । वे० स० ३६० ।

५८६९. गुटका स० ६९ । पत्र सं० १५१ । आ० ७ ४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६१ ।

विशेष—मुख्यत: निम्न पाठो का सग्रह है ।

१, सत्तरभेदपूजा	साधुकीर्ति	हिन्दी		१-१४
२. महावीरस्तवनपूजा	समयसुन्दर	"		१४-१६
३ धर्मपरीक्षा भाषा	विशालकीर्ति	"	ले० काल १८६४	३०-१५१

विशेष—नागपुर मे प० चतुर्भुज ने प्रतिलिपि की थी ।

५९००. गुटका स० ७० । पत्र स० ५६ । आ० ५½×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८०२ पूर्ण । वे० स० ३६२ ।

१ महादण्डक	×	हिन्दी	३-५३

ले० काल स० १८०२ पौष बुदी १३ ।

विशेष —उदयविमल ने प्रतिलिपि की थी । शिवपुरी मे प्रतिलिपि की गई थी ।

२ बोल	×	"	५४-५६

५९०१. गुटका सं० ७१ । पत्र स० १२३ । आ० ६½×४ इ० भाषा संस्कृत हिन्दी । विषय-स्तोत्रसग्रह ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६३ ।

५६०२. गुटका स० ७२ । पत्र स० १५७ । आ० ४X३ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३६४ ।

विशेष—पूजा पाठ व स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

५६०३ गुटका सं० ७३ । पत्र सं० ६६ । आ० ४X३ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ल० काल X । पूर्ण । वे० स० ३६५ ।

१ पूजा पाठ सग्रह	X	संस्कृत हिन्दी	१-४४
२ आयुर्वेदिक नुसखे	X	हिन्दी	४५-६६

५६०४. गुटका स० ७४ । पत्र स० ५० । आ० ५½X५½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण वे० स० ३६६ ।

विशेष—प्रारम्भ मे पूजा पाठ तथा नुसखे दिये हुये हैं तथा अन्त के १७ पत्रो में सवत् १०३३ से भारत के राजाओ का परिचय दिया हुआ है ।

५६०५ गुटका सं० ७५ । पत्र सं० ६० । आ० ५½X५½ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३६७ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

५६०६ गुटका स० ७६ । पत्र स० १८-१३७ । आ० ७X३½ इ० । भाषा हिन्दी सस्कृत । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३६८ ।

विशेष—प्रारम्भ मे कुछ मन्त्र हैं तथा फिर आयुर्वेदिक नुसखे दिये हुये हैं ।

५६०७. गुटका सं० ७७ । पत्र स० २७ । आ० ६½X४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण वे० स० ३६९ ।

१ ज्ञानचिन्तामणि	मनोहरदास	हिन्दी	१२६ पद्य हैं	१-१९
२. वज्रनाभिचक्रवर्ती की भावना	भूधरदास	"		१९-२३
३ सम्मेदगिरिपूजा	X	"	अपूर्ण	२२-२७

५६०८. गुटका सं० ७८ । पत्र स० १२० । आ० ६X३½ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल X । अपूर्ण वे० स० ३७१ ।

विशेष—नाममाला तथा लब्धिसार आदि मे से पाठ है ।

५६०६. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० ३० । आ० ६३/४×४३/४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० ८१ । पूर्ण । वे० स० ३७१ ।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत प्रद्युम्नरास है।

५६१०. गुटका सं० ८० । पत्र स० ५४-१३६ । आ० ६३/४×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३७२ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

१ श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द	प्राकृत	अपूर्ण	५४-७९
२. मूलसघ की पट्टावलि	×	सस्कृत		८०-८३
३ गर्भषडारचक्र	देवनन्दि	"		८४-९०
४. स्तोत्रत्रय	×	संस्कृत		९०-१०५
	एकीभाव, भक्तामर एवं भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र हैं।			
५. वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनन्दि	"	१० पद्य हैं	१०५-१०६
६ पार्श्वनाथस्तवन	राजसेन [वीरसेन के शिष्य]	"	६ "	१०६-१०७
७. परमात्मराजस्तोत्र	पद्मनन्दि	"	१४ "	१०७-१०९
८. सामायिक पाठ	अमितिगति	"		११०-११३
९. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत		११३-११६
१०. आराधनासार	"	"		१२४-१३४
११. समयसारगाथा	आ० कुन्दकुन्द	"		१३४-१३८

५६११. गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २-५६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७३० भादवा सुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ३७४ ।

विशेष—कामशास्त्र एव नायिका वर्णन है।

५६१२. गुटका सं० ८२ । पत्र स० ९३/४×६ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३७४ ।

विशेष—पूजा तथा कथाओ का संग्रह है। अन्त मे १०९ से ११३ तक १८ वी शताब्दी का (१७०१ से १७५९ तक) वर्षा अकाल युद्ध आदि का योग दिया हुआ है।

५६१३. गुटका सं० ८३ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । जीर्ण ।

१ कृष्णरास	×	हिन्दी	पद्य स० ७९ है	१-१९

महापुराण के दशम स्कन्ध मे से लिया गया है।

२. कालीनागदमन कथा	×	,,	१९-२६
३. कृष्णप्रेमाष्टक	×	,,	२६-२८

५९१४. गुटका सं० ८४। पत्र स० १५२-२४१। आ० ६¾×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३७६।

विशेष—वैद्यकसार एव वैद्यवल्लभ ग्रन्थो का सग्रह है।

५९१५. गुटका स० ८५। पत्र स० ३०२। आ० ८×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। मपूर्ण। वे० स० ३७७।

विशेष—दो गुटको का एक गुटका कर दिया है। निम्न पाठ मुख्यत उल्लेखनीय है।

१. चिन्तामणिजयमाल	ठक्कुरसी	हिन्दी	११ पद्य हैं	२०-२२
२. वेलि	छीहल	,,		२२-२५
३. टडाणागीत	बूचा	,,		२५-२८
४. चेतनगीत	मुनिसिंहनन्दि	,,		२८-३०
५. जिनलाड्डू	ब्रह्मरायमल्ल	,,		३०-३१
६ नेमीश्वरचोमासा	सिंहनन्दि	,,		३२-३३
७ पंथीगीत	छीहल	,,		४१-४२
८ नेमीश्वर के १० भव	ब्रह्मधर्मरुचि	,,		४३-४७
९ गीत	कवि पल्ह	,,		४७-४८
१० सीमधरस्तवन	ठक्कुरसी	,,		४९-५०
११ आदिनाथस्तवन	कवि पल्ह	,,		४९-५०
१२ स्तोत्र	भ० जिनचन्द्र देव	,,		५०-५१
१३ पुरन्दर चौपई	ब्र० मालदेव	,,		५२-८७

ले० काल स० १६०७ फागुण बुदी ९।

१४ मेघकुमार गीत	पूनो	,,	१२-१५
१५ चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	ब्रह्मरायमल्ल	,,	१६-१९

१६. बलिभद्र गीत	अभयचन्द	"	३०-३६
१७ भविष्यदत्त कथा	ब्रह्मरायमल्ल	"	४०-८५
१८. निर्दोषसप्तमीव्रत कथा	"	"	
		ले० काल १६४३ आसोज १३ ।	
१६. हनुमन्तरास	"	"	अपूर्ण

५६१६. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० १८८ । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा एवं स्तोत्र । ले० काल सं० १८४२ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३७८ ।

५६१७ गुटका सं० ८७ । पत्र सं० ३०० । आ० ५१/२×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों के अतिरिक्त रूपचन्द, बनारसीदास तथा विनोदीलाल आदि कवियों कृत हिन्दी पाठ है ।

५६१८. गुटका सं० ८८ । पत्र सं० ५८ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८० ।

विशेष—भगतराम कृत हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५६१६. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० २-२६६ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामि	संस्कृत	१८-२०
२. बारह अनुप्रेक्षा	×	प्राकृत ४७ गाथायें हैं ।	२१-२५
३. भावनाचतुर्विंशति	पद्मनन्दि	संस्कृत	
४. अन्य स्फुट पाठ एवं पूजायें	×	संस्कृत हिन्दी	

५६२० गुटका सं० ६० । पत्र सं० ३-६१ । आ० ८×५१/२ इ० । भाषा हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८२ ।

विशेष—नवलराम के पदों का संग्रह है ।

५६२१ गुटका सं० ६१ । पत्र सं० १४-४६ । आ० ८१/२×५१/२ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८३ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पाठों का संग्रह है ।

५६२२. गुटका स० ६२ । पत्र सं० २६ । आ० ६X५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३८४ ।

विशेष—सम्मेदगिरि पूजा है ।

५६२३. गुटका स० ६३ । पत्र स० १२३ । आ० ६X५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३८५ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का संग्रह है ।

१. चेतनचरित	भैया भगवतीदास	हिन्दी	१-१०
२. जिनसहस्रनाम	आशाधर	सस्कृत	११-१५
३. लघुतत्त्वार्थसूत्र	X	"	३३-३४
४. चौरासी जाति की जयमाल	X	हिन्दी	३६-४०
५. सोलहकारणकथा	ब्रह्मज्ञानसागर	हिन्दी	७१-७४
६. रत्नत्रयकथा	"	"	७४-७६
७. आदित्यवारकथा	भाऊकवि	"	७६-८६
८. दोहाशतक	रूपचन्द	"	६४-६६
९. त्रेपनक्रिया	ब्रह्मगुलाल	"	६७-८६
१०. अष्टाह्निका कथा	ब्रह्मज्ञानसागर	"	१००-१०४
११ अन्यपाठ	X	"	१०५-१२३

५६२४. गुटका सं० ६४ । पत्र स० ७-७६ । आ० ५X३½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३८६ ।

विशेष—देवाब्रह्म के पदो का सग्रह है।

५६२५ गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ३-६६ । आ० ९X५½ इ० । भाषा हिन्दी ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३८७ ।

१ भविष्यदत्तकथा	ब्रह्मरायमल	हिन्दी	अपूर्ण	३-७०
		ले० काल स० १७६० कार्तिक सुदी १२		
२ हनुमतकथा	"	"		७१-६६

५६२६. गुटका स० ६६ । पत्र स० ८६ । आ० ६X६ इ० । भाषा-सस्कृत । विषय-मत्र शास्त्र । ले० काल स० १८६५ । पूर्ण । वे० सं० ३८८ ।

१ भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमन्त्रयन्त्रसहित	मानतुंगाचार्य	सस्कृत	१-४३
२. पद्मावतीकवच	X	"	४३-५२
३. पद्मावतीसहस्रनाम	X	"	५२-६३
४ पद्मावतीस्तोत्र बीजमत्र एव साधन विधि	X	"	६३-८६
५ पद्मावतीपटल	X	"	८६-८७
६. पद्मावतीदंडक	X	"	८७-८९

५९२७. गुटका सं० ९७ । पत्र स० ९-११३ आ० ६X४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३८९ ।

१. स्फुटवार्त्ता	X	हिन्दी	अपूर्ण	९-२२
२. हरिचन्दशतक	X	"		२३-६६
३. श्रीध्रुवचरित	X	"		६७-९३
४ मल्हारचरित	X	"	अपूर्ण	९३-११३

५९२८. गुटका सं० ९८ । पत्र सं० ५३ । आ० ५X५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३९० ।

विशेष—स्तोत्र एव तत्वार्थसूत्र आदि सामान्य पाठो का सग्रह है ।

५९२९. गुटका सं० ९९ । पत्र स० ९-१२६ । आ० ८½X५ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३९१ ।

५९३०. गुटका स० १०० । पत्र सं० ८८ । आ० ८X५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३९२ ।

१. आदित्यवारकथा	X	हिन्दी	१४-३४
२. पक्की स्याही बनाने की विधि	X	"	३५
३. सकट चौपई कथा	X	"	३८-४३
४. कक्का बत्तीसी	X	"	४५-४७
५. निरंजन शतक	X	"	५१-८४

विशेष—लिपि विकृत है पढने मे नही आती ।

५६३१ गुटका सं० १०१। पत्र स० २३। आ० ६½×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। सं० ३६३।

विशेष—कवि सुन्दर कृत नायिका लक्षण दिया हुआ है। ४२ से १५० पद्य तक है।

५६३२ गुटका सं० १०२। पत्र स० ७८-१०१। आ० ८×७ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-सग्रह। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६४।

१ चतुर्दशी कथा   डालूराम   हिन्दी र० काल १७६५ प्र जेठ सुदी १०

ले० काल स० १७६५ जेठ सुदी १४। अपूर्ण।

विशेष—२६ पद्य से २३० पद्य तक हैं।

मध्य भाग—

माता ऐसो हठ मति करौ, सजम विना जीव न निसतरै।
काकी माता काको वाप, आतमराम अकेलो आप॥ १७६॥

दोहा—
आप देखि पर देखिये, दुख सुख दोउ भेद।
मातम ऐक विचारिये, भरमन कहु न छेद॥ १७७॥

मगलाचार कवर को कीयो, दिख्या लेण कवर जब गयो।
सुवामी आगै जोड्या हाथ, दीख्य दोह मुनीसुर नाथ॥ १७८॥

अन्तिमपाठ—

बुधि सारु कथा कही, राजधाटी मुलतान।
करम कटक मैं देहरौं बैठो पचै सु जाण॥ २२८॥

सतरासै पचावनै प्रथम जेठ सुदि जानि।
सोमवार दसमी मानी पूरण कथा बखानि॥ २२६॥

खडेलवाल बोहरा गोत, आवावती मैं वास।
डालु कहै मति मौ हंसौ, हू सवन कौ दास॥ २३०॥

महाराजा बीसनसिंहजी आया, साह्या आल की लार।
जो या कथा पढै सुणै, सो पुरिष मैं सार॥ २३१॥

चौदश की कथा सपूर्ण। मिती प्रथम जेठ सुदी १४ सवत् १७६५

२ चौदशकीजयमाल   ×   हिन्दी   ९३-९४

३ तारातवोलकी कथा   ×   ,, ले० काल स० १७६३ ९४-९६

४. नवरत्न कवित्त	बनारसीदास	"		९७-९६
५. ज्ञानपच्चीसी	"	"		९८-१००
६. पद	X	"	अपूर्ण	१००-१०१

५६३३. गुटका स० १०३ । पत्र सं० १०-५५ । आ० ८¾X६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल अपूर्ण । वे० स० ३९५ ।

विशेष—महाराजकुमार इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया है ।

५६३४. गुटका स० १०४ । पत्र स० ७ । आ० ६X४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पू वे० स० ३९७ ।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है ।

ज भण्डार [दि० जैन मन्दिर यति यशोदानन्दजी जयपुर]

५६३५ गुटका सं० १ । पत्र स० १४० । आ० ७½X५½ इ० । लिपि काल X ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का संग्रह है ।

१. देहली के वादशाहो की नामावलि एवं परिचय	X	हिन्दी ले० काल स० १८५२ जेठ बुदी ५ ।		१-१९
२. कवित्तसग्रह	X	"		२०-४४
३ शनिश्चर की कथा	X	"	गद्य	४५-६७
४. कवित्त एवं दोहा संग्रह	X	"		६८-९४
५. द्वादशमाला	कवि राजसुन्दर	"		९५-९९

ले० काल १८५९ पौष बुदी ५ ।

विशेष—रणथम्भौर मे लक्ष्मणदास पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

५६३६ गुटका स० २ । पत्र सं० १०६ । आ० ५X४¾ इ० ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

५६३७. गुटका स० ३ । पत्र स० ३-१५३ । आ० ६X५½ इ० ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का संग्रह है ।

१ गीत-धर्मकीर्ति	X	हिन्दी	३-४

(जिणवर ध्याइयडावे, मनि चित्या फलु पाया)

२ गीत-(जिणवर हो स्वामी चरण मनाय, सरसति स्वामिणि वीनऊ हो)

१. पुष्पाञ्जलिजयमाल	X	अपभ्रंश	७–२४
२. लघुकल्याणपाठ	X	हिन्दी	२४–२६
३ तत्वसार	देवसेन	प्राकृत	४६–६०
४. आराधनासार	"	"	८३–१००
५. द्वादशानुप्रेक्षा	लक्ष्मीसेन	"	१००–१११
६ पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मनन्दि	सस्कृत	१११–११२
७ द्रव्यसग्रह	आ० नेमिचन्द	प्राकृत	१४९–१५१

५६३८. गुटका स० ४ । पत्र स० १८६ । आ० ६X८ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८४२ आषाढ सुदी १५ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१. पार्श्वपुराण	भूधरदास	हिन्दी		१–१०२
२. एकसोगुनहत्तरजीव वर्णन	X	"	१८४२	१०४
३ हनुमन्त चौपाई	ब्र० रायमल	"	१८२२ आषाढ सुदी ३	"

५६३९ गुटका स० ५ । पत्र स० १४० । आ० ७३/४X४ इ० । भाषा-सस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

५६४०. गुटका स० ६ । पत्र स० २१३ । आ० ६X५ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल X ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

५६४१ गुटका स० ७ । पत्र स० २२० । आ० ६X७१/२ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।

विशेष—प० देवीचन्दकृत हितोपदेश (संस्कृत) का हिन्दी भाषामे अर्थ दिया हुआ है । भाषा गद्य और पद्य दोनो मे है । देवीचन्द ने अपना कोई परिचय नही लिखा है । जयपुर मे प्रतिलिपि की गई थी । भाषा साधारण है —

अब तेरी सेवा मे रहि हो । ऐसे कहि गगदत्त कुवा महि ते नीकरो ।

दोहा—छूटो काल के गाल मे अब कहौ काल न आय ।
ओ नर अरहट मालतैं नयो जनम तन पाय ॥

वार्त्ता—साप की दाढ मैं तै छूटौ अरु कही नयो जनम पायो । कूवै मे तै बाहरि आय यो कही वहा साप किलनेक वेर तो बाट देखी । न आयौ जब आतुर भयो । तब यो कही मे कहा कीयो । जदपि कुवा के मेढक सब खायो पै जब लग गंगादत्त को न खायो तब लग रञ्च कछु खायो नही ।

५६४२. गुटका सं० ८। पत्र सं० १६६-४३०। आ० ६×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—बुलाकीदास कृत पाडवपुराण भाषा है।

५६४३ गुटका सं० ६। पत्र स० १०१। आ० ७½×६½ इ०। विषय-संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—स्तोत्र एव सामान्य पाठो का सग्रह है।

५६४४ गुटका सं० १०। पत्र स० ११८। आ० ८½×६ इ०। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सग्रह। ले० काल सं० १८६० माह बुदी ५। पूर्ण।

१ सुन्दरविलास	सुन्दरदास	हिन्दी	१ से ११६

विशेष—ब्राह्मण चतुर्भुज खडेलवाल ने प्रतिलीपि की थी।

२ बारहखडी	दत्तलाल	"	

विशेष—६ पद्य हैं।

५६४५. गुटका स० ११। पत्र स० ४२। आ० ८½×६ इ०। भाषा-हिन्दी पद्य। ले० काल स० १६०८ चैत बुदी ६। पूर्ण।

विशेष—वृंदसतसई है जिसमे ७०१ दोहे हैं। दसकत चीमनलाल कालख हाला का।

५६४६ गुटका सं० १२। पत्र स० २०। आ० ८×६½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १६६० आसोज बुदी ६। पूर्ण।

विशेष—पचमेरु तथा रत्नत्रय एव पार्श्वनाथस्तुति है।

५६४७ गुटका सं० १३। पत्र सं० १५५। आ० ८×६½ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १७६० ज्येष्ठ सुदी १। अपूर्ण।

निम्नलिखित पाठ हैं—

कल्याणमदिर भाषा, श्रीपालस्तुति, अठारा नाते का चौढाल्या, भक्तामरस्तोत्र, सिद्धपूजा, पार्श्वनाथ स्तुति [पद्मप्रभदेव कृत] पचपरमेष्ठी गुणमाल, शान्तिनाथस्तोत्र आदित्यवार कथा [भाउकृत] नवकार रासो, जोगी रासो, भ्रमरगीत, पूजाष्टक, चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा, नेमि रासो, गुरुस्तुति आदि।

बीच के १०० से १३२ पत्र नही हैं। पीछे काटे गये मालूम होते हैं।

ञ भण्डार [शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर विजयराम पाड्या जयपुर]

५६४८ गुटका सं० १। पत्र सं० २०। आ० ५३/४×४ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल सं० १६५८। पूर्ण। वे० सं० २७।

विशेष—आलोचनापाठ, सामायिकपाठ, छहढाला (दौलतराम), कर्मप्रकृतिविधान (बनारसीदास), अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल आदि पाठों का संग्रह है।

५६४६. गुटका सं० २। पत्र सं० २२। आ० ५३/४×४ इ०। भाषा-हिन्दी पद्य। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६।

विशेष—वीररस के कवित्तों का संग्रह है।

५६५० गुटका सं० ३। पत्र सं० ६०। आ० ६×६ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। जीर्ण शीर्ण। वे० सं० ३०।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

५६५१ गुटका सं० ४। पत्र सं० १०१। आ० ६×५३/४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठों का संग्रह है।

१ जिनसहस्रनामस्तोत्र	बनारसीदास	हिन्दी	१-११
२ लहुरी नेमीश्वरकी	विश्वभूषण	"	१६-२१
३. पद- आतम रूप सुहावना	द्यानतराम	"	२२
४ विनती	×	"	२३-२४

विशेष—रूपचन्द ने आगरे मे स्वपठनार्थ लिखी थी।

५ सुखघडी	हर्षकीर्त्ति	"	२४-२५
६. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	"	२५-४७
७ अध्यातमदोहा	रूपचन्द	"	४७-५५
८ साधुवदना	बनारसीदास	"	५५-५८
६ मोक्षपैडी	"	"	५८-६१
१० कर्मप्रकृतिविधान	"	"	७६-६१

११. विनती एव पदसग्रह	×	हिन्दी	९१-१०१

५९५२. गुटका स० ५। पत्र स० ६-२९। आ० ४×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३२।

विशेष—नेमिराजुलपच्चीसी (विनोदीलाल), बारहमासा, ननद भौजाई का झगडा आदि पाठो का संग्रह है।

५९५३. गुटका स० ६। पत्र स० १६। आ० ६×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१।

विशेष—निम्न पाठ हैं—पद, चौरासी न्यात की जयमाल, चौरासी जाति वर्णन।

५९५४ गुटका स० ७। पत्र सं० ७। आ० ६×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १९४३ बैशाख सुदी १। अपूर्ण। वे० स० ४२।

विशेष—विषापहारस्तोत्र भाषा एव निर्वाणकाण्ड भाषा है।

५९५५. गुटका स० ८। पत्र स० १८४। आ० ७×५½ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-स्तोत्र। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४३।

१. उपदेशशतक	द्यानतराय	हिन्दी	१-३५
२. छहढाला (अक्षरबावनी)	"	"	३५-३९
३. धर्मपच्चीसी	"	"	३९-४२
४ तत्त्वसारभाषा	"	"	४२-४९
५. सहस्रनामपूजा	धर्मचन्द्र	सस्कृत	४९-१७५
६ जिनसहस्रनामस्तवन	जिनसेनाचार्य	"	१-१२

ले० काल स० १७९८ फागुन सुदी १०

५९५६ गुटका स० ९। पत्र स० १३। आ० ६¾×४½ इ०। भाषा-प्राकृत हिन्दी। ले० काल स० १९१८। पूर्ण। वे० स० ४४।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है।

५९५७ गुटका स० १०। पत्र स० १०५। आ० ८×७ इ०। ले० काल ×।

१ परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१-१९
२. तत्त्वसार	देवसेन	प्राकृत	२०-२४

३. वारहग्रक्षरी	X	संस्कृत	२४–२७
४ समाधिरास	X	पुरानी हिन्दी	२७–२६

विशेष—प० डालूराम ने अपने पढने के लिए लिखा था।

५. द्वादशानुप्रेक्षा	X	पुरानी हिन्दी	२६–३१
६. योगीरासो	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	३२–३३
७. श्रावकाचार दोहा	रामसिंह	"	५३–६३
८ षट्पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	८४–१०४
९ षटलेश्या वर्णन	X	संस्कृत	१०४–१०५

५६५८ गुटका सं० ११। पत्र स० ३५। (खुले हुये शास्त्राकार) आ० ७३X५ इ०। भाषा–हिन्दी ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ८४।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र सग्रह है।

५६५६ गुटका स० १२। पत्र स० ५०। आ० ६X५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० १००।

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह है।

५६६०. गुटका सं० १३। पत्र स० ४०। आ० ६X६ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० १०१।

१. चन्दकथा	लक्ष्मण	हिन्दी	१–२१

विशेष—६७ पद्य से २६२ पद्य तक आभानेरी के राजा चन्द की कथा है।

२ फुटकर कवित्त	अगरदास	"	२२–४०

विशेष—चन्दन मलियागिरि कथा है।

५६६१ गुटका सं० १४। पत्र स० ३६६। आ० ७X६ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १६५३। पूर्ण। वे० स० १०२।

१. चौरासी जाति भेद	X	हिन्दी	१–१६
२ नेमिनाथ फागु	पुण्यरत्न	"	२०–२५

विशेष—अन्तिम पाठ —

समुद्र विजय तन गुण निलउ सेव करइ जसु सुर नर वृन्द।

पुण्यरत्न मुनिवर भणइ श्रीसव सुदर्शन नेमि जिणन्द ॥ ६४ ॥

कुल ६४ पद्य हैं।

॥ इति श्री नेमिनाथ फागु समाप्त ॥

३. प्रद्युम्नरास	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी		२६–५०
४. सुदर्शनरास	"	"		५१–८०
५. श्रीपालरास	"	"		११६
			लें० काल सं० १६५३ जेठ बुदी २	
६. शीलरास	"	"		१३३
७. मेघकुमारगीत	पूनो	"		१३५
८. पद– चेतन हो परम निधान	जिनदास	"		२३६
९. " चेतन चिर भूलिउ भमिउ देखउ चित न विचारि।	रूपचन्द	"		२३८
१०. " चेतन तारक हो चतुर सयाने वे निर्मल दिष्टि अछत तुम भरम भुलाने।	"	"		"
११. " वादि अनादि गवायो जीव विधिवस वहु दुख पायो चेतन।	"	"		
१२. "	दास	"		२४०
१३. " चेतन तेरी दानो वानो चेतन तेरी जाति।	रूपचन्द	"		
१४. " जीव मिथ्यात उदै चिर भ्रम आयो। वा रत्नत्रय परम धरम न भायो॥	"	"		
१५. " सुनि सुनि जियरा रे, तू त्रिभुवन का राउ रे	दरिगह	"		
१६. " हा हा भूता मेरा पद मना जिनवर धरम न वेये।	"	"		
१७. " जै जै जिन देवन के देवा, सुर नर सकल करे तुम सेवा।	रूपचन्द	"		२४७
१८. अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	×	प्राकृत		२५१
१९. अक्षरगुणमाला	मनराम	हिन्दी	लें० काल १७३५	२५५
२०. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	×	"	लें० काल १७३५	२५७
२१. जकडी	दयालदास	"		२३२

	भानुकीत	"	र० काल १६८७	३३६

(आठ सात सोलह के अक वर्ष रचै सु कथा विमल)

का जोरा माही थी जिए

वै रे।	शिवसुन्दर	"		३४१
	अकूमल	"		३४८
	वूचराज	"		३६२
	मनसिंघ	"	१६ पद हैं	३६५

(वाडी फूली अति भली सुन भमरा रे)

गुटका स० १५। पत्र स० २७५। आ० ५X४½ इ०। ले० काल स० १७२७। पूर्ण। वे०

	बनारसीदास	हिन्दी	१६३

र० काल स० १६६३। ले० काल सं० १७६३

	पुनो	"	१६३–१६६
	बनारसीदास	"	१८८
	जिनदास	"	२०६
	मनराम	"	
यमाल	जिनदास	"	
	बनारसीदास	"	२४३
ा स्वरूप	X	"	२५४
ले	हर्षकीर्ति	"	२६६

गुटका स० १६। पत्र स० २१२। आ० ६X६ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल X।

सामान्य पाठो का सग्रह है।

गुटका स० १७। पत्र स० १४२। आ० ६X५ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल X। पूर्ण।

१. भविष्यदत्त चौपई	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	११६
२ चौबोस तीर्थङ्कर परिचय	×	”	१४२

५९६५. गुटका सं० १७ । पत्र स० ८७ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ११० ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा है ।

५९६६. गुटका स० १८ । पत्र सं० ६८ । आ० ७×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८७४ । पूर्ण । वे० स० १११ ।

१. लग्नचन्द्रिका भाषा	स्योजीराम सौगानी	हिन्दी	१-४३

प्रारम्भ—आदि मत्र कू सुमरिइ , जगतारण जगदीश ।

जगत अथिर लखि तिन तज्यो, जिनै नमाउ सीस ॥ १ ॥

दूजा पूजू सारदा, तीजा गुरु के पाय ।

लगन चन्द्रिका ग्रन्थ की, भाषा करू बणाय ॥ २ ॥

गुरन मोहि आग्या दई, मसतक धरि के बाह ।

लगन चन्द्रिका ग्र थ की, भाषा कहू बणाय ॥ ३ ॥

मेरे श्री गुरुदेव का, आवावती निवास ।

नाम श्रीजैचन्द्रजी, पडित बुध के वास ॥ ४ ॥

लालच द पडित तणे, नाती चेला नेह ।

फतेचद के सिष तिनै, मोकू हुकम करेह ॥ ५ ॥

कवि सोगाणी गोत्र है, जैन मती पहचानि ।

कुवरपाल को नंद ते, स्योजीराम वखाणि ॥ ६ ॥

ठारासै के साल परि, वरष सात चालीस ।

माघ सुकल की पचमी, वार सुरनकोईस ॥ ७ ॥

अन्तिम—

लगन चन्द्रिका ग्र थ की, भाषा कही जु सार ।

जे यासीखे ते नरा ज्योतिस को ले पार ॥ ५२३ ॥

२. वृन्दसतसई	वृन्दकवि	हिन्दी प० ले० काल वैशाख सुदी १० १८७४

विशेष—७०६ पद्य हैं ।

३	राजनीति कवित्त	देवीदास	"	X	१२२ पद्य हैं।

५६६७ गुटका स० १९। पत्र सं० ३०। ग्रा० ८X६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ११२।

विशेष—विभिन्न कवियो के पदो का सग्रह है। गुटका अशुद्ध लिखा गया है।

५६६८ गुटका स० २०। पत्र स० २०१। ग्रा० ६X५ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। विषय-संग्रह। ले० काल० स० १७८३। पूर्ण। वे० स० ११४।

विशेष—आदिनाथ की वीनती, श्रीपालस्तुति, मुनिश्वरो की जयमाल, वडा कक्का, भक्तामर स्तोत्र आदि हैं।

५६६९ गुटका स० २१। पत्र स० २७६। ग्रा० ७X४३ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-सग्रह। ले० काल x। पूर्ण वे० स० ११५। ब्रह्मरायमल्ल कृत भविष्यदत्तरास नेमिरास तथा हनुमत चौपई है।

५६७०. गुटका सं० २२। पत्र स० २६-५३। ग्रा० ६X५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ११।

५६७१ गुटका स० २३। पत्र स० ८१। ग्रा० ६X५३ इ०। भाषा-सस्कृत। विषय पूजा पाठ। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १३१।

विशेष—पूजा स्तोत्र सग्रह है।

५६७२ गुटका स० २४। पत्र सं० २०१। ग्रा० ६X५३ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत विषय-पूजा पाठ। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १३२।

विशेष—जिनसहस्रनाम (आशाधर) षट्भक्ति पाठ एव पूजाओ का सग्रह है।

५६७३. गुटका स० २५। पत्र सं० ६-८। ग्रा० ६X५ इ०। भाषा-प्राकृत सस्कृत। विषय-पूजा पाठ। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० १३३।

५६७४ गुटका स० २६। पत्र स० ८५। ग्रा० ६X५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजापाठ। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १३४।

५६७५. गुटका स० २७। पत्र स० १०१। ग्रा० ६X६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १५२।

विशेष—वनारसीविलास के कुछ पाठ, रूपचन्द की जकडी, द्रव्य सग्रह एव पूजायें है।

५६७६ गुटका स० २८। पत्र सं० १३३। ग्रा० ६X७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८०२। पूर्ण। वे० सं० १५३।

विशेष—समयसार नाटक, भक्तामरस्तोत्र भाषा-एवं सामान्य कथायें हैं।

५६७७ गुटका स० २६। पत्र स० ११६। आ० ६×६ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। विषय-संग्रह ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १५४।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र तथा अन्य साधारण पाठों का सग्रह है।

५६७८ गुटका स० ३०। पत्र सं० २०। आ० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत प्राकृत। विषय-स्तोत्र। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १५५।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एव निर्वाणकाण्ड गाथा हैं।

५६७६. गुटका सं० ३१। पत्र सं० ४०। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। ले० काल ×। पूर्ण। वे स० १६२।

विशेष—रविव्रत कथा है।

५६८०. गुटका स० ३२। पत्र स० ४४। आ० ४½×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-सग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे स० १७७६।

विशेष—बीच २ मे से पत्र खाली हैं। १ बुलाखीदास खत्री की बरात जो स० १६८४ मिती मगसिर सुदी ३ को आगरे से अहमदावाद गई, का विवरण दिया हुआ है। इसके अतिरिक्त पद, गणेशछद, लहरियाजी की पूजा आदि हैं।

५६८१ गुटका सं० ३३। पत्र सं० ३२। आ० ६½×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६३।

१. राजुलपच्चीसी	विनोदीलाल लालचद	हिन्दी
२. नेमिनाथ का बारहमासा	"	"
३ राजुलमंगल	×	×

प्रारम्भ— तुम नीक्स भवन सुहादे, जब कमरी भई बरागी।

प्रभुजी हमनै भी ले चालो साथ, तुम बिन नहीं रहै दिन रात।

अन्तिम— आपा दोनु ही मुक्ती मिलाना, तहा फेर न होय आवागवना।

राजुल अटल सुथरी नीठाइ, तिहा राणी नही छै कोई,

सोये राजुल मगल गावत, मन वंछित फल पावत ॥१८॥

इति श्री राजुल मगल संपूर्ण।

५९८२ गुटका सं० ३४ । पत्र स० १६० । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३३ ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र एवं टीकम की चतुर्दशी कथा हैं ।

५९८३ गुटका स० ३५ । पत्र स० ४० । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३४ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ हैं ।

५९८४ गुटका स० ३६ । पत्र स० २४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल स० १७७९ फागुण बुदी ९ । पूर्ण । वे० स० २३५ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एवं कल्याण मंदिर संस्कृत और भाषा है ।

५९८५ गुटका स० ३७ । पत्र स० २१३ । आ० ५×७ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र, जैन शतक तथा पदो का सग्रह है ।

५९८६ गुटका स० ३८ । पत्र स० ५६ । आ० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४२ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है ।

५९८७. गुटका स० ३९ । पत्र स० ५० । आ० ७×४ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४३ ।

१. श्रावकप्रतिक्रमण	×	प्राकृत	१-१४
२. जयतिहुवणस्तोत्र	अभवदेवसूरि	,,	१५-१९
३ अजितशान्तिजिनस्तोत्र	×	,,	२०-२५
४ श्रीवतजयस्तोत्र	×	,,	२६-३२

अन्य स्तोत्र एवं गौतमरासा आदि पाठ है ।

५९८८ गुटका स० ४० । पत्र स० २५ । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४४

विशेष—सामायिक पाठ है ।

५९८९ गुटका स० ४१ । पत्र स० ५० । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४६ ।

विशेष-हिन्दी पाठ सग्रह है ।

५६६०. गुटका सं० ४२। पत्र सं० २०। आ० ५×८ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४७।

विशेष—सामायिक पाठ, कल्याणमन्दिरस्तोत्र एवं जिन रचनीसी हैं।

५६६१. गुटका सं० ४३। पत्र सं० ४८। आ० ५×८ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४८।

५६६२ गुटका सं० ४४। पत्र सं० २५। आ० ६×८ इ० भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४९।

विशेष-ज्योतिष सम्बन्धी सामग्री है।

५६६३. गुटका सं० ४५। पत्र सं० १८। आ० ८×५ इ०। भाषा हिन्दी। विषय—गणित। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५०।

५६६४. गुटका सं० ४६। पत्र सं० १७७। आ० ७×५ इ०। ले० काल सं० १७५४। पूर्ण। वे० सं० २५१।

१. भक्तामरस्तोत्र भाषा	अखयराज	हिन्दी गद्य	१–३४
२. इष्टोपदेश भाषा	×	"	३४–५२
३. सम्बोधपंचासिका	×	प्राकृत संस्कृत	५३–७१
४. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	७२–६२
५. चरचा	×	"	६२–१०३
६ योगसार दोहा	योगीन्द्रदेव	"	१०४–१११
७ द्रव्यसंग्रह गाथा भाषा सहित	×	प्राकृत हिन्दी	११२–१३३
८ अनित्यपंचासिका	त्रिभुवनचन्द	"	१३४–१४७
९. जखडी	रूपचन्द	"	१४८–१५४
१०. "	दरिगह	"	१५५–५६
११ "	रूपचन्द	"	१५७–१६३
१२. पद	"	"	१६४–१६६
१३ प्रातनबोध जखडी आदि	×	"	१७०–१७७

५६६५. गुटका सं० ४७। पत्र सं० १३। आ० ५×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल × पूर्ण। वे० सं० २५२।

५९९६ गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १०० । आ० ५X४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७०५ पूर्ण । वे० सं० २५५ ।

विशेष—आदित्यवारकथा (भाऊ) विरहमंजरी (नन्ददास) एवं आयुर्वेदिक नुसखे हैं ।

५९९७ गुटका सं० ४९ । पत्र सं० ८-११६ । आ० ५X४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण वे० सं० २५७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५९९८ गुटका सं० ५० । पत्र सं० १८ । आ० ५X५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २५८ ।

विशेष—पदों एवं सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५९९९ गुटका सं० ५१ । पत्र सं० ४७ । आ० ८X५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २५९ ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ के पाठों का संग्रह है ।

६०००. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० ९८ । आ० ८३X६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० सं० १७२५ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० २६० ।

विशेष—समयसार नाटक तथा बनारसीविलास के पाठ हैं ।

६००१. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० २२८ । आ० ९X७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७५२ । पूर्ण वे० सं० २६१ ।

१ समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी	१-९१

विशेष—विहारीदास के पुत्र नैनसी के पठनार्थ सदाराम ने लिखा था ।

२ सीताचरित्र	रामचन्द्र (बालक)	हिन्दी	१-१३७
३ पद	कवि संतीदास	"	
४ ज्ञानस्वरोदय	चरणदास	"	
५. पद्पचासिका	X	"	

६००२ गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ५८ । आ० ४X३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८२७ जेठ बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २६२ ।

१. स्वरोदय	हिन्दी	१-२७

विशेष—उमा महेश संवाद में से है ।

२. पंचाध्यायी		”	२८-५८

विशेष—कोटपुतली वास्तव्य श्रीवन्तलाल फकीरचन्द के पठनार्थ लिखी गई थी।

६००३. गुटका सं० ५५। पत्र स० ७-१२६। आ० ५३×३३ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७२।

१. अनन्त के छप्पय	भ० धर्मचन्द	हिन्दी	१४-२०
२. पद	विनोदीलाल	”	
३. पद	जगतराम	”	
(नेमि रंगीलो छबीलो हटीलो चटकीले मुगति वधु संग मिलो)			
४. सरस्वती चूर्ण का नुसखा	×	”	
५ पद- प्रात उठी ले गौतम नाम जिम मन वाछित सीझे काम।	कुमुदचन्द	हिन्दी	
५. जीव वेलडी	देवीदास	”	
(सतगुर कहत सुनो रे भाई यो संसार असारा)		”	२१ पद्य हैं।
७. नारीरासो	×	”	३१ पद्य हैं।
८. चेतावनी गीत	नाथू	”	
९. जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	भ० जिणचन्द्र	संस्कृत	
१०. महावीरस्तोत्र	भ० अमरकीर्ति	”	
११. नेमिनाथ स्तोत्र	पं० शालि	”	
१२. पद्मावतीस्तोत्र	×	”	
१३. षट्मत चरचा	×	”	
१४. आराधनासार	जिनदास	हिन्दी	४९ पद्य हैं।
१५. विनती	”	”	२० पद्य हैं।
१६. राजुल की सज्झाय	”	”	३७ पद्य हैं।
१७. झूलना	गंगादास	”	१२ पद्य हैं।
१८. ज्ञानपैडो	मनोहरदास	”	
१९. श्रावकक्रिया	×	”	

विशेष—विभिन्न कवित्त एवं वीतराग स्तोत्र आदि हैं।

६००४. गुटका सं० ५६। पत्र स० १२०। आ० ४३/४×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×
पूर्ण। वे० स० २७३।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है।

६००५ गुटका सं० ५७। पत्र स० ३-८८। आ० ६३/४×४३/४ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल
स० १८४३ चैत बुदी १४। अपूर्ण। वे० स० २७४।

विशेष—भक्तारस्तोत्र, स्तुति, कल्याणमन्दिर भाषा, शातिपाठ, तीन चौबीसी के नाम, एव देवा पूजा आदि है

६००६ गुटका स० ५८। पत्र स० ५६। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।
वे० स० २७६।

१ तीसचौबीसी	×	हिन्दी	
२ तीसचौबीसी चौपई	श्याम	,,	र० काल १७४९ चैत सुदी ५ ले० काल स० १७४९ कातिक बुदी ५

अन्तिम—नाम चौपई ग्रन्थ यह, जोरि करी कवि स्याम।
जेसराज सुत ठोलिया, जोवनपुर तस धाम ॥२१६॥
सतरासै उनचास मे, पूरन ग्रन्थ सुभाय।
चैत्र उजाली पचमी, विजै स्कन्ध नृपराज ॥२१७॥
एक वार जे सरदहै, अथवा करिसि पाठ।
नरक नीच गति के विषे, गाढे जडे कपाट ॥२१८॥

॥ इति श्री तीस चोइसो जी की चौपई ॥

६००७ गुटका स० ५९। पत्र स० ५२। आ० ६×४३/४ इ०। भाषा-सस्कृत प्राकृत। ले० काल ×।
पूर्ण। वे० स० २६३।

विशेष—तीनचौबीसी के नाम, भक्तामर स्तोत्र, पचरत्न परीक्षा की गाथा, उपदेश रत्नमाला की गाथा
आदि है।

६००८ गुटका सं० ६०। पत्र स० ३४। आ० ६×८ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १९४३,
पूर्ण। वे० स० २९३।

१. समन्तभद्रकथा	जोधराज	हिन्दी	र० काल १७२२ वैशाख बुदी ७

२. श्रावको की उत्पत्ति तथा ८४ गोत्र	×	हिन्दी
३. सामुद्रिक पाठ	×	"

अन्तिम—सगुन छलन सुमत सुभ. सब जनकू सुख देत।
भाषा सामुद्रिक रच्यो, सजन जनो के हेत॥

६००६. गुटका सं० ६१। पत्र स० ११-५८। आ० ८३/४×६ इ०। भाषा–हिन्दी सस्कृत। ले० काल स० १६१६। अपूर्ण। वे० स० २६६।

विशेष—विरहमान तीर्थङ्कर जकडी (हिन्दी) दशलक्षरण, रत्नत्रय पूजा (सस्कृत) पंचमेरु पूजा (भूधरदास) नन्दीश्वर पूजा जयमाल (सस्कृत) अनन्तजिन पूजा (हिन्दी) चमत्कार पूजा (स्वरूपचन्द) (१६१६), पचकुमार पूजा आदि है।

६०१०. गुटका स० ६२। पत्र स० १६। आ० ८३/४×६ इ०। ले० काल×। पूर्ण। वे० स० २६७।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है।

६०११. गुटका स० ६३। पत्र स० १६। आ० ६३/४×४३/४ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–सग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३०८।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह एव ज्ञानस्वरोदय है।

६०१२. गुटका स० ६४। पत्र स० ३६। आ० ६×७ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३२५।

विशेष—(१) कवित्त पद्माकर तथा अन्य कवियो के (२) चौदह विद्या तथा कारखाने जात के नाम (३) आमेर के राजाओ का वशावली, (४) मनोहरपुरा की पीढियो का वर्णन, (५) खंडेला की वंशावली, (६) खडेलवालो के गोत्र, (७) कारखानो के नाम, (८) आमेर राजाओ का राज्यकाल का विवरण, (९) दिल्ली के बादशाहो पर कवित्त आदि हैं।

६०१३ गुटका स० ६५। पत्र स० ४२। आ० ६×४ इ०। भाषा–हिन्दी सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२६।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है।

६०१४. गुटका स० ६६। पत्र सं० १३-३२। आ० ७×४ इ० भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३२७।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

६०१५. गुटका सं० ६७। पत्र सं० ५२। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२८।

विशेष—कवित्त एव आयुर्वेद के नुसखो का सग्रह है।

६०१६. गुटका सं० ६८। पत्र स० २६। आ० ६½×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-सग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३३०।

विशेष—पदो एवं कविताओ का सग्रह है।

६०१७. गुटका स० ६९। पत्र स० ८४। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३३२।

विशेष—विभिन्न कवियो के पदो का सग्रह है।

६०१८ गुटका सं० ७०। पत्र स० ४०। आ० ६½×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३३३।

विशेष—पदो एव पूजाओ का संग्रह है।

६०१९. गुटका स० ७१। पत्र स० ९८। आ० ४½×३½ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कामशास्त्र। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३३४।

६०२० गुटका स० ७२। स्फुट पत्र। वे० स० ३३६।

विशेष—कर्मो की १४८ प्रकृतिया, इष्टछत्तीसी एव जोधराज पचीसी का सग्रह है।

६०२१. गुटका स० ७३। पत्र स० २८। आ० ८½×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३३७।

विशेष—ब्रह्मविलास, चौबीसदण्डक, मार्गणाविधान, अकलङ्काष्टक तथा सम्यक्त्वपचीसी का सग्रह है।

६०२२ गुटका स० ७४। पत्र स० ३६। आ० ८½×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३३८।

विशेष—विनतिया, पद एवं अन्य पाठो का सग्रह है। पाठो की सख्या १९ है।

६०२३. गुटका स० ७५। पत्र स० १४। आ० ५×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १९५९। पूर्ण। वे० स० ३३९।

विशेष—नरक दु ख वर्णन एव नेमिनाथ के १२ भवो का वर्णन है।

६०२४. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २५ । आ० ८३/४×६ इ० । भाषा-संस्कृत । । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४२ ।

विशेष—आयुर्वेदिक एवं यूनानी नुसखो का सग्रह है ।

६०२५. गुटका सं० ७७ । पत्र स० १४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-सग्रह । ले० काल × । वे० सं० ३४१ ।

विशेष—जोगीरासा, पद एव विनतियो का सग्रह है ।

६०२६. गुटका स० ७८ । पत्र स० १६० । आ० ६×५ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५१ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है । पृष्ठ ६४-१४६ तक वशीधर कृत द्रव्यसग्रह की वालाववोध टीका है । टीका हिन्दी गद्य मे है ।

६०२७. गुटका स० ७६ । पत्र सं० ८६ । आ० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद-सग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५२ ।

ञ भण्डार [शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, जयपुर]

६०२८. गुटका सं० १ । पत्र सं० २५८ । आ० ६×५ इ० । । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र सग्रह है । लक्ष्मीसेन का चिंतामणिस्तवन तथा देवेन्द्रकीर्ति कृत प्रतिमासान्त चतुर्दशी पूजा है ।

६०२९. गुटका सं० २ । पत्र स० ५४ । आ० ६×५ इ० । भापा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल सं० १८४३ । पूर्ण ।

विशेष—जीवराम कृत पद, भक्तामर स्तोत्र एव सामान्य पाठ संग्रह है ।

६०३०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ५३ । आ० ६×५ । भापा संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

जिनयज्ञ विधान, अभिषेक पाठ, गणधर वलय पूजा, ऋषि मंडल पूजा, तथा कर्मदहन पूजा के पाठ हैं ।

६०३१. गुटका सं० ४ । पत्र स० १२४ । आ० ८×७३/४ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठो का संग्रह है—

१. सप्तसूत्रभेद	×	सस्कृत

२. मूढता ज्ञनाकुश इत्यादि	×	"
३. त्रेपनक्रिया	×	"
४. समयसार	आ० कुन्दकुन्द	प्राकृत
५ आदित्यवारकथा	भाऊ	हिन्दी
६ पोसहरास	ज्ञानभूषण	"
७ धर्मतरुगीत	जिनदास	"
८ चहुगतिचौपई	×	"
९. ससारअटवी	×	"
१० चेतनगीत	जिनदास	"

स० १६२६ मे अवावती मे प्रतिलिपि हुई थी।

६०३२ गुटका स० ५। पत्र सं० ७५। आ० ६×५ इ०। भाषा-सस्कृत। ले० काल स० १६८२। पूर्ण।

विशेष—स्तोत्रो का सग्रह है।

स० १६८२ मे नागौर मे बाई ने दिक्षा ली उसका प्रतिज्ञा पत्र भी है।

६०३३ गुटका स० ६। पत्र स० २२। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-सग्रह। ले० काल × वे० स० ६।

१ नेमीश्वर का बारहमासा	खेतसिंह	हिन्दी	८
२ आदीश्वर के दशभव	गुणचद	"	
३ क्षीरहीर	×	"	

६०३४ गुटका स० ७। पत्र स० १७७। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—नित्यनैमित्तक पाठ, सुभाषित (भूधरदास) तथा नाटक समयसार (बनारसीदास) हैं।

६०३५ गुटका स० ८। पत्र स० १४६। आ० ६×५३ इ०। भाषा-सस्कृत, अपभ्रंश। ले० काल ×। पूर्ण।

१ चिन्तामणिपार्श्वनाथ जयमाल	सोम	अपभ्रंश
२ ऋषिमडलपूजा	मुनि गुणनंदि	सस्कृत

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह भी है।

६०३६. गुटका स० ६ । पत्र सं० २० । आ० ६X४ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह, लोक का वर्णन, अकृत्रिम चैत्यालय वर्णन, स्वर्गनरक दुख वर्णन, चारो गतियो की आयु आदि का वर्णन, इष्ट छत्तीसी, पञ्चमङ्गल, आलोचना पाठ आदि हैं।

६०३७. गुटका स० १० । पत्र सं० ३८ । आ० ७X६ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण ।

विशेष–सामायिक पाठ, दर्शन, कल्याणमदिर स्तोत्र एवं सहस्रनाम स्तोत्र है ।

६०३८. गुटका स० ११ । पत्र सं० १६६ । आ० ४X५ इ० । भाषा–हिन्दी । ले०काल X । पूर्ण ।

१. भक्तामर स्तोत्र टब्बाटीका	X	संस्कृत हिन्दी ले० काल सं० १७२७ चैतसुदी ५
२. पद— हर्षकीर्त्ति	X	"
	(जिण जिण जप जीवडा तीन भवन मे सारोजी)	
३. पचगुरु की जयमाल	ब्र० रायमल्ल	" ले० काल सं० १७२६
४. कवित्त	X	"
५. हितोपदेश टीका	X	"
६. पद–तै नर भव पाय कहा कियो	रूपचन्द	हिन्दी
७. जकडी	X	"
८ पद–मोहिनी वहकायो सब जग मोहनी	मनोहर	"

६०३६. गुटका स० १२ । पत्र स० १३८ । आ० १०X८ इ० । भाषा हिन्दी स.स्कृत । ले० काल X । पूर्ण । निम्न पाठ है —

क्षेत्रपाल पूजा (सस्कृत) क्षेत्रपाल जयमाल (हिन्दी) नित्यपूजा, जयमाल (सस्कृत हिन्दी) सिद्धपूजा (स०) षोडशकारण, दशलक्षण, रत्नत्रयपूजा, कलिकुण्डपूजा और जयमाल (प्राकृत) नदीश्वरपक्तिपूजा अनन्तचतुर्दशीपूजा, अक्षयनिधिपूजा तथा पार्श्वनास्तोत्र, आयुर्वेद ग्र थ (सस्कृत ले० काल सं० १६८१) तथा कई तरह की रेखाओ के चित्र भी है, राशिफल आदि भी दिये हुये हैं।

६०४०. गुटका स० १३ । पत्र स० २८३ । आ० ७X५ इ० । ले० काल सं० १७३८ । पूर्ण ।

गुटके मे मुख्यत. निम्न पाठ हैं—

१. जिनस्तुति	सुमतिकीर्त्ति	हिन्दी
२. गुणस्थानकगीत	ब्र० श्री वर्द्धन	"

अन्तिम–भणति श्री वर्द्धन ब्रह्म एह वाजी भवियण सुख करइ

३. सम्यक्त्व जयमाल	X	अपभ्रंश
४ परमार्थगीत	रूपचन्द	हिन्दी
५. पद– अहो मेरे जीय तू कंत भरमायो, तू चेतन यह जड परम हैं याभैं कहा लुभायो।	मनराम	"
६. मेघकुमारगीत	पूनो	"
७ मनोरथमाला	अचलकीत्ति	"

अचला तिहि तणा गुण गाइस्यो,

८ सहेलीगीत	सुन्दर	हिन्दी

सहेल्यो हे यो ससार असार मो चित मे या उपनी जी सहेल्यो है
ज्यो राचै सो गवार तन धन जोवन थिर नही।

९ पद–	मोहन	हिन्दी

जा दिन हंस चले घर छोडि, कोई न साथ लडा है गोडि ।।
जरा जरा के मुख ऐसी वाणी, वडो वैग मिलो अन पाणी ।।
अरण विडहूं उनगे सरीर, खोसि खोसि ले तनक चीर।
चारि जणा जङ्गल ले जाहि, घर मैं घडी रहण दे नाहि।
जवता बूड विडा में वास, यो मन मेरा भया उदास।
काया माया झूठी जानि, मोहन होऊ भजन परमाणि ।।६।।

१०. पद–	हर्षकीर्त्ति	हिन्दी

नहि छोडो हो जिनराज नाम, मोहि और मिथ्यात से क्या बनै काम।

११. "	मनोहर	हिन्दी

सेव तो जिन साहिब की कीजै नरभव लाहो लीजै

१२. पद–	जिणदास	हिन्दी
१३. "	स्यामदास	"
१४. मोहविवेकयुद्ध	बनारसीदास	"
१५. द्वादशानुप्रेक्षा	सूरत	"

१६. द्वादशानुप्रेक्षा × "

१७. विनती रूपचन्द "

जै जै जिन देवनि के देवा, सुर नर सकल करैं तुम सेवा।

१८. पचेन्द्रियवेलि ठक्कुरसी हिन्दी र० काल स० १५८५

१९. पञ्चगतिवेलि हर्षकीर्त्ति " " " १६८३

२०. परमार्थ हिंडोलना रूपचन्द "

२१. पथीगीत छीहल "

२२. मुक्तिपीहरगीत × "

२३. पद-अब मोहि और कछु न सुहाय रूपचन्द "

२४. पदसग्रह बनारसीदास "

६०४१. **गुटका स० १४**। पत्र स० १०९-२३७। आ० १०×७ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एवं उसकी विधि दी हुई है।

६०४२. **गुटका स० १५**। पत्र स० ४३। आ० ७×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद सग्रह। ले० काल ×। पूर्ण।

६०४३ **गुटका स० १५**। पत्र स० ५२। आ० ७×५ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। विषय-सामान्य पाठ संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण।

६०४४ **गुटका सं० १७**। पत्र स० १६६। आ० १३×३ इ०। ले० काल सं० १६१३ ज्येष्ठ बुदी। पूर्ण।

१. छियालीस ठाणा	ब्र० रायमल्ल	सस्कृत	१९

विशेष—चौबीस तीर्थङ्करो के नाम, नगर नाम, कुल, वश, पचकल्याणको की तिथि आदि विवरण है।

२. चौबीस ठाणा चर्चा	×	"	२८
३. जीवसमास	×	प्राकृत ले० काल स० १६१३ ज्येष्ठ	५९

विशेष—ब्र० रायमल्ल ने देहली मे प्रतिलिपि की थी।

४. सुप्पय दोहा	×	हिन्दी	८०
५. परमात्म प्रकाश भाषा	प्रभुदास	"	९२
६. रत्नकरण्डश्रावकाचार	समतभद्र	सस्कृत	९४

६०४५. **गुटका स० १८**। पत्र सं० १५०। आ० ७×३ इ०। भाषा-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

ट भण्डार [आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर]

६०४६. गुटका सं० १ । पत्र स० ३७ । भाषा-हिन्दी । विषय-सग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५०१ ।

१ मनोहरमंजरी	मनोहर मिश्र	हिन्दी	१-२६

प्रारम्भ— अथ मनोहर मजरी, अथ नव जोवना लक्षन ।

याके योवनु अकुरयो, अग अंग छवि ओर ।

सुनि सुजान नव योवना, वहुत भेद द्वै ठोर ॥

अन्तिम — लहलहाति अति रसमसी, वहु सुवानु भपाठ (?)

निरखि मनोहर मजरी, रसिक भृङ्ग मंडरात ॥

सुनि सुजनि अभिमान तजि मन विचारि गुन दोष ।

कहा विरहु कित प्रेम रसु, तहीं होत दुख मोख ॥

चद अत द्वै वोप के, अक वीच आकास ।

करी मनोहर मजरी, मकर चादनी ग्यास ॥

माथुर का हो मधुपुरी, वसत महोली पोरि ।

करी मनोहर मजरी, अनूप रस सोरि ॥

इति श्र. सकललोककृतमणिमरीचिमंजरीनिकरनीराजितपदद्व दवृन्दावनविहारकारिलयाकटाक्षछटोपासक मनोहर मिश्र विरचिता मनोहरमंजरी समाप्ता ।

कुल ७४ पद्य हैं । सं० ७२ तक ही दिये हुये हैं । नायिका भेद वर्णन है ।

२. फुटकर दोहा	×	हिन्दी	३०-३१

विशेष— ७० दोहे हैं ।

३ आयुर्वेदिक नुसखे	×	„	३७

६०४७ गुटका स० २ । पत्र स० २-५८ । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १७६४ । अपूर्ण । वे० स० १५०२ ।

१ नाममजरी	नददास	हिन्दी पद्य सं० २११	२-२८
२ अनेकार्थमजरी	„	„	२८-४०

स्वामी खेमदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३ कवित्त	×	"	४१-४३
४. भोजरासो	उदयभानु	"	४३-४८

प्रारम्भ— श्री गणेसाय नमः । दोहरा ।

कुंजर कर कुंजर करन कुंजर आनंद देव ।
सिधि समपन सत्त सूव सुरनर कीजिय सेव ॥ १ ॥
जगत जननि जग उद्धरन जगत ईस अरधंग ।
मौन विचित्र विराजकर हंसासन सरवग ॥ २ ॥
सूर शिरोमणि सूर सुत सूर टरैं नहिं आन ।
जहा तहा स्रवन सुण जिये तहा भूपति भोज वखान ॥ ३ ॥

अन्तिम—इति श्री भोजजी को रासो उदैभानजी को कियो । लिखतं स्वामी खेमदास मिती फागुण बुदी ११ संवत् १७६५ । इसमे कुल १४ पद्य हैं जिनमे भोजराज का वैभव व यश वर्णन किया गया है ।

५. कवित्त	टोडर	हिन्दी	कवित्त है	४९-४

विशेष—ये महाराज टोडरमल के नाम से प्रसिद्ध थे और अकबर के भूमिकर विभाग के मंत्री थे ।

६०४८. गुटका स० ३ । पत्र सं० ११८ । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १७२६ । अपूर्ण । वे० सं० १५०३ ।

१ मायाब्रह्म का विचार	×	हिन्दी गद्य	अपूर्ण

विशेष—प्रारम्भ के कई पत्र फटे हुये हैं गद्य का नमूना इस प्रकार है ।

"माया काहे तै कहिये व भस्यो सवल है तातै माया कहिये । अकास काहे तैं कहिये पिंड ब्रह्माड का आदि आकार है तातैं आकास कहीये । सुनी (शून्य) काहे तै कहीये–जड है तातै सुनी कहिये । सकती काहे तैं कहिये सकल ससार को जीति रही है तातैं सकती कहिये ।"

अन्तिम—एता माया ब्रह्म का विचार परम हस का ग्यान ब्रंभ जगीस संपूर्ण समाप्ता । श्रीशंकराचारीज बीरच्यते । मिती असाढ सुदी १० स० १७२६ का मुकाम गुहाटी उर कोस दोइ देईदान चारण की पोथीस्यै उतारी पोथी सा······· · म ढोल्या साह् नेवसी का वेटा ······ ·· कर महाराज श्री रघनाथस्यघजी ।

२ गोरखपदावली	गोरखनाथ	हिन्दी	अपूर्ण

विशेष—करीब ६ पद्य है ।

३. द्वादशानुप्रेक्षा	लोहट	हिन्दी	१७-२१

ले० काल सं० १८३१ वैशाख बुदी ८ ।

विशेष—१२ सवैये १२ कवित्त छप्पय तथा अन्त मे १ दोहा इस प्रकार कुल २५ छद हैं।

अन्तिम— अनुप्रेक्षा द्वादश सुनत, गयो तिमिर अज्ञान ।

अष्ट करम तसकर दुरे, उग्यो अनुभै भान ॥ २५ ॥

इति द्वादशानुप्रेक्षा सपूर्ण । मिती वैशाख बुदी ८ सवत् १८३१ दसकत देव करण का ।

४. कर्मपच्चीसी	भारमल	हिन्दी	२१-२४

विशेष—कुल २२ पद्य हैं।

अन्तिमपद्य— करम अा तोर पच महावरत धरू जपू चौवीस जिणदा ।

अरहत ध्यान लैव चहू साहु लोयण वदा ॥

प्रकृति पच्यासी जाणि कै करम पचीसी जान ।

सूदर भारैमल " ..." स्योपुर थान ॥ कर्म अति० ॥ २२ ॥

॥ इति कर्म पच्चीसी सपूर्ण ॥

५. पद-(वासुरी दीजिये ब्रज नारि)	सूरदास	"		२६
६. पद-हम तो ब्रज को बसिवो ही तज्यो ब्रज मे बसि वैरिणि तू बंसुरी	"	"		२७-२८
७ श्याम बत्तीसी	श्याम	"		३७-४०

विशेष—कुल ३५ पद्य हैं जिनमे ३४ सवैये तथा १ दोहा है—

अन्तिम— कृष्ण ध्यान चतु अष्ट मे श्रवनन सुनत प्रनाम ।

कहत स्याम कलमल कहु रहत न रञ्चक नाम ॥

८. पद-बिन माली जो लगावै बाग	मनराम	हिन्दी		४०
९. दोहा-कबीर औगुन एक ही गुण है लाख करोरि	कबीर	"		"
१० फुटकर कवित्त	×	"		४१
११ जम्बूद्वीप सम्बन्धी पच मेरु का वर्णन	×	"	अपूर्ण	४१-४५

६०५३. गुटका स० ८ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×८ इ० । ले० काल स० १७७६ श्रावण वुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १५०८ ।

१. कृष्णरुक्मणि वेलि	पृथ्वीराज राठौर	राजस्थानी डिंगल	१-८५
		र० काल० स० १६३७ ।	

विशेष—ग्रंथ हिन्दी गद्य टीका सहित है । पहिले हिन्दी पद्य हैं फिर गद्य टीका दी गई है ।

२ विष्णु पजर रक्षा	×	सस्कृत	८६
३. भजन (गढ वका कैसे लीजे रे भाई)	×	हिन्दी	८७-८८
४ पद-(बैठे नव निकुंज कुटीर)	चतुर्भुज	”	८६
५. ” (धुनिसुनि मुरली बन बाजै)	हरीदास	”	”
६. ” (सुन्दर सावरो आवै चल्यो सखी)	नददास	”	”
७. ” (वालगोपाल छैगन मेरे)	परमानन्द	”	”
८ ” (वन ते आवत गावत गौरी)	×	”	”

६०५४. गुटका स० ६ । पत्र सं० ८५ । आ० ६×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५०६ ।

विशेष—केवल कृष्णरुक्मणी वेलि पृथ्वीराज राठौर कृत है । प्रति हिन्दी टीका सहित है । टीकाकार अज्ञात है । गुटका सं० ८ मे आई हुई टीका से भिन्न है । टीका काल नही दिया है ।

६०५५ गुटका सं० १० । पत्र सं०१७०-२०२ । आ० ६×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे स० १५११ ।

१. कवित्त	राजस्थानी डिंगल	१७१-७३

विशेष—शृङ्गार रस के सुन्दर कवित्त है । विरहिनी का वर्णन है । इसमे एक कवित्त छीहल का भी है ।

२ श्रीरुक्मणिकृष्णजी को रासो	तिपरदास	राजस्थानी पद्य	१७३-१८५

विशेष—इति श्री रुक्मणी कृष्णजी को रासो तिपरदास कृत सपूर्ण ॥ सवत् १७३६ वर्षे प्रथम चैत्र मासे शुभ शुक्ल पक्षे तिथौ दशम्या बुधवासरे श्री मुकन्दपुर मध्ये लिखापितं साह सजन कोठ्ठ साह लूणाजी तत्पुत्र सजन साह श्रेष्ठ छाजूजी वाचनाय । लिखत व्यास जट्टना नाम्ना ।

३ कवित्त	×	हिन्दी	१८६-२०२

विशेष—भूधरदास, सुखराम, विहारी तथा केशवदास के कवित्तो का सग्रह है । ४७ कवित्त हैं ।

६०५६. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४६ । आ० १०×८ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१४ ।

१. रसिकप्रिया — केशवदेव — हिन्दी — अपूर्ण — १-४८

ले० काल सं० १७६१ जेष्ठ सुदी १४

२. कवित्त — × — " — ४६

६०५७. गुटका सं० १२ । पत्र सं० २-२६ । आ० ५×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—निम्न पाठ उल्लेखनीय है ।

१. स्नेहलीला — जनमोहन — हिन्दी — ६-१५

अन्तिम—या लीला व्रज वास की गोपी कृष्ण सनेह ।

जनमोहन जो गाव ही सो पावै नर देह ॥११६॥

जो गावै सीखै सुनै भाव भक्ति करि हेत ।

रसिकराय पूरण कृपा मन वाछित फल देत ॥१२०॥

॥ इति स्नेहलीला संपूर्ण ॥

विशेष—ग्रन्थ मे कृष्ण ऊधव एव ऊधव गोपी संवाद है ।

६०५८. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ७६ । आ० ८×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० × । पूर्ण । वे० स० १५२२ ।

१. रागमाला — स्याम मिश्र — हिन्दी — १-१२

र० काल स० १६०२ फागुण बुदी १० । ले० काल स० १७४६ सावन सुदी १५ ।

विशेष—ग्रन्थ के आदि मे कासिमखा का वर्णन है । ग्रंथ का दूसरा नाम कासिम रसिक विलास भी है ।

अन्तिम—सवत् सोरह सै वरण ऊपर बीते दोय ।

फागुन वदी सनो दसी सुनो गुनी जन लोय ॥

पोथी रची लहौर स्याम आगरे नगर के ।

राजघाट है ठौर पुत्र चतुर्भुज मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रन्थ स्याम मिश्र कृत सपूर्ण । सवत् १७४६ वर्षे सावण सुदी १५ सोववार पोथी सेरगढ प्रगनैं हिंडोण का मे साह गोरधनदास अग्रवाल की पोथी ये लिखी लिखतं मौजीराम ।

२. द्वादशमासा (बारहमासा) — महाकविराइसुन्दर — हिन्दी

विशेष—कुल २४ कवित्त है। प्रत्येक मास का विरहिनी वर्णन किया गया है। प्रत्येक कवित्त मे सुन्दर शब्द हैं। सम्भव है रचना सुन्दर कवि की है।

३ नखशिखवर्णन　　　केशवदास　　　हिन्दी　　　१४-२८

लेखन काल स० १७४९ माह बुदी १४।

विशेष—शेरगढ मे प्रतिलिपि हुई थी।

४. कवित्त-　　　गिरधर, मोहन सेवग आदि के　　　हिन्दी

६०५९. गुटका सं० १४। पत्र स० ३६। आ० ५×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १५२३।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

६०६०. गुटका स० १५। पत्र स० १९८। आ० ८×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद एव पूजा। ले० काल स० १८३३ आसोज बुदी १३। पूर्ण। वे० स० १५२४।

१ पदसंग्रह　　　हिन्दी　　　१-५८

विशेष—जिनदास, हरीसिंह, बनारसीदास एव रामदास के पद हैं। राग रागनियो के नाम भी दिये हुये हैं

२. चौबीसतीर्थङ्करपूजा　　　रामचन्द्र　　　हिन्दी　　　५८-१९८

६०६१. गुटका स० १६। पत्र स० १७१। आ० ७×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल स० १६४७। अपूर्ण। वे० स० १५२५।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का संग्रह है।

१. विरदावली　　　×　　　संस्कृत

विशेष—पूरी भट्टारक पट्टावली दी हुई है।

२ ज्ञानबावनी　　　मतिशेखर　　　हिन्दी　　　९८-१०२

विशेष—रचना प्राचीन है। ५३ पद्यो मे कवि ने अक्षरो की बावनी लिखी है। मतिशेखर की लिखी हुई धत्ता चउपई है जिसका रचनाकाल स० १५७४ है।

३ त्रिभुवन की विनती　　　गङ्गादास

विशेष—इसमे १०१ पद्य हैं जिसमें ६३ शलाका पुरुषो का वर्णन है। भाषा गुजराती लिपि हिन्दी है।

६०६२. गुटका स० १७। पत्र स० ३२-७०। आ० ५×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १८४७। अपूर्ण। वे० स० १५२६।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

६०६३. गुटका स० १८ । पत्र सं० ७० । आ० ६×४ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल स० १८६४ ज्येष्ठ बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० सं० १५२७ ।

१ चतुर्दशीकथा — टीकम — हिन्दी — र० काल सं० १७१२

विशेष—३५७ पद्य हैं ।

२. कलियुग की कथा — द्वारकादास — ,,

विशेष—पचेवर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३ फुटकर कवित्त, रागो के नाम, रागमाला के दोहे तथा विनोदीलाल कृत चौबीसी स्तुति है ।

४. कपडा माला का दूहा — सुन्दर — राजस्थानी

विशेष—इसमे ३१ पद्यो मे कवि ने नायिका को अलग २ कपडे पहिना कर विरह जागृत किया तथा फिर पिय मिलन कराया है । कविता सुन्दर है ।

६०६४. गुटका स० १९ । पत्र स० ५७–३०५ । आ० ६३⁄४×६३⁄४ इ० । भाषा–हिन्दी सस्कृत । विषय–सग्रह । ले० काल स० १६६० द्वि० वैशाख सुदी २ । अपूर्ण । वे० स० १५३० ।

१. भविष्यदत्तचौपई — ब्र० रायमल्ल — हिन्दी — अपूर्ण — ५७–१०६

२. श्रीपालचरित्र — परिमल्ल — ,, — १०७–२८३

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय प्रशस्ति मे है । अकबर के शासन काल मे रचना की गई थी ।

३ धर्मरास (श्रावकाचाररास) — × — ,, — २८३–२९८

६०६५. गुटका सं० २० । पत्र स० ७३ । आ० ६×६३⁄४ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८३९ चैत्र बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० १५३१ ।

विशेष—स्तोत्र पूजा एवं पाठो का सग्रह है । बनारसीदास के कवित्त भी हैं । उसका एक उदाहरण निम्न है —

कपडा की रौस जाणै हैवर की हौंस जाणै ।
न्याय भी नवेरि जाणै राज रौस माणिवौ ।।
राग तौ छत्तीस जाणै लषिण बत्तीस जाणै ।
चूंप चतुराई जाणै महल मे माणिवौ ।।
वात जाणै सवाद जाणै खूवी खसवोई जाणै ।
सगपग साधि जाणै अर्थ को जाणिवौ ।
कहत बणारसीदास एक जिन नांव विना ।
.... बूडौ सव जाणिवौ ।।

६०६६ गुटका सं० २१। पत्र सं० १६४। आ० ६X४ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। विषय संग्रह। ले० काल स० १८६७। अपूर्ण। वे० स० १५३२।

विशेष—सामान्य स्तोत्र पाठ संग्रह है।

६०६७ गुटका सं० २२। पत्र स० ४८ आ० १०X७ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। विषय–संग्रह। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १५३३।

विशेष—स्तोत्र एवं पदो का संग्रह है।

६०६८. गुटका सं० २३। पत्र स० १५-६२। आ० ५X४ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल स० १८०८। अपूर्ण। वे० सं० १५३४।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है.—भक्तामर भाषा, परमज्योति भाषा, आदिनाथ की वीनती, ब्रह्म जिनदास एवं कनककीर्त्ति के पद, निर्वाणकाण्ड गाथा, त्रिभुवन की वीनती तथा मेघकुमारचौपई।

६०६९. गुटका सं० २४। पत्र स० २०। आ० ६X४½ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल १८८०। अपूर्ण। वे० स० १५३५।

विशेष—जैन नगर मे प्रतिलिपि हुई थी।

६०७० गुटका सं० २५। पत्र स० २४। आ० ५X४ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० १५३६।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—विषापहार भाषा (अचलकीर्त्ति) भूपालचौवीसी भाषा, भक्तामर भाषा (हेमराज)

६०७१ गुटका सं० २६। पत्र स० ६०। आ० ९X४३ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल स० १८७३। अपूर्ण। वे० सं० १५३७।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

६०७२ गुटका स० २७। पत्र सं० १५–१२०। भाषा–संस्कृत। ले० काल १८९५। अपूर्ण। वे० स० १५३८।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है।

६०७३ गुटका सं० २८। पत्र स० १५०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १७५३। अपूर्ण। वे० स० १५३९।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है। स० १७५३ अषाढ सुदी ३ मु० मौ० नन्दपुर गंगाजी का तट। दुर्गादास चादवाई की पुस्तक से मनरूप ने प्रतिलिपि की थी।

६०७८. गुटका सं० ३३ । पत्र स० ३२४ । ग्रा० ५X४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १७५६ वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वे० स० १५४५ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६०७९. गुटका सं० ३५ । पत्र स० १३८ । ग्रा० ६X६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १५४६ ।

विशेष—मुख्यत नाटक समयसार की प्रति है ।

६०८०. गुटका सं० ३६ । पत्र स० २४ । ग्रा० ५X५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद सग्रह । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १५४७ ।

६०८१. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० १७० । ग्रा० ६X४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १५४६ ।

विशेष-नित्यपूजा पाठ सग्रह है ।

६०८२ गुटका स० ३८ । पत्र स० ९४ । ग्रा० ५X४ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल १८४२ पूर्ण । वे० स० १५४८ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है ।

१. पदसग्रह	मनराम एव भूधरदास	हिन्दी	
२. स्तुति	हरीसिंह	"	
३. पार्श्वनाथ की गुणमाला	लोहट	"	
४ पद- (दर्शन दीज्योजी नेमकुमार	मेलीराम	"	
५ आरती	शुभचन्द	"	

विशेष—अन्तिम-आरती करता आरति भाजै,शुभचन्द ज्ञान मगन मैं साजै ॥८ ।

६ पद— (मै तो थारी आज महिमा जानी)	मेला	"	
७ शारदाष्टक	बनारसीदास	"	ले० काल १८१०

विशेष—जयपुर मे कानीदास के मकान मे लालाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

८ पद— मोह नीद मे छकि रहे हो लाल	हरीसिंह	हिन्दी
९. " उठि तेरो मुख देखू नाभि जू के नंदा	टोडर	"
१० चतुर्विंशतिस्तुति	विनोदीलाल	"
११ विनती	अजैराज	"

६०७८. गुटका सं० ३३ । पत्र स० ३२४ । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १७५६ वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वे० स० १५४५ ।

विशेष—सामान्य पाठों का सग्रह है ।

६०७६. गुटका सं० ३५ । पत्र स० १३८ । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५४६ ।

विशेष—मुख्यत नाटक समयसार की प्रति है ।

६०८०. गुटका सं० ३६ । पत्र स० २४ । आ० ५×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद सग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५४७ ।

६०८१ गुटका सं० ३७ । पत्र सं० १७० । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५४६ ।

विशेष-नित्यपूजा पाठ संग्रह है ।

६०८२. गुटका स० ३८ । पत्र स० ६४ । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल १८४२ पूर्ण । वे० स० १५४८ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है ।

१. पदसग्रह	मनराम एव भूधरदास	हिन्दी
२. स्तुति	हरीसिंह	"
३. पार्श्वनाथ की गुणमाला	लोहट	"
४. पद- (दर्शन दीज्योजी नेमकुमार	मेलीराम	"
५ आरती	शुभचन्द	"

विशेष—अन्तिम-आरती करता आरति भाजै,शुभचन्द ज्ञान मगन मैं साजै ॥८ ।

६. पद- (मै तो थारी आज महिमा जानी)	मेला	"	
७ शारदाष्टक	बनारसीदास	"	ले० काल १८१०

विशेष—जयपुर मे कानीदास के मकान मे लालाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

८. पद- मोह नीद मे छकि रहे हो लाल	हरीसिंह	हिन्दी
६. " उठि तेरो मुख देखू नाभि जू के नंदा	टोडर	"
१०. चतुर्विंशतिस्तुति	विनोदीलाल	"
११. विनती	अजैराज	"

६०८७. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० २-१५६ । आ० ×× इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५५० । मुख्यत निम्न पाठों का संग्रह है —

१. आरती संग्रह	द्यानतराय	हिन्दी	(५ आरतियां है)
२. आरती-किह विधि आरती करो प्रभु तेरी	मानसिंह	"	
३. आरती-इहविधि आरती करो प्रभु तेरी	दीपचन्द	"	
४. आरती-करो आरती आतम देवा	विहारीदास	"	३
५. पद संग्रह	द्यानतराय	"	१७
६. पद- संसार अथिर भाई	मानसिंह	"	४०
७. पूजाष्टक	विनोदीलाल	"	५३
८ पद-संग्रह	भूधरदास	"	६७
६ पद-जाग पियारी अब क्या सोवै	कबीर	"	७७
१०. पद-क्या सोवै उठि जाग रे प्रभाती मन	समयसुन्दर	"	७७
११ सिद्धपूजाष्टक	दौलतराम	"	८०
१२. आरती सिद्धो की	खुशालचन्द	"	८१
१३. गुरुग्रष्टक	द्यानतराय	"	८३
१४ साधु की आरती	हेमराज	"	८५
१५. वाणी अष्टक व जयमाल	द्यानतराय	"	"
१६. पार्श्वनाथाष्टक	मुनि सकलकीर्त्ति	"	"

अन्तिम—अष्ट विधि पूजा अर्घ उतारो सकलकीर्त्तिमुनि काज मुदा ॥

१७. नेमिनाथाष्टक	भूधरदास	हिन्दी	११७
१८. पूजासंग्रह	लालचन्द	"	१३८
१९. पद-उठ तेरो मुख देखूं नाभिजी के नंदा	टोडर	"	१४५
२०. पद-देखो माई आज रिषभ घरि आवै	साहकीरत	"	"
२१ पद-संग्रह	शोभाचन्द गुमचन्द आनंद	"	१४६
२२ न्हवण मंगल	व्रती	"	१४७
२३. क्षेत्रपाल भैरवगीत	शोभाचन्द	"	१४६

२४. न्हवण आरती	विरुपाल	हिन्दी	१५०

अन्तिम— केशवनंदन करहिंसु सेव, थिरुपाल भणै जिण चरण सेव ॥

२५. आरती सरस्वती	ब्र० जिनदास	"	१५३

६०८४. गुटका सं० ४० । पत्र सं० ७-६८ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८४ । अपूर्ण । वे० स० १५५१ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

६०८५ गुटका सं० ४१ । पत्र स० २२३ । आ० ८×५½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १७४२ । अपूर्ण । वे० स० १५५२ ।

पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । तथा समयसार नाटक भी है ।

६०८६ गुटका स० ४२ । पत्र सं० १३६ । आ० ५×४½ इ० । ले० काल १७२६ चैत सुदी १ । अपूर्ण । वे० स० १५५३ ।

विशेष—मुख्य २ पाठ निम्न है —

१. चतुर्विंशति स्तुति	×	प्राकृत	६
२. लब्धिविधान चौपई	भीषम कवि	हिन्दी	३०

र० काल स० १६१७ फागुण सुदी १३ । ले० काल सं० १७३२ वैशाख बुदी ३ ।

विशेष—संवत सोलसौ सतरी, फागुण मास जवै ऊतरी ।

उजलपाषि तेरस तिथि जाणि, तादिन कथा चढी परवाणि ॥१६६॥

वरतै निवालो माहि विख्यात, जैनि धर्म तसु गोधा जाति ।

वह कथा भीषम कवि कही, जिनपुराण माहि जैसी लही ॥१६७॥

× × × × ×

कडा बन्ध चौपई जाणि, पूरा हुआ दोइसै प्रमाणि ।

जिनवाणी का अन्त न जास, भवि जीव जे लहै सुखवास ॥

इति श्री लब्धि विधान चौपई संपूर्ण । लिखित चोखा लिखावित साह श्री भोगीदास पठनार्थं । स० १७३२ वैशाख बुदि ३ कृष्णपक्ष ।

३. जिनकुशल की स्तुति	साधुकीर्ति	हिन्दी
४ नेमिजी की लहुरि	विश्वभूषण	"

५	नेमीश्वर राजुल की लहुरि (वारहमासा)	खेतसिंह साह	हिन्दी	
६	ज्ञानपचमीवृहद् स्तवन	समयसुन्दर	"	
७	आदीश्वरगीत	रंगविजय	"	
८.	कुशलगुरुस्तवन	जिनरंगसूरि	"	
९	"	समयसुन्दर	"	
१०	चौबीसीस्तवन	जयसागर	"	
११.	जिनस्तवन	कनककीर्ति	"	
१२.	भोगीदास को जन्म कुण्डली	X	"	जन्म स० १६६७

६०८७. गुटका सं० ४३। पत्र स० २१। आ० ५½X५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल सं० १७३० अपूर्ण। वे० सं० १५५४।

विशेष—तत्वार्थसूत्र तथा पद्मावतीस्तोत्र है। मलारना मे प्रतिलिपि हुई थी।

६०८८. गुटका स० ४४। पत्र सं० ४-७६। आ० ७X४¾ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० कालX। अपूर्ण वे० सं० १५५५।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१	श्वेताम्वर मत के ८४ वोल	जगरूप	हिन्दी	र० काल स० १८११ ले० काल स० १८९९ आसोज सुदी ३।
२.	व्रतविधानरासो	दौलतराम पाटनी	हिन्दी	र० काल सं० १७६७ आसोज सुदी १०

६०८९ गुटका स० ४५। पत्र स० ५-१०३। आ० ६¾X४½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८६६। अपूर्ण। वे० सं० १५५६।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१	सुदामा की वारहखडी	X	हिन्दी	३२-३४

विशेष—कुल २८ पद्य हैं।

२.	जन्मकुण्डली महाराजा सवाई जगतसिहजी की	X	सस्कृत	१०३

विशेष—जन्म स० १८४२ चैत बुदी ११ रवौ ७।३० घनेष्टा ५७।२४ सिघ योग जन्म नाम सदासुख।

६०९० गुटका स० ४६। पत्र स० ३०। आ० ६¾X५¾ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल X पूर्ण। वे० स० १५५७।

विशेष—हिन्दी पद सग्रह है।

६०६१ गुटका स० ४७ | पत्र सं० ३६ | ग्रा० ६X५३ इ० | भाषा सस्कृत हिन्दी | ले० काल X | पूर्ण | वे० स० १५५८ |

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है |

६०६२ गुटका स० ४८ | पत्र स० २ | ग्रा० ६X५३ इ० | भाषा-सस्कृत | विषय-व्याकरण | ले० काल X | ग्रपूर्ण | वे० स० १५५६ |

विशेष—ग्रनुभूतिस्वरूपाचार्य कृत सारस्वत प्रक्रिया है |

६०६३ गुटका स० ४६ | पत्र सं० ६५ | ग्रा० ६X५ इ० | भाषा-हिन्दी | ले० काल स० १८६८ सावन बुदी १२ | पूर्ण | वे० स० १५६२ |

विशेष—देवाब्रह्म कृत विनती सग्रह तथा लोहट कृत ग्रठारह नाते का चौढालिया है |

६०६४ गुटका स० ५० | पत्र स० ७४ | ग्रा० ६X४ इ० | भाषा-हिन्दी संस्कृत | ले० काल X | पूर्ण | वे० स० १५६४ |

विशेष—सामान्य पाठों का सग्रह है |

६०६५. गुटका स० ५१ | पत्र स० १७० | ग्रा० ५३X४ इ० | भाषा-हिन्दी | ले० काल X | ले० काल X | पूर्ण | वे० स० १५६३ |

विशेष—निम्न मुख्य पाठ हैं |

१ कवित्त	कन्हैयालाल	हिन्दी		१०५-१०७

विशेष—३ कवित्त हैं |

२. रागमाला के दोहे	जैतश्री	"		११३-११८
३ बारहमासा	जसराज	"	१२ दोहे हैं	११८-१२१

६०६६. गुटका स० ५२ | पत्र स० १७८ | ग्रा० ६३X६ इ० | भाषा-हिन्दी | ले० काल X | पूर्ण | वे० स० १५६६ |

विशेष—सामान्य पाठों का सग्रह है |

६०६७ गुटका सं० ५३ | पत्र स० ३०४ | ग्रा० ६३X५ इ० | भाषा-संस्कृत हिन्दी | ले० काल स० १७८३ माह बुदी ४ | पूर्ण | वे० स० १५६७ |

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है |

१ ग्रष्टाह्निकारासो	विनयकीर्त्ति	हिन्दी	१५८

२ रोहिणी विधिकथा बंसीदास हिन्दी १५६-६०

र० काल सं० १६६५ ज्येष्ठ सुदी २।

विशेष— सोरह से पच्यानऊ ठई, ज्येष्ठ कृष्ण दुतिया भई

फातिहाबाद नगर सुखमात, अग्रवाल शिव जातिप्रधान ॥

मूलसिंह कीरति विख्यात, विशालकीर्त्ति गोयम सममान।

ता शिष बंशीदास सुजान, माने जिनवर की आन ॥८६॥

अक्षर पद तुक तने जु हीन, पढो वनाइ सदा परवीन ॥

क्षमो शारदा पंडितराइ पढत सुनत उपजै धर्मी सुभाइ ॥८७॥

इति रोहिणीविधि कथा समाप्त ॥

१, सोलहकारणरासो	सकलकीर्त्ति	हिन्दी	१७२
२. रत्नत्रयका महार्घ व क्षमावणी	ब्रह्मसेन	सस्कृत	१७५-१८६
५. विनती चौपड की	मान	हिन्दी	२४३-२४४
६. पार्श्वनाथजयमाल	लोहट	"	२५१

६०९८. गुटका सं० ५४। पत्र सं० २२-३०। आ० ६३/४×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५६८।

विशेष—हिन्दी पदो का संग्रह है।

६०९९. गुटका सं० ५५। पत्र स० १०५। आ० ६×५१/२ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १८८४। अपूर्ण। वे० सं० १५६९।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१ अश्वलक्षण	पं० नकुल	सस्कृत	अपूर्ण	१०-२६

विशेष—श्लोको के नीचे हिन्दी अर्थ भी है। अध्याय के अन्त मे पृष्ठ १२ पर—

इति श्री महाराजि नकुल पडित विरचिते अश्व सुभ विरचित प्रथमोध्याय. ॥

२. फुटकर दोहे	कबीर	हिन्दी

६१००. गुटका सं० ५६। पत्र सं० १४। आ० ७१/२×५१/२ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०,१५७०।

विशेष—कोई उल्लेखनीय पाठ नही है।

६१०१ गुटका स० ५७। पत्र स० ७५। ग्रा० ६×४½ इ०। भाषा-सस्कृत। ले० काल० स० १८४७ जेठ सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १५७१।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१	वृन्दसतसई	वृन्द	हिन्दी	७१२ दोहे हैं।
२	प्रश्नावलि कवित्त	वैद्य नंदलाल	"	
३	कवित्त चुगलखोर का	शिवलाल	"	

६१०२. गुटका स० ५८। पत्र सं० ८२। ग्रा० ५×५½ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १५७२।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है।

६१०३ गुटका स० ५६। पत्र सं० ६-६६। ग्रा० ७×४½ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल × अपूर्ण। वे० स० १५७३।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है।

६१०४. गुटका स० ६०। पत्र स० १८०। ग्रा० ७×५½ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १५७४।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१.	लघुतत्त्वार्थसूत्र	×	संस्कृत	
२	आराधना प्रतिबोधसार	×	हिन्दी	५५ पद्य हैं

६१०५ गुटका स० ६१। पत्र स० ६७। ग्रा० ६×४ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १८१४ भादवा सुदी ६। पूर्ण। वे० स० १५७५।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१.	बारहखडी	×	हिन्दी	३६
२	विनती—पार्श्व जिनेस्वर वदिये रे साहिब मुकति तणू दातार रे	कुशलविजय	"	४०
३	पद—किये आराधना तेरी हिये आनन्द व्यापत हैं।	नवलराम	"	"
४	पद—हेली देहली नित जाय छे नेम के वार	टीलाराम	"	"

५. पद–नेमकवार री वाटडी हो राणी राजुल जोवै खडी हो खडी	खुशालचंद	हिन्दी		४१
६. पद–पल नही लगदी माय मैं पल नहिं लगदी पीया मो मन भावै नेम पिया	बखतराम	"		४३
७. पद–जिनजी को दरसरा नित करा हो सुमति सहेल्यो	रूपचन्द	"		"
८. पद–तुम नेम का भजन कर जिससे तेरा भला हो	बखतराम	"		४४
९. विनती	अजैराज	"		४८
१०. हमीररासो	×	हिन्दी	अपूर्ण	४९
११. पद–भोग दुखदाई तजभवि	जगतराम	"		५०
१२. पद	नवलराम	हिन्दी		५१
१३ " (मङ्गल प्रभाती)	विनोदीलाल	"		५२
१४. रेखाचित्र	आदिनाथ, चन्द्रप्रभ, वर्द्धमान एव पार्श्वनाथ	"		५७–५८
१५. वसंतपूजा	अजैराज	"		५९–६१

विशेष—अन्तिम पद्य निम्न प्रकार हैं —

आवैरि सहर सुहावणू रति वसंत कूं पाय।
अजैराज करि जोरि कै गावै हो मन वच काय ॥

६१०६. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२० । आ० ६×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९३८ पूर्ण । वे० सं० १५७६ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६१०७. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १७ । आ० ६×५ इ० । भाषा–सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५८१ ।

विशेष—देवाब्रह्म कृत पद एव भूधरदास कृत गुरुओ की स्तुति है ।

६१०८. गुटका स० ६४ । पत्र सं० ४० । आ० ८½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८६७ । अपूर्ण । वे० स० १५८० ।

६१०६. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० १७३ । आ० ६३/४×४१/२ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५८१ ।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र संग्रह है ।

६११०. गुटका स० ६६ । पत्र सं० ३२ । आ० ६१/४×४१/२ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५८२ ।

विशेष—पंचमेरु पूजा, अष्टाह्निका पूजा तथा सोलहकारण एवं दशलक्षण पूजाएं हैं ।

६१११. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० १८५ । आ० ८३/४×७ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १७४३ । पूर्ण । वे० सं० १५८६ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६११२. गुटका स० ६८ । पत्र सं० ११५ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५८८ ।

विशेष—पूजा पाठो का सग्रह है ।

६११३. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० १५१ । आ० ४३/४×४ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण वे० स० १५८८ ।

विशेष—स्तोत्रो का सग्रह है ।

६११४ गुटका सं० ७० । पत्र सं० १७-५० । आ० ७१/२×५ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५८६ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

६११५. गुटका सं० ७१ । पत्र सं० १८ । आ० ५×५१/२ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५६० ।

विशेष—चौवीस ठाणा चर्चा है ।

६११६. गुटका स० ७२ । पत्र स० ३८ । आ० ४३/४×३१/२ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × पूर्ण । वे० स० १५६१ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह एवं श्रीपाल स्तुति आदि है ।

६११७. गुटका स० ७३ । पत्र स० ३-५० । आ० ६१/२×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल । अपूर्ण । वे० स० १५६५ ।

६११८. गुटका स० ७४ । पत्र सं० ६ । आ० ६३⁄४×५३⁄४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५९६ ।

विशेष—मनोहर एव पूनो कवि के पद हैं।

६११९. गुटका स० ७५ । पत्र स० १० । आ० ६×५३⁄४ इ० भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५९८ ।

विशेष—पाशाकेवली भाषा एव बाईस परीषह वर्णन है।

६१२०. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५९९ ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र है।

६१२१. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० ९-४२ । आ० ६×४३⁄४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०० ।

विशेष—सम्यक् दृष्टि की भावना का वर्णन है।

६१२२ गुटका सं० ७८ । पत्र स० ७-२१ । आ० ६×४३⁄४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०१ ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्वार्थ सूत्र है।

६१२३. गुटका स० ७९ । पत्र स० ३० । आ० ७×५ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०२ । सामान्य पूजा पाठ हैं।

६१२४. गुटका स० ८० । पत्र स० ३४ । आ० ४×३३⁄४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०५ ।

विशेष—देवाब्रह्म, भूधरदास, जगराम एवं बुधजन के पदो का सग्रह है।

६१२५. गुटका सं० ८१ । पत्र स० २-२० । आ० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-विनती सग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०६ ।

६१२६. गुटका स० ८२ । पत्र स० २८ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०७ ।

६१२७. गुटका स० ८३ । पत्र स० २-२० । आ० ६३⁄४×५३⁄४ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल × अपूर्ण । वे० सं० १६०९ ।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एवं पदो का संग्रह है।

६१२८ गुटका सं० ८५ । पत्र स० १५ । आ० ८½×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण वे० स १६११ ।

विशेष—देवाब्रह्म कृत पदो का सग्रह है ।

६१२९ गुटका स० ८६ । पत्र स० ४० । आ० ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १७२१ पूर्ण । वे० स० १६५६ ।

विशेष—उदयराम एव वख्तराम के पद तथा मेत्रीराम कृत कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा है ।

६१३० गुटका सं० ८७ । पत्र स० ७०-१२८ । आ० ६×५½ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल १८६१ अपूर्ण । वे० स० १६५७ ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है ।

६१३१. गुटका स० ८८ । पत्र स० २८ । आ० ६½×५½ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण वे० स० १६५८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठो का सग्रह है ।

६१३२ गुटका स० ८६ । पत्र स० १६ । आ० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६५६ ।

विशेष—भगवानदास कृत आचार्य शान्तिसागर की पूजा है ।

६१३३ गुटका सं० ९० । पत्र स० २६ । आ० ९½×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १६१८ । पूर्ण । वे० स० १६६० ।

विशेष—स्वरूपचन्द कृत सिद्ध क्षेत्रों की पूजाओ का सग्रह है ।

६१३४ गुटका स० ९१ । पत्र स० ७२ । आ० ९½×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १९१४ पूर्ण । वे० स० १६६१ ।

विशेष—प्रारम्भ के १६ पत्रों पर १ से ५० तक पहाडे हैं जिनके ऊपर नीति तथा शृङ्गार रस के ४७ दोहे हैं । गिरधर के कवित्त तथा शनिश्चर देव की कथा आदि हैं ।

६१३५ गुटका स० ९२ । पत्र स० २० । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६२ ।

विशेष—कौतुक रत्नमजूषा (मत्र तत्र) तथा ज्योतिष सम्बन्धी साहित्य है ।

६१३६ गुटका स० ९३ । पत्र स० ३७ । आ० ५×४ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६६३ ।

विशेष—संघीजी श्रीदेवजी के पठनार्थ लिखा गया था। स्तोत्रों का संग्रह है।

६१३७ गुटका सं० ६४। पत्र सं० ८-४१। आ० ६×५ इ०। भाषा-गुजराती। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६४।

विशेष—वल्लभकृत रुक्मणि विवाह वर्णन है।

६१३८ गुटका सं० ६५। पत्र सं० ४२। आ० ४×३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६६७।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एव पद (चारु रथ की वजत बधाई जी सब जनमन आनन्द दाई) है। चारो रथो का मेला स० १६१७ फागुण बुदी १२ को जयपुर हुआ था।

६१३९ गुटका सं० ६६। पत्र सं० ७६। आ० ८×५ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६६८।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

६१४०. गुटका सं० ६७। पत्र स० ६०। आ० ६½×४½ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६६९।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र सग्रह है।

६१४१ गुटका सं० ६८। पत्र स० ५८। आ० ७×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६७०।

विशेष—सुभाषित दोहे तथा सवैये, लक्षण तथा नीतिग्रन्थ एवं शनिश्चरदेव की कथा है।

६१४२ गुटका स० ६९। पत्र स० २-१२। आ० ६×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६७१।

विशेष—मन्त्र यन्त्रविधि, आयुर्वेदिक नुसखे, खण्डेलवालो के ८४ गोत्र, तथा दि० जैनो की ७२ जातिया जिसमे से ३२ के नाम दिये हैं तथा चाणक्य नीति आदि है। गुमानीराम की पुस्तक से चाकसू मे सं० १७२७ मे लिखा गया।

६१४३ गुटका स० १००। पत्र स० ५४। आ० ६×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६७२।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है। ५४ से आगे पत्र खाली है।

६१४४. गुटका सं० १०१। पत्र स० ८-२५। आ० ६×४½ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १८५२। अपूर्ण। वे० सं० १६७३।

विशेष—स्तोत्र संस्कृत एवं हिन्दी पाठ हैं।

६१४५ गुटका स० १०२ । पत्र सं० ३३ । आ० ७X७ इ० । भाषा–हिन्दी सस्कृत । ले० काल । अपूर्ण । वे० सं० १६७४ ।

विशेष—बारहखडी (सूरत), नरक दोहा (भूधर), तत्त्वार्थसूत्र (उमास्वामि) तथा फुटकर सवैया हैं।

६१४६ गुटका स० १०३ । पत्र सं० १६ । आ० ५X४ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १६७५ ।

विशेष—विषापहार, निर्वाणकाण्ड तथा भक्तामरस्तोत्र एव परीषह वर्णन है।

६१४७ गुटका स० १०४ । पत्र स० ३८ । आ० ६X५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६७६ ।

विशेष—पञ्चपरमेष्ठीगुण, बारहभावना, बाईस परिषह, सोलहकारण भावना आदि हैं।

६१४८ गुटका स० १०५ । पत्र सं० ११-४७ । आ० ६X५ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १६७७ ।

विशेष—स्वरोदय के पाठ है।

६१४९ गुटका सं० १०६ । पत्र स०३६ । आ० ७X३ इ० । भाषा–सस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १६७८ ।

विशेष—बारह भावना, पंचमगल तथा दशलक्षण पूजा हैं।

६१५० गुटका सं० १०७ । पत्र स० ८ । आ० ७X५ । भाषा–हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १६७९ ।

विशेष—सम्मेदशिखरमहात्म्य, निर्वाणकाड (सेवग) फुटकर पद एव नेमिनाथ के दश भव हैं।

६१५१. गुटका स० १०८ । पत्र स० २-४ । आ० ७X५ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १६८० ।

विशेष—देवाब्रह्म कृत कलियुग की वीनती है।

६१५२ गुटका स० १०९ । पत्र स० ६६ । आ० ६X६½ इ० भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १६८१ ।

विशेष—१ से ४ तथा ३४ से ५२ पत्र नही हैं। निम्न पाठ हैं —

१ हरजी के दोहा X हिन्दी ।

विशेष—७६ से २१४, ४४७ से ५५१ दोहे तक हैं आगे नही है।

हरजी रसना सो कहै, ऐसो रस न और।
तिसना तु पीवत नहो, फिर पीहै किहि ठौर ॥ १६३ ॥

हरजी हरजी जो कहै रसना बारबार।

विस तजि मन हू क्यो न ह्वै जमन नाहि तिहि वार ॥ १६४ ॥

२. पुरुष-स्त्री संवाद	रामचन्द	हिन्दी	१२ पद्य हैं।
३. फुटकर कवित्त (शृंगार रस)	X	"	४ कवित्त हैं।
४ दिल्ली राज्य का ब्यौरा	X	"	

विशेष—चौहान राज्य तक वर्णन दिया है।

५. आवागीशी के मंत्र य यन्त्र हैं।

६१५३. गुटका सं० ११० । पत्र सं० ६५ । आ० ७X४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १६८२ ।

विशेष —निर्वाणकाण्ड, भक्तामरस्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, एकीभावस्तोत्र आदि पाठ हैं।

६१५४. गुटका सं० १११ । पत्र सं० ३८ । आ० ६X४ । भाषा हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल X पूर्ण । वे० सं० १६८३ ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड-सेवग पद संग्रह-भूधरदास, जोधा, मनोहर, सेवग, पद-महेन्द्रकीर्ति (ऐसा दे॰ जिनद है सेवो भवि प्रानी) तथा चौरासी गोत्रोत्पत्ति वर्णन आदि पाठ हैं।

६१५५ गुटका सं० ११२ । पत्र सं० ६१ । आ० ५X६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । ले॰ काल X । पूर्ण । वे० सं० १६८४ ।

विशेष-जैनेतर स्तोत्रो का संग्रह है। गुटका पेमसिंह भाटी का लिखा हुआ है।

६१५६ गुटका सं० ११३ । पत्र सं० १३६ । आ० ६X४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले॰ काल X । १८८३ । पूर्ण । वे० सं० १६८५ ।

विशेष—२० का १०००० का, १५ का २० का यंत्र, दोहे, पाशा केवली, भक्तामरस्तोत्र, पद संग्र तथा राजस्थानी मे शृंगार के दोहे हैं।

६१५७. गुटका सं० ११४ । पत्र सं० १२३ । आ० ७X६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-अश्व परीक्षा ले० काल X ।१८०४ असाढ बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १६८६ ।

विशेष—पुस्तक ठाकुर हमीरसिंह गिलवाडी वालो की है खुशालचन्द ने पाटटा मे प्रतिलिपि की थी गुटका सजिल्द है।

६१५८ गुटका स० ११५। पत्र सं० ३२। श्रा० ६½×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ११५।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

६१५९. गुटका स० ११६। पत्र स० ७७. आ० ८×६ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १७०२।

विशेष—गुटका सजिल्द है। खण्डेलवालो के ८४ गोत्र, विभिन्न कवियो के पद, तथा दीवाण अभयचन्दजी के पुत्र आनन्दीलाल की स० १९१९ की जन्म पत्री तथा आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

६१६०. गुटका स० ११७। पत्र स० ६१। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १७०३।

विशेष—नित्य नियम पूजा सग्रह है।

६१६१ गुटका सं० ११८। पत्र स० ७६। आ० ८×६ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७०५।

विशेष—पूजा पाठ एव स्तोत्र सग्रह है।

६१६२ गुटका स० ११९। पत्र स० २४०। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८४१ अपूर्ण। वे० स० १७११।

विशेष—भागवत, गीता हिन्दी पद्य टीका तथा नासिकेतोपाख्यान हिन्दी पद्य मे हैं दोनो ही अपूर्ण है।

६१६३. गुटका सं० १२०। पत्र स० ३२-१२८। आ० ४×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७१२।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

१. नवपदपूजा	देवचन्द	हिन्दी	अपूर्ण	३२-४३
२. अष्टप्रकारीपूजा	"	"		४४-५०

विशेष—पूजा का क्रम श्वेताम्बर मान्यतानुसार निम्न प्रकार है—जल, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल इनकी प्रत्येक की अलग अलग पूजा है।

३ सत्तरभेदी पूजा	साधुकीति	"	र० स० १६७८	५०-६५
४ पदसग्रह	×	"		

६१६४. गुटका स० १२१। पत्र स० ६-१२२। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७१३।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है —

१. गुरुजयमाला	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	१३
२. नन्दीश्वरपूजा	मुनि सकलकीर्ति	संस्कृत	३८
३ सरस्वतीस्तुति	आशाधर	"	५२
४. देवशास्त्रगुरूपूजा	"	"	६८
५. गणधरवलय पूजा	"	"	१०७-११२
६. आरती पचपरमेष्ठी	प० चिमना	हिन्दी	११४

अन्त मे लेखक प्रशस्ति दी है। भट्टारको का विवरण है। सरस्वती गच्छ बलात्कार गण मूल संघ के विशाल कीर्ति देव के पट्ट मे भट्टारक शातिकीर्ति ने नागपुर (नागौर) नगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

६१६५. गुटका सं० १२२। पत्र सं० २८-१२६। आ० ५३/४×५ इ०। भाषा—संकृस्त हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७१४।

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है।

६१६६. गुटका स० १२३। पत्र सं० ६-४६। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७१५।

विशेष—विभिन्न कवियो ने हिन्दी पदो का सग्रह है।

६१६७. गुटका सं० १२४। पत्र स० २५-७०। आ० ४×५३/४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७१६।

विशेष—विनती संग्रह है।

६१६८ गुटका स० १२५। पत्र सं० २-४५। भाषा-सस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७१७।

विशेष—स्तोत्र सग्रह है।

६१६९. गुटका स० १२६। पत्र स० ३६-१८२। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७१८।

विशेष—भूधरदास कृत पार्श्वनाथ पुराण है।

६१७०. गुटका सं० १२७। पत्र सं० ३६-२४६। आ० ८×४३/४ इ०। भाषा-गुजराती। लिपि-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल सं० १७८३। ले० काल स० १६०५। अपूर्ण। वे० स० १७१६।

विशेष—मोहन विजय कृत चन्दना चरित्र हैं।

६१७१ गुटका सं० १२८। पत्र सं० ३१-६२। आ० ५×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७२०।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

६१७२. गुटका स० १२९। पत्र सं० १२। आ० ९×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७२१।

विशेष—भक्तामर भाषा एवं चौवीसी स्तवन आदि है।

६१७३. गुटका स० १३०। पत्र स० ५-१६। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी पद्य। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७२२।

रसकौतुकराजसभारंजन ३२ से १०० तक पद्य हैं।

अन्तिम— कता प्रेम समुद्र हैं गाहक चतुर सुजान।

राजसभा रंजन यहै, मन हित प्रीति निदान ॥१॥

इति श्री रसकौतुकराजसभारंजन समस्या प्रबन्ध प्रथम भाग संपूर्ण।

६१७४. गुटका सं० १३१। पत्र स०६-४१। आ० ६×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल स० १८६१ अपूर्ण। वे० स० १७२३।

विशेष—भवानी सहस्रनाम एवं कवच है।

६१७५. गुटका स० १३२। पत्र स० ३-११०। आ० १०×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १७८७। अपूर्ण। वे० स० १७२४।

विशेष—हनुमन्त कथा (ब्र० रायमल्ल) घंटाकरण मंत्र, विनती, वंशावलि, (भगवान महावीर से लेकर स० १८२२ सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक तक) आदि पाठ हैं।

६१७६ गुटका स० १३३। पत्र स० ५२। आ० ९×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण वे० स० १७१५।

विशेष—समयसार नाटक एवं सिन्दूर प्रकरण दोनो के ही अपूर्ण पाठ है।

६१७७ गुटका स० १३४। पत्र स० १६। आ० ९×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण वे० स० १७२६।

विशेष—सामान्य पाठ संग्रह है।

६१७८ गुटका स० १३५। पत्र सं० ४६। आ० ७×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १८१८। अपूर्ण। वे० स० १७२८।

१. पद– राखो हो वृजराज लाज मेरी	सूरदास	हिन्दी
२. „ महिडो विसरि गई लोह कोउ कान्हन	मलूकदास	„
३. पद–राजा एक पडित पोली तुहारो	सूरदास	हिन्दी
४ पद-मेरो मुखनीको अक तेरो मुख थारी ०	चंद	„
५ पद-अब मैं हरिरस चाखा लागी भक्ति खुमारी०	कबीर	„
६. पद-वादि गये दिन साहिब विना सतगुरु चरण सनेह विना	„	„
७ पद—जा दिन मन पंछी उडि जो है	„	„

फुटकर मत्र, औषधियो के नुसखे आदि हैं।

६१७६. गुटका सं० १३६। पत्र स० ५-१६। आ० ७×५ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। ले० काल १७८४। अपूर्ण। वे० स० १७५५।

विशेष —वख्तराम, देवाब्रह्म, चैनसुख आदि के पदो का सग्रह है। १० पत्र से आगे खाली हैं।

६१८०. गुटका स० १३७। पत्र स० ८८। आ० ६½×५ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७५६।

विशेष—बनारसीविलास के कुछ पाठ एवं दिलाराम, दौलतराम, जिनदास, सेवग, हरीसिंह, हरषचन्द, लालचन्द, गरीबदास, भूधर एव किसनगुलाब के पदो का संग्रह है।

६१८१. गुटका स० १३८। पत्र स० १२१। आ० ६¾×५½ इ०। वे० स० २०४३।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं.—

१. बीस विरहमान पूजा	नरेन्द्रकीर्त्ति	हिन्दी संस्कृत	
२. नेमिनाथ पूजा	कुवलयचन्द	संस्कृत	
३ क्षीरोदानी पूजा	अभयचन्द	„	
४ हेमभारी	विश्वभूषण	हिन्दी	
५ क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीर्त्ति	„	
६. शिखर विलास भाषा	धनराज	„	र० काल स० १८४८

६१८२ गुटका सं० १३६। पत्र सं० ३-४६। आ० १०½×७ इ०। भाषा–हिन्दी प०। ले० काल स० १९५५। अपूर्ण वे० स० २०४०।

विशेष—जातकाभरण ज्योतिष का ग्रन्थ है इसका दूसरा नाम जातकालकार भी है। भैरूलाल जोशी ने प्रतिलिपि की थी।

६१८३. गुटका सं० १४० । पत्र सं० ४-४३ । आ० १०३/४×७ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल स० १६०६ द्वि० भादवा बुदी २ । अपूर्ण । वे० स० २०४५ ।

विशेष—अमृतचन्द सूरि कृत समयसार वृत्ति है ।

६१८४ गुटका सं० १४१ । पत्र स० ३-१०६ । आ० १०३/४×६१/२ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८५३ असाढ बुदी ६ । अपूर्ण । वे० स० २०४६ ।

विशेष—नयनसुख कृत वैद्यमनोत्सव (र० स० १६४६) तथा बनारसीविलास आदि के पाठ हैं ।

६१८५. गुटका सं० १४२ । पत्र सं० ८-६३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०४७ ।

विशेष—द्यानतराय कृत चर्चाशतक हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

६१८६. गुटका सं० १४३ । पत्र सं० १६-१७१ । आ० ७३/४×६१/२ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल स० १६१५ । अपूर्ण । वे० सं० २०४८ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र आदि पाठो का सग्रह है ।

सवत् १६१५ वर्षे क्वार सुदी ५ दिने श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीआदिनाथचैत्यालयेनुगामी शुभस्थाने भ० श्रीसकलकीर्त्ति, भ० भुवनकीर्त्ति, भ० ज्ञानभूषण, भ० विजयकीर्त्ति, भ० शुभचन्द्र, आ० गुरुपदेशात् आ० श्रीरत्नकीर्त्ति आ० यश कीर्त्ति गुणचन्द्र ।

६१८७. गुटका सं० १४४ । पत्र स० ४६ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले० काल सं० १६२० । पूर्ण । वे० सं० २०४६ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१ मुक्तावलिकथा	भारमल्ल	हिन्दी	र० काल स० १७८८
२. रोहिणीव्रतकथा	×	"	
३. पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	ललितकीर्त्ति	"	
४ दशलक्षणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	"	
५. अष्टाह्निकाकथा	विनयकीर्त्ति	"	
६ सङ्कटचौथव्रतकथा	देवेन्द्रभूषण [भ० विश्वभूषण के शिष्य]	"	
७. आकाशपञ्चमीकथा	पांडे हरिकृष्ण	"	र० काल स० १७०६
८ निर्दोषसप्तमीकथा	"	"	" " १७७१

९. निशल्याष्टमीकथा	पाण्डे हरिकृष्ण	हिन्दी	
१० सुगन्धीदशमीकथा	हेमराज	"	
११. अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	पाडे हरिकृष्ण	"	
१२ बारहसौ चौतीसव्रतकथा	जिनेन्द्रभूषण	"	

६१८८ गुटका स० १४५। पत्र स० २१६ । आ० ६X६½ इ०। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २०५०।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१. विरुदावली (पट्टावलि)	X	संस्कृत	७
२, सोलहकारणपूजा	ब्र० जिनदास	"	६१
३, दशलक्षण जयमाल	सुमतिसागर [अभयनन्दि के शिष्य]	हिन्दी	८०
४. दशलक्षण जयमाल	सोमसेन	सस्कृत	६०
५. मेरुपूजा	"	"	
६. चौरासी न्यातिमाला	ब्र० जिनदास	हिन्दी	१४७

विशेष—इन्ही की एक चौरासी जातिमाला और है।

७. आदिनाथपूजा	ब्र० शातिदास	"	१५०
८. अनन्तनाथपूजा	"	"	१६६
९ सप्तऋषिपूजा	भ० देवेन्द्रकीर्त्ति	संस्कृत	१७६
१०. ज्येष्ठजिनवरमोटा	श्रुतसागर	"	१७८
११. ज्येष्ठजिनवर लाहान	ब्र० जिनदास	सस्कृत	१७८
१२ पञ्चक्षेत्रपालपूजा	सोमसेन	हिन्दी	१६१
१३ शीतलनाथपूजा	धर्मभूषण	"	२१०
१४. व्रतजयमाला	सुमतिसागर	हिन्दी	२१३
१५. आदित्यवारकथा	प० गङ्गादास [धर्मचन्द का शिष्य]	"	२१६

६१८९. गुटका स० १४६। पत्र सं० ११-८८। आ० ८½X४½ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७०१। अपूर्ण। वे० सं० २०५१।

विशेष—बनारसीविलास एवं नाममाला आदि के पाठो का सग्रह है।

६१६० गुटका सं० १४७। पत्र सं० ३०-६३। आ० ४×४½ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २१८६।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है।

६१६१ गुटका सं० १४८। पत्र सं० ३५। आ० ८×१० इ०। ले० काल स० १८४३। पूर्ण। वे० सं० २१८७।

१ पञ्चकल्याणक	हरिचन्द	हिन्दी	१-२०
			र० काल स० १८३३ ज्येष्ठ सुदी ७
२. त्रेपनक्रियाव्रतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्त्ति	संस्कृत	

विशेष—नौमैडा मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

३ पट्टावलि	X	हिन्दी	३५

६१६२. गुटका स० १४६। पत्र स० २१। आ० ६×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। ले० काल स० १८२६ ज्येष्ठ सुदी १५। पूर्ण। वे० स० २१९१।

विशेष—गिरनार यात्रा का वर्णन है। चादनगाव के महावीर का भी उल्लेख है।

६१६३ गुटका सं० १५०। पत्र सं० ५४६। आ० ८×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल १७१७। पूर्ण। वे० स० २१९२।

विशेष—पूजा पाठ एवं दिल्ली की बादशाहत का ब्योरा है।

६१६४ गुटका स० १५१। पत्र स० ९२। आ० ९×६ इ०। भाषा-प्राकृत-हिन्दी। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० २१९५।

विशेष—मार्गणा चौबीस ठाणा चर्चा तथा भक्तामरस्तोत्र आदि हैं।

६१६५ गुटका सं० १५२। पत्र स० ४०। आ० ७½×५½ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल X अपूर्ण। वे० स० २१९६।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६१६६ गुटका स० १५३। पत्र स० २७-२२१। आ० ६½×६ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० २१९७।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६१६७. गुटका स० १५४। पत्र स० २७-१४७। आ० ८×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २१९८।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६१६८. गुटका सं० १५४ क। पत्र सं० ३२। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१९९।

विशेष—समवशरण पूजा है।

६१९९. गुटका सं० १५५। पत्र सं० ५७-१५२। आ० ७३×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२००।

विशेष—नासिकेत पुराण हिन्दी गद्य तथा गोरख सवाद हिन्दी पद्य मे है।

६२००. गुटका सं० १५६। पत्र स० १८-३९। आ० ७३×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२०१।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र आदि हैं।

६२०१. गुटका सं० १५७। पत्र सं० १०। आ० ७३×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२०२।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

६२०२. गुटका स० १५८। पत्र स० २-३०। आ० ७×५ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १८२७। अपूर्ण। वे० सं० २२०३।

विशेष—मत्रो एवं स्तोत्रो का सग्रह है।

६२०३. गुटका सं० १५९। पत्र स० ६३। आ० ७३×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण वे० सं० २२०४।

विशेष—कछुवाहा वश के राजाओ की वशावली, १०० राजाओ के नाम दिये हैं। सं० १७५६ तक वशावली है। पत्र ७ पर राजा पृथ्वीसिंह का गद्दी पर स० १८२४ मे बैठना लिखा है।

२ दिल्ली नगर की बसापत तथा बादशाहत का ब्यौरा है किस बादशाह ने कितने वर्ष, महीने, दिन तथा घडी राज्य किया इसका वृत्तान्त है।

३. बारहमासा, प्राणीडा गीत, जिनवर स्तुति, शृङ्गार के सवैया आदि है।

६२०४. गुटका सं० १६०। पत्र सं० ५६। आ० ६×४३ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल × अपूर्ण। वे० सं० २२०५।

विशेष—बनारसी विलास के कुछ पाठ तथा भक्तामर स्तोत्र आदि पाठ हैं।

६२०५. गुटका सं० १६१ । पत्र सं० ३५ । आ० ७×६ इ० । भाषा-प्राकृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२०६ ।

विशेष—श्रावक प्रतिक्रमण हिन्दी अर्थ सहित है । हिन्दी पर गुजराती का प्रभाव है ।

१ से ५ तक की गिनती के यंत्र हैं । इसके बीस यत्र हैं १ से ६ तक की गिनती के ३६ खानो का यत्र हैं । इसके १२० पत्र हैं ।

६२०६. गुटका सं० १६२ । पत्र सं० १६-४६ । आ० ६३/४×७१/२ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल स० १६५५ । अपूर्ण । वे० स० २२०८ ।

विशेष—सेवग, जगतराम, नवल, बलदेव, माणक, धनराज, बनारसीदास, खुशालचन्द, बुधजन, न्यामत आदि कवियो के विभिन्न राग रागिनियो मे पद हैं ।

६२०७ गुटका स० १६३ । पत्र स० ११ । आ० ५३/४×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२०७ ।

विशेष —नित्य नियम पूजा पाठ है ।

६२०८ गुटका स० १६४ । पत्र स० ७७ । आ० ६१/२×६ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२०६ ।

विशेष—विभिन्न स्तोत्रो का सग्रह है ।

६२०६ गुटका स० १६५ । पत्र स० ५२ । आ० ६३/४×४१/२ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२१० ।

विशेष— नवल, जगतराम, उदयराम, गुनपूरण, चैनविजय, रेखराज, जोधराज, चैनसुख, धर्मपाल, मगतराम भूधर, साहिबराम, विनोदीलाल आदि कवियो के विभिन्न राग रागिनियो मे पद हैं । पुस्तक गोमतीलालजी ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

६२१० गुटका सं० १६६ । पत्र स० २४ । आ० ६३/४×४१/२ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२११ ।

१ अठारह नाते का चौढालिया	लोहट	हिन्दी	१-७
२. मुहूर्त्तमुक्तावलीभाषा	शङ्कराचार्य	"	१-२३

६२११ गुटका सं० १६७ । पत्र स० १४ । आ० ६×४१/२ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१२ ।

विशेष—पद्मावतीयन्त्र तथा युद्ध मे जीत का यन्त्र, सीचा जाने का यन्त्र, नजर तथा वशीकरण यन्त्र तथा महालक्ष्मीसप्रभाविकस्तोत्र हैं ।

६२१२. गुटका सं० १६८ । पत्र स० १२-३६ । आ० ७३/४×५३/४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१३ ।

विशेष—वृन्द सतसई है ।

६२१३ गुटका स० १६९ । पत्र सं० ४० । आ० ८३/४×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-सग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१४ ।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर आदि स्तोत्रो का संग्रह है ।

६२१४. गुटका स० १७० । पत्र सं० ६६ । आ० ८×५१/२ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२१५ ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, रसिकप्रिया (केशव) एव रत्नकोश है ।

६२१५ गुटका स० १७१ । पत्र स० ३-८१ । आ० ५१/४×५१/४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२१६ ।

विशेष—जगतराम के पदो का संग्रह है । एक पद हरीसिंह का भी है ।

६२१६. गुटका सं० १७२ । पत्र सं० ५१ । आ० ५×४१/२ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१७ ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे एवं रति रहस्य है ।

अवशिष्ट-साहित्य

६२१७. अष्टोत्तरीस्नात्रविधि ... । पत्र स० १ । आ० १०×५१/२ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० का० × । पूर्ण । वे० सं० २६१ । अ भण्डार ।

६२१८. जन्माष्टमीपूजन ... । पत्र सं० ७ । आ० ११३/४×६ इ० । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० स० ११५७ । अ भण्डार ।

६२१९. तुलसीविवाह ... । पत्र स० ५ । आ० ६१/४×४१/२ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-विधिविधान । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० स० २२२२ । अ भण्डार ।

६२२०. परमाणुनामविधि (नाप तोल परिमाण) ... । पत्र सं० २ । आ० ६३/४×५१/२ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-नापने तथा तोलने की विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१३७ । अ भण्डार ।

६२२१. प्रतिष्ठापाठविधि ...... । पत्र स० २० । आ० ८३/४×६३/४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७७२ । अ भण्डार ।

६२२२. प्रायश्चित्तचूलिकाटीका—नन्दिगुरु । पत्र स० २५ । आ० ८×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-आचारशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२८ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५२९) और है ।

६२२३ प्रति स० २ । पत्र स० १०५ । ले० काल × । वे० स० ६५ । घ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'प्रायश्चित विनिश्चयवृत्ति' दिया है ।

६२२४ भक्तिरत्नाकर—वनमाली भट्ट । पत्र स० १६ । आ० ११३/४×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण । वे० स० २२६१ । अ भण्डार ।

६२२५ भद्रबाहुसंहिता—भद्रबाहु । पत्र स० १७ । आ० ११३/४×४१/२ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिप । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५१ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १९६) और है ।

६२२६. विधि विधान ... । पत्र स० ७२-१५३ । आ० १२×५१/२ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा विधान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०८३ । अ भण्डार ।

६२२७. प्रति स० २ । पत्र स० ५२ । ले० काल × । वे० स० ६६१ । क भण्डार ।

६२२८. समवशरणपूजा—पन्नालाल दूनीवाले । पत्र स० ८५ । आ० १२३/४×८ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १९२१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७७५ । ङ भण्डार ।

६२२९ प्रति स० २ । पत्र स० ४३ । ले० काल स० १८२९ भाद्रपद शुक्ला १२ । वे० स० ७७७ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७७६) और है ।

६२३० प्रति स० ३ । पत्र सं० ७५ । ले० काल स० १९२८ भादवा सुदी ३ । वे० स० २०० । छ भण्डार ।

६२३१ प्रति स० ४ । पत्र स० १३९ । ले० काल × । वे० स० २७८ । ञ भण्डार ।

६२३२ समुच्चयचौबीसतीर्थङ्करपूजा ...... । पत्र स० २ । आ० ११३/४×५३/४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०५० । अ भण्डार ।

ग्रन्थानुक्रमणिका

अ

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अकबर वीरबल वार्त्ता	—	(हि०)	६८१
अकलङ्कचरित्र	—	(हि० ग०)	१६०
अकलङ्कचरित्र	नाथूराम	(हि०)	१६०
अकलङ्कदेव कथा	—	(सं०)	२१३
अकलङ्कनाटक	मक्खनलाल	(हि०)	३१६
अकलङ्काष्टक	भट्टाकलङ्क	(सं०)	५७५
			६३७, ६४६, ७१२
अकलङ्काष्टक	—	(सं०)	३७६
अकलङ्काष्टकभाषा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	३७६
अकलङ्काष्टक	—	(हि०)	७६०
अकंपनाचार्यपूजा	—	(हि०)	६८६
अक्लमदवार्त्ता	—	(हि०)	३२४
अकृत्रिमजिनचैत्यालयजयमाल	—	(प्रा०)	४५३
अकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल	भगवतीदास	(हि०)	६६४
			७२०
अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	—	(हि०)	७०४, ७४६
अकृत्रिमचैत्यालयपूजा	मनरङ्गलाल	(हि०)	४५४
अकृत्रिमचैत्यालयपूजा	—	(सं०)	५१५
अकृत्रिमचैत्यालय वर्णन	—	(हि०)	७६३
अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	जिनदास	(सं०)	४५३
अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	चैनसुख	(हि०)	४५३
अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	लालजीत	(हि०)	४५३
अकृत्रिमजिनालयपूजा	पांडे जिनदास	(सं०)	४५३

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अक्षयदशमीकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६६५
अक्षयदशमीविधान	—	(सं०)	५३८
अक्षयनिधिपूजा	—	(सं०)	४५४
			५०६, ५३६, ७६३
अक्षयनिधिपूजा	ज्ञानभूषण	(हि०)	४५४
अक्षयनिधिमुष्टिकाविधानव्रतकथा	—	(सं०)	२१३
अक्षयनिधिमडल [मडलचित्र]	—		५२५
अक्षयनिधिविधान	—	(सं०)	४५४
अक्षयनिधिविधानकथा	—	(सं०)	२४४
अक्षयनिधिव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४४
अक्षयविधानकथा	—	(सं०)	२४६
अक्षरबावनी	द्यानतराय	(हि०)	१५, ६७६
अजितपुराण	पंडिताचार्य अरुणमणि	(सं०)	१४२
अजितनाथपुराण	विजयसिंह	(अप०)	१४२
अजितशान्तिजिनस्तोत्र	—	(प्रा०)	७५४
अजितशान्तिस्तवन	नन्दिषेण	(प्रा०)	३७६
			६८१
अजितशांतिस्तवन	—	(प्रा० सं०)	३८१
अजितशांतिस्तवन	—	(सं०)	३७६
अजितशांतिस्तवन	मेरुनन्दन	(हि०)	६१६
अजितशांतिस्तवन	—	(हि०)	६१६
अजितशांतिस्तवन	—	(सं०)	४२३
अजीर्णमञ्जरी	काशीराज	(सं०)	२९६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भापा	पृष्ठ सं०
अजीर्णमञ्जरी	—	(सं०)	२९६
अठाई का मडल [चित्र]	—		५२५
अठाई का व्यौरा	—	(सं०)	५४३
अट्ठाईस मूलगुण वर्णन	—	(सं०)	४८
अठारह नाते की कथा	ऋषि लालचन्द	(हि०)	२१३
अठारह नाते की कथा	लोहट	(हि०)	६२३,७७५
अठारह नाते का चौढाला	लोहट	(हि०)	७२३ ७८०, ७९८
अठारह नाते का चौढाल्या	—	(हि०)	७४५
अठारह नाते का व्यौरा	—	(हि०)	६२३
अठावीसमूलगुणरास	ब्र० जिनदास	(हि०)	७०७
अठोत्तरासनाथविधि	—	(हि०)	६९८
अढाई [सार्द्धद्वय] द्वीपपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४५५
अढाईद्वीप पूजा	डालूराम	(हि०)	४५५
अढाईद्वीप पूजा	—	(हि०)	७३०
अढाईद्वीपवर्णन	—	(सं०)	३१९
अणथमितिसंधि	हरिश्चन्द्र अग्रवाल	(अप०)	२४३ ६२८, ६४२
अणत का मडल [चित्र]			५२५
अतिशयक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	५५३
अद्भुतसागर	—	(हि०)	२९६
अध्ययन गीत	—	(हि०)	६८०
अध्यात्मकमलमार्त्तण्ड	कवि राजमल्ल	(सं०)	१२९
अध्यात्मतरङ्गिणी	सोमदेव	(सं०)	९९
अध्यात्मदोहा	रूपचन्द	(हि०)	७४६
अध्यात्मपत्र	जयचन्द छावड़ा	(हि०)	९९
अध्यात्मबत्तीसी	बनारसीदास	(हि०)	९९
अध्यात्मबारहखडी	कवि सूरत	(हि०)	९९
अनगारधर्मामृत	प० आशाधर	(सं०)	४८
अनन्तगर्भवर्णन [मन्त्र सहित]	—	(सं०)	५७६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अनन्तचतुर्दशीकथा	—	(सं०)	२१४
अनन्तचतुर्दशीकथा	मुनीन्द्रकीर्त्ति	(प्रा०)	२१४
अनन्तचतुर्दशीकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२१४
अनन्तचतुर्दशीपूजा	भ० मेरुचन्द	(सं०)	६०७
अनन्तचतुर्दशीपूजा	शान्तिदास	(सं०)	४५६
अनन्तचतुर्दशीपूजा	—	(सं०)	५५७,७६३
अनन्तचतुर्दशीपूजा	श्री भूषण	(हि०)	४५६
अनन्तचतुर्दशीपूजा	—	(सं० हि०)	४५६
अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा व पूजा	खुशालचन्द	(हि०)	५१९
अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६९५
अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	पाडे हरिकृष्ण	(हि०)	७९५
अनन्त के छप्पय	धर्मचन्द्र	(हि०)	७५७
अनन्तजिनपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४५६
अनन्तजिनपूजा	—	(हि०)	७५९
अनन्तनाथपुराण	गुणभद्राचार्य	(सं०)	१४२
अनन्तनाथपूजा	श्री भूषण	(सं०)	४५६
अनन्तनाथपूजा	सेवग	(हि०)	४५६
अनन्तनाथपूजा	—	(सं०)	४५६
अनन्तनाथपूजा	ब्र० शान्तिदास	(हि०)	६९०, ७८५
अनन्तनाथपूजा	—	(हि०)	४५७
अनन्तपूजा	—	(सं०)	५१६
अनन्तपूजाव्रतमहात्म्य	—	(सं०)	४५७
अनन्तविधानकथा	—	(अप०)	६३३
अनन्तव्रतकथा	भ० पद्मनन्दि	(सं०)	२१४
अनन्तव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२१८
अनन्तव्रतकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५
अनन्तव्रतकथा	मदनकीर्त्ति	(सं०)	२४७
अनन्तव्रतकथा	—	(सं०)	२१४
अनन्तव्रतकथा	—	(अप०)	२४५
अनन्तव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२१८

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अनन्तव्रतपूजा	श्री भूषण	(सं०)	५१५
अनन्तव्रतपूजा	—	(सं०)	४५७
			५३६, ६६३, ७२८
अनन्तव्रतपूजा	भ० विजयकीर्त्ति	(हि०)	४५७
अनन्तव्रतपूजा	साह सेवगराम	(हि०)	४५७
अनन्तव्रतपूजा	—	(हि०)	५१८
			५१६, ५८६, ७२८
अनन्तव्रतपूजाविधि	—	(सं०)	४५७
अनन्तव्रतविधान	मदनकीर्त्ति	(सं०)	२१४
अनन्तव्रतरास	ब्र० जिनदास	(हि०)	५६०
अनन्तव्रतोद्यापनपूजा	आ० गुणचन्द्र	(सं०)	४५७
			५१३, ५३६, ५४०
अनागारभक्ति	—	(सं०)	६२७
अनाथी ऋषि स्वाध्याय	—	(हि० गुज०)	३७६
अनाथानोचोढाल्या	खेम	(हि०)	४३५
अनाथीसाध चौढालिया	विमलविनयगणि	(हि०)	६८०
अनाथीमुनि सज्झाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८
अनाथीमुनि सज्झाय	—	(हि०)	४३५
अनादिनिधनस्तोत्र	—	(सं०)	३७६, ६०४
अनिटकारिका	—	(सं०)	२५७
अनिटकारिकावचूरि	—	(सं०)	२५७
अनित्यपच्चीसी	भगवतीदास	हि०)	६८६
अनित्यपञ्चासिका	त्रिभुवनचन्द्र	(हि०)	७५५
अनुभवप्रकाश	दीपचन्द्र कासलीवाल	(हि०)	४८
अनुभवविलास	—	(हि०)	५११
अनुभवानन्द	—	(हि० ग०)	४८
अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	महीक्षपणककवि	(सं०)	२७१
अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	—	(सं०)	२७१
अनेकार्थनाममाला	नन्दिकवि	(हि०)	७०६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अनेकार्थमञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	२७१ ७६६
अनेकार्थशत	भ० हर्षकीर्त्ति	(सं०)	२७१
अनेकार्थसंग्रह	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२७१
अनेकार्थसंग्रह [महीपकोश]	—	(सं०)	२७१
अन्तरायवर्णन	—	(हि०)	५६०
अन्तरिक्षपार्श्वनाथाष्टक	—	(सं०)	५६०
अन्ययोगव्यवच्छेदकद्वात्रिंशिका	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	५७३
अन्यस्फुट पाठ संग्रह	—	(हि०)	६२७
अपराधसूदनस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(सं०)	६६२
अबजदकेवली	—	(सं०)	२७६
अभिज्ञान शाकुन्तल	कालिदास	(सं०)	३१६
अभिधानकोश	पुरुषोत्तमदेव	(सं०	२७१
अभिधानचिंतामणिनाममाला	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२७१
अभिधानरत्नाकर	धर्मचन्द्रगणि	(सं०	२७२
अभिधानसार	पं० शिवजीलाल	(सं०)	२७२
अभिषेक पाठ	—	(सं०)	४५८
			५६५, ७६१
अभिषेकविधि	लक्ष्मीसेन	(सं०)	४५८
अभिषेकविधि	—	(सं०)	३६८
			४५८, ५७०
अभिषेकविधि	—	(हि०)	४५८
अमरकोश	अमरसिंह	(सं०)	२७२
अमरकोशटीका	भानुजी दीक्षित	(सं०)	२७२
अमरचन्द्रिका	—	(हि०)	३०८
अमरूशतक	—	(सं०)	१६०
अमृतधर्मरसकाव्य	गुणचन्द्रदेव	(सं०)	४८
अमृतसागर	भ० सवाई प्रतापसिंह	(हि०)	२६६
अरहन्ता सज्झाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८
अरहन्तस्तवन	—	(सं०)	३७६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अरिष्टकर्त्ता	—	(सं०)	२७६
अरिष्टाध्याय	—	(प्रा०)	४५६
अरिहन्त केवलीपाशा	—	(सं०)	२७६
अर्थदीपिका	जिनभद्रगणि	(प्रा०)	१
अर्थप्रकाश	लङ्कानाथ	(सं०)	२९६
अर्थप्रकाशिका	सदासुख कासलीवाल	(हि० ग०)	१
अर्थसार टिप्पण	—	(सं०)	१७
अर्हत्प्रवचन	—	(सं०)	१
अर्हत्प्रवचन व्याख्या	—	(सं०)	२
अर्हनकचौढालियागीत	विमलविनय[विनयरग]	(हि०)	४३५
अर्हद्भक्तिविधान	—	(सं०)	५७४,६५८
अलङ्कारटीका	—	(सं०)	३०८
अलङ्काररत्नाकर	दलपतिराय वशीधर	(हि०)	३०८
अलङ्कारवृत्ति	जिनवर्द्धन सूरि	(सं०)	३०८
अलङ्कारशास्त्र	—	(सं०)	३०८
अवति पार्श्वनाथजिनस्तवन	हर्षसूरि	(हि०)	३७६
अव्ययप्रकरण	—	(सं०)	२५७
अव्ययार्थ	—	(सं०)	२५७
अशनसमितिस्वरूप	—	(प्रा०)	५७२
अशोकरोहिणीकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२१६
अशोकरोहिणीव्रतकथा	—	(हि० ग०)	२१६
अश्वलक्षण	प० नकुल	(हि०)	७८१
अश्वपरीक्षा	—	(सं०)	७८६
अषाढएकादशीमहात्म्य	—	(सं०)	२१५
अष्टक [पूजा]	नेमिदत्त	(सं०)	५६०
अष्टक [पूजा]	—	(हि०)	५६०, ७०१
अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन	—	(सं०)	१
अष्टपाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	६६
अष्टपाहुडभाषा	जयचन्द छाबडा	(हि० ग०)	६६
अष्टप्रकारीपूजा	देवचन्द	(हि०)	७६०
अष्टशती [देवागम स्तोत्र टीका]	अकलङ्कदेव	(सं०)	१२६
अष्टसहस्री	आ० विद्यानन्दि	(सं०)	१२६
अष्टागसम्यग्दर्शनकथा	सकलकीर्त्ति	(सं०)	२१५
अष्टागोपाख्यान	पं० मेधावी	(सं०)	२१५
अष्टादशसहस्रशीलभेद	—	(सं०)	५६१
अष्टाह्निकाकथा	यशःकीर्त्ति	(सं०)	६४५
अष्टाह्निकाकथा	शुभचन्द	(सं०)	२१५
अष्टाह्निकाकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७४०
अष्टाह्निकाकथा	नथमल	(हि०)	२१५
अष्टाह्निका कौमुदी	—	(सं०)	२१५
अष्टाह्निकागीत	भ० शुभचन्द्र	(हि०)	६८६
अष्टाह्निका जयमाल	—	(सं०)	४५६
अष्टाह्निका जयमाल	—	(प्रा०)	४५६
अष्टाह्निकापूजा	—	(सं०)	४५६, ५७०, ५९६, ६५८, ७८४
अष्टाह्निकापूजा	द्यानतराय	(हि०)	४६०, ७०५
अष्टाह्निकापूजा	—	(हि०)	४६१
अष्टाह्निकापूजाकथा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४६०
अष्टाह्निकाभक्ति	—	(सं०)	५६४
अष्टाह्निकाव्रतकथा	विनयकीर्त्ति	(हि०)	६१४, ७८०, ७६४
अष्टाह्निकाव्रतकथा	—	(सं०)	२१५
अष्टाह्निकाव्रतकथासग्रह	गुणचन्दसूरि	(सं०)	२१६
अष्टाह्निकाव्रतकथा	लालचंद विनोदीलाल	(हि०)	६२२
अष्टाह्निकाव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
अष्टाह्निकाव्रतकथा	—	(हि०)	२४७ ७२७
अष्टाह्निकाव्रतपूजा	—	(सं०)	५१६
अष्टाह्निकाव्रतोद्यापनपूजा	भ० शुभचन्द	(हि०)	४६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६
अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन	—	(हि०)	४६१
अकुरारोपणविधि	पं० आशाधर	(सं०)	४५३
			५१७
अकुरारोपणविधि	इन्द्रनन्दि	(सं०)	४५३
अंकुरारोपणविधि	—	(सं०)	४५३
अकुरारोपणमडलचित्र			५२५
अञ्जनचोरकथा	—	(हि०)	२१५
अञ्जना को रास	धर्मभूषण	(हि०)	५६३
अञ्जनारास	शांतिकुशल	(हि०)	३६०

आ

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
आकाशपञ्चमीकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५
आकाशपञ्चमीकथा	मदनकीर्त्ति	(सं०)	२४७
आकाशपञ्चमीकथा	—	(सं०)	२१६
आकाशपञ्चमीकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४५
आकाशपञ्चमीकथा	पाडे हरिकृष्ण	(हि०)	७६४
आकाशपञ्चमीव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२१६
आगमपरीक्षा	—	(सं०)	३५५
आगमविलास	द्यानतराय	(हि०)	४६
आगामी त्रेसठशलाका पुरुष वर्णन	—	(हि०)	१४२
आचारसार	वीरनन्दि	(सं०)	४६
आचारसार	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४६
आचारागसूत्र	—	(प्रा०)	२
आचार्यभक्ति	—	(सं०)	६३३
आचार्यभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
आचार्यों का ब्यौरा	—	(हि०)	३७०
आठकोडिमुनिपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	४६१
आतमशिक्षा	पद्मकुमार	(हि०)	६१६
आतमशिक्षा	प्रसन्नचन्द	(हि०)	६१६
आतमशिक्षा	राजसमुद्र	(हि०)	६१६
आतमशिक्षा	सालम	(हि०)	६१६
आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक	—	(प्रा०)	२
आत्मध्यान	बनारसीदास	(हि०)	१००
आत्मनिन्दास्तवन	रत्नाकर	(सं०)	३८०
आत्मप्रबोध	कुमार कवि	(सं०)	१००
आत्मसबोध जयमाल	—	(हि०)	७५५
आत्मसबोधन	द्यानतराय	(हि०)	७१४
आत्मसबोधनकाव्य	—	(सं०)	१००
आत्मसबोधनकाव्य	—	(अप०)	१००
आत्मानुशासन	गुणभद्राचार्य	(सं०)	१००
आत्मानुशासनटीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(सं०)	१०१
आत्मानुशासनभाषा	पं० टोडरमल	(हि० ग०)	१०२
आत्मावलोकन	दीपचन्द कासलीवाल	(" ")	१००
आत्रेयवैद्यक	आत्रेय ऋषि	(सं०)	२६६
आदिजिनवरस्तुति	कमलकीर्त्ति	(हि०)	४३६
आदित्यवारकथा	—	(सं०)	६६६
आदित्यवारकथा	गंगाराम	(हि०)	७६५
आदित्यवारकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
आदित्यवारकथा	भाऊ कवि	(हि०)	२४४
			६०१, ६८३, ६८५, ७२३, ७४०, ७४५, ७५६, ७६२
आदित्यवारकथा	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१२
आदित्यवारकथा	वादीचन्द्र	(हि०)	६०७
आदित्यवारकथाभाषा टीका	मूलकर्त्ता- सकलकीर्त्ति		
	भाषाकार- सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं० हि०)	७०७
आदित्यवारकथा	—	(हि०)	६२३
			६७६, ७१३, ७१४, ७१८, ७४१
आदित्यवारपूजा	—	(हि०)	४६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
आदित्यव्रतपूजा	—	(सं०)	४६१
आदित्यवारव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५४०
आदित्यव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	७३१
आदित्यव्रतपूजा	केशवसेन	(सं०)	४६१
आदित्यव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५४०
आदिनाथकल्याणकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७०७
आदिनाथ गीत	मुनि हेमसिद्ध	(हि०)	४३६
आदिनाथपूजा	मनहरदेव	(हि०)	५११
आदिनाथपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	४६१ ६५०
आदिनाथपूजा	ब्र० शातिदास	(हि०)	७६५
आदिनाथपूजा	सेवगराम	(हि०)	६७४
आदिनाथपूजा	—	(हि०)	४६२
आदिनाथ की विनती	—	(हि०)	७७४ ७५२
आदिनाथ विनती	कनककीर्त्ति	(हि०)	७२२
आदिनाथसज्भाय	—	(हि०)	४३६
आदिनाथस्तवन	कवि पल्ह	(हि०)	७३८
आदिनाथस्तोत्र	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
आदिनाथाष्टक	—	(हि०)	५६४
आदिपुराण	जिनसेनाचार्य	(सं०)	१४२ ६४६
आदिपुराण	पुष्पदन्त	(अप०)	१४३ ६४२
आदिपुराण	दौलतराम	(हि० ग०)	१४४
आदिपुराण टिप्पण	प्रभाचन्द	(सं०)	१४३
आदिपुराण विनती	गङ्गादास	(हि०)	७०१
आदीश्वर आरती	—	(हि०)	५६४
आदीश्वरगीत	रङ्गविजय	(हि०)	७७६
आदीश्वर के १० भव	गुणचन्द	(हि०)	७६२
आदीश्वरपूजाष्टक	—	(हि०)	४६२
आदीश्वरफाग	ज्ञानभूषण	(हि०)	३६०
आदीश्वररेखता	सहस्रकीर्त्ति	(हि०)	६८२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
आदीश्वर का समवसरण	—	(हि०)	५६६
आदीश्वरस्तवन	जिनचन्द्र	(हि०)	७००
आदीश्वरविज्ञप्ति	—	(हि०)	४३७
आर्द्रकुमारधमाल	कनकसोम	(हि०)	६१७
आध्यात्मिकगाथा	भ० लक्ष्मीचन्द	(अप०)	१०३
आनन्दलहरीस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(सं०)	६०८
आनन्दस्तवन	—	(सं०)	५१४
आप्तपरीक्षा	विद्यानन्दि	(सं०)	१३६
आप्तमीमासा	समन्तभद्राचार्य	(सं०)	१३०
आप्तमीमासाभाषा	जयचन्द छावड़ा	(हि०)	१३०
आप्तमीमासालकृति	विद्यानन्दि	(सं०)	१३०
आमनीबू का भगडा	—	(हि०)	६६३
आमेर के राजाओंका राज्यकाल विवरण	—	(हि०)	७५६
आमेर के राजाओंकी वशावलि	—	(हि०)	७५६
आयुर्वेदिक ग्रन्थ	—	(सं०)	२६७, ७६३
आयुर्वेदिक नुसखे	—	(सं०)	२६७, ५७६
आयुर्वेदिक नुसखे	—	(हि०)	६०१
६६७, ६७७, ६६०, ६६६, ६६७, ७०१, ७०२, ७१४, ७१८, ७१६, ७२३, ७३०, ७३६, ७६०, ७६१, ७६६, ७६७, ७६६			
आयुर्वेद नुसखो का सग्रह	—	(हि०)	२६६
आयुर्वेदमहोदधि	सुखदेव	(सं०)	२६७
आरती	—	(सं०)	६३५
आरती	द्यानतराय	(हि०)	६२१, ६२२
आरती	दीपचन्द	(हि०)	७७७
आरती	मानसिंह	(हि०)	७७७
आरती	लालचन्द	(हि०)	६२२
आरती	विहारीदास	(हि०)	७७७
आरती	शुभचन्द	(हि०)	७७६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
आरती पञ्चपरमेष्ठी	पं० चिमना	(हि०)	७६१
आरती सरस्वती	ब्र० जिनदास	(हि०)	३८६
आरती संग्रह	ब्र० जिनदास	(हि०)	३८६
आरती संग्रह	द्यानतराय	(हि०)	७७७
आरती सिद्धों की	खुशालचन्द	(हि०)	७७७
आराधना	—	(प्रा०)	४३२
आराधना	—	(हि०)	३८०
आराधना कथा कोश	—	(सं०)	२१६
आराधना प्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	६५८
आराधना प्रतिबोधसार	सकलकीर्त्ति	(हि०)	६८५
आराधना प्रतिबोधसार	—	(हि०)	७८२
आराधना विधान	—	(सं०)	४६२
आराधनासार	देवसेन	(प्रा०)	४६
			५७३, ६२८, ६३५, ७०६, ७३७, ७४४
आराधनासार	जिनदास	(हि०)	७५७
आराधनासारप्रबन्ध	प्रभाचन्द	(सं०)	२१६
आराधनासारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४६
आराधनासारभाषा	—	(हि०)	५०
आराधनासार वचनिका	बा० दुलीचन्द	(हि० ग०)	५०
आराधनासारवृत्ति	पं० आशाधर	(सं०)	५०
आरामशोभाकथा	—	(सं०)	२१७
आलापपद्धति	देवसेन	(सं०)	१३०
आलोचना	—	(प्रा०)	५७२
आलोचनापाठ	जौहरीलाल	(हि०)	५६१
आलोचनापाठ	—	(हि०)	४२६
			६८५, ७६३, ७४६
आश्रवत्रिभङ्गी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	२
आश्रवत्रिभङ्गी	—	(प्रा०)	७००
आश्रवत्रिभङ्गी	—	(हि०)	२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
आश्रव वर्णन	—	(हि०)	२
आषाढभूति चौढालिया	कनकसोम	(हि०)	६१७
आहार के ४६ दोषवर्णन	भैया भगवतीदास	(हि०)	५०
इ			
इक्कीसठाणाचर्चा	सिद्धसेन सूरि	(प्रा०)	२
इन्द्रजाल	—	(हि०)	३४७
इन्द्रध्वजपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	४६२
इन्द्रध्वजमण्डलपूजा	—	(सं०)	४६२
इष्टछत्तीसी	बुधजन	(हि०)	६६१
इष्टछत्तीसी	—	(हि०)	७६० ७६३
इष्टोपदेश	पूज्यपाद	(सं०)	३८०
इष्टोपदेशटीका	पं० आशाधर	(सं०)	३८०
इष्टोपदेशभाषा	—	(हि०)	७५५
इष्टोपदेशभाषा	—	(हि० गद्य)	३८०
ई			
ईश्वरवाद	—	(सं०)	१३१
उ			
उच्चग्रहफल	बलदत्त	(सं०)	२७६
उणादिसूत्रसंग्रह	उज्वलदत्त	(सं०)	२५७
उत्तरपुराण	गुणभद्राचार्य	(सं०)	१४५ ४१५
उत्तरपुराणटिप्पण	प्रभाचन्द	(सं०)	१४५
उत्तरपुराणभाषा	खुशालचन्द	(हि० पद्य)	१४५
उत्तरपुराणभाषा	संघी पन्नालाल	(हि० गद्य)	१४६
उत्तराध्ययन	—	(प्रा०)	२
उत्तराध्ययनभाषाटीका	—	(हि०)	३
उदयसत्तावधप्रकृतिवर्णन	—	(सं०)	३
उद्धवगोपीसवाद	रसिकरास	(हि०)	६६४
उद्धवसदेशाख्यप्रबन्ध	—	(सं०)	१६०
उपदेशछत्तीसी	जिनहर्ष	(हि०)	३२४
उपदेशपच्चीसी	—	(हि०)	६५६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
उपदेशरत्नमाला	सकलभूषण	(सं०)	५०
उपदेशरत्नमाला	धर्मदासगणि	(प्रा०)	७५८
उपदेशरत्नमालागाथा	—	(प्रा०)	५२
उपदेशरत्नमालाभाषा	देवीसिंह छाबडा	(हि० पद्य)	५२
उपदेशरत्नमालाभाषा	बा० दुलीचन्द	(हि०)	५१
उपदेशशतक	द्यानतराय	(हि०)	३२५ ७४७
उपदेशसज्झाय	देवादित्त	(हि०)	३८१
उपदेशसज्झाय	रगविजय	(हि०)	३८१
उपदेशसज्झाय	ऋषि रामचन्द	(हि०)	३८०
उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला	भंडारी नेमिचन्द	(प्रा०)	५१
उपदेशसिद्धान्तरत्नमालाभाषा	भागचन्द	(हि०)	५१
उपवासग्रहणविधि	—	(प्रा०)	४६३
उपवास के दश भेद	—	(सं०)	५७३
उपवासविधान	—	(हि०)	५७३
उपवासो का व्यौरा	—	(हि०)	७०१
उपसर्गहरस्तोत्र	पूर्णचन्द्राचार्य	(सं०)	३८१
उपसर्गहरस्तोत्र	—	(सं०)	४२४
उपसर्गार्थविवरण	बुपाचार्य	(सं०)	५२
उपागललितव्रतकथा	—	(सं०)	२१७
उपाधिव्याकरण	—	(सं०)	२५७
उपासकाचार	—	(सं०)	५२
उपासकाचारदोहा	आ० लक्ष्मीचन्द्र	(अप०)	५२
उपासकाध्ययन	—	(सं०)	५२
उमेश्वरस्तोत्र	—	(सं०)	७३१

ऋ

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ऋणसम्बन्धकथा	अभयचन्द्रगणि	(प्रा०)	२१८
ऋतुसंहार	कालिदास	(सं०)	१६१
ऋद्धिमन्त्र	—	(सं०)	७२३
ऋद्धिशतक	स्वरूपचन्द बिलाला	(हि०)	५२ ५११
ऋषभदेवस्तुति	जिनसेन	(सं०)	३८१
ऋषभदेवस्तुति	पद्मनन्दि	(प्रा०)	३८१ ५०६
ऋषभनाथचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	१६०
ऋषभस्तुति	—	(सं०)	३८२
ऋषिमण्डल [चित्र]			५२४
ऋषिमण्डलपूजा	आ० गुणनन्दि	(सं०)	४६३ ५३७, ५३६, ७६२
ऋषिमण्डलपूजा	मुनि ज्ञानभूषण	(सं०)	४६३ ६३६
ऋषिमण्डलपूजा	—	(सं०)	४६४ ७६१
ऋषिमण्डलपूजा	दौलत आसेरी	(हि०)	४६४
ऋषिमण्डलपूजा	—	(हि०)	७२७
ऋषिमण्डलपूजा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	७२६
ऋषिमण्डलमन्त्र	—	(सं०)	५६३
ऋषिमण्डलस्तवन	—	(सं०)	६४५ ६८३
ऋषिमण्डलस्तवनपूजा	—	(सं०)	६५८
ऋषिमण्डलस्तोत्र	गौतमस्वामी	(सं०)	३८२ ४२४, ४२८, ४३१, ६४७, ७३२
ऋषिमण्डलस्तोत्र	—	(सं०)	३८२ ६६२

ए

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
एकसौगुनहत्तर जीववर्णन	—	(हि०)	७४४
एकाक्षरकोश	क्षपणक	(सं०)	२७४
एकाक्षरनाममाला	—	(सं०)	२७४
एकाक्षरीकोश	वररुचि	(सं०)	२७४
एकाक्षरीकोश	—	(सं०)	२७४
एकाक्षरीस्तोत्र [तकाराक्षर]	—	(सं०)	३८२
एकीभावस्तोत्र	वादिराज	(सं०)	२२४ ३८२, ४२४, ४२५, ४२८, ४३०, ४३२, ४३३, ५७२, ५७५, ५६५, ६०५, ६३३, ६३७, ६४४, ६५१, ६५२, ६६४, ७२०, ७३७, ७८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
एकीभावस्तोत्रटीका	नागचन्द्रसूरि	(सं०)	४०१
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	(हि०)	३८३
			४२६, ४४८, ६५२, ६६२, ७१६, ७२०
एकीभावस्तोत्रभाषा	पन्नालाल	(हि०)	३८३
एकीभावस्तोत्रभाषा	जगजीवन	(हि०)	६०५
एकीभावस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	३८३
एकश्लोकरामायण	—	(सं०)	६४६
एकीश्लोकभागवत	—	(सं०)	६४६
औ			
औषधियों के नुसखे	—	(हि०)	५७५
क			
कक्का	गुलाबचन्द	(हि०)	६४३
कक्काबत्तीसी	ब्र० गुलाल	(हि०)	६७६
कक्काबत्तीसी	नन्दराम	(हि०)	७३२
कक्काबत्तीसी	मनराम	(हि०)	७२३
कक्काबत्तीसी	—	(हि०)	६५१
			६७५, ६८५, ७१३, ७१५, ७२३, ७४१
कक्का विनती [बारहखडी]	धनराज	(हि०)	६२३
कच्छावतार [चित्र]			६०३
कछवाहा वंशके राजाओंके नाम	—	(हि०)	६८०
कछवाहा वंश के राजाओंकी वंशावलि	—	(हि०)	७६७
कठियार कानडरीचौपई	मानसागर	(हि०)	२१८
कथाकोश	हरिषेणाचार्य	(सं०)	२१६
कथाकोश [आराधनाकथाकोश]	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२१६
कथाकोश	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	२१६
कथाकोश	—	(सं०)	२१६
कथाकोश	—	(हि०)	२१६
कथारत्नसागर	नारचन्द्र	(सं०)	२२०
कथासंग्रह	—	(सं०)	२२०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कथासंग्रह	—	(सं० हि०)	२२०
कथासंग्रह	—	(प्रा० हि०)	२२०
कथासंग्रह	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
कथासंग्रह	—	(हि०)	७३७
कपडामाला का दूहा	सुन्दर	(राज०)	७७३
कमलाष्टक	—	(सं०)	६०७
कयवन्नाचोपई	जिनचन्द्रसूरि	(हि० रा०)	२२१
करकण्डुचरित्र	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	१६१
करकुण्डचरित्र	मुनि कनकामर	(अप०)	१६१
करणकौतूहल	—	(सं०)	२७६
करलक्खण	—	(प्रा०)	२७६
करुणाष्टक	पद्मनन्दि	(सं०)	६३३
			६३७, ६६८
करुणाष्टक	—	(हि०)	६४२
कर्णपिशाचिनीयन्त्र	—	(सं०)	६१२
कर्पूरचक्र	—	(सं०)	२७६
कर्पूरप्रकरण	—	(सं०)	३२५
कर्पूरमञ्जरी	राजशेखर	(सं०)	३१६
कर्मग्रन्थसत्तरी	—	(प्रा०)	३
कर्मचूर [मण्डलचित्र)	—		५२५
कर्मचूरव्रतवेलि	मुनि सकलकीर्त्ति	(हि०)	५६२
कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा	लक्ष्मीसेन	(सं०)	४६४, ५१६
कर्मचूरव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५०६, ४६४, ५४०
कर्मछत्तीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
कर्मछत्तीसी	—	(हि०)	६८६
कर्मदहनपूजा	वादिचन्द्र	(सं०)	५६०
कर्मदहनपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४६५
			५३७, ६४५
कर्मदहनपूजा	—	(सं०)	४६५
			५१७, ५४०, ७६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कर्मदहनपूजा	टेकचन्द	(हि०)	४६५
कर्मदहन [मण्डल चित्र]			५२५
कर्मदहन का मण्डल	—	(हि०)	६३८
कर्मदहनव्रतमन्त्र	—	(स०)	३४७
कर्म नोकर्म वर्णन	—	(प्रा०)	६२६
कर्मपच्चीसी	भारमल	(हि०)	७६६
कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३
कर्मप्रकृतिचर्चा	—	(हि०)	५, ७२०
कर्मप्रकृतिचर्चा	—	(हि०)	६७०
कर्मप्रकृतिटीका	सुमतिकीर्त्ति	(स०)	५
कर्मप्रकृति का ब्यौरा	—	(हि०)	७१८
कर्मप्रकृतिवर्णन	—	(हि०)	७०१
कर्मप्रकृतिविधान	बनारसीदास	(हि०)	५
			३६०, ६७७, ७४६
कर्मबत्तीसी	राजसमुद्र	(हि०)	६१७
कर्मयुद्ध की विनती	—	(हि०)	६६४
कर्मविपाक	—	(स०)	२२१, ५६६
कर्मविपाकटीका	सकलकीर्त्ति	(स०)	५
कर्मविपाकफल	—	(हि०)	२८०
कर्मराशिफल [कर्मविपाक]	—	(स०)	२८०
कर्मस्तवसूत्र	देवेन्द्रसूरि	(प्रा०)	५
कर्महिण्डोलना	—	(हि०)	६२२
कर्मों की १४८ प्रकृतिया	—	(हि०)	७६०
कलशविधान	मोहन	(सं०)	४६६
कलशविधान	—	(स०)	४६६
कलशविधि	—	(स०)	४२८, ६१२
कलशविधि	विश्वभूषण	(हि०)	४६६
कलशाभिषेक	प० आशाधर	(स०)	४६७
कलशारोपणविधि	प० आशाधर	(स०)	४६६
कलशारोपणविधि	—	(सं०)	४६६
कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	भ० प्रभाचन्द्र	(स०)	४६७
कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	यशोविजय	(स०)	६५८
कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	—	(हि०)	५९७
कलिकुण्डपार्श्वनाथ [मडलचित्र]			५२५
कलिकुण्डपार्श्वनाथस्तवन	—	(स०)	६०६
कलिकुण्डपूजा	—	(स०)	४६७
			४७५, ५१४, ५७४, ६०६, ६४०
कलिकुण्डपूजा और जयमाल	—	(प्रा०)	७६३
कलिकुण्डस्तवन	—	(स०	६०७
कलिकुण्डस्तवन	—	(प्रा०)	६५५
कलिकुण्डस्तोत्र	—	(स०)	४७५
कलियुग की कथा	केशव	(हि०)	६२२
कलियुग की कथा	द्वारकादास	(हि०)	७७३
कलियुग की विनती	देवाब्रह्म	(हि०)	६१५
			६८५, ७८८
कल्किअवतार [चित्र]			६०३
कल्पद्रुमपूजा	—	(सं०)	६६५
कल्पसिद्धातसग्रह	—	(प्रा०)	६
कल्पसूत्र	भद्रबाहु	(प्रा०)	६
कल्पसूत्र	भिक्खू अज्झयण	(प्रा०)	६
कल्पसूत्रमहिमा	—	(हि०)	३८३
कल्पसूत्रटीका	समयसुन्दरोपाध्याय	(स०)	७
कल्पसूत्रवृत्ति	—	(प्रा०)	७
कल्पस्थान [कल्पव्याख्या]	—	(स०)	२६७
कल्याणक	समन्तभद्र	(प्रा०)	३८३
कल्याण [बडा]	—		५७६
कल्याणमञ्जरी	विनयसागर	(स०)	३८४
कल्याणमन्दिर	हर्षकीर्त्ति	(स०)	४०१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	(सं०)	३८४
४०२, ४२५, ४३०, ४३१, ४३३, ५६५, ५७२, ५७५ ५९५, ६०५, ६१५, ६१६, ६३३, ६३७, ६५१, ६८० ६८१, ६९३, ७०१, ७३१, ७६३			
कल्याणमन्दिरस्तोत्रटीका	—	(सं०)	३८५
कल्याणमन्दिरस्तोत्रवृत्ति	देवतिलक	(सं०)	३८५
कल्याणमन्दिरस्तोत्र हिन्दी टीका	—	(सं० हि०)	६८१
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	पन्नालाल	(हि०)	३८५
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	(हि०)	३८५
४२९, ५६६, ५९६, ६०३, ६०४, ६२२, ६४३, ६४८, ६६२, ६६५, ६७७, ७०३, ७०५			
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	मेलीराम	(हि०)	७८६
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	ऋषि रामचन्द्र	(हि०)	३८५
कल्याणमन्दिरभाषा	—	(हि०)	६८९
७४५, ७५४, ७५५, ७५८, ७९८			
कल्याणमाला	पं० आशाधर	(सं०)	५७५, ३८५
कल्याणविधि	मुनि विनयचन्द्र	(अप०)	६४१
कल्याणाष्टकस्तोत्र	पद्मनन्दि	(सं०)	५७४
कवलचन्द्रायणव्रतकथा	—	(सं०)	२२१, २४६
कविकर्पटी	—	(पं०)	३०९
कवित्त	अग्रदास	(हि०)	७६८
कवित्त	कन्हैयालाल	(हि०)	७८०
कवित्त	केसवदास	(हि०)	६४३
कवित्त	गिरधर	(हि०)	७७२ ७८६
कवित्त	ब्र० गुलाल	(हि०)	६७०, ६८२
कवित्त	छीहल	(हि०)	७७०
कवित्त	जयकिशन	(हि०)	६४३
कवित्त	देवीदास	(हि०)	६७५
कवित्त	पद्माकर	(हि०)	७५९
कवित्त	बनारसीदास	(हि०)	७०६, ७७३
कवित्त	मोहन	(हि०)	७७२
कवित्त	वृन्दावनदास	(हि०)	६८२
कवित्त	सन्तराम	(हि०)	६९२
कवित्त	सुखलाल	(हि०)	६५६
कवित्त	सुन्दरदास	(हि०)	६४३
कवित्त	सेवग	(हि०)	७७२
कवित्त	—	(राज० डिंगल)	७७०
कवित्त	—	(हि०)	६८१
७१७, ७५८, ७६०, ७६३, ७६७, ७७१			
कवित्त चुगलखोर का	शिवलाल	(हि०)	७८२
कवित्तसंग्रह	—	(हि०)	६५६, ७४३
कविप्रिया	केशवदेव	(हि०)	१६१
कविवल्लभ	हरिचरणदास	(हि०)	६८८
कक्षपुट	सिद्धनागार्जुन	(सं०)	२९७
कातन्त्रटीका	—	(सं०)	२५७
कातन्त्ररूपमालाटीका	दौर्गसिंह	(सं०)	२५८
कातन्त्ररूपमालावृत्ति	—	(सं०)	२५८
कातन्त्रविभ्रमसूभावचूरि	चारित्रसिंह	(सं०)	२५७
कातन्त्रव्याकरण	शिववर्मा	(सं०)	२५९
कादम्बरीटीका	—	(सं०)	१६१
कामन्दकीयनीतिसारभाषा	—	(हि०)	३२६
कामशास्त्र	—	(हि०)	७३७
कामसूत्र	कविहाल	(प्रा०)	३५३
कारकप्रक्रिया	—	(सं०)	२५९
कारकविवेचन	—	(सं०)	२५९
कारकसमासप्रकरण	—	(सं०)	२५९
कारखानो के नाम	—	(हि०)	७५९
कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा	स्वामी कार्त्तिकेय	(प्रा०)	१०३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
क्षपणासारवृत्ति	माधवचन्द्र त्रैविधदेव	(सं०)	७
क्षपणासारभाषा	प० टोडरमल	(हि०)	७
क्षमाछत्तीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१७
क्षमाबत्तीसी	जिनचन्द्रसूरि	(हि०)	५४
क्षमावणीपूजा	ब्रह्मसेन	(सं०)	५६४
क्षीर नीर	—	(हि०)	७६२
क्षीरव्रतनिधिपूजा	—	(सं०)	५१५
क्षीरोदानीपूजा	अभयचन्द	(सं०)	७६३
क्षेत्रपाल की आरती	—	(हि०)	६०७
क्षेत्रपालगीत	शुभचन्द	(हि०)	६२३
क्षेत्रपाल जयमाल	—	(हि०)	७६३
क्षेत्रपाल नामावली	—	(सं०)	३८६
क्षेत्रपालपूजा	मणिभद्र	(सं०)	६८६
क्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	(सं०)	४६७
क्षेत्रपालपूजा	—	(सं०)	४६८
			५१५, ५१७, ५६७, ६४०, ६५५, ७६३
क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीर्त्ति	(हि०)	७१३
क्षेत्रपाल भैरवी गीत	शोभाचन्द	(हि०)	७७७
क्षेत्रपालस्तोत्र	—	(सं०)	३४७
			५६१, ५७५, ६४४, ६४६, ६४७
क्षेत्रपालाष्टक	—	(सं०)	६५५
क्षेत्रपालव्यवहार	—	(सं०)	२८०
क्षेत्रसमासटीका	हरिभद्रसूरि	(सं०)	५४
क्षेत्रसमासप्रकरण	—	(प्रा०)	५४

ख

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
खण्डप्रशस्तिकाव्य	—	(सं०)	१६३
खण्डेलवालगोत्र	—	(हि०)	७५६
खण्डेलवालों के ८४ गोत्र	—	(हि०)	७६०
खण्डेलवालोत्पत्तिवर्णन	—	(हि०)	३७०
खण्डेलवालों की उत्पत्ति	—	(हि०)	७०२
खण्डेलवालोकी उत्पत्ति और उनके ८४ गोत्र	—	(हि०)	७२१
खण्डेला की चरचा	—	(हि०)	७०२
खण्डेला की वंशावलि	—	(हि०)	७५६
ख्याल गोरीचन्दका	—	(हि०)	२२२

ग

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
गजपंथामण्डलपूजा	भ० क्षेमेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४६८
गजमोक्षकथा	—	(हि०)	६००
गजसिंहकुमारचरित्र	विनयचन्द्रसूरि	(सं०)	१६३
गडाराशांतिकविधि	—	(सं०)	६१२
गणधरचरणारविंदपूजा	—	(सं०)	४६६
गणधरजयमाल	—	(प्रा०)	४६६
गणधरवलयपूजा	शुभचन्द	(सं०)	६६०
गणधरवलयपूजा	आशाधर	(सं०)	७६१
गणधरवलयपूजा	—	(सं०)	४६६
			५१४, ६३६, ६४५, ७६१
गणधरवलय [मंडलचित्र]	—		५२५
गणधरवलयमन्त्र	—	(सं०)	६०७
गणधरवलययन्त्रमंडल [कोठे]	—	(हि०)	६३८
गणपाठ	वादिराज जगन्नाथ	(सं०)	२५६
गणसार	—	(सं०)	५४
गणितनाममाला	—	(सं०)	३६८
गणितशास्त्र	—	(सं०)	३६८
गणितसार	हेमराज	(हि०)	३६८
गणेशछन्द	—	(हि०)	७५३
गणेशद्वादशनाम	—	(सं०)	६४६
गर्गमनोरमा	—	(सं०)	२८०
गर्गसंहिता	गर्गऋषि	(सं०)	२८०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
गर्भकल्याणकक्रियामे भक्तियां	—	(हि०)	५७३
गर्भषडारचक्र	देवनन्दि	(सं०)	१३१, ७३७
गिरनारक्षेत्रपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	४९९
गिरनारक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४९९, ५१३
गिरनारक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	५१८
गिरिनारयात्रावर्णन	—	(हि०)	७९६
गीत	कवि पल्ह	(हि०)	७३८
गीत	धर्मकीर्त्ति	(हि०)	७४३
गीत	पांडे नाथूराम	(हि०)	६२२
गीत	विद्याभूषण	(हि०)	६०७
गीत	—	(हि०)	७४३
गीतगोविंद	जयदेव	(सं०)	१९३
गीतप्रबन्ध	—	(सं०)	३८६
गीतमहात्म्य	—	(सं०)	६७७
गीतवीतराग	अभिनवचारुकीर्त्ति	(सं०)	३८६
गुणवेलि [चन्दनवाला गीत]	—	(हि०)	६२३
गुणवेलि	—	(हि०)	६४३
गुणमञ्जरी	—	(हि०)	७१९
गुणस्तवन	—	(सं०)	३२७
गुणस्थानगीत	श्रीवर्द्धन	(हि०)	७९३
गुणस्थानक्रमारोहसूत्र	रत्नशेखर	(सं०)	८
गुणस्थानचर्चा	—	(प्रा०)	८, ६२८
गुणस्थानचर्चा	चन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	८
गुणस्थानचर्चा	—	(हि०)	७५१
गुणस्थानचर्चा	—	(सं०)	८
गुणस्थानप्रकरण	—	(सं०)	८
गुणस्थानभेद	—	(सं०)	८
गुणस्थानमार्गणा	—	(हि०)	८
गुणस्थानमार्गणा रचना	—	(सं०)	८
गुणस्थानवर्णन	—	(सं०)	९
गुणस्थानवर्णन	—	(हि०)	९
गुणस्थानव्याख्या	—	(सं०)	५७३
गुणाक्षरमाला	मनराम	(हि०)	७५०
गुरावली	—	(सं०)	६२८, ६८६
गुरुअष्टक	द्यानतराय	(हि०)	७७७
गुरुछन्द	शुभचन्द	(हि०)	३८९
गुरुजयमाल	ब्र० जिनदास	(हि०)	६५८
			६८५, ७२१
गुरुदेव की विनती	—	(हि०)	७०२
गुरुनामावलिछन्द	—	(हि०)	३८९
गुरुपारतन्त्र एवं सप्तस्मरण	जिनदत्तसूरि	(हि०)	६१६
गुरुपूजा	जिनदास	(हि०)	५३७
गुरुपूजाष्टक	—	(सं०)	६४६
गुरुसहस्रनाम	—	(सं०)	३८७
गुरुस्तवन	शांतिदास	(सं०)	६५७
गुरुस्तुति	—	(सं०)	६०७
गुरुस्तुति	भूधरदास	(हि०)	१५
			४३७, ४४७ ६१४, ६४२, ६६३, ७८३
गुरुओं की विनती	—	(हि०)	७०४
गुरुओं की स्तुति	—	(सं०)	६२३
गुर्वाष्टक	वादिराज	(सं०)	६५७
गुर्वावलि	—	(सं०)	५९५, ६३३
गुर्वावलीपूजा	—	(सं०)	५१९
गुर्वावलीवर्णन	—	(हि०)	३७१
गोकुलगावकीलीला	—	(हि०)	३९८
गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१२
गोम्मटसार [कर्मकाड] टीका	कनकनन्दि	(सं०)	१२
गोम्मटसार [कर्मकाड] टीका	ज्ञानभूषण	(सं०)	१२
गोम्मटसार [कर्मकाड] टीका	—	(सं०)	१३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
गोम्मटसार [कर्मकाड] भाषा	पं० टोडरमल	(हिं०)	१३
गोम्मटसार [कर्मकाड] भाषा	हेमराज	(हि०)	१३
गोम्मटसार [जीवकाड]	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	६
गोम्मटसार [जीवकाड] (तत्वप्रदीपिका)		(स०)	१२
गोम्मटसार [जीवकाड] भाषा	टोडरमल	(हि०)	१०
गोम्मटसारटीका	धर्मचन्द्र	(स०)	६
गोम्मटसारटीका	सकलभूषण	(स०)	१०
गोम्मटसारभाषा	टोडरमल	(हि०)	१०
गोम्मटसारपीठिकाभाषा	टोडरमल	(हि०)	११
गोम्मटसारवृत्ति	केशववर्णी	(सं०)	१०
गोम्मटसारवृत्ति	—	(सं०)	१०
गोम्मटसार सदृष्टि	प० टोडरमल	(हि०)	१२
गोम्मटसारस्तोत्र	—	(स०)	३८७
गोरखपदावली	गोरखनाथ	(हि०)	७६७
गोरखसवाद	—	(हि०)	७६४
गोविंदाष्टक	शङ्कराचार्य	(सं०)	७३३
गोडीपार्श्वनाथस्तवन	जोधराज	(राज०)	६१७
गोडीपार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	(राज०)	६१७ ६१६
गौतमकुलक	गौतमस्वामी	(प्रा०)	१४
गौतमकुलक	—	(प्रा०)	१४
गौतमपृच्छा	—	(प्रा०)	६४३
गौतमपृच्छा	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
गौतमरासा	—	(हि०)	७५४
गौतमस्वामीचरित्र	धर्मचन्द्र	(सं०)	१६३
गौतमस्वामीचरित्रभाषा	पन्नालाल चौधरी	(स०)	१६३
गौतमस्वामीरास	—	(हि०)	६१७
गौतमस्वामीसज्झाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८
गौतमस्वामी सज्झाय	—	(हि०)	६१८
गधकुटीपूजा	—	(सं०)	५१७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ग्यारह अग एवं चौदह पूर्व का वर्णन	—	(हि०)	६२६
गृहप्रवेश विचार	—	(स०)	५७१
गृहबिंबलक्षण	—	(सं०)	५७६
ग्रहदशावर्णन	—	(सं०)	२८०
ग्रहफल	—	(हि०)	६६४
ग्रहफल	—	(सं०)	२८७
ग्रहो की ऊचाई एवं आयुवर्णन	—	(हि०)	३१६

घ

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
घटकर्परकाव्य	घटकर्पर	(सं०)	१६४
घघरनिसाणी	जिनहर्ष	(स०)	३८७, ७३४
घण्टाकर्णकल्प	—	(सं०)	३४७
घण्टाकर्णमन्त्र	—	(स०)	३४७
घण्टाकर्णमन्त्र	—	(हिं०)	६५०, ७६२
घण्टाकर्णवृद्धिकल्प	—	(हि०)	३४८

च

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चउबीसीठाणाचर्चा	—	(हि०)	७००
चउसरप्रकरण	—	(प्रा०)	५४
चक्रवर्त्ति की बारहभावना	—	(हि०)	१०५
चक्रेश्वरीस्तोत्र	—	(स०)	३४८ ३८७, ४३२, ४२८, ६४७
चतुर्गति की पद्धडी	—	(अप०)	६४२
चतुर्दशगुणस्थानचर्चा	—	(हि०)	६८४
चतुर्दशतीर्थङ्करपूजा	—	(सं०)	६७२
चतुर्दशमार्गणाचर्चा	—	(हि०)	६७१
चतुर्दशसूत्र	विनयचन्द्र	(सं०)	१४
चतुर्दशसूत्र	—	(प्रा०)	१४
चतुर्दशांगबाह्यविवरण	—	(स०)	१४
चतुर्दशीकथा	टीकम	(हि०)	७५४, ७७३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चतुर्दशीकथा	डालूराम	(हि०)	७४२
चतुर्दशीविधानकथा	—	(सं०)	२२२
चतुर्दशीव्रतपूजा	—	(सं०)	४६६
चतुर्विधध्यान	—	(सं०)	१०५
चतुर्विंशति	गुणकीर्त्ति	(हि०)	६०१
चतुर्विंशतिगुणस्थानपीठिका	—	(सं०)	१८
चतुर्विंशतिजयमाल	यति माघनंदि	(सं०)	४६६
चतुर्विंशतिजिनपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	७२६
चतुर्विंशतिजिनराजस्तुति	जितसिंहसूरि	(हि०)	७००
चतुर्विंशतिजिनस्तवन	जयसागर	(हि०)	६१६
चतुर्विंशतिजिनस्तुति	जिनलाभसूरि	(सं०)	३८७
चतुर्विंशतिजिनाष्टक	शुभचन्द	(सं०)	५७८
चतुर्विंशतितीर्थङ्कर जयमाल	—	(प्रा०)	३८७
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	—	(सं०)	४७०, ६४५
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	नेमीचन्द पाटनी	(हि०)	४७२
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	बख्तावरलाल	(हि०)	४७३
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	मनरङ्गलाल	(हि०)	४७३
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	४७२
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	वृन्दावन	(हि०)	४७१
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	सुगनचन्द	(हि०)	४७३
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	सेवाराम साह	(हि०)	४७०
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	—	(हि०)	४७३
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तवन	हेमविमलसूरि	(हि०)	४३७
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र	कमलविजयगणि	(सं०)	३८८
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति	चन्द	(हि०)	७२०
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति	समन्तभद्र	(सं०)	६४७
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति	—	(सं०)	३८८ ६२८
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र	माघनन्दि	(सं०)	३८८ ५७६
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र	—	(सं०)	३८८
चतुर्विंशतितीर्थङ्कराष्टक	चन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५६४
चतुर्विंशतिपूजा	—	(हि०)	४७१
चतुर्विंशतियज्ञविधान	—	(हि०)	३४८
चतुर्विंशतिविनती	चन्दकवि	(हि०)	६८५
चतुर्विंशतिव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६
चतुर्विंशतिस्थानक	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१८
चतुर्विंशतिसमुच्चयपूजा	—	(सं०)	५०६
चतुर्विंशतिस्तवन	—	(सं०)	३८७ ४२६
चतुर्विंशतिस्तुति	—	(प्रा०)	७७८
चतुर्विंशतिस्तुति	विनोदीलाल	(हि०)	७७६
चतुर्विंशतिस्तोत्र	भूधरदास	(हि०)	४२६
चतुश्लोकीगीता	—	(सं०)	६७६
चतुःषष्ठीस्तोत्र	—	(सं०)	६६२
चतुष्पदीस्तोत्र	—	(सं०)	३८८
चन्दकथा	लक्ष्मण	(हि०)	७४८
चन्दकुंवर की वार्त्ता	—	(हि०)	७३४
चन्दनबालारास	—	(हि०)	३६१
चन्दनमलयागिरीकथा	भद्रसेन	(हि०)	२२३
चन्दनमलयागिरीकथा	चतर	(हि०)	२२३
चन्दनमलयागिरीकथा	—	(हि०)	७४८
चन्दनषष्ठिकथा	ब्र० श्रुतसागर	(सं०)	२२४, ५१४
चन्दनषष्ठिकथा	—	(सं०)	२२४
चन्दनषष्ठिकथा	पं० हरिचन्द	(अप०)	२४३
चन्दनषष्ठीपूजा	खुशालचन्द	(हि०)	५१६
चन्दनषष्ठीविधानकथा	—	(अप०)	२४६
चन्दनषष्ठीव्रतकथा	आ० छत्रसेन	(सं०)	६३१
चन्दनषष्ठीव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	५१०
चन्दनषष्ठीव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२२४ २४४, २४६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	चोखचन्द	(सं०)	४७३
चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४७३
चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	विजयकीर्त्ति	(सं०)	५०६
चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४७३
चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	—	(सं०)	४७४
चन्दनाचरित्र	शुभचन्द्र	(सं०)	१६४
चन्दनाचरित्र	मोहनविजय	(गु०)	७६१
चन्द्रकीर्त्तिछन्द	—	(हि०)	३८६
चन्द्रकु वर की वार्त्ता	प्रतापसिंह	(हि०)	२२३
चन्द्रकु वरकी वार्त्ता	—	(हि०)	७११
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	—	(हि०)	७१८
			७२३, ७३८
चन्द्रगुप्तके सोलह स्वप्नोंका फल	—	(हि०)	६२१
चन्द्रप्रज्ञप्ति	—	(प्रा०)	३१६
चन्द्रप्रभचरित्र	वीरनन्दि	(सं०)	१६४
चन्द्रप्रभकाव्यपञ्जिका	गुणनन्दि	(सं०)	१६५
चन्द्रप्रभचरित्र	शुभचन्द्र	(सं०)	१६४
चन्द्रप्रभचरित्र	दामोदर	(अप०)	१६५
चन्द्रप्रभचरित्र	यशःकीर्त्ति	(अप०)	१६५
चन्द्रप्रभचरित्र	जयचन्द छाबड़ा	(हि०)	१६६
चन्द्रप्रभचरित्रपञ्जिका	—	(सं०)	१६५
चन्द्रप्रभजिनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४७४
चन्द्रप्रभजिनपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	४७४
चन्द्रप्रभपुराण	हीरालाल	(हि०)	१४६
चन्द्रप्रभपूजा	—	(सं०)	५०६
चन्द्रलेहारास	मतिकुशल	(हि०)	३६१
चन्द्रवरदाई की वार्त्ता	—	(हि०)	६७६
चन्द्रसागरपूजा	—	(हि०)	७३३
चन्द्रहंसकथा	टीकमचन्द	(हि०)	२२४, ६३६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चन्द्रहंसकथा	हर्षकवि	(हि०)	७१४
चन्द्रावलोक	—	(सं०)	३०६
चन्द्रोन्मीलन	—	(सं०)	२५६
चमत्कारअतिशयक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४७४
चमत्कारपूजा	स्वरूपचन्द	(हि०)	५११
			६६३, ७५६
चम्पाशतक	चम्पाबाई	(हि०)	४३७
चरचा	—	(प्रा०, हि०)	६६५
चरचा	—	(हि०)	६५२, ७५५
चरचावर्णन	—	(हि०)	१५
चरचाशतक	द्यानतराय	(हि०)	१४
			६६४, ७६४
चर्चासमाधान	भूधरदास	(हि०)	१५
			६०६, ६४६, ७३३
चर्चासागर	चम्पालाल	(हि०)	१६
चर्चासागर	—	(हि०)	१६
चर्चासार	शिवजीलाल	(हि०)	१६
चर्चासार	—	(हि०)	१६
चर्चासंग्रह	—	(सं० हि०)	१५
चर्चासंग्रह	—	(हि०)	१५, ७१०
चहुगति चौपई	—	(हि०)	७६२
चाणक्यनीति	चाणक्य	(सं०)	३२६
			७२३, ७६८
चाणक्यनीतिभाषा	—	(हि०)	३२७
चाणक्यनीतिसारसंग्रह	मथुरेश भट्टाचार्य	(सं०)	३२७
चादनपुरके महावीरकीपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५४८
चामुण्डस्तोत्र	पृथ्वीधराचार्य	(सं०)	३८८
चामुण्डोपनिषद्	—	(सं०)	६०८
चारभावना	—	(सं०)	५५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चारमाहकी पञ्चमी [मंडलचित्र]	—		५२५
चारमित्रो की कथा	अजयराज	(हि०)	२२५
चारित्रपूजा	—	(सं०)	६५८
चारित्रभक्ति	—	(सं०)	६२७,६३३
चारित्रभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
चारित्रशुद्धिविधान	श्रीभूषण	(सं०)	४७४
चारित्रशुद्धिविधान	शुभचन्द्र	(सं०)	४७५
चारित्रशुद्धिविधान	सुमतिब्रह्म	(सं०)	४७५
चारित्रसार	श्रीमच्चामुण्डराय	(सं०)	५५
चारित्रसार	—	(सं०)	५६
चारित्रसारभाषा	मन्नालाल	(हि०)	५६
चारुदत्तचरित्र	कल्याणकीर्त्ति	(हि०)	१६७
चारुदत्तचरित्र	उदयलाल	(हि०)	१६६
चारुदत्तचरित्र	भारामल्ल	(हि०)	१६८
चारो गतियोकी आयु आदिका वर्णन		(हि०)	७६३
चिकित्सासार	—	(हि०)	२६८
चिकित्साजनम	उपाध्याय विद्यापति	(सं०)	२६८
चित्र तीर्थङ्कर	—		५६४
चित्रबंधस्तोत्र	—	(सं०)	३८६ ४२६
चित्रसेनकथा	—	(सं०)	२२५
चिद्रूपभास	—	(हि०)	७०७
चिंतामणिजयमाल	ठक्कुरसी	(हि०)	७३८
चिंतामणिजयमाल	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	६५५
चिंतामणिजयमाल	मनरथ	(हि०)	६४४
चिन्तामणिपार्श्वनाथ [मण्डलचित्र]			५२४
चिन्तामणिपार्श्वनाथजयमाल	सोम	(अप०)	७६२
चिन्तामणिपार्श्वनाथजयमालस्तवन	—	(सं०)	३८८
चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४७५
			६०६, ६४५, ७४५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा एवं स्तोत्र	लक्ष्मीसेन	(सं०)	४२३
चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजास्तोत्र	—	(सं०)	५६७
चिन्तामणिपार्श्वनाथस्तवन	—	(सं०)	६४५
चिन्तामणिपार्श्वनाथस्तवन	लालचन्द	(राज०)	६१७
चिन्तामणिपार्श्वनाथस्तवन	—	(हि०)	४५१
चिन्तामणिपार्श्वनाथस्तोत्र	—	(सं०)	५६३
			६१४, ६५०
चिन्तामणिपार्श्वनाथस्तोत्र [मंत्र सहित]		(सं०)	३८८
चिन्तामणिपूजा [वृहद्]	विद्याभूषणसूरि	(सं०)	४७५
चिन्तामणिपूजा	—	(सं०)	६४७
चिन्तामणियन्त्र	—	(सं०)	३४८
चिन्तामणिलग्न	—	(सं०)	५६५
चिन्तामणिस्तवन	लक्ष्मीसेन	(सं०)	७६१
चिन्तामणिस्तोत्र	—	(सं०)	३४८
			४७५, ६४५
चिद्विलास	दीपचन्द कासलीवाल	(हि०)	१०५
चूनडी	विनयचन्द	(अप०)	६४१
चूनडीरास	विनयचन्द	(अप०)	६२८
चूर्णाधिकार	—	(सं०)	२६७
चेतनकर्मचरित्र	भगवतीदास	(हि०)	६०५, ६८६
चेतनगीत	जिनदास	(हि०)	७६२
चेतनगीत	मुनि सिंहनन्दि	(हि०)	७३८
चेतनचरित्र	भगवतीदास	(हि०)	६१३
			६४८, ७४०
चेतनढाल	फतेहमल	(हि०)	४५२
चेतननारीसज्झाय	—	(हि०)	६१६
चेतावनीगीत	नाथू	(हि०)	७५७
चेलनासज्झाय	समयसुन्दर	(हि०)	४३७
चैत्यपरिपाटी	—	(हि०)	४३७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठसं०
चैत्यवंदना	सकलचन्द्र	(सं०)	६६८
चैत्यवंदना	—	(सं०)	३८६
			३६२, ६५०, ७१८
चैत्यवंदना	—	(हि०)	४२६, ४३७
चौग्राराधनाउद्योतककथा	जोधराज	(हि०)	२२५
चौतीस अतिशयभक्ति	—	(सं०)	६२७
चौदश की जयमाल	—	(हि०)	७४२
चौदहगुणस्थानचर्चा	अखयराज	(हि०)	१६
चौदहपूजा	—	(सं०)	४७६
चौदहमार्गणा	—	(हि०)	१६
चौदहविद्या तथा कारखानेजातके नाम	—	(हि०)	७५६
चौबीसगणधरस्तवन	गुणकीर्त्ति	(हि०)	६८६
चौबीसजिनमातपितास्तवन	आनन्दसूरि	(हि०)	६१६
चौबीसजिनदजयमाल	—	(अप०)	६३७
चौबीसजिनस्तुति	सोमचन्द	(हि०)	४३७
चौबीसठाणाचर्चा	—	(सं०)	१८, ७६५
चौबीसठाणाचर्चा	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१६
			७२०, ६६६
चौबीसठाणाचर्चा	—	(हि०)	१८
			६२७, ६७०, ६८०, ६८६, ६६४, ७८४
चौबीसठाणाचर्चावृत्ति	—	(सं०)	१८
चौबीसतीर्थङ्करतीर्थपरिचय	—	(हि०)	४३७
चौबीसतीर्थङ्करपरिचय	—	(हि०)	५६४
			६२१, ७००, ७५१
चौबीसतीर्थङ्करपूजा [समुच्चय]	द्यानतराय	(हि०)	७०५
चौबीसतीर्थङ्करपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	६६६
			७१२, ७२७, ७७२
चौबीसतीर्थङ्करपूजा	—	(हि०)	५६२, ७२७
चौबीसतीर्थङ्करभक्ति	—	(सं०)	६०४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	क्रमसं०
चौबीसतीर्थङ्करराास	—	(हि०)	७२२
चौबीसतीर्थङ्करवर्णन	—	(हि०)	४३८
चौबीसतीर्थङ्करस्तवन	देवनन्दि	(सं०)	६०६
चौबीसतीर्थङ्करस्तवन	लूणकरणकासलीवाल	(हि०)	४३८
चौबीसतीर्थङ्करस्तवन	—	(हि०)	६५०
चौबीसतीर्थङ्करस्तुति	—	(अप०)	६२५
चौबीसतीर्थङ्करस्तुति	ब्रह्मदेव	(हि०)	४३८
चौबीसतीर्थङ्करस्तुति	—	(हि०)	६०१, ६६४
चौबीसतीर्थङ्करों के चिह्न	—	(सं०)	६२३
चौबीसतीर्थङ्करोंके पञ्चकल्याणक की तिथियां	—	(हि०)	५३८
चौबीसतीर्थङ्करों की वंदना	—	(हि०)	७७५
चौबीसदण्डक	दौलतराम	(हि०)	५६
			४२६, ४४८, ५११, ६७२, ७६०
चौबीसदण्डकविचार	—	(हि०)	७३२
चौबीसस्तवन	—	(हि०)	३८६
चौबीसीमहाराज [मंडलचित्र]	—		५२४
चौबीसी विनती	भ० रत्नचन्द	(हि०)	६४६
चौबीसीस्तवन	जयसागर	(हि०)	७७६
चौबीसीस्तुति	—	(हि०)	४३७, ७७३
चौरासीग्रसादना	—	(हि०)	५७
चौरासीगीत	—	(हि०)	६८०
चौरासीगोत्रोत्पत्तिवर्णन	—	(हि०)	७८६
चौरासीजातिकी जयमाल	विनोदीलाल	(हि०)	३७०
चौरासीज्ञातिछन्द	—	(हि०)	३७०
चौरासी जातिकी जयमाल	—	(हि०)	७४०
चौरासीजाति भेद	—	(हि०)	७४८
चौरासीजातिवर्णन	—	(हि०)	७४७
चौरासीन्यात की जयमाल	—	(हि०)	७४७
चौरासीन्यातमाला	ब्र० जिनदास	(हि०)	७६५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चौरासीबोल	कवरपाल	(हि०)	७०१
चौरासीलाखउत्तरगुरण	—	(हि०)	५७
चौसठऋद्धिपूजा	स्वरूपचन्द	(हि०)	४७६
चौसठकला	—	(हि०)	६०६
चौसठयोगिनीयन्त्र	—	(स०)	६०३
चौसठयोगिनीस्तोत्र	—	(स०)	३४८, ४२४
चौसठशिवकुमारकाजी की पूजा	ललितकीर्त्ति	(स०)	५१४

छ

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
छठा आरा का विस्तार	—	(हि०)	३७०
छत्तीस कारखानोके नाम	—	(हि०)	६८०
छहढाला	किशन	(हि०)	६७४
छहढाला	द्यानतराय	(हि०)	६५२
			५७३, ६७४, ७४७
छहढाला	दौलतराम	(हि०)	५७
			७०७, ७४६
छहढाला	बुधजन	(हि०)	५७
छातीसुखकी औषधि का नुसखा	—	(हि०)	५७३
छिनवै क्षेत्रपाल व चौबीस तीर्थङ्कर [मडलचित्र]	—		५२५
छियालीसगुरण	—	(हि०)	५६४
छियालीसठारणा	ब्र० रायमल्ल	(स०)	७६५
छियालीसठारणाचर्चा	—	(स०)	१६
छेदपिण्ड	इन्द्रनन्दि	(प्रा०)	५७
छोटादर्शन	बुधजन	(हि०)	३६८
छोतीनिवाररणविधि	—	(हि०)	४७६
छदकीयकवित्त	भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	३५५
छदकोश	—	(स०)	३१०
छंदकोश	रत्नशेखरसूरि	(स०)	३०६
छदशतक	वृन्दावनदास	(हि०)	३२७
छदशिरोमरिण	सोमनाथ	(हि०)	३५५
छदसग्रह	—	(हि०)	३८६
छदानुशासनवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	(स०)	३०६
छदशतक	हर्षकीर्त्ति	(स०)	३०६

ज

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
जकडी	दरिगह	(हि०)	७५५, ६६१
जकडी	द्यानतराय	(हि०)	६४३
			६५०, ७१६
जकडी	देवेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	६२१
जकडी	नेमिचन्द	(हि०)	६६२
जकडी	रामकृष्ण	(हि०)	४३८
जकडी	रूपचन्द	(हि०)	६५०
			६६१, ७५२, ७५५
जकडी	—	(हि०)	७६३
जगन्नाथनारायरणकवच	—	(हि०)	६०१
जगन्नाथाष्टक	शङ्कराचार्य	(स०)	३८६
जन्मकुडली [महाराजा सवाई जगतसिंह]	—	(स०)	७७६
जन्मकुडलीविचार	—	(हि०)	६०३
जन्मपत्री दीवारण आनन्दीलाल	—	(हि०)	७६०
जम्बूकुमारसज्झाय	—	(हि०)	४३८
जम्बूद्वीपपूजा	पांडे जिनदास	(स०)	४७७
			५०६, ५३७
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३१६
जम्बूद्वीपफल	—	(स०)	१६
जम्बूद्वीप सम्बन्धी पञ्चमेरुवर्णन	—	(हि०)	७६६
जम्बूस्वामीचरित्र	ब्र० जिनदास	(स०)	१६८
जम्बूस्वामीचरित्र	प० राजमल्ल	(स०)	१६६
जम्बूस्वामीचरित्र	विजयकीर्त्ति	(हि०)	१६६
जम्बूस्वामीचरित्रभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१६६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
जम्बूस्वामीचरित्र	नाथूराम	(हि०)	१६६
जम्बूस्वामीचरित्र	—	(हि०)	६३६
जम्बूस्वामीचौपई	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१०
जम्बूस्वामीपूजा	—	(हि०)	४७७
जयकुमार सुलोचना कथा	—	(हि०)	२२५
जयतिहुवणस्तोत्र	अभयदेवसूरि	(प्रा०)	७५४
जयपुरका प्राचीन ऐतिहासिकवर्णन	—	(हि०)	३७०
जयपुरके मंदिरोंकी वंदना	स्वरूपचन्द	(हि०)	४३८, ५३८
जयमाल [मालारोहण]	—	(अप०)	५७३
जयमाल	रायचन्द	(हि०)	४७७
जलगालणरास	ज्ञानभूषण	(हि०)	३६२
जलयात्रा [तीर्थोदकदानविधान]	—	(सं०)	४७७
जलयात्रा	ब्र० जिनदास	(सं०)	६८३
जलयात्रापूजाविधान	—	(हि०)	४७७
जलयात्राविधान	पं० आशाधर	(सं०)	४७७
जलहरतेलाविधान	—	(हि०)	४७७
जलालगाहाणी की वार्ता	—	(हि०)	४७७
जातकसार	नाथूराम	(हि०)	६८४
जातकाभरण [जातकालङ्कार]	—	(हि०)	७६३
जातकवर्णन	—	(सं०)	५७४
जाप्य इष्ट अनिष्ट [माला फेरनेकी विधि]	—	(सं०)	५५५
जिनकुशलकी स्तुति	साधुकीर्त्ति	(हि०)	७७८
जिनकुशलसूरिस्तवन	—	(हि०)	६१८
जिनगुणउद्यापन	—	(हि०)	६३८
जिनगुणपच्चीसी	सेवगराम	(हि०)	४४७
जिनगुणमाला	—	(हि०)	३६०
जिनगुणसंपत्ति [मंडलचित्र]	—		५२४
जिनगुणसंपत्तिकथा	—	(सं०)	२२५, २४६
जिनगुणसंपत्तिकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
जिनगुणसंपत्तिपूजा	केशवसेन	(सं०)	५३७
जिनगुणसंपत्तिपूजा	रत्नचन्द	(सं०)	४७७, ५११
जिनगुणसंपत्तिपूजा	—	(सं०)	५३६
जिनगुणस्तवन	—	(सं०)	५७५
जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	भ० जिणचन्द्र	(सं०)	५५७
जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	—	(सं०)	४३३
जिनचरित्र	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५
जिनचरित्रकथा	—	(सं०)	१६६
जिनचैत्यवंदना	—	(सं०)	३६०
जिनचैत्यालयजयमाल	रत्नभूषण	(हि०)	५६४
जिनचौबीसभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	५७८
जिनदत्तचरित्र	गुणभद्राचार्य	(सं०)	१६६
जिनदत्तचरित्रभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१७०
जिनदत्त चौपई	रल्ह कवि	(हि०)	६८२
जिनदत्तसूरिगीत	सुन्दरगणि	(हि०)	६१८
जिनदत्तसूरि चौपई	जयसागर उपाध्याय	(हि०)	६१८
जिनदर्शन	भूधरदास	(हि०)	६०५
जिनदर्शनस्तुति	—	(सं०)	४२४
जिनदर्शनाष्टक	—	(सं०)	३६०
जिनपच्चीसी	नवलराम	(हि०)	६५१
			६६३, ७०४, ७२५, ७५५
जिनपच्चीसी व अन्य संग्रह	—	(हि०)	४३८
जिनपिंगलछंदकोश	—	(हि०)	७०६
जिनपुरन्दरव्रतपूजा	—	(सं०)	४७८
जिनपूजापुरन्दरकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४४
जिनपूजापुरन्दरविधानकथा	अमरकीर्त्ति	(अप०)	२४६
जिनपूजाफलप्राप्तिकथा	—	(सं०)	४७८
जिनपूजाविधान	—	(हि०)	६५२
जिनपञ्जरस्तोत्र	कमलप्रभाचार्य	(सं०)	३६०, ४३२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
जिनेन्द्रस्तोत्र	—	(सं०)	६०६
जिनोपदेशोपकारस्मरस्तोत्र	—	(सं०)	४१३
जिनोपकारस्मरणस्तोत्र	—	(सं०)	४२६
जिनोपकारस्मरणस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	३९३
जीवकायासज्झाय	भुवनकीर्त्ति	(हि०)	६१६
जीवकायासज्झाय	राजसमुद्र	(हि०)	६१६
जीवजीतसहार	जैतराम	(हि०)	२२५
जीवन्धरचरित्र	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	१७०
जीवन्धरचरित्र	नथमल बिलाला	(हि०)	१७०
जीवन्धरचरित्र	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१७१
जीवन्धरचरित्र	—	(हि०)	१७१
जीवविचार	मानदेवसूरि	(प्रा०)	६१६
जीवविचार	—	(प्रा०)	७३२
जीव वेलडी	देवीदास	(हि०)	७५७
जीवसमास	—	(प्रा०)	७६५
जीवसमासटिप्पण	—	(प्रा०)	१६
जीवसमासभाषा	—	(प्रा० हि०)	१६
जीवस्वरूपवर्णन	—	(सं०)	१६
जीवाजीवविचार	—	(सं०)	१६
जीवाजीवविचार	—	(प्रा०)	१६
जैनगायत्रीमन्त्रविधान	—	(सं०)	३४८
जैनपच्चीसी	नवलराम	(हि०)	६७०, ६७५, ६६४
जैनबद्री मूडबद्रीकी यात्रा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	३७०
जैनबद्री देशकी पत्रिका	मजलसराय	(हि०)	७०३, ७१८
जैनमतका संकल्प	—	(हि०)	५६२
जैनरक्षास्तोत्र	—	(सं०)	६४७
जैनविवाहपद्धति	—	(सं०)	४८१
जैनशतक	भूधरदास	(हि०)	३२७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
			४२६, ६५२, ६७०, ६८६, ६६८, ७०६, ७१०, ७१३, ७१६, ७३२, ७५४
जैनसदाचार मार्त्तण्डनामक पत्रका प्रत्युत्तर	बा० दुलीचन्द	(हि०)	२०
जैनागारप्रक्रिया	बा० दुलीचन्द	(हि०)	५७
जैनेन्द्रमहावृत्ति	अभयनन्दि	(सं०)	२६०
जैनेन्द्रव्याकरण	देवनन्दि	(सं०)	२५६
जोगीरासो	पांडे जिनदास	(हि०)	१०५, ६०१, ६२२, ६३६, ६५२, ७०३, ७२३, ७४५, ७६१
जोधराजपच्चीसी	—	(हि०)	७६०
ज्येष्ठजिनवर [मंडलचित्र]	—		५२५
ज्येष्ठजिनवरउद्यापनपूजा	—	(सं०)	५०६
ज्येष्ठजिनवरकथा	—	(सं०)	२२५
ज्येष्ठजिनवरकथा	जसकीर्त्ति	(हि०)	२२५
ज्येष्ठजिनवरपूजा	श्रुतसागर	(सं०)	७६५
ज्येष्ठजिनवरपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५१६
ज्येष्ठजिनवरपूजा	—	(सं०)	४८१
ज्येष्ठजिनवरपूजा	—	(हि०)	६०७
ज्येष्ठजिनवरलाहान	ब्र० जिनदास	(सं०)	७६५
ज्येष्ठजिनवरव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४४, ७३१
ज्येष्ठजिनवरव्रतपूजा	—	(सं०)	४८१
ज्येष्ठपूर्णिमाकथा	—	(हि०)	६८२
ज्योतिषचर्चा	—	(सं०)	५६७
ज्योतिष	—	(सं०)	७१४
ज्योतिषपटलमाला	श्रीपति	(सं०)	६७२
ज्योतिषशास्त्र	—	(सं०)	६६५
ज्योतिषसार	कृपाराम	(हि०)	५६८
ज्वरचिकित्सा	—	(सं०)	२६८
ज्वरतिमिरभास्कर	चामुण्डराय	(सं०)	२६८
ज्वरलक्षण	—	(हि०)	२६८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ज्वालामालिनीस्तोत्र	—	(सं०)	४२४
			४२८, ४३३, ५६१, ६०८, ६४६, ६४७, ६४९
ज्ञानचिन्तामणि	मनोहरदास	(हि०)	५८
			७१४, ७३६
ज्ञानदर्पण	साह दीपचन्द	(हि०)	१०५
ज्ञानदीपक	—	(हि०)	१३०, ६६०
ज्ञानदीपकवृत्ति	—	(हि०)	१३१
ज्ञानपच्चीसी	बनारसीदास	(हि०)	६१४
			६३४, ६५०, ६८५, ६८६, ७४३, ७७५
ज्ञानपच्चीसीस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	४३८
ज्ञानपदवी	मनोहरदास	(हि०)	७१८
ज्ञानपञ्चविंशतिका व्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४८१
			५३९
ज्ञानपञ्चमीवृहद्स्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	७७९
ज्ञानपिण्डकी विंशतिपद्धडिका	—	(अप०)	६३५
ज्ञानपूजा	—	(सं०)	६५८
ज्ञानपैडो	मनोहरदास	(हि०)	७५७
ज्ञानबावनी	मतिशेखर	(हि०)	७७२
ज्ञानभक्ति	—	(सं०)	६२७
ज्ञानसूर्योदयनाटक	वादिचन्द्रसूरि	(सं०)	३१६
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	पारमदास निगोत्या	(हि०)	३१७
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	बखतावरमल	(हि०)	३१७
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	भगवतीदास	(हि०)	३१७
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	भागचंद	(हि०)	३१७
ज्ञानस्वरोदय	चरणदास	(हि०)	७५६
ज्ञानस्वरोदय	—	(हि०)	७५९
ज्ञानानन्द	रायमल्ल	(हि०)	५८
ज्ञानबावनी	बनारसीदास	(हि०)	१०५
ज्ञानसागर	मुनि पद्मसिंह	(प्रा०)	१०५
ज्ञानांकुश	—	(सं०)	६३५
ज्ञानांकुशपाठ	भद्रबाहु	(सं०)	४२०
ज्ञानांकुशस्तोत्र	—	(सं०)	४२६
ज्ञानार्णव	शुभचन्द्राचार्य	(सं०)	१०६
ज्ञानार्णवटीका [गद्य]	श्रुतसागर	(सं०)	१०७
ज्ञानार्णवटीका	नयविलास	(सं०)	१०८
ज्ञानार्णवभाषा	जयचंद छाबड़ा	(हि०)	१०८
ज्ञानार्णवभाषाटीका	लब्धि विमलगणि	(हि०)	१०८
ज्ञानोपदेश के पद्य	—	(हि०)	६६२
ज्ञानोपदेशबत्तीसी	—	(हि०)	६६२

झ

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
झखडी श्री मन्दिरजी की	—	(हि०)	४३८
झाडा देनेका मन्त्र	—	(हि०)	५७१
झाझरियानु चोढाल्या	—	(हि०)	४३८
झूलना	गंगाराम	(हि०)	७५७

ट-ठ-ड-ढ-ण

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
टंडाणागीत	बूचराज	(हि०)	७५०
ठाणांग सूत्र	—	(सं०)	२०
डोकरी अर राजा भोजराज की वार्ता		(हि०)	६६५
ढाढसी गाथा	—	(प्रा०)	६२८
ढाढसी गाथा	ढाढसी मुनि	(प्रा०)	७०७
ढालगण	—	(हि०)	३२७
ढाल मङ्गलमकी	—	(हि०)	६५५
ढोला मारूणी की वात	—	(हि०)	२२६, ६००
ढोला मारूणी की वार्त्ता	—	(हि०)	७११
ढोला मारूवणी चौपाई	कुशल लाभ	(हि०) राज०	२२५
णवकार पचविंशति पूजा	—	(सं०)	५१०
णमोकारकल्प	—	(सं०)	३४८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
णमोकारछंद	ब्र० लालसागर	(हिं०)	६८३
णमोकारपच्चीसी	ऋषि ठाकुरसी	(हिं०)	४३६
णमोकारपाथडीजयमाल	—	(अप०)	६३७
णमोकारपैंतीसी	कनककीर्त्ति	(सं०)	५१७, ४८२, ६७६
णमोकारपैंतीसी	—	(प्रा०)	३४८
णमोकारपैंतीसीपूजा	अक्षयराम	(स०)	४८२, ५१७, ५३६
णमोकारपचासिकापूजा	—	(स०)	५४०
णमोकारमंत्र कथा	—	(हिं०)	२२६
णमोकारस्तवन	—	(हिं०)	३६४
णमोकारादि पाठ	—	(प्रा०)	३६४
णाणपिण्ड	—	(अप०)	६४२
णेमिणाहचारिउ	लक्ष्मणदेव	(अप०)	१७१
णेमिणाहचरिउ	दामोदर	(अप०)	१७१

त

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
तकराक्षरीस्तोत्र	—	(स०)	३६४
तत्वकौस्तुभ	पन्नालाल सघी	(हिं०)	१०
तत्वज्ञानतरगिणी	भ० ज्ञानभूषण	(स०)	५८
तत्वदीपिका	—	(हिं०)	२०
तत्वधर्मामृत	—	(स०)	३२८
तत्ववोध	—	(स०)	१०८
तत्ववर्णन	शुभचन्द्र	(स०)	२०२
तत्वसार	देवसेन	(प्रा०)	२०, ५७५, ६३७, ७३७, ७४४, ७४७
तत्वसारभाषा	द्यानतराय	(हिं०)	७४७
तत्वसारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हिं०)	२१
तत्वार्थदर्पण		(सं०)	२१
तत्वार्थबोध	—	(स०)	२१
तत्वार्थबोध	—	(हिं०)	२१
तत्वार्थबोध	बुधजन	(हिं०)	२१
तत्वार्थवोधिनीटीका	—	(स०)	२१
तत्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र	(स०)	२१
तत्वार्थराजवार्तिक	भट्टाकलकदेव	(स०)	२२
तत्वार्थराजवार्तिकभाषा	—	(हिं०)	२२
तत्वार्थवृत्ति	पं० योगदेव	(सं०)	२२
तत्वार्थसार	अमृतचन्द्राचार्य	(स०)	२२
तत्वार्थसारदीपक	भ० सकलकीर्त्ति	(स०)	२३
तत्वार्थसारदीपकभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हिं०)	२३
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	(सं०)	४२५, ४२७, ५३७, ५६१, ५६६ ५७३, ५६४, ५६५, ५६६, ६०३ ६०५, ६३३, ६३७, ६४०, ६४४, ६४६, ६४७, ६४८, ६५० ६५२, ६५६, ६७३, ६७५, ६८१, ६८६, ६६४, ६६६, ७००, ७०३, ७०४, ७०५, ७०७, ७१०, ७२७, ७३१, ७४१, ७७६, ७८७, ७८८, ७८६,
तत्वार्थसूत्रटीका	श्रुतसागर	(स०)	२८
तत्वार्थसूत्रटीका	आ० कनककीर्ति	(हिं०)	३०, ७२६
तत्वार्थसूत्रटीका	छोटीलाल जैसवाल	(हिं०)	३०
तत्वार्थसूत्रटीका	प० राजमल्ल	(हिं०)	३०
तत्वार्थसूत्रटीका	जयचद छाबडा	(हिं०)	२६
तत्वार्थसूत्रटीका	पाडे जयवत	(हिं०)	२६
तत्वार्थसूत्रटीका	—	(हिं०)	६८६
तत्वार्थदशाध्यायपूजा	दयाचद	(स०)	४८२
तत्वार्थसूत्र भाषा	शिखरचन्द	(हिं०)	३०
तत्वार्थसूत्र भाषा	सदासुख कासलीवाल	(हिं०)	२८
तत्वार्थसूत्र भाषा	—	(हिं०)	३०
तत्वार्थसूत्र भाषा	—	(हिं०प०)	३१
तत्वार्थसूत्र वृत्ति	सिद्धसेन गणि	(स०)	२८
तत्वार्थसूत्र वृत्ति	—	(सं०)	२८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
तद्धित प्रक्रिया	—	(सं०)	२६०
तपलक्षण कथा	खुशालचद	(हि०)	५१६
तमाखू की जयमाल	आणदमुनि	(हि०)	४३८
तर्कदीपिका	—	(स०)	१३१
तर्कप्रकरण	—	(स०)	१३१
तर्कप्रमाण	—	(स०)	१३२
तर्कभाषा	केशव मिश्र	(स०)	१३२
तर्कभाषा प्रकाशिका	बालचन्द्र	(स०)	१३२
तर्करहस्य दीपिका	गुणरत्न सूरि	(स०)	१३२
तर्कसग्रह	अन्नभट्ट	(स०)	१३२
तर्कसंग्रहटीका	—	(सं०)	१३३
तारातबोल की कथा	—	(हि०)	७४२
तार्किकशिरोमणि	रघुनाथ	सं०)	१३३
तीनचौबीसी	—	(हि०)	६९३
तीनचौबीसीनाम	—	(हि०)	५९६, ६७०, ६९३, ७०३, ७५८
तीनचौबीसीपूजा	—	(स०)	४८२
तीनचौबीसीपजा	नेमीचन्द	(हि०)	४८२
तीनचौबीसीपूजा	—	(हि०)	४८२
तीनचौबीसीरास	—	(हि०)	६५१
तीनचौबीसी समुच्चय पूजा	—	(स०)	४८२
तीन मिया की जकडी	धनराज	(हि०)	६२३
तीनलोककथन	—	(हि०)	३१९
तीनलोक चार्ट	—	(हि०)	३१९
तीनलोकपूजा [त्रिलोक सार पूजा, त्रिलोक पूजा]	नेमीचन्द	(हि०)	४८३
तीनलोकपूजा	टेकचन्द	(हि०)	४८३
तीनलोकवर्णन	—	(हि० ग०)	३१९
तीर्थमालास्तवन	तेजराम	(हि०)	६१७
तीर्थमालास्तवन	समयसुन्दर	(राज०)	६१७
तीर्थावलीस्तोत्र	—	(स०)	४३२
तीर्थोदकविधान	—	(स०)	६३६
तीर्थंकरजकडी	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	६२२, ६४४
तीर्थंकरपरिचय	—	(हि०)	३७०, ६५०, ६५२
तीर्थंकरस्तोत्र	—	(स०)	४३०
तीर्थंकरो का अतराल	—	(हि०)	३७०
तीर्थंकरो के ६२ स्थान	—	(हि०)	७२०
तीसचौबीसी	—	(हि०)	६५१, ७५८
तीसचौबीसीचौपई	श्याम	(हि०)	७५८
तीसचौबीसीनाम	—	(हि०)	४८३
तीसचौबीसीपूजा	शुभचन्द्र	(स०)	५३७
तीसचौबसीपूजा	वृन्दावन	(हि०)	४८३
तीसचौबीसीसमुच्चयपूजा	—	(हि०)	४८३
तीसचौबीसीस्तवन	—	(स०)	३९४
तेईसबोलविवरण	—	(हि०)	७३२
तेरहकाठिया	बनारसीदास	(हि०)	४२९, ६०४, ७५०
तेरहद्वीपपूजा	शुभचन्द्र	(स०)	४८३
तेरहद्वीपपूजा	भ० विश्वभूषण	(स०)	४८४
तेरहद्वीपपूजा	—	(स०)	४८४
तेरहद्वीपपूजा	लालजीत	(हि०)	४८४
तेरहद्वीपपूजा	—	(हि०)	४८४
तेरहद्वीपपूजाविधान	—	(स०)	४८४
तेरहपंथपच्चीसी	माणिकचन्द	(हि०)	४४८
तेरहपन्थबीसपन्थभेद	—	(हि०)	७३३
तंत्रसार	—	(हि०)	७३४
त्रयोविंशतिका	—	(स०)	१०६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
त्रिकाण्डशेषसूची [अमरकोश]	अमरसिंह	(सं०)	२७४
त्रिकाण्डशेषाभिधान	पुरुषोत्तमदेव	(सं०)	२७५
त्रिकालचतुर्दशीपूजा	—	(सं०)	६६६
त्रिकालचौबीसी	—	(हि०)	६५१
त्रिकालचौबीसीकथा [रोटतीज]	अभ्रदेव	(सं०)	२२६, २४२
त्रिकालचौबीसीकथा [रोटतीज]	गुणनन्दि	(सं०)	२२६
त्रिकालचौबीसीनाम	—	(सं०)	४२४
त्रिकालचौबीसीपूजा	त्रिभुवनचद्र	(सं०)	४८४,
त्रिकालचौबीसीपूजा	—	(सं०)	४८४, ५१७
त्रिकालचौबीसीपूजा	—	(प्रा०)	५०६
त्रिकालदेववंदना	—	(हि०)	६२७
त्रिकालपूजा	—	(सं०)	४८५
त्रिचतुर्विंशतिविधान	—	सं०)	२४६
त्रिपचाशतक्रिया	—	(हि०)	५१७
त्रिपचाशतव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५१३
त्रिभुवन की विनती	गगादास	(हि०)	७७२
त्रिभुवन की विनती	—	(हि०)	७७४
त्रिभंगीसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३१
त्रिभगीसारटीका	विवेकानन्दि	(सं०)	३२
त्रिलोकक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४८५
त्रिलोकचित्र	—	(हि०)	३२०
त्रिलोकतिलकस्तोत्र	भ० महीचन्द्र	(सं०)	७१२
त्रिलोकदीपक	वामदेव	(सं०)	३२०
त्रिलोकदर्पणकथा	खड्गसेन	(हि०)	६८६,
			६६०, ३२१
त्रिलोकवर्णन	—	(सं०)	३२२
त्रिलोकवर्णन	—	(प्रा०)	३२२
त्रिलोकवर्णन [चित्र]	—		३२३
त्रिलोकवर्णन	—	(सं०)	३२३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
त्रिलोकवर्णन	—	(हि०)	६६०
			७०० ७०२
त्रिलोकसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३२०
त्रिलोकसारकथा	—	(हि०)	२२७
त्रिलोकसारचौपई	स्वरुपचद	(हि०)	५११
त्रिलोकसारपूजा	अभयनन्दि	(सं०)	४८५
त्रिलोकसारपूजा	—	(सं०)	४८५, ५१३
त्रिलोकसारभाषा	टोडरमल	(हि०)	३२१
त्रिलोकसारभाषा	—	(हि०)	३२१
त्रिलोकसारभाषा	—	(हि०)	३२१
त्रिलोकसारवृत्ति	माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव	(सं०)	३२२
त्रिलोकसारवृत्ति	—	(सं०)	३२२
त्रिलोकसारसदृष्टि	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३२२
त्रिलोकस्तोत्र	भ० महीचन्द	(हि०)	६८१
त्रिलोकस्थजिनालयपूजा	—	(हि०)	४८५
त्रिलोकस्वरूप व्याख्या	उदयलाल गगवाल	(हि०)	३२२
त्रिवर्णाचार	भ० सोमसेन	(सं०)	५८
त्रिशती	शार्ङ्गधर	(सं०)	२६८
त्रिषष्ठिशलाकाछद	श्रीपाल	(सं०)	६७०
त्रिषष्ठिशलाका पुरुषवर्णन	—	(सं०)	१४६
त्रिषष्ठिस्मृति	आशाधर	(सं०)	१४६
त्रिशतजिणचऊवीसी	महणसिंह	(अप०)	६८६
त्रेपनक्रिया	—	(सं०)	५६, ७६२
त्रेपनक्रिया	ब्र० गुलाल	(हि०)	७८०
त्रेपनक्रियाकोश	दौलतराम	(हि०)	५६
त्रेपनक्रियापूजा	—	(सं०)	४८५
त्रेपनक्रिया [मण्डल चित्र]	—		५२४
त्रेपनक्रियाव्रतपूजा	—	(सं०)	४८५
त्रेपनक्रियाव्रतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	६३८, ७६६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
त्रेपनक्रियाव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५४०
त्रेपठशलाकापुरुषचित्र	—	(प्रा०	१७१
त्रेपठशलाकापुरुषवर्णन	—	(हि०)	७०२
त्रैलोक्य तीज कथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
त्रैलोक्य मोहनकवच	रायमल्ल	(स०)	६६०
त्रैलोक्यसारटीका	सहस्रकीर्त्ति	(प्रा०)	३२३
त्रैलोक्यसारपूजा	सुमतिसागर	(स०)	४८५
त्रैलोक्यसारमहापूजा	—	(स०)	४८६
थ			
थूलभद्रजीवारासो	—	(हि०)	७२५
थभणपार्श्वनाथस्तवन	मुनि अभयदेव	(हि०)	६१६
थभणपार्श्वनाथस्तवन	—	(राज)	६१६
द			
दक्षणामूर्त्तिस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(स०)	६६०
दण्डकपाठ	—	(स०)	५६
दत्तात्रय	—	(स०)	२२७
दर्शनकथा	भारामल्ल	(हि०)	२२७
दर्शनकथाकोश	—	(स०)	२२७
दर्शनपच्चीसी	—	(हि०)	७१६
दर्शनपाठ	—	(स०)	५६६
६००, ६०८, ६५०, ६६३, ६७७, ६६३, ७०३, ७६३			
दर्शनपाठ	बुधजन	(हि०)	४३६
दर्शनपाठ	—	(हि०)	६००
६६२, ६६३, ७०५			
दर्शनपाठस्तुति	—	(हि०)	४३६
दर्शनपाहुडभाषा	—	(हि०)	१०६
दर्शनप्रतिमास्वरूप	—	(हि०)	५६
दर्शनभक्ति	—	(स०)	६२७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
दर्शनसार	देवसेन	(प्रा०)	१३३
दर्शनसारभाषा	नथमल	(हि०)	१३३
दर्शनसारभाषा	शिवजीलाल	(हि०)	१३३
दर्शनसारभाषा	—	(हि०)	१३३
दर्शनस्तुति	—	(स०)	६५८, ६७०
दर्शनस्तुति	—	(हि०)	६५२
दर्शनस्तोत्र	सकलचन्द्र	(स०)	५७८
दर्शनस्तोत्र	—	(सं०)	३८१
दर्शनस्तोत्र	पद्मनन्दि	(प्रा०)	५०६
दर्शनस्तोत्र	—	(प्रा०)	५७८
दर्शनाष्टक	—	(हि०)	६४४
दलालीनीसज्झाय	—	(हि०)	३६४
दश प्रकारके ब्राह्मण	—	(सं०)	५७१
दशप्रकार विप्र	—	(स०)	५७६
दशबोल	—	(हि०)	३२८
दशबोलपच्चीसी	द्यानतराय	(हि०)	८८८
दशभक्ति	—	(हि०)	५६
दशमूर्खोंकी कथा	—	(हि०)	२२७
दशलक्षणउद्यापन पाठ	—	(स०)	५५७
दशलक्षणकथा	लोकसेन	(स०)	२२७
दशलक्षणकथा	—	(स०)	२२७
दशलक्षणकथा	मुनि गुणभद्र	(अप०)	६३१
दशलक्षणकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२८८
दशलक्षण जयमाल	सोमसेन	(स०)	७२५
दशलक्षणजयमाल	प० भावशर्मा	(प्रा०)	४२६, ५१७
दशलक्षणजयमाल	—	(प्रा०)	४८७
दशलक्षणजयमाल	—	(प्रा० स०)	४८७
दशलक्षणजयमाल	प० रइधू	(अप०)	२८३
४८६, ५१८, ५३७, ५७२, ६३७, ६७६			

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
दशलक्षणजयमाल	सुमतिसागर	(हि०)	७६५
दशलक्षणजयमाल	—	(हि०)	४८८
दशलक्षणधर्मवर्णन पं० सदासुख कासलीवाल		(हि०)	५६
दशलक्षणधर्मवर्णन	—	(हि०)	६०
दशलक्षणपूजा	अभयनन्दि	(सं०)	४८८
दशलक्षणपूजा	—	(सं०)	४८८
			५१७, ५३६, ५७८, ५६४, ५६६, ६०६, ६०७, ६४०, ६४८, ६४६, ६५२, ६५८, ६६८, ७०४, ७३१, ७५६, ७६३, ७८४
दशलक्षणपूजा	—	(अप० सं०)	७०५
दशलक्षणपूजा	अभ्रदेव	(सं०)	४८८
दशलक्षणपूजा	खुशालचन्द	(हि०)	५१६
दशलक्षणपूजा	द्यानतराय	(हि०)	४८८
			५१६, ७०५
दशलक्षणपूजा	भूधरदास	(हि०)	५६१
दशलक्षणपूजा	—	(हि०)	४८६
			७२०, ७८८
दशलक्षणपूजाजयमाल	—	(सं०)	५६६
दशलक्षण [मंडलचित्र]	—		५२५
दशलक्षणमण्डलपूजा	—	(हि०)	४८६
दशलक्षणविधानकथा	लोकसेन	(सं०)	२४२, २४६
दशलक्षणविधानपूजा	—	(हि०)	४६०
दशलक्षणव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२२७
दशलक्षणव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	७३१
दशलक्षणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७६४
दशलक्षणव्रतकथा	—	(हि०)	२४७
दशलक्षणव्रतोद्यापन	जिनचन्द्रसूरि	(सं०)	४८६
दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	सुमतिसागर	(सं०)	४८६
			५४०, ६३८
दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५१३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
दशलक्षणीकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६६५
दशलक्षणीरास	—	(अप०)	६४२
दशवैकालिकगीत	जैतसिंह	(हि०)	७००
दशवैकालिकसूत्र	—	(प्रा०)	३२
दशवैकालिकसूत्रटीका	—	(सं०)	३२
दशश्लोकीशम्भुस्तोत्र	—	(सं०)	६६०
दशसूत्राष्टक	—	(सं०)	६७०
दशारास	ब्र० चन्द	(सं०)	६८३
दादूपद्यावली	—	(हि०)	३७१
दानकथा	ब्र० जिनदास	(हि०)	७०७
दानकथा	भारामल्ल	(हि०)	२२८
दानकुल	—	(प्रा०)	६०
दानतपशीलसंवाद	समयसुन्दर	(राज०)	६१७
दानपञ्चाशत	पद्मनन्दि	(सं०)	६०
दानबावनी	द्यानतराय	(हि०)	६०५, ६८६
दानलीला	—	(हि०)	६००
दानवर्णन	—	(हि०)	६८६
दानविनती	जतीदास	(हि०)	६४३
दानशीलतपभावना	—	(सं०)	६०
दानशीलतपभावना	धर्मसी	(हि०)	६०
दानशीलतपभावना	—	(हि०)	६०, ६०१
दानशीलतपभावना रा चोढाल्या	समयसुन्दरगणि	(हि०)	२२८
दिल्ली की बादशाहतका ब्योरा	—	(हि०)	७६६
दिल्लीके बादशाहों पर कवित्त	—	(हि०)	७५६
दिल्ली नगरकी बसापन तथा बादशाहत का ब्योरा	—	(हि०)	७८४
दिल्ली राज्य का ब्योरा	—	(हि०)	७८२
दीक्षापटल	—	(सं०)	५०५
दीपमालिका निर्णय	—	(हि०)	६०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
दीपावतारमन्त्र	—	(सं०)	५७१, ५७६
दुधारसविधानकथा	मुनि विनयचन्द्र	(अप०)	२४४
दुर्घटकाव्य	—	(सं०)	१७१
दुर्लभानुप्रेक्षा	—	(प्रा०)	६३७
देवकीढाल	रतनचन्द	(हि०)	४४०
देवकीढाल	लूणकरण कासलीवाल	(हि०)	४३९
देवतास्तुति	पद्मनन्दि	(हि०)	३९४
देवपूजा	इन्द्रनन्दि योगीन्द्र	(सं०)	४९०
देवपूजा	—	(सं०)	४१५, ५९४, ६०५, ७२५, ७३१
देवपूजा	—	(हि० सं०)	५६६, ७०४
देवपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१९
देवपूजा	—	(हि०)	६४६, ६७०, ७०६, ७३५, ७५८
देवपूजाटीका	—	(सं०)	४९०
देवपूजाभाषा	जयचन्द छाबड़ा	(हि०)	४९०
देवपूजाष्टक	—	(सं०)	६५७
देवराज बच्छराज चौपई	सोमदेवसूरि	(हि०)	२२८
देवलोकनकथा	—	(सं०)	२२८
देवशास्त्रगुरुपूजा	आशाधर	(सं०)	६३६, ७६१
देवशास्त्रगुरुपूजा	—	(सं०)	६०७
देवशास्त्रगुरुपूजा	—	(हि०)	५६२
देवसिद्धपूजा	—	(सं०)	४२८, ४९०, ६४०, ६४४, ७३०
देवसिद्धपूजा	—	(हि०)	७०५
देवागमस्तोत्र	आ० समन्तभद्र	(सं०)	३९४, ३९५, ४२५, ५७५, ६०४, ७२०
देवागमस्तोत्रभाषा	जयचन्द छाबड़ा	(हि०)	३९५
देवागमस्तोत्रभाषा	—	(हि० पद्य)	३९६
देवागमस्तोत्रवृत्ति	आशुभा [शिष्य विजयसेनसूरि]	(सं०)	३९६
देवीसूक्त	—	(सं०)	६०८
देशों [भारत] के नाम	—	(हि०)	६७१
देहलीके बादशाहोंकी नामावली एवं परिचय	—	(हि०)	७४३
देहलीके बादशाहोंके परगनोंके नाम	—	(हि०)	६८०
देहलीके बादशाहोंका ब्यौरा	—	(हि०)	३७२
देहलीके राजाओंकी वंशावलि	—	(हि०)	६८०
दोहा	कबीर	(हि०)	७६९
दोहापाहुड	रामसिंह	(अप०)	६०
दोहाशतक	रूपचन्द	(हि०)	६७३, ७४०
दोहासंग्रह	नानिगराम	(हि०)	६२३
दोहासंग्रह	—	(हि०)	७४३
द्यानतविलास	द्यानतराय	(हि०)	३२८
द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३२, ५७५, ६२८, ७४४, ७११
द्रव्यसंग्रहटीका	—	(सं०)	३५, ६९४
द्रव्यसंग्रहगाथा भाषा सहित		(प्रा० हि०)	७५५, ६८६
द्रव्यसंग्रहबालावबोध टीका	वंशीधर	(हि०)	७६१
द्रव्यसंग्रहभाषा	जयचन्द छाबड़ा	(हि० पद्य)	३६
द्रव्यसंग्रहभाषा	जयचन्द छाबड़ा	(हि० गद्य)	३६
द्रव्यसंग्रहभाषा	बा० दुलीचन्द	(हि० गद्य)	३७
द्रव्यसंग्रहभाषा	द्यानतराय	(हि०)	७१२
द्रव्यसंग्रहभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	३६
द्रव्यसंग्रहभाषा	हेमराज	(हि०)	७३३
द्रव्यसंग्रहभाषा	—	(हि०)	३५
द्रव्यसंग्रहभाषा	पर्वत धर्मार्थी	(गुज०)	३६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठसं०
द्रव्यसंग्रहवृत्ति	ब्रह्मदेव	(सं०)	३४
द्रव्यसंग्रहवृत्ति	प्रभाचन्द्र	(सं०)	३४
द्रव्यस्वरूपवर्णन	—	(सं०)	३७
दृष्टांतशतक	—	(सं०)	३२८
द्वादशभावनाटीका	—	(हि०)	१०६
द्वादशभावनादृष्टांत	—	(गुज०)	१०६
द्वादशमाला	कवि राजसुन्दर	(हि०)	७४३
द्वादशमासा [बारहमासा]	कवि राइसुन्दर	(हि०)	७७१
द्वादशमासातचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६
द्वादशराशिफल	—	(सं०)	६६०
द्वादशव्रतकथा	पं० अभ्रदेव	(सं०)	२२८, २४६, ४६०
द्वादशव्रतकथा	चन्द्रसागर	(हि०)	२२८
द्वादशव्रतकथा	—	(सं०)	२२८
द्वादशव्रतपूजाजयमाल	—	(सं०)	६७६
द्वादशव्रतमण्डलोद्यापन	—	(सं०)	५४०
द्वादशव्रतोद्यापन	—	(सं०)	४६१, ६६६
द्वादशव्रतोद्यापन	जगतकीर्त्ति	(सं०)	४६१
द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४६१
द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	४६१
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(सं०)	१०६, ६७२
द्वादशानुप्रेक्षा	लक्ष्मीसेन	(सं०)	७४४
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(प्रा०)	१०६
द्वादशानुप्रेक्षा	जल्हग	(अप०)	६२८
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(अप०)	६२८
द्वादशानुप्रेक्षा	साह आलु	(हि०)	१०६
द्वादशानुप्रेक्षा	कवि छत्त	(हि० पद्य)	१०६
द्वादशानुप्रेक्षा	लोहट	(हि०)	७६६
द्वादशानुप्रेक्षा	सूरत	(हि०)	७६४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	क्रम सं०
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(हि०)	१०६, ६५२, ७४८, ७६५
द्वादशांगपूजा	—	(सं०)	४६१
द्वादशांगपूजा	डालूराम	(हि०)	४६१
द्वाश्रयकाव्य	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	१७१
द्विजवचनचपेटा	—	(सं०)	१३३
द्वितीयसमोसरण	ब्र० गुलाल	(हि०)	५६६
द्विपंचकल्याणकपूजा	—	(सं०)	५१७
द्विसंधानकाव्य	धनञ्जय	(सं०)	१७१
द्विसंधानकाव्यटीका [पदकौमुदी]	नेमिचन्द्र	(सं०)	१७२
द्विसंधानकाव्यटीका	विनयचन्द्र	(सं०)	१७२
द्विसंधानकाव्यटीका	—	(सं०)	१७२
द्वीपसमुद्रों के नाम	—	(हि०)	६७१
द्वीपायनढाल	गुणसागरसूरि	(हि०)	४४०

ध

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	क्रम सं०
धनदत्त सेठ की कथा	—	(हि०)	२२६
धन्नाकथानक	—	(सं०)	२२६
धन्नाचौपई	—	(हि०)	७७२
धन्नाशालिभद्रचौपई	—	(हि०)	२२६
धन्नाशालिभद्ररास	जिनराजसूरि	(हि०)	३६२
धन्यकुमारचरित्र	आ० गुणभद्र	(सं०)	१७२
धन्यकुमारचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	१७३
धन्यकुमारचरित्र	सकलकीर्त्ति	(सं०)	१७२
धन्यकुमारचरित्र	—	(सं०)	१७४
धन्यकुमारचरित्र	खुशालचन्द	(हि०)	१७३, ७२६
धर्मचक्र [मण्डल चित्र]	—		५२५
धर्मचक्रपूजा	यशोनन्दि	(सं०)	४६१, ५६५
धर्मचक्रपूजा	साधु रणमल्ल	(सं०)	४६२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
धर्मचक्रपूजा	—	(सं०)	४९२, ५१०, ५३७
धर्मचन्द्रप्रबंध	धर्मचन्द्र	(प्रा०)	३९६
धर्मचाह	—	(हि०)	७२७
धर्मचाहना	—	(हि०)	६१
धर्मतरुगीत	जिनदास	(हि०)	७६२
धर्मदशावतार नाटक	—	(सं०)	३१७
धर्म दुहेला जैनी का [त्रेपन क्रिया]		(हि०)	६३८
धर्मपच्चीसी	द्यानतराय	(हि०)	७४७
धर्मपरीक्षा	अमितिगति	(सं०)	३५५
धर्मपरीक्षा	विशालकीर्त्ति	(हि०)	७३५
धर्मपरीक्षाभाषा	मनोहरदास सोनी		३५७, ७१६
धर्मपरीक्षाभाषा	दशरथ निगोत्या	(हि० ग०)	३५६
धर्मपरीक्षाभाषा	—	(हि०)	३५८, ७१०
धर्मपरीक्षारास	ब्र० जिनदास	(हि०)	३५७
धर्मपंचविंशतिका	ब्र० जिनदास	(हि०)	६१
धर्मप्रदीपभाषा	पन्नालाल संघी	(हि०)	६१
धर्मप्रश्नोत्तर	विमलकीर्त्ति	(सं०)	६१
धर्मप्रश्नोत्तर	—	(हि०)	६१
धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचार भाषा	—	(सं०)	६२
धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचार भाषा	चम्पाराम	(हि०)	६१
धर्मप्रश्नोत्तरी	—	(हि०)	६१
धर्मबुद्धिचौपई	लालचन्द	(हि०)	२२९
धर्मबुद्धि पापबुद्धि कथा	—	(सं०)	२२९
धर्मबुद्धि मंत्री कथा	वृन्दावन	(हि०)	२२९
धर्मरत्नाकर	पं० मंगल	(सं०)	६२
धर्मरसायन	पद्मनंदि	(प्रा०)	६२
धर्मरसायन	—	(सं०)	६२
धर्मरास [श्रावकाचार]	—	(हि०)	७७३
धर्मरासा	—	(हि०)	३६२
धर्मरासो	—	(हि०)	६२३, ६७७
धर्मलक्षण	—	(सं०)	६२
धर्मविलास	द्यानतराय	(हि०)	३२८, ७१०
धर्मशर्माभ्युदय	महाकवि हरिश्चन्द्र	(सं०)	१७४
धर्मशर्माभ्युदयटीका	यशःकीर्त्ति	(सं०)	१७४
धर्मशास्त्रप्रदीप	—	(सं०)	६३
धर्मसरोवर	जोधराज गोदीका	(हि०)	६३
धर्मसार [चौपई]	पं० शिरोमणिदास	(हि०)	६३, ६६९
धर्मसंग्रहश्रावकाचार	पं० मेधावी	(सं०)	६२
धर्मसंग्रहश्रावकाचार	—	(सं०)	६३
धर्मसंग्रहश्रावकाचार	—	(हि०)	६३
धर्माधर्मस्वरूप	—	(हि०)	७०७
धर्मामृतसूक्तिसंग्रह	आशाधर	(सं०)	६४
धर्मोपदेशपीयूषश्रावकाचार	सिंहनन्दि	(सं०)	६४
धर्मोपदेशश्रावकाचार	अमोघवर्ष	(सं०)	६४
धर्मोपदेशश्रावकाचार	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	६४
धर्मोपदेशश्रावकाचार	—	(सं०)	६४
धर्मोपदेशसंग्रह	सेवारामसाह	(हि०)	६४
धवल	—	(प्रा०)	३७
धातुपाठ	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२६०
धातुपाठ	—	(सं०)	२६०
धातुप्रत्यय	—	(सं०)	२६१
धातुरूपावलि	—	(सं०)	२६१
ध्रू लीला	—	(हि०)	६००
श्रीध्रुवचरित्र	—	(हि०)	७४१
ध्वजारोपणपूजा	—	(सं०)	५१३
ध्वजारोपणमंत्र	—	(सं०)	४९२
ध्वजारोपणयंत्र	—	(सं०)	४९२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ध्वजारोपणविधि	आशाधर	(सं०)	४६२
ध्वजारोपणविधि	—	(सं०)	४६२
ध्वजारोहणविधि	—	(सं०)	४६२
न			
नखशिखवर्णन	केशवदास	(हि०)	७७२
नखशिखवर्णन	—	(हि०)	७१४
नगर स्थापना का स्वरूप	—	(हि०)	७५०
नगरो की बसापत का संवत्वार विवरण	मुनि कनककीर्त्ति	(हि०)	५६१
ननद भौजाई का झगडा	—	(हि०)	७४७
नन्दिताढ्यछंद	—	(प्रा०)	३१०
नन्दिषेण महामुनि सज्झाय	—	(हि०)	६१६
नन्दीश्वरउद्यापन	—	(सं०)	५३७
नन्दीश्वरकथा	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	२२६
नन्दीश्वरजयमाल	—	(सं०)	४६२
नन्दीश्वरजयमाल	—	(प्रा०)	६३६
नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्त्ति	(अप०)	५१६
नन्दीश्वरजयमाल	—	(अप०)	४६२
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	रत्ननन्दि	(सं०)	४६२
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	—	(सं०)	४६३, ६०१, ६५२
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	—	(प्रा०)	६५५
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१६, ५६२
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	मङ्गल	(हि०)	४६३
नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि	—	(सं०)	५७६
नन्दीश्वरपूजा	सकलकीर्त्ति	(सं०)	७६१
नन्दीश्वरपूजा	—	(सं०)	४६३, ५१५, ६०७, ६४४, ६५८, ६६६, ७०४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नन्दीश्वरपूजा	—	(प्रा०)	४६३, ७०५
नन्दीश्वरपूजा	—	(सं० प्रा०)	४६३
नन्दीश्वरपूजा	—	(अप०)	४६३
नन्दीश्वरपूजा	—	(हि०)	४६३
नन्दीश्वरपूजा जयमाल	—	(सं०)	७५६
नन्दीश्वरपूजाविधान	टेकचन्द	(हि०)	४६४
नन्दीश्वरपक्तिपूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	६३६
नन्दीश्वरपक्तिपूजा	—	(सं०)	४६३, ५१४, ७६३
नन्दीश्वरपक्तिपूजा	—	(हि०)	४६३
नन्दीश्वरभक्ति	—	(सं०)	६३३
नन्दीश्वरभक्ति	पन्नालाल	(हि०)	४६४, ४५०
नन्दीश्वरविधान	जिनेश्वरदास	(हि०)	४६४
नन्दीश्वरविधानकथा	हरिषेण	(सं०)	२२६, ५१४
नन्दीश्वरविधानकथा	—	(सं०)	२२६, २४६
नन्दीश्वरव्रतविधान	टेकचन्द	(हि०)	५१८
नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	अनन्तकीर्त्ति	(सं०)	४६४
नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	नन्दिषेण	(सं०)	४६४
नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	४६४
नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	—	(हि०)	४६४
नन्दीश्वरादिभक्ति	—	(प्रा०)	६२७
नान्दीसूत्र	—	(प्रा०)	३७
नन्दूसप्तमीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	४६४
नमस्कारमन्त्रकल्पविधिसहित	सिंहनन्दि	(सं०)	३४६
नमस्कारमन्त्रसटीक	—	(सं० हि०)	६०१
नमस्कारस्तोत्र	—	(सं०)	४२८
नमिऊणस्तोत्र	—	(प्रा०)	६८१
नयचक्र	देवसेन	(प्रा०)	१३४
नयचक्रटीका	—	(हि०)	६८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नयचक्रभाषा	हेमराज	(हि०)	१३८
नयचक्रभाषा	—	(हि०)	१३८
नरकदुःखवर्णन [दोहा]	भूधरदास	(हि०)	६५ ७६०, ७८८
नरकवर्णन	—	(हि०)	६५
नरकस्वर्गकेयन्त्र पृथ्वी आदिका वर्णन	—	(हि०)	६५२
नरपतिजयचर्चा	नरपति	(सं०)	२८५
नल दमयन्ती नाटक	—	(सं०)	३१७
नलोदयकाव्य	कालिदास	(सं०)	१७५
नलोदयकाव्य	माणिक्यसूरि	(सं०)	१७४
नवकारकल्प	—	(सं०)	३४६
नवकारपैंतीसी	—	(सं०)	६६६
नवकारपैंतीसीपूजा	—	(सं०)	५३७
नवकार वडो विनती	ब्रह्मदेव	(हि०)	६५१
नवकारमहिमास्तवन	जिनवल्लभसूरि	(हि०)	६१८
नवकारमन्त्र	—	(सं०)	४३१
नवकारमन्त्र	—	(प्रा०)	६३६
नवकारमन्त्रचर्चा	—	(हि०)	७१८
नवकाररास	अचलकीर्त्ति	(हि०)	६४७
नवकाररास	—	(हि०)	३६२
नवकाररासो	—	(हि०)	७४५
नवकारश्रावकाचार	—	(प्रा०)	६५
नवकारसज्झाय	गुणप्रभसूरि	(हि०)	६१८
नवकारसज्झाय	पद्मराजगणि	(हि०)	६१८
नवग्रह [मण्डलचित्र]	—		५२५
नवग्रहगर्भितपार्श्वनाथस्तवन	—	(सं०)	६०६
नवग्रहगर्भितपार्श्वस्तोत्र	—	(प्रा०)	७३२
नवग्रहपूजा	—	(सं०)	४६५
नवग्रहपूजा	—	(सं० हि०)	५१८
नवग्रहपूजाविधान	भद्रबाहु	(सं०)	४६८
नवग्रहस्तोत्र	वेदव्यास	(सं०)	६४६
नवग्रहस्तोत्र	—	(सं०	४३०
नवग्रहस्थापनाविधि	—	(सं०)	६१२
नवतत्वगाथा	—	(प्रा०)	३७
नवतत्वप्रकरण	—	(प्रा०)	७३२
नवतत्वप्रकरण	लक्ष्मीवल्लभ	(हि०)	३७
नवतत्ववचनिका	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	३८
नवतत्ववर्णन	—	(हि०)	३८
नवतत्वविचार	—	(हि०)	६१६
नवतत्वविचार	—	(हि०)	३८
नवपदपूजा	देवचन्द	(हि०)	७६०
नवमङ्गल	विनोदीलाल	(हि०)	६८५, ७३४
नवरत्नकवित्त	—	(सं०)	३२६
नवरत्नकवित्त	बनारसीदास	(हि०)	७४३
नवरत्नकवित्त	—	(हि०)	७१७
नवरत्नकाव्य	—	(सं०)	१७५
नष्टोदिष्ट	—	(सं०)	६५
नहनसीपाराविधि	—	(हि०)	२६८
नागकुमारचरित्र	धर्मधर	(सं०)	१७६
नागकुमारचरित्र	मल्लिषेणसूरि	(सं०)	१७५
नागकुमारचरित्र	—	(सं०)	१७६
नागकुमारचरित्र	उदयलाल	(हि०)	१७६
नागकुमारचरित्र	—	(हि०)	१७६
नागकुमारचरितटीका	प्रभाचन्द	(सं०)	१७६
नागमता	—	(हि० राज०)	२२६
नागलीला	—	(हि०)	६६५
नागश्रीकथा	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२३१
नागश्रीकथा	किशनसिंह	(हि०)	२३१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नागश्रीसज्झाय	विनयचन्द	(हि०)	४४१
नाटकसमयसार	बनारसीदास	(हि०)	६४०
			६५७, ६८२, ७२१, ७५०, ५६१, ७७६
नाडीपरीक्षा	—	(सं०)	२९८
			६०२, ६६७
नांदीमङ्गलपूजा	—	(सं०)	५१८
नाममाला	धनञ्जय	(सं०)	२७५
			२७६, ५७४, ६८६, ६९९, ७०१, ७११, ७१२, ७३६
नाममाला	बनारसीदास	(हि०)	२७६
			६०६, ७९५
नाममञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	६९७ ७६६
नायिकालक्षण	कवि सुन्दर	(हि०)	७८२
नायिकावर्णन	—	(हि०)	७३७
नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र	नारचन्द्र	(सं०)	२८५
नारायणकवच एवं अष्टक	—	(सं०)	६०८
नारीरासो	—	(हि०)	७५७
नासिकेतपुराण	—	(हि०)	७६७
नासिकेतोपाख्यान	—	(हि०)	७६०
निघटु	—	(सं०)	२९९
निजस्मृति	जयतिलक	(सं०)	३८
निजामणि	ब्र० जिनदास	(हि०)	६५
नित्य एव भाद्रपदपूजा	—	(सं०)	६४४
नित्यकृत्यवर्णन	—	(हि०)	६५, ४९५
नित्यक्रिया	—	(सं०)	४९५
नित्यनियम के दोहे	—	(हि०)	७१८
नित्यनियमपूजा	—	(सं०)	४९५
			५१८, ६७९
नित्यनियमपूजा	—	(सं० हि०)	४९६
			५९७, ६८६
नित्यनियमपूजा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	४९६
नित्यनियमपूजासग्रह	—	(हि०)	७१२
नित्यनैमित्तिकपूजापाठ सग्रह	—	(सं०)	५९६
नित्यपाठसग्रह	—	(सं० हि०)	३९८
नित्यपूजा	—	(सं०)	५६०
			६६४, ६९४, ६९७
नित्यपूजा	—	(हि०)	४९८
नित्यपूजाजयमाल	—	(हि०)	४९८
नित्यपूजापाठ	—	(सं० हि०)	६९३
			७०२, ७१५
नित्यपूजापाठसग्रह	—	(प्रा० सं०)	६९४
नित्यपूजापाठसग्रह	—	(सं०)	६९३
नित्यपूजापाठसग्रह	—	(सं०)	७००
			७७५, ७७६
नित्यपूजासग्रह	—	(प्रा० अप०)	४९७
नित्यपूजासग्रह	—	(सं०)	४९७, ७९३
नित्यवंदनासामायिक	—	(सं० प्रा०)	६३३
निमित्तज्ञान [भद्रबाहु सहिता]	भद्रबाहु	(सं०)	२८५
नियमसार	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	३८
नियमसारटीका	पद्मप्रभमलधारिदेव	(सं०)	३८
निरयावलीसूत्र	—	(प्रा०)	३८
निरञ्जनशतक	—	(हि०)	७४१
निरञ्जनस्तोत्र	—	(सं०)	४२४
निर्झरपञ्चमीविधानकथा	विनयचन्द्र	(अप०)	२४५, ६२८
निर्दोषसप्तमीकथा	—	(अप०)	२४५
निर्दोषसप्तमीकथा	पांडे हरिकृष्ण	(हि०)	७९४
निर्दोषसप्तमीव्रतकथा	ब्र० रायमल्ल	(सं०)	६७९, ७३९
निर्माल्यदोषवर्णन	बा० दुलीचन्द	(हि०)	६५
निर्वाणकल्याणकपूजा	—	(सं०)	४९८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
निर्वाणकाण्डगाथा	—	(प्रा०)	३६८
४२६, ४३१, ५२६, ६२१, ६२८, ६३५, ६३८, ६६२, ६७०, ६६४, ७१६, ७५३, ७७४, ७८८, ७८६			
निर्वाणकाण्डटीका	—	(प्रा० स०)	३६६
निर्वाणकाण्डपूजा	—	(स०)	४६८
निर्वाणकाण्डभाषा	भैया भगवतीदास	(स०)	३६६
४२३, ४२६, ४४१ ५६२, ५७०, ५६६, ६००, ६०५, ६१४, ५६५, ६४३, ६५०, ६५८, ६६२, ६७५, ७०४, ७२० ७४७			
निर्वाणकाण्डभाषा	सेवग	(हि०)	७८८
निर्वाणक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४६६, ५१८
निर्वाणक्षेत्रमण्डलपूजा	—	(हि०)	४६२
निर्वाणपूजा	—	(स०)	४६६
निर्वाणपूजापाठ	मनरङ्गलाल	(हि०)	४६६
निर्वाणप्रकरण	—	(हि०)	६५
निर्वाणभक्ति	—	(स०)	३६६, ६३३
निर्वाणभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	६५०
निर्वाणभक्ति	—	(हि०)	३६६
निर्वाणभूमिमङ्गल	विश्वभूषण	(हि०)	६६८
निर्वाणमोदकनिर्णय	नेमिदास	(हि०)	६५
निर्वाणविधि	—	(स०)	६०८
निर्वाणसप्तशतीस्तोत्र	—	(स०)	३६६
निर्वाणस्तोत्र	—	(स०)	३६६
निःशल्याष्टमीकथा	—	(स०)	२३१
निःशल्याष्टमीकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
निःशल्याष्टमीकथा	पांडे हरिकृष्ण	(हि०)	७६५
निशिभोजनकथा	ब्र० नेमिदत्त	(स०)	२३१
निशिभोजनकथा	—	(हि०)	२३१
निषेकाध्यायवृत्ति	—	(स०)	२८५
नीतिवाक्यामृत	सोमदेवसूरि	(स०)	३३०
नीतिविनोद	—	(हि०)	३३०
नीतिशतक	भर्तृहरि	(स०)	३२६
नीतिशास्त्र	चाणक्य	(स०)	७१७
नीतिसार	इन्द्रनन्दि	(स०)	३२६
नीतिसार	चाणक्य	(स०)	६८४
नीतिसार	—	(स०)	३२६
नीलकण्ठताजिक	नीलकंठ	(स०)	२८५
नीलसूक्त	—	(स०)	३३०
नेमिगीत	पासचंद	(हि०)	४४१
नेमिगीत	भूधरदास	(हि०)	४३२
नेमिजिनदव्याहलो	खेतसी	(हि०)	६३८
नेमिजिनस्तवन	मुनि जोधराज	(हि०)	६१८
नेमिजीका चरित्र	आणन्द	(हि०)	१७६
नेमिजीकी लहुरी	विश्वभूषण	(हि०)	७७६
नेमिदूतकाव्य	महाकवि विक्रम	(स०)	१७६
नेमिनरेन्द्रस्तोत्र	जगन्नाथ	(स०)	३६६
नेमिनाथएकाक्षरीस्तोत्र	प० शालि	(स०)	४२६
नेमिनाथका बारहमासा	विनोदीलाल लालचन्द —	(हि०)	७५३
नेमिनाथका बारहमासा	—	(हि०)	६६२
नेमिनाथकी भावना	सेवकराम	(हि०)	६७४
नेमिनाथ के दशभव	—	(हि०)	१७७
६००, ७०४, ७८८			
नेमिनाथ के नवमङ्गल	विनोदीलाल	(हि०)	४४०
नेमिनाथ के बारह भव	—	(हि०)	७६०
नेमिजीकोमङ्गल	जगतभूषण	(हि०)	५६७
नेमिनाथचरित्र	हेमचन्द्राचार्य	(स०)	१७७
नेमिनाथछन्द	शुभचन्द्र	(हि०)	३८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नेमिनाथपुराण	ब्र० जिनदास	(सं०)	१४७
नेमिनाथपुराण	भागचन्द	(हि०)	१४६
नेमिनाथपूजा	कुवलयचन्द	(सं०)	७६३
नेमिनाथपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४९९
नेमिनाथपूजा	—	(हि०)	४९९
नेमिनाथपूजाष्टक	शंभूराम	(सं०)	४९९
नेमिनाथपूजाष्टक	—	(हि०)	४९९
नेमिनाथफागु	पुण्यरत्न	(हि०)	७४८
नेमिनाथमङ्गल	लालचन्द	(हि०)	६०५
नेमिनाथराजुल का बारहमासा	—	(हि०)	७२५
नेमिनाथरास	ऋषि रामचन्द	(हि०)	३६२
नेमिनाथस्तोत्र	प० शालि	(सं०)	७५७
नेमिनाथरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१६, ७५२
नेमिनाथरास	रत्नकीर्त्ति	(हि०)	६३८
नेमिनाथरास	विजयदेवसूरि	(हि०)	३६२
नेमिनाथस्तोत्र	पं० शालि	(सं०)	३९९
नेमिनाथाष्टक	भूधरदास	(हि०)	७७७
नेमिपुराण [हरिवंशपुराण]	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	१४७
नेमिनिर्वाण	महाकवि वाग्भट्ट	(सं०)	१७७
नेमिनिर्वाणपञ्जिका	—	(सं०)	१७७
नेमिब्याहलो	—	(हि०)	२३१
नेमिराजमतीका चोमासिया	—	(हि०)	६१९
नेमिराजमती की घोडी	—	(हि०)	४४१
नेमिराजमतीका गीत	हीरानन्द	(हि०)	४४१
नेमिराजमति बारहमासा	—	(हि०)	६५७
नेमिराजमतिरास	रत्नमुक्ति	(हि०)	६१७
नेमिराजलब्याहलो	गोपीकृष्ण	(हि०)	२३२
नेमिराजुलबारहमासा	आनन्दसूरि	(हि०)	६१८
नेमिराजर्षिसज्झाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८
नेमिराजुलगीत	जिनहर्षसूरि	(हि०)	६१८
नेमिराजुलगीत	भुवनकीर्त्ति	(हि०)	६१८
नेमिराजुलपचीसी	विनोदीलाल	(हि०)	४४१, ७४७
नेमिराजुलसज्झाय	—	(हि०)	४४३
नेमिरासो	—	(हि०)	७४५
नेमिस्तवन	जितसागरगणी	(हि०)	४००
नेमिस्तवन	ऋषि शिव	(हि०)	४००
नेमिस्तोत्र	—	(सं०)	४३२
नेमिसुरकवित्त [नेमिसुर राजमतिवेलि]	कवि ठक्कुरसी	(हि०)	६३८
नेमीश्वरका गीत	नेमीचन्द	(हि०)	६२१
नेमीश्वरका बारहमासा	खेतसिंह	(हि०)	७६२
नेमीश्वरकी वेलि	ठक्कुरसी	(हि०)	७२२
नेमीश्वरकी स्तुति	भूधरदास	(हि०)	६५०
नेमीश्वरका हिंडोलना	मुनि रतनकीर्त्ति	(हि०)	७२२
नेमीश्वरके दशभव	ब्र० धर्मरुचि	(हि०)	७३८
नेमीश्वरको रास	भाऊकवि	(हि०)	६३८
नेमीश्वरचौमासा	सिंहनन्दि	(हि०)	७३८
नेमीश्वरका फाग	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७६३
नेमीश्वरराजुलकी लहुरी	खेतसिंह साह	(हि०)	७७९
नेमीश्वरराजुलविवाद	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	६१३
नेमीश्वररास	मुनि रतनकीर्त्ति	(हि०)	७२२
नेमीश्वररास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	६०१, ६२१, ६३८
नैमित्तिक प्रयोग	—	(सं०)	६३३
नैषधचरित्र	हर्षकीर्त्ति	(सं०)	१७७
नौरोरवा बादशाहकी दस ताज	—	(हि०)	३३०
न्यायकुमुदचन्द्रिका	प्रभाचन्द्रदेव	(सं०)	१३५
न्यायकुमुदचन्द्रोदय	भट्टाकलङ्कदेव	(सं०)	१३८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
न्यायदीपिका	यति धर्मभूषण	(सं०)	१३५
न्यायदीपिकाभाषा	सघी पन्नालाल	(हि०)	१३५
न्यायदीपिकाभाषा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	१३५
न्यायमाला	परमहंस परिव्राजकाचार्य	(सं०)	१३५
न्यायशास्त्र	—	(सं०)	१३५
न्यायसार	माधवदेव	(सं०)	१३५
न्यायसार	—	(सं०)	१३५
न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	भ० चूडामणि	(सं०)	१३६
न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	जानकीदास	(सं०)	१३५
न्यायसूत्र	—	(सं०)	१३६
नृसिंहपूजा	—	(हि०)	६०८
नृसिंहावतारचित्र	—		६०३
न्हवणआरती	थिरूपाल	(हि०)	७७७
न्हवणमङ्गल	वसी	(हि०)	७७७
न्हवण विधि	—	(सं०)	५६४, ६४०

प

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पञ्चकरणवार्त्तिक	सुरेश्वराचार्य	(सं०)	२६१
पञ्चकल्याणकपाठ	हरचन्द	(हि०)	४००
पञ्चकल्याणकपाठ	हरिचन्द	(हि०)	७९६
पञ्चकल्याणकपाठ	—	(सं०)	६६६
पञ्चकल्याणकपूजा	अरुणमणि	(सं०)	५००
पचकल्याणकपूजा	गुणकीर्त्ति	(सं०)	५००
पञ्चकल्याणकपूजा	वादीभसिंह	(सं०)	५७०
पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	(सं०)	५००, ५१६, ५३७
पञ्चकल्याणकपूजा	सुयशकीर्त्ति	(सं०)	५००
पञ्चकल्याणकपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४९९
पञ्चकल्याणकपूजा	—	(सं०)	५००, ५१४, ५१८, ५१९, ६३६, ६६६
पञ्चकल्याणकपूजा	छोटेलाल मित्तल	(हि०)	५००
पञ्चकल्याणकपूजा	टेकचन्द	(हि०)	५०१
पञ्चकल्याणकपूजा	पन्नालाल	(हि०)	५०१
पञ्चकल्याणकपूजा	भैरवदास	(हि०)	५०१
पञ्चकल्याणकपूजा	रूपचन्द	(हि०)	५००
पञ्चकल्याणकपूजा	शिवजीलाल	(हि०)	४९९
पञ्चकल्याणकपूजा	—	(हि०)	४२९, ५०१, ७१२
पञ्चकल्याणकपूजाष्टक	—	(सं०)	६८३
पञ्चकल्याणक [मण्डलचित्र]	—		५२५
पञ्चकल्याणकस्तुति	—	(प्रा०)	६१८
पञ्चकल्याणकोद्यापनपूजा	ज्ञानभूषण	(सं०)	६६०
पञ्चकुमारपूजा	—	(हि०)	५०२, ७५६
पञ्चक्षेत्रपालपूजा	गङ्गादास	(सं०)	५०२
पञ्चक्षेत्रपालपूजा	सोमसेन	(सं०)	७९५
पञ्चकल्याण	—	(प्रा०)	६१६
पञ्चगुरुकल्याणपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	५०२
पञ्चगुरुकी जयमाल	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७६३
पञ्चतत्त्वधारणा	—	(सं०)	१०६
पञ्चतन्त्र	प० विष्णुशर्मा	(सं०)	३३०
पञ्चतन्त्रभाषा	—	(हि०)	३३०
पञ्चदश [१५] यन्त्रकी विधि	—	(सं०)	३४६
पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामी	(सं०)	५७६, ७३६
पञ्चनमस्कारस्तोत्र	विद्यानन्दि	(सं०)	४०१
पञ्चपरमेष्ठीउद्यापन	—	(सं०)	५०२
पञ्चपरमेष्ठीगुण	—	(हि०)	६६, ४२६, ७८८
पञ्चपरमेष्ठीगुणमाल	—	(हि०)	७४५
पञ्चपरमेष्ठीगुणवर्णन	डालूराम	(हि०)	६६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पञ्चपरमेष्ठीगुणस्तवन	—	(हि०)	७०७
पञ्चपमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	(सं०)	५०२, ५१८
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	भ० शुभचन्द्र	(स०)	५०२
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	(स०)	५०३, ५१४, ५६६
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	डालूराम	(हि०)	५०३
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	टेकचन्द	(हि०)	५०३, ५१८
पञ्चपमेष्ठीपूजा	—	(हि०)	५०३, ५१८, ५१६, ६५२, ७१२
पञ्चपरमेष्ठी [मण्डलचित्र]	—		५२५
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	—	(स०)	४२२
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	—	(प्रा०)	६६१
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	जिनवल्लभसूरि	(हि०)	४४३
पञ्चपरमेष्ठीसमुच्चयपूजा	—	(स०)	५०२
पञ्चपरावर्तन	—	(स०)	३८
पञ्चपालपैंतीसो	—	(हि०)	६८६
पञ्चप्ररूपणा	—	(स०)	२६६
पञ्चबधावा	—	(हि०)	६४३, ६६१
पचबधावा	—	(राज०)	६८२
पचबालयतिपूजा	—	(हि०)	५०४
पचमगतिवेलि	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	६२१, ६६१, ६६८, ७५०, ७६५
पंचमासचतुर्दशीपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	५४०
पचमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	५०४
पचमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	(स०)	५३६
पचमीउद्यापन	—	(स० हि०)	५१७
पचमीव्रतपूजा	केशवसेन	(स०)	५१५
पचमीव्रतपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	५०४
पचमीव्रतपूजा	—	(स० हि०)	५१७
पचमीव्रतोद्यापन	हर्षकल्याण	(स०)	५०४, ५३६
पंचमीव्रतोद्यापनपूजा	केशवसेन	(स०)	६३८
पचमीव्रतोद्यापनपूजा	—	(स०)	५०४
पचमीस्तुति	—	(सं०)	६१८
पचमेरुउद्यापन	भ० रत्नचन्द	(स०)	५०५
पंचमेरुजयमाल	भूधरदास	(हि०)	५३६
पंचमेरुजयमाल	—	(हि०)	७१७
पचमेरुपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	५१६
पचमेरुपूजा	भ० महीचन्द	(स०)	६०७
पचमेरुपूजा	—	(स०)	५३६, ५५७, ४६४, ६६४, ६६६, ७८४
पंचमेरुपूजा	—	(प्रा०)	६३५
पचमेरुपूजा	—	(अप०)	६३६
पचमेरुपूजा	डालूराम	(हि०)	५०५
पचमेरुपूजा	टेकचन्द	(हि०)	५०५
पचमेरुपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५०५, ५१६, ५६२, ५६६, ७०४, ७५६
पचमेरुपूजा	सुखानन्द	(हि०)	५०५
पचमेरुपूजा	—	(हि०)	५०५, ५१६, ७४५
पचमङ्गलपाठ, पचमकल्याणकमङ्गल, पचमङ्गल	— रूपचन्द	(हि०)	३६८, ४२८, ४०१ ५०४, ५१८, ५६५, ५७०, ६०४, ६२४, ६४२, ६४६, ६५०, ६५२, ६६१, ६६४, ६७०, ६७३, ६७५, ६७६, ६८१, ६६१, ६६३, ७०४, ७०५, ७१०, ७१४, ७२०, ७३५, ७६३, ७८८
पचयतिस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
पचरत्नपरीक्षा की गाथा	—	(प्रा०)	७५८
पचलब्धिविचार	—	(प्रा०)	७०७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पंचसग्रह	आ० नेमिचन्द	(प्रा०)	३८
पचसग्रहटीका	अमितगति	(स०)	३६
पचसग्रहटीका	—	(स०)	४०
पचसग्रहवृत्ति	अभयचन्द	(सं०)	३६
पचसधि	—	(स०)	२६१
पचस्तोत्र	—	(स०)	५७८
पचस्तोत्रटीका	—	(स०)	४०१
पचस्तोत्रसग्रह	—	(स०)	४०१
पचाख्यान	विष्णुशर्मा	(स०)	२३२
पचाङ्ग	चण्डू		२८५
पचागप्रवोध	—	(स०)	२८५
पचाङ्गसाधन	गणेश [केशवपुत्र] —	(स०)	२८५
पचाधिकार	—	(स०)	३७३, ५१६
पचाध्यायी	—	(हि०)	७५६
पचासिका	त्रिभुवनचन्द	(हि०)	६७३
पचास्तिकाय	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	४०
पंचास्तिकायटीका	अमृतचन्द्रसूरि	(सं०)	४१
पचास्तिकायभाषा	बुधजन	(हि०)	४१
पचास्तिकायभाषा	प० हीरानन्द	(हि०)	४१
पचास्तिकायभाषा	पांडे हेमराज	(हि०)	४१
पचास्तिकायभाषा	—	(हि०)	७१६, ७२०
पचेन्द्रियवेलि	छीहल	(हि०)	७३८
पचेन्द्रियवेलि	ठक्कुरसी	(हि०)	७०३
			७२२, ७६५
पचेन्द्रियरास	—	(हि०)	६६३
पडितमरण	—	(स०)	६०४
पथीगीत	छीहल	(हि०)	८३८, ७६५
पद्रहतिथी	—	(हि०)	११०
पक्की स्याही बनानेकी विधि	—	(हि०)	७४१
पक्षीशास्त्र	—	(स०)	६७४
पट्टीपहाडोकी पुस्तक	—	(हि०)	३६८
पट्टरीति	विष्णुभट्ट	(स०)	१३६
पट्टावलि	—	(हि०)	३७३, ७६६
पडिकम्मणसूत्र	—	(प्रा०)	६१६
पणाकरहाजयमाल	—	(अप०)	६३६
पत्रपरीक्षा	पात्रकेशरी	(स०)	१३६
पत्रपरीक्षा	विद्यानन्दि	(स०)	१३६
पथ्यापथ्यविचार	—	(स०)	१३६
पद	अखैराम	(हि०)	५८५
पद	अक्षयराम	(हि०)	५८५
पद	अजयराज	(हि०)	५८१
			६६७, ७२४, ५८०
पद	अनन्तकीर्त्ति	(हि०)	५८५
पद	अमृतचन्द्र	(हि०)	५८६,
पद	उदयराम	(हि०)	७८६, ७६८
पद	कनकीकीर्त्ति	(हि०)	५६१
			६६४, ७०२, ७२४, ७७४
पद	ब्र० कपूरचन्द्र	(हि०)	५७०
			६१५, ६२४
पद	कबीर	(हि०)	७७७, ७६३
पद	कर्मचन्द	(हि०)	५८७
पद	किशनगुलाव	(हि०)	६६४, ७६३
पद	किशनदास	(हि०)	६४६
पद	किशनसिंह	(हि०)	५६०, ७०४
पद	कुमुदचन्द्र	(हि०)	७५७, ६७०
पद	केशरगुलाब	(हि०)	४४५
पद	खुशालचन्द	(हि०)	५८२
			६२४, ६६४, ६६४, ६६८, ७०३, ७८३, ७६८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	खेमचन्द	(हि०)	५८०, ५८३, ५६१, ६४६
पद	गरीबदास	(हि०)	७६३
पद	गुणचन्द्र	(हि०)	५८१, ५८५, ५८७, ५८८
पद	गुनपूरण	(हि०)	७६८
पद	गुमानीराम	(हि०)	६६६
पद	गुलाबकृष्ण	(हि०)	५८४, ६१४
पद	घनश्याम	(हि०)	६२३
पद	चतुर्भुज	(हि०)	७७०
पद	चन्द	(हि०)	५८७, ७६३
पद	चन्द्रभान	(हि०)	५६१
पद	चैनविजय	(हि०)	५८८, ७६८
पद	चैनसुख	(हि०)	७६३
पद	छीहल	(हि०)	७२३
पद	जगतराम	(हि०)	५८१, ५८३, ५८४, ५८५, ५८८, ५८६, ६१५, ६६७, ६६६, ७२४, ७५७, ७६८, ७६६
पद	जगराम	(हि०)	४४५, ७८५
पद	जनमल	(हि०)	५८५
पद	जयकीर्त्ति	(हि०)	५८५, ५८८
पद	जयचन्द्र छाबड़ा	(हि०)	४४६
पद	जादूराम	(हि०)	४४५
पद	जानिमोहम्मद	(हि०)	५८६
पद	जिनदास	(हि०)	५८१, ५८८, ६१५, ६६८, ७४६, ७६४, ७७४, ७६३
पद	जिनहर्ष	(हि०)	५६०
पद	जीवणदास	(हि०)	४४५
पद	जीवणराम	(हि०)	५८०
पद	जीवराम	(हि०)	५६०, ७६१
पद	जोधराज	(हि०)	४६४, ६६६, ७०६, ७८६, ७६८
पद	टोडर	(हि०)	५८२, ६१४, ६२३, ७७६, ७७७
पद	त्रिलोककीर्त्ति	(हि०)	५८०, ५८१
पद	ब्र० दयाल	(हि०)	५८७
पद	दयालदास	(हि०)	७४६
पद	दरिगह	(हि०)	७४६
पद	दलजी	(हि०)	७४६
पद	दास	(हि०)	७८६
पद	दिलाराम	(हि०)	७६३
पद	दीपचन्द	(हि०)	५८३
पद	दुलीचन्द	(हि०)	६६३
पद	देवसेन	(हि०)	५८६
पद	देवाब्रह्म	(हि०)	७८५, ७८६, ७६३
पद	देवीदास	(हि०)	६४६
पद	देवीसिंह	(हि०)	६६४
पद	देवेन्द्रभूषण	(हि०)	५८७
पद	दौलतराम	(हि०)	६५४, ७०६, ७८२, ७६३
पद	द्यानतराय	(हि०)	५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८६, ५६०, ६२२, ६२४, ६४३, ६४६, ६५४, ७०४, ७०६, ७१३, ७८६
पद	धर्मपाल	(हि०)	५८८, ७६८
पद	धनराज	(हि०)	७६८
पद	नय विमल	(हि०)	५८१
पद	नन्ददास	(हि०)	५८७, ७३०, ७०४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	नयनसुख	(हि०)	५८३
पद	नरपाल	(हि०)	५८८
पद	नवल	(हि०)	५७१
५८२, ५८९, ५९०, ६१५, ६४८, ६५३, ६५४, ६५५, ७०६, ७८२, ७८३, ७९८			
पद	ब्र० नाथू	(हि०)	६२२
पद	निर्मल	(हि०)	५८१
पद	नेमिचन्द	(हि०)	५८०
			६२२, ६३३
पद	न्यामत	(हि०)	७९८
पद	पद्मतिलक	(हि०)	५८३
पद	पद्मनन्दि	(हि०)	६४३
पद	परमानन्द	(हि०)	७७०
पद	पारसदास	(हि०)	६५४
पद	पुरुषोत्तम	(हि०)	५८१
पद	पूनो	(हि०)	७८५
पद	पूरणदेव	(हि०)	६६३
पद	फतेहचन्द	(हि०)	५७९
			५८०, ५८१, ५८२
पद	बखतराम	(हि०)	५८३
			५८६, ६६८, ७८२, ७८६, ७९३
पद	बनारसीदास	(हि०)	५८२
५८३, ५८५, ५८६, ५८७, ५८९, ६२१, ६२३, ६९७, ७९८			
पद	बलदेव	(हि०)	७९८
पद	बालचन्द	(हि०)	६२५
पद	बुधजन	(हि०)	५७०
			५७१, ६५३, ६५४, ७०६, ७८५, ७९८
पद	भगतराम	(हि०)	७९८
पद	भगवतीदास	(हि०)	७०६
पद	भगोसाह	(हि०)	५८१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	भाउ	(हि०)	५८७
पद	भागचन्द	(हि०)	५७०
पद	भानुकीर्त्ति	(हि०)	५८३
			५८५, ६१५
पद	भूधरदास	(हि०)	५८०
५८६, ५८९, ५९०, ६१४, ६१५, ६४८, ६५४, ६६४ ६९४, ७८५, ७९१, ७९८			
पद	मजलसराय	(हि०)	५८१
पद	मनराम	(हि०)	६६०
			७२४, ७४९, ७६४ ७६९, ७७६
पद	मनसाराम	(हि०)	५८०
			६६३, ६६४
पद	मनोहर	(हि०)	७६३
			७६४, ७८५
पद	मलूकचन्द	(हि०)	४४६
पद	मलूकदास	(हि०)	७९३
पद	महीचन्द	(हि०)	५७९
पद	महेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	६२०, ७८९
पद	माणिकचन्द	(हि०)	४४७
			४४८, ७९८
पद	मुकुन्ददास	(हि०)	६९०
पद	मेला	(हि०)	७७६
पद	मेलीराम	(हि०)	७७६
पद	मोतीराम	(हि०)	५९१
पद	मोहन	(हि०)	७६४
पद	राजचन्द्र	(हि०)	५७७
पद	राजसिंह	(हि०)	५८७
पद	राजाराम	(हि०)	५९०
पद	राम	(हि०)	६५३
पद	रामकिशन	(हि०)	६६८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	रामचन्द्र	(हि०)	५८१
			६६८, ६९९
पद	रामदास	(हि०)	५८३
			५८८, ६९७
पद	रामभगत	(हि०)	५८२
पद	रूपचन्द्र	(हि०)	५८५
			५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ६२४, ६६१, ७२४, ७४९ ७५५, ७६३, ७६५, ७८३
पद	रेखराज	(हि०)	७९८
पद	लक्ष्मीसागर	(हि०)	६८२
पद	ऋषि लहरी	(हि०)	५८५
पद	लालचन्द	(हि०)	५८२
			५८३, ५८७, ६९९, ७९३
पद	विजयकीर्त्ति	(हि०)	५८०
			५८२, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८९, ६९७
पद	विनोदीलाल	(हि०)	५९०
			७२३, ७५७, ७८३, ७९८
पद	विश्वभूषण	(हि०)	५९१, ६२१
पद	विसनदास	(हि०)	५८७
पद	बिहारीदास	(हि०)	५८७
पद	वृन्दावन	(हि०)	६४३
पद	ऋषि शिवलाल	(हि०)	४४३
पद	शिवसुन्दर	(हि०)	७५०
पद	शुभचन्द्र	(हि०)	७०२, ७२४
पद	शोभाचन्द	(हि०)	५८३
पद	श्रीपाल	(हि०)	६७०
पद	श्रीभूषण	(हि०)	५८३
पद	श्रीराम	(हि०)	५९०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	सकलकीर्त्ति	(हि०)	५८८
पद	सन्तदास	(हि०	६५४, ७५६
पद	सबलसिंह	(हि०)	६२४
पद	समयसुन्दर	(हि०)	५७६
			५८८, ५८९, ७७७
पद	श्यामदास	(हि०)	७६४
पद	सवाईराम	(हि०)	५९०
पद	साईदास	(हि०)	६२०
पद	साहकीर्त्ति	(हि०)	७७७
पद	साहिबराम	(हि०)	७९८
पद	सुखदेव	(हि०)	५८०
पद	सुन्दर	(हि०)	७२४
पद	सुन्दरभूषण	(हि०)	५८७
पद	सूरजमल	(हि०)	५८१
पद	सूरदास	(हि०)	७६९, ७९३
पद	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	६२२
पद	सेवग	(हि०)	७९३, ७९८
पद	हठमलदास	(हि०)	६२४
पद	हरखचन्द	(हि०)	५८३
			५८४, ५८५, ७९३
पद	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	५८६
			५८५, ५८८, ५९०, ६२०, ६२४, ६६३, ७०१, ७५० ७६३, ७६४
पद	हरिश्चन्द्र	(हि०)	६४९
पद	हरिसिंह	(हि०)	५८२
			५८५, ६२०, ६४३, ६८४, ६६३, ६९९, ७७२, ७७६ ७९३, ७९९
पद	हरीदास	(हि०)	७७०
पद	मुनि हीराचन्द	(हि०)	५८१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	हेमराज	(हि०)	५६०
पद	—	(हि०)	४४६
५७०, ५७६, ६०१, ६४३, ६४४, ६५०, ६५३, ७०३			
७०४, ७०५, ७२४, ७३१, ७५३, ७५४, ७७०, ७७७			
पद्धडी	यश कीर्त्ति	(अप०)	६४२
पद्धडी	सहणपाल	(अप०)	६४१
पद्मकोष	गोवर्धन	(सं०)	६६६
पद्मचरितसार	—	(हि०)	१७७
पद्मपुराण	भ० धर्मकीर्त्ति	(सं०)	१४६
पद्मपुराण	रविषेणाचार्य	(सं०)	१४८
पद्मपुराण (रामपुराण)	भ० सोमसेन	(सं०)	१४८
पद्मपुराण (उत्तरखण्ड)	—	(सं०)	१४६
पद्मपुराणभाषा	खुशालचन्द	(हि०)	१४६
पद्मपुराणभाषा	दौलतराम	(हि०)	१४६
पद्मनंदिपंचविंशतिका	पद्मनंदि	(सं०)	६६
पद्मनंदिपंचविंशतिकाटीका	—	(सं०)	६७
पद्मनंदिपंचविंशतिका	जगतराय	(हि०)	६७
पद्मनन्दिपच्चीसीभाषा	मन्नालाल खिंदूका	(हि०)	६८
पद्मनंदिपच्चीसीभाषा	—	(हि०)	६८
पद्मनंदिश्रावकाचार	पद्मनंदि	(सं०)	६८
पद्मावत्याष्टकवृत्ति	पार्श्वदेव	(सं०)	४०२
पद्मावती की ढाल	—	(हि०)	४०२
पद्मावतीकल्प	—	(सं०)	३४६
पद्मावतीकवच	—	(सं०)	५०६, ७४१
पद्मावतीचक्रेश्वरीस्तोत्र	—	(सं०)	४३२
पद्मावतीछंद	महीचंद	(सं०)	६०७
पद्मावती दण्डक	—	(सं०)	४०२, ७४१
पद्मावतीपटल	—	(सं०)	५०६, ७४१
पद्मावतीपूजा	—	(सं०)	४०२
४७५, ५०६, ५६७, ६५५, ६६२			
पद्मावतीमण्डलपूजा	—	(सं०)	५०६
पद्मावतीरानीआराधना	समयसुन्दर	(हि०)	६१७
पद्मावतीशांतिक	—	(सं०)	५०६
पद्मावतीसहस्रनाम	—	(सं०)	४०२
५०६, ५६६, ६३६, ७११, ७४१			
पद्मावतीसहस्रनामवपूजा	—	(सं०)	५०६
पद्मावतीस्तवनमंत्रसहित	—	(सं०)	४२३
पद्मावतीस्तोत्र	—	(सं०)	४०२
४२३, ४३०, ४३२, ४३३, ५०६, ५३६, ५६६, ६४५			
६४६, ६४७, ६७६, ७३५, ७५७, ७७६			
पद्मावतीस्तोत्र	समयसुन्दर	(हि०)	६८५
पद्मावतीस्तोत्रबीजएवसाधनविधि	—	(सं०)	७४१
पदविनती	—	(हि०)	७१५
पद्यसंग्रह	बिहारी	(हि०)	७१०
पद्यसंग्रह	गंग	(हि०)	७१०
पदसंग्रह	आनन्दघन	(हि०)	७१०, ७७७
पदसंग्रह	ब्र० कपूरचंद	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	खेमराज	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	गंगाराम वैद्य	(हि०)	६१५
पदसंग्रह	चैनविजय	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	चैनसुख	(हि०)	४४६
पदसंग्रह	जगतराम	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	जिनदास	(हि०)	७७२
पदसंग्रह	जोधा	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	झाभूराम	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	दलाराम	(हि०)	६२०
पदसंग्रह	देवाब्रह्म	(हि०)	४४६
६३५, ७४०, ७८३			

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पदसग्रह	दौलतराम	(हि०)	४४५, ४४६
पदसग्रह	द्यानतराय	(हि०)	४४५, ७७७
पदसग्रह	नयनसुख	(हि०)	४४५, ७२६
पदसग्रह	नवल	(हि०)	४४५, ७२६
पदसग्रह	परमानन्द	(हि०)	६८४
पदसग्रह	वखतराम	(हि०)	४४५
पदसग्रह	बनारसीदास	(हि०)	६२२, ७६५
पदसग्रह	बुधजन	(हि०)	४४५, ४४६, ६८२
पदसग्रह	भगतराम	(हि०)	७३६
पदसंग्रह	भागचन्द	(हि०)	४४५, ४४६
पदसग्रह	भूधरदास	(हि०)	४४५, ६२०, ७७६, ७७७, ७८६
पदसग्रह	मगलचन्द	(हि०)	४४७
पदसग्रह	मनोहर	(हि०)	४४५, ७८६
पदसग्रह	लाल	(हि०)	४४५
पदसग्रह	विश्वभूषण	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	शोभाचन्द	(हि०)	७७७
पदसंग्रह	शुभचंद	(हि०)	७७७
पदसग्रह	साहिबराम	(हि०)	४४५
पदसग्रह	सुन्दरदास	(हि०)	७१०
पदसग्रह	सूरदास	(हि०)	६८४
पदसग्रह	सेवक	(हि०)	४४७
पदसग्रह	हरखचंद	(हि०)	६६३
पदसग्रह	हरीसिंह	(हि०)	७७२
पदसग्रह	हीराचन्द	(हि०)	४४५, ४४७
पदसग्रह	—	(हि०)	४४४, ४४५, ६७६, ६८०, ६६१, ७०१, ७०८, ७०६, ७१०, ७१६, ७१७, ७१८, ७२१, ७४३, ७४६, ७५६, ७६०, ७५२, ७५६, ७५७, ७६१, ७७४, ७७६, ७८१, ७६०
पदस्तुति	—	(हि०)	७११
परमज्योति	बनारसीदास	(हि०)	४०२, ५६०, ६६४, ७७४
परमसप्तस्थानकपूजा	सुधासागर	(सं०)	५१६
परमात्मपुराण	दीपचन्द	(हि०)	१०६
परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	(अप०)	११०, ५७५, ६३७, ६६३, ७०७, ७४७
परमात्मप्रकाशटीका	आ० अमृतचन्द	(सं०)	११०
परमात्मप्रकाशटीका	ब्रह्मदेव	(सं०)	१११
परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
परमात्मप्रकाशबालावबोधनीटीका	खानचद	(हि०)	१११
परमात्मप्रकाशभाषा	दौलतराम	(हि०)	१०८
परमात्मप्रकाशभाषा	नथमल	(हि०)	१११
परमात्मप्रकाशभाषा	प्रभुदास	(हि०)	७६५
परमात्मप्रकाशभाषा	सूरजभान ओसवाल	(हि०)	११६
परमात्मप्रकाशभाषा	—	(हि०)	११६
परमानन्दपचविंशति	—	(सं०)	४०४
परमात्मराजस्तोत्र	पद्मनंदि	(सं०)	४०२, ४३७
परमात्मराजस्तोत्र	सकलकीर्त्ति	(सं०)	४०३
परमानन्दस्तवन	—	(सं०)	४२४, ४२५
परमानन्दस्तोत्र	कुमुदचद्र	(सं०)	७२४
परमानन्दस्तोत्र	पूज्यपाद	(सं०)	५७४
परमानन्दस्तोत्र	—	(सं०)	४०४, ४३३, ६०४, ६०६, ६२८, ६३७
परमानन्दस्तोत्र	बनारसीदास	(हि०)	५६२
परमानन्दस्तोत्र	—	(हि०)	४२६
परमार्थगीत व दोहा	रूपचद	(हि०)	७०६, ७६४
परमारथलुहरी	—	(हि०)	७२४
परमार्थस्तोत्र	—	(सं०)	४०४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
परमार्थहिण्डोलना	रूपचद	(हि०)	७६५
परमेष्ठियोकेगुणएवअतिशय	—	(प्रा०)	५७५
पर्यू षणकल्प	—	(स०)	११७
पर्यू षणस्तुति	—	(हि०)	४५२
परसरामकथा	—	(स०)	२३३
परिभाषासूत्र	—	(स०)	२६१
परिभाषेन्दुशेखर	नागोजीभट्ट	(स०)	२६१
परिशिष्टपर्व	—	(स०)	१७८
परीक्षामुख	माणिक्यनदि	(स०)	१३६
परीक्षामुखभाषा	जयचन्द छाबड़ा	(हि०)	१३७
परोषहवर्णन	—	(हि०)	६८
पल्यमडलविधान	शुभचन्द	(स०)	५३८
पल्यविचार	—	(स०)	२८६
पल्यविचार	—	(हि०)	२८६
पल्यविधानकथा	—	(स०)	२४३, २४६
पल्यविधानकथा	खुशालचद	(हि०)	२३३
पल्यविधानपूजा	अनन्तकीर्त्ति	(स०)	५०७
पल्यविधानपूजा	रत्ननन्दि	(स०)	५०६, ५०९, ५१६
पल्यविधानपूजा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	५०६
पल्यविधानपूजा	—	(स०)	५०७
पल्यविधानरास	भ० शुभचन्द्र	(हि०)	३६३
पल्यविधानव्रतोपाख्यानकथा	श्रुतसागर	(स०)	२३३
पल्यविधि	—	(स०)	६७०
पल्यव्रतोद्यापन	शुभचन्द	(स०)	५०७
पल्योपमोपवासविधि	—	(स०)	५०७
पवनदूतकाव्य	वादिचन्द्रसूरि	(स०)	१७८
पहेलिया	मारू	(हि०)	६५१
पाचपरवीकथा	ब्रह्मवेणु	(हि०)	६८५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
पाचपरवीव्रतकीकथा	वेणीदास	(हि०)	६२
पाचवोल	—	(गुजराती)	३३
पाचमाहकीचौदस (मण्डलचित्र)	—		५२
पाचवासोकामडलचित्र			५२
पाटनपुरसज्झाय	श्यामसुन्दर	(हि०)	४४
पाठसग्रह	—	(स०)	४०५, ५७
पाटसग्रह	—	(स०प्रा०)	५७
पाठसग्रह	—	(प्रा०)	५७
पाठसग्रह	—	(स०हि०)	४०
पाठसग्रह	सग्रहकर्त्ता जैतरामबाफना —	(हि०)	४०
पाण्डवपुराण	यश कीर्त्ति	(स०)	१५०
पाण्डवपुराण	श्रीभूषण	(सं०)	१५०
पाण्डवपुराण	भ० शुभचन्द	(स०)	१५०
पाण्डवपुराणभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१५०
पाण्डवपुराणभाषा	बुलाकीदास	(हि०)	१५०, ७४५
पाण्डवचरित्र	लालवर्द्धन	(हि०)	१७८
पाणिनीयव्याकरण	पाणिनि	(स०)	२६१
पात्रकेशरीस्तोत्र	—	(स०)	४०५
पात्रदानकथा	ब्र० नेमिदत्त	(स०)	२३३
पार्थिवेश्वर	—	(स०)	४०५
पार्थिवेश्वरचिंतामणि	—	(स०)	४०५
पार्श्वछद	ब्र० लेखराज	(हि०)	३८६
पार्श्वजिनगीत	छाजू (समयसुन्दर के शिष्य)—	(हि०)	४४८
पार्श्वजिनपूजा	साह लोहट	(हि०)	५०७
पार्श्वजिनस्तवन	जितचन्द्र	(हि०)	७००
पार्श्वजिनेश्वरस्तोत्र	—	(स०)	४२६
पार्श्वनाथएववर्द्धमानस्तवन	—	(स०)	४०५
पार्श्वनाथकीआरती	मुनि कनककीर्त्ति	(हि०)	५६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पार्श्वनाथकीगुणमाल	लोहट	(हि०)	७७६
पारसनाथकीनिसाणी	—	(हि०)	६५०
पार्श्वनाथकीनिशानी	जिनहर्ष	(हि०)	४४८, ५७६
पार्श्वनाथकीनिशानी	—	(हि०)	७०२
पार्श्वनाथकेदर्शन	वृन्दावन	(हि०)	६२५
पार्श्वनाथचरित्र	रइधू	(अप०)	१७६
पार्श्वनाथचरित्र	वादिराजसूरि	(स०)	१७६
पार्श्वनाथचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(स०)	१७६
पार्श्वनाथचरित्र	विश्वभूषण	(हि०)	५६८
पार्श्वजिनचैत्यालयचित्र			६०३
पार्श्वनाथजयमाल	लोहट	(हि०)	६४२
पार्श्वनाथजयमाल	—	(हि०)	६५५, ६७६
पार्श्वनाथपद्मावतीस्तोत्र	—	(स०)	४०५
पार्श्वनाथपुराण [पार्श्वपुराण]	भूधरदास	(हि०)	१७६, ७४४, ७६१
पार्श्वनाथपूजा	—	(स०)	४२३, ५६०, ६०६, ६४०, ६५५, ७०४, ७३१
पार्श्वनाथपूजा (विधानसहित)	—	(स०)	५१३
पार्श्वनाथपूजा	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	६६३
पार्श्वनाथपूजा	—	(हि०)	५०७, ५६६, ६००, ६२३, ६४५, ६४८
पार्श्वनाथपूजामन्त्रसहित	—	(सं०)	५७५
पार्श्वमहिम्नस्तोत्र	महामुनि रामसिंह	(स०)	४०६
पार्श्वनाथलक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(स०)	४०५
पार्श्वनाथस्तवन	देवचन्द्रसूरि	(सं०)	६३३
पार्श्वनाथस्तवन	राजसेन	(हि०)	७३७
पार्श्वनाथस्तवन	जगरूप	(हि०)	६८१
पार्श्वनाथस्तवन [पार्श्वविनती]	ब्र० नाथू	(हि०)	६७०, ६८३
पार्श्वनाथस्तवन	समयराज	(हि०)	६६७
पार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	(राज०)	६१७
पार्श्वनाथस्तवन	—	(हि०)	४४६, ६४५
पार्श्वनाथस्तुति	—	(हि०)	७४५
पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(स०)	६१४, ७०२, ७४५
पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मनंदि	(सं०)	५६६, ७४४
पार्श्वनाथस्तोत्र	रघुनाथदास	(स०)	४१३
पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	(स०)	५६६
पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	४०५, ४०६, ४२४, ४२५, ४२६, ४३२, ५६६, ५७८ ६४५, ६४७, ६४८, ६५१, ६७०, ७६३
पार्श्वनाथस्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	४०६, ४०६, ५६६, ६१५
पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(हि०)	४०६, ४४६, ५६६, ७३३
पार्श्वनाथस्तोत्रटीका	—	(सं०)	४०६
पार्श्वनाथाष्टक	—	(सं०)	४०६, ६७६
पार्श्वनाथाष्टक	सकलकीर्त्ति	(हि०)	७७७
पाराविधि	—	(हि०)	२६६
पाराशरी	—	(स०)	२८६
पराशरीसज्जनरंजनीटीका	—	(स०)	२८६
पावागिरीपूजा	—	(हि०)	७३०
पाशाकेवली	गर्गमुनि	(स०)	२८६ ६४७
पाशाकेवली	ज्ञानभास्कार	(स०)	२८६
पाशाकेवली	—	(सं०)	२८६, ७०१
पाशाकेवली	अबजद	(हि०)	७१३
पाशाकेवली	—	(हि०)	२८७, ५६५, ६०३, ७१३, ७१८, ७८५, ७८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पिंगलछंदशास्त्र	माखन कवि	(हि०)	३१०
पिंगलछंदशास्त्र (छंद रत्नावली)—	हरिरामदास	(हि०)	३११
पिंगलप्रदीप	भट्ट लक्ष्मीनाथ	(स०)	३११
पिंगलभाषा	रूपदीप	(हि०)	७०६
पिंगलशास्त्र	नागराज	(स०)	३११
पिंगलशास्त्र	—	(स०)	३११
पीठपूजा	—	(स०)	६०८
पीठप्रक्षालन	—	(सं०)	६७२
पुच्छीसेण	—	(प्रा०)	६६
पुण्यछत्तीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
पुण्यतत्वचर्चा	—	(स०)	४१
पुण्यास्रवकथाकोश	मुमुक्षु रामचद	(स०)	२३३
पुण्यास्रवकथाकोश	टेकचद	(हि०)	२३४
पुण्यास्रवकथाकोश	दौलतराम	(हि०)	२३३
पुण्यास्रवकथाकोश	—	(हि०)	२३३
पुण्यास्रवकथाकोशसूची	—	(हि०)	२३४
पुण्याहवाचन	—	(स०)	५०७, ६६६
पुरन्दरचौपई	मालदेव	(हि०)	७३८
पुरन्दरपूजा	—	(स०)	५१६
पुरन्दरविधानकथा	—	(स०)	२४३
पुरन्दरव्रतोद्यापन	—	(स०)	५०८
पुरश्चरणविधि	—	(स०)	२८७
पुराणसार	श्रीचन्द्रमुनि	(स०)	१५१
पुराणसारसग्रह	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	१५१
पुरुषस्त्रीसवाद	—	(हि०)	७८६
पुरुषार्थानुशासन	गोविन्दभट्ट	(स०)	६६
पुरुषार्थसिद्ध्युपाय	अमृतचन्द्राचार्य	(स०)	६८
पुरुषार्थसिद्ध्युपायवचनिका	भूधर मिश्र	(हि०)	६६
पुरुषार्थसिद्ध्युपायभाषा	टोडरमल	(हि०)	६
पुष्कराद्ध पूजा	विश्वभूषण	(सं०)	४६५
पुष्पदन्तजिनपूजा	—	(सं०)	५०१
पुष्पाञ्जलिकथा	—	(अप०)	६३३
पुष्पाञ्जलिजयमाल	—	(अप०)	७४४
पुष्पाञ्जलिविधानकथा	पं० हरिश्चन्द्र	(अप०)	२४५
पुष्पाञ्जलिविधानकथा	—	(सं०)	२४३
पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	जिनदास	(स०)	२३४
पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	श्रुतकीर्त्ति	(स०)	२३४
पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	ललितकीर्त्ति	(स०)	६६५, ७६४
पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२३४, २४५, ७३१
पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन [पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा]	गङ्गादास	(स०)	५०८, ५१६
पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	भ० रतनचन्द	(स०)	५०८
पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	५०८
पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	—	(सं०)	५०८, ५३६
पुष्पाञ्जलिव्रतविधानकथा	—	(स०)	२३४
पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन	—	(स०)	५४०
पूजा	पद्मनन्दि	(स०)	५६०
पूजा एव कथासग्रह	खुशालचन्द	(हि०)	५१६
पूजाक्रिया	—	(हि०)	५०८
पूजासामग्री की सूची	—	(हि०)	६१२
पूजा व जयमाल	—	(स०)	५६१
पूजा धमाल	—	(स०)	६५५
पूजापाठ	—	(हि०)	५१२
पूजापाठसग्रह	—	(सं०)	५०८, ६४६, ६८२, ६६७, ६६६, ७१३, ७१५, ७१८, ७१६, ७८०, ७६६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पूजापाठसग्रह	—	(हि०)	५१०, ५११, ७४३, ७४४
पूजापाठस्तोत्र	—	(स० हि०)	७१०, ७८४
पूजाप्रकरण	उमास्वामी	(स०)	५१२
पूजाप्रतिष्ठापाठसग्रह	—	(स०)	६६६
पूजामहात्म्यविधि	—	(स०)	५१२
पूजावरणविधि	—	(स०)	५१२
पूजाविधि	—	(प्रा०)	५१२
पूजाष्टक	विश्वभूषण	(स०)	५१३
पूजाष्टक	अभयचन्द्र	(हि०)	५१२
पूजाष्टक	आशानन्द	(हि०)	५१२
पूजाष्टक	लोहट	(हि०)	५१२
पूजाष्टक	विनोदीलाल	(हि०)	७७७
पूजाष्टक	—	(हि०)	५१२, ७४५
पूजासग्रह	—	(स०	६०३, ६६४, ६६८, ७११, ७१२, ७२५
पूजासग्रह	रामचन्द्र	(हि०)	५२०
पूजासग्रह	लालचन्द	(हि०)	७७७
पूजासग्रह	—	(हि०)	५६५, ६०४, ६६२, ६६५, ७०७, ७०८, ७११, ७१४, ७२६, ७३०, ७३१, ७३३, ७३४, ७३६, ७४८।
पूजासार	—	(स०)	५२०
पूजास्तोत्रसंग्रह	—	(स० हि०)	६६६, ७०२, ७०८, ७०६, ७११, ७१३ ७१४, ७१६, ७२५, ७३४, ७५२, ७५३, ७५४, ७७८।
पूर्वमीमासार्थप्रकरणसग्रह	लौगाक्षिभास्कर	(स०)	१३७
पैंसठबोल	—	(हि०)	३३१
पोसहरास	ज्ञानभूषण	(हि०)	७६२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्रक्रियाकौमुदी	—	(स०)	२६१
पृच्छावली	—	(हि०)	६५७
प्रत्याख्यान	—	(प्रा०)	७०
प्रतिक्रमण	—	(सं०)	६६, ४२६, ५७१
प्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	६६
प्रतिक्रमण	—	(प्रा० स०)	४२५, ५७३
प्रतिक्रमणपाठ	—	(प्रा०)	६६
प्रतिक्रमणसूत्र	—	(प्रा०)	६६
प्रतिक्रमणसूत्र [वृतिसहित]	—	(प्रा०)	६६
प्रतिमाउत्थापककू उपदेश	जगरूप	(हि०)	७०
प्रतिमासातचतुर्दशी [प्रतिमासातचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा]	अक्षयराम	(स०)	५१६
प्रतिमासातचतुर्दशीपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	७६१
प्रतिमासातचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	(स०)	५१४, ५२०, ५४०
प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा	रामचन्द्र	स०)	५२०
प्रतिष्ठाकु कु मपत्रिका	—	(स०)	३७३
प्रतिष्ठादर्श	श्रीराजकीर्त्ति	(स०)	५२०
प्रतिष्ठादीपक	प० नरेन्द्रसेन	(स०)	५२१
प्रतिष्ठापाठ	आशाधर	(स०)	५२१
प्रतिष्ठापाठ [प्रतिष्ठासार]	वसुनंदि	(सं०)	५२१, ५२२
प्रतिष्ठापाठ	—	(सं०)	५२२, ६६६, ७५६
प्रतिष्ठापाठभाषा	बा० दुलीचन्द	(हि०)	५२२
प्रतिष्ठानामावलि	—	(हि०)	३७४, ७२६
प्रतिष्ठाविधानकी सामग्रीवर्णन	—	(हि०)	७२३
प्रतिष्ठाविधि	—	(स०)	५२२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्रतिष्ठासम्बन्धीयन्त्र	—		६६८
प्रतिष्ठासार	—	(सं०)	५२२
प्रतिष्ठासार	पं० शिवजीलाल	(हि०)	५२२
प्रतिष्ठासारोद्धार	—	(सं०)	५२२
प्रतिष्ठासूक्तिसंग्रह	—	(सं०)	५२२
प्रद्युम्नकुमाररास [प्रद्युम्नरास]	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	५६५, ६३६, ७१२, ७३७
प्रद्युम्नचरित्र	महासेनाचार्य	(सं०	१८०
प्रद्युम्नचरित्र	सोमकीर्त्ति	(सं०)	१८१
प्रद्युम्नचरित्र	—	(सं०)	१८२
प्रद्युम्नचरित्र	सिंहकवि	(अप०)	१८२
प्रद्युम्नचरित्रभाषा	मन्नालाल	(हि०)	१८२
प्रद्युम्नचरित्रभाषा	—	(हि०)	१८२
प्रद्युम्नरास	कृष्णराय	(हि०)	७२२
प्रद्युम्नरास	—	(हि०)	७४६
प्रबोधचन्द्रिका	बैजलभूपति	(सं०)	३१७
प्रबोधसार	यश कीर्त्ति	(सं०)	३३१
प्रभावतीकल्प	—	(हि०)	६०२
प्रमाणनयतत्वालोकालंकारटीका [रत्नाकरावतारिका]	रत्नप्रभसूरि	(सं०)	१३७
प्रमाणनिर्णय	—	(सं०)	१३७
प्रमाणपरीक्षा	आ० विद्यानन्दि	(सं०)	१३७
प्रमाणपरीक्षाभाषा	भागचन्द	(हि०)	१३७
प्रमाणप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसूरि	(सं०)	५७५
प्रमाणमीमांसा	विद्यानन्दि	(सं०)	१३८
प्रमाणमीमांसा	—	(सं०)	१३८
प्रमाणप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसेन	(सं०)	१३७
प्रमेयकमलमार्त्तण्ड	आ० प्रभाचन्द्र	(सं०)	१३८
प्रमेयरत्नमाला	अनन्तवीर्य	(सं०)	१३८
प्रवचनसार	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	११६
प्रवचनसारटीका	अमृतचन्द्र	(सं०)	११७
प्रवचनसारटीका	—	(सं०)	११३
प्रवचनसारटीका	—	(हि०)	११३
प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति	—	(सं०)	११३
प्रवचनसारभाषा	जोधराज गोदीका	(हि०)	११४
प्रवचनसारभाषा	वृन्दावनदास	(हि०)	११४
प्रवचनसारभाषा	पांडे हेमराज	(हि०)	११३
प्रवचनसारभाषा	—	(हि०)	११४, ७१७
प्रस्ताविकश्लोक	—	(सं०)	३३२
प्रश्नचूडामणि	—	(सं०)	२८७
प्रश्नमनोरमा	गर्ग	(सं०)	२८७
प्रश्नमाला	—	(सं०)	२८८
प्रश्नविद्या	—	(सं०)	२८७
प्रश्नविनोद	—	(सं०)	२८७
प्रश्नसार	हयग्रीव	(सं०)	२८८
प्रश्नसार	—	(सं०)	२८८
प्रश्नसुगनावलि	—	(सं०)	२८८
प्रश्नावलि	—	(सं०)	२८८
प्रश्नावलि कवित्त	वैद्य नंदलाल	(हि०)	७८२
प्रश्नोत्तर माणिक्यमाला	ब्र० ज्ञानसागर	(सं०)	२८८
प्रश्नोत्तरमाला	—	(सं०)	२८८
प्रश्नोत्तरमालिका [प्रश्नोत्तररत्नमाला]	अमोघवर्ष	सं०	३३२, ५७३
प्रश्नोत्तररत्नमाला	तुलसीदास	(गुज०)	३३२
प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	—	(सं०)	७०
प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा	बुलाकीदास	(हि०)	७०
प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	७०
प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	—	(हि०)	७१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्रश्नोत्तरस्तोत्र	—	(सं०)	४०६
प्रश्नोत्तरोपासकाचार	भ० सकलकीर्ति	(सं०)	७१
प्रश्नोत्तरोद्धार	—	(हि०)	७३
प्रशस्ति	ब्र० दामोदर	(सं०)	६०८
प्रशस्ति	—	(सं०)	१७७
प्रशस्तिकाशिका	बालकृष्ण	(सं०)	७३
प्रह्लाद चरित्र	—	(हि०)	६००
प्राकृतछन्दकोश	—	(प्रा०)	३११
प्राकृतछन्दकोश	रत्नशेखर	(प्रा०)	३११
प्राकृतछन्दकोश	अल्हू	(प्रा०)	३११
प्राकृतपिंगलशास्त्र	—	(सं०)	३१२
प्राकृतव्याकरण	चण्डकवि	(सं०)	२६२
प्राकृतरूपमाला	श्रीरामभट्ट	(प्रा०)	२६२
प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका	सौभाग्यगणि	(सं०)	२६२
प्राणप्रतिष्ठा	—	(सं०)	५२३
प्राणायामशास्त्र	—	(सं०)	११४
प्राणीडागीत	—	(हि०)	७६७
प्रातःक्रिया	—	(सं०)	७४
प्रात स्मरणमन्त्र	—	(सं०)	४०६
प्राभृतसार	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	१३०
प्रायश्चित्तग्रन्थ	—	(सं०	७४
प्रायश्चित्तविधि	अकलङ्कचरित्र	(सं०)	७४
प्रायश्चित्तविधि	भ० एकसंधि	(सं०)	७४
प्रायश्चित्तविधि	—	(सं०)	७४
प्रायश्चित्तशास्त्र	इन्द्रनन्दि	(प्रा०)	७४
प्रायश्चित्तशास्त्र	—	(पुज०)	७४
प्रायश्चित्तसमुच्चटीका	नन्दिगुरु	(सं०)	७५
प्रीतिङ्करचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	१८२
प्रीतिङ्करचरित्र	जोधराज	(हि०)	१८३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्रीत्यङ्करचौपई	नेमिचन्द	(हि०)	७७५
प्रीत्यङ्करचरित्र	—	(हि०)	६८६
प्रोषधदोषवर्णन	—	(हि०)	७५
प्रोषधोपवासव्रतोद्यापन	—	(सं०)	६६६
फ			
फलफादल [पञ्चमेरु]	मण्डलचित्र	—	५२५
फलवधीपार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	(सं०)	६१६
फुटकरकवित्त	—	(हि०)	७४८
			७६६, ७७३
फुटकरज्योतिषपद्य	—	(सं०)	५७३
फुटकर दोहे	—	(हि०)	६६५
			६६६, ७८१
फुटकरपद्य	—	(हि०)	
फुटकरपद्य एवं कवित्त	—	(हि०)	६४३
फुटकरपाठ	—	(सं०)	५७३
फुटकरवर्णन	—	(सं०)	५७४
फुटकरसवैया	—	(हि०)	७७५
फूलभीतणी का दूहा	—	(हि०)	६७५
ब			
बंकचूलरास	जयकीर्त्ति	(हि०)	३६३
बंभणवाडीस्तवन	कमलकलश	(हि०)	६१६
बखतविलास	—	(हि०)	७२६
बडाकक्का	गुलाबराय	(हि०)	६८५
बडाकक्का	—	(हि०)	६६३, ७५२
बडादर्शन	—	(सं०)	३६८, ४३२
बडी सिद्धपूजा [कर्मदहनपूजा]	मोसदत्त	(सं०)	५३६
बदरीनाथ के छंद	—	(हि०)	६००
बधावा	—	(हि०)	७१०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बधावा व विनती	—	(हि०)	६८५
बन्दना जकडी	बुधजन	(हि०)	४४६
बन्दना जकडी	बिहारीदास	(हि०)	४४६, ७२७
बन्दे तू सूत्र	—	(प्रा०)	६१६
बन्दोमोक्षस्तोत्र	—	(स०)	६०८
बधउदयसत्ताचौपई	श्रीलाल	(हि०)	४१
बधस्थिति	—	(स०)	५७२
बनारसीविलास	बनारसीदास	(हि०)	६४०, ६८६, ६६८, ७०६, ७०८, ७२१, ७३४, ७६३, ७६५, ७६७
बनारसीविलास के कुछ पाठ	—	(हि०)	७५२, ७५६
बरहावतारचित्र	—		६०३
बलदेव महामुनि सज्भाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
बलभद्रगीत	—	(हि०)	७२३
बलात्कारगणगुर्वावलि	—	(स०)	३७४, ५७२, ५७४
बलिभद्रगीत	अभयचन्द	(हि०)	७३६
बसतराजशकुनावली	—	(स० हि०)	७११
बसंतपूजा	अजैराज	(हि०)	६८३
बहत्तरकलापुरुष	—	(हि०)	६०६
बाईसग्रभक्ष्यवर्णन	बा० दुलीचन्द	(हि०)	७५
बाईसपरिषहवर्णन	भूधरदास	(हि०)	७५, ६०५, ६७०, ७२०, ७८५, ७८८
बाईसपरिषह	—	(हि०)	७५, ५६६, ६४६
बारहग्रक्षरी	—	(स०)	७४७
बाहरग्रनुप्रेक्षा	—	(प्रा०)	७३६
बाहरग्रनुप्रेक्षा	अवधू	(हि०)	७२२
बारहग्रनुप्रेक्षा	—	(हि०)	७७७
बारहखडी	दत्तलाल	(हि०)	७४५
बारहखडी	पार्श्वदास	(हि०)	३३२
बारहखडी	रामचन्द्र	(हि०)	७१५
बारहखडी	सूरत	(हि०)	३३२, ६७०, ७१५, ७८८
बारहखडी	—	(हि०)	३३२, ४४६, ६०१, ६६४, ७८२
बारहभावना	रइधू	(हि०)	११४
बारहभावना	आलु	(हि०)	६६१
बारहभावना	ज०सोमगणि	(हि०)	६१७
बारहभावना	जितचन्द्रसूरि	(हि०)	७००
बारहभावना	नवल	(हि०)	१५, ११५, ४२६
बारहभावना	भगवतीदास	(हि०)	७२०
बारहभावना	भूधरदास	(हि०)	११५
बारहभावना	दौलतराम	(हि०)	५६१, ६७५
बारहभावना	—	(हि०)	११५, ३८३, ६४४, ६८५, ६८६, ७८८
बारहमासकी चौदस [मण्डलचित्र]	—		५२५
बारहमासा	गोविन्द	(हि०)	६६६
बारहमासा	चूहरकवि	(हि०)	६६६
बारहमासा	जसराज	(हि०)	७८०
बारहमासा	—	(हि०)	६६३, ७४७, ७६७
बारहमाहकी पंचमी [मंडलचित्र]	—		५२५
बारहव्रतों का ब्यौरा	—	(हि०)	५१६
बारहसौ चौतीसव्रतकथा	जिनेन्द्रभूषण	(हि०)	६६५
बारहसौ चौतीसव्रतपूजा	श्रीभूषण	(स०)	५३७
बालपद्मपुराण	प० पन्नालाल बाकलीवाल	(हि०)	१४१
बाल्यकालवर्णन	—	(हि०)	५२३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बालाविबोध [णमोकार पाठका अर्थ]	—	(प्रा० हि०)	७५
बावनी	बनारसीदास	(हि०)	७५०
बावनी	हेमराज	(हि०)	६५७
बासठकुमार	[मण्डलचित्र]		५२५
बाहुबलीसज्झाय	विमलकीर्त्ति	(हि०)	४४६
बाहुबलीसज्झाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
बिम्बनिर्माणविधि	—	(स०)	३५४
बिम्बनिर्माणविधि	—	(हि०)	३५४, ६६१
बिहारीसतसई	बिहारीलाल	(हि०)	६७५
बिहारीसतसईटीका	कृष्णदास	(हि०)	७२७
बिहारीसतसईटीका	हरिचरनदास	(हि०)	६८७
बिहारीसतसईटीका	—	(हि०)	७०६
बीजक [कोश]	—	(हि०)	२७६
बीजकोश [मातृका निर्घंट]	—	(स०)	३४६
बीसतीर्थङ्करजयमाल	—	(हि०)	५११
बीसतीर्थङ्करजिनस्तुति	जितसिंह	(हि०)	७००
बीसतीर्थङ्करपूजा	—	(स०)	५१४
			५१६, ७३०
बीसतीर्थङ्करपूजा	थानजी अजमेरा	(हि०)	५२३
बीसतीर्थङ्करपूजा	—	(हि०)	५२३, ५३७
बीसतीर्थङ्करस्तवन	—	(हि०)	४००
बीसतीर्थङ्करोंकी जयमाल [बीस विरह पूजा]	हर्षकीर्त्ति		५६५, ७२२
बीसविद्यमान तीर्थङ्करपूजा	—	(स०)	५६५
बीसविरहमानजकडी	समयसुन्दर	(हि०)	६१७
बीसविरहमानजयमाल तथा स्तवनविधि	—	(हि०)	५०५
बीसविरहमाणपूजा	—	(स०)	६३६
बीसविरहमानपूजा	नरेन्द्रकीर्त्ति	(स० हि०)	७६३
बुधजनविलास	बुधजन	(हि०)	३३०
बुधजनसतसई	बुधजन	(हि०)	३३२, ३३३
बुद्धावतारचित्र	—		६०३
बुद्धिविलास	बखतरामसाह	(हि०)	७५
बुद्धिरास	शालिभद्र द्वारा सकलित	(हि०)	६१७
बुलाखीदास खत्रीकी बरात	—	(हि०)	७५३
बेलि	छीहल	(हि०)	७३८
बैतालपच्चीसी	—	(स०)	२३४
बोधप्राभृत	कुदकुदाचार्य	(प्रा०)	११५
बोधसार	—	(हि०)	७५
ब्रह्मचर्याष्टक	—	(स०)	३३३
ब्रह्मचर्यवर्णन	—	(हि०)	७५
ब्रह्मविलास	भैया भगवतीदास	(हि०)	३३३, ७६०

भ

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भक्तामरपञ्जिका	—	(स०)	४०६
भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	(स०)	४०२

४०७, ४२५, ४२८, ४२६, ४३०, ४३१, ४३३, ५६६, ५७२, ५७३, ५६६, ५६७, ६०३, ६०५, ६१६, ६२८, ६३४, ६३७, ६४४, ६४८, ६५१, ६५२, ६६४, ६४८, ६५१, ६५२, ६६४, ६६५, ६७०, ६७३, ६७५, ६७६, ६७७, ६८०, ६८१, ६८५, ६८६, ६६१, ६६३, ६६६, ७०३, ७०६, ७०७, ७३५, ७३७, ७४५, ७५२, ७५४, ७५८, ७६१, ७८८, ७८६, ७६६, ७६७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भक्तामरस्तोत्र [मन्त्रसहित]	—	(सं०)	६१२

६३६, ६७०, ६६७, ७०५, ७१४, ७४१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमन्त्रसहित	—	(स०)	४०६
भक्तामरस्तोत्रकथा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	२३५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भक्तामरस्तोत्रकथा			
भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमन्त्रसहित	नथमल	(हि०)	२३४, ७०६
भक्तामरस्तोत्रकथा	विनोदीलाल	(हि०)	२३४
भक्तामरस्तोत्रटीका	हर्षकीर्त्तिसूरि	(सं०)	४०६
भक्तामरस्तोत्रटीका	—	(सं०)	४०६, ६१५
भक्तामरस्तोत्रटीका	—	(सं० हि०)	४०६
भक्तामरस्तोत्रपूजा	केशवसेन	(सं०)	५१५, ५४०
भक्तामरस्तोत्रपूजा			
भक्तामरपूजा उद्यापन	श्रीज्ञानभूषण	(सं०)	५२३
भक्तामरव्रतोद्यापनपूजा	विश्वकीर्त्ति	(सं०)	५२३
भक्तामरस्तोत्रपूजा	श्रीभूषण	(सं०)	५४०
भक्तामरस्तोत्रपूजा	—	(सं०)	५१६, ५२८, ६६६
भक्तामरस्तोत्रभाषा	अखयराज	(हि०)	७५५
भक्तामरस्तोत्रभाषा	गंगाराम	(सं०)	४१०
भक्तामरस्तोत्रभाषा	जयचन्द छावडा	(हि०)	४१०
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	(हि० प०)	४१०, ४२६, ४६६, ६०४, ६४८, ६६१, ७७०, ७७४, ७६२
भक्तामरस्तोत्रभाषा	नथमल	(हि०)	७२०
भक्तामरस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	४११, ६१५, ६४४, ६६४, ६६६, ७०६, ७५३, ७७४, ७६८, ७६६
भक्तामरस्तोत्र [मण्डलचित्र]	—		५२४
भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	ब्र० रायमल्ल	(सं०)	४०८
भक्तामरस्तोत्रोत्पत्तिकथा	—	(हि०)	७०६
भक्तिनामवर्णन	—	(सं० हि०)	५७१
भक्तिपाठ	—	(सं०)	५७१, ५६५, ६८६, ७०६
भक्तिपाठ	कनककीर्त्ति	(हि०)	६५१
भक्तिपाठ	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४४६
भक्तिपाठ	—	(हि०)	४५०
भक्तिपाठसंग्रह	—	(सं०)	४२६
भक्तिसंग्रह [आचार्य भक्ति तक]	—	(सं०)	५७३
भगतवत्सावलि	—	(हि०)	६००
भगवतीआराधना	शिवाचार्य	(सं०)	७६
भगवती आराधनाटीका	अपराजितसूरि	(सं०)	७६
भगवतीआराधनाभाषा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	७६
भगवतीसूत्र	—	(प्रा०)	४२
भगवतीस्तोत्र	—	(सं०)	४२५
भगवद्गीता [कृष्णार्जुन संवाद]	—	(हि०)	७६, ७६०
भगवद्गीता के कुछ स्थल	—	(सं०)	६७३
भजन	—	(हि०)	७७०
भजनसंग्रह	नयनकवि	(हि०)	४५०
भजनसंग्रह	—	(हि०)	५६७, ६४३
भट्टाभिषेक	—	(सं०)	५५७
भट्टारकविजयकीर्त्तिअष्टक	—	(सं०)	६८६
भट्टारकपट्टावलि	—	(हि०)	३७४, ६७५
भडली	—	(सं०)	२८६
भद्रबाहुचरित्र	रत्ननन्दि	(सं०)	१८३
भद्रबाहुचरित्र	चंपाराम	(हि०)	१८३
भद्रबाहुचरित्र	नवलकवि	(हि०)	१८३
भद्रबाहुचरित्र	—	(हि०)	१८३
भयहरस्तोत्र	—	(सं०)	३८१
भयहरस्तोत्र व मन्त्र	—	(सं०)	५७२
भयहरस्तोत्र	—	(प्रा०)	४२३
भयहरस्तोत्र	—	(प्रा० हि०)	६६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भयहरस्तोत्र	—	(हि०)	६१६
भरतेशवैभव	—	(हि०)	१८३
भर्तृहरिशतक	भर्तृहरि	(सं०)	३३३, ७१५
भववैराग्यशतक	—	(प्रा०)	११७
भवानीवाक्य	—	(हि०)	२८८
भवानीसहस्रनाम एवं कवच	—	(सं०)	७९२
भविष्यदत्तकथा[1]	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	३६४, ५६४, ६४८, ७४०, ७५१, ७५२, ७७३, ७७५
भविष्यदत्तचरित्र	पं० श्रीधर	(सं०)	१८४
भविष्यदत्तचरित्रभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१८४
भविष्यदत्ततिलकासुन्दरीनाटक	न्यामतसिंह	(हि०)	३१७
भव्यकुमुदचन्द्रिका [सागारधर्मामृतस्वोपज्ञटीका]	पं० आशाधर	सं०)	६३
भागवत	—	(सं०)	६७५
भागवतद्वादशमस्कधटीका	—	(सं०)	१५१
भागवतपुराण	—	(सं०)	१५१
भागवतमहिमा	—	(हि०)	६७६
भागवतमहापुराण [सप्तमस्कन्ध]	—	(सं०)	१५१
भाद्रपदपूजा	—	(हि०)	७७५
भाद्रपदपूजासंग्रह	द्यानतराय	(हि०)	५२४
भावत्रिभङ्गी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४२, ७००
भावदीपक	जोधराज गोदीका	(हि०)	७७
भावदीपक	—	(हि०)	६९०
भावदीपिका	कृष्णशर्मा	(सं०)	१३८
भावदीपिकाभाषा	—	(हि०)	४२
भावनाउणतीसी	—	(अप०)	६४२
भावनाचतुर्विंशति	पद्मनन्दि	(सं०)	७३९

नोट—रचना के यह नाम और हैं—

1 भविष्यदत्तचौपई भविष्यदत्तपञ्चमीकथा भविष्यदत्तपञ्चमीरास

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भावनाचौतीसी	भ० पद्मनन्दि	(सं०)	६३४
भावनाद्वात्रिंशिका	आ० अमितगति	(सं०)	५७३
भावनाद्वात्रिंशिकाटीका	—	(सं०)	११५
भावनाद्वात्रिंशिका	—	(सं०)	११५, ६३७
भावपाहुड	कुदकुंदाचार्य	(प्रा०)	११५
भावनापच्चीसीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५२४
भावनापद्धति	पद्मनन्दि	(सं०)	५७५
भावनाबत्तीसी	—	(सं०)	६२८, ६३३
भावनासारसंग्रह	चामुण्डराय	(सं०)	७७, ६१५
भावनास्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	६१४
भावप्रकाश	मानमिश्र	(सं०)	२९९
भावप्रकाश	—	(सं०)	२९९
भावशतक	श्री नागराज	(सं०)	३३४
भावसंग्रह	देवसेन	(प्रा०)	७७
भावसंग्रह	श्रुतमुनि	(प्रा०)	७८
भावसंग्रह	वामदेव	(सं०)	७८
भावसंग्रह	—	(सं०)	७८, २९९
भाषा भूषण	जसवंतसिंह	(हि०)	३१२
भाषाभूषण	धीरजसिंह		
भाष्यप्रदीप	कैयट	(सं०)	२६२
भास्वती	पद्मनाभ	(सं०)	२८९
भुवनकीर्त्ति	बूचराज	(हि०)	२८९
भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरि	(सं०)	२८९
भुवनदीपिका	—	(सं०)	२८९
भुवनेश्वरीस्तोत्र [सिद्धमहामन्त्र]	पृथ्वीधराचार्य	(सं०)	३४
भूगोलनिर्माण	—	(हि०)	३२३
भूतकालचौबीसी	बुधजन	(हि०)	३९८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भूत भविष्य वर्तमानजिनपूजा	पांडे जिनदास	(सं०)	४७०
भूपालचतुर्विंतिस्तोत्र	भूपाल	(सं०)	४०२
			४११, ४२५, ४२८, ४३२, ५७२, ५६४, ६०५, ६३३, ६३७, ७३७
भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्रटीका	आशाधर	(सं०)	४०१, ४११
भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्रटीका	विनयचन्द्र	(सं०)	४१२
भूपालचौवीसीभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४१२
भूपालचौवीसीभाषा	—	(हि०)	७७४
भूवल	—	(सं०)	३४६
भैरवनामस्तोत्र	—	(सं०)	५६६
भैरवपद्मावतीकल्प	मल्लिषेणसूरि	(सं०)	३४६
भैरवपद्मावतीकल्प	—	(सं०)	३५०
भैरवाष्टक	—	(सं०)	६१२, ६४६
भोगीदासकी जन्मकुंडली	—	(हि०)	७७६
भोजप्रबन्ध	पं० बल्लाल	(सं०)	१८५
भोजप्रबन्ध	—	(सं०)	२३५
भोजरासो	उदयभान	(हि०)	७६७
भौमचरित्र	भ० रत्नचन्द्र	(सं०)	१८५
भृगुसंहिता	—	(सं०)	२८६
भ्रमरगीत	मानसिंह	(हि०)	७५०
भ्रमरगीत	—	(हि०)	६०५, ७४५

म

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मङ्गल	विनोदीलाल	(हि०)	७२०
मङ्गलकलशमहामुनिचतुष्पदी	रंगविनयगणि	(हि० राज०)	१८५
मङ्गलपाठ	—	(सं०)	५६६
मङ्गलाष्टक	—	(सं०)	५६०, ६३४
मंडपविधि	—	(सं०)	५२५
मंडपविधि	—	(हि०)	५२५
मन्त्र	—	(सं०)	५७३
मन्त्र व श्रोषधिका नुसखा	—	(हि०)	३००
मन्त्र महोदधि	पं० महीधर	(सं०)	३५१, ५७७
मन्त्रशास्त्र	—	(सं०)	३५०
मन्त्रशास्त्र	—	(हि०)	३५०
मन्त्रसंग्रह	—	(सं०)	३५१
			६७५, ६६६, ७०३, ७३६, ७६७
मन्त्रसंहिता	—	(सं०)	६०८
मन्त्रादिसंग्रह	—	(सं०)	५७२
मक्षीपार्श्वनाथस्तवन	जोधराजमुनि	(हि०)	६१८
मच्छावतार [चित्र]	—		६०३
मणिरत्नाकर जयमाल	—	(हि०)	५६४
मणुवसंधि	—	(अप०)	६४२
मदनपराजय	जिनदेवसूरि	(सं०)	३१७
मदनपराजय	—	(प्रा०)	३१८
मदनपराजय	स्वरूपचन्द	(हि०)	३१८
मदनमोदनपञ्चशतीभाषा	छत्रपति जैसवाल	(हि०)	३३४
मदनविनोद	मदनपाल	(सं०)	३००
मधुकैटभवध [महिषासुरवध]	—	(सं०)	२३५
मधुमालतीकथा	चतुर्भुजदास	(हि०)	६३६
मध्यलोकपूजा	—	(सं०)	५२५
मनोरथमाला	अचलकीर्त्ति	(हि०)	७६४
मनोरथमाला	—	(हि०)	७८
मनोहरपुराको पीढियोंका वर्णन	—	(हि०)	७५६
मनोहरमञ्जरी	मनोहर मिश्र	(हि०)	७६६
मरकतविलास	पन्नालाल	(हि०)	७८
मरणकरंडिका	—	(प्रा०, हि०)	८२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मरुदेवीकी सज्झाय	ऋषि लालचन्द	(हि०)	४५०
मल्लिनाथपुराण	सकलकीर्त्ति	(स०)	१५२
मल्लिनाथपुराणभाषा	सेवाराम पाटनी	(हि०)	१५२
मल्हारचरित्र	—	(हि०)	७४१
महर्षिस्तवन	—	(स०)	६५८
			४१३, ४२६
महर्षिस्तवन	—	(हि०)	४१२
महागणपतिकवच	—	(स०)	६६२
महादण्डक	—	(हि०)	७३५
महापुराण	जिनसेनाचार्य	(सं०)	१५३
महापुराण [संक्षिप्त]	—	(स०)	१५२
महापुराण	महाकवि पुष्पदन्त	(अप०)	१५३
महाभारतविष्णुसहस्रनाम	—	(स०)	६७६
महाभिषेकपाठ	—	(स०)	६०७
महाभिषेकसामग्री	—	(हि०)	६६८
महामहर्षिस्तवनटीका	—	(स०)	४१३
महामहिम्नस्तोत्र	—	(स०)	४१३
महालक्ष्मीस्तोत्र	—	(स०)	४१३
महाविद्या [मन्त्रोका सग्रह]	—	(स०)	३५१
महाविद्याविडम्बन	—	(स०)	१३८
महावीरजीका चौढाल्या	ऋषि लालचन्द	(हि०)	४५०
महावीरछन्द	शुभचन्द	(हि०)	३८६
महावीरनिर्वाणपूजा	—	(स०)	५२६
महावीरनिर्वाणकल्याणपूजा	—	(स०)	५२६
महावीरनिर्वाणकल्याणकपूजा	—	(हि०)	३६८
महावीरपूजा	वृन्दावन	(हि०,	५२६
महावीरस्तवन	जितचन्द्र	(हि०)	७००
महावीरस्तवनपूजा	समयसुन्दर	(हि०)	७३५
महावीरस्तोत्र	भ० अमरकीर्त्ति	(सं०)	७५७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
महावीरस्तोत्र	स्वरूपचन्द	(हि०)	५११
महावीराष्टक	भागचन्द	(स०)	४१३
महाशान्तिकविधान	प० धर्मदेव	(स०)	६२५
महिम्नस्तवत	जयकीर्त्ति	(स०)	४२५
महिम्नस्तोत्र	—	(स०)	४१३
महीपालचरित्र	चारित्रभूषण	(स०)	१८६
महीपालचरित्र	भ० रत्ननन्दि	(स०)	१८६
महीपालचरित्रभाषा	नथमल	(हि०)	१८६
मागीतु गीगिरिमडलपूजा	विश्वभूषण	(स०)	५२६
माणिक्यमालाग्रन्थप्रश्नोत्तरी	संग्रहकर्त्ता— ब्र० ज्ञानसागर	(स० प्रा० हि०)	६०४
माताके सोलह स्वप्न	—	(हि०)	४२४
माता पद्मावतीछन्द	भ० महीचन्द	(सं० हि०)	५६०
माधवनिदान	माधव	(सं०)	३००
माधवानलकथा	आनन्द	(स०)	२३५
मानतु गमानवति चौपई	मोहनविजय	(स०)	२३५
मानकी बडी बावनी	मनासाह	(हि०)	६३८
मानबावनी	मानकवि	(हि०)	३३४, ६०१
मानमञ्जरी	नन्दराम	(हि०)	६५१
मानमञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	२७६
मानलघुबावनी	मनासाह	(हि०)	६३८
मानविनोद	मानसिंह	(स०)	३००
मानुषोत्तरगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(स०)	४६७
मायाब्रह्मका विचार	—	(हि०)	७६७
मार्कण्डेयपुराण	—	(स०)	१५३, ६०७
मार्गणा व गुणस्थान वर्णन	—	(प्रा०)	४३
मार्गणावर्णन	—	(प्रा०)	७६६
मार्गणाविधान	—	(हि०)	७६०
मार्गणासमास	—	(प्रा०)	४३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मालीरासो।	जिनदास	(हि०)	५७९
मिच्छादुक्कड	ब्र० जिनदास	(हि०)	६८६
मित्रविलास	घासी	(हि०)	३३८
मिथ्यात्वखंडन	बख्तराम	(हि०)	७८, ६६०
मिथ्यात्वखंडन	—	(हि०)	७९
मुकुटसप्तमीकथा	प० अभ्रदेव	(सं०)	२४४
मुकुटसप्तमीकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४४, ७३१
मुकुटसप्तमीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५२७
मुक्तावलिकथा	—	(सं०)	६३१
मुक्तावलिकथा	भारामल	(हि०)	७६४
मुक्तावलिगीत	सकलकीर्त्ति	(हि०)	६८६
मुक्तावलि [मण्डलचित्र]	—		५२५
मुक्तावलिपूजा	वर्णी सुखसागर	(सं०)	५२७
मुक्तावलिपूजा	—	(सं०)	५३९, ६६६
मुक्तावलिविधानकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२३६
मुक्तावलिव्रतकथा	सोमप्रभ	(सं०)	२३६
मुक्तावलिविधानकथा	—	(अप०)	२३६
मुक्तावलिव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४५
मुक्तावलिव्रतकथा	—	(हि०)	६७३
मुक्तावलि व्रतकी तिथियां	—	(हि०)	५७१
मुक्तावलिव्रतपूजा	—	(सं०)	५२७
मुक्तावलिव्रतविधान	—	(सं०)	५२७
मुक्तावलिव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५२७
मुक्तिरोहरगीत	—	(हि०)	७६५
मुखावलोकनकथा	—	(सं०)	२४३
मुनिराजका बारहमासा	—	(हि०)	७७७
मुनिसुव्रतछन्द	भ० प्रभाचन्द	(सं० हि०)	५५७
मुनिसुव्रतनाथपूजा	—	(सं०)	५०९
मुनिसुव्रतनाथस्तुति	—	(अप०)	६३७
मुनिसुव्रतपुराण	ब्र० कृष्णदास	(सं०)	१५३
मुनिसुव्रतपुराण	इन्द्रजीत	(हि०)	१५३
मुनिसुव्रत विनती	देवाब्रह्म	(हि०)	४५०
मुनीश्वरोंकी जयमाल	—	(सं०)	४२८, ५७६, ५७८, ६४९, ७५२
मुनीश्वरोंकी जयमाल	—	(अप०)	६३७
मुनीश्वरोंकी जयमाल	ब्र० जिनदास	(हि०)	५७१, ६२२, ७५०
मुनीश्वरोंकी जयमाल	—	(हि०)	६२१
मुष्टिज्ञान	ज्योतिषाचार्य देवचन्द	(हि०)	३००
मुहूर्तचिंतामणि	—	(हि०)	२८९
मुहूर्तदीपक	महादेव	(सं०)	२९०
मुहूर्त्त मुक्तावली	परमहंसपरिव्राजकाचार्य—		
मुहूर्तमुक्तावली	शङ्कराचार्य	(हि०)	७९८
मुहूर्तमुक्तावली	—	(सं० हि०)	२९०
मुहूर्तसंग्रह	—	(सं०)	२९०
मूढताज्ञानांकुश	—	(सं०)	७६२
मूर्खकेलक्षण	—	(सं०)	३५८
मूलसंघकीपट्टावलि	—	(सं०)	७३७
मूलाचारटीका	आ० वसुनन्दि	(प्रा० सं०)	७९
मूलाचारप्रदीप	सकलकीर्त्ति	(सं०)	७९
मूलाचारभाषा	ऋषभदास	(हि०)	८०
मूलाचारभाषा	—	(हि०)	८०
मृगापुत्र-चौढाला	—	(हि०)	२३५
मृत्युमहोत्सव	—	(सं०)	११५, ५७६
मृत्युमहोत्सवभाषा	सदासुख कासलीवाल—	(हि०)	११५
मृत्युमहोत्सवभाषा	—	(हि०)	४१२, ६६१, ७२२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मेघकुमारगीत	पूनो	(हि०)	७३८
			७४९, ७५०, ७६४
मेघकुमारचौडालिया	कनकसोम	(हि०)	६१७
मेघकुमारचौपई	—	(हि०)	७७४
मेघकुमारवार्त्ता	—	(हि०)	६६४
मेघकुमारसज्झाय	समयसुन्दर	हि०)	६१८
मेघदूत	कालिदास	(स०)	१८७
मेघदूतटीका	परमहंसपरिव्राजकाचार्य	—	
मेघमाला	—	(स०)	२९०
मेघमालाविधि	—	(स०)	५२७
मेघमालाव्रतकथा	श्रुतसागर	(स०)	५१४
मेघमालाव्रतकथा	—	(स०)	२=६, २४२
मेघमालाव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२३६, २४४
मेघमालाव्रत	[मण्डल चित्र] —		५२५
मेघमालाव्रतोद्यापनकथा	—	(स०)	५२७
मेघमालाव्रतोद्यापनपूजा	—	(स०)	५२७
मेघमालाव्रतोद्यापन	—	(स० हि०)	५१७
			५३९
मेदिनीकोश	—	(स०)	२७६
मेरुपूजा	सोमसेन	(स०)	७६५
मेरुपक्ति तपकी कथा	खुशालचन्द	(हि०)	५१९
मोक्षपैडी	बनारसीदास	(हि०)	८०
			६४३, ७४६
मोक्षमार्गप्रकाशक	प० टोडरमल	(राज०)	८०
मोक्षशास्त्र	उमास्वामी	(स०)	६६४
मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त	कपोत	(हि०)	६७३
मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त	धर्मदास	(हि०)	६७३
मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त	विचित्रदेव	(हि०)	६७३
मोहम्मदराजाकी कथा	—	(हि०)	६००

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मोहविवेकयुद्ध	बनारसीदास	(हि०)	७१४, ७६४
मौनएकादशीकथा	श्रुतसागर	(स०)	२२८
मौनएकादशीस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६२०
मौनिव्रतकथा	गुणभद्र	(स०)	२३६
मौनिव्रतकथा	—	(स०)	२३७
मौनिव्रतविधान	रत्नकीर्त्ति	(स० ग०)	२४४
मौनिव्रतोद्यापन	—	(स०)	५१७

य

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
यन्त्र [भगे हुए व्यक्तिके वापस आनेका]			६०३
यन्त्रमन्त्रविधिफल	—	(हि०)	३५१
यन्त्रमन्त्रसंग्रह	—	(स०)	७०१, ७९९
यन्त्रसंग्रह	—	(स०)	३५२
			६९७, ७९८
यक्षिणीकल्प	—	(स०)	३५१
यज्ञकीसामग्रीका व्यौरा	—	(हि०)	५६५
यज्ञमहिमा	—	(हि०)	५६५
यतिदिनचर्या	देवसूरि	(प्रा०)	८०
यतिभावनाष्टक	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	५७३
यतिभावनाष्टक	—	(स०)	६३७
यतिआहार के ४६ दोष	—	(हि०)	६२७
यत्याचार	आ० वसुनन्दि	(स०)	८०
यमक	—	(स०)	४२६
(यमकाष्टक)			
यमकाष्टकस्तोत्र	भ० अमरकीर्त्ति	(स०)	४१३, ४२६
यमपालमातगकी कथा	—	(स०)	२३७
यशस्तिलकचम्पू	सोमदेवसूरि	(स०)	१८७
यशस्तिलकचम्पूटीका	श्रुतसागर	(स०)	१८७
यशस्तिलकचम्पूटीका	—	(स०)	१८८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
यशोधरकथा [यशोधरचरित्र]	खुशालचन्द	(हि०)	१९१ ७११
यशोधरचरित्र	ज्ञानकीर्त्ति	(स०)	१९२
यशोधरचरित्र	कायस्थपद्मनाभ	(स०)	१८६
यशोधरचरित्र	पूरणदेव	(स०)	१९०
यशोधरचरित्र	वादिराजसूरि	(स०)	१९१
यशोधरचरित्र	वासवसेन	(स०)	१९१
यशोधरचरित्र	श्रुतसागर	(स०)	१९२
यशोधरचरित्र	सकलकीर्त्ति	(स०)	१८८
यशोधरचरित्र	पुष्पदन्त	(अप०)	१८८ ६४२
यशोधरचरित्र	गारवदास	(हि० प०)	१९१
यशोधरचरित्र	पन्नालाल	(हि०)	१९
यशोधरचरित्र	—	(हि०)	१९२
यशोधरचरित्रटिप्पण	प्रभाचन्द्र	(स०)	१९२
यात्रावर्णन	—	(हि०)	३७४
यादववशावलि	—	(हि०)	६७६
युक्त्यनुशासन	आ० समन्तभद्र	(स०)	१३९
युक्त्यानुशासनटीका	विद्यानन्दि	(स०)	१३९
युगादिदेवमहिम्नस्तोत्र	—	(स०)	४१३
यूनानी नुसखे	—	(स०)	६६१
योगचिंतामणि	मनूसिंह	(स०)	३०१
योगचिंतामणि	उपाध्याय हर्षकीर्त्ति	(स०)	३०१
योगचिंतामणि	—	(स०)	३०१
योगचिंतामणिबीजक	—	(स०)	३०१
योगफल	—	(स०)	२९०
योगविन्दुप्रकरण	आ० हरिभद्रसूरि	(स०)	११६
योगभक्ति	—	(स०)	६३३, ६२८
योगभक्ति	—	(प्रा०)	११६
योगभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
योगशत	वररुचि	(स०)	३०२
योगशतक	—	(स०)	३०२
योगशतक	—	(हि०)	३०२
योगशतटीका	—	(स०)	३०२
योगशास्त्र	हेमचन्द्रसूरि	(स०)	११६
योगशास्त्र	—	(स०)	११६
योगसार	योगचन्द	(स०)	५७५
योगसार	योगीन्द्रदेव	(अप०)	११६, ७५५
योगसारभाषा	नन्दराम	(हि०)	११६
योगसारभाषा	बुधजन	(हि०)	११७
योगसारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०ग०)	११६
योगसारभाषा	—	(हि०प०)	११७
योगसारसग्रह	—	(स०)	११७
योगिनीकवच	—	(स०)	६०८
योगिनीस्तोत्र	—	(स०)	४३०
योगीचर्चा	महात्मा ज्ञानचन्द	(अप०)	६२८
योगीरासो	योगीन्द्रदेव	(अप०)	६०३ ७१२, ७४८
योगीन्द्रपूजा	—	(स०)	६७६

र

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
रङ्ग बनाने की विधि	—	(हि०)	६२३
रक्षाबधनकथा	—	(स०)	२३७
रक्षाबधनकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
रक्षाबधनकथा	नाथूराम	(हि०)	२४३
रक्षाविधानकथा	—	(स०)	२४३, ७३१
रघुनाथविलास	रघुनाथ	(हि०)	३१२
रघुवशटीका	मल्लिनाथसूरि	(स०)	१९३
रघुवशटीका	गुणविनयगणि	(स०)	१९४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
रघुवशटीका	समयसुन्दर	(सं०)	१९४
रघुवशटीका	सुमतिविजयगणि	(स०)	१९४
रघुवशमहाकाव्य	कालिदास	(स०)	१९३
रतिरहस्य	—	(हि०)	७९९
रत्नकरण्डश्रावकाचार	समन्तभद्र	(सं०)	८१
			६९१, ७९५
रत्नकरण्डश्रावकाचार	पं० सदासुख कासलीवाल	(हि० गद्य)	८२
रत्नकरंडश्रावकाचार	नथमल	(हि०)	८३
रत्नकरण्डश्रावकाचार	संघी पन्नालाल	(हि०)	८३
रत्नकरंडश्रावकाचारटीका	प्रभाचन्द	(स०)	८२
रत्नकोप	—	(सं०)	३३४, ७०९
रत्नकोष	—	(हि०)	३३५
रत्नत्रयउद्यापनपूजा	—	(सं०)	५२७
रत्नत्रयकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७४०
रत्नत्रयका महार्घ व क्षमावणी	ब्रह्मसेन	(स०)	७८१
रत्नत्रयगुणकथा	पं० शिवजीलाल	(स०)	२३७
रत्नत्रयजयमाल	—	(प्रा०)	५२७
रत्नत्रयजयमाल	—	(सं०)	५२८
रत्नत्रयजयमाल	ऋषभदास बुधदास	(हि०)	५१६
रत्नत्रयजयमाल	—	(अप०)	५२८
रत्नत्रयजयमाल	—	(हि०)	५२९
रत्नत्रयजयमालभाषा	नथमल	(हि०)	५२८
रत्नत्रयजयमाल तथा विधि	—	(प्रा०)	६५८
रत्नत्रयपाठविधि	—	(सं०)	५६०
रत्नत्रयपूजा	प० आशाधर	(सं०)	५२९
रत्नत्रयपूजा	केशवसेन	(सं०)	५२९
रत्नत्रयपूजा	पद्मनन्दि	(स०)	५२९
			५७५, ६३६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
रत्नत्रयपूजा	पं० नरेन्द्रसेन	(स०)	५९४
रत्नत्रयपूजा	—	(सं०)	५१६
			५२९, ५३७, ५५५, ५७४, ६०६, ६४०, ६४६, ६५२, ६९४, ७०४, ७०५, ७५९, ७६३
रत्नत्रयपूजा	—	(स० हि०)	५१८
रत्नत्रयपूजा	—	(प्रा०)	६३५, ६५५
रत्नत्रयपूजा	ऋषभदास	(हि०)	५३०
रत्नत्रयपूजाजयमाल	ऋषभदास	(अप०)	५३७
रत्नत्रयपूजा	द्यानतराय	(हि०)	४८८
			५०३, ५२९
रत्नत्रयपूजा	खुशालचन्द	(हि०)	५१९
रत्नत्रयपूजा	—	(हि०)	५१९
			५३०, ६४५, ७४५
रत्नत्रयपूजाविधान	—	(स०)	६०७
रत्नत्रयमण्डल [चित्र]			५२५
रत्नत्रयमण्डलविधान	—	(हि०)	५३०
रत्नत्रयविधान	—	(स०)	५३०
रत्नत्रयविधानकथा	रत्नकीर्त्ति	(स०)	२२०, २४२
रत्नत्रयविधानकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२३७
रत्नत्रयविधानपूजा	रत्नकीर्त्ति	(स०)	५३०
रत्नत्रयविधान	टेकचन्द	(हि०)	५३१
रत्नत्रयविधि	आशाधर	(स०)	२४२
रत्नत्रयव्रतकथा [रत्नत्रयकथा]	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५, ६९५
रत्नत्रयव्रत विधि एव कथा	—	(हि०)	७३३
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	केशवसेन	(स०)	५३९
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	(स०)	५१३
			५३१, ५३९, ५४०
रत्नदीपक	गणपति	(सं०)	२९०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
रत्नदीपक	—	(सं०)	२९०
रत्नदीपक	रामकवि	(हि०)	३५८
रत्नमाला	आ० शिवकोटि	(सं०)	८३
रत्नमजूसा	—	(सं०)	३१२
रत्नमजूषिका	—	(सं०)	३१२
रत्नावलिव्रतकथा	गुणनन्दि	(हि०)	२४६
रत्नावलिव्रतकथा	जोशी रामदास	(सं०)	२३७
रत्नावलिव्रतविधान	ब्र० कृष्णदास	(हि०)	५३१
रत्नावलिव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६
रत्नावलिव्रतोंकी तिथियों के नाम	—	हि०)	६५५
रथयात्रावर्णन	—	(हि०)	७१६
रमलज्ञान	—	(हि० ग०)	२९१
रमलशास्त्र	प० चितामणि	(सं०)	२९०
रमलशास्त्र	—	(हि०)	२९०
रयणशास्त्र	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	८४
रविवारकथा	खुशालचन्द	(हि०)	७७५
रविवारपूजा	—	(सं०)	५३०
रविवारव्रतमण्डल [चित्र]	—		५२५
रविव्रतकथा	श्रुतसागर	(हि०)	२३७
रविव्रतकथा	जयकीर्त्ति	(हि०)	६९९
रविव्रतकथा [रविवारकथा]	देवेन्द्रभूषण	(हि०)	२३७ ७०७
रविव्रतकथा	भाऊकवि	(हि० प०)	२३७, ५६५
रविव्रतकथा	भानुकीर्त्ति	(हि०)	७५०
रविव्रतकथा	—	(हि०)	२४७ ६०३, ७५३
रविव्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५३२
रसकौतुक राजसभारजन	गगादास	(हि०)	५७६
रसकौतुकराजसभारञ्जन	—	(हि०)	७९२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
रसप्रकरण	—	(सं०)	३०२
रसप्रकरण	—	(हि०)	३०२
रसमञ्जरी	शालिनाथ	(सं०)	३०२
रसमजरी	शार्ङ्गधर	(सं०)	३०२
रसमंजरी	भानुदत्त मिश्र	(हि०)	३५९
रसमञ्जरीटीका	गोपालभट्ट	(सं०)	३५९
रससागर	—	(हि०)	६८९
रसायनविधि	—	(हि०)	५६०
रसालकुवरकी चौपई	नरवरु कवि	(हि०)	५७७
रसिकप्रिया	इन्द्रजीत	(हि०)	६७९ ७४३
रसिकप्रिया	केशव	(हि०)	७७१ ७९९
रागचीतरणकादूहा	—	(हि०)	६७५
रागमाला	—	(सं०)	३१८
रागमाला	श्याममिश्र	(हि०)	७७१
रागमाला के दो	जैतश्री	(हि०)	७८०
रागमाला के दोहे	—	(हि०)	७७७
रागरागनियो के नाम	—	(हि०)	३१८
रागु आसावरी	रूपचन्द	(अप०)	६४१
रागों के नाम	—	(हि०)	७७३
राजनीति कवित्त	देवीदास	(हि०)	७५२
राजनीतिशास्त्र	चाणक्य	(सं०)	६५०, ६४६
राजनीतिशास्त्र	जसुराम	(हि०)	३३६
राजनीतिशास्त्रभाषा	देवीदास	(हि०)	३३६
राजप्रशस्ति	—	(सं०)	३७४
राजा चन्द्रगुप्तकी चौपई	ब्र० गुलाल	(हि०)	६२०
राजादिफल	—	(सं०)	२९१
राजा प्रजाको वशमे करने का मन्त्र	—	(हि०)	५७१
राजारानीसज्झाय	—	(हि०)	४५०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
राजुलपच्चीसी	लालचंद विनोदीलाल	(हि०)	६००, ६१३, ६२२, ६४३, ६५१, ६८३, ६८५, ७२२, ७५३
राजुलमङ्गल	—	(हि०)	७५३
राजुलकी सज्झाय	जिनदास	(हि०)	७५७
राठौडरतन महेश दशोतरी	—	(हि०)	२३८
राडपुरास्तवन	—	(हि०)	४५०
राडपुरका स्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
रात्रिभोजनकथा	—	(स०)	२३८
रात्रिभोजनकथा	किशनसिंह	(हि०)	२३८
रात्रिभोजनकथा	भारामल	(हि०)	२३८
रात्रिभोजनकथा	—	(हि०)	२२८
रात्रिभोजनचोपई	—	(हि०)	२३६
रात्रिभोजनत्यागवर्णन	—	(हि०)	८४
राधाजन्मोत्सव	—	(हि०)	८४
राधिकानाममाला	—	(हि०)	४१४
रामकवच	विश्वामित्र	(हि०)	६३७
रामकृष्णकाव्य	दैवज्ञ प० सूर्य	(स०)	१६४
रामचन्द्रचरित्र	वधीचन्द	(हि०)	६६१
रामचन्द्रस्तवन	—	(स०)	४१४
रामचन्द्रिका	केशवदास	(हि०)	१६४
रामचरित्र [कवित्तवध]	तुलसीदास	(हि०)	६६७
रामवत्तीसी	जगनकवि	(हि०)	४१४
रामविनोद	रामचन्द्र	(हि०)	३०२
रामविनोद	रामविनोद	(हि०)	६४०
रामविनोद	—	(हि०)	६०३
रामस्तवन	—	(स०)	४१४
रामस्तोत्र	—	(स०)	४१४
रामस्तोत्रकवच	—	(स०)	६०१
रामायणमहाभारतकथाप्रश्नोत्तर	—	(हि०ग०)	५६२
रामावतार [चित्र]	—		६०३
रायपसेणीसूत्र	—	(प्रा०)	४३
राशिफल	—	(सं०)	७६३
रासायनिकशास्त्र	—	(हि०)	३३०
राहुफल	—	(हि०)	२६१
रक्तविभागप्रकरण	—	(स०)	८४
रिट्ठणेमिचरिउ	स्वयंभू	(अप०)	६४२
रुक्मणिकथा	मदनकीर्त्ति	(सं०)	२४७
रुक्मणिकृष्णजी को रासो	तिपरदास	(हि०)	७७०
रुक्मणिविधानकथा	छत्रसेन	(स०)	२४४, २४६
रुक्मणिविवाह	वल्लभ	(हि०)	७८७
रुक्मिणिविवाहवेलि	पृथ्वीराज राठौड	(हि०)	३६४
रुग्नविनिश्चय	—	(स०)	७३३
रुचिकरगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(स०)	७३३
रुद्रज्ञान	—	(सं०)	२६१
रूपमञ्जरीनाममाला	गोपालदास	(स०)	२७६
रूपमाला	—	(स०)	२६२
रूपसेनचरित्र	—	(सं०)	२३६
रूपस्थध्यानवर्णन	—	(स०)	११७
रेखाचित्र [आदिनाथ चन्द्रप्रभ वर्द्धमान एवं पार्श्वनाथ]	—		७८३
रेखाचित्र	—		७६३
रेवानदीपूजा [आहूडकोटिपूजा]	विश्वभूषण	(स०)	५३२
रैदव्रत	गंगाराम	(स०)	५३२
रैदव्रतकथा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	२३६
रैदव्रतकथा	—	(सं०)	२३६
रैदव्रतकथा	ब्र० जिनदास	(हि०)	२४६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
रोहिणीचरित्र	देवनन्दि	(अप०)	२४३
रोहिणीविधान	मुनि गुणभद्र	(अप०)	६२६
रोहिणीविधानकथा	—	(सं०)	२४०
रोहिणीविधानकथा	देवनन्दि	(अप०)	२४३
रोहिणीविधानकथा	बंसीदास	हि०	७८१
रोहिणीव्रतकथा	आ० भानुकीर्त्ति	(सं०)	२३६
रोहिणीव्रतकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५
रोहिणीव्रतकथा	—	(अप०)	२४५
रोहिणीव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
रोहिणीव्रतकथा	—	(हि०)	२३६
रोहिणीव्रतकथा	—	(हि०)	७६४
रोहिणीव्रतपूजा	केशवसेन कृष्णसेन	(सं०)	५१२, ५१६
रोहिणीव्रतपूजामडल [चित्रसहित]	—	(सं०)	५३२, ७२६
रोहिणीव्रतमण्डलविधान			
रोहिणीव्रतपूजा	—	(हि०)	६३८
रोहिणीव्रतमण्डल [चित्र]	—		५२५
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५१३
			५३२, ५४०
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	(हि०)	५४०

ल

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
लंघनपथ्यनिर्णय	—	(सं०)	३०३
लक्ष्मणोत्सव	श्रीलक्ष्मण	(सं०)	३०३
लक्ष्मीमहास्तोत्र	पद्मनन्दि	(सं०)	६३७
लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(सं०)	४१४
			४२३, ४२६, ४३२, ५६६, ५७२, ५७४, ५९६, ६४४, ६४८, ६६३, ६६५, ६७०, ७०३, ७१६
लक्ष्मीस्तोत्र	—	(सं०)	४१४
			४२४, ६४०, ६४५, ६५०
लक्ष्मीस्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	५६२
लग्नचन्द्रिकाभाषा	स्योजीराम सोगानी	(हि०)	७५१
लग्नचन्द्रिकाभाषा	—	(सं०)	२९१
लग्नशास्त्र	वर्द्धमानसूरि	(सं०)	२९१
लघुअनन्तव्रतपूजा	—	(सं०)	५३३
लघुअभिषेकविधान	—	(प्रा०)	५३३
लघुकल्याण	—	(सं०)	५१४, ५३३
लघुकल्याणपाठ	—	(हि०)	७४४
लघुचाणक्यराजनीति	चाणिक्य	(सं०)	३३६
			७१२, ७२०
लघुजातक	भट्टोत्पल	(सं०)	२९१
लघुजिनसहस्रनाम	—	(सं०)	६०६
लघुतत्त्वार्थसूत्र	—	(सं०)	७४०, ७८२
लघुनाममाला	हर्षकीर्त्तिसूरि	(सं०)	२७६
लघुन्यासवृत्ति	—	(सं०)	२६२
लघुप्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	७१७
लघुप्रतिक्रमण	—	(प्रा० सं०)	५७२
लघुमङ्गल	रूपचन्द	(हि०)	६२८
लघुमङ्गल	—	(हि०)	७१६
लघुवाचणी	—	(सं०)	६७२
लघुरविव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२४४
लघुरुपसर्गवृत्ति	—	(सं०)	२६३
लघुशातिकविधान	—	(सं०)	५३२
लघुशातिकमन्त्र	—	(सं०)	४२४
लघुशातिक [मण्डलचित्र]	—		५२५
लघुशातिस्तोत्र	—	(सं०)	४१४, ४२३
लघुश्रेयविधि [श्रेयोविधान]	अभयनन्दि	(सं०)	५३३
लघुसहस्रनाम	—	(सं०)	३९२
			६३७, ६६०
लघुसामायिक [पाठ]	—	(सं०)	८४
			३९२, ४०५, ४२६, ५२६
लघुसामायिक	—	(सं० हि०)	८४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
लघुसामायिक	—	(हि०)	७१८
लघुसामायिकभाषा	महाचन्द	(हि०)	७१६
लघुसारस्वत	अनुभूति स्वरूपाचार्य	(सं०)	२६३
लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	(सं०)	२६३
लघुसिद्धान्तकौस्तुभ	—	(सं०)	२६३
लघुस्तोत्र	—	(सं०)	४१५
लघुस्नपन	—	(सं०)	५३३
लघुस्नपनटीका	भावशर्मा	(सं०)	५३३
लघुस्नपनविधि	—	(सं०)	६५८
लघुस्वयम्भूस्तोत्र	समन्तभद्र	(सं०)	५१५
लघुस्वयम्भूस्तोत्र	—	(सं०)	५३७, ५६४
लघुशब्देन्दुशेखर	—	(सं०)	२६३
लब्धिविधानकथा	प० अभ्रदेव	(सं०)	२३६
लब्धिविधानकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४४
लब्धिविधानचौपई	भीषमकवि	(हि०)	७७८
लब्धिविधानपूजा	अभ्रदेव	(सं०)	५१७
लब्धिविधानपूजा	हर्षकीर्त्ति	(सं०)	३३३
लब्धिविधानपूजा	—	(सं०)	५१३ ५३४, ५४०
लब्धिविधानपूजा	ज्ञानचन्द	(हि०)	५३४
लब्धिविधानपूजा	—	(हि०)	५३४
लब्धिविधानमण्डल [चित्र]	—		५२५
लब्धिविधानउद्यापनपूजा	—	(सं०)	५३५
लब्धिविधानोद्यापन	—	(सं०)	५४०
लब्धिविधानव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५३४
लब्धिसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४३, ७३६
लब्धिसारटीका	—	(सं०)	४३
लब्धिसारभाषा	पं० टोडरमल	(हि०)	४३
लब्धिसारक्षपणासारभाषा	प० टोडरमल	(हि०गद्य)	४३
लब्धिसारक्षपणासारसदृष्टि	प० टोडरमल	(हि०)	४३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
लहुरियाजी की पूजा	—	(हि०)	७५२
लहुरी	नाथू	(हि०)	६६३
लहुरी नेमीश्वरकी	विश्वभूषण	(हि०)	७२४
लाटीसहिता	राजमल	(सं०)	८४
लावणी मागीतु गीकी	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	६६७
लिंगपाहुड	आ० कुंदकुंद	(प्रा०)	११७
लिंगपुराण	—	(सं०)	१५३
लिंगानुशासन	हेमचन्द्र	(सं०)	२७७
लिंगानुशासन	—	(सं०)	२७६
लीलावती	भास्कराचार्य	(सं०)	३६६
लीलावतीभाषा	व्यास मथुरादास	(हि०)	३६६
लुहरी	नेमिचन्द	(हि०)	६२२
लुहरी	सभाचन्द	(हि०)	७२४
लोकप्रत्याख्यानधमिलकथा	—	(सं०)	२४०
लोकवर्णन	—	(हि०)	६२७, ७६३

व

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
वक्ता श्रोता लक्षण	—	(सं०)	३५६
वक्ता श्रोता लक्षण	—	(हि०)	३५६
वज्रदन्तचक्रवर्त्ति का बारहमासा	—	हि०)	७२७
वज्रनाभिचक्रवर्त्ति की भावना	भूधरदास	(हि०)	८५ ४४६, ६०४, ७३६
वज्रपञ्जरस्तोत्र	—	(सं०)	४१५, ४३२
वनस्पतिसत्तरी	मुनिचन्द्रसूरि	(प्रा०)	८५
वन्देतानकीजयमाल	—	(सं०)	५७२ ५६५, ६५५
वरागचरित्र	भर्त्तृहरि	(सं०)	१६५
वरागचरित्र	प० वर्द्धमानदेव	(सं०)	१६५
वर्द्धमानकथा	जयमित्रहल	(अप०)	१६६
वर्द्धमानकाव्य	श्रीमुनि पद्मनन्दि	(सं०)	१६५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
वर्द्धमानचरित्र	प० केशरीसिंह	(हि०)	१५४, १९६
वर्धमानद्वात्रिंशिका	सिद्धसेन दिवाकर	(स०)	४१५
वर्द्धमानपुराण	सकलकीर्त्ति	(स०)	१५३
वर्द्धमानविद्याकल्प	सिंहतिलक	(स०)	३५१
वर्द्धमानस्तोत्र	आ० गुणभद्र	(स०)	४१५ ४२४, ४२६
वर्द्धमानस्तोत्र	—	(स०)	६१५, ६५१
वर्षबोध	—	(स०)	२९१
वसुनन्दि श्रावकाचार	आ० वसुनन्दि	(प्रा०)	८५
वसुनन्दिश्रावकाचार	पन्नालाल	(हि०)	८५
वसुधारापाठ	—	(स०)	४१५
वसुधारास्तोत्र	—	(स०)	४१५, ४२३
वाग्भट्टालङ्कार	वाग्भट्ट	(सं०,	३१२
वाग्भट्टालङ्कारटीका	वादिराज	(स०)	३१३
वाग्भट्टालङ्कारटीका	—	(स०)	३१३
वाजिदजी के अडिल्ल	वाजिद	(हि०)	६१३
वाणी अष्टक व जयमाल	द्यानतराय	(हि०)	७७७
वारिषेणमुनिकथा	जोधराज गोदीका	(हि०)	२४०
वार्त्तासग्रह	—	(हि०)	८६
वासुपूज्यपुराण	—	(हि०)	११५
वास्तुपूजा	—	(स०)	५३५
वास्तुपूजाविधि	—	(स०)	५१८
वास्तुविन्यास	—	(स०,	३५४
विक्रमचरित्र	वाचनाचार्य अभयसोम	(हि०)	१९६
विक्रमचौबोली चौपई	अभयचन्द्रसूरि	(हि०)	२४०
विक्रमादित्यराजाकी कथा	—	(हि०)	७१३
विचारगाथा	—	(प्रा०)	७००
विजयकुमारसज्झाय	ऋषि लालचन्द	(हि०)	४५०
विजयकीर्त्तिछन्द	शुभचन्द	(हि०)	३८९
विजययन्त्रविधान	—	(स०)	३५२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
विज्जुचरकी जयमाल	—	(हि०)	६३८
विज्ञप्तिपत्र	हंसराज	(हि०)	३७५
विदग्धमुखमडन	धर्मदास	(स०)	१९६
विदग्धमुखमडनटीका	विनयरत्न	(स०)	१९७
विद्वज्जनबोधक	—	(स०)	८६, ४८१
विद्वज्जनबोधकभाषा	सघी पन्नालाल	(हि०)	८६
विद्वज्जनबोधकटीका	—	(हि०)	८६
विद्यमानवीसतीर्थङ्करपूजा	नरेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	५३५, ६५५
विद्यमानवीसतीर्थङ्करपूजा	जौहरीलाल बिलाला	(हि०)	५३५
विद्यमानवीसतीर्थङ्करोंकी पूजा	—	(हि०)	५११
विद्यमानवीसतीर्थङ्करस्तवन	मुनि दीप	(हि०)	४१५
विद्यानुशासन	—	(स०)	३५२
विनतिया	—	(हि०)	६८५
विनती	अजैराज	(हि०)	७७६, ७८३
विनती	कनककीर्त्ति	(हि०)	६२१
विनती	कुशलविजय	(हि०)	७८२
विनती	ब्र० जिनदास	(हि०)	६२४, ७५७
विनती	बनारसीदास	(हि०)	६१५ ६४२, ६६३, ६६४
विनती	रूपचन्द	(हि०)	७६५
विनती	समयसुन्दर	(हि०)	७३२
विनती	—	(हि०)	७४६
विनती गुरुओंकी	भूधरदास	(हि०)	५११
विनती चौपडकी	मान	(हि०,	७८१
विनतीपाठस्तुति	जितचन्द्र	(हि०)	७००
विनतीसग्रह	ब्रह्मदेव	(हि०)	४५१
विनतीसग्रह	देवाब्रह्म	(हि०)	६६५, ७८०
विनतीसग्रह	—	(हि०)	४५० ७१०, ७४७
विनोदसतसई	—	(हि०)	६८०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
विपाकसूत्र	—	(प्रा०)	४३
विमलनाथपुराण	ब्र० कृष्णदास	(सं०)	१५५
विमानशुद्धि	चन्द्रकीर्त्ति	(स०)	५३५
विमानशुद्धिपूजा	—	(स०)	५३६
विमानशुद्धिशातिक [मण्डलचित्र]	—		५२५
विरदावली	—	(स०)	६५८
			७७२, ७६५
विरहमानतीर्थङ्करजकडी	—	(हि०)	७५६
विरहमानपूजा	—	(स)	६०५
विरहमञ्जरी	नन्ददास	(स०)	६५७
विरहमञ्जरी	—	(हि०)	५०१
विरहिनी का वर्णन	—	(हि०)	७७०
विवाहप्रकरण	—	(स०)	५३६
विवाहपद्धति	—	(स०)	५३६
विवाहविधि	—	(सं०)	५३६
विवाहशोधन	—	(स०)	२६१
विवेकजकडी	—	(स०)	२६१
विवेकजकडी	जिनदास	(हि०)	७२२, ७५०
विवेकविलास	—	(हि०)	८६
विषहरनविधि	सतोषकवि	(हि०)	३०३
विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	(स०)	४०२
	४१५, ४२३, ४२५, ४२८, ४३२, ५६५, ५७२,		
	५६५, ६०५, ६३७, ६४६, ७८८		
विषापहारस्तोत्रटीका	नागचन्द्रसूरि	(स०)	४१६
विषापहारस्तोत्रभाषा	अचलकीर्त्ति	(हि०)	४१६
	६०४, ६५०, ६७०		५६४, ७७४
विषापहारभाषा	पन्नालाल	(हि०)	४१६
विषापहारस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	४३०
			७१६, ७४७
विष्णुकुमारपूजा	—	(हि०)	६८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
विष्णुकुमारमुनिकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२४०
विष्णुकुमारमुनिकथा	—	(स०)	२४०
विष्णुकुमारमुनिपूजा	बाबूलाल	(हि०)	५३६
विष्णुपञ्जररक्षा	—	(स०)	७७०
विष्णुसहस्रनाम	—	(सं०)	६७४
विशेषसत्तात्रिभङ्गी	आ० नेमिचन्द्र	(प्रा०)	४३
विश्वप्रकाश	वैद्यराज महेश्वर	(स०)	४३
विश्वलोचन	धरसेन	(स०)	२७७
विश्वलोचनकोशकी शब्दानुक्रमणिका	—	(स०)	२७७
विहारकाव्य	कालिदास	(स०)	१६७
वीतरागगाथा	—	(प्रा०)	६३३
वीतरागस्तोत्र	पद्मनन्दि	(स०)	४२४
	४३१, ५७४, ६३४, ७३७		
वीतरागस्तोत्र	आ० हेमचन्द्र	(स०)	१३६, ४१६
वीतरागस्तोत्र	—	(स०)	७५८
वीरचरित्र [अनुप्रेक्षा भाग]	रइधू	(अप०)	६४२
वीरछत्तीसी	—	(स०)	४१६
वीरजिणदगीत	भगौतीदास	(हि०)	५६६
वीरजिणदकी सधावलि			
मेघकुमारगीत	पूनो	(हि०)	७७५
वीरद्वात्रिंशतिका	हेमचन्द्रसूरि	(स०)	१३६
वीरनाथस्तवन	—	(स०)	४२६
वीरभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति	—	(हि०)	४५१
वीररस के कवित्त	—	(हि०)	७४६
वीरस्तवन	—	(प्रा०)	४१६
वृजलालकी बारहभावना	—	(हि०)	६८५
वृत्तरत्नाकर	कालिदास	(स०)	३१४
वृत्तरत्नाकर	भट्ट केदार	(स०)	३१४
वृत्तरत्नाकर	—	(सं०)	३१४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
वृत्तरत्नाकरछन्दटीका	समयसुन्दरगणि	(सं०)	३१४
वृत्तरत्नाकरटीका	सुल्हणकवि	(सं०)	३१४
वृन्दसतई	वृन्दकवि	(हि०)	३३६
			६७५, ७४५, ७५१, ७८२, ७९९
वृहद्कलिकुण्डपूजा	—	(सं०)	६३६
वृहद्कल्याण	—	(हि०)	५७१
वृहद्गुरावलीशांतिमण्डलपूजा [चौसठऋद्धिपूजा]	स्वरूपचन्द	(हि०)	५४१
वृहद्घटाकर्णकल्प	कवि भोगीलाल	(हि०)	७२६
वृहद्चाणिक्यनीतिशास्त्रभाषा	मिश्रारामराय	(हि०)	३३६
वृहद्चाणिक्यराजनीति	चाणक्य	(सं०)	७१२
वृहज्जातक	भट्टोत्पल	(सं०)	२९१
वृहद्नवकार	—	(सं०)	४३१
वृहद्प्रतिक्रमण	—	(सं०)	८६, ८७
वृहद्प्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	८६
वृहद्षोडशकारणपूजा	—	(सं०)	५०९, ७३०
वृहद्शांतिस्तोत्र	—	(सं०)	४२३
वृहद्स्नपनविधि	—	(सं०)	६५८
वृहद्स्वयम्भूस्तोत्र	समन्तभद्र	(सं०)	५७२
			६२८, ६९१
वृहस्पतिविचार	—	(सं०)	६९१
वृहस्पतिविधान	—	(सं०)	५४०
वृहद्सिद्धचक्र [मण्डलचित्र]	—		५२४
वैदरभी विवाह	पेमराज	(हि०)	२४०
वैद्यकसार	—	(सं०)	३०४
वैद्यकसारोद्धार	हर्षकीर्त्तिसूरि	(सं०)	३०५
वैद्यजीवन	लोलिम्बराज	(सं०)	३०३, ७१५
वैद्यजीवनग्रन्थ	—	(सं०)	३०३
वैद्यजीवनटीका	रुद्रभट्ट	(सं०)	३०४
वैद्यमनोत्सव	नयनसुख	(हि०)	३०४
			६०३, ६३९, ६८९, ६९५, ७६८, ७९४
वैद्यवल्लभ	—	(सं०)	३०४, ७३८
वैद्यविनोद	भट्टशङ्कर	(सं०)	३०५
वैद्यविनोद	—	(हि०)	३०५
वैद्यसार	—	(सं०)	७३८
वैद्यामृत	माणिक्यभट्ट	(सं०)	३०५
वैय्याकरणभूषण	कौण्डभट्ट	(सं०)	२६३
वैय्याकरणभूषण	—	(सं०)	२६३
वैराग्यगीत [उदरगीत]	छीहल	(हि०)	६३७
वैराग्यगीत	मदमत	(हि०)	४१६
वैराग्यपच्चीसी	भगवतीदास	(हि०)	६८५
वैराग्यशतक	भर्तृहरि	(सं०)	११७
व्याकरण	—	(सं०)	२६४
व्याकरणटीका	—	(सं०)	२६४
व्याकरणभाषाटीका	—	(सं०)	२६४
व्रतकथाकोश	पं० दामोदर	(सं०)	२४१
व्रतकथाकोश	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	२४२
व्रतकथाकोश	श्रुतसागर	(सं०)	२४१०
व्रतकथाकोश	सकलकीर्त्ति	(सं०)	२४२
व्रतकथाकोश	—	(सं०)	२४४
व्रतकथाकोश	—	(सं०अप०)	२४२
व्रतकथाकोश	खुशालचन्द	(हि०)	२४४
व्रतकथाकोश	—	(हि०)	२४४
व्रतकथासग्रह	—	(सं०)	२४६
व्रतकथासग्रह	—	(अप०)	२४५
व्रतकथासग्रह	ब्र० महतिसागर	(हि०)	२४६
व्रतकथासग्रह	—	(हि०)	२४७
व्रतजयमाला	सुमतिसागर	(हि०)	७९५
व्रतनाम	—	(हि०)	५३६
व्रतनामावली	—	(सं०)	८७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
व्रतनिर्णय	मोहन	(स०)	५३६
व्रतपूजासग्रह	—	(स०)	५३७
व्रतविधान	—	(हि०)	५३८
व्रतविधानरासो	दौलतराम रूची	(हि०)	६३८, ७७६
व्रतविवरण	—	(स०)	५३८
व्रतविवरण	—	(हि०)	५३८
व्रतसार	आ० शिवकोटि	(स०)	५३८
व्रतसार	—	(स०)	८७
व्रतकथा	—	(हि०)	८७
व्रतोद्यापनश्रावकाचार	—	(स०)	८७
व्रतोद्यापनसग्रह	—	(स०)	५३८
व्रतोपवासवर्णन	—	(स०)	८७
व्रतोपवासवर्णन	—	(हि०)	८७
व्रतो के चित्र	—		७२३
व्रतोकी तिथियोका व्यौरा	—	(हि०)	६५५
व्रतो के नाम	—	(हि०)	८७
व्रतोका व्यौरा	—	(हि०)	६०३

ष

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
षट्ग्रावश्यक [लघु सामायिक]	महाचन्द	(हि०)	८७
षट्ग्रावश्यकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७
षट्ऋतुवर्णनबारहमासा	जनराज	(हि०)	६५६
षट्कर्मकथन	—	(स०)	३५२
षट्कर्मोपदेशरत्नमाला [छक्कमोवएसमाला] महाकवि अमरकीर्त्ति		(अप०)	८८
षट्कर्मोपदेशरत्नमालाभाषा	पांडे लालचन्द्र	(हि०)	८८
षट्पचासिका	वराहमिहर	(स०)	२६२
षट्पञ्चासिका	—	(हि०)	६५६
षट्पञ्चासिकावृत्ति	भट्टोत्पल	(सं०)	२६२
षट्पाठ	—	(स०)	४१७
षट्पाठ	बुधजन	(हि०)	४१६
षट्पाहुड [प्राभृत]	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	११७, ७४८
षट्पाहुडटीका	श्रुतसागर	(स०)	११६
षट्पाहुडटीका	—	(स०)	११८
षट्मतचरचा	—	(सं०)	७५७
षट्रसकथा	—	(स०)	६८३
षट्लेश्यावर्णन	—	(स०)	७४८
षट्लेश्यावर्णन	—	(हि०)	४४
षट्लेश्यावेलि	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	७७५
षट्लेश्यावेलि	साह लोहट	(हि०)	३६६
षट्सहननवर्णन	मकरन्द	(हि०)	८८
षड्दर्शनवार्त्ता	—	(स०)	१३६
षड्दर्शनविचार	—	(स०)	१३६
षड्दर्शनसमुच्चय	हरिभद्रसूरि	(स०)	१३६
षड्दर्शनसमुच्चयटीका	—	(स०)	१४०
षड्दर्शनसमुच्चयवृत्ति	गुणरत्नसूरि	(स०)	१३६
षट्भक्तिपाठ	—	(स०)	७५२
षड्भक्तिवर्णन	—	(स०)	८८
षरणवतिक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	(स०)	५१६, ५४१
षष्ठिशतकटिप्पण	भक्तिलाल	(स०)	३३६
षष्ठ्याधिकशतकटीका	राजहंसोपाध्याय	(स०)	४४
षोडशकारणउद्यापन	—	(स०)	५४२
षोडशकारणकथा	ललितकीर्त्ति	(स०)	६४५
षोडशकारणजयमाल	—	(प्रा०)	५४१
षोडशकारणजयमाल	—	(प्रा० स०)	५४२
षोडशकारणजयमाल	रइधू	(अप०)	५१७, ५४२
षोडशकारणजयमाल	—	(अप०)	५४२
षोडशकारणजयमाल	—	(हि०ग०)	५४२
षोडशकारणपूजा [षोडशकारणव्रतोद्यापन]	केशवसेन	(स०)	५३६, ५४२, ६७६
षोडशकारणपूजा	श्रुतसागर	(सं०)	५१०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
षोडषकारणपूजा [षोडषकारणव्रतोद्यापनपूजा]	सुमतिसागर	(सं०)	५१७, ५८३, ५५७
षोडषकारणपूजा	—	(सं०)	५१५
			५३७, ५४२, ५४३, ५६६, ५७८, ५६४, ५८६, ६०७, ६४६, ६५८, ७६३
षोडशकारणपूजा	खुशालचन्द	(हि०)	५१६
षोडशकारणपूजा	द्यानतराय	(हि०)	७०५
षोडशकारणभावना	—	(प्रा०)	८६
षोडशकारणभावना	प० सदासुख	(हि०ग०)	८८
षोडषकारणभावना	—	(हि०)	८८
षोडशकारणभावनाजयमाल	नथमल	(हि०)	८८
षोडशकारणभावनावर्णनवृत्ति	प० शिवजीलाल	(हि०)	८८
षोडशकारणविधानकथा	प० अभ्रदेव	(सं०)	२२०
			२४२, २४५, २३७
षोडशकारणविधानकथा	मदनकीर्त्ति	(सं०)	५१४
षोडशकारणव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४८
षोडशकारणव्रतकथा	—	(गुज०)	२४७
षोडशकारणव्रतोद्यापनपूजा	राजकीर्त्ति	(सं०)	५४३

श

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
शम्बुप्रद्युम्नप्रबन्ध	समयसुन्दरगणि	(सं०)	१६७
शकुनविचार	—	(सं०)	२६२
शकुनशास्त्र	—	(हि०)	६०७
शकुनावली	गर्ग	(सं०)	२६२
शकुनावली	—	(सं०)	२६२, ६०३
शकुनावली	अद्‌भुत	(हि०)	२६२
शकुनावली	—	(हि०)	२६३, ६४३
शतअष्टत्तरी	—	(हि०)	६८६
शतक	—	(सं०)	२७७
शत्रुञ्जयगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	५१३, ५४३
शत्रुञ्जयतीर्थराग [शत्रुञ्जयराग]	समयसुन्दर	(सं०)	६१७, ७००
शत्रुञ्जयभास	राजसमुद्र	(हि०)	६१६
शत्रुञ्जयस्तवन	राजसमुद्र	(हि०)	६१६
शनिश्चरदेवकी कथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	६८३
शनिश्चरदेवकीकथा [शनिश्चरकथा]	—	(हि०)	६६२
			६६५, ७११, ७१३, ७१५, ७२३, ७४३, ७८६
शनिश्चरदृष्टिविचार	—	(सं०)	२६३
शनिस्तोत्र	—	(सं०)	४२५
शब्दप्रभेद व धातुप्रभेद	श्री महेश्वर	(सं०)	२७७
शब्दरत्न	—	(सं०)	२७७
शब्दरूपावलि	—	(सं०)	२६५
शब्दरूपिणी	आ० वररुचि	(सं०)	२६५
शब्दशोभा	कवि नीलकंठ	(सं०)	२६५
शब्दानुशासन	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२६५
शब्दानुशासनवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२६५
शरदुत्सवदीपिका [मण्डलविधानपूजा]	सिंहनन्दि	(सं०)	५४३
शहरमारोठ की पत्री	मुनि महीचन्द	(हि०)	५६२
शाकटायनव्याकरण	शाकटायन	(सं०)	२६५
शान्तिकनाम	—	(हि०)	६६८
शान्तिकरस्तोत्र	विद्यासिद्धि	(प्रा०)	६८१
शान्तिकरस्तोत्र	सुन्दरसूरि	(प्रा०)	४२३
शान्तिकविधान	—	(हि०)	५४४
शान्तिकविधान (वृहद्)	—	(सं०)	५४४
शान्तिकविधि	अर्हद्देव	(सं०)	५४४
शान्तिकहोमविधि	—	(सं०)	६४६
शान्तिघोषणास्तुति	—	(सं०)	४१७
शांतिचक्रपूजा	—	(सं०)	५१७
शांतिचक्रमण्डल (चित्र)			५२५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
शांतिनाथचरित्र	अजितप्रभसूरि	(सं०)	१६८
शांतिनाथचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	१६८
शांतिनाथपुराण	महाकवि अशग	(सं०)	१५५
शांतिनाथपुराण	खुशालचन्द	(हि०)	१५५
शांतिनाथपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	५४५
शांतिनाथपूजा	—	(सं०)	५०६
शांतिनाथस्तवन	—	(सं०)	४१७
शांतिनाथस्तवन	गुणसागर	(हि०)	७०२
शांतिनाथस्तवन	ऋषि लालचंद	(हि०)	४१७
शांतिनाथस्तोत्र	मुनि गुणभद्र	(सं०)	६१४
शांतिनाथस्तोत्र	गुणभद्र स्वामी	(सं०)	७२२
शांतिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	(सं०)	४१७, ७१५
शांतिनाथस्तोत्र	—	(सं०)	३८३
			४०२, ४१८, ६४६, ६७३, ७४५
शांतिपाठ	—	(सं०)	४१८
४२८, ५४५, ५६६, ६४०, ६६१, ६६७, ७०४, ७०५ ७३३, ७५८			
शांतिपाठ (बृहद्)	—	(सं०)	५४५
शांतिपाठ	द्यानतराय	(हि०)	५१६
शांतिपाठ	—	(हि०)	६४५
शांतिपाठ	—	(हि०)	५०६
शांतिमंडलपूजा	—	(प०)	५०६
शांतिरत्नसूची	—	(सं०)	५४५
शांतिविधि	—	(सं०)	५४०
शांतिविधान	—	(सं०)	४१८
श्राचार्यशांतिसागरपूजा	भगवानदास	(हि०)	६६१, ७८६
शांतिस्तवन	देवसूरि	(सं०)	४१६
शांतिहोमविधान	आशाधर	(सं०)	५४५
शारदाष्टक	—	(सं०)	४२४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
शारदाष्टक	बनारसीदास	(हि०)	७७६
शारदाष्टक	—	(हि०)	५७०
शारदीनाममाला	—	(सं०)	२७७
शार्ङ्गधरसंहिता	शार्ङ्गधर	(सं०)	३०५
शार्ङ्गधरसंहिताटीका	नाढमल्ल	(सं०,	३०६
शालिभद्रचौपई	जिनसिंहसूरि	(हि०)	७००
शालिभद्रमहामुनिसज्भाय	—	(हि०)	६१६
शालिभद्र चौपई	मतिसागर	(हि०)	१६८, ७२६
शालिभद्रधन्नानीचौपई	जिनसिंहसूरि	(हि०)	२५३
शालिभद्रमहामुनिसज्भाय	—	(हि०)	६१६
शालिभद्रसज्भाय	—	(हि०)	७३४
शालिहोत्र	—	(सं०)	७३०
शालिहोत्र [अश्वचिकित्सा]	प० नकुल	(सं०—हि०)	३०६
शालिहोत्र [अश्वचिकित्सा]	—	(सं०)	३०६
शास्त्रगुरुजयमाल	—	(प्रा०)	५४५
शास्त्रजयमाल	ज्ञानभूषण	(सं०)	४५५
शास्त्रजयमाल	—	(प्रा०)	५६५
शास्त्रपूजा	—	(सं०)	५३६
			५६४, ५६५, ६५२
शास्त्रपूजा	—	(हि०)	५१६
शास्त्रप्रवचन प्रारंभ करने की विधि	—	(सं०)	५४६
शास्त्रजीकामंडल [चित्र]	—		५२५
शासनदेवतार्चनविधान	—	(सं०)	५४६
शिक्षाचतुष्क	नवलराम	(हि०)	६६८
शिखरविलास	रामचन्द्र	(हि०)	६६३
शिखरविलासपूजा	—	(हि०)	५४६
शिखरविलासभाषा	धनराज	(हि०)	७६३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
शिलालेखसग्रह	—	(स०)	३७५
शिलोञ्छकोश	कवि सारस्वत	(स०)	२७७
शिवरात्रिउद्यापनविधिकथा	शकरभट्ट	(स०)	२४७
शिशुपालवध	महाकवि माघ	(स०)	१८९
शिशुपालवधटीका	मल्लिनाथसूरि	(स०)	१८९
शिशुबोध	काशीनाथ	स०)	२६५
			२९३, ६०३, ६७२, ६७५
शीतलनाथपूजा	धर्मभूषण	(स०)	५४६, ७९५
शीतलनाथस्तवन	ऋषिलालचद	(हि०)	४५१
शीतलनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	(राज०)	६१६
शीतलाष्टक	—	(स०)	६४७
शीलकथा	भारामल्ल	(हि०)	२४७
शीलनववाड	—	(हि०)	८९
शीलबत्तीसी	अकूमल	(हि०)	७५०
शीलबत्तीसी	—	(हि०)	६१९
शीलरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०,	७४९
शीलरास	विजयदेवसूरि	(हि०)	३६५, ६१७
शीलविधानकथा	—	(स०)	२४६
शीलव्रतकेभेद	—	(हि०)	६१५
शीलसुदर्शनरासो	—	(हि०)	६०३
शालोपदेशमाला	मेरुसुन्दरगणि	(गुज०)	२४७
शुकसप्तति	—	(स०)	२४७
शुक्लपचमीव्रतपूजा	—	(स०)	५४०
शुक्लपचमीव्रतपूजा	—	(स०)	५४६
शुक्लपचमीव्रतोद्यापन	—	(स०)	५४६
शुद्धिविधान	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	५१८
शुभमालिका	श्रीधर	(स०)	५७४
शुभमुहूर्त्त	—	(हि०)	५९९
शुभसीख	—	(हि ग)	३३६, ७१८
शुभाशुभयोग	—	(स०)	२९३
शृ गारकवित्त	—	(हि०)	६९६
शृ गारतिलक	कालिदास	(स०)	३५९
शृ गारतिलक	रुद्रभट्ट	(स०)	३५९
शृगाररसकेकवित्त	—	(हि०)	७७०
शृगाररस के फुटकरछद	—	(हि०)	५९३
शृ गारसवैया	—	(हि०)	७९७
श्यामबत्तीसो	नन्ददास	(हि०)	६८४
श्यामबत्तीसी	श्याम	(हि०)	७६९
श्रवणभूषण	नरहरिभट्ट	(स०)	१८९
श्राद्धपडिकम्मणसूत्र	—	(प्रा०)	८९
श्रावकउत्पत्तिवर्णन	—	(हि०)	३७५
श्रावककीकरणी	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	५९७
श्रावकक्रिया	—	(हि०)	७५७
श्रावकधर्मवर्णन	—	(स०)	८९
श्रावकप्रतिक्रमण	—	(स०)	८९, ५७५
श्रावकप्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	८९
श्रावणप्रतिक्रमण	—	(स०प्रा०)	५७२
श्रावकप्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	७५४
श्रावकप्रतिक्रमण	—	(प्रा० हि०)	७९८
श्रावकप्रतिक्रमण	पन्नालालचौधरी	(हि०)	८९
श्रावकप्रायश्चित्त	वीरसेन	(स०)	८९
श्रावकाचार	उमास्वामि	(स०)	९०
श्रावकाचार	अमितगति	(स०)	९०
श्रावकाचार	आशाधर	(स०)	६३५
श्रावकाचार	गुणभूषणाचार्य	(स०)	९०
श्रावकाचार	पद्मनदि	(स०)	९०
श्रावकाचार	पूज्यपाद	(स०)	९०
श्रावकाचार	सकलकीर्त्ति	(स०)	९१
श्रावकाचार	—	(स०)	९१
श्रावकाचार	—	(प्रा०)	९१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
श्रावकाचारदोहा	रामसिंह	(अप०)	६४२, ७४८
श्रावकाचारभाषा	प० भागचन्द	(हि ग)	९१
श्रावकाचार	—	(हि०)	९१
श्रावको की उत्पत्ति तथा ८४ गोत्र	—	(हि०)	७५९
श्रावको की चौरासी जातिया	—	(हि०)	३७५
श्रावको की बहत्तर जातिया	—	(स०हि०)	३७५
श्रावणीद्वादशीउपाख्यान	—	(स०)	२४७
श्रावणीद्वादशीकथा	पं० अभ्रदेव	(स०)	२४२, २४५
श्रावणीद्वादशीकथा	—	(स०)	२४८
श्रीपतिस्तोत्र	चैनसुखजी	(स०)	४१८
श्रीपालकथा	—	(हि०)	२४८
श्रीपालचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(स०)	२००
श्रीपालचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	२०१
श्रीपालचरित्र	—	(स०)	२००
श्रीपालचरित्र	—	(अप०)	२०१
श्रीपालचरित्र	परिमल्ल	(हि प)	२२, ७७३
श्रीपालचरित्र	—	(हि०)	२०२
श्रीपालचरित्र	—	(हि०)	२०३
श्रीपालदर्शन	—	(हि०)	६१५
श्रीपालरास	जिनहर्ष गणि	(हि०)	३६५
श्रीपालरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	६३८
			६८४, ७१२, ७१७, ७४९
श्रीपालविनती	—	(हि०)	६५१
श्रीपालस्तवन	—	(हि०)	६२३
श्रीपालस्तुति	—	(स०)	४२३
			७४५, ७५२, ७८४,
श्रीपालजीकीस्तुति	टीकमसिंह	(हि०)	६३९
श्रीपालजीकीस्तुति	भगवतीदास	(हि०)	६४३
श्रीपालस्तुति	—	(हि०)	६०५
			६४४, ६५०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
श्रीव्रतजयस्तोत्र	—	(प्रा०)	७५४
श्रीस्तोत्र	—	(स०)	४१८
श्रुतज्ञानपूजा	—	(स०)	७२७, ५४६
श्रुतज्ञानभक्ति	—	(स०)	६२७
श्रुतज्ञानमण्डलचित्र	—	(स०)	५२५
श्रुतज्ञानवर्णन	—	(हि०)	९२
श्रुतव्रतोद्योतनपूजा	—	(हि०)	५१३
श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	—	(स०)	५१३
श्रुतभक्ति	—	(सं०)	६३३
श्रुतभक्ति	—	(स०)	४२५
श्रुतभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
श्रुतज्ञानव्रतपूजा	—	(स०)	५४६
श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	—	(स०)	५४६
श्रुतपचमीकथा	स्वयभू	(अप०)	६४२
श्रुतपूजा	ज्ञानभूषण	(स०)	५३७
श्रुतपूजा	—	(स०)	५४६
			५६५, ६९९
श्रुतबोध	कालिदास	(सं०)	३१५, ६९४
श्रुतबोधटीका	मनोहरश्याम	(सं०)	३१५
श्रुतबोध	वररुचि	(स०)	३१५
श्रुतबोधटीका	—	(स०)	३१५
श्रुतबोधवृत्ति	हर्षकीर्त्ति	(सं०)	३१५
श्रुतस्कध	ब्र० हेमचन्द	(प्रा०)	३७६
			५७२, ७०९, ७३७
श्रुतस्कधपूजा	श्रुतसागर	(स०)	५४७
श्रुतस्कधपूजा	—	(सं०)	५४७
श्रुतस्कधपूजा [ज्ञानपचविंशतिपूजा]	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	५४७
श्रुतस्कधपूजाकथा	—	(हि०)	५४७
श्रुतस्कधमंडल [चित्र]	—		५२४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
श्रुतस्कंधविधानकथा	पं० अभ्रदेव	(सं०)	२४५
श्रुतस्कंधव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२८
श्रुतावतार	पं० श्रीधर	(सं०)	३७६, ५७२
श्रुताष्टक	—	(सं०)	६५७
श्रेणिकचरित्र	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	२०३
श्रेणिकचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	२०३
श्रेणिकचरित्र	—	(प्रा०)	२०३
श्रेणिकचरित्र	विजयकीर्त्ति	(हि०)	२०४
श्रेणिकचौपई	डूंगा वैद	(हि०)	२४८
श्रेणिकराजासज्झाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१९
श्रेयांसस्तवन	विजयमानसूरि	(हि०)	४५१
श्लोकवार्त्तिक	आ० विद्यानन्दि	(सं०)	४४
श्वेताम्बरमतकेचौरासीबोल	जगरूप	(हि०)	७७९
श्वेताम्बरमतकेचौरासीबोल	—	(हि०)	५८२
श्वेताम्बरों के ८४ बोल	—	(हि०)	६२६

स

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सङ्कटचौथव्रतकथा	देवेन्द्रभूषण	(हि०)	७९४
सङ्कटचौपईकथा	—	(हि०)	७४१
संक्रांतिफल	—	(सं०)	२९३, २९४
संक्षिप्तवेदान्तशास्त्रप्रक्रिया	—	(सं०)	१४०
संगीतबंधपार्श्वजिनस्तुति	—	(हि०)	६१८
संग्रहणीबालावबोध	शिवनिधानगणि	(प्रा०हि०)	४५
संग्रहणीसूत्र	—	(प्रा०)	४५
संग्रहसूक्ति	—	(सं०)	५७५
संघपणटपत्र	—	(प्रा०)	३२३
संघोत्पत्तिकथन	—	(हि०)	६२६
संघपच्चीसी	द्यानतराय	(हि०)	३७६
संज्ञाप्रक्रिया	—	(सं०)	२९५, २९७
संतानविधि	—	(हि०)	३०६
संथाराविधि	—	(सं०)	५८८
सदृष्टि	—	(सं०)	५७३
संबन्धविवक्षा	—	(सं०)	२६५
संबोधअक्षरबावनी	द्यानतराय	(हि०)	११६
संबोधपंचासिका	गौतमस्वामी	(प्रा०)	११६, १२८
संबोधपंचासिका	—	(प्रा०)	५७२, ६२८, ७०९, ७५५
संबोधपंचासिका	रइधू	(अप०)	१२८
संबोधपंचासिका	—	(अप०)	५७३
संबोधपंचासिका	द्यानतराय	(हि०)	६०५, ६४८, ६८५, ६९३, ७१३, ७१६, ७२५
संबोधपंचासिका	—	(हि०)	४३०
संबोधशतक	द्यानतराय	(हि०)	१२८
संबोधसत्तरी	—	(प्रा०)	१२८
संबोधसत्ताणु	वीरचन्द	(हि०)	३३९
संभवजिनस्तोत्र	मुनिगुणनन्दि	(सं०)	४१९
संभवजिणणाहचरिउ	तेजपाल	(अप०)	२०४
संभवनाथपद्धडी	—	(अप०)	५७६
संयोगपंचमीकथा	धर्मचन्द्र	(हि०)	२५३
संयोगबत्तीसी	मानकवि	(हि०)	६१३
संवत्सरवर्णन	—	(हि०)	३७६
संवत्सरीविचार	—	(हि०ग०)	२९४
संसारअटवी	—	(हि०)	७६२
संसारस्वरूपवर्णन	—	(हि०)	९३
संस्कृतमंजरी	—	(सं०)	२९५
संहननाम	—	(हि०)	६२६
सकलीकरण	—	(सं०)	५४८
सकलीकरणविधि	—	(सं०)	५१४, ५७८
सकलीकरणविधि	—	(सं०)	५१५, ५४७, ६३९

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सज्जनचित्तवल्लभ	मल्लिषेण	(स०)	३३७, ५७३
सज्जनचित्तवल्लभ	शुभचन्द्र	(स०)	३३७
सज्जनचित्तवल्लभ	—	(स०)	३३७
सज्जनचित्तवल्लभ	मिहरचन्द	(हि०)	३३७
सज्जनचित्तवल्लभ	हर्गूलाल	(हि०)	३३७
सज्झाय [चौदह बोल]	ऋषि रामचन्द्र	(हि०)	४५१
सज्झाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८
सतसई	विहारीलाल	(हि०)	५७६, ७६८
सतियों की सज्झाय	ऋषिछजमलजी	(हि०)	४५१
सत्तरभेदपूजा	साधुकीर्त्ति	(हि०)	७३५, ७६०
सत्तात्रिभंगी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४५
सत्ताद्वार	—	(स०)	४५
सद्भाषितावली	सकलकीर्त्ति	(स०)	३३८
सद्भाषितावलीभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	३३८
सद्भाषितावली	—	(हि०)	३३८
संन्निपातकलिका	—	(स०)	३०७
संन्निपातनिदान	—	(स०)	३०६
सन्निपातनिदानचिकित्सा	बाहडदास	(स०)	३०६
सन्देहसमुच्चय	धर्मकलशसूरि	(स०)	३३८
सन्मतितर्क	सिद्धसेनदिवाकर	(स०)	१४०
सप्तर्षिजिनस्तवन	—	(प्रा०)	६१६
संसर्षिपूजा	जिणदास	(स०)	५४८
संसर्षिपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	७६६
सप्तर्षिपूजा	लक्ष्मीसेन	(स०	५४८
सप्तर्षिपूजा	विश्वभूषण	(स०)	५४८
सप्तर्षिपूजा	—	(स०)	५४६
संसर्षिमंडल [चित्र]	—	(स०)	५२४
सप्तनयविचारस्तवन	—	(सं०)	४१८
सप्तनयावबोध	मुनिनेत्रसिंह	(सं०)	१४०
सप्तपदार्थी	शिवादित्य	(स०)	१४०
सप्तपदार्थी	—	(सं०)	१४०
सप्तपदी	—	(स०)	५४८
सप्तपरमस्थान	खुशालचन्द	(हि०)	७३१
सप्तपरमस्थानकथा	आ० चन्द्रकीर्त्ति	(स०)	२४६
सप्तपरमस्थानकपूजा	—	(स०)	५१७, ५४८
सप्तपरमस्थानव्रतकथा	खुशालचद्र	(हि०)	२४४
सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६
सप्तभंगीवाणी	भगवतीदास	(हि०)	६८८
सप्तविधि	—	(हि०)	३०७
सप्तव्यसनसनकथा	आ० सोमकीर्त्ति	(स०)	२५०
सप्तव्यसनकथा	भारामल	(हि०)	२५०
सप्तव्यसनकथा भाषा	—	(हि०)	२५०
सप्तव्यसनकवित्त	बनारसीदास	(हि०)	७२३
सप्तशती	गोवर्धनाचार्य	(स०)	७१५
सप्तश्लोकीगीता	—	(स०)	६२, ३६८, ६६२
सप्तसूत्रभेद	—	(सं०)	७६१
सभातरग	—	(सं०)	३३८
सभाशृ गार	—	(सं०)	३३६
सभाशृ गार	—	(स० हि०)	३३८
सभासारनाटक	रघुराम	(हि०)	३३८
समकितढाल	आसकरण	(हि०)	६२
समकितविणवोवर्म	जिनदास	(हि०)	७०१
समतभद्रकथा	जोधराज	(हि०)	७५८
समतभद्रस्तुति	समतभद्र	(सं०)	७७८
संमयसार (गाथा)	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	११६, ५७४, ७०३, ७६२
समयसारकलशो	अमृतचन्द्राचार्य	(स०)	१२०
समयसारकलशाटीका	—	(हि०)	१२५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
समयसारकलशाभाषा	—	(हि०)	१२५
समयसारटीका	—	(सं०)	१२२, ६६५
समयसारनाटक	बनारसीदास	(हि०)	१२३
			६०४, ६३६, ६५०, ६८३, ६८८, ६८६, ६६८, ७०२, ७१६, ७२०, ७३१, ७५३, ७५६, ७७८, ७८७, ७६२
समयसारभाषा	जयचन्दछाबडा	(हि० ग०)	१२४
समयसारवचनिका	—	(हि०)	१२५
समयसारवृत्ति	अमृतचन्द्रसूरि	(सं०)	५७५, ७६४
समयसारवृत्ति	—	(प्रा०)	१२२
समरसार	रामवाजपेय	(सं०)	२६४
समवशरणपूजा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	५४६
समवशरणपूजा	रत्नशेखर	(सं०)	५३७
समवशरणपूजा [वृहद्]	रूपचन्द	(सं०)	५७६
समवशरणपूजा	—	(सं०)	५४६, ७६७
समवशरणस्तोत्र	विष्णुसेन मुनि	(सं०)	४१६
समवशरणस्तोत्र	विश्वसेन	(सं०)	४१५
समवशरणस्तोत्र	—	(सं०)	४१६
समस्तव्रत की जयमाल	चन्द्रकीर्ति	(हि०)	५६४
समाधि	—	(प्रा०)	६१२
समाधितन्त्र	पूज्यपाद	(सं०)	१२५
समाधितत्र	—	(सं०)	१२५
समाधितन्त्रभाषा	नाथूरामदोसी	(हि०)	१२६
समाधितन्त्रभाषा	पर्वतधर्मार्थी	(हि०)	१२६
समाधितन्त्रभाषा	माणकचन्द	(हि०)	१२५
समाधितन्त्रभाषा	—	(हि०ग०)	१२५
समाधिमरण	—	(सं०)	६१२
समाधिमरण	—	(प्रा०)	१२६
समाधिमरण	—	(प्रा०)	६२८
समाधिमरणभाषा	पन्नालालचौधरी	(हि०)	१२७
समाधिमरणभाषा	सूरचन्द	(हि०)	१२७
समाधिमरण	—	(हि०)	१५, १२७, ७१०, ७४८
समाधिमरणपाठ	द्यानतराय	(हि०)	१२६, ३६५
समाधिमरण स्वरूपभाषा	—	(हि०)	१२७
समाधिशतक	पूज्यपाद	(सं०)	१२७
समाधिशतकटीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(सं०)	१२७
समाधिशतकटीका	—	(सं०)	१२८
समुदायस्तोत्र	विश्वसेन	(सं०)	४१६
समुद्घातभेद	—	(सं०)	६२
सम्मेदगिरिपूजा	—	(हि०)	७३६, ७४०
सम्मेदशिखरपूजा	गंगादास	(सं०)	५४६ ७२०
सम्मेदशिखरपूजा	पं० जवाहरलाल	(हि०)	५५०
सम्मेदशिखरपूजा	भागचन्द	(हि०)	५५०
सम्मेदशिखरपूजा	रामचन्द	(हि०)	५५०
सम्मेदशिखरपूजा	—	(हि०)	५११, ५१८, ६७८
सम्मेदशिखरनिर्वाणकाण्ड	—	(हि०)	५६६
सम्मेदशिखरमहात्म्य	दीक्षित देवदत्त	(सं०)	६२
सम्मेदशिखरमहात्म्य	मनसुखलाल	(हि०)	६२
सम्मेदशिखरमहात्म्य	लालचन्द	(हि० प०)	६२, २५१
सम्मेदशिखरमहात्म्य	—	(हि०)	७८८
सम्मेदशिखरविलास	केशरीसिंह	(हि०)	६२
सम्मेदशिखरविलास	देवाब्रह्म	(हि० प०)	६३
सम्यक्त्वकौमुदीकथा	खेता	(सं०)	५५१
सम्यक्त्वकौमुदीकथा	गुणाकरसूरि	(सं०)	२५१
सम्यक्त्वकौमुदीभाग १	सहणपाल	(अप०)	६४२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सगन्धदशमीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५५५
सुगुरुशतक	जिनदासगोधा	(हि०प०)	३४०,४४७
सुगुरुस्तोत्र	—	(सं०)	४२२
सदयवच्छसावलिंगाकी चौपई	मुनिकेशव	(हि०)	२५४
दयवच्छसालिगारीवार्त्ता	—	(हि०)	७३४
सुदर्शनचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२०८
सुदर्शनचरित्र	मुमुक्षुविद्यानंदि	(सं०)	२०६
सुदर्शनचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	२०८
सुदर्शनचरित्र	—	(सं०)	२०६
सुदर्शनचरित्र	—	(हि०)	२०६
सुदर्शनरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	३६६, ६३६, ७१२, ७४६
सुदर्शनसेठकीढाल [कथा]	—	(हि०)	२५४
सुदामाकीबारहखडी	—	(हि०)	७७६
सुदृष्टितरंगिणीभाषा	टेकचन्द	(हि०)	६७
सुदृष्टितरंगिणीभाषा	—	(हि०)	६७
सुन्दरविलास	सुन्दरदास	(हि०)	७४५
सुन्दरशृङ्गार	महाकविराय	(हि०)	६८३
सुन्दरशृङ्गार	सुन्दरदास	(हि०)	७२३, ७६८
सुन्दरशृङ्गार	—	(हि०)	६८५
सुपार्श्वनाथपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	५५५
सुप्पय दोहा	—	(अप०)	६२८
सुप्पय दोहा	—	(अप०)	६३७
सुप्पय दोहा	—	(हि०)	७६५
सुप्रभातस्तवन	—	(सं०)	५७४
सुप्रभाताष्टक	यति नेमिचन्द्र	(सं०)	६३३
सुप्रभातिकस्तुति	भुवनभूषण	(सं०)	६३३
सुभाषित	—	(सं०)	५७५
सुभाषित	—	(हि०)	७०१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सुभाषितपद्य	—	(हि०)	६२३
सुभाषितपाठसंग्रह	—	(सं०हि०)	६६८
सुभाषितमुक्तावली	—	(सं०)	३४१
सुभाषितरत्नसंदोह	अमितिगति	(सं०)	३४१
सुभाषितरत्नसंदोहभाषा	पन्नालालचौधरी	(हि०)	३४१
सुभाषितसंग्रह	—	(सं०)	३४१, ५७५
सुभाषितसंग्रह	—	(सं०प्रा०)	३४२
सुभाषितसंग्रह	—	(सं०हि०)	३४२
सुभाषितार्णव	शुभचन्द्र	(सं०)	३४१
सुभाषितावली	सकलकीर्त्ति	(सं०)	३४३
सुभाषितावली	—	(सं०)	३४३, ७०६
सुभाषितावलीभाषा	बा० दुलीचन्द	(हि०)	३४४
सुभाषितावलीभाषा	पन्नालालचौधरी	(हि०)	३४४
सुभाषितावलीभाषा	—	(हि०प०)	३४४
सुभौमचरित्र	भ० रतनचन्द	(सं०)	२०६
सुभौमचक्रवर्तिरास	ब्र० जिनदास	(हि०)	३६७
सूक्तावली	—	(सं०)	३४५, ६७२
सूक्तिमुक्तावली	सोमप्रभाचार्य	(सं०)	३४४, ६३५
सूक्तिमुक्तावलीस्तोत्र	—	(सं०)	६०६
सूतकनिर्णय	—	(सं०)	५५५
सूतकवर्णन [यशस्तिलक से]	सोमदेव	(सं०)	५७१
सूतकवर्णन	—	(सं०)	५५५
सूतकविधि	—	(सं०)	५७६
सूत्रकृताग	—	(प्रा०)	४७
सूर्यकवच	—	(सं०)	६४०
सूर्यकेदशनाम	—	(सं०)	६०८
सूर्यगमनविधि	—	(सं०)	२६५
सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	ब्र० जयसागर	(सं०)	५५७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सूर्यस्तोत्र	—	(सं०)	६४९, ६६२
सोनागिरिपच्चीसी	भागीरथ	(हि०)	६८
सोनागिरिपच्चीसी	—	(हि०)	६६२
सोनागिरिपूजा	आशा	(सं०)	५५५
सोनागिरिपूजा	—	(हि०)	५५६, ६७४, ७३०
सोमउत्पत्ति	—	(सं०)	२६५
सोमशर्मावारिषेणकथा	—	(प्रा०)	२५५
सोलहकारणकथा	रत्नपाल	(सं०)	६६५
सोलहकारणकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७४०
सोलहकारण जयमाल	—	(अप०)	६७६
सोलहकारणपूजा	ब्र० जिनदास	(सं०)	७६५
सोलहकारणपूजा	—	(सं०)	६०६, ६४४, ६५२, ६६४, ७०४, ७३१, ७८४
सोलहकारणपूजा	—	(अप०)	७०५
सोलहकारणपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५११, ५१६, ५५६
सोलहकारणपूजा	—	(हि०)	५५६ ६७०
सोलहकारणभावनावर्णन	सदासुख	(हि०)	६८
सोलहकारणभावना	—	(हि०)	७८८
सोलहकारणभावना एव दशलक्षण वर्णन--सदासुखकासलीवाल		(हि०)	६८
सोलहकारणमडलविधान	टेकचद	(हि०)	५५६
सोलहकारणमडल [चित्र]	—		५२४
सोलहकारणव्रतोद्यापन	केशवसेन	(सं०)	५१७
सोलहकारणरास	भ० सकलकीर्त्ति	(हि०)	५२४, ६३६, ७८१
सोलहतिथिवर्णन	—	(हि०)	५६४
सोलहसतियोंकेनाम	राजसमुद्र	(हि०)	६१६
सोलहसतीसज्झाय	—	(हि०)	४५१
सौंदर्यलहरी स्तोत्र	—	(सं०)	४२२
सौंदर्यलहरीस्तोत्र	भट्टारक जगद्भूषण	(सं०)	४२२
सौख्यव्रतोद्यापन	अक्षयराम	(सं०)	५१६, ५५६
सौख्यव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६
सौभाग्यपंचमीकथा	सुन्दरविजयगणि	(सं०)	२५५
स्कन्दपुराण	—	(सं०)	६७०
स्तवन	—	(अप०)	६६०
स्तवनअरिहन्त	—	(हि०)	६४८
स्तवन	आशाधर	(सं०)	६६१
स्तुति	—	(सं०)	४४२
स्तुति	कनककीर्त्ति	(हि०)	६०१ ६५०
स्तुति	टीकमचन्द	(हि०)	६३६
स्तुति	नवल	(हि०)	६६२
स्तुति	बुधजन	(हि०)	७०४
स्तुति	हरीसिंह	(हि०)	७७६
स्तुति	—	(हि०)	६६३, ६७३, ७५८
स्तोत्र	पद्मनंदि	(सं०)	५७५
स्तोत्र	लक्ष्मीचन्द्रदेव	(प्रा०)	५७६
स्तोत्रसंग्रह	—	(सं०हि०)	६२८ ६५१, ६६८, ७०३, ७१४, ७१५, ७३९, ७४१, ७६२, ७६६, ७६७
स्तोत्रसग्रह	—	(सं०हि०)	७२१, ७३८, ७४५, ७४८, ७७४
स्तोत्रपूजापाठसग्रह	—	(सं०हि०)	६६८, ७७३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
स्त्रीमुक्तिखंडन	—	(हि०)	६४०
स्त्रीलक्षण	—	(सं०)	३५६
स्त्रीशृंगारवर्णन	—	(सं०)	५७६
स्थापनानिर्णय	—	(सं०)	६८
स्थूलभद्रकाचौमासावर्णन	—	(हि०)	३७७
स्थूलभद्रगीत	—	(हि०)	६१८
स्थूलभद्रशीलरासो	—	(हि०)	५६६
स्थूलभद्रसज्झाय	—	(हि०)	४५२, ६१६
स्नपनविधान	—	(हि०)	५५६, ६५५,
स्नपनविधि [वृहद]	—	(सं०)	५५६
स्नेहलीला	जनमोहन	(हि०)	७७३
स्नेहलीला	—	(हि०)	३६८
स्फुटकवित्त	—	(हि०)	७०१
स्फुटकवित्तएवंपद्यसग्रह	—	(सं०हि०)	६७२
स्फुट दोहे	—	(हि०)	६२३, ६७३
स्फुटपद्यएवं मंत्रआदि	—	(हि०)	६७०
स्फुटपाठ	—	(हि०)	६६४, ७२६
स्फुटवार्त्ता	—	(हि०)	७४१
स्फुटश्लोकसग्रह	—	(सं०)	३४५
स्फुटहिन्दीपद्य	—	(हि०)	५६५
स्वप्नविचार	—	(हि०)	२६५
स्वप्नाध्याय	—	(सं०)	२६५
स्वप्नावली	देवनन्दि	(सं०)	२६५, ६३३
स्वप्नावली	—	(सं०)	२६५
स्याद्वादचूलिका	—	(हि०ग०)	१४१
स्याद्वादमंजरी	मल्लिषेणसूरि	(सं०)	१४१
स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	(सं०)	४२३
			४२५, ४२७, ५७४, ५६५,
			६३३ ६६५, ६८६,
			७२०, ७३१
स्वयंभूस्तोत्र टीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(सं०)	४३४
स्वयभूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	(सं०)	७१५
स्वरविचार		(सं०)	५७२
स्वरोदय	—	(सं०)	१२८
स्वरोदय	रनजीतदास (चरनदास)	(हि०)	३४५
स्वरोदय	—	(हि०)	६४०, ७५६
स्वरोदयविचार	—	(हि०)	५६६
स्वर्गनरकवर्णन	—	(हि०)	६२७
			७०१, ७६३
स्वर्गसुखवर्णन	—	(हि०)	७२०
स्वर्णाकर्षणविधान	महीधर	(सं०)	४२८
स्वस्त्ययनविधान	—	(सं०)	५७४
			६५८, ६४६
स्वाध्याय	—	(सं०)	५७१
स्वाध्ययपाठ	—	(सं०प्रा०)	५६४
स्वाध्यायपाठ	—	(प्रा०सं०)	६८ ६३३
स्वाध्यायपाठ	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
स्वाध्यायपाठभाषा	—	(हि०)	६८
स्वानुभवदर्पण	नाथूराम	(हि०प०)	१२८
स्वार्थबीसी	मुनि श्रीधर	(हि०)	६१६
ह			
हंसकीडालत्तथाविनतीढाल	—	(हि०)	६८५
हंसतिलकरास	ब्र० अजित	(हि०)	७०७
हठयोगदीपिका	—	(सं०)	१२८
हणवतकुमारजयमाल	—	(अप०)	६३८
हनुमच्चरित्र	ब्र० अजित	(सं०)	२१०
हनुमच्चरित्र	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	२११
(हनुमन्तकथा)			५६५, ५६६, ७१७,
(हनुमतकथा)			७३४, ७३६,

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
(हनुमतरास)			७४०, ७४४,
(हनुमंत चौपई)			७५२, ७६२
हनुमान स्तोत्र	—	(हि०)	४३२
हनुमतानुप्रेक्षा	महाकवि स्वयंभू	(अप०)	६३५
हमीरचौपई	—	(हि०)	३७८
हमीररासो	महेशकवि	(हि०)	३६७, ७८३
हयग्रीवावतारचित्र	—		६०३
हरगौरीसंवाद	—	(सं०)	६०८
हरजीके दोहे	हरजी	(हि०)	७८८
हरडैकल्प	—	(हि०)	३०७
हरिचन्दशतक	—	(हि०)	७४१
हरिनाममाला	शंकराचार्य	(सं०)	३६८
हरिबोलाचित्रावली	—	(हि०)	६०१
हरिरस	—	(हि०)	६०१
हरिवंशपुराण	ब्र० जिनदास	(सं०)	१५६
हरिवंशपुराण	जिनसेनाचार्य	(सं०)	१५५
हरिवंशपुराण	श्री भूषण	(सं०)	१५७
हरिवंशपुराण	सकलकीर्ति	(सं०)	१५७
हरिवंशपुराण	धवल	(अप०)	१५७
हरिवंशपुराण	यश कीर्त्ति	(अप०)	१५७
हरिवंशपुराण	महाकवि स्वयंभू	(अप०)	१५७
हरिवंशपुराणभाषा	खुशालचन्द	(हि०प०)	१५८
हरिवंशपुराणभाषा	दौलतराम	(हि०ग०)	१५७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
हरिवंशपुराणभाषा	—	(हि०)	१५८, १५९
हरिवंशवर्णन	—	(हि०)	२५५
हरिहरनामावलिवर्णन	—	(सं०)	६९०
हवनविधि	—	(सं०)	७३१
हारावलि	महामहोपाध्याय पुरुषोत्तमदेव	(सं०)	२११
हिण्डोलना	शिवचन्दमुनि	(सं०)	६८३
हितोपदेश	देवीचन्द्र	(सं०)	७४४
हितोपदेश	विष्णुशर्मा	(सं०)	३४५
हितोपदेशभाषा	—	(हि०)	३४६, ७६३
हुण्डावसर्पिणीकालदोष	माणकचन्द	(हि०)	६८, ४४८
हेमकारी	विश्वभूषण	(हि०)	७९३
हेमनीवृहद्वृत्ति	—	(सं०)	२७०
हेमव्याकरण [हेमव्याकरणवृत्ति]	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२७०
होडाचक्र	—	(सं०)	६९९
होराज्ञान	—	(सं०)	२९५
होलीकथा	जिनचन्द्रसूरि	(सं०)	२५६
होलिकाकथा	—	(सं०)	२५५
होलिकाचौपई	डूंगर कवि	(हि०प०)	२५५
होलीकथा	छीतर ठोलिया	(हि०)	२४६, २५५, ६८५
होलीरेणुकाचरित्र	ब्र० जिनदास	(सं०)	२११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सम्यक्त्वकौमुदीकथा	—	(सं०)	२५१
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	जगतराम	(हि०)	२५२
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	जोधराजगोदीका	(हि०)	२५२, ६८६
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	विनोदीलाल	(हि०ग०)	२५२
सम्यक्त्वकौमुदी भाषा	—	(हि०)	२५३
सम्यक्त्वजयमाल	—	(अप०)	७६८
सम्यक्त्वपच्चीसी	—	(हि०)	७३०
सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका	पं० टोडरमल	(हि०)	७
सम्यग्ज्ञानीधमाल	भगौतीदास	(हि०)	५६६
सम्यग्दर्शनपूजा	—	(सं०)	६५८
सम्यग्दृष्टिकी भावनावर्णन	—	(हि०)	७८५
सरस्वतीअष्टक	—	(हि०)	४५२
सरस्वतीकल्प	—	(सं०)	३५२
सरस्वतीचूर्णकानुसखा	—	(हि०)	७५७
सरस्वती जयमाल	ब्र० जिनदास	(हि०)	६५८
सरस्वतीपूजा	आशाधर	(सं०)	६५८
सरस्वतीपूजा [जयमाल]	ज्ञानभूषण	(सं०)	५१५, ५६५
सरस्वतीपूजा	पद्मनंदि	(सं०)	५५१, ७१६
सरस्वतीपूजा	—	(सं०)	५५१
सरस्वतीपूजा	नेमीचन्द्रबख्शी	(हि०)	५५१
सरस्वतीपूजा	संघी पन्नालाल	(हि०)	५५१
सरस्वतीपूजा	पं० बुधजन	(हि०)	५५१
सरस्वतीपूजा	—	(हि०)	५५१, ६५२
सरस्वतीस्तवन	लघुकवि	(सं०)	४१६
सरस्वतीस्तुति	ज्ञानभूषण	(सं०)	६५७
सरस्वतीस्तोत्र	आशाधर	(सं०)	६४७, ७६१
सरस्वतीस्तोत्र	बृहस्पति	(सं०)	४२०
सरस्वतीस्तोत्र	श्रुतसागर	(सं०)	४२०
सरस्वतीस्तोत्र	—	(सं०)	४२०, ५७५
सरस्वतीस्तोत्रमाला [शारदास्तवन]		(सं०)	४२०
सरस्वतीस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	(हि०)	५४७
सर्वतोभद्रपूजा	—	(सं०)	५५१
सर्वतोभद्रमंत्र	—	(सं०)	४१६
सर्वज्वर समुच्चयदर्पण	—	(सं०)	३०७
सर्वार्थसाधनी	भट्टवररुचि	(सं०)	२७८
सर्वार्थसिद्धि	पूज्यपाद	(सं०)	४५
सर्वार्थसिद्धिभाषा	जयचन्द छाबड़ा	(हि०)	४८
सर्वार्थसिद्धिसज्झाय	—	(हि०)	४५२
सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	जिनदत्तसूरि	(हि०)	६१६
सवैयाएकपद	सुन्दरदास	(हि०)	६८१
सहस्रकूटजिनालयपूजा	—	(सं०)	५५१
सहस्रगुणितपूजा	धर्मकीर्ति	(सं०)	५५२
सहस्रगुणितपूजा	—	(सं०)	५५२
सहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	(सं०)	५५२, ७४७
सहस्रनामपूजा	—	(सं०)	५५२
सहस्रनामपूजा	चैनसुख	(हि०)	५५२
सहस्रनामपूजा	—	(हि०)	५५२
सहस्रनामस्तोत्र	पं० आशाधर	(सं०)	५६६, ६३६, ६७०५
सहस्रनामस्तोत्र	—	(सं०)	६६४, ७५३, ७६३
सहस्रनाम [बड़ा]	—	(सं०)	४३१
सहस्रनाम [लघु]	आ० समंतभद्र	(सं०)	४२०
सहस्रनाम [लघु]	—	(सं०)	४३१
सहेलीगीत	सुन्दर	(हि०)	७६४
साखी	कबीर	(हि०)	७२३
सागरदत्तचरित्र	हीरकवि	(हि०)	२०८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सागारधर्मामृत	आशाधर	(सं०)	६३
सातव्यसनस्वाध्याय	—	(हि०)	६४
साधुकीआरती	हेमराज	(हि०)	७७७
साधुदिनचर्या	—	(प्रा०)	६४
साधुवंदना	आनन्दसूरि	(हि०)	६१७
साधुवंदना	पुण्यसागर	(पुरानी हि०)	४५२
साधुवंदना	बनारसीदास	(हि०)	६४४
			६५२, ७१६, ७४६
साधुवंदना	माणिकचन्द	(हि०)	४५२
साधुवंदना	—	(हि०)	६६४
सामायिकपाठ	अमितगति	(सं०)	६०४, ७३७
सामायिकपाठ	—	(सं०)	६५
			४२५, ४२६, ४२६, ४३०,
			५६५, ५६७, ६०६, ६३७,
			६४६, ६८६, ७६३
सामायिकपाठ	बहुमुनि	(प्रा०)	६४
सामायिकपाठ	—	(प्रा०)	६४, ५७८
सामायिकपाठ	—	(सं० प्रा०)	५७८
सामायिकपाठ	महाचन्द	(हि०)	४२६
सामायिकपाठ	—	(हि०)	६७१
			७४६, ७५४, ७५५
सामायिकपाठभाषा	जयचन्दछाबडा	(हि०)	६६, ५६७
सामायिकपाठभाषा	तिलोकचन्द	(हि०)	६६
सामायिकपाठभाषा	बुधमहाचन्द	(हि०)	६५
सामायिकपाठभाषा	—	(हि० ग०)	६६
सामायिकबडा	—	(सं०)	४३१, ६०५
सामायिकलघु	—	(सं०)	४३१
			५६६, ६०५, ६०७
सामायिकपाठवृत्तिसहित	—	(सं०)	७०३
सामुद्रिकपाठ	—	(हि०)	७५६
सामुद्रिकलक्षण	—	(सं०)	२६४
सामुद्रिकविचार	—	(हि०)	२६४
सामुद्रिकशास्त्र	श्री निधिसमुद्र	(सं०)	२६४
सामुद्रिकशास्त्र	—	(सं०)	२६४, २६५
सामुद्रिकशास्त्र	—	(प्रा०)	२६४
सामुद्रिकशास्त्र	—	(हि०)	२६५
			६०३, ६२७, ७०२
सायसंध्यापाठ	—	(सं०)	४२०
सारचतुर्विंशति	—	(सं०)	४२०
सारचौबीसीभाषा	पारसदासनिगोत्या	(हि०)	४५३
सारणी	—	(अप०)	२६५
सारणी	—	(हि०)	६७२
सारसंग्रह	वरदराज	(सं०)	१४०
सारसंग्रह	—	(सं०)	३०७
सारसमुच्चय	कुलभद्र	(सं०)	६७, ५७४
सारसुतयंत्रमंडल [चित्र]	—		५२५
सारस्वत दशाध्यायी	—	(सं०)	२६६
सारस्वतदीपिका	चन्द्रकीर्त्तिसूरि		२६६
सारस्वतपंचसंधि	—	(सं०)	२६५
सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	(सं०)	२६५, ७८०
सारस्वतप्रक्रियाटीका	महीभट्ट	(सं०)	२६७
सारस्वतयंत्रपूजा	—	(सं०)	५१०
सारस्वतयंत्रपूजा	—	(सं०)	५५२, ६३६
सारस्वती धातुपाठ	—	(सं०)	२६५
सारावली	—	(सं०)	२६५
सालोत्तररास	—	(हि०)	३०७
सावयधम्म दोहा	मुनि रामसिंह	(अप०)	६७
सावलाजी के मन्दिर की रथयात्रा का वर्णन	—	(हि०)	७१६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सासुवहूकाभगडा	ब्रह्मदेव	(हि०)	४५१, ६४८
सिद्धकूटपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	५१६
सिद्धकूटमडल [चित्र)	—		५२४
सिद्धक्षेत्र पूजा	स्वरूपचन्द	(हि०)	४६७ ५५३
सिद्धक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	५५३
सिद्धक्षेत्रपूजाष्टक	द्यानतराय	(हि०)	७०५
सिद्धक्षेत्रमहात्म्यपूजा	—	(स०)	५५३
सिद्धचक्रकथा	—	(हि०)	२५३
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द	(स०)	५१० ५१४, ५५३
सिद्धचक्रपूजा	श्रुतसागर	(स०)	५५३
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	भानुकीर्त्ति	(सं०)	५५३
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	शुभचन्द्र	(स०)	५५३
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	—	(स०)	५५४
सिद्धचक्रपूजा	—	(स०)	५१४ ५५४, ६३८, ६५८, ७३५
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	सतलाल	(हि०)	५५३
सिद्धचक्रपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५५३
सिद्धपूजा	आशाधर	(स०	५५४ ७१६
सिद्धपूजा	पद्मनदि	(स०)	५३७
सिद्धपूजा	रत्नभूषण	(सं०)	५५४
सिद्धपूजा	—	(स०)	४१५ ५५४, ५७४, ५९४, ६०५ ६०७, ६४६, ६५१, ६७० ६७६, ६७८, ७०४, ७३१ ७४५, ७६३
सिद्धपूजा	—	(स० हि०)	५६६
सिद्धपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१६
सिद्धपूजा	—	(हि०)	५५५
सिद्धपूजाष्टक	दौलतराम	(हि०)	७७७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सिद्धवदना	—	(स०)	४२०
सिद्धभक्ति	—	(सं०)	६२७
सिद्धभक्ति	—	(प्रा०)	५७८
सिद्धभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	
सिद्धस्तवन	—	(स०)	४२०
सिद्धस्तुति	—	(स०)	५७४
सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति	जिनप्रभसूरि	(सं०)	२६७
सिद्धान्त अर्थसार	पं० रइधू	(अप०)	४६
सिद्धान्तकौमुदी	भट्टोजीदीक्षित	(स०)	२६७
सिद्धान्तकौमुदी	—	(सं०)	२६७
सिद्धान्तकौमुदी टीका	—	(स०)	२६८
सिद्धान्तचन्द्रिका	रामचन्द्राश्रम	(स०)	२६८
सिद्धान्तचन्द्रिका टीका	लोकेशाकर	(स०)	२६९
सिद्धान्तचन्द्रिका टीका	—	(सं०)	२६९
सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति	सदानन्दगणि	(स०)	२६९
सिद्धान्तत्रिलोकदीपक	वामदेव	(स०)	३२३
सिद्धान्तधर्मोपदेशमाला	—	(प्रा०)	६८
सिद्धान्तविन्दु	श्रीमधुसूदन सरस्वती	(स०)	२७०
सिद्धान्तमजरी	—	(स०)	१३८
सिद्धान्तमजूषिका	नागेशभट्ट	(स०)	२७०
सिद्धान्तमुक्तावली	पंचानन भट्टाचार्य	(स०)	२७०
सिद्धान्तमुक्तावली	—	(स०)	२७०
सिद्धान्तमुक्तावलिटीका	महादेवभट्ट	(स०)	१४०
सिद्धान्तलेश संग्रह	—	(हि०)	४६
सिद्धान्तसारदीपक	सकलकीर्त्ति	(सं०)	४६
सिद्धान्तसारदीपक	—	(स०)	४७
सिद्धान्तसारभाषा	नथमलविलाला	(हि०)	४७
सिद्धान्तसारभाषा	—	(हि०)	४६
सिद्धान्तसार सग्रह	आ० नरेन्द्रदेव	(स०)	४७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	(सं०)	४०१
			४२१, ४२२, ४०५, ४२६, ४३१,
			४३२, ४७२, ४७४, ४७८, ५६५,
			५९७, ६०५, ६१०, ६३३
			६३७, ७०१
सिद्धिप्रियस्तोत्रटीका	—	(सं०)	४२१
सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	नथमल	(हि०)	४२१
सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	पन्नालालचौधरी	(हि०)	४२१
सिद्धियोग	—	(सं०)	३०७
सिद्धोंकास्वरूप	—	(हि०)	९७
सिन्दूरप्रकरण	सोमप्रभाचार्य	(सं०)	३४०
सिन्दूरप्रकरणभाषा	बनारसीदास	(हि०)	२२४
			३४०, ५६१, ५६५, ७१०, ७१२
			७४३, ७५५, ७६२
सिन्दूरप्रकरणभाषा	सुन्दरदास	(हि०)	३४०
सिरिपालचरिय	प० नरसेन	(अप०)	२०५
सिंहासनद्वात्रिंशिका	क्षेमंकरमुनि	(सं०)	२५३
सिंहासनद्वात्रिंशिका	—	(सं०)	२५३
सिंहासनबत्तीसी	—	(सं०)	२५३
सीखसत्तरी	—	(हि०)	६८०
सीताचरित्र	कविरामचन्द (बालक)	(हि०प०)	२०६
			७२५, ७५५
सीताचरित्र	—	(हि०)	५६६
सीताढाल	—	(हि०)	४५२
सीताजीका बारहमासा	—	(हि०)	७२७
सीताजीकीविनती	—	(हि०)	६४८, ६८५
सीताजीकीमङ्गल	—	(हि०)	६१८
सीमन्धरकीजकड़ी	—	(हि०)	६४८
सीमन्धरस्तवन	ठक्कुरसी	(हि०)	७३८
सीमन्धरस्वामीपूजा	—	(सं०)	५५५
सीमन्धरस्वामीस्तवन	—	(हि०)	६१६
सोलरास	गुणकीर्त्ति	(हि०)	६०२
सुकुमालचरिउ	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	२०६
सुकुमालचरिउ	श्रीधर	(अप०)	२०६
सुकुमालचरित्रभाषा	प० नाथूलालदोसी	(हि०ग)	२०७
सुकुमालचरित्र	हरचंद गगवाल	(हि०प०)	२०७
सुकुमालचरित्र	—	(हि०)	२०७
सुकुमालमुनिकथा	—	(हि०ग०)	२५३
सुकुमालस्वामीरा	ब्र० जिनदास	(हि०गुज)	३६६
सुखघडी	धनराज	(हि०)	६२३
सुखघडी	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	७४६
सुखनिधान	कवि जगन्नाथ	(सं०)	२०७
सुखसपत्तिपूजा	—	(सं०)	५१७
सुखसपत्तिविधानकथा	—	(सं०)	२४६
सुखसपत्तिविधानकथा	विमलकीर्त्ति	(अप०)	२४५
सुखसपत्तिव्रतपूजा	अखयराम	(सं०)	५५५
सुखसपत्तिव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५१४
सुगन्धदशमीकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५
सुगन्धदशमीकथा	श्रुतसागर	(सं०)	५१४
सुगन्धदशमीकथा	—	(सं०)	२५४
सुगन्धदशमीकथा	—	(अप०)	६३२
सुगन्धदशमीव्रतकथा [सुगन्धदशमीकथा]	हेमराज	(हि०)	२५४, ७६५
सुगन्धदशमीपूजा	स्वरूपचन्द	(हि०)	५११
सुगन्धदशमीमण्डल [चित्र]	—		५२५
सुगन्धदशमीव्रतकथा	—	(सं०)	२४२
सुगन्धदशमीव्रतकथा	—	(अप०)	४
सुगन्धदशमीव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	५१६

ग्रंथ एवं ग्रंथकार

प्राकृत भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अभयचन्द्रगणि—	ऋणसवधकथा	२१८
अभयदेवसूरि—	जयतिहुवणस्तोत्र	७५४
अल्हू—	प्राकृतछंदकोष	३११
इन्द्रनंदि—	छेदपिण्ड	५७
	प्रायश्चितविधि	७४
कात्तिकेय—	कात्तिकेयानुप्रेक्षा	१०३
कुंदकुंदाचार्य—	अष्टपाहुड	६६
	पचास्तिकाय	४०
	प्रवचनसार	११२
	नियमसार	३८
	बोधप्रामृत	११५
	यतिभावनाष्टक	५७३
	रयणसार	८४
	लिगपाहुड	११७
	षट्पाहुड	११७, ७४८
	समयसार	११६, ५७४, ७३७, ७६२
गौतमस्वामी—	गौतमकुलक	१४
	सबोधपंचासिका	११६, १२८
जिनभद्रगणि	अर्थदिपिका	१
ढाढसीमुनि—	ढाढसीगाथा	७०७
देवसूरि—	यतिदिनचर्या	८१
	जीवविचार	६१६
देवसेन—	आराधनासार	४६, ५७२, ५७३, ६२८, ६३५, ७०६, ७३७, ७४४
	तत्वसार	२०, ५७५, ६३७, ७३७, ७४४, ७४७
	दर्शनसार	१३३
	नयचक्र	१३४
	भावसग्रह	७७
देवेन्द्रसूरि—	कर्मस्तवसूत्र	५
धर्मचन्द्र—	धर्मचन्द्रप्रबन्ध	३६६
धर्मदासगणि—	उपदेशरत्नमाला	५०
नन्दिषेण—	अजितशांतिस्तवन	३७६
भडारी नेमिचन्द्र—	उपदेशसिद्धान्त रत्नमाला	५१
नेमिचन्द्राचार्य—	आश्रवत्रिभगी	२
	कर्मप्रकृति	३
	गोम्मटसारकर्मकाण्ड	५२
	गोम्मटसारजीवकाण्ड	९, १६, ७२०
	चतुरविंशतिस्थानक	१८
	जीवविचार	७३२
	त्रिभंगीसार	३१
	द्रव्यसंग्रह	३२, ५७५, ६२८, ७४४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	त्रिलोकसार	३२०
	त्रिलोकसारसदृष्टि	३२२
	पचसग्रह	३८
	भावत्रिभगी	४२
	लब्धिसार	४३
	विशेषसत्तात्रिभंगी	४३
	सत्तात्रिभगी	४५
पद्मनदि—	ऋषभदेवस्तुति	३८१
	जिनवरदर्शन	३९०
	जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति	३१९
मुनिपद्मसिंह—	ज्ञानसार	१०५
भद्रबाहु—	कल्पसूत्र	६,७
भावशर्मा—	दशलक्षणजयमाल	४८६, ५१७
मुनिचन्द्रसूरि—	वनस्पतिसत्तरी	८५
मुनीन्द्रकीर्त्ति—	अनन्तचतुर्दशीकथा	२१४
रत्नशेखरसूरि—	प्राकृतछदकोश	३११
लक्ष्मीचन्द्रदेव—	स्तोत्र	५७६
लक्ष्मीसेन—	द्वादशानुप्रेक्षा	७४४
वसुनन्दि—	वसुनन्दिश्रावकाचार	८५
विद्यासिद्धि—	शातिकरस्तोत्र	६८१
शिवार्य—	भगवतीआराधना	७६
श्रीराम—	प्राकृतरूपमाला	२६२
श्रुतमुनि—	भावसग्रह	७८
समतभद्र—	कल्याणक	३८३
सिद्धसेनसूरि—	इक्कीसठाणाचर्चा	२
सुन्दरसूर्य—	शातिकरस्तोत्र	४२३
कविहाल—	कामसूत्र	३५३
ब्र० हेमचन्द्र—	श्रुतस्कध	३७६, ५७२, ७०७, ७३७

अपभ्रंश भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अमरकीर्त्ति—	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	८८
ऋषभदास—	रत्नत्रयपूजाजयमाला	५३७
कनककीर्ति—	नन्दीश्वरजयमाला	५१६
मुनिकनकामर—	करकण्डुचरित्र	१६१
मुनिगुणभद्र—	दशलक्षणकथा	६३१
	रोहिणीविधान	६२६
जयमित्रहल—	वर्द्धमानकथा	१६६
जल्हग—	द्वादशानुप्रेक्षा	६२८
ज्ञानचद्—	योगचर्चा	६२८
तेजपाल—	संभवजिणणाहचरिउ	२०४
देवनदि—	रोहिणीचरित्र	२४३
	रोहिणीविधानकथा	२४३
धवल—	हरिवशपुराण	१५७
नरसेन—	जिनरात्रिविधानकथा	६२८
	सिरिपालचरिय	२०५
पुष्पदन्त—	आदिपुराण	१४३, ६४२
	महापुराण	१५३
	यशोधरचरित्र	१८८
महणसिंह—	त्रिशतजिणचन्द्रवीसी	६८६
यश कीर्त्ति—	चन्द्रप्रभचरित्र	१६५
	पद्धडी	६४२
	पाण्डवपुराण	१५०
	हरिवशपुराण	१५७
योगीन्द्रदेव—	परमात्मप्रकाश	११०, ५७५, ६९३, ७०७ ७४७
	योगसार	११६, ७४८, ७५५
रइधू—	दशलक्षणजयमाल	२४३, ४८६, ५१८, ५३७ ५७२, ६३७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वनाथचरित्र	१७९
	वीरचरित्र	६४२
	षोडशकारण जयमाल	५१७, ५४२
	सवोधपचासिका	१२८
	सिद्धान्तार्थसार	४६
रामसिंह—	सावयधम्म दोहा (श्रावकाचार)	६७ ६४१, ७४८
	दोहापाहुड	६०
रूपचन्द—	रागग्रासावरी	६४१
लक्ष्मण—	णेमिणाहचरिउ	१७१
लक्ष्मीचन्द—	आध्यात्मिकगाथा	१०३
	उपासकाचार दोहा	५२
	चूनडी	६२८, ६४१
	कल्याणकविधि	६४१
विनयचन्द्र—	दुधारसविधानकथा	२४५, ६२८
	निर्भरपचमीविधानकथा	२४५, ६२८
विजयसिंह—	अजितनाथपुराण	१४२
विमलकीर्त्ति—	सुगन्धदशमीकथा	६३२
सहणपाल—	पद्धडी (कौमुदीमध्यात्)	६४१
	सम्यक्त्वकौमुदी	६४२
सिंहकवि—	प्रद्युम्नचरित्र	१८२
महाकविस्वयभू—	रिट्ठणेमिचरिउ	१५७, ६४२
	श्रुतपचमीकथा	६४२
	हनुमतानुप्रेक्षा	६३५
श्रीधर—	सुकुमालचरिउ	२०६
हरिश्चन्द—	अणस्तमितिसधि	२४३, ६२८, ६४३

संस्कृत भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अकलकदेव—	अकलकाष्टक	५७५ ६३७, ६४६, ७१२
	तत्त्वार्थराजवार्त्तिक	३२
	न्यायकुमुदचन्द्रोदय	१३४
	प्रायश्चितसंग्रह	७८
अक्षयराम—	णमोकारपैंतीसी पूजा	८८२, ५१७
	प्रतिमासान्त चतुर्दशी व्रतोद्यापन पूजा	५१६, ५२०
	सुखसपत्तिव्रत पूजा	५५५
	सौख्यकाख्य व्रतोद्यापन	५१६, ५५६
ब्रह्म अजित—	हनुमच्चरित्र	२१०
अजितप्रभसूरि—	शान्तिनाथचरित्र	१९८
अनन्तकीर्ति—	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	४९४
	पल्यविधान पूजा	५०७
अनन्तवीर्य—	प्रमेयरत्नमाला	१३८
अन्नभट्ट—	तर्कसग्रह	१३२
अनुभूतिस्वरूपाचार्य—	सारस्वतप्रक्रिया	६२५ २६६, ७८०
	लघुसारस्वत	२६३
अपराजितसूरि	भगवतीआराधनाटिका	७६
आपयदीक्षित—	कुवलयानन्द	३०८
अभयचन्द्रगणि—	पचसग्रहवृत्ति	३९
अभयचन्द्र—	क्षीरोदानीपूजा	७९३
अभयनंदि—	जैनेन्द्रमहावृत्ति	२६०
अभयनन्दि—	त्रिलोकसार पूजा	४८५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	दशलक्षण पूजा	४८६
	लघुश्रेयविधि	५३३
अभयसोम—	विक्रमचरित्र	१६६
प० अभ्रदेव—	त्रिकालचौबीसीकथा	२२६,
	(रोटतीजकथा)	२४२
	दशलक्षण पूजा	४८८
	द्वादशव्रतकथा	२२८, २४६
	द्वादशव्रत पूजा	४६०
	मुकुटसप्तमीकथा	२४४
	लब्धिविधानकथा	२३६
	लब्धिविधान पूजा	५१७
	श्रवणद्वादशीकथा	२४५
	श्रुतस्कंधविधानकथा	२४५
	षोडशकारणकथा	२४२, २४५, २४७
अमरकीर्त्ति—	जिनसहस्रनामटीका	३६३
	महावीरस्तोत्र	७५२
	यमकाष्टकस्तोत्र	४१३, ४२६
अमरसिंह—	अमरकोश	२७२
	त्रिकाण्डशेषसूची	२७४
अमितिगति—	धर्मपरीक्षा	३५६
	पंचसंग्रह टीका	३६
	भावनाद्वात्रिंशतिका	५७३
	(सामायिक पाठ)	७३७
	श्रावकाचार	६०
	सुभाषितरत्नसन्दोह	३४१
अमोघवर्ष—	धर्मोपदेशश्रावकाचार	६४
	प्रश्नोत्तररत्नमाला	५७३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अमोलकचन्द—	रथयात्राप्रभाव	३७४
अमृतचन्द्र—	तत्वार्थसार	२२
	पंचास्तिकायटीका	४१
	परमात्मप्रकाश टीका	११०
	प्रवचनसार टीका	११२
	पुरुषार्थसिद्ध्युपाय	६८
	समयसारकलशा	१२०
	समयसार टीका	१२१, ७५५, ७६४
अरुणमणि—	अजितपुराण	१४२
	पंचकल्याणक पूजा	५००
अर्हद्देव—	शान्तिकविधि	५४४
अशग—	शांतिनाथपुराण	१५५
आत्रेयऋषि—	आत्रेयवैद्यक	२६६
आनन्द—	माधवानलकथा	२३५
आशा—	सोनागिर पूजा	५५५
आशाधर—	अंकुरारोपणविधि	४५३, ५१७
	अनगारधर्मामृत	४८
	आराधनासारवृत्ति	६४
	इष्टोपदेशटीका	३८०
	कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	३८५
	कल्याणमाला	५७५
	कलशाभिषेक	४६७
	कलशारोपणविधि	४६६
	गणधरवलयपूजा	७६१
	जलयात्राविधान	४७७
	जिनयज्ञकल्प (प्रतिष्ठापाठ)	५२१, ४७८, ६०८, ६३६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	जिनसहस्रनामस्तोत्र	३६१, ५४०, ५६६, ५६६, ६०५, ६०७, ६३६, ६४६, ६५५, ६८३, ६८६, ६६२, ७१२, ७१५, ७२०, ७४०, ७५२
	धर्मामृतसूक्तिसंग्रह	६३
	ध्वजारोपणविधि	४६२
	त्रिषष्टिस्मृति	१४६
	देवशास्त्रगुरुपूजा	७६१
	भूपालचतुर्विंशतिका टीका	४११
	रत्नत्रयपूजा	५२६
	श्रावकाचार (सागारधर्मामृत)	६३५
	शांतिहोमविधान	५४५
	सरस्वतीस्तुति	६४७, ६५८, ७६१
	सिद्धपूजा	५५४, ७१६
	स्तवन	६६१
इन्द्रनंदि—	अंकुरारोपणविधि	४५३
	देवपूजा	४६०
	नीतसार	३२६
उज्जवलदत्त (सग्रहकर्त्ता)—	उणादिसूत्रसग्रह	२५७
उमास्वामि—	तत्वार्थसूत्र	२३, ४२५, ४२७, ४३७, ५३७, ५६२, ५६६, ५७१, ५७३, ५६५, ५६६, ६०१, ६०३, ६०५, ६३३, ६३७, ६३६, ६४४, ६४५, ६४७, ६४८, ६५०, ६५२, ६५६, ६६४, ७००, ७०४, ७०५, ७०७, ७२७, ७८५, ७८८
	पंचनमस्कारस्तोत्र	५७६
	पूजाप्रकरण	५१२
	श्रावकाचार	६०
भ० एकसंधि—	प्रायश्चितविधि	७४
कनककीर्त्ति—	णमोकारपैंतीसीव्रत विधान	४८२, ५१७
कनककुशल—	देवागमस्तोत्रवृत्ति	३६६
कनकनंदि—	गोम्मटसार कर्मकाण्डटीका	१२
कनकसागर—	कुमारसंभवटीका	१६२
कमलप्रभाचार्य—	जिनपंजरस्तोत्र	३६०, ४३०, ६४६
कमलविजयगणि—	चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तोत्र	३८८
कालिदास—	कुमारसंभव	१६२
	ऋतुसंहार	१६१
	मेघदूत	१८७
	रघुवंश	१६३
	वृतरत्नाकर	३१४
	श्रुतबोध	६४४
	शाकुन्तल	३१६
कालिदास—	नलोदयकाव्य	१७५
	शृंगारतिलक	३५६
काशीनाथ—	ज्योतिषसारलग्नचंद्रिका	२८३
	शीघ्रबोध	२६२, ६०३
काशीराज—	अजीर्णमंजरी	२६६
कुमुदचन्द्र—	कल्याणमंदिरस्तोत्र	३८४, ४२५, ४२७, ४३०, ४३१,

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
		५६५, ५७२, ५७५, ५६५,
		६१६, ६३३, ६३७, ६७०,
		७२८, ७५७
कुलभद्र—	सारसमुच्चय	६७, ५७४
भट्टकेदार—	वृत्तरत्नाकर	३१४
केशव—	जातकपद्धति	२८१
	ज्योतिषमणिमाला	२८२
केशवमिश्र—	तर्कभाषा	१३२
केशववर्णी—	गोम्मटसारवृत्ति	१०
	आदित्यव्रतपूजा	४६१
केशवसेन—	रत्नत्रयपूजा	५२६
	रोहिणीव्रतपूजा	५१३,
		५३२, ७२६
	षोडशकारणपूजा	५४२,
		६७६
कैय्यट—	भाष्यप्रदीप	२६२
कौहनभट्ट—	वैय्याकरणभूषण	२६३
ब्र० कृष्णदास	मुनिसुव्रतपुराण	१५३
	विमलनाथपुराण	१५४
कृष्णशर्मा—	भावदीपिका	१३८
क्षपणक—	एकाक्षरकोश	२७४
क्षेमंकरमुनि—	सिंहासनद्वात्रिंशिका	२५३
क्षमेन्द्रकीर्त्ति—	गजपथामंडलपूजा	४६८
खेता—	सम्यक्त्वकौमुदीकथा	२५१
गंगादास—	पंचक्षेत्रपालपूजा	५०२
	पुष्पांजलिव्रतोद्यापन	५०८
		५१६
	°दव्रत	५३२
	सम्मेदशिखरपूजा	५४९,
		७२७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
गणपति—	रत्नदीपक	२९०
गणिरत्नसूरि—	षड्दर्शनसमुच्चयवृत्ति	१३९
गणेश—	ग्रहलाघव	२८०
	पंचांगसाधन	२८५
गर्गऋषि—	गर्गसंहिता	२८०
	पाशाकेवली	२८६, ६४७
	प्रश्नमनोरमा	२८७
	शकुनावली	२९२
गुणकीर्त्ति—	पंचकल्याणकपूजा	५००
गुणचन्द्र—	अनन्तव्रतोद्यापन	५१३
		५३९, ५४०
	अष्टाह्निकाव्रतकथा	
	संग्रह	२१६
गुणचन्द्रदेव—	अमृतधर्मरसकाव्य	४८
गुणनंदि—	ऋषिमंडलपूजाविधान	४६३,
		५३९, ७६२
	चंद्रप्रभकाव्यपंजिका	१६५
	त्रिकालचौवीसीकथा	६२२
	संभवजिनस्तोत्र	४१९
गुणभद्र—	शांतिनाथस्तोत्र	६१४,
		७२२
गुणभद्राचार्य—	अनन्तनाथपुराण	१४२
	आत्मानुशासन	१००
	उत्तरपुराण	१४४
	जिनदत्तचरित्र	१६९
	धन्यकुमारचरित्र	१७२
	मौनिव्रतकथा	२३६
	वर्द्धमानस्तोत्र	४१५
गुणभूषणाचार्य—	श्रावकाचार	९०

ग्रंथकार क नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
गुणरत्नसूरि—	तर्करहस्यदीपिका	१३२
गुणविनयगणि—	रघुवशटीका	१९४
गुणाकरसूरि—	सम्यक्त्वकौमुदीकथा	
गोपालदास—	रूपमजरीनाममाला	२७६
गोपालभट्ट—	रसमजरीटीका	३५९
गोवर्द्धनाचार्य—	सप्तशती	७१५
गोविन्दभट्ट—	पुरुषार्थानुशासन	६९
गौतमस्वामी—	ऋषिमडलपूजा	६०७
	ऋषिमडलस्तोत्र	३८२
		४२४, ६४६, ७३२
घटकर्पर—	घटकर्परकाव्य	१६४
चड कवि—	प्राकृतव्याकरण	२६२
चन्द्रकीर्त्ति—	चतुर्विंशतितीर्थंकराष्टक	५९४
	विमानशुद्धि	५३५
	सप्तपरमस्थानकथा	२४९
चन्द्रकीर्त्तिसूरि—	सारस्वतदीपिका	२६९
चाणक्य—	चाणक्यराजनीति	३२६, ६४०, ६४६, ६८३, ७१२, ७१७, ७२३, ७८७
	लघुचाणक्यराजनीति	३३६ ७१२, ७२०
चामुण्डराय—		५५
	ज्वरतिमिरभास्कर	२९८
	भावनासारसग्रह	५५, ७७, ६१५
चारुकीर्त्ति—	गीतवीतराग	३८६
चारित्रभूषण—	महीपालचरित्र	१८६
चारित्रसिंह—	कातन्त्रविभ्रमसूत्राव-चूरि	२५७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
चिंतामणि—	रमलशास्त्र	२९०
चूडामणि—	न्यायसिद्धान्तमजरी	१३६
चोखचन्द—	चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	४७३
छत्रसेन—	चदनषष्ठीव्रतकथा	६३१
जगतकीर्त्ति—	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	४९१
जगद्भूषण—	सौंदर्यलहरीस्तोत्र	४२२
जगन्नाथ—	गणपाठ	२५९
	नेमिनरेन्द्रस्तोत्र	३९९
	सुखनिधान	२०७
जतीदास—	दानकीवीनती	६४३
जयतिलक—	निजस्मृत	३८
जयदेव—	गीतगोविन्द	१६३
ब्र० जयसागर—	सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	५५७
जानकीनाथ—	न्यायसिद्धान्तमंजरी	१३५
भ० जिणचन्द्र—	जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	७५७
जिनचंद्रसूरि—	दशलक्षणव्रतोद्यापन	४८९
ब्र० जिनदास—	जम्बूद्वीपपूजा	४७७ ५०१, ५३७
	जम्बूस्वामीचरित्र	१६८
	ज्येष्ठजिनवरलाहान	७९५
	नेमिनाथपुराण	१४७
	पुष्पाजलीव्रतकथा	२३४
	सप्तर्षिपूजा	५४८
	हरिवशपुराण	१५६
	सोलहकारणपूजा	७९५
	जलयात्राविधि	६८३
प० जिनदास—	होलीरेणुकाचरित्र	२११
	अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	४५३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
जिनप्रभसूरि—	सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति	२६७
जिनदेवसूरि—	मदनपराजय	३१७
जिनलाभसूरि—	चतुर्विंशतिजिनस्तुति	३८७
जिनवर्द्धनसूरि—	अलंकारवृत्ति	३०८
जिनसेनाचार्य—	आदिपुराण	१४२, ६४६
	ऋषभदेवस्तुति	३८१
	जिनसहस्रनामस्तोत्र	३९२, ४२५, ५७३, ६४७, ७०७, ७४७
जिनसेनाचार्य—	हरिवंशपुराण	१५५
जिनसुन्दरसूरि—	होलीकथा	२५६
भ० जिनेन्द्रभूषण—	जिनेन्द्रपुराण	१४६
भ० ज्ञानकीर्त्ति—	यशोधरचरित्र	१९२
ज्ञानभास्कर—	पाशाकेवली	२८६
ज्ञानभूषण—	आत्मसंबोधनकाव्य	१००
	ऋषिमण्डलपूजा	४६३, ६२६
	गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	१२
	तत्वज्ञानतरंगिणी	५८
	पंचकल्याणकोद्यापनपूजा	६६०
	भक्तामरपूजा	५२
	श्रुतपूजा	५३७
	सरस्वतीपूजा	५१५, ५४५, ५५१
	सरस्वती स्तुति	६५७
दैवज्ञ ढुंढिराज—	जातकाभरण	२८२
त्रिभुवनचद्र—	त्रिकालचौबीसी	४८४
दयाचद्र—	तत्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा	४८२
दलिपतराय वंशीधर—	अलंकाररत्नाकर	३०८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
दामोदर—	चन्द्रप्रभचरित्र	१६५
	प्रशस्ति	६०८
	व्रतकथाकोश	२४१
देवचन्द्रसूरि—	पार्श्वनाथस्तवन	६३३
दीक्षितदेवदत्त—	सम्मेदशिखरमहात्म्य	९२
देवनंदि—	गर्भषडारचक्र	१३१, ७३७
	जैनेन्द्रव्याकरण	२५९
	चौबीसतीर्थंकरस्तवन	६०६
	सिद्धिप्रियस्तोत्र	४२१, ४२५, ४२७, ४२९, ४३१, ५७२, ५९५, ५७८, ५९७, ६०५, ६०६, ६३३, ६३७, ६४४
देवसूरि—	शांतिस्तवन	६१६
देवसेन—	आलापपद्धति	१३०
देवेन्द्रकीर्त्ति—	चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	४७३
	चन्द्रप्रभजिनपूजा	४७४
	त्रेपनक्रियोद्यापन	६३८, ७९६
	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	४९१
	पंचमीव्रतपूजा	५०४
	पंचमेरुपूजा	५१६
	प्रतिमासांतचतुर्दशीपूजा	७६१
	रविव्रतकथा	२३७, ५३५
	रैव्रतकथा	२३९
	व्रतकथाकोश	२४२
	सप्तऋषिपूजा	७९५
दौर्गसिंह—	कातन्त्ररूपमालाटीका	२५८
धनञ्जय—	द्विसंधानकाव्य	१७१
	नाममाला	२७५, ५७४

कार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
		६८६, ६६६, ७११, ७१२, ७१३
	विषापहारस्तोत्र	४१५, ४२५, ४२७, ५६५, ५७२, ५६५, ६०५, ६३३, ६३७, ६४६
र्मकलशसूरि—	सन्देहसमुच्चय	३३८
र्मकीर्त्ति —	कौमुदीकथा	२२२
	पद्मपुराण	१४६
	सहस्रगुणितपूजा	५५२
० धर्मचन्द्र—	कथाकोश	२१६
	गौतमस्वामीचरित्र	१६३
	गोम्मटसारटीका	१०
	सयोगपचमीकथा	२५३
	सहस्रनामपूजा	७४७
धर्मचन्द्रगणि—	अभिधानरत्नाकर	२७२
धमदास—	विदग्धमुखमडन	१६६
धर्मधर—	नागकुमारचरित्र	१७६
धर्मभूषण—	जिनसहस्रनामपूजा	४८०, ५५२
	न्यायदीपिका	१३५
	शीतलनाथपूजा	५४६
नदिगुरु—	प्रायश्चित समुच्चय चूलिका टीका	७५, ७८०
नन्दिषेण—	नन्दीश्वरव्रतोद्यापन	४६४
प० नकुल—	अश्वलक्षण	७८१
	शालिहोत्र	३०६
प० नयविलास—	ज्ञानार्णवटीका	१०८
नरपति—	नरपतिजयचर्या	२८५
नरसिंहभट्ट—	जिनशतटीका	३६१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
नरहरिभट्ट—	श्रवणभूषण	१६६
नरेन्द्रकीर्त्ति—	विद्यमानबीसतीर्थंकर पूजा	५३५, ६५५, ७६३
	पद्मावती पूजा	६५५
नरेन्द्रसेन—	प्रमाणप्रमेयकलिका	१३७, ५७५
	प्रतिष्ठादीपक	५२१
	रत्नत्रय पूजा	५६४
	सिद्धान्तसारसग्रह	४७
नागचन्द्रसूरि—	विपापहारस्तोत्रटीका	४१६
नागराज—	पिंगलशास्त्र	३११
नागेशभट्ट—	सिद्धान्तमंजूषिका	२७०
न गोजाभट्ट—	परिभाषेन्दुशेखर	२६१
नादमल्ल—	शार्ङ्गधरसंहिताटीका	३०६
नारचद्र—	कथारत्नसागर	२२०
	ज्योतिषसारसूत्रटिप्पण	२८३
	नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र	२८५
कविनीलकठ—	नीलकठताजिक	२८५
	शब्दशोभा	२६४
मुनिनेत्रसिंह—	सप्तनयावबोध	१४०
नेमिचन्द्र—	द्विसधानकाव्यटीका	१७२
	सुप्रभाताष्टक	६३३
ब्र० नेमिदत्त—	औषधदानकथा	२१८
	अष्टकपूजा	५६०
	कथाकोश (आराधना-कथा कोश)	२१६
	नाग श्री कथा	२३१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	धन्यकुमार चरित्र	१७३
	धर्मोपदेशश्रावकाचार	६४
	निशिभोजनकथा	२३१
	पात्रदानकथा	२३३
	प्रीतिंकरचरित्र	१८२
	श्रीपालचरित्र	२००
	सुदर्शनचरित्र	२०८
पंचाननभट्टाचार्य—	सिद्धान्तमुक्तावली	२७०
पद्मनंदि I—	पद्मनन्दिपचविंशतिका	६६
	पद्मनन्दिश्रावकाचार	६८, ६०
पद्मनंदि II—	अनन्तव्रतकथा	२१४
	करुणाष्टक	५७४, ६३३, ६३७, ६८८
	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	४९१
	दानपंचाशत	६०
	धर्मरसायन	६१
	पार्श्वनाथस्तोत्र	५६९, ७४४
	पूजा	५६०
	नंदीश्वरपंक्तिपूजा	६३६
	भावनाचौतीसी (भावनापद्धति)	५७५, ६३४
	रत्नत्रयपूजा	५२६, ५७५, ६३६
	लक्ष्मीस्तोत्र	६३७
	वीतरागस्तोत्र	४२४, ४३१, ५७४, ६३४, ७३१
	सरस्वतीपूजा	५५१, ७११

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	सिद्धपूजा	५३७
	स्तोत्र	५७५
पद्मनाभ—	भाष्वती	२८९
पद्मनाभकायस्थ—	यशोधरचरित्र	१८९
पद्मप्रभदेव—	पार्श्वनाथस्तोत्र	४०५, ६१८, ७०२, ७४५
	लक्ष्मीस्तोत्र	४१४, ४२३, ४२६, ४३२, ५६९, ५७२, ५७४, ५९६, ६४४, ६८८, ६६३, ६६५, ७०३, ७१९
पद्मप्रभसूरि—	भुवनदीपक	२८९
परमहंसपरिव्राजकाचार्य—	मुहूर्त्तमुक्तावली	२८६
	मेघदूतटीका	१८७
पाणिनी—	पाणिनीव्याकरण	२६१
पात्रकेशरी—	पत्रपरीक्षा	१३६
पार्श्वदेव—	पद्मावत्यष्टकवृत्ति	४०२
पुरुषोत्तमदेव—	अभिधानकोश	२७१
	त्रिकाण्डशेषाभिधान	२७५
	हारावलि	२११
पूज्यपाद—	इष्टोपदेश (स्वयम्भूस्तोत्र)	६३५, ६३७
	परमानंदस्तोत्र	५७४
	श्रावकाचार	६०
	समाधितंत्र	१२५
	समाधिशतक	१२७
	सर्वार्थसिद्धि	४५
पूर्णदेव—	यशोधरचरित्र	१९०
पूर्णचन्द्र—	उपसर्गहरस्तोत्र	३८१

ग्रंथकार क नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
्वीधराचार्य—	चामुण्डस्तोत्र	३८८
	भुवनेश्वरीस्तोत्र (सिद्धमहामत्र)	३४९
ाचन्द्र—	आत्मानुशासनटीका	१०१
	आराधनासारप्रबध	२१६
	आदिपुराणटिप्पण	१४३
	उत्तरपुराणटिप्पण	१४५
	क्रियाकलापटीका	५३
	तत्वार्थरत्नप्रभाकर	२१
	द्रव्यसग्रहवृत्ति	३४
	नागकुमारचरित्रटीका	१७६
	न्यायकुमुदचन्द्रिका	१३५
	प्रमेयकमलमार्त्तण्ड	१३८
	रत्नकरण्डश्रावकाचार-टीका	८२
	यशोधरचरित्रटिप्पण	१९२
	समाधिशतकटीका	१२७
	स्वयभूस्तोत्रटीका	४३४
० प्रभाचद्र—	कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	४६७
	मुनिसुव्रतछद	५५७
	सिद्धचक्रपूजा	५५३
द्रमुनि—	सामायिकपाठ	९४
लचन्द्र—	तर्कभाषाप्रकाशिका	१३२
्रदेव—	द्रव्यसग्रहवृत्ति	३४
	परमात्मप्रकाशटीका	१११
्रसेन—	क्षमावणीपूजा	५९४
	रत्नत्रयकामहार्घ व क्षमावणी	७८१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
भक्तिलाभ—	पष्ठिशतकटिप्पण	३३६
भट्टशकर—	वैद्यविनोद	३०५
भट्टोजीदीक्षित—	सिद्धान्तकौमुदी	२६७
भट्टोत्पल—	लघुजातक	२९१
	वृहज्जातक	२९१
	षटपचासिकावृत्ति	२९२
भद्रबाहु—	नवग्रहपूजाविधान	४९४
	भद्रबाहुसहिता (निमित्तज्ञान)	२८५, ४८०, ८००
भर्तृहरि—	नीतिशतक	३२५
	वरागचरित्र	१९५
	वैराग्यशतक	११७
	भर्तृहरिशतक	३३३, ७१५
भागचद—	महावीराष्टक	४१३, ४२६
भानुकीर्त्ति—	रोहिणीव्रतकथा	२३९
	सिद्धचक्रपूजा	५५३
भानुजीदीक्षित—	अमरकोषटीका	२७४
भानुदत्तमिश्र—	रसमजरी	३५९
तीर्थमुनि—	न्यायमाला	१३५
परमहसपरिव्राजकाचार्यश्रीभारती-तीर्थमुनी—	न्यायमाला	१३५
भारवी—	किरातार्जुनीय	१६१
भावशर्मा—	लघुस्नपनटीका	५३३
भास्कराचार्य—	लीलावती	३६८
भूपालकवि—	भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्र	४११, ४२५, ५७२, ५९५, ६०५, ६३३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
प० मगल (सग्रह कर्त्ता)—	धर्मरत्नाकर	६२
मणिभद्र—	क्षेत्रपालपूजा	६८६
मदनकीर्त्ति—	अनंतव्रतविधान	२१४
	षोडशकारणविधान	५१४
मदनपाल—	मदनविनोद	३००
मानमिश्र—	भावप्रकाश	२४६
मधुसूदनसरस्वती—	सिद्धान्तविन्दु	२७०
मनूसिंह—	योगचिन्तामणि	३०१
मनोहरश्याम—	श्रुतवोधटीका	३१५
मल्लिनाथसूरि—	रघुवंशटीका	१६३
	शिशुपालवधटीका	१६६
मल्लिभूषण—	दशलक्षणव्रतोद्यापन	४८६
मल्लिषेणसूरि—	नागकुमारचरित्र	१७५
	भैरवपद्मावतीकल्प	३४६
	सज्जनचित्तवल्लभ	३३७, ५७३
	स्याद्वदमजरी	१४१
महादेव—	मुहूर्त्तदीपक	२६०
	सिद्धान्तमुक्तावलि	१४०
महासेनाचार्य—	प्रद्युम्नचरित्र	१८०
महीक्षपणकवि—	अनेकार्थध्वनिमजरी	२७१
भ० महीचन्द—	त्रिलोकतिलकस्तोत्र	६८२, ७१२
	पचमेरूपूजा	६०७
	पद्मावतीछद	५६०, ६०७
महीधर—	मत्रमहोदधि	३५१, ५७७
	स्वर्णाकर्षणविधान	४२८
महीभट्टी—	सारस्वतप्रक्रियाटोका	२६७
महेश्वर—	विश्वप्रकाश	२७७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	शब्द व धातुभेदप्रभेद	२७७
माघ—	शिशुपालवध	१८६
माघनंदि—	चतुर्विंशतितीर्थंकर जयमाल	३८८, ४६६, ५७६
माणिक्यनंदि—	परीक्षामुख	१३६
माणिक्यभट्ट—	वैद्यामृत	३०५
माणिक्यसूरि—	नलोदयकाव्य	१७४
माधवचन्द्रत्रैविद्यदेव—	त्रिलोकसारवृत्ति	३२२
	क्षपणासारवृत्ति	७
माधवदेव—	न्यायसार	१३५
मानतुंगाचार्य—	भक्तामरस्तोत्र	४०७, ४२५, ४२६, ४३१, ५६६, ५६६, ६०३, ६०५, ६१६, ६२८, ६३४, ६३७, ६३६, ६४४, ६४८, ६५१, ६५२, ६६४, ६६५, ६७०, ६८१, ६८५, ६६१, ७०३, ७०५, ७०६, ७०७, ७४१
मुनिभद्र—	शांतिनाथस्तोत्र	४१७, ७१५
प० मेधावी—	अष्टांगोपाख्यान	२१५
	धर्मसग्रहश्रावकाचार	६२
भ मेरूचद—	अनन्तचतुर्दशीपूजा	६०७
मोहन—	कलशविधान	४६६
यश कीर्त्ति—	अष्टाह्निकाकथा	६४५
	धर्मशर्माभ्युदयटीका	१७४
	प्रबोधसार	३३१
यशोनन्दि—	धर्मचक्रपूजा	४६१, ५१५
	पचपरमेष्ठीपूजाविधि	५०२, ५०६, ५१८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
यशोविजय—	कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	६५८
योगदेव —	तत्त्वार्थवृत्ति	२२
रघुनाथ —	तार्किकशिरोमणि	१३३
	रघुनाथविलास	३१२
साधुरणमल्ल—	धर्मचक्रपूजा	४९२
रत्नशेखरसूरि—	छंदकोश	३०९
रत्नकीर्त्ति —	रत्नत्रयविधानकथा	२४२
	रत्नत्रयविधानपूजा	५३०
रत्नचन्द्—	जिनगुणसंपत्तिपूजा	४७७, ५१०
	पंचमेरुपूजा	५०५
	पुष्पांजलिव्रतपूजा	५०८
	सुभौमचरित्र (भौमचरित्र)	१८५, २०९
रत्ननंदि—	नन्दीश्वरद्वीपपूजा	४९२
	पल्यविधानपूजा	५०६, ५०९, ५१३
	भद्रबाहुचरित्र	१८३
	महीपालचरित्र	१८६
रत्नपाल—	सोलहकारणकथा	६९५
रत्नभूषण—	सिद्धपूजा	५५४
रत्नशेखर—	गुणस्थान क्रमारोहसूत्र	८
	समवसरणपूजा	५३७
रत्नप्रभसूरि—	प्रमाणनयतत्त्वावलोकालंकार टीका	१३७
रत्नाकर—	आत्मनिंदास्तवन	३८०
रविषेणाचार्य—	पद्मपुराण	१४८
राजकीर्त्ति—	प्रतिष्ठादर्श	५२०
	षोडशकारणव्रतोद्यापन पूजा	५४३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
राजमल्ल—	अध्यात्मकमलमार्त्तण्ड	१२९
	जम्बूस्वामीचरित्र	१६९
	लाटीसंहिता	८४
राजशेखर—	कर्पूरमंजरी	३१६
राजसिंह—	पार्श्वमहिम्नस्तोत्र	४०६
राजसेन—	पार्श्वनाथस्तोत्र	५६६, ७३७
राजहंसोपाध्याय—	षष्ठ्याधिकशतकटीका	४४
मुमुक्षुरामचन्द्र—	पुण्यास्रवकथाकोष	२३३
रामचन्द्राश्रम—	सिद्धान्तचन्द्रिका	२६८
रामवाजपेय—	समरसार	२९४
रायमल्ल—	त्रैलोक्यमोहनकवच	६९०
रुद्रभट्ट—	वैद्यजीवनटीका	३०४
	शृङ्गारतिलक	३५९
रोमकाचार्य—	जन्मप्रदीप	२८१
लंकानाथ—	अर्थप्रकाश	२९६
लक्ष्मण (अमरसिंहात्मज)—	लक्ष्मणोत्सव	३०३
लक्ष्मीनाथ—	पिंगलप्रदीप —	३११
लक्ष्मीसेन—	अभिषेकविधि	४५८
	कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा	४६४, ५१७
	चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा एवं स्तोत्र	४२३
	चिंतामणिस्तवन	७६१
	सप्तर्षिपूजा	५४८
लघुकवि—	सरस्वतीस्तवन	४१९
ललितकीर्त्ति—	अक्षयदशमीकथा	६९५
	अनन्तव्रतकथा	६८५, ६९५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	आकाशपचमीकथा	६४५
	कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा	४६८
	चौसठशिवकुमारका	
	काजी की पूजा	५१४
	जिनचरित्रकथा	६४५
	दशलक्षणीकथा	६६५
	पल्यविधानपूजा	५०६
	पुष्पांजलिव्रतकथा	६६५
		७६४
	रत्नत्रयव्रतकथा	६४५, ६६५
	रोहिणीव्रतकथा	६४५
	षोडशकारणकथा	६४५
	समवसरणपूजा	५४६
	सुगंधदशमीकथा	६४५
लोकसेन—	दशलक्षणकथा	२२७, २४२
लोकेशकर—	सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका	२६६
लोलिम्बराज—	वैद्यजीवन	७१५
लोगाक्षिभास्कर—	पूर्वमीमासार्थप्रकरण संग्रह	१३७
लोलिम्बराज—	वैद्यजीवन	३०३
वनमालीभट्ट—	भक्तिरत्नाकर	८००
वरदराज—	लघुसिद्धान्तकौमुदी	२६३
	सारसग्रह	१४०
वररुचि—	एकाक्षरीकोश	२७०
	योगशत	३०२
	शब्दरूपिणी	२६४
	श्रुतबोध	३१५
	सर्वार्थसाधनी	२७८
वराहमिहर—	षट्पचासिका	२६२
भ० वर्द्धमानदेव—	वरागचरित्र	१६८
वर्द्धमानसूरि—	लग्नशास्त्र	२६१
वल्लाल—	भोजप्रबन्ध	१८५
वसुनन्दि—	देवागमस्तोत्रटीका	३६५
	प्रतिष्ठापाठ	५२१
	प्रतिष्ठासारसग्रह	५२२
	मूलाचारटीका	७६
वाग्भट्ट—	नेमिनिर्वाण	१७७
	वाग्भट्टालकार	३१२
वादिचन्द्रसूरि—	कर्मदहनपूजा	५६०
	ज्ञानसूर्योदयनाटक	३१६
	पवनदूतकाव्य	१७८
वादिराज—	एकीभावस्तोत्र	३८२
		४२५, ४२७, ५७२, ५७४,
		५६५, ६०५, ६३३, ६३७
		६४४, ६५१, ६५२, ६५७,
		७२१
	गुर्वाष्टक	६५७
	पार्श्वनाथचरित्र	१७८
	यशोधरचरित्र	१६०
वादीभसिंह—	क्षत्रचूडामणि	१६२
	पचकल्याणकपूजा	५००
वामदेव—	त्रिलोकदीपक	३२०
	भावसग्रह	७८
	सिद्धान्तत्रिलोकदीपक	३२३
वासवसेन—	यशोधरचरित्र	१६०
वाहडदास—	सन्निपातनिदान	३०६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
विजयकीर्ति—	चन्दनषष्ठिव्रतपूजा	५०६
आ० विद्यानन्दि—	अष्टसहस्री	१२६, १३०
	आप्तपरीक्षा	१२६
	पत्रपरीक्षा	१३६
	पचनमस्कारस्तोत्र	४०१
	प्रमाणपरीक्षा	१३७
	प्रमाणमीमासा	१३८
	युक्त्यनुशासनटीका	१३६
	श्लोकवार्त्तिक	४४
मुमुक्षुविद्यानन्दि—	सुदर्शनचरित्र	२०६
उपाध्यायविद्यापति—	चिकित्साजनम्	२६८
विद्याभूषणसूरि—	चितामणिपूजा (वृहद्)	४७५
विनयचन्द्रसूरी—	गर्जसिंहकुमारचरित्र	१६३
विनयचन्द्रमुनि—	चतुर्दशसूत्र	१४
विनयचन्द्र—	द्विसधानकाव्यटीका	१७२
	भूपालचतुर्विंशतिका स्तोत्रटीका	४१२
विनयरत्न—	विदग्धमुखमडनटीका	१६७
विमलकीर्त्ति—	धर्मप्रश्नोत्तर	६१
	सुखसपत्तिविधानकथा	२४५
विवेकनदि—	त्रिभगीसारटीका	३२
विश्वकीर्त्ति—	भक्तामरव्रतोद्यापनपूजा	५२३
विश्वभूषण—	अढाईद्वीपपूजा	४४५
	आठकोडमुनिपूजा	४६१
	इन्द्रध्वजपूजा	४६२
	कलशविधि	४६६
	कुण्डलगिरिपूजा	४६७
	गिरिनारक्षेत्रपूजा	४६६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	तेरहद्वीपपूजा	४८४
	पद	५६१
	पूजाष्टक	५१३
	मागीतु गीगिरिमडल पूजा	५२६
	रेवानदीपूजा	५३२
	शत्रुञ्जयगिरिपूजा	५१३
	सप्तर्षिपूजा	५४८
	सिद्धकूटपूजा	५१६
विश्वसेन—	क्षेत्रपालपूजा	४६७
	षणवतिक्षेत्रपालपूजा	५१६
	षणवतिक्षेत्रपूजा	५४१
	समवसरणस्तोत्र	४१६
विष्णुभट्ट—	पट्टरीति	१३६
विष्णुशर्मा—	पचतन्त्र	३३०
	पचाख्यान	३३२
	हितोपदेश	३४५
विष्णुसेनमुनि—	समवसरणस्तोत्र	४१६, ४२५
वीरनन्दि—	आचारसार	४६
	चन्द्रप्रभचरित्र	१६४
वीरसेन—	श्रावकप्रायश्चित्त	८६
वुपाचार्य—	उपसर्गार्थविवरण	५२
वेदव्यास—	नवग्रहस्तोत्र	६४६
वैजलभूपति—	प्रबोधचद्रिका	३१७
वृहस्पति—	सरस्वतीस्तोत्र	४२०
शकरभगति—	बालबोधिनी	१३८
शकरभट्ट—	शिवरात्रिउद्यापन विधिकथा	२४७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
शङ्कराचार्य—	ग्रानन्दलहरी	६०८
	ग्रपराधसूदनस्तोत्र	६६२
	गोविन्दाष्टक	७३३
	जगन्नाथाष्टक	३८६
	दक्षिणामूर्त्तिस्तोत्र	६६०
	हरिनाममाला	३६७
शत्रूसाधु—	जिनशतटीका	३६०
शम्भूराम—	नेमिनाथपूजाष्टक	४६६
शाकटायन—	शाकटायनव्याकरण	२६५
शान्तिदास—	ग्रनंतचतुर्दशीपूजा	४५६
	गुरुस्तवन	६५७
शार्ङ्गधर—	रसमंजरी	३०२
	शार्ङ्गधरसंहिता	३०५
प० शाली—	नेमिनाथस्तोत्र	३०६, ७५७
शालिनाथ—	रसमञ्जरी	३०२
ग्रा० शिवकोटि—	रत्नमाला	८३
शिवजीलाल—	ग्रभिधानसार	२७२
	पचकल्याणकपूजा	४८६
	रत्नत्रयगुणकथा	२३७
	षोडशकारणभावनावृत्ति	८८
शिववर्मा—	कातन्त्रव्याकरण	२५६
शिवादित्य—	सप्तपदार्थी	१४०
शुभचन्द्राचार्य—I	ज्ञानार्णव	१०६
शुभचन्द्र—II	ग्रष्टाह्निकाकथा	२१५
	करकण्डुचरित्र	१६१
	कर्मदहनपूजा	४६५, ५३७, ६४५
	कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाटीका	१०४
	गणधरवलयपूजा	६६०
	चन्दनषष्ठिव्रतपूजा	४७३
	चन्दनाचरित्र	१६४
	चतुर्विंशतिजिनाष्टक	५७८
	चन्द्रप्रभचरित्र	१६५
	चारित्रशुद्धिविधान	४७५
	चिन्तामणिपार्श्वनाथ पूजा	६४५
	जीवन्धरचरित्र	१७०
	तत्त्ववर्णन	२०
	तीसचौवीसीपूजा	५३७
	तेरहद्वीपपूजा	४८३
	पचकल्याणपूजा	५०२
	पंचपरमेष्ठीपूजा	५०२
	पल्यव्रतोद्यापन	५०७, ५३८
	पाडवपुराण	१५०
	पुष्पांजलिव्रतपूजा	५०८
	श्रेणिकचरित्र	२०३
	सज्जनचित्तवल्लभ	३३७
	सार्द्धद्वयदीपपूजा (ग्रढाईद्वीपपूजा)	४५५
	सुभाषितार्णव	३४१
	सिद्धचक्रपूजा	५५३
शोभनमुनि—	जिनस्तुति	३६१
श्रीचन्दमुनि—	पुराणसार	१५१
श्रीधर—	भविष्यदत्तचरित्र	१८४
	शुभमालिका	५७४
	श्रुतावतार	२७५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
नागराज—	भावशतक	३३४
श्रीनिधिसमुद्र—	-	
श्रीपति—	जातककर्मपद्धति	२८१
	ज्योतिषपटलमाला	६७२
श्रीभूषण—	अनन्तव्रतपूजा	४५६, ५१५
	चारित्रशुद्धिविधान	४७४
	पाण्डवपुराण	१५०
	भक्तामरउद्यापनपूजा	५२३, ५४०
	हरीवंशपुराण	१५७
श्रुतकीर्त्ति—	पुष्पांजलीव्रतकथा	२३४
श्रुतसागर—	अनतव्रतकथा	२१४
	अशोकरोहिणीकथा	२१६
	आकाशपंचमीव्रतकथा	२१६
	चन्दनषष्ठिव्रतकथा	२२४
		५१४, ५१७
	जिनसहस्रनामटीका	३९३
	ज्ञानार्णवगद्यटीका	१०७
	तत्वार्थसूत्रटीका	२८
	दशलक्षणव्रतकथा	२२७
	पल्यविधानव्रतोपाख्यान कथा	२३३
	मुक्तावलिव्रतकथा	२३६
	मेघमालाव्रतकथा	५१४
	यशस्तिलकचम्पूटीका	१८७
	यशोधरचरित्र	१९२
	रत्नत्रयविधानकथा	२३७
	रविव्रतकथा	२३७
	विष्णुकुमारमुनिकथा	२४०
	व्रतकथाकोष	२४१
	षट्पाहुडटीका	११९
	श्रुतस्कंधपूजा	५४७
	षोडशकारणपूजा	५१०
	सरस्वतीस्तोत्र	४२०
	सिद्धचक्रपूजा	५५३
	सुगन्धदशमीकथा	५१४
सकलकीर्त्ति—	अष्टांगसम्यग्दर्शन	२१५
	ऋषभनाथचरित्र	१६०
	कर्मविपाकटीका	५
	तत्वार्थसारदीपक	२३
	द्वादशानुप्रेक्षा	१०९
	धन्यकुमारचरित्र	१७२
	परमात्मराजस्तोत्र	४०३
	पुराणसारसंग्रह	१५१
	प्रश्नोत्तरोपासकाचार	७१
		९१
	पार्श्वनाथचरित्र	१७९
	मल्लिनाथपुराण	१५२
	मूलाचारप्रदीप	७९
	यशोधरचरित्र	१२८
	वर्द्धमानपुराण	१५३
	व्रतकथाकोश	२४२
	शांतिनाथचरित्र	१९८
	श्रीपालचरित्र	२०१
	सद्भाषितावलि	३३८, ३४२
	सिद्धान्तसारदीपक	४६
	सुदर्शनचरित्र	२०८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
मुनिसकलकीर्ति—	नदीश्वरपूजा	७६१
सकलचन्द्र—	चैत्यवदना	६६८
	दर्शनस्तोत्र	५७४
सकलभूषण—	उपदेशरत्नमाला	५०
	गोम्मटसारटीका	१०
सदानदगणि—	सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति	२६६
आचार्यसमंतभद्र—	आप्तमीमासा	६४७
	जिनशतकालंकार	३६१
	देवागमस्तोत्र	३६४ ४२५, ५७५, ७२०
	युक्त्यनुशासन	१३० १३६ ६४७
	रत्नकरण्डश्रावकाचार	८१, ६६१, ७६५
	बृहद्स्वयंभूस्तोत्र	४७२, ६२८
	समंतभद्रस्तुति	५७८
	सहस्रनामलघु	४२०
	स्वयंभूस्तोत्र	४२५, ४३३, ५७४, ५६५, ६३३, ७२०
समयसुन्दरगणि—	रघुवशटीका	१६४
	वृत्तरत्नाकरछदटीका	३१४
	शंबुप्रद्युम्नप्रबंध	१६७
समयसुन्दरोपाध्याय—	कल्पसूत्रटीका	७
सहसकीर्त्ति—	त्रैलोक्यसारटीका	३२३
कविसारस्वत—	शिलोञ्छकोश	२७०
सिंहतिलक—	वर्द्धमानविद्याकल्प	३५१
सिंहनन्दि—	धर्मोपदेशपीयूषश्रावकाचार	६४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	नमस्कारमत्रकल्पविधि सहित	३४६
सिद्धनागार्जुन—	कक्षपुट	२६७
	जिनसहस्रनामस्तोत्र	३६२
सिद्धसेनदिवाकर—	वर्द्धमानद्वात्रिंशिका	४१५
	सन्मतितर्क	१४०
सुखदेव—	आयुर्वेदमहोदधि	२६७
वर्णीसुखसागर—	मुक्तावलीपूजा	५२७
सुधासागर—	पचकल्याणकपूजा	५००, ५१६, ५३७
	परमसप्तस्थानकपूजा	५१६
सुन्दरविजयगणि—	सौभाग्यपंचमीकथा	२५५
सुमतिकीर्त्ति—	कर्मप्रकृतिटीका	३
सुमतिब्रह्म—	चारित्रशुद्धिविधान	४७५
सुमतिविजयगणि—	रघुवंशटीका	१६४
सुमतिसागर—	त्रैलोक्यसारपूजा	४८५
	दशलक्षणव्रतपूजा	४८६, ५४०
	षोड्शकारणपूजा	५१७ ५५७
सुरेन्द्रकीर्त्ति—	अनन्तजिनपूजा	४५६
	अष्टाह्निकापूजाकथा	४६०
	छदकीयकवित्त	३५५
	ज्ञानपचविंशतिका	
	व्रतोद्यापन	४८१
	(श्रुतस्कधपूजा)	५४७
	ज्येष्ठजिनवरपूजा	५१६
	पंचकल्याणकपूजा	४६६
	पचमासचतुर्दशीपूजा	५०४ ५४०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	नेमिनाथपूजा	४६६
	सुखसम्पत्तिव्रतोद्यापन	५५५
सुरेश्वराचार्य—	पंचिकरणवार्त्तिक	२६१
सुयशकीर्त्ति—	पंचकल्याणकपूजा	५००
सुल्हणकवि—	वृत्तरत्नाकरटीका	३१४
दैवज्ञ पं० सूर्य—	रामकृष्णकाव्य	१६४
आ० सोमकीर्त्ति—	प्रद्युम्नचरित्र	१८१
	सप्तव्यसनकथा	२५०
	समवशरणपूजा	५४६
सोमदत्त—	बड़ा सिद्धपूजा (कर्मदहनपूजा)	६३६
सोमदेव—	अध्यात्मतरंगिणी	६६
	नीतिवाक्यामृत	३३०
	यशस्तिलकचम्पू	१८७
सोमदेव—	सूतक वर्णन	
सोमप्रभाचार्य—	मुक्तावलिव्रतकथा	२३६
	सिन्दूरप्रकरण	३४०
	सूक्तिमुक्तावलि	३४२, ६३५
सोमसेन—	त्रिवर्णाचार	५८
	दशलक्षणजयमाल	७६५
	पद्मपुराण	१४८
	मेरूपूजा	७६५
	विवाहपद्धति	५३६
सौभाग्यगणि—	प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका	२६२
हयग्रीव—	प्रश्नसार	२८८
हर्ष—	नैषधचरित्र	१७७
हर्षकल्याण—	पंचमीव्रतोद्यापन	५३६
हर्षकीर्त्ति—	अनेकार्थशतक	२७१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	छंदोशतक	३०६
	पंचमीव्रतोद्यापन	५०४
	भक्तामरस्तोत्रटीका	४०६
	योगचिंतामणि	३०१
	लघुनाममाला	२७६
	लब्धिविधानपूजा	५३३
	श्रुतबोधवृत्ति	३१५
महाकविहरिचन्द—	धर्मशर्माभ्युदय	१७४
हरिभद्रसूरि—	क्षेत्रसमासटीका	५४
	योगबिंदुप्रकरण	११६
	षट्दर्शनसमुच्चय	१३६
हरिरामदास—	पिंगलछंदशास्त्र	३११
हरिषेण—	नन्दीश्वरविधानकथा	२२६, ५१४
	कथाकोश	२१६
हेमचन्द्राचार्य—	अभिधानचिन्तामणि नाममाला	२७१
	अनेकार्थसंग्रह	२७१
	अन्ययोगव्यवच्छेदकद्वात्रिंशिका	५७३
	छंदानुशासनवृत्ति	३०६
	द्वाश्रयकाव्य	१७१
	धातुपाठ	२६०
	नेमिनाथचरित्र	१७७
	योगशास्त्र	११६
	लिंगानुशासन	२७७
	वीतरागस्तोत्र	१३६, ४१६
	वीरद्वात्रिंशतिका	१३८
	शब्दानुशासन	२६४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	शब्दानुशासनवृत्ति	२६४
	हेमीव्याकरण	२७०
	हेमीव्याकरणवृत्ति	२७०

हिन्दी भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अकूमल—	शीलबत्तीसी	७५०
अखयराज—	चौदहगुणस्थानचर्चा	१६
	भक्तामरभाषा	७५५
अक्षयराम—	पद	५८५, ५८६
अगरदास—	कवित्त	७४८, ७६८
	कुंडलिया	६६०
अचलकीर्त्ति—	मनोरथमाला	७६४
	विषापहारस्तोत्रभाषा	४१६, ६५०, ६७०, ७७४, ६६४
	मत्रनवकाररास	६४७
अजयराज—	चारमित्रोंकीकथा	२२५
	पद	५८१, ६६७, ७२४, ५८०, ५८१
	विनती	७७६, ७८३
	वंसतपूजा	७८३
ब्रह्मअजित—	सतिलकरास	७०७
अनन्तकीर्त्ति—	पद	५८५
अबजद—	शकुनावली	२६२
अभयचन्द—	पूजाष्टक	५१२
अभयचन्दसूरि—	विक्रमचौबोलीचौपई	२४०
मुनिअभयदेव—	थमणपार्श्वनाथस्तवन	६१६
अमृतचन्द—	पद	५८६
अवधू—	बारहअनुप्रेक्षा	७२२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
आणद—	चतुर्विंशतितीर्थंकरस्तवन	४३७
	तमाखूकीजयमाल	४३६
	पद	७७७
आनन्द—	कोकसार	३५३
आनन्दघन—	पद	७१०
आनन्दसूरि—	चौबीसजिनमातापिता स्तवन	६१६
	नेमिराजुलबारहमासा	६१८
	साधुवंदना	६१७
साहआलू—	द्वादशानुप्रेक्षा	१०६, ६६१
आशानद—	पूजाष्टक	५१२
आसकरण—	समकितढाल	६२
इन्द्रजीत—	रसिकप्रिया	६७६, ७४३
इन्द्रजीत—	मुनिसुव्रतपुराण	१५३
उत्तमचद—	पद	४४५
उदयभानु—	भोजरासो	७६७
उदयराम—	पद	७८६, ७६८
उदयलाल—	चारूदत्तचरित्र	१६८
	त्रिलोकस्वरूपव्याख्या	३२२
	नागकुमारचरित्र	१७६
ऋषभदास—	मूलाचारभाषार	५१६, ५३०
	रत्नत्रयपूजा	७६
ऋषभहरी—	पद	५८५
कनककीर्त्ति—	आदिनाथकीविनती	५६१, ७२५
	जिनस्तवन	७७६
	तत्वार्थसूत्रटीका	३०, ७२६
	पार्श्वनाथकीआरती	५६१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	भक्तिपाठ	६५१
	पद	६६४, ७०२, ७२४, ७७४
	विनती	६२१
	स्तुति	६०१, ६५०
कनकसोम—	आर्द्रकुमारधमाल	६१७
	आषाढभूतिचौढालिया	६१७
	मेघकुमारचौढालिया	६१७
कन्हैयालाल—	कवित्त	७८०
कपोत—	मोरपिच्छधारीकृष्ण के कवित्त	६७३
ब्र कपूरचन्द—	पद	४४५, ५७०, ६२४
कबीर—	दोहा	७६०, ७८१
	पद	७७७, ७९३
	साखी	७२३
कमलकलश—	वभणवाडीस्तवन	६१६
कमलकीर्त्ति—	आदिजिनवरस्तुति (गुजराती)	४३६
कर्मचन्द—	पद	५८७
कल्याणकीर्त्ति—	चारुदत्तचरित्र	१६७
किशन—	छहढाला	६७४,
किशनगुलाब—	पद	५८४, ६१४, ६६६
किशनदास—	पद	६४९
किशनलाल—	कृष्णबालविलास	४३७
किशनसिंह—	क्रियाकोशभाषा	५३
	पद	५९०, ७०४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	रात्रिभोजनकथा	२३८
कुवलयचन्द—	नेमिनाथपूजा	७९३
कुशललाभगणि—	ढोलामारूवणीचौपई	२२५
कुशल विजय—	विनती	७८२
केशरगुलाब—	पद	४४५
केशरीसिंह—	सम्मेदशिखरविलास	९२
	वर्द्धमानपुराण	१५४, १६६
केशव—	कलियुगकीकथा	६२२
	सदयवच्छसावलिंगा की चौपई	७५४
केशवदास—I	वैद्यमनोत्सव	६४९
केशवदास—II	कवित्त	६८३, ७७०
	कविप्रिया	१६१
	नखसिखवर्णन	७७२
	रसिकप्रिया	७७१, ७९९
	रामचन्द्रिका	१९४
केशवसेन—	पंचमीव्रतोद्यापन	६३८
कौरपाल—	चौरासीबोल	७०१
कृपाराम—	ज्योतिषसारभाषा	२८२, ५९८
कृष्णदास—	रत्नावलीव्रतविधान	५३१
कृष्णदास—	सतसईटीका	७२७
कृष्णराय—	प्रद्युम्नरास	७२२
खजमल—	सतियो की सज्झाय	४५१
खड्गसेन—	त्रिलोकसारदर्पणकथा	३२१, ६८६, ६९०,
खानचन्द—	परमात्मप्रकाशबालावबोधटीका	१११

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
खुशालचन्द—	अनन्तव्रतकथा	२१४
	आकाशपंचमीकथा	२४५
	आदित्यव्रतकथा (रविवारकथा)	७७५
	आरतीसिद्धोकी	७७७
	उत्तरपुराणभाषा	१४५
	चन्दनषष्ठीव्रतकथा	२२४ २४४, २४६
	जिनपूजापुरन्दरकथा	२४४
	ज्येष्ठजिनवरकथा	२४४
	धन्यकुमारचरित्र	१७३, ७२६
	दशलक्षणकथा	२४४, ७३१
	पद्मपुराणभाषा	१४६
	पल्यविधानकथा	२३३
	पुष्पांजलिव्रतकथा	२३४ २४४, ७३१
	पूजाएवंकथासंग्रह	५१६
	मुकुटसप्तमीकथा	२४४ ७३१
	मुक्तावली व्रतकथा	२४५
	मेघमालाव्रतकथा	२३६ २४८
	यशोधरचरित्र	१६१, ७११
	लब्धिविधानकथा	२४४
	शांतिनाथपुराण	१५५
	षोडशकारणव्रतकथा	२४४
	सप्तपरमस्थानव्रतकथा	२४४
	हरिवंशपुराण	१५८
	पद	५८२, ६२४ ६६८, ६६८, ७०२, ७८३, ७६८
खेतसिंह—	नेमीश्वर का बारहमासा	७६२
	नेमीश्वरराजुलकीलहुरि	७७६
	नेमिजिनदव्याहलौ	६३८
खेमचन्द—	चौबीसजिनस्तुति	४३७
	पद	५८०, ५८३, ५६१, ६४६
गङ्ग—	पद्यसंग्रह	७१०
गंगादास—	रसकौतुक राजसभारंजन	५७६
गंगादास—	आदिपुराणविनती	७०१
	आदित्यवारकथा	७६५
	झूलना	७५७
	त्रिभुवनकीवीनती	७७२
गंगाराम—	पद	६१५
	भक्तामरस्तोत्रभाषा	४१०
गारवदास—	यशोधरचरित्र	१६१
गिरधर—	कवित्त	७७२, ७८६
गुणकीर्त्ति—	चतुर्विंशतिछप्पय	६०१
	चौबीसगणधरस्तवन	६०६
	सीलरास	६०२
गुणचन्द्र—	आदीश्वरकेदशभव	७६२
	पद	५८१, ५८५, ५८७ ५८८
गुणनंदि—	रत्नावलिकथा	२४६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
गुणपूरण—	पद	७९८
गुणप्रभसूरि—	नवकारसज्झाय	६१८
गुणसागर—	द्वीपायनढाल	४४०
	शातिनाथस्तवन	७०२
गुमानीराम—	पद	६९९
गुलाबचन्द—	कक्का	६८३
गुलाबराय—	वडाकक्का	६८५
ब्रह्म गुलाल—	कक्काबत्तीसी	६७९
	कवित्त	६७०, ६८२
	गुलालपच्चीसी	७१४
	त्रैपनक्रिया	७४०
	द्वितीयसमोसरण	५६६
गोपीकृष्ण—	नेमिराजुलव्याहलो	२३२
गोरखनाथ—	गोरखपदावली	७६७
गोविन्द—	बारहमासा	६९६
घनश्याम—	पद	६२३
घासी—	मित्रविलास	३३४
चन्द—	चतुर्विंशतितीर्थंकरस्तुति	६८५, ७२०
	पद	५८७, ७९३
	गुणस्थानचर्चा	८
चंद्रकीर्त्ति—	समस्तव्रतकीजयमाल	५९४
चन्द्रभान—	पद	५९१
चन्द्रसागर—	द्वादशव्रतकथासग्रह	२२८
चम्पाबाई—	चम्पाशतक	४३७
चम्पाराम—	धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार	६१
	भद्रबाहुचरित्र	१८३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
चम्पालाल—	चर्चासागर	१६
चतर—	चन्दनमलयागिरिकथा	२२३
चतुर्भुजदास—	पद	७७८
	मधुमालतीकथा	२३५
चरणदास—	ज्ञानस्वरोदय	७५६
चिमना—	आरतीपंचपरमेष्ठी	७९१
चैनविजय—	पद	५८८, ७९८
चैनसुखलुहाडिया—	अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	४५२
	जिनसहस्रनामपूजा	४८०, ५५२
	पद	४४६, ७९८
	श्रीपतिस्तोत्र	४१८
छत्रपतिजैसवाल—	द्वादशानुप्रेक्षा	१०९
	मनमोदनपंचशतीभाषा	३३४
छाजू—	पार्श्वजिनगीत	४ ८
छीतरठोलिया—	होलीकीकथा	२५५, ६८५
छीहल—	पंचेन्द्रियबेलि	६३८
	पंथीगीत	७६५
	पद	७२३
	वैराग्यगीत (उदरगीत)	६३७
छोटीलालजैसवाल—	तत्वार्थसारभाषा	३०
छोटेलालमित्तल—	पंचकल्याणकपूजा	५००
जगजीवन—	एकीभावस्तोत्रभाषा	६०५
जगतरामगोदीका—	पद	४४५, ५८१, ५८२, ५८४, ६१५, ६६७, ६९९, ७२४, ७५७, ७८३, ७९८, ७९९

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र स०
	जिनवाणीस्तवन	३६०
जगतराय—	पद्मनंदिपच्चीसीभाषा	६७
	सम्यक्त्वकौमुदीकथा	२५२
जगतकवि—	रामबत्तीसी	४१४
जगराम—	पद	४०५, ६६८ ७८५
जगरूप—	प्रतिमास्थापककू उपदेश	७०
	पार्श्वनाथस्तवन	६८१
	श्वेताबरमतके ८४ बोल	७७६
जनमल	पद	५८५
जनमोहन—	स्नेहलीला	७७१
जनराज—	षट्ऋतुवर्णनबारहमासा	६५६
जयकिशन—	कवित्त	६४३
जयकीर्त्ति—	पद	५८५ ५८८
	बकचूलरास	३६३
	महिम्नस्तवन	४२५
	रविव्रतकथा	६६६
जयचन्दछाबडा—	अध्यात्मपत्र	६६
	अष्टपाहुडभाषा	६६
	आप्तमीमासाभाषा	१३०
	कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाभाषा	१०४
	चद्रप्रभचरित्रभाषा	१६६
	ज्ञानार्णवभाषा	१०८
	तत्वार्थसूत्रभाषा	२६
	देवपूजाभाषा	४६०
	देवागमस्तोत्रभाषा	३६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	द्रव्यसग्रहभाषा	३६
	परीक्षामुखभाषा	१३६
	भक्तामरस्तोत्रभाषा	४१०
	समयसारभाषा	१२४
	सर्वार्थसिद्धिभाषा	४६
	सामायिकपाठभाषा	६६ ५६७
जयलाल—	कुशीलखडन	५२
पाडे जयवत—	तत्वार्थसूत्रटीका	२६
जयसागर—	चतुर्विंशतिजिनस्तवन (चौवीसीस्तवन)	६१६, ७०६
	जिनकुशलसूरिचौपई	६१८
जयसोमगणि—	बारहभावना	६१७
जवाहरलाल—	सम्मेदशिखरपूजा	५५०
जसकीर्त्ति—	ज्येष्ठजिनवरकथा	२२५
जसराज—	बारहमासा	७८०
जसवतसिंहराठौड—	भाषाभूषण	३१२
जसुराम—	राजनीतिशास्त्रभाषा	३३५
जादूराम—	पद	४४५
जितचद्रसूरि—	आदीश्वरस्तवन	७००
	पार्श्वजिनस्तवन	७००
	बारहभावना	७००
	महावीरस्तवन	७००
	विनतीपाठस्तुति	७००
जितसागरगणि—	नेमिस्तवन	४००
जितसिंहसूरि—	चतुर्विंशतिजिनराज स्तुति	७००

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	नेमिजिनस्तवन	६१८
	प्रवचनसार	११४
	प्रीतिंकरचरित्र	१८३
	भावदीपक	७७
	वारिषेणमुनिकथा	२४०
	सम्यक्त्वकौमुदीभाषा	२५२, ६८६
	समन्तभद्रकथा	७५८
	पद	४४५, ६६४, ६६६, ७८६, ७६८
जौंहरीलालबिलाला—	विद्यमानबीसतीर्थंकरपूजा	५३५
	आलोचनापाठ	५६१
ज्ञानचंद—	लब्धिविधानपूजा	५३४
ज्ञानभूषण—	अक्षयनिधिपूजा	४५४
	आदीश्वरफाग	३६०
	जलगालणरास	३६२
	पोसहरास	७६२
ब्र० ज्ञानसागर—	अनन्तचतुर्दशीकथा	२१४
	अष्टाह्निकाकथा	७४०
	आदिनाथकल्याणकथा	७०७
	कथासंग्रह	२२०
	दशलक्षणव्रतकथा	७६४
	नेमीश्वरराजुलविवाद	६१३
	माणिक्यमालाग्रंथ प्रश्नोत्तरी	६०४
	रत्नत्रयकथा	७४०
	लघुरविव्रतकथा	२४४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	सोलहकारणकथा	७४०
झाभूराम—	पद	४४५
टीकमचंद—	चतुर्दशीकथा	७५४, ७७३
	चंद्रहंसकथा	६३६
	श्रीपालजीकीस्तुति	६३६
	स्तुति	६३६
टीलाराम—	पद	७८२
टेकचंद—	कर्मदहनपूजा	४६५, ५१८, ७१२
	तीनलोकपूजा	४८३
	नंदीश्वरव्रतविधान	४६४, ५१८
	पंचकल्याणकपूजा	५०१
	पंचपरमेष्ठीपूजा	५०३, ५१८
	पचमेरुपूजा	५०५
	पुण्याश्रवकथाकोश	२३४
	रत्नत्रयविधानपूजा	५३१
	सुदृष्टितरंगिणीभाषा	६७
	सोलहकारणमंडलविधान	५५६
टोडर—	पद	५८२, ६१४, ६३३, ७६७, ७७६, ७७७
पं० टोडरमल—	आत्मानुशासनभाषा	१०२
	क्षपणासारभाषा	७
	गोम्मटसारकर्मकाण्डभाषा	४३
	गोम्मटसारजीकाण्डभाषा	१०
	गोम्मटसारपीठिका	११
	गोम्मटसारसंदृष्टि	१२
	त्रिलोकसारभाषा	३२१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पुरुषार्थसिद्धयु पायभाषा	६६
	मोक्षमार्गप्रकाशक	८०
	लब्धिसारभाषा	४३
	लब्धिसारक्षपणासार	४३
	लब्धिसारसंदृष्टि	४३
ठक्कुरसी—	कृपणछंद	६३८
	नेमीश्वरकीवेलि (नैमीश्वरकवित्त)	७२२
	पंचेन्द्रियवेलि	७०३ ७२२, ७६५
कविठाकुर—	णमोकारपच्चीसी	४३६
	सज्जनप्रकाश दोहा	२८४
डालूराम—	अढाईद्वीपपूजा	४५५
	चतुर्दशीकथा	७४२
	द्वादशांगपूजा	४६१
	पंचपरमेष्ठीगुणवर्णन	६६
	पंचपरमेष्ठीपूजा	५०३
	पंचमेरुपूजा	५०५
डूंगरकवि—	होलिकाचौपई	२५५
डूंगावैद—	श्रेणिकचौपई	२४८
तिपरदास—	श्री रुक्मणिकृष्णजी को रासो	७७०
तिलोकचंद—	सामायिकपाठभाषा	९६
तुलसीदास—	कवित्तबधरामचरित्र	६६७
तुलसीदास—	प्रश्नोत्तररत्नमाला	३३२
तेजराम—	तीर्थमालास्तवन	६१७ ६७३
त्रिभुवनचंद—	अनित्यपचासिका	७५५
	पद	७१५
थानजीअजमेरा—	बीसतीर्थंकरपूजा	५२३
थिरूमल—	न्हवणआरती	७७८
दत्तलाल—	बारहखडी	७४५
ब्रह्मदयाल—	पद	५८७
दयालराम—	जकडी	७४६
दरिगह—	जकडी	६६१, ७५५
	पद	७४६
दलजी—	बारहभावना	५७१
दलाराम—	पद	६२०
दशरथनिगोत्या—	धर्मपरीक्षाभाषा	३५५
दास—	पद	७४६
मुनिदीप—	विद्यमानबीसतीर्थंकर पूजा	४१५
दीपचन्द—	अनुभवप्रकाश	४८
	आत्मावलोकन	१००
	चिद्विलास	१०५
	आरती	७७७
	ज्ञानदर्पण	१०५
	परमात्मपुराण	११०
	पद	५८३
दुलीचंद—	आराधनासारवचनिका	५०
	उपदेशरत्नमाला	५१
	जैनसदाचारमार्त्तण्ड	
	नामकपत्रकाप्रत्युत्तर	२०
	जैनागारप्रक्रियाभाषा	५७
	द्रव्यसंग्रहभाषा	३७
	निर्माल्यदोषवर्णन	६५
	पद	६६३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	प्रतिष्ठापाठभाषा	५२२
	बाईसग्रभक्ष्यवर्णन	७५
	सुभाषितावली	३४४
देदचन्द—	मुष्टिज्ञान	३००
देवचद—	ग्रष्टप्रकारीपूजा	७६०
	नवपदपूजा	७६०
देवसिंह—	पद	६६४
देवसेन—	पद	५८६
देवादित्त—	उपदेशसज्झाय	३८१
देवापाण्डे—	जिनवरजीकीविनती	६८५
देवाब्रह्म—	कलियुगकोविनती	६१५, ६८५
	चौबीसतीर्थंकरस्तुति	४३८
	पद	४४६, ७८३, ७८५
	विनती	४५१, ६[illegible], ७८०
	नवकारवडीवीनती	६५१
	मुनिसुव्रतवीनती	४५०
	सम्मेदशिखरविलास	९३
	सासबहूकाझगडा	६४८
देवीचन्द—	हितोपदेशभाषा	७४४
देवीदास—	कवित्त	६७५
	जीववेलडी	७५७
	पद	६४६
	राजनीतिकवित्त	३३६, ७५२
देवीसिंहछावडा—	उपदेशरत्नमालाभाषा	५२
देवेन्द्रकीर्त्ति—	जकडी	६२१
देवेन्द्रभूषण—	पद	५८७
	रविवारकथा	७०७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	सकटचौथव्रतकथा	७६४
दौलतराम—	छहढाला	५७, ७४६, ७०७
	जिनस्तवन	७०७
	पद	४४६, ६५४
	बारहभावना	५६१, ६७५
दौलतरामपाटनी—	व्रतविधानरासो	७७६
दौलतराम—	ग्रादिपुराण	१[illegible]४
	चौबीसदण्डकभाषा	५६, ४२६, ४४८, ५११, ६७२
	त्रेपनक्रियाकोश	५६
	पद्मपुराणभाषा	१४६
	परमात्मप्रकाशभाषा	१११
	पुण्याश्रवकथाकोश	२३३
	सिद्धपूजाष्टक	७७७
	हरिवंशपुराण	१५७
दौलतआसेरी—	ऋषिमंडलपूजा	४६४
द्यानतराय—	ग्रष्टाह्निकापूजा	७०५, ४६०
	ग्रक्षरबावनी	६७६
	ग्रागमविलास	४६
	आरतीसंग्रह	६२१, ६२२, ७७७
	उपदेशशतक	३२५, ७४७
	चर्चाशतक	१४, ६६४, ७६४
	चौबीसतीर्थंकरपूजा	७०४
	छहढाला	६५२, ६७२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
		६७४, ७४७
	गुरुअष्टक	७७७
	जकडी	६४३
	तत्वसारभाषा	७४७
	दशवोलपच्चीसी	४४८
	दशलक्षणपूजा	५१९, ७०५
	दानबावनी	६०५, ६८९
	द्यानतविलास	३२८
	द्रव्यसंग्रहभाषा	७१२
	धर्मविलास	३२८
	धर्मपच्चीसी	७१०, ७४७
	पंचमेरुपूजा	५०५, ७०५
	पार्श्वनाथस्तोत्रभाषा	५६९
		६१५, ४०६
	पदसंग्रह	४४५, ५८३
		५८४, ५८५, ५८६
		५८८, ५८९, ५९०
		६२२, ६२४, ६४३
		६४९, ६५४, ७०४
		७४६, ७८७
	भावनास्तोत्र	६१४
	रत्नत्रयपूजा	५२९, ७१५
	वाणीअष्टभवजयमाल	७७७
	षोडशकारणपूजा	५११
		५१९, ५५६, ७०५
	सघपच्चीसी	३७५
	सबोधपंचासिका	१२८
		६०५, ६४८, ६८५, ६९३
		७१३, ७१६, ७२५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	सबोधअक्षरबावनी	११९
	समाधिमरणभाषा	१२६
	सिद्धक्षेत्रपूजाष्टक	७०५
	स्वयंभूस्तोत्रभाषा	४२९
	भाद्रपदपूजा	५२४
द्वारिकादास—	कलियुगकीकथा	७७३
धनराज—	तीनमियाकीजकडी	६२३
	पद	७९८
	शिखरविलासभाषा	७९३
धर्मचन्द—	अनन्तकेछप्पय	७५७
धर्मदास—	मोरपिच्छधारीकृष्ण के कवित्त	६७३
धर्मपाल—	पद	५८८, ७९८
धर्मभूषण—	अंजनाकोरास	५६३
धर्मसी—	दानशीलतपभावना	६०
धीरजसिंहराठौड—	भाषाभूषण	६६८
नन्ददास—	अनेकार्थनाममाला	७०६
	अनेकार्थमंजरी	२७१, ७६६
	पद	५८७, ७०४
		७७०
	नाममंजरी	६९७, ७६६
	मानमजरी	२७६, ६९१
	विरहमंजरी	६५७, ७५६
	श्यामबत्तीसी	६८३
नन्दराम—	योगसारभाषा	११६
	कक्काबत्तीसी	७३२
वैद्यनन्दलाल—	प्रश्नावलिकवित्त	७८२
नखरूकवि—	रसालकुंवरकीचौपई	५७७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
नथमलबिलाला—	अष्टाह्निकाकथा	२१५
	जीवंधरचरित्र	१७०
	दर्शनसारभाषा	१३३
	परमात्मप्रकाशभाषा	१११
	महीपालचरित्र	१८६
	भक्तामरस्तोत्रकथा भाषा	२३४, ७२०
	रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा	८३
	रत्नत्रयजयमालभाषा	५२८
	षोडशकारणभावना जयमाल	८८
	सिद्धान्तसारभाषा	४७
	सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	४२१
नथावमल—	पद	५८१
नयनसुख—I	वैद्यमनोत्सव	३०४, ६०३, ६९५, ७६८, ७९४
नयनसुख—II	पद	४४५, ५८३
	भजनसग्रह	४५०
नरपाल—	पद	५८८
नरेन्द्रकीर्ति—	ढालमगलकी	६५५
	रत्नावलीव्रतो की तिथियो के नाम	६५५
नवलराम—	गुरुओंकीवीनती	७०४
	जिनपच्चीसी	६५१, ६७०, ६७५, ६९३, ७२५
	पद	४४५, ५८२, ५८६, ५९०, ६१५, ६४८, ६५३, ६५४, ६५५ ७८२, ७८३, ७९८
	बारहभावना	११५, ४२९, ५७१
	भद्रबाहुचरित्र	१८३
	शिक्षाचतुष्क	६६८
नाथूरामदोसी—	समाधितंत्रभाषा	१२६
ब्रह्मनाथू—	चेतावनीगीत	७५७
	पद	६२२
	पार्श्वनाथस्तवन	६२२
नाथूराम—	अकलकचरित्रगीत	१६०
	गीत	६२२
	जम्बूस्वामीचरित्र	१६९
	जातकसार	६८३
	जिनसहस्रनामस्तोत्र	३९३
	रक्षाबधनकथा	२३७
	स्वानुभवदर्पण	१२८
नाथूलालदोसी—	सुकुमालचरित्र	२०७
नानिगराम—	दोहासग्रह	६२३
निर्मल—	पद	५८१
निहालचदअग्रवाल—	नयचक्रभावप्रकाशिनी टीका	१३४
नेमीचन्द—	जकडी	६२२
	तीनलोकपूजा	४८३
	चौबीसतीर्थंकरोकी वंदना	७७५
	पद	५८०, ६२२
	प्रीत्यंकरचौपई	७७५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	नेमीश्वरगीत	६२१
	लुहरि	६२२
	विनती	६६३
नेमीचंदपाटनी—	चतुर्विंशतितीर्थंकर पूजा	४७२
	तीनचौबीसीपूजा	४८२
नेमीचदबख्शी—	सरस्वतीपूजा	५५१
नेमीदास—	निर्वाणमोदकनिर्णय	६५
न्यामतसिंह—	पद	७६५
	भविष्यदत्तदत्ततिलका-सुन्दरीनाटक	३१७
	पद	७६५
पदमभगत—	कृष्णरुक्मिणीमंगल	२२१
पद्मकुमार—	आतमशिक्षासज्झाय	६१६
पद्मतिलक—	पद	५८३
पद्मनंदि—	देवतास्तुति	३६४
	पद	६४३
	परमात्मराजस्तवन	४०२
पद्मराजगणि—	नवकारसज्झाय	६१८
पद्माकर—	कवित्त	७५९
चौधरीपन्नालालसंघी—	आचारसारभाषा	४९
	आराधनासारभाषा	४६
	उत्तरपुराणभाषा	१४६
	एकीभावस्तोत्रभाषा	३८३
	कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	३८५
	गौतमस्वामीचरित्र	१६३
	जम्बूस्वामीचरित्र	१६६
	जिनदत्तचरित्र	१७०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	जीवंधरचरित्र	१७१
	तत्वकौस्तुभ	२०
	तत्वार्थसारभाषा	२३
	तत्वसारभाषा	२१
	द्रव्यसंग्रहभाषा	३६
	धर्मप्रदीपभाषा	६१
	नंदीश्वरभक्तिभाषा	४६४
	नवतत्ववचनिका	३८
	न्यायदीपिकाभाषा	१३५
	पाडवपुराण	१५०
	प्रश्नोत्तरश्रावकाचार भाषा	७०
	भक्तामरस्तोत्रकथा	२३५
	भक्तिपाठ	४४६
	भविष्यदत्तचरित्र	१८४
	भूपालचौबीसीभाषा	४१२
	मरकतविलास	७८
	योगसारभाषा	११६
	यशोधरचरित्र	१६२
	रत्नकरण्डश्रावकाचार	८३
	वसुनन्दिश्रावकाचारभाषा	८५
	विषापहारस्तोत्रभाषा	४१६
	षट्आवश्यकविधान	८७
	श्रावकप्रतिक्रमणभाषा	८९
	सद्भाषितावलीभाषा	३३८
	समाधिमरणभाषा	१२७
	सरस्वतीपूजा	५५१
	सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	४२१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	सुभापितावलीभाषा	३४४
पन्नालालदूनीवाले—	पचकल्याणकपूजा	५०१
	विद्वज्जनबोधकभाषा	८६
	समवसरणपूजा	८००
पन्नालालबाकलीवाल—	बालपद्मपुराण	१५१
परमानद—	पद	६८४, ७७०
परिमल्ल—	श्रीपालचरित्र	२०१, ७७३
पर्वतधर्मार्थी—	द्रव्यसंग्रहभाषा	३६
	समाधितत्रभाषा	१२६
पारसदासनिगोत्या—	ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	३१७
	सारचौबीसी	४५२
पारसदास—	पद	६५४
पार्श्वदास—	बारहखडी	३३२
पुण्यरत्न—	नेमिनाथफागु	७४८
पुण्यसागर—	साधुवदना	४५२
पुरुषोत्तमदास—	दोहे	६८७
	पद	७८५
पून्यो—	पद	७८५
	मेघकुमारगीत	६६१, ७२२, ७४६, ७५०, ७६४, ७७५
	वीरजिणदकीसघावली	७७५
पूरणदेव—	पद	६६३
पेमराज—	वैदरभीविवाह	२४०
पृथ्वीराजराठौड—	कृष्णरूक्मिणिवेलि	३६४, ६५६, ७००
महाराजासवाईप्रतापसिंह—	अमृतसागर	२९६
	चदकुवरकीवार्त्ता	२२३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
प्रभुदास—	परमात्मप्रकाशभाषा	७६५
प्रसन्नचद—	आतमशिक्षासज्झाय	६१६
फतेहचद—	पद	५७६, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३
बशी—	न्हवणमगल	७७७
बशीदास—	रोहिणीविधिकथा	७८१
बशीधर—	द्रव्यसंग्रहबालावबोधटीका	७६१
बखतराम—	पद	५८३, ५८६, ६६८, ७८३, ७८६
	मिथ्यात्वखडन	७८
	बुद्धिविलास	७५
बखतावरलाल—	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	४७२
	ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	३१७
बधीचन्द—	रामचन्द्रचरित्र	६६१
बनारसीदास—	अध्यात्मबत्तीसी	६६
	आत्मध्यान	१००
	कर्मप्रकृतिविधान	५, ३६०, ६७७, ७४६
	कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा	३८५, ४२६, ५६६, ५९६, ६०३, ६४३, ६४८, ६५०, ६६१, ६६२, ६६५, ६७०, ७०३, ७०५
	कवित्त	७०६, ७७३
	जिनसहस्रनामभाषा	६६०, ७४६
	ज्ञानपच्चीसी	६१४, ६२४, ६५०, ७४३, ७७५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	भुवनकीर्त्तिगीत	६६६
भगतराम—	पद	७६८
भैयाभगवतीदास—	आहारके ४६ दोष वर्णन	५०
	अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	६६४, ७२०
	चेतनकर्मचरित्र	७८०
		६१३, ६०५, ६८६
	अनित्यपच्चीसी	६८६
	निर्वाणकाण्डभाषा	३६६
		४२६, ५६२, ५६५, ५७०, ६५०, ५६६ ६००, ६०५, ६१४ ६१०, ६४३, ६५१ ६६२, ७०४, ७२०
	ब्रह्मविलास	३३३
	बारहभावना	७२०
	वैराग्यपच्चीसी	६८५
	श्रीपालजीकीस्तुति	६४३
	सप्तभंगीवाणी	६८८
भगौतीदास—	वीरजिणदगीत	५६६
भगवानदास—	आ शांतिसागरपूजा	४६१
		७८६
भगोसाह—	पद	५८१
भद्रसेन—	चन्दनमलयागिरी	२२३
भाऊ—	आदित्यवारकथा (रविव्रतकथा)	२३७, २४४ ६०१, ६८५, ७४० ७४५, ७५६, ७६२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पद	५८७
	नेमीश्वरकोरास	६३८
भागचंद—	उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला	५१
	ज्ञानसूर्योदयनाटक	३१७
	मिनाथपुराण	१८६
	प्रमाणपरीक्षाभाषा	१३७
	पद	४८५, ४४६, ५७०
	श्रावकाचारभाषा	६१
	सम्मेदशिखरपूजा	५५०
भागीरथ—	सोनागिरपच्चीसी	६८
भानुकीर्ति—	जीवकाया ज्झाय	६१६
	पद	५८३, ५८५, ६१५
	रविव्रतकथा	७५०
भारामल्ल—	कर्मपच्चीसी	७६६
	चारूदत्तचरित्र	१६८
	दर्शनकथा	२२७
	दानकथा	२२८
	मुक्तावलिकथा	७६४
	रात्रिभोजनकथा	२३८
	शीलकथा	२४७
	सप्तव्यसनकथा	२५०
भीषमकवि—	लब्धिविधानचौपई	७७२
भुवनकीर्त्ति—	नेमिराजुलगीत	६१८
भुवनभूषण—	प्रभातिकस्तुति	६४४
	एकीभावस्तोत्रभाषा	३८३ ४२६, ४४८, ६५२ ६६२, ७१६, ७२०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
भूधरदास—	कवित्त	७७०
	गुरुग्रोकीवीनती	४४७
		५११, ६१४, ६४२, ६६३
	चर्चासमाधान	१५, ६०६
		६४६
	चतुर्विंशतिस्तोत्र	४२६
	जकडी	६५०, ७१६
	जिनदर्शन	६०५
	जैनशतक	३२७, ४२६
		६५२, ६७०, ६८६
		६६८, ७०६, ७१०
		७१३, ७१६, ७३२
	दशलक्षणपूजा	५६२
	नरकदुखवर्णन	६५, ७८८
	नेमीश्वरकीस्तुति	६५०
		७७७
	पचमेरुपूजा	५०५, ५६६
		७०४, ७५६
	पार्श्वपुराण	१७६, ७४४
		७६१
	पुरुषार्थसिद्धच्युपाय भाषा	६६
	पद	४४५, ५८०, ५८६
		५६०, ६१५, ६२०
		६४८, ६६४, ६५४
		६६४, ७७६, ७७७
		७८५, ७८६, ७६८
	बाईसपरीषहवर्णन	७५,
		६०५
	बारहभावना	११४
	वज्रनाभिचक्रवर्त्तिकी भावना	८५
		४४८, ७३६
	विनती	६४२, ६६३
		६६४
	स्तुति	७१०
भूधरमिश्र—	पुरुषार्थसिद्धच्युपाय वचनिका	६६
भैलीराम—	पद	७७६
भैरवदास—	पचकल्याणकपूजा	५०१
भोगीलाल—	बृहद्घटाकर्णकल्प	७२६
मगलचद—	नन्दीश्वरद्वीपपूजा	४६३
	पदसग्रह	४४७
मकरंदपद्मावतिपुरवाल—	षट्सहननवर्णन	८८
मक्खनलाल—	अकलकनाटक	३१६
मजलसराय—	जैनबद्रीदेशकीपत्री	५८१
मतिकुसल—	चन्द्रलेहारास	३६१
मतिशेखर—	ज्ञानबावनी	७७२
मतिसागर—	शालिभद्रचौपई	१६८, ७२६
मथुरादासव्यास—	लीलावतीभाषा	३६८
मनरंगलाल—	अकृत्रिमचैत्यालयपूजा	४५४
	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	४७३
	निर्वाणपूजापाठ	४६६
मनरथ—	चितामणिजीकीजयमाल	६४४
मनराम—	अक्षरगुणमाला	७४६
	गुणाक्षरमाला	७५०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पद	६६०, ७२३, ७२४ ७६४, ७६६, ७७६
मनसाराम—	पद	६६३, ६६४
मनसुखलाल—	सम्मेदशिखरमहात्म्य	६२
मनहरदेव—	आदिनाथपूजा	५११
मन्नालालखिन्दूका—	चारित्रसारभाषा	५६
	पद्मनंदिपच्चीसीभाषा	६८
	प्रद्युम्नचरित्रभाषा	१८२
मनासाह—	मानकीबडीबावनी	६३८
	मानकीलघुबावनी	६३८
मनोहर—	पद	४४५, ७६३, ७६४ ७८५, ७८६
मनोहरदास—	ज्ञानचिंतामणि	१८, ७१४ ७३६
	ज्ञानपदवी	७१८
	ज्ञानपैडी	७५७
	धर्मपरोक्षा	३५७, ७१६
मलूकचंद—	पद	४४६
मलूकदास—	पद	७६३
महमत—	वैराग्यगीत	४१६
महाचन्द—	लघुस्वयम्भूस्तोत्र	७१६
	षट्आवश्यक	८७
	सामायिकपाठ	४२६
महीचन्द्रसूरि—	पद	५७६
महेन्द्रकीर्त्ति—	जकडी	६२०
	पद	७८६
माखनकवि—	पिंगलछंदशास्त्र	३१०
माणकचंद—	तेरहपंथपच्चीसी	४४८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पद	४४७, ४४८, ७६८
	समाधितंत्रभाषा	१२५
	साधुवंदना	४५२
	हुण्डावसर्पिणीकाल दो वर्णन	९८
मानकवि—	मानबावनी	३३४, ६०१
	विनतीचौपडकी	७८१
	संयोगबत्तीसी	६१३
मानसागर—	कठियारकानडरीचौपई	२१८
मानसिंह—	आरती	७७७
	पद	७७७
	भ्रमरगीत	७५०
	मानविनोद	३००
मारू—	पहेलिया	६५१
मिहरचंद—	सज्जनचित्तवल्लभ	३३७
मुकुन्ददास—	पद	६६०
मेरुनन्दन—	अजितशांतिस्तवन	६१६
मेरुसुन्दरगणि—	शीलोपदेशमाला	२४७
मेला—	पद	७७६
मेलीराम—	कल्याणमंदिरस्तोत्र	७८६
महेशकवि—	हमीररासो	३६७
मोतीराम—	पद	५६१
मोहन—	कवित्त	७७२
मोहनमिश्र—	लीलावतीभाषा	३६७
मोहनविजय—	चन्दनाचरित्र	७६१
	मानतुंगमानवतिचौपई	२३५
रंगविजय—	आदीश्वरगीत	७७६
	उपदेशसज्झाय	
रंगविनयगणि—	मंगलकलशमहामुनि चतुष्पदी	१८५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
रइधू—	बारहभावना	११४
रघुराम—	सभासारनाटक	३३८
रणजीतदास—	स्वरोदय	३४५
रत्नकीर्त्ति—	नेमीश्वरकाहिण्डोलना	७२२
	नेमीश्वररास	६३८
		७२२
रतनचद—	चौबीसीविनती	६४६
	देवकीकीढाल	४४०
रत्नमुक्ति—	नेमीराजमतीरास	६१७
रत्नभूषण—	जिनचैत्यालयजयमाल	५९४
रल्हकवि—	जिनदत्तचौपई	६८२
रसिकराय—	नेहलीला	६९४
राजमल—	तत्वार्थसूत्रटीका	३०
राजसमुद्र—	कर्मबत्तीसी	६१७
	जीवकायासज्झाय	६१९
	शत्रुञ्जयभास	६१९
	शत्रुञ्जयस्तवन	६१९
	सोलहसतियोंकेनाम	६१९
राजसिंह—	पद	५८७
राजसुन्दर—	द्वादशमाला	७४३, ७७१
	सुन्दरशृंगार	६८३, ७२६
राजाराम—	पद	५९०
राम—	पद	६५३
	रत्नपरीक्षा	३५८
रामकृष्ण—	जकडी	४३८
	पद	६६८
रामचंद्र—	आदिनाथपूजा	६५१
	चंद्रप्रभजिनपूजा	४७४
	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	४७२, ६६६, ७२७, ७२६, ७७२
	पद	५८१, ६६८, ६८६
	पूजासंग्रह	५२०
	प्रतिमासान्तचतुर्दशी व्रतोद्यापन	५२०
	पुरुषस्त्रीसंवाद	७८६
	बारहखडी	७१५
	शान्तिनाथपूजा	५४५
	शिखरविलास	६६३
	सम्मेदशिखरपूजा	५५०
	सीताचरित्र	२०६, ७२५, ७५६
	सुपार्श्वनाथपूजा	५५५
ऋषिरामचन्द्र—	उपदेशसज्झाय	३८०
	कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	३८५
	नेमिनाथरास	३६२
रामचन्द्र—	रामविनोद	३०२
रामदास—	पद	५८३, ५८८, ६६३, ६९७, ७७२
रामभगत—	पद	५८२
मिश्ररामराय—	बृहद्चाणिक्यनीति शास्त्रभाषा	३३६
रामविनोद—	रामविनोदभाषा	६४०
ब्र० रायमल्ल—	आदित्यवारकथा	७१२
	चिंतामणिजयमाल	६५५
	छियालीसठाणा	३६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	जम्बूस्वामीचरित्र	७१०
	निर्दोषसप्तमीकथा	६७६
	नेमीश्वरफाग	३६३, ६०१, ६२१, ६३८, ७५२
	पचगुरुकीजयमाल	७६३
	प्रद्युम्नरास	६६५, ६३६, ७१२, ७३७, ७४६
	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	४०८
	भविष्यदत्तरास	३६४, ५६४, ६४८, ७४०, ७५१, ७५२, ७७३, ७७५
	राजाचन्द्रगुप्तकीचौपई	६२०
	शीलरास	७४६
	श्रीपालरास	६३८, ६८४, ७१२, ७१७, ७४६
	सुदर्शनरास	३६६, ६३६, ७१२, ७४६
	हनुमच्चरित्र	२१६, ५६५, ५६६, ७१७, ७३४, ७४०, ७५२, ७४४, ७६२
साधर्मीभाईरायमल्ल—	ज्ञानानन्दश्रावकाचार	५८
रूपचद—	अध्यात्मदोहा	७४६
	जकडी	६५०, ७५२, ६६१, ७५५
	जिनस्तुति	७०२
	पचमगल	४०१, ४२८, ४४७, ५१८, ५६५, ५७०, ६२४, ६४२, ६५०, ६५८, ६६१, ६६४, ६७३, ७०४, ७०५, ७१५, ७२०
	पंचकल्याणकपूजा	५००
	दोहाशतक	७४०, ७४३
	पद	५८५, ५८७, ५८८, ६२४, ६६१, ७२४, ७४६, ७५५, ७६३, ७६५, ७८३
	परमार्थगीत	७६४
	परमार्थदोहा	७०६
	परमार्थहिंडोलना	७६४
	लघुमंगल	६२४, ७१६
	विनती	७६५
	समवसरणपूजा	५४६
पांडे रूपचन्द—	तत्वार्थसूत्रभाषाटीका	६४०
रूपदीप—	पिंगलभाषा	७०६
रेखराज—	पद	७६८
लक्ष्मण—	चन्दकथा	७४८
लक्ष्मीवल्लभ—	नवतत्वप्रकरण	३७
लक्ष्मीसागर—	पद	६८२
लब्धिविमलगणि—	ज्ञानार्णवटीकाभाषा	१०८
प० लाखो—	पार्श्वनाथचौपई	४४८
लाल—	पद	४४५, ६८६
लालचन्द—	आरती	६२२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	चिन्तामणिपार्श्वनाथ स्तवन	६१७
	धर्मबुद्धिचौपई	२२६
	नेमिनाथमंगल	६०५, ७२२
	नेमीश्वरका व्याहला	६५१
	पद	५८२, ५८३, ५८७
	पूजासंग्रह	७७७
पांडे लालचंद—	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	८८
	सम्मेदशिखरमहात्म्य	९२
ऋषि लालचद—	अठारहनातेकीकथा	२१३
	मरुदेवीसज्झाय	४५०
	महावीरजीचौढाल्या	४५०
	विजयकुमारसज्झाय	४५०
	शान्तिनाथस्तवन	४१७
	शीतलनाथस्तवन	४५१
लालजीत—	तेरहद्वीपपूजा	४८४
ब्रह्मलाल—	जिनवरव्रतजयमाला	६८५
लालवर्द्धन—	पाण्डवचरित्र	१७८
ब्रह्मलालसागर—	णमोकारछंद	६८३
लूणकरणकासलीवाल—	चौबीसतीर्थंकरस्तवन	४३८
	देवकीकीढाल	४३९
साहलोहट—	अठारहनातेकीकथा (चौढाल्या)	६२३
		७२३, ७७५, ७८०, ७९८
	द्वादशानुप्रेक्षा	७६९
	पार्श्वनाथकीगुणमाला	७७६
	पार्श्वनाथजयमाल	६४२
		७८१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वजिनपूजा	५०७
	पूजाष्टक	५१२
	षट्लेश्यावेलि	३६६
वल्लभ—	रुक्मिणीविवाह	७८७
वाजिद—	वाजिदकेअडिल्ल	६७३
वादिचन्द्र—	आदित्यवारकथा	६०७
विचित्रदेव—	मोरपिच्छधारीके कवित्त	६७३
विजयकीर्त्ति—	अनन्तव्रतपूजा	४५७
	जम्बूस्वामीचरित्र	१६९
	पद	५८०, ५८२
		५८३, ५८४, ५८५
		५८६, ५८७, ५८९
	श्रेणिकचरित्र	२०४
विजयदेवसूरि—	नेमिनाथरास	३६२
	शीलरास	३६५, ६१७
विजयमानसूरि—	श्रेयांसस्तवन	४५१
विद्याभूषण—	गीत	६०७
विनयकीर्त्ति—	अष्टाह्निकाव्रतकथा	६१४
		७८०, ७९४
विनयचंद—	केवलज्ञानसज्झाय	३८५
विनोदीलाललालचद—	कृपणपच्चीसी	७७३
	चौवीसीस्तुति	७७३, ७७६
	चौरासीजातिका जयमाल	३६९
	नेमिनाथकेनवमंगल	४४०
		६८५, ७२०, ७३४
	नेमिनाथकाबारहमासा	७५३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पूजाष्टक	७७७
	पद	५६०, ६२३
		७५७, ७८३, ७६८
	भक्तामरस्तोत्रकथा	२३४
	सम्यक्त्वकौमुदीकथा	२५२
	राजुलपच्चीसी	६००
		६१३, ६२२, ६४३
		६५१, ६८५
		७४७, ७५३
[वि]मलकीर्त्ति—	बाहुबलीसज्झाय	४४६
विमलेन्द्रकीर्त्ति—	आराधनाप्रतिबोधसार	६५८
	जिनचौवीसीभवान्तर रास	५७८
विमलविनयगणि—	अनाथीसाधचौढालिया	६८०
	अर्हन्नकचौढालियागीत	४३५
विशालकीर्त्ति—	धर्मपरीक्षाभाषा	७३५
विश्वभूषण—	अष्टकपूजा	७०१
	नेमिजीकोमगल	५६७
	नेमिजीकीलहुरि	७४६, ७७८
	[प]द	४४५, ६६८
	पार्श्वनाथचरित्र	५६८
	विनती	६२१
	हेमकारी	७६३
विश्वामित्र—	रामकवच	६६७
विसनदास—	पद	५८७
वीरचद—	जिनान्तर	६२७
	सबोधसताणु	३३६
वेणीदास [ब्र० वेणु]—	पाचपरवीव्रतकीकथा	६२१
		६८५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
वृजलाल—	बारहभावना	६८५
वृन्दकवि—	वृन्दसतसई	३३६
		६७५, ७५१, ७८५
वृन्दावन—	कवित्त	६८२
	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	४७१
	छदशतक	३२७
	तीसचौबीसीपूजा	४८३
	पद	६२५, ६४३
	प्रवचनसारभाषा	११४
शकराचार्य—	मुहूर्त्तमुक्तावलिभाषा	७६८
शांतिकुशल—	अञ्जनारास	३६०
ब्र० शातिदास—	अनन्तनाथपूजा	६६०, ७६५
	आदिनाथपूजा	७६५
शालिभद्र—	बुद्धिरास	६१७
शिखरचद—	तत्वार्थसूत्रभाषा	३०
शिरोमणिदास—	धर्मसार	६३, ६६६
ऋषिशिव—	नेमिस्तवन	४००
शिवजीलाल—	चर्चासार	१६
	दर्शनसारभाषा	१३३
	प्रतिष्ठासार	५२२
शिवनिधानगणि—	सग्रहणीबालावबोध	४५
शिवलाल—	कवित्तचुगलखोरका	७८२
शिवसुन्दर—	पद	७५०
शुभचन्द्र—	अष्टाह्निकागीत	६८६
	आरती	७७६
	क्षेत्रपालगीत	६२३
	पद	७०२, ७२४
		७७७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	शिवादेवीमाताकोग्राठवो	७२४
शोभाचन्द—	क्षेत्रपालभैरवगीत	७७७
	पद	५८३, ७७७
श्यामदास—	तीसचौबीसी	७५८
	पद	७६४
	श्यामबत्तीसी	७६६
श्याममिश्र—	रागमाला	७७१
श्रीपाल—	त्रिषष्ठिशलाकाछंद	६७०
	पद	६७०
श्रीभूषण—	अनन्तचतुर्दशीपूजा	४५६
	पद	५८३
श्रीराम—	पद	५९०
श्रीवर्द्धन—	गुणस्थानगीत	७६३
मुनिश्रीसार—	स्वार्थबीसी	६१६
संतदास—	पद	६५४
संतराम—	कवित्त	६६२
संतलाल—	सिद्धचक्रपूजा	५५४
संतीदास—	पद	७५६
संतोषकवि—	विषहरणविधि	३०३
मुनिसकलकीर्त्ति—	आराधनाप्रतिबोधसार	६८५
	कर्मचूरव्रतवेलि	५६२
	पद	५८८
	पार्श्वनाथाष्टक	७७७
	मुक्तावलिगीत	६८६
	सोलहकारणरास	५६४
		६३६, ७८१
सदासागर—	पद	५८०
सदासुखकासलीवाल—	अर्थप्रकाशिका	१
	अकलंकाष्टकभाषा	३७६
	ऋषिमडलपूजा	७२६
	तत्वार्थसूत्रभाषा	२६
	दशलक्षणधर्मवर्णन	५६
	नित्यनियमपूजा	४६६
	न्यायदीपिकाभाषा	१३५
	भगवतीआराधनाभाषा	७६
	मृत्युमहोत्सवभाषा	११५
	रत्नकरण्डश्रावकाचार	८२
	षोडशकारणभावना	८८, ६८
सबलसिंह—	पद	६२४
सभाचन्द—	लुहरि	७२४
सवाईराम—	पद	५६०
समयराज—	पार्श्वनाथस्तवन	६६७
समयसुन्दर—	अनाथीमुनिसज्झाय	६१८
	अरहनासज्झाय	६१८
	आदिनाथस्तवन	६१६
	कर्मछत्तीसी	६१६
	कुशलगुरुस्तवन	७७६
	क्षमाछत्तीसी	६१७
	गौडीपार्श्वनाथस्तवन	६१७
		६१६
	गौतमपृच्छा	६१६
	गौतमस्वामीसज्झाय	६१८
	ज्ञानपचमीवृहद्स्तवन	७७६
	तीर्थमालास्तवन	६१७
	दानतपशीलसंवाद	६१७
	नमिराजर्षिसज्झाय	६१८
	पचयतिस्तवन	६१६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पद	५७६, ५८८
		५८६, ७७७
	पद्मावतीरानीआराधना	६१७
	पद्मावतीस्तोत्र	६८५
	पार्श्वनाथस्तवन	६१७
	पुण्यछत्तीसी	६१६
	फलवधीपार्श्वनाथस्तवन	६१६
	बाहुबलिसज्झाय	६१६
	बीसविरहमानजकडी	६१७
	महावीरस्तवन	७३५
	मेघकुमारसज्झाय	६१८
	मौनएकादशीस्तवन	६२०
	राणपुरस्तवन	६१६
	बलदेवमहामुनिसज्झाय	६१६
	विनती	७३२
	शत्रुञ्जयतीर्थरास	६१७, ७००
	श्रेणिकराजासज्झाय	६१६
	सज्झाय	६१८
सहसकीर्त्ति—	आदीश्वररेखता	६८२
साईदास—	पद	६२०
साधुकीर्त्ति—	सत्तरभेदपूजा	७३५, ७६०
	जिनकुशलकीस्तुति	७७८
सालम—	आत्मशिक्षासज्झाय	६१६
साहकीरत—	पद	७७७
साहिबराम—	पद	४४५, ७६८
सुखदेव—	पद	५८०
सुखराम—	कवित्त	७७०
सुखलाल—	कवित्त	६५६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र स
सुखानद—	पचमेरुपूजा	५
सुगनचद—	चतुर्विंशतितीर्थंकर पूजा	४
सुन्दर—	कपडामाला का दूहा	७
	नायिकालक्षण	७
	पद	७
	सहेलीगीत	७६
सुन्दरगणि—	जिनदत्तसूरिगीत	६१
सुन्दरदास—I	कवित्त	६४
	पद	७१
	सुन्दरविलास	७४
	सुन्दरश्रृंगार	७६
सुन्दरदास—II	सिन्दूरप्रकरणभाषा	३४
सुन्दरभूषण—	पद	५८
सुमतिकीर्त्ति—	क्षेत्रपालपूजा	७६
	जिनस्तुति	७६
सुमतिसागर—	दशलक्षणव्रतोद्यापन	६३
		७६
	व्रतजयमाला	७६
सुरेन्द्रकीर्त्ति—	आदित्यवारकथाभाषा	७०
	जैनबद्रीमूडबद्रीकीयात्रा	३६
	पद	६२
	सम्मेदशिखरपूजा	५५
सूरचद—	समाधिमरणभाषा	१२
सूरदास—	पद	६८४
		७६६, ७६३
सूरजभानओसवाल—	परमात्मप्रकाशभाषा	११२
सूरजमल—	पद	५८१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
कविसूरत—	द्वादशानुप्रेक्षा	७६४
	बारहखडी	६६, ३३२, ७१५, ७८८
सेवगराम—	अनन्तनाथपूजा	४५६
	आदिनाथपूजा	६७४
	कवित्त	७७२
	जिनगुणपच्चीसी	४४७
	जिनयशमगल	४४७
	पद	४४७, ७८६, ७६८
	निर्वाणकाण्ड	७८८
	नेमिनाथकीभावना	६७४
सेवारामपाटनी—	मल्लिनाथपुराण	१५२
सेवारामसाह—	अनन्तव्रतपूजा	४५७
	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	४७०
	धर्मोपदेशसग्रह	६४
सोम—	चिंतामणिपार्श्वनाथ जयमाल	७६२
सोमदेवसूरि—	देवराजवच्छराजचौपई	२२८
सोमसेन—	पचक्षेत्रपालपूजा	७६५
स्योजीरामसौगाणी—	लग्नचद्रिका	७५१
स्वरूपचंद—	ऋद्धिसिद्धिशतक	५२, ५११
	चमत्कारजिनेश्वरपूजा	५११, ६६३
	जयपुरनगरसबधी चैत्यालयोकीवदना	४३८, ५११
	जिनसहस्रनामपूजा	४८०
	त्रिलोकसारचौपई	५११
	निर्वाणक्षेत्रमंडलपूजा	४६८
	पचकुमारपूजा	७५६
	पूजापाठसंग्रह	५११
	मदनपराजय	३१८
	महावीरस्तोत्र	५११
	बृहद्गुरावलीशातिमंडल (चौसठऋद्धिपूजा)	४७६, ५११
	सिद्धक्षेत्रोकीपूजा	५५३, ७८६
	सुगन्धदशमीपूजा	५११
हंसराज—	विज्ञप्तिपत्र	३७४
हठमलदास—	पद	६२४
हरखचंद—	पद	५८३, ५८४, ५८५
हरचदअग्रवाल—	सुकुमालचरित्र	२०७
	पचकल्याणकपाठ	४००, ७६६
हगूलाल—	सज्जनचित्तवल्लभ	३३७
हर्षकवि—	चद्रहसकथा	७१४
	पद	५७६
हर्षकीर्त्ति—	जिणभक्ति	४३८
	तीर्थंकरजकडी	६२२
	पद	५८६, ५८७, ५८८, ५९०, ६२१, ६२४, ६६३, ७०१, ७५०, ७६३, ७६४
	पंचमगतिवेलि	६२१, ६६१, ६६८, ७५०, ७६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वनाथपूजा	६६३
	वीसतीर्थंकरो की जकडी (जयमाल)	६४४, ७२२
	वीस विरहमानपूजा	५६५
	श्रावककीकरणी	५६७
	पटलेश्यावेलि	७७५
	[illegible]वघडी	७४६
हर्षचन्द—	पद	५८५, ६२०
हर्षसूरि—	अवंतिपार्श्वजिनस्तवन	३७६
पांडेहरिकृष्ण—	अनन्तचतुर्दशीव्रत कथा	७६६
	आकाशपंचमीकथा	७६४
	निर्दोपसप्तमीकथा	७६४
	निशल्याष्टमीकथा	७६५
हरिचरणदास—	कविवल्लभ	६८८
	विहारीसतसईटीका	६८७
हरीदास—	ज्ञानोपदेशवत्तीसी	७१३
	पद	७७०
हरिश्चन्द—	पद	६४६
हरिसिंह—	पद	५८२, ५८५, ६२०, ६४३, ६४४, ६६६, ७७२, ७७६, ७६६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	विनती	६६३
	स्तुति	७७६
हीरकवि—	सागरदत्तचरित्र	२०४
हीराचद—	पद	४४७, ५८१
	पूजासग्रह	५१६
हीरानद—	पचास्तिकायभापा	४१
हीरालाल—	चन्द्रप्रभपुराण	१४६
हेमराज—	गणितसार	३६७
	गोम्मटसारकर्मकाण्ड	१३
	द्रव्यसग्रहभापा	७३३
	पचास्तिकायभापा	४१
	पद	५६०
	प्रवचनसारभापा	११३
	नयचक्रभापा	१३४
	वावनी	६५७
	भक्तामरस्तोत्रभापा	४१०, ५१६, ६४८, ६६१, ७०७, ७७४
	साधुकीआरती	७७७
	सुगन्धदशमीकथा	२५४, ७६५
मुनिहेमसिद्ध—	आदिनाथगीत	४३६

⋙—→ शासकों की नामावलि ⋙—→

अकबर ६, १२२, १९७, ५९१, ५९२
(इकब्बर) ६८१, ७६७, ७७३
अजैपालपवार ५९२
अणहलगुवाल ५९२
अनगपालतुँवर ५९१
अरविंद ५६८
अलाउद्दीन ३५६, २५९
(अलावदीन)
अलावलखा १५७
अलावद्दीनलोदी ५९
अहमदशाह २१९, ५९१
आलम २५१
औरंगजेब ६७, ४७८, ५५४, ६९८
औरंगसाहि पातसाहि ३१, ३९, ५९२
इन्द्रजीत ७४३
इब्राहीमलोदी १४२
इब्राहीम (सुलितान) १४५
ईसरीसिंह २२६
ईश्वरसिंह २३१
उदयसिंह २०९, २५१, ५९१, ५९२
उमैसिंह २१९
किशनसिंह ५९२
कीर्त्तिसिंह २६५
कुशलसिंह ४८
केसरीसिंह ३४७
खेतसी १९०
गयासुद्दीन ५३
गजुद्दीहबहादुर १२५
पजसीराय १७२
चन्द्रगुप्त ६२०
चित्रंगदमोडीयै ५९२
छत्रसाल ४०६
जगतसिंह १७०, १८१, ३६९, ७७९
जगपाल ६६
जयसिंह (सवाई) ५३, ७१, ९३, ९६, १२०
१२८, २०४, ३०५, ४८२
५१५, ५२०, ५९१
जयसिंहदेव १४५, १७६
जहांगीर ४१, १४४
जैतसी ५९२
जैसिंह (सिधराव) ५९२
जोधावत ५९१
जोधै ५९१
टोडरमल ७६७
डूंगरेन्द्र १७२
तेतयो ५९२
देवडो ५९२
नाहरराव (पवार) ५९१
नौरंगजीव ३०५
नौरंग ४४८
पूरणमल्ल १९४
पेरोजासाह ७८
पृथ्वीराज २०३
पृथ्वीसिंह ७३, १८८, ६८३, ७९७
प्रतापसिंह २७, १४६, १८६ ५५७, ४६१
फतेसिंह ४८०
बख्तावरसिंह ७२६
बहलोलसाह ६२

बाबर १९३
बीके ५९१
बुधसिंह ५, २००
भगवतसिंह ३४
भाटीजैसे १५१, १८८
भारामल ५९१
भावसिंह ७१
भावसिंह (हाडा) ३९
भोज ५९१
भोजदेव ३५
मकरधुज ४३९
मदन
महमदखा १०
महमदसाह १५६
महमूदसाहि १८८
महाशेरखान ५३
माधोसिंह १०४, १६२, ५५१, ६३९
माधवसिंह ६३८
मानसिंह ३४, १५६, १८४, १८९
१९२, १९६, ३१३
४७९, ४८०
मालदे ५९१, ५९२
मूलराज १३२
मोहम्मदराज ६००
रणधीरसिंह ३८९
राजसिंह १३१, २७१, ३१३
राजामल्ल ७२९
रामचन्द्र ७७, २४०
रामसिंह २७, १४९, २७४, २७५
६१०, ६११
रामस्यघ २२६
रायचंद ४४
रायमल्ल ३८१
रायसिंह २४९, ३२०
लालाह ५२२
लिछमणस्यघ २२६
वसुदेव ४३९
विक्रमसाहि ५६७
विक्रमादित्य २५१, २५३, ६१२
विजयसिंह २८३
विमलमंत्रीश्वर ५९२
विशनसिंह २८३
वीदे ५९१
वीरनारायण (राजाभोजकापुत्र) ५९१
वीरमदे ५९२
वीरबल ६८१
शक्तिसिंह ३७
शाहजहा ६०२, ६६८
श्रीपाल ३५
श्रीमालदे १९०
श्रीराव ५६५
श्रेणिक ३६३
सलेमसाह ७७, २०६, २१२
सावलदास १८४
सिकन्दर १४५
सूर्यसेन ४, १९४
सूर्यमल्ल २९९
संग्रामसिंह २९३
सोनडारे ५९१
हमीर ३७८, ५९१, ६०९

✯ ग्राम एवं नगरों की नामावलि ✯

अंजनगीई ७२६
अबावतीगढ (आमेर) ४, ३४, ४०, ७१, १२०, १६३, १८७, १६६, ४५५
अकबरानगर ४७६
अकबराबाद ६, ३६१
अकब्बरपुर २५०
अकीर ३६७
अजमेर २१६, ३२१, ३४७, ३७३, ४६६, ५०५, ५६२, ७२६
अटोणिनगर १२
अणहिलपत्तन (अणहिल्लपाट) १७५, ३५१
अमरसर ६१७
अमरावती ४८७
अवती ६६, २७६, ३६७
अर्गलपुरदुर्ग (आगरा) २०६, ३४६
अराह्वयपुर १७
अलकापुरी ४३५
अलवर २४, ५६७
अलाउपुर (अलवर) १४४
अलीगढ (उ. प्र) ३०, ४३७
अवन्तिकापुरी ६६
अहमदाबाद २३३, ३०५, ५६१, ५६२, ७५३
अहिपुर (नागौर) ८६, २५१
आधी ३७२
अबावती ३७२
आवा महानगर १६४
आवेर (आमेर) १०७
आगरा १२३, २०१, २५५, ५६१, ७४६, ७५३, ७७१
आभानेरी ७४८
आमेर ३१, ७१, ९३, ११६, १२०, १३२, १३३, १७२, १८४, १८८, १६०, २३३, २६४, ३३७, ३६४, ३६५, ४२२, ४६२, ६८३, ७५६
आम्रगढ १५१
आलमगज २०१
आवर (आमेर) १८१
आश्रम नगर ३५
इन्दौर (तुकोगज) ५४७
इन्द्रपुरी ३५८, ३६३
इंबावतिपुर (मालवदेश मे) ३४०
इदोखली ३७१
ईडर ३७७
ईसरदा २७, ३०, ५०३
उग्रियावास ३१६
उज्जैन १२१, ६८३
उज्जैणी (उज्जैन) ५६१
उदयपुर ३६, १७६, १६६, २४२, २६३, ५६१
एकोहमा नगर ४५४
एलिचपुर १५१
औरगाबाद ७०, ५६२, ६१७
कंकणलाट ३६७
कलोविदा ५६२

क २५४
ोतपुर १९१
एउ ३९७
ोग्राम १९३
ारा (जिला) २२
ुर्टिक ३८६
ाडम्र ३९७
ौली ६०४
नकत्ता १५१
मवल्लीपुर ३६३
लिग ३९७
डीग्राम २४९
णौता ३७२
नपुरकोट १३४
मानगर १२०
ारजा २०४
ालख ८२
ालाढेरा (कालाढेहरा) ४५, २१०
३०६, ३७२
३९७
कराट ५४, २५३, ५९२
शनगढ २१८
कहरोर ५२२
कुणदेश ४४१
च्यामण २२
भनगर २५१
भलमेरूदुर्ग ३९७
भलसेस ३९७
दुरगण १४५
कुरूजागलदेश २००
केकडी

केरल ३९७
केरवाग्राम २५०
कैलाश ६८२
कोटपुतली ७५७
कोटा ६४, २२७, ४५०
कोरटा ३२३
कौशबी ५६२
कृष्णगढ १८३, २२१, २६८, ३१६
कृष्णद्रह (कालाडेहरा) २१०
खण्डार ४८०
खतौली ३३७
खिराडदेश ७१
खेटक २५१
गंधार १५५
गऊड ३९७
गढकोटा ६३८
गाजीकाथाना ७१४
गिरनार ६७०
गिरपोर ३६२
ग्रीवापुर ४०८
गुजरात २२४
गुज्जर (गुजरात) ३९७
गुर्ज्जरदेश (गुजरात) ३६३
गुरूवचनगर ४३६
गूलर ३७१
गोपाचलनगर (ग्वालियर) १५५, १७२, २६५, ४५३
गोलागिरि ३७२
गोवटीपुरी १८१
गोविन्दगढ ४१०
गौन्देर (गोनेर) ३७२

जालोर १०९, २०५, ५९२
जैसलपुर १३२
जैसलमेर ५९१, ६२०
जैसिंहपुरा २५, ३१, ९१, ४४६, ५०२, ६०१
जोधपुर २०५, ३८१, ५९१
जोबनेर २६, ३४, ७४, २३१, २९३, ३०२, ३३३, ४५५, ४६१, ४६६, ४८७, ४९१, ६४४
झालरापाटन १६३
झालाणा ३७२
झिलती ३१४
झिलाय १७०, ३२६, ४७७
झोटवाडा ३७२
टहटडा ३०२
टोंक ३२, १८९, २०३
टोडाग्राम १४८, ३१३
ड्योडीग्राम २९३
डिग्गी ४१
डिडवाना ३११, ३७१
ढूंढारदेश ३१९, ३२८
णागवचाल (नागरचाल) ३९७
तक्षकगढदुर्ग (टोडारायसिंह) ७७, १३८, १७५, १८३, २००, २०५, २३६, ३१३, ४९४
तमाल ३९७
तारणपुर २०१
तिजारा १४४, १५७
तिलग ३९७
तिलात ३९७
तुरूक ३९७
तुरुक्क ३९७
तोडा (टोडा) ६०९
दक्खण ३, ९७
दविण ३९७
दारू ३६५
दिल्ली-देहली ३७, ८८, १२८, १४०, १५६, १७५, १९७, ४४८, ४४९, ५९१, ७५९, ७९७
दिवसानगर (दौसा) ३५५
दूदू १७२
दूनी ३८०
देघणाग्राम २९१
देवगिरि (दौसा) १७३, २८९, ३६४
देवपल्ली १५६
देवुली ६६
देवल ३७१
दौसा-द्यौसा १७३, ३२८, ३७२, ३७३
द्रव्यपुर (मालपुरा) २६२, ४०६
द्वारिका ५६७
धवलक्कपुर २५८
धाणानगर १८
धारानगरी ३५, १३३, १४५, १७६
नदतटग्राम ६२
नदपुर ७७४
नगर २२७, ५९२
नगरा ४३५
नयनपुर ११८
नरवरनगर ५२

नरवल २२७
नरायणा ११७, ३५३, ३६२, ४१४
नरायणा (बडा) २८४
नलकच्छपुरा १४५
नलवर दुर्ग ५२४
नवलक्षपुर २१२
नागल ३७२
नागरचालदेश ४४८
नागपुरनगर ३३, ३५, ८८, २८०, २८२
३८४, ४७३, ५४३
नागपुर (नागौर ७३५, ७६१
नागौर ३७३, ४६६, ४८८
५६०, ७१८, ७६२
नामादेश ३७
निमखपुर ४०७
निराणे (नरायणा) ३७०
निवासपुरी (सागानेर) २८६
नीमेडा ७६६
नेवटा १६८, २५०, ४८४, ४८७
नेणवा १७, ३४१
पइठतपुर ४३६
पचेवरनगर ४२, ४८०
पट्टन ३८७
पनवाडनगर ७१
पलाडा ५६२
पाचोलास ७३
पाटण २३०, ३०४, ३६६, ५६२
पाटनपुर ४४६
पानीपत ७०
पालव ६८२
पाली ३६२
पावटा ६४६, ७८६
पावागिरि ७३०
पिपलाइ ३६३
पिपलौन ३७३
पुन्या ४४१
पूर्णासानगर २००
पूरवदेस ३६७
पेरोजकोट २७८
पेरोजापत्तन ६२
पोदनानगर ५६८
फतेहपुर ३७१
फलौधी ५६२
फागपुर ३४
फागी ३१, ६८, १७०
फोफली ३७१
बग ३६७
वंगाल ४७६
वंधगोपालपुर ३६३
बगरू ६६
बगरू-नगर ७४, २७०
वणहटा ३४२, ४४८
बटेरपुर १५३
बनारस ४८३
बरव्वर ३६७
वराड ३६७
वसई (वस्सी) १८६, २६६, ४१५
बसवानगर १६५, १७०, ३२०, ४४६
४८४, ७२१
बहादुरपुर १६७, १६८

बागडदेश	६७ १५४, २३४	मथुरा	४७८
बाणपुर	११९	मधुपुरी	३१९
बायनगर	५७९	मनोहरपुरा	७५९
बाराहदरी	३७२	मलारना	७७९
बालाहेडी	२८८	मरुस्थल	३९७
बासी	५०६	मसूतिकापुर	४०
बीकानेर	५९१, ५९२, ६८४	मलयखेड	२०४
बून्दी	८४, ४०९	महाराष्ट्र	२५३
बैराठ	६७, ५६४	महुवा	२५, २६४, ४५५, ४७३
बैराड (वैराठ)	२०४	महेवो	५९१
बौंलीनगर	४८, १५६, १८३	माधोपुर	२९८
ब्रह्मपुरी	६९८	माधोराजपुरा	३३३, ४५५
भडोच	३७१	मारवाड	४४०
भदावरदेश	२५४, ३४०	मारोठ	१९३, ३१२, ३७२
भरतखण्ड	१४३		३८४, ५९२, ५९३
भरतपुर	३८९	मालकोट	५९१
भानगढ	३७२	मालपुरा	४, २८, ३४, ५६, १२२, १३०
भानुमतीनगर	३०५		२३१, २४८, २४९, २६२, ३०१
भावनगर	११७		३४२, ३४३, ३४४, ४६०, ५९२
भिण्ड	२५४		६३९, ७६८
भिरूद	२९७	मालवदेश	३५, २००, ३४०, ३९७
भिलोड	१६८	माल्हपुर	३४
भैंसलाना	३०३	मिथिलापुरी	५४३
भोपाल	३७३	मुकन्दपुर	७७०
भृगुकच्छपुरी	२१०	मुलतान	१११, ५९२
मडोवर	५९१	मूलताण (मुलतान)	१७७
मदानगर	७०९	मेडता	१८४, ३७२, ५९१
माडोटी	३७१	मेडूरग्राम	३०
माडोगढ	५३	मेदपाट	२०५, ३८१
मुंवावती	७४	मेवाड	३७१
मंडलाणापुर	२५१	मेवाडा	३७२

मोहनवाडी ४६०
मोहा ११३, ४५७, ५२०
मोहाणा १२८
मैनपुरी ४६
मौजमाबाद ५६, ७१, १०४, १७४
१६२, २०८, २५५, ४११
४१२, ४१६, ४१७, ५४३
यवनपुर ३४३
योगिनीपुर (दिल्ली) २६४
यौवनपुर ३०७
रणतभवर (रणथंभौर) ३७१
रणथम्भीरगढ ७१२, ७४३
रणस्तम्भदुर्ग (रणथभौर) २१२
रतीय ३७१
रुहितगपुर (रोहतक) १०१
राजपुर नगर
राजगढ १७६
राजग्रह २१७, २५४, ३६३
राडपुरा ४५०
राणपुर ६१६
रामगढ नगर १४६, ३७०
रामपुर १३, ३५६, ३७१
रामपुरा ५६, ४५१
रामसर (नगर) १८१
रामसरि ६६
रायदेश १६७
रावतफलोधी ५६१
राहेरी ३७२
रेवाडी ६२, २५१
रैणपुरा ५६२
रैणवाल ४७०
रैनवाल ३४५, ६६५
रैवासा २००
लखनऊ १२५
ललितपुर १७८
लश्कर २३६, ३८६, ७००
लाखेरी ६६५
लाडणा १८६
लावा ४३
लालसोट ३०
लाहौर ६६८, ७७१
लूणाकर्णसर ७
वनपुर २११
वास २०१
विक्रमपुर १६४, २२३
विदाध ३७१
विमल ५६३
वीरमपुर १७८
वृन्दावती नगरी ५, ३६, १०१, १७८, २००
४२२
वृन्दावन ४, ११०, २७६
वेसरे ग्राम ५३
वैरागर ग्राम ४६, २१०
वैराट (वैराठ) १०६
वोराव (वोराज) नगर ५६४
पेमलासा नगर १५४
शाकमडगपुर ४५८
शाकवाटपुर १५०
शाहजहानाबाद ४७, १०८, ५०२
६०१

शिवपुरी ७३५
शुजाउलपुर ८०
शेरगढ ६८२, ७७१
शेरपुर ५०, २१२, ३९९
शेरपुरा १३६
श्रीपत्तन १३८
श्रीपथ ८५, ३९५
संग्रामगढ २१४
संग्रामपुर ३४१, ५५४
सांखोण १९०
सांगानायर (सांगानेर) ६७८
सांगानेर ३४, ६३, ७३, ९३, १३९, १४४ १४८, १४९, १५३, १५६, १६४, १८१, २०२, २०७, २२९, ३०१, ३७१, ३८४, ३९५, ४०८, ४२०, ४६०, ४८५, ४८८, ७७५
सांगावती (सांगायर) १९५
सांभर ३७१
सयाणा नगर २९०
सनावद ३४२
समरपुर ४८७
समीरपुर १२७
सम्मेदशिखर ३७३, ६७८
सल्लक्षणपुर २४३
सवाई माधोपुर ६३, ७०, १३२, १५४, ३७०, ६९३
सहारनपुर ३३७
सहिजानन्दपुर २७९
साकेत नगरी ३
सागपत्तन नगर (सागवाड़ा) १५४
सागवाड़पुर ५०८
सागवाड़ा ६७, १४१
सादड़ी ३१३
सामोद ८३
सारकग्राम ७
सारंगपुर ८५, १२६
सालकोट ५६६
साहीवाड ४६०
सिकन्दरपुर ४४
सिकन्दराबाद ७७, १४२, १५५, ३६७
सिमरिया ५६५
सिरोही ५९२
सीकर ४६६
सिरोंज ८४, ६१३
सीलपुर २५९
सीलोरनगर ३४, १२६
सुपोट ३९७
सुवेट ३९७
सुभोट ३९७
सुम्हेरवाली आघी ३७२
सुरगपत्तन ३८६
सूआनगर ५८१
सूरत ६७०
सूर्यपुर ५५९
सेवाणो ५९१
सोनागिरि ५५६, ६७४, ७३०
सोझत (सोजत) १६१
सौरठदेश ५६७
हांसी १८१

हिण्डौन २५०, २६६, ७०१, ७२६
हथिकंतपुर ५६७
हरसौर १८४
(गढ) हरसौर ६३६
हरिदुर्ग २००, २६६
हरिपुर १६७
हलसूरि ७३४
हाडौती ६०४
हाथरस १४३
हिणौड २०२
हिमाचल ३६७
हिरणोदा ६४४
हिसार ६३, २७८
हीरापुर २३०
हुडवतीदेश १७
होलीपुर १८८

☆ शुद्धाशुद्धि पत्र ★

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१×४	अथ प्रकाशिका	अर्थ प्रकाशिका
६×८	धिकउ	किधउ
७×२६	गोमट्टसार	गोम्मटसार
१६×६	३०४	३१४
१७×१६	१८१४	१८४४
३१×११	तत्वार्थ सूत्र भाषा	तत्वार्थ सूत्र भाषा—जयवंत
३८×१०	वे. सं. २३१	वे. सं १६६२
४४×५	५४५	५४६
४४×२४	वप	वर्ष
४८×२२	—	५६६
५०×१२	नयचन्द्र	नयनचन्द्र
५३×१	कात	काल
५५×२६	सह	साह
५६×१५	र. काल	ले० काल
६३×६	न्योपार्जि	न्यायोपार्जित
६६×१०	भूधरदास	भूधरमिश्र
६६×१३	१८७१	१८०१
७५×१८	बालाविवेध	बालावबोध
७५×२१	आधार	आचार
७६×१३	श्रीनंदिगण	—
६८×१	सोनगिर पच्चीसी	सोनागिरपच्चीसी
६६×६	१४ वीं शताब्दी	१६ वीं शताब्दी
१०४×२०	१४४१	१३४१
१२१×१	धर्म एवं आचारशास्त्र	अध्यात्म एवं योग शास्त्र

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१३१×१	त्र	ञ
१४०×२८	१७२८	१८२८
१४६×७		र० कालसं० १६६६
१४६×७	र० काल	ले० काल
१६४×१०	१०४०	२०४०
१६५×१	सं० १७८५	सं० १५८५
१७१से१७६	क्र० सं० ३००० से ३०५८	क्र० सं० २१०० से २१५८
१७६×२८	रइधू	कवि तेजपाल
१८१×१७	दमल्ल	नादमल्ल
१६२×६	३२१८	२३१८
१६२×१४	भट्टार	भट्टारक
२०८×६	१७७५	१७१५
२१६×११	अकाशपंचमीकथा	आकाशपंचमीकथा
२१६×६	धर्मचन्द्र	देवेन्द्रकीर्त्ति
२४२×२५	वर्द्धमानमानस्य	वर्द्धमानमानस्य
२६४×१६	२१२०	३१२०
३११ १२	३२८	३२८०
३१६×१०	नेमिचन्द्राचार्य	पद्मनन्दि
३२०×१५	३६३	३३६३
३३६×१३	भक्तिलाल	भक्तिलाभ
३६६×-	३६८-३७५	३६६-३७६
३८५×१	कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका	कल्याणमाला
३८६×५	—	और
३६६×४	अगुभा	कनककुशल
४०१×२१	भूपालचतुर्विंशति	भूपालचतुर्विंशतिटीका
४५६×२५	संस्कृत	हिन्दी
४६४×१२	भादवापुरी	भादवासुदी
५०२×८	पञ्चगुरुकल्यणा पूजा	पञ्चगुरुकल्याण पूजा
५५७×२	पाटोंकी	पाटोदी

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
५७३×१६	संस्कृत	प्राकृत
५७४×१२	संस्कृत	प्राकृत
५७४×१३	—	संस्कृत
५७५×१०	संस्कृत	अपभ्रंश
५७६ २०	रसकौतुकरायसभा रञ्जन	रसकौतुकराजसभा रञ्जन
५८८×१७	छानतराय	धानतराय
५६१×१०	,,	—
५६४×१८	सोलकारणरास	सोलहकारणरास
६०७×२२	पद्मवतीछन्द	पद्मावतीछन्द
६१६×२	पडिकम्मणासूल	पडिकम्मणासूत्र
६१५×१७	५४५१	५४३१
६२३×२३	नानिगरास	नानिगराम
६२३×२४	जग	जय
६२८×१४	प्राकृत	अपभ्रंश
६२८×२१	योगिचर्चा	योगचर्चा
६३५×१०	अपभ्रंश	प्राकृत
,, ×१६	आ० सोमदेव	सोमप्रभ
६३६×१४	अपभ्रश	संस्कृत
६३७×१०	स्वयम्भूस्तोत्रइष्टोपदेश	इष्टोपदेश
६३६×१०	पंकल्याण पूजा	पंचकल्याणपूजा
,, ×२६	त	कृत
६४२×६	रामसेन	रामसिंह
६४५×४	,,	संस्कृत
६४८×६	रायमल्ल	ब्रह्म रायमल्ल
६४६×१७	कमलमलसूरि	कमलप्रभसूरि
६६१×२	पधावा	बधावा
६७०×१५	पच्चीसी	जैन पच्चीसी
६७१×१२	ज्योतिव्यटमाला	ज्योतिषपटलमाला
६८०×२५	कलाणमन्दि स्तोत्र	कल्याणमन्दिर स्तोत्र
६६१×६	नन्दलालीय	[illegible]दास

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
७१६×६	नन्दराम	हिन्दी
७३१×२१	"	—
७३२×६	"	हिन्दी
७३३×३,४	हिम्दी	संस्कृत
७३३×५	"	हिन्दी
७३८×२६	ब्रह्मरायवल्ल	ब्रह्म रायमल्ल
७५०×६	मनसिंध	मानसिंह
७५४×१८	अभवदेवसूरि	अभयदेवसूरि
७५५×१७	"	अपभ्रंश
७६५×५	१८६३	१६६३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्रतिष्ठासम्बन्धीयन्त्र	—		६६८
प्रतिष्ठासार	—	(सं०)	५२२
प्रतिष्ठासार	पं० शिवजीलाल	(हि०)	५२२
प्रतिष्ठासारोद्धार	—	(सं०)	५२२
प्रतिष्ठासूक्तिसंग्रह	—	(सं०)	५२२
प्रद्युम्नकुमाररास [प्रद्युम्नरास]	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	५६५, ६३६, ७१२, ७३७
प्रद्युम्नचरित्र	महासेनाचार्य	(सं०	१८०
प्रद्युम्नचरित्र	सोमकीर्त्ति	(सं०)	१८१
प्रद्युम्नचरित्र	—	(सं०)	१८२
प्रद्युम्नचरित्र	सिंहकवि	(अप०)	१८२
प्रद्युम्नचरित्रभाषा	मन्नालाल	(हि०)	१८२
प्रद्युम्नचरित्रभाषा	—	(हि०)	१८२
प्रद्युम्नरास	कृष्णराय	(हि०)	७२२
प्रद्युम्नरास	—	(हि०)	७४९
प्रबोधचन्द्रिका	वैजलभूपति	(सं०)	३१७
प्रबोधसार	यश कीर्त्ति	(सं०)	३३१
प्रभावतीकल्प	—	(हि०)	६०२
प्रमाणनयतत्वालोकालंकारटीका [रत्नाकरावतारिका]	रत्नप्रभसूरि	(सं०)	१३७
प्रमाणनिर्णय	—	(सं०)	१३७
प्रमाणपरीक्षा	आ० विद्यानन्दि	(सं०)	१३७
प्रमाणपरीक्षाभाषा	भागचन्द	(हि०)	१३७
प्रमाणप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसूरि	(सं०)	५७५
प्रमाणमीमांसा	विद्यानन्दि	(सं०)	१३८
प्रमाणमीमांसा	—	(सं०)	१३८
प्रमाणप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसेन	(सं०)	१३७
प्रमेयकमलमार्त्तण्ड	आ० प्रभाचन्द्र	(सं०)	१३८
प्रमेयरत्नमाला	अनन्तवीर्य	(सं०)	१३८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्रवचनसार	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	११६
प्रवचनसारटीका	अमृतचन्द्र	(सं०)	११७
प्रवचनसारटीका	—	(सं०)	११३
प्रवचनसारटीका	—	(हि०)	११३
प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति	—	(सं०)	११३
प्रवचनसारभाषा	जोधराज गोदीका	(हि०)	११४
प्रवचनसारभाषा	वृन्दावनदास	(हि०)	११४
प्रवचनसारभाषा	पांडे हेमराज	(हि०)	११३
प्रवचनसारभाषा	—	(हि०)	११४, ७१७
प्रस्ताविकश्लोक	—	(सं०)	३३२
प्रश्नचूडामणि	—	(सं०)	२८७
प्रश्नमनोरमा	गर्ग	(सं०)	२८७
प्रश्नमाला	—	(सं०)	२८८
प्रश्नविद्या	—	(सं०)	२८७
प्रश्नविनोद	—	(सं०)	२८७
प्रश्नसार	हयग्रीव	(सं०)	२८८
प्रश्नसार	—	(सं०)	२८८
प्रश्नसुगनावलि	—	(सं०)	२८८
प्रश्नावलि	—	(सं०)	२८८
प्रश्नावलि कवित्त	वैद्य नंदलाल	(हि०)	७८२
प्रश्नोत्तर माणिक्यमाला	ब्र० ज्ञानसागर	(सं०)	२८८
प्रश्नोत्तरमाला	—	(सं०)	२८८
प्रश्नोत्तरमालिका [प्रश्नोत्तररत्नमाला]	अमोघवर्ष	सं०	३३२, ५७३
प्रश्नोत्तररत्नमाला	तुलसीदास	(गुज०)	३३२
प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	—	(सं०)	७०
प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा	बुलाकीदास	(हि०)	७०
प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	७०
प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	—	(हि०)	७१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्रश्नोत्तरस्तोत्र	—	(सं०)	४०६
प्रश्नोत्तरोपासकाचार	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	७१
प्रश्नोत्तरोद्धार	—	(हि०)	७३
प्रशस्ति	ब्र० दामोदर	(सं०)	६०८
प्रशस्ति	—	(सं०)	१७७
प्रशस्तिकाशिका	बालकृष्ण	(सं०)	७३
प्रह्लाद चरित्र	—	(हि०)	६००
प्राकृतछन्दकोश	—	(प्रा०)	३११
प्राकृतछन्दकोश	रत्नशेखर	(प्रा०)	३११
प्राकृतछन्दकोश	अल्हु	(प्रा०)	३११
प्राकृतपिंगलशास्त्र	—	(सं०)	३१२
प्राकृतव्याकरण	चण्डकवि	(सं०)	२६२
प्राकृतरूपमाला	श्रीरामभट्ट	(प्रा०)	२६२
प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका	सौभाग्यगणि	(सं०)	२६२
प्राणप्रतिष्ठा	—	(सं०)	५२३
प्राणायामशास्त्र	—	(सं०)	११४
प्राणीडागीत	—	(हि०)	७६७
प्रात क्रिया	—	(सं०)	७४
प्रात स्मरणमन्त्र	—	(सं०)	४०६
प्राभृतसार	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	१३०
प्रायश्चितग्रन्थ	—	(सं०	७४
प्रायश्चितविधि	अकलङ्कचरित्र	(सं०)	७४
प्रायश्चितविधि	भ० एकसंध	(सं०)	७४
प्रायश्चितविधि	—	(सं०)	७४
प्रायश्चितशास्त्र	इन्द्रनन्दि	(प्रा०)	७४
प्रायश्चितशास्त्र	—	(गुज०)	७४
प्रायश्चितसमुच्चटीका	नंदिगुरु	(सं०)	७५
प्रीतिङ्करचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	१८२
प्रीतिङ्करचरित्र	जोधराज	(हि०)	१८३
प्रीत्यङ्करचौपई	नेमिचन्द	(हि०)	७७५
प्रीत्यङ्करचरित्र	—	(हि०)	६८६
प्रोषधदोषवर्णन	—	(हि०)	७५
प्रोषधोपवासव्रतोद्यापन	—	(सं०)	६६६

फ

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
फलफादल [पञ्चमेरु] मण्डलचित्र	—		५२५
फलवधीपार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	(सं०)	६१६
फुटकरकवित्त	—	(हि०)	७४८
			७६६, ७७३
फुटकरज्योतिषपद्य	—	(सं०)	५७३
फुटकर दोहे	—	(हि०)	६६५
			६६६, ७८१
फुटकरपद्य	—	(हि०)	
फुटकरपद्य एव कवित्त	—	(हि०)	६४३
फुटकरपाठ	—	(सं०)	५७३
फुटकरवर्णन	—	(सं०)	५७४
फुटकरसवैया	—	(हि०)	७७५
फूलभीतरणी का दूहा	—	(हि०)	६७५

ब

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बकचूलरास	जयकीर्त्ति	(हि०)	३६३
बभणवाडीस्तवन	कमलकलश	(हि०)	६१६
बखतविलास	—	(हि०)	७२६
बडाकक्का	गुलाबराय	(हि०)	६८५
बडाकक्का	—	(हि०)	६६३, ७५२
बडादर्शन	—	(सं०)	३६८, ४३२
बडी सिद्धपूजा [कर्मदहनपूजा]	सोमदत्त	(सं०)	६३६
बदरीनाथ के छद	—	(हि०)	६००
बधावा	—	(हि०)	७१०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बधावा व विनती	—	(हि०)	६८५
बन्दना जकडी	बुधजन	(हि०)	४४६
बन्दना जकडी	बिहारीदास	(हि०)	४४६, ७२७
बन्दे तू सूत्र	—	(प्रा०)	६१६
बन्दोमोक्षस्तोत्र	—	(सं०)	६०८
बधउदयसत्ताचौपई	श्रीलाल	(हि०)	४१
बधस्यति	—	(सं०)	५७२
बनारसीविलास	बनारसीदास	(हि०)	६४०
			६८६, ६६८, ७०६, ७०८, ७२१, ७३४, ७६३, ७६५, ७६७
बनारसीविलास के कुछ पाठ	—	(हि०)	७५२, ७५६
बरहाव्रतारचित्र	—		६०३
बलदेव महामुनि सज्भाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
बलभद्रगीत	—	(हि०)	७२३
बलात्कारगणगुर्वावलि	—	(सं०)	३७४
			५७२, ५७४
बलिभद्रगीत	अभयचन्द	(हि०)	७३६
बसतराजशकुनावली	—	(सं० हि०)	७११
बसंतपूजा	अजैराज	(हि०)	६८३
बहत्तरकलापुरुष	—	(हि०)	६०६
बाईसअभक्ष्यवर्णन	बा० दुलीचन्द	(हि०)	७५
बाईसपरिषहवर्णन	भूधरदास	(हि०)	७५
			६०५, ६७०, ७२०, ७८५, ७८८
बाईसपरिषह	—	(हि०)	७५
			५६६, ६४६
बारहअक्षरी	—	(सं०)	७४७
बाहरअनुप्रेक्षा	—	(प्रा०)	७३६
बाहरअनुप्रेक्षा	अवधू	(हि०)	७२२
बारहअनुप्रेक्षा	—	(हि०)	७७७
बारहखडी	दत्तलाल	(हि०)	७४५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बारहखडी	पार्श्वदास	(हि०)	३३२
बारहखडी	रामचन्द्र	(हि०)	७१५
बारहखडी	सूरत	(हि०)	३२२
			६७०, ७१५, ७८८
बारहखडी	—	(हि०)	३३२
			४४६, ६०१, ६६४, ७८२
बारहभावना	रइधू	(हि०)	११४
बारहभावना	आलु	(हि०)	६६१
बारहभावना	जयसोमगणि	(हि०)	६१७
बारहभावना	जितचन्द्रसूरि	(हि०)	७००
बारहभावना	नवल	(हि०)	१५
			११५, ४२६
बारहभावना	भगवतीदास	(हि०)	७२०
बारहभावना	भूधरदास	(हि०)	११५
बारहभावना	दौलतराम	(हि०)	५६१, ६७५
बारहभावना	—	(हि०)	११५
			३८३, ६४४, ६८५, ६८६, ७८८
बारहमासकी चौदस [मण्डलचित्र]	—		५२५
बारहमासा	गोविन्द	(हि०)	६६६
बारहमासा	चूहरकवि	(हि०)	६६६
बारहमासा	जसराज	(हि०)	७८०
बारहमासा	—	(हि०)	६६३
			७४७, ७६७
बारहमाहकी पञ्चमी [मडलचित्र]	—		५२५
बारहव्रतो का व्यौरा	—	(हि०)	५१६
बारहसौ चौतीसव्रतकथा	जिनेन्द्रभूषण	(हि०)	६६५
बारहसौ चौतीसव्रतपूजा	श्रीभूषण	(सं०)	५३७
बालपद्मपुराण	प० पन्नालाल बाकलीवाल	(हि०)	१५१
बाल्यकालवर्णन	—	(हि०)	५२३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बालाविबोध [णमोकार पाठका अर्थ]	—	(प्रा० हिं०)	७५
बावनी	बनारसीदास	(हिं०)	७५०
बावनी	हेमराज	(हिं०)	६५७
बासठकुमार [मण्डलचित्र]			५२५
बाहुबलीसज्झाय	विमलकीर्त्ति	(हिं०)	४४६
बाहुबलीसज्झाय	समयसुन्दर	(हिं०)	६१६
बिम्बनिर्माणविधि	—	(सं०)	३५४
बिम्बनिर्माणविधि	—	(हिं०)	३५४, ६६१
बिहारीसतसई	बिहारीलाल	(हिं०)	६७५
बिहारीसतसईटीका	कृष्णदास	(हिं०)	७२७
बिहारीसतसईटीका	हरिचरनदास	(हिं०)	६८७
बिहारीसतसईटीका	—	(हिं०)	७०६
बीजक [कोश]	—	(हिं०)	२७६
बीजकोश [मातृका निर्घट]	—	(सं०)	३४६
बीसतीर्थङ्करजयमाल	—	(हिं०)	५११
बीसतीर्थङ्करजिनस्तुति	जितसिंह	(हिं०)	७००
बीसतीर्थङ्करपूजा	—	(सं०)	५१४
			५१६, ७३०
बीसतीर्थङ्करपूजा	थानजी अजमेरा	(हिं०)	५२३
बीसतीर्थङ्करपूजा	—	(हिं०)	५२३, ५३७
बीसतीर्थङ्करस्तवन	—	(हिं०)	४००
बीसतीर्थङ्करोकी जयमाल [बीस विरह पूजा]	हर्षकीर्त्ति		५६५, ७२२
बीसविद्यमान तीर्थङ्करपूजा	—	(सं०)	५६५
बीसविरहमानजकडी	समयसुन्दर	(हिं०)	६१७
बीसविरहमानजयमाल तथा स्तवनविधि	—	(हिं०)	५०५
बीसविरहमाणपूजा	—	(सं०)	६३९
बीसविरहमानपूजा	नरेन्द्रकीर्त्ति	(सं० हिं०)	७९३
बुधजनविलास	बुधजन	(हिं०)	३३०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बुधजनसतसई	बुधजन	(हिं०)	३३२, ३३३
बुद्धावतारचित्र	—		६०३
बुद्धिविलास	बखतरामसाह	(हिं०)	७५
बुद्धिरास	शालिभद्र द्वारा संकलित	(हिं०)	६१७
बुलाखीदास खत्रीकी बरात	—	(हिं०)	७५३
बेलि	छीहल	(हिं०)	७३८
बैतालपच्चीसी	—	(सं०)	२३४
बोधप्राभृत	कुंदकुंदाचार्य	(प्रा०)	११५
बोधसार	—	(हिं०)	७५
ब्रह्मचर्याष्टक	—	(सं०)	३३३
ब्रह्मचर्यवर्णन	—	(हिं०)	७५
ब्रह्मविलास	भैया भगवतीदास	(हिं०)	३३३, ७६०

भ

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भक्तामरपञ्जिका	—	(सं०)	४०६
भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	(सं०)	४०२
			४०७, ४२५, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३३, ५६९, ५७२, ५७३, ५९६, ५९७, ६०३, ६०५, ६१६, ६२८, ६३४, ६३७, ६४४, ६४८, ६५१, ६५२, ६६४, ६४८, ६५१, ६५२, ६६४, ६६५ ६७०, ६७३, ६७५, ६७६, ६७७, ६८०, ६८१ ६८५, ६८९, ६९१, ६९३, ६९६, ७०३, ७०६ ७०७, ७३५, ७३७, ७४५, ७५२, ७५४, ७५८ ७६१, ७८८, ७८९, ७९६, ७९७
भक्तामरस्तोत्र [मन्त्रसहित]	—	(सं०)	६१
			६३९, ६७०, ६९७, ७०५, ७१४, ७४
भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमन्त्रसहित	—	(सं०)	४०
भक्तामरस्तोत्रकथा	पन्नालाल चौधरी	(हिं०)	२३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भक्तामरस्तोत्रकथा			
भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमन्त्रसहित	नथमल	(हि०)	२३४, ७०६
भक्तामरस्तोत्रकथा	विनोदीलाल	(हि०)	२३४
भक्तामरस्तोत्रटीका	हर्षकीर्त्तिसूरि	(सं०)	४०६
भक्तामरस्तोत्रटीका	—	(सं०)	४०६, ६१५
भक्तामरस्तोत्रटीका	—	(सं० हि०)	४०६
भक्तामरस्तोत्रपूजा	केशवसेन	(सं०)	५१५, ५४०
भक्तामरस्तोत्रपूजा			
भक्तामरपूजा उद्यापन	श्रीज्ञानभूषण	(सं०)	५२३
भक्तामरस्तोत्रोद्यापनपूजा	विश्वकीर्त्ति	(सं०)	५२३
भक्तामरस्तोत्रपूजा	श्रीभूषण	(सं०)	५४०
भक्तामरस्तोत्रपूजा	—	(सं०)	५१६, ५२४, ६६६
भक्तामरस्तोत्रभाषा	अखयराज	(हि०)	७५५
भक्तामरस्तोत्रभाषा	गगाराम	(सं०)	४१०
भक्तामरस्तोत्रभाषा	जयचन्द छाबडा	(हि०)	४१०
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	(हि० प०)	४१०, ४२६, ५२६, ६०४, ६४८, ६६१, ७७०, ७७४, ७६२
भक्तामरस्तोत्रभाषा	नथमल	(हि०)	७२०
भक्तामरस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	४११, ६१५, ६४४, ६६४, ६६६, ७०६, ७५३, ७७४, ७६८, ७६६
भक्तामरस्तोत्र [मण्डलचित्र]	—		५२४
भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	ब्र० रायमल्ल	(सं०)	४०८
भक्तामरस्तोत्रोत्पत्तिकथा	—	(हि०)	७०६
भक्तिनामवर्णन	—	(सं० हि०)	५७१
भक्तिपाठ	—	(सं०)	५७१, ५६५, ६८६, ७०६
भक्तिपाठ	कनककीर्त्ति	(हि०)	६५१
भक्तिपाठ	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४४६
भक्तिपाठ	—	(हि०)	४५०
भक्तिपाठसंग्रह	—	(सं०)	४२६
भक्तिसंग्रह [आचार्य भक्ति तक]	—	(सं०)	५७३
भगतवत्सलावलि	—	(हि०)	६००
भगवतीआराधना	शिवाचार्य	(सं०)	७६
भगवती आराधनाटीका	अपराजितसूरि	(सं०)	७६
भगवतीआराधनाभाषा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	७६
भगवतीसूत्र	—	(प्रा०)	४२
भगवतीस्तोत्र	—	(सं०)	४२५
भगवद्गीता [कृष्णार्जुन संवाद]	—	(हि०)	७६ ७६०
भगवद्गीता के कुछ स्थल	—	(सं०)	६७३
भजन	—	(हि०)	७७०
भजनसंग्रह	नयनकवि	(हि०)	४५०
भजनसंग्रह	—	(हि०)	५६७, ६४३
भट्टाभिषेक	—	(सं०)	५५७
भट्टारकविजयकीर्त्तिअष्टक	—	(सं०)	६८६
भट्टारकपट्टावलि	—	(हि०)	३७४, ६७५
भड्ली	—	(सं०)	२८६
भद्रबाहुचरित्र	रत्ननन्दि	(सं०)	१८३
भद्रबाहुचरित्र	चपाराम	(हि०)	१८३
भद्रबाहुचरित्र	नवलकवि	(हि०)	१८३
भद्रबाहुचरित्र	—	(हि०)	१८३
भयहरस्तोत्र	—	(सं०)	३८१
भयहरस्तोत्र व मन्त्र	—	(सं०)	५७२
भयहरस्तोत्र	—	(प्रा०)	४२३
भयहरस्तोत्र	—	(प्रा० हि०)	६६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भयहरस्तोत्र	—	(हि०)	६१६
भरतेशवैभव	—	(हि०)	१८३
भर्तृहरिशतक	भर्तृहरि	(सं०)	३३३, ७१५
भववैराग्यशतक	—	(प्रा०)	११७
भवानीवाक्य	—	(हि०)	२८८
भवानीसहस्रनाम एवं कवच	—	(सं०)	७६२
भविष्यदत्तकथा[1]	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	३६४, ५६४, ६४८, ७४०, ७५१, ७५२, ७७३, ७७५
भविष्यदत्तचरित्र	प० श्रीधर	(सं०)	१८४
भविष्यदत्तचरित्रभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१८४
भविष्यदत्ततिलकासुन्दरीनाटक	न्यामतसिंह	(हि०)	३१७
भव्यकुमुदचन्द्रिका [सागारधर्मामृतस्वोपज्ञटीका]	प० आशाधर	(सं०)	६३
भागवत	—	(सं०)	६७५
भागवतद्वादशमस्कधटीका	—	(सं०)	१५१
भागवतपुराण	—	(सं०)	१५१
भागवतमहिमा	—	(हि०)	६७६
भागवतमहापुराण [सप्तमस्कन्ध]	—	(सं०)	१५१
भाद्रपदपूजा	—	(हि०)	७७५
भाद्रपदपूजासंग्रह	द्यानतराय	(हि०)	५२४
भावत्रिभङ्गी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४२, ७००
भावदीपक	जोधराज गोदीका	(हि०)	७७
भावदीपक	—	(हि०)	६९०
भावदीपिका	कृष्णशर्मा	(सं०)	१३८
भावदीपिकाभाषा	—	(हि०)	४२
भावनाउणतीसी	—	(अप०)	६४२
भावनाचतुर्विंशति	पद्मनन्दि	(सं०)	७३६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भावनाचौतीसी	भ० पद्मनन्दि	(सं०)	६३४
भावनाद्वात्रिंशिका	आ० अमितगति	(सं०)	५७३
भावनाद्वात्रिंशिकाटीका	—	(सं०)	११५
भावनाद्वात्रिंशिका	—	(सं०)	११५, ६३७
भावपाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	११५
भावनापच्चीसीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५२४
भावनापद्धति	पद्मनन्दि	(सं०)	५७५
भावनाबत्तीसी	—	(सं०)	६२८, ६३३
भावनासारसंग्रह	चामुण्डराय	(सं०)	७७, ६१५
भावनास्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	६१४
भावप्रकाश	मानमिश्र	(सं०)	२९९
भावप्रकाश	—	(सं०)	२९९
भावशतक	श्री नागराज	(सं०)	३३४
भावसंग्रह	देवसेन	(प्रा०)	७७
भावसंग्रह	श्रुतमुनि	(प्रा०)	७८
भावसंग्रह	वामदेव	(सं०)	७८
भावसंग्रह	—	(सं०)	७८, २९९
भाषा भूषण	जसवतसिंह	(हि०)	३१२
भाषाभूषण	धीरजसिंह		
भाष्यप्रदीप	कैय्यट	(सं०)	२६२
भास्वती	पद्मनाभ	(सं०)	२८९
भुवनकीर्त्ति	बूचराज	(हि०)	२८९
भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरि	(सं०)	२८९
भुवनदीपिका	—	(सं०)	२८९
भुवनेश्वरीस्तोत्र [सिद्धमहामंत्र]	पृथ्वीधराचार्य	(सं०)	३४
भूगोलनिर्माण	—	(हि०)	३२३
भूतकालचौबीसी	बुधजन	(हि०)	३९८

नोट—रचना के यह नाम और हैं-

१ भविष्यदत्तचौपई भविष्यदत्तपञ्चमीकथा भविष्यदत्तपञ्चमीरास